

પ્રસ્તુતક

શ્રીમન્ત સેઠ દિવાકરાય સક્ષીપન્ન,
 જૈન-સાહિત્યોદ્ધારક-પટ-વર્ણાશ્રમ,
 અમરાવતી [વરાહ]



મુદ્રિત-

ડી ઇમ્ પાટીસ,
 મેનેજર

સપ્તર્ષી પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ, અમરાવતી [વરાહ]

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA
OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH
THE COMMENTARY DHAVALA OF VIRASENA

VOL. III

DRAVYA-PRAMĀNĀNUGAMA

Edited

with introduction translation notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN M.A., LL. B.

O. P. Educational Service King Edward College Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra
Siddhanta Shāstri



Pandit Hiralal Siddhanta Shāstri,
Nyāyatīrtha.

Pandit Devakinandana
Siddhanta Shāstri

With the co-operation of



Dr. A. N. Upadhye
M. A., D. Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Śāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,
AMRAOTI (Berar).

1941

Price rupees ten only

Published by—

Shrimant Seth Shitabral Laxmichandra,

1. Ud'el'nyy Uchastok Fond Karyakaya,

ABSTRACTS (Continued)

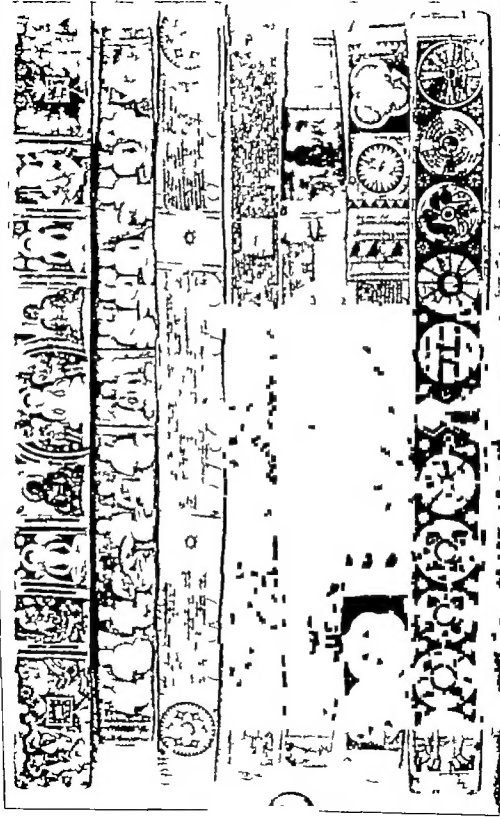


ruled by—

T H Patil *Manager*

Saraswati Printing Press,

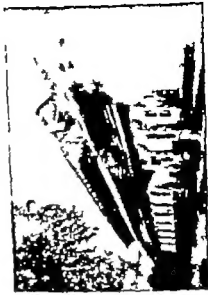
ABSTRACT (Borur)



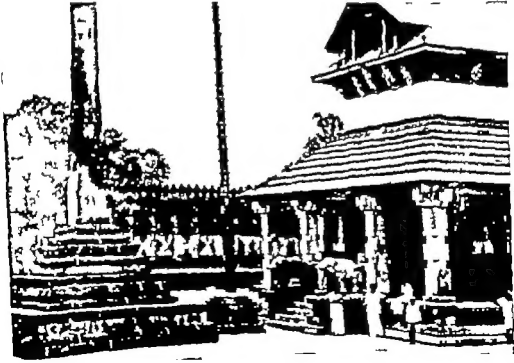
८. मूर्धनिर्दिष्टे विद्यालये प्रयोगे कृतं सुले रूपं सचित्रं यं विवर्तितं तावत्पत्रं



२. मुंबईमधील सिव्हास मंदीरची प्रतिमा बघी इत



३. मुंबईमधील सिव्हास मंदिर (गुरुवारा)



श्री

अतिशय क्षेत्र मूढविद्वीकी जिस सम्मान्य
महारक-परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त प्रयोगोंकी
चिरकालसे बड़ी सावधानी और सतर्कतापूर्वक
रखा की, तथा अब सुअवसर प्राप्त होने पर
विद्वत्ससारका उनका साम दिया, उसीके भूतपूर्व
और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह
ग्रंथ विद्युप रूपसे समर्पित है ।

त्वदीय वस्तु, भो स्वामिन्,
तुभ्यमेव समर्प्यते ।





सिद्धान्त प्रयोग। प्रतिनिधि व सिद्धान्त प्रयोग
परस्पर। मूलन व. बाधनायकी शास्त्री



८. मूलविनीय
श्रीयुक्त

विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्राक् कथन	१-३	५ मत्तान्तर और उनके खडन	४४
१		६ गणितकी विशेषता	४७
प्रस्तावना	१-६७	८ गृहविधीकी साङ्गपत्रीय प्रतियोगे	
प्रपक्षी प्रस्तावना (अमेजमें)	१-१४	मिहानका निष्कर्ष	४९
१ चित्र और चित्र-परिचय	१	९ द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची	५२
२ गृहविधीकी इतिहास	४	१० अर्थसंबंधी विशेष-सूचना	६६
३ गृहव्यवस्था खोज	६-१४	११ पाठसूचकी विशेष-सूचना	६७
१ खोजका इतिहास	६	छुद्धि पत्र	६८
२ स्वर्णनियम परीक्ष	७	महाकाव्य	७२
३ गृहव्यवस्था परीक्ष	१२		
४ उत्पत्ति और दक्षिणप्रति- पत्तिर कुछ और प्रकरण	१५	२	
५ पत्तिका मंत्रक सादित्व अनादित्व- का निर्णय	१६	द्रव्यप्रमाणानुगम	१-४८७
६ शक्ति-समाधान	१८	(गृह, अनुवाद और टिप्पण)	
७ द्रव्यप्रमाणानुगम	२१-५१	३	
१ उत्पत्ति	२१	परिशिष्ट	१-४२
२ प्रमाणका स्वरूप	२२	१ द्रव्यप्रमाणानुगम	१
३ जीवशास्त्र गुणस्वानुवर्त		२ अकारणानुगम	१०
अपेक्षा प्रमाण-प्रकरण	२७	३ व्यापारिक	११
४ जीवशास्त्र मार्गानुवर्तकी		४ प्रयोग	१२
अपेक्षा प्रमाण-प्रकरण	२८	५ पारिभाषिक शब्दसूची	१३
		६ गृहविधीकी साङ्गपत्रीय प्रतियोगे	
		मिहान	२०

प्राक् कथन

हमें यह प्रश्न पड़ते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गण प्रतीय भाषक प्राक् कालमें हमने मूर्खिणी सिद्धान्तमन्त्रक अभिस्तरियोंके सहायोगसम्बन्धी जो सूचना प्रकट की थी, वह क्या मन्त्र रूपमें परिणत हुई। इससे प्रमाण पाठक इसी भाषाके साथ प्रकटित साहित्यसामग्रियोंमें देखेंगे। हमने मन्त्राख्येने अत्यन्त प्रचुररूपमें सेवामें एक खतर केन्द्रेण जो किन्तु और विद्यासा प्रकट की थी उसने उक्त सिद्धान्त मन्त्राख्ये कियामन्त्र सत्त्विको जानून कर लिया। शीघ्र ही हमें स्वयं भङ्गारक स्वामी चारुकीर्तिजी द्वारा मन्त्राख्येने सर्वकमें अनेक सूचनाएँ और उत्तम परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिद्धांतमें सिद्धान्तप्रबोध तादृशों मंदिरों व अभिस्तरियों व कर्माख्येने किंचित् भी उद्धरणों मिश्रणमें ही कहा की, व तादृशीय प्रतिबोध पाठ-मिथानकी सुनिश्च भी बना ने। इस पुण्य कर्ममें हमारे सदा सहायक र्पं स्नेहनाथजी धाक्षी ने उक्त मन्त्राख्ये-परिचय और व-विशेष कुछ इतिहास भी उक्त मेखनेकी कृपा की तथा व अपने दो सहायोगी र्पं, नारायणजी धाक्षी और र्पं देवदुर्गाजी धाक्षी के साथ मिथान कर्ममें दक्षिण भी हो गये। इस समस्त सहायामें पठनरूप इस भाषाके साथ हम मूर्खिणी, चार्पं सिद्धान्तप्रतिबोध, मंदिरों और अभिस्तरियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठनेन सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, बल्कि एक प्रकटित तीनों भाषाओं पाठन तादृशीय प्रतिबोध मिथान व तसंबन्धी निष्कर्ष अत्यन्त परिष्कृतार्क सुत्रमेवता कर्ते पाठनेके निष्कर्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूर्खिणीमें अन्तसिद्धान्तकी एक सूर्य तादृशीय प्रतिबोध अतिरिक्त दो और तादृशीय प्रतिबोध हैं। यद्यपि व अत्यन्त अधिक कठिण हैं— इनके शोधके सैकड़ों पत्र व्याप्य हो गये हैं— तथापि किन्तु है उन्ने पाठनशास्त्रकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि, हममें परस्पर पाठनेद भी पाये जाते हैं अर्थात् हमारे मिथानमें दिखे हुए 'ब' सङ्के पाठनेमेंकी उपस्थिति समान है। किन्तु मन्त्राख्येने 'ब' सङ्के लिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से अन्तर्भागे पाठने तो यही से उत्पन्न हुए निहित होते हैं। यद्यपि इन कठिण प्रतिबोधोंके मिथान केनेन भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु कर्ममन्त्र परिचयमें इनका उल्लेख और उपकरण उपयोग नहीं हो पाया किन्तु सूत्रमन्त्राख्येने दृष्टि अर्पित है। यद्यपि इन प्रतिबोधों की विशेष परिचय देने और उपयोग केनेन भी प्रयत्न किया जायगा। इस मन्त्र साहित्यिक निबन्धने सर्वोपयोग करनेमें सहायताके लिये मूर्खिणीके उक्त मन्त्राख्ये-भाषाके साथ मिथान उपकरण माने, बोझा है।

१ वां क्षेत्र जैन मन्दिर, जैन विद्या भवन, जैन मन्दिर, जैन धर्मशाला आदि जयपुरी बस्ती १९४ के अन्तर्गत आता है। बस्ती पूर्णतः अशुद्ध गन्धर्वों के बसाया है और सिन्धु १९४ के जैन मन्दिरों के अन्तर्गत आता है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सत्यादिकोंको विशेष कठिनाईका सामना करना पड़ा है। एक तो यहाँका विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर भ्रमजानने अपने समयके गणित शास्त्री गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बड़ा हैरान किया, तथापि निम्नी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सहायता और विद्वानोंके सहयोगसे यह कठिनाई भी अन्ततः हल हो गयी, और अब हम यह भाग भी पूर्ण भागोंके समान कुछ आत्मनिश्चयसे साब पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं।

मूल भागमें सामान्य नियम-प्रकरणके अनतिरिक्त कोई २८० शीर्षक उद्यमर उतका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुर्लभ भागको अनुवादमें धीमगणित और अज्ञातिके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विदेशार्थी व १३३ पादलिप्यणाद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित क्षेत्रमें हमें हमारे बरकबने सहयोगी, गणितके अन्वय प्रोफेसर फ्रांसीसी पंडित, एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होंने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर कण-गाथाओंका समझने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और ध्यानसे सख्त परिश्रम किया है। गाथा न २८ (पृ १७) का गणित नामपुरके क्यो-बुद गणिताचार्य, डिस्स कलेजके मूल्य गणिताचार्य प्रोफेसर जी के. गुरुंम बैर देने की हया की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एम पृ ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-विश्वका जो गणित सन्धी समन्वय प्रकाशक पृ ६६ पर 'असंख्यी शिष्ट सृचना' शीर्षकसे लिया गया है यह सम्पूर्ण विश्वविद्यालय गणिताचार्य व 'हिन्दू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक डाक्टर अबधेन नारायणसिंहजीने लगातार मेहनत की हया की है। इस अन्त परिश्रम पूर्ण गिये हुए सहयोगके लिये उपयुक्त सभी सन्नोंक हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सत्यान कथ हुआ है तो यह इसी सहयोगका परिणाम है। हाँ, जो कुछ कृतियाँ और सत्य छे हों उनका उल्लेखित हमारा ही उपर है, क्योंकि, अन्त समस्त सामग्रीका सम्मान रूप देनेका विमर्श हमारा ही रही है।

इन सिद्धान्त प्रयोगों और विद्वान् पाठ्य विद्वान् आदर्शित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट हो जा या तो समागमनाधिक रूपमें विविध प्रयोगों का पुरा है, या जो विशेष प्रयोगों का हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सन्धियोंके लिय हम सत्योंके विषय आभारी हैं। इन अभि-प्रायोंमें एसी अनन्त सहायता व अन्य शीर्षक भी उद्यत हुए हैं जो अबक मूल अन्वयनस पाठकोंके हाथमें उद्यत हुई। विद्वान् ही अन्त उन गणितोंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंके व्यक्तिगत रूपमें भेजने गए हैं। अब हम उनमें कुछ महत्त्वपूर्ण शीर्षक और उनका समाधान, हम मागरी भूमिगत पृष्ठसह व्यवस्थित करने प्रारम्भ कर रहे हैं, विमर्श संलग्न सभी पाठकोंके हाथ हा और हम विद्वान्के समस्त समझने में सहायता पहुँच। गहन विद्वान्के अन्त प्रत्येक शीर्षकका अभिप्राय का हम सत्य आनन्द करेंगे।

सम्पादन-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्णत्वं हो इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी इस्तख्मिल प्रतिके अतिरिक्त आसराके सिद्धान्तमबन और करंदासके महावीर ब्रह्मचर्याभ्रमकी प्रतियोग्य मिमनक छिये काम निर्यता रहा, तथा सद्भारनपुरकी प्रतिके मोट निसे हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिनिरूपकों बहुत कामती हैं। मूद्रित्रीय प्रतियोंके मिमन प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियों परस्पर पाठभेद व छूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें निरालम्बसे सहायक रं देवकीनन्दनश्री सिद्धान्तशास्त्री गत तीन बार मास बहुत ही व्याधिग्रस्त रहे, जिससे हमें अत्यन्त चिन्ता और आशुखता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुत ही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे ठण्डोठर स्वस्थ काम कर रहे हैं किन्तु हमें परम हर्ष है। हमें आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य काम करने वाली विश्रामक अवस्था में पहुँचेंगे।

हमारे सहयोगी रं कृष्णचन्द्रश्री सिद्धान्तशास्त्रीका नरवान पुत्र गन फन्की मासमें अत्यन्त रोग हो गया, जिससे फन्कीके अन्तमें पड़ितबीजे अत्यन्त श्लेश जन्मा पड़ा। यद्यपि कुछ उपचार करने पर भी हृत्के पड़ितबीजे पुत्र-स्योगस अथवा कुछ सहन करता पड़ा, किन्तु हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुतुम्हरी सद्भारनपुरसे इन्ध प्रसिद्ध होता है। सबसे फिर पड़ितबी प्रसिद्ध नहीं आ सके। चूँकि इस समय पड़ित कृष्णचन्द्रजी हमारे समुपलब्ध नहीं हैं, इससे हमें यह निस्तर्क प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन प्रश्नको कर्मान स्वयं देनेमें पड़ितबीका मारी प्रयत्न रहा है, जिसके छिये शेष सहायककी उत्तरा बहुत कामती है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९२१ में प्रकाशित हुआ था। मार्च १९२१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सद्भारनपुरी इस महत्त्वपूर्ण साहित्य प्रकाशनमें मिल रही है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुष्प कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

मिर्जा एडवर्ड कॉलेज,

अमरावती

१-४-२१

}

हिराखाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION

1 Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf MSS of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts as well as of those who realised the value and importance of this venture brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf MSS which goes by the name of Mahābhārata. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those MSS and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf MSS was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the result of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dharmashastra MSS with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search two more old but incomplete palmleaf MSS of Dharmashastra have been discovered. These would prove of immense value in settling the text more accurately. At present the collation of all these palmleaf MSS in thorough and accurate manner was not possible but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future. The result of the Moodbidri collation, so far as has been that of the 433 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume 149 contribute towards the improvement of the text in the matter of accents or pronunciation or both 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language while 120 are unacceptable, being scribal or other errors. These have been properly classified by us in an appendix with general results re embodied in the Hindī Introduction (page 49). It was necessary to amend the translation very slightly only at 78 places in all. Our principles of text constitution and translation, as laid down by us in the Introduction to Volume I are thus mostly borne out by this collation. The position of the upanishads may have to be reconsidered but we must wait for more material. Of the 10 expressions which were not found in the available MSS but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the

present Volume I) has been found almost verbatim in the palmleaf Ms. We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

2. Contents of the Mahadhavala manuscript.

The examination of the Mahādhavala palmleaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes. The Ms has been found to contain on the first twenty-seven leaves, a work which has been cited Sattakamma Pañchika. A careful examination of the extracts received by us from that work, reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen Adhikaras or chapters contained in the supplementary part of Dharmas which is entirely the composition of Virasena without any stricture of old Sūtras. The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahādhavala Ms. contains the Mahābandha, presumably the composition of Āchārya Bhātibhāṣa. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the Mahābandha of Bhātibhāṣa in the Dharmas and Jayadhavala.

3 Subject matter of this volume

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (Gatipāda), and the different varieties of life and existence called the soul-quests (Mārganāśhitas). There have been calculated in terms of infinite (Ananta), innumerable (Aśamkhyāta) and numberable (Samkhyāta), and the author has explained and detailed. Living beings are infinite in number. Of these, the major bulk, which also is infinite in number consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder the first stage of mental evolution (Mukhyāstava). Of the rest, again, the major part are the evolved beings (Muktas or Siddhas) who are also infinite. The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable, while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of Dharmas has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 16 out of which 13 would fall under the first category while the remaining 3 would include the Siddhas and all the souls of the other thirteen stages. We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the Siddhas and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro. page 37).

The soul quantities, according to the subdivisions falling under the Mārganāśhitas, have been defined and illustrated; his own way by the author. But we have tried to work this same out in figures that are consistent with the Gatipāda distribution, keeping the entire J varāhi as 16, the Mithyāśhitas as 13 the Siddhas 2, and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen Mārganāśhitas are 63, of which 23 are infinite, 32 innumerable and 8 numberable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are just three less than eight hundred and seventy-eight crores. These are spread over all

the two and half Dvīpas or mainlands over which the human population is spread.
(Page 38-43)

4 Scientific Importance of the Work.

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jaina dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sūtras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical form. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sūtras were composed as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sūtras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred thousand, tens and hundreds of thousands and crores, also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely addition, subtraction, multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors, or to determine divisors when particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus, we notice the use of powers (Vargya-samvargita) and roots (Varga-mukh). This indicates that the author of Dhavalā had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-shūlakṣa and Ardhaśchedas †. The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmetical series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$, and it is just possible that approximations to this value in fractional form to fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K. D. Pandey M. A. has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, B. Sc., Professor

† The number of times that particular figure is multiplied by itself in its Varga-shūlakṣa while the number of times that particular figure is successively halved in its Ardhaśchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulas which are set forth by us on page III of the Hindi Introduction. Both these scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance, and some of my remarks above are based on information already supplied by them. The emendation of the text of the *śāra* 28 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G. B. Garde M. A. the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

5 Other Topics.

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows —

1. An account of the palm-leaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri, together with a short history of the place, has been given with illustrations. It appears that the Jain institutions of Moodbidri date from about the 11th century with back ground that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 17th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries. (Page 16)

2. A little more light is shed on what have been called by the author of *Dharmasāstra* the Northern and Southern Schools of thought (Uttara Prāśastya and Dakṣiṇa prāśastya) to which we had drawn attention in the Introduction to Vol. I, page III & 57 and which are cited more than once in the text now presented. (Page 92, 94, 98 of the text.) One mention of these Schools noticed by us in the *Jyotiḥ* all associates one school with Āry Maṇikya and the other with Nāgabharu. An attempt is being made by us to get more light on this important subject. (page 18).

3. Our shortcomings about the authorship of Namokari Mantra expressed in the Introduction to Vol. II created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palm-leaf MS of Moodbidri corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in its present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as an older than Pushpadanta. (Page 18)

4. After the publication of the first Vol. great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation. We tried to satisfy the curiosity of our inquirers then and there, and now we reproduce here in properly arranged form a set of thirty-four questions with answers, because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified. (Page 18-31)

१ चित्र परिचय

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताड़पत्र श्रीधवल प्रपञ्च है। इसके मध्यमें एक तीर्षकरक चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः पञ्च-पक्षिणी छोड़े विन्ये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्षकरोंके वीर चित्र हैं, तथा उनके एक ओर पञ्च और दूसरी ओर पक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रपञ्चन करते हुए आचार्य व श्रेता आचर्योके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताड़पत्र भी श्रीधवल प्रपञ्चक है। बीचमें तीर्षकर निरावमान हैं, और आन्-आन् सप्त सप्त भक्त बन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताड़पत्र श्रीधवलक कलावी किरिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताड़पत्र कलावी किरिमें हस्त लिखित श्रीमहाधवल प्रपञ्च है।

पाँचवां ताड़पत्र श्रीधवलप्रपञ्च है। बीचमें कलावीक हस्तलेख तथा आन्-आन् चित्र हैं।

छठवां ताड़पत्र श्रीमहाधवलक २७ वां पत्र है, जहाँ 'सत्तकम्मपचिका' की हुई कही जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख वीर आन्-आन् चक्रक चित्र हैं।

सातवां ताड़पत्र त्रिलोकसार प्रपञ्चके भीतरक है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम प्रपञ्च श्रीधवल सिद्धांत (पट्टबालम्) है। इसके ताड़पत्रोंकी ऊम्हार्ड १ फुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्र सख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १२ पक्षिय हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १२८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥ आती है, जिससे कुल प्रपञ्च प्रमाण ७१२८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अपीतक यही सुप्रसिद्ध आता था कि यवकाकी प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे हात हुआ है कि वहाँ यवकाकी दो और भी ताड़पत्रीय प्राचीन प्रतियाँ हैं, जिनकी ताड़पत्रोंकी सख्या क्रमशः ८०० और ९०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके बीचबीच के अनेक ताड़पत्र अक्षय्य हैं, और इस प्रचलन से दोनोही प्रतियाँ बहुत कुछ भ्रष्ट हैं। इनका प्रशस्तियों आदि संहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा प्रपञ्च श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताड़पत्रोंकी ऊम्हार्ड २ फुट ७ इंच, चौड़ाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या ९०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १२ पक्षिया, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० लक्ष हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या १३८ आती है, जिससे कुलप्रत्यूष प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। किन्तु बड़े बड़े पारिवारिक सम्पत्तिके रूप बनाकर बिखे गये हैं इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीशयनचक्र सिद्धान्त है। इसके ताड़पत्रोंकी कम्बार्थ २१ पुट, बीसार्थ १३ हैं, तथा पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः ११ पंक्तियाँ, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२० आती है जिससे कुल प्रत्यूष प्रमाण ६११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूढविद्याका गौरी सुप्रसिद्ध मन्दिर है, जहाँ सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताड़पत्रावली प्रतिदिन दत्त-पितृवर्गसे विराजमान है। इनकी कारण यह मन्दिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त बसन्दि' कहलाता है। अनेक रामायणी प्रतिमाएँ भी यहाँ विराजमान हैं जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरेसे यात्री आते हैं। यहाँके मूळनायक श्रीगणेश तीर्थधार हैं। यहाँ महारथ गयी है, जिससे इसे 'शुद्ध बसन्दि' भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पञ्चस्तके आवीन है, जिससे यह 'पञ्चायती मन्दिर' भी कहलाता है।

४

यह मूढविद्याका 'ब्रह्मा मन्दिर' है। यहाँ के मूळनायक श्री ब्रह्मसम तीर्थधार हैं, जिनकी मूर्ति सुवर्ण आदि पंच वस्तुओंकी बनी मानी जाती है। इसकी सम्पत्ति तीन मंदिषकी है। दूरेसे मंत्रिज्यार 'सहस्रकूट भस्वालय' बहुत ही श्रेष्ठ है। तीसरे मंदिषमें छोटी बड़ी ४० प्रतिमाएँ विराजमान हैं जो लटकितमयी हैं। इसीलिये इस मंदिषको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मन्दिरके समुद्र एक 'लनस्तम्भ' और एक 'जगत्तम्भ' बना है। तीनों मंदिषोंमें लक्षोंकी संख्या करीब एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम 'सहस्रस्तम्भ' या हजार लक्षमात्रा मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। अन्ती अनुगम सुन्दरताके कारण यह मन्दिर 'त्रिभुवन विष्णु-ब्रह्ममणि' भी कहलाता है।

५

ये मूढविद्याके स्तूर्वाय महारथ श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं। आप ईश्वरके अनेके विद्वान् हैं, तथा अनेक माताओंकी भी आज्ञाकार थे। आपके समयमें मूढविद्या में अच्छी कार्यप्रदायना हुई। आपने कई वर्षोंके लिये ही जैनमण्डिरोंका जीर्णोद्धार कराया वे पञ्चरत्नमण्डिर कहलें। आप-केही सुसमय में श्रीचक्र और श्रीचक्रवर्क, इन दोनों सिद्धांत ग्रंथोंकी प्रतिलिपियाँ दूर भी, और तीसरे सिद्धान्त ग्रंथ मन्दावचककी प्रतिलिपिका कार्य भी प्राप्त हो गया था। अनेक जनतामें भी आपका अच्छा गौरव और सम्मान था।

६

ये मूडबिंदीके वर्तमान महारक श्रीशारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा काना-नी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समर्थमें श्रीमहाभवनकी प्रतिष्ठिपि पूर्ण हुई। आपके ही सकल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुन्दर है कि वहाँकी पचापतद्वारा श्रीमहाभवनकी प्रतिष्ठिपि निहासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप श्रीगोस्वामिदि धार्मिक क्षेत्रमें सुब दक्षविद्य रहते हैं। प्रबोका श्रीगोस्वामि कार्य भी आपकी दृष्टिके ओष्ठक गयी रह सकत। हमारे सिद्धान्त-प्रयोगे सद्योचन व प्रसन्न-हान कार्यमें अब हमें आपकी पूज्य सहायभूति और सहायता निम्न रही है, जिसके सुन्दर पाठक इस प्रथमागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिंदीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और महारकजीके सत्कर्ममें आपकी सम्मति और सहयोग प्रवृत्त है। आप भी सिद्धान्तप्रयोगे सुप्रचार के प्रवर्तकी हैं।

८

आप मूडबिंदी सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीपुष्प धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तप्रयोगे सुप्रचार करनेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सुरवती भूषण व लोहनाथजी द्वालीका पैतृक निवासस्थान मूडबिंदी ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय व गोपालदासजी श्रीपात्री अभ्युत्थतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिंदीजी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अभ्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कष्टिन परिश्रमसे श्रीवाणीविद्यास सिद्धान्तमन्दिरकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित साधनग्रन्थि चार हजार प्रयोगे ऊपरका समग्र है। यहूति आप एक श्रीवाणी प्रथमाचार्य भी संपादन करते हैं जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडबिंदीके महारके अहम्य प्रबोकी प्रतिष्ठिपि करार मुर्ध, आप, इंदिर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शहरमंडाओंको भेज चुके हैं, जिसकी श्रेष्ठ स. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तप्रयोगे प्रतिष्ठिपियोंसे सम्पन्न रहता है। वीर्य हम प्रथम भागकी भूमिकमें कह आये हैं, महाभवनकी नागरी प्रतिष्ठिपि पहले पहले आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२७ में आपने सहारनपुर पड़चनर वहाँकी प्रवर्तक और व्यवस्थाकी कनाड़ी और नागरी प्रतिष्ठिपि निम्न करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महापद्मकी प्रतिस्पर्धी शक्तिजोष आपने ही अपने दो तीन सहयोगी मित्रोंसहित उक्त प्रतिस्पर्धी पांच पदताल की, और बहुमुख परिषद मेजने-सी किया की। हमारे प्रशिक्षण व प्रशस्तीय प्रशंसकों का तात्कालिक प्रतियोगिता मित्रान भी आपने ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आपु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्ष आस-सी व्यापित पीढ़ित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कर्मसे निराला नहीं होते, और प्रस्तुत सिद्धांतप्रकाशन कर्मसे तो आप अत्यन्त तन्मयतासे साथ भी स्वेच्छा सहयोग दे रहे हैं, जिसके द्वारा पाठक इस मागमें तथा अपने प्रशस्तीय मागमें देखेंगे।

२ मूढविद्वीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। रिगम्बर जैन सम्प्रदायके अधिपति सुविस्मृत और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और मंदस्वर इसी प्रांतमें हुए हैं। आचार्य पुष्यदन्त सप्तमब्रह्म, पूषपाय, भीरसुत, जिनसेन गुणमद्र, नेमिचन्द्र, बालमुखाय आदि महान् मंदस्वरोंने इसी भूमिकाके जन्मदाता किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रांतमें ही मूढविद्वी नामका एक छोटासा नगर है जो सत्ताद्विपोंसे जैनियोंका धर्मक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहाँ जैनधर्मका विशेष प्रमाण सन् ११०० ईस्वीके लगभग होम्बल-नरेश बल्लालदेव प्रथमके समयसे था। तैल्लुची सत्ताद्विमें यहाँकी पार्वतमाय वसुधिका तुलुवके बाल्य नरेशोंसे राज्यसम्मान मिला। पन्द्रहवीं सत्ताद्विमें विजयनगरके सिंघू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष की। सन् १३५१ (सन् १५२९) के देवरय वितायके एक शिकारकेलमें ठकेल है कि केलपुर (मूढविद्वी) उसके सम्पन्नकोंके जिये हुएसिद्ध है। वे छत्र चरित्र पाठसे हैं, छत्र कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका ज्ञान करते हैं। यहाँके स्थानीय राजा भैरसने अपने गुरु नीरसेन सुविद्वी प्रेरणासे यहाँके कल्याण मन्दिर को बन दिया था। सन् १४५१-५२ में यहाँकी होत वसुधि (त्रिभुवन सिंघ-बृहस्पति व बड़ा मन्दिर) का भैरदेवी मण्डप 'नामसे प्रसिद्ध मुक्तमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्पेरियलके राज्यमें बनाया गया था। विक्रमका नरेश के राज्यमें उनके सामन्त निरस ओडेयरने सन् १४७२-७३ में इसी वसुधिका मूर्तिदान दिया था। यहाँ सब सिक्कर बखर वसुधि (विमलमन्दिर) है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'गुरु वसुधि' है यहाँ सिद्धान्त प्रयोगों प्रतिपादित हुएसिद्ध हैं और जिनके कारण यह सिद्धान्त वसुधि' भी कहाजाती है। यह नगर 'जैन काशी' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहाँ अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन सत्तामें इसका परमिय कम नहीं हुआ। यहाँकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त-रक्षाके लिये यह स्थान जैन चार्मिक इतिहासमें सर्वत्र अमर रहेगा।

मूढविद्याके पंडित लोकनाथजी शास्त्रीने मूढविद्याका निम्न इतिहास लिखकर मेरठनेकी रूपा यी है। कलाही मायामें बांसको 'विदिर' कहत है। बांसोंके समूह को छंदकर यहकि सिद्धांत मंदिरका पत्ता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'विदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। यन्त्रामें 'मूढ' का अर्थ पूरा दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका बाणक शब्द 'पटु' है। यहाँ मूढका नामक प्राचीन ग्राम पटुविदुर कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेका कारण यह ग्राम मूढविदुरे या मूढविदुरे कहलाया। बंग और बेषु शब्द बांस के पयापकाबी होनेसे इसका बेषुपुर अथवा बशपुर नामसे भी उल्लुख किया गया है। अनेक नवी स्रापुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम मठिपुर या मठपुर भी पाया जाता है।

यहाँ की गुरुबसुदि अग्रनाम सिद्धान्त बसुदिके सम्बन्धमें यह दृष्टक्या प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहाँपर बांसोंका सपन बन था। उस समय बरगबेडगुड (जैनविद्या) का एक निम्न मुनि यहाँ आकर पटुवस्ती नामक मंदिरमें रहत। पटुवस्ती नामक प्राचीन जैनमंदिर अब भी वहाँ विद्यमान है, और उस मंदिरसे सेरुने प्राचीन ग्राम स्वर्गीय महामाजने मठमें विद्यमान किये हैं। एक दिन उक्त निम्न मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाव और व्याघ्रको परस्पर प्रीति करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पन्तल करने लगे। उसी क्षणकीनके पक्षस्वरूप उन्हें एक बांसके भिरमें छुटी दूर व पथमें आगिसे चिरी हुई पाषाणय स्वामीनी कष्ट पाषाणकी भी हाथ प्रमाण लङ्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् जैनियों केद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसुदि का निवास हुआ। उक्त मूर्तिके पार्श्वस्थित उसके शब्द ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठा किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके लगभग गद्दीमध्य (उत्तर) सन् १५३५ में जोधसेगिद्वारा निर्माण किया गया था। इस बसुदिके निर्माण का व्यय यह करोड़ रुपया कहा जाता है जिसमें संभवतः वहाँ की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मंदिरके गुप्तकालमें सुवर्गकण्ठधाममें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहने हैं।

एक विद्वान्ता है कि होशङ्कनने सन् १११७ में देवनाग धर्म स्वीकार करके इससे दूर अथवा दोरसमुद्रमें अनेक दिन मन्त्रिरोध प्राप्त कर हाहा व जैनधर्मपर अनक अल्प अन्ताचार किये। उसी समय एक मयकर मूषक हुआ और भूमि फटकर एक विस्तृत गड वहाँ उत्पन्न हुआ, जिसका सक्षम मोटाका उक्त अन्ताचारसे बनलाया जाता है। उनका उत्तराधिकारी शारुसिंह और उनके पश्चात् वीर बड्डाउदयन जैनियोंका शोमकी शान्त मरनर किये जब मन्दिरोध निर्माण, जमोदार, भूमिगत आदि अनेक कार्य किये। वीर बड्डाउदयन का अन्त राज्यमें शक्ति-स्थानाके किये बरगबेडगुडसे मथारक बाइबुर्दिनी पहिनायापत्र अर्पित किया। वे दोरसमुद्र

महाबोधकी प्रतिसंभवी शक्तिबोधपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिज्ञा कांच पत्राचार की, और बहुमुख परिचय भेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय प्रबंधोंका व्यापकप्रति प्रतियोगे मित्रान भी आपके ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आपु इस समय पचास वर्षकी है। जगमग दस वर्षस सासकी व्याधिते पीणित होवे हुए भी आप साहिष्मतेका केर्तये विमानित नहीं केते और प्रस्तुत सिद्धांतरप्रकाशन केर्तये तो आप अक्षय्य तन्मयताके साथ जी छोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके शुक्रत पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागमें देखेंगे।

२ मूढविद्वीका इतिहास

दक्षिण अमराका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। विष्णुवर जैन सम्प्रदायके अधिपति सुविख्यात और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और संघकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुण्यदत्त समन्तमद्र, पूनपाद, नीरसम विमलेश, गुणमद्र, मेमिचन्द्र, बालुचराय आदि महान् संघकारोंने इसी भूमिपर अर्कदत्त किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूढविद्वी नामका एक छोटासा नगर है जो सन्तद्विद्येसे जैनियोंका तीर्थस्थल बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होम्बुल-मेश बल्लुबेय प्रथमके समयसे रहा। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पराजय बसदिके तुलुबके आक्षेप नरेशोंसे राजपदत्याग किया। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजयनगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ (सन् १५२९) के देवराय द्वितीयके एक सिक्केमें उल्लेख है कि गेणपुर (मूढविद्वी) उसके सम्पन्नको क्षिपे सुप्रसिद्ध है। वे छत्र चारित्र पावते हैं, छत्र कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका भजन करते हैं। यहांके राजाजीय राजा भिरसले अपने गुरु नीरसेन सुविद्वी प्रेरणासे यहांके बाल्यमय मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होस बसदि (त्रिमुक्त सिक्क-बुद्धादिनि व महा मन्दिर) का ' भैरवेवी मन्दप ' नामसे प्रसिद्ध मुबल्लमद्र विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मीडेकरावके राज्यमें बनाया गया था। विजयनगर नरेश के राज्यमें उनके समस्त विहार लोकेपरने सन् १४७२-७३ में इसी बसदिके भूमिदान दिया था। यहां सब मित्राकर लखरह बसदि (विनमन्दिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध ' गुरु बसदि ' है जहां सिद्धान्त प्रबंधकी प्रतिपां सुरक्षित हैं और जिनके कारण यह ' सिद्धान्त बसदि ' भी कहलाती है। यह नगर ' जैन कसरी ' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां जब जीनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन संस्रमें इसका प्राविश्य कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त-रक्षाके लिये यह स्थान जैन चार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।

इस महाप्रबंध पर अतीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आया। किंतु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडविज्ञान के सिद्धान्तमयनमें जो महाप्रबंध नामकी कलाही प्रति तात्पर्योपर तत्तीर्थ सिद्धान्तप्रत्य रूपसे सुप्रसिद्ध है, वही भूतबलिकृत महाप्रबंध प्रत्य है। इस आशाका आधार अतीतक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विज्ञान उस प्रतिक का अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उससे कोई विलग्न अवधारण आदि देकर उसका सुपरिचय ही करवाया था। उस प्रतिक का जो कुछ बोधार्थ परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूड विज्ञान प ओक्लहापसी शास्त्रीका हवासे उनके बीरबाणीविद्यालय जैन सिद्धान्त मयनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९१५) के भीतर पाया जाता था। उस परिचयमें दिये गये महाप्रबंध प्रतिक के प्राथमिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे झट हुआ कि वह प्रत्यारचना महाप्रबंध खडकी नहीं है, किन्तु सतकम्पने अन्तर्गत शेष अत्यन्त अनुयोगशायी एक 'पंचिका' है, जिसे उसके कर्ताने 'पंचिकारूपेण विवरण सुमहत्त्व' कहा है। उन अवतरणोंसे महाप्रबंध का कहीं कोई पता नहीं चला। मैंने अपनी इस आशङ्कको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रतीति दी कि महाप्रबंधकी प्रतिक हीमाही पर्यावर्धन किया जाता चाहिए और महाप्रबंध पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये। इस लेखके फलस्वरूप मूडविज्ञानमंडके महारक्तस्वामी व पञ्चोने उस प्रतिक की आवश्यक व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे आश्चर्य सुचित किया कि महाप्रबंध प्रतिक भीतर सम्पूर्ण पंचिका भी है, और महाप्रबंध भी है। तत्पश्चात् वहासे प ओक्लहापसी शास्त्रीयाय सप्रद किये हुए उस प्रतिकमें के अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाप्रबंध प्रतिक अन्तर्गत प्रत्यारचनाका यहां कुछ परिचय करवाया जाता है।

२ सत्कर्मपञ्चिका परिचय

महाप्रबल प्रसिद्धि के अन्तर्गत प्रसारणवाले जाद्विने 'सुतबन्धनविषय' है, जिसकी श्रान्ति का अन्तरण अनेक छवियोंसे प्रबलपूर्ण है। यद्यपि यह अन्तरण पूर्व प्रबलित धनकाके दोनों मागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्भूत किया जा चुका है, तथापि वह उच्च रिपोर्टसे किया गया था, और कुछ प्रतिक्रिया। अब यह अन्तरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है।

बोध्यमि सतकाम्ये रंभिरकमेय विचारं सुमहत्तम् ।

“ महाकम्मवदित्तानुबन्धम कथिरेवणाणी (वि-) चत्थणीसमन्विणीयाहातेसु ताव कथिरेवणा वि
जाति अविर्भावहारामि वेवणायेवडि तुणी पाय-कम्म-अवधि-वचम चत्तावि अविबोगाहातेसु ताव वच-अ-
मिउत्ताममिरेवेहि लह वणमयावेवडि पुणे वचिवाणमयाविविणीये महावचमि तुणे वचपाविणीये मुदा
वचवडि कयवेवम वरुविहामि । तुणे वैडिगे सेमणासामिणीयाहारामि अत्ताकम्मे मग्गवि वरुविहामि ।
ओ वि वरुणादुणेओरचाओ अ-अविमवदुतामन्वे ओकरवेम वचिवाणमन्वेम अविस्सवाओ । ”

इस उपनिषद्से सिद्धान्तप्रमाणोंसे सम्बन्धमें हमें निम्न विविध ज्ञानत उपपत्ती और महत्त्वपूर्ण सूत्रकार्य बहुत स्पष्टतासे मिल जाती है—

पाहुने और उन्होंने अपनी विद्या व सुशिक्षित प्रभावसे बड़ाका साथ उपद्रव प्राप्त किया, जिससे जैन-धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। इसका कुछ ठोस बिलगीके शासन केबारे भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है—

कर्नारव सिद्धविहायवाणीवर बहादुराव प्रार्थिते श्री वाचस्पतिर्विद्विवाच्यार्थं इदं कथितं वदेत्

तिथे रावणमैत्रु है—

कचद्विद्वे एव संनक्षत्रविधिनिर्वाहं

सुवचनमिदं सुकृतं च—

व वदेरेकजनके पंडितार्थमे कौलं ॥

येरसमुद्रसे चाइकोर्टिजी म्हासाब अपने शिष्योसहित मूठविजी आये और उन्होंने बड़ा गुहरीठ (महारक गरी) स्थापित की, वहाँ आते समय उन्होंने पासही गण्डूर नाममें भी महारक गरी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहाँ कोई महारक गरी नहीं है, बड़ाके मठका सब प्रभाव मूठविजी मठसे ही होता है। यह मूठविजीमें महारक गरी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् १९७२ ईस्वी कतकाया जाता है। उससे महारकोका नाम चाइकोर्टि ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वयं वायों, जैसे वर्तमानसागर, जन्मवृत्तान्त, मेमि-सगर आदिका भी ठोस पाया जाता है। वचनमि सिद्धान्त प्रयोगोंकी प्रतियोग्य वहाँ भारतवर्ष केके वचनपुरसे कार्य गई ऐसी भी एक जनमुक्ति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका ध्रुव प्रचार व उपस्थिती हुई। वर्तमानमें मठकी सुप्रसिद्धि वार्षिक आप जगमग दस हजारको है।

३ महाधर्मकी खोज

१ खोजका इतिहास

पदच्छायाप्रकाश सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रस्तुतित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है। वहाँ इस कतका आये हैं कि बरतेशाचार्यसे जगमग उपदेश पत्तर प्रच्यदन्त और मृतकवि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें प्रचारचना की, जिसमेंसे प्रथम पांच खंड उपकम्प्य अधिवचनके प्रतियोगके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महाधर्मके सम्बन्धमें भवत् तथा जय-वचनमें यह सूचना पाई जाती है कि महाधर्म तथा मृतकवि आचार्यका रचा हुआ ग्रन्थ है, उसमें अधविचनके चार प्रकरणों प्रकृति, स्थिति, असुमाग और प्रवेश का लक्ष निस्सारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वगम्य हुआ कि कतिपयम और बीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी प्रचारचानामें उसकी सूत्रनामात्र दे देना पर्याप्त समझा उस निबन्ध और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें गुजामना नहीं दिखी।

१ देखो अधिवचनकागीठ सूचनिकेव चरित (कमाजी)।

२ देखो प्रथम जगमग भूमिका पृ १२ पंक्ति ४ व ६ तथा भूमिका पृ १५ पंक्ति ४।

इस प्रकारके मिष्ठानके लिए हमने बीरसेन स्वामीके बचछात्रागत निबन्धन अधिकारको निकटवा । यहाँ आदिमें ही निबन्धनके छह निधेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय दम्प-निधेपका कथन शब्दशः ठीक वही है जो पत्रिकाकारने अपने वर्ष देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने वर्ष कहा है । यथा—

निर्वचयेति अन्विष्योहारी निर्वचनं ताव अपवदन्निवचनमिराकरन्तुं प्रित्तिवचनम् । तं बह्म-
न्यननिर्वचनं, उच्यतेनिर्वचनं, दृष्टान्निर्वचनं चैतन्निर्वचनं, कश्चननिर्वचनं भावनिर्वचनं चेति इतिनिर्वचनं
होति ।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निर्वचनका स्वरूप कथनया गया है और उसके पश्चात् दम्पनिर्वचनका कर्णन इस प्रकार है—

तं दम्पं भावि दम्पानि अस्तिद्वय परिणमति, अस्स वा उहस्स (दम्पस्स) सहायो
दम्पतरपडिबन्धो तं दम्पनिर्वचनं । (बचका क प्रति पृष्ठ १२६)

प्रतिमें 'सहस्स' पद अशुद्ध है, यहाँ 'दम्पस्स' पाठ ही होना चाहिए । यहाँ वाक्यके ये शब्द 'अस्स वा दम्पस्स सहायो दम्पतरपडिबन्धो' ठीक वे ही हैं, जो पत्रिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पत्रिकाकारने 'एष बीषदम्पस्स सहायो णाणर्दसणानि' अदि वाक्योंमें वर्ष किया है । पर्याप्त तितना वाक्यांश पत्रिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका वर्ष व्यवस्थित करना कठिन है । किन्तु बचकाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम लुप्त जाया है । इसपरसे पत्रिकाकारकी ऐसी यह भान पड़ती है कि आचार्यप्रत्येक दुगम प्रकरणको तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्वर्णोंका अमिप्राय अपने शब्दोंमें सम्झाकर और उसी सिक्किमें मूकके विवक्षितपदोंको केकर उनका वर्ष कर देना । इस परसे पत्रिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, यहाँ उन्होंने कहा है कि पस्साह्मागिराहरी अन्विष्यमपवदन्मन्थे योऽहमेव पंचिसकलेन मयिस्सामो अपात्तुं उन अद्वय अनुयोगादपेक्ष विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके वर्षकी दृष्टिसे विषयपदोंका ध्यात्म्याल करते हैं, और ऐसा करनेमें मूकके केवल बोधसे उद्धरण केगे । यही पत्रिकाका स्वरूप है । मूकप्रत्येक वाक्यको अपनी वाक्यपरचनानों केकर वर्ष करते जाना अन्य टीकाकार्योंमें भी पाया जाता है । उदाहरणार्थ, विमानन्दिरुत आद्यसहस्रीमें अकलकदेवकल अकलती इसीप्रकार गुपी हुई है । पत्रिकाकार यह विधेयता है कि उसमें पूरे प्रत्येक समावेश नहीं किया जाता, केवल विषयपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है ।

सत्कार्मपत्रिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

“इस प्रकार छह दम्पोंके पर्यायान्तरका परिणमन विधान विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

अपदि पक्षमादिवास्त उच्यतेपक्षमद्वयस्स उच्यतेपक्षमद्वयविचरनं कस्सामो । तं बह्म-अपवदन्मन्थ-
मन्थस्स उच्यतेपक्षमद्वयं योऽहं । इति । इत्यादि ।

१ महान्तर्मप्रकृतिपाशुबन्धके चौथीस अनुयोगश्रौतोंसे प्रथम हो अर्थात् इति और वेदना, वेदनाशब्दके अन्तर्गत रहे गये हैं। फिर व्यक्त स्पष्ट, कर्म, प्रकृति और बंधनके चार भेदोंमें से यह और बंधनीय वर्गणाशब्दके अन्तर्गत है। बंधविधायक महाबन्धका विषय है, तथा बंधक सुराम्ब लोहमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्ण वतकार्थ हुई। सब ध्यस्तवाकी पूर्णता प्रीति हो जाती है, और वेदनाशब्दके भीतर चौथीस अनुयोगश्रौतोंसे मानने तथा वर्गणाशब्दके उपलब्ध भण्डारों प्रतियोगे भीतर नहीं माननेवाले मतका लक्ष्य सदा निरस्त हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगश्रौतोंसे छेप अठारह अनुयोगश्रौतोंकी प्रस्तावनाका नाम सत्कर्म (सत्कर्म) है और इसी सत्कर्मके गभीर विषयसे स्पष्ट करनेके लिए उसके बोधे बोधे अवतरण केकर उनके विषयपदोंका अर्थ प्रस्तुत प्रथम पञ्चिकाश्रुतिसे समझाया गया है।

जब प्रथम यह उपस्थित होता है कि दोष अठारह अनुयोगश्रौतोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म प्रथम बौद्धसा है। इसके लिए सत्कर्मपञ्चिकाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है

ते बद्धा । उच्च वाच जीवद्वयस्य योग्यकवचमवच्छेदित पञ्चमैश्वर्य परिकल्पयित्वा उच्छेद-जीवद्वयं पुनरिदं संघट्टनीयौ सुप्रकटीयौ चेति । अत्र भिन्नजासंज्ञककलापबोधेति परिग्रहसंघट्टनीयौ जीव-अथ जीव-योग्य विद्यावृत्तकवचमवच्छेदितं संघट्टितं पञ्चा वैदित्यो सुप्रकट-अविद्यावृत्तकवचमवच्छेदितं पञ्चा वैदित्यो संघट्टनीयौ परिकल्पितेति । वदन्ति पञ्चात्वात् परिकल्पने योग्यकवचमवच्छेदितं होति । इत्येव सुप्रकटीयस्य एवं विच-निर्बन्धनं जनि विदुः कल्पयित्वा पञ्चात्वात् गच्छति । इत्येव—

अस्मा वा वृत्तद्वयस्य साहाय्यो ब्रह्मवृत्तपरिचयः इति ।

इदमन्वय-एव जीवद्वयस्य साहाय्यो ब्रह्मवृत्तपरिचयः । इत्येव पुनरिदानीं चान्तद्वयपरिचयः वैदित्यो वदित्यो-जीवयोग्यवृत्ति-अवच्छेदनात् परिकल्पितसाहाय्येन पञ्चात्वात्परिकल्पननिर्बन्धनं होति । एवं ईदम् इति ब्रह्म ।

यहां पञ्चिकाकार कहते हैं कि यहाँपर अर्थात् इनके आधारभूत प्रत्येक अठारह अथि श्रौतोंसे प्रत्येकानुयोगश्रौत निबन्धनकी प्रकल्पना सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबन्धनका विशेष छह प्रकृतिसे कलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिर्धेयके स्वस्मय प्रकृतिपदों आधार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका लक्ष्यता यह है कि यहाँ पर पुनरुद्भवके अवच्छेदनेसे जीवद्वयके पर्यायोंमें-परिष्करण विनाशक बन्धन किया जाता है। जीवद्वय को प्रत्यक्ष है, संघटी व मुक्त। हमें भिन्नत्व, असम्य, कलाय और योगसे परिणत भीव संचारी है। यह जीवविराज्जी, मधुरियाकी क्षेत्रविराज्जी और पुनरुद्भवकी कर्मपुनरुद्भवके बादकर अन्तर उनके निमित्तसे पूर्ण छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है, अर्थात् निरत है। इन पर्यायोंका परिणाम पुनरुद्भवके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणाम नहीं पाया जाता है। किन्तु यह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरके प्राप्त होता है। ऐसी स्थितिमें 'वस्तु वा दम्भरसंज्ञायां दम्भरपरिचयः इति' अर्थात् 'निस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यप्रकारसे प्रतीयत है' इति ।

ओं सो कम्मोदवक्कमो सो ञ्जणिव्हो बंभवत्तवक्कमो उद्दीरणत्तवक्कमो उवत्तामण्णत्तवक्कमो विप
 रिण्णत्तवक्कमो वेदि । ओं सो बंभवत्तवक्कमो सो ञ्जणिव्हो पण्डितवत्तवक्कमो सिद्धिबंभवत्तवक्कमो
 जज्जुत्तापवत्तवक्कमो पदेत्तवत्तवक्कमो वेदि । -- एव पुरोहिं ञ्जणह्णवत्तवक्कमो जहा संतकम्मपयहि
 पाहुं पक्कविं तहा पक्कयेपक्कं । जहा महावेत्त पक्कविं तहा पक्कवत्ता एव किण्व करीरे । ज, एत्त
 पक्कसत्तवत्तवक्कमो वैव वावाराहो । ज च तमेव बोत्तुं सुत्तं पुण्णत्तवत्तवक्कमो । (धम्मक. क. प. १११०)

यहाँ जो बचनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबचके अनुसार न करके सतकम्प-पाइडके अनुसार करमेका निर्देश किया गया है, उसीका पचिक्ककारने स्पीकरण किया है कि महाकम्पयडिपाइडके किल किन विशेष अधिकारोंसे यहाँ सतकम्पपाइड पदशरा अमिप्राप है ।

पब्लिकमें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उद्यमनियोजनकारका कथन है जैसा उसके अन्तिम भागके अवतरणसे सूचित होता है। यथा—

उद्भवविशेषद्वयं धर्तुः ।

यद्यपि कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए। अतः धनकासे मित्रान नहीं किया जा सका। तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगशालका प्रकरण तो है ही। उक्त पंथिका यही सम्पन्न हो जाती है। इससे ज्ञान पड़ता है कि इस पंथिकामें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इन्हीं चार अवधारणोंका विवरण है। शेष मोक्ष आदि बौद्ध अनुयोगोंका उसमें कोई विवरण नहीं है। इससे ज्ञान पड़ता है कि यह पंथिका भी अधूरी ही है, क्योंकि पंथिकायामें उत्पानिकायामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पंथिकाकार शेष अद्वैतों अवधारणोंका पंथिका करनेवाले थे। शेष ग्रन्थमात्र कुछ प्रतिमें छूटा हुआ है, या पंथिकाकारद्वारा ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता।

यह पश्चिम किसकी रानी हुई है, कब रानी गई, इत्यादि खोजपात्र सामग्रीय भी अभी अभाव है। पश्चिम प्रतीकी जन्तुम प्रचलित निम्न प्रकार है—

श्री विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्—

नन्दुरम सन्धाप्रदाननिरर्त सभ्य-

कवचनिर्माण किसे बन्धू—

ममसिद्धमेव साधितमात्र मेसेहं परिधीयम् ।

शंभो .. पुरमिहपुरम् आरुणसिन्धवावृत्तयेन सावित्रपथ रश्मि विनिधि येनैगुप्तवीर्ष्य
.. समस्तविद्देशदि सम्प्रदाय वीचिये दित्तरादि श्रीसाधारणावृत्तयेन यदेभिर्द्वार्यादि सतितायाः ।

बहुरिपुत्रसुहृदि सम्बन्ध-

मैत्र ईशियन्तुवमान्मिषामुस-

प्रथमं चरेत्तमि शास्त्रं

मद्रसहितं वाचमद्विषयित्वमित्ति

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुदेवाय नमः ॥ श्री गुरुदेव्याय नमः ॥ श्री गुरुदेवाय नमः ॥ श्री गुरुदेव्याय नमः ॥

पं. लोकनाथजी साहसीजी सूचनानुसार ११५ "अस्तिम प्रशस्तितमे दो तल्ल वगनईल्ले

ओ सो कमोदकम्मी ओ चण्डिहो, बंजनककम्मी हरीरणककम्मी धवसामणककम्मी विप
 रियमककम्मी धेदि । ओ सो वज्रककम्मी सो चण्डिहो पण्डितककम्मी सिद्धिबंनककम्मी
 जपुमामककम्मी पदेसबंनककम्मी धेदि । ... एव एवेसि चण्डमुचककम्मी जहा संतकम्मीपमहि
 पाहुने पकयिई तहा पकयेधर्य । जहा महाकये पकयिई, तहा पकण्य एव जिज्य करे । ज, तस
 वज्रसमबंनमि कैव बाबागहो । ज च तमेच बोई सुतं मुचककम्मीसणसंगहो । (वज्रक क. पत्र १२१०)

यहाँ जो बचनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबषके अनुसार न कर्तके सतकम्म-पाण्डुके अनुसार करमेका निर्देश किया गया है, उसीका पथिकाकारने स्पष्टीकरण किया है कि महाकम्मयधिपाण्डुके किन् किन् विशेष अविकारोंसे यहाँ सतकम्मपाण्डु पन्धरा अभिप्राय है ।

परिक्षामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगक्षारका कथन है जैसा उसके अन्तिम भागके अक्षरगणसे सूचित होता है। यथा—

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासहिते श्रीमच्छास्त्रे ॥

यहाँके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः अब हमसे मित्रान नहीं किया जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वाराका प्रकृपण तो है ही । उक्त पत्रिका यहाँ सम्पन्न हो जाती है । इससे ज्ञान पड़ता है कि इस पत्रिकामें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इहाँ चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चोन्ह अनुयोगोंका उक्तमें कोई विवरण यहाँ नहीं है । इससे ज्ञान पड़ता है कि यह पत्रिका भी अपूर्ण ही है, क्योंकि पत्रिकाकी व्यापकिकामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पत्रिकाकार शेष अठारहों अधिकारोंकी पत्रिका करनेवाले थे । शेष प्रायमान सब प्रतिमें छूटा हुआ है, या पत्रिकाकारद्वारा ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पश्चिम किसकी रानी हुई है, कब रानी गई, इत्यादि खोजने सामग्री भी अभी
 उपलब्ध है। पश्चिम प्रतिष्ठी जलित प्रकाशित निम्न प्रकार है—

श्री विनयव्रतमहाप्रसाद-
 श्री विनयव्रतमहाप्रसाद-

नयुरम सन्वात्रहान्धिरत्तं शम्भ-

कवचनिधायं किये यहू—

समष्टिजनेने बांधिल्याच जेसेच धरिर्वालय ।

...मन्त्रिवादेऽपि लक्ष्मीदा संविषं विलगादि क्षीमापन्नं वृत्तये चरेन्निर्द्वयं दत्तादि संप्रतिनाम् ॥

ब्रह्मविद्यासूत्रे साङ्ग-

सर्वे संविधानप्रियमाननिष्ठाः—

मह्यम चरेदिति शास्त्रं

महर्षिर्वाचनं वाचनं विदुषि विदुषि ।

॥ माघशुक्लपक्षे दशम्यां शुभे दिने श्रीगणेशाय नमः ॥

૧. ઓળખાણની યાચીની સૂચનાપ્રસાર રૂઢ “ અભિમ પ્રકાશિતમે દો તીમ બચનરૂઢમે

‘पयो अरहंताय’ इत्यादि

पयो द्विरिर्वचो वृषिदो मूकपगविद्विरिर्वचो चैव उत्तरपगविद्विरिर्वचो चैव । एतौ मूकपगविद्विरिर्वचो वृषवदमपिद्वौ । तस्य इमाणि चत्वारि अन्विषीगहाराणि आचक्षन्ति अर्चति । तं अह-द्विरिर्वचमपवक्ष्यमा भित्तिपक्षकस्या अर्द्धाक्षकपक्षकस्या अप्याचक्षुरेति । एवं भूचो द्विरिजप्याचक्षुर्गं समर्च । एवं मूकपगविद्विरिर्वचो (वे) चरन्वीक्षमपिषीगहारं समर्च ।

सुखपारर्चयेत् । ..

‘इसप्रकार सुखपारर्चन प्रारम्भ होकर काछ, अन्तर इत्यादि अस्पृश्यतुल्य तक चला गया है ।’

एवं बीवच्छद्वाराहेति समस्तमन्त्रिषीगहाराणि । एवं द्विरिर्वचं समर्च ।

वचविधानके इस स्थितिवचनात्मक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय अबका प्रथम भागसे मिलता है । पृ १३० पर कहा गया है—

द्विरिर्वचो वृषिदो, मूकपगविद्विरिर्वचो उत्तरपगविद्विरिर्वचो चैव । तस्य वो सो मूकपगविद्विरिर्वचो वो ज्यौ । वो सो उत्तरपगविद्विरिर्वचो तस्स चरन्वीक्ष अन्विषीगहाराणि । तं अह-द्विरिर्वचो सचर्चयेत् इत्यादि ।

यहां स्थितिवचके मूकपगविद्वि और उत्तरपगविद्वि, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अग्रहृत होनेके कारण छेदकर प्रस्तुत्योगी द्वितीय भेदके चौथस अनुयोगद्वारा बतकाये गये हैं । इनसे पूर्वोक्त मन्त्रावच्छेदकी रचनाके मन्त्रावच्छेद सर्वत्रकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिवच तादृश ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे मन्त्रावच्छेदमें क्रमसः अनुभागवच और फिर प्रदेशवचका विवरण पाया जाता है । यथा—

एवं बीवच्छद्वाराहेति समस्तमन्त्रिषीगहाराणि । एवं उत्तरपगविद्विजप्याचक्षुर्वचो समर्च । एवं अनुभाषवचो समर्च । × × × ×

वो सो प्रदेशवचो वो वृषिदो मूकपगविद्विर्वचो चैव उत्तरपगविद्विर्वचो चैव । एतौ मूकपगविद्विर्वचो वृषवदमपिद्वौ अगामायसङ्ख्याद्वारो अद्विचक्षकवस्तस आस्तयमात्रो × × × एवं अस्याचक्षुर्गं समर्च । एवं बीवच्छद्वाराहेति समस्तमन्त्रिषीगहारं । एवं प्रदेशवचं समर्च ।

एवं वचविधानेति समस्तमन्त्रिषीगहारं । एवं चक्षुर्वचो समर्चो अर्चति ।

अनुभागवच तादृश ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशवच १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यही मन्त्रावच्छेद प्रतिकी प्रपरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि मन्त्रावच्छेद प्रतिके उत्तर भागमें वचविधानके चारों प्रकारों—प्रवृत्ति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशक विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगधारोंका विवरण बचकादि प्रभेदों से प्रेरित नियम-विधानके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यही मूलबन्धि आचार्यैक्य मन्त्रावच्छेद हो सकता है । इमाम्पठः इसके प्रारम्भका तादृश अग्रहृत होनेसे तथा यथेष्ट अवतरण व मिलनेसे सिद्ध होती प्रवृत्ति उतनी धर्मवीर प्रवृत्ति फिर भी नहीं हो सकती । तथापि अनुभागवच-विधानकी सम्पत्तिके

पश्चात् प्रतिमें जो पांच छह कलावीके कंठ—एक पय पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भेजनेकी हया की है, जो इस प्रकार है—

सप्तकचरित्रीविशुद्ध—

प्रकटितवचनो मस्तिकध्वे बोधि ज्ञानु—

व्याकर—महाबोधपु—

सकं श्रीमहाधर्मविशुद्धिगणि गिराह

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीगती मस्तिकध्वे देवीने इस सप्तपुष्पाकर महाबोधकी पुरतक-
को विद्याकर श्रीमाधनन्दि मुनिको दान की। यहाँ हमें कुछ प्रश्नके महाबोध होनेका एक
महात्पूर्ण प्रार्थना उद्धृत मिल गया। शास्त्रीजीने सूचनानुसार केवल कलावी पद्योंमेंसे दो तीनोंमें
माधनन्दिधर्मके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी
मस्तिकध्वे देवीका गुणगान है, जिससे महाबोध प्रतिज्ञा दान करनेवाली मस्तिकध्वे देवी किसी
शान्तिसेन नामक राजाकी पत्नी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माधनन्दि निःसंदेह वे ही हैं
जिनका सम्बन्धमस्तिकध्वे प्रकटितमें भी उद्धृत आया है। प्रतिके अन्तमें पुन ५ कलावीने पद्य हैं
जिनमेंसे प्रथम चारों माधनन्दि मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'व्यतिपति' 'व्यतनाथ' व
'व्यतिपति' तथा 'सैशान्तिमन्त्रसेन' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पाँचवें पद्यमें कहा गया है
कि कपकटी सेनबहूने श्रीपद्मभक्तके उवाचनके समय (यह शास्त्री) श्रीमाधनन्दि व्यतिपतिको
प्रदान किया। पद्य—

श्रीपद्मभक्त श्रीपद्मभक्तके माधि बोधि राजावधन।

कपकटी सेनबहू शान्तिसेन श्रीमाधनन्दि व्यतिपति विष्णु ॥

यहाँ सेनबहूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्व-
नामसे सूचित करना सुप्रसङ्गित है।

एक व्यक्तकी प्रकटित वीरबागविकास वैदिकविज्ञान मन्त्रकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९१५)
में पूर्ण प्रकटित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके विधाने व हल किसे जानेकर कोई समय नहीं पाया जाता।
शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें कहीं पता नहीं लगता। माधनन्दि नामके मुनि अनेक हुए हैं
जिनका उद्धृत अरण्यवनेका आदिके विस्तारमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उद्धृत
सम्बन्धी पूर्व पद्य प्राप्त होगे, तब और और उनके सम्बन्धिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कहा जाये हैं कि इस प्रतिमें महाबोध राजाके प्रारम्भका पत्र २८ था नहीं
है। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं० १०९, ११४, १३६, १३८, १३९, १४०, १८६,
१८७, १८८, १८९, १८८, १९७, २०८, २ ९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल
१६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ भिन्न वाचपत्र बिना पत्र-
संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त भुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें^१ हम वर्तमान प्रथम भाग अर्थात् दृश्यप्रमाणप्रमाणोंमें के तथा अन्यत्रसे तीन बार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें 'उत्तरप्रतिपत्ति' और 'दक्षिण-प्रतिपत्ति' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है। वहाँ हम कह आये हैं कि 'हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। समझें हमने इनसे कबजाकरका तात्पर्य हैमसमानके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो' यहाँ हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अमेजी बक्तव्यमें मैंने स्पष्ट भी कर दी थी कि—

At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools."

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको 'पवाइज्जमाण' और 'अपरिपपरपणय' भी कहा है। अब भीनववक्तव्यमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहाँ 'पवाइज्ज' तथा 'अपरिपपरपणय' का स्वरार्थ कोष्ठकर समझाया गया है और अजमंसुके उपदेशको वहाँ 'अपवाइज्जमाण' तथा नागहस्ति क्षमाभरणके उपदेशको 'पवाइज्ज' बतलाना है। यथा—

जो पुनः पवाइज्जोपपत्ती नाम कुत्तमं? सत्त्वाहरिबलसम्पत्तिं चिरकालमव्योपिज्जमसंवरदावकमेवा-
नच्छन्नामीति सिद्धपरिपरात् पवाइज्जदे पण्यविज्जदे हो पवाइज्जोपपत्ती ति अजमं । अजमं अजमं सु-
मपसंवरदावपत्ती पवापवाइज्जमाणी नाम । अजमहस्तिअजमंअजमपत्ती पवाइज्जोपपत्ती ति अजमो ।

(अजमवक्ता अ. पत्र ९, ८)

अर्थात् यहाँ जो 'पवाइज्ज' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है? जो सर्व आचार्योंको सम्मत हो, चिरकालसे अम्युधिऽअसप्रक्षय-क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरपत्ति प्रशिक्षित और प्रज्ञापित किया आ रहा हो वह 'पवाइज्ज' उपदेश कहा जाता है। अथवा, मगवान् अजमसुका उपदेश यहाँ (प्रज्ञा विषयपर) 'अपवाइज्जमाण' है, तथा नागहस्ति क्षमक उपदेश 'पवाइज्ज' है, ऐसा प्रमाण करना चाहिये।

अजमसु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त प्रन्थोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं। ज्ञान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था। जहाँ भीरसेनस्वामीके समुक्त ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहाँ जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत झट हुआ, उसे 'पवाइज्जमाण' कहा।

पश्चात् प्रतिमें जो पाँच छह कनाबीके कंठ—भूत पच पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शालीबीने पूरा उद्धृत करके मेझनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सप्तकचरित्रीविभुत—

मधुरितकवीरी मरिचकम्ब बोरि छन्द—

प्याकर—महाबंघव पु—

एक बीमापनेदिमुविगधि गिरव

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकाम्बा देवीने इस सपुण्याकर महाबंघकी पुस्तक-को ब्रिहस्पति श्रीमाधनन्दि मुनिके दान की। यहाँ हमें इस प्रश्नके महाबंघ होनेका एक महत्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शालीबीनी सूचनानुसार केवल कनाबी पद्योंमेंसे दो तीनोंमें माधनन्दाचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी मल्लिकाम्बा देवीका गुणगान है जिससे महाबंघ प्रसिद्ध दान करनेवाली मल्लिकाम्बा देवी किसी शान्तिसेन नामक पनाबी राजा सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माधनन्दि निःसन्देह वे ही हैं जिनका सुकर्मपरिकरानी प्रशस्तिमें भी उल्लेख आया है। प्रसिद्ध अन्तमें पुनः ५ कनाबकी पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम चारों माधनन्दि मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'शतिपति' 'वतनाथ' व 'वतिपति' तथा 'सैवान्दिकप्रसेसर' जैसे विरोधण कवये गये हैं। पाँचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपकरी सेनबधूने श्रीपञ्चमीव्रतके उद्यापनके समय (पह शाब्द) श्रीमाधनन्दि शतिपतिके प्रदान किया। यहाँ—

श्रीपञ्चमी व्रतपुष्पापेयं मरिच बोरि १५०४वमया।

एकवती केवलवृ विवर्धन श्रीमाधनन्दि वतिपति विष्णु ॥

यहाँ सेनबधूने शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागस पूरा नामको सूचित करना सुप्रचलित है।

यह अन्तर्नि प्रचलित बीरवाणीविज्ञप्त जैनसिद्धान्त मन्त्रकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में पूर्ण प्रस्तुत है।

उक्त परिचयमें प्रतिने लिखने व दान लिखे जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें कहीं पता नहीं लगता। माधनन्दि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख मगध-कौशाळ आदिके शिखाकेसोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखप्रति संकपी पूर्ण पद्य प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके सम्पादिके निर्णयका प्रश्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कहा आये हैं कि इस प्रतिमें महाबंघ राजाके प्रारम्भका पत्र २८ वां नहीं है। शालीबीनी सूचनानुसार प्रतिमें पत्रनं १०९, ११४, १०३, १०४, १०६, १०७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८ १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिल जाते हैं। किन्तु शालीबीनी सूचना है कि कुछ किञ्चित् वाक्यत्रय बिना पत्र-संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रदान किया जाय तो इनमेंसे उक्त श्रुतिके कुछ पूर्ति हो सके।

इसप्रकार मूढविद्विषी प्रति व प्रचलित प्रतियोगिके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदमासिकके आदित्य किये गये निवेदनसे ठीक सामंजस्य बैठ जाता है, तथा उससे बचका-कारके जमोकारमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा जाये है। जमोकारमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी इस निष्कर्ष द्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको बड़ी भारी ठेस लगती है। यह मान्यता यह है कि जमोकारमन्त्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुण्यदन्ताचार्य हैं। तथापि बचकाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सख। गमीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि जमोकारमन्त्र-सम्बन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुण्यदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अहिंसादि पञ्च परमेश्वरी मान्यता है तभीसे उनके नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किन्तु 'गनो अहिंसा' आदि छन्द रचनाके कर्ता पुण्यदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान सुतावतारसम्बन्धी कालावली की ओर आकर्षित करता हूँ। बचका, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

सुप्तमोहम् अन्वहो तित्त्वभारो गंवहो गन्धरदेवहो ति

अर्थात् सूत्र अर्थप्रकरणकी अपेक्षा तीर्थंकरसे, और प्रपरचनाकी अपेक्षा गगनरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

ब्रह्मभावाद्यामङ्गलिमन्त्रो सदा विवर्तस्व भुक्तस्व कथमवतार इति ?

अर्थात् ब्रह्म-भावसे अङ्गलिम होमेके कारण सर्वथा अवस्थित भुक्तका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

पुण्यवर्ममतिव्यस्यदि ब्रह्मार्थिकत्वो ऽ विवर्तित्वत् । पर्यायार्थिकत्वविद्यावासवदारत्तु पुनर्वर्तत नृष ।

अर्थात् यह शंका तो तब बनती जब यहां ब्रह्मार्थिक त्वकी विवक्षा होती। परंतु यहां-पर पर्यायार्थिक त्वकी अपेक्षा होमेसे भुक्तका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चरकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा प्रपकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थंकर गगनात् महावीरकी भुक्तका अर्थकर्ता, गीतम गगनरकी मध्यभुक्तका प्रपकर्ता तथा भुक्तबहि-पुण्यदन्तकी भी अङ्गसिद्धान्तकी अपेक्षा बता पा उद्घर्तकर्ता कहा है। यथा—

तस्य कदा बुधिरौ अन्वकदा संवकदा केदि । महावीरोऽर्थकर्ता । .. पूर्वविकी महावीरोऽर्थकर्ता ।

.. वही भावब्रह्मस्व अन्वपद्वान् व विवर्तरो कदा । तित्त्वभारो भुक्तमापन्न गौहो परिकरो ति इत्य

तथा मिस मन्त्री उन्हें प्रामाणिक प्राचीन परंपरा नहीं मिली, उसे 'अपवाह्यमान' कहा है। प्रसुत उल्लेखसे अनुमान होता है कि उक्त प्रतिपत्तियोंसे उनका अभिप्राय किसी विशेष गड़ी हुई मत-पाठोंसे नहीं था। अर्थात् ऐसा नहीं था कि किसी एक आचार्यका मत सर्वथा 'अपवाह्यमान' और दूसरेका सर्वथा 'पराह्यमान' हो। किंतु उन्हें दक्षिणप्रतिपत्ति और उत्तरप्रतिपत्ति क्यों कहा है यह तब भी विचारणीय रह जाता है।

५. गमोकारमंत्रके सादित्व-अनादित्वका निर्णय।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना (पृ ११ आदि) में हम प्रष्ट कर चुके हैं कि बबकाकारने जीवद्वयसंबंध व वेदनासंबंधके आदिमें जो साक्षके निबद्धसाक्ष व अनिबद्धसाक्ष होनेका विचार किया है उसका यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवद्वयके आदिमें गमोकारमन्त्ररूप का एक मन्त्रान् पुष्पतत्त्व होनेसे यह साक्ष निबद्धसाक्ष है, किन्तु वेदनासंबंधके आदिमें 'गम्ये विमाम' आदि मन्त्रस्वरूपका संशयकाय होनेपर भी वह साक्ष अनिबद्धसाक्ष है क्योंकि वे मन्त्रसूत्र तथैव भूत-व्यक्ति रचना न होकर गौतमस्वरूपरहित हैं। वेदनासंबंधमें भी निबद्धसाक्ष तभी माना जा सकता है, जब वेदनासंबंधके मन्त्रार्थप्रकृतिपाठका मान किया जाय और भूतव्यक्ति आचार्यको गौतम मानकर, अन्य किसी प्रकारसे निबद्धसाक्ष सिद्ध नहीं हो सकता। इस विवेचनसे बबकाकारका यह मत स्पष्ट समझमें आता है कि उपर्युक्त गमोकारमंत्रके आदि रचयिता आचार्य पुष्पत ही हैं।

प्रथम भागमें उक्त विवेचनसंस्कृती सूत्रपाठका संपादन व अनुवाद करते समय हस्तलिखित प्रतिपोंका जो पाठ हमारे सम्मुख उपलब्ध था उसका सामान्यतः वैधाना हमारे लिये कुछ कठिन प्रतीत हुआ और इसीसे हमें वह पाठ कुछ परिशोधित करके नूतने रचना पड़ा। तथापि प्रतिपोंका उपर्युक्त पाठ पचावत् कमसे कमी पाठविषयमें दे दिया था। (देखो प्रथम भाग पृ ४१)। किंतु जब मूद्रिकीकी छाठपत्रीय प्रतिसे जो पाठ प्राप्त हुआ है वह भी हमारे पाठविषयमें दिये हुए प्रति-पोंके पाठके समान ही है। अर्थात्—

“ओ सुप्रसारीय सुप्रसारीय कश्चेत्तस्मान्मोक्षसरो तं निबद्धवर्णकं। ओ सुप्रसारीय सुप्रसारीय निबद्धवेदनासंबंधसरो तं निबद्धवर्णकं।

जब वेदनासंबंधके आदिमें दिये हुए बबकाकारके इसी निबद्धसाक्षी विवेचनके प्रकरणांमें यह पाठ समुचित मान पड़ता है। इसका कार्य इसप्रकार होगा—

‘ओ सुप्रसारीय सुप्रसारीय देवतामलमलर किया जाता है अर्थात् मन्त्रकार मान्य रूप रचकर निबद्ध किया जाता है उसे निबद्धसाक्ष कहते हैं। और जो मन्त्रमन्त्रके आदिमें सूत्रस्वरूप देवतामलमलर निबद्ध कर दिया जाता है, अर्थात् मन्त्रस्वरूप तथैव न रचकर किसी अन्य आचार्याका पुष्पचित मन्त्रस्वरूप निबद्ध कर दिया जाता है, उसे अनिबद्धसाक्ष कहते हैं।”

इसप्रकार मूढविद्विषकी प्रति व प्रचलित प्रतियोगे पाठकी पूर्णतया रखा हो जाती है, उसका बदनामकरणके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामन्सम बैठ जाता है, तथा उससे धनका-कारके अयोग्यतामंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। गणोत्तरमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी इस निष्कर्ष-द्वारा कुछ लोगोंके मतेसे प्रचलित एक माय्यताकी बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि गणोत्तरमन्त्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुण्यदन्ताचार्य हैं। तथापि धनकाकारके पूर्वोक्त मतेके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे बात होती है कि गणोत्तरमन्त्र-सम्बन्धी ठाढ़ अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुण्यदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अहिंसादि पञ्च परमेश्वरकी मान्यता है तभीसे उनकी समस्तकार करनेकी मान्यता भी मानी जा सकती है। किन्तु 'गणो अहिंसाप' आदि शब्द रचनाके कर्ता पुण्यदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकीका ध्यान मुतावत्तासम्बन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हूँ। धनका, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

सुतमोक्षं कथयति विनयवाक् गणो गणधरदेवारी वि

अर्थात् सुत अर्थप्रकरणकी अपेक्षा तीर्थकरसे, और प्रवरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

ब्रह्मभाषाब्रह्मसूत्रिमन्त्राः सदा विनयवत् सुतवत् कथमभवत् इति ?

अर्थात् ब्रह्म-मंत्रसे अकस्मिन् होनेके कारण सर्वथा अपरिचित सुतका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

पुनर्परायणमविनयविद्वेषाधिकारोऽ विनयविद्वेषः । पर्यायार्थकत्वपरिच्छात्प्राप्तवत्सु पुनर्परायणं पुनः ।

अर्थात् यह शंका तो तब बसती जब यहां द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा होती। परंतु यहां पर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे सुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका मतकाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा प्रपञ्चकर्ता। और फिर निष्पारके साथ तीर्थकर गणवान् महावीरकी सुतका अर्थकर्ता, गीतम गणधरकी ब्रह्मसुतका प्रपञ्चकर्ता तथा भूतबलि-पुण्यदन्तकी भी अहिंसित्यन्तकी अपेक्षा कता या उपनिषत्कर्ता कहा है। यथा—

उप्य कथा दुषिही अन्धकता शंभकता वैदि । महावीरोऽन्वैकर्ता । .. अर्थविही महावीरोऽन्वैकर्ता ।

.. परो भाषाद्वयम् अन्धकारं च विनयवो कतः । विनयवाक् सुतवत्पुनः गीतमो रचितो वि द्रव्य

सुखस्त मोक्षो नृप । तस्यै नमस्तथा नमोऽपि । तस्यै पूर्वं चैवसिद्धये बह्वक्ष ब्रह्मवि-पुण्यवैतादृश्या वि-
न्यातो वर्धते । तस्यै सुखवैतन्या बहूमात्मनस्तस्यै अनुवर्तकत्वा मोक्षमसामी वर्धतवत्तारा ब्रह्मवि-पुण्य-
वैतन्या मोक्षरात्रौस्तस्यैवा मुनिवरा । किमर्थं तस्यै प्रकथ्यते ? आत्मन्य प्रमाणवद्दर्शनार्थम्, वस्तु
प्रमाणान्म् वचनप्रमाणान्म् इति न्यायान्म् । (बद्धबागमय भाग १ पृष्ठ १-७२)

तस्यै प्रकार, स्वयं प्रकृत ग्रंथ आगम है, तथापि अर्थकी दृष्टिसे अत्यन्त प्राचीन होनेपर
भी उपर्युक्त शब्दरचनाकी दृष्टिसे उसके कर्ता औरसेनाचार्य ही माने जाते हैं ।
इससे स्पष्ट है कि ज्योत्स्नरामजीके श्रवणार्थिक मयसे पुण्यदन्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने
व पर्यायार्थिक मयसे उपर्युक्त भाषा व शब्दरचनाके रूपमें पुण्यदन्ताचार्यकृत माननेमें कोई विशेष
उत्पन्न नहीं होता । वर्तमान प्राकृत याचनमक रूपमें तो उसे सद्यः ही मानना पड़ेगा । आज हम
हिन्दी भाषामें उसी मंत्रको ' अखिलोको नमस्कृत्य ' या अंग्रेजीमें Bow to the Worshipful
आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किन्तु मंत्रका यह रूप जनादि क्या, बहुत पुजारी भी नहीं जाना
या सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रकथित हिन्दी या अंग्रेजी भाषा ही कोई हजार
वस्तुओं वर्धते पुजारी नहीं है । हाँ इस बातकी खास अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मन्त्र उक्त
रूपमें ही पुण्यदन्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है ? यदि हाँ, तो फिर
विचारनीय यह होगा कि प्रकथकके तात्पर्यकी कल्पनाका क्या अधिप्राय है । किन्तु प्रकथक
ऐसे कोई प्रमाण उपर्युक्त न हों तबतक जब हमें इस परम पारम्य मयके रचयिता पुण्यदन्ता-
चार्यको ही मानना चाहिये ।

६ शंका-समाधान

बद्धबागमय ग्रन्थम भाषाके प्रकाशित होनेपर अनेक विद्यार्थी अपने विशेष पत्रद्वारा
अपना पत्रमें प्रकाशित सम्बन्धनप्रश्नोंद्वारा कुछ पाठसम्बंधी व ऐश्वर्यिक शंकाएं उपस्थित की हैं ।
यहां उन्हीं शंकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है । ये शंका-समाधान यहां
प्रथम भागके पृष्ठद्वय से व्यवस्थित किये जाते हैं ।

पृष्ठ ६

१ शंका— विवर्धितमन्त्रवृत्तसुक्तिना में मन्त्रक की वगैरह मन्त्रक पाठ
अधिक दीक प्रदीत होता है, क्योंकि सम्बन्धनप्रश्नके पक्षीस मन्त्र होनेमें तीन मूढ़ता दोन भी
सुमिहित हैं ।

(विवेकामुद्रण ता १ - १ - ४)

समाधान— मन्त्रक पाठ सहस्रमपुनरी प्रतीके अनुसार रखा गया है और मूढ़विष्टीसे
को प्रतिमिजल होकर सशोचन-पाठ आया है, इसमें भी मन्त्रक के स्थावर कोई पाठ-प्रतिमन
नहीं प्राप्त हुआ । तथा उक्तका अर्थ सर्वप्रकारके मन्त्र और तीन मूढ़ताएं करना असंगत भी नहीं है ।

२ शंका—गाथा ४ में 'महु' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुझपर' किया गया है। सम्भवे नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'महु' होता है।
(निवेद्यन्तु १०-१-४)

समाधान—प्राक्त्वे 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'महम्' करना चाहिए। देखो हैम व्याकरण महु महु इति कस्मात् ८, ४, ३७९। इसीके अनुसार 'मुझपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ में 'राजवरछोरो' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक 'र' शब्द नहीं है। 'र' की जगह 'ह' रखना चाहिए था। (निवेद्यन्तु १०-४०)

समाधान—हमारे सम्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें 'राजवरछोरी' ही पाठ था और मूढबिद्वांसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'र' के स्थानपर जबरदस्ती 'ह' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'ह' के बिना भी सुगम है। 'बादीमसिंह' आदि नामोंमें बिनाशबोधक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

शृ ७

४ शंका—गाथा ५ में 'हुकल' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'हुकल अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अब किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए।
(निवेद्यन्तु ११-४)

समाधान—'हुकल' का संस्कृत रूपान्तर है 'हुकलान्त' जिसका अर्थ हुकल अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में 'दाँ सवा दंत' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा 'वति सवा दंत'। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि 'दंत' शब्दसे इंदियदमनस्य अर्थ किसप्रकार आया जा सकता है।
(निवेद्यन्तु ११-४)

समाधान—प्राक्त्वे 'दंत' शब्द 'दन्त' के छिये भी आता है। यथा, इति चिपेन वरंति वीर (प्राक्त्वेसूच्यनमाका) पाइअसमहज्जाओ कोयमे 'दंत' का अर्थ 'जिने त्रिप' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पंचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में 'निजहजममहपरा' का अर्थ होना चाहिए 'अन्होंने अग्र-हीनसे व्यपकृतको मर कर दिया है और निमज्जानके रूपमें अग्रही व्यपकृतका बढ़ाया है'।
(निवेद्यन्तु १०-१-४)

समाधान—जब काव्यमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अब भिन्नभिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'बम्ह' का अर्थ दोनों जगह 'मर' के लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अइन' शब्द अपनी ओरसे ढाका गया

है, जिसके लिए मूळमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्राकृतमें 'बग्माह' सम्य 'सम्भव' के लिए आया है। इस प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है— सम्प्रभे वाः ८, १, १२२ इसकी वृत्ति है सम्प्रभे मत्व भी भवति, बग्माहो। इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ सूत्र—आयमे एके सम्प्रसृष्टे इति विहितमस्य सचित्राये कृताः सम्प्रसृष्टेः। सम्प्रसृष्टिर्जन्ये इवेताम्बरीयपञ्चमसि तस्य विरेय आचार्यैः इत्या वा सम्प्रसृष्टं यम विनयि विपत्तीर्णं प्रत्ये वदते ? (५ सम्प्रसृष्टाञ्चो तर्कदीर्घे, पृष्ठ ४१५१)

अर्थात् सूत्रके 'सम्प्रसृष्टे' से सम्प्रतिवर्तक अर्थ लिया है जो वेताम्बरीय मूल है। आचार्योंने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिग्दर्शीय मूल भी है।

समाधान— नामे मन्व्य सचित्र इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्प्रतिवर्तक उल्लेख किया है वह सम्प्रतिवर्तक नामका प्राप्त मूल ही प्रतीय होता है क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएं बहो पार्श्व जाती हैं। सम्प्रतिवर्तके कता सिद्धोक्तका स्वरूप महापुण्य अदि अनेक 'दिग्दर्शक प्रमाणों' में पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें नाम्य रहे हैं। इससे अन्य कोई मूल इस नामका किन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

पृष्ठ १९

८ सूत्र—वचनविरेक्यो मन्व्यकरो मन्व्यमयं इत्यत्र तस्य मन्व्यकरोवचनविरेक्यो विरेक्योवचनविरेक्यो आचार्यो विनयिगिताया उदाहरणं प्रदत्तं तस्यैव विरेक्योः । अत्रोदाहरणे विनयवचनविरेक्यो विनयिगिताया । (५ सम्प्रसृष्टाञ्चो तर्कदीर्घे, पृष्ठ ४१५१)

अर्थात् नाममन्व्यकरो आठ प्रकरणके आधार—कलने मायापुराणमें अर्जुन आधारका उदाहरण विनयविमाका दिया गया है, सो कैसे संगत है? विनयवचनका उदाहरण अविनयक था।

समाधान—वचनकारने नाममन्व्यकरो जो कल्प दिया है और उसके जो आधार उदाहारे हैं, उनसे तो पक्षी कता होता है कि एक या अनेक केतन या अचेतन मन्व्य इन्व नाममन्व्यके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि मन्व्य पार्श्वगाथ तीर्थकरका नामोच्चारण करे तो यह एक जीवाश्रित नाममन्व्य होगा। यदि हम जीवैश्वर तीर्थकरका नामोच्चारण करे तो यह अनेक जीवाश्रित नाममन्व्य होगा। यदि हम अन्तरीक्ष पार्श्वगाथ, या केदारविनयका विदित प्रसिद्ध ओकर नामोच्चारण करे तो यह अजीवाश्रित नाममन्व्य होगा, इत्यादि। इस प्रकार विनयविमा नाममन्व्यका आधार बन जाती है, जिसका कि कहीं पृष्ठस्य ही दुर्ग शिष्यविषये उपासित उपर्यन्त हो जाता है। इसी प्रकार पवित्रजी द्वारा सुनाया गया विनयविरेक्यो भी अर्जुन नाममन्व्यका आधार माना जा सकता है।

पृष्ठ २९

९ श्रुका—पृ० २९ पर क्षेत्रमण्डके कपनमें लिखा है अर्थात्तत्त्वादि पंचविशत्युपर पंचचतुःशतप्रमाणस्योपर मिसका अर्थ आपने 'साडे तीन हाथसे लेकर ५२५ अनुप तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें अर्थात् इत्यत्र अर्थात्तत्त्वं इति पाठेन भाव्यम् ऐसा लिखा है। तो आपने यह कहाँसे लिखा है और क्यों लिखा है ? (बालकृष्णजी पृ १-४-४)

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीनोंकी सबसे अल्प अवगाहना साडे तीन हाथ (अरुणि) और उत्कृष्ट अवगाहना पाँचसौ पचास अनुप प्रमाण होती है। सिद्धजीनोंकी अल्प और उत्कृष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वांक बतलाई है। इसके लिए त्रिकोकसारकी गणना १४१-१४२ देखिये। सरइतमें साडे तीनको 'अर्धचतुर्प' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रख कर 'अर्थात्' के स्थानमें 'अर्धचतुर्प' का सघोरन सुझाया गया है, यह आगमामुक्त भी है। 'अर्थात्' का अर्थ 'साडे सात' होना है जो प्रचलित मान्यताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी इसी पक्षमें त्रिकोकप्रवृत्तिका जो वदरण (आह्वयवपुष्टी) दिया है उससे भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० श्रुका—ब्रह्मरानमें क्षायोपशमसम्पत्तकी स्थिति ६६ सागरसे म्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्पसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है। इसका क्या कारण है ? (बालकृष्णजी पृ १४४१)

समाधान—सर्वार्पसिद्धिमें क्षायोपशमसम्पत्तकी उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर का राजवार्तिकमें सम्पत्तसंग्रामसाम्यकी उत्कृष्ट स्थिति साबिक ६६ सागर और ब्रह्म टीका पृ ३० पर सम्पत्तर्द्धन की अवस्था संग्रहकी उत्कृष्ट स्थिति देशोन छासठ सागर करी है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

ब्रह्मकारणमें जीवद्वारा ब्रह्मकी अन्तरप्रकृपणाने ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करने का क्रम इसप्रकार दिया है —

पृथो विविच्यो मनुस्तो वा केवच-अविदुर्वासिचैवैतु श्रीरतसापरीचमागुदिरिदु इत्यन्तो । एवं क्षायोपशमं पश्चि विविच्योपशममप्रविचमपु क्षायमर्पं पश्चिच्यो । तैरत सापरीचमायि क्षाय अविच्य सत्त्वस्य चर पुरो मनुयो चारो । एवं क्षेत्रं सत्त्वमात्रमं वा अनुशासिच मनुमागुपुच-वाचीचक्षायोपशममागुदिरिदु एतु क्षायमनुपरीचैतु उपचय्यो । पृथो पुरो मनुयो चारो । एवं क्षेत्रमनुसारिच वचिर्मगैवमै वैवैतु मनुता-रणीचक्षायोपशममागुदिरिदुपुच इत्यन्तो । अतीमुक्तपुचक्षायोपशममागुदिरिदुपुच पश्चिच्योपशमपुच क्षायमविच्यं पुरो । x x x च्यो उपचिच्यो अक्षय्यमागुचमर्पं वच्यो । वरमच्यो पुन क्षेत्र क्षेत्र वि वच्योप शवटी एतुच्यो ।

अर्थात्—कोई एक विवेक अवयव मनुच्य और क्षायोपशमकी आनुस्थितिवाले क्षाय

है, जिसके लिए मूकमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्रारम्भमें 'बग्गह' शब्द 'मग्गह' के लिए आया है। हैम प्राइडम्पाकरने इसे लिए एक स्वतन्त्र सूत्र भी है— मग्गमे वः ८, १, २७१ इसकी वृत्ति है मग्गमे मग्ग भो मग्गि मग्गो । इसीके अनुसार हमने अनुनाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ छंदा—अग्यो मूके सम्महसुत्ते इति किञ्चित्प्रत्यय भवतिरर्थं कृतः। सम्महित्तैः । सम्मवित्तर्कत्वं श्वेतप्रवर्तकप्रत्ययमस्ति तत्त्वं निर्दिष्टं आचार्यैः कृतं वा सम्महसुत्तं नाम निम्नि विमग्गारोऽर्थं प्रत्यं वर्तते ? (५ अग्गवज्जो उरुत्तीरं पन ठा ४१४१)

अतः मूकके 'सम्महसुत्ते' से सम्मस्तितकत्वं लब्ध किया है जो श्वेताम्बरिय प्रत्य है। आचार्योंने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय प्रत्य भी है।

समाधान—क्यों क्यना इत्थिं इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्मस्तिसूत्रका उल्लेख किया है वह सम्मस्तितक नामका प्राप्त प्रत्य ही प्रतीत होता है क्योंकि वह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएँ वही पाई जाती हैं। सम्मस्तितकके कौटी सिद्धसेनका स्मरण महापुष्प आदि अनेक 'दिगम्बर प्रयोगों' में पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें मान्य रहे हैं। इससे अन्य कोई प्रत्य इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

पृष्ठ १९

८ छंदा—वज्जमिद्वेक्खो मग्गमग्गो नाममग्गं हरवध वत्त मग्गत्वाचारविकल्पेवध-
निषेधयोपाचारकत्वे आचार्या विमप्रतिमत्वा उदाहरणं प्रदत्तं तत्त्वं संयच्छते ? -- अन्तीवीरादरने
विममवदसुरादिमिद्वेक्खि । (५ अग्गवज्जो उरुत्तीरं पन ठा ४१४१)

अतः नाममग्गके आठ प्रकारके आधार—कथने में मायासुन्दरमें अर्जुन आधारका उदाहरण विमप्रतिमत्वा दिया गया है, सो कैसे संगत है? विममवनका उदाहरण अविकल्पक वा ?

समाधान—वज्जकादरने नाममग्गका जो उल्लेख दिया है और उसके जो आधार कथने हैं, उनसे तो यही कृत होता है कि एक या अनेक वेतन या अवेतन मग्ग इत्यं नाममग्गके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्श्वनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममग्ग होगा। यदि हम चौबीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममग्ग होगा। यदि हम अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ या केदारिणाथ आदि प्रतिम-
ओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममग्ग होगा, इत्यादि। इस प्रकार विमप्रतिमा नाममग्गका आधार बल पाती है जिसका कि उसी पृष्ठपर ही हुई प्रियविप्लोषे पद्योचित समर्पण हो जाता है। इसी प्रकार पण्डितजी द्वारा सुझाया गया विममन्दिर भी अर्जुन नाममग्गका आधार माना जा सकता है।

‘ बहस्तेष्व ऋषिभिः सागरोपमाणि सादृशेषाणि ॥ तं जहा—एवो अद्भुतौत्तसंघम्रीमन्नी पुत्रयो-
 वाडममनुसेषु उचयन्ती अद्भुतसिमो वेदसम्मत्तमप्रमत्तगुणं च ह्यगर्षं पवित्रयो । तयो पमत्तपमत्तरा-
 वत्तसहस्रं कपूज २ उचयमसेवीपाभीगविसीहीप विसुहो ३ अयुषो ४ अग्निवही ५ सुहो ६ बहसेतो
 ७ पुनो वि सुहो ८ अग्निवही ९ अयुषो १० होतृप ह्यह पवित्र अंतरिहो वैसुवपुत्रकोटि संजमममुप-
 ह्व मरी तेजीमसामरोपमाडिहीपसु वैसु उचयन्ती । तयो त्रयो पुत्रयोवाडपसु मनुसेषु उचयन्ती ।
 अहं पि ह्युप संजमं कपूज कपूजं गयो । तेजीससामरोपमाडिहीपसु वैसु उचयन्ती । तयो त्रयो पुत्र
 कोवाडपसु मनुसेषु उचयन्ती X सजमं पवित्रयो । अंतोमुह्यवधेसे संघारे अयुषो वारो अहमर्षं ११
 अग्निवही १२ सुहो १३ उचसेतो १४ अहो सुहो १५ अग्निवही १६ अयुषो १७ अयमरो १८ पमयो
 वारो १९ अयमरो २० अहं च अंतोमुह्य अहं वस्तेहि अन्तीसंतीमुह्येहि च अहं पुत्रकोटिहि
 सादृशेषाणि ऋषिभिः सागरोपमाणि उचयन्ती होति

यह विवरण उपर्युक्त जीवोक्त एक जीवकी कोखा सकृद अन्तरकाळ बतावे
 हुए अन्तरप्रकृपणमें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपर्युक्तमेणसे उतरकर साभिक छायासठ
 सागरके बाद भी पुन उपर्युक्तमेणपर चढ सकृता है । उक्त गवक्य मात्र यह है —

‘ मोहकर्मकी अद्भुतसं प्रकृतियोंकी सृष्टा रचनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आसु-
 वाके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और वाड कर्षक होकर वेदकसम्पत्त और अग्रमत्त गुणस्थानको
 युगपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अग्रमत्त गुणस्थानोंमें कर्षवार वा जा कर उपर्युक्तमेणपर चढा
 और उतरकर वाड कर्ष और दहा अन्तर्मुह्य कर्म पूर्वकोटी कर्षक समयको पाकके मर्यकर तेजीस
 सागरकी आसुवाका देव हुआ । वहसि व्युत्त होकर पूर्वकोटीकी आसुवाके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पश्चात्
 साभिकसम्पत्तको भी चारण कर तथा संवगी होकर मर और पुन तेजीस सागरोपम की स्थिति बांधे
 देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहसि व्युत्त हो पुन पूर्वकोटीकी आसुवाके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यद्य-
 सम्म संयमका प्रहरण किया । अब उसकी ससारमें रहनेका काळ अन्तर्मुह्य प्रमाण रह गया, तब
 पहले उपर्युक्तमेणपर चढा पीछे उपर्युक्तमेणपर चढकर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसमन्त्रसे
 उपर्युक्तमेणपर बांधे क्षीयक सकृद अन्तर वाड कर्ष और अन्तीस अन्तर्मुह्योस कर्म तीन पूर्वकोटियोंसे
 अधिक छायासठ सागरोपमका प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकाळ में रहते हुए भी वह अग्रमत्त सम्पत्तिसे कुछ बना हुआ है, मने ही
 प्रारम्भे ३३ सागर तक सागरोपमिकसम्पत्ती और बाद में क्षयिकसम्पत्ती रहा हो । इस
 प्रकार सम्पत्तिप्रमाणमयी दृष्टिसे साभिक छायासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही
 है और उसमें ठक दोनों मणोंसे चर्च विरोध भी नहीं जाता है ।

सुरार्थके कर्मानुयोगद्वारमें भी सम्पत्तिसामर्थ्याके अन्तर्गत सम्पत्तिसामर्थ्यकी सकृद
 स्थिति ३३ सागरसे कुछ अधिक ही है । यथा—

यमपमनुवादेन सम्पादितो वैश्विर्वाक्यो होति । बहस्तेष्व अंतोमुह्यं । बहस्तेष्व ऋषिभिः साग-
 रोपमाणि सादृशेषाणि । (ब्रह्मा व ५ ५)

कापित करवायी देवोंमें उत्पन्न हुआ। पटुपर एक सागरोपम कण्ड विताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्पन्नको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहाँ रहकर सम्पन्नके साथ ही म्रुत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यमयमें समयको अपना समयमयको परिपाकनकर ११ मनुष्यमयसम्पन्नकी आयुसे कम आर्यस सागरोपम आयुकी स्थितिगळे आरम्भ-अम्रुत करके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ स्थित होकर पुन मनुष्य हुआ। इस मनुष्यमयमें समयको बरतकर उपरि धैर्यमय मनुष्य आयुसे कम एकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिगळे अहमिन्न देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ पर अन्तर्मुहूर्त कम छयासठ सागरोपमके अन्तिम समयमें परिधामोंके निमित्तसे सम्पन्नित्यको प्राप्त हुआ। × × × यह उत्पत्तिक्रम सम्पन्नित्यको म्रुतावनार्थ कहा है। पर मार्गसे जो जिस निम्नी भी प्रकृतसे छयासठ सागरोपमकण्डको पूरा करना चाहिए।

सर्वांसिद्धिकार जो ध्यायोपधमिकसम्पन्नकी स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह पटुर्वाङ्गम के दूसरे कण्ड छद्ममयके आगे बताये आगेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है उसमें बका से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल बकाके प्रथम मास पू ६९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। जो पटुपर ध्यान देनेकी बात यह है कि बकाकार भेदकसम्पन्न या सम्पन्नसामान्यकी स्थिति ग्राही बता रहे हैं, किन्तु मगलकी उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्पन्नदर्शनकी अपेक्षा, जिसका अभिप्राय यह सम्पन्न आता है कि सम्पन्न होने पर जो असम्पन्नगुणवैपी कर्म-निर्जरा सम्पन्नकी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मंगलक अर्थात् प्रापने गजनेवाला होनेसे वह सम्पन्न मंगलक है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अन्तिम मुहूर्तमें सम्पन्नको छोड़कर जीवके गुणत्वानोंमें जा रहा है उसके सम्पन्नताकमें होगेयकी निर्जरा कंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें सङ्केतकी बुद्धि होनेसे वह सम्पन्नसे फतान्मुख हो रहा है। अतएव ११ अन्तिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब यही उम्मासिकमें बताये गये साविक ६६ सागरोपमकण्डकी बात से उस नियममें एक बात आस ध्यान देनेकी है कि उम्मासिककार जो साविक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह ध्यायोपधमिकसम्पन्नकी नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्पन्नदर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं और सम्पन्नदर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकतर कम भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुपपत्तिकमें आकर आये हुए जीवके मनुष्यमयमें ध्यायिकसम्पन्नकी उत्पत्तिकी भी सम्भवा है। पुन ध्यायिकसम्पन्नको प्राप्तकर समयी ही अनुपपत्तिकमें उत्पन्न स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साविक छयासठ सागर कण्ड बन जाता है, और ध्यायोपधमिकसे ध्यायिक सम्पन्नको उत्पन्न कर केमपर भी सम्पन्नदर्शनसामान्य बरकर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीवरपल कंदकी अन्तर प्रकृषाके मित्र अन्तरणसे भी होती है—

उच्चस्तेन जायहि धाम्परोचमाणि साधिरोचामि ॥ सं जहा—एवौ अङ्गुलीसत्तपस्मिन्नो पुण्यको-
राजमनुसेसु उच्चवण्णो जङ्गलसिन्नो वैदगमम्मत्तमप्यमत्तगुणं च जुपर्यं पडिबण्णो १ ततो पमत्तापमत्तपरा-
वत्तसहस्रं कम्पू २ उच्चसमेसेदीपानीगविसोदीपं विसुद्धो ३ अणुवो ४ अणिवही ५ सुद्धो ६ उच्चसतो
७ पुण्यो वि सुद्धो ८ अणिवही ९ अणुवो १ होवूय देव्वा पडिप अंतरिरो देवसुपुण्यकोटिं सज्जममनुपाके-
रू मरो तेपीससागरीचमाउद्धिदीपसु देवेषु उच्चवण्णो । ततो तुरो पुण्यकोराउपसु मनुसेसु उच्चवण्णो ।
अहं पि इतिव संजम कम्पू कार्यं गहो । तटीससागरीचमाउद्धिदीपसु देवसु उच्चवण्णो । ततो तुरो पुण्य
कोराउपसु मनुसेसु उच्चवण्णो X सज्जं पडिबण्णो । अंतोसुद्धावसेये संसारी अणुवो जारो कम्मपं ११
अणिवही १२ सुद्धो १३ उच्चसतो १४ अणो सुद्धो १५ अणिवही १६ अणुवो १७ अण्यमो १८ पमत्तो
जारो १९ अण्यमो २ उच्चर उ अंतोसुद्धा अहं वि वसेहि उच्चसिंसोसुद्धो वि व अण्य पुण्यकोटीदि
पाधिरौचामि जायहि धाम्परोचमाणि उच्चसंत्तरं होवि

यह विवरण उपसामक जीर्णोका एक जीवकी अपेक्षा उक्त अन्तरका कतांत
हुए अन्तरप्रकल्पमें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमब्रेणीसे उतरकर साधिक छायासठ
सागरके बाद भी पुन उपशमब्रेणीपर चढ़ सकता है । उक्त गणका माय यह है —

‘ मोहकर्मकी जड़ोंसे प्रकृतियोंकी सत्ता रचनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयु
वाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर देवकसम्पत्त और अग्रमत्त गुणस्थानको
पुण्यप्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अग्रमत्त गुणस्थानमें वर्षवार आ आ कर उपशमब्रेणीपर चढ़ा
और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी जपक संयमको पाकके मरनकर तेतीस
सागरकी आयुवाला देव हुआ । वहांसे व्युत्त होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । यहांपर
आयिकसम्पत्तको भी चारण कर तथा संयमी होकर मरा और पुन तेतीस सागरोपम की स्थिति वाके
देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे व्युत्त हो पुन पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथा-
समय संयमको चारण किया । जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब
पहले उपशमब्रेणीपर चढ़ा पीछे अपकब्रेणीपर चक्कर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसप्रकारसे
उपशमब्रेणीवाले जीवका उक्त अन्तर आठ वर्ष और छम्बीस अन्तर्मुहूर्तोंस कम तीन पूर्वकोटियोंसे
अधिक छायासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है ।

इस अन्तरका में रहते हुए भी वह बराबर सम्पर्दर्शनसे कुछ बचा हुआ है, मते हैं।
प्रारंभमें ३३ सागर तक आयापशमिकसम्पत्तकी और बाद में आयिकसम्पत्तकी रहा हो । इस
प्रकार सम्पर्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छायासठ सागरकी स्थितिक्रम कथन युक्तिसंगत ही
है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है ।

सुशार्बके काकानुयोगशालें भी सम्पत्तमार्गणके अन्तर्गत सम्पत्तसामान्यकी उक्त
स्थिति ३३ सागरसे कुछ अधिक दी है । यथा—

धम्मत्तगुणारोच सम्मादिदी केवपिं कम्मदो होदि । अहमेव अंतोसुद्धं । उच्चस्तेन जायहि माग-
रोचमाणि साधिरौचामि । (वक्का ख प ५ ०)

इस सूत्रके व्याख्यामें कहा गया है कि कोई विध्याष्टि बीच तीनों करणोंको करके प्रथमोपसमसम्पत्तको ग्रहण कर अन्तर्गुह्यकाकके बर्हत्सङ्गसम्पत्तको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक व्याख्यास सामोपम विताकर बादमें आध्यात्मसम्पत्तको धारणकर और चौबीस सामोपमपक्षके देखमें उग्रप होकर पुनः पूर्वकोटीकी आसुषाके मनुष्योंमें उग्रप होनेवाले जीवके साधिक ६६ सागरकाक सिद्ध हो जाता है।

किंतु केकसम्पत्तकी उग्रप स्थिति बनगोटे हुए पुरे ६६ सागर ही दिखे हैं, यद्य—

देहासम्पत्तद्वि केवचिं कथ्यही होति ? कथमेव कथंयुद्ध ? कथमेव कथंयुद्धासीदमसि ।

(बर्हत्. अ. ५ ५ ७)

इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यमयी आसुसे कम देहासुषाके जीवोंमें कथन करना चाहिए और इसी प्रकारसे पुरे ६६ सागर काक वेदकसम्पत्तकी स्थिति पूरी करना चाहिए।

तब सरे कथनका माग यह हुआ कि सम्बन्धरत्नसाम्पत्तकी अपेक्षा साधिक ६६ सागर, वेदकसम्पत्तकी अपेक्षा पुरे ६६ सागर, और मण्डपरीवकी अपेक्षा देखोल ६६ सागरकी स्थिति कही है इच्छिं उभे परपर कोई मत-मे नहीं है।

पृष्ठ ४२

११ सूत्र—अग्रे अरिहत्सङ्गमिव अरिमोहसत्त्व हन्नात् अरिहत्ता तेषवसिचमविद्यामपि तत्त्वं अरिहत्ता इति प्रतिपत्तिरुक्तम् । उद्योगोद्योगादयः । पुनः अन्तरात् उद्योगे वा रजो ज्ञानरूपवत्तद्वत्ता मोहोऽपि तत्त्वं तेषां हन्नात् अरिहत्ता इति विविक्तत्वं उक्तं अरिहत्ता इति बर्हत्तरीकते । नवमिरपि अन्तः काचार्यप्रमदनां व्याख्यानम् । विवि विविक्तं उक्तं व्याख्यानमपि अरिहत्ता विविक्तम् । व्याख्यानमनुसन्ध्यायं बर्हत्तरीकते अग्रे अरिहत्तात् अग्रे अरिहत्तात् परम्पु उक्तत्वं कथमे अग्रे अरिहत्तात् विविक्तम् । हन्नात् केवचिन्मोहसिद्धिं नास्ति व्याख्यानं प्रयोक्तव्यम् ?

(५ सम्बन्धरत्नम्, ५५ ५ ५१)

अर्थात् बर्हत्सङ्गमने मनेकतरंगमके प्रथम कारणके जो विविध बर्हत्तरीके हैं उससे अनुमान होता है कि व्याख्यानको अरिहत्ता और अरिहत्ता दोनों पाठ अनोख हैं। किन्तु वास्तविक केवच 'अरिहत्ता' पाठ ही क्यों किया ?

समाधान—मनेकतरंगमके पाठमें दो एकही प्रकरणका पाठ रहा या सकता है। तो भी 'अग्रे अरिहत्तात्' पाठ रखनेमें यह विवेकवा है कि उससे अरिहत्ता और अरिहत्ता दोनों प्रकरणके बर्हत्तरीके या सकते हैं। प्रकृत व्याख्यानानुसार अरिहत्ता सम्यके अरिहत्ता, अरिहत्ता व अरिहत्ता दोनों प्रकरणके पाठ हो सकते हैं। अतएव अरिहत्ता पाठ रखनेसे उक्त दोनों प्रकरणके बर्हत्तरीके मुम्भारण रहती है। यह बात अरिहत्ता पाठ रखनेसे नहीं रहती (देखो परिशिष्ट ५-१८)

१२ सूत्र—'अरिहत्तात् उक्तं अन्तरात्तद्वत्ता तेषांमोहसत्त्व' । और यदि परिपटी मनेकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय संख्यात हुआ सकल भुक्तके बाटी हुए। मन्वान् व्याख्यानके

समयमें तो गिने चुने ही भूगकेवली हुए हैं। सरुवात हजार सकल भुतके आर्योक्त पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अतः यह अद्य विचारणीय प्रतीत होता है। (पृष्ठ ६५)

(बैतखदेव १५ जसरी ११४)

समाधान—त्रिलोकप्रकृति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकाळमें पूर्व चारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधिज्ञानी १३०० वैश्वियकऋद्धिचारी ९०० और बादी ४०० बतलाये हैं। इनमें पचसि पूर्वचारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व क्रेणी-आरोहणकाळमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी और तद्वच-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं। पर अवधिज्ञान आदिकी भिन्ने-पत्ताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकाळमें हजारों द्वादशांशचारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

पृष्ठ ६८

१३ श्रुत्य—‘रसगारवके आधीन होकर’ उचित नहीं लगता। ‘गरव (गारवः) दोषका अर्थ भेने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। ‘वद’ का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

(बैतखदेव १५ जसरी ११४)

समाधान—‘गारव’ पदका अर्थ गौरव या अमिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—
ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

जबो गारवा पचच्य। त अहं—इच्छिगारव रसगारवे सातगारवे। स्था ३ ४

ऋद्धियोगके अमिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अमिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिश्रमके सुखको सातगारव या सुखग्रसव कहते हैं।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय ‘रसादि गारवके आधीन होकर’ से है। मूकपाठका संस्कृत रूपान्तर हमारी दृष्टिमें ‘वृत्तगारवप्रतिबद्ध’ रहा है। प्रतिशेमें ‘वद’ के स्थानपर ‘वद’ पाठ भी पाया जाता है जिससे यदि दधिकार अभिप्राय लिया जाय तो उपर्युक्तसे रसगारवका अर्थ आ जाता है।

पृष्ठ १४८

श्रुत्य १४ —प्रतिभाषा—भगवान् भगवान् इत्यादि वाक्यमें प्रतिभासका अवस्थानसामान्य अर्थ टोक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ नहीं ज्ञान-सामान्य ही होना चाहिये, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य आचार्य पर अवलम्बित है, अतः वह विसंगत भी हो

सकता है और अविसर्वादी भी ! अनन्यवसाय विस्वादी श्रान्तका भय है। उसमें जिस तरहसे विस्वाप्तित और अविसर्वाप्तित्वकी चर्चा दी गई है वह स्यादादकी दृष्टिके अनुसार ही होने हुए भी निरुपेक्ष नहीं लगती। (अनन्यव १५ पं. ११४)

समाधान—यद्यपि प्रतिमासका जो अर्घ्य दिया गया है, वह स्वयं श्रान्तकारके मतसे भी सटोप नहीं है तथापि यदि प्रतिमासका अर्घ्य ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, ता भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवधारणमें अनुगम पक्ष १२ में 'और अनन्यवसायकृप जो प्रतिमास है' के स्थानमें और जो ज्ञान सामान्य है' अर्घ्य करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

१५ श्लोक—असर्वज्ञतां स्वात्मज्ञानाद्यन्ते आत्मयन्तरे विच्छेदस्वार्थान्तात्वा वचनपरवत्तत्वं व्याजानात् । यदा विच्छेदस्य के स्थानमें विच्छेदः जठ अष्टम अंशता है। उससे वाक्यपरवर्तना भी ठीक हो जाती है। (अनन्यव १५ पं. ११४)

समाधान—प्राप्त प्रतियोगे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथावधि संगति अनुवाकमें बैठ ही गई है। मूत्रविज्ञेसे भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ। तथापि 'विच्छेदस्य' के स्थानपर 'विच्छेदः स्यात्' पाठ स्वीकार कर देनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त शक्यता अनुसार इस प्रकार होगा—

श्लोक—असर्वज्ञाने व्याजानात् नहीं मानने पर आर्प-परम्पराका विच्छेद हो व्यापगत क्योंकि, अर्थान्तर वचन-रचनाको आर्पणना प्राप्त नहीं हो सकता है।

पृष्ठ २१३

१६ श्लोक—सकृत् (मूत्र) मे जो वचन दत्त आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करने वचन ही लिया है। सा इसका क्या अर्थ है ? (अनन्यव १५ पं. १४४)

समाधान—वचन' का अर्थ नहीं है, इसलिए सर्वज्ञ नहीं बनेवाले समग्रवचन को वचन समग्रवचन कह सकते हैं। पर प्रवृत्तमें विवक्षित प्रवृत्तिक उपशमन और क्षपणके विवक्षित और आशयकी अर्थात् अन्तर्गत हो व्यापकियोंके अन्तर्गत बनेवाले समग्रवचनको ही वचनसमग्रवचन कहा है। इस वचनसमग्रवचनका उस विवक्षित प्रवृत्तिक उपशमन या क्षपण कहके भीतर उपशमन या क्षय न होकर उपशमन या क्षपणकाकके अन्तर्गत एक समय कम हो व्यापकियोंमें उपशमन या क्षय होता है। एक समय कम हो व्यापकियोंमें उपशमन या क्षय कैसे होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१७ का विशेषार्थ देखिये। विशेषके लिए देखिये अम्बिसार, अप्लासार।

पृष्ठ २५

१७ श्लोक—उपशमन प्रारंभ प्रथम पक्षमें आये हुए वचन शब्दसे जान पड़ता है, न

कि उससे पूर्वके शरीरस्थ स्थावपनिर्वर्तक इत्यादिसे, क्योंकि उसी धार्मीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शक्राकारने तथापि से शक्रास्य उत्पन्न किया है।

(जैनसूत्र १५ काशी १९४)

समाधान—यहाँपर तथापि से शक्रा मान देनेपर शरीरस्थ स्थावपनिर्वर्तक कर्म बाहर झुझवे' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धक्काकारने स्वयं इसके पहले व बाहरकाही १५ स्थूलरूपों इत्यादि रूपसे इसका निवेदन कर दिया है। अतः शक्राकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मरूप परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शक्राके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ श्रुति—जदेरवर्णमात्रा पाठ अस्तु प्रतीत होता है, उसके स्वानोंमें जदेरवर्ण मात्रा पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसूत्र १५ काशी १९४)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी जदेरवर्ण इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोगा आशय भी नहीं है। इसीलिए हमने उपलब्ध पाठको व्योम्का को रखा गया। हालाँहीमें जबला अ पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बन्धी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके सद्योचनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है— पमसेवेका-हार मरिष कहीपु वरिष कहीपुममावा। इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए जदेरवर्ण जदेरमान्त्र अपवा कदे जदेरवर्णमात्रा तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा— 'क्योंकि, एक शब्दके ऊपर दूसरी शब्दोंका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ श्रुति—१० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कर्मवत्तव योपा स्थितिः। तिस्रका अब आपने 'इपुगति'को छोड़कर दोष तीनों विप्रवृत्तियोंमें कर्मवत्तव पाग होता है, ऐसा किया है। सो यहाँ प्रश्न होता है कि इपुगतिमें कौनसा कर्मवत्तव होता है।

(बालकपदवी पत्र १४४)

समाधान—इपुगतिमें औत्तरिकविप्रवृत्तय और वैकल्पिकविप्रवृत्तय, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपत्त्येवम प्रति होनेवाली कृत्यगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल विप्रवृत्तियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुखा वागविक्रम और गोमूत्रिका, इन तीनों गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक ही होता है क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपत्त्येवम प्रति होनेवाली गति कृत्य ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्याने रखकर ही सहायसिद्धिमें पूर्वका शीलावाहारक' इस सूत्रको व्याख्या करने हुए यह कहा है कि उपपत्त्येवम प्रति कृत्यवागी गती आहारकः। इत्येवमिदं समवेतं अनाहारकः।

क्रियोमें सम्पद्यति जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ? उसका समाधान करते हुए लिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्पद्यति जीव उत्पन्न होते हैं' । सो इसका सुझावा क्या है ? क्या सम्पद्यति जीव क्रियोमें उत्पन्न हो सकता है ? (भाष्यपद्यों १४४)

क्रियोको अपर्याप्तदशामें सम्पत्त्व नहीं होता है, ऐसा गोमटसार आदि प्रयोग कथन है । तदनुसार चरकाके द्वितीय खंडमें पृ ४१० पर भी लिखा है ' इतिषेदेण विणा ' अपर्याप्त दशामें खीनेदोका सम्पत्त्व नहीं । किन्तु चरकाके प्रथम खंडमें पृ ३३२ पर इसके विरुद्ध लिखा है— हुंदावसर्पिणां जीवु सम्पद्यन्ते विद्यावसन्त इति चेन्न उत्पद्यन्ते । तदुत्पद्यन्ते । अस्मा विचार्य । ऐसा विरोधी कथन क्यों है ? (५ अमिषकृत्वाभी कृत्वा पत्र २२ १-४)

समाधान—अन्य गतिसे आकर सम्पद्यति जीव क्रियोमें उत्पन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है । इसीसे उक्त शका-समाधानका अर्थ इस प्रकार ठेका चाहिए—

शका—हुंदावसर्पिणांकाळमें क्रियोमें सम्पद्यति क्यों नहीं होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनमें सम्पद्यति जीव होते हैं ।

यहां 'उत्पद्यन्ते' क्रियाका अर्थ 'होना' ठेका चाहिए । इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंदावसर्पिणांकाळके दोषसे क्रिया सम्पद्यति न होने, ऐसा शकाकारके धुंढनेका अभिप्राय है ।

अथवा, इस शका-समाधानका भिन्न प्रकारसे दूसरा भी अभिप्राय कदाचित् संभव हो सकता है—

शका—हुंदावसर्पिणांकाळमें जैसे अन्य अनेकों असम्भव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्पद्यति जीव क्रियोमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान—सूत्र न २१ में कहा है कि ' असक्तसम्पद्यति गुणस्वानामें क्रिया नियमसे पर्याप्त होती है ' इससे जाना जाता है कि किसी भी काळमें सम्पद्यति जीव क्रियोमें उत्पन्न नहीं होते हैं ।

इस अभिप्रायके लिये मूलपाठमें ' चेन्न ' के पश्चात्तक नियम हटा देना चाहिए । तथापि जागेने संदर्भसे इस अभिप्रायका सामान्य स्थापित नहीं बैठता ।

पृष्ठ ३४२

२९ श्रुति—चरकसिद्धान्तानुसार जो द्रव्यसे पुरण होवे और मर्बोंमें जीकृप हो उसे योनिमती कहते हैं । किन्तु गोमटसार जीवकण्ड गाथा १५०, १५६, १८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें जी हो, और परिणतिमें जीमान्वा उसको योनिमती कहते हैं । इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्थान माने हैं । इसका समाधान कदाचित् । (५ अर्थपद्यों)

समाधान—योनिमती तिर्यक् क्रियोके उदय प्रकृतिपां वतकते हुए कर्मकण्ड गाथा न

२९६ में कहा है—पुंल्लिङ्गवत्तु योनिपुत्रे अर्थात् योनिमतीके पूर्वोक्त १७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवत् और नपुंसक वेदको प्रदाकर भी वेदके मित्रा देनपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनिर्मोके निदमों कहा है—अथ सन्निधौ त्विषा ॥२०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें जीवेदके मित्रा देनेपर और तीर्थवत् आदि ५ प्रकृतियां निकाळ देनेपर मनुष्यनिर्मोके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ योनिमती उसे कहा है जिसके जीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके रूप वत् हो ही रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमतीके १४ गुणस्वान की बात तो कर्मभूमिभूतियोंके अन्तर्गत तीन संज्ञानोंका ही उदय होता है, ऐसा गो कर्मकर्तृ की गाथा २२ से प्रगट है। परन्तु शुद्धस्वान, अथकस्त्रेप्यारोहणादि कार्य प्रथम स्त्रानमवाक्यके ही होने हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि रूपभूतियोंके १४ गुणस्वान नहीं होते हैं। पर गोमटसारमें जीवेदके १४ गुणस्वान कथिते कथ्य हैं। इसलिये वहाँ रूपसे पुरुष और मानसे जीवेदका ही योनिमती पदसे प्रज्ञा करणा चाहिए। इस विषयमें गोमटसार और अथकस्त्रिहस्तमें कार्य मतभेद नहीं है। रूपभूतोंके आदिके पांच गुणस्वान ही होते हैं। गोमटसारकी गाथा न १५ में मान-वेदकी मुख्यतस्ते ही योनिमतीका प्रज्ञा-वे। गाथा न १५६ और १५९ में टीकाकारने योनिमतीसे रूपस्वान प्रज्ञा किया है, किन्तु वहाँ भी परिणतिमें जीवाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ सूत्र—अथाने पुनरात्मने न्ये गये आत्मा अथानात्मा आत्माओंके मूलात्माके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। कबनि अथानात्मा शिवाय रूप उस आत्मा अथानात्मा स्थिते हैं तब मूलात्मा नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलात्मादर्पण तो प आत्मा-अथानात्मा टीका का नाम है जिसे उन्होंने अथ टीकाओंसे व्याप्ति करनेके लिये दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन ग्रन्थमें अथाना नाम मूलात्मा देखा हो तो कृपया लिखनेका अनुमति करें।

(१ पाठान-वही वाक्य पृ २९९ १५)

समाधान—टिप्पणियोंके साथ का अर्थ-नाम न्ये गये है वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रकाशित प्रतीक नाम हैं। शोकाप्रति जो अर्थ दिया है उसपर अथाना नाम मूलात्मा दिया गया है। वही प्रति हमारी टिप्पणियोंका आधार रही है। अथाना उसीका नामोद्देश्य कर दिया गया है। अथाने नामादि सम्बन्धी इतिहासमें जानेन लिये वह उपयुक्त स्थल नहीं था।

२४ सूत्र—टिप्पणियोंमें अधिपत्या मुक्ता पदेनात्मा अथानात्मा की गई है। अथाना होता यदि इस कार्यमें अथाना अथानात्मा और भी अधिपत्या के साथ उपयोग किया जाय। इससे मुक्ता-कार्य और भी अधिपत्या प्रकाशितसे सम्पन्न होता।

(अथानात्मा १ १५ २१)

(अथानात्मा १५ १५ १५)

(अथानात्मा, २ अथाना १५)

समाधान—प्रथम भागमें कुछ टिप्पणियोंकी सख्या ८५५ है। उनमेंसे िगम्बर प्रयोगोंसे ६२२ और येनाम्बर प्रयोगोंमें २२८ तथा अन्य प्रयोगोंमें ५ टिप्पणियाँ छी गई हैं। यदि प्रथम सख्यामें दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणियोंमें उपपाग किये गये प्रयोगोंकी सख्या ७७ है, जिनमें िगम्बर प्रयोग ४०, येनाम्बर प्रयोग ३०, अमैन प्रयोग १, व कोष, व्याकरण, अष्टाश्रयादि विषय प्रयोगोंकी सख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अवशिष्ट कुछना किन्तु प्रयोगोंपरस करी गई है। जहाँ जिन प्रयोगों को टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुए हैं वहाँ छी गई है। उनमें ज्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयमें सम्बन्ध रखनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी दृष्टि जा सके।

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

पदच्छेदनागमने प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यहाँ यह बतखाया गया है कि समस्त जीववर्गोंमें कितनी है, तथा उसमें किस किस गुणस्वान्तों व मार्गान्त्वान्तोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रथम उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषय का वर्णन आचार्योंन किसे आचारपर किया है। यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये हैं कि पदच्छेदनागमक बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर योगबन्धकी द्वायार्वाक्यान्तोंके अगमूत चौदह पूर्वोक्तोंसे द्वितीय आप्रयणीय पूर्वके कर्मप्रवृत्ति नामक एक अधिकार-विशयमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रवृत्तिपाहुड अपरनाम वेदनाह्मपाहुड (वेधनकसिधपाहुड) के इति वेदना आदि चौबीस अधिकारोंमें छठवाँ अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अधिकार हैं बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकवीचकी अपक्षा स्वाभिसि, एकवीचकी अपक्षा काळ, आदि स्याह अनुयोगादर हैं। इन स्याह अनुयोगादरोंमें से पाँचवाँ अनुयोगादर द्रव्यप्रमाण नामका है और बहासे प्रवृत्त द्रव्यप्रमाणानुगम सिद्धा गया है। (देखा पदच्छेदनागम प्रथम भाग, पृ ११५-१२६)

यहाँ प्रथम यह उत्पन्न हुआ है कि जब जीवज्ञानकी सत्ता, काय, स्पर्शन, काळ, अन्तर और अन्तरबहुरन ये बह द्रव्यप्रमाणोंमें बंधविधानके प्रवृत्तिस्थानबंधनामक अगमतर अधिकारके आठ अनुयोगादरोंमेंसे छी गई हैं। तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहीँसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहाँ भी तो यह अनुयोगादर अत्यन्त अगाध था। इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रवृत्तिस्थानबंधक द्रव्यानुयोगादरमें 'इस बंधस्थानक बंधक जीव इतन है' एवा कथन सामान्य रूपमें कथन किया गया है; किन्तु सिद्धादृष्टि आदि गुणस्वान्तोंकी अपक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

जबन्य युक्तासंख्यातका कर्मा (य x य) जबन्य असंख्यातासंख्यात कहलाना है, तथा ओगे बतलाये जानेवाले जबन्य परीतानन्तसे एक कम उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होला है, और इन दोनोंक बीचकी सब गणना मध्यम असंख्यातासंख्यातके मेदरूप है।

जबन्य अर्धसंख्यातासंख्यातका तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें अर्धमध्य, अर्धमध्य, एक जीव और छांकाकाश, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित कल्पनिक प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करना चाहिये। इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमें कल्पकखंड सम्म्य, स्थिति और अनुमागवधायकतासंख्यातको प्रमाण तथा योगक उत्कृष्ट अविमग्नप्रतिष्ठद मिलाकर उसे पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह जबन्य परीतानन्त कहौ जाली है। ओगे बतलाये जानेवाले जबन्य युक्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट परीतानन्त का प्रमाण है, तथा बीचके सब मेद मध्यम परीतानन्त हैं।

जबन्य परीतानन्तका वर्गित संवर्गित करनेसे जबन्य युक्तानन्त होला है। ओगे बताये जानेवाले जबन्य अनन्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट युक्तानन्तका प्रमाण है, तथा बीचके सब मेद मध्यम युक्तानन्त हल हैं।

जबन्य युक्तानन्तका का जबन्य अनन्तानन्त होला है। इस जबन्य अनन्तानन्तको तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें सिद्ध जीव, निगात्राशि, प्रत्येकनम्पति, पुद्गलराशि, कश्चके सम्म्य और अलोकप्रकाश, ये छह राशियां मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें धर्मत्रय और अर्धमध्य सबका अनुसन्धुणक अविमग्नप्रतिष्ठद मिला देना चाहिये। इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसे कल्पकखंडमें बढाये और फिर ओग केन्द्रबलमें उसे मिला देवे। इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अपर्याप्त कल्पकखंडप्रमाण उत्कृष्ट अनन्तानन्त होला है। जबन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यकी सब गणना मध्यम अनन्तानन्त कहलौ है।

(देखी पृ १९-२१ तथा चिकित्सा कावा १८-२१)

२ कालप्रमाण—जीवोंका परिमाण जाननेके लिये दूसरा माप कल्पक खगाया गया है, जिसमें मेद प्रमेय इसप्रकार है—एक परमाणुका मन्गलिम एक आसन्नप्रदेशमें दूसरे आसन्नप्रदेशमें जानेके लिये जा कल्प खगा है वह समय कहलाना है। यह कल्पका सबसे छोटा, अविमग्न परिमाण है। असंख्यात (अर्थात् जबन्य युक्तासंख्यात प्रमाण) सम्पूर्णको एक आवसि होला है। संख्यात कालियोंका एक उत्प्लास या प्राण होला है। सात उत्प्लासोंका एक स्तोक, सप्त स्तोकोका एक स्रव, और सात स्रवोंका एक नात्ती होला है। दो नात्तीका सुहृत् और तीस सुहृत्का एक अहोरात्र या दिवस होला है। कल्पन कल्पकखंडमें अहोरात्र जीवोंका पटोंका मत्ता जात्र है। इसके अनुसार एक सुहृत् अहोरात्र मिनिकका एक नात्ती जीवोंका मिनिकका, एक लव ३७१३ स्रवोंका, एक स्तोव ५३१३ स्रवोंका तथा एक उत्प्लास ३६०६ स्रवोंका पड़ला है। जादकि और समय एक मेदमें बहुत सूक्ष्म कल्प प्रमाण होला है।

(देखी पृ २५ तथा डि व ४ २८४-२८८)

सब यहाँ दी गई है। यह सब सस्यान (पशु) का ही प्रमाण है। इसमें कठ गुण ऊपर जाकर उच्छ्र सस्यानका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना-मापमें बना ही आया है।

बागे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाय पानवाले एक प्रमाण याजन (ज्याप्त दो हजार कोश) कम्मा चौड़ा और गहरा कुछ बनाकर उस उत्तम मांगभूमिक सात तिनके भीतर उत्पन्न हुए मेटके रोमाग्रे (जिनके और सब के पीछे न हो सकें) से भरते और उनमेंसे एक एक रोमसबको सी सी बर्षमें निकाल। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जिसना कुछ व्यतीत होगा, उसे व्यवहारपत्त्य कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुछ सख्या गणितसे ४५ एक प्रमाण जाती है, और तदनुसार व्यवहारपत्त्यका प्रमाण ४५ एक प्रमाण यज्ञादिर्वा जपवा ४७ एक प्रमाण बर्ष हुआ।

इस व्यवहारपत्त्यको अस्व्यात कृति बर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर उद्धारपत्त्यका प्रमाण आता है, जिससे दीप-समुद्रोंकी गणना की जाती है। इस उद्धारपत्त्यको असंख्यान कोटि बर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर अद्वापत्त्यका प्रमाण आता है। कर्म, मन, वासु और कर्म, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्वापत्त्यका उपयोग होता है। बीचप्रत्यक्षी प्रमाण-प्रत्यक्षणमें भी यथावश्यक इसी पत्त्यापमका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोड़से गुणा करने पर जो कर्म आता है उसे काड़ाकोड़ी कहते हैं। दस कोड़ाकोणी अद्वापत्त्योपमोंका एक अद्वा-सागरापम और दस कोड़ाकोणी अद्वासागरोपमोंका एक उत्सर्पिणी और इतने ही कष्टको एक अवसर्पिणी होती है। इन दोनोंको मिठाकर एक कल्पकाल होता है।

३ क्षेत्रप्रमाण—पुण्ड्र प्रत्यक्ष उस मूक्षानिष्क्रम मागको पमाणु कहते हैं जिसका पुन विभाग न हो सक, या इन्द्रियों द्वारा प्राज्ञ नहीं आन जो अग्नेर्वा तथा अन्, अग्नि व मध्य स्थित है। एक अविभागी पमाणु जितने आकाशका गरता है उतन आकाशका एक क्षेत्रप्रदेश कहते हैं। अनन्तानन्त पमाणुओंका एक अवसमासस स्वरूप, और अस्मसासस स्वर्णोक्त एक सभासस स्वरूप, और ममासस स्वभाव एक गुग्गरेणु (शुक्तिणु तुल्य), और गुग्गरेणुओंका एक प्रसरेणु, और प्रसरेणुओंका एक रथरेणु, और रथरेणुओंका उत्तम मोगभूमिसंघर्षी बालाग्र, और उत्तम मांगभूमिसंघर्षी बाजामोक्त एक मध्यम मोगभूमिसंघर्षी बालाग्र, और मध्यम मांगभूमिसंघर्षी बाजामोक्त एक अधपत्य मोगभूमिसंघर्षी बालाग्र, और अधपत्य मांगभूमिसंघर्षी बाजामोक्त एक कर्मभूमिसंघर्षी बालाग्र, और कर्मभूमिसंघर्षी बाजामोक्त एक सिंघा (उत्त), और सिंघाओंका एक जूँ और जूँओंका एक यव (यन्मन्), और यवोंका एक अंगुल होता है। अंगुल तीन प्रसरेणु है उसकागुल प्रमाणगुल और आर्मागुल। ऊपर जिस अंगुलका प्रमाण कल्पका है वह उत्सर्पांगुल (मूत्रि) है। पाचमा उसकागुलेंका एक प्रमाणगुल होता है, या अर्मागुलेंका प्रथम चरुस्त्रीय पाया जाता है। मग्न और पग्न्यधर्मों जिस कालमें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह उस म कालमें उस उस क्षेत्रका आर्मागुल कहलाता है। मनुष्य नियम, दन और नागजिर्मों दार्शनिक अज्ञानता तथा चतुर्भिर्मुख देखोरे निवास और कालक प्रमाणन छिन्न उभयगुल ही प्रमाण लिया जाता है। ईश, समुद्र,

पर्यन्त, बेरी, मनी, कुन्, पागती (कोट), बर्य (धेन) का प्रमाण प्रमाणांगुष्ठसे किया जाय है, तथा येगाद, कलस, दर्पण, मेणु, पट्ट, युग, ज्यल, शरट्ट, हल, मूसक, दलिक, तोम्प, मिहसल, बाल, नाडी, बज, चाम्प, बुदुमि, पीठ, ह्य तथा मस्त्योक्त निरास न नगर, तथा नादिक प्रमाण आर्मांगुष्ठसे किया जाता है। इह अंगुष्ठोक्त पाद, दो पादोक्त विहस्ति (बहिरस्ति), दो विहस्तिोक्त हाव, दो हावोक्त किक्कु, दो किक्कुोक्त दंड, युग, वनु, मुसल न नाडी, दो हजार दंडोक्त एक कोस तथा चार कोशोक्त एक याजन होता है। (ति प १, ९८-११६)

इष्ट्यक्त अविमापी अक्ष = परमाणु	८ अक्ष = पाद
अनन्तात्मन् परमाणु = अक्षसप्तसप्त स्वक	८ अक्ष = उत्तेर्षांगुष्ठ
८ अक्षसप्तसप्तस्वक = सप्तसप्तस्वक	(५० उत्तेर्षांगुष्ठ = प्रमाणांगुष्ठ)
८ सप्तसप्तस्वक = बुदोणु	६ अंगुष्ठ = पाद
८ बुदोणु = बभेणु	९ पाद = विहस्ति
८ बभेणु = रकेणु	९ विहस्ति = हाव
८ रकेणु = उत्तम मो मू. वाक्ताम	९ हाव = किक्कु
८ उत्तम मो मू. वा = मध्यम " " "	९ किक्कु = दंड, युग, वनु
८ मध्यम मो मू. वा = जल्प " " "	मुसल या नाडी
८ जल्प मो मू. वा = कमगुमि वाक्ताम	
८ कमगुमि वाक्ताम = किक्कु	१००० दंड = कोस
८ किक्कु = मू	४ कोश = योजन

अंगुष्ठसे अंगोके प्रमाण मो आत्म, उत्तम न प्रमाण अंगुष्ठके अनुमत्त तीन चीज प्रज्ञाक होते हैं। एन प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश वन्ने, चार और गहर हुन्क आत्मसे अक्षपन्म नामक प्रमाण निरखणेका प्रकर उत्तर कल्पप्रमाणमें बना आये हैं। उसी अक्षपन्मक अर्थात् प्रमाण अक्षपन्मोक्त परस्पर गुणा करनेपर सूच्यगुष्ठका प्रमाण आता है। मूष्मगुष्ठके का को प्रस्तांगुष्ठ और मनका बनांगुष्ठ कहते हैं। अक्षपन्मक असुस्थिते मागप्रमाण अपय मनन्तसे अक्षपन्मके किन्ते अर्थात् हो उससे असुस्थिते मागप्रमाण, बनागुष्ठोके परस्पर गुणा करनपर अगभेणीका प्रमाण आता है। जगभणीक सप्तमे माग प्रमाण दंडु होता है, जो निर्यक्त आत्मके मध्य किन्तार प्रमाण है। अगभेणीक काका जगप्रसर तथा जगभणीके धनको सोक कहते हैं।

ये सब अर्थात् पन्म सागर, सूच्यगुष्ठ प्रस्तांगुष्ठ अर्थात् जगभणी जगप्रसर और कोक उपमा मान हैं, किन्तु उपयोग यथावत् इष्ट्य क्षेत्र थीत बज्ज, इन तीनों अपेक्षाओंसे कलकसे गये प्रमाणोंमें किन्ता गया है। जगभणी तात्पर्य इष्ट्यप्रमाणमें उत्तमी स्मृतासे बज्जप्रमाणमें उत्तम समयोसे तथा क्षेत्रप्रमाणमें उत्तमे ही आकाशप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

१ इह दलिक मिशरी वत कठोरता बायी बायी की जा करी, वन्ने दंड दलिक अर्थात् कोश को जते है।

४ भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीनों प्रश्नके प्रमाणोंके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ जिस गुणस्थान व मार्गस्थानका द्रव्य, वस्तु व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण व्यक्तता गया है वहाँ उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तान्त है। उसका बहुमाग मिथ्याद्यिगुणस्वानवर्ती है तथा शेष एक माग अन्य तरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्याद्यि और सिद्ध क्रम-हानिरूपसे अनन्तान्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें अवस्थित हैं, तथा शेष प्रमत्तादि ती गुणस्थानोंके जीव रूपावर्त हैं जिनकी कुछ रूपा तीन कम नौ करोड़ निश्चित हैं। यद्यपि अनन्तरसे रूपावर्त उतारना नामक हो सकता है, तथापि ध्वजकर्मने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिका १६ और इनमेंसे मिथ्याद्यिगुणस्थानोंके १३, तथा सासादनादि तरह गुणस्थानोंके जीवों और सिद्धोंका स्पष्ट प्रमाण ४ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। जब हम यदि इसी अक्षररूपके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहें, तो पृथक् इसप्रकार किया जा सकता है—

चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी सद्यष्टि

गुणस्थान	प्रमाण	अक्षरसद्यष्टि
१ मिथ्याद्यि	अनन्त	१३
२ सासादन	अवस्थ	१३
३ मिथ	"	१३
४ अक्षितसम्पद्यि	"	१३
५ सप्तासपन	"	१३
६ प्रमत्तचित	५०१९८२०६	} १३
७ अप्रमत्तचित	२०६९९१०६	
८ अक्षरकरण	८९७	
९ अनिष्टविरक्षण	८९७	
१० सूक्ष्मात्मरूप	८९७	} १३
११ उपरान्तमोक्ष	२९९	
१२ क्षीणमोक्ष	५०८	
१३ सयोगिन्धरी	८०८५०२	
१४ अपयोगिन्धरी	५९८	} २
सिद्ध	अनन्त	
सर्वजीवराशि	अनन्त	१६

१ ज्ञानान्तरे संवत्सरान्तरे उक्त चारों प्रकारके जीव वस्तु व पृथक् पृथक् रूपसे भी प्रमाणित

वीरहो गुणस्वामोऽसौ जीराशिषोऽने प्रमाण-प्ररूपणे पथात् उनस्य भगामाग और फिर उनस्य अन्यवहुव क्त्वाया गया है। भगामागमें सामान्य राशिको संज्ञा विभाग करते हुए सबसे अन्य राशि तत्र आये हैं। अन्यवहुवमें समस्त छोटी राशिसे प्रारम्भ करके गुणा और योग (संज्ञिक) करते हुए सबसे बड़ी राशि तत्र पहुँचे हैं। इस अन्यवहुवका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और संस्तरस्थान। स्वस्थानमें केवल अष्टाष्टाका और विरक्षित राशिस्य अन्यवहुव क्त्वाया गया है। परस्थानमें अष्टाष्टाका, माय तथा अन्य जो राशियाँ उनके प्रमाणके बीचमें आ पड़ती हैं उनका अंत विरक्षित राशिको अन्यवहुव दिखाया गया है। तथा संस्तरस्थानमें उक्त राशियोंके अनिच्छित अन्य राशियोंमें भी अन्यवहुव दिखाया गया है। (पृ १-१२१)

४ जीराशिको मार्गणास्वानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्वानमें जीराशिको-प्ररूपणक पथात् गणि आदि चीजें मर्यादाओं व उनके भद्र-श्रेणियोंमें जीराशिको प्रमाण निरूपित किया गया है और यहाँ प्रत्येक राशिस्य प्रमाण भगामाग और अन्यवहुव मर्यादाओंमें स्मरित किया गया है। विस्तरकर गुणस्वानमें प्रथम सिध्दांतिक प्रमाण स्मरितमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके दिखाया है, उसी प्रकार मार्गणास्वानमें प्रथम नैसर्गिक प्रमाणप्रकरणमें भी गणितमिलान पाया जाता है। (देखो पृ १२१-२५)

उक्त प्रमाण-निर्वाचन बड़ी सूक्ष्म और गहनार्थक साध किया गया है, किंतु आचार्यने अंग-संज्ञि कल्पन नहीं रखी, जिससे सामान्य पाठकोंको विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहाँ उन सब मार्गणाओंकी सूचन सूचक प्रमाण-प्ररूपणक अंगसंज्ञियों आचार्यद्वारा कल्पित अंगोंके आशय कल्पनेका प्रयत्न करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्य व संख्यमानके भीतर राशियोंके अन्यवहुवका कुछ स्पष्ट बोध करना मात्र है। प्रथम मार्गणाक भीतर सूर्य जीराशिको संख्यक प्रमाण १६ ही रखा गया है। किंतु सूत्र दृष्टिमें पठित करनेपर एक इन्हीं मर्यादाओंकी अंगसंज्ञियोंमें परस्पर वैयर्थ्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीराशिको विषय केवल १६ जैसी अन्य संख्या केवल समस्त मार्गणाओंके अंगसंज्ञियों दृष्टिकरण करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी दूरीय व जितनी गुणित अन्तर है उसका अनुपात इन अंगोंमें बराबरी नहीं करना चाहिये। यहाँ तो सिर्फ एक मर्यादाके भीतर राशियोंकी परस्पर अभिरता या अन्यतया ही कम बला या सत्त्व है। परन्तु गणितके सूत्र विचारसे यह वैयर्थ्य भी समझ-बूझ किया जा सकता है, किंतु उससे फिर संज्ञिक सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी जा सकती, जिससे हमारा अग्रिम उद्देश्य नहीं होता। चूंकि यहाँ प्रत्येक मार्गणाक भीतर जीराशिकोका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अवश्य है, अन्यत्र राशियों बहुवचने अन्यत्रकी आ क्रमसे एकी गये हैं, उनसे स्पष्टक्रम नहीं। हाँ, सिद्ध सर्वत्र अन्त-

अंतर्भावसे बात है। हमने भी अन्तर्भावसे ही बातें कही, इसके अन्तर्भावसे बात विस्तृतस्थिति में इसके अन्तर्भावसे बात अन्तर्भावसे ही बात अन्तर्भावसे बात है।

की ओर ही गये हैं। कहीं कहीं राशिके आ अरु गिये गये हैं उनमें कुछ अधिक प्रमाण विनिश्चित है, क्योंकि, उसमें कदा अन्य अस राशि भी प्रविष्ट होती है। जेसु स्थानोंपर अरु अरु धनराशि + बना दिया गया है, और अरु देकर टिप्पणमें उस विनिश्चित राशिके उल्लेख कर दिया गया है। इस निशानमें यह प्रयत्न, जहां तक हमें ज्ञान है, प्रथम ही है, जहां सबकी स्थिति पर भी कुछ श्रुति दी हो सकती है। यदि पाठकों के ध्यानमें आवे, तो हमें अत्यन्त मूषित करें।

बीजराशिका मार्गणस्थानोंमें बीजराशियोंके प्रमाणकी सहायिका

(मार्गणा बीजराशिके आगे दी गई पृष्ठसम्प्राप्त उस मार्गणाके भागभागकी सूचक है।)

१ गति मार्गणा (पृ २०७)

निर्देश	देख	भारत	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त
१	१२	८	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	

२ इन्द्रिय मार्गणा (पृ ११९)

१ इन्द्रिय	२ इन्द्रिय	३ इन्द्रिय	४ इन्द्रिय	५ इन्द्रिय	अवन्त	सर्व जीव
अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त
१८९	१४	१९	१	१	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	

३ काय मार्गणा (पृ १७१)

अवन्त	वायु	जल	पृथिवी	तेज	अवन्त	अकाय	सर्व जीव
अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त
१६	१६	१२	१	१	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	

४ योग मार्गणा (पृ ७१२)

काय	अकाय	मन	अयोगी	सर्व जीव
अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त	अवन्त
१८४	१४	१६	१२	१६
१६	१६	१६	१६ +	

१ वरु वरु विज्ञान प्रमाण अरु अरु विज्ञानोंके अन्तर्गत अरु अरु ।

१० छेदया मार्गणा (पृ ४९९)

छेदय अवन्त	मीठ अवन्त	आपोत अवन्त	पीत अवन्त	पद्य अवन्त	शुद्ध अवन्त	असेदय अवन्त	सर्व जीव अवन्त
$\frac{७१}{११}$	$\frac{१०}{११}$	$\frac{१५}{११}$	$\frac{८}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{११}{११} +$	११

११ मध्य मार्गणा (पृ ४७९)

मध्य अवन्त	अमध्य अवन्त	सिद्ध अवन्त	सर्व जीव अवन्त
$\frac{१५१}{११}$	$\frac{१८}{११}$	$\frac{१२}{११}$	११

१२ सम्पत्त्व मार्गणा (पृ ४७८)

मिष्याद अवन्त	सापोप अवन्त	सायिक अवन्त	मीपद्य अवन्त	मिष अवन्त	सासा अवन्त	सिद्ध अवन्त	सर्व जीव अवन्त
$\frac{१८}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{४}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{१२}{११}$	११

१३ सञ्जा मार्गणा (पृ ४८१)

असञ्जी अवन्त	सञ्जी अवन्त	अनुमय अवन्त	सर्व जीव अवन्त
$\frac{१५५}{११}$	$\frac{१५}{११}$	$\frac{१२}{११} +$	११

१४ आहार मार्गणा (पृ ४८५)

आहारक अवन्त	अनाहारक अवन्त	अवन्त	सर्व जीव अवन्त
११	१	१	११

७ यहाँ सिद्धांत प्रमाण १४ में इतरवान एविते साधित है ।

८ यहाँ सिद्धांत प्रमाण ११ में और १४ में इतरवानोंकी एविते साधित अवकाश चाहिये ।

५ वेद मार्गणा (पृ ४२१)

मनुसूक्त अक्षर	सूरी अक्षर	पुरुष अक्षर	अथर्व अक्षर	सर्वे जीव अक्षर
$\frac{१}{११}$	$\frac{१}{११}$	$\frac{४}{११}$	$\frac{४२}{११} + २$	११

६ कथाय मार्गणा (पृ ४३१)

छोम अक्षर	माया अक्षर	कोम अक्षर	मान अक्षर	महापापी अक्षर	सर्वे जीव अक्षर
$\frac{८९}{११}$	$\frac{५}{११}$	$\frac{४८}{११}$	$\frac{४४}{११}$	$\frac{४९}{११} + १$	११

७ ज्ञान मार्गणा (पृ ४४९)

कुम्भति कुम्भत.	विर्मय अक्षर	मति भुत अक्षर	व्यक्ति अक्षर	महापर्यय अक्षर	केवल अक्षर	सर्वे जीव अक्षर
$\frac{१२}{१४}$	$\frac{१९}{१}$	$\frac{१}{१४}$	$\frac{४}{१४}$	$\frac{१}{१४}$	$\frac{१२८}{१} +$	११

८ सयम मार्गणा (पृ ४५१)

असंपत्ती अक्षर	देशसं अक्षर	सामा छेदा अक्षर	पथाख्या अक्षर	पटि. वि. अक्षर	सू. सदा. अक्षर	सिद्ध अक्षर	सर्व जीव अक्षर
$\frac{८१९}{१४} + १$	$\frac{३}{१४}$	$\frac{१}{१४}$	$\frac{१}{१}$	$\frac{३}{१४}$	$\frac{३}{१४}$	$\frac{१२८}{१४}$	११

९ दर्शन मार्गणा (पृ ४५०)

अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	केवल अक्षर	सर्वे जीव अक्षर
$\frac{८१९}{१}$	$\frac{१}{१४}$	$\frac{४}{१४}$	$\frac{१२}{१} +$	११

१ वही मित्रोका अक्षर १ के हृत्पत्राक्षर के अक्षर आक्षर अक्षर के अक्षर हृत्पत्राक्षरों की एकत्रित अक्षर है।

२ वही मित्रोका अक्षर १२ के अक्षर अक्षर के अक्षर हृत्पत्राक्षरों की एकत्रित अक्षर है।

४ वही मित्रोका अक्षर ११ के अक्षर ४ के हृत्पत्राक्षरों की एकत्रित अक्षर है।

५ वही मित्रोका अक्षर १ के अक्षर १ के अक्षर ४ के हृत्पत्राक्षरों की एकत्रित अक्षर है।

६ वही मित्रोका अक्षर १२ के अक्षर १४ के हृत्पत्राक्षरों की एकत्रित अक्षर है।

इन प्रमाण-प्रकरणोंमें स्वभावन पाठकोंका मनुष्योंके प्रमाणोंके सम्बन्धमें विशेष बर्तित हो सगता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योंके सम्बन्ध अस्मन्या है। उनमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिष्याद्यदि द्रव्यप्रमाणसे असम्बन्ध, काष्ठप्रमाणसे अस्मन्याप्रसक्तान यत्नकथ्य (अक्सपिणियों-उत्सर्पिणियों) के सम्य प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगधर्मी अस्मन्याप्रसक्त माग अवात् असम्बन्ध करोड योजन क्षेत्रप्रमाण प्रमाण है। द्वितीयादि गुणस्थानकी जीव सख्यात है, जो इस प्रकार है—

१ सासादन गुणस्थानकी मनुष्य ५२ करोड (५ म्पात्तमे ५० करोड)

३ मिथ " " १०४ करोड (इकोत्स इगुने)

४ अस्मन्सम्बन्ध " " ७०० करोड

५ सप्ततस्य " " १३ करोड

छत्रसे चौहत्वे गुणस्थाननरक मनुष्योंकी सख्या कही है जो ऊपर गुणस्थान प्रमाण-प्रकरणमें दिखा आये हैं, क्योंकि, य गुणस्थान कथक मनुष्योंकी ही हान है, दवाधिकोरे नहीं। अत जिनका प्रमाण सख्यात है, उसे द्वितीय गुणस्थानसे चौहत्वे गुणस्थान नरके कुछ मनुष्योंका प्रमाण ५२+१०४+७००+१३+मील यम ० करोड, अवात् कुछ तैल यम आठमी अट्ठस करोड होता है। आत्रकी समारमरकी मनुष्यगणनासे यही प्रमाण चौगुनसे भी अधिक हो जाता है। मिष्याद्यिषीको मित्रनर तो उसकी अधिकता बहुत हो कर जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना क्वी द्विपत्नी स्त्रिह्वादि सम्पत् क्षत्रको है जिसमें पयापनरन अतिरिक्त निरुपस्थापतक और सम्भारपातक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाता क्षेत्रमे मनुष्य गणनाक अम्बकृत्त इस प्रकार बनवाया गया है—अन्तर्दीपाक मनुष्य सप्तस बाड है। उनसे स्यापगुण उत्कृष्ट अत नवमुक्त मनुष्य है। इसीप्रकार इति और म्यर, हेमक और है पक, भग और पराक, तथा मिह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण गुन पूछे कसग सम्पत्तगुना है। (रहो ५ ११)

एक बाल और उच्छनीय है कि कमाल द्वायसर्पिणीम पद्यप्रम मीपनका ही शिष्य-परिवार सप्त अधिक हुआ है, जिसकी सख्या मील मय तसि इवात् ३ ३०,००० बी।

उपर्युक्त चौह गुणस्थानों और माग्यास्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान मगवान् मूलवस्ति आचार्यने १९२ मूर्धमें कराया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके औष और अपेक्षा द्वारा निर्देश करमरी सूचना देकर एखे, तांते, चौबे और पांचवे सूत्रोंमें मिष्याद्यदि गुणस्थानक जीवोंका प्रमाण क्रमश द्रव्य, काष्ठ, क्षेत्र और मावकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पांचवें गुणस्थान तकके जीवोंका तथा आगके सागने और आठवें सूत्रमें क्रमश छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशमक तथा ११ वें व १२ वें में शृषकों और अपाग कषी जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें सपोमिनेकियोंका प्रवेश और संक्षय रज्जकी

मर्मभ्यास्त्रानोंके भीतर बतलाए गई राशियोंसे बहुतसे अल्पात्मकी और कम बर्हातक हमारे विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त	असंख्यात	संख्यात
१ अर्धयमी	२४ वायुकायिक	५३ सामाधिकसंयत }
२ अक्षरपूर्वानी	२५ अक्ष	५७ छेरोपस्थापना }
३ कुम्भति }	२६ पृथिवी	५८ यथावपात
४ कुम्भत }	२७ तेज	५९ केवळवाणी }
५ मिथ्यावृत्ति	२८ अक्ष	६० केवळपूर्वानी }
६ मर्त्यकक्षेत्री	२९ अन्नयोगी	६१ परिहारसंयत
७ तिर्यक	३० शीमित्रय	६२ मन्त्रपर्वकक्षानी
८ अर्धली	३१ शीमित्रय	६३ सुहृन्सर्पापक्षयत
९ काययोगी	३२ अक्षरिगित्रय	
१० पक्षेन्द्रिय	३३ अक्षरपूर्वानी	
११ अन्नरूपतिष्ठविक	३४ पक्षेन्द्रिय	
१२ मन्त्र	३५ संकी	
१३ अक्षरारक	३६ मनोयोगी	
१४ अनाक्षरारक	३७ विमगक्षानी	
१५ कुम्भ छेदना	३८ वेङ्गति	
१६ नील	३९ अर्धली	
१७ कपात	४० अक्षर	
१८ कोम कक्षानी	४१ पुष्पक्षेत्री	
१९ मापा	४२ मन्त्र	
२० छेद	४३ पीतक्षेत्री	
२१ माप	४४ पक्ष	
२२ सिद्ध	४५ मतिक्षानी }	
२३ अमन्त्र	४६ सुत }	
	४७ यक्षि	
	४८ अक्षरिपूर्वानी }	
	४९ दुष्टक्षेत्री	
	५० क्षापोपक्षमिष्टमन्त्रक्षानी	
	५१ क्षापिक	
	५२ अक्षरक्षमिष्ट	
	५३ मिष्ट	
	५४ साक्षात्	
	५५ वेदासंयत	

इस प्रमाण-प्रकरणमें स्वमात्रा पाठकोंको मनुष्योंके प्रमाणके सम्बन्धमें विशेष कौतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्याकी संख्या अस्मर्य्यत है। उनमें गुणस्वान्तोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे अस्मर्य्यत, काष्ठप्रमाणसे अस्मर्य्यतासेक्यात कल्पकाल (अस्तर्षिणियों-उत्तर्षिणियों) व समय प्रमाण तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगद्भेदकी अस्तस्थानमें माग अर्थात् अस्मर्य्यत करोड योजन क्षेत्रप्रमाण प्रमाण हैं। त्रितीयादि गुणस्वान्तकी जीव संख्यात हैं, जो इस प्रकार हैं—

२ साप्तादन गुणस्वान्तकी मनुष्य ५२ करोड (५ मन्तरसे ५० करोड)

१ मित्र " " १०४ करोड (पूर्वोक्तसे दुगुने)

४ अस्त्यस्त्यमिथ्या " " ७०० करोड

५ संप्रसादन " " ११ करोड

छठसे चौदहवें गुणस्वान्तकरे मनुष्योंकी संख्या यही है जो ऊपर गुणस्वान्त प्रमाण-प्रकरणमें दिखा आये हैं, क्योंकि, ये गुणस्वान्त केवल मनुष्योंकी ही हान हैं, द्वादिदिकोंके नहीं। अन जिनका प्रमाण सम्मान है, ऐसे द्वितीय गुणस्वान्तसे चौदहवें गुणस्वान्त तकने कुछ मनुष्याका प्रमाण ५२+१०४+७००+११+तीन कम ९ करोड, अर्थात् कुछ तीन कम आठवीं अठहत्तर करोड होता है। आबनई सत्तरमन्त्र मनुष्यागमनासे यही प्रमाण चौगुनेस भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोंके निम्नतः तो उसकी अनिष्टता बहुत ही बड़ी जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना बड़ा हीपकी किन्हेह आदि समस्त क्षेत्रोंकी है जिसमें पर्याप्तमन्त्र अनिष्ट निवृत्त्यप्याप्त और धर्म्यप्याप्त मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाना क्षत्रोंम मनुष्य गणनाका अल्पबहुत्व इस प्रकार दृष्टक्या गया है—अन्तर्ज्ञाते मनुष्य स्वस बाहे हैं। उनसे स्रष्टागुणे उत्पन्न आर नृकुले मनुष्य हैं। इसीप्रकार हरि और रम्य, हेमक और हेमक, मल और गल, तथा बिह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे कमता संख्यागुणा है। (इति ४ ११)

एक बात और उल्लेखनीय है कि कर्ममान बुद्धास्तर्षिणाम पत्रप्रम गोपकका ही शिष्य-परिवार घरसे अधिक हुआ है, जिसकी संख्या तीन क्षत्र तीस हजार २,२०,००० थी।

उपर्युक्त चौदह गुणस्वान्तों और मार्गणा-स्वान्तोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान भगवान् भूतबलि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें कराया है, जिनका निरूपण इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके ओष और आदेश द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर सूत्र, टीसरे, चौथे और पाँचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्वान्तक जीवोंका प्रमाण क्रमशः द्रव्य, काष्ठ, क्षेत्र और मानकी अपेक्षा बतकाया है। छठवें सूत्रमें त्रितीयसे पाँचवें गुणस्वान्त तकने जीवोंका तथा आनेके सागने और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्वान्तोंका द्रव्य-प्रमाण बतकाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशामक तथा ११ वें व १२ वें में क्षपकों और अयोग केतकी जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें समोपिनेतकियोंका प्रवेश और संवय-व्यवहारी

अपेक्षा प्रमाण कहा गया है। सूत्र न १५ से मार्गानुष्ठानोंमें प्रमाणका निर्देश प्राप्त होता है, जिसके प्रकरणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है—

सूत्रसे	सूत्रतक कुल सूत्र	सूत्रसे	सूत्रतक कुल सूत्र
निरूपण १५	— ११ = ९	ज्ञान मार्गणा १४१	— १४७ = ७
तियोगति २४	— १९ = १६	संयम " १४८	— १५४ = ७
मनुष्यगति ४०	— ५७ = १३	दक्षम " १५५	— १६१ = ७
हेतुगति ५३	— ७३ = २१	कथा " १६२	— १७१ = १
इन्द्रिय मार्गणा ७४	— ८६ = १३	मध्य " १७२	— १७३ = २
कथ्य " ८७	— १२ = १६	सम्पन्न " १७४	— १८४ = ११
योग " १३	— १२३ = २१	संज्ञी " १८५	— १८७ = ५
वेद " १२४	— १२४ = ११	आहार " १९	— १९२ = ३
कथय " १३५	— १४० = ५		

५ मतान्तर और उनका खंडन

ब्रह्मशास्त्रने अपने समयकी उपलब्ध वैज्ञानिक सम्पत्ति का जितना मरपुर उपयोग किया है वह प्रपंचके ब्रह्मलोकसे ही पूर्णता प्राप्त हो सकता है। सूत्रों, व्याख्याओं और उपदेशों का साहित्य उनके समुच्चय उपलब्ध था, उसका सिद्धान्तकोश प्रथम भागकी सूचिकामें कथया जा चुका है। प्रस्तुत प्रमाणोंमें भी वहाँ प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके क्रिये ब्रह्मशास्त्रने सूत्र, सूत्रिका व व्याख्यानका आश्रय नहीं लिया, वहाँ उन्होंने 'आचार्य परपरागत निनोपदेश', 'परम गुरुपरदेश', 'गुरुपरदेश', व 'आचार्य-ब्रह्म' के आश्रयसे प्रमाणप्रकरण किया है^१। किन्तु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहाँ आचार्यने विशिष्ट मूलों का स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरे का मंडन किया है। यहाँ हम इसी प्रकारके मत-मतान्तरों का कुछ परिचय करते हैं—

(१) सूत्रशास्त्रने प्रमाणप्रकरणमें प्रथम ब्रह्मप्रमाण, फिर कथप्रमाण, और तत्पश्चात् हेतु-प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य कथानुसार धर्म पहले और कथ पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहाँ कथका धर्मसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया। इसका समाधान ब्रह्मशास्त्र करते हैं कि कथकी अपेक्षा हेतुप्रमाण सूक्ष्म होता है अतएव 'आ स्पृक और अत्यु बर्णनीय हो उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार कथप्रमाण पूर्व और हेतुप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस प्रकार उन्होंने सूत्रशास्त्रके संबंधमें कुछ आचार्योंकी पूरा विश्व मान्यताका उल्लेख किया

१ परमगुरुपरदेश की अपेक्षा है। इन्द्रिय ही है कि वह ब्रह्म 'आचार्यपरपरागतनिनोपदेश'। ब्रह्मशास्त्रके प्रमाण उपलब्धता की पुष्टि। (पृ. ८९) और भी देखिये पृ. १११ १५१ ४ ४ ४०१

हे कि जो बहुप्रदेशोंसे उपपन्न हो गयी सूक्ष्म होता है, और इस मतकी पुष्टिमें एक गाथा भी उद्धृत की है जिसका अर्थ है कि काष्ठ सूक्ष्म है, किन्तु क्षेत्र उससे भी सूक्ष्मतर है, क्योंकि, खगुलके असंख्यतर्षे मागमें अस्तस्याप्त कल्प हाते हैं। ध्वजाकारमे इस मतका निरसन इसप्रकार किया है कि यदि सूक्ष्मत्वकी यही परिभाषा मान ली जाए तब तो द्रव्यप्रमाणका भी क्षेत्रप्रमाणके पश्चात् प्रकरण करना चाहिये, क्योंकि, एक गाथानुसार, एक द्रव्यागुलमें अनन्त क्षेत्रागुल होनेसे क्षेत्र सूक्ष्म और द्रव्य उन्ने सूक्ष्मतर होता है। (पृष्ठ १०-१८)

(२) निर्यक्त ओरके विस्तार और उसी संरचसे रम्भके प्रमाणसे सबभमें भी दो मतोंका उल्लेख और विवेचन किया गया है। ये दो भिन्न भिन्न मत त्रिषारूपप्रति और परिकर्मके भिन्न भिन्न सूत्रोंके आधारसे उत्पन्न हुए हुए होने हैं। रम्भका प्रमाण खानेकी प्रक्रियामें जम्बूद्वीपके अर्धच्छदोक्त कपाधिक करनेका विधान परिकर्मसूत्रमें किया गया है जिसका 'एक रूप' अर्थ करनेसे कुछ व्याख्यानकारोंने यह अर्थ निकाला है कि निर्यक्तोक्त विस्तार स्वयम्भूमण समुद्र की बाहिरी वेदिकापर समाप्त हो जाता है। किन्तु त्रिषारूपप्रतिके आधारसे ध्वजाकारका यह मत है कि स्वयम्भूमण समुद्रसे बाहर असंख्यात द्वीपसमूहोंके विस्तार परिमाण योजन आकर विर्यक्तोक्त समाप्त होता है, अतः जम्बूद्वीपके अर्धच्छदोमें एर नहीं, किन्तु सत्यातारूप अविकल्पता चाहिये। इस मतका परिकर्मसूत्रसे शिरोध भी उन्होंने इसप्रकार कर दिया है कि उस सूत्रमें 'रूपाधिक' का अर्थ 'एक रूप अधिक' नहीं, किन्तु 'अनेक रूप अधिक' करना चाहिये। एक रूपकाळ व्याख्यानकारों उन्होंने सच्चा व्याख्यान नहीं, किन्तु व्याख्यानप्राप्त कहा है। अपने मतकी पुष्टिमें ध्वजाकारने यहां जो अनेक युक्तियां और सूत्रप्रमाण दिये हैं उनसे उनकी सम्राहक और समष्टीचत्तात्मक योग्यताका अच्छा परिचय मिलता है। इस विवेचनके अन्तमें उन्होंने कहा है—

एवौ जगौ अहं विपुलाविमलवराचमिहो हा वि संतुष्टिबकैर अहं वि वरुणो। तसो ह्यमिन् वेति वेदायामहो कायसो अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो। तसो उच्यते अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो अहं वि वरुणो।

अर्थात् हमारा त्रिषारूप हुआ अर्थ यद्यपि पूर्वोक्त-संप्रदायके विरुद्ध पड़ता है, ता भी तत्त्व-पुष्टिक बलसे हमन उसका प्रकरण किया। अतः 'यह इसीप्रकार है' ऐसा दुःप्रमाण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अतीतिप्रिय पणोंसे विषयमें अत्यंत ही निकटस्थ युक्तियोंका एक निश्चयपूर्ण निगमन छिपे हेतु नहीं पाया जाता। अतः उपर्युक्तों प्राप्त कर विशेष निगम करनेका प्रयत्न करना चाहिये। यहां संभवतः किसी निगम, निर्मल, शोधन बुद्धि और त्रिषारा प्रकट हुए है।

(१ २४ ११)

(१) एर मुहूर्तमें कितने उच्छ्वास हात हैं, यह भी ध्वजाकारने विषय हुआ है। एक मत है कि एक मुहूर्तमें केवल ७२० प्राण अर्थात् आसौष्ट्यास हाते हैं। किन्तु ध्वजाकार करते हैं कि यह मत न तो एक स्वल्प पुरुषके आसौष्ट्यासोंकी गणना करनेसे सिद्ध होता है,

और न कबकी बात याचित प्रमाणभूत अन्य सूत्रों इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मुहूर्त उच्छ्वासोंका टीक प्रमाण ६००३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रों एक निबन्धमें १,१३ १९ प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। दूसरे मन्त्रों ता एक दिनमें केवल २१,६ ० प्राण होंगे जा किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (५ १११)

(४) उपशमक और शोचनी सूर्यके नियमों उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मन्त्रोंका ही हैं। प्रथम मतानुसार एक और शोचनी सूर्य १, ४, तथा द्वितीय मतानुसार उनमें ५ कम करके १९९ है। इस मतभेदकी प्रत्यक्ष दो गाथाएँ भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है जिसके अनुसार उपशमनोंकी सूर्य १० है। इन मत भेदोंपर ध्यानकरके कोई उद्घाटन नहीं किया उन्होंने केवलमात्र उनका उद्देश ही किया है।

(५) इनका उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तियोंका मन्त्रों प्रत्यक्षरूप राशिक प्रमाण-प्रमाणोंमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्ति अनुसार प्रमाणोंका प्रमाण ४६६६६,६६६ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिनुसार यह प्रमाण ५६३०८०६ आता है। इन मन्त्रोंकी बीच निर्णय करनेका भी कठिनाईमें क्या कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्ति प्रमाणोंमें जो कुछ आचार्योंने यह शङ्क उठाई है कि सप्त तीर्थोंमें सूर्य बड़ा क्षिप्तपत्तिपर फलप्रसक्तमीकर ही था, किन्तु यह परिणाम भी मात्र ३३ ० ही था। तब फिर जो सूर्य सूर्योत्थान ही सूर्य ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथामें कहा है वह कैसे भिन्न हो सकता है! इसका परिहार कठिनाईका यह किता है कि इस उच्छ्वासोंकी कठिनाई तीर्थोंके साथ मन्त्र ही सूर्योंका एक प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अन्य उच्छ्वासों-अन्तर्निष्ठियोंमें तो तीर्थोंका क्षिप्तपत्तिपर बड़ा पला जाता है। इसके, मत और प्रमाण दोनोंकी अपेक्षा मनुष्योंका प्रमाण निम्न ५०में सूर्यास्तुणा पला जाता है, अतः वह एक प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये एक प्रमाणमें कोई रूप नहीं है। (५ १८९)

(६) पञ्चमिष नियम योनिनी सिध्दादित्योंका अन्तराल देशों अन्तरालमें आधुनिक बतलाया गया है। किन्तु कठिनाईका मत है कि किन्ते ही आचार्योंका एक व्याख्यान बतला नहीं होता है क्योंकि, बाल्यन्तर देशोंका अन्तराल तीनती योनिनी अन्तर्में कांमात्र बतलाया गया है। क्या कोई यह शङ्क न करता है कि पञ्चमिष नियम योनिनी सिध्दादित्य सबकी अन्तरालका ही गलत है और बाल्यन्तर देशोंका अन्तरालका टीक है यह कैसे जाना जाता है! क्या ध्यानका कहते हैं कि हमारा कोई एकमत आग्रह नहीं है, किन्तु जब दो बातोंमें भिन्न हो तो उनमेंसे कोई एक तो असत्य होगा ही पाविये। किन्तु इतना समानापूर्वक कह चुकने पर बरकरारको अपनी निर्णायक बुद्धिसे प्रमाण ही और ५ कह उठ— जहाँ दोष है कि पञ्चमिष नियम योनिनी क्या कहा है वहाँ। अर्थात् एक दोनों ही व्याख्यान बतला हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसका अन्तर्निष्ठ मन्त्रानुसार सूर्य आगरेसे एक दोनों अन्तरालको अन्तराल करके उनमें पञ्चमिष प्रमाण-प्रमाण करनेका उपदेश दिया है। (५ १३१-१३९)

(७) साक्षात्तसम्पत्तिगणितोंका प्रमाण एक प्राचीन गाथामें ५२ करोड़ और दूसरी गाथामें ५० करोड़ पाया जाता है। भवछात्रान्न प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, यह प्रमाण आचार्य-परंपरागत है। (पृ २५२)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त विष्णुशक्ति राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोटाका'कोईसे ऊपर और कोटाकाकोईसे नीचे' अर्थात् छठवें बर्गके ऊपर और सातवें बर्गके नीचे। किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तशक्ति बाणख बर्गके (४२९४९६०२०६) अर्थात् द्वितीय बर्गघातके पाँचवें बर्गस्थानके घनप्रमाण है। भवछात्राने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं। एक तो बाणखका घन २० अरु प्रमाण होकर भी कोटाकोईसे नीचे'कोईसे ऊपर निकल जाना है, जिससे सूत्रके अर्थ-सीमाशेषका सर्वथा उल्लंघन हो जाता है। दूसरे यदि ढाई हाँपने उस भागका क्षतपक्ष निरुद्धा जाय जहाँ मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अरु प्रमाण प्रत्यङ्गुलोंमें आता है जिससे उस २९ अरु प्रमाण मनुष्यशक्तिग्रह नहीं निवास असम्भव सिद्ध होता है। यही नहीं, सर्वमितिहिते देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तशक्तिसे सम्पन्नगुणा कहा गया है जबकि सर्वमितिहित विमानका प्रमाण केवल जन्तुशक्तिसे वरुण है। अतएव उक्त प्रमाणमें इन देवोंकी अवगाहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असम्भव हो जायगी। अतः उक्त शक्तिका प्रमाण सूत्रक अर्थात् कोटाकोईसे नीचे' ही मानना उचित है। (पृ २५३-२५४)

(९) आहारमिश्रणयोगियोंका प्रमाण आचार्य-परंपरागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र न १२० में उनकी प्रमाण 'सम्पात' शब्दक द्वारा सूचित किया गया है। इसपरसे भवछात्राने मत है कि उक्त शक्तिका प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये किन्तु मध्यम सरयातकी अन्य कोई सम्पात माना चाहिये जिसे विनेन्द्र मगवान् ही जानते हैं। यद्यपि २७ भी मध्यम सम्पातका ही एक भेद है और इसलिये हमने भी उक्त प्रमाणप्रकरणमें ग्रहण करनेकी समाजना हो सकती है किन्तु इसके विरुद्ध भवछात्राने न हेतु दिए हैं। एक तो सूत्र में केवल सरयात शब्द द्वारा ही यह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित सम्पात द्वारा नहीं। दूसरे मिश्रणयोगियोंमें आहारमिश्रणयोगी सम्पातगुणे कह गये हैं। दोनों विनित्योंमें यहाँ सामान्य मत नहीं सकता क्योंकि, सर्व अपवातशक्तसे अथवा पर्याप्तशक्त भी संव्ययन गुणा माना गया है। (पृ ४००)

६ गणितकी विश्वपता

धर्मराजने अपने इस संघभाष्य आदिमें ही संघभाष्य गाथामें कहा है कि—अभिज्ञान जिन अभिज्ञान दृष्टिभौषण गणितकामें अर्थात् जिनका अर्थ मध्यम अथवा मध्यम-मानुष्यका पदन करने है, जिसका सब भाग गणितशास्त्रम सम्बन्ध गता है, या आ गणित शास्त्र-प्रत्यय है। यह प्रतिज्ञा इस प्रथम पूर्णकाम निरती गई है। धर्मराजने इस संघभाष्यमें गणितशास्त्रका सूत्र उक्त

और न केवली इस मापित प्रमाणमूल अन्य सूत्रों से इसका सामक्षत्व बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक सुदूरतक उद्धृष्टासौका ठीक प्रमाण १००२ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रों एक दिवसमें १,१३ १९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्णतः मतसे ता एक दिनमें केवल २१,६ ० प्राण होंगे जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (५ ६९१)

(४) उपरामक जीवोंकी संख्याके विषयमें उत्तरप्रतिपक्षि और दक्षिणप्रतिपक्षि, ऐसी दो भिन्न मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी संख्या १ ४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् १९९ है। इस मतभेदकी प्रकृष्टता दो गान्धार भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है जिसके अनुसार उपशायस्त्रोंकी संख्या दो ३०० है। इन मत-भेदोंपर बख्ताकृतन कोर ठाढ़ापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमाल उनका संछेद ही किया है।

(५) इसी उक्त और दक्षिण प्रतिपक्षियोंका मतभेद प्रमत्तस्य राशिके प्रमाण-प्रत्यक्षमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपक्षिरे अनुमान प्रमाणोंका प्रमाण ४,६९ ६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपक्षिनुमान यह प्रमाण ५ ९३ ९८२ ६ आता है। इन मतभेदोंके बीच निम्न करनेका भी बख्ताकृतने कहा कार्य प्रकृत नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपक्षिरे प्रमाणमें आहुत आवाजोंमें यह धारा उद्धृत है कि सत्र तीर्थस्त्रोंमें सबसे बड़ा शिष्य-पत्निर पद्मप्रसन्नमीका ही था, किन्तु वह पत्निर भी मात्र ३३ ० हो था। तब फिर आ सत्र स्त्रियोंकी पूरी संख्या ८९०९९९७ एक प्रार्थन गाथाका प्रमाण है यह केवल सिद्ध हो सकती है। इसका परिहार बख्ताकृतने यह किया है कि इस दुष्टास्त्रिणी कावली तीर्थस्त्रोंके साथ भले ही स्त्रियोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता है। किन्तु अन्य उद्धृष्टिणी-अस्त्रिणियोंमें भी तीर्थस्त्रोंका शिष्य-पत्निर बड़ा पाया जाता है। दूसरे, मत और पुरातन छात्रों अनेका मनुष्योंका प्रमाण सिद्ध करने संख्यामनुगा पाया जाता है, अन्य कहा उक्त प्रमाण पूर्ण हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कार्य रूपन नहीं है। (५ ९ ९)

(६) पञ्चत्रय नियम वागिमनी सिप्पाद्विषयोंका अस्त्रास्त्रक दशोंक अस्त्रास्त्रकके आभयसे बतलाया गया है। किन्तु धनराकाका मत है कि जिनमें ही आवाजोंका उक्त ब्याख्याल बतित नहीं होता है क्योंकि, बाल-यन्त्र शोका अस्त्रास्त्रक तीनती थोबनोंके अगुमोंका कामका बतलाया गया है। यहां गई यह धारा बत सूचना है कि पञ्चत्रय नियम वागिमनी सिप्पाद्वि संरंभी अस्त्रास्त्राका ही गान है और अनन्तर देवका अस्त्रास्त्रक ठीक है, यह कैसे जाना जाता है। यदि धनराकाका मत है तो हमारा काह पत्रकत आग्रह नहीं है, किन्तु जब भी बातोंमें शिरोह है तो उनमेंमें काह एक भी अमल होता ही पाटिय। किन्तु इनका समायलपूर्वक यह सुनने पर धनराकाका अपनी निगावर सुविधि प्रणवा हुई और यह बत उठे—अब काह सिद्ध कि बख्ताकृतन बख्ताकृतन काह बख्ताकृतन। अर्थात् उक्त दावों है। व्याख्याल अग्राय है, यह हम प्रतिपादक बत सूचना है। इस आग धनराकाका सुनने मुरने आग्रहसे उक्त लोगों अस्त्रास्त्राओंका बतित करने उनमें संशयित प्रमाण-मरग बख्ताकृतन काहरेखा दिया है। (५ ९३१-९९९)

छम्बकर उसी मागकमें माग देनेसे निश्चित मजनफळ प्राप्त होता है। गृहीतगुणकरमें निश्चित मजनफळका निश्चित राशिमें माग देनेसे जो छम्ब थापा उसका उसी मागक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए मजनफळका निश्चित राशिके बर्गमें माग देकर निश्चित मजनफळ प्राप्त किया गया है। ये सब विस्तृत बर्गोत्तर राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फळराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैशिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ १५१)

मनुष्यगति-प्रमाणके प्रकरणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओझ और गुग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुन दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका माग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोम राशि, यदि एक शेष रहे तो कृत्तिओम राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कुतगुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरगुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्यराशि तेजोम कही गई है। (पृ १४९)

८ मूढविद्वित्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठश्रेष्ठ विदित ही है कि इन सिद्धान्तप्रयोगोंकी प्राचीन प्रतियाँ केवल एकमात्र मूढ़ विद्विष्टनेके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्ण प्रकाशित दो भागोंके स्थित होने इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुबन्सर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहाँ के महारक्ष-स्वामी और पणोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्ण प्रकाशित दोनों भागों और इस दुर्लभ मागका मूढ़ पाठ वहाँकी ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाया जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर लक्ष विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्ध व पाटनी दृष्टिसे अधिष्ठान्नाद प्रणीत हुए। (देखो परिशिष्ट पृ १ बाहि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोला ही झुनझुन हैं, अतएव जो समस्त प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखो परिशिष्ट पृ १५ बाहि)

(स) वे पाठभेद जो प्राक्कल्पित उच्चारणभेदोंसे उत्पन्न होते हैं और विस्तृतकालसे पाये जाते हैं। (देखो परिशिष्ट पृ १९ बाहि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे असुन्द हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखो परिशिष्ट पृ १८ बाहि)

इस श्रेणी-विभाजन अनुसार मूढविद्वित्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिचयि इस प्रकार आती है—

योग किया है, जिससे तत्त्वस्थित गणितशास्त्रकी अवस्थान इनमें बहुत अच्छा परिचय मिल जाता है। भस्मान्तरसे घटाभिन्न्यों पूर्व रचे गये मूलबन्धि आत्मायके सूत्रोंमें जो गणितशास्त्रसम्बन्धी उल्लेख हैं, वे भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें एकल समान रूप, समूह, शतसङ्ख्या (सङ्घ), कोटि, कोटाकोटाकोटी व कोटाकोटाकोटाकोटी तक की गणना, व उससे भी ऊपर संस्रपान, असङ्ख्यात, अनन्त और अनन्तानन्ततन्त्र कथन, गमितकी मूल प्रतिमाओं जैसे सात्त्विक, हीन गुण और अज्ञान या प्रतिमाग अर्थात् बोकु बानी, गुणा, यमा, कर्मा और कर्ममूल, तथा प्रथम, द्वितीय आदि सात्त्विक तक कर्मा व कर्ममूल, धन, अन्याय्याम्यात् आदिको मूल उपयोग किया गया है। क्षेत्र और कर्कसम्बन्धी विशेष गणना—मानों जैसे अंगुल, पौन, ध्रुवी, अणुपर व डॉक तथा आत्मी, अन्तर्गर्भ, अन्तर्गर्भिणी—उत्सर्पिणी, पत्त्येय, तथा विष्णु निर्वन्मसूची (पञ्चिरूप क्षेत्रज्ञायाम), इन स्वयं भी सूत्रोंमें मूल उपयोग पाया जाता है, जिनके स्वरूपपर ब्यास वनेसे आकरसे जगमग दो हजार वर्षपूर्वके एतद्देशीय गणितज्ञानका अच्छा दिग्दर्शन मिल जाता है।

भस्मान्तरकी रचनामें असंख्यात, असङ्ख्यातसङ्ख्यात तथा अनन्त और अनन्तानन्तके व्युत्पत्तिक प्रवेदों और तारतम्योंका और भी सूक्ष्म निदर्शन किया गया है, जिसका स्वरूप हम ऊपर दिखा चुके हैं। इस नियमे भस्मान्तरद्वारा अर्धच्छेद और अर्धशतकच्छेदोंके परस्पर सम्बन्ध तथा वर्गित-संरचित गणितका जो परिचय दिया गया है वह गणितकी विशेष उपयोगी वस्तु है। (देखो पृ १८-२६)। सर्व जीवगणितका उसके अन्तर्गत राशिपेयमे माग-प्रविभाग लिखानेके लिये भस्मान्तर में ध्रुवादि (महाद्वार विभाग) स्थापित करनेकी क्रिया और उससे माग देनेकी प्रक्रियाएँ जैसे खंडित, माजित, निश्चित और अक्षत विस्तारसे दी हैं, जो गणितज्ञोंको स्विकृत सिद्ध होंगी। (देखो पृ २१)। ध्रुवादिसे माग देनेपर विरहित मिथ्याद्विगुणित क्यों आती है, इसका कारण समझनेमें मान्य और माजकते हानि-वृद्धिकथन जो तारतम्य और संबंध कथनाया गया है और क्षेत्र-गणितसे सम्बन्धित गया है, वह गणितशास्त्रका एक बहुमूल्य माग है। (देखो पृ २२ आदि)। अक्षरण गाथा २१ सं २२ तककी नौ गाथाओंमें इसी संबंधके बड़े सुंदर नियम गुणरूपमें उद्घृत किये गये हैं और उनका उपयोग निश्चित राशिार्थ करनेके लिये यथासमय और यथासंभव माजक अनन्त विवरणोंमें करके कथनाया गया है। अक्षरण निरन्तरमें निश्चित मान्य और माजकते गीषेनी सङ्ख्या केपर बड़ी मजबूत उत्पन्न करके कथनाया गया है, और वह भी निश्चय अर्थात् कर्मायामे, अक्षरण अर्थात् धनयामे और धनायन-यामे। अर्थात् निश्चित सङ्ख्याका प्रथम द्वितीय व तृतीय कर्ममूल केकर माजकते कर कर बड़ी मजबूत उत्पन्न कर दिखाया है। उपरिम विवरणमें निश्चित मान्य व माजकते ऊपरकी अर्थात् कर्मा, धन व धनायनरूप राशिार्थ प्रदान करके बड़ी मजबूत उत्पन्न किया गया है। इस प्रक्रियामें घबका-करने कीन और विरह्य कर दिशाये हैं, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणरुत। गृहीत तो सीधा है, अर्थात् उसमें ऊपरके मान्य और माजकते द्वारा निश्चित मजबूत उत्पन्न किया गया है। किन्तु गृहीतगृहीत में निश्चित मजबूतका भी एक बड़ी शास्त्रात्मा माजक बन जाता है और उसके

कम्बका उसी मात्रकमें भाग देनेसे निश्चित मजनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणनरमें निश्चित मजनफलका विभक्तित राशिमें भाग देनेसे जो कम्ब आया उसका उसी मात्रक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए मजनफलका विभक्तित राशिके बर्गमें भाग देकर निश्चित मजनफल प्राप्त किया गया है। ये सब विवक्षित बर्गात्मक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी क्रियात्मक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ ९५ १)

मनुष्मपति-प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुन दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोज राशि, यदि एक शेष रहे तो कृतिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्मपति तेजोज करी गई है। (पृ ९४९)

८ मूढविद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंके निश्चित ही है कि इन सिद्धान्तप्रबोधि प्राचीन प्रतिषां केवल एकमात्र मूढ-विद्रीक्षेत्रके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्व प्रकाशित दो भागोंने स्थिरे हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुव्यक्त प्राप्त नहीं हो सका था। किंतु हर्षकी वल है कि अब हमें यहाँ के मन्दिरक-स्थानी और पर्वोक्त सङ्योग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्व प्रकाशित दोनों भागों और इस तृतीय भागका मूल पाठ यहाँ की ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाना जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर सूक्ष्म विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(क) वे पाठभेद जो अर्ध व पाठ्य दृष्टिसे अधिक शुद्ध प्रतीत हुए। (देखा परिशिष्ट पृ ९ आदि)

(ख) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुद्ध हैं, अतएव जो सम्भव प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखा परिशिष्ट पृ ९९ आदि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न हुए हैं और विवक्षितरूपसे पाये जाते हैं। (देखा परिशिष्ट पृ १९ आदि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे असुख हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखा परिशिष्ट पृ ९ आदि)

इस श्रेणी-विभाजने अनुसार मूढविद्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागने साथ प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार जाती है—

(ब) धेयांक पाठ्येद भाग १ में ६२, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये हैं। मेद प्राय बहुत थोड़ा है, और जवनी दृष्टिसे तो अत्यन्त कम। यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पाठ्येदोंके कारण अनुशास्त्रमें निश्चित भी परिष्कृत करनेकी आवश्यकता कुछ भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल ९१ स्पष्टावर पड़ी है। शर ८८ स्वर्णोक्त पाठपरिष्कृत बाह्यीय होनेपर भी उससे हमारे विषये हुए भावानुवादमें कोई परिष्कृत आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(ब) अण्मांक पाठ्येद भाग १ में ६० भाग २ में कोई नहीं, और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये और इसमें भी निश्चित अनुवाद-परिष्कृत केवल प्रथम भागमें १७ स्पष्टावर आन्तर समाया गया है।

(स) धेयांक पाठ्येद भाग १ में ६ भाग २ में ३ और भाग ३ में ६७ इस प्रकार कुल ७६ पाये गये हैं। इनमें कहीं कोई मेदकी तो समझना ही नहीं है। इनमेंके अधिकतर पाठ ता जमे हैं जो उपलब्ध प्रतियोंमें भी पाये जाने थे किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंसे ध्यानमें रखकर परिष्कृत किये हैं। (कृष्ण ने पाठ लघीकरणके विषय पर एक भाग १ प्रस्तावना ६ १ ११)

(ड) अण्मांक पाठ्येद भाग १ में ३८ भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकतर तो स्पष्टावर अनुप्राप्त हैं, और जहाँ उनके कुछ होनेकी समझना हो सकती है, वहाँ निष्पत्ती लेकर स्पष्ट कर लिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं पाये हो सकते।

इस प्रकार कुल पाठ्येद १४९+६२+१६७+१२ = ३८८ आये हैं। सद्योपमे यह परिस्थिति इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें मेद					अनुवाद परिवर्तन		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६२	३	३	३८	१०६	१९	१७	३६
२	२५	×	३	१५	४३	१	×	१
३	६२	६२	६७	६७	२५८	६२	×	६२
कुल	१४९	६९	१५७	१२	३८८	६२	१७	७९

मूलाष्टके सद्योपमे अर्ध और दीर्घकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंपर हमें पाठ स्थिति प्रतीत हुए थे। प्रतियोग्य कायम न होनेसे हमने वे पाठ कोष्ठोंके भीतर रखे हैं जिससे पाठन सुकरमतासे हमारे जाड़े हुए पाठको अल्प परिष्कार सके। गल विलीय भागमें भी इसीप्रकार पाठ कहीं कहीं ओझ्य पड़े थे। किन्तु वह आचार्य प्रकरण होनेसे स्पष्टान बाध दिये हैं। पर इस

माताका नियम बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहाँक स्वरूपन बड़े ही गभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ बख्ताकरकी शैलीमें ही बड़े विचारके साथ रखना पटा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हम यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूढविद्वीकी मिथानसे इन पाठोंमें के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दछा ताडपत्रीय प्रतियोंमें पाये गये। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खम्मा' के स्थानपर 'बध्मा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, यहाँ 'खम्मा' ही चाहिये। शेष ६ पाठ मूढविद्वीकी प्रतियोंमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थन यहाँ अर्धकी दृष्टिसे बड़ा अभिप्राय पूरापर प्रसंगसे देना पड़ता है। बन्धनरस्त्री अथवा शैलीपरसे ही वे पाठ निश्चित किये गये हैं।

१ देवी पृष्ठ ११४ १५४ १८३ १८४, १९९ ४१९ ४२४ ४१५, ४४४ ४५९

२ देवी पृष्ठ ४८९

३ देवी पृष्ठ ११ २४८ ३४८ १५३ ४४

द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.	क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	१				
	विषयकी उत्पत्तिक	१ १०		कामन्त एकामन्त कमयानन्त	
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश			विस्तारामन्त, सर्वात्मन्त और माया-	
	मेव-करण	१	१९	नन्तके मेव और स्वरूप	१५-१९
२	द्रव्यप्रमाणकी निवृत्ति और मेव	२		प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजनकी	
३	जीवद्रव्यका साधारण और असा-	२		सिद्धि और सोच इस अनन्तोंके	
	धारण कृत्य	२		करण करनेका हेतु	१९-२७
४	अजीवद्रव्यके कपी और अकपी		२	गणनानन्तके तीन भेद-परीत, युक्त	
	मेव वा इनके अन्वय	२ ३		और अनन्तानन्त	१८
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका		२१	मिथ्यावृत्तियोंके प्रमाणमें निवृत्ति	
	निर्देश	४		अनन्तानन्तका प्रतिपादन	१८
६	प्रमाण शब्दकी निवृत्ति तथा द्रव्य		२२	अनन्तानन्तके अग्रव्याप्ति तीन भेद	
	प्रमाण शब्दका समाप्त-विच्छेद	४-५		तथा मिथ्यावृत्तियोंके प्रमाणमें	
७	द्रव्यका अस्तित्व	५-६		प्रथम अनन्तानन्तके प्रकृतका	
८	छद्मों समाप्तोंके अस्तित्व व लब्धिरूप	६ ७	२३	परिकर्मके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
९	संख्याकी सर्वथा एककपताका			अपका मिथ्यावृत्तिपक्ष तीन बार	
	परिहार	७		वर्गित-सर्वगैतराशिसे अनन्तगुणी	
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८		तथा छह द्रव्यमस्तिन्तराशिसे अन्-	
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदों-	८ १		न्तगुणी हीन है इसका सोच	
	का स्वधीकरण			पक्षिक प्रतिपादन और इस राशि-	
	२			योंके वृत्तिप्रमाण प्रकरण	१९-२६
	भोषसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १०-१०१		२४	काइकी अपेक्षा मिथ्यावृत्ति जीव	
१२	मिथ्यावृत्ति जीवोंका प्रमाण			राशिका विरूपण तथा क्षेत्र-	
	प्रकरण	१०		प्रमाणके पृथक् अक्षप्रमाणके प्रति-	
१३	अनन्तके ११ भेद सामान्य और		२५	पादनकी सार्यकता	२७
	स्वापमानन्तका स्वरूप	११		काइकी अपेक्षा मिथ्यावृत्ति जीव	
१४	द्रव्यप्रमाणके मेव	११		राशिकी गणना करनेका प्रकर	
१५	अवयव और अतत्त्व अस्तित्व	१२		तथा इस गणनामें केवल अतीत	
१६	आगम द्रव्यप्रमाणका स्वरूप	१२	२६	काइके प्रकृतका प्रतिपादन	२८-२९
१७	नामानाम द्रव्यप्रमाणके मेव, अन्त-		२७	अतीतकालसे मिथ्यावृत्तिराशि बड़ी	
	स्वरूप और तद्विषयक शंका	१३ १४		है इसका सोचइ-पक्षिक अल्प	
१८	धार्यमानन्त, गणनानन्त अपेक्षित			बहुत्वमें समर्थन	३-३१
			२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यावृत्तिराशि	
				प्रमाण-प्रकरण तथा क्षेत्रप्रमाणके	
				पूर्व भाष्यप्रमाणके प्रतिपादन न कर	
				नका कारण	३२

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
२८	क्षेत्रक्षी अवेक्षा मिथ्यादृष्टिराक्षिके मापनेका प्रकार	३२	४४	गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार	५४
२९	क्षोक अणुध्वेजी और राशुका स्वरूप	३३	४५	विकल्पधारा में गृहीत उपरिम विकल्प	५४
३०	मध्यकोक-विस्तारके सपथमें गत भेद तथा प्रवर्तनाकारका उत्सर्गधी सयुक्तिक निर्णय	३४-३८	४६	प्रवर्तनाधारा में गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३१	संज्ञप्रमाणके प्रकरणधी सार्धकता	३८	४७	गृहीतगृहीत-उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टि राक्षिकी उत्पत्ति	५८
३२	मात्रप्रमाणका स्वरूप व उसके भेद	३८-३९	४८	गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टि राक्षिकी उत्पत्ति	५९
३३	ध्वजमें मात्रप्रमाणके नहीं कहनेमें हेतु	३९	४९	सासादनसम्बन्धदृष्टिसे लेकर संप्रसारणत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	६३
३४	मात्रप्रमाणकी अवेक्षा कथित माहित विरहित और अपरिहृत गणितकी प्रक्रियाओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराक्षिके जानेकी विधि	३९	५०	सासादनसम्बन्धदृष्टियोंका प्रमाण	६३
३५	वर्गस्थानमें कथित आदि के द्वारा मिथ्यादृष्टिराक्षिके प्रमाण-निरूपण की प्रतिष्ठा	४०	५१	क्षेत्र और काष्ठकी अवेक्षा सासादनसम्बन्धदृष्टियोंके प्रमाणकी प्रकरण नहीं करनेका कारण	६३
३६	मिथ्यादृष्टिराक्षिके जानेके लिए प्रवर्तनाक्षिकी स्थापना व उसके द्वारा कथित माहित, विरहित और अपरिहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टिराक्षिका प्रमाण प्रकरण	४१	५२	काष्ठप्रमाणसंबंधी मावली, अणुमूल स्तोक व मावली, मुहूर्त, मिश्र मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्तका स्वरूप	६५
३७	मिथ्यादृष्टिराक्षिक प्रमाण तथा उत्सर्गधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४३	५३	एक मुहूर्तमें प्राणोंकी संख्यासिद्धि और मत्तान्तरका बंधन	६६
३८	गणितसंबंधी नौ करण-माधाय	४३-४९	५४	वर्तमानसम्बन्धदृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि सासादनसम्बन्धदृष्टि और संप्रसारणत अवधारकाओंका कथन	६५
३९	सर्वजीवराक्षिकोंसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध-तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण प्रयुक्त करनेकी निरूपित	५१	५५	ओषसम्बन्धमिथ्यादृष्टि, सासादनसम्बन्धदृष्टि और संप्रसारणतोंका अवधारकाका आयक्षिके मर्तक्यता के माय न होकर असक्यात आयक्षी प्रमाण है इस बातका समर्थन व विरोध-रहितार	६८
४०	विकल्पके अग्रस्तन और उपरिम भेद तथा वर्गधारा में मिथ्यादृष्टि राक्षिके जानेके लिए अग्रस्तन विकल्पकी अर्धमवस्था	५२	५६	सासादनसम्बन्धदृष्टि आदि राक्षिकोंके अग्रवर्तिन रहने पर भी उनके मिथित प्रमाण जानेके लिए निमित्त मागहारका समर्थन	७०
४१	धनधारा में अग्रस्तन विकल्प	५२			
४२	प्रवर्तनाधारा में अग्रस्तन विकल्प	५३			
४३	उपरिम विकल्पके तीन भेद-गृहीत				

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
५७	कण्ठित माण्डित विरहित अपहृत, प्रमाण कारण और निरुद्धिके द्वारा वर्गपारामें साक्षात्तसम्पत्तियोंके प्रमाणका प्रकरण	
५८	अपस्तम्भिकरणमें द्विरूपवर्गपारा आदि का आशय लेकर साक्षात्त सम्पत्तियोंके प्रमाणका प्रकरण	
५९	उपरिमितिकरणके तीनों भेदोंमें द्विरूपवर्गपारा आदि का आशय लेकर साक्षात्तसम्पत्तियोंके प्रमाणका प्रकरण	
६०	सम्पत्तिमर्यादादि, असंपत्तिसम्पत्ति और सुयत्तासंपत्ति की प्रकरण का संक्षिप्त आदि विधिले आसा इनसम्पत्तियोंके प्रकरणके समान इनके पुनरुप पुनरुप अवधारणाके द्वारा करना निर्देश	
६१	साक्षात्तसम्पत्ति आदि के अवधारणा प्रमाण और पर्योपमयके संकलनदि	
६२	प्रमत्तसंपत्तियोंका प्रमाण	
६३	अप्रमत्तसंपत्तियोंका प्रमाण	
६४	अप्रमत्तसंपत्तियोंके प्रमाणसे प्रमत्तसंपत्तियोंके होने प्रमाणका कारण	
६५	चारों उपशामकोंका प्रवेशकी अवस्था प्रमाण	
६६	चारों उपशामकोंका कावची अवस्था प्रमाण व इनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	
६७	चारों स्वरूप और अयोगिकेवर्गीय प्रवेशकी अवस्था प्रमाण	
६८	चारों स्वरूप और अयोगिकेवर्गीय कावची अवस्था प्रमाण व इनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	
६९	उपशामका और इनकी संख्याके मानेका क्रमानुसंध	
७०	उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	पाठिके अनुसार उपशामकों और स्वरूपोंकी संख्याका मतभेद	९४
७१	एक एक शुद्धस्थानमें उपशामक और स्वरूपोंका संयुक्त प्रमाण	९५
७२	सयोगिकवर्तियोंका प्रवेश व कावची अवस्था प्रमाण	९५
७३	सयोगिकेवर्गीय शिरोकी छसपुष्पकर व संख्याके निरुद्धिके विधान	९५
७४	वर्णाख्यातसंपत्तियोंका सर्वसंपत्त राशिक्रम तथा उपशामक और स्वरूपोंका प्रमाण	९७
७५	प्रमत्त और अप्रमत्तसंपत्तियोंकी राशिके निरुद्धिके एक नवा प्रकार	९७
७६	वर्णिकप्रतिपत्तिवाची सर्व संपत्तियोंकी संख्यापर व्यसंघ और समाधान	९८
७७	उत्तरप्रतिपत्तिकी अवस्था प्रमत्त संपत्ति आदिक प्रमाण	९९
७८	शेष मागाभाषा प्रकरण	१०१
७९	अस्वरूपत्वके कथनकी प्रतिष्ठा और कथन अस्वरूपत्व अनुयोग द्वाराके होते हुए भी यहां उसके करनेका कारण	११४
८०	अस्वरूपत्वके दो भेद-स्वरूपान और सर्वपरस्था	११४
८१	मिथ्यादिप्राप्तिमें स्वस्थान अस्वरूपत्वका प्रमाण	११४
८२	साक्षात्तवादि प्राप्तिमें स्वस्थान अस्वरूपत्व	११४
८३	शेष सर्वपरस्था अवधारणा	११५
३		
	आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१२१ ४८७
९३	१ गतिमार्गाया (नरकगति)	१२१ ३०५
९४	४४ सामान्य नारक मिथ्यादि प्राप्ति प्रमाण	१२१

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
८८	असत्त्वातके नामादि व्यापक भेद और जनना स्वरूप	१२३ १२५		विकल्पके द्वारा उक्त राशिची प्रकल्पना	१२०
८९	प्रकृतमें गणनासत्त्वातसे प्रयोजन तथा शेष असत्त्वातोंके वर्णनकी सार्यकता	१२५	९९	साक्षात्तसे छेकर असंयतसम्यग्वादि गुणस्थान तक प्रत्यक्ष गुणस्थानमें सामान्य नापकियोंका प्रमाण	१५३
९०	गणनासत्त्वातके जयम्परीता-सत्त्वात आदि नौ भेद, तथा प्रकृतमें मध्यम असत्त्वातासत्त्वातका ग्रहण	१२६	१००	गुणस्थान-प्रतिपक्ष सामान्य नापकियोंको गुणस्थान-प्रतिपक्ष मोक्षप्रमाणके समान मान देने पर आनेवाले दोषका परिहार	१५३
९१	तीन बार परित संवर्तितराशिसे असत्त्वातगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षिप्तपक्षिसे असत्त्वातगुणी हीन राशिसे प्रयोजन और उक्त राशि योंका स्वरूप-निर्द्धारण	१२८	१०१	मात्र असंयतसम्यग्वादि अवहारकके आश्रयसे गुणस्थान प्रतिपक्ष द्वेव तिर्यक्ष और नारकियोंके प्रमाण छानेके छिप अवहारका उदय करनेकी विधि और जनका प्रमाण	१५७
९२	सामान्य नारक मिष्यादृष्टियोंका काष्ठकी अपेक्षा प्रमाण न हेतु	१२९	१०२	प्रथम पृथिवीमें नापकियोंका प्रमाण	१६१
९३	क्षेत्रप्रमाणसे पहले काष्ठ प्रमाणके बयनकी सार्यकता	१३०	१०३	सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण माननेपर उदय होनेवालों आपत्तिपर परिहार और विशेषताका प्रतिपादन	१६१
९४	नारक मिष्यादृष्टियोंकी काष्ठकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०४	प्रथम नारकोंके मिष्यादृष्टि नारकोंकी विष्कम्भसूची और अवहारका	१६२
९५	नारकसामान्य मिष्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	१०५	उक्त नारकोंका प्रकाशान्तरसे अवहारका	१६४
९६	नारकसामान्य मिष्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीका प्रमाण	१३३	१०६	प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारका प्रसेप द्वासरूप और विष्कम्भसूचीमें अपनयनरूप सत्त्वाके प्रमाणका प्रतिपादन	१६६
९७	सुत्रपक्षित अंगुल वाष्पसे सुष्पंगुलके ग्रहणका सममान समर्पण	१३४	१०७	सामान्य अवहारकासमान छह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीमें अवहारका प्रसेप द्वासरूपे भिन्नकतका विधान	१७१
९८	वर्गस्थानमें बंदिता आदिके द्वारा विष्कम्भसूचीका प्रकल्प	१३५	१०८	उक्त सत्तों अवहारकाओंके भिन्न नकी विधि और उनसे प्रथम	
९९	नारकसामान्य मिष्यादृष्टियोंके प्रमाण छानेके छिप विष्कम्भसूचीके बलसे भागहारकी उत्पत्ति	१३६			
१००	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिके द्वारा अवहारकाका निकल्प	१३७			
१०१	नारक सामान्य मिष्यादृष्टि-पक्षि प्रमाण अवहारकाका प्रमाण किस्त प्रकार व्याता है यह बताकर प्रमाण कारण निश्चि और				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवीके अवहारकाकालके उत्पन्न करनेका क्रम	१७५		वतछानेवाली भकर्मवृद्धि	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाकाल जानेकी विधियाँ	१७७	१२१	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यावृद्धि नारदियोंका प्रथम काक और सेवकी अपेक्षा प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाकाल	१७९	१२२	अगच्छेयोंके कितने कितने जी-सूत्रोंके परस्पर गुणा करनेसे किस किस पृथिवीके नारक मिथ्यावृद्धियोंका प्रमाण माता है इसका स्पष्टीकरण और इसमें प्रमाण	२०
१११	पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाकाल	१८०	१८२	तृतीयानि पृथिवियोंके प्रथमके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके प्रथम उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११२	बीसवीं पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाकाल	१८२	१८४	प्रथम पृथिवीके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके प्रथम उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार छप पृथिवियोंके प्रथम उत्पन्न करनेकी सूचना	२०३
११३	तीसरीसे सातवीं तक पाँच पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाकाल	१८३	१८५	दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुण स्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण	२०५
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाकाल	१८४	१८६	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण आश्रयकाकालके समान करनेसे उत्पन्न होनेवाले दोषका परिहार और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाकालोंका प्रतिपादन	२०६
११५	दूसरी भाँति छह पृथिवियोंके संयुक्त अवहारकाकालसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाकालके जानेकी विधि	१८५	१८७	ब्रह्मण्यति सत्त्वही मागामाय	२०७
११६	हानिरूप और प्रसेपरूप अंशोंका ज्ञान करनेका क्रिये अंकसंघटि, तथा प्रसेपरूप पृथिवी विधि	१८७	१८८	ब्रह्मण्यति-अश्वत्थी व्ययवहृत्य (तिर्य्यकगति)	२०८
११७	पृथिवीके हानिरूप विधानका अंक संघटि द्वारा स्पष्टीकरण	१८९	१८९	मिथ्यावृद्धिसे छेकर संयतासमत गुणस्थानतक सामान्य तिर्य्यकोंका प्रमाण तथा सामान्य तिर्य्यकोंका प्रमाण जीवप्रमाणके समान माननेपर होनेवाले दोषका परिहार	२१५
११८	सामान्य अवहारकाकालके एक विरक्तनके प्रति प्राप्त सामान्य प्रथमके सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृद्धि प्रथमप्रमाण काक करके जगत्का सातों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवहार काककी उत्पत्ति	१९१			
११९	बड़े शब्दकाकालोंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यावृद्धि अवहार काककी उत्पत्ति	१९५			
१२०	ब्रह्मण्यतिके सामान्य और विशेषरूपसे अवहारकाकाल, विरक्तन सूत्री और प्रसेप अवहारकाकाल				

क्रम सं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम सं	विषय	—पृष्ठ नं
	सामान्य तिर्यचोका अवधारकात्	२१९		पर्याप्तोका प्रमाण	२२९
१३१	यहां राशि का अनन्तरूप प्रमाण बताया है यहां मी कल्पमरूपत्वासे द्रव्यमरूपत्वा की सुरमता सिद्ध होती है इसका स्पष्टीकरण	२१९	१४२	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतिषोका द्रव्य काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२२९
१३२	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिषोका द्रव्य और काष्ठकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	१४३	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि मतिषोका अवधारकात् और उसके विषयमें मतभेद	२३०
१३३	असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी इतसर्पिणीकाओंके बतितने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिराशि के बिच्छेद होनेकी शंकाका समाधान	२१७	१४४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि मतिषोके अवधारकात्का अहित आदिके द्वारा कथन	२३१
१३४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिषोका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व उनके अवधारकात्की सिद्धि	२१८	१४५	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतिषोकी विरुद्धता सूची और द्रव्यका वर्णन	२३७
१३५	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिषोके अवधारकात्का अहित आदिके द्वारा प्रकथन	२१९	१४६	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यच योनि मतिषोका प्रमाण तथा उसे जोषवत् करनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	२३७
१३६	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिषोकी विरुद्धता सूची और द्रव्यका समर्थन	२२०	१४७	पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असंयतसंयतदृष्टि सम्प्रतिमिथ्यादृष्टि, साक्षात्त और संयतासंयतका अवधारकात्	२३८
१३७	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यचोका प्रमाण	२२१	१४८	पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्तमें असंयत सम्प्रतिमिथ्यादृष्टि पुरुषचेदियोंसे असंयतसम्प्रतिमिथ्यादृष्टि सीधेदियोंके, और सीधेदियोंसे, नपुंसकचेदियोंके लक्षणोत्तर कम होनेका कारण	२३८
१३८	द्रव्यप्रमाणके आदिमें कथन करनेका प्रयोजन व द्रव्य प्रमाण अन्य प्रमाणोंसे स्वीकृत है इसमें हेतु	२२१	१४९	पंचेन्द्रियतिर्यच सीधेदियोंसे सम्प्रतिमिथ्यादृष्टियोंसे पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती असंयतसंयतदृष्टि बीच कम है या अधिक है, इस विषयमें उपदेशका प्रमाण	२३८
१३९	द्रव्यप्रमाणसे काष्ठप्रमाणके सुरमत्प की सिद्धि	२२७	१५०	पंचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तोका द्रव्य, काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व अवधारकात्का निरूपण	२३९
१४०	पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्या दृष्टिषोका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण तथा उनके अवधारकात्का स्पष्टीकरण	२२८	१५१	तिर्यचमति सम्बन्धी आगावाग और व्यपवद्भाव	२४०

क्रम नं	विषय (मनुष्यगति)	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
१५२	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य काष्ठ और सेबकी अपेक्षा प्रमाण	२५४	१५४	मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण हाथा है इसका समर्थन	२५४
१५३	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाष्ठ व लक्षित व्यक्ति के द्वारा इसका कथन	२५५	१५५	बाबाके वनप्रमाण मनुष्य पर्याप्तगति है इस मतका खंडन और खूबमतिपाहित मतका समर्थन	२५५
१५४	मध्यम विध्य और उपरिम विध्यमें भेद	२५६	१५६	साक्षात्तगुणस्थानसे लेकर असंयतसंयतक प्रत्येक गुणस्थान में पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५६
१५५	मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवधार काष्ठका अपेक्षीमें माप देने पर कप व्यक्ति मिथ्यादृष्टिगति जाती है इसमें प्रमाण	२५७	१५७	प्रसक्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनु ष्योंका प्रमाण	२५७
१५६	बोझ और सुव्य पारिषोत्रे भेद प्रभेद और उनके कथन	२५८	१५८	मनुष्यनिर्णयों में मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवधारकाष्ठ विकल्प	२५८
१५७	यहां जीवस्थानमें मनुष्य मिथ्या दृष्टि अवधारकाष्ठका जगज्जमीमें भाग होनेपर कप व्यक्ति साक्षात् गति देरह गुणस्थानकर्त्ता अथवा वनगति जाती है इसका सम र्थन	२५९	१५९	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी तक प्रत्येक गुण- स्थानमें मनुष्यनिर्णयोंका प्रमाण तथा गुणस्थान-मतिपक्ष मनुष्यनी गुणस्थान-प्रतिपक्ष सामान्य मनुष्योंके लक्ष्यतामें माग होती है इसमें हेतु	२५९
१५८	मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवधार काष्ठका कथन	२६०	१६०	संख्यात अर्थक्यात और मत मार्क कथन व परस्पर भेद	२६०
१५९	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संयतसंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२६१	१६१	काष्ठ और सेबकी अपेक्षा सामान्य वेष मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६१
१६०	भासाइनसम्पन्नादि और सम्य मिथ्यादृष्टि मनुष्योंके प्रमाणमें मत्तभेद	२६२	१६२	मनुष्यगतिस्मरन्ती मागामाग और अस्मरन्ती	२६२
१६१	प्रसक्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक मनु ष्योंका प्रमाण	२६३	१६३	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पन्नादि गुणस्थान तक	२६३
१६२	पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और लक्षित जादिके द्वारा इसका कथन	२६४	१६४	(वेषगति)	
१६३	प्राप्त मनुष्यदृष्टिमें गुणस्थान प्रतिपक्षगति के द्वा द्वेनपर	२६५	१६५	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पन्नादि गुणस्थान तक	२६५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य देवोंका प्रमाण	२१९		साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंपतसम्पददि देवोंका प्रमाण	
१७३	असंपतसम्पददि, सम्पतिमिच्छा दि भीर साक्षात्सम्पददि देवोंका व्यवहारकाळ	२१९		तथा सत्कृमारने लेकर छातर सहकार कल्पतक मिच्छादि देवोंका प्रमाण और भागहार	२८०
१७७	मयनबासी मिच्छादिदियोंका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७०	१८८	आगत प्राप्त कल्पसे लेकर नव नियेक तक मिच्छादिपादि आरो गुणस्थानपरी देवोंका प्रमाण	२८१
१७८	साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंपतसम्पददि मयनबामियों का प्रमाण	२७१	१८९	अनुविर्गोले लेकर अपराश्रित अनुत्तरयिमानतक असंपतसम्प ददि देवोंका प्रमाण	२८१
१७९	मानव्यन्तर मिच्छादि देवोंका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७२	१९०	गुणस्थान-प्रतिपक्ष सर्व देवोंके व्यवहारकाळ	२८२
१८०	प्राक्काल और भोमिमितियोंके अवधारकात्ममें मतमद् और इसका निजय	२७३	१९१	व्यनतादि उपरिम गुणस्थान प्रतिपक्ष देवोंका प्रमाण पक्षो पक्षके असंघपातये भाग है यह बचन इसके द्वारा सत्कृतसे पक्षोपम अग्रहृत होता है देमा विद्योपित करके क्यों कहा? इसकी सफाई	२८५
१८१	साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंपतसम्पददि मानव्यन्तरीका प्रमाण	२७४	१९२	सर्वाभिसिद्धि विमानपासी देवोंका प्रमाण	२८६
१८२	न्योतिरी देवोंका प्रमाण य इस प्रमाणके सामान्य देवतादिके समान कहनेसे मानेपाळे दीपका परिहार	२७५	१९३	देवगतिस्तंबची मागामाग	२८६
१८३	न्योतिरी देवोंका व्यवहारकाळ	२७६	१९४	देवगतिस्तंबची अल्पबहुत्व	२८८
१८४	सौधम और देशान कस्तबासी मिच्छादि देवोंका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७६	१९५	अतुगतिस्तंबची मागामाग	२९५
१८५	सौधम और देशान मिच्छादि देवोंकी विष्कम्भसूची	२७७	१९६	अतुगतिस्तंबची अल्पबहुत्व	२९७
१८६	गुदावधमें सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय आ विष्कम्भ मुखियां पतमाई हैं वे ही यहां विद्योपक्षसे जीवोंका प्रमाण पताने समय कहा गई है अतः यह कथन परस्पर विरुद्ध है इस प्रकार उभय दूर शाकाका समाधान	२७८	२	इन्द्रियमार्गभा	३०५-३२९
१८७	सौधम और देशान कस्तबासी		१९७	सामान्य एकद्वय चारद एक द्वय सूक्ष्म एकद्वय और इन तीनोंके पक्षात् तथा अपर्याप्तका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३०९
			१९८	अत नी पादियोंकी उपर्याप्तियां	३१३
			१९९	पक्षिण आदि के द्वारा उक्त नी पादियोंका बचन	३१८
			२००	पर्याप्त और अपर्याप्त दिक्मन्त्रय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण	३१८
			२०१	प्रमाणमें पर्याप्त और अपर्याप्त	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	तथा द्विस्त्रिय बीस्त्रिय और चतु रिस्त्रिय पक्षे किमका प्रहण किया गया है इसका स्पष्टीकरण	३११	२१३	अपर्याप्तकारणमें गुणस्वाध-मति पक्ष जीव छत्तपपर्याप्तक नहीं होते इसका समर्थन	३१८
१२	सयोजिकेवहीके पंचेन्द्रियत्वका समर्थन	३११	२१४	द्विस्त्रियमार्गवाधी अपेक्षा भागा भाग	३१८
२३	बिम्बजनय जीवोंका काककी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	द्विस्त्रियमार्गवाधी अपेक्षा अस्य बहुत्व	३२२
२४	द्विस्त्रियान्ति राशियां सर्वथा आपसहित होनेसे बिच्छिन्न नहीं होती हैं फिरभी ये असंख्याता- संख्यात आपसपरिस्त्रियों और उत्सर्पिविषयोंके द्वारा बिच्छिन्न होती हैं ऐसे विशेषका परिहार	३१२	३ कायमार्गणा ३१९-३८६		
२५	विकल्पव्यवस्थीयोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१३	२१६	पृथिवीकायिक जलकायिक तैज स्वायिक वायुकायिक तथा वातरपृथिवीकायिक, वातरज्ज्वा यिक वातरतैजस्वायिक वातर वायुकायिक वातरज्ज्मस्वयिकायिक प्रत्येकछापीर तथा इन पाँच वात पोंके अपर्णात्ता, सूक्ष्मपृथिवीका यिक सूक्ष्मजलकायिक सूक्ष्म तैजस्वायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्णात्ता और अपर्णात्ताका प्रमाण	३२९
२६	पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय परात्ताका उक्त काक और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१४	२१७	पृथिवीकायिकका जय प्रसंगसे कर्मके क्षेत्रका बहुत्व तथा वातर का स्वरूप	३३
२७	बिम्बजनकोंके प्रमाण-प्रतिपक्ष सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाण का प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं बहाने इसका स्पष्टीकरण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक अद्विके प्रत्येक होते हुए नहीं प्रत्येकछापीर यह विशोधन क्यों नहीं छात्मा जाता है इसका स्पष्टीकरण	३३१
२८	बिम्बेन्द्रिय और सङ्केन्द्रियोंका अवधारकाक तथा प्रत्यप्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म पर्णात्ता और अपर्णात्ता इनके स्वरूपोंका स्पष्टीकरण	३३१
२९	सामान्यगुणस्वाधसे लेकर अपेक्षिकवही गुणस्वाध तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय- पर्याप्तोंका प्रमाण	३१७	२२०	विमहगतिम विद्यमान जनस्पति कायिक जीव प्रत्येक है या साधारण इस वाक्यका समा धान	३३२
३०	जिनकी द्विस्त्रियां नष्ट होगई हैं ऐसे सयोगी अपोमी जिनको पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है इस वाक्यांश समाधान	३१७	२२१	तैजस्वायिकराशिसे उत्पन्न कर लेखी विधि	३३४
३१	छत्तपपर्याप्त पंचेन्द्रियोंका प्रहण काक और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२२	जीवीकार फिरभी गुणकारशाखा- काधीके जानेपर तैजस्वायिक राशि जगज्य होती है इससे	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	छेकर इस विषयमें अनेक मत- मतोंका सम्मेलन और कीन मत पूर्व परंपरागत है इसका समर्थन			कठित आदिसे राशिका कथन	१५१
२२३	प्रकारानुसारसे शैलस्वरूपिक- राशिके वर्णन करनेका विधान	१५७	२३५	वायुतैलस्वरूपिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	१५५
२२४	कठित आदिके द्वारा शैलस्वरूप विकाराशिका वर्णन	१५९	२३६	वायुतैलस्वरूपिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	१५५
२२५	शैलस्वरूपिकराशिसे पृथिवी, जल और वायुतैलस्वरूपिकके वर्णन करनेकी प्रक्रिया तथा इन्हीं तीनों राशियोंके अन्वहारकाष्ठ	१६०	२३७	वायुतैलस्वरूपिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	१५६
२२६	प्रत्यक्षोपयोगी करणसूत्र तथा उक्त चारों राशियोंके सूत्रम सूत्रमपर्याप्त सूत्रमपर्याप्त और वायुतैलस्वरूपिककी अवधार काष्ठ	१६१	२३८	मेघ-मनेत्रयुक्त वनस्पतिक्रायिक जीवोंका द्रव्य प्रमाण	१५६
२२७	वायुतैलस्वरूपिक आदि राशि योंके अर्थवत्त्व	१६२	२३९	जिनका शरीर वनस्पतिक्रय होता है उन्हें वनस्पतिक्रायिक कहते हैं वनस्पतिक्रायिकका वेसा वर्ण करनेपर विमर्शयतिमें स्थित जीवोंको वनस्पतिक्रायिकत्व कैसे प्राप्त होता है इस शंकाका समाधान	१५७
२२८	वायुतैलस्वरूपिकराशिकी सत्त- रह प्रकारकी प्रकृष्टता	१६४	२४०	मेघ-मनेत्रयुक्त वनस्पतिक्रायिक जीवोंका काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१५८
२२९	वायुतैलस्वरूपिक प्रत्येक शरीर राशिकी सत्तरह प्रकारकी प्रक- ृष्टता तथा दूसरी वायुतैलस्वरूपि- की पूर्णतः राशियोंके समान प्रकृष्टता करनेकी सूचना	१६४	२४१	पूर्वोक्त जीवराशियोंकी शुद्ध- राशियाँ	१५९
२३	समतिष्ठित और असमतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिमें मेघ	१६६	२४२	जलस्वरूपिकसामान्य और जल- स्वरूपिकपर्याप्त मिथ्यादि जीवोंका द्रव्य काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१६०
२३१	सूत्रमें वायुतैलस्वरूपिकप्रत्येकशरीर का ही प्रमाण कहा इसके मेघोंका नहीं इसका कारण	१६७	२४३	वायुतैलस्वरूपिकगुणस्थानसे छेकर मयोधिकेनही गुणस्थानतक जलस्वरूपिक सामान्य और जल- स्वरूपिकपर्याप्तोंका प्रमाण	१६२
२३२	वायुतैलस्वरूपिकपर्याप्त वायुतैल- स्वरूपिकपर्याप्त और वायुतैल- स्वरूपिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१६८	२४४	सूत्रमपर्याप्त जलस्वरूपिकोंका प्रमाण	१६२
२३३	उक्त तीनों राशियोंके मापहार	१६९	२४५	सूत्रमपर्याप्त जलस्वरूपिकोंका प्रमाण सूत्रमपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान कहनेसे वर्णन है आपत्तिका परिहार	१६३
२३४	वायुतैलस्वरूपिक पर्याप्त- राशिका प्रमाण अन्वहारकाष्ठ न		२४६	कायमार्गजलस्वरूपिकी मापदण्ड	१६३
			२४७	कायमार्गजलस्वरूपिकी मापदण्ड	१६५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	तथा इन्द्रिय नीन्द्रिय और चतु रिन्द्रिय पहले किनका प्रमाण किया गया है इसका स्पष्टीकरण	३११	२१३	अपर्याप्तकालमें गुणस्थान-मति पक्ष जीव लक्षणपर्याप्तक मर्दा होते इसका समर्थन	३१८
२२	अपोगिकेवर्द्धीके पंचेन्द्रियत्वका समर्थन	३१२	२१४	इन्द्रियमार्गजाकी अपेक्षा भागा भाग	३१८
२३	विकृतत्व और जीवोंका व्यापकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	इन्द्रियमार्गजाकी अपेक्षा अल्प बहुत्व	३२२
२४	इन्द्रियमति धारिता का सबका आपसहित होनेसे विकृतत्व नहीं होती है फिर भी ये असंख्याता संख्यात अपर्याप्तियों और अपर्याप्तियोंके द्वारा विच्छिन्न होती है ऐसा विचारका परिहार	३१२	२ कायमात्राणा ३२९-३८६		
२५	विकृतत्वपर्यवर्द्धीका संभवकी अपेक्षा प्रमाण	३१३	२१६	पृथिवीकायिक जलकायिक तैल कायिक, वायुकायिक तथा वातरपृथिवीकायिक, वातरज्ज्वा यिक वातरज्ज्वाकायिक, वातर वायुकायिक वातरज्ज्वाकायिक प्रत्येककायिक तथा इन पांच का एकके अपर्याप्त। सूक्ष्मपृथिवीकायिक सूक्ष्मजलकायिक सूक्ष्म तैलकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त की अपर्याप्तोंका प्रमाण	३२२
२६	पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय पर्याप्तका ग्रन्थ काल और संभवकी अपेक्षा प्रमाण	३१४	२१७	पृथिवीकायिकका अथ प्रमाणसे कर्मके प्रमाणका बहल तथा वातर का स्वरूप	३३
२७	विकृतत्वकी प्रमाण-मतिपक्ष सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाण का प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं बढ़ा, इसका स्पष्टीकरण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक कायिके प्रत्येक होते हुए उन्हें प्रत्येककायिक वह विशेषण क्यों नहीं कहाया जाता है इसका स्पष्टीकरण	३३६
२८	विकृतत्व और पंचेन्द्रियोंका अपेक्षाप्रमाण तथा ग्रन्थप्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म पर्याप्त और अपर्याप्त इनके स्वरूपोंका स्पष्टीकरण	३३७
२९	साक्षात्समगुणस्थानसे ऊपर अपोगिकेवर्द्धी गुणस्थान तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय- पर्याप्तोंका प्रमाण	३१७	२२०	विषयवर्तितमें विद्यमान कमस्वति- कायिक जीव प्रत्येक है, या साधारण इस शब्दका समा धान	३३२
३०	जिनकी इन्द्रियां मर होगई हैं वेसे सधोगी अपोगी जिनकी पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है इस शास्त्रका समाधान	३१७	२२१	तैलकायिककायिके कल्पक कर नेकी विधि	३३४
३१	लक्षणपर्याप्त पंचेन्द्रियोंका ग्रन्थ काल और संभवकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२२	जीवोंका चित्तही गुणकारणका कारणोंके आनेपर तैलकायिक पक्ष कल्पक होती है इससे	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	प्रमाण	४१४		६ कपायमार्गणा	४१४-४३६
७९	स्त्रीवैरी असंयतसम्पत्तिवैरिओंके	४१८	२८८	क्रोध, माग माया और डोम	
	कम होनेका कारण	४१५		कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण	
७६	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			स्थानसे छेकर संयतासंयत गुण	
	अनिवृत्तिकरण उपशमक व			स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें	
	क्षपकके सवेदभाग तक स्त्री-			जीवोंका प्रमाण व अन्वहारकास	४२४
	वैरियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर	
७७	पुरुषवैरी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण			अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों	
	व अन्वहारकास	४१५		कपायकासे जीवोंका प्रमाण	४२८
७८	सासाधनसम्पत्तिसे छेकर अनि-		२९०	डोमकपायी उपशमक, व क्षपक	
	वृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके			सूक्ष्मसम्पत्तिवैरिओंका प्रमाण	४२९
	सवेद भाग तक पुरुष वैरियोंका		२९१	अकपायी जीवोंमें उपशमकपाय	
	प्रमाण व अन्वहारकास	४१५		धीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और	
७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे छेकर			द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे	
	संयतासंयत तकके नपुंसक वैरि-			चार मेंमें विभक्त मूळ उप	
	योंका प्रमाण व अन्वहारकास	४१७		शास्त्रकपायकासी प्रत्येक भूभोग	
८०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है,	
	अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके		२९२	इस धाँकका समाधान	४३०
	सवेद भाग तक नपुंसकवैरियोंका			अकपायी स्त्रीमकपायधीतराग	
	प्रमाण	४१८		छद्मस्थ और अयोगिकेयकी	
८१	स्त्रीवैरी प्रमत्तादिराशिसे भी		२९३	जिनोंका प्रमाण	४३०
	नपुंसकवैरी प्रमत्तादिराशिसे			अकपायी सयोविकेवली जिनोंका	
	सम्बन्धित भाग होनेका कारण	४१९		प्रमाण	४३१
८२	अपगतवैरी उपशमकोंका प्रवे-		२९४	कपायमार्गजासम्बन्धी भागप्रमाण	४३१
	शी अवेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कपायमार्गजासम्बन्धी अल्प	
८३	उपशमकपायजीवके उपशमक			बहुत्व	४३३
	सद्भा कैसे है इस धाँकका			७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
	समाधान	४१९	२९६	मत्स्यज्ञानी और भुताज्ञानी मिथ्या	
८४	अपगतवैरी उपशमकोंका संयत			दृष्टि व सासाधनसम्पत्ति	
	कासकी अवेक्षा प्रमाण	४२०		जीवोंका प्रमाण भूयराशि और	
८५	अपगतवैरी तीनों क्षपक और			अन्वहारकास	४३५
	अयोगिकवैरियोंका प्रमाण	४२०	२९७	विषयज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका	
८६	अपगतवैरी सयामिकेयस्थियोंका			प्रमाण व अन्वहारकास	४३७
	प्रमाण	४२१	२९८	विषयज्ञानी सासाधनसम्पत्ति	
८७	वेदमार्गजासम्बन्धी भागप्रमाण व			जीवोंका प्रमाण	४३८
	अल्पबहुत्व	४२१	२९९	मति भुन और अपधिज्ञानी	
				जीवोंमें असंयतसम्पत्ति गुण	

क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं	क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं
	४ योगमार्गिका	३८३ ४११		वसुसम्यग्प्रतिषेधोक्त प्रमाण और व्यवहारका	३९७
२४८	पाँचों मनोबोधी तथा सत्य समय और असत्य सब तीन वचनयोगी जीबोंका प्रमाण	३८५	२५१	भौतिकमिथ्याकाययोगी असंबत-सम्यग्प्रति और सयोगिकेवकी जिनोका प्रमाण	३९७
२४९	एक माद राशियाँ दोबोके संप्रदायके भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८५	२५२	वैदिकमिथ्याकाययोगी मिथ्याप्रति-षेधोक्त प्रमाण व व्यवहारका	३९८
२५०	साक्षात्तसम्यग्प्रति गुणस्थानसे छेकर संप्रदायसंप्रदाय एक भागों राशिषोका प्रमाण तथा उसका बोधप्रकरणके समाव कथन करनेमें हेतु	३८७	२५३	वैदिकमिथ्याकाययोगी साक्षात्त सम्यग्प्रति और असंबतसम्यग्प्रति जीबराशि का प्रमाण व व्यवहार का	३९९
२५१	प्रमत्तसंबतसे छेकर सयोगिकेवकी एक एक भागों राशिषोका प्रमाण	३८७	२५४	वैदिकमिथ्याकाययोगी मिथ्या-प्रतिषेधोक्त प्रमाण	४००
२५२	प्रमत्तसंबतसे गुणस्थानमें माद राशिषोका प्रमाण बोधप्रमाण व कहनेका कारण	३८८	२५५	वैदिकमिथ्याकाययोगी साक्षात्त सम्यग्प्रति और असंबतसम्यग्प्रति जीबोंका प्रमाण व व्यवहारका	४०१
२५३	वचनयोगी और अनुमयवचन योगी मिथ्याप्रतिषेधोक्त प्रमाण और लेखकी अपेक्षा प्रमाण	३८८	२५६	व्यवहारकाययोगी प्रमत्तसंबतों का प्रमाण	४०१
२५४	साक्षात्तसि गुणस्थानकी एक राशिषोका प्रमाण	३९०	२५७	व्यवहारकाययोगी प्रमत्त संप्रदाय प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२५५	एक-मेद-युक्त मनोयोगी वचन योगी और वचनयोगी जीबोंके व्यवहारका और जीबराशिषों	३९१	२५८	कर्मकाययोगी मिथ्याप्रतिषेधोक्त का प्रमाण व सुखराशि	४०२
२५६	काययोगी और भौतिककाय योगी मिथ्याप्रतिषेधोक्त प्रमाण	३९५	२५९	कर्मकाययोगी साक्षात्तसम्य-ग्प्रति और असंबतसम्यग्प्रति जीबों का प्रमाण व व्यवहारका	४०३
२५७	साक्षात्तगुणस्थानसे छेकर सयोगिकेवकी एक काययोगी और भौतिककाययोगीषोका प्रमाण सुखराशि तथा व्यवहार का	३९५	२६०	कर्मकाययोगी सयोगीजिनोका प्रमाण	४०४
२५८	भौतिकमिथ्याकाययोगी मिथ्या प्रतिषेधोक्त प्रमाण और सुखराशि	३९९	२६१	योगमार्गिका सम्यग्प्रती मागप्रमाण	४०४
२५९	भौतिककाययोगीमराशिके संख्या तमें भाग भौतिकमिथ्याकाय योगीषोके होनेमें हेतु	३९९	२६२	योगमार्गिका सम्यग्प्रती मयवहूत	४०८
२६०	भौतिकमिथ्याकाययोगी साक्षात्त			५ वेदमार्गिका ४१३-४२४	
			२७३	तीर्थेरी मिथ्याप्रतिषेधोक्त प्रमाण वजिनोके प्रमाणकी सुखराशिसे सिद्धि और तीर्थेरीषोका व्यव-हारका	४१३
			२७४	साक्षात्त सम्यग्प्रतिसे छेकर संप्रदायसंप्रदाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें तीर्थेरीषोका	

क्रम नं०	विषय	पृष्ठ नं०	क्रम नं०	विषय	पृष्ठ नं०
	प्रमाण	४१४	६	कपायमार्गणा	४१४ ४३६
२७५	स्त्रीवेष्टी असयतसम्पत्तिवेष्टियोंके कम होनेका कारण	४१५	२८८	श्लेष मान माया और श्लेष कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण स्थानसे लेकर सयतासयत गुण स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व व्यवहारकाळ	४२४
२७६	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेदभाग तक स्त्रीवेष्टियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों कपायथाके जीवोंका प्रमाण	४२८
२७७	पुरुषवेष्टी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व व्यवहारकाळ	४१६	२९०	श्लेषकपायी उपशमक, व क्षपक सूक्ष्मसाम्यताधिक्यसपत्तिका प्रमाण	४२९
२७८	सासादनसम्पत्तिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेद भाग तक पुरुष वेष्टियोंका प्रमाण व व्यवहारकाळ	४१६	२९१	अकपायी जीवोंमें उपशमककपाय वितरणसुष्ठुस्थोंका प्रमाण और द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशमककपायदाशि प्रत्येक मूलोपप्रमाणको कैसे प्राप्त होती है	४३०
२७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत तकके नपुंसक वेष्टियोंका प्रमाण व व्यवहारकाळ	४१७	२९२	अकपायी स्त्रीकपायवर्तितरण सुष्ठुस्थ और अयोगिकेपक्षी त्रिनोका प्रमाण	४३०
२८०	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके सवेद भाग तक नपुंसकवेष्टियोंका प्रमाण	४१८	२९३	अकपायी सपे निकेयकी त्रिनोका प्रमाण	४३१
२८१	स्त्रीवेष्टी प्रमत्ताविराशिसे मी नपुंसकवेष्टी प्रमत्ताविराशिसे सक्यातवे भाग होनेका कारण	४१९	२९४	कपायमार्गणासम्बन्धी भागामात्र	४३१
२८२	अपगतवेष्टी उपशमकोंका प्रवेश की अपेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कपायमार्गणासम्बन्धी अस्पष्टतुल्य	४३३
२८३	उपशमककपायजीवके उपशमक सत्ता कैसे है इस दावाका समाधान	४१९	७ ज्ञानमार्गणा ४३६-४४६		
२८४	अपगतवेष्टी उपशमकोंका सत्य कायकी अपेक्षा प्रमाण	४२०	२९६	मत्तज्ञानी और भुताज्ञानी मिथ्या दृष्टि व सासादनसम्पत्ति जीवोंका प्रमाण ध्रुवराशि और व्यवहारकाळ	४३९
२८५	अपगतवेष्टी तीनों क्षपक और अयोगिकवेष्टियोंका प्रमाण	४२०	२९७	विमग्नज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व व्यवहारकाळ	४३७
२८६	अपगतवेष्टी सयतासयतवेष्टियोंका प्रमाण	४२१	२९८	विमग्नज्ञानी सासादनसम्पत्ति जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७	वेदभागसासम्बन्धी भागामात्र व व्यवहारकाळ	४२१	२९९	अनि भुत और अविज्ञानी जीवोंमें असयतसम्पत्ति गुण	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	स्यामसे डेकर शीवकपाय गुण			इस विषयका ऊहापोहात्मक	
	स्यामतक प्रत्येक गुणस्यानमें			शीव-समाधान	४५१
३००	अभयिहानियोंमें प्रमत्तसयत	४३५	३१४	बहुवर्षीय जीवोंमें सासादन-	
	गुणस्यानसे डेकर शीवकपाय			सम्पत्ति गुणस्यानसे डेकर	
	गुणस्यानतक प्रत्येक गुणस्यानमें			शीवकपाय गुणस्यानतक के	४५३
	जीवाका प्रमाण	४४१	३१५	अबहुवर्षीयियोंमें मिथ्याद्वि	
३१	मनपर्यवर्तनियोंमें प्रमत्तसयत			गुणस्यानसे डेकर शीवकपाय	
	गुणस्यानसे डेकर शीवकपाय			गुणस्यानतकके जीवोंका प्रमाण	
	गुणस्यानतक जीवोंका प्रमाण	४४१		ब सुवराशि	४५५
३०२	केवलजातियोंमें सयोजितवर्गी		३१६	अभयिहारी जीवोंका प्रमाण ब	४५५
	और अयोनिजवर्गी जीवोंका प्रमाण	४४२		अवहारकाळ	४५६
३१	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी मापामाग	४४२	३१७	केवलवर्षीय जीवोंका प्रमाण	४५६
३४	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी अवयवद्वय	४४४	३१८	सुतदर्शन और मन पर्यवर्ती	
	८ सममार्गका ४४७-४५२			क्यों नहीं होता है, इस शीव	
३०५	संपत्ति जीवोंमें प्रमत्तसयत गुण			का समाधान	४५६
	स्यामसे डेकर अभयिहारीवर्गी		३१९	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी मापामाग	४५७
	गुणस्यानतकका प्रमाण	४४७	३२	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी अवयवद्वय	४५८
३०६	सामयिक और छोटीस्यानत-			१ छेदमार्गका ४५९-४७१	
	संपत्तिमें प्रमत्तसयत गुणस्यानसे				
	डेकर अभिवृत्तिकरण गुणस्यान		३२१	ऊपर, नीचे और बायां डेहा	
	तक प्रत्येक गुणस्यानका प्रमाण			बाजोंमें मिथ्याद्वि गुणस्यानसे	
	ब शान्ति संवर्तोंके प्रमाण विष-			डेकर असंयतसम्पत्ति गुण	
	यक शीवका समाधान	४४७		स्यानतक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती	
३०७	परिहारविशुद्धिसंपत्तिप्रमाण प्रमत्त		३२२	जीवोंका प्रमाण ब प्रवराशि	४५९
	और अप्रमत्तसंपत्तिप्रमाण प्रमाण	४४९			
३०८	सुखसाधारणसंपत्तिप्रमाण उप-		३२३	सेओदेहावाले जीवोंमें मिथ्या-	
	हासक ब शपत्तोंका प्रमाण	४४९		द्वि जीवोंका प्रमाण ब अवहार	४६१
३१	व्याख्यातसंपत्ति संपत्तिसंपत्ति			काळ	
	और असंबन्धी जीवोंका पुण्य		३२४	सेओदेहावाले जीवोंमें साक्षा	
	पुण्य प्रमाण	४५०		द्वय सम्पत्ति गुणस्यानसे	
३१०	संपत्तिमार्गका सम्बन्धी मापामाग	४५१		डेकर अप्रमत्तसयत गुणस्यान	
३११	संपत्तिमार्गका सम्बन्धी अवयवद्वय	४५१	३२४	तकके जीवोंका प्रमाण	४६१
	९ द्युनमार्गका ४५३-४५९				
३१२	बहुवर्षीय मिथ्याद्वि जीवोंका		३२५	पद्यदेहावाले जीवोंमें मिथ्या	
	द्वय बान और शपत्ति अवस्था			द्वि जीवोंका प्रमाण ब अवहार	४६३
	प्रमाण	४५३		काळ	
३१३	बहुवर्षीय जीव दिन कहते हैं		३२६	पद्यदेहावाले जीवोंमें सासादन	
				गुणस्यानसे डेकर अप्रमत्तसयत	
				गुणस्यानतकके जीवोंका प्रमाण	४६३
			३२७	गुणस्यानसे डेकर जीवोंमें मिथ्या	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	इष्टि गुणस्थानसे छेकर संयता संयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानमें जीवोंका प्रमाण व अन्नहारका	४६३	३३९	उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे छेकर उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७३
३३७	दुष्कस्योदयावाधे जीवोंमें प्रसक्त संयत गुणस्थानसे छेकर संयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४६५	३४०	सासादनसम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्या-दृष्टि भीर मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अन्नहारका	४७७
३३८	छेद्यामार्गजासंबंधी भागामाग	४६६	३४१	सम्यक्त्वमार्गजासम्यग्धी भागा-माग	४७९
३३९	छेद्यामार्गजासंबंधी अस्पष्टवृत्त	४६७	३४२	सम्यक्त्वमार्गजासम्यग्धी अस्पष्टवृत्त	४७९
	११ सम्यमार्गजा ४७९-४७३		३४३	प्रसक्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे सयिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं, इस संकाका समाधान	४८०
३३०	मध्यसिद्धि जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७२		१३ संक्षीमार्गजा ४८२-४८३	
३३१	अमध्यसिद्धि जीवोंका प्रमाण	४७२	३४४	संक्षी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अन्नहारका	४८२
३३२	अमध्यमार्गजासम्यग्धी भागामाग और अस्पष्टवृत्त	४७३	३४५	सखी जीवोंमें सासादन गुणस्थानसे छेकर क्षीणकपायगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४८२
	१२ सम्यक्त्वमार्गजा ४७४-४८१		३४६	असंखी जीवोंका द्रव्य काष्ठ और क्षेत्रज्ञी अपेक्षा प्रमाण	४८३
३३३	सम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७४	३४७	संक्षीमार्गजासंबंधी भागामाग व अस्पष्टवृत्त	४८३
३३४	सायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे छेकर उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४७४		१४ आहारमार्गजा ४८३-४८७	
३३५	सायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत संख्यात ही क्यों होते हैं इस संकाका समाधान	४७५	३४८	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे छेकर संयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें आहारक जीवोंका प्रमाण व अन्नहारका	४८३
३३६	सायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें संयत अयोगिकेवली जीवोंका प्रमाण	४७५	३४९	अनाहारक जीवोंका प्रमाण गुणस्थान व अन्नहारका	४८४
३३७	सायिकसम्यग्दृष्टि संयोगिकेवली जीवोंका प्रमाण	४७६	३५०	अनाहारक अयोगिकेवली जीवों का प्रमाण	४८५
३३८	वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे छेकर अमप्रसक्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६	३५१	आहारमार्गजासम्यग्धी भागामाग	४८५
			३५२	आहारमार्गजासम्यग्धी अस्पष्टवृत्त	४८५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.
	स्थानसे लेकर क्षीयकवाय शुष्क स्थानतक प्रत्येक शुष्कस्थानमें जीर्णोष्ण प्रमाण व व्यवहारकाय	४३२	११४	इस विषयका ऊहापोहातक शीत-समाधान	४५३
१०	अवधिमानियोंमें प्रमत्तसंयत शुष्कस्थानसे लेकर क्षीयकवाय शुष्कस्थानतक प्रत्येक शुष्कस्थानमें जीर्णोष्ण प्रमाण	४४१	११५	अवधुर्गर्भियोंमें मिथ्यादृष्टि शुष्कस्थानसे लेकर क्षीयकवाय शुष्कस्थानतक के जीर्णोष्ण प्रमाण	४५४
११	ममत्त्वपूर्णियोंमें प्रमत्तसंयत शुष्कस्थानसे लेकर क्षीयकवाय शुष्कस्थानतक जीर्णोष्ण प्रमाण	४४१	११५	अवधुर्गर्भियोंमें मिथ्यादृष्टि शुष्कस्थानसे लेकर क्षीयकवाय शुष्कस्थानतकके जीर्णोष्ण प्रमाण व सुपराधि	४५५
१२	केवलहासियोंमें सयोगिकवर्गी और अयोगिकवर्गी जीर्णोष्ण प्रमाण	४४२	११६	अवधुर्गर्भोंकी जीर्णोष्ण प्रमाण व व्यवहारकाय	४५५
१३	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी मागामाग	४४२	११७	केवलहासोंकी जीर्णोष्ण प्रमाण	४५६
१४	ज्ञानमार्गकासम्बन्धी अव्यवहार	४४४	११८	सुतराईन और मम पूर्ववर्गन कौन नहीं होता है इस शीत का समाधान	४५६
८ सुममायका ४४७-४५२			११९	ज्ञानमार्गकासम्बन्धी मागामाग	४५७
१५	संयमी जीर्णोंमें प्रमत्तसंयत शुष्क-स्थानसे लेकर अयोगिकवर्गी शुष्कस्थानतकका प्रमाण	४४७	१२०	ज्ञानमार्गकासम्बन्धी अव्यवहार	४५८
१०१	सामाधिक और अयोगस्थानका संयतोंमें प्रमत्तसंयत शुष्कस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकर शुष्कस्थान तक प्रत्येक शुष्कस्थानका प्रमाण व दोनों स्वरूपोंके भेदाभेद विषयक शीतका समाधान	४४७	१० छेड्यामार्गका ४५९-४७१		
१०७	परिहारविशुद्धिसंयमबाधे प्रमत्त और अमप्रत्तसंयतोंका प्रमाण	४४९	१२१	ऊष्ण, शीत और कापेत छेड्या वर्गोंमें मिथ्यादृष्टि शुष्कस्थानसे लेकर असंयतसम्बन्धि शुष्क-स्थानतक प्रत्येक शुष्कस्थानकी जीर्णोष्ण प्रमाण व व्यवहार	४५९
१०८	सुखसाधनसंयमबाधे अव्यवहारका प्रमाण	४४९	१२२	तेजोवैद्याबाधे जीर्णोंमें मिथ्या-दृष्टि जीर्णोष्ण प्रमाण व व्यवहार काय	४६१
१०९	पथाप्यातसंयमी, संयमासयमी और असंयमी जीर्णोष्ण पृथक् पृथक् प्रमाण	४५१	१२३	तेजोवैद्याबाधे जीर्णोंमें सासाहन शुष्कस्थानसे लेकर अमप्रत्तसंयत शुष्कस्थान तकके जीर्णोष्ण प्रमाण	४६२
११	संयममार्गकासम्बन्धी मागामाग	४५१	१२४	पथकेद्याबाधे जीर्णोंमें मिथ्या-दृष्टि जीर्णोष्ण प्रमाण व व्यवहार काय	४६३
१११	संयममार्गकासम्बन्धी अव्यवहार	४५१	१२५	पथकेद्याबाधे जीर्णोंमें सासाहन शुष्कस्थानसे लेकर अमप्रत्तसंयत शुष्कस्थानतकके जीर्णोष्ण प्रमाण	४६३
९ दर्शनमार्गका ४५३-४५९			१२६	शुद्धवैद्याबाधे जीर्णोंमें मिथ्या	
११२	अधुर्गर्भोंकी मिथ्यादृष्टि जीर्णोष्ण दृश्य काय और क्षेत्रकी ज्येष्ठा प्रमाण	४५३			
११३	अधुर्गर्भोंकी जीव विज्ञे करते हैं,				

जब मूल पाठानुसार—

$$\frac{k^1}{k + \frac{k}{x}} = \frac{k}{k + \frac{x-k}{x}} = \frac{k^1}{(k-1) + \frac{k}{x}} = \frac{k^1}{k + \frac{x}{x}}$$

$$= k - \frac{k}{x+1} = k - \frac{k}{x}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढ़ानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अरुसदृशिते नहीं बतलाया जा सकता।

११ पाठसवधी विशेष सूचना

पृ २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं बीहन्वि...

' आदिसे लगाकर पृ २९०

पंक्ति २ के 'एवमव्याप्य' तकका पाठ प्रतियोगे व मूढबिहीनकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो घबका-कसकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ निम्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रसे व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रच दिया है और उसका कारण भी वही दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये यह स्पष्ट पाठ प्रतियोगे अनुसार यहाँ दिया जाता है—

परत्वापि पश्य । सप्तचौथो जर्मजहसम्माहृद्विषयहारकम् । एवं केवर्षं व्याप पकिहोवमो वि ।
 तथो वरि सिप्याहृद्विषयहारकम् असंख्यगुण्यो । को गुणगारो ? सयजहसम्माहृद्विषयहारकम् असंख्यगुण्यो । को
 पदिमागो ? पकिहोवमो । अहवा पश्यगुण्यस्य असंख्यगुण्यो असंख्यगुण्यो सुविम्वगुण्यो । केचिपमेचापि ।
 सुविम्वगुण्यस्य असंख्यगुण्यो असंख्यगुण्यो । को पदिमागो ? पकिहोवमस्य असंख्यगुण्यो । वरि सन्धान-
 मयो । एवं बीहन्विषयहारकम् वि केवर्षं । अथवासिप्याप सत्वापे सप्तचौथो सिप्याहृद्विषयहारकम् ।
 अथवाकम् असंख्यगुण्यो । को गुणगारो ? सयजहसम्माहृद्विषयहारकम् असंख्यगुण्यो । को पदिमागो ? विम्वगु-
 ण्यो । अहवा सेवीप असंख्यगुण्यो असंख्यगुण्यो सिप्याहृद्विषयहारकम् । को पदिमागो ? विम्वगुण्यो ।
 अहवा वर्युण्यो । सेवी असंख्यगुण्यो । को गुणगारो ? सयविम्वगुण्यो । सयमसंख्यगुण्यो । को वर्य-
 ग्यो ? विम्वगुण्यो । पश्यमसंख्यगुण्यो । को गुणगारो ? अथवाकम् । को असंख्यगुण्यो । को गुणगारो ?
 सेवी । सासप्यापि मूळोवमयो । अथवासिप्यापे सप्तचौथो जर्मजहसम्माहृद्विषयहारकम् । एवं केवर्षं
 व्याप पकिहोवमो वि । तथो वरि अथवासिप्यापिसिप्याहृद्विषयहारकम् असंख्यगुण्यो । को गुणगारो ? सय-
 विम्वगुण्यो असंख्यगुण्यो । को पदिमागो ? पकिहोवमो । अहवा पश्यगुण्यस्य असंख्यगुण्यो असं-
 ख्यगुण्यो सुविम्वगुण्यो । केचिपमेचापि । सुविम्वगुण्यस्य असंख्यगुण्यो असंख्यगुण्यो । को पदि-
 मागो ? पकिहोवमो । वरि सयसप्यापमयो । साहृद्विषय वरि वरिपदिमोवमो वि सप्याप्याहृद्वि-
 षयपि केवर्षं । वरि परत्वापि अपि सय सयगुण्योवमयो । सयवृत्त सप्यापि वि अपि पश्य-
 ग्यो ।

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१ छूट ४७ की भाषा न २८ का प्रनियामें उपलब्ध
पाठको रमते हुए अर्थ

दो हाथोंके अन्तरसे एक हाथमें माग देने पर जो कृप्य जाता है उससे भाजित पूर्व सम्पत्ति,
तथा दोनों हाथोंसे अलग अलग भाजित भाज्यक भव्यमन्त्रोंका अन्तर हानिपूर्वक होता है।
(अर्थात् उपर्युक्त दोनो प्रक्रियाओंका फल काश ही होता है और सम्पत्तिरूपसे घटता नहीं है।)

उदाहरण (बीजगणितसे) —

$$\text{माग} = \text{अ}, \text{हार (भाजक)} = \text{ब और स पूर्वजन्म} \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क}$$

$$(१) \text{ यदि स से ब छोटा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{ब}} - \frac{\text{अ}}{\text{स}} = \text{क} + \frac{\text{स}}{\text{स} - \text{ब}}$$

$$(२) \text{ यदि स से ब बड़ा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{स}} - \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क} + \frac{\text{स}}{\text{ब} - \text{स}}$$

(वैकल्पितसे) —

$$\text{माग} = १६, \text{हार (भाजक)} = ६ और ९$$

$$\text{पूर्वजन्म} = \frac{१६}{६} = २\frac{४}{३}, \text{ दूसरा अन्व} \frac{१६}{९} = १\frac{७}{९}; \text{ हारांतर } २ - १ = १$$

$$\frac{१}{३} = २\frac{१}{३}, \frac{१}{३} = २; २ - १ = १$$

२ छूट ५ - ५१ परके पश्चिम विकल्पाका स्पष्टीकरण

पृ ५ - ५१ पर मूलमें जो पश्चिमविरुद्ध बतलाया गया है उसके सम्बन्धमें हमारे
सम्मुख दो आपत्तियाँ उपस्थित हुई कि एक तो यह धारणाकार द्वारा स्वीकृत अक्षरसूत्रोंसे बटित
नहीं होता और दूसरे प्रश्नोंमें उसका कोई फल नहीं दिखाई पता। इनही आपत्तियोंके दूर करनेके
लिये मूलमें प्राप्त पाठ रखकर भी अमुकप्रकारमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक
तथ्यसे बीजगणित द्वारा मूलमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे —

$$\text{मागको, जीवपाथी} = \text{क}, \text{ मिथ्याप्रतिपाथी} = \text{अ}, \text{ सिद्धतेरसपाथी} = \text{ब}; \text{ अ} = \text{क} - \text{ब}$$

$$\text{अब यदि क अमन्त्रपाथी है, अतएव — } \text{क} + १ = \text{अ}; \text{ क} - १ = \text{ब}$$

अब मूख पाठानुसार—

$$\frac{k^1}{k + \frac{k}{b}} = \frac{k^1}{k + \frac{b - k}{b}} = \frac{k^1}{(k - 1) + \frac{k}{b}} = \frac{k^1}{k + \frac{k}{b}}$$

$$= k - \frac{k}{b + 1} = k - \frac{k}{b}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक बढ़ने व एक बढ़नेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण असत्यप्रति नही बतलाया जा सकता।

११ पाठसवधी विशेष सूचना

पृ २८८ की पंक्ति ९ में 'वर्ष कीदृश' 'आदिसे कगार' पृ २९० पंक्ति ९ के 'एगपरा'। तरुका पाठ प्रतियोगे व मूखिणीय प्रतियोगे लिख प्रकार है, जो प्रकाश-करकी अन्यत्र पाठ-स्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुख्यमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी बही दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये यह रूप पाठ प्रतियोगेके अनुसार यहां दिया जाता है—

परत्वाजे पदम् । सवधयोधी अर्धवृत्तमात्राद्विभक्त्यहारकाकी । पूर्व केवर्ध आद्य पक्षिदोषमी पि ।
उरी उचरि सिन्धुद्विभक्त्यहारकाकी अर्धवृत्तगुणी । की गुणगारी ? सगवधहारकाकस्त अर्धवृत्तदिमागो । को
पठिमागो ? पक्षिदोषमी । अहवा पदगुणस्त अर्धवृत्तदिमागो अर्धवृत्तगुणि सुविभंगुकाणि । केचिमेचामि ।
सुविभंगुकास्त अर्धवृत्तदिमागमेचामि । की पठिमागो ? पक्षिदोषमस्त संक्षेपदिमागो । उचरि सत्वाज-
मयो । पूर्व कीदृशपरापरेतरां पि केवर्ध । अत्रवधासिधाय सत्वाजे सवधयोधी सिन्धुद्विभक्त्यहारकाकी ।
अपहारकाकी अर्धवृत्तगुणी । की गुणगारी ? सगवधहारकाकस्त अर्धवृत्तदिमागो । को पठिमागो ? विचक्ष-
मसु । अहवा सेधीप अर्धवृत्तदिमागो अर्धवृत्तगुणि सेधिपदमवधायगुकाणि । को पठिमागो ? विचक्षमसु-
विमागो । अहवा वर्धगुल । सेधी अर्धवृत्तगुणी । की गुणगारी ? सगविचक्षमसु । एवमसवधवृत्तगुनि । को गुण-
गारी ? विचक्षमसु । पदमसंक्षेपगुनि । को गुणगारी ? अत्रवधाकाकी । कीयो अर्धवृत्तगुणी । को गुणगारी ?
सेधी । सासमापरीं मूकोवर्धयो । अत्रवधासिधाय सवध योयो अर्धवृत्तमात्राद्विभक्त्यहारकाकी । पूर्व केवर्ध
आद्य पक्षिदोषमी पि । उरी उचरि अत्रवधासिधायसिन्धुद्विभक्त्यहारकाकी अर्धवृत्तगुणी । को गुणगारी ? सग
विचक्षमसु अर्धवृत्तदिमागो । को पठिमागो ? पक्षिदोषमी । अहवा वर्धगुणस्त अर्धवृत्तदिमागो अर्ध-
वृत्तगुणि सुविभंगुकाणि । केचिमेचामि । सुविभंगुकास्तमवधायगुकास्त अर्धवृत्तदिमागमेचामि । को पठि-
मागो ? पक्षिदोषमी । उचरि सगसत्वाजमयो । सीहमपि आद्य उचरिमउचरिमयोचरको पि सत्वाजपावधुर्ध
आपि केवर्ध । उचरि परत्वाजं अन्वि सवध सवधुद्विभक्त्यहारकाकी । सवधु सवधं पि अन्वि एकर-
गारी ।

शुद्धिपत्र

(पुस्तक १)

पृष्ठ पंक्ति अनुसूच

पुनः

३७ ११ मालप्रसरणी दण्डल और निर्मल घण्ट, निमल और नानाप्रकारकी विनयसे
विनयसे

१८८ ४ उपदेशप्रथमम् उपदेशप्रथमम्

१०५ ३५ दुक्का— X

" ३९ इच्छिये दुक्का— तो फिर

२५१ १ तत्प्रतिष्ठातः तत्प्रतिष्ठातः

३५५ ८ -सम्तापाम्पूनतया -सम्तापाम्पूनतया

" २९ संतापसे न्यून नहीं है, संतापक है,

(पुस्तक २)

४३३ २८ आहार, भय और वैभुज भय, वैभुज और परिग्रह

५१७ ४ पण्येण छत्तेस्सा, भाषेण तेज पण्य-भाषेहि छत्तेस्साम्भो,
पम्म-सुक्खेस्साम्भो

" १५ दम्पसे छहों केद्वार, भाससे तेज, प्रम्य और भाससे छहों केद्वार,
पप और सुक्खेद्वार

(पुस्तक ३)

९ १ अविरोधः अविरोधः

" १२ अविरोधः अविरोधः

१५ २ कट्ठप-कट्ठपदीय कट्ठप-कट्ठप दीय

" १७ कट्ठक, कचककट्ठदीय कट्ठक (कचक) कचक (कचक) व दीय

१५ ३४ वेत्तद्विपरिण वेत्तद्विपरिण

" १९ मोजागमप्रथमन्त मोजागमप्रथमन्त

१५ १७ अप्रवेशानन्त अप्रवेशानन्त

१८ ३ तत्स तत्स

२३ २८ पुन्यवेसा पुन्यवेसा

२७ ३ अर्धवेसा अर्धवेसा

२८ ७ रासमि रासमि

" ८ अविरोधमि अविरोधमि

पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	शुद्ध
"	१३	व्यङ्ग्यान्त	व्याङ्ग्यान्त
३०	२३	वातप्रवक्तृ	वातप्रवक्तृ
३२	१०	कोडबेण	कोडबेण
"	३०	क्येयोके समान	य कुरुव (कुरु) से
३३	२९	घनपमानो	घनपमानो
३४	३	छिन्नावसिद्धि	छिन्नावसिद्धि
३५	३०	बेसद	बेसद
३८	२	वेहासमाहो	वेहासमाहो
"	१३	मी हो.. चाहिये,	ही है, ऐसा बंसद अमर नहीं करना चाहिये,
३९	५	सदिय	सुदिय
४१	५	असंखेख	असंखेख
५१	१४	क-ख (मिप्याहृदि)	क-ख (मिप्याहृदि)
८८	३	विरहाय यु कमेय	विरहाययुक्रमेय
८९	३	पमससंज्ञा ख	पमससंज्ञाख
११२	३	वसगुणभूषणसिवा	वसगुणभूषणसिवा
१२३	३	ख	ख
१३५	७	असंखेखदि	असंखेखदि
१५७	२७	जिमविम्व	जिम और जिमविम्व
१७९	१३	जगमेणी	जगमेणी
१७९	२२	<u>१०४८५७३</u> १२३	<u>१०४८५७३</u> १२३
१९०		सम्बन्धीकरवादि	सम्बन्धीकरवादि
२०७	३	सिम्बन्धकारकाका	सिम्बन्धकारकाका
२१७	३	पंक्तिदिय	पंक्तिदिय
१७१	१	टीप	टीप
२५१	११	गुणिय	गुणिय
२५७	२२	२४ पहां बगकाके .. स्पष्ट है	x
२६०	१०	मनुसर्णीय	मनुसर्णीय
२६२	४	असंखेखस	असंखेखस
२६३	८	पंक्तिपदि	पंक्तिपदि
"		पाठेसु	पाठेसु
२६४	९	के	को
२८१	१	सासयदीय	सासयदीय
३८७	५	असंखेखसमाहृण्यो	असंखेखसमाहृण्यो

शुद्धिपत्र

(पुस्तक १)

पृष्ठ	पांक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१९	मानाप्रकारकी उज्ज्वल और निर्मल कबूत, निर्मल और मानाप्रकारकी बिनपसे बिनपसे	
१८८	४	उपदेशद्वयम्	उपदेशद्वयम्
२०५	२५	शुद्ध—	X
"	२९	इसकिये	छंका— तो फिर
२५१	१	तत्पक्षिणात्	तत्पक्षिणात्
३४५	८	-सम्तापान्मयूनतया	-सम्तापान्मयूनतया
"	२९	संतापसे म्यून नहीं है,	सन्तापरूप है,

(पुस्तक २)

४३३	२८	जग्राह, मय और मैजुन	मय, मैजुन और परिग्रह
५१७	४	इन्मेज छोटेस्ता, मावेज तेज पम्म-सुक्कोस्तायो	इन्मे-मावेहि छोटेस्तायो
"	१५	इन्मेसे छोहो केस्पार्, मावेसे तेज, पय और छुछोकेस्पार्,	इन्मे और मास्से छोहो केस्पार्,

(पुस्तक ३)

९	२	अविरोप	अविरोप
"	१९	अविरोप	अविरोप
१५	२	कडय कडगदीव	कडय-कडग-दीव
"	१४	कटक, कडकवादीप	कटक (कंकल) कडक (तापीव) व दीप
१५	३४	वेत्तव्यतिरिक्त	वेत्तव्यतिरिक्त
"	१९	गोभागमद्रम्यन्त	गोभागमद्रम्यन्त
१६	१४	अप्रदेवान्त	अप्रदेवान्त
१८	३	तस्स	तस्स तस्स
२३	२८	पुस्सोवा	पुस्सोवा
२७	३	असंभोजा	असंभोजा
२८	७	पासिदि	पासिदि
"	८	अपाहिरिज्जदि	अपाहिरिज्जदि

द्वपमाणाणुगमो

पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	शुद्ध
२९०	२	पदायावो	पदायावो
"	१०	पदार्थ	पदार्थ
"	२४	सर्वादिभि	सर्वादिभि
२९१	१४	सम्पद्विधौ	सम्पद्विधौ
२९२	५	असंख्येयविधाय	असंख्येयविधाय
२९६	२६	आर	आर
३२	१	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर
३३	१	आहारेद्वयमिति	आहारेद्वयमिति
	११	आहारेद्वयं	आहारेद्वयं
"	२१	प्रमाण	प्रमाण
"	२८	,	"
३७	४	सपथ-	सपथ-
"	१	अंतेय	अंतेय
"	११	समात्मकमते	समात्मकमते
"	१९	उस अतीत	आतं हूए
३११	८	-वर्तमानो	-वर्तमानो
३१८	९	संख्येय	संख्येय
३३	४	-असंख्येय	-असंख्येय
३५९	११	पुष्प	पुष्प
३६३	५	वाचस्पत्य	वाचस्पत्य
३६७	२	तेहिमपञ्चका ।	तेहिमपञ्चका
३६९	१	वाचस्पत्य	वाचस्पत्य
३८१	२	पञ्चका	पञ्चका
४४०	१	आहारेद्वय	आहारेद्वय
४४७	९	पुष्प	पुष्प
४८०	१	असंख्येयविधाय-	असंख्येयविधाय



सिरि भगवत पुष्कर्वन भूदपलि पर्णीवे

छक्खंडागमे

जीवट्टाण

तस्स

सिरि धीरमेणाहरिय विरइया टीका

धवल

केवलणाणुजोइयछद्वम्भमणिखिय पवार्इहि ।

ममिऊण खिण मणिमो दव्वमिओग गणियसार ॥१॥

सपहि चोइसम्ह जीवसमासाजमरिभचमवगदार्ण सिस्साण वेसिं चेव परिमाण
पडिपोहनहुं भूदबलियाहरियो सुचमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण बुविहो णिहेसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकटित किया है और जो प्रवादियोंके
द्वारा नहीं जाते वा उनके ऐसे त्रिमेन्द्रदेवको मैं (बीरसेन आचार्य) समस्कार करके गणितकी
जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥ १ ॥

विशेषार्थ —द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संख्याप्रकरण है। यद्यपि
द्रव्य छह हैं फिर भी इस अविच्छादने गुणस्वान्तों और मार्गजास्वान्तोंका आश्रय लेकर केवल
बीजद्रव्यकी संख्याका ही प्रकरण किया गया है।

जिन्होंने बीजहो गुणस्वान्तोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब इन्होंने
बीजहो गुणस्वान्तोंके अर्थात् बीजहो गुणस्वान्तवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करनेके
लिये मुख्यतः आचार्य आगेका खल कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओपनिर्देश और आदेश
निर्देश ॥ १ ॥

मंगलाचरणम्

पंच परमेष्टि-भयण

(धर्मसंग्रहम्)

सिद्धा ब्रह्मसत्ता निमुह-पुद्गी य छह-सम्भत्ता ।

तिहुवण-सिर-सेहरया पसियहु मडारया सभ्ने ॥ १ ॥

तिहुवण-मवणप्पसरिय-पच्चक्खवडोह-फिरण-परिवेडो ।

छम्भो वि अवरवणो अरहत-दिवापरो अयत्त ॥ २ ॥

वि-रयण-सम्म-विज्ञापणुचारिय-मोह-सेण्व-सिर-विबडो ।

आहरिय-रत्त पसियठ परिवाठिय-मविय-जिय-छोम्भो ॥ ३ ॥

अण्णावयवधपारे अजेरपारे ममत-मवियत्ता ।

उज्जोम्भो जेहि कम्भो पसियहु सया उच्चक्खत्ताया ॥ ४ ॥

संघारिय-सीलहरा छचारिय-विरयवात्त-हुस्सीलमरा ।

साहू अयंहु सभ्ने सिव-सुह-वह-संठिया हु विग्गळिय-मया ॥ ५ ॥

अयठ धरसेण-बाहो जेव महाकम्म-पयसि-पाहुड-सेछो ।

पुदिसिरेपुद्धरिओ समप्पिम्भो पुप्फर्यतस्स ॥ ६ ॥



सिरि भगवत पुष्पवत मूदबलि पणीवे

छक्खडागमे

जीवट्टाण

सस्स

सिरि बीरमेणाइरिय बिरइया टीका

धवला

केवलमाणुओइयछइम्भमणिज्जियं पवार्इहि ।

गमिरुण विर्ण भणिमो दम्भणिमोग गणियसार ॥१॥

मपहि बोइसन्ह जीवसमासाप्पमत्तिवत्तमवगक्षणं सिम्साण तेमिं चेव परिमाण
पडिबोइणहुं मूदबलियाइरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिहंसो ओधेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके ज्ञाता छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके ज्ञाता नहीं होते वा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (बीरसेन नात्थाय) गमम्भार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥ १ ॥

विशेषार्थ—द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संप्रयामरूपता है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गजालस्थानोंका अन्वय केवल जीवद्रव्यकी सत्त्वाका ही प्रकल्प किया गया है।

जिन्होंने बीहों गुणस्थानोंके व्यक्तित्वको ज्ञान किया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं बीहों गुणस्थानोंके अर्थात् बीहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संप्रय) के ज्ञान करानेके लिये मूदबलि व्याख्या भागका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, आधनिर्देश और आदेश निर्देश ॥ १ ॥

द्रवति श्रोत्र्यति अद्रवत्वपर्यायानिति द्रव्यम् । अमवा द्रव्यत श्रोत्र्यते मद्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च द्रव्यं दुरिह, जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं चेदि । तस्य जीवद्रव्यस्म लक्ष्यं पुनर्दे । तं जहा, धनगदपचरगो धनगदपचरसा धनगददुग्धो धनगदप्रदुग्धो सुदुग्धो जमुत्ती अगुरुलदुग्धो अमृतेजप्रदेमिश्रो अपिदिष्टुसंठाणा चि एव जीवस्म साधारणलक्षण । लक्ष्यं मोत्ता सपरपगाप्रो चि जीवद्रव्यस्त असाधारणलक्षण । उक्तं च—

अस्मत्समस्तमग्नं जगत्तं चेतनागुणवत् ।

आण अजिगम्यहणं जीवमणिदिष्टुल्लेखं ॥ १ ॥

अ त अजीवद्रव्यं तं दुरिह, रूपि अजीवद्रव्यं अरूपि अजीवद्रव्यं चेदि । तस्य अ त रूपि-अजीवद्रव्यं तस्य लक्षणं पुनर्दे— रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुनः सः रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोंका प्राप्त होता है प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है वैसे द्रव्य कहते हैं । अथवा जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी वैसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य जो प्रकारका है जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य । उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं । वह इसप्रकार है जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है पांच प्रकारके रससे रहित है दो प्रकारके घन्धसे रहित है आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है सूक्ष्म है अमूर्ति है, अगुरुलक्ष्ण है अस्तेज्यालक्ष्णी है और जिसका कोई संस्तान अर्थात् व्यग्रार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है । वह जीवका साधारण लक्षण है । अर्थात् वह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मोंसे अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है । परंतु कर्मव्यतिरेकमात्रत्व जीमृत्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है । कहा भी है—

जो रसरहित है रूपरहित है गन्धरहित है अन्यक्त अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिये रहित है चेतनागुणयुक्त है शब्दपर्यायसे रहित है विधना विगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्तान अनिर्दिष्ट है अर्थात् सब संस्थाओंसे रहित जिसका स्वभाव है वैसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य जो प्रकारका है रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य । इनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं । रूप रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुनः रूपी

प्रभृतादि । त च स्रुवि अजीवद्वयं छत्रिहं, पुनरि जल छाया चउरिदिपविमय-कम्म
कसुध-परमाणू चेदि । शुषं च—

पुनरी जल च छाया चउरिदिपविमय-कम्म-परमाणू ।

अभिहमेय माणिय पांगउद्वयं त्रिणरेहिं ॥ २ ॥

अ तं अरुवि अजीवद्वयं त चउरिहं, घम्मद्वयं अधम्मद्वयं आगासद्वयं फाल
द्वयं चेदि । तस्य घम्मद्वयस्स लक्ष्णं पुनर-ववगदपंचवण्यं ववगदपचरस ववगद
दुगध ववगदअद्वयं जीव-पोगगलाणं गमणागमगकारणं अमस्येअपदेमिय लोमपमाय
घम्मद्वयं । एव चेह अधम्मद्वयं पि, गवरि जीव-पोगगलाणं एदं द्विदिहेदं । एव
मागासद्वयं पि, गवरि आगासद्वयमणउपदेमिय सस्यगय ओगाहणलक्ष्णं । एव चेव
फालद्वयं पि, गवरि म परपरिणामहेउ अपदेमिय लोमपदेमपरिमाणं । एदाणि छ

अजीवद्वयं हे संसे शाश्वति । यह कपी अजीवद्वयं छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया,
नेत्रसे छेककर होय चार इन्द्रियोंके विषय कमस्कन्ध भीर परमाणु । कहा भी है—

अनेन्द्रियेणे पृथिवीं जलं छायां नेत्र इन्द्रियेणे मनिरिक्कं होय चार इन्द्रियोंके
विषय कर्म भीर परमाणु, इसप्रकार पुनरुद्वयं छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर आ पुनरुद्वयं छह भेद बतलाये हैं व उपलक्षणमात्र है इसलिये
उपलक्षणसे उस उस जातिके पुनरुद्वयं उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । अन्यान्यमें जो
पुनरुद्वयं स्पृष्ट स्पर्श सूक्ष्म, सूक्ष्म-सूक्ष्म सूक्ष्म-सूक्ष्म सूक्ष्म भीर सूक्ष्म-सूक्ष्म ये छह भेद
गिमाये हैं और उनका दृष्टान्तांशाय स्पष्टीकरण करनेके लिये उपयुक्त पृथिवी आदि छह प्रकार
बतलाये हैं इससे भी यह सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये
गये हैं ।

अरूपी अजीवद्वयं चार प्रकारका है धर्मद्वयं अवयवद्वयं आकाशद्वयं और फाल
द्वयं । उनमेंसे धर्मद्वयका उल्लेख कहते हैं । जो पांच प्रकारके वणसे रहित है पांच प्रकारके
रससे रहित है दो प्रकारके गन्धसे रहित है सात प्रकारके रससे रहित है जीव और
पुनरुद्वयके गमन और आगमनमें साधारण कारण है अनेकपालमैदी है और ओकाशशके
बराबर है यह धर्मद्वय है । इसीप्रकार अवयवद्वय भी है परन्तु इसकी विशेषता है कि यह
जीव और पुनरुद्वयकी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्वय भी है पर इतनी
विशेषता है कि आकाशद्वय अनन्तमैदी सपणन और अपणनहलक्षणमपाद्य है । इसीप्रकार

१ या जी १ १ पुनरी जलं च छाया चउरिदिपविमयकम्मपांगला । कम्मपांग एव कम्मपा
पोमपा होति ॥ पचा १

२ आकाशपदेमे एवेदं द्विदिहं २८५ । एतान् एतौ एव ते काशान् अद्वयानि ॥ २८६ तं
२९। गो. जी ५८९

द्व्याणि । एतेषु छन्द द्वयेषु केषु द्वयेण पदम् ? अस्त सताभिःश्रीगदारे चोदसमगस-
हावेहि चोदसजीवममासागमतिष च परुतिर्द जीवद्वयस्त तेष पदम् । त कर्षं यन्त्रदि
पि मणिदे ' मिच्छादिष्टी केशद्विया ' इति सेसद्वयार्ण परिमाणमुज्जिङ्ग जीवद्वय
परिमाणपरूपपदुपादो जाणिज्जदि जीवद्वयेनेनेण चेष पदम्, ग अण्जद्वयहि ति ।
प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । द्वयस्म पमाण द्वयवमाणं । एवं तप्पुरिससमासे
कीरमाणे द्व्यादा पमाणस्त भवो दुकादि, अहा देवदचस्त कषलो चि । एत्थ इयदचदा
कषस्तस्मच मदो ज, अमेदे वि उप्पलमभा इयवमादिसु तप्पुरिससमासर्दसनादो । अचना
द्व्यादो पमाण केष नि मन्वेण मिष्णं चेष, अण्हा विसेसिय विसेसणमाणापुवन

आलक्ष्य मी हि पर इतनी विज्ञपता है कि आलक्ष्य अपने भीतर वृत्तरे द्वयोंके परिमाणमें
साधारण कारण है अर्थात् अर्थात् एकलेखी है अर्थात् आलक्ष्यके कितने प्रमाण हैं उतने ही
वाक्याणु हैं । इसप्रकार ये छन्द द्वय हैं ।

प्रश्न—इन छन्द द्वयोंमेंसे यहाँ प्रकृतमें किस द्वयसे प्रयोजन है अर्थात् किस
द्वयके द्वारा प्रकृत किये कहा जायगा ?

समाधान— सप्रकरणानुसंगिकारमें श्रीहो मागजास्यानोंके द्वारा जिस जीवद्वयके
बादही जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं प्रकृतमें उनी जीवद्वयसे
प्रयोजन है ।

गका—यह कैसे जाना ?

समाधान— मिथ्याद्यपि जीव किन्ने हैं इसप्रकार दोय पाँच द्वयोंके परिमाणकी
छाड़कर एक जीवद्वयके परिमाणके निरूपण करनेवाले सुनस यह जाना जाता है कि प्रकृतमें
एक जीवद्वयसे ही प्रयोजन है अन्य द्वयोंसे नहीं ।

जिसके द्वारा पद्याय माये जाने ह या जाने जात हैं उसे प्रमाण कहते हैं अर्थात् द्वयके
प्रमाणकी द्वयप्रमाण कहते हैं ।

प्रश्न—इसप्रकार द्वय प्रमाण इन दोनों पद्योंय तरुद्वय समास करने पर द्वयसे
प्रमाणका भेद प्राप्त होता है अने देवदचका कम्पस ।

समाधान— वृत्ताने कम्पसका जिसप्रकार भेद है प्रकृतमें उसप्रकारका भेद नहीं है
क्योंकि अमेदके रहने पर भी उत्पलमग्य इत्यादि पदोंमें तरुद्वय समास बना जाता है ।
इसका यह तात्पर्य है कि उत्पलमग्य इत्यादि पदोंमें उत्पलमग्य तथा उत्पलमग्य । इत्यादि
रूपमें तरुद्वय समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलने गण्यका भेद नहीं होता है उसी
प्रकार यहाँ पर भी प्रकृत प्रमाणका तात्पर्य भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा द्वयसे प्रमाण किन्ना अनेमाने भिन्न ही है । यदि द्वयसे प्रमाणका कर्षेबन्
भेद न माना जाय तो द्वय अर्थात् प्रमाणमें विरोध्य-विरोधनमाय नहीं बन सकता है । अथवा

चीदो । अथवा कम्मधारयममासो कादम्बो द्व्यमेव पमाण द्व्यपमाणमिदि । एत्थ वि
ण द्व्यपमाणाणमयत्तण एगच्चं, एत्थ समामावादो । अथवा दुदसमासो कादम्बो ।
त ज्ञा, द्व्य च पमाण च द्व्यपमाणमिदि । दुदसमासा अवयवपहाणो णि द्व्य
पमाणाण पुच पुच परवण पावदि । य च सुत्ते पुच पुच द्व्य-पमाणाण परवणा कदा ।
अदि वि समुदयपहाणो दुदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायामावादो
अवयवाण चेष परवणा पावदि । य च सुत्ते अवयवाण समूहस्स वा परवणा कदा ।
तदो ण दुदसमासो कीरदि णि ? ण एस दोसा, द्व्यप्प पमाणे परविद द्व्य पि
परविदमेव । कुदो ? द्व्यवदिरित्तपमाणाभावादा । तिरालगोपरागतवज्जपाममणाणा
जइवुत्ती दन्वं । पुच च—

नयोपनयैकान्तानां विहङ्गानां समुच्चय ।

अविभात्मारसग्न्यो द्व्यमेवमेवञ्चा ॥ ३ ॥

मरुताण द्व्यस्सकेो पञ्चाओ, तदो ण दोण्हमगतमिदि । पुच च—

द्रव्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्व्यमेव पमाण द्व्यपमाण अथान् द्व्य ही प्रमाण
द्रव्यप्रमाण है इसप्रकार कम्मधारय समास करना चाहिये । वहाँ पर भी द्व्य भीर
प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तमे एकत्थ अथान् अमेव नहीं है क्योंकि सवया एकपक्षमें अथान्
अमेवमें समान ही नहीं हो सकता है । अथवा द्व्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्व्यसमान
करना चाहिये । यह इसप्रकार है द्व्य भीर प्रमाण द्व्यप्रमाण ।

मुक्ता—द्व्यसमान अवयवप्रमाण होता है इसलिये द्व्य भीर प्रमाणका पूरक पूरक
प्रकरण प्राप्त हो जाता है । परंतु सूत्रमें द्व्य भीर प्रमाणका पूरक पूरक कथन नहीं किया
है । यद्यपि समुदायप्रधान भी द्व्यसमान हो सकता है तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय
पाया नहीं जाता है इसलिये समुदायप्रधान द्व्यसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्रक
पणा प्राप्त होती है । परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्रकरण नहीं की गई है । इस
लिये द्व्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्व्यसमास नहीं किया जा सकता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, द्व्यके प्रमाणके प्रकरण कर देने पर
द्रव्यका भी प्रकरण हो ही जाता है, क्योंकि द्व्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अमल पयायोंकी परस्पर अदृशगुप्ति द्व्य है । कहा भी है—

ओ भगमादि नय आर उनी शाखा उपशाखाकूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालमयी
पयायोंका अमिल संवेदन्यरूप समुदाय है उसे द्व्य कहते हैं । यह द्व्य कर्षबिन् एकत्र
भीर कथबिन् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पयाय सन्धान है इसलिये द्व्य भीर प्रमाणमें एकत्थ अथान् सर्वथा
अमेव नहीं है । कहा भी है—

एगदरियमि जे आत्यपञ्चया वयणपञ्चया आबि ।

ती०भा०ग०भू०श० तान्त्रिक्यं सं इति दम्भं ॥ ४ ॥

तद्य तार्थं भेदो मयदु पाम, किंतु दम्भगुणपरुषणादारेषेव दम्भस्त परुषणा
भामदि, अन्वदा दम्भपरुषणोपायामासादो । उचं च—

मानानामप्रवृत्तं कमेकात्मतामप्रवृत्तं नाना ।

अगोनिमासतन वस्तु यस्तत् क्रमेण बागाध्यमनस्तत्पम् ॥ ५ ॥

तदा दद्यात्पुण्ये पमाणे पक्षविदे वृत्त पक्षविदं च । एव सुचं दृष्टव्यमागाय पक्ष
गणा प्रतिष्ठेति वृद्धगमामो वि न विरुद्धदे । सेससमासाद्यमेव समरो कृत्वि । त सम्ये
ति गमागा फणिया । छप्पेन भवति । उचं च—

बन्त्रीद्वयपीमात्रे इन्द्रात्तत्पुत्रो द्विगुः ।

कर्मवारय इमेते समासाः पदं प्रच्छित्ति ॥ ६ ॥

किमिदि दशरेसि संभगो नत्थि ? एत्थ तदरयामाणादो । को वेसिमत्थो ?

एक दृश्यमें अतीत, भवागत और अपि आगमन वर्तमान पर्यायक रूप में अत्यंत शीघ्र ध्वनिपराय है। तदनुसार वह दृश्य होता है ॥ ४ ॥

कदापि इस प्रकार प्रथम कीर्ति प्रमाणमें मेरे राजा आये, फिर भी प्रथमके गुणोंकी प्रकल्पनाके द्वारा ही प्रथमकी प्रकल्पना हो सकती है, क्योंकि प्रथमके गुणोंकी प्रकल्पनाके बिना प्रथमप्रकल्पनाका कोई उपाय नहीं है। क्या मी है—

अपने गुणों और परापूर्वकी अपेक्षा आत्मस्वरूपताको न छोड़ता हुआ वह रूप एक है और अमर्यकत्वमें पश्यतेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और परापूर्वकी अपेक्षा आत्मा समानोद्भवा नहीं जाती है ॥ ५ ॥

अतः प्रत्येक शुद्धरूप प्रमाणके प्रकाश कर देने पर प्रत्येक कथन हो ही जाता है।
नहीं होना है। इस प्रकार सत्य के प्रमाण ही ही अत्यन्त स्पष्ट समास ही विशेष के प्रमाण
प्रमाण ही है। इस प्रकार सत्य के प्रमाण ही ही अत्यन्त स्पष्ट समास ही ही अत्यन्त स्पष्ट समास ही ही

प्रश्न—ये सपूर्ण समाप्त कितने हैं ?

समाधान—ये समास छह ही हैं। क्या भी हैं—

बहुवीरि बभ्रुवीर्य, उग्र वसुधाय त्रिगुणीर कर्मधारय इत्यमरः के छः समाप्त

धर्म—यहां मुख्यतया यह धर्म के वर्णों के बीच समाधों को छोड़कर दूसरे समाधों की स्थापना नहीं है।

बहिरर्थो बहुव्रीहि पर तत्पुरुषस्य च ।

पूर्वमप्ययीमावस्य प्रत्यस्य ॥ पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय इति । एतच्च चोदगो मणदि- सखा एका चेन्न, एगवदिरिचदुनादीनां ममावाधो । सा च एकसखा सञ्चयद्वय्याणामस्ति चि आणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्ति चाणुववचीदो । तदो किं टीए संखापरुत्तणाय इदि । एतच्च परिहारो बुन्धे- सयल पयत्ताण जदि एका चेन्न सखा नियमेण भवदि सो सम्भवद्वय्याण एकादो अन्वदि रिचाय एगच्च पसज्जेज्ज । तथा च एगद्वैसमे सयलद्वयसण, एगद्विभासे सयलद्व विपासो, एयद्वप्यचीए सयलद्वप्यची जाएज्ज । ण च एवं, तथा अवसणादो । तम्हा पदत्वमेदो इच्छिद्वन्दो । सते तन्मेदे उत्तच्च द्विपसखाए भेदो भवदि चेन्न, मिण्णद्विद्विप सखाणामंगचविरोधादो । इदु एकसखा चेन्न बहुवा, न तदो अगमा सखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहाँ पर उक्त अर्थ चरित नहीं होता है इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया ।

शुक्रा—इन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थप्रधान बहुव्रीहि समास है । उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है । अन्ययीमाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है । प्रत्येक समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं जैसे पञ्चनद इत्यादि । अहा पर वा पदार्थोंका एक आधार दिनाया जाता है वेले तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शुक्रा—यहाँ पर शङ्ककार कहता है कि संख्या एकरूप ही है, क्योंकि एकको छत्रकृत् से आदिक संख्याएँ नहीं पाई जाती हैं । और यह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा माना जाता है । यदि ऐसा न माना जाय तो इन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है इसलिये यहाँ पर इस संख्याकी प्रत्येकपाले क्या प्रयोजन है ?

समाधान—अग्रे उपयुक्त शङ्कका परिहार करते हैं । संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है यदि ऐसा मान लिया जाय तो न संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जात है इसलिये उन सबकी एकत्वका प्रमाण न्य जाता है । और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ध्यान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ध्यान एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगती । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा बेम्भा नहीं जाता है इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली सन्ध्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकत्व अथवा अनेक माननेमें विरोध जाता है ।

शुक्रा—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाये परन्तु इससे विप्र संख्या नहीं

एकित्थे बहुच-विरोधादो । एगच पडि समाजचणेन एगसमाजणाए दण्ड-उत्त-काल
 भावमेदेन आणचसुबगदाए एकसखाए ण बहुचं विरुद्धदे । वेज्जदि एवं तो एगसंखादा
 कर्षपि मेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिअदे । कई भेदो च, दण्डादिमेद
 पडुण्ण; यदो चेव दुग्गायो समाजचईसणादो । दोण्हमेगच दण्डादिमणपविबकछादो ।
 पञ्चषट्ठिपचय विवक्षिअदे एकसखादा सेसेकसखा यदिरिचपि आणस । भोगमणए विव
 क्षिअदे दुवादिसाहा । एएय पुज भोगमणपविबकछादो सखाभेदो गहेदज्जो । यमावस्सव
 बोधः अनुगम, केरति धुतकेवसिमिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य
 प्रमावयोवा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगम, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया ।
 दुबिहो भिहंसा, सोदाराण अहा गिच्छयां होदि तहा देसो निदेसो । कुठीरिपासुखिना
 पारि जाता है ।

समाधान—देखा नहीं है क्योंकि एक संख्याका बहुतकप माननेमें विरोध
 व्याप्त है ।

प्रश्न—एक यह संख्या एकद्वयके प्रति समाज होनेका एककप है, और द्रव्य क्षेत्र
 काल तथा भावके मेहसे जालाकप है, इसलिये एक संख्यामें बहुत विरोधको प्राप्त नहीं
 होता है ।

प्रतिपक्ष—यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कर्षकित् मित्र होनेके कारण दो भावि
 संख्याओंका वससे मेह क्यों नहीं मान लेते दो ?

प्रश्न—एक संख्यासे दो भावि संख्याओंका मेह कैसे है ?

समाधान—द्रव्य क्षेत्र यदि मेहोंकी अपेक्षासे दो भावि संख्याओंका मेह है और
 इसलिये संख्याओंमें दो भावि कपना बन जाती है, क्योंकि द्रव्य यदि मेहोंके साथ दो भावि
 संख्याएँ मेहोंकी समावता देखी जाती है ।

प्रत्यार्थिकमयकी विवक्षासे एक और भावा इव दोनोंमें एकद्वय है । पर्यायार्थिक
 मयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे शेष एक संख्याएँ मित्र हैं । इसलिये वनमें
 मानस्य है । तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व भावि भाव बन जाता है । इसप्रकार
 (संख्याके कर्षकित् एककप और कर्षकित् जालाकप सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहाँ प्रत्यर्थमें
 तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्यामेह ही ग्रहण करना चाहिये ।

बहुतेक अनुकप भावकी अनुगम कहते हैं । अथवा केवली और धुतकेवसिर्वाँके द्वारा
 परपरसे जाये हुए अनुकप भावकी अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और
 प्रमाणके अनुगमकी द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । वससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा
 इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पदके साथ सूत्रमें जो तृतीया विमर्श जोड़ी है वह निमित्तकप
 अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्देश दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे धोताओंकी पर्यायके विषयमें

अतिशय कथन वा निर्देशः । म द्विविधः द्विप्रकार गरीम्वमाप्रूपप्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव । ओषेण, ओष इन्द्र समूहः सपातः समुद्रयः पिण्ड अवत्रप अमित्र सामान्यमिति पर्यायश्रुत्या । गत्यादिमार्गेणस्थानराशिपित्तानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोक्षनिर्देशः । चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिरूपणादादेशः किम स्यादिति चेन्न, सर्वजीवरागिनिरूपण प्रति प्रतिज्ञामावात् । क प्रतिज्ञाम्याधार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा वृत्तोऽनसीयत इति चेत्, ' एतो इमेति ओहमण्ड जीवसमासाण ' इत्यादिश्रुतादवमीयत । सर्वजीवराशिरूपविरक्तचतुर्दशगुण स्थानानामावाचयापि सर्वजीवरागिरेव निरूपितस्यादिनि चेन्न, जीवसमुदायस्या

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं । अथवा कुनीच अथवा सबथा पञ्चान्तबादके प्रस्थापक पाल्पण्डित्योंको उत्तरण करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं । वह निर्देश शरीरके स्वभाव रूप प्रकृति शील और धर्मक निर्देशके समान दो प्रकारका है । उनमेंसे एक ओषनिर्देश है । ओष शुम्भ समूह संपात समुद्रय, पिण्ड अमित्र, अमित्र और सामान्य ये सब पयायवाची शब्द हैं । इन आषनिर्देशका प्रयत्नमें स्पष्टीकरण इत्यप्रकार हुआ कि मत्यादि मागणास्थानोंमें विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुण स्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओषनिर्देश है ।

प्रश्ना — यह ओषनिर्देश आद्यों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि, ओषनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है ।

प्रश्ना — तो फिर आचार्यने ओषनिर्देशकी किस शिखरमें प्रतिज्ञा की है ?

समाधान — आचार्यन ओषनिर्देशस जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है ।

प्रश्ना — आचार्यने आषनिर्देशस जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — एतो इमेति ओहमण्ड जीवसमासाण इत्यादि सूत्रन जाना जाता है कि ओषनिर्देशमें जीवसमासोंके शिखरमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है ।

प्रश्ना — संपूर्ण जीवराशिके छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं इनमेंसे चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि ओषनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अवधि मिले है ।

विशेषाद्य — यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव होता जाता है फिर भी एक जीवके भी एक पयायमें संपूर्ण गुणस्थान समग्र है इसमेंसे यह कहा गया है कि ओषनिर्देशमें

एकसिद्धे बहुच-विराधादौ । एवमपि समानचणेन एवमावच्छाद्य दम्भ-संज्ञ-काल
मानमेवेन बाणचतुर्गदाए एकसंज्ञाए न बहुच विकल्पादे चेन्नपि एवं तो एवमसंज्ञादो
कश्चि मेदा दुवादिसंज्ञाए भेदो किमिदि न इच्छिष्यदे । कर्हं भेदो चे, दम्भादिभेद
पङ्क्तयः तदो चेव दुग्माभो समानचर्दसभादो । दोषमेवमपि दम्भद्विषयमभिवक्षसा ।
पञ्चद्विषयये विवक्षिते एकसंज्ञादो सेसेकसंज्ञा यदिरिचेचि बाणच । नेगमनपि विव
क्षिते दुवादिसंज्ञा । एतस्य पुन नेगमनपिविवक्षितादो संज्ञाभेदो गृह्यदम्भो । यथावस्तुन
बाणः अनुगमः, कश्चित् भुतकृषिमिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य
प्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया ।
इतिहो विदेसो, सोदात्तम अहं मिच्छयो होदि तदा देसो विदेसो । इतीर्षपाखण्डिनः
पारं जाती है ?

समाधान—देसा नहीं है क्योंकि, एक संज्ञाको बहुतकर माननेमें विरोध
प्यता है ।

संज्ञा—एक यह संज्ञा एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है और द्रव्य सेव
काळ तथा मात्रके भेदसे नामाकर है, इसलिये एक संज्ञामें बहुतकर विरोधको प्राप्त नहीं
होता है ?

प्रतिश्रुत—यदि ऐसा है तो एक संज्ञासे कर्णचित् मिश्र होनेके कारण दो भावि
संज्ञाओंका उल्लेख भेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

संज्ञा—एक संज्ञासे दो भावि संज्ञाओंका भेद कैसे है ?

समाधान—द्रव्य सेव व्यभि भेदोंकी अपेक्षासे दो भावि संज्ञाओंका भेद है और
इसीलिये संज्ञाओंमें दो भावि रूपका वन जाती है, क्योंकि द्रव्य भावि भेदोंके साथ दो भावि
संज्ञाकर भेदोंकी समानता देखी जाती है ।

द्रव्यापेक्षमनकी विवक्षासे एक और नामा इन दोनोंमें एकरूप है । पर्यायार्थिक
नयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संज्ञासे दो एक संज्ञाएं मिल हैं इसलिये उनमें
मानात्व है । तथा नेगमनपयी विवक्षा होने पर द्वित्व भावि भाव वन जाता है । इसप्रकार
(संज्ञाके कर्णचित् एकरूप और कर्णचित् नामाकर सिद्ध हैं जाने पर उनमेंसे) यहाँ प्रकृतमें
ते नेगमनपयी विवक्षासे संज्ञाभेद ही ग्रहण करना चाहिये ।

वस्तुके अनुकर ज्ञानको अनुगम कहते हैं । यथा केयकी और भुतकृषियोंके द्वारा
परंपरासे आये हुए अनुकर ज्ञानको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और
प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा
इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पक्षके साथ रहने जो तृतीया नियमि जोड़ी है यह निमित्तरूप
अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्देश दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे श्रोताओंको पर्यायके विषयमें

विवक्षितत्वात् । आदेशेण, आदेशः । पृथग्भावाः पृथक्करण विमञ्जन विमञ्जीकरणमित्यादयः पर्यायशब्दाः । मत्पादिविमिषधस्तुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेशः । 'अद्वा तरेतो तद्वा पिरतो' इति कद् आदस यर्ण काद्वन ओषपरूपणद्वयपरसुच मणदि—

ओषण मिच्छादृष्टी दन्वपमाणेण केवडिया, अणता ॥ २ ॥

ओषमद्वयारणामात्रे ओषादेसपरूपाणामु कद्मेसा परूपाणसि सोदारस्स विर्षं मा पुत्तिस्सदि पि तविधस्स धिरत्तुप्पायणद् ओषेणेसि मणिर्द । मिच्छादिद्विगद्गद्गामात्रे कद्मस्स जीवसमासस्स इमा परूपाणा इति सोदारस्स संदेहा हाज्ज, तस्स संदेहुप्पासि-
विचारणद् मिच्छादिद्विगद्गद्गद् कद् । दन्वपमाणेणसि अमणिय केवडिया इति सामण्येण पुत्तिदे इमा पुत्ता कि दन्वगिसया, किं सेधविसया, किं कालविसया, किं वा मान विसया, इति संदेहा होअ; तण्णिवारणद् दन्वपमाणगद्गद् कद् । केवडिया इति पुत्ता ।

संपूर्ण जीवपादिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है ।

आदेशके कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं । आदेश पृथग्भावा पृथक्करण विमञ्जन विमञ्जीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं । आदेशनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार है कि गति अथि मणगण्योके अर्थोंसे मेवको प्राप्त हुए जीवद् गुणस्थावाका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है ।

उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये ऐसा समझकर आदेशको स्थगित करने पहले ओषनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आयेका सूत्र कहते हैं—

ओषमे मिच्छादृष्टि जीन द्रव्यप्रमाणजी अवेसा कितने ह, अनन्त हैं ॥ २ ॥

ओष शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओष और आदेश प्ररूपणामोंमेंसे यह कौनसी प्ररूपणा है इसप्रकार ओताकन चित्त मत पुके, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पद्य करनेके लिये सूत्रमें ओषसे यह पद् कहा है । सूत्रमें मिच्छादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कौनस जीवसमासकी यह प्ररूपणा है इसप्रकार ओताके संदेह हो सकता है इसलिये उसकी सम्यहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिच्छादृष्टि पदका ग्रहण किया है । सूत्रमें द्रव्यप्रमाणसे इस पदको न च्यकर कितने हैं इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पृच्छ्य क्या द्रव्यविषयक है, क्या क्षेत्रविषयक है क्या वासविषयक है अथवा क्या मायविषयक है इसप्रकारका सम्यह हो सगता है अतः उस सम्यहके निवारणाय सूत्रमें द्रव्यप्रमाण पदको ग्रहण किया है । कितने हैं यह पद् ग्रहणक है ।

पगमानां अवगमिष्यता वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपो पयोगस्य भूतावरणक्षयापक्षमलयनस्य साम्प्रत सत्रासत्वात् । आगमादण्णो णोआगमो । अत एव आगमदो दम्भाणत्वं तत्तिविह, आणुगसरीरदम्भाणत्वं मन्त्रियदम्भाणत्वं तच्चदिरिचि दम्भाणत्वं चेदि । तस्य आणुगसरीरदम्भाणत्वं अणुगवाहुदम्भाणुगसरारं विहालवाद् । कथं अणुगवाहुदो आधारचयेण वदिरिचिस्स सरीरस्स अर्णतववपस । ? ण, असिस्स वदिवदि परसुमद वदिवदि इवेयमादिस्स तदो वदिरिचिस्स वि आधारपुरुषस्स आघेयवदेसुम्पणादो । मन्त्रियवद्वमाणम्हि आधारस्स आघेयवपारो णादीद्विणागदकालेस्स चिं पणस्स दोसो, णद्व मविस्तरज्जम्हि वि पुरिसे राया आग-उदि चि ववहारदम्पणादो । पञ्जमपञ्जम्पो

आगमद्रव्यान्त कहते हैं ।

प्रश्ना—जिनको पहले ज्ञान था किन्तु पदवत्त्व विस्मृत हो गया है, अथवा भूट गया है मन्त्रिय ओ माधेयकाक्षमें जानेंगे उन्हें भी दम्भागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय ?

समाधान—नहीं क्योंकि, अतन्त्रागमस्य कर्मका सरोपशम है समग्र जिसका ऐसा शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें दम्भागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है ।

आगमसे अन्वयेनोभागम कहते हैं । यह नोभागम द्रव्यामन्त तीन प्रकारका है वायवशरीरनोभागमद्रव्यान्त मन्त्रियनोभागमद्रव्यान्त और तद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यान्त । उनमेंसे अनन्तविषयक शास्त्रकी जाननेवालोंके धीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको वायवशरीर नोभागमद्रव्यान्त कहते हैं ।

प्रश्ना—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका वाता माधेय है और उसका शरीर आधार है अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके वातासे आधारत्वा शरीर मिथ है इसलिये उस शास्त्रको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि सा तरवारं (सी तरवारवाले) वाहती है सी फरसा (सी फरसावाले) वाहते हैं इस्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे मिथ परन्तु उनके आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार माधेयका तरवार और फरसा यह संज्ञा देती आती है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें माधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये ।

प्रश्ना—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें माधेयका उपचार मछे ही हो जाये परन्तु मरीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, जिसकी राजाका पयाप गद हो गई है मन्त्रिय जिसे मन्त्रियमें राजाका पर्याय प्राप्त होगी ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार राजा भाग है यह व्यवहार देना जाता है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समग्र लेना चाहिये ।

प्रश्ना—पर्याय और पयापीमें येद्व न होनेके कारण वहाँ पर आधार माधेयमाय नहीं

कम्मेसु वा सलकम्मेसु वा मितिकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा मेढकम्मेसु वा दंतकम्मेसु
वा अक्षसो वा बराहयो वा जे प अण्ये कृत्वाण कृषिवा अणतमिदि त सन् कृत्वाणार्त
नाम । अ सं दग्गाणर्त त दुविह आगमदो षोआगमदो य । आगमा गबो सुदणार्त
सिंहितो पवपमिदि एगदो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः—

पूर्वापरविकल्पेभ्योपना दोषसहते ।

शौनक सुरमात्मानामाप्तम्यतिरागम् ॥ ९ ॥

आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं तेपक्ष्यं निदु ।

अन्तदोषोऽनुत वाक्यं न भूयाद्वैतसमवात् ॥ १ ॥

रागाद्वा श्रेयाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनुतम् ।

पाय तु नैते दोषास्तस्यानुतकारण नास्ति ॥ ११ ॥

तस्य आगमदो दग्गाणर्त अणतपाहुडवापमो अनुवञ्चवा । अवगम्य निस्मृता

मैहकर्म अथवा इष्टकर्मों अथवा अक्ष (पासा) हो या काड़ी हो अथवा कृषी कांद वस्तु हो
उसमें यह अन्त है इसप्रकारकी व्यापना करना यह सब स्थापनामन्त है ।

द्रव्यावन्त भयम और मोभागमके देखे दो प्रकारका है । आगम प्रत्य भुतवान्
सिद्धान्त और प्रवचन ये एकद्वयवाची शब्द हैं । इस विषयमें उपयोगी श्लोक हैं—

पूर्वापर विकल्पादि बोधोंके समूहसे रहित और सर्वार्थ व्यापकोंके दोषक आप्तवचनको
भावम कहते हैं ॥ ९ ॥

आप्तके वचनका भगम जानना चाहिये और जिसमें अन्त अथ आदि अद्वारद
शर्पोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये । इसप्रकार जो स्वच्छरोप होता है वह
असत्यवचन नहीं बोलता है क्योंकि उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव
नहीं है ॥ १ ॥

पायसे उपस अथवा मोहसे असत्य वचन बोल्य जाता है परंतु जिसके ये रागादि
दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ॥ ११ ॥

अन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

विवाग्वादि नाव । वनेषु पालकादिवातरादीभिः जाविष्य रिपिषाण विवागवाणि क्वाणि किण्दि वा कदाचि
पोषय्याणि नाव । कैपवर्तैदि इतिउच जाणि विवागवाणि क्वाणि वाणि कैपवर्तैदि नाव । वृक्ष रट्टरदि
जलि पन्द्रेण कदिवाणि क्वाणि वाणि तेपवर्तैदि नाव । वट्टरदिप पत्तमेण कदिवाणि मिहवर्तैदि नाव ।
वेण वेण इतिउ कदिवाणि मिहवर्तैदि नाव । कदिवाणि क्वाणि क्वाणि क्वाणि नाव । मिदि
कदिवाणि क्वाणि नाव । क्वाणि १२ ९

१ अ. १५ ११४ टीका

प्याहुइमाणुगमायी जीवो । जं तं तन्नादिरिच्छदन्नाणत त बुविह, कम्माणत णोकम्मा
 पतमिदि । ज त कम्माणत त कम्मस्स पदेसा । ज त णोकम्माणत तं कट्थ-रुक्कगदीव
 समुदादि एयपदेसादि पोग्गलदन्ना वा । आगममधिगम्य विस्मृतः कान्तर्भवतीति चेत्
 इतिरिक्तद्रव्यानन्ते । ज त सस्सदाणत तं घम्मादिदम्पगयं । कुदो ? सासयणेण
 दम्पणं विणासामावादो । ज त गणमाणत त पणुवण्णीय सुगम च । ज त अपदेसियाणत
 तं परमाणू । नोक्कर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्व प्रत्यविधिदयोः प्राञ्जताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः
 किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते— न तावच्छाश्वतानन्त नोक्कर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति,
 तयोमदान् । अन्तो विनाश, न विद्यतं अन्तो विनाशा यस्य छदनन्तम् । द्रव्य शाश्वतम
 नन्तश्चाश्वतानन्तम् । नोक्कर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कट्कादीनां बान्तवान्तामात्रापेक्षया
 च अनन्तम्, ततो नानपारेकत्वमिति । एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरा द्वितीयः

जो जीव भविष्यत्कालमें अन्तर्विषयक कालको जानेगा उसे भाषी-नोभागमद्रव्यानन्त
 कहते हैं । तद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त दोमकारका हैं कर्मतद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त
 और नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त । ज्ञानायत्तादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्य
 तिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त कहते हैं । कटक इतकचपटीपर और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि
 पुनस्तद्रव्य ये सब नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त-नोभागमद्रव्यानन्त हैं ।

प्रश्न—जो भागमका अन्वयन करके मूक गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें
 अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—येसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है ।

द्राक्ष्यतागन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है क्योंकि, धर्मादि द्रव्य द्वाक्षविक होनसे
 उनका कभी भी विनाश नहीं होता है ।

जो गजनागन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है । एक परमाणुको अग्नेदिकानन्त
 कहते हैं ।

प्रश्न—द्रव्यत्वके प्रति अधिशिष्ट येसे द्वाक्ष्यतागन्त और अग्नेशानन्तका नोक्कर्म
 द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान—द्वाक्ष्यतागन्तका नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है क्योंकि
 इन दोनोंमें परस्पर भेद है । भाये उसका स्पर्शीकरण करने हैं । अन्त विनाशको कहते हैं
 जिसका अन्त अथवा विनाश नहीं होता है उसे अगन्त कहते हैं । जो धर्मादिक द्रव्य
 द्वाक्ष्य अगन्त है उस द्वाक्ष्यतागन्त कहते हैं । और नोक्कर्म द्रव्यगत अगन्तताकी अपेक्षा और
 कटकादिके वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अगन्त है इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं
 हो सकता है । एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होने
 पाता दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है इसलिये परमाणु अग्नेशानन्त है । ऐसी स्थितिमें

मेदामासदो ण तस्य आधारापेयभावो । यह जह एतथ वि आधारापेयभावो होम्भ,
आशुगसरीरमवियाण पुणरुत्तदा दुहेज्जेसि । जदि एवं, तो एद परिहरिय भणुसद
मुज्जदीदि एद गहेयम्भ । न भणुईतायामेवाय व्यवहारः, घनूप्यपसार्य सुवानेप्पपि
पनुःसुत्तं सुत्त इति व्यवहारदर्शनात् । न घृतकुम्भदद्यान्तो घटते, घटस्य घृतम्भप
देशानुपसम्भता दद्यान्तदार्थान्तिकयो साधर्म्याभावात् । ख त भवियापत्तं त अन्नत

पाय जाता है । फिर मी यदि यहाँ मी आधार-आपेयभाव माना जाये, तो वायकशरीर और
माषी इन दोनोंके कथनमें पुनरुत्तदा प्राप्त हो जायगी ।

समाधान— यदि ऐसा है तो इस दद्यान्तको छोड़कर सौ घनूप (सौ घनूपयस्ते)
मोजन करते हैं प्रकृतमें इस दद्यान्तको लेना चाहिये । घनूपोंके धारण करनेका व्यवस्थामें
ही सौ घनूप मोजन करते हैं यह व्यवहार नहीं होता है किन्तु घनूपोंको दूर करके मोजन
करनेवालोंमें मी सौ घनूप मोजन करते हैं इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है । किन्तु यहाँ पर
घनूपम्भका दद्यान्त कार्य नहीं होता है क्योंकि घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया
जानेके कारण दद्यान्त और दद्यान्तमें साधर्म्य नहीं है ।

निष्पन्न— नोमागमग्रन्थान्तोपके तीन मेद किये हैं वायकशरीर माषी और
नक्षत्रतिरिक्त । इनमेंसे वायकशरीरमें जाताका विकासमाषी शरीर किया जाता है और
माषीमें जो पतमावमें जाता नहीं है किन्तु अपने होगा उसका ग्रहण किया जाता है । अब यदि
जो पयाय पदक हो चुकी है या भागे होगी उसे ही वायकशरीरका अतीत और माषी मान
में तो वायकशरीरमाषी नोमागमग्रन्थमें और माषी नोमागमग्रन्थमें कोई अन्तर नहीं रह
जायगा । इसलिये वायकशरीरमें संन्यासाप्त भिन्न आधारमें आपेयका उपचार किया जाता है
और माषीमें बड़ी वस्तु अपने होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये ।
यद्यपि ऊपर आधारमें आपेयका उपचार विज्ञानके लिये भविसर्ग पापवि इत्यादि
दद्यान्त दे जाये हैं जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार उपचारपाटी ही
दुदकोके बीड़नेपर सौ उपचारों बीड़ती हैं इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अमस्त
आदि विषयक शास्त्रके जाताके शरीरको भी नोमागमग्रन्थान्त व्यति कद सज्जते हैं । परंतु
जो शरीर मदी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे किये नोमागमग्रन्थान्त आदि
कद सज्जते हैं क्योंकि उपचार लक्ष्य पदार्थमें होगा है । इसका समाधान यह है कि
जिसप्रकार घनूपोंको दूर रखकर मोजन करने पर मी घनूपस्य मुञ्चवि यह व्यवहार बन
जाता है उसीप्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा मी उपचारसे आधार-आपेयभाव
मान कर नोमागमग्रन्थान्त व्यति सँका बन जाती है । प्रकृतमें घृतकुम्भका दद्यान्त इसलिये
कार्य नहीं होता है कि घटमें भी इसप्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे यहाँ आधार-आपेयभावकी
समापना ही नहीं है ।

‘मिच्छादिद्वी फलविद्या’ इति सिस्सेण पुच्छिद् ‘अणता’ इति पमाणपरुषणानि आणि अति। न च हेम अणताणि पमाणपरुषणाणि तस्य तथान्मणादो । अति गणणान्तेण पगाद सेस-दसविध अणतपरुषण किमहु कीरते ? पुच्छ—

अवगमयिषतरणट्ठ पयदस्स परुषणाणिमित्त च ।

ससयविणासगट्ठ तच्चयवधारणट्ठ च ॥ १२ ॥

उत्तर च पुज्जाहरिण्हि—

जस्य बहू ज्ञापग्गो अपरिमिद तस्य निमित्तं मूढी ।

जस्य बहू अ ण ज्ञाणं चउत्तरो तस्य निमित्तो ॥ १३ ॥

अथवा निमित्तव्यवसिद्धमेव वप्पिज्जमार्गं वत्तारस्सुप्पयात्मानं इन्द्रा इदि निमित्तवो कीरते । तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिर्धार्योऽर्थो नामिसमीत्यते ।

युक्त चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥

प्रश्ना— यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनामस्तसे प्रयोजन है ?

समाधान— मिच्छाद्विषा जीव कितने हैं इसप्रकार क्षिप्यके द्वारा पूछन पर अनन्त हैं इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्रकरण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनामस्तसे प्रयोजन है । इस गणनामस्तको छोड़कर दोष अनन्त प्रमाणके प्रकरण करनेवाले नहीं हैं क्योंकि दोष अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं होना जाता है ।

प्रश्ना— यदि प्रकृतमें गणनामस्तस प्रयोजन है तो गणनामस्तको छोड़कर दोष क्या प्रकारक अनन्तोंका प्रकरण यहाँ पर किमस्तिये किया है ?

समाधान— प्रकृत विषयके निधारण करनेके लिये प्रकृत विषयके प्रकरण करनेके लिये संनयका विनाश करनेके लिये और तत्प्राप्त्यर्थ निश्चय करनेके लिये यहाँ पर सभी अनन्तोंका कथन किया है ॥ १५ ॥

पूपाद्यापाने भी कहा है—

जहाँ जीवादि पशुओंके विषयमें बहुत जानना चाहें वहाँ पर व्यापार समीक्षा निक्षेप करें । तथा जहाँ पर बहुत न जाने तो यहाँ पर ज्ञान निक्षेप अथवा करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथवा निक्षेपके विना यत्न किया गया यह विषय कदाचित् यन्त्राद्ये उन्मार्गमें छ जाये इसलिये यहाँ पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है । कहा भी है—

प्रमाण नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पशुधर्मी समीक्षा नहीं की जाती है उसका यथ युक्त होते हुए भी अयुक्तता प्रतीत होता है भाग कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तता

न्यायादा ।

अ त अणताणत्त त पि तिविद्द, अहण्णमुक्कस्स मज्झिममिदि । तत्थ इम होदि
चि ण जाणिज्जदि जहण्णमणत्ताणत्त ण मवदि उक्कस्समणत्ताणत्तं च मवत्ति ? 'अम्हि
जम्हि अणत्ताणत्तय मग्गिज्जदि तग्गि तग्गि अजहण्णमणुक्कस्स अणत्ताणत्तस्सेव गहण'
इदि परियम्ममयादा जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स अणत्ताणत्तस्सेव गहण इदि सि ।
त पि अणत्ताणत्तवियप्पमग्गि चि इम होदि चि ण जाणिज्जदि ? अहण्णअणत्ताणत्तादो
अणत्ताणि वग्गज्जाणाणि उवग्गि अम्मुस्सरिउण उक्कस्स अणत्ताणत्तादो अणत्ताणि वग्गज्जा
णाणि देह्वा ओसरिउण अतरे जिणणिट्ठमावो रासी पेच्चम्वो । अहवा तिप्पिवाग्गमिदि
मवग्गिदरासीदो अणत्तगुणो छहम्पक्किग्गिरामीदो अणत्तगुणहीवा मिष्टाहृदिरासी होदि ।
को तिप्पिवारवग्गिदसवग्गिदरासी ? उच्चदे- जहण्णमणत्ताणत्त विरत्तेउम एवेस्स हयम्म

विशेषकी प्रतिपत्ति होती है ऐसा श्राव्य है किन्तु मेरी जाना जाता है कि मिथ्याहृदि जीप
अनन्तानन्त होते हैं ।

ऊपर जो अनन्तानन्त कह भाये है वह भी तीन प्रकारका है अथवा अनन्तानन्त
उत्पद्य अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त ।

शुद्धा — उक्त तानों अनन्तानन्तामेंसे यहाँ पर अथवा अनन्तानन्त नहीं होता है और
उत्पद्य अनन्तानन्त होता है ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान — जहाँ जहाँ अनन्तानन्त ऐसा जाना है वहाँ वहाँ अथवा उत्पद्य मध्यम
मध्यम अनन्तानन्तका ही प्रमाण होता है इस परिकल्पके ध्यानमें जाना जाता है कि प्रत्यक्षमें
अथवा उत्पद्य मध्यम अनन्तानन्तका ही प्रमाण है ।

शुद्धा — यह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त चिह्नस्वरूप है इन्मनिये उनमेंसे यहाँ
कौनसा चिह्न स्मृत किया है इन बातका कथन मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे जान
नहीं होता है ?

समाधान — अथवा अनन्तानन्त अनन्त पार्श्वान ऊपर जाकर और उत्पद्य
अनन्तानन्तसे अनन्त धारणा में भी आकर मध्यम अनेकद्रव्यका ज्ञान यह उत्पद्य यहाँ पर
अनन्तानन्त परसे प्रमाण करनी चाहिये । अथवा अथवा अनन्तानन्तके तीनवार पार्श्व
परिगणित करने पर जो उत्पद्य होती है उससे अनन्तगुणी और उत्पद्य द्रव्योंके
परिगणित करने पर जो उत्पद्य उत्पद्य होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण
मिथ्याहृदि जीवोंकी उत्पद्य है ।

शुद्धा — तीन बार परिगणितपरिगणित उत्पद्य हीनकी है ?

ज्ञान प्रमाणमिच्छादुरपाये न्यास उपपद्यते ।

नयो शास्त्रमिच्छादुराये युक्तितोऽप्यपरिग्रहः ॥ १५ ॥

अथ गणनार्थं तत्पि विविधं, परिचायतं शुचार्थं अणतायतमिति । अयं शास्त्रे सामान्येण युते एवमिच्छादुराये मिच्छादुराये श्रीया इति इदं अणतायतं न इति पितृ सामान्येण, अणता इति बहुवचनमिच्छादुराये । अथ विविधं वि अणतायतं अति तस्य भेद अणतायतम् गणनं इति इति न न, मिच्छादुराये बहुवचनमिच्छादुराये बहुवचनमिच्छादुराये । अथ विविधं वि अणतायतं अति तस्य भेद अणतायतम् अणतायतम् । अथ एवमिच्छादुराये बहुवचनम् अणतायतम् इति न अणतायतम् ? एवमिच्छादुराये युते— 'अणतायतमिच्छादुराये अणतायतमिच्छादुराये न अणतायतमिच्छादुराये' इति शास्त्राद अणतायतं यथा अनन्तानन्ता मिच्छादुराये इति, व्याख्यानतो विविधमिच्छादुराये

प्रतीत होता है ॥ १४ ॥

विज्ञान-पुरुष सम्बन्धान्तो प्रमाण कहते हैं । सामान्यिकों द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निरूपण कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नथ कहते हैं । इसप्रकार युक्तितो अर्थतः प्रमाण नथ और निरूपणके द्वारा पदार्थका प्रमाण अथवा निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

मनस्तान्त तीव्र प्रकारका है । पदार्थान्त युक्तितो और अणतायतम् ।

शुद्धा—सूत्रमें अणता । इसप्रकार मिच्छादुराये परिमाण सामान्यिकोंसे कहा गया है, पर इतने कथन करनेमात्रसे अणताके तीव्र भेदोंमेंसे इसी अणतामें मिच्छादुराये तीव्र अणता मिच्छादुराये तीव्रका प्रमाण पाया जाता है दूसरे अणतामें नहीं यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सूत्रमें अणताके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल अणता बहुवचनरूपसे निर्दिष्ट किया है । अर्थात् पर तीव्र अणता पाये जाते हैं वहाँ वही अणतायतम् प्रमाण होता है सो भी नहीं है क्योंकि, मिच्छादुराये तीव्रका बहुवचन अणता करनेसे अणता शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है । अथवा तीव्र अणता अपने अपने भेदोंका आशय करके अणता विवरणरूप है । इनके इसी भेदकी विवक्षासे बहुवचन दिया है अन्य भेदकी अणतासे नहीं यह भी नहीं जाना जाता है ।

समाधान—जागे पूर्वोक्त शब्दका परिहार करते हैं— मिच्छादुराये तीव्र कावची अणता अणतायतम् अणतायतम् और अणतायतम्के द्वारा अणता नहीं होते हैं । इस कारण सूत्रसे जाना जाता है कि मिच्छादुराये तीव्र अणतायतम् होते हैं । अथवा व्याख्यासे

(१) प्रमाण नथ युक्तितो । अथ प्रमाण परिग्रह । इति एतेषां पदार्थान्तीव्रप्रमाणत्वं युक्तितो । (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०) (११) (१२) (१३) (१४) (१५) (१६) (१७) (१८) (१९) (२०) (२१) (२२) (२३) (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)

१ इति उपपत्त्यर्थेन इति वात ।

एसो सञ्जलीवरासीदो किञ्चमिच्छादिहिरासीदो य अणतगुणहीणो चि कर्ष आभिञ्जदि ?
 पुषदे- जहणपरिचाणतस्स अद्वन्द्वेदणाणसुवरी तस्सेव वग्गसलागाओ रुवाहियाओ
 पक्खिचे जहण्य अणतार्णतस्स वग्गसलागा भवति । जहणपरिचाणतस्स अद्वन्द्वेदणादि
 दुगुणिदाहि जहण्यपरिचाणते गुणिदे अहण्यमणताणतस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा इवति ।
 एदाओ च अहण्यपरिचाणतादो अससेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अससेज्ज
 गुणहीणाओ । एदाणसुवरी जहण्य अणताणतस्स वग्गसलागाओ अहण्यपरिचाणतस्स
 अद्वन्द्वेदणाहितो विससाहियाओ पक्खिच पढमवारवग्गिदसवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा
 भवति । जहण्य अणताणतस्स अद्वन्द्वेदणाओ जहण्य-अणतार्णतेण गुणिदे पढमवार
 वग्गिदसवग्गिदरासिस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा भवति । एदाओ जहण्य अणतार्णतादो

(याहि इम २१६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह
 ६१७ संख्याही होगी । इसप्रकार इच्छादि चोटी २ संख्याको तीनबार वर्गितसंवर्गित करने
 पर ६१७ संख्याकी महासंख्या उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी भूमराशिसे उत्पन्न हुई
 विचार वर्गितसंवर्गित राशिसे विस्तारना अनुमान लगाया जा सकता है ।)

ईक- तीनबार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुए यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे
 और संपूर्णजीवराशिसे कुछ कम (द्वितीयादि चोप लेख गुणस्थानसंख्या की राशि और सिद्ध
 राशि प्रमाण कम) मिष्टाहृदि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान- अथन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अथान् अथन्य परीतानन्तकी
 एक अधिक वगशस्त्राकार्य मिष्टा देने पर अथन्य अनन्तानन्तकी वर्गशस्त्राकार्य उत्पन्न होती
 है । तथा अथन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे अथन्य परीतानन्तके गुणित करने पर
 अथन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशस्त्राकार्य होती है । ये अथन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशस्त्रा
 कार्य अथन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी है और उसीके अर्थान् अथन्य परीतानन्तके उपरिम
 वगसे असंख्यातगुणी हीन है । इन अथन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शस्त्राकार्योंमें जो अथन्य
 परीतानन्तकी अर्धच्छेदशस्त्राकार्योंसे अधिक है ऐसी अथन्य अनन्तानन्तकी वर्गशस्त्राकार्य मिष्टा
 इन पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वगशस्त्राकार्य होती है । अथन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको
 अथन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशस्त्राकार्य

तमने पुन ज्ञानं पठान्तं कुरु त च शिष्युषी । दण्डं तह न त होत पठनेने विवदु क हने ॥ ४ ॥
 म ५ ८४

१ वनिद्वयता दण्डसलागा एविल अद्वन्द्वेदस्त । अद्विद्वयता ता कपु दण्डयता होति अद्विद्वी ॥
 नि ३८ ७१

२ निद्विद्वयताएवलि दिव्यस्त्राहृदिदि उद्विदे । अद्वन्द्वेता होति ॥ तन्माधुप्यन्यराशि ॥
 नि ३८ १ ७

अहृष्यमर्णतापंत दाऊय भगिदसभगिद कठलुप्यण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं कठळ
 तत्थेअरामिं बिरलेऊय अवर महाराभिपमाण रूय पडि दाऊय भगिदसभगिदं कठळ
 पुणो उड्ढिमहारासिं दुप्पडिरासिं कठळ तत्थेअरामिपमाण बिरलेऊय अवरमहारासिं
 बिरलेअरामिरूय पडि दाऊय अण्णाण्णम्मामे कडे विण्णवारवगिदसभगिदेरासीं याम ।

समाधान—अथय्य भगन्तानन्तक्य बिरल्लन करक और बिरल्लित राशिके प्रत्येक
 एकके ऊपर अथय्य भगन्तानन्तको वैयकपसे देकर उनके परस्पर वर्णितसंवर्णित करने पर
 जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये जहाँसे तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों
 पर स्थापित करना चाहिये । उनमेंसे एक राशिका बिरल्लन करके और उस बिरल्लित राशिके
 प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको वैयकपसे देकर और उनके परस्पर
 वर्णितसंवर्णित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये ।
 उनमेंसे एक राशिका बिरल्लन करके और बिरल्लित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें
 स्थापित महाराशिको वैयकपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती
 है उसे तीनवार वर्णितसंवर्णित राशि कहते हैं ।

सदाहरण (बीजगणितसे)— अथय्य भगन्तानन्तक्य

$$\text{एकवार वर्णितसंवर्णित राशि} = \text{क}$$

$$\text{दोवार} = \left(\begin{matrix} \text{क} \\ \text{क} \end{matrix} \right) = \text{क} \times \text{क} = \text{क}^2$$

$$\text{तीनवार} = \left(\begin{matrix} \text{क}^2 + 1 \\ \text{क} \end{matrix} \right) = \left(\begin{matrix} \text{क}^2 + 1 & \text{क}^2 + 1 \\ \text{क} & \times \text{क} \end{matrix} \right)$$

$$= \text{क}^3 + \text{क}^2 + \text{क} + 1$$

(अष्टगणितसे)— अथय्य भगन्तानन्तक्य

$$\text{एकवार १} = ४; \text{ दोवार ४} = २५; \text{ तीनवार २५३}$$

१ अर्थात्तापंत निपदिपिं कर्तुं निरुद्धि । विषयस्य च तन्नामिष कर्तुं पतिवरेण्या ॥
 ति श. ४८.

होती। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि अथर्व्य परीतामन्त्रकी अधच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक घगान्ताकार्य मिला देने पर जगत्प्र्य अनन्तानन्तकी घगान्ता काय और अथर्व्य परीतामन्त्रकी द्विगुणित अधच्छेदोद्गान्ताकार्योमें अथर्व्य परीतामन्त्रकी गुणित कर देने पर अथर्व्य अनन्तानन्तकी अधच्छेदोद्गान्ताकार्य होती है। इसीप्रकार घगान्तमपगित राशिकी घगान्ताकार्य और अधच्छेदोद्गान्ताकी पर्याप्तिके अनुसार प्रथम द्वितीय और तृतीय पार पगितमपगित राशिके अधच्छेद और घगान्ताकार्योके संबंधमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणित)—

अथर्व्य परीतामन्त्रकी पगितमपगित करनेमें अथर्व्य गुण्यमान्ता उत्पन्न होता है। तथा अथर्व्य पुमानन्तके घगप्रमाण अथर्व्य अनन्तानन्त है।

$$\begin{array}{rcl}
 \text{मान लो अथर्व्य परीतामन्त्रका मान } & \text{अ} & \\
 & २ & \\
 \text{परीतामन्त्रकी पगितमपगित राशि} & \begin{array}{c} \text{अ} \\ १ + \text{अ} + १ \\ २ \end{array} & \begin{array}{c} \text{अ} \\ २ \end{array} \\
 \text{उपरिक्त घग प्रमाण अथर्व्य अनन्तानन्त} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & \begin{array}{c} \text{अ} \\ २ + \text{अ} \\ ३ \end{array} & \\
 \text{अनन्तानन्त प्रथमपार घगान्तमपगित} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & \begin{array}{c} \text{अ} \\ २ + \text{अ} \\ ३ \end{array} & \\
 \text{द्वितीयपार पगितमपगित} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & \begin{array}{c} \text{अ} \\ ३ + \text{अ} \end{array} &
 \end{array}$$

तृतीयपार घगान्तमपगित = २

२. तन्त्र्यामे सत्तर द्वितीयपार घग करमेन विपरित्त राशि उत्पन्न होती है जसकी ३५ घगान्ताकार्य घगान्ताकार्य होता है। अतः ३५ घगान्ताकार्य और १९ की २ होती है ३५०। २ का एकवार घग करमेन ४ और ३ पार घग करमेन १९ उत्पन्न होता है। तथा विपरित्त राशिकी द्वितीयपार भाषा भाषा करमेन हुए एक बार यह उत्पन्न ३५ राशि अधच्छेद होता है और १९ का अधच्छेद ४ होता है। वाजपयनी १२ राशि अधच्छेद २ होत और अनन्तानन्त अ होती।

अथतगुणाओ तस्मैव उपरिमवग्मादो अणतगुणाहीणाओ । एदाणमुपरि पढमवारवग्मिदस-
वग्मिदरासिस्स वग्गसुल्लागाओ पक्खिउपे विदियवारवग्मिदसवग्मिदरासिस्स वग्गसुल्लागा
ह्वेति' । पढमवारवग्मिदसवग्मिदरासिस्स अद्दुल्लेदणहि पढमवारवग्मिदसवग्मिदरासि
गुणिदे विदियवारवग्मिदसवग्मिदरासिस्स अद्दुल्लेदणपसल्लागाओ भवति । एदाओ पढम
वारवग्मिदसवग्मिदरासीदो अणतगुणाओ तस्मैव उपरिमवग्गमादो अणतगुणाहीणाओ ।
एदाणमुपरि विदियवारवग्मिदसवग्मिदरासिस्स वग्गसुल्लागाओ पक्खिउपे तदियवारवग्मि-

होती है । ये प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्यं ज्ञाप्य अमन्तान्तसे
अमन्तगुणी ई और उसीके अर्थात् ज्ञाप्य अमन्तान्तकं उपरिम वर्गिते अमन्तगुणी हीन है ।
इस प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्योमे प्रथमवार वर्गितसंवर्गित
राशिची अर्धशङ्काकार्यं मिखा देने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची वर्गशङ्काकार्यं होती
है । तथा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्योके द्वारा प्रथमवार वर्गितस-
वर्गित राशिओ गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्यं होती
है । ये दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्यं प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिओ
अमन्तगुणी है और उसीके अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिओ उपरिम वर्गिते अमन्त
गुणी हीन है । इस दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशङ्काकार्योमे दूसरीवार वर्गित
संवर्गित राशिची वर्गशङ्काकार्यं मिखा देने पर तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची वर्गशङ्का-
कार्य होती है ।

विशेषार्थ—जो राशि विरहित वेबन्धसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरहित
राशिओ वेयरशिओ अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर आते हैं । तथा उसकी वर्गशङ्काकार्यं विरहित
राशिओ अर्धच्छेदोंमे वेयरशिओ अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशङ्काकार्यं मिखा देने पर होती
है । गणितकं इस नियमके अनुसार ज्ञाप्य परीतान्तको अर्धच्छेदोंसे ज्ञाप्य परीतान्तको गुणा
कर देने पर ज्ञाप्य पुच्छान्तको अर्धच्छेद और ज्ञाप्य परीतान्तको अर्धच्छेदोंमे उसीकी वर्ग-
शङ्काकार्यं मिखा देने पर ज्ञाप्य पुच्छान्तकी वर्गशङ्काकार्यं उत्पन्न होती । फिर भी मन्त्रमें ज्ञाप्य
अमन्तान्तकी वर्गशङ्काकार्यं और अर्धच्छेद छाना है । परन्तु ज्ञाप्य अमन्तान्त ज्ञाप्य पुच्छ
ान्तको उपरिम वर्गकय है और वर्गिते उपरिम वर्गकी वर्गशङ्काकार्यो और अर्धच्छेदोंको
छानेके लिये यह नियम है कि विरहित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद करने और
विरहित वर्गकी वर्गशङ्काकार्योसे उपरिम वर्गकी वर्गशङ्काकार्यं एक अधिक होती है । इसलिये
ज्ञाप्य पुच्छान्तके अर्धच्छेदोंको गुणा कर देने पर ज्ञाप्य अमन्तान्तके अर्धच्छेद और ज्ञाप्य
पुच्छान्तकी वर्गशङ्काकार्योमे एक और मिखा देने पर ज्ञाप्य अमन्तान्तकी वर्गशङ्काकार्यं

होगा। इस समूह व्ययस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि अथवा परितानन्तक
अधच्छेदोंमें उर्ध्वार्ध। एक अधिक घणनाकार्य मिला देने पर जगम्य अनन्तानन्तकी घणना
कार्य और अथवा परितानन्तकी द्विगुणित अधच्छेदशालाकार्योम अथवा परितानन्तकी मुक्ति
कर देने पर अथवा अनन्तानन्तकी अधच्छेदशालाकार्य होती है। इसीप्रकार योगितमयोगित
राशिकी घणनाकार्य और अधच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय
या योगितमयोगित राशिके अधच्छेद और घणनाकार्योके बीचमें भी समान एता चाहिये।

उदाहरण (योगितमयोगित)—

अथवा परितानन्तकी योगितमयोगित करनेमें अथवा मुक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा
अथवा मुक्तानन्तके घणनाकार्य अथवा अनन्तानन्त है।

अ

२

मान लो अथवा परितानन्तका मान २

$$\begin{array}{rcl}
 \text{परितानन्तकी योगितमयोगित राशि} & \begin{array}{c} \text{अ} \\ २ \end{array} + \text{अ} + १ & \text{क} \\
 \text{उपरिष्ठ घण प्रमाण अथवा अनन्तानन्त} & = २ & = ३ \quad (\text{मान लो})
 \end{array}$$

क

 $\text{२} + \text{क} = ३$

$$\text{अनन्तानन्त प्रथमवार घणनाकार्य} = ३ = ३ \quad (\text{मान लो})$$

ग

 $३ + ग$

$$\text{द्वितीयवार योगितमयोगित} = ३ = ३ \quad (\text{मान लो})$$

ग

 $३ + ग$

$$\text{तृतीयवार घणनाकार्य} = ३$$

३ अथवा उत्तर अथवा तृतीयवार घण करनेमें विहित राशि उत्पन्न होती है उसमें
उप घणनाकार्य घणनाकार्य होता है। जिसके बाद घणनाकार्य १ और ११ की होती
है क्योंकि २ का घणनाकार्य करने पर ४ और यावत् घण करने पर १२ उत्पन्न होता है।
तथा विहित राशि की जिसमें बाद आया आया करने हुए एक जोर यह उत्पन्न उग राशि

अधच्छेद होता है। जिसके बाद अधच्छेद ४ होता है। योगितमयोगित ३ अथवा
अधच्छेद ३ होता और घणनाकार्य ३ होती।

दस्रमिदगसिस्स वग्गसलागा मयति । एमां वग्गसलागरासी पडमवारवग्गिदस्रमिद
रासीइ उवरि एगममि वग्गसलागा ण च वड्ढिदो, तण्णदेमि दाण्हं रासीणं वग्गसलागाओ
सरिसाआ । एदाण च वग्गसलागाओ जहण्णपरिचारणताइ असण्णिअगुण्णाआ । अदि
एमां रासी सम्मवीवग्गसलागरासिणा सरिसो इअदि तो तिप्पिआरवग्गिदस्रमिदरासिणा
सम्मवीवरासी मि सरिसो होअ; ण च एअ । ते कथं ? ' जहण्ण अणताण्हं वग्गिअमाये
जहण्ण अप्रसापत्तस्म हेद्धिमवग्गणह्वाणेद्धितो उवरि अणतगुणवग्गण्णाणि गंतुअ तस्म
वीवराविवग्गसलागा उपपज्जदि ' मि परियम्मे बुअ । गुणगारा मि अहिअहि अप्रतप
मग्गिअदि तमिअ तमिअ अजहण्ण-अणुअस्मापसाण्हतयं यत्तअ । ण च तदियवारवग्गिद

अथ आगे इन सब राशियोंकी वर्गशालाकायं और वर्गस्थानों कीटो आते हैं—

	अ	प	म	अ.	म.	म	इ.	व	सं	हि	य	स.	नृ	व	स
						अ			क			ख			ग
			अ			२ + अ + १			२ + क			२ + ख			२ + ग
		२			२			२		२			२		२
प्रमाण	२		२		२			२		२			२		२
						अ			क			ख			ग
वर्ग श.	अ					२ + अ + १			२ + क			२ + ख			२ + ग
						अ			क			ख			ग
वर्गस्थान	अ					२ + अ + १			२ + क			२ + ख			२ + ग
	२		२		२			२		२			२		२

यह तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशालाकायति प्रथमवार वर्गितसंवर्गित
राशिसे ऊपर एक मी वर्गस्थानसे बुद्धिसे प्रयत्न नहीं हुई है अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित
राशिसे उपरिम वर्गके नीचेर ही तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशालाकायति जाती
है इसलिये इन दोनों राशियोंकी अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशालाकाय और
नृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशालाकायोंकी वयसकाय समान है जो वर्गशालाकाय
अल्प परीतामन्तसे अन्तर्प्राप्तगुणी है। यदि यह नृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशालाकाय
राशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशालाकायतिसे समान होती है ऐसा मान किया जावे तो
तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिके समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जावे। परंतु ऐसा है नहीं।

शुद्धा—यह कैसे ?

समाधान — अथवा अन्तान्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर अथवा अन्तान्तके
अपस्तन वगैरहोंसे ऊपर अन्तगुणे वर्गस्थान आकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशालाकाय
उत्पन्न होती है इसप्रकार परिचर्यामें कहा है। गुणकार मी कहा कहा अन्तान्तके
जाता है वहां वहां अन्तान्तान्तके अर्थात् मध्यम अन्तान्तान्तके गुणकारका ग्रहण करना

सप्तगिद्रासिबगसलागाओ हेड्डिमवग्गणह्वाणेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त अणतगुणवग्गण
 ह्वाणाणि गत्तुप्पण्णाओ, किंतु हेड्डिमवग्गह्वाणाओ उवरि सादिरेयमहण्ण-परिचाणंत
 गुणमद्दाण गत्तुप्पण्णाओ । केण कारणेण ? अहण्णपरिचाणतस्स अद्दुच्छेदणाहिंतो
 विसेसाहियाहि अहण्ण अणताणतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवगिदसंवगिद्रासिबग
 सलागाण वग्गसलागाओ हेड्डिमअद्दाणेणूणाओ अवाहिरिअमाणे सादिरेयमहण्णपरिचाणत
 मागच्छदि चि । य च अहण्ण-अणताणताओ हेड्डिम अद्दाण पड्डव सादिरेयमहण्णपरि
 चाणतगुण गंतुण सम्बन्धीवरासिबगसलागाओ उप्पण्णाओ, किंतु अणताणतगुण गंतुण
 सम्बन्धीवरासिबगसलागाओ । कुदो ? 'अणताणतविसए अजहण्णमणुक्कस्स अणताणतेणेव
 गुणगारेण भागहारेण वि होदव्व' इदि परियम्मवयणाओ । य च एदस्स अहण्णपरि
 चाणताओ विसेसाहियस्म असखेज्जचमसिद्ध, सुते वए गह्वतस्स अणतचविरोहाओ । य

आहिये । परंतु गृहीतबार वर्गितसंवर्गित राशिची वर्गशेखाकार्य अद्यस्य अनन्तानन्तकं अद्यस्तन
 वगस्यानन्ते ऊपर परिक्रमसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वगस्यान आकर नहीं उत्पन्न होती हैं,
 किंतु अद्यस्य अनन्तानन्तके अद्यस्तन वगस्यानोके ऊपर कुछ अधिक अद्यस्यपरीतानन्तगुणे
 वगस्यान आकर उत्पन्न होती हैं । इससे मनीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिची वर्गशेखाकार्य
 भौस तीनबार वर्गितसंवर्गित राशिची वगशेखाकार्य अनन्तगुणी भूत हैं ।

मुद्रा — येना किस कारणसे है ?

समाधान—जो कि अद्यस्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी अद्यस्य अनन्ता
 नन्तकी वगशेखाकार्योके द्वारा अद्यस्य अनन्तानन्तके अद्यस्तन वगस्यानसे भूत तीसरीबार
 वर्गितसंवर्गित राशिची वगशेखाकार्योकी वर्गशेखाकार्य अपहृत करने पर कुछ अधिक अद्यस्य
 परीतानन्त आता है । परंतु अद्यस्य अनन्तानन्तके अद्यस्तन वगस्यानोकी अपेक्षा अद्यस्य
 अनन्तानन्तसे कुछ अधिक अद्यस्य परीतानन्तगुणे वर्गस्यान आकर संपूर्ण जीवराशिची
 वर्गशेखाकार्य नहीं उत्पन्न होती हैं किंतु अद्यस्य अनन्तानन्तके अनन्तानन्तगुणे वगस्यान आकर
 संपूर्ण जीवराशिची वगशेखाकार्य उत्पन्न होती हैं । क्योंकि अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार
 और मागहार अद्यस्यानुसृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये इसप्रकार
 परिक्रमसूत्रका वचन है । ऊपर जो अद्यस्य परीतानन्तसे विरोधाधिक कहा आये हैं वह
 विरोधाधिक असस्यानरूप हैं यह बात अस्ति नहीं है क्योंकि व्यव होने पर समाप्त
 होनेवाली राशिओ अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसप्रकार कथन करनेसे अद्यपुत्रक

१ द. विरोधकार्य वदि द्विक्रमानन्तरस्य अद्यपुत्रपते । तत्रानन्तस्थानाणि यथा वगशेखा । वि आ
 या ११ टीका । तद्विरोधकार्य वदि अद्यस्यद्विक्रमानन्तगुणपते । तत्र अर्धतानन्तपरिवर्तमाना यथा जीवराशेरर्धशेखा-
 राशि । नो जी जी म टी. (पर्यातिवक्ष्यमा) ।

२ अतिरु निरुत्तल इति वाक्य ।

दमनगिदरासिस्म वगसलागा मर्षति । एमो वगसलागरासी पडमवारवगिदसवगिद
 रासीश उवरि एगमनि वगसलागा ज च वगिदरा, तेणेदेसि दोण्ह रासीण वगसलागाओ
 मरिसाया । एदाय च वगसलागाओ जहणपरिचार्जतादा असंखेजगुणाओ । कदि
 एमा रासी सम्पजीववगसलागरासिणा सरिसो हवदि तो विष्णिवारवगिदसवगिदरासिणा
 सम्पजीवरासी वि सरिसो हाका, ज च एव । तं कच ? 'जहण्य अणताणत वगिदमाणे
 जहण्य अणताणतस्म हेटिमवगसलागाहंतो उवरि अणतगुणवगसलागाणि गतूण सम्प
 जीवरासिवगसलागा उत्पज्जदि ' चि परियम्मे पुच । गुणगारो वि जम्हि जम्हि अबतय
 मगिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्य-अणुक्कस्माणताणतय पचवर्ण । ज च तदियवारवगिद

अथ आगे इन सब राशियोंकी वर्गशक्ताकार्य और वर्गप्रेरु कितने होते हैं—

	अ प क	ज म म	म व स	वि व स	गृ प सं
		अ २ + अ + १	क २ + क	ख २ + ख	ग २ + ग
प्रमाण	२ २	२ २	२ २	२ २	२ २
वग श	अ २	अ २ + अ + १	क २ + क	ख २ + ख	ग २ + ग
अपच्छेद	अ २	अ २ + अ + १	क २ + क	ख २ + ख	ग २ + ग

यह तीसरीवार वर्णितसंघर्षित राशिकी वर्गशक्ताकार्य प्रथमवार वर्णितसंघर्षित
 राशिके ऊपर एक भी वर्गस्थानसे वृद्धिको प्राप्त नहीं हुई है अर्थात् प्रथमवार वर्णितसंघर्षित
 राशिके उपरिम पङ्के मीतर ही तीसरीवार वर्णितसंघर्षित राशिकी वर्गशक्ताकार्य होती
 है इसलिये इन दोनों राशियोंकी अर्थात् प्रथमवार वर्णितसंघर्षित राशिकी वर्गशक्ताकार्य और
 गृहीतवार वर्णितसंघर्षित राशिकी वर्गशक्ताकार्यकी वर्गशक्ताकार्य समान है जो वर्गशक्ताकार्य
 अथवा परीक्षान्तस असंख्यातगुणी है । यदि यह गृहीतवार वर्णितसंघर्षित राशिकी वर्गशक्ताकार्य
 राशि संतुल्य जीवोंकी वर्गशक्ताकार्यदि के समान होती है ऐसा मान लिया जाये, तो
 नीचवार वर्णितसंघर्षितराशिके समान संतुल्य जीवराशि भी हों जाये । परंतु ऐसा है नहीं ।

प्रश्न—यह कैसे ?

समाधान — अथवा अन्तस्तान्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर अथवा अन्तस्तान्तके
 अपरान्त वर्गस्थानोंके ऊपर अन्तस्तान्तके वर्गस्थान जाकर संतुल्य जीवराशिकी वर्गशक्ताकार्य
 उत्पन्न होती है इसप्रकार परिकल्पित किया है । गुणवार भी अहाँ अहाँ अन्तस्तान्तके दोनोमें
 आता है वहाँ परा अथवा अन्तस्तान्तके वर्गस्थान जाकर अन्तस्तान्तके वर्गस्थान पर प्रत्यक्ष वर्तता

संबन्धिगदरासिबगसलागाओ हेष्टिमबगगण्डाणेहिंतो ठवरि परियम्म-उत्त प्रणतगुणवगगण
 द्वाणाणि गंतुप्यपणाओ, किंतु हेष्टिमबगगण्डाणादो ठवरि सादिरेयजहण्णपरिचाणत
 गुणमद्वाण गंतुप्यपणाओ । केण कारणेण ? अहण्णपरिचाणतस्स अद्दच्छेदणाहिंतो
 बिसेसाहियाहि अहण्ण अणताणतस्स बगसलागाहि तदियधारवग्गिदसंबग्गिदरासिबग
 सलागाण बगसलागाओ हेष्टिमअद्वाणेणूणाओ अषाहिरिअमाणे सादिरेयजहण्णपरिचाणत
 मागच्छदि चि । ण च अहण्ण अणताणतादो हेष्टिम अद्वाण पद्दुअ सादिरेयजहण्णपरि
 चाणतगुण गत्तु सच्चञ्जीवरासिबगसलागाओ उप्पणाओ, किंतु अणताणतगुण गंतुप्य
 सच्चञ्जीवरासिबगसलागाओ । कुदो ? 'अणताणतविसए अजहण्णमयुक्कस्स अणताणतेमेव
 गुणगारेण भागहारेण चि होद्व्व' इदि परियम्मवयणादो । ण च एदस्स अहण्णपरि
 चाणतादो बिसेसाहियस्म असखेज्जचमसिद्ध, सत एण गहुंतस्स अणतचविरोहादो । ण

बाहिये । परंतु नृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशाखाकाय अथव्य अनन्तानन्तके अधस्तन
 वगस्यानसे ऊपर परिचमधुजमे कहे गये अनन्तगुणे वर्गस्यान आकर नहीं उत्पन्न होती हैं
 किंतु अथव्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक अथव्यपरीतानन्तगुणे
 वर्गस्यान आकर उत्पन्न होती हैं । इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशाखा-
 ओस तीसरा वर्गितसंवर्गित राशिकी वगशाखाकाय अनन्तगुणी भूत है ।

प्रश्न — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—जो कि अथव्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी अथव्य अनन्ता
 नन्तकी वगशाखाकाओंके द्वारा अथव्य अनन्तानन्तके अधस्तन वगस्यानसे भूत तीसरीवार
 वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशाखाकाओंकी वगशाखाकाय अथव्य करने पर कुछ अधिक अथव्य
 परीतानन्त आता है । परंतु अथव्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा अथव्य
 अनन्तानन्तस कुछ अधिक अथव्य परीतानन्तगुणे वगस्यान आकर संपूर्ण जीवराशिकी
 वगशाखाकाय नहीं उत्पन्न होती है किंतु अथव्य अनन्तानन्तस अनन्तानन्तगुणे वर्गस्यान आकर
 संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशाखाकाय उत्पन्न होती है । क्योंकि अनन्तानन्तके विद्यमान गुणकार
 और मागहार अथव्यमात्ररूप अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये इसप्रकार
 परिक्रमस्वरूपा वजन है । ऊपर जो अथव्य परीतानन्तमे विशेषाधिक बद्ध भावे हैं वह
 विशेषाधिक असरपातक्य है वह बात असिद्ध नहीं है क्योंकि ध्यय होने पर समाप्त
 होनेवाली राशिका अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुत्रक

१ तदेवमकारं वर्धने द्विकशास्त्रतत्त्वं अथव्यपुत्रपुत्र । वशास्त्रतत्त्वादि तथा वर्धकका । नि ता
 गा १९ टीका । तद्विधेयका वर्धने अथव्यद्विकशास्त्रतत्त्वं-पुत्रपुत्र । तत्र अथव्यतत्त्वं वशास्त्र तथा औरतत्त्वं वशास्त्र
 एव । न। जी जी व टी (पर्वोत्तररूपका) ।

२ अत्रिगु विद्वत्तत्त्वं इति पाठ ।

य अद्भ्योऽगस्तपरियङ्गुण विरहिषारो, उवयारण तस्स आणतियादा । को वा उद्भ्य पक्खित्तरासी ? पुच्छे- तिष्णिवाग्गिगदसन्नगिदरासिम्हि—

तिष्ठा पिणोन्जीवा वणप्पदी कालो य पोमगला नेय ।

सम्भमळोगमास छप्पेदे जणपरसेवा ॥ १९ ॥

एदे छप्पकत्तेवपक्खित्ते उद्भ्यपक्खित्तरासी होदि । एदस्स अज्झप्पमणुक्कम्भ अर्जंतावतपस्स अत्तिपाणि क्खाणि तत्तिपमेत्तो मिच्छद्भित्तरासी । एद क्खं यच्चदि ति मणिदे जगता इदि वयणादा । एद वयणमवच्छरण किं य अस्सित्पदि ति मणिदे असन्नकारणुम्भकजिणवयणकमलविभिग्गयत्तादो । य च पमाणपक्खिग्गहिमो पयत्तो पमाणत्तरेण परिक्खित्तादि, अबद्धाणादो ।

परिवर्तनके साथ व्यवहार हो जायगा तो भी बात नहीं है क्योंकि अर्धपुरुषपरिवर्तन काष्ठको उपचारसे अमन्तरूप माना है ।

श्रुत्य—असमं छद्म द्रव्य प्रक्षिप्त किय गये हैं वह राशि कीनसी है ?

समाधान—हीनचार वर्गितसंवर्गित राशिमं- सिद्ध, निपोवजीव घनत्वतिक्काधिक पुद्गल क्खके समय और अक्षोक्षकता ये छहों अमन्त राशियाँ मिखा वेना चाहिये ॥ १९ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छद्म राशियोंक मिखा वेने पर छद्म द्रव्य प्रक्षिप्त राशि होती है । इसप्रकार हीनचार वर्गितसंवर्गित राशिसे अमन्तगुणे और छद्म द्रव्य प्रक्षिप्त राशिसे अमन्तगुणे हीन इस मध्यम अमन्तानन्तरी जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिच्छाद्वि- जीवराशि है ।

श्रुत्य—मिच्छाद्विराशि इतनी है वह कैसे जना जाता है ?

समाधान—सूत्रमें अर्णता पेसा बहुवचनान्त पद दिया है जिससे जाना जाता है कि मिच्छाद्विराशि मध्यम अमन्तानन्तप्रमाण होती है ।

श्रुत्य—यह वचन अस्तव्यपनेको क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है ?

समाधान—अस्तव्य बोझनेके कारणोंसे रहित त्रिगोत्रपेचके शुल्कमन्त्रसे निश्चये हुए ये पक्ष हैं इसलिये उन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता । जो पक्षार्थ प्रमाणसिद्ध है उसको दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती है क्योंकि वह पक्षार्थ प्रमाणसे अपरिपक्व है ।

१ ति व प ५३ मिखा विधत्तगद्दीववणप्पिणोत्तपया लपणत्ता । क्ख अक्षोवणात्त क्खेदवत्त- पुप्पेरा ॥ ति का ५९ मिखा निपोवजीवा वणत्ता ॥ ५७ पुप्पका नेय । सम्भमळोगमास पुण तियादि केवळ- वपमि ॥ क म ४ ४५ २ त्तिगु उचित्तियेत्तो इति वाक्य ।

अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरति का-
लेण ॥ ३ ॥

किमद्वयस्य सप्तपमाणमद्वयस्य कालपमाण बुधदे ? 'अधूल अप्यवपणणीय स
पुण्यमेव माणियन्त्र' इति ज्ञायादो । कथं कालपमाणादो सप्तपमाण बहुवप्यभिज्ञ ? बुधदे-
खेयवमाण लागा परबेदव्यो । सो वि सेत्तिपरवणाए विणा ण आणिज्जदि चि सेत्ती
परबेदव्यो । सा वि रज्जुपरवणाए विणा ण आणिज्जदि चि रज्जु परबेदव्यो । रज्जु
वि सगच्छेदणाहि विणा ण आणिज्जदि चि रज्जुच्छेदणा परबेदव्यो । तात्रा वि दीव
मागरपरवणाए विणा ण आणिज्जति चि दीवसागरा परबेदव्यो चि । ण च कालपमाणे
एव महीती परव्यो अस्ति, तदो कालादा सप्त सुहुममिदि आणिज्जदे । च वि आश्रिया
एव मणति बहुवेहि पदमहि उवचिद सुहुममिदि । उच च—

सुहुमा य इवति वत्तो मत्ता य सुहुमदर इवति मत्त ।

अगुल-अस्सपमाण इवति वत्ता अमगरा ॥ १७ ॥ इति ॥

कालकी अपथा मिथ्यावृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिण्यो अर उत्सर्पिण्योऽरु
द्वारा अपहत नहीं हान ह ॥ ३ ॥

प्रश्न—क्षेत्रप्रमाणको उद्दिष्ट करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— जो स्थूल और अकारणनीय हाना ह उसका पहलें ही कथन करना
चाहिये इस व्यापके अनुसार पहलें कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है ।

प्रश्न—कालप्रमाणकी अवस्था क्षेत्रप्रमाण बहुवप्यनीय क्यों है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणमें तोत्र प्रकल्प करने से वह । उसका भी अगच्छेद्याके
प्रकल्पने विना ज्ञान नहीं हो सकता है इसलिये अगच्छेद्याका प्रकल्प करना चाहिये ।
अगच्छेद्याका भी रज्जुके प्रकल्प किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है इसलिये रज्जुका प्रकल्प
करना चाहिये । रज्जुका भी उसके अधच्छेद्योका कथन किये विना ज्ञान नहीं हो सकता ह
इसलिये रज्जुके छेद्योका प्रकल्प करना चाहिये । रज्जुके छेद्योका भी ठायो अर सागरोंके
प्रकल्पने विना ज्ञान नहीं हो सकता ह इसलिये ठायो अर सागरोंका प्रकल्प करना चाहिये ।
परिन्तु कालप्रमाणमें इसप्रकार नहीं प्रकल्पना नहीं ह इसलिये कालप्रमाणका प्रकल्पनाई अगुल
क्षेत्रप्रमाणका प्रकल्पना अतिगुह्यमकथन यस्मिन् ह यह बात जानी जानी ह ।

चिन्ते ह व्यापार ऐसा कथन करने ह कि जो बहुत प्रश्नोंमें उपस्थित होता है वह
परम होता है । कहा भी है—

कालप्रमाण गुह्य ह अगुल क्षेत्रप्रमाण उभये भी गुह्य ह क्योंकि अगुलक मगधवा

१८ : १५ दो १५ : १८ : १९ : २० : २१ : २२ : २३ : २४ : २५ : २६ : २७ : २८ : २९ : ३०

१९ : २० : २१ : २२

एद वक्तव्यां न घटते । कुदा ? राचादो दग्गस्स पक्खणपसगादो । उ कच ?
एकमिदं दग्गुत्तं अणत्तपरमाणुपदमहि पिप्फण्णे ण्यं सेचगुलमागाहे, गजण पइव
अणत्ताणि सेचगुलाणि होति चि ।

सुद्धं तु दग्गि सेच तथे य सुद्धमर दग्गि दग्ग ।

उत्तगुला अणत्ता एगे दग्गुत्ते होति ॥ १८ ॥ इति ॥

कच कालस्य मिथिलत मिच्छाद्विरासि च उच्यते कालस्य एगे समयो मिच्छाद्विरासमि
धर्मं समय उच्यते मिच्छाद्विरासि च उच्यते कालस्य एगे समयो मिच्छाद्विरासमि
धर्मा जीवा अरहिरस्सदि । एवमरहिरिजमाणे अरहिरिजमाणे सद्ये समया अरहिरिजंति,
मिच्छाद्विरासी न अरहिरिजंति । एवमोदगा मणदि- मिच्छाद्विरासी अरहिरिजंति,
सद्ये समया न अरहिरिजंति चि । केग कारणेण ? कालमाद्विरासपदमसुत्तदसगादो ।
किं वं सुत्तं ? उच्यते-

तथे मागमे असंख्यात वदन्ति होति ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका व्यवहार करना घटित नहीं होता है क्योंकि ऐसा मान लेने
पर क्षेत्रप्रकरणके अनन्तर द्रव्यप्रकरणका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

प्रश्न—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अनन्त परमाणुवत् प्रवेशोंमें मिथिल एक द्रव्यांगुलमें अथवाहनाही
अथवा एक क्षेत्रांगुल ही है किन्तु गजनाही अथवा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं इसलिये
ओ बहुत प्रवेशों उपस्थित होता है वह सूक्ष्म होता है वह बड़ना ही नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे ही सूक्ष्मतर द्रव्य होता है क्योंकि एक द्रव्यांगुलमें
अनन्त क्षेत्रांगुल होत है ॥ १८ ॥

प्रश्न—कालप्रमाणही अथवा मिथिलरहि जीवोंका प्रमाण कैसे निश्चय्य जाता है ?

समाधान—एक भार अनन्तानन्त अथवापिणियों और उत्तरपिणियोंके समपात्रों
स्थापित करने और नूनही और मिथिलरहि जीवोंकी स्थापित करने कायके समर्थोंमेंसे
एक एक समय भार उत्तरके भार मिथिलरहि जीवराशिक प्रमाणमेंसे एक एक आय क्रम करते
जाता चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर कालक समय और जीवराशिके प्रमाणका क्रम करने हुए
कते ज्ञान पर अनन्तानन्त अथवापिणियों और उत्तरपिणियोंके एक समय समान हो जान है
परंतु मिथिलरहि जीवराशिक प्रमाण समान नहीं होता है ।

प्रश्न—यहां पर संख्याकारका कहना है कि मिथिलरहि जीवराशिक प्रमाण मत ही
समान हो जानो परंतु कालक सूक्ष्म समय समान नहीं हो सकते हैं क्योंकि मिथिलरहि
जीवराशिके प्रमाणही अथवा कालक समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारों प्रकरण
करनाका सूक्ष्म ही समयमें जाना है । वह सूक्ष्म कालका है इसप्रकार सूक्ष्म पर संख्याकार कहना है-

धम्माधम्मागासा तिणि वि सुत्ताणि होति पांसाणि ।

अथीव जीवयोगखरुखागासा अणत्तगुणा ॥ १९ ॥

न पस दोसो, अदीदकालमहणादो । अहा सधे छाणं पायो तिहा बिहसो,
अणागदो बहमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो नाम । पटिन्धमाणो
बहमाणो । निप्फण्णो बभहारजोगो अदीदो नाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिण्णिज्जेते
सम्बवीजणि । पत्थुबसहारगाहा—

पायो तिहा बिहसो अणागदो बहमाणदीदो य ।

एत्थु अदीदेण दु मिणिज्जेते सम्बवीज तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि तिपिहा, अणागदो बहमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणि
ज्जेते सम्ब जीवा । पत्थुबसहारगाहा—

काळो तिहा बिहसो अणागदो बहमाणदीदो य ।

एत्थु अदीदेण दु मिणिज्जेते जीवत्तसी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य अपरमद्रव्य बीर खोकाक्षरा ये तीनों ही समान होत हुए लोके हैं । तथा
जीवद्रव्य पुत्रसद्रव्य काळके समय बीर आकाशके प्रवेश ये उत्तरोत्तर बुद्धिजी अपेक्षा
अन्तर्गतगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि निष्परादि जीवराशिका प्रमाण
निकाशनेमें अतः काळका ही ग्रहण किया है ।

त्रिसप्रकार सब लोकमें प्रत्य तीन प्रकारसे विभक्त है अनागत वर्तमान और अतीत ।
उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रत्य है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान
प्रत्य है और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रत्य है । उनमेंसे
अतीत प्रत्यके द्वारा संतुल बीज माये जाते हैं । यहाँ पर इन विषयकी व्यवहाररूप गाथा
बढ़ते हैं—

प्रत्य तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रत्यके द्वारा
संतुल बीज माये जाते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काळ भी तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और अतीत । उनमेंसे
अतीत काळके द्वारा संतुल जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है । यहाँ पर व्यवहाररूप
गाथा बढ़ते हैं—

काळ तीन प्रकारका है अनागतकाळ वर्तमानकाळ और अतीतकाळ । इनमेंसे अतीत
काळके द्वारा संतुल जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

एतं धनराणं न घटति । कुदा ? यथादो दम्बस्तु परवृत्तपसगादो । तं कर्षं ? एकमिदं दम्बमुत्त अणतपरमाणुपरममिदं मिष्कण्य एमं खेचमुत्तमोगाहे, गणन पश्य अप्रतापि खेचमुत्तापि होति सि ।

सुदृढं तु हृदि स्थितं यत्तु यत्तु मन्त्र इवदि मन्त्र ।

उत्तुता अगता एते मन्त्रगुणे होति ॥ १८ ॥ इति ॥

रूप कालं मिथिलत मिठाशुद्धी जीवा ? अणताणताण आसपिनि-उत्तपि नील समण ठवृत्त मिष्ठाशुद्धिराभि च ठवेऊण कालमिदं एमां समयो मिष्ठाशुद्धिराभि प्रमा जीवो अरहिरादि । एममरहिराभिमाण अरहिराभिमाणे सन्ने ममया अरहिराभिमाणे, मिष्ठाशुद्धिरासी य अरहिराभिमाणे । एम चान्ता मगादि- मिष्ठाशुद्धिरामी अरहिराभिमाणे, सन्ने समयो न अरहिराभिमाणे सि । कण कारणेण ? कालमाहणपरवृत्तपसगादो । किं व सुच ? उच्यते-

तथे मागमे मसप्याण वरु होत है ॥ १७ ॥

परंतु इनका इतनाकारवा व्यवहार करना बहुत नहीं होता है क्योंकि ऐसा मात्र लेने पर शेषरूपकाष्टे अनन्तर प्रत्यक्षरूपकाष्टे प्रलेग प्राप्त हो जायगा ।

प्रश्न—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, ममम परमाणुरूप प्रवेशोने मिष्कण्य एक प्रमाणगुणमे ममगाहतापी ममेसा एक शेषगुण हो है किन्तु ममगाही अपेक्षा अनन्त सन्नागुण होते है इसलिये जो बहुत प्रवेशोने उपनिब होता है वह प्रथम होता है वह कहना ठीक नहीं है ।

शेष प्रथम होता है और उसमे ही प्रथमतर प्रथ होता है क्योंकि एक प्रमाणगुणमे ममम शेषगुण होत है ॥ १८ ॥

प्रश्न—कामप्रमाणकी अपेक्षा मिष्कण्यदि अपेक्षा प्रमाण कैसे निकाला जाता है ?

समाधान—एक और अनन्तमात्रण अपमपिथिषो और उत्तपिथिषोके समर्थोने स्थापन करके और भूमी और मिष्कण्यदि अपेक्षा शक्तिही स्थापित करके कामके समर्थोने एक एक समय और उर्गाक साथ मिष्कण्यदि अपेक्षाशिक प्रमाणमेसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उन्नयोत्तर कामके समय और अपेक्षाशिके प्रमाणका कम करने हुए कामे जान पर अनन्तमात्रण अपमपिथिषो और उत्तपिथिषोके सब समय समान हो जान है परंतु मिष्कण्यदि अपेक्षाशिक प्रमाण प्रमाण नहीं होता है ।

प्रश्न—यहां पर शक्तिकारवा कहना है कि मिष्कण्यदि अपेक्षाशिक प्रमाण मने ही समान हो जाना परंतु कामके मूलका समय समान नहीं हो सकने है क्योंकि मिष्कण्यदि अपेक्षाशिक प्रमाणकी अपेक्षा करने समयको प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारमे प्रत्यक्ष करनेवाला प्रथम ही प्रथममे जाना है । वह प्रथम कीवसा है इसप्रकार प्रथमे पर शक्तिकार कहना है-

धम्माग्मागासा तिणि वि सुत्ताणि होनि वाधाणि ।

अग्नीदु जीवपोग्गकलगासा अणतगुणा ॥ १९ ॥

य एस दोसो, अदीदकालमहणादो । जहा सम्मे लार्ह पयो तिहा विहचो, अणागदो बहमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फणो अणागदो णाम । पट्टिज्जमाणो वहुमाणा । मिप्फणो बबहारजोगो अदीदो णाम । तत्थ अदीदण पत्थण मिणिग्गंते सग्गवीरुणि । एत्थुवसहारगाहा—

पयो तिहा विहचो अणागदो बहमाणतीदो य ।

एत्थु अग्नेण दू मिणिग्गंते सम्मवीरु तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि तिहिहा, अणागदो बहमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेन मिणिग्गंते मग्ग जीवा । एत्थुवसहारगाहा—

कालो तिहा विहचो अणागदो बहमाणतीदो य ।

एत्थु अग्नेण दू मिणिग्गंते जीवपसी दू ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाध्याय ये तीनों ही समान होते हुए लोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुत्रजद्रव्य काखके समय और आकाशके प्रवेश, ये उत्पत्तेश्चर बुद्धिहीन अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोई शेष नहीं है, क्योंकि मिष्टाहृदि जीवराशिश्च प्रमाण निश्चयनेमें अतत्त कालश्च ही ग्रहण किया है ।

त्रिसप्रकार, सब लोकमें प्रत्य तीन प्रकारसे विभक्त है अनागत चतुर्मान और वर्तित । उनमेंसे जो निष्प्रभ नहीं दृश्य है वह अनागत प्रत्य है, जो बनाया जा रहा है वह चतुर्मान प्रत्य है, और जो निष्प्रभ हो कुछ है तथा व्यवहारके योग्य है वह वर्तित प्रत्य है । उनमेंसे वर्तित प्रत्यके द्वारा संपूर्ण बीज माये जात हैं । यहाँ पर हम विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रत्य तीन प्रकारका है अनागत चतुर्मान और वर्तित । इनमेंसे वर्तित प्रत्यके द्वारा संपूर्ण बीज माये जाते हैं ॥ २० ॥

एसीप्रकार काख भी तीन प्रकारका है अनागत चतुर्मान और वर्तित । इनमेंसे वर्तित काखके द्वारा संपूर्ण जीवराशिश्च प्रमाण जाना जाता है । यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काख तीन प्रकारका है अनागतकाख चतुर्मानकाख और वर्तितकाख । इनमेंसे वर्तित काखके द्वारा संपूर्ण जीवराशिश्च प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

तेषां कारणेण मिच्छाहाङ्गिरासी ण अवहिरिज्जदि, सम्भ समया यवहिरिज्जति ।
अदीदकासो बोवो मिच्छाहाङ्गिरासी पङ्गुगो चि कप यच्चदे । सोलस रडिय अप्पावडु
माहो । कपं सालसपडिय अप्पावडुगं । सम्भत्यावा वडुमाणद्धा, भमवमिद्धिमा अपत
गुणा । को गुणमारो ? बहण्णत्तुपाणत्तं । मिद्धकासो अणत्तगुणा । को गुणमारो ?
छम्मासडुममाणेण रूराहिएण छिण्ण मदीदकालस्स अपत्तिममाणो । अगाइस्स अदीद
कालस्स कपं पमाण ठविज्जदि ? न, अप्पाहा सस्सामाउपसगादे । य च अगादि चि
आभिदे सादिच वावेदि, विरोहा । सिद्धा संसेज्जगुणा । को गुणमारो ? म्भसदंभुवत्तं ।
असिद्धकासो असंसेज्जगुणो । को गुणमारो ? संसेज्जावलिपाआ । अदीदकासो विसे
साहिआ । केचियमेचेण ? सिद्धकालमेचेण । भवसिद्धिमा मिच्छाहाङ्गी अणत्तगुणा । को

इसलिये मिथ्याचरि जीवराशिका प्रमाण समान्त नहीं होता है परंतु अतीतकालके
संपूर्ण समय समान्त हो जाते हैं ।

श्रुक्का—मूर्तिशब्द श्लोक है और मिथ्याचरि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है
यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोछह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतराशिके
मिथ्याचरि जीवराशिका प्रमाण अधिक है ।

श्रुक्का—सोछह राशिगत अल्पबहुत्व किसप्रकार है ?

समाधान—वर्तमानकाल धरासे श्लोक है । अमन्य जीवोंका प्रमाण उससे अवन्तगुणा
है । वहां पर गुणकार क्या है ? अमन्य पुच्छमन्त वहां पर गुणकाररूपसे अभीष्ट है ।
अमन्यराशिके सिद्धकास अवन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? छह महीनोके भयम भागमें एक
मिद्धा देने पर जो समयसंख्या आवे उससे मन्त अतीतकाशिक अवन्ततां माग गुणकार है ।

श्रुक्का—मूर्तिशब्द अनादि है, इसलिये इसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा
सकता है ?

समाधान—वहीं क्योंकि यदि इसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका
प्रमाण भी आपका । परंतु उसके अभावित्वका बाल ही जाता है इसलिये इसे साक्षित्वकी
प्राप्ति हो आपकी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध जाता है ।

सिद्धकासके सिद्ध संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? वहां पर रात्रप्रपञ्चबन्ध
गुणकार देना चाहिये । सिद्ध जीवोंसे असिद्धकास अतीतकाशगुणा है । गुणकार क्या है ?
वहां पर संख्यात व्यवस्थिकार्य गुणकार हैं । असिद्धकासके अतीतकास विरोध अधिक है ।
कितावा विरोध अधिक है ? सिद्धकासका अितमा प्रमाण है उतने विरोधसे अधिक है । अर्थात्

गुणगारा ? भवसिद्धियमिच्छाङ्घ्रिणमणतिममागो । भवसिद्धिया विसेसाहिया । केचित्प
मचेण ? तेरसगुणद्वानमेचेण । मिच्छाङ्घ्रि विसेसाहिया । केचित्पमचेण ? तेरसगुणद्वान
मेचेण पमाणेणूण-अभवसिद्धियमेचेण । ससारत्वा विसेसाहिया । केचित्पमचेण ? तेरम
गुणद्वानमेचेण । सव्ये जीवा विसेसाहिया । केचित्पमचेण ? सिद्धजीवमेचेण । योग्गल
दम्भमर्णतगुण । को गुणगारो ? सव्यजीवेहि अणतगुणो । एसद्वा अभतगुणा । को गुण
गारो ? सव्ययोग्गलदम्भादो अर्णतगुणो । सव्यद्वा विसेसाहिया । केचित्पमचेण ? बहु
माणातीदकालमेचेण । अलोगागासमभवतगुण । को गुणगारो ? सव्यकालादो अर्णतगुणो ।
सव्यागामं विसेसाहिय । केचित्पमचेण ? लोगागासपदेसमेचेण । अण अदीदकालादो
मिच्छाङ्घ्रि अणतगुणा तेण सव्य समया अवहिरिज्जति मिच्छाङ्घ्रिरासी ण अवहिरिज्जति

असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिच्छा देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है । अतीत
कालसे मध्य मिष्याहृदि जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मध्य मिष्याहृदियोंका
अनन्तत्वा माग गुणकार है । मध्य मिष्याहृदियोंसे मध्य जीव विशेष अधिक हैं । कितने
अधिक हैं ? साक्षात् गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवर्ती गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण
है उतने विशेषरूप अधिक हैं । अर्थात् मध्य मिष्याहृदियोंके प्रमाणमें साक्षात् आदि तेरह
गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिच्छा देने पर समस्त मध्य जीवोंका प्रमाण होता है । मध्य
जीवोंसे सामान्य मिष्याहृदि जीव विशेष अधिक हैं । कितने विशेषरूप अधिक हैं ? मध्य
पश्चिमसे साक्षात् आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके कम कर देने पर जो पश्चि
मपश्चि रहने उतने विशेषसे अधिक हैं । अर्थात् मध्यपश्चिमसे साक्षात् आदि तेरह गुण
स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण कम करके मध्यपश्चिमसे मिच्छा देने पर सामान्य मिष्याहृदि जीवोंका
प्रमाण होता है । सामान्य मिष्याहृदियोंसे साक्षात् जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ?
साक्षात् आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक
हैं । संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं ? कितना अधिक हैं ? सिद्ध जीवोंका जितना
प्रमाण है उतने अधिक हैं । संपूर्ण जीवपश्चिमसे पुत्रलक्ष्य अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार
क्या है ? यहाँ पर संपूर्ण जीवपश्चिमसे अनन्तगुणा गुणकार है । पुत्रलक्ष्यसे अनागतकाल
अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार क्या है ? यहाँ पर संपूर्ण पुत्रलक्ष्यसे अनन्तगुणा गुणकार
है । अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक हैं । कितना अधिक हैं ? वर्तमान बीर अतीत
कालमात्र विशेषसे अधिक हैं । संपूर्ण कालसे मोक्षकाश अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार
क्या है ? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहाँ पर गुणकार है । अस्तोककालसे संपूर्ण आकाश
विशेष अधिक हैं । कितना अधिक हैं ? मोक्षकाशके जितने प्रवेश हैं उतना विशेषरूप
अधिक हैं । इसप्रकार इस अक्षयबहुत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिष्याहृदि जीव
अनन्तगुणे हैं अतः अतीतकालसे संपूर्ण समय अपहत हो जाते हैं परन्तु मिष्याहृदि जीवपश्चिम
अपहत नहीं होती है यह बात सिद्ध हो जाती है ।

पत्थण ताव पत्थपाहिर या पुरिसा पत्थपाहिरस्थानि बीयाणि मिणदि । कध लाएण सायस्या पुरिमो लोययं मिच्छाद्विज्जिरासिं मिणदि सि ? जणे लोमेण पण्णाए मिणिज्जते मिच्छाद्विज्जीवा तणे ण एस दासा । कध पण्णाए मिणिज्जत मिच्छाद्विज्जीवा ? मुषदे-एकस्मिं लागागासपदमे एकस्मिं मिच्छाद्विज्जीव गिस्सेविळ्ळण एक्को लोमो इदि मणण सक्केय्यम्भो । एव पुणो पुणा मिणिज्जमाणे मिच्छाद्विज्जिरासी अमंतलोगमेचो होदि । एत्थुवसहारगाहा—

लोगागासपदसे एक्के निस्सिखेवि तह दिट्ठ ।

एव गणिज्जमाणे हवति लोगा अनता नु ॥ २३ ॥

को लोगा नाम ? सेदिपणा । का सेदी ? सचरन्नुमेत्तायामो । का रज्ज

राधिर प्रमाण लोकेके दिये अनन्त लोक होते हैं अथवा अनन्तलोकप्रमाण मिथ्याद्वि जीवराशि है ॥ २२ ॥

श्रद्धा—प्रत्यक्षे बहिर्भूत पुरुष प्रत्यक्षे बहिर्भूत बीजोंको प्रत्यक्षे द्वारा मापता है वह तो पुरुष है परन्तु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्याद्वि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है ?

समाधान—असंख्ये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्याद्वि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, संख्ये उपर्युक्त तोय नहीं आता है ।

श्रद्धा—बुद्धिसे मिथ्याद्वि जीव कैसे मापे जाते हैं ?

समाधान—लोककादाके एक एक प्रवेष्ट पर एक एक मिथ्याद्वि जीवको निसिष्ट करके एक लोक हो गया इसप्रकार अनन्त सञ्चर करना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्याद्वि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है । इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्याद्वि जीवराशि मापी जाती है । इस विषयको यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

लोककादाके एक एक प्रवेष्ट पर एक एक मिथ्याद्वि जीवको निसिष्ट करने पर सैता जिनमूत्रेवमे वेद्या है उसीप्रकार पूर्वाक्ष लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

श्रद्धा—लोक किसे कहते हैं ?

समाधान—जगत्प्रीति के घनको लोक कहते हैं ।

श्रद्धा—जगत्प्रीति किसे कहते हैं ?

समाधान—सात न-सुप्रमाण आकाश प्रवेशोंकी संवर्धित जगत्प्रीति कहते हैं ।

१ अनन्तविषयवाला लोकावामी । सि ५ प ४ ४ पर सेदीट्ठ हविष लोमो । अट्ठ ५ पृ १५१

२ सेदी सि ५३३३३३ । होदि अपने अविषयवाच्यविषयवाच्य हरी ॥ सि ५ ७ अनन्त-ज्वाला जीव लोमोलीलो सेदी । अट्ठ ५ पृ १५

चि सिद्ध । किमिह काष्ठप्रमाणं युज्यते ? मिच्छाद्द्विरासिस्त मोक्षस्य गच्छमावर्त्तनीये पश्य
सते वि वए व बोधेदो होदि चि जाणावज्जह ।

स्वेतेण अणेताणता लोगा ॥ ४ ॥

छन्दप्रमाणमुत्सधिय अप्यवष्मणित्त मावपमाण किमिदि न परस्विज्जदि ? त्व
परस्वजादा मावपरस्वस्य महद्वरमिदि न परस्विज्जदे । त आहा, मावपमाणं वाम नाम । त वि
मंचविद् । तत्प वि एककमणयविषय्य । तत्प वि अणेगाओ विप्पट्टिबसीआ चि । स्वेतेन
कच मिच्छाद्द्विरासी मिषिज्जदे ? युज्यते— अथा परस्वेन जव गोधूमादिरासी मिषि—
तथा लाएय मिच्छाद्द्विरासी मिषिज्जदि । एव मिषिज्जमाणे मिच्छाद्द्विरासी जव
ओममेपो होदि चि । एत्थुवउज्जसी गाहा—

पणेण कोदयेण व जह कइ मिणेज्ज सुप्पवीआइ ।

एव मिषिज्जमाणे इवति कंथा अणता ह ॥ १२ ॥

शुद्धा— यहाँ पर काष्ठकी अपेक्षा प्रमाण किसझिये कहा गया है ?

समाधान— मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा ससारी जीवराशिका व्यय होने पर
भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा बिच्छेद नहीं होता है । इस बातका ज्ञान करानेके लिये
यहाँ पर काष्ठकी अपेक्षा प्रमाण कहा है ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण
है ॥ ४ ॥

शुद्धा— यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका वर्तुषण करके अत्यवर्त्तनीय मावप्रमाणका प्रकल्प
क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान— क्षेत्रप्रमाणके प्रकल्प करनेकी अपेक्षा मावप्रमाणका प्रकल्प अतिबिस्तृत
है इसलिये मावप्रमाणका प्रकल्प पहले नहीं किया गया है । मावप्रमाणका प्रकल्प
अतिबिस्तृत है व्यये इसीका स्वार्थप्रणय करते हैं । काष्ठको मावप्रमाण कहते हैं । वह भी पाँच
प्रकारका है । उन पाँच मेंमें भी प्रत्येक अनेक प्रकार है । वस्तुमें भी अनेक विधाएँ हैं । इससे
सिद्ध होता है कि मावप्रमाणका प्रकल्प क्षेत्रप्रमाणके प्रकल्पकी अपेक्षा अतिबिस्तृत है ।

शुद्धा— क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी गयान् जानी जाती है ?

समाधान— जिसप्रकार मरुपसे जी, गेहूँ आदिची राशिका माप किया जाता है
उसीप्रकार क्षेत्र प्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी गयान् जानी जाती है । इसप्रकार
क्षेत्रक द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर यह अमन्ता लोकप्रमाण है । यहाँ पर इस
विषयकी उक्तयोगी गाथा भी जाती है—

जिस्तप्रकार चोर्द प्रपसे कोशोक समान संपूर्ण जीवोंका माप करता है उसीप्रकार
मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी छोकरसे अर्थान् छोकरके प्रदेशोंसे गुणना करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-

तिण् वादवलयाण भाहिरभागे । त कथं आणिज्जवि ? ' लोमो वादपदिद्धिदो ' सि वियाह पण्णीवीवयणादो । सयमूरमणसमुद्वाहिरवेदियाए परदो केसियमद्दाम गंमू म तिरियिलोग समणी होदि सि मणिदे अससेज्जदीवसमुद्दरुद्धक्षोपणेइतो ससेज्जगुणाणि मत्तूण होदि । एदं कुदो णरुदे ? जोइसियाण वेछप्पणंगुलसदवग्गमसमागहारपरुवयसुत्तादो ,

कर्मसे (पट्टे मत्तके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण समुद्रमें तीसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण द्वीपमें इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है । किन्तु अथवा समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे । उनमेंसे पहला डेढ़साव योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है । इनमेंसे दूसरा अर्धच्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर मिलने द्वीप और समुद्र है उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन छलण समुद्रके और इनने ही योजन जम्बूद्वीपके सब शिष्ट रहने हैं । इनको मिखा देने पर एक सप्त योजन होता है । इस एक सप्त योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है जिसके १९ अर्धच्छेद कर्मके बाद एक सूर्यगुल होय रहता है । पर्युके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूर्यगुलके अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार पट्टे मत्तके अनुसार मिलने द्वीप और समुद्र हैं इनकी संख्यामें १+१७+१९=३७ अर्धच्छेद अधिक पर्युके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिखा देने पर एक के कुछ अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मत्तके अनुसार इस संख्यामें सख्यात और मिखा देने पर एक के संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं क्योंकि इस मत्तके अनुसार संख्यात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयमूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

प्रश्ना—तिर्यग्भोकका अन्त कहाँ पर होता है ?

समाधान—तीनों वातपल्लवोंके बाह्य भागमें तिर्यग्भोकका अन्त होता है ।

प्रश्ना—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—छोक वातपल्लवोंसे प्रतिष्ठित है इस व्याप्याप्रवृत्तिके अन्तसे जाना जाता है कि तीनों वातपल्लवोंके बाह्य भागमें छोकका अन्त होता है ।

स्वयमूरमण समुद्रकी बाह्य वेष्टिजसे उस और कितना स्थान जाकर तिर्यग्भोकही समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर व्याप्या उत्तर देते हैं कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याप्तने मिलने योजन बके हुए हैं उनसे संख्यात गुणा जाकर तिर्यग्भोककी समाप्ति होती है ।

प्रश्ना—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके दोसा छप्पन अंगुलोंके वर्गमान मासहारके प्रकपक

१ मयिरुग्गि ठेडिग्गे वेसवज्जयमवुल्लवणी । अ क्ख तो एही जोडिडिबसएवै वजाव । ति ५ प २

२ १ मिणित्तवजोवज्जान वेसवज्जयमवुल्लव ५ । कडिडिबसएवै वेसवजोवज्जिवाव ५ परिमव ॥ तो बी १४

वेसवज्जयमवुल्लवज्जिवावो पपरत्त । अत्त ५, १५२ पृ १९२

विश्व नादवल्याय बाहिरमागे । तं कथं आनिज्जदि ? ' लोमो नादपदिद्धिदो ' चि नियाह पण्णचीवयणादो । सयधूरमणसमुद्वाहिरवेदियाए परदो केसियमद्वाण गत्तण तिरियलोग-समची होदि चि मभिदे असंखेज्जदीयसमुद्गरुद्रुद्रोपणेहिंतो सखेज्जगुणाणि गत्तण होदि । एदं कुदो जठरेद ? सोदसियाण वेछप्पणगुलसद्वयगमचमागहारपटवयसुत्तादो ,

करनसे (पहले मतेके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण समुद्रमें तीसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण द्वीपमें इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है । किन्तु छवण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे । उनमेंसे पहला डेढ़छात्र योजन मीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन मीतर जाकर पड़ता है । इनमेंसे दूसरा अर्धच्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर जितने द्वीप और समुद्र हैं उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन छवण समुद्रक और इतने ही याजन जम्बूद्वीपके अथ शिष्ट रहते हैं । इनको मिखा देने पर एक सप्त योजन होता है । इस एक सप्त योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है जिसके १९ अर्धच्छेद करनके बाह एक सूर्यगुल होय रहता है । पक्षके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूर्यगुलक अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार पहले मतेके अनुसार जितने द्वीप और समुद्र हैं उनकी संख्यामें $1+17+19=37$ अर्धच्छेद अधिक पक्षके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिखा देने पर एक के कुछ अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मतेके अनुसार इस संख्यामें संख्यात और मिखा देने पर एक के संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं क्योंकि इस मतेके अनुसार संप्रपात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयमूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

प्रश्ना—तिर्यम्बोकका अन्त कहा पर होता है ?

समाधान—तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें तिर्यम्बोकका अन्त होता है ।

प्रश्ना—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—लोक वातवलयोंसे प्रतिष्ठित है इस व्याख्यात्मकान्तिके बचनसे जाना जाता है कि तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें लोकका अन्त होता है ।

स्वयमूरमण समुद्रकी बाह्य रेखापरसे इस ओर कितना स्थान जाकर तिर्यम्बोककी समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर व्याख्यात उत्तर देते हैं कि अस्यात्त द्वीपों और समुद्रोंके व्यासमे जितने योजन रहे हुए हैं उनस संप्रपात गुणा जाकर तिर्यम्बोककी समाप्ति होगी है ।

प्रश्ना—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके बोली छप्पन अगुलोंके वर्गमात्र मागहारके प्ररूपक

१ मन्दिरेभि सेविमो वेतवत्तपमभुलकदीप । अ कय लो एठी मीदिदिपवृण सप्पान । नि प वन

२ १ तिरिपवजोवण वेदवत्तपमभुलक व । मन्दिरेपदा वेतवत्तपमिवाव व परिवाव ॥ पो जी १९

वेतवत्तपमभुलकवत्तपमिवावो वपरहव । अउ ए. १४२ पृ १९२

णाम ? तिरियलागसम मन्त्रियरित्पारो । रुध तिरियलागसम रुदक्षममागिन्द्रद ! ब्रह्मिपापि दीवसापररुपाणि संप्रदीप्यद्वामा च रुधादियात्रा केमि च आश्रियापमुनएमेण सेधेम्बरुपादियात्रा निरालिय विग करिय अण्णाणग्मत्थराणिणा ठिण्णाविसिद्ध गुणिये रन्नु भियज्जदि । एमा एवि सद्धीए सधममागो । एम्मि तिरियलागसम पन्जरमाम् ?

प्रश्न—रन्नु किसे कहते हैं ?

समाधान—निष्कलंक मध्यम बिलारको रन्नु कहते हैं ।

प्रश्न—तिरियलागकी बीमारी किसे बिजामी जानी है ?

समाधान—जितना बीमों और सागरीय प्रमाण है उनमें तथा एक अधिक सम्प्रीयके लक्ष्यों पर विरहित करने तथा उस विरहित राशि के प्रत्येक एकत्र को रूप करने पर स्वर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे अक्षय्य करने पर पदार्थ अक्षय्य राशि को गुणित कर देने पर रन्नुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा जितना ही व्यापारोंके उपदेशसे जितना बीमों और सागरीय प्रमाण है उसको और संयत अधिक सम्प्रीयके लक्ष्यों पर विरहित करने और उस विरहित राशि के प्रत्येक एकत्र को रूप करने पर स्वर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे रन्नु करनेसे पदार्थ अक्षय्य राशि को गुणा कर देने पर रन्नुका प्रमाण उत्पन्न होता है । यह अक्षय्य बीमों का उत्पन्न माग जाता है ।

विशेषार्थ—रन्नुके विषयमें जो मत पाये जाते हैं । जितने ही व्यापारोंका ऐसा मत है कि स्वयम्भूतम सन्निधौ बाध वेदिका पर आकर रन्नु समाप्त होती है । तथा जितने ही व्यापारोंका ऐसा मत है कि असंयत बीमों और सम्प्रीयकी बीमारीसे रन्नु के रूप से उत्पन्न गुण बाधन आकर रन्नुकी समाप्ति होती है । स्वयं और संयत स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्त्व दिया है । उनका कहना है कि 'योतिर्विद्योके प्रमाणको लक्ष्यके द्विधे २५१ रन्नुके रन्नी प्रमाण जो मागहार बलकाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयम्भूतम सन्निधौ बाधन गुण बाधन आकर ही सम्प्रीयकी समाप्ति होती है । इस दोहों मतोंके अनुसार रन्नुका प्रमाण निश्चयसे द्विधे रन्नुके जितने अक्षय्य हैं वतने स्थान पर २ रन्नु कर परस्पर गुणा करके जो अक्षय्य अथवा अक्षय्य करनेसे अक्षय्य जो माग अक्षय्य रहे उससे गुणा कर देना चाहिये । इस प्रकार करनेसे रन्नुका प्रमाण आ जाता है । जितना बीम और सम्प्रीय हैं उनमें एक अधिक या संयत अधिक सम्प्रीयके अक्षय्यके माग देने पर रन्नुके अक्षय्य हो जाते हैं । इनके निश्चयसे ही प्रमाण इस प्रकार है—

मध्यसे रन्नुके जो माग करना चाहिये यह मध्यम अक्षय्य है । अनन्तर व्यापार जाया

१ अक्षय्य सन्निधौ रन्नु का माग । वि. प. प. १ अक्षय्य सन्निधौ (रन्नु) वि. ता. ७. अक्षय्य सन्निधौ अक्षय्य सन्निधौ तथा । अक्षय्य सन्निधौ अक्षय्य सन्निधौ रन्नु अक्षय्य १४ के १ १

अहिण होद्व्य । होंता वि असत्वेज्जमागम्भहिओ सखेज्जमागम्भहिआ वा ण होदि,
 उदण्णगहकारिसुत्ताणुबलमादो । तदो दीवसमुदरुत्तेत्तायामादो सखेज्जगुणेण बाहिर
 खेत्तेण होद्व्यमण्णहा पुब्बुत्तमुत्तेहि सह विरोहप्पसगादो । ' जो मन्थो ओयणसहस्सिओ
 सयभूरमणसमुदस्स बाहिरिल्लए तढे वेयणसमुग्धाएण समुहदो काउलेस्सिमाए लगो ' चि
 एदेण वेयणासुत्तण सह विरोहो किण्ण होदि चि मणिदे ण, सयभूरमणसमुदस्स बाहिर
 वेदिपादो परमागद्धिदपुदयीए बाहिरिल्लतटसणेण गहणादो । तो वि काउलेस्सिमाए
 महामन्थो ण लगदि चि णासकणिज्ज, पुदविद्धिदपदेसम्हि चव हेट्ठा वादवत्तयाणम

एतुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए व्याठ दुन्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी पक्षि हो
 वह अधिक ही होता चाहिये । अधिक होती हुई भी यह पक्षि असत्प्रातर्धामाग अधिक अथवा
 संत्प्रातर्धामाग अधिक तो हो नहीं सकती है क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई
 सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने श्लोक-विस्तारकी छीपाँ भीर समुद्रोंने एक रक्खा
 है उससे संत्प्रातशुणा बाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका श्लोक होना चाहिये अन्यथा
 पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

' जो एक हजार योजनाका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्रातल पीड़ित हुआ स्वयभूरमण
 समुद्रके बाह्य तट पर कापोतछेद्यासे संसर्ग नहीं हो सकता है । इस वेदनालंके
 सूत्रके साथ पूर्वोक्त व्याख्यान विरोधकी क्वाँ नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पूछने पर
 आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं जाता है
 क्योंकि, यहाँ पर कहा तट इस पहले स्वयभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें
 स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है ।

शुक्र—यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतछेद्यासे संसर्ग नहीं हो सकता है !

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये क्योंकि पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अथ
 कम वातयस्सका अवन्यास रहता ही है ।

विशेषार्थ—यहाँ ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ बाहिरद्विपमाणपरूपणि विस्तिर विम करिअ जणोणवप्पार्थं कालं तव तिन्नि अरणि अरणिअ
 ओवत्तस्येण हनिदे दीवत्तसुदरुत्तेत्तायामादो । न न एविओ वेव मिप्पिओविस्संओ जक्केत्तु
 तवयमाग्गि वत्तण्णानुवत्तमादो । न न अग्गहाओ एवविस्संओ तवो होंदि एत्तज्जप्पत्तएवण वत्तण्णोवत्तवत्त
 वत्तएवत्तवत्तवत्त वत्तमुरत्तमादो । न न एविओवत्त पत्तिओ वत्तण्णओ तिक्कि एत्तएवत्तमादो । एत्ता तवत्तवत्त
 वत्तवत्तवत्तमादो बाहि वेत्तिएण वि खेत्तेण होद्व्य । अक्क ८८१ ति व व २२५

२ ओ वत्तओ ओवत्तवत्तवत्तओ वत्तमुरत्तवत्तवत्त बाहिरेवत्त एव अक्क ८८२ वेवत्तवत्तवत्तवत्त
 वत्तवत्तओ ८८३ काउलेस्सिमाए क्वा काउलेस्सिमा पाव एविओ वादवत्तओ ९ १५ वत्तवत्त १३ ८८१ ८८२

‘दुग्धदुग्धो दुग्धो गिरवरो तिरियसोगे’ चि तिलोयपण्णसिमुत्तादो य ण्णद । ण च पदं वक्खणं अचियाणि दीवमागरम्भाणि अयूदीधेदणाणि च स्वाहियाणि चि परियम्म सुत्तेण सह विरुद्धं, स्वेहि अहियाणि स्वाहियाणि चि गहणादो । भग्नाहरिय वक्खणोण सह विरुद्धं चि ण, एदस्म वक्खणस्म च महत्तं तण वक्खणामागेष विरुद्धाण पदस्स समद्वयानां । त वक्खणामागमिदि कुदो ण्णदे ? ओइसियमाग हारमुत्तानो पदद्वयविमपमापपरुवयतिलोयपण्णसिमुत्तादो च । ण च मुत्तविरुद्ध वक्खणं होह, अहप्यसंगाह । किं च ण त वक्खणं घट्ट, तम्हि वक्खणो अवर्तविज्जमानो सेदीए सत्तममागम्हि अट्टमुत्तदसपादो । ण च सेदीए सत्तममागम्हि अट्टमुत्तमो अत्ति, तदत्तिवचिहायपमुत्ताणुलमादो । तदो तत्त अट्टमुत्तगणिगामगु केत्तिपण वि रासिया

सूत्रसे और तिर्यग्भोक्तृसे होके बगले डेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है इस त्रिलोक्यव्यक्तिके सूत्रसे ज्ञाता जाता है कि असत्प्रातः क्षीणं अर्थात् समुद्रोंके व्याप्तसे रुके हुए क्षत्रसे सत्प्रातःगुणा आकर तिर्यग्भोक्तृकी प्रभाति होती है । और यह व्याप्त्याप्त विरतने क्षीणं और सागरोंकी संख्या है और अम्यक्षीणके रूपाधिक विरतने क्षेत्र है तत्तत् सत्प्रातः अघच्छेद है परिक्रम सूत्रके इस व्याख्यानेके साथ भी विरोधका प्राप्त नहीं होता है क्योंकि वहाँ पर रूपने अधिक वर्णित एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अद्यान् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है ।

टीका — यह व्याप्त्याप्त अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है ।

समाधान नहीं क्योंकि यह व्याख्यान असिद्धिये संगत है इसलिये वृत्तरे व्याख्यानामात्रसे इसके विरुद्ध पढ़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है ।

टीका — अन्य आचार्योंका व्याप्त्याप्त व्याख्यानामात्र है यह कैसे ज्ञाता जाता है ?

समाधान — ज्योतिषियोंके भाग्यद्वारके प्ररूपक सूत्रसे और बन्धू तथा सूर्यके बिम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोक्यव्यक्तिके सूत्रसे ज्ञाता जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके बिम्ब ओ अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याप्त्यामात्रास है । और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान दीक नहीं कहा जा सकता है अन्यथा अतिप्रसंग बोध जा आपमा । तथा वह अन्य आचार्योंका व्याख्यान धर्मित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, इस व्याख्यानके अन्तर्ग्रहण करने पर तत्राच्छेदीके सत्तम मागक ओ प्रमाण बतझावा है इसके अन्तमें आठ शून्य विकार होते हैं । परन्तु तत्राच्छेदीके सत्तम मागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं क्योंकि अन्तमें आठ शून्योंके व्यक्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये

१ अष्टगुणसिद्धिप्राप्तय व हानेष्ट न च पुष्पानि । कपीसततुपवञ्छा शिषका होति वीरका ॥ स्वेति हिरण्येयस्वरूपेति मयिगुप । शिरिणीय कट वल वीर्य ओरिद्वय ॥ तेषिवेताणि तेषी इति ॥ ११ १२ १४ ॥ ति. व. प. २ ।

अहिण्य हाद्व्य । होता वि असत्तेज्जमागन्महिओ सत्तेज्जमागन्महिआ वा न होदि,
सदणुग्गाहकारिसुत्ताणुवत्तमादो । तदो दीवणमुदरुद्वेत्तायामादो सत्तेज्जगुणेण बाहिर
उत्तेण होद्व्यमण्णहा पुब्बुत्तमुत्तेहि सह विरोहप्यसगाने । 'वा मन्थो ज्योत्तसहस्सिओ
सयंभूरमणसमुदस्स बाहिरिस्सल्लण तद्धे वेयणसमुत्ताएण समुदो काठलेस्सियाए लग्गो' ति
एदेण वेयणासुत्तण सह विरोहो किण्ण होदि चि मणिदे ण, सयंभूरमणसमुदस्स बाहिर
वेदिआदो परमागद्धिदपुट्ठवीए बाहिरिस्सल्लतत्तसणेण गहणादो । तो वि काठलेस्सियाए
महामन्थो ण लग्गदि चि णासकणिज्ज, पुट्ठविट्ठिदपदेसम्हि चव हट्ठा वादनलयाणम

एतुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए बात श्रुत्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी पशि हो
वह अधिक ही होना चाहिये । अधिक होती हुई भी वह पशि असत्प्रातर्वामाण अधिक अथवा
सत्प्रातर्वामाण अधिक तो हो नहीं सकती है क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई
सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने शेष-विस्तरको शीघ्र भीर समुद्रोंने रोक रक्खा
है उससे सत्प्रातर्गुणा बाहिरि अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका शेष होना चाहिये, अन्यथा
पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

'जो एक हजार योजनका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्रातल पीकृत हुआ स्वयंभूरमण
समुद्रके बाह्य तट पर आपोतछेदना अर्थात् तनुपातपक्षपक्षे खगता है इस वेदनासमुद्रके
सूतके साथ पूर्वोक्त व्याख्याण विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता है देखा कितीके पूछने पर
म्यकार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं आता है
क्योंकि, यहाँ पर बाह्य तट इस पक्षने स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परमाण्वे
स्तिन दूषिधीका ग्रहण किया गया है ।

शङ्का—यदि देखा है तो महामत्स्य आपोतछेदनासे संसक्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—देखी आशङ्क नहीं करनी चाहिये क्योंकि दूषिधीस्तिन श्रदेशोंमें अथ
स्तिन पातपक्षपक्ष अथस्तिन रहता ही है ।

विशेषार्थ—यहाँ देखा अमिमाय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ एवादिपदीवताणस्सामि विरुद्धि विग करिअ अण्णोण्णमयारं कान्ण तच्च मिमि क्वापि अविप
मोमंभकत्तेण हविदे दीवणद्वारद्विगिअकोमत्तायामुत्ताया । न च पृथिवी वेद मिदिपकोत्तपिअत्तो अपठेटीए
उत्तममन्मि पत्तुत्ताह्वकमादी । न च एवद्वहो एवद्विअत्तो तथा होदि एवद्वमत्तरमुदस्स चवप्पीलजावपत्त
एवद्वकत्तेवत्त वत्तामुत्तमादी । न च ऐतिवत्ते पत्तिवत्तं वत्तमन्मो मिदि तत्तावत्तमादी । तथा तद्वद्वीन
गवाविअत्तादी वद्वि कैप्पिए वि लेत्तेण होवत्त । वत्तल ८८१ ति प. व. २२५.

२ जो मन्थो ज्योत्तसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्रके बाहिरिस्सल्ल तद्धे वेयणसमुत्ताएण समुद्रो काठलेस्सियाए लग्गो
समुद्रो ८८१ काठलेस्सियाए अथा काठलेस्सिया वाव तद्विनी वत्तवत्तको १२५ प. वत्तल ५२ ८८१-८८२

वहाणादो । एते अरथो अइहि पुन्नाइरियसपदायविरुद्धो तो वि संसृतिबलेण अम्हेहि पन्निदो । तद्दो इहमित्थ वणि वेहासगहो कायग्घो, अइदियस्यविसण छद्दुवेत्थविपप्पिद शुचीनं शिष्ययहेउत्थाणुवमचीदा । तम्हा उवएस छद्दण विसेसणिणायो एत्थ कायग्घो पि । ऐथपमाणपरूवणं किमहू कीरदे ? असंखेज्जपदेसे लोगागासे अर्पतलोगमेचो वि जीवरासी सम्माइ पि आचारणहू । अहूमु माणंसु लोगवमाणेण मिणिज्जमाणे एत्थपलोगा होति पि जाणवणहू वा । तो वि से केचिया होति चि मणिदे एगलोगेण मिच्छाइहि रासिम्हि मागे हिदे छद्दरूवमेवा लोगा होति ।

तिण्ह पि अधिगमो भावपमाण ॥ ५ ॥

वातवसयके मध्यमागमे जो पृथिवी है वहाँ वातवसयकी समावना है । और इसछिये महात्मस्य वेदनासमुदायके समय इससे स्पष्ट कर सकता है । इसछिये स्वयमूरमयकी बाह्य बेरिफाके तम और असंख्यात जीवों और समुद्रोंके व्याससे सत्पातगुणी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी वेदनासमुदायमे पीड़ित हुआ महात्मस्य वातवसयसे संसृक्त होता है वेदनास्यके इस वचनके साथ उस वचनका जोर विशेष नहीं मिला है ।

एतपि यह वच पुनःआर्षोक्त संस्कारके बिरुद्ध है तो भी भागमके व्यापारपर मुक्तिके बख्से हमने (बीरभेन आचार्यने) हम मध्यका प्रतिपादन किया है । इसछिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है इस विकल्पका संभव यहाँ पर छोड़ना नहीं चाहिये क्योंकि अर्थाभिप्रेय पक्षोंके विषयमें उत्तरण जीवोंके द्वारा कथित मुक्तियोंके विकल्प रहित निर्वयके छिये हेतुना नहीं पार जाना है । इसछिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

श्रुक्—यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किसछिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेही लोकप्रमाणमे अनन्तलोकप्रमाण जीवपाति समा जाती है हम वातके ज्ञान करनेके छिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । अथवा व्युत्तरके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणका द्वारा जीवोंकी यचना करने पर इतना शोक हो जाते हैं इस वातके ज्ञान करनेके छिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । तो भी यह शोक कितने दान है देना पड़ने पर आचार उत्तर देने हैं कि एक लोकका अर्थान् एक लोकके जितने प्रवेश है उनका मिथ्याएति जीवपातिमें भग होने पर जितनी संख्या सत्य आवे तत्प्रमाण काक होते हैं ।

उपपुस्त सीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ आरथो पुन्नाइरियसपदायविरुद्धो वाहिरे काय जीवनामीन तामोरे पुपिरो ।
 २ व निजवेत्थविपप्पिद वेदानुपपदेव समुत्थसी जार जीवनामीन वाहिरेवा (३) कया चि कस इतिरे ।
 वाकः १२ ४४९

अधिगमो णाणपमाणमिदि एगद्धा । सो वि अधिगमो पंचविधो मदि सुद ओहि मणपज्जव केवलणाभेदेण । एकेक सिविह दम्भ-खेच-कालभेएण । दम्भरिषिसयणाण दम्भमावपमाण । खेचनिसिद्धदम्भस्स णाण खेचभावपमाण । तद्वा कालस्स वि वचच । सुच भावपमाण ण पुच ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदे । ण च भावपमाणमंतरेण विण्ह पमाण्णा सिद्धी भवदि, सहियपमाण्णाभावे गठनपमाणस्सासमवादी, भावपमाण बहु वण्णनीयमिदि वा हेतुवादाहेतुवादाण अभधारणसिस्साणममावादी वा । अधवा एयं भावपमाण वचच । तं अहा— मिच्छाद्विरासिणा सम्भपज्जय भागे हिदे जं मागल्लं त मागहारमिदि कहु सम्भपज्जयस्सुवरि खडिद माग्निद-विरलिद अवहिदाणि वचचानि । त अहा— सम्भपज्जय मागहारमचे खडे कदे उत्त एगखडपमाणं मिच्छाद्विरासी हादि । खंडिद गद् । तेणेव मागहारेण सम्भपज्जय भागे हिदे मागल्लपमाणं मिच्छा द्विरासी होदि । माग्निद गद् । तं नेव मागहारं विरल्लं सम्भपज्जयं समखंडं कद्दण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं । वह ज्ञानप्रमाण भी मतिज्ञान भुलज्ञान अपधिज्ञान मगपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पाँच प्रकारका है । तथा उन पाँचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य ज्ञान और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है । उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं । क्षेत्रविशिष्ट द्रव्यके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं । इसीप्रकार कालभावप्रमाणके विषयमें भी जानना चाहिये ।

संज्ञा — सूत्रमें भावप्रमाणका उक्तन कथन नहीं किया है ।

समाधान—नहीं क्योंकि उक्तकी बिना कोई ही सिद्धि हो जाती है । दूसरे भाव प्रमाणक बिना होय तीन प्रमाणोंकी सिद्धि भी नहीं हो सकती है क्योंकि योग्य मयान् मुख्य प्रमाणके समाधमें गौणप्रमाणका होना अत्यवश्यक है । अथवा भावप्रमाण बहुवचनीय है अथवा हेतुवाद और अहेतुवाकके अवधारण करनेवाले शिष्योंका अभाव होनेसे सूत्रमें स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है ।

अथवा इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये । वह इस प्रकार है मिथ्यादृष्टि जीवराशिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग छद्म भावे उसे मागहाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर स्थिति याकित विरहित और अपहृन इनका कथन करना चाहिये । भागे उन्हीं भागोंका स्वीकृरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करने पर जितने खंड भावे उनमेंसे एक पक्षका जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होगी है । इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ ।

पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो मज्जनरुद्ध छद्म भावे पक्षप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार भाविका वर्णन समाप्त हुआ ।

पूर्वोक्त भागहारको ही विरहित करके और उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

ब्रह्माणादो । एते अतो ब्रह्मि पुण्याहरियसपदायविरुद्धो तो धि र्ब्रह्मविषयेण ब्रह्महिं
परुषिदो । तदो इदमित्थ वेति मेहासगहो कायन्त्रो, अहंदिद्यत्यविसए छद्बुवेत्यवियप्तिद
शुचीं विष्ण्ययेहृत्तामुवर्णीत् । तम्हा उषएम् उवृण विसेसणिष्णयो एत्य कायन्त्रो
ति । सेत्तपमागपरूवण किमहं कीरदे ? असंखेज्जवदेसे लोमागासे अणत्तलोममेत्तां वि
वीवरासी सम्माइ ति आणावणइ । अकुसु माणेसु लोमपमाणेण मिभिज्जमाणे ण्ठियलोमा
होति ति आणावणइ वा । तां वि स केत्तिवा होति ति मग्गिदे ण्णलोगेण मिन्ठवण्ठि
राभिन्दि मागे हिदे उव्वरूवमेत्ता लोमा होति ।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाण ॥ ५ ॥

वातवलयके मध्यभागमें जो पृथिवी है वहाँ वातवलयकी समाधना है । और इसलिये महामत्स्य
देवनासमुदायके समय उससे स्पर्श कर सकता है । इसलिये स्वयम्भूतमणकी वाह्य बेदिनाके
उस ओर असंख्यात जीवों और समुद्रोंके व्याससे सत्वातगुणों पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर
भी देवनासमुदायसे पीड़ित हुआ महामत्स्य वातवलयसे संसक्त होता है । देवनास्यके इस
पक्षनके साथ उक्त कथनका कोई विशेष नहीं जाता है ।

अथपि यह अर्थ पृथाचार्योंके संज्ञावचके विरुद्ध है तो भी भागमके आधारपर युक्तिके
बलसे हमने (भीरसेन आचार्यने) इस अर्थका प्रतिपादन किया है । इसलिये यह अर्थ इसप्रकार
भी हो सकता है । इस विशिष्टता समग्र यहाँ पर छोड़ना नहीं चाहिये क्योंकि अतीन्द्रिय
पदार्थोंके विषयमें छद्मस्य जीवोंके द्वारा वसित युक्तियोंके विशिष्ट रहित निर्णयके लिये हेतुवा
नहीं पाई जाती है । इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

संज्ञा—यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किसलिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेशी क्षेत्रप्रमाणमें अनन्तक्षेत्रप्रमाण जोवर्णित समा अती
है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । अथवा मान
प्रकारके प्रमाणोंमेंसे क्षेत्रप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस
बातके ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । तो भी वे लोक कितने
होते हैं ऐसा पूछने पर व्याचार्य उत्तर देते हैं कि एक क्षेत्रप्रमाण अर्थात् एक लोकके जितने
प्रदेश हैं उनका मिथ्यावृत्ति जीवराशिमें मय देने पर जितनी संख्या उत्पन्न आवे तत्प्रमाण
लोक होते हैं ।

उपसृक्त तीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ मात्रो पुण्यैरिवदेतेन ब्रह्मणो तत्रमुदवपवाशितेइवए वाशिरे ममि कोक्कात्तये तत्राने पुणीको ।
तत्र मिन्वेकवातेण वैवततपुण्यत्वेन तमुपवासी आन वीमनत्तये वाशितेरेतो क नो ति वच इदि ।
अवड ११ ८८५

दिवा तस्य मनुष्याणि प्लोष्ठिय एगर्गदगदिह मिच्छाहृदिरासिपमाण होदि । विरतिद गद । त च मागहार सलागभूद ठवेदूष मिच्छाहृदिरासिपमाण सञ्चपञ्चए अवहिरिज्जिद, सलागादा एगरूबं अवणिज्जदि । पुणो मिच्छाहृदिरासिपमाण सञ्चपञ्चयामि अवहिरि ज्जदि, सलागादो एग रुबमवणिज्जदि । एव पुणो पुणा कीरमाणे सञ्चपञ्चओ व सला गाओ च शुगवं पिड्डिदाया । तस्य एगवारमवहारिदपमाण मिच्छाहृदिरासी हादि । अवहिरि मई । मिच्छाहृदिरासिस्स पमाणविसए सोदत्तार्ण मिच्छपुप्पायणई मिच्छाहृदि रासिस्स पमाणपरुवणं वग्गाहुणे रंदिह माविद-विरासिद अवहिरि-पमाण-कारण-पिड्डिच विपणहि वचस्सामा । सुत्तामार कथमद पुचदे ? सुत्तेण सच्चिदादो । तं ब्रह्म—

मिद्धतेरसगुणद्वानपमाण मिच्छाहृदिरासिमाविदसिद्धतेरसगुणद्वानपमाणवग्गं च

संपूर्ण पर्यायोंके समान लब्ध करके देवमयसं हे देने पर लभमें बहुत लब्धोंको छोड़कर और एक लब्धक ग्रहण करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाण होता है । इसप्रकार विरहितता वर्जन समाप्त हुआ ।

उसी मागहारको शब्दाकाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादृष्टि जीव राशिके प्रमाणको कम करना चाहिये एकवार कम किया इसलिये शब्दाकाराशिमेंसे एक प्रमा णना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको दोन संपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये । तृतीयवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शब्दाका राशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन करने पर संपूर्ण पर्याय और उसीप्रकार शब्दाकाराशि सुगमन् समाप्त हो जाती है । यहाँ पर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे त्रितया प्रमाण एकवार घटाय गया है तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहृतक कथन समाप्त हुआ ।

अब भागे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिके विषयमें भोगार्थोंको निश्चय उत्पन्न करानेक लिये पर्यस्परानमें गविहत मीजित, विरसित अपहृत प्रमाण कारण मिदकि और दिक्त्वके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

प्रश्न—एगवग्गममें आविडित आविडके छाप मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्रत्यक्ष सूच नहीं होवे पर इसका कारण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—शून्यने शून्यता होनेके कारण इसका कारण किया है जो इसप्रकार है—

मिद और गाम्माहृतगव्यदृष्टि आवि नेरह गुणव्ययानपनी जीवराशिओ तथा सिद्ध और तरह गुणव्ययानपनी जीवराशिके वगमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका भाग देने पर

दिश्य तस्य बहुसंख्यापि प्लहाद्वय एगसङ्गहिदं मिच्छाङ्कुरासिपमाणं होदि । विरस्ति गद । त च न मागहारं सलागभूद ठभेयूष मिच्छाङ्कुरासिपमाणं सम्प्रपञ्चए अवहिरिजदि, ससामादो एगरुषं अवणिञ्जदि । पुषा मिच्छाङ्कुरासिपमाणं सम्प्रपञ्चयस्मि अवहिरि पञ्जदि, ससमादो एग रुममवणिञ्जदि । एष पुषो पुषो कीरमाणे सम्प्रपञ्चओ व सता माओ च शुगव भिङ्गिराओ । तस्य एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाङ्कुरासी होदि । अवहिदं गद । मिच्छाङ्कुरासिस्स पमाणविसए सोदाराण भिच्छपुप्पापणं मिच्छाङ्कुरासिस्स पमाणपकूवणं वग्गइणे उंठिदं मासिदं-विरस्तिदं-अवहिदं-पमाण-कारण-भिरसि-वियप्पदि वचइस्सामो । सुचाभावे कवमेदं बुबदे । सुचेन एविदपादो । तं जहा—

सिद्धतेरसगुणद्वयपमाणं मिच्छाङ्कुरासिमासिदसिद्धतेरसगुणद्वयपमाणवर्गं च

संपूर्ण पर्याप्तोंके समान कण्ड करके देयकपसे दे देने पर कनमेंसे बहुत कण्डोंको छोड़कर भीर एक कण्डके प्रमाण करने पर मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार विरक्षितका पर्यन्त समान हुआ ।

वही भागहारको लक्षावधपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्याप्तोंमेंसे मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम करना चाहिये एकवार कम किया इसलिये शब्दाकाराशिकेमेंसे एक घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाणको दोप संपूर्ण पर्याप्तोंमेंसे घटा देना चाहिये । तृतीयवार मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शब्दाकाराशिकेमेंसे एक भीर कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुनः करने पर संपूर्ण पर्याप्तों भीर तृतीयकार शब्दाकाराशि शुभपण समाप्त हो जाती हैं । वहां पर संपूर्ण पर्याप्तोंमेंसे कितना प्रमाण एकवार बढ़ाया गया है उसप्रमाण मिथ्यादष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहतका कथन समाप्त हुआ ।

अब आगे मिथ्यादष्टि जीवोंकी राशिके नियममें धोताभ्योंको निश्चय उत्पन्न करानेके लिये वमरघानमें उल्लिखित मांजित विरक्षित अपहत प्रमाण कारण निश्चि भीर विरक्षयके द्वारा मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

पुरुष—वर्गवर्णनमें उल्लिखित आदिशब्दोंके द्वारा मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्रत्यक्ष सूत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—वृत्तसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है जो इसप्रकार है—

सिद्ध भीर आराधनमम्पदष्टि आदि तेरह गुणव्यानवर्ती जीवराशिके तथा निश्च भीर तेरह गुणव्यानवर्ती जीवराशिके वर्गमें मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाणका माग देने पर

होदि । निरतिद गद् । तं चेष धुवरासिं ससागभूद ठवेऊण मिच्छाद्विहारासिपमाण
सम्भजीवरासिउपरिमवगग्गिह अण्णीय धुवरासीदो एगस्समवणिज्झदि । पुणो वि मिच्छा
द्विहारासिपमाण सम्भजीवरासिउपरिमवगग्गिह अण्णीय धुवरासीदो एग स्समवणिज्झदि ।
एवं पुणा पुणो कीरमाणे सम्भजीवरासिउपरिमवगग्गो च धुवरासी च शुगन सिद्धिदा ।
तस्य एगवारमवणिद्वमाणं मिच्छाद्विहारासी होदि । जवहिद् गद् । तस्स पमाण
केविणं ? सम्भजीवरासिस्म अण्णता भागा अर्णतानि सम्भजीवरासिपढमवगग्गमूलानि वि ।
तं जहा—

सम्भजीवरासिपढमवगग्गमूल निरत्तऊण एकेकस्म रूवस्स सम्भजीवरासिं समत्तह

अन्ता एक पेड १३ प्रमाण मिथ्याददि जीवघाति दुर ।

पूर्वोक्त छपरघाति शलाकानूपसे स्थापित करके और मिथ्याददि जीवघाति के
प्रमाणको संतुल्य जीवघातिके उपरिम पर्यंके प्रमाणमेंसे निश्चायकर शलाकामूल धुवरासिमेंसे
एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्याददि राशिक प्रमाणको दोष संतुल्य जीवघातिके
उपरिम वगैरे प्रमाणमेंसे न्यून करके धुवरासिमें एक आर कम कर देना चाहिये । इसप्रकार
पुनः पुनः करने पर संतुल्य जीवघाति का उपरिम वग और धुवरासि युगपत् समाप्त हो जाती
है । इसमें एकवार निश्चयी दुर वा शकः जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्याददि जीवघाति है ।
इसप्रकार अगदलका घणन समाप्त हुआ ।

उद्धारण (अन्त)—

शलाकानूप धुवरासि ? १३ जीवघाति का उपरिम वग २१

-१	-१३
१८११	२४३
-१	-१३
१७११	२३

इस क्रमण उपरिम वगमेंसे मिथ्याददि राशिका प्रमाण और धुवरासिमेंसे एक एक
घटाने जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वगाराशि एक साथ समाप्त होगी । इसमें एकवार
घटाने जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्याददि है ।

प्रश्न—इस मिथ्याददि जीवघाति का प्रमाण कितना है ?

समाधान—संतुल्य जीवघातिके अन्ततः बहुधापेक्षमाण मिथ्याददि जीवघाति का प्रमाण
है जो प्रमाण संतुल्य जीवघातिसे अन्ततः प्रथम वगमूलोंसे बराबर होता है । उक्तका अन्तीकरण
इसप्रकार है—

संतुल्य जीवघातिके प्रथम वगमूलोंके निरन्तर करने और उक्त निरन्तर राशिक प्रमाण

फाल्गुन दिग्मे रूवं पठि सञ्चजीवरासिपठमवगमूलपमाण पानदि । पुष्यो सिद्धतेरसगुण
 द्वाणेदि मन्दिदसञ्चजीवरासिपठमवगमूल पुष्यविरलणाए हृष्टा विरलिय उषरिमविरलणाए
 एगपठमवगमूल भेत्तुण समसंख करिय दिग्मे रूवं पठि सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण
 पावेदि । तत्पुष्यरिमविरलणयस्त्वृष्यमेधसञ्चजीवरासिपठमवगमूलानि रूवृणहेष्टिमविर
 लणमेधसिद्धतेरसगुणद्वानपमाणाणि च भेत्तुण मिच्छाद्विरासी होदि । पमाण गद । केय
 कारणेण ? सञ्चजीवरासिणा सञ्चजीवरासिपठमवगमो भागे हिदे किमागच्छदि ? सञ्च

एकक ऊपर जीवराशिओ समान लक्षण करके देखकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अन्तर सिद्धराशि और सासादन
 भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
 सञ्च भावे डले पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
 संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान दण्ड करके अधस्तन
 विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर देखकपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
 सासादन भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर उपरिम
 विरलनमें प्रत्येक किये गये संपूर्ण जीवराशिका एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
 अधस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
 देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १३, प्रथम वर्गमूल=४ सिद्धतेरस=३

(१ विरलन वर्गमूल) $\begin{matrix} ४ & ४ & ४ & ४ \\ १ & १ & १ & १ \end{matrix}$ $\frac{४}{१} = ४$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
 भाग देने पर सञ्च

(२ विरलन) $\begin{matrix} ३ & १ \\ १ & १ \\ & ३ \end{matrix}$

(अतः मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी दोष तीन राशियाँ ४+४+४=१२
 और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
 मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण १२+१=१३ या जाता है ।)

किस कारणसे ?

तुका—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कीनती
 राशि आती है ।

समाधान—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 संपूर्ण जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण (जीवगणितसे)—जीवराशि=५, $\frac{५}{५} = १$

होदि । विरक्तिर्द गदं । तं चेव धुवरासिं सन्नागभूद ठवेऊण मिच्छाइहिरासिपमाण
सम्बजीवरासिउपरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एग रुवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा
इहिरासिपमाण सम्बजीवरासिस्तुवरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एग रुवमवणिज्जदि ।
एवं पुणो पुषा कीरमाणे सम्बजीवरासिउपरिमवग्गो च धुवरासी च सुगवं भिड्डिवा ।
तस्य एमवारमवणिहपमाण मिच्छाइहिरासी होदि । अबहिद गद । तस्स पमाण
कपियं ? सम्बजीवरासिस्तु अवता माया अणताणि सम्बजीवरासिपढमवग्गमूलाभि चि ।
तं जहा—

सम्बजीवरासिपढमवग्गमूल विरक्तऊण एकेकस्म रुवस्स सम्बजीवरासिं समलंढ

अतः एक कीद १३ प्रमाण मिथ्यावृत्ति जीवराशि हुई ।

पूर्वोक्त ध्रुवराशि को शब्दाक्षररूपसे स्थापित करके और मिथ्यावृत्ति जीवराशि के
प्रमाणको संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग के प्रमाणमें से निष्काशकर शब्दाक्षरभूत ध्रुवराशिमें से
एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्यावृत्ति राशिक प्रमाणको दोप संपूर्ण जीवराशि के
उपरिम वर्ग के प्रमाणमें से ग्यून करके ध्रुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये । इस प्रकार
पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और ध्रुवराशि ध्रुवपत्त समाप्त हो जाती
है । इसमें एकबार निष्काशी हुई राशिका जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्यावृत्ति जीवराशि है ।
इस प्रकार अपहतका वर्जन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (अष्टक)—

शब्दाक्षररूप ध्रुवराशि	१९.११	जीवराशिका उपरिम वर्ग	२५६
	-१		-१३
	१८.११		१४३
	-१		-१३
	१७.११		१३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमें से मिथ्यावृत्ति राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमें से एक एक
घटाते जाने पर शब्दाक्षराशिका और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इसमें एकबार
घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यावृत्ति है ।

प्रश्न — कस मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान — संपूर्ण जीवराशि के जगत् बहुभागप्रमाण मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण
है जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशि के अगस्त प्रथम वर्गमूलों के बराबर होता है । उसका स्पष्टीकरण
इस प्रकार है—

संपूर्ण जीवराशि के प्रथम वर्गमूलको विरक्षित करके और कस विरक्षित राशिक प्रत्येक

काठ्ण दिष्णे रुवं पठि सन्वजीवरासिपटमवग्गमूलपमाण पावेदि । पुणो सिद्धतेरसगुण
द्वानेहि मज्झिमसन्वजीवरासिपटमवग्गमूल पुब्बयिरलणाए हेत्वा विरलिय उवरिमविरलणाए
एगपटमवग्गमूल पेत्तूण समखंड करिय दिष्णे एव पठि सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण
पावेदि । तत्पुवरिमविरलणयस्सूषमेधसन्वजीवरासिपटमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविर
लणमेवसिद्धतेरसगुणद्वानपमाणाणि च पेत्तूण मिच्छाशब्दिरासी होदि । पमाण गद । केण
कारणेण ? सन्वजीवरासिणा सन्वजीवरासिउवरिमयग्गे भागे हिंदे किमागच्छति ? सन्व

एकके ऊपर जीवराशिके समान लण्ड करके वेयरूपसे वे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अन्तर सिद्धराशि और सासाधन
भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
लब्ध व्यये डले पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान लण्ड करके अथस्तन
विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर वेयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
सासाधन भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर उपरिम
विरलनमें प्रकृष्ट किये गये संपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
अथस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासाधन भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
देने पर सिद्धराशि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्जन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १२, प्रथम वर्गमूल = ४, सिद्धतेरस = ३

(१ विरलन वर्गमूल) $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \quad \frac{३}{२} = \frac{१२}{३}$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\frac{३}{१} \frac{३}{१}$
 $\frac{३}{१}$

(मतः मिष्टाद्वि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी दोष तीन राशियाँ ४+४+४=१२
और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
मिष्टाद्वि राशिका प्रमाण १२+१=१३ या जाता है ।)

किस कारणसे ?

दृष्टा—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी
राशि भाती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
संपूर्ण जीवराशि ही भाती है ।

उदाहरण (नीत्रगणितसे)—जीवराशि = ५, $\frac{५}{५} = ५$

जीवरासी चर आगच्छति । तुमागम्भद्वियसम्भजीवरासिणा सम्भजीवरासिउपरिमवगे मागे द्विदे क्रिमागच्छति । तिमागद्दीनसम्भजीवरासी आगच्छति । कण कारणेय ? सम्भजीवरासिभग्नगच्छ पुष्पावगयामण तिणि रज्जाणि करिय तत्पगच्छ रेत्य रज्ज करिय सधिदे सम्भजीवरासिदुमागतिस्थार वेति । मागायामगच्छ हति । एद अधिय विरलगाए द्विप्ने एदेकस्स सस्स तिमागद्दीनसम्भजीवरासी पावेदि । तिमागम्भद्विय सम्भजीवरासिणा सम्भजीवरासिउपरिमवग मागे द्विदे क्रिमागच्छति ? चउत्तमागद्दीन

(अकगणितसे)— $२५ - १६ = ९$

छंदा—वृत्त माग अधिक संपूर्ण जीवराशिवा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें माग देने पर बौनसी राशि जाती है ?

समाधान—तीसरा माग हीन संपूर्ण जीवराशि जाती है ।

उदाहरण (जीवगणितसे)— $\frac{१६}{१६ + \frac{१६}{२}} = \frac{२}{३} १६ = १६ - \frac{१६}{३}$

(अकगणितसे)—१६ का वृत्त माग १६ । अथ द्वितीय माग ८ अधिक १६ = २४ का २५ में माग देने पर १०३ जाता है जो जीवराशि १६ का तीसरा माग हीन है ।

छंदा—वृत्त माग अधिक संपूर्ण जीवराशिवा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें माग देने पर तीसरा माग हीन जीवराशि किस कारणसे जाती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गक क्षेत्रके पूर्व और जीवराशिबर्ग पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण करने बचके भी दो खंड करके संयुक्त वर्गात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिवा वृत्त मागक विस्तार जाना जाता है । यही मागायाम क्षेत्र है । इससे अधिक विरलगाए राशिके प्रत्येक एकके ऊपर देयकसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा मागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है ।

छंदा—तीसरा माग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें माग देने पर क्या जाता है ?

समाधान—चौथा माग हीन संपूर्ण जीवराशि जाती है । यहां पर भी चरकवा पाठके समान कथन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गक क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खंड करके और उनमेंसे एक खंडके तीन खंड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिवा तीसरा मागक विस्तार जाना जाता है । अन्तर्गत एक वर्गको

सम्बन्धीवरासी आगच्छति । एतस्य वि कारण पुन्य व वत्तम् । एव संखेज्जभागम्महिय सम्बन्धीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छति ? संखेज्जभागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । तस्ससंखेज्जभागम्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिचासंखेज्जभागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । असंखेज्जभागम्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भाग हिदे किमागच्छति ? असंखेज्जभागहीण सम्बन्धीवरासी आगच्छति । उरस्म अरंखेज्जासंखेज्जभागम्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिचाणसंखेज्जभागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति ।

अधिक विरहण राशिक्के मत्थेक एकके ऊपर दे देने पर बीया भाग हीन संपूर्ण बीवराशि भा जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क}{क + \frac{क}{३}} = \frac{३}{४} क = क - \frac{क}{४}$$

(अन्तगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग $५\frac{१}{३}$ है अतः तृतीय भाग $\frac{१}{३} + १६ = २१\frac{१}{३}$ का २ ६ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो बीवराशि १६ का बीया भाग हीन है ।)

प्रका—इसीप्रकार संख्यातर्का भाग अधिक संपूर्ण बीवराशिका संपूर्ण बीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संख्यातर्का भागहीन संपूर्ण बीवराशि जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क}{क + \frac{क}{न}} = \frac{न}{न + १} क = क - \frac{क}{न + १} \text{ (संख्यात = न)}$$

प्रका—उररुह संख्यातर्का भाग अधिक संपूर्ण बीवराशिका संपूर्ण बीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — अक्षय्य परीतासंख्यातर्का भाग हीन संपूर्ण बीवराशि जाती है ।

प्रका—असंख्यातर्का भाग अधिक संपूर्ण बीवराशिका संपूर्ण बीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंख्यातर्का भाग हीन संपूर्ण बीवराशि जाती है ।

प्रका—अक्षय्य असंख्यातासंख्यातर्का भाग अधिक संपूर्ण बीवराशिका संपूर्ण बीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बीनसी राशि जाती है ।

समाधान — अक्षय्य परीतासंख्यातर्का भाग हीन संपूर्ण बीवराशि जाती है ।

जीवरासी बंद आयच्छदि । दुमागम्भद्वियसम्भजीवरासिणा सम्भजीवरासिउवरिमवगे
 मागे हिदे किमागच्छदि ? तिमागहीणसम्भजीवरासी आगच्छदि । कथं कारण ?
 सम्भजीवरासिद्वयगच्छेत्त पुष्पावरायामण तिग्निं खंडाणि करिष्य सत्यगर्तं देह्य
 खंड करिष्य सभिदे सम्भजीवरासिदुमागवित्त्वार वेति । मागायामरात्त हादि । एवं अभिय
 विरल्ल्याप दिन्ने एवञ्चस्स रुजस्स तिमागहीणसम्भजीवरासी पावेदि । तिमागम्भद्विय
 सम्भजीवरासिणा सम्भजीवरासिउवरिमवगे मागे हिदे किमागच्छदि ? चउम्मागहीम-

(अकण्ठितसे)—२ ६ + १९ = २५

श्रुति—दूसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिना संपूर्ण जीवरासिउवरिमवगे
 मागे देने पर चौथी राशि आती है ।

समाधान—तीसरा माग हीन संपूर्ण जीवरासि आती है ।

उदाहरण (जीवगणितसे)— $\frac{क}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{१} क = क - \frac{क}{१}$

(अकण्ठितसे)—२५ का दूसरा माग ८ अथवा द्वितीय माग ८ अधिक २५ = २५ का
 २५ में माग देने पर १ ३ आता है जो जीवरासि २५ का तीसरा माग हीन है ।

श्रुति—दूसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिना संपूर्ण जीवरासिउवरिमवगे
 मागे देने पर तीसरा माग हीन जीवरासि किस कारणसे आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवरासिउवरिमवगे के पूर्ण और जीवरासिउवरिमवगे
 पक्षिभूत के विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण
 करके उसके भी दो खंड करके संयुक्त अर्थात् प्रसारित कर देने पर
 संपूर्ण जीवरासिना दूसरा मागस्थ विस्तार आता आता है । यही
 मागायाम स्तर है । इससे अधिक विरल्ल्याप राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे देने पर
 प्रत्येक एकके प्रति तीसरा मागहीन संपूर्ण जीवरासि प्राप्त होती है ।

श्रुति—तीसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिना संपूर्ण जीवरासिउवरिमवगे
 मागे देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा माग हीन संपूर्ण जीवरासि आती है । यहां पर भी कारणका
 पक्षिभूत के समान बंधन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवरासिउवरिमवगे के पूर्ण और
 प्रथम विस्तारसे चार खंड करके और उनमेंसे एक खंड के तीन खंड करके प्रसारित कर
 देने पर संपूर्ण जीवरासिना तीसरा मागस्थ विस्तार आता आता है । अतएव इन खंडोंको

सम्बन्धीवरासी आगच्छति । एतच्च वि कारण पुत्रं च वत्तन् । एव संखेज्जमागन्महिय सम्बन्धीवरासिणा तदुपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? संखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । उद्वस्ससंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिचासखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । असंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? असंखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । उद्वस्स-असंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिचासखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति ।

अधिक विरुद्ध राशिने प्रत्येक एकके ऊपर हे देने पर बीया भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} - \frac{क^2}{क + \frac{क}{५}} = \frac{५}{५} क = क - \frac{क}{५}$$

(अरुगणितसे) — (१५ का बीया भाग $५\frac{१}{५}$ है अतः तृतीय भाग $\frac{१}{५} + १५ = १५\frac{१}{५}$ का २५५ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १५ का बीया भाग हीन है ।)

शुद्धा—इसीप्रकार संप्रयातर्वा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संप्रयातर्वा भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} - \frac{क}{क + \frac{क}{न}} = \frac{न}{न + १} क = क - \frac{क}{न + १} (\text{संप्रयात} = न)$$

शुद्धा—उत्कृष्ट संप्रयातर्वा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — अथर्व्य परीतासंप्रयातर्वा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शुद्धा—असंप्रयातर्वा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंप्रयातर्वा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शुद्धा—अरुष्ट असंप्रयातर्वाभागाभागा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर बीनसी राशि आती है ?

समाधान—अथर्व्य परीतामन्तर्वा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

जीवरासी चर आगच्छति । दुभाग-महियसम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासितपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? त्रिभागहीनसम्बजीवरासी आगच्छति । केन कारणेन ? सम्बजीवरासिवगगच्छेत् पुण्यापरायामण तिणिं खंडाणि करिय तत्वेगखंड भेत्तुं खंड करिय सभिदे सम्बजीवरासिदुभागवित्थार वेत्ति । भागायामखण्ड हादि । एद अभिय वित्तपाए दिणो एवेरुस्स रुचस्स त्रिभागहीनसम्बजीवरासी पावेदि । त्रिभागमहिय सम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासितपरिमवगगे मागे हिदे किमागच्छति ? चत्तुर्भागहीन

(अत्रगणितसे)— $२०६ - १६ = १९$

श्रुत्वा—तृसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिचा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें मागे देने पर बीजसी राशि जाती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि जाती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे),— $\frac{क}{क + \frac{क}{२}} = \frac{१}{१} क = क - \frac{क}{२}$

(अत्रगणितसे)— १९ का तृसरा भाग < १९ अतः द्वितीय भाग $<$ अधिक $१९ = २४$ का २५९ में मागे देने पर १०३ ब्यता है जो जीवराशि १९ का तीसरा भाग हीन है ।

श्रुत्वा—तृसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिचा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें मागे देने पर तीसरा भाग हीन जीवराशि किस कारणसे जाती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और जीवराशिवर्ग पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक काण ग्रहण करके उसके भी दो खंड करके संधित मर्णात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिचा तृसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । यही भागायाम क्षेत्र है । इसको अधिक विस्तार राशिके प्रत्येक एकके ऊपर वैयकरूपसे देने पर प्रत्येक एकके मति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है ।

		अ
		ब
अ	ब	

श्रुत्वा—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिचा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें मागे देने पर उपा ब्यता है ?

समाधान—बीया भाग हीन संपूर्ण जीवराशि जाती है । यहां पर भी कारणका पहचाने समान कथन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिचा तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । यद्यन्तर इन वर्गोंको

अन्यथासम्प्रदायसम्प्रदायजीवराशिना तदुपरिमण्यो मागे हिद किमागच्छदि ? अथतमाग-
हीनसम्प्रदायजीवरासी आगच्छदि । सम्प्रदाय कारण पुत्र्य व वचन । अथ तदुपरिमण्यो
मागश्रो—

अथहासकृत्स्नानवहासो ॥ सद्यभवहास ।

रुनहिओ हापीए होए ॥ वृत्तीए विनपी ॥ २४ ॥

अथहासिसेसेण य उणिगगहासु सद्यत्वा ॥

रुनहिउकणा वि य अरहाणे हागिबहुण ॥ २५ ॥

अथहासिसेसेसेण सद्य रुनहिउकणय चति ।

अथहासिबहुणवहासे सा मुण्ययमा ॥ २६ ॥

श्रुत्य— अवस्थार्थ माग अधिक अपूर्ण जीवराशिना संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें
माग देने पर शून्यही राशि आती है ।

समाधान—अनन्तार्थ माग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । सद्य कारण कथन
पहलेके समान करना चाहिये । अब यहां पर उपयुक्त गाथाएं दी जाती हैं—

भाषांतरमें उसीके वृत्तिरूप अंशके रहने पर माग देनेसे जो अर्थ मागहार (हर)
आता है वह हासिमें कपाधिक और वृत्तिमें इससे विपरीत अपाग एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{क^2}{क + क} = क - \frac{क}{न + १} \quad (२) \frac{क}{क - क} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(बहुगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + \frac{१}{१}} = १ - \frac{१}{१} = १ - १ = ० \quad (२) \frac{१}{१ - \frac{१}{१}} = १ + \frac{१}{१} = १ + १ = २$$

भाषांतर विशेषतः अर्थको विना अर्थार्थ मानित करने पर जो संख्या आती
है उसे कपाधिक अथवा कल्पपूर्ण कर देने पर वह कमसे हासि और वृत्तिमें मागहार
होता है ॥ २५ ॥

अर्थ विशेषतः अर्थको विना अर्थार्थ मानित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह कमसे भाषांतरकी हासि और वृत्तिमें मागहार
होता है ॥ २६ ॥

$$\text{उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)—} \quad \frac{क}{क} = १, \quad \frac{क}{क} = १$$

अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ? अथतमाग-
हीनसम्बन्धीवशासी आगच्छदि । संप्रत्यक्ष कारणं पुष्प व वक्ष्यम् । ए-य उपउज्ज्वतीओ
गाहामा—

अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ।

एवमिहो एवमिहो होमि इ वृष्टि ए रिमिष्टा ॥ २४ ॥

अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ।

एवमिहो एवमिहो होमि इ वृष्टि ए रिमिष्टा ॥ २५ ॥

अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ।

एवमिहो एवमिहो होमि इ वृष्टि ए रिमिष्टा ॥ २६ ॥

सूत्रा— अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ?
भाग होने पर कीमती राशि जाती है ?

समाधान—अथतमागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ?
भाग होने पर कीमती राशि जाती है । संप्रत्यक्ष कारणं पुष्प व वक्ष्यम् । ए-य उपउज्ज्वतीओ
गाहामा—

मागममहिससम्बन्धीवशासिणा तदुपरिमवगम भाग हिदे किमागच्छदि ?
भाग होने पर कीमती राशि जाती है । संप्रत्यक्ष कारणं पुष्प व वक्ष्यम् । ए-य उपउज्ज्वतीओ
गाहामा—

उदाहरण (जीवगणितसे)—

$$(१) \frac{क}{क + न} = क - \frac{क}{न + १} \quad (२) \frac{क}{क - न} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(वनगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + १} = \frac{१}{२} = १ - \frac{१}{२} \quad (२) \frac{१}{१ - १} = \frac{१}{०} = १ + \frac{१}{०}$$

भागहार विशेषसे भागहारके किम अर्थात् माशित करने पर जो संख्या जाती
है उसे अपाधिक अथवा अपन्यून कर देने पर वह कमसे हानि थीर वृद्धिमें भागहार
होता है ॥ २५ ॥

अथ विशेषसे अथको किम अर्थात् माशित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह कमसे भागहारकी हानि थीर वृद्धिमें भागहार
होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण गाथा २५-२६ के (जीवगणितसे)— $\frac{क}{न} = प$ $\frac{क}{क} = म$

अणतमासम्भ्रमहियसम्भ्रमीवरासिणा सद्गुरिमवग्ग मागे हिदे किमागच्छदि ? अणतमास-
हीनसम्भ्रमीवरासी आगच्छदि । सम्परथ कारण पुग्ग व वत्तव्व । एव तवठञ्जरीओ
गाहामा—

अणहारवट्टिकमाणवहमाणे ह् उअअवहातो ।

अवहियो हावीए हाप्पि ह् वट्टीए विवरीओ ॥ २४ ॥

अणहारविसेसेण य ठिप्पवहाउदु कदम्भवा अ ।

रुवाहियउणा वि य अणहाणे हाणिवट्टीण ॥ २५ ॥

अणविसेसठिप्प उअ रुवाहियउणय वापि ।

अणहाहणिवट्टीणउतो सा मुणेयम्भो ॥ २६ ॥

श्रुत्वा— अणस्तथा माय अपिच सपूर्ण जीवराशिच सपूर्ण जीवराशिने उपरिम वर्गमें
भाग देने पर बीनसी राशि बाकी है ?

समाधान—अणस्तथा माय हीन सपूर्ण जीवराशि व्यती है । सबन वारम्भ कथन
पहलेके समाप्त करना चाहिये । अब यहाँ पर उपयुक्त गणार्थ की जाती है—

मायहारमें उसीके वृद्धिरूप आंशके रहने पर भाग देनेसे जो छत्र मायहार (हर)
आता है वह हानिमें क्वाधिक बीर वृद्धिमें इससे विपरीत अणान् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{क}{क + \frac{क}{न}} = क - \frac{क}{न + १} \quad (२) \frac{क}{क - \frac{क}{न}} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(बीजगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + \frac{१}{३}} = \frac{३}{४} = १ - \frac{१}{४} \quad (२) \frac{१}{१ - \frac{१}{३}} = \frac{३}{२} = १ + \frac{१}{२}$$

मायहार विरोधसे मायहारके छिद्य अर्थात् माजित करने पर जो संख्या व्यती
है उसे क्वाधिक अथवा क्वाप्युक्त कर देने पर वह क्रमसे हानि बीर वृद्धिमें मायहार
होता है ॥ २५ ॥

छत्र विरोधसे छत्रको छिद्य अर्थात् माजित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह क्रमसे मायहारकी हानि बीर वृद्धिमायहार
होता है ॥ २६ ॥

$$\text{उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)—} \quad \frac{क}{२} = ५, \quad \frac{क}{३} = ३।$$

पक्षेवगसिगुणिदो पक्षेमेणाहिणं छन्देण ।

गसिओ णु मागहारो अवणेज्जो होइ अवहारे ॥ ३० ॥

जे अहिया अवहारे रुवा तेहिं गुणिचु पुष्पफळ ।

अहियवहारण हिणं छन्द पुष्पफळ उण ॥ ३१ ॥

जे ऊणा अवहारे रुवा तेहिं गुणिचु पुष्पफळ ।

ऊणवहारेण हिणं छन्द पुष्पफळ अहियं ॥ ३२ ॥

मागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देने पर और प्रक्षेपसे अधिक सम्प्रदाशिक्ष भाग देने पर जो सम्प्रदाशिक्ष जाता है वह मागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = क$ इष्ट क प्रक्षेप राशि (अ-क)

$$\text{अपनेय मागहार } ब - \frac{ब (क क)}{क} = \frac{ब क}{क}$$

(अक्षगणितसे)— $\frac{३३}{४} = ८$, इष्ट १२, प्रक्षेप ३, अपनेय मागहार ४ $\frac{३ \times ४}{१२} = ४$ १=३

मागहारमें कितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे इष्ट अर्थात् भाजित करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया सम्प्रदाशिक्ष जाता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$, नया मागहार— $ब + ब$

$$\text{नया सम्प्रदाशिक्ष} = \frac{अ}{ब + ब} = \frac{ब स}{ब + ब} = स - \frac{स ब}{ब + ब}$$

अर्थात् $\frac{स ब}{ब + ब}$ इसे गुणने मज्जनफल स में से घटा देने पर नया मज्जनफल आ जाता है ।

(अक्षगणितसे)— $\frac{३३}{४} = ८$, १२ नया मागहार, मागहारमें अधिक ३,

$$\frac{४ \times ३}{१२} = १, ४ - १ = ३ नया मज्जनफल$$

मागहारमें कितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून मागहारसे इष्ट करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया सम्प्रदाशिक्ष जाता है ॥ ३२ ॥

अपनयनराशिगुणिते अपनयनेणूपायण छन्देण ।

मन्त्रियो ऽ भागहारो पन्सेषो होन्ति व्यवहार ॥ २९ ॥

उदाहरण (जीवगणितसे) —

सम्प्रमाण राशि—न भाजक—स = न × व।

- (१) छन्द—क रोप—र (वृद्धिरूप)
 (२) छन्द—(क + १) रोप—र' (हानिरूप)
 न = (न × व) क + र — (१)
 और न = (व × व) (क + १) - र' — (२)

(१) से $\frac{n}{n} = व \times क + \frac{र}{न}$ — वृद्धिरूप

(२) से $\frac{n}{n} = व (क + १) - \frac{र'}{न}$ — हानिरूप

(व्युत्क्रमितसे) —

अपमान राशि—२९३, हार—७२, हारान्तर—९,

(१) $\frac{२९३}{७२} = ४\frac{५७}{७२}$ पूर्ण छन्द—३
 मान्य रोप—४७
 $\frac{२९३}{९} = ८ \times ३ + \frac{५७}{९}$ (हारान्तरछन्दहार—८)
 $= २९ + \frac{९}{९}$ — (वृद्धिरूप)

(२) $\frac{२९३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$
 $\frac{२९३}{९} = ८ \times ४ - \frac{२५}{९} = ३ - \frac{७}{९}$ (हानिरूप)

भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशिसे सम्प्रमाणिसे घटाकर जो रोप रहे वसका माप दे देने पर जो छन्द जाता है वह भागहारमें प्रसेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (जीवगणितसे) — $\frac{व}{व} = क$, हार क, अपनयन राशि क - क

$$क + \frac{व (क ल)}{ल} = \frac{व क}{ल} \text{ प्रसेप व्यवहार}$$

(व्युत्क्रमितसे) — सम्प्रमाण ३९, भाजक ७, हार १, $३९ \div ७ = ५$ - ४ = २ अपनयन

राशि, $\frac{७ \times १}{१} = ७$ प्रसेप भागहार

पनसेवगसिगुणितो पनसेवेणदिएण कसेण ।

मज्झिओ बु भागहारो अबणेओ होइ अबहारे ॥ ३० ॥

ओ अहिवा अबहारे क्का तेहि गुणितु पुम्बफळ ।

अदियवहारण दिए क्क पुम्बफळ उण ॥ ३१ ॥

ओ उणा अबहारे क्का तेहि गुणितु पुम्बफळ ।

ऊणवहारेण दिए क्क पुम्बफळ अदिय' ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रक्षेपदाशिते गुणा कर देने पर और प्रक्षेपसे अधिक सम्प्रदाशिका भाग देने पर जो सम्प्र आता है वह भागहारमें अपनेय दाशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = क$ इष्ट क अधिक दाशि (क-क)

अपनेय भागहार ब - $\frac{ब (क-क)}{क} = \frac{ब-ब}{क}$

(अङ्गगणितसे)— $\frac{३३}{४} = ८$ इष्ट ८ प्रक्षेप ३, अपनेय भागहार ब $\frac{३ \times ४}{१२} = १$

भागहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूरा फलको गुणित करके तथा अधिक संख्यासे हट करने पर जो बाक्य उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया सम्प्र आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$, नया भागहार—ब + ह

नया सम्प्र = $\frac{अ}{ब+ह} = \frac{बस}{ब+ह} = स - \frac{स ह}{ब+ह}$

अर्थात् $\frac{स ह}{ब+ह}$ इसे पुराने भजनफल स में से घटा देने पर नया भजनफल आ जाता है ।

(अङ्गगणितसे)— $\frac{११}{४} = २$, नया भागहार, भागहारमें अधिक ३,

$\frac{४ \times ३}{१२} = १$, $२ - १ = १$ नया भजनफल

भागहारमें जितनी ग्यून संख्या होती है उससे पूरा फलको गुणित करके तथा ग्यून भागहारसे हट करने पर जो बाक्य उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया सम्प्र आता है ॥ ३२ ॥

च्छदि ति ण सदहा (?) । कारण गद । तस्य का निरुची ? सिद्धतरसगुणगणपमाण
मन्त्रजीवरामि माग द्वि ज भागलद्ध स विरलेउण एक्कस्म रूढस्म सप्वजीवरासि
ममसुद्ध करिय दिण्णे रूढ पडि सिद्धतरसगुणगणपमाण पावदि । तत्थ बहुसुद्धा
मिच्छाद्विरामिपमाण होदि । एय खडं सिद्धतरसगुणगणपमाण हरदि । निरुची गदा ।

यहां कारण बतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि व सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशि की
अपेक्षा ध्रुवराशि के द्वारा मिथ्यादि राशिका प्रमाण मिश्रित करना । तदनुसार पाठ कुछ
निम्न प्रकार होता चाहिये —

सिद्धतरसगुणगण मिच्छा द्विभिन्नसिद्धतरसगुणगणवर्गण थ अष्टमद्विपसत्त्रजीवरासिणा
सप्तजीवरासिउत्तरिमाग माग द्वि रिमाग अष्टि सिद्धतरसगुणगणहीनसप्तजीवरासी भागच्छदि
ति ण मन्हे ।

अर्थात् सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्यादि राशिसे भाजित
सिद्धतरसगुणस्थानवर्गसे अधिक सप्तजीवराशिका सप्तजीवराशिके अपरिम वर्गमें माग देने पर
क्या भाता है ? सिद्धतरसगुणस्थान राशिसे हीन सप्तजीवराशि भाती है इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (जीवगणितसे)} — \frac{4}{3 + \frac{12}{5} + 4} = 5 = 5 \text{ (मिथ्यादि)}$$

$$(\text{अवगणितसे}) — \frac{25}{3 + 12 + 20} = 25 = 25 \text{ (मिथ्यादि)}$$

प्रश्ना — इसकी अर्थात् मिथ्यादि जीवराशिके प्रमाणके निश्चासनेकी निगति क्या है ?

समाधान — निश्चराशि और सासाधनसम्यग्वादि आदि तरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर जो भाग मध्य भागे उसका विरलन करके और उस विरलित
राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिको समान लण्ण करके देयगसे स्थापित कर देने
पर विरलित राशिके प्रत्येक एकक प्रति सिद्ध और सासाधनसम्यग्वादि आदि तरह गुणस्थानवर्ती
जीवराशि प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकक प्रति प्राप्त
लण्णमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादि जीवराशिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सासाधनसम्यग्वादि आदि तरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि प्रमाण है । इसप्रकार निरनिका
पक्ष समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १५ सिद्धतरस ३। १५ = ३।

३ ३ ३ ३ ३ ३ इसप्रकार एक लण्ण ३ सिद्ध और सासाधनदि तरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण और १५ बहुभाग १२ मिथ्यादि
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

एदाहि गाहाहि पडिवाहियसग सिम्ससग पच्छिमवियप्पा बसप्पा । त जहा, मिद्ध
येरसगुणह्वाणाबहिदमिच्छाहिमामम्महिममञ्जीवराणिना सञ्जजीवरामिउवरिमवग्ग माग
हिदे किमाग-हदि ? भिउतरसगुणह्वाणमजिदमञ्जवावराणिमागहीममञ्जीवरामी आग

उदाहरण (बीजगणित)— $\frac{x}{y} = 5$; $y = 3$ तथा भागद्वारा:

$$\text{तथा } x = \frac{xy}{y} = \frac{5 \times 3}{3} = 5 + \frac{5 \times 3}{3}$$

$\frac{5 \times 3}{3}$ इसे पुरान मज्जनफल त में जाकुनेसे तथा मज्जन
फल भा जाता है ।

(अरुगणित)— $\frac{12}{12} = 1$; २ तथा भागद्वारा

$$\frac{12 \times 1}{2} = 1; 1 + 1 = 2 \text{ तथा मज्जनफल}$$

इन माध्यामोंके द्वारा जो शिष्य प्रतिशोधित किया जा चुका है उसके पश्चात् विद्वत्
वत्तत्वा जाता है । यह इसप्रकार है—

दृष्टा—सिद्धराशि और आसाधनसम्यग्वादि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिक
मिथ्यावादि जीवराशिकमें भाग देने पर जो भाग छप्प आये उसके अधिक संपूर्ण जीवराशिक
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बीजसी राशि जाती है ।

समाधान—सिद्धराशि और आसाधनसम्यग्वादि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिक
संपूर्ण जीवराशिकमें भाग देने पर जो प्रमाण छप्प आये इतनी कम संपूर्ण जीवराशि जाती
है इसमें कुछ भी संशेद नहीं है । इसप्रकार कारणका वणन समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ—यहां पर जो अन्तिम विद्वत्प वत्तसाया गया है उसका गणित पूर
निश्चित सकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण (बीजगणित)—

$$\frac{k}{k+y} = k - \frac{k}{y}$$

(अरुगणितसे)—

$$\frac{12}{12+12} = 12 - \frac{12}{12}$$

किन्तु एक तो यमितसे ये राशियां समान नहीं सिद्ध होतीं और दूसरे
इतना जा फल निकलता है वह मिथ्यावादि राशिक प्रमाण न होवेसे प्रष्टमें उसका
कोर उपयोग किया नहीं होता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस
विषयमें ठीक विषय पर नहीं पहुंच सके । तथापि विषयके पूजापर प्रसंगको देखने हुए यहां
अन्तिम विद्वत्पमें बड़ी बल आना आदिग जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है, और जिनका कि

च्छदि वि ण मग्हा (?) । कारण गम् । तस्म का निरुची ? मिदतरसगुणद्वानपमाण
मन्त्रजीवरासि भाग द्वि त्र भागल्ल त विरलेत्त एवक्कस्म स्वस्म मन्त्रजीवरासि
ममग्हा करिय दिण्णे स्म पट्टि सिद्धतरसगुणद्वानपमाण पावदि । तत्थ बहुत्तद्वा
मिच्छाद्विरामिपमाण होदि । एय र्गं मिदनेरसगुणद्वानपमाण हवदि । निरुची गदा ।

यहां कारण वतलाया जा रहा है अथान मन्त्रजीवरासि व सिद्धनेरस गुणस्थानवर्ती राशिबी
अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्यादष्टि राशिके प्रमाण निश्चित करना । मन्त्रनुसार पाठ कुछ
निश्च प्रकाश होना चाहिये य —

सिद्धनेरसगुणद्वानेण मिच्छा द्विभविमिदनेरसगुणद्वानवगण च अस्मद्वियमन्त्रजीवरासिणा
मन्त्रजीवरासिउपरिमग्ग माग दिग् विमागग्गि ! सिद्धनेरसगुणद्वानदीणसन्त्रजीवरासा भागच्छदि
वि ण मग्हा ।

अथान सिद्धनेरस गुणस्थानवर्ती राशिमे अधिक और मिथ्यादष्टि राशिमे भाजित
सिद्धनेरसगुणस्थानवगते अधिक मन्त्रजीवरासिका मन्त्रजीवरासिके उपरिमग्गमे भाग देने पर
क्या आता है ? सिद्धनेरसगुणस्थान राशिमे हीन मन्त्रजीवरासि भागी हैं इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितमे)} — \frac{क}{अ + ब + क} = ब = क \quad \text{व (मिथ्यादष्टि)}$$

$$(\text{अकगणितमे}) — \frac{११}{३ + ११} = ११ = १६ - ३ \quad (\text{मिथ्यादष्टि})$$

प्रका — इसकी अथान मिथ्यादष्टि जीवरासिके प्रमाणके निश्चयनेकी निदानि क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासाहससम्पत्ति आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवरासिमें भाग देने पर जो भाग मन्त्र भाग उसका विरलत करने और उस विरलित
राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवरासिके समान लपन करके देखनेसे स्पष्टित कर देने
पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासाहससम्पत्ति आदि तेरह गुणस्थानवर्ती
जीवरासि प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अथान विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
लपनमें एक भाग कम बहुभागकय मिथ्यादष्टि जीवरासिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सार सासाहससम्पत्ति आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवरासि प्रमाण है । इसप्रकार निश्चिका
बगल समान हुआ ।

उदाहरण मन्त्रजीवरासि ११, सिद्धनेरस ३, $\frac{११}{३} = ३\frac{२}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ इसप्रकार एक लपन ३ सिद्ध और सासाहससम्पत्ति तेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ मन्त्र जीवरासिका प्रमाण और दोष बहुभाग ११ मिथ्यादष्टि
३ राशिके प्रमाण हुआ ।

एहाहि माहाह पडिबाहियसम भिस्सस्य पच्छिमवियणा वत्तन्ना । त अहा, मिद्ध
तेरसगुणद्वानोपिद्धमिच्छाहदिभागमहियसम्मीरसिणा सम्मीविरामिठरिमवग्ग माम
हिदे किमागच्छदि ? मिद्धतरसगुणद्वानमिद्धमम्मीरसिभागहीणसम्मीरामी भाग

उदाहरण (बीजगणितस)— $\frac{a}{b} = \frac{c}{d}$ । $b-d$ नया मागहार।

$$\text{नया स'प} = \frac{a}{b-d} - \frac{b}{b-d} = \frac{a}{b-d} + \frac{c}{b-d}$$

$\frac{a}{b-d} + \frac{c}{b-d}$ इसे पुराने मज्जनफल स में जोड़नेस नया मज्जन
फल बन जाता है ।

(अरुणितस)— $\frac{22}{12} = 2$ । १ नया मागहार।

$$\frac{2 \times 1}{1} = 2 \quad 2 + 1 = 3 \text{ नया मज्जनफल}$$

इन गायत्रीके छाप जो शिष्य प्रतिपादित किया जा चुका है उसको परिष्कृत विवरण
बतलाया जाता है । यह इसप्रकार है—

सूत्र— सिद्धराशि और साक्षात्तसम्पन्नदि भावि तेरह गुणस्यानवर्ती जीवराशिका
विष्यादधि जीवराशिमें माग देने पर जो माग द्रव्य भावे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें माग देने पर बीजसी पति जाती है ।

समाधान—सिद्धराशि और साक्षात्तसम्पन्नदि भावि तेरह गुणस्यानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर जो माग द्रव्य भावे उसकी कम संपूर्ण जीवराशि व्यती
है इसमें कुछ भी संशेह नहीं है । इसप्रकार कारणका ध्यान समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ—यहाँ पर जो अन्तिम विवरण बतलाया गया है उसका गणित पूरा
निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बतला है—

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$\frac{a}{a+b} = \frac{c}{d} - \frac{c}{a}$$

(अरुणितसे)—

$$\frac{22}{12+12} = 2 - \frac{22}{12}$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राशियाँ समान नहीं सिद्ध होती और दूसरे
उनका जो फल निकलता है वह विष्यादधि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रथममें उसका
कोई उपयोग दिगर्भ नहीं होता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस
विषयमें ठीक निगम पर नहीं पहुँच सके । तथापि विषयके पूरापूर प्रसंगको देखते हुए यहाँ
अन्तिम विवरणमें बड़ी बात माना चाहिय जिससे यह प्रकरण प्रारम्भ हुआ है और जिसका कि

चुदि सि न मद्दा (?) । कारण गद् । तस्म क्क णिरुची ? सिद्धतरसगुणद्वानपमाण
मन्त्रजीवगमि भाग द्वि ज भागलद्ध न सिग्नेडण पक्कम्म स्वम्म सन्वजीवरासिं
ममराइ करिय दिप्पे स्व पठि सिद्धतरसगुणद्वानपमाण पावदि । तस्य बहुमदा
मिच्छाद्विरासिपमाण होदि । एय सुंरं मिद्धतरसगुणद्वानपमाण हवदि । णिरुची गद् ।

यहां कारण बनलाया आ रहा है । अथान मन्त्रजीवरासि व सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिची
अपेक्षा ध्रुवराशि के ठारा मिथ्यादृष्टि राशिचा प्रमाण निश्चित करना । तबनुसार पाठ कुछ
निश्च प्रकर होना चाहिये य —

सिद्धतरसगुणद्वाने मिच्छा द्विभिस्सिद्धतरसगुणद्वानपमाण च अगहियसन्वजीवरासिणा
सन्वजीवगमिसिग्नेमग्ग भाग द्वि किमागच्छति ? सिद्धतरसगुणद्वानपमाणसन्वजीवरासा भागच्छति
चि न मद्दा ।

रूपान् सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिसं अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिसे प्राप्त
सिद्धतरसगुणस्थानपणसे अधिक मन्त्रजीवराशिचा सन्वजीवराशिसे उपरिम वर्गमें माग देने पर
क्या भाग है ? सिद्धतरसगुणस्थान राशिसं हीन मन्त्रजीवराशि भाग है इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (जीवगणितम्)} — \frac{क}{अ + ब + क} = ३ = ३ - ० \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

$$\text{(अवगणितम्)} — \frac{१६}{३ + १६} = १३ = १६ - ३ \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

प्रश्न — इसकी अथान मिथ्यादृष्टि जीवराशि के प्रमाण के नियमनेकी निरूपि क्या है ?

समाधान — मिथ्यादृष्टि और सामान्यतमस्यदृष्टि आदि नेरह गुणस्थानवर्ती राशिचा

संयुक्त जीवराशिसं माग देने पर जो भाग प्रत्येक भावे उत्पन्न बिरुद्ध करने और उस बिरुद्धित
राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर संयुक्त जीवराशिचा सामान्यतम करने केयप्रपत्ते स्थापित कर देने
पर पिरमित राशिसे प्रत्येक एक प्रति सिद्ध और सामान्यतमस्यदृष्टि आदि तरह गुणस्थानवर्ती
जीवराशि प्रमाण प्राप्त होता है । इसमें अथान बिरुद्धित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
अर्थोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिचा प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सामान्यतमस्यदृष्टि आदि नेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि प्रमाण है । इसप्रकार निरूपिचा
पणन सामान्य हुआ ।

उदाहरण सन्वजीवराशि १३ सिद्धतरस ३, $\frac{१}{३} = \frac{१}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ इसप्रकार एक लण्ड ३ सिद्ध और सामान्यतमस्यदृष्टि नेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिचा प्रमाण और दोष बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि
३ राशिचा प्रमाण हुआ ।

सो सो वियप्पो सो दुविहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डि मवियप्प वत्थस्सामो । तं ब्रह्मा, वेरुवे हेड्डिमवियप्पो पत्ति । कारण सम्बन्धीवरासीदो पुवरासी अन्महिमो जादो पि । अह्मरुवे हेड्डिमवियप्प वत्थस्सामो । धुवरासिणा सम्बन्धीवरासि गुणेत्थम् सम्बन्धीवरासिपणे मागे हिदे मिच्छाङ्गिरासी आगच्छदि । अन्मकारयेण ? अदि सम्बन्धीवरासिणा तस्म धणो अबहिरिज्जदि तो सम्बन्धीवरासितवरिमवग्गो आगच्छदि । पुष्पा पि धुवरासिणा सम्बन्धीवरासितवरिमवग्गो मागे हिदे मिच्छाङ्गिरासी आगच्छदि ! एवं मिच्छाङ्गिरासिमागमणं मनेषावहारिय गुणेत्थम् मागग्गह्मं कर्द्धं । एत्थं दुग्गुणादिकरणं वत्थस्सामो । तं ब्रह्मा, सम्बन्धीवरासिणा सम्बन्धीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बन्धीवरासितवरिमवग्गो आगच्छदि । दुग्गुणिदसम्बन्धीवरासिणा सम्बन्धीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बन्धीवरासितवरिमवग्गस्त दुमागो आगच्छदि । तिग्गुणिदसम्बन्धीवरासिणा सम्बन्धीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बन्धीवरासितवरिमवग्गस्त त्रिमागो आगच्छदि । अन्म

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तबविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अथस्तब विकल्पको बतकाते हैं । वह इसप्रकार है—

त्रिरूपवर्णाधारमें (प्रकृतमें) अथस्तबविकल्प संभव नहीं है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे शुचराशि का प्रमाण अधिक है । जब अथस्तब वर्णात् धनधारणमें अथस्तबविकल्प बतकाते हैं । शुचराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करके जो छद्म मने उभय संपूर्ण जीवराशिसे धनमें भाग देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका धन अथस्तब किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्णात् प्रमाण आता है । और फिर शुचराशिसे प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे उपरिमवर्णमें धन देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है । इसप्रकार मिथ्यावृत्तिरहित होती है इस बातको धनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रमाण लिया है ।

उदाहरण—जीवराशि १९, शुचराशि १९, $१९ \times १९ = ३६१$;

जीवराशि १९ का धन $४०९ - ३६१ = ४८$ मिथ्यावृत्ति

अब धन पर त्रिगुणविकल्पविकल्पको बतकाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे धनके अणुधर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्णात् प्रमाण आता है ($४०९ - १९ = ३९०$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे धनके अणुधर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्णका दूसरा भाग आता है ($४०९ - ३९० = १९$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे धनके अणुधर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्णके प्रमाणका तीसरा भाग आता है ($४०९ - ४८ = ३६१$) । इसप्रकार इसी विधिसे अथस्तब शुचराशिका प्रमाण

विहायेण गुणगारो वहुवेदस्त्रो ज्ञाव धुवरासिपमाण पचो चि । पुणो धुवरासिगुभिद
सम्बजीवरासिमा सम्बजीवरासिपणे ओवद्धिदे सम्बजीवरासिठवरिमवग्गस्स धुवरासिमागो
आगच्छदि सो चेव मिच्छाद्विपरासी । एदेण कारभेण धुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण
सम्बजीवरासिपणे ओवद्धिदे मिच्छाद्विपरासी आगच्छदि चि ।

घणाघणे वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूळ
गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूळे ओवद्धिदे मिच्छाद्विपरासी आगच्छदि । कण कारणेण ?
घणपढमवग्गमूळेण घणाघणपढमवग्गमूळे ओवद्धिदे सम्बजीवरासिस्स पचो आगच्छदि ।
पुणो चि सम्बजीवरासिमा सम्बजीवरासिपणे ओवद्धिदे सम्बजीवरासिठवरिमवग्गो
आगच्छदि । पुणो चि धुवरासिणा सम्बजीवरासिठवरिमवग्गे भागे द्विदे मिच्छाद्विपरासी
आगच्छदि । एवमागच्छदि चि वहु गुणेऊण भागगहण कइ । एत्थ दुगुणादिकरणे
कदे हेत्थिमवियप्पो समप्पदि ।

१० १/१ प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाना चाहिये । पुनः धुवराशिसे
संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करने पर जो छव्य भागे उससे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित
करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गमें धुवराशिछा माग देने पर जो छव्य भागे
तत्प्रमाण माग जाता है और वही मिच्छाद्वि जीवराशिछा प्रमाण है । इसी कारणसे यह
कहा कि धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करके जो छव्य भागे उससे संपूर्ण जीव
राशिसे घनके अपवर्तित करने पर मिध्य द्वि जीवराशिछा प्रमाण जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{1}{1} \times \frac{1}{1} = \frac{1}{1} \times \frac{1}{1} = \frac{1}{1} \times \frac{1}{1} = \frac{1}{1} \times \frac{1}{1} = 1 \text{ मि}$$

अब घनाघनमें अपवर्तन विकलपको बतलाते हैं । धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे
गुणित करके जो गुणनफल भागे उससे जीवराशिसे घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
गुणनफल भागे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित करने पर मिच्छाद्वि जीव
राशिछा प्रमाण जाता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित
करने पर संपूर्ण जीवराशिछा घन जाता है । अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे
घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिछा उपरिम वर्ग जाता है । अनन्तर धुवराशिछा
संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें माग देने पर मिच्छाद्वि जीवराशिछा प्रमाण जाता है ।
घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिछा प्रमाण जाता है ऐसा समझ कर पहले गुणा करके
अनन्तर, भागका ग्रहण किया है । यहाँ पर त्रिगुणाधिकरणके कर देने पर अघस्तन विक्षय
समाप्त हो जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} १९ \text{ के घनका प्रथम वर्गमूल } १४; \text{ घनाघनका प्रथम वर्गमूल } २६२१४४;$$

$$\frac{१९}{१४} \times १९ \times १४ = \frac{२६२१४४}{१४}, \frac{२६२१४४}{१} + \frac{२६२१४४}{१४} = १९ \text{ मि}$$

सो सो वियप्पो सो बुविहो, हेङ्किमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्प हेङ्किमवियप्प वचइस्सामो । सं जहा, वेरूवे हेङ्किमवियप्पो णत्थि । कारण सम्मजीवरासिदि धुवरासी अम्महिओ आदो सि । अट्टरूवे हेङ्किमवियप्प वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्मजीवरासि गुणेत्यम् सम्मजीवरासिपणे माग हिदे मिच्छाइङ्किरासी आगच्छदि । केय कारयेण ? अदि सम्मजीवरासिणा तस्स पणा अवहिरिज्जदि तो सम्मजीवरासिउवरिमवगो आगच्छदि । पुणा वि धुवरासिणा सम्मजीवरासिउवरिमवगो भागे हिदे मिच्छाइङ्किरासी आगच्छदि । एवं मिच्छाइङ्किरासिमागमण मणेयावहारिय गुणेत्यम् भागगइय कर्दं । एत्थ दुगुणादिकरणं वचइस्सामो । सं जहा, सम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवङ्किदे सम्मजीवरासिउवरिमवगो आगच्छदि । दुगुभिदसम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवङ्किदे सम्मजीवरासिउवरिमवगस्स दुमागो आगच्छदि । तिगुभिदसम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवङ्किदे सम्मजीवरासिउवरिमवगस्स त्रिमागो आगच्छदि । अजेय

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

त्रिरूपवर्गधारायें (प्रकृतमें) अथस्तनविकल्प संभव नहीं है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिपर्यन्त प्रमाण व्यक्त है । जब अष्टरूप अर्थात् धनधारायें अथस्तनविकल्प बतलाते हैं । अथराशिसे संपूर्ण जीवराशिपर्यन्त गुणित करने ओ छद्म मावे उसका संपूर्ण जीवराशिसे घनमें भाग देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशिपर्यन्त प्रमाण जाता है क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिपर्यन्त घन अथस्तन किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण जाता है । और फिर ध्रुवराशिसे प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशिपर्यन्त प्रमाण जाता है । इसप्रकार मिथ्यावृत्तिरासि जाती है इस बातसे मनमें निश्चित करके पढ़के गुणा करके अन्तर मागना प्रहज किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १९, ध्रुवराशि १९, $१९ \times १९ = ३६१$;

जीवराशि १९ का घन $४०१९ - ३६१ = ३६५३$ मिथ्यावृत्ति

जब यहां पर त्रिगुणाधिकरणविधिसे बतलाया है । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण जाता है ($४०१९ - ३६१ = ३६५३$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गका वृत्त माग प्यता है ($४०१९ \div ३६१ = ११८$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा माग जाता है ($४०१९ \div ४०८९ = ८९$) । इसप्रकार इसी विधिसे अवतक ध्रुवराशिपर्यन्त प्रमाण

विहायेण गुणगारो बहुवेदव्या आव भुवरासिपमाण पचो चि । पुणो भुवरासिगुणिद
सम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओवह्मिदे सम्बजीवरासिठवरिमवग्गस्स भुवरासिमाणो
आगच्छदि सो पेव मिच्छाद्विहिरासी । एदेण कारणेण भुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण
सम्बजीवरासिपणे ओवह्मिदे मिच्छाद्विहिरासी आगच्छदि चि ।

घषापणे वचइस्सामो । भुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण तेण घषपढमवग्गमूल
गुणेऊण घषापघषपढमवग्गमूले ओवह्मिदे मिच्छाद्विहिरासी आगच्छदि । क्व फारमेण ?
घषपढमवग्गमूलेण घषापणपढमवग्गमूले ओवह्मिदे सम्बजीवरासिस्स पचो आगच्छदि ।
पुणो वि सम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओवह्मिदे सम्बजीवरासिठवरिमवग्गो
आगच्छदि । पुणो वि भुवरासिणा सम्बजीवरासिठवरिमवग्गो मागे हिदे मिच्छाद्विहिरासी
आगच्छदि । एवमागच्छदि चि बहु गुणेऊण भागगण्ण कद । एत्थ दुगुणादिकरणे
कदे हेडिमवियप्पो समप्पदि ।

१०^{११} प्राप्त नहीं है। आता है सबतक गुणकारको बढ़ाते जाता चाहिये। पुनः भुवरासिसे
संपूर्ण जीवरासिको गुणित करने पर जो छप्प भावे उससे संपूर्ण जीवरासिके घनके अपवर्तित
करने पर संपूर्ण जीवरासिके उपरिमवर्णमें भुवरासिस्स माग देने पर जो छप्प भावे
वाममाय माग आता है और वही मिच्छाद्वि जीवरासिस्स प्रमाण है। इसी कारणसे यह
कहा कि भुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिको गुणित करके जो छप्प भावे उससे संपूर्ण जीव
रासिके घनके अपवर्तित करने पर मिच्छाद्वि जीवरासिस्स प्रमाण आता है।

$$\text{उदाहरण—} 1^6 \times 1^6 = 1^6 + 1^6 + 1^6 = 1^6 \times 3 = 1^6 \times 3 = 1^6$$

अब घनाघनमें अघस्तन विच्छेदको बतलाते हैं। भुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिको
गुणित करके जो गुणनफल भावे उससे जीवरासिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
गुणनफल भावे उससे द्वितीय घनाघनके प्रथम वर्गमूलको वर्द्धित करने पर मिच्छाद्वि जीव
रासिस्स प्रमाण आता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको वर्द्धित
करने पर संपूर्ण जीवरासिका घन आता है। अनन्तर संपूर्ण जीवरासिसे संपूर्ण जीवरासिके
घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवरासिका उपरिम वर्ण आता है। अनन्तर भुवरासिस्स
संपूर्ण जीवरासिके उपरिम वर्णमें माग देने पर मिच्छाद्वि जीवरासिस्स प्रमाण आता है।
घनाघनघातमें इसप्रकार जीवरासिस्स प्रमाण आता है। ऐसा समझ कर पहले गुणा करके
अनन्तर, भागका ग्रहण किया है। यहां पर त्रिगुणादिकरणके कर देने पर अघस्तन विच्छेद
समाप्त हो जाता है।

$$\text{उदाहरण—} 1^6 \text{ के घनका प्रथम वर्गमूल } 1^3, \text{ घनाघनका प्रथम वर्गमूल } 1^6, 1^6, 1^6,$$

$$1^6 \times 1^6 = 1^6 + 1^6 + 1^6 = 1^6 \times 3 = 1^6 \times 3 = 1^6$$

जो सो वियप्यो सो दुबिहो, हेहिमवियप्यो उबरिमवियप्यो चेदि । तस्य हेहि
मवियप्य वचइस्सामो । तं जहा, वेक्ये हेहिमवियप्यो णरिष । कारण सम्बजीवरासीर
धुवरासी अम्महिजो भादो सि । अट्ठस्से हेहिमवियप्य वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्ब
जीवरासि गुणैऊम सम्बजीवरासिपणे भागे हिदे मिच्छाइकिरासी आगच्छदि ।
कारणेण ? यदि सम्बजीवरासिणा तस्य पणो अवहिरिज्जदि तो सम्बजीवरासिउबरिमव
आगच्छदि । पुजा पि धुवरासिणा सम्बजीवरासिउबरिमवगणे भागे हिदे मिच्छाइकि
आगच्छदि ? एवं मिच्छाइकिरासिमागमनं मणेयावहारिय गुणैऊम मागग्गहण कद ।
दुगुमादिकरण वचइस्सामो । तं जहा, सम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओ
सम्बजीवरासिउबरिमवगणो आगच्छदि । दुगुमिदसम्बजीवरासिणा सम्बजीवरा
ओवहिदे सम्बजीवरासिउबरिमवगणस्स दुमागो आगच्छदि । तिगुमिदसम्बजीव
सम्बजीवरासिपणे ओवहिदे सम्बजीवरासिउबरिमवगणस्स विमागो आगच्छदि ।

विकल्प दो प्रकारका है अघस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे
विकल्पको बतलाते हैं । यह हस्तप्रकार है—

त्रिरूपधर्माधर्म (प्रकृतमें) अघस्तनविकल्प संभव नहीं है क्योंकि
जीवरासिसे शुद्धराशि का प्रमाण अधिक है । जब यह रूप धर्मात् धनधर्मात् अघस्त
बतलाते हैं । शुद्धरासिसे संपूर्ण जीवराशि को गुणित करके जो संख्या व्यक्त उस
जीवराशि के धनमें भाग देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशि का प्रमाण आता है पर
संपूर्ण जीवराशि के प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशि का धन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण
राशि के उपरिम वर्ग का प्रमाण आता है । और फिर शुद्धराशि के प्रमाण का संपूर्ण
प्रमाण के उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशि का प्रमाण आता है ।
मिथ्यावृत्ति आती है इस बातको धनमें विविक्त करने पहले गुणा करके धन
ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६, शुद्धराशि १९, १६ × १९ = ३०४; ३

जीवराशि १६ का धन ४०९६ ÷ ३०४ = १३ मिथ्यावृत्ति

जब यह पर त्रिगुणाधिकविकल्पको बतलाते हैं । यह हस्तप्रकार है—

राशि के प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशि के धनको अपकर्तित करने पर संपूर्ण जीवरा
धन का प्रमाण आता है (४ १९ ÷ १६ = २६) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशि के धन
जीवराशि के धनको अपकर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग का
आता है (४०९६ ÷ ३२ = १२८) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशि के प्रमाणसे
राशि के धनको अपकर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग के प्र
माण आता है (४०९६ ÷ ४८ = ८५४) । हस्तप्रकार इसी विधिसे अब तक शुद्ध

संख्याजिगमिद्धि भाग द्विदे मिच्छाद्विरामी आगच्छदि । अथवा पुनरामिप्रदच्छदणपा
जदि संख्याजिगमिउत्तरिमग्गस्म अदच्छदणयमरिया इवति ता अदच्छदण छिप्पावमिद्धि
गमिपमाण मिच्छाद्विगमिणा एगत्तु स्वद्विदेगत्तुवमाण होदि । पुनो धुवगमिअद
च्छदणए सलागा वारुण संख्याजिगमिउत्तरिमग्ग अदच्छदण छिप्प एगत्तुमागच्छदि ।
पुनो तमगत्तु मिच्छाद्विरामिजिदेगत्तुवमाण भागे द्विदे मिच्छाद्विरामी आगच्छदि चि ।
अथवा धुवरासिणा संख्याजिगमिउत्तरिमग्ग गुणेऊण सदुत्तरिमग्ग भागे द्विद मिच्छा
द्विरामी आगच्छदि चि । केण कारणेण ? संख्याजिगमिउत्तरिमग्गण सदुत्तरिमग्ग भागे
द्विदे संख्याजिगमिउत्तरिमग्ग आगच्छदि । पुनो धुवरासिणा संख्याजिगमिउत्तरिमग्ग
भाग द्विद मिच्छाद्विरामी आगच्छदि चि । तत्तु मागद्वास्म अदच्छदणयमेवे रमिस्म

११ का जीवराशिने प्रमाण २६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादिप्रमाण छद्म जाता है ।

अथवा भूवराशिके अथच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गक अर्धच्छेदोंके
समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धार्धन्यसे छिन्न करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण
मिथ्यादि जीवराशिने एक एकके संज्ञित करके जो एक भाग होता है उतना होता है ।
अनन्तर भूवराशिके अथच्छेदको दायावरूपसंस्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्गके अथार्धन्यसे छिन्न करने पर एक जाता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यादि जीव
राशिने प्रमाणसंज्ञित करके छिन्न करने पर मिथ्यादि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—११ के उपरिम वर्ग ११ के अर्धच्छेद ११ का वरावर भूवराशि ११ के
अथच्छेद करने पर आठवां अथच्छेद ११ जाता है जो १ में मिथ्यादिके प्रमाण १३ के भाग
द्वे पर जो छद्म जाता है उसको वरावर है । पुनः इन ११ अथच्छेदोंको दायावरूप
११ के इतनी बार अथच्छेद करने पर ११ आता है । पुनः इन ११ का भाग देने पर १३
छद्म भाग है यही मिथ्यादिराशि है ।

अथवा भूवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको युजित करके जो तत्त्व
भाग उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर
मिथ्यादि जीवराशि आ जाती है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशि उपरिम वर्ग आता है । पुनः भूवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—संख्याजिगमिउत्तरिम वर्ग २६ संख्याजिगमिउत्तरिम वर्ग २६
का उपरिम वर्ग १३१।

$$\frac{26}{13} \times \frac{1}{1} = \frac{26}{13} = \frac{2}{1} = 2 \text{ मि}$$

इस भागद्वारे अथच्छेदप्रमाण एक राशिके अथच्छेद करने पर भी मिथ्यादि

उपरिमित्रियत्वा त्रिविधा, गहिदा गहिग्गहिदा गहिदगुणगारा यदि। तत्तम गहिद
वचदम्मासा। पुररामिणा सत्तवीररामिउत्तमिमग्ग माग हिद किमागच्छदि? मिच्छा
इहिगामी आगच्छदि। तत्तम मागग्गस्म अद्द-उत्तणयमत्तार रागिम्म अद्दच्छेदण फइ
मिच्छाद्दिरासी अर अरविद्धे। कग कारणण? पुररामिम्म अद्दच्छणयमत्तागा अदि
सत्तवीररामिअद्दच्छणयमत्तागाहि मग्गिमा सि पप्पमि गो धुररामि अद्दच्छ छिदिक्क
वग्गविदगसिपमाग मग्गआररामि मिच्छाद्दिरामिमा संहिदपमाग हादि। एवं हादि सि
काउण सत्तवीररामिअद्दच्छणय मन्नागवृद्धवज्ज गत्तवीररामिउत्तमिमग्ग अद्द उव
उिण्य सत्तवीररामी आगच्छदि। पुगा मि गहिदरामिणागहिदमत्तवीररामिणा उत्तमि

उपरिमित्रियत्वा तीन प्रकारका हैं गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिमित्रियत्वासे विनियोजित है—

धृक्का अथवाधिका संपूर्ण जीवरक्षिते उपरिमित्रियत्वासे माग देने पर कानिहा राशि
आती है।

समाधान—मिष्वाद्यदि जीवरक्षित आती है ($1 - \frac{1}{2} = \frac{1}{2}$)।

अथवाधिकासा मागदाहारे अतिसे अथच्छेद हो उत्तरीयार जीवरक्षित उपरिमित्रियत्वा
राक्षिते अर्धच्छेद करने पर मिष्वाद्यदि जीवरक्षित ही जा आती है।

उदाहरण—अथवाधिका १० है। इसमेंसे ५ के अथच्छेद ५ होते हैं। शेष ५ के
के बीच अथच्छेद पर ५ अधिक रहता है इसलिये ५ के $\frac{1}{2}$ अधिक ५ अथ
च्छेद हुए। अतएव अथवाधिका ५ के योग ५ के उत्तरीयार अथवा ५ + ५ पर अथच्छेद
करने पर ५ आ जाते हैं।

धृक्का—मागदाहाराक्षिते अथच्छेदप्रमाण अथवाधिका उपरिमित्रियत्वासे अर्धच्छेद करने
पर मिष्वाद्यदि राशि किम कारणसे आती है।

अथवाधिका अथच्छेदशत कार्य संपूर्ण जीवरक्षित की अथ छेददाहाराक्षितोंके बराबर
होती है यदि ऐसा प्रत्यक्ष कर दिया जाता है तो अथवाधिका अथवाधिकासे छिन्न करने
छोप रही हुई राक्षित प्रमाण संपूर्ण जीवरक्षितों में मिष्वाद्यदि राक्षितोंके अतिरिक्त करने पर जो
रहिये जाता है कतना होता है ($1 - \frac{1}{2} = \frac{1}{2}$)। इसप्रकार होता है इसलिये संपूर्ण
जीवरक्षितोंके अर्धच्छेदोंको अथवाधिकासे अथवाधिका करके संपूर्ण जीवरक्षितोंके उपरिमित्रियत्वासे
अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवरक्षित प्रमाण आ जाता है। अतएव मिष्वा-
द्यदि जीवरक्षित द्वारा उदाहरित संपूर्ण जीवरक्षितोंके प्रमाणसे ऊपर उदाहरण की हुई संपूर्ण जी-
रक्षितोंमें भाग देने पर मिष्वाद्यदि जीवरक्षित आती है।

उदाहरण—अथवाधिका ५ के अर्धच्छेद ५ के बराबर अथवाधिका के योग ५ के अर्ध
च्छेद करने पर ५ अथवा आते हैं। अतएव मिष्वाद्यदि प्रमाणसे अतिरिक्त जीवरक्षितोंके प्रमाण

सम्बन्धीयमिच्छा भाव हिंद मिच्छाद्विरामी आगच्छति । अथवा पुनरामिच्छाद्विरामयन
अदि सत्त्वावगमिउत्तरिमवगमस्त अद्वैतेद्वयमरिमा ह्यति ता अद्वैत छिन्नावमिच्छा
रामिपमाण मिच्छाद्विरामिणा एगस्व स्वदिदेगमवगमण होदि । पुनः पुनरामिच्छा
द्विरामयन सत्तागा फाळण सम्बन्धीवरासिउत्तरिमवगमे अद्वैते छिन्ने एगस्वमागच्छति ।
पुनो तमगस्व मिच्छाद्विरामिमाजिदेगमवगम भागे हिंदे मिच्छाद्विरामी आगच्छति चि ।
अथवा पुनरामिणा सम्बन्धीवरासिउत्तरिमवगम गुणकण तदुत्तरिमवगमे भागे हिंदे मिच्छा
द्विरामी आगच्छति चि । फेण कारणण ? सम्बन्धीवरासिउत्तरिमवगम तदुत्तरिमवगम भागे
हिंद सम्बन्धीवरासिउत्तरिमवगम आगच्छति । पुनो पुनरामिणा सम्बन्धीवरासिउत्तरिमवगम
भाग हिंद मिच्छाद्विरामी आगच्छति चि । तस्म मागहारस्म अद्वैतेद्वयममेवे रामिस्म

११ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्याद्विराम प्रमाण सप्त्य जाता है ।

अथवा ध्रुवराशिके अथच्छेद यदि सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्गक अथच्छेदोंके
समान होत है तो उत्तरोत्तर अथच्छेदोंके छिन्न करनेके अन्तर अथच्छेद राशिके प्रमाण
मिथ्याद्विरामयन पर एक वर्गको अन्तित करके जो एक भाग जाता है उतना होता है ।
अन्तर ध्रुवराशिके अथच्छेदोंको शब्दाकारके स्थापित करके सप्त्य जीवराशिके उपरिम
वर्गको अथच्छेदोंके छिन्न करने पर एक भाग जाता है । अन्तर उस एकछे मिथ्याद्विरामयन जीव
राशिके प्रमाणस मन्त्र एकके द्वारा अन्तित करने पर मिथ्याद्विरामयन जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—११ के उपरिम वर्ग ८ के अथच्छेद ८ बराबर ध्रुवराशि ११ के
अथच्छेद करने पर आन्वी अथच्छेद ५ जाता है जो १ में मिथ्याद्विरामयन प्रमाण १३ के भाग
देने पर जो सप्त्य जाता है उतनेके बराबर है । पुनः इन ८ अथच्छेदोंको शब्दाकार करके
१ ८ के इतनी बार अथच्छेद करने पर १ जाता है । पुनः १ में १ का भाग देने पर १
सप्त्य भाग है यही मिथ्याद्विरामयन है ।

अथवा ध्रुवराशिके द्वारा सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो अथ
भागे उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर
मिथ्याद्विरामयन जीवराशि आ जाती है क्योंकि, सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर सप्त्य जीवराशिका उपरिम वर्ग जाता है । पुनः ध्रुवराशिका
सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्विरामयन जीवराशि आती है ।

उदाहरण—सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्ग ८, सप्त्य जीवराशिके उपरिम वर्ग २८
का उपरिम वर्ग ६ है ।

$$\frac{28 \times 6}{28} = \frac{168}{28} = \frac{6}{1} = 6 \text{ मि}$$

इन भागद्वारेके अथच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अथच्छेद करने पर ही मिथ्याद्विरामयन

उपरिमरियता निविहा, गहिदा गहिदगहिद गहिदगुगगारा चदि। तत्थ गहिद
पत्तइम्मा। धुरगमिणा मत्तजीरगमिउपरिमरग माग दिदु किमागच्छदि? मिठा
इहिरामी आगच्छदि। तम्म मागदास्स ज उणयमच्चार समिम्म अदुच्छइयम कइ
मिच्छादिगसी चर अचिदुद। कग काणण? धुरगमिम्म अदुच्छइयममत्ता चदि
मत्तजीरगमिअदुच्छइयमत्तामाहि गरिमा नि घणति ता धुरगमि अदुच्छइय
दिदिउगु प्पाविदगमिपमाण मत्तजीरगमि मिच्छादिगमिमा गहिदपमाग हादि। एव हादि पि
काऊय मत्तजीरगमिअदुच्छइयम मत्तागभूदुदुउग मत्तजीरगमिउपरिमरगे अदुच्छइय
उिष्म मत्तजीरगमी आगच्छदि। पुया मि उाहिरापिणासोदुदुमत्तजीरगमिणा उपरिम

उपरिम विचय सीम प्रमाण है। गृहीत गृहीतगृहीत नीर गृहीतगुणकार। उनमेंसे
पहले गृहीत उपरिम विचयको दिखाने है—

श्रुति—अथवाचिना संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें माग वृत्त पर वर्तित। राशि
भाती है।

समाधान—मिष्याद्यपि जीवराशि भाती है (१ - ११ = १३)।

अथवाचिना व मागदास्स के अन्तर्गत अथउत्त हैं। इनकीकार जीवराशिसे उपरिमवचय
राशिसे अथउत्त करने पर मिष्याद्यपि जीवराशि ही जा जाती है।

उदाहरण—अथवाचि १ है। इसमेंसे १५ के अथउत्त ४ होते हैं। शेष ३,
के शेष अथउत्त पर ३ अधिक रहता है इसलिये १, १३ के १३ अधिक ४ अथ
उत्त हुए। अतएव जीवराशि १५ के यग २ १ के इनकीकार अथान् ४ + १३ पाए अथउत्त
करने पर १३ जा जाता है।

श्रुति—मागदास्सराशिसे अथउत्तप्रमाण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें अथउत्त करने
पर मिष्याद्यपि राशि किस कारणसे भाती है?

अथवाचिनी अथउत्तशब्द कार्य संपूर्ण जीवराशिनी अथ उच्छेदशक्तिकार्यसे बराबर
होती है। यदि ऐसा प्रमाण कर किया जाता है तो अथवाचिना अथउत्तकार्यसे छिन्न करके
शेष रही हुई राशिसे प्रमाण संपूर्ण जीवराशिसे मिष्याद्यपि राशिसे व्यक्त करने पर जो
छेष प्यता है उतना होता है (१५ - १३ = २)। इसप्रकार होता है इसलिये संपूर्ण
जीवराशिसे अथउत्तको दायमानपते स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गको
अथउत्तको बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण आ जाता है। अतएव मिष्या-
द्यपि जीवराशिसे अथ उच्छेद संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीव
राशिमें माग देने पर मिष्याद्यपि जीवराशि भाती है।

उदाहरण—जीवराशि १५ के अथउत्त ४ के बराबर जीवराशि के वर्ग २५ के अथ
उत्त करने पर १५ व्यक्त होते हैं। अतएव मिष्याद्यपिसे प्रमाणसे अथित जीवराशिसे प्रमाण

छेदणया मरंति । सम्प्रत्य दुग्धवादिफलं पि वक्ष्यम् । तदो वेत्तव्यं चारापकृष्या समया भवति ।

अद्वैतवधाराय गहिद वक्ष्यस्सामो । पुनरासिना सम्बन्धीवरासिउवरिमवग्गस्सु
परिमवग्ग गुणेत्थं तेण घनउवरिमवग्गे मागे हिदे मिच्छाश्चिरासी आग-
च्छदि । केन कारणेण ? सम्बन्धीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घनउवरिम
वग्गे मागे हिदे सम्बन्धीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुनो वि पुनरासिना
सम्बन्धीवरासिउवरिमवग्गे मागे हिदे मिच्छाश्चिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि
पि कङ्कु गुणेत्थं मागग्गहर्षं कद । तस्स मागहारस्स अद्वैच्छेदणपमेवे रासिस्स
अद्वैच्छेदण कदे वि मिच्छाश्चिरासी वेव अवचिह्ने । तस्स मागहारस्स अद्व
छेदणया केचिपा ? एगरूच विरलिय विगं करिय अप्पोप्यम्मत्तरासिना विगुणं

पर मागहार राशि के अर्थच्छेद होते हैं । सर्वत्र द्विगुणाधिकरणका भी कथन करना चाहिये ।
तब आकर द्विरूप वर्गघातका प्रकरण समाप्त होता है ।

अब अष्टमपद्याय अर्थात् घनघातमें पृथित उपरिम विक्षन्पको बतलाने हैं—
सुबराशि के ढाढ़ संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग के उपरिम वर्गको गुणित करके जो
फल आवे उसका जीवराशि के घन के उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्यदि जीवराशि
न्य आती है क्योंकि संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग के उपरिम वर्गका जीवराशि के घन के
उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग भ्रष्टा है । अनन्तर सुबराशिका
संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्यदि जीवराशि आती है । घनघातमें इस
प्रकार मिथ्याद्यदि जीवराशि आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण
किया है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१३}{१} \times \frac{१३}{१} \times \frac{२५३}{१३} = \frac{१३७७७२१३}{१३}$$

$$\frac{१३७७७२१३}{१} \div \frac{१३७७७२१३}{१३} = १३ \text{ मिथ्याद्यदि}$$

इस मागहार के अर्थच्छेदप्रमाण उक्त राशि के अर्थच्छेद करने पर भी मिथ्याद्यदि
जीवराशि ही न्य आती है ।

शंका — उक्त मागहार के अर्थच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका विरलन करके और उससे जो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि आवे उसे विगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण

अद्वन्द्वय एव मिच्छाद्विरासी आगच्छति । एदस्स भागहारस्स अद्वन्द्वयसत्ताया केविया ? सम्बन्धीवरासीदो उवरि दोष्मि वग्गहावाणि चडिदाणि चि दो रूपे विरुद्धि विगं करिय अण्णोण्णम्मत्तरासिरुवणेण गुणिदसम्बन्धीवरासिअद्वन्द्वयममेवा होत्तव अंतिमभागहारेण अधिया भवंति । एवं भागहारस्स तिगच्छेद्वय सत्ताया कात्तम सीहि सीहि सरूपेहि रासिम्मि भाग हिदे वि मिच्छाद्विरासी आगच्छति । एव चठवादि छेद्वयसत्तायाहि वि रासिम्मि छिन्नमाणे मिच्छाद्विरासी आगच्छति चि परुवेदम् । एव सरोज्जासंखेज्जावसि सु वग्गहापसु उवरि वचव्वं । एवरि भागहारच्छेद्वयमां सकलजमाये एवं सकलेद्वयाभो । तं ब्रह्मा, सम्बन्धीवरासीदो चडिद्वयमेववग्गसत्तायाभो विरुद्धि विगं करियण्णोण्णम्मत्तरासिरुवणेण सम्बन्धीवरासिच्छेद्वय गुणिदे भागहार

जीवप्राणि जाती है ।

प्रश्न—इस भागहारकी अर्धच्छेदशक्तिकार्य क्या होती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवप्राणिके ऊपर दो वगस्यान आकर वह भागहार उत्पन्न हुआ है इसलिये दोहा विरुद्ध करके भीर इस विरुद्धि राशिके प्रत्येक एकको दो कप करके परस्पर गुणा करनेसे जो संख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके अवशिष्ट राशिके साथ संपूर्ण जीवप्राणिके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो प्रमाण पाये उसे अंतिम भागहारसे अधिक करने पर अर्धच्छेदशक्तिकार्य होती है ।

उदाहरण— $2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 4 = 12$ पूर्ण और $\frac{1}{2}$ अधिक कप प्रमाणहारके कुल अर्धच्छेद होते हैं ।

इसप्रकार भागहारके अर्धच्छेदोंको शक्तिका करके तीन तीनवा राशिके भाग देने पर भी मिच्छाद्वि जीवप्राणि व्या जाती है । इसीप्रकार अतुल्य आदि छेद शक्तिकार्योंके द्वारा भी राशिके छिन्न करने पर मिच्छाद्वि जीवप्राणि जाती है ऐसा कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $\frac{258}{13}$ के $\frac{12}{13}$ के $\frac{22}{13}$ इसप्रकार २ अर्धच्छेद हैं अतः इसीप्रकार २५१ में ३ का भाग देने पर १३ छिन्न व्या जाते हैं ।

इसीप्रकार सत्ताया अस्तत्ताया और अव्यक्त वर्गस्यानोंके ऊपर भी कथन करना चाहिये । इसकी विवशता है कि भागहारके अर्धच्छेदोंका सफलता करके समय इसप्रकार सफल करना चाहिये । जहाँ उसीप्रकार कपीकरण करते हैं—

संपूर्ण जीवप्राणिके अंतर्गत वर्गस्यान ऊपर गये हैं उतनी वर्गशक्तिकार्योंका विरुद्ध करके भीर इस विरुद्धि राशिके प्रत्येक एकको दो कप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके दोह राशिके संपूर्ण जीवप्राणिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने

ॐ । तस्य भागहारस्त भद्र
 ण्णोण्णम्मत्तरासिणा णवगुण
 सञ्चत्थ भविददानसलागाओ
 १००० गुणिदसम्मजीवरासिच्छेदन
 गव्यत्थ दुगुणादिकरणं पि कायम् ।

रिभवगस्त अण्विमभागेण मिच्छाद्वि
 १००० तेन तस्मिन् चैव वगो भागे हिदे

जो भाग उक्त राशि के अन्धच्छेद करने पर भी

उक्त होंगे पर अन्धितम अर्धच्छेद १२३ होगा ।
 १ पर छम्प १३ मिथ्याद्वि राशि आती है ।
 कितने है ?

१२ और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
 जो सम्प भागे इसमेंसे एक कम करके होय राशि होय
 तब गुणित कर देने पर जो राशि भागे उतने उक्त

$$१२ - १ = १३ \times ४ = ५२$$

त ऊपर भागे तत्प्रमाण शाखाकाशेष विरचन करके और
 एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
 १ जो सम्प भागे इसमेंसे एक कम करके होय राशि को संपूर्ण
 १ कर दे । ऐसा करने पर घनाधमधारा में विपक्षित भागहारके
 १ घनाधमधाराके संख्यात अमंख्यात और अनन्त घगस्त्रानोंमें
 १ द्विगुणादिकरण भी कर लेना चाहिये । इसप्रकार करन पर
 १ होता है ।

म विष्कम्भको बतलाते हैं— संपूर्ण अंतरासि के उपरिम बगके
 जीवराशि का ऊपर इच्छित घगमें भाग देने पर जो भाग सम्प
 देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि आती है ।

१ २१ का इच्छित घग १५५३५ ।

$$\frac{१३}{१} = \frac{११३५}{१} + \frac{१५३५}{१३} = १३ मिथ्याद्वि$$

रूपेण गुणितसम्बन्धीवरासिच्छेदणमथा इति । उचरि सञ्चर्य दोरुवादीजमन्त्राणां
मन्त्रराशिणा त्रिगुणरूपेण गुणितसम्बन्धीवरासिच्छेदणमथा इति । एव संख्यमा-
संख्येनान्तरेण ज्ञेयम् । सञ्चर्य दुग्धादिकरणं कथम् । एव कद बहुपरुषा
समथा भवति ।

धनापणे गहिद वचस्तमा । धुराशिणा सम्बन्धीवरासिच्छेदणमथास्तुगणितमथा
गुणैरूपेण वच वचतवरिमथगस्तुवरिमथग गुणैरूपेण वच धनापणतवरिमथगो भागे हिदे
मिच्छन्तिद्वितीया आगच्छति । केन कारणेण ? वचतवरिमथगस्तुवरिमथगो धनापण
तवरिमथगो भागे हिदे वचतवरिमथगो आगच्छति । पुनो वि सम्बन्धीवरासिच्छेदणमथा
वरासुवरिमथगो धनापणतवरिमथगो भागे हिदे सम्बन्धीवरासिच्छेदणमथा आगच्छति ।
पुनो वि धुराशिणा सम्बन्धीवरासिच्छेदणमथा भागे हिदे मिच्छन्तिद्वितीया आगच्छति ।
एवमागच्छति चि कद गुणैरूपेण भागमाहण कद । तस्मात् भागहारस्तु अद्वैतमथे

जीवन्तान्ते अर्थच्छेदोक्तं गुणित करने पर ओ सख्या भागे उतने उक्त भागहारके अर्थच्छेद
होते हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 2 = 2 \times 2 = 4$ अर्थच्छेद, पर अन्तिम १ ही होमा ।

ऊपर सर्वत्र जो संख्या आदिपर परस्पर गुणा करनेसे ओ राशि उत्पन्न हो वसे
त्रिगुणित करने और वच त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवन्तान्ते
अर्थच्छेदोक्तं गुणित करने पर अर्थच्छेदोक्तं प्रमाण होता है । इसीप्रकार संपन्न अर्थच्छेद
और अन्तिम स्थानमें भी उगा देना चाहिये । सर्वत्र त्रिगुणाधिकरण भी करना चाहिये । इस
प्रकार करने पर धनचारा समाप्त होती है ।

अब धनापणपाठमें सूचित उपरिम विवरणको बतलाते हैं—धुराशिसे संपूर्ण
जीवन्तान्ते उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके ओ सख्या भागे इससे
जीवन्तान्ते धनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके ओ सख्या भागे इसका
धनापणके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यापति जीवन्तान्ति भवती है क्योंकि धनके
उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका धनापणके उपरिम वर्गमें भाग देने पर धनका उपरिम वर्ग भवता
है । फिर संपूर्ण जीवन्तान्ते उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका धनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
संपूर्ण जीवन्तान्ति उपरिम वर्ग जाता है । फिर धुराशिसे संपूर्ण जीवन्तान्ते उपरिम वर्गमें
भाग देने पर मिथ्यापति जीवन्तान्ति भवती है । धनापणचारासे इसप्रकार मिथ्यापति जीव
राशि भवती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अन्तर्गत भागका प्रमाण किया है ।

उदाहरण— $18^2 \times 18^2 \times 18^2 = 108168288$

$$\frac{108168288}{18^2} = 18 \text{ मिथ्यापति.}$$

राशिस्त अदृष्टेदण्य कदे वि मिच्छाद्विरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्त अदृष्टेदणया केविचा ? एगखुं विरलेत्तण विग करिय अण्णोण्णम्मत्थरासिणा णवगुण रूबूणेण सध्वजीवरासिच्छेदण्य गुणिदमेत्ता । उवरि सम्भत्थ चट्ठिद्वानसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णम्मत्थरासिणा षण्णगुणरूबूणेण गुणिदसम्भजीवरासिच्छेदण्यमत्ता भवंति । एव सखेज्जासरुज्जाणतेसु भेय्य । सम्भत्थ दुगुणादिकरण पि काय्य । एव कदे घणाघमपरूवणा समत्ता भवति ।

गहिदगहिद वचइस्सामो । सम्भजीवरासिउवरिभगगस्स अणतिममाणेव मिच्छाद्विरासिणा उवरि इच्छिदवगगे मागे हिदे ओ मागलद्धो तण तहि चेव वगो मागे हिदे

उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीवार उक्त राशि के अर्थच्छेद करने पर भी मिथ्याद्वि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके १८ अर्थच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्थच्छेद १.३ होगा । अतः इतनीवार उक्त माय राशि के छेद करने पर छप्प १३ मिथ्याद्वि राशि आती है ।

प्रश्न—उक्त मागहारके अर्थच्छेद कितने हों ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे भी से गुणा करके जो द्वय ध्ये उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष रहे उसे संपूर्ण जीवराशि के अर्थच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि आये उतने उक्त मागहारके अर्थच्छेद ह ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 3 = 9$

मागे सयत्त जितने स्थान ऊपर आये तत्प्रमाण शकाकामोंका विरलन करके और उस विरलित राशि के प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे भीसे गुणा करके जो द्वय आये उसमेंसे एक कम करके शेष राशि को संपूर्ण जीवराशि के अर्थच्छेदोंसे गुणित कर दे । ऐसा करने पर घणाघमधारायें विवक्षित मागहारके अर्थच्छेद आ जायेंगे । इसीप्रकार घणाघमधाराके संवधान अमभवात और अनन्त घगस्यामोंमें भी ऊगा जेना चाहिये । सयत्त द्विगुणादिकरण भी कर जेना चाहिये । इसप्रकार करने पर घणाघमधाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

अब पृथीतपृथीत उपरिम विवरणों बतलाते हैं—संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वगडे अनन्तिम मागरूप मिथ्याद्वि जीवराशि का ऊपर इच्छित वर्गमें माग देने पर जो माग छप्प आये उसका उही वर्गमें माग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग ५.१ का इच्छित वर्ग १५.११

$$\frac{5.1111}{1} - \frac{13}{1} = \frac{5.1111}{1} - \frac{13}{1} = \frac{5.1111}{1} - \frac{13}{1} = 13 \text{ मिथ्याद्वि}$$

मिच्छाद्विरासी आमच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमच्च रासिस्स अद्वच्छेदणए क्खे वि मिच्छाद्विरासी केव अबधिहुदे । तस्मद्वच्छेदणया कसिया ? मिच्छाद्विरासि अद्वच्छेदणएणूयत्तम्मन्निदरासिअद्वच्छेदणयमेवा । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयम्भ । वेरूपपरूज्जा गदा । अहुत्तं पत्तइस्सामा । सम्भजीवरामिणस्स अर्णत्तिममाणेण उवरि इच्छिद्वग्गो मागे हिदे ओ भागलद्धो वेण तम्मि केव पग्गे मागे हिदे मिच्छाद्विरासी आमच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदणए क्खे वि मिच्छाद्विरासी भागच्छदि वि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयम्भ । एवमद्वरूपपरूज्जा गदा । पणापणे पत्तइस्सामो । पणापणपट्टमवग्गमूलस्स अर्णत्तिममाणेव उवरि इच्छिद्वग्गो

उक्त भागहारके कितने अर्थच्छेद हैं उतनीबार उक्त राशिके अर्थच्छेद करने पर भी मिथ्यावृत्ति जीवराशि ही ब्यती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्थच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्थच्छेद $१\frac{१}{१२}$ होगा । अतः इतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर मिथ्यावृत्ति राशि १३ ब्यती है ।

शुद्धा—उक्त भागहारके अर्थच्छेद कितने हैं ?

समाधान—अिच राशिमें मिथ्यावृत्ति राशिअ माप दिया गया है उसके अर्थच्छेदोंमेंसे मिथ्यावृत्ति राशिके अर्थच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्थच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, संसंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी सम्या केना चाहिये । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें द्विकपवर्धनारात्री प्रकपणा समाप्त हुई । अब पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें अद्वकप अर्थात् घनघाराको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिके घनके अनन्तिम मापअ ऊपर दृष्टिगत वर्गमें माप देने पर जो सम्या आवे उसका उही वर्गमें माप देने पर मिथ्यावृत्ति जीवराशि ब्यती है ।

उदाहरण—अनराशि ४ ९९ का दृष्टिगत वर्ग १९७७७२१९ ।

$$\frac{१९७७७२१९}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१९७७७२१९}{१३} = \frac{१९७७७२१९}{१३} - \frac{१९७७७२१९}{१३} = १३ \text{ मिथ्यावृत्ति}$$

उक्त भागहारके कितने अर्थच्छेद हैं उतनीबार उक्त माज्य राशिके अर्थच्छेद करने पर भी मिथ्यावृत्ति जीवराशि ब्यती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २ अर्थच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्थच्छेद $१\frac{१}{२}$ होगा । अतः इतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर मिथ्यावृत्ति राशि १३ ब्यती है ।

इसीप्रकार संख्यात संसंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी सम्या केना चाहिये । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें घनघारात्री प्रकपणा समाप्त हुई । अब घनघनघारात्में पृथीत-पृथीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम मापअ ऊपर दृष्टिगत वर्गमें माप देने पर जो

मागे हिदे जो मागलद्धो तेण तम्हि चव वग्ग मागे हिदे मिच्छाश्चिप्रासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्दच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्दच्छेदण कदे वि मिच्छाश्चिप्रासी चव आगच्छदि । (एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु नेयय्य) । एव घणाघणवस्सणा गदा । गहिद गदि गद ।

गहिदगुभार वचइस्सायो । वेस्से सच्च्चीपरासिउपरिमवग्गस्स अणतिममागेण उपरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे जो मागलद्धो तेण तमेव वग्ग गुणेअण तस्सुरिमवग्गे मागे हिदे मिच्छाश्चिप्रासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्दच्छेदणयमच रासिस्स अद्दच्छेदण कदे वि मिच्छाश्चिप्रासी चव अवचिद्धे । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु नेयय्य ।

माग छय आवे उत्तवा उसी पगमे माग देने पर मिच्छाचि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वगमूळ २३२१४४;

$$\frac{२३२१४४}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{२३२१४४}{१३}, \quad \frac{२३२१४४}{१} - \frac{२३२१४४}{१३} = १३ मिच्छाचि.$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त माग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिच्छाचि राशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद $\frac{१}{१३}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त माग्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिच्छाचि राशि $\frac{१३}{१३}$ आती है ।

(इसीप्रकार संक्षेप असह्येय और अनन्त वगस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये) । इसप्रकार पुरीतपूरीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी प्रकृष्टता समाप्त हुई । इसप्रकार पुरीतपूरीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब पुरीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतसावे हैं—ठिकप वर्गभारामें संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तमें मागका ऊपर इच्छित पगमें माग देने पर जो भाग छय आवे उससे उसी वग्यराशिकी गुणित करके जो छय आवे उसपर उक्त वर्गराशिके उपरिम पगमें माग देने पर मिच्छाचि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वग २५३ का इच्छित वर्ग ६५१३६;

$$\frac{६५१३६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{६५१३६}{१३}, \quad \frac{६५१३६}{१३} \times \frac{२५}{१} = \frac{६५१३६}{१३}.$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त माग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिच्छाचि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके २८ अर्धच्छेद हाने हैं । अन्तिम अर्धच्छेद $\frac{१}{१३}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त माग्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिच्छाचि राशि $\frac{१३}{१३}$ आती है ।

इसप्रकार संक्षेप असह्येय और अनन्त वगस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार

आगच्छदि । तस्मात् मागहारस्मात् अद्भ्युदयमेवेति रासिस्मात् अद्भ्युदये कद् वि मिञ्छा
इतिरासी चेत् आगच्छदि । एव संस्तेनज्ञासंस्तेनज्ञानतेसु वे, यत् । यथाघणपरुषणा गदा ।

सासणसम्माइठिपहुडि जाव सजदामजदा ति दव्वपमाणेण
केवडिया ? पल्लिदोवमस्स असस्सेज्जदिमागो । एदेहि पल्लिदोवम-
मवहिरिज्जदि अंतोमुद्धत्तेण ॥ ६ ॥

एतत् ताव सासणसम्माद्विरासिस्स पमाणपुरुषेण बतइस्सामो । सासणसम्माइही
दण्यपमाणेण केवडिया ? पत्तिदेवमस्स असखेज्जदिमाणो । ऐषेकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागद्वारेके जितने मध्यच्छेद हैं उक्तनीवार उक्त मास्य राशिसे मध्यच्छेद करने पर भी मिथ्यारूपि जीवराशि ही जाती है।

उदाहरण—उक्त भागद्वारे ६८ भण्डारे होते हैं, जतः इतनीपार उक्त मजदमान पणिके भण्डारे करने पर मिथ्यापण राशि १३ भारी है।

इसीप्रकार संप्रदाय असंप्रदाय और अलग अलग स्थानोंमें भी खगल खेना चाहिये। इसप्रकार एतद्विगल्यकार अपरिम विकल्पमें बनापनप्रवृत्तता समाप्त हुई।

सामान्यसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सप्तसप्तत्यष्ट गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? पन्थावमरु अन्तर्मत्पातने भागमात्र है । इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तस पत्थोपम अपहृत होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यहाँ सासादनसम्पत्तिपि जीवराशिका प्रमाण बनमान है—

सासादनमभ्यगच्छि जीयराशिं द्रव्यप्रमाणं च अपेक्षां कृतवती ह । पस्यापमे
महंरयातये प्रागभावात् ॥

विशेषार्थ—आग अंकसंरक्षिते सासाधनसम्पत्ति अदि चार गुणस्थानवर्गी
जीवराशिका प्रमाण स्थानके सिये पर्योपमका प्रमाण १५३३ और सासाधनसम्पत्ति जीव
राशिका प्रमाण स्थानके सिये अपहारकामका प्रमाण ३२ कथित किया है। इसकाट नामा
इनसम्पत्तिके अपहारकाल ३२ का १५३३ प्रमाण पर्योपममें भाग देने पर सासाधन
सम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण ५४८ आता है जो कि पर्योपमक असकथानमें मागमात्र है।
अपरूपमा श्री हर्षप्रभार जान लेना आदिये।

પ્રશ્ન—યહાં રોજપ્રમાણ થીત જાસપ્રમાણથી અપેક્ષાને મી સામાજિકસમ્યગ્દરિ

वेरूपपरूषणा गदा । अद्वये वचस्सामो । घनस्त अन्तिमभागेण उरि इच्छिद्वग्गे भागे हिदे ओ मागसद्दो तेण तमेव वग्ग गुणैऊण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विहारासी आमच्छदि । तस्स मागहारस्त अद्वयेद्वययमये रासिस्त अद्वयेद्वय कदे वि मिच्छाद्विहारासी येव आगच्छदि । एव सन्नेन्नासयेन्नापसिसेतु येयव्व । अद्वयपरूषणा गदा । पचापण वचस्सामा । घणापणपदमवग्गमूलस्त अन्तिमभागेण उरि इच्छिद्वग्गे भागे हिदे ओ मागसद्दो तेण तमेव वग्ग गुणैऊण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विहारासी

पृथीतगुणकार अपरिम विकल्पमें द्विरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब अचरक धारामें पृथीतगुणकार अपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनके अन्तिम मागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो छप्प भाग्य उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके छन्द राशिका उक्त वर्गराशिके अपरिम वर्गमें भाग देने पर मिष्याद्यदि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—अन्तराशि ४ ९६ का इच्छित वर्ग २६७७७२१६।

$$\frac{26777216}{1} - \frac{1}{1} = \frac{26777216}{1}, \quad \frac{26777216}{16} \times \frac{26777216}{1} \\ = \frac{26777216}{16}, \quad \frac{26777216}{1} - \frac{26777216}{16} = 26 \text{ मिष्याद्यदि}$$

उक्त मागहारके अन्तिम अक्षरे हैं उतनीवार उक्त माग्य राशिके अक्षरे करने पर भी मिष्याद्यदि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ४४ अक्षरे प्रमाण उक्त राशिके अक्षरे करने पर मिष्याद्यदि राशि २६ छप्प आती है ।

इसीप्रकार सख्यात अक्षर्यात और अन्त रचनामें भी जग्य लेना चाहिये । इसप्रकार पृथीतगुणकार अपरिम विकल्पमें अचरक प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनापणधारामें उचीको बतलाते हैं—

घनापणके प्रथम वर्गमूलके अन्तिम मागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग छप्प भाग्य उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो छप्प भाग्य उसका उक्त वर्ग राशिके अपरिम वर्गमें भाग देने पर मिष्याद्यदि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनापणके प्रथम वर्गमूल २६२१४४ का इच्छित वर्ग ६८७१ ४७१७३६।

$$\frac{68714736}{1} - \frac{1}{1} = \frac{68714736}{1}, \quad \frac{68714736}{16} \times \frac{68714736}{16} = \frac{68714736}{16}, \\ \frac{68714736}{1} - \frac{68714736}{16} = 26 \text{ मिष्याद्यदि}$$

आगच्छति । तस्मात् मागहारस्तु अद्वन्द्वेदण्यमेवेति रासिस्म अद्वन्द्वेदण्य कदे वि मिञ्जा
इतिरासी चेत् आगच्छति । एव संख्येन प्राप्तं संख्येन ज्ञानतेषु ये, यच्च । घमाघण्यपहृषणा गदा ।

सासणमम्माइडिप्पहुडि जाव सजदामजदा त्ति दव्वपमाणेण
केवडिया ? पल्लिदोवमस्स असस्सेज्जदिमागो । एदेहि पल्लिदोवम-
मवहिरिज्जदि अंतोमुद्धत्तेण ॥ ६ ॥

एतत् ताव सासणसम्माप्तिद्वारासिस्स पमाणपत्तवण वचइस्सामो । सासणसम्माप्तिद्वारापमाणेण केवडिया ? पत्तिशेवमस्स असंखज्जदिमाणो । सुधकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागधारके जितने मध्यच्छेद हों उतनीबार उक्त भाग्य राशिके मध्यच्छेद करने पर भी मिथ्यादष्टि जीवपति ही भती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके १८ भयच्छेद होते हैं अतः इसीप्रकार उक्त भयमान पक्षिके भयच्छेद करने पर सिध्दाष्टि राशि १३ आती है।

इसप्रकार सप्यात असंप्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार पदार्थगुणकार उपरिक्त विकल्पमें घनाघनमरूपका समान्त हुई।

साक्षादनसम्पर्गदृष्टि गुणस्थानसे सेकर सपरासयस गुणस्थानतरु प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? पत्न्योपमके अर्मम्पातवें भागमात्र है । इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तस पत्न्योपम मपहत होता है ॥ ६ ॥

कर्मों के पहले यहाँ सासाधनसम्यग्दृष्टि अध्यापिका प्रमाण बनना है—

साक्षात्तसम्पत्तिं जीवराशिं द्रव्यप्रमाणं अपेक्षां चित्तनीं ह ? पश्योपमये
असंख्यातं भागमात्रं ह ।

विशेषार्थ—आगे अंकसंश्लिष्ट सासाइनसम्पत्ति अर्थात् चार गुणध्यानपूर्वक जीवराशिका प्रमाण मानेके लिये पर्योपमर्श प्रमाण १-५३६ और सासाइनसम्पत्ति जीव राशिका प्रमाण मानेके लिये अपहारका प्रमाण ३० कल्पित किया है। इसप्रकार सासा इनसम्पत्ति अन्वहारका ३२ का ६५३६ प्रमाण पर्योपमर्श मान देने पर सासाइन सम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण २-४८ माना है जो कि पर्याप्त अन्वहारमान माना है। अन्वहारका ही इसप्रकार जान लेना चाहिये।

पुंसा—यहां क्षेत्रप्रमाण और सामग्र्यापत्ती जपेरासे भी मागाइनमव्याहृति

१ आचार्यनमस्कृतं सत्यं-अप्राप्योऽप्युपभूयते नवप्रवृत्तारं वाचोवर्णनोदयान्तरिः।

४ मि १ विष्णु सायनकल्पविष्णुविरच्य द्वादशप्रश्नाः । प्रश्नाष्टकाद्विषयसम्बन्धे संक्षेपं भूम्ना ॥ अटी २५५

पञ्चमस्तोत्राभागात् ५१ स्तवपुस्तके । अं अं ५१ स्तवपुस्तके । इति स्तवपुस्तकम् ॥ ५१ ॥

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

साक्षात्सम्माद्विपरुषणा न परुषिदा ? न, एतत् मिच्छाद्विस्तिष्ठति तदि परुषेदन्वस्म
कारणमात्रा । किं तस्य कारण ? बुधदे—असंख्येयपण्यसि एष कथमप्यतो जीवरासी
सम्मादि चिन्तासंदेहविराकरणं स्वेच्छपमाणं बुधदे । आपविरादिस्तु सिन्धुतज्जीवे
अवेक्षित्य सन्वयस्म सम्प्रजीवरासिस्तु किं बोधेदो होदि, न होदि चिन्तासंदेह
विराकरणं स्वेच्छपमाणं परुषिन्नादि । न च धेदुस्तु कारणेस्तु एकं वि कारणमेतत्
समग्रं, अप्रवृत्तमादो । तद्वा स्वेच्छकालपरुषणा साक्षात्प्रादीर्णं गंधं न परुषिदा । एतत्

जीवराशिका प्रकल्प कर्त्तव्यं नहि किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और
काक्षप्रमाणकी अपेक्षासे प्रकल्प करनेका कारण या उत्पत्त्यकारण वहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके
द्वारा साक्षात्सम्प्रगृहि जीवराशिके प्रकल्प करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त
प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्सम्प्रगृहि जीवराशिका प्रकल्प नहीं किया ।

धृक्का—वहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिके प्रकल्प करनेका
क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेष्टी कोट्यमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है,
इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संवेदके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कल्पन किया जाता है । तथा
जागरित और चिह्नयमान जीवोंकी अपेक्षा व्ययसहित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है
या नहीं इसप्रकार उत्पन्न हुए संवेदके दूर करनेके लिये काक्षप्रमाणका प्रकल्प किया जाता
है । परंतु इन कारणोंसे वहाँ पर एक भी कारण संभव नहीं है क्योंकि वहाँ पर कोई भी
कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और काक्षप्रमाणके द्वारा साक्षात्सम्प्रगृहि
जीवराशिका प्रकल्प प्रथममें नहीं किया ।

विद्युत्कार्य—होद्यकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादि जीवराशिके
प्रमाणका प्रकल्प करते समय अनन्तार्थतादि नोसप्यिषिदस्तण्णिवि न प्रवृत्तिरिति कोट्य
इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिका काक्षकी अपेक्षा प्रमाण कहा है और स्वेच्छ
अनन्तार्थता कोणा इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है
अर्थात्प्रकार प्रकृतमें भी साक्षात्सम्प्रगृहि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और काक्षप्रमाणकी
अपेक्षासे कहना चाहिये । होद्यकारकी इस होद्यका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि
मिथ्यादि जीव अनन्तानन्त होते हैं अतएव उनका अक्षयपातप्रद्वशी कोक्षप्रमाणमें रहना
असंभव है ऐसी होद्य किर्त्तिका हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादि जीव-
राशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्रकल्प किया । दूसरे, मोक्षकी जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा
मिथ्यादि जीवराशिका व्यय तो निरंतर वास्तु है पर उनकी बुद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये
उनका जमाव हो जायगा ऐसी होद्य भी किर्त्तिका हो सकती है अतएव इसके परिहार
करनेके लिये काक्षप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादि जीवराशिका प्रकल्प किया कि अनन्तानन्त

मागहारपमाणमंतोसुहुचमिदि सासणसम्माइडिआदिरासिपमाणविसयणिण्णमुप्पायणइ परू
विदं । तं च अंतोसुहुचमणेयवियप्य, तदो एरियमिदि न ज्ञानिज्जदि । तस्य भिच्छय
यनपणिमित किंचि अद्यापरूखण कस्सामो । तं कथं ? असंखेज्जे समए भेत्तूण एया
भावलिया इवदि । तप्पाओगसखेउज्जावलियाओ वेत्तूण एगो उत्ताओ इवदि । सच
उत्तासे वेत्तूण एगो बोवो इवदि । सच योवे वेत्तूण एगो छवो इवदि । अठ्ठीस छवे
अट्ठउवं च वेत्तूण एगा पालिया इवदि । उरुं च—

भावडि असंखसमया सखेज्जावलिस्सुह उत्ताओ ।

सपुत्ताओ योवो सत्तयोवा छवो एक्खे ॥ ११ ॥

वत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यावृत्ति जीवराशि समाप्त
नहीं हो सकती है । परंतु साक्षात्तसम्बन्धवि जीवोंके संबंधमें इन दोनों
प्रदानोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है क्योंकि वे केवल पक्षोपमके
असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अतः उनकी ओकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी यह बात
नहीं कही जा सकती है। और साक्षात्तसम्बन्धवि जीव यद्यपि मिथ्यात्व गुण
स्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है फिर भी उपशमसम्बन्धवि जीवों-
मेंसे कहीं अनुपातसे साक्षात्त गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान
भाष भी निरंतर चालू है। इसलिये उनका अभाव हो आपण यह भी नहीं कहा जा सकता है।
इसप्रकार क्षेत्र और कस्सप्रमाणकी अपेक्षा साक्षात्तसम्बन्धवि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये
कोई कारण नहीं होनेसे एक प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धवि जीवराशिका कथन
नहीं किया।

साक्षात्तसम्बन्धवि भावि जीवराशिका प्रमाण कहते समय मागहारका प्रमाण जो
अन्तर्मुहूर्त कहा है वह साक्षात्तसम्बन्धवि भावि राशियोंके प्रमाण विषयक निर्वचके उत्तर
करनेके लिये कहा है। परंतु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है इसलिये प्रश्नमें इतना
अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है यह नहीं जाना जाता है। इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें
निश्चय उत्तर करनेके लिये ओकेमें काछका प्रकरण करते हैं।

संक्षेप—वह काछप्रकरण किसप्रकार है ?

समाधान—असंख्यात समयकी एक भावकी होती है। ऐसी तथोम्य संख्यात
भावविषयोका एक उच्छ्वास होता है। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है। सात स्तोकोंका
एक खण होता है, और साठे अष्टादश खणोंकी एक मासी होती है। कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक भावकी होती है। संख्यात भावविषयोंके समूहको एक उच्छ्वास
कहते हैं। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक खण होता है ॥ १२ ॥

सासणसम्माश्रितिरूपकया न परूविदा ? न, एत्थ मिच्छाश्रितस्तिव तदि परूवदणस्स कारणाभावा । किं तत्थ कारणं ? बुधदे—असंखेज्जपएसिण साए कधममंतो जीवरासी सम्मादि पि आदसंदेहविराकरणहुं खेचपमाण बुधदे । आपविरहिदस्स सिज्जंतजीवे अवेषितप सम्भयस्स सम्भजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, व होदि पि आदसंदेह विराकरणहुं काउपमाण परूविद्वदि । न च एदेसु कारणेसु एक्कं पि कारणमेत्थ संभवह, अपुवउमादो । तम्हा खेचकाउपरूपकया सासणादीय गथे न परूविदा । एत्थ

जीवराशिका प्रकल्प क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्याएँ जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और काउप्रमाणकी अपेक्षासे प्रकल्प करनेका कारण या इसप्रकार वहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिके प्रकल्प करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रकल्प नहीं किया ।

शुद्धा—वहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्याएँ जीवराशिके प्रकल्प करनेका क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेशी शोकमें अन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कल्प किया जाता है । तथा व्यापकित और सिद्धवमान जीवोंकी अपेक्षा व्यापकित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं इसप्रकार उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये काउप्रमाणका प्रकल्प किया जाता है । परंतु इन कारणोंमेंसे वहाँ पर एक ही कारण संभव नहीं है क्योंकि वहाँ पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और काउप्रमाणके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रकल्प प्रत्यक्ष नहीं किया ।

विश्लेषार्थ—शोकप्रकारका कहा है कि जिसप्रकार वहाँके मिथ्याएँ जीवराशिके प्रमाणका प्रकल्प करते समय अर्थताजंताहि व्येसपिप्रितस्सपिचीहि व ववदितंति काउप्रमाण इस सूत्रके द्वारा मिथ्याएँ जीवराशिका काउप्रमाण अपेक्षा प्रमाण कहा है और क्षेत्रप्रमाण अर्थताजंता जोगा इस सूत्रके द्वारा मिथ्याएँ जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण अपेक्षा प्रमाण कहा है इसीप्रकार प्रकृतमें भी साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और काउप्रमाणकी अपेक्षासे कहा जाहिये । शोकप्रकारकी इस शोकका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्याएँ जीव अन्तःप्रमाण होते हैं अतएव उनका असंख्यातप्रवेशी शोकप्रकारमें रहना संभव है ऐसी शोक किसीको हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्याएँ जीवराशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्रकल्प किया । दूसरे, शोकको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्याएँ जीवराशिका व्याप तो निरंतर बाध है पर उनकी बुद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये उनका अभाव हो जायगा ऐसी शोक भी किसीको हो सकती है अतएव इसके परिहार करनेके लिये काउप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्याएँ जीवराशिका प्रकल्प किया कि अन्तःप्रमाण

सपमाण पात्रदि । एकवीससहस्र-छत्सयमेतपाणेहि सवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुन एगलच्छ-तेरहसहस्र-णतदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पच्चिन्माणं सवच्छरियाण कात्तववहारो कर्षं घडदे ? ण, केवलमासिद्विबसमुच्चोहि समापदिनस मुच्चम्मुरगमादो । एव परुषिदमुच्चुत्तसासे ठेठण तत्थ एगो वस्सासो भेत्तमो । संखेज्जावलिपाहि एगो वस्सासो निष्फज्जदि चि सो वस्सासो संखेज्जावलिपाओ कयाओ । तत्थ एगमावलिप धेनुष अंसखेज्जेहि समएहि एगावलिपा होदि चि अंसखजा समया कायन्ना । तत्थ एगसमए अबधिदे सेसकालपमाण भिण्णमुच्चो उच्चदि । पुनो वि अवरेगे समए अबधिदे सेसकालपमाणमंतोमुच्च होदि । एव पुनो पुनो समया अवयेयन्ना जाव वस्सासो पिठिदो चि । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुच्च वेव होइ । एव सेसुत्तासे वि अवयेयन्ना आवेगावलिपा सेसा चि । सा आवलिपा वि

गुणनफल भावे उसमें सात कम भी लौ बर्षोंत् माठसी तेरानवे भीर मिछाने पर छत्रमें कहे गये मुहूर्तके उच्छ्रमसोंका प्रमाण होता है । इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्रम सोंका प्रमाण सूर्यविक्ष है । यदि सातसौ बीस बर्षोंका एक मुहूर्त होता है इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इन्हींस हजार छह सौ बर्षोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन बर्षोंत् महोरारका प्रमाण होता है । किन्तु यहाँ आगमानुसृत कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार भीर एक सौ नववे उच्छ्रमसोंके द्वारा एक दिन बर्षोंत् महोरार होता है ।

संका—इसप्रकार बर्षोंके द्वारा दिनसके विषयमें विचारको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके काव्यप्रकार कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि केवलीके द्वारा कथित दिन भीर मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन भीर मुहूर्त माने गये हैं इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्रमसोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्रमस ग्रहण करना चाहिये । उरवात भावस्थितोंसे एक उच्छ्रमस निष्पन्न होता है इसलिये उस एक उच्छ्रमसकी संख्यात भावस्थियां बना लेना चाहिये । उन भावस्थियोंमेंसे एक भावस्थीको ग्रहण करके, अंतख्यात समयोंसे एक भावस्थी होती है इसलिये उस भावस्थीके अंतख्यात समय कर लेना चाहिये ।

यहाँ मुहूर्तमेंसे एक समय निश्चाय लेने पर दोष काटके प्रमाणको मिश्रमुहूर्त कहते हैं । उस मिश्रमुहूर्तमेंसे एक समय भीर निश्चाय लेने पर दोष काटका प्रमाण अन्तमुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्रमसके उत्पन्न होने तक एक एक समय निश्चाय लेने जाता चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काट भी अन्तमुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार जब तक भावस्थी उत्पन्न नहीं होती है तब तक दोष रहे हुए एक उच्छ्रमसमेंसे भी एक एक समय कम करते जाता चाहिये । ऐसा करते हुए जो भावस्थी उत्पन्न होती है उसे मा अन्तमुहूर्त कहते हैं ।

ਅਫ਼ੀਸਰਸ਼ਰਫ਼ਾ ਜਾਨੀ ਕੇ ਜਾਨਿਧਾ ਮੁਹਿਤੋ ਦੁ ।

एगस्मएण हीणो मिण्णमुत्तो मणे सेसं ॥ १४ ॥

अद्वयस्य वयस्यस्य य निजस्य अद्वयस्य ।

उरसासो जिस्सासा एगो पाजो सि बाहियो एसो ॥ १५ ॥

तिग्णि सवस्ता सुच य समाग्नि तेहचरि च उस्तासा ।

एगो होदि सुखचो सधसि चेर मण्ड्याण^१ ॥ १५ ॥

सचसयहि शंसुचरोहि पण्येहि एगो सुद्धो होदि सि केवि मर्जति, पाप्पपुरि
सुस्सासे दह्म पण्य चह्वे । कुदो ? केवन्निमासिदत्तादो पमाणभूदेण अण्णेण सुचेण
सह विरोह्मादो । कव विरोहो ? अणेद चरहि गुणिय सन्न-व्यवसद पक्खिपे सुपुत्तसा

साथे जड़तीस खरोंकी एक नाखी होती है और दो नाखियोंका एक मुहूर्त होता है । तथा मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर मिश्रमुहूर्त होता है और होय जहाँत दो तीन बारि समय कम करने पर अन्तमुहूर्त होते हैं ॥ ३५ ॥

जो सुखी है, व्यक्तस्वरहित है और रोगाधिक्य विन्नासे मुक्त है, ऐसे प्राणीके खासो अंगुलको एक प्राण कहते हैं, ऐसा विवेकपूर्वकमे कहा है ॥ १५ ॥

समी मनुष्योंके बीच हजार सालकी तेइसर बन्धुसौता एक छुट्ट होवा है । १११

कितने ही व्यक्तार्थ छावली नीस प्रयोगोंका एक सुवर्त होता है। ऐसा कहते हैं। परंतु प्राकृत वर्णों रोमानिसे रहित काल मनुष्यके लक्ष्मणोंके देखते हुए उन भाषाओंका इस प्रकार कथन करना उचित नहीं होता है क्योंकि, जो केवली भाषित अर्थ होनेके कारण प्रभाव है ऐसे कथ्य सूत्रके कथनके साथ उक्त कथनका विरोध आता है।

प्रश्न—सुनके कयनसे बरत कयनमें कैसे बिरोध आता है ?

समाधान—क्योंकि ऊपर कहे गये सावसी बीच शर्जोंके बारेसे गुना करके दो

[illegible]

१ बी बी. ५ ४ डी हास्य कथनग्रन्थस्य निरुपस्थितस्तु यत्तु। एते कश्चिन्नमस्ते नृप पात्रे वि
ह्वले। अ. ३ १२४ म्हा. ३ पृ. ५

१ आत्मनश्चैतन्मत्तमुक्तं प्रमाणं तस्मादपि निमित्तवशादेति । ननु पूर्वार्थे च ॥ यो जी. की म. यी-
२५ टिमिन काला कय न कया देहधरि न काला । एष धृष्टी अविनी लनेहि अनकलाहि । अ. ५
३४ म्या. म. प. ५

सप्रमाणं पावति । एकवीससहस्र-छत्सयमेवपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलच्छ-तेरहसहस्र-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्यविदम्भाणं सवच्छरियाण कालववहारो कथं भइदे ? ण, केवलिसासिदिविसमुत्तुचहि समापदिवस मुत्तुचम्भुवगमादो । एव परुविदमुत्तुपुस्तासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्तासो भेत्तव्वो । संसेज्जावलिपाहि एगो उस्तासो णिप्फज्जहि चिं सो उस्तासो संसेज्जावलिपाओ कयाओ । तत्थ एगमावलिप वेत्तुण असंसेज्जेहि समएहि एगावलिपा होदि चिं असंसेज्जा समया कायव्वो । तत्थ एगसमए अवभिदे सेसकालप्रमाणं विप्पमुत्तुचां उचदि । पुण वि अवसंगं समए अवभिदे सेसकालप्रमाणमंतोमुत्तुच होदि । एव पुणो पुणो समया अवनेयव्वो आव उस्तासो णिदिदो चिं । तो वि सेसकालप्रमाणमंतोमुत्तुच चेव होइ । एवं सेसुस्तासे वि अवनेयव्वो ज्ञेयगावलिपा सेसा चिं । सा आवलिपा वि

गुणतत्त्व भावे जसमें सात कम नी ली अर्थात् ब्याठसी तेरानवे और मिसाने पर सत्रमें कह गये मुहूर्तके उच्छ्रमसोंका प्रमाण होता है इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्रम सोंका प्रमाण सत्यविक्रम है । यदि सातवीं बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इतीस हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् महोदयका प्रमाण होता है । किन्तु यहाँ आगमातुल्य कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार और एक सौ नवने उच्छ्रमसोंके द्वारा एक दिन अर्थात् महोदय होता है ।

संक्षेप—इसप्रकार प्राणोंके द्वारा जिसके विषयमें विचारके प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कसम्प्यवहार कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं इसलिये उपर्युक्त कोई शेष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्रमसोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्रमस ग्रहण करना चाहिये । संख्यात आशक्तियोंसे एक उच्छ्रमस निष्पन्न होता है इसलिये उस एक उच्छ्रमसकी संख्यात आशक्तियां बना लेना चाहिये । उन आशक्तियोंमेंसे एक आशक्तिको ग्रहण करके, संख्यात समयोंसे एक आवली होती है इसलिये उस आशक्तिके संख्यात समय कर लेना चाहिये ।

यहाँ मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर दोष काखके प्रमाणको मिथ्यमुहूर्त कहते हैं । उस मिथ्यमुहूर्तमेंसे एक समय और निकाल लेने पर दोष काखका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्रमसके उत्पन्न होने तक एक एक समय निकालते जाना चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काम भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार जब तक आवली उत्पन्न नहीं होती है तब तक दोष रहे हुए एक उच्छ्रमसमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो आवली उत्पन्न होती है उसे भा अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

अतोऽमुचमिदि मण्यदि । तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि आवलियमिदि
मागे हिदे अ भागसद्धं व असज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अतो
मुचमेव । असज्जदसम्माइडिअवहारकालमवरण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे
सम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । त संखेज्जरूपेहि गुणिदे सासज्जसम्माइडिअ
वहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे हि संज्जदासज्जदअवहारकालो
होदि । ओषसासज्जसम्माइडि-सम्माभिच्छाडि संज्जदासज्जदाण अवहारकालो असंखेज्जदि
भागो ण होदि, असंखेज्जदिवलियाहि होद्व । त कुरो जण्ठे ? ' उवसमसम्माइडि
बोवा । उवससम्माइडि असंखेज्जगुणा । वेदससम्माइडि असंखेज्जगुणा ' ति
अप्पावहुगुणुसारो मण्ये । त जहा, उवससम्माइडिअवहारकालेण ताव संखेज्जद
वियमेवेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेवेण वा होद्व, अण्णहा मज्जुस्सेसु असंखे

तदन्तर दृष्टी आवलीके असंख्यातवै भागका उक्त आवलीमें माप देने पर ओ
ईय सध्य भागे उतना असंखतसम्पन्नदि जीवोंके प्रमाणके निष्कर्षके विषयमें अवहारकालका
प्रमाण होता है । यह काल जी अन्तर्मुद्रितवर्माण ही है । असंखतसम्पन्नदिविषयक अवहार
कालके दृष्टी आवलीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर सम्पन्निष्पन्नदिविषयक
अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासाद्वसम्पन्नदिविषयक अवहार
काल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर सप्ततासंखतविषयक
अवहारकाल होता है । इसप्रकार ओ पूर्वोक्त बार गुणस्थानवाले जीवोंके अवहारकाल वत
किया है इसमें सासाद्वसम्पन्नदि, सम्पन्निष्पन्नदि और सप्ततासंखतविषयक सामान्य
अवहारकाल आवलीके असंख्यातवै भाग नहीं होता किन्तु इसे असंख्यात आवलीप्रमाण
होना चाहिये ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— उपर्युक्तसम्पन्नदि जीव थोड़े होते हैं सायिकसम्पन्नदि जीव इनसे
असंख्यातगुणे होते हैं और वेदसम्पन्नदि जीव इनसे असंख्यातगुणे होते हैं इस अस्य
बहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे इस बात जानी जाती है । इसका स्पष्टीकरण
इसप्रकार है—

सायिकसम्पन्नदियोंका अवहारकाल संख्यात आवली अवस्था आपलीके संख्यातवै
भागप्रमाण होना चाहिये । यदि ऐसा न माना जाये तो मनुष्योंमें असंख्यात सायिकसम्पन्नदि

१ असज्जदसम्माइडिगुणे उवसोवा अवहारकालाडि । उवसइडिगुणा । वेदसइडि-
गुणा । अतोऽमुचमिदि मण्यदि । तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि आवलियमिदि
मागे हिदे अ भागसद्धं व असज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अतो
मुचमेव । असज्जदसम्माइडिअवहारकालमवरण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे
सम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । त संखेज्जरूपेहि गुणिदे सासज्जसम्माइडिअ
वहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे हि संज्जदासज्जदअवहारकालो
होदि । ओषसासज्जसम्माइडि-सम्माभिच्छाडि संज्जदासज्जदाण अवहारकालो असंखेज्जदि
भागो ण होदि, असंखेज्जदिवलियाहि होद्व । त कुरो जण्ठे ? ' उवसमसम्माइडि
बोवा । उवससम्माइडि असंखेज्जगुणा । वेदससम्माइडि असंखेज्जगुणा ' ति
अप्पावहुगुणुसारो मण्ये । त जहा, उवससम्माइडिअवहारकालेण ताव संखेज्जद
वियमेवेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेवेण वा होद्व, अण्णहा मज्जुस्सेसु असंखे

ज्वलत्तसम्मोइड्डीण समवप्पसगादो । सत्तेज्जावलिपमागहाणुप्यायनविहाण वुचदे ।
 त अहा, वासपुचत्तमतरेय जइ साहम्मदेवसु सत्तेज्जाण खइयसम्मोइड्डीणमुप्पची
 तम्मइ तो सत्तेज्जपल्लिदावमेसु किं लमामो चि पमाणेण फल्लगुणिदिच्छाए
 ओइडिदाए सत्तज्जावलिपमाग पल्लिदावम खडिय तत्तेगखडमेवा खइयसम्मोइड्डी
 होति । उवसमसम्मोइड्डीणमवहारकासो पुण असत्तेज्जावलिपमेचो, खइयसम्मोइड्डी
 हिंवा तसि असत्तेज्जगुणहीणत्तण्णाहाणुवचचीदो । सासणसम्मोइड्डी-सम्मोमिच्छा
 इड्डीण पि अवहारकासो असत्तेज्जावलिपमेचो, उवसमसम्मोइड्डीहिंवा तसिमसत्तेज्ज
 गुणहीणत्तण्णाहाणुवचचीदो । 'एदेहि पल्लिदोवमवहरिदि अतोमुहुत्तेय कासव' इति
 सुचेण सह विरोहा वि न होदि, सामीप्यार्थं वर्तमानान्तःशब्दग्रहणात्' । मुहूर्तस्वान्तः

पौकी उत्पत्तिका प्रसंग व्या जायगा । अब हमने संख्यात भाषाईरूप मागहारके उत्पन्न करनेकी
 विधि कहते हैं । यह इसप्रकार है—

एक पथपुयत्तके अनन्तर यदि चौधमं देवोंमें सचपात सायिक सम्मगदियौकी
 उत्पत्ति प्राप्त होती है तो सचपात पस्योपमकी स्थितिबाबे देवोंमें कितने सायिक सम्मगदियौ
 जीव प्राप्त होंगे इसप्रकार नैराशिक विधिसे अनुसार पञ्चराशि संख्यातको इच्छावाशि सचपात
 पस्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आये उसमें प्रमाणवाशि वर्गपुयत्तका माग देने पर अर्थात्
 सचपात भाषाईरूपों पस्योपमके लटित करने पर जो माग लब्ध आये उसमें एक पक्ष प्रमाण
 सायिक सम्मगदियौ जीव होते हैं । उपशमसम्मगदियौका अवहारकास तो असचपात व्यावकीप्रमाण
 है, अन्यथा उपशमसम्मगदियौ जीव का विकसम्मगदियौसे असचपातगुणे हीन बन नहीं सकते
 हैं । उदीप्रकार सासाधनसम्मगदियौ भीर सम्मगिच्छादियौ जीवोंका भी अवहारकास असचपात
 व्यावकीप्रमाण है अन्यथा उपशमसम्मगदियौसे उक्त दोनों गुणस्थानबाबे जीव असचपातगुमे
 हीन बन नहीं सकते हैं । इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण
 काससे पक्षोपम अपहृत होता है इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका
 विरोध भी नहीं आता है क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर् शब्द आया है उसका
 सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो वसे
 अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पस्योपममें माग देने पर जो लब्ध आये उसका सासाधन
 बाबे बार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानबाबे जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका
 अभिप्राय है । पर दीक्षाकार भीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासाधन सिध भीर
 देशविरतके अवहारकासका प्रमाण असचपात भाषाईरूपों है । अब यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पल्लिदोवमवहरिदि अतोमुहुत्तेय कासवेति ह्येव वि न विपरीतं तस्य अवधारणिकत्वमप्येव ।

अतोमुदुत्तमिदि मण्णदि। तदो मवरेण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण तम्हि भावसियम्हि माये हिदे अं मागच्छत्त असंखदसम्माइङ्खिअवहारकालो होदि। एसो वि कालो अतो-मुदुत्तमेव। असंखदसम्माइङ्खिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण गुणिद सम्मामिच्छाइङ्खिअवहारकालो होदि। तं संखेज्जरूपेहि गुणिदे सासणसम्माइङ्खिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिमाणेण गुणिद हि संखदासंखदअवहारकालो होदि। ओमसासणसम्मादिङ्खि-सम्मामिच्छाइङ्खि संखदासंखदाण अवहारकाला असंखेज्जदि मायो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदर्हं। त इदो यण्णदे? 'उवसमसम्माइङ्खी घोवा। उइयसम्माइङ्खी असंखज्जगुणा। वेदयसम्माइङ्खी असंखेज्जगुणा' वि अप्पावहुगसुत्तादो ण्णदे। त जहा, उइयसम्माइङ्खीमवहारकालेय ताव संखेज्जाव सियमेवेण आवलियाए संखेज्जदिमाणेवेण वा होदर्हं, अण्णहा मज्झस्तेसु असंखे

तद्वन्तर वृत्तरी आबलीके असंखवातर्त्त मागच्छ उक्त आबलीमें माग देने पर जो माग सम्म आये उतना असंखतसम्पत्ति जीवोंके प्रमाणके निराकरणके विषयमें अवहारकालक प्रमाण होता है। यह काल भी मृतमुदुत्तप्रमाण ही है। असंखतसम्पत्तिविषयक अवहार कालके वृत्तरी आबलीके असंख्यातर्त्त भाषणे गुणित करने पर सम्पत्तिप्याप्तविषयक अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासाङ्गसम्पत्तिविषयक अवहार काल होता है। इसे आबलीके असंख्यातर्त्त मागले गुणित करने पर सप्ततासंखतविषयक अवहारकाल होता है। इसप्रकार जो पूर्वोक्त चार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाल बत क्षमा है उसमें सासाङ्गसम्पत्ति सम्पत्तिप्याप्त और सप्ततासंखतविषयक सामान्य अवहारकाल आबलीके असंख्यातर्त्त माग नहीं होता किन्तु उसे असंख्यात आबलीप्रमाण होना चाहिये।

संका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—उपग्रामसम्पत्ति जीव जोड़े होते हैं सायिकसम्पत्ति जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं और वेधकसम्पत्ति जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं इस सम्प-त्तिके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे उक्त बात जानी जाती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

सायिकसम्पत्तिपौत्र अवहारकाल संख्यात आबली अथवा आबलीके संख्यातर्त्त मागप्रमाण होना चाहिये। यदि ऐसा न माना जाये तो मनुष्योंमें असंख्यात सायिकसम्पत्ति

१ अथमरुतप्राप्तिद्वारेण कल्पयन्ता अवहारकालमिदं। अथमरुतमिदं अवहारकालं। वेदकाल-रिदं अवहारकालं। जी इ. अ. व. १५१ ए तदव-तर (वीरकविशालतर) काविकमरुत तस प्रतिविगिरावकालीकवा अथमरुतवीरकवेवहारकाल। एत अथ विमरुत एतुमवहारकालोऽन्येवदुत्तवाच। व वि २।

विकासगोचरमस्तिरूपं जम्हा पमाणपरूवण कर्दं तम्हा वडिहाणीओ नत्थि चि मागहार परूवण पडदि चि । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदोवमे माग हिदे सासणसम्मा इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइडिण पमाणपरूवण वगवूवणे खडिदं भाविदं विरलिदं अवहिदं-पमाण-कारण णिरुत्ति-वियप्पेहि वचइस्सामो । उ अहा—

पडिदोवमे असंखेज्जावलिपमेचखंडे कर तत्थ एगखंड सासणसम्माइडिरासि पमाण होदि । खडिदं गद । असंखेज्जावलिपहि पडिदोवमे भागे हिदे अ मागखंडं तं सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । भाविदं गद । असंखेज्जावलिपओ विरलेकण एकेइस्स खंडस्स पडिदोवम समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्मा इडिरासी होदि । विरलिदं गद । सासणसम्माइडिअवहारकाल सलागभूदं ठवेकण

सम्यग्गहि अदि राशिपोंके विच्छेदविषयक उरट्ट सचयक अवश्य लेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अवेसासे वृद्धि और हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बन जाता है ।

सासाधनसम्यग्गहिविषयक अवहारकाकण पस्योपममें भाग देने पर सासाधनसम्यग्गहि जीवराशि आ जाती है ।

अब वागस्थानमें लघ्वित भाजित, विरलित, अवहत, प्रमाण कारण निष्कृति और विरलितके द्वारा सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात व्यापकोंके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पस्योपमके राण्ड करन पर उनमेंसे एक राण्डके बराबर सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार लघ्वितका बचन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्योपमप्रमाण १ ५३१ के सासाधनसम्यग्गहिविषयक अवहारकाक ३२ प्रमाण राण्ड करने पर २०४८ आते हैं । यही सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण है ।

असंख्यात व्यापकोंका पस्योपममें भाग देने पर जो भाग क्षम्य आये उतना सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका बचन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१० १३१ - ३२ = २०४८ सासाधनसम्यग्गहि.

असंख्यात व्यापकोंको विरलित करके उस विरलित राशिमें प्रत्येक एकक प्रति पस्योपमका समान राण्ड करके देयकपसे देने पर उनमेंसे एक राण्ड प्रमाण सासाधनसम्यग्गहि जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका बचन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ २०४८ २४८ इसप्रकार ३२ बार विरलित करके
१ १ १ २-१३१ को एक विरलित राशिमें

प्रत्येक एक पर समानरूपसे देने पर २०४८ सासाधनसम्यग्गहि राशि आ जाती है ।

सासाधनसम्यग्गहिविषयक अवहारकाकको शमाचारपसे व्यापित करके पस्योपममेंसे

अन्तर्मुहूर्तः । इत्यः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादिस्वात् । कुत ओत्वम् ? 'एष छत्र समाप्ता' इत्येतस्मात् । यदेव सनककुमारदिगुणपडिबन्नाजमबहारकासाण पि असंखन्नाबलियर्ष पसाहिर्य । एतय शोदगा मणदि । एदात्रा रासीओ अबहुिदाओ ण होति, हाणिराहुिसुद पादो । ण च हाणिराहुीओ पारिष सि भोर्तु सकिज्जेदे, आयम्भयाभावे मोक्खामावाशो अपादिअपज्जवसिदसासणादिगुणकासाणुवल्लोदो च । अदि एदाओ रासीओ अबहुिदाओ तो एद मागहारा पडंति, अप्पहा पुण च पडंति । अप्पबहुिदरासिभायहरेणापि अप्पबहुिदसरूपेकेव अबहाणा होति । एतय परिहारो बुचदे— सासणसम्माइहिरासीणमुक्खस्ससचय

है कि एक ठाँव गुजरगानोंकी संख्या जानेके लिये यदि अबहारकासाण प्रमाण असंख्यात आबलिपा मान लिया जाता है तो सूत्रमें आवे हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मागहारके साथ एक असंख्यात आबलिप्रमाण मागहारका विरोध प्यता है क्योंकि, उक्तच एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात आबलिपा ही होती है असंख्यात नहीं । इस पर नीरसेनकामिने यह समाधान किया है कि यहाँ पर अन्तर्मुहूर्तमें आवे हुए अन्तर शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती काठका प्रहल करवा बाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शुद्ध — यहाँ पर अन्तर शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि अन्तर शब्दका राजदन्तादि गत्यमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शुद्ध — अन्तर शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— एष छत्र समाप्ता इस नियामक पञ्चमके अनुसार यहाँ पर ओत्व हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सानत्कुमार व्याधि कल्पवासी रेवोंसंबन्धी अबहारकास असंख्यात आबलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शुद्ध — यहाँ पर शङ्क्यकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशिवां अबस्थित नहीं होती हैं क्योंकि इन राशिवांकी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशिवांकी हानि और वृद्धि नहीं होती है तो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि, यदि इन राशिवांका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव ही जायगा । तथा कनापि अपर्यवसितरूपसे सामान्य व्याधि गुणस्थावांका काल भी नहीं पाया जाता है इसलिये भी इन राशिवांकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशिवांको अबस्थित माना जावे तो ये मागहार बन सकते हैं अन्यथा नहीं क्योंकि, अनवस्थित राशिवांके मागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही समान माना जा सकता है ।

समाधान— व्यये पूर्वोक्त शङ्क्यकार परिहार किया जाता है । क्योंकि सासादन-

विकासगायरमस्तिऊण सम्मा पमाणपरूषण कद सम्मा बद्धिहाणीओ पारिचि ति मागहार परूषण पडदि ति । सासणसम्माद्विभक्तिअवहारकालेण वलिदोषमे भागे हिद सासणसम्मा शङ्कितसी आगच्छदि । सासणसम्माद्विभक्ति पमाणपरूषण बगवण्णे खडिद भाविद विरलिद भवदिद-पमाण-कारण गिरुचि वियणेहि वचइस्सामो । त जहा—

पठिदावमे असंखेज्जावलिपयेचसुखे कए तत्थ एगएउं सासणसम्माद्विरासि पमाण होदि । खडिद गद । असंखेज्जावलिपयाहि पलिदोषमे भागे हिदे अ भागलद ते सासणसम्माद्विरासिपमाण होदि । भाविद गद । असंखेज्जावलिपयो विरलऊण एकएस्स रूपस्स पठिदावम समसुख करिय दिण्णे तत्थ एगएउं पमाण सासणसम्मा शङ्कितसी हादि । विरलिद गद । सासणसम्माद्विभक्तिअवहारकाल सलागभूद ठवेऊण

सम्पगच्छि आवि राशिपौके विरलविषयक जरुह सचयक भाग्य लेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अवस्थासे कुछे और जानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बन जाता है ।

सासादनसम्पगच्छिविषयक अवधारकाका पत्तोपममे माग देने पर सासादनसम्प गच्छि जीपराशि भा जाती है ।

अब वर्गस्थानमे अविहित भाजित विरलित भवहत प्रमाण कारण भिदकि भीर पिचमरके द्वारा सासादनसम्पगच्छि जीपराशिमा प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात भागसीके समर्थोका जितना प्रमाण हो उसने पत्तोपमके लख करन पर उनमेंसे एक लखके बराबर सासादनसम्पगच्छि जीपराशिमा प्रमाण होता है । इसप्रकार अविहतका धन समान हुआ ।

उदाहरण—पत्तोपमप्रमाण १५५३९ के सासादनसम्पगच्छिविषयक अवधारकास ३२ प्रमाण लख करने पर २०४८ जाने है । यही सासादनसम्पगच्छि जीपराशिमा प्रमाण है ।

असंख्यात भागसियोंका पत्तोपममे माग देने पर जो माग सम्प भाये उतना सासादनसम्पगच्छि जीपराशिमा प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समान हुआ ।

उदाहरण—१ ५३९ × ३२ = २०४८ सासादनसम्पगच्छि.

असंख्यात भागसियोंको विरलित करके उस विरलित राशिमे प्रत्येक एक के भाग पत्तोपमका समान लख करके देखकरने देने पर उनमेंसे एक लख प्रमाण सासादनसम्पगच्छि जीपराशि होती है । इसप्रकार विरलितका धन समान हुआ ।

उदाहरण—२०४८ × ४८ = ९८४ सासादनसम्पगच्छि ३२ पार विरलित करके १ ५३९ को एक विरलित राशिमे प्रत्येक एक पर समानकरण दे देने पर २०४८ सासादनसम्पगच्छि राशि भा जाती है ।

सासादनसम्पगच्छिविषयक अवधारकाको इन्द्राद्यकरणे व्यापित करके पत्तोपममे

विकलगायरमस्सिकुण अम्हा पमाणपरूवण कद तम्हा भट्ठिहाणीओ गथि पि भागहार पस्वण भवदि पि । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदावमे भागे हिदे सासणसम्मा इडिगामी आगच्छन्ति । सासणसम्माइडिअण पमाणपरूवण वगगट्ठामे खडिद भाग्गिद विरलिद अवहिद-पमाण-कारण गिरुपि वियप्पेहि वत्तइस्सामो । त जहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलिपमेचखडे कए तत्त्व एगखंड सासणसम्माइडिरासि पमाण होदि । खडिदं गद । असंखेज्जावलिपयाहि पलिदोवमे भागे हिदे व मागल्ल तं सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । भाग्गिद गद । अमखेज्जावलिपयाओ विरलेऊण एक्कस्स रूक्खस्स पलिदोवम समखड करिय दिण्णे तत्त्व एगखंडपमाण सासणसम्मा इडिगामी होदि । विरलिदं गद । सासणसम्माइडिअवहारकालं सलागभूद ठवेऊण

सम्पगदहि आदि राशिपोंके बिकासविषयक उरठए संखयका व्यग्रप लेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अपेक्षासे बृद्धि और हानि नहीं है । अत पूर्वाक्त मागहारोंका कथन करना बन जाता है ।

सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकालका पस्योपममें भाग देने पर सासाद्वनसम्प गदहि जीवराशि आ जाती है ।

अब परांस्थानमें अन्विष्ट माजित विरलित अपहत प्रमाण कारण, निरुक्ति और विरल्यके द्वारा सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—

असंख्यात आयसियोंका जितना प्रमाण हो उतने पस्योपमके गण्ड करन पर वनमेंसे एक वनके बराबर सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार अन्विष्टका पथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्योपमप्रमाण १५ + ११ के सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकाल ३२ प्रमाण गण्ड करने पर २०४८ आने हैं । यही सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिका प्रमाण है ।

असंख्यात आयसियोंका पस्योपममें भाग देने पर जो भाग सम्प आये वतना सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार आजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१ ३१ + ३२ = २०४८ सासाद्वनसम्पगदहि.

असंख्यात आयसियोंको विरलित करके उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकक प्रति पस्योपमका समान गण्ड करके हेयरूपसे देन पर उनमेंसे एक गण्ड प्रमाण सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका पथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ = ४८ १ ४८ १ ४८ १ २५ ३१ को एक विरलित राशिसे प्रत्येक एक पर समानरूपसे १ देने पर २०४८ सासाद्वनसम्पगदहि राशि आ जाती है ।

सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकालको आभाध्यरूपसे व्यापित करके पस्योपममेंसे

अन्तर्मुहूर्त'। कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादिस्वात् । कुतः ओत्वम् ? 'एष छत्र समाप्ता' इत्येतस्मात् । एतेषु सप्तकुमारदिगुणपट्टिकगणमन्त्रहारकात्ताण पि असंख्येन्द्रावतिपरं पसाहिय । एतत् शोभो मणदि । एता आ रासीओ अवह्विदाओ न होति, हाणिकाहुससुद पादो । न च हाणिकाहुओ पतिप चि वोनु सकित्तेदे, आयम्भयामावे मोक्खामावाओ अणादिअपन्नवसिदसासणादिगुणकात्ताणुवत्तदीदो च । अदि एताओ रासीओ अवह्विदाओ तो एदे मागहारा पडंति, अप्पहा पुण न पडंति । अणवह्विदरासिमागहारेणापि अणवह्विदसूत्रेणैव अवह्विता होति । एतत् परिहारा मुचदे— सासणसम्माद्विरासीणमुक्कस्ससवप

है कि उक्त तानों गुणस्थानमतिपत्र सातकुमार आदि कल्पवाची देवोंसंख्या अवहारकात्ता प्रमाण असंख्यात व्यवहारा मान किया जाता है तो चूकमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मागहारके साथ उक्त असंख्यात व्यवहारा मान मागहारका विरोध पाता है क्योंकि, उक्त एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात व्यवहारा ही होती है असंख्यात नहीं । इस पर बीरसेनकामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती व्यवहारा ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका समीपवर्ती मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शुद्ध — यहां पर अन्तर शब्द का पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान—क्योंकि अन्तर शब्द का राजहस्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शुद्ध — अन्तर शब्दमें अन्ते स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— एष छत्र समाप्ता इस नियामक शब्दके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है ।

इस उपसुक्त अध्यायसे गुणस्थानमतिपत्र सातकुमार आदि कल्पवाची देवोंसंख्या अवहारकात्ता असंख्यात व्यवहारीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शुद्ध — यहां पर शंकाकार कहता है कि ये उपसुक्त जीवराशिवां अवस्थित नहीं होती हैं क्योंकि इन राशिवांकी हाणि बीर वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशिवांकी हाणि बीर वृद्धि नहीं होती है तो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि, यदि इन राशिवांका भाव बीर व्यप नहीं माना जाय तो मोक्षका भी व्यवहार हो जायगा । तथा अन्तरमतिपत्रसहितरूपसे सामान्य आदि गुणस्थानोंका काक भी नहीं पाया जाता है इसलिये भी इन राशिवांकी हाणि बीर वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपसुक्त राशिवांको अवस्थित माना जावे तो ये मागहार बन सकते हैं व्यवहार नहीं क्योंकि, अवस्थित राशिवांके मागहारोंका भी अवस्थितरूपसे ही समझाव माना जा सकता है ।

समाधान—अन्ते पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि साधारण

विकासगापरमस्सिऊण अम्हा पमाणपरूवण कइ तम्हा बुद्धिहाणीओ अत्थि चि भागहार परूवण बढिदि चि । सासणसम्माइडिअवहारकोलेण वलिदोबमे भाग हिदे सासणसम्मा इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइडिण पमाणपरूवण वगइलाने सुखिद माजिद विरलिद अइदिद-पमाण-कारण गिरुचि बियप्पेहि वचइस्सामो । त अइ—

पलिदोबमे असंखेज्जावलिपमेचसुखे कए तत्थ एगखंड सासणसम्माइडिरासि पमाण होदि । खंडिदं गदं । असंखेज्जावलिपाहि पलिदोबमे भागे हिदे च भागलई तं सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । माबिद गदं । असंखेज्जावलिपाओ विरलेऊण एकइस्स रूपस्स पलिदोबम समखंड करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाण सासणसम्मा इडिरासी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइडिमवहारकाल सलागबूद ठवेऊण

सम्यग्गदि आदि राशिपोंके विकासविषयक उत्कृष्ट सचयका व्यापय छेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अयेसासे छुटि भीर हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बग जाता है ।

सासाइनसम्यग्गदिविषयक अवहारकालका पत्तोपममें भाग देने पर सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि आ जाती है ।

अब बर्गस्थानमें लघित भाजित विरलित अपहत प्रमाण कारण निरुक्ति भीर पिक्कपके द्वारा सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि का प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात भाषणीके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पत्तोपमके एक करण पर वनमेंसे एक वण्डके बराबर सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि का प्रमाण होता है । इसप्रकार लघितका वजन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पत्तोपमप्रमाण ३५५३९ के सासाइनसम्यग्गदिविषयक अवहारकाल ३२ प्रमाण एक कर देने पर २०४८ आने है । यही सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि का प्रमाण है ।

असंख्यात भाषणीका पत्तोपममें भाग देने पर जो भाग सम्प आये उतना सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि का प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका वजन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—३५ ३९ + ३२ = २०४८ सासाइनसम्यग्गदि

असंख्यात भाषणियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एक प्रति पत्तोपमका समान एक करके देयकपसे देने पर उनमेंसे एक वण्ड प्रमाण सासाइनसम्यग्गदि जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका वजन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ २०४८ २४८ इसप्रकार ३२ बार विरलित करके
१ १ १ ३५५३९ को वण्ड विरलित राशिके

प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २४८ सासाइनसम्यग्गदि राशि आ जाती है ।

सासाइनसम्यग्गदिविषयक अवहारकालको भागाच्छादयने वयापिण करके पत्तोपममें

अन्तर्मुहूर्तः। कुतः पूर्वनिपातः ? रात्र्यन्तादिस्मात् । कुत ओत्सवः ? 'एष छत्र समाप्ता' इत्येतस्मात् । एतेषु सप्तकुमारसिद्धिगुणपडिबन्धनाभयहारकालाण्यपि अस्तंतेज्ज्वालिपर्व पसादिय । एतेषु चोदयो मण्डि । एतामो रासीओ अष्टदिशो ण होति, हान्निवर्त्तिसंयुत चादो । य च हान्निवर्त्तिसो मण्डि यि बोधु सकिज्जे, आयन्नायामावे मोक्षसामावादे अयादिमपन्नरासिदसासनादिगुणकालाण्यपसद्दीदो च । यदि एतामो रासीओ अष्टदिशो तो एद मागहारा पडंसि, अण्णहा पुण ण पडंसि । अण्णवर्त्तिदरासिभाभहारेणापि अण्णवर्त्ति दसरूपेणैव अण्णहा होति । एतेषु परिहारो बुद्धे— सासणसम्मादित्तिरासीणमुक्कस्ससपय

है कि उक्त तानों गुणस्थानोंकी संख्या करनेके लिये यदि अण्णवर्त्तिदरासि प्रमाण अस्तंतेज्ज्वालिपर्व पसादिय मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मागहारके साथ उक्त अस्तंतेज्ज्वालिपर्व मागहारका विरोध जाता है क्योंकि, उक्त एक अन्तर्मुहूर्तमें संवत्सरा अष्टदिशा ही होती हैं अस्तंतेज्ज्वालिपर्व नहीं । इस पर वीरसेनजीने यह समाधान किया है कि वहाँ पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर घण्टसे मुहूर्तके समीपवर्ती काठका प्रहण करवा बाह्यसे जिससे अन्तर्मुहूर्तका समीपवर्ती मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

उक्त — वहाँ पर अन्तर घण्टका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि अन्तर घण्टका राजदस्तावि यन्में पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

उक्त — अन्तर घण्टमें आके स्थानमें ओत्सव कैसे हो गया है ?

समाधान— एष छत्र समाप्ता इस निषामक वचनके अनुसार वहाँ पर ओत्सव हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सानत्कुमार आदि कल्पवासी वेदोत्सवकी अण्णवर्त्तिदरासि अस्तंतेज्ज्वालिपर्व सिद्ध कर दिया गया ।

उक्त — वहाँ पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशिवां अवस्थित नहीं होती हैं क्योंकि, इन राशिपोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशिपोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है तो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशिपोंका आप और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा । तथा अनादि अपर्यवसितरूपसे साम्राज्य आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है इसलिये भी इन राशिपोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशिपोंकी अवस्थित माना जाये तो ये मागहार बन सकते हैं अण्णहा नहीं क्योंकि, अण्णवर्त्तिदरासि मागहारोंका भी अनपर्यवसितरूपसे ही सङ्गाथ माना जा सकता है ?

समाधान— आये पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि सासाधन-

अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे मागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोवग्गमस्ये कए सत्तम जचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेह्हा ओसरिऊण द्विअसंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे मागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवम पढमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण सदेहा । कारण गद् । तस्स का पिरुची ? असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले मागे हिदे तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि । अपवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले मागे हिदे अ मागलद्धं तेष विदियवग्गमूल गुणित्ते तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पलिदोवम पढमवग्गमूलाणि । अपवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले मागे हिदे जं मागलद्धं तेष तदियवग्गमूले गुणेरुण तेष गुणिदरासिणा विदियवग्गमूल गुणेरुण तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेह्हा ओसरिऊण असंखेज्जावलिपाहि पदरावलिपाए मागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वगमूल छम्प आते हैं । पस्योपमके तीसरे वगमूलका पस्योपममें माग देने पर दूसरे और तीसरे वगमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल छम्प आते हैं । इस क्रमसे अमंक्याण वर्गस्थान नीचे जाकर जो अमंक्याण व्यबलिपा स्थित हैं उनका पस्योपममें माग देने पर अमंक्याण प्रथम वगमूल आते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्येके प्रथम वगमूल २५६ का ६५३६ में माग देने पर २५६ छम्प आते हैं । दूसरे वगमूल १६ का ६ ५३६ में माग देने पर दूसरे वगमूल १६ बार २५६ अर्थात् ४०९६ छम्प आते हैं । तीसरे वगमूल ४ का ६ ५३६ में माग देने पर दूसरे वगमूल १६ और तीसरे वगमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ छम्प आते हैं उतने अर्थात् ६४ बार प्रथम वगमूल २ ६ अर्थात् १६३८४ छम्प आते हैं । इसीप्रकार उच्चरोत्तर नीचे जाने पर अमंक्याण प्रथम वगमूल छम्प आयेगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

शुद्धा — अमंक्याण प्रथम वगमूल आते हैं इसकी निदधि क्या है ?

समाधान — अमंक्याण आबलिपाके पस्योपमके प्रथम वगमूलमें माग देने पर जो प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल आते हैं । अपवा अमंक्याण आबलिपाके पस्योपमके द्वितीय वगमूलमें माग देने पर जो छम्प आये उससे द्वितीय वगमूलको गुणित कर देने पर त्रितमा प्रमाण आये उतने पस्योपमके प्रथम वगमूल होते हैं । अपवा, अमंक्याण आबलिपाके पस्योपमके तीसरे वगमूलमें माग देने पर जो माग छम्प आये उससे तीसरे वगमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वगमूलको गुणित करके वहाँ त्रितमा प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल होते हैं । इसी क्रमसे अमंक्याण वर्गस्थान नीचे जाकर अमंक्याण आबलिपाके प्रत्येक स्थान में माग देने पर जो माग छम्प आये उससे प्रत्येक स्थानको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रत्येक

पल्लोवमम्भि सासणसम्माइहिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकत्तादो एगरूवमव
 विज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइहिरासिपमाणं पल्लोवमम्भि अवणिज्जदि, अवहारकत्तादो
 एगरूवमवणिज्जदि । एव पुणा पुणो कीरमाणे पल्लोवमो अवहारकत्तो व तुणं
 विद्धिदो । तस्य एगवसरमवहिदपमाणं सासणसम्माइहिरासी होदि । अवहिद गदं । तस्य
 पमाणं पल्लोवमस्य असरोज्जदिमाणो असंखेज्जाणि पल्लोवमपडमवग्गमूलाणि पि ।
 पमाण गदं । केव कारणेण ? पल्लोवमपडमवग्गमूलेण पल्लोवमे मागे हिदे पल्लोवम
 पडमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पल्लोवमे मागे हिदे विदियवग्गमूलस्य

सासणसम्माइहिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकत्तादो एगरूवमव
 विज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइहिरासिपमाणं पल्लोवमम्भि अवणिज्जदि, अवहारकत्तादो
 एगरूवमवणिज्जदि । एव पुणा पुणो कीरमाणे पल्लोवमो अवहारकत्तो व तुणं
 विद्धिदो । तस्य एगवसरमवहिदपमाणं सासणसम्माइहिरासी होदि । अवहिद गदं । तस्य
 पमाणं पल्लोवमस्य असरोज्जदिमाणो असंखेज्जाणि पल्लोवमपडमवग्गमूलाणि पि ।
 पमाण गदं । केव कारणेण ? पल्लोवमपडमवग्गमूलेण पल्लोवमे मागे हिदे पल्लोवम
 पडमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पल्लोवमे मागे हिदे विदियवग्गमूलस्य

उदाहरण—शालाका राशि ३२ पल्लोवम ६५३६ इत कमसे पल्लोवममेंसे
 १ २७४८ २ ४८ और शालाकाका
 ३१ १३४८८ मागहारमेंसे एक एक कम
 १ २७४८ करते जाते पर दोस्तों
 ३ ६१४४० राशिवां एक सय समान होती हैं । इनमेंसे एकवार बहार जानेवाली सख्या २७४८ प्रमाण
 सासणसम्माइहिरासि है ।

इस सासणसम्माइहिरासि प्रमाण पल्लोवमका अस्तंभ्यातवां माग है जो
 पल्लोवमके अस्तंभ्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्जन समान हुआ ।

उदाहरण—पल्लोवम ६५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासणसम्माइहिरासि
 जीवराशि प्रमाण २ ४८ है । २५६ का २ ४८ में भाग देने पर ८ व्यते हैं । इस ८ संख्याको
 अस्तंभ्यातका माग देने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्लोवमके अस्तंभ्यात प्रथम वर्गमूल
 प्रमाण सासणसम्माइहिरासि जीवराशि होती है ।

धृक्का—किस कारणसे पल्लोवमके अस्तंभ्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासणसम्मा
 इहिरासि जीवराशि व्यती है ?

समाधान—पल्लोवमके प्रथम वर्गमूलका पल्लोवममें भाग देने पर पल्लोवमका प्रथम
 वर्गमूल व्यती है । उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्लोवममें भाग देने पर दूसरे वर्गमूलका अस्तंभ्यात

अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे मागे हिदे विदियवदियवग्गमूलाणि अण्णोणम्मत्थे कए तत्थ अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण छिदअसंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे मागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवम पदमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण सदेहो । कारण गद । तस्स का णिरुधी ? असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमपदमवग्गमूले मागे हिदे तत्थ अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले मागे हिदे जं भागलद्ध तेण विदियवग्गमूल गुणिदे तत्थ अचियाणि रूपाणि तचियाणि पलिदोवम पदमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले मागे हिदे जं भागलद्ध तेण तदियवग्गमूल गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलिपाहि पदरावलिपाए मागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल सध्य होते हैं । पस्योपमके तीसरे वर्गमूलका पस्योपममें भाग देने पर दूसरे कीर तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल सध्य होते हैं । इस क्रमसे अक्षयान वर्गस्थान नीचे जाकर जो अक्षयान आवश्यकों स्थित हैं उनका पस्योपममें भाग देने पर अक्षययात प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्यके प्रथम वर्गमूल २ का ६१५३६ में भाग देने पर २५६ सध्य होते हैं । दूसरे वर्गमूल १६ का १ १३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ बार २५६ अर्थात् ४०९६ सध्य होते हैं । तीसरे वर्गमूल ४ का ६ १३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ कीर तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ३४ सध्य होते हैं उतने अर्थात् १४ बार प्रथम वर्गमूल २ का अर्थात् १६३८४ सध्य होते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर अक्षययात प्रथम वर्गमूल सध्य आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

नका—अक्षययात प्रथम वर्गमूल आवे हैं इसकी निश्चिन्ता क्या है ?

समाधान—अक्षययात आवश्यकोंका पस्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा अक्षययात आवश्यकोंका पस्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो सध्य आवे उनसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर त्रितया प्रमाण आए उतने पस्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, अक्षययात आवश्यकोंका पस्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग सध्य आवे उनसे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वहाँ त्रितया प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे अक्षययात वर्गस्थान नीचे जाकर अक्षययात आवश्यकोंका अक्षययातमें भाग देने पर जो भाग सध्य आवे उससे अक्षययातको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम

पल्लिदोषमग्नि सासणसम्माइत्तिरासिपमाण अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूबमव
 चित्तिदि, पुण वि सामणमग्निरासिपमाण पल्लिदोषमग्नि अवणिज्जदि, अवहारकालादो
 एगरूबमवणिज्जदि । एवं पुणो पुण फीरमाणे पल्लिदोषमो अवहारकालो च सुगव
 जिद्धिदो । तस्स एगवारमवहिदपमाण सासणसम्माइत्तिरासी होदि । अवहिद गद । तस्स
 पमाण पल्लिदोषमस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि पल्लिदोषमपदमवगमूलाणि पि ।
 पमाण गद । केव कारणेण ? पल्लिदोषमपदमवगमूलेण पल्लिदोषमे भागे हिदे पल्लिदोषम
 पदमरन्नामूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पल्लिदोषमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासाइनसम्पग्घटि जीवप्राणिके प्रमाणको वटा देना चाहिये । पक्षोपममेंसे सासाइनसम्पग्घटि
 जीवप्राणिको एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप शाखाप्राणिकोंमेंसे एक कम कर
 देना चाहिये । फिर भी पक्षोपममेंसे सासाइनसम्पग्घटि जीवप्राणिके प्रमाणको वटा देना
 चाहिये । वृक्षपीवार यह किया हुई इसलिये अवहारकालरूप शाखाप्राणिकोंमेंसे एक और कम कर
 देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पक्षोपम और अवहारकाल पर साथ समाप्त
 हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार कितनी राशि बचाई जाये वतना सासाइनसम्पग्घटि जीव
 प्राणिका प्रमाण है । इसप्रकार जगहवत्ता कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शाखाका राशि ३२ पक्षोपम १५३१ इस क्रमसे पक्षोपममेंसे

$$\begin{array}{r} १ \\ ३१ \\ १ \\ ३ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} २०४८ \\ १३४८८ \\ २०४८ \\ ११४४० \end{array}$$
 २०४८ और शाखापर
 मापहारमेंसे एक एक कम
 करते जाने पर दोनों

राशियां एक साथ समाप्त होती हैं । इनमेंसे एकवार बचाई जानेवाली संख्या १०४८ प्रमाण
 सासाइनसम्पग्घटि है ।

इस सासाइनसम्पग्घटि जीवप्राणिका प्रमाण पक्षोपमका असंख्यात भाग है । जो
 पक्षोपमके अस्तक्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्गीन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पक्षोपम १५३१ का प्रथम वर्गमूल २५३ है और सासाइनसम्पग्घटि
 जीवप्राणिका प्रमाण १४८ है । २५३ का २४८ में भाग देने पर ८ आते हैं । इस ८ संख्याको
 अस्तक्यातरूप मान केने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पक्षोपमके अस्तक्यात प्रथम वर्गमूल
 प्रमाण सासाइनसम्पग्घटि जीवप्राणि होती है ।

शुद्ध—किस कारणसे पक्षोपमके अस्तक्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासाइनसम्प
 गटि जीवप्राणि आती है ?

समाधान—पक्षोपमके प्रथम वर्गमूलका पक्षोपममें भाग देने पर पक्षोपमका प्रथम
 वर्गमूल आता है । उसीके बूझरे वर्गमूलका पक्षोपममें भाग देने पर बूझरे वर्गमूलका कितना

सासणसम्माइडिरासी होदि । एदेन कमेण असंखेज्जाणि वग्गहामाणि इहा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए मागे हिदाए खं भागलइ तेण पदरावलिय गुणेऊण ठण गुणिदरामिणा सुदुवरिमवग्ग गुणंऊण एवमुवरिमवग्गहामाणि पढमवग्गमूलताभि सम्माणि गिरतर गुणिदे सासणसम्माइडिरासी होदि । जदि बि गिरुत्ति मन्थमाने एसो अत्थो पुन्ण परूदिशो सो बि ण पुणठत्थो होदि, तिण्णि बि वग्गधारामा अस्तिऊण हिदेइडिमवियप्पसबंधत्तादो । बेरूवे हेडिमवियप्पो गदो ।

अदूरुवे हेडिमवियप्प वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूल गुणेऊण तेण धणपल्लपढमवग्गमूले मागे हिदे सामणसम्माइडिरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण धणपल्लपढमवग्गमूले मागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमाग

जीवत्तासि होती है ।

उदाहरण—१.१.३१ का तृतीय वर्गमूल ४।

$$४ + ३२ = १ \quad ४ \times \frac{१}{४} = १ \quad १६ \times \frac{१}{४} = ८ \quad २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

इसी क्रमसे असंख्यात वगस्थान नीचे आकर असंख्यात आयत्तिर्घोक्त प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग छल्ल्य भावे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रतरावलीके उपरिम धनको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलवर्षस्त उपरिम उपरिम संपूर्ण वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासाङ्गसम्पत्तादि जीवत्तासि होती है ।

उदाहरण—प्रतरावलि = २।

$$२ - ३२ = ११, \quad १ \times \frac{१}{१} = १ \quad ४ \times \frac{१}{४} = १$$

$$१६ \times \frac{१}{४} = ८ \quad २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

यद्यपि निराधिका कथन करते समय यह विषय पहले यहाँ पर कह भ्याये है तो भी इस विषयके यहाँ पर पुनः कथन करनेसे पुनरुक्त बोध नहीं होता है क्योंकि, यहाँ पर तीनों ही वर्गधारार्थोक्त आशय छेकर स्थित अधस्तन विकल्पका सवन्ध है । इसप्रकार विकल्प वर्गधारामें अधस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब धनधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । असंख्यात आयत्तिर्घोसे पक्षोपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छल्ल्य भावे उसका धनपक्षके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासाङ्ग सम्पत्तादि जीवत्तासि होती है क्योंकि पक्षोपमके प्रथम वर्गमूलसे धनपक्षके प्रथम धन मूलके भाजित करने पर पक्षोपमका प्रमाण जाता है । अनन्तर असंख्यात आयत्तिर्घोसे पक्षोपमके भाजित करने पर सासाङ्गसम्पत्तादि जीवत्तासि आती है । धनपक्षमें इसप्रकार सासाङ्ग सम्पत्तादि जीवत्तासि आती है देखा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रवृत्ति किया ।

उदाहरण—पक्षोपमका प्रथम धनमूल ६ १। धनपक्षका प्रथम वर्गमूल १९३३३-२१६

$$६.१६ \times ३२ = ८१०२। \quad १९३३३२१६ - ८१०२ = २०४८ \text{ सा}$$

भागलङ्घ्य तेष पदराशिरूप गुणेऊय तेष गुणिद्रासिणा सद्गुणरिमयगु गुणेऊय एवमुपरि
 सुखरिमयगुणायाणि विदियवगुगमूलताणि गिरतरं सम्भाणि गुणिद तस्य सत्तियाणि
 रूपाणि तत्तियाणि पदमवगुगमूलानि हर्षति पि । निरुची गदा ।

वियप्पो दुबिहा, हेष्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चदि । तस्य वेम्पे हेष्टिमवियप्प
 वच्यस्तामो । असंख्येयवियप्पादि पलिदोवमपदमवगुगमूले माये हिदे अ भागलङ्घ्य तेष
 पलिदोवमपदमवगुगमूले गुणिद सासणसम्माद्विरासी होदि । अथवा अवहारकालेण पति
 दोवमविदियवगुगमूले माये हिदे अ भागलङ्घ्य तेष विदियवगुगमूल गुणेऊय तेष गुणिद
 रासिणा पदमवगुगमूले गुणिदे सासणसम्माद्विरासी होदि । अथवा अवहारकालेण
 पलिदोवमविदियवगुगमूल माये हिदे अ भागलङ्घ्य तेष विदियवगुगमूल गुणेऊय तेष गुणिद
 रासिणा विदियवगुगमूल गुणेऊय पुणो वि तेष गुणिद्रासिणा पदमवगुगमूल गुणिद

बलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सब उपरिम उपरिम वर्ग
 स्थानोंको गिरतर गुणित करने पर वहां द्वितया प्रमाण आये वसते प्रथम वर्गमूल होते हैं।
 इसप्रकार विचलित कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—असंख्येयत आबलीप्रमाण ३२ का भाग पस्यके प्रथम वर्गमूल २५१ में देने
 पर ८ छव्य आते हैं । इसप्रकार सासाधनसम्बन्धि जीवराशि २४८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल
 होते हैं । द्वितीय वर्गमूल ११ में ३१ का भाग देने पर ३ छव्य आता है । इसका द्वितीय वर्ग-
 मूलसे गुणा करने पर ८ छव्य आते हैं । तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर ३ छव्य
 आता है । इसका तृतीये ११ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ४४ से गुण्य कर देने
 पर ८ छव्य आते हैं । इसप्रकार सर्वत्र समग्र लेना चाहिये ।

विचल्य हो प्रचलक है अथस्तवविचल्य और उपरिमविचल्य । उन दोनोंमेंसे पहले
 द्विरूपवर्गधारमें अथस्तव विचल्यको बतलाते हैं—

असंख्येयत आबलियोंसे पस्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासाधन-
 सम्बन्धि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—पस्योपम ३११३१ का प्र वर्गमूल २१४ असंख्येयत आबलियां ८
 $२१३ \times ८ = २४८$ का

अथवा अवहारकालका पस्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग छव्य
 आये वसते द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर सासाधनसम्बन्धि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—३११३१ का द्वितीय वर्गमूल १३, अवहारकाल ३३,

$$१३ - ३३ = ३; १३ \times ३ = ८ \quad २१ \times ८ = २४८$$

अथवा, अवहारकालका पस्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग छव्य
 आये वसते तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित
 करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासाधनसम्बन्धि

घणाघमे वचइस्सामो । असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमपढमवग्गमूल गुणेऊण तण
 पणपल्लविदियवग्गमूल गुणेऊण तेष घणाघणपल्लविदियवग्गमूल भागे हिदे सासणसम्मा
 इट्ठिरी आगच्छदि । केण कारणेण ? पणपल्लविदियवग्गमलेण घणाघणपल्लविदियवग्गमले
 भागे हिदे पणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमलेण पणपल्ल-
 पढमवग्गमल भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे
 भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरी आगच्छदि । एवमागच्छदि धिक्कु गुणेऊण भागगहण
 कइ । एत्थ दुगुणादिकरणे कइ हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

उपरिमवियप्पो विविहा, गहिदो गहिदगाहिदो गहिदगुबगारो चदि । तरप
 वेरूवचारए गहिद वचइस्सामो । असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा

प्रमाण जो भागहार है वह पस्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छेदा है इसलिये यहाँ पर अघस्तन
 विकल्प बन जाता है । परंतु मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो भागहार
 कइ आये है वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिके बड़ा है अतएव
 यहाँ पर द्विकपवर्गधारामें अघस्तन विकल्प किसी प्रकार भी संभव नहीं है ।

अब घनाघनधारामें अघस्तन विकल्प बतलाते हैं—असंबंधात आबलियोंके पस्यो
 पमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो मध्य आये उससे घनपस्यके द्वितीय वर्गमूलको गुणित
 करके जो मध्य आये उसका घनाघनपस्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि
 जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, घनपस्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पस्यके द्वितीय
 वर्गमूलमें भाग देने पर घनपस्यका प्रथम वर्गमूल आता है । अनन्तर पस्योपमके प्रथम वर्ग
 मूलका घनपस्यका प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पस्योपम आता है । अनन्तर असंबंधात आब
 लियोंका पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघन
 धारामें इसप्रकार सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा
 करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पस्योपमका प्रथम वर्गमूल १५६, घनपस्यका द्वितीय वर्गमूल ४०१,
 घनाघन पस्यका द्वितीय वर्गमूल १८७१०४७६७३६।

$$\frac{१८७१०४७६७३६}{१२ \times १५६ \times ४०१} = १८८ \text{ सा}$$

यहाँ पर द्विगुणादिकरणः कर देने पर अघस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणवत् । उनमेंसे
 पहले द्विकप वर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बनाना है—असंबंधात आबलियोंका
 पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१५६३६ + ३२ = १०४८ सा

पूछेदि सि कहु गुणैऊन मागगगहण कइ । अइरूवे हेडिमवियप्यो भवहु णाम, बेरूवे हेडिमवियप्यो न भइवे । केण करणेण ? अवहारकालेय पतिशोपमादो हेडिमवगग ह्माणाणि मागे हिदे सासणमम्मार्हिरासी न उप्पन्नइदि सि । न एस दोओ, पतिशोप मादो हेडिमवगगह्माणाणि अवहारकालेपोवहिय तप्पाओगगवगगह्माणाणि गुणिदे केवठ मोवह्मिदे न अरय राशी आगच्छदि सो हेडिमवियप्यो सि अम्मवगमादो । मिच्छा इहिरासिपकूवणाए सि एव्हि णए अवलविज्जमाले बेरूवे हेडिमवियप्या अरिय सि वचप्यो ? एसा पकूवणा जेव अवहारकालपह्माणा तेय पतिशोपमादो हेडिमवगगह्माणाणि अवहारेपोवहिय अदि सासणसम्मार्हिरासी उप्पाइहु सुकिन्नइदे सो हेडिमवियप्यस्स रि संमवो होज्ज । न न एव बेरूवपाराण समवइ । एइ णयमस्सिऊन मिच्छाहिरासि-पकूवणाए हेडिमवियप्यो अरिय सि भविइ । एमो णओ एत्थ पह्माओ । प्पमह्मरूव पकूवणा गदा ।

श्रुंका—धनधारामें मध्यस्तन विकस्य रहा न्यवे परंतु श्रिकप बर्धधारामें मध्यस्तन विकस्य घटित नहीं होता है क्योंकि, अवहारकालका पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें माग दिया जाता है तो सासाधनसम्पन्नइति जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोई शोध नहीं है क्योंकि, पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे अपवर्तित करके जो अन्य न्यवे उससे उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर मध्यका केवल अपवर्तित करने पर अर्थात् पस्योपमको अवहारकालसे माजित करने पर जहां पर सासाधनसम्पन्नइति जीवराशि आती है वह मध्यस्तन विकस्य यहां पर स्तीकार किया गया है ।

उदाहरण—पस्योपमका मध्यस्तन वर्गस्थान = $2'19, 2'19 - 32 = 4, 2'19 \times 4 = 2080$ सा मध्यका $2'1939 \div 32 = 2, 80$ सा.

श्रुंका—मिष्पाइति जीवराशिकी मरूपणमें जी इस नयके अवलम्बन करने पर श्रिकपबर्धधारामें मध्यस्तन विकस्य बन जाता है इसलिये जहां पर इसका कथन करना चाहिये या ?

समाधान—क्योंकि यह मरूपणा अवहारकालमायाव है इसलिये पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे माजित करके यदि सासाधनसम्पन्नइति जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहां पर मध्यस्तन विकस्य भी संभव है । परंतु मिष्पाइति जीवराशिका प्रमाण निष्काशने समय श्रिकपबर्धधारामें इसप्रकार मध्यस्तन विकस्य संभव नहीं है । इसी मध्यम व्यस्य करके मिष्पाइति जीवराशिकी मरूपणमें मध्यस्तन विकस्य नहीं होता ऐसा कहा है । यह वय यहां पर मयाव है । इसप्रकार धनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासाधनसम्पन्नइति जीवराशिका प्रमाण निष्काशनेके क्रिये अक्षक्यात व्ययकी

पणापणे वचइस्सामो । असखेज्जावलिआहि पलिदोवमपदमवग्गमूले गुणैऊण तण
पणपल्लविदियवग्गमूले गुणैऊण तण पणापणपल्लविदियवग्गमूले मागे हिंदे सासणसम्मा
इडिरासी आगच्छदि । केय कारणेण ? पणपल्लविदियवग्गमूलेण पणापणपल्लविदियवग्गमूले
मागे हिंदे पणपल्लपदमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपदमवग्गमूलेण पणपल्ल-
पदमवग्गमूल मागे हिंदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असखेज्जावलिआहि पलिदोवमे
मागे हिंदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि सि कहु गुणैऊण मागग्गइण
कद । एत्थ दुग्गुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वेदि । तरव
वेरूववाराए गहिदं वचइस्सामो । असखेज्जावलिआहि पलिदोवमे मागे हिंदे सासणसम्मा

प्रमाण ओ मागहार है वह पस्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छेदा है इसलिये वहाँ पर अक्षस्तन
विकस्य बन जाता है । परंतु मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण निष्कलनेके लिये ओ मागहार
कद बाये ई वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिके बड़ा है अतएव
वहाँ पर त्रिकुपवर्गधारामें अक्षस्तन विकस्य किसी प्रकार भी समझ नहीं है ।

अब घनाघनधारामें अक्षस्तन विकस्य बतछाते हैं—असक्यात आबलिगोसे पस्यो
पमके प्रथम वर्गमूलके गुणित करके ओ अक्ष बाये उससे घनपस्यके द्वितीय वर्गमूलके गुणित
करके ओ अक्ष बाये उसका घनाघनपस्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि
जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, घनपस्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पस्यके द्वितीय
वर्गमूलमें भाग देने पर घनपस्यका प्रथम वर्गमूल आता है । अनन्तर पस्योपमके प्रथम वर्ग
मूलका घनपस्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पस्योपम आता है । अनन्तर असक्यात आब
लिगोका पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघन
धारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा
करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पस्योपमका प्रथम वर्गमूल २५३, घनपस्यका द्वितीय वर्गमूल ४०९६,
घनाघन पस्यका द्वितीय वर्गमूल ६८७२४७३३३३।

$$\frac{६८७२४७३३३३३}{२५ \times २५३ \times ४०९६} = २०४८ \text{ आता}$$

वहाँ पर त्रिगुणाधिकरणके कर लेने पर अक्षस्तन विकस्य समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकस्य तीन प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । वस्मेंसे
पहले त्रिरूप बोधधारामें गृहीत उपरिम विकस्यको बतछाते हैं—असक्यात आबलिगोका
पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—२५३३३ + ३२ = २०४८ आता

इन्द्रिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइन्द्रिरासी आगच्छदि । एवं तिय-अउक्क-पञ्चाडिछेद्दणमि वि अद्वच्छेदण सासणसम्माइन्द्रिरासी उप्पापदण्ण । अथवा असंखुम्भापलिपाहि पत्तिदोवम गुणेज्ज पदरपल्ल मागे हिदे सासणमम्माइन्द्रिरासी आगच्छदि । कण कारमेण ? पत्तिदोवमेव पदरपल्ले मागे हिदे पत्तिदावममागच्छदि । पुणा वि असंखुम्भापलिपाहि पत्तिदोवम मागे हिदे सासणमम्माइन्द्रिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि पि कहु गुणेज्ज मागगहण कदं । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे सामनसम्माइन्द्रि

उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद् हों वतनीबार पम्पोपम राशिके अर्थच्छेद् करने पर भी सासाङ्गसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ मागहारके ५ अर्थच्छेद् होते हैं अतः वतनीबार ६ ५३३ के अर्थच्छेद् करने पर २ ४८ प्रमाण सासाङ्गसम्पत्ति राशि जाती है ।

इसीप्रकार त्रिकछेद् चतुष्छेद् और पञ्चछेद् आदिवा अद्वच्छेद करने भी सासाङ्ग सम्पत्ति जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\begin{array}{l} \text{उदाहरण—३२ के त्रिकछेद् } २ \begin{array}{ccc} १ & २ & ३ \\ ३२ & ३२ & ३२ \\ ३ & २ & २७ \end{array} \\ ६५३३ \text{ के त्रिकछेद् } \frac{६५३३}{३} \quad \frac{६५३३}{२} \quad \frac{६५३३}{२७} \\ \frac{३५३३}{२७} + \frac{३२}{२७} = २ ४८ \text{ सा} \end{array}$$

इसीप्रकार चतुष्छेद् आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा असंख्यात व्यक्तियोंसे पम्पोपमरा गुणित करके जो अन्य जावे उसका प्रत्यक्षमें भाग देने पर सासाङ्गसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है । इसका कारण यह है कि पम्पोपमका प्रत्यक्षमें भाग देने पर पम्पोपम जाता है और फिर असंख्यात व्यक्तियोंका पम्पोपममें भाग देने पर सासाङ्गसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जा जाता है । त्रिकपञ्चपादमें इसप्रकार सासाङ्गसम्पत्ति जीव राशिका प्रमाण जाता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५३३}{३५३३ \times ३२} = २ ४८ \text{ सासाङ्गसम्पत्ति}$$

उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद् हों वतनीबार उक्त सम्पत्ति राशिके अर्थच्छेद् करने पर भी सासाङ्गसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ × ६ ५३३ रूप मागहारके २१ अर्थच्छेद् होते हैं इसलिये वतनीबार ३५३३ × ६ ५३३ के अर्थच्छेद् करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासाङ्गसम्पत्ति राशि जाती है ।

रासी आगच्छदि । तस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा कत्तिपा ? असंखेज्जावलिपद्वन्द्वेदण पाहिपलिदोवमद्वन्द्वेदणयमेवा । अब्बा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवम गुणेऊण तेण गुणितरासिणा पदरपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिंदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिंदे पदरपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्लं मागे हिंदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे मागे हिंदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कट्टु गुणेऊण मागगहन कर । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेवे रासिस्स अद्वन्द्वेदणय कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा कत्तिपा ? पलिदोवमादो उवारे चदिद्वद्वापसलागाओ विरलिय विग करिय अप्पोण्णमत्तरासि रुद्वेण पलिदोवमस्स अद्वन्द्वेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलिपाण छेदनापक्खितमेवा ।

श्रुका — उक्त मागहारकी अर्धच्छेद शाखाकाए कितनी है ?

समाधान — अर्धरयात आबलियोंके अर्धच्छेदोंको पस्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने पर जितना प्रमाण आवे उतनी उक्त मागहारकी अर्धच्छेद शाखाकार्य है ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ बीर ३५३३ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१ होता है । यही ३२ × ३५३३ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

अबबा अर्धरयात आबलियोंसे पस्योपमको गुणित करके जो गुणा की हुई पाहि छप्प आवे उससे प्रतरपक्षको गुणित करके जो राशि छप्प आवे उसका प्रतरपक्षके उपरिम बर्गमें भाग देने पर सासाधनसम्पद्यदि जीवपशिका प्रमाण आता है क्योंकि प्रतरपक्षका प्रतरपक्षके उपरिम बर्गमें भाग देने पर प्रतरपक्ष आता है । पुनः पस्योपमका प्रतरपक्षमें भाग देने पर पस्योपम आता है । पुनः अर्धरयात आबलियोंका पस्योपममें भाग देने पर सासाधनसम्पद्यदि जीवपशिका प्रमाण आता है । त्रिकप बर्गभारामें इसप्रकार भी सासाधनसम्पद्यदि जीवपशिका प्रमाण आता है । इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{35433 \times 35433}{32 \times 35433 \times 35433} = 2 \text{ वल सा}$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्पद्यदि जीवपशिका आती है ।

उदाहरण—३२ × ३५३३ × ३५३३ रूप मागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं इसलिये उतनीबार ३५३३ × ३५३३ प्रमाण मुख्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं ।

श्रुका — उक्त मागहारकी अर्धच्छेदशाखाकाए कितनी है ?

समाधान — पस्योपमसे ऊपर दो स्थान आवे हैं इसलिये दोका विरक्षण करके बीर उस विरक्षित राशिके प्रत्येक एकको दोषय करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होवे उसमेंसे एक क्रमा कर जो शेष रहे उससे पस्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो छप्प आवे उसमें अर्धरयात आबलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त मागहारकी अर्धच्छेद

शुद्धिरासी आगच्छति । तस्म मागहारस्त अद्भ्येदणमेवे रासिस्स अद्भ्येदणए कदे वि सासणसम्माशुद्धिरासी आगच्छति । एवं तिय चउक्क-पचादिउद्दणापि वि अवलंबिय सासणसम्माशुद्धिरासी उप्पाएदव्या । अथवा असंखन्नापलिमाहि पलिदोवम गुपेऊव पदरपह्णे भागे हिदे सासणसम्माशुद्धिरासी आगच्छति । कण कारणेण ? पलिदोवम पदरपह्ण भागे हिदे पलिदोवममागच्छति । पुणा वि अतंखेन्नापलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माशुद्धिरासी आगच्छति । एवमागच्छति वि कहु गुपेऊव भागगार्हणं कदं । तस्म मागहारस्त अद्भ्येदणमेवे रासिस्स अद्भ्येदणए कदे सासणसम्माशुद्धि

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार पक्षोपम राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्बन्धि जीवराशिका प्रमाण भ्रष्टा है ।

उदाहरण—३२ मागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं जता इतनीबार १५१३१ के अर्धच्छेद करने पर २ ४८ प्रमाण सासाधनसम्बन्धि राशि भाती है ।

इसीप्रकार बिक्रमेण चतुष्पछेद और पचछेद आदिका व्यवहार करने भी सासाधन सम्बन्धि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\begin{array}{r} \text{उदाहरण—३२ के बिक्रमेण } 2 \quad \begin{array}{r} 1 \\ 32 \\ 2 \end{array} \quad \begin{array}{r} 2 \\ 32 \\ 4 \end{array} \quad \begin{array}{r} 3 \\ 32 \\ 6 \end{array} \\ \hline 15131 \text{ के बिक्रमेण } \frac{15131}{2} \quad \frac{15131}{4} \quad \frac{15131}{6} \\ \hline \frac{15131}{24} - \frac{32}{24} = 628 \text{ सा} \end{array}$$

इसीप्रकार चतुष्पछेद आदि के भी उदाहरण बना केना चाहिये ।

अथवा असंख्यात आध्यात्मिक पक्षोपमसे गुणित करके जो सन्ध आगे उसका प्रत्यक्षमे भाग देने पर सासाधनसम्बन्धि जीवराशिका प्रमाण भ्रष्टा है । इसका कारण यह है कि पक्षोपमका प्रत्यक्षमे भाग देने पर पक्षोपम भ्रष्टा है और फिर असंख्यात आध्यात्मिक पक्षोपमसे भाग देने पर सासाधनसम्बन्धि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । त्रिकपर्णधारामें इसप्रकार सासाधनसम्बन्धि जीव राशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर भागका व्यवहार किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{15131}{15131 \times 32} = 2 \text{ ४८ सासाधनसम्बन्धि}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त प्रमाण राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्बन्धि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ × १५१३१ का मागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीबार १५१३१ × १५१३१ के अर्धच्छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासाधनसम्बन्धि राशि भाती है ।

आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे मागे हिदे घणपाओ आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ल मागे हिदे पलिदोवमा आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलिपाहि पत्तिदावम मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एषमागच्छदि पि कट्टु गुणेऊण मागगहण कदे । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसत्तागा केचिया ? एगम्भं विरत्तिय विगं करिय अण्णोण्णम्मत्थरासितियुणम्भूणेण पल्लियेमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलिपाण अद्वच्छेदणयपक्खिपत्तमत्ता । एषमुवरि वि अद्वच्छेदणयाण सकलण विहाण वत्तम्भ । एस्स दुग्गुणादिकरणं कायम्भं । एष सखज्जासंखेज्जाणितेसु जेयम्भं । अट्ठरूपपत्तणा गदा ।

घणाघण वत्तइस्सामो । अमंखज्जावलिपाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लव

सासाहनसम्भरदि जीयराशिका प्रमाण था जाता है क्योंकि, घनपद्वयका घनपद्वयके उपरिम पार्श्वमें माग होने पर घनपद्वय जाता है । पुनः घनरपद्वयका घनपद्वयमें माग होने पर पद्वयोपम जाता है । पुनः असंख्यात आयतियोंका पद्वयोपममें माग होने पर सासाहनसम्भरदि जीय राशिका प्रमाण जाता है । घनधारामें इसप्रकार भी सासाहनसम्भरदि जीयराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{24488 \times 411881}{24 \times 411881 \times 411881} = 2048$ सा

उक्त मागहारके जितने अघच्छेद हैं उतनीबार उक्त धन्यमान राशिक अघच्छेद करने पर भी सासाहनसम्भरदि जीयराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारक ८१ अघच्छेद होते हैं हमन्त्रिये ८१ बार उक्त धन्यमान राशिके अघच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासाहनसम्भरदि राशि आती है ।

शुंका—उक्त मागहारकी अघच्छेदसंख्याकल्प किन्तनी होगी ?

समाधान—एकका पिरखन करके भाट उस श्लोकप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिक । तीनसे गुणा करने जा मध्य आवे हममेंसे एक कम करके दोरसे पद्वयोपमके अघच्छेदोंकी गुणित करके जो संख्या आय उसमें अमग्यात आयतियोंके अघच्छेद मिला होने पर उक्त मागहारके अघच्छेद होने हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 2 = 2 \times 2 = 4 + 4 = 8$

हमंजवार ऊपर भी अघच्छेदोंके संख्यान करनेके विधानका बयन करना चाहिये । यहाँ पर दिग्गुणादिकल्पविधि करना चाहिये । हमंजवार संख्यान समक्यात और अनमन वयानोंमें भी ले आता चाहिये । हमंजवार घनधारा प्रकपना प्रमाण हुए ।

अब घनाघनधारामें पूर्णतः उपरिम विचक्षणका बयनान है—अमंख्यात आयतियोंका घनरपद्वयका गुणित करके जा मध्य आवे उसमें घनपद्वय उपरिम

एवं संस्तव्यासंस्तव्यापत्तेषु ज्ञेयम् । बरूवपरूवणा गदा ।

अद्वैतवे बचस्सामो । असंख्येयज्ञावलिप्याहि पदरपल्लं गुणेऊय घणपल्ले मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लय घणपल्ले मागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंख्येयज्ञावलिप्याहि पलिदोवम मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु गुणेऊय मागग्गाहण कद । तस्स मागहारस्म अद्वैतद्वयमेव रासिस्स अद्वैतद्वेदणए कदे वि सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । तस्स अद्वैतद्वेदणयसत्तागा केचिया ? इगुणिदपलिदोवमद्वैतद्वेदणएस्स असंख्येयज्ञावलिप्याण अद्वैतद्वेदणयपक्खिचमेत्ता । अपवा असंख्येयज्ञावलिप्याहि पदरपल्लं गुणेऊय ठेव गुणिदरासिया घणपल्लं गुणेऊय घणपल्लउवरिमवग्गे मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी

हास्यकार्यं वा जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} २ \quad २ = ४ - १ = ३ \times १३ = ४८ + ५ = ५३$$

हसीप्रकार खेच्यत असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाता चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्रकरण समाप्त हो गई ।

अब वनभारामें सुदीप्त उपरिम विचरत बतलाते हैं—असंख्यात आबलि योंसे प्रतरपस्वके गुणित करके जो लब्ध आये उसका वनपस्वमें भाग देने पर सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आ जाता है क्योंकि प्रतरपस्वके वनपस्वमें भाग देने पर पस्वोपम आता है । पुन असंख्यात आबलियोंके पस्वोपममें भाग देने पर सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है । वनभाषामें इसप्रकार सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३१}{३२ \times ३५३३} = २७८ \text{ सासाधनसम्पत्ति}$$

उक्त मागहारके अन्तर्मे अन्धच्छेद हो बननीप्रकार उक्त मग्यमानराशि वनपस्वके अर्थ छेद करने पर भी सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त मागहार ३२×३५३३ के अर्थच्छेद ३७ होते हैं । इसलिये ३७ बार उक्त मग्यमान राशि ३५५३१ के अन्धच्छेद करने पर भी २ ७८ आते हैं ।

उक्त—उक्त मागहारकी अर्थच्छेदताकावर्तित्वं चितनी है ?

समाधान—द्विगुणित पस्वोपमके अर्थच्छेदोंमें असंख्यात आबलियोंके अर्थच्छेद मिळा देने पर उक्त मागहारकी अन्धच्छेद हासाकार्य होती है ।

$$\text{उदाहरण—} १३ \times २ = ३२ + ५ = ३७$$

अपवा अनेकपाल आबलियोंसे प्रतरपस्वके गुणित करके आ गुणितराशि सप्त आये इनमे वनपस्वके गुणित करके लब्ध राशिका वनपस्वके उपरिम अर्थमें भाग देने पर

भागच्छदि । कण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ल भाग हिदे पल्लिदोवमा आगच्छदि । पुणो वि असंगेज्जावलिमाहि पल्लिदावम भागे हिदे सासणमम्माद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि सि कडु गुणेऊमा भागगहण कद । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेवे रासिस्स अट्ठच्छेदणए कदे वि सासणसम्माद्विरासी आगच्छदि । तस्सट्ठच्छेदणयसलागा केचिया ? एगम्भं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मरयरासितिगुणरूपेण पल्लिदोवमस्स अट्ठच्छेदणाओ गुणिय अमण्णोवज्जावलिमाण अट्ठच्छेदणयपक्खिसमचा । एवमुवरि वि अट्ठच्छेदणमाण सकठण विहाण वत्तम् । एरय बुशुणादिकरणं कायम्भं । एवं सग्गेज्जावलिज्जाणंतेसु गेयम्भ । अट्ठम्भपरवणा गादा ।

पणापण वत्तइस्सामा । अमण्णोवज्जावलिमाहि पदरपल्ल गुणऊण तेण घणपल्लउव

स्यसाइनसम्पाददि जीपराशिवा प्रमाण आ जाता है क्योंकि घनपस्यका घनपस्यके उपरिम पगमें भाग देने पर घनपस्य आता है । पुनः घनरपस्यका घनपस्यमें भाग देने पर पस्योपम आता है । पुनः असप्यात आधसिपोंछ पस्योपममें भाग देने पर सामाइनसम्पाददि जीव राशिवा प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार भी सासाइनसम्पाददि जीपराशिवा प्रमाण आता है, वेमा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागकर ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१५३३' \times ३५३३'}{३२ \times ३} = \frac{५३३' \times ३५३३'}{३२ \times ३} = २०४' \text{ सा}$$

उन भागहारके अन्तरे अधच्छेद हैं उतनीपार उक्त मध्यमान राशिक अधच्छेद करने पर भी सासाइनसम्पाददि जीपराशिवा प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारक ८ अधच्छेद होते हैं इसलिय ८१ पार उक्त मध्यमान राशिके अधच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सामाइनसम्पाददि राशि आती है ।

शुद्धा—उक्त भागहारकी अधच्छेदसंख्याकायें किती होती हैं ?

ममापान—एकका विरलन करके भाग उस शेषक करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिवा तीनसे गुणा करके आ मध्य आवे उममेंसे एक कम करके शेषसे पस्यो पमके अधच्छेदोंकी गुणित करके आ संख्या आवे उममें अनन्त्यान आधसिपाके अधच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अधच्छेद जान हैं ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times ३६ = ८० + ८$$

इसीप्रकार ऊपर भी अधच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका वर्णन करना चाहिये ।

पदा पर शिशुआदिकरणविधि करना चाहिये । इसीप्रकार संकलन, अमक्यान और अमल क्यानमें भी से जाना चाहिये । इसप्रकार घनधारण प्रकरण गणान्न हुए ।

अब घनधारणधारेमें शूरान उपरिम विचरका वर्णन है— अरक्यान आधसिपोंमें घनरपस्यका गुणित करके आ मध्य आवे उममें घनरपस्य उपरिम

एव संश्लेषासंज्ञावशात्तु येयम् । वेकूपरूपणा गदा ।

अद्वैते वचस्सामो । असंश्लेषावसियाहि पदरपल्लं गुणेऊण धणपल्ल मागे हिदे
सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । कण कारणेण ? पदरपल्लेण धणपल्ले मागे हिदे
पत्तिरोवममागच्छदि । पुणो वि असंश्लेषावसियाहि पत्तिरोवम मागे हिदे सासणसम्मा-
इद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कहु गुणेऊण मागग्गहण कद् । तस्स माम
हारस्स अद्वैतद्वयमेव रासिस्स अद्वैतद्वयए कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि ।
तस्स अद्वैतद्वयपसत्तमा केपिया ? दुगुणिद्वयपत्तिरोवमद्वैतद्वयएसु असंश्लेषा
वसियाहं अद्वैतद्वयपवसिष्ठमेवा । अथवा असंश्लेषावसियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तण
गुणिद्विरासिमा धणपल्लं गुणेऊण धणपल्लउपरिमवग्गे मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी

शलाकार्यं वा कार्या है ।

$$\text{उदाहरण—} २ \quad २ = ४ - १ = ३ \times १३ = ४८ + ५ = ५३.$$

इसीप्रकार संख्यात अंशकशात और अनन्तराशिमें भी के जाना चाहिये । इसप्रकार
त्रिकपमव्यवस्था समाप्त हो गई ।

अब धनभाषामें पृथीत उपरिम विख्यात वतकाले हैं—अंशकशात भाषा
पौंसे प्रतरपस्यको गुणित करके जो अण्ड भाषे वसका धनपस्यमें भाग देने
पर सासाधनसम्बन्धित जीवराशिका प्रमाण बन जाता है क्योंकि प्रतरपस्यका
व्यवस्थामें भाग देने पर पस्योपम बनता है । पुन अंशकशात व्यक्तिकोका पस्योपममें भाग देने
पर सासाधनसम्बन्धित जीवराशिका प्रमाण बनता है । धनभाषामें इसप्रकार सासाधनसम्ब-
न्धित जीवराशिका प्रमाण बनता है ऐसा समझकर पहले गुजा करके अनन्तर भाषाका
ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३६}{३२ \times ३५५३६} = २ \quad ४८ \text{ सासाधनसम्बन्धित.}$$

कल मागहारके कितने अर्थच्छेद हैं तन्वीधार कल मज्जमानराशि धनपस्यके अर्थ
च्छेद करने पर भी सासाधनसम्बन्धित जीवराशिका प्रमाण बन जाता है ।

उदाहरण—कल मागहार ३२ × ३५५३६ के अर्थच्छेद ३७ होते हैं । इसछेदे ३७ बार
कल मज्जमान राशि ३५५३६ के अर्थच्छेद करने पर भी २०४८ काले हैं ।

संका—कल मागहारकी अर्थच्छेदशास्त्रकार्य कितनी है ।

समाधान—त्रिगुणित पस्योपमके अर्थच्छेदोंमें अंशकशात भाषाव्यक्तिके अर्थच्छेद
मिक्त देने पर कल मागहारकी अर्थच्छेद शलाकार्य होती है ।

$$\text{उदाहरण—} १३ \times २ = २६ + ५ = ३७$$

अथवा अंशकशात भाषाव्यक्तियोंसे प्रतरपस्यको गुणित करके जो गुणितराशि अण्ड
भाषे इससे धनपस्यको गुणित करके अण्ड राशिका धनपस्यके उपरिम धर्ममें भाग देने पर

भागच्छदि । केय कारणेण ? घनपष्ठेणुत्रिमवग मागे हिदे घनपष्ठा आगच्छदि । पुनो वि पदरपष्ठेण घनपष्ठ भागे हिदे पलिदावमा आगच्छदि । पुनो वि असंरज्ज्वाग्नियाहि पलिदावम भाग हिदे सामणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि सि कट्टु गुणेऊण भागगहण कट्ट । तस्स भागहारस्स अट्टच्छेदणयमेवे रासिस्स अट्टच्छेदण कट्टे वि सासगसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्सट्टच्छेदणयससागा केचित्पा ? एगस्स विरलिप विग करिय अण्णोण्णस्मत्परासितिगुणस्सूणेण पलिदोवमस्स अट्टच्छेदणाओ गुणिय अर्मगेऊवावलिपाण अट्टच्छेदणयपक्खिन्नत्तमत्ता । एधमुवारी वि अट्टच्छेदणमाण सफुल्लण विहाण वत्तव । एत्थ दुगुणादिकरण कायव । गभं सगुज्ज्वाग्नयेज्ज्वाणतेसु गेयव्व । अट्टवपवत्तवणा गदा ।

घणाघण वत्तस्सामा । अर्मगुज्ज्वावलिपाहि पदरपष्ठ गुणऊण तेण घनपष्ठवव

सासादनसम्प्राद्वि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है क्योंकि, घनपस्थका घनपस्थके उपरिम वगमें भाग देने पर घनपस्थ जाता है । पुनः घनरपस्थका घनपस्थमें भाग देने पर पस्थोपम जाता है । पुनः असंख्यात आयतियोंका पस्थोपममें भाग देने पर सासादनसम्प्राद्वि जीव राशिका प्रमाण आता है । वगधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्प्राद्वि जीवराशिका प्रमाण आता है येमा मममकर पहल गुणा करके अगमर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{81 \times 81 \times 81}{81 \times 81} = 81$ या

उक्त भागहारके जितने अघच्छेद हो उतनीघार उक्त मध्यमान राशिक अघच्छेद करने पर भी सासादनसम्प्राद्वि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारक ८१ अघच्छेद होने हैं इसविध ८१ घार उक्त मध्यमान राशिके अघच्छेद करने पर भी ८०४८ प्रमाण सासादनसम्प्राद्वि राशि आती है ।

प्रश्न—उक्त भागहारकी अघच्छेदशाखाकार्यं किजनी होनी है ?

ममाधान—एकका पिरमन करके आठ उम दोऊप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिका मीनमे गुणा करके आ मध्य जाय उसमेंसे एक उम करके होयते पस्थोपमक अघच्छेदोंका गुणित करके आ राशिका जाय उसमें अर्मकयात आयतियोंके अघच्छेद मिलने देने पर उक्त भागहारक अघच्छेद होते हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 2 = 2 \times 2 = 4 + 2 = 6$

१

इमाप्रकार ऊपर भी अघच्छेदोंके मध्यम वगमर विधानका वधान करना चाहिये । यहां पर दिगुणादिकव्यधि विधान चाहिये । इमाप्रकार मध्यमान अगमयात भीर अगम वधानमें भी ले जाना चाहिये । इमाप्रकार घनप्राण प्रमणना प्रमाण हुए ।

अब घनप्राणप्राणमें शूर्वात उपरिम विचयका वगमन है—अगमयात आयतियोंके घनरपस्थका गुणित करके आ मध्य जाये उतना घनरपस्थ उपरिम

रिमबग्ग गुणेत्थं तेम घणापणपल्ले मागे हिंदे सासणसम्मार्हिरासी आगच्छदि । केम कारणेण ? पणपल्लउत्तरिमबग्गेण घणापणपल्ल मागे हिंदे पणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण पणपल्ले मागे हिंदे पल्लिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असलेज्जावलिपाहि पल्लिदोवमे मागे हिंदे सासणसम्मार्हिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कट्टु गुणेत्थं मायग्गहर्णं कदं । तस्स मागहारस्स अट्टच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्टच्छेदणए कदे वि सासणसम्मार्हिरासी आगच्छदि । तस्स अट्टच्छेदणयसलागा केचिया ? रुबूवणवहि रुमेहि पल्लिदोवमस्स अट्टच्छेदणए गुणिय असलेज्जावलिपयट्टच्छेदणयपक्खित्तमेवा । अथवा असलेज्जावलिपाहि पदरपल्ल गुणेत्थं तथ घणपल्लउत्तरिमबग्ग गुणेत्थं तेम पुणो घणापणपल्ल गुणेत्थं तस्सुत्तरिमबग्गे मागे हिंदे सासणसम्मार्हिरामी आगच्छदि । केम कारणेण ? घणापणेण उत्तरिमबग्गे मागे हिंदे घणापणा आगच्छदि । पुजा वि

बर्गको गुणित करके जो छन्द आगे उसका घनापणपल्लमें माग देने पर सासणसम्मार्हिरासी आगच्छति जीवपक्षिका प्रमाण आता है क्योंकि, घनपल्लके उपरिम बर्गका घनापणपल्लमें माग देने पर घनपल्ल आता है । पुनः प्रतरपल्लका घनपल्लमें माग देने पर पक्षोपम आता है । पुनः अर्धकपाल आबक्षियोंका पक्षोपममें माग देने पर सासणसम्मार्हिरासी जीवपक्षिका प्रमाण आता है । घनापणपल्लमें इसप्रकार सासणसम्मार्हिरासी जीवपक्षिका आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१५१३३' \times ३५५३३' \times ३५५३३'}{३२ \times ३५५३३' \times ३५५३३' \times ३५५३३'} = २४८ \text{ सप्त.}$$

इस मागहारके कितने अर्धच्छेद हो बतानीवार उक्त मन्त्रमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासणसम्मार्हिरासी जीवपक्षिका प्रमाण न आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके अर्धच्छेद १३३ होते हैं इसलिये बतानीवार उक्त मन्त्र मान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासणसम्मार्हिरासी जीवपक्षिका २४८ आती है ।

संज्ञा—उक्त मागहारकी अर्धच्छेदप्रमाणकाय कितनी है ?

समाधान—नीचेसे एक काम करके जो शेष रहते हैं उनसे पक्षोपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो छन्द आगे वससे अर्धकपाल आबक्षियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त मागहारके अर्धच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} १ - १ = ८ \times १३ = १३८ + ५ = १४३$$

अथवा अर्धकपाल आबक्षियोंसे प्रतरपल्लको गुणित करके जो छन्द आगे वससे घनापणपल्लको गुणित करके अर्धके हुए छन्दका घनापणपल्लके उपरिम बर्गमें माग देने पर सासणसम्मार्हिरासी जीवपक्षिका प्रमाण आता है । क्योंकि, घनापणपल्लका वसके उपरिम बर्गमें माग देने पर घनापणपल्ल

क्षरिप मागहारद्व्यष्टेयभा उष्णपद्व्या । सधरत्प द्रुष्यादिकरणं कादर्थ्यं । गरिद
परुष्या गदा ।

गरिदगरिदं वचइस्त्रामो । त अहा, पठिणवमस्त असंयेज्जदिभागेण वेरुव
भाराए उभरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे न मागतद्धं तेण तमिह येन वग्गे माग हिदे
सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्व्यष्टेयमेवे रासिस्स
अद्व्यष्टेयए क्खे वि सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । एवमुभरि सधरत्प कापर्थ्यं ।
वेरुवपरुष्या गदा । अद्व्यष्टे वचइस्त्रामो । धणपत्तपदमवग्गभूतस्स असंयेज्जदिभागेण
सासणसम्माइहिरासिभा उभरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे खं मागतद्धं तेण तमिह येन
वग्गं माग हिदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्व्यष्टेयमेवे

करण कर लेता चाहिये । इत्यप्रकार गृहीत उपरिमविकल्पक प्रकृपया समाप्त हुई ।

अथ गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतसाते हैं । यह इत्यप्रकार है— पञ्चोपमके
असंख्यातर्के माग (सासाहनसम्पद्विपाधि) का द्विकर्णधारार्थे ऊपर इच्छित धर्मों माग
देने पर जो माग सध्य आध उसका उसी इच्छित धर्मों माग देने पर सासाहनसम्पद्वि
जीवपाधिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३५३३ का इच्छित धर्म ३५३३

$$\frac{3533}{2088} = 3533 \times 32 \quad \frac{3533}{3533 \times 32} = 2088 \text{ सा.}$$

उक्त मागहारके द्वितरे अर्थच्छेद हों उतनीवार उक्त माग पाधिके अर्थच्छेद करने
पर भी सासाहनसम्पद्वि पाधि आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके २१ अर्थच्छेद हैं अतः उतनीवार उक्त मागमाग पाधिके
अर्थच्छेद करने पर २४ प्रमाण सासाहनसम्पद्वि पाधि आती है ।

इत्यप्रकार ऊपरके धर्मधारणोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इत्यप्रकार द्विकर्णधारार्थी
प्रकृपया समाप्त हुई । अथ धनधारार्थे गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतसाते हैं—

धनपत्रके प्रथम धर्मभूतके असंख्यातर्के मागरूप सासाहनसम्पद्वि जीवपाधिका
ऊपर इच्छित धर्मों माग देने पर जो माग सध्य आध उसका उसी इच्छित धर्मों माग देने
पर सासाहनसम्पद्वि जीवपाधिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—धन ३५३३ का प्रथम धर्मभूत २५३

$$\frac{253}{3533 \times 32} = 253 \quad \frac{3533 \times 32}{3533 \times 32} = 253 \times 32$$

$$\frac{3533}{3533 \times 32} = 253 \text{ सा.}$$

रासिस्स अद्वच्छेदणं कदे वि सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । एव सम्बत्थ परं वेदम्भं । अट्ठरूपपरवर्णना गदा । पणापणे वत्थइस्सामो । पणापणपल्लविदियवग्गसूस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइहिरासिणा उवरि इच्छिद्वग्गे भागे हिंदे अं मागल्लं तेण तस्मिं भेन वग्गे भागे हिंदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणममेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणं कदे वि सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । गहिदगहिंदो गदो ।

गहिदगुणगार वत्थइस्सामो । पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइहिरासिणा उवरि इच्छिद्वग्गे भागे हिंदे अं मागल्लं तेण तमेव वग्गं गुणेज्जं तस्सुवरिम

उक्त मागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ८९ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासाहनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्रकृष्य करना चाहिये । इसप्रकार वनघाट समाप्त हुए । अब घनाशनघाटमें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाशनपक्षके द्वितीय वर्गमूलके अक्षेपातसे मागरूप सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे प्रमाणका घनाशनपक्षके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग उभय भावे उत्तका उत्तीर्णमें भाग देने पर सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाशन ६ ५३९ का द्वितीय वर्गमूल २६, १९ का अक्षेपातसे भाग २ × १९,

$$\frac{१९}{२ \times १९} = २०४८; \quad ६' ३९ \times २ \frac{३९}{२०४८} = ६ ५३९'' \times ३२;$$

$$\frac{३२५३९ \times ३२५३९}{६५' ३९'' \times ३२} = २०४८$$

उक्त मागहारके अितने अर्धच्छेद हो इतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासाहनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पक्षोपमके अक्षेपातसे मागरूप सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे प्रमाणका पक्षोपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग उभय भावे उत्तसे उत्ती इच्छित वर्गको गुणित करके भाग हुई छद्म राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासाहनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

बगो माग हिंदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अइच्छेदणपयेचे रासिस्स अइच्छेदण कदे बि सासणसम्माइहिरासी अवधिइदे । एवं सम्बत्त एवम् । बेरूपपरूवणा गदा । अइरूपे वचइस्सामो । पणपल्लपडमवगमूलस्स असंखेज्जदिमायेव सासणसम्माइहिरासिणा उणरि इच्छिम्भगगे भागे हिंदे अ भागसई तेण तमेव बगं गुणेत्य्म तस्सवरिमवगगे भागे हिंदे सासणसम्माइहिरासी आवच्छदि । तस्स भागहारस्स अइच्छेदणपयेचे रासिस्स अइच्छेदण कदे बि सासणसम्माइहिरासी अवधिइदे । एव सम्बत्त वचइ । अइरूपपरूवणा गदा । पणाधने वचइस्सामो । पणाध

$$\text{उदाहरण—} \frac{११११}{२०४८} = ११११ \times ३२, \quad ११११ \times ११११ \times ३२ = ११११^१ \times ३२$$

$$\frac{११११ \times ११११}{११११ \times ३२} = २, ४८ \text{ छा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीबार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी साक्षात्तसम्बन्धि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५३ अर्थछेद होते हैं अतएव इतनीबार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण साक्षात्तसम्बन्धि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार हिरण्यकपणा समाप्त हुई । अब अष्ट तममें गृहीतगुणकार उपरिम निकल्यो बतलाने हैं—

धनपत्नके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातमें मायकय साक्षात्तसम्बन्धि राशिका धन पत्नके ऊपर दृष्टिगत वर्गमें माप देने पर जो माप ऊपर आवे उससे उसी दृष्टिगत वर्गको गुणित करके आई हुई सम्म राशिका दृष्टिगत वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर साक्षात्त सम्बन्धि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१५५३१ का प्रथम वर्गमूल २५३,

$$\frac{२५३^१}{१२ \times २५३} = २, ४८, \quad \frac{१५५३१^१ \times १५५३१^१}{२०४८} = १५३३ \times ३२,$$

$$१५३३ \times १५३३ \times ३२ = १५३३^१ \times ३२,$$

$$\frac{१५५३३ \times १५५३३^१}{१५३३^१ \times ३२} = २०४८ \text{ छा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीबार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी साक्षात्तसम्बन्धि जीवराशि आती है ।

उक्त भागहारके १८१ अर्थछेद होते हैं अतएव इतनीबार उक्त मध्यमान राशिके अर्थ छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण साक्षात्तसम्बन्धि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार अष्टम तम प्रकरण समाप्त हुई । अब

विदियवग्गमूत्तस्स असंखेज्जदिमागेण सासजसम्माइडिरासिषा उवरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे च मागमद्द सथ समेव वर्ग गुनेऊण सस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे सासजसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्दजेदणपमेचे रासिस्स अद्द ज्जेदणए कदे वि सासजसम्माइडिरासी अवचिहुदे । एव सम्बत्थ पणापमधाराए वत्तम्भ । गहिदगुणगारो गदा । एव सासजसम्माइडिपूरूवणा समत्ता । एव सम्मामिज्जाइडि असंखदसम्माइडि-सन्नदासन्नदाव च वत्तम्भ । णवरि विसेसो अप्पण्णयो अवहारकासेहि खविदादमो वत्तम्भा । एत्थ एवेहिं सदिहिं वत्तइस्सामो—

वत्तसि सोखस वत्तारि णण सदसहिदमहुवीसं च ।

एदे अवहारत्ता इवति सदिहिणा दिहा ॥ ३७ ॥

पनाधनधारामें गृहीतगुणकार वपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

पनाधनके द्वितीय वर्गमूलके असेक्यातवें भागकप सासाइनसम्पग्रहि जीवराशिक पनाधनपथके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आव उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो छद्म आवे उसका उसी इच्छित वर्गके वपरिम वर्गमें भाग देने पर सासाइनसम्पग्रहि जीवराशिक प्रमाण आता है ।

$$\begin{aligned} \text{उदाहरण—} & \frac{18}{2 \times 18} = 2 \text{ ४८} \quad \frac{49 \times 18 \times 49 \times 18}{2 \text{ ४८}} = 49 \times 18 \times 18 \\ & 49 \times 18 \times 18 \times 18 \times 18 = 49 \times 18 \times 18 \times 18 \times 18 \\ & \frac{49 \times 18 \times 18 \times 18 \times 18}{49 \times 18 \times 18 \times 18 \times 18} = 2048 \text{ सा} \end{aligned}$$

उक्त भागहारके जितने अर्थच्छेद हों इतनीवार उक्त प्रत्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी सासाइनसम्पग्रहि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५९१ अर्थच्छेद होने हैं इसलिये इतनीवार उक्त प्रत्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासाइनसम्पग्रहि राशि आती है ।

सर्वत्र पनाधनधारामें आवे भी इसीप्रकार कहना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार वपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

इसप्रकार सासाइनसम्पग्रहि प्रकृषा समाप्त हुई ।

इसीप्रकार सम्पगिमप्याग्रहि असंयतसम्पग्रहि और संयतासंयत जीवराशिके प्रमाणका अण्डित माजित आदिक द्वारा कथन करना चाहिये । इतनी पिरोवता है कि अपने अपने अवधारकाके द्वारा ही अण्डित माजित आदिका कथन करना चाहिये । आवे इन सबकी धकसरहि बतलाते हैं—

सासाइनसम्पग्रहिसंखन्धी अवधारकासका प्रमाण ३२, सम्पगिमप्याग्रहिसंखन्धी अवधारकासका प्रमाण १६, असंयतसम्पग्रहिसंखन्धी अवधारकासका प्रमाण ४ और संयता

दमो भागे हिंदे सासप्तसम्माद्विरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्ध्यच्छेदययमेसे रासिस्स अद्ध्यच्छेदयय कदे वि सासप्तसम्माद्विरासी अबधिद्वे । एव सम्भारव वचम् । वेरुवपरुववा रादा । अद्ध्यच्छेदययमा । घनपस्सपदमवग्गमूलस्स वत्तखेज्जदिमायेव सासप्तसम्माद्विरासिणा उतरि इधिम्वग्गे भागे हिंदे अं भागलई तेव तमेव वम गुणेत्थं तस्सुवरिमवग्गे भागे हिंदे सासप्तसम्माद्विरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्ध्यच्छेदययमेसे रासिस्स अद्ध्यच्छेदयय कदे वि सासप्तसम्माद्विरासी अबधिद्वे । एवं सम्भारव वचम् । अद्ध्यच्छेदययमा रादा । घनापणे वचइस्सामो । घनापण

$$\text{उदाहरण—} \frac{8448}{2048} = 4.125 \times 32, \quad 64 \times 32 \times 4.125 \times 32 = 262144 \times 32$$

$$\frac{8448 \times 2 \times 128}{8448 \times 32 \times 32} = 2048 \text{ सा}$$

इस मागहारके कितने अर्थच्छेद हों उतनीबार इस मागहार राशि के अर्थच्छेद करने पर भी सासप्तसम्माद्विरासी जीवराशि ही जाती है ।

उदाहरण—इस मागहारके ५३ अर्थच्छेद होते हैं अतएव इतनीबार इस मागहार राशि के अर्थच्छेद करने पर भी २३८ प्रमाण सासप्तसम्माद्विरासी जाती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विकपयकपणा समाप्त हुई । अब अब वर्णमै गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पके बतलाने हैं—

अनपस्सके प्रथम वर्गमूलके संश्लेषात्वे मागहार सासप्तसम्माद्विरासिप्रमाण वचके ऊपर इच्छित वर्णमै माग देने पर जो माग कल्प्ये तबसे उसी इच्छित वर्णके गुणित करके आई हुई कल्प्य राशिप्रमाण इच्छित वर्णके उपरिम वर्णमै माग देने पर सासप्तसम्माद्विरासी जीवराशिप्रमाण जाता है ।

उदाहरण—४५५३३ का प्रथम वर्गमूल २१३, २१३

$$\frac{213}{32 \times 2048} = 2.64, \quad \frac{8448 \times 32 \times 4.125}{2.64} = 262144 \times 32$$

$$8448 \times 32 \times 4.125 \times 32 = 262144 \times 32$$

$$\frac{8448 \times 32 \times 4.125}{8448 \times 32 \times 32} = 2048 \text{ सा}$$

इस मागहारके कितने अर्थच्छेद हों उतनीबार इस मागहार राशि के अर्थच्छेद करने पर भी सासप्तसम्माद्विरासी जीवराशि जाती है ।

इस मागहारके १८१ अर्थच्छेद होते हैं अतएव इतनीबार इस मागहार राशि के अर्थच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासप्तसम्माद्विरासी जाती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार अत्रकपयकपणा समाप्त हुई । अब

कण्डः । पुष्पमिदि सिन्धु कोडीणसुवरि जयण्ड कोडीण हेडुदो जा सखा सा पचवा ।
सा अयेगवियप्पादो इमा होदि सि न जाणिखे ? न, परमगुरुवेसादो जाणिमदे ।
तस्य पमचसैदा न पंच कोडीओ सेमठदिसनखा अट्टणउदिसहस्सा छठरं पिसद न
५९३९८२०६ । एदमेचियं होदि सि कणं गन्वे ? आरियपरपरागइमिनोवेसादो ।

अप्पमत्तसज्जदा दब्बपमाणेण केवढिया, सस्सेज्जा' ॥८॥

अदि वि एद संखेज्जा इदि वयणं सम्भसखेज्जविमप्पाण साहारणं इमदि तो वि कोदिपुषत्त व पूदि सि मम्भदे। त कच? पुध मुत्तारमणाहाणुमत्तीदो, 'पमत्तदो अप्पमत्तद्वा संखेज्जगुणहीणो' सि मुत्तादो वा। अप्पमत्तसम्भदाण पमाण गुरूवदेसदो पुषदे। दो कोहीओ छण्णउदिलक्खा णवण्णउदिसहस्सा तिरहियसय च। अकदो वि एत्तिपा हवन्ति २९६९९९०३। पुत्तं च-

शुद्धा—पृथक् पृथक् इस पक्ष से तीन कोटिके ऊपर और नी कोटिके नीचे त्रिदली संख्या है वह लेना चाहिये। परंतु वह मध्यकी संख्या अनेक विस्मयरूप होमेले यही संख्या यहाँ की गई है यह नहीं जाना जाता है !

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह परम धुठके उपदेशसे जाना जाता है। उसमें प्रमत्त सत्य जीयोंका प्रमाण पांच करोड़ सेरानसे क्षाल भूमनसे हजार दोसी छह ५९१९८१०१ है।

सुंका—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—अथार्थपरंपरासे जाये हुए त्रिनेत्रदेवके उपदेशसे यह ज्ञाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है।

अप्रमत्तस्यतु भीषद्रव्यप्रमाणस्य अपेक्षा कितने है ? संख्यातु है ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें ज्ञाया हुआ संविज्ञा यह बचन संन्यास संन्यासक जितने भी विद्यमान हैं उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपूयकस्यसे पूरा नहीं करता है अर्थात् यहाँ पर कोटिपूयकस्यसे नाबेकी संख्या १४ है यह जाना जाता है।

प्रश्न — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहाँ पर पूर्णोक्त अर्थ यह न होकर यदि कोटिपुत्रकत्वरूप अर्थ ही रह होता तो अक्षरगत सूत्र ब्रह्मनिष्ठी होकर भावव्यवस्था नहीं थी। अथवा प्रमत्तसंपत्तके बाह्यसे प्रमत्तसंपत्तका काम संचालितगुणा हीन है इस भ्रमसे भी जाना जाता है कि यहाँ पर कोटिपुत्रकत्वरूप अर्थ यह नहीं है।

अथ गुरुपदेशात् अग्रमस्तस्यैव जीर्णोक्तं प्रमाणं कथं दे—

नमःप्रसन्नयत जीर्णोवा प्रमाण हो करोड़ एयानये सान निम्नानये द्वाार यक्षसी तीन

पञ्चमी च सहस्रा पंचसया कलु छठस्य धीस ।
 पञ्चिदोषं तु एव विभाण सदिष्टिणा दिष्ट ॥ ३८ ॥
 निरहर्षं गङ्गायं छठजदी येन चतुसहस्राणि ।
 सोलसहस्राणि पुनो तिष्ठिंसया चठसीदीया ॥ ३९ ॥
 पञ्चसय चासुचसुनिहार् तु कन्ददम्भार् ।
 सासण मिस्सासजद-बिराबिराण शु कमेण ॥ ४० ॥

सासणसम्माइह्नी ३५; सम्मामिष्ठाइह्नी ३६; असजदसम्माइह्नी ४; सैवदासजद १२८; एदे अबहरकासा । सासणसम्माइह्निदम्भपमाण २०४८ सम्मामिष्ठाइह्निदम्भ-
 पमाण ४०९६ असजदसम्माइह्निदम्भपमाण १६३८४ सजदार्सजददम्भपमाण ५१२ ।
 पञ्चिदोषमपमाण ६५५३६ ।

पमत्तसजदा दम्भपमाणेण केवडिया, कोटिपुधत्तं ॥ ७ ॥

पमत्तसजदगहणं सेसगुणहानामं पडिसेह्नुं । कोटिपुधत्तगहणं सेससंखाबिरा-

संयतसंख्यंभी नवहारकासा सम्माण १२८ जानना चाहिये । सम्मामिष्ठाइह्नीके ह्याप देसे गये ये
 नवहारकासा हैं ॥ ३७ ॥

पैंसठ हजार पंचसी छठीसको पचोपम जानना चाहिये देसा सम्मामिष्ठाइह्नीके
 नवकोकम किया है ॥ ३८ ॥

सासाद्वसम्भगदि जीवपणिका सम्माण २ ४८ सम्मामिष्ठाइह्नी जीवपणिका सम्माण
 ४०९६ असंयतसम्भगदि जीवपणिका सम्माण १६३८४ बीर संयतासंयत जीवपणिका सम्माण
 ५१२ जाना है ॥ ३९-४० ॥

सासाद्वसम्भगदिसंख्यंभी मागहार ३२, सम्मामिष्ठाइह्नीसंख्यंभी मागहार १६,
 असंयतसम्भगदिसंख्यंभी मागहार ४ बीर संयतासंयतसंख्यंभी मागहार १२८ है । सासाद्व
 सम्भगदि जीवपणिका सम्माण २ ४८, सम्मामिष्ठाइह्नी जीवपणिका सम्माण ४०९६ असंयत-
 सम्भगदि जीवपणिका सम्माण १६३८४ बीर संयतासंयत जीवपणिका सम्माण ५१२ है । तथा
 पचोपमका सम्माण ६५५३६ समझना चाहिये ।

प्रमत्तसयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ? कोटिपुधत्तप्रमाण है ॥ ७ ॥

होय गुणस्वार्थका प्रविशेष करनेके लिये प्रमत्तसंयतसयतका प्रहण किया है । होय
 संख्याओंका विराकरण करनेके लिये कोटिपुधत्त पक्षका प्रहण किया है ।

१ ४ ५ ६

१ प्रमत्तसयत कोटिपुधत्तप्रमाण । द्रव्यविशेषार्थका सिद्धि के लिये प्रमत्तसयत । ४ वि
 २ ४ प्रमत्त स यत ३० नवविशेषका प्रहण करने । यो जी. १२४

करना। पुष्पमिदि तिन्ह कोडीणसुवरि नवन्ह कोडीण हेडुदो सा सत्ता सा पेत्तवा। सा अप्पेगनियप्पादो इमा होदि पि न आनिज्जे ? न, परमगुरुवदेसादो आनिज्जे। एत्थ पमत्तसम्यग्दा णं पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्टाणउदिसहस्सा छठत्तरे विसद व ५९३९८२०६। एदमेत्थि होदि पि कर्म्म णम्बदे ? आहरियपरंपरागइत्थिनोवदेसादो।

अप्पमत्तसंज्जदा द्व्यपमाणेण केवडिया, सत्तेज्जा' ॥८॥

अदि वि एदं सत्तेज्जा इदि वयं सत्तेज्जसंविमप्पार्ह माहारम इवदि तो वि कोटिपुत्त न पूरेदि पि णम्बदे। तं कव ? पुष्प सुत्तारमणहासुवत्तीदो, 'पमत्तसम्यग्दा सत्तेज्जगुत्तरीओ' पि सुत्तादो वा। अप्रमत्तसम्यग्दानं प्रमाण गुरुवदेसादो वुत्तदे। दो कोडीओ छप्पउदिलक्खा पवत्तउदिसहस्सा तिरहियसय व। अंकदो वि एत्थिमा हवति २९६९९१०३। वुत्त व-

श्रुंका—पुष्पत्त एत्थ पवत्ते तीन कोटिके ऊपर वीर भी कोटिके नीचे जितनी संख्या है वह केना चाहिये। परंतु वह सम्यक्की संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां ली गई है यह नहीं जाना जाता है।

समाधान—यहाँ क्योंकि यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है। इसमें प्रमत्तसम्यग् जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे अक्ष अठानवे हजार दोसी छह ५९३९८१०६ है।

श्रुंका—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरंपरासे आये हुए जितेन्द्रदेवके उपदेशसे यह ज्ञात जाता है कि यह संख्या इतनी ही है।

अप्रमत्तसम्यग् जीव इत्थमप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि स्वयं आया हुआ संखेज्जा यह वचन संख्यात संख्याके जितने भी विकल्पर हैं उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी यह कोटिपुष्पत्तके पूरा नहीं करता है क्योंकि यहां पर कोटिपुष्पत्तसे नीचेकी संख्या एत है यह जाना जाता है।

श्रुंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहाँ पर पूर्वोक्त अर्थ एत न होकर यदि कोटिपुष्पत्तकय अर्थ ही एत होता तो अङ्गसे एत वचनेकी कोई व्यावहारिकता नहीं थी। अथवा प्रमत्तसंयतके अक्षसे अप्रमत्तसम्यग् अक्ष संख्यातगुणा ईग है। एत एतसे भी जाना जाता है कि यहाँ पर कोटिपुष्पत्तकय अर्थ एत नहीं है।

अब गुरुपदेशसे अप्रमत्तसम्यग् जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसम्यग् जीवोंका प्रमाण दो करोड़ अठानवे अक्ष तिरानवे हजार एकसी तीन

सिगडिय-सद नकनठदी छण्णठदी नण्णमत्त ने कोडी ।

पञ्चैव वा तेष्वथवा णञ्च निसृज्य छठक्षरा चेय^१ ॥ ४१ ॥

अप्यमत्तदध्यादो पमत्तदध्ने केन कारणेन दुर्गुणः ? अपमत्तज्ञादो पमत्तज्ञाय दुर्गुणत्वादो ।

षट्पञ्चमुवसामगा दब्धपमाणेण केवळिया, पनेसेण एक्को वा
दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥

एमेगगुणह्वाभन्दि एगसमपन्दि चारिचमोहणीपसुवसामेतो अहप्पेण एगा बीवी पविसिह, उक्कस्सेण चउवप्प बीवा पविसिह । एद सायप्पदो मवदि । बिसेसदो पुम अह-समयाहिय-वासपुचचम्मवते उवसमसेहिपाआग्गा अह समया इवति । उव पढमसमए एगबीवमाइ क्कट्ठ आ उक्कस्सेण सोसम बीवा चि उवसमसेहि चहंति । निदियसमए एगबीवमाइ क्कट्ठ आ उक्कस्सेण चउवीस बीवा चि उवसमसेहि चहंति । तदियसमए एमबीवमाइ क्कट्ठ आ उक्कस्सेण तीस बीवा चि उवसमसेहि चहंति । चउवसमए एगबीवमाइ क्कट्ठ आ उक्कस्सेण छवीस बीवा चि उवसमसेहि चहंति ।

है। जहाँसे भी व्यापारसंबन्ध १९३९९१ से इतने ही हैं। क्या मी है—

अमरचंद्रपट जीर्णोद्धार अग्राज पांच करोड़ तेरागणे आठ नवगुणने हजार दोसी रु है और अमरचंद्रपट जीर्णोद्धार अग्राज दो करोड़ अग्राजने अकर विन्याजने हजार एकसी टी है ॥१॥

प्रश्न—अमृतसंघतके ग्रन्थसे अमृतसंघतका ग्रन्थ किस कारणसे बना है ?

समाधान—क्योंकि, $\sin^{-1} \sin x = x$ के समतुल्य $\sin x = \sin x$ सत्य होगा है।

आरों गुणस्मल्लोके उपश्रामक द्रव्यप्रमायकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अपेक्षा तीन और उत्कृष्टरूपसे जीवन होते हैं ॥ ९ ॥

उपेक्षामध्ये की प्रत्येक गुणस्थानमें एक समयमें चारिचरोहीनयका उपेक्षाम करता हुआ
 कामचसे एक जीव प्रवेश करता है और बल्कलरूपसे बीजक जीव प्रवेश करते हैं। यह कथन सामा-
 न्यसे है। विशेषकी अपेक्ष तो आठ समय अधिक वर्षपूयनस्थके मीतर उपेक्षामध्ये की बोप
 (कगतात) स्थल समय होते हैं। उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवकी स्थिति लेकर बल्कलरूपसे
 सोकह जीवतक उपेक्षामध्ये पर बढ़ते हैं। दूसरे समयमें एक जीवकी स्थिति लेकर बल्कलरूपसे
 बीजक जीवतक उपेक्षामध्ये पर बढ़ते हैं। तीसरे समयमें एक जीवकी स्थिति लेकर बल्कलरूपसे
 तीस जीवतक उपेक्षामध्ये पर बढ़ते हैं। चौथे समयमें एक जीवकी स्थिति लेकर बल्कलरूपसे

१ श्री श्री ११५ पर दह पनेव व तीपडमी नवदुसिहवन्मरतर वडो इति पत्राः ॥ ५.७.४२ ॥

२. पत्ता: कल्याणमठ, इमरोड एको वा डी वा मनी वा । कलर्नेन वा वीरमठ । त. वि. १५

पञ्चाङ्गानि च यन्त्राणि च । पञ्चाङ्गं ५ ५५.

पचमसमए एगजीवमाई काऊण आ उकस्सेण पायाल जीवा चि उचसमसेटि चडंति ।
 छठसमए एगजीवमाई काऊण आ उकस्सेण अठ्ठदाल जीवा चि उचसमसेटिमारुइति ।
 सप्तमसमए समएसु एकजीवमाई काऊण आ उकस्सेण चठवण्ण जीवा चि उचसमसेटि
 चडंति । उचं च—

छोछसम चठवीस तीस छठीस तइ य पायाळ ।

अठ्ठपाळ चठवण्ण चठवण्ण होइ अतिमए ॥ ४२ ॥

अद्धं पट्ठच्च सखेज्जा ॥ १० ॥

पुम्बुचेसु अइसु समएसु एगेगुणह्वाणमिह उकस्सेण सविदसमजीवे एगडं कदे
 चठउचरविसयमेत्ता इति । तेसि संखेयेण मेलानणविहाण बुधदे । अइ गच्छ इयि
 सचारसमाइ काऊण छठचरं करिय संकलणसुचेण मेलानिदे एगेगुणह्वाणमिह सविद

छठीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । पाँचवें समयमें एक जीवको भादि लेकर उक्त
 रूपसे प्यालीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । छठे समयमें एक जीवको भादि लेकर उक्त
 रूपसे अठ्ठासीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । सातवें बीर माठवें इन दोनों समयोंमें एक
 जीवको भादि लेकर उक्त रूपसे बीसवन बीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । कहा भी है—

निरम्तर माठ समसपर्यन्त उपशमभेणी पर चडनेपाळे जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम
 समयमें सोलह दूसरे समयमें बीस तीसरे समयमें तीस चापे समयमें छठीस, पाँचवें
 समयमें प्यालीस छठ समयमें अठ्ठासीस सातवें समयमें बीसवन बीर अन्तिम अष्टादश
 समयमें भी बीसवन जीव उपशमभेणीपर चडते हैं ॥ ४२ ॥

कालकी अपेक्षा उपशमभ्रणीमें संचित हुए सभी जीव क्षयपाठ होते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्त माठ समयोंमें एक एक गुणस्त्राणमें उक्त रूपसे संचित हुए संपूर्ण
 जीवोंको एकत्रित करन पर तीसरी बार होते हैं । अग्रे संक्षेपसे उम्हेंकि ओइ करनेकी
 विधि कहते हैं—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सबइको भादि अष्टादश गुण करके और उक्तको
 उक्त अष्टादश करके प्रत्येक गुणमें विहाण इत्यादि संकलन करने नियमानुसार ओइ
 करन पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमक जीवोंकी संचित राशिक प्रमाण तीसरी बार
 थ्य जाता है ।

उदाहरण— $८ - १ = ७ + २ = १३ \times ६ = २१ + १० = ३८ \times ८ = ३०४$

१ गो जी १२० वं ६ ५५ ६०

२ एककोटि लक्षिका कलिका । त ति १ ४ अर्द्ध वरुण चरित् इति कले नि संखेया ।

पचम २ ११

३ परमेष्ठिन शिरीष इत्यादि उपलब्ध कलिका । समस्त परमेष्ठिन परमेष्ठिन त विहाण । ति का

११५ वरुण वरुण इत्यादि उपलब्ध कलिका । आदिगुण परमेष्ठिन शिरीष वरुण ॥ ५ वं ६ ००

उत्तममात्र पमात्र इति । सतकस्तपमात्रधीयसहिदा सन्धे समया शुभार्थं न सति
 ति के वि पुष्पुत्तपमात्र पञ्च करोति । एद पञ्चम वक्तव्य पञ्चदशमात्र दक्षिण-
 मात्रिपरंपरागममिदि न पुनं इति । पुष्पुत्तवक्तव्यमपवाद्भ्यमात्र नाउं आत्रिपरं
 परा-अपवागमिदि वाच्यम् ।

अतएव स्ववा अजोगिकेवली दन्वपमाणेण केवडिया, पनेसेण
 एको वा दो वा तिणि वा, उक्तसेण अठोत्तरसर्दं ॥ ११ ॥

अङ्गसमपाहिय-क-मासन्मतर खगसेहिपाओगा अङ्ग समया इति । तसि
 समयायं विसेसविक्तस्वमात्रकाऊय सामान्यपरूयन कीरमाने बहण्येण एगो जीवो खग
 गुणद्वारां पविबन्धति । उक्तसेण अठोत्तरसमयमन्तजीवा खगगुणद्वारां पविबन्धति ।
 विसेसमस्तिष्ठन परूविबन्धमाये पदमसमय एगजीवमाइ काऊय वा उक्तसेण बचीस जीवा
 पि खगसेहि नडति । विदियसमय एगजीवमाइ काऊय वा उक्तसेण अठदसीस जीवा
 पि खगसेहि नडति । तदियसमय वि एगजीवमाइ काऊय वा उक्तसेण सङ्गि जीवा पि
 खगसेहि नडति । अठमसमय एगजीवमाइ काऊय वा उक्तसेण बाहचरि जीवा पि

अपने इस उत्कट प्रमात्रवाले जीवोंसे पुनः अर्ध्वं समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं
 इसलिये कितने ही व्याख्यार्थ पूर्वोक्त प्रमात्रमेंसे पाँच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमात्रमेंसे पाँच
 कमका यह व्याख्यान प्रमात्ररूपसे आ रहा है इसलिये है और व्याख्यार्थ परंपरामत है यह इस
 कमका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रमात्ररूपसे नहीं आ रहा है वाम है,
 व्याख्यार्थ-परंपरसे अवगत है ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्थानोंके क्षपक और अपोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमात्रकी अपेक्षा किन्तु
 हैं ? प्रवेष्टकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कटरूपसे एकसौ जाठ हैं ॥ ११ ॥

जाठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपकजीवोंके योग्य जाठ समय होते हैं । इन
 क्षपकोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करने सामान्यरूपसे प्रकृति करने पर अक्षयसे एक जीव
 क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होता है । तथा उत्कटरूपसे एकसौ जाठ जीव क्षपक गुणस्थानको
 प्राप्त होते हैं । विशेषका माध्यम केकर प्रकृति करने पर प्रथम समयमें एक जीवको व्याधि
 केकर उत्कटरूपसे बचीस जीवतक क्षपकयोगी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको व्याधि
 केकर उत्कटरूपसे अष्टादशीस जीवतक क्षपकयोगी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको
 व्याधि केकर उत्कटरूपसे सौ जीवतक क्षपकयोगी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ कर्णेन्द्रमार्गिका कर्मणो न नत क्षपा । अपार्मिलीरत्ता नैवमी रितारत्ता ॥ १८

२ अत्राः क्षपा अपांमिबन्धितव्य अपेक्षेय एके वा द्वौ वा त्रौ वा । अपार्मिलीरत्ता ॥ १८

३ वि १८ क्षपा जीवयोगी एवम अथ द्वौ वि अठतव । पञ्च १ २४

खगमेति चरति । पंचमसमए एगजीवमाह काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा पि खगमेति चरति । छट्ठमसमए एगजीवमाह काऊण जा उक्कस्सेण छण्णठदि जीवा पि खगमेति चरति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाह काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठसरसयमीवा पि खगमेति चरति । उचं च—

वरीसमद्वयस सट्ठी बाहउरी य शुलसीई ।

छण्णठदी अट्ठसरसदमट्ठसरसयं च वेदस्व^१ ॥ ४३ ॥

अद्द पट्ठस सस्सेज्जा ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसचिदसम्बजीवे उक्कस्सेय एगहे कदे अट्ठसरससयमेणजीवा इति । तिस्से मेलावणविहास बुबदे । तं जहा-अट्ठ गच्छं डुबिय चोत्तीसमाह काऊण वारसुपरं करिय सकलप्पसुसेण मेलाविदे खगरासी मिलदि । एस्य करणगाहा—

आदि डेकर उक्कट्ठरूपसे बहत्तर जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । पाँचवें समयमें एक जीवको आदि डेकर उक्कट्ठरूपसे चौरासी अक्षतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि डेकर उक्कट्ठरूपसे छ्यामवे जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि डेकर उक्कट्ठरूपसे प्रत्येक समयमें एकसी माठ जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । कहा मी है—

निरस्तर माठ समयपर्यन्त क्षपकमेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस दूसरे समयमें अकठाबीस तीसरे समयमें साठ चौथे समयमें बहत्तर पाँचवें समयमें चौरासी छठे समयमें छ्यामवे सातवें समयमें एकसी माठ और आठवें समयमें एकसी माठ जीव क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । ऐसा जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

काळकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव संख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त माठ समयोंमें संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर संपूर्ण जीव छहसी माठ होते हैं । आगे इसी संख्याके जाक करनेकी विधि कहत हैं—माठको गच्छरूपसे स्थापित करके चौतीसको आदि अर्थात् मुक्त करके और बारहको उत्तर अर्थात् खय करके पचमेसेन बिधीय इत्यादि सकलनचक्रके नियमानुसार जाक देने पर क्षपक जीवोंकी राशिक्रममाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— $8 - 2 = 6$ $6 \times 2 = 12$ $12 \times 12 = 144$ $144 + 144 = 288$ $288 \times 2 = 576$

अब यहाँ इसी विषयमें करणगाथा दी जाती है—

१ पो जी ४४ पं ४ १-८

२ एक्कमेव सप्रतिताः संखेया । व मि १ < अकट्ठ ववसुपरं । ववत २ २४

३ मठिउ जीवे च इति पाठः ।

सबसामगाज पमाण इवदि । सठहस्तपमाणजीवसहिदा सप्प समया भुगपं न संहति
 ति के वि पुम्भुसपमाणं पंषण करेति' । एवं पण्ण वक्खाम पवाइज्जमाण दक्खिन्म-
 माहरियपरपरागयमिदि अ भुपं इह । पुम्भुसवक्खामपपवाइज्जमाणं वाउं आहरियपरं
 परा मणागमिदि आयम्भं ।

चतुर्हं स्ववा अजोगिकेवली दब्बपमाणेण केवळिया, पवेसेण
 एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अटोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अहसमयाहिय-उ-मासस्मत्तर खवगसेति पाओगा अह समया इवति । तसि
 समयार्ण विसेसविषयमकाळण सामान्यपरुषणं कीरमाणे अहण्येण एमो जीवा खवग
 गुणद्वयं पट्टिबन्धति । उक्कस्सेण अटोत्तरसयमेवजीवा खवगगुणद्वयं पट्टिबन्धति ।
 विसेसमस्तिङ्ग परुषिज्जमाणे पढमसमय एगजीवमाई काळण वा उक्कस्सेण वधीस जीवा
 ति खवगसेति चरति । विदियसमय एगजीवमाई काळण वा उक्कस्सेण अहदातीस जीवा
 ति खवगसेति चरति । तदियसमय वि एगजीवमाई काळण वा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा ति
 खवगसेति चरति । अउत्थसमय एगजीवमाई काळण वा उक्कस्सेण वाइत्ति जीवा ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणपाठे जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकस्थान नहीं प्राप्त होते हैं
 इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच
 कमका यह व्याख्यान प्रवाहरूपसे आ रहा है इतिवत् है और आचार्य परंपरागत है यह इस
 कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवाहरूपसे नहीं व्य रहा है बरन्
 आचार्य-परंपरासे अनागत है ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्वान्तोंके क्षणक और अपयोगिकरसी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन
 हैं ? प्रश्नकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ ॥ ११ ॥

व्याह समय अधिक कुछ महीनाके मितर क्षणकश्रेणीके योग्य व्याह समय होते हैं । उन
 क्षणोंके विरोध कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे ग्रहण करने पर व्यप्यसे एक जीव
 क्षणक गुणस्वान्तों प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ व्याह जीव क्षणक गुणस्वान्तों
 प्राप्त होते हैं । विरोधका नाशय डेकर ग्रहण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि
 डेकर उत्कृष्टरूपसे वधीस जीवतक क्षणकश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि
 डेकर उत्कृष्टरूपसे अठ्ठातीस जीवतक क्षणकश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको
 आदि डेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षणकश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ अटोत्तरसमयमिदि उक्कस्सेण व पठ क्खामः । आचार्यपरिचया पंथी मितासुत ३ प ॥ १८

२ पवाइज्ज कथम अटोत्तरसमयमप्य अपेक्षेन एमी वा दो वा तयो वा । अन्वयेण अटोत्तरसमयमप्यः ।
 ३ ति १८ कथमा जीवमोपी पण्य जल हति अहवर्ग । पयह २ २४

सप्तदश्यान्ते पञ्चदश्यान्ते सप्तदिनेषु पुनो ।

परिचयिष्य गच्छगुणिदे तवसुम-वदग्राय परिग्रह्य ॥ ४४ ॥

एसा उत्तरपट्टिबन्धी । यस्य दस अवधिदे बन्धिस्यपट्टिबन्धी इवदि । एसा उव

सम-सुवर्गापरुषवर्गादा-

तिसृदि षडसि केचि चतुष्टयमात्मन्येव केचि

उत्तमसामर्थ्ये एव साक्षात् प्राण सद्व्युत्पत्तिः ॥ ४५ ॥

नठहरतिमिसुयं पमाणमुसामगण केई ५ ।

तं शेषं यः पञ्चगुणं भणति **सर्वं** तु परिष्कारं ॥ ४६ ॥

एतेषां पञ्चशतानि सप्तसप्तत्यंशं पञ्चसप्तत्यंशं—

कचर मर्यात प्रत्यक्ष आवा करके वीर हसे मच्छसे शुभित करने पर जो क्षम्य भावे
हम्मसे प्रत्यक्ष आवा मर्या देने पर वीर फिर स्वकीय आदि प्रभावको जोड़ देने पर हत्य
राष्ट्रिके पुनः मच्छसे शुभित करने पर हत्यमर वीर अपरकोय प्रमाण मर्या है ॥ ४४ ॥

उदाहरण—सपेक्षकी जपेक्षा आदि ३४, प्रत्यय १५ गच्छ ८। अथमसपेक्षकी जपेक्षा
आदि १७ प्रत्यय ३, गच्छ ८।

$22 + 2 = 24$ $3 \times 4 = 12$ $12 - 2 = 10$ $12 + 33 = 45$ $45 \times 4 = 180$ मक
 उपर्युक्तानि अपर्याप्त प्रमाण ।

३ + २ = ५, ३ × ८ = २४, २४ - ३ = २१, २१ + १७ = ३८, ३८ × ८ = ३०४, यहाँ
शुद्धस्थायी बंधनमय प्रमाण।

विशेषार्थ—यद्यपि यह करजगत्प्रवाह वहाँ पर उपरसमर्थों और क्षपणोंका प्रभाव डालेके लिये बहुत ही महत् है और इससे जगत्प्रवाहों की गति में बहुत ही परिवर्तन आता है।

है, परंतु जहाँ समाज हालि या समाज बुद्धि पाई जाती है वहाँ के लोग संख्याओं के जोड़ भी नहीं गिनते।

यह उच्चतम गति है। १०८ घंटे में १ मिमी तक बढ़ने पर वसिष्ठमायता होती है। जब

किन्तु वे ही व्यापार्य उपसामक जीवोंका प्रभाव हीनसी कहते हैं। किन्तु वे ही व्यापार्य

करते हैं। इस प्रकार यह उपशमक जीर्णोक्त समान है। उपशमोक्त इससे पूर्ण जानो ॥ ४५ ॥

अध्याप्य पाँच कम टीबची बार गर्पाय बोधी निम्नानवे करते हैं ॥ ४९ ॥

राष्ट्रीय भाषा होते हैं—

मेचसिद्धसमयाण केचिया सजोगिजिणा लम्भति चित्तरासिए कए सो चेव रासी लम्भदि । एवमण्यत्य वि जाणित्ठण वचम्भ । अहास्सादसमदाण पमाणवण्णणा गाहा—

अट्ठव सयसहस्सा गवणठदिसहस्स चेव गवयसया ।

सत्ताणठवी य तहा जहन्सात्रा होति ओयेण ॥ ४९ ॥

एवं परुषदिदसर्ष्वं समदरासिमगद्ध कदे अट्ठकोडीओ गवणठदिलफ्फा गवण ठदिसहस्सा गवसद् सत्ताणठदिमेचो होदि ८९९९९९९७ । एदम्हाओ रासिओ उव सामग-स्वगणपमानमवनेयम्भ । तेसि पमाणपरुवणगाहा—

गव चेव सयसहस्सा छम्पीससया य होति अट्ठसीया ।

परिमाण णायम्भ ठवसम-स्वगणमेद तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय तीहि भागो हायम्भो । लद्धमप्पमचरासी हवदि । दुशुप्पिदे पमचरासी

प्रकार वैचारिक करने पर बाही पूर्वोक्त ८९५०२ सयोगी जीवराशि ही आ जाती है । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	दम्पत्यराशि	लब्ध प्रमाण
८ समय	६२ केवली	समय ३२९७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	१९९३९४	८९८५२
८ समय	८८ केवली	८९९८२	८९८५०२

अब यथापवाद संवर्तोकी संख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाक्यातसयमी जीव आठ लाख निम्नानवे हजार नौसी सत्ताणवे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्रकण की गई संपूर्ण संयत जीवोंकी राशिओ एकत्रित करने पर कुल संख्या ब्याह करोड़ निम्नानवे लाख निम्नानवे हजार नौसी सत्ताणवे ८९९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपग्रामक और क्षणक जीवोंके प्रमाणओ निकाल देना चाहिये । उपग्रामक और क्षणक जीवोंके प्रमाणकी प्रकणया करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपग्रामक और क्षणक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठसी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संवर्तोकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपग्रामक और क्षणक जीवराशिओ निकालकर तीबका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग लब्ध व्याया उसना अग्रमसंयत जीवराशिओ प्रमाण

जीवा केवलज्ञान उपापद्यति, दोसु समयसु दो दो जीवा अदि केवलज्ञान उपापद्यति, दो अहसमयनेभिदसुबोमिषिणा बासीस भवति । अहसु सिद्धसमयसु अदि बासीस सजोगिबिणा सम्मति तो विभिन्नसमय-उन्मीससहस्र-सचसय अह्वासीसमेच सिद्धसमयसु केचिया सजोगिबिणा सम्मति चि तेरासिए कये अहलसस अह्वाणउदिसहस्र-दुराहिय पचसद्वच सजोगिबिणा लहा हवति । पुच च—

अहेच सयसहस्रस्य अह्वाणउदी तहा सहस्राह ।

सहा जोगिबिणाच पचसद्विउत्तरं जान' ॥ ४८ ॥

एसीए दिसाए बहुएदि पयारेदि सजोगिरासिस्स पपापभायेपय । तं बहा-
अहि पुम्बिस्ससिद्धकालस्स अहमचो सिद्धकालो सम्महं उम्हि तेरासियमहमायेपय ।
त बहा— अहसु सिद्धसमयसु अदि चउवालीसमेचा सजोगिबिणा सम्मति तो एक
समय-विउत्तरसहस्र-विभिन्नसय-चउउदिसमेच-सिद्धसमयाण केचिया सजोगिबिणा सम्मति
चि तहासिए कये पुम्बिस्सो भेच सजोगिरासी उपापद्यति । अहि जाउ भे पुम्बिस्स
सिद्धकालस्स चउम्मागमेचो सिद्धकालो सम्महं उम्हि एच तहासिए कयय । अहसु
सिद्धसमयसु अदि अहवासीदि सजोगिबिणा सम्मति तो एवासीदिसहस्र-उत्तसय-बासीदि

उह सिद्ध समयोमें तीन तीन जीव, बीर दो समयोमें दो दो जीव यदि
केवलज्ञान उपपन्न करते हैं तो आठ समयोमें संक्षिप्त रूप सयोगी जिन बासीस होते हैं ।
इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोमें बासीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन का
उन्मीस हजार सातसी अह्वासीस सिद्ध समयोमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार वैरागिक
करने पर आठ का अह्वाणउदिसहस्र हजार पांचसी दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं । कहा भी है—

सयोगी जीवोन्मीस सयसा आठ आठ अह्वाणउदिसहस्र हजार पांचसी दो सयोगी ॥ ४८ ॥

इसी विषयसे ज्ञेय प्रत्यक्षसे सयोगी जीवोन्मीस पाँच काया आदिये । भाये उन्मीस
स्वधीकरण करते हैं—

अहां पर परब्रह्मे सिद्धवाक्यः अर्धमात्र सिद्धवाक्य प्राप्त होता है अहां पर इसप्रकार
वैरागिक काया आदिये । यह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोमें यदि चवालीस सयोगी जिन
प्राप्त होते हैं तो एक काय भेसह हजार तीनसी बीसह सिद्ध समयोमें कितने सयोगी जिन
प्राप्त होंगे इसप्रकार वैरागिक करने पर पूर्वोक्त ८९,८५०२ सयोगी जीवोन्मीस ही पाँच का जाती
है । अथवा जिसमें पहलेके सिद्धवाक्य जीवा मायमात्र सिद्धवाक्य प्राप्त होता है अहां पर इस-
प्रकार वैरागिक करना आदिये । आठ सिद्ध समयोमें यदि अह्वासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं
तो एकवासी हजार छहसी पचासीमात्र सिद्ध समयोमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस

मेघसिद्धसमयाण केतिया सजोगिधिषा सम्मति चित्तरासिह कए सो चेष रासी सम्मदि । एवमप्यस्य वि जाणिऊन वचस्व । महाकखादसम्भवाय पमाणवम्भया गाहा-

जहुन सयसहस्ता नवणउदिसहस्त चेष नवयसया ।

सचाणउदी य तथा जहक्कादा होति जौषेण ॥ ४९ ॥

एवं परुविदसम्भ सजदरासिमेगहे कदे अष्टफोडीओ नवमठदिलकखा नवण उदिसहस्ता भवसद सचाणउदिमेचो होदि ८९९९९९९७ । एदम्हादो रासीदो उव सामग-खवगपमाणभवनेयम्भ । तेसि पमाणपरूषणगाहा—

नव चेष सयसहस्ता छम्बीससया य होति जहसीया ।

परिमाण प्यायम्भ उवसम्भवगाणमेद तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय सीहि भागो हापम्भो । छद्मप्यमचरासी हवदि । इगुणिदे पमचरासी

प्रकार वैराशिक करने पर बही पूर्वोक्त ८९८०२ सयोंकी जीवरशि ही व्य जाती है । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर लगन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	छद्म प्रमाण
८ समय	२२ केवली	समय ३२३७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	३३३३३४	८९८५०२
८ समय	८८ केवली	८९८८९	८९८५०२

अब यथाव्याप्त संघर्षोंकी संख्याका ज्ञान करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाव्याप्तसंघर्षी जीव भाठ काळ निम्नानवे हजार नौसी सचाणवे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्रकृषण की गई संपूर्ण संघर्ष जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुछ संख्या प्राप्त करोड़ निम्नानवे काळ निम्नानवे हजार नौसी सचाणवे ८९९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपशमक और क्षयक जीवोंके प्रमाणको निष्काट देना चाहिये । उपशमक और क्षयक जीवोंके प्रमाणकी प्रकृषण करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षयक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठ्ठासी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संघर्षोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षयक जीवरशिको निष्काटकर तीनका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग छद्म भाषा उतना क्षमत्वसंघर्ष जीवरशिका प्रमाण

इति । पुं च—

सृष्टां ब्रह्मा छन्दसमन्ता ॥ स्रष्टा सम्भे ।

तिगमनिद्रा विगगुनिद्रापमत्तसी पमत्ता दु ॥ ५१ ॥

एसा इतिवृत्तपरिवर्त्तनी । एसा गाहा न मरिया ति के बि आहरिया शुचिबलेन मर्णति । का शुची ? शुचदे—सम्भतिस्वपरोहितो पठमप्यहमकारभो बहुशीसपरिहारो तीससहस्राहिय विष्णिलक्षमेचमुनिगणपरिवृत्तादो । तेसु सत्तर-सप्य शुचिदेसु एकसहस्रकृताहियर्पथकोविदेसा संवदा होति । एदे च पुम्बिहगाहाए वृत्तसमन्ता पमार्म न पार्ति । तदा गाहा न मरियाति । एत्थ परिवारो शुचदे—सम्भोसपिजी-हितो ब्रह्मा हुंभोसपिजी । तत्पठनतिस्वपरसिस्सपरिवारं शुगमाहप्येण ओहृदिय बह मावमापय्य भेषुण न गाहासुचं इतिदुं सकिरुज्जदि, सेसोसपिजीतिस्वपरोसु बहुशीस परिवारुलंमदो । न च भरोहरावयवासेसु मशुसाण बहुचमत्थि, जनेस्वतयेककतिस्ववर

है । इसे कृपा करने पर प्रमत्तसंयत जीवव्यशिक्षा प्रमाण होता है । क्या भी है—

जिस सत्त्वको व्यभिर्मे शात है अन्तमें आठ है और मध्यमें छहबार भी है उतने अर्थात् आठ करोड़ निम्बानवे छत्र निम्बानवे इबार भी ती सत्त्वको सर्व संयत है । (इन्मेंसे उपहामक और सपकोका प्रमाण ९ २६८८ निम्बानकर जो पशि रोप रहे इसमें) तीनका माता देने पर २९९९९९ ३ प्रमत्तसंयत होते हैं । और अयमत्तसंयतोंके प्रमाणको दोसे गुणा कर देने पर ५९९९८८ ६ प्रमत्तसंयत होते हैं ॥ ५१ ॥

यह इतिव मान्यता है । यह पूर्वोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही व्यचार्य युक्तिके बलसे कहते हैं ।

संक्षेप—यह भीवली युक्ति है ? जागे लोकप्रचार बली युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थकरोंकी अपेक्षा पञ्चमम अक्षरकक्ष शिक्षा-परिवार अधिक था, क्योंकि, वे तीन कक्ष तीस इबार मुनिगणोंके वेष्टित थे । इस सत्त्वको एकसी सत्तरसे गुणा करने पर पाँच करोड़ एकसठ भ्रम संभव होते हैं । परंतु यह संख्या पूर्व गाथामें बड़े गंभी संयतोंके प्रमाणको नहीं प्रमाण होती है इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ।

समाधान—आगे पूरा लोकप्रचार करते हैं कि संपूर्ण अवसर्पिभिर्षोंकी अपेक्षा यह इन्द्रावसर्पिणी है इसलिये सुगमे माह्वारूपसे घरघर गृहस्थमायको प्राप्त हुए इन्द्रावसर्पिणी अक्षरसंख्या तीर्थकरोंके शिक्षा-परिवारको ग्रहण करके गाथासूत्रक सुचित करना शक्य नहीं है क्योंकि रोप अवसर्पिभिर्षोंके तीर्थकरोंके बड़ा शिक्षा-परिवार पाया जाता है । दूसरे मरत और देरावत क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक संख्या नहीं पाई जाती है जिससे इन दोनों क्षेत्रसंख्या एक तीर्थकरके संघके प्रमाणसे विवेकसंख्या एक तीर्थकरका संघ समान

गणपमामेण विदेहेककृतिर्यमरगणो सरिसो होज्ज । किं तु एत्थयत्तमभुवेहिंतो विदह मणुस्सा संखेज्जगुणा । तं जहा- सम्बरथोवा अतरदीवमणुस्सा । उत्तरकुल्लेवङ्कमणुवा संखेज्जगुणा । हरिरम्मयवासेसु मणुमा सखेज्जगुणा । हेमवदहेरण्वदमणुमा संखेज्जगुणा । मरहेरावदमणुमा संखेज्जगुणा । विदेहे मणुमा सखेज्जगुणा^१ पि । बहुधमणुस्सेसु जेण संजदा बहुमा खेव तेयेरयत्तमसज्जदाण पमाण पहाण कादूय सँ दूसण मभिद तप्प दूसमं, पुदिभिहणाहरियमुहभिणिग्गयचादे ।

एषो उत्तरपञ्चिषि वत्तइस्सामो । एत्थ पमत्तसंजदपमाण चत्तारि कोडीओ छासट्टिलक्खा छासट्टिसहस्सा छसद चउत्तट्टिमेच मवदि । उत्त च—

चउत्तट्टी एव सया छसट्टिसहस्स खेव परिमाण ।

छासट्टिसयसहस्सा कोटिचउत्तक पमत्ताण ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४ । ये काडीओ सत्ताषीसलक्खा णववत्तदिसहस्सा चत्तारिसद अट्टानठदिमेचा अप्पमत्तसज्जदा इधंति । उत्त च—

माना जाय । किन्तु मरत्त और येरावत्त क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे हैं । वसका स्पर्धीकरण इसप्रकार है—

अन्तरालीयोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं । उत्तरकुल और वेवकुलके मनुष्य उनसे संख्यात गुणे हैं । हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुल और वेवकुलके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । हेमवत्त और हेरण्वत्त क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मरत्त और येरावत्त क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । विदेह क्षेत्रके मनुष्य मरत्त और येरावत्तके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । बहुत मनुष्योंमें क्योंकि संयत्त बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसंख्या संयत्तोंके प्रमाणको प्रमाण करके जो हूयज कहा गया है वह हूयज नहीं हो सकता क्योंकि, वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुक्तसे निकला हुआ है । अब अग्रे उत्तर साम्यताको बतलाते हैं—

उत्तर साम्यताके अनुसार संयत्तोंमें प्रमत्तसंयत्तोंका प्रमाण केवल बार करोड़ अथासठ अथवा अथासठ हजार छत्तसी बीसठ है । क्या भी है—

प्रमत्तसंयत्तोंका प्रमाण बार करोड़ अथासठ अथवा अथासठ हजार छत्तसी बीसठ ४९९९९९९४ है ॥ ५२ ॥

ही करोड़ सत्तार्हस अथवा निम्नानवे हजार बारसौ अष्टानवे अथवा प्रमत्तसंयत्त जीव हैं । क्या भी है—

१ अन्तरालीयसहस्रता बीवा ते कुवध वत्तु तयेय्मा । तथो संखेज्जगुणा एवहि हरिरम्मयेसु पठेसु । वस्सि वंठेय्ज्जगुणा हेम्मवदप्पि हेमवदमसिंते । मरहेरावत्तसे सखेज्जगुणा विदेहे व ॥ ति व प ५२ २९

१ वसिउ अन्तरालीयसहस्रता इति पाठ ।

वे कोवि सचचीसा होति सहस्त्रा तदेव पचणठदी ।

अउसद अङ्गणठदी परिसंसा होदि विदियगुणा ॥ ५१ ॥

अकरो वि २१७९९४९८ । उवसामग खवगपमाणपरूवणा पुष्पं व भाविदम्भा ।

अवरि 'समोगिकेमली अरुं पङ्कष संश्लेख्या' एदस्स परूवणा अण्णहा इवदि । उ अहा—

अङ्गुसमयाहियसमासाणं अदि अङ्गुसमयमेपो सिद्धकाळा उम्भमिं ठो अचारि
सहस्स-सचसीसहस्स अङ्गुसद-वचीसमेचसिद्धसमया उम्भमिं । एदमिं कासमिं
वेरासिए कदे सचसीसहस्स अङ्गुसद-वचीसमेचसिद्धसमया उम्भमिं । एदमिं कासमिं
सचिदसजोगिमिजिपमाममामिअदे । उं अहा— अङ्गुस समयसु चोदस चोदस समोगिजिणा
होति पि कङ्कु अदि अङ्गुस समयाण बारहोत्तरसयमेचा समोगिजिणा उम्भमिं ठो
सचसीसहस्स अङ्गुसद-वचीसमेचसिद्धसमयाण केचिया उम्भमिं पि वेरासिए कप
पंचउत्तर-अङ्गुसीसहस्स-उत्तरसय अङ्गुसीसमेचा समोगिजिणा इवति । पुच अ—

पचैन सयसहस्सा होति सहस्त्रा तदेव उणवीसा ।

इअ स्या अङ्गयाळा जोगिमिजिणं इवदि सया ॥ ५२ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अग्रमस्तस्य जीवोन्मी संख्या दो करोड सत्तरस अम्भ
निम्नानवे हजार आरसी अनुमाने है ॥ ५१ ॥

अर्कोसे मी २१७९९४९८ अग्रमस्तस्य जीव हैं । उपशामक और सपक जीवोंके
प्रमाणका प्रकल्प पहलेके समाप्त कहना चाहिये । इसकी विशेषता है कि सयोगिकेमली
जीव काककी मनेसा संक्षिप्त हुए संख्यात होते हैं । यहां पर केचियाँके प्रमाणकी प्रकल्प
बुझरे प्रकारसे होती है । वह इसप्रकार है— आठ समय अधिक ऊँच महीनेका यदि म्यद समग्रमात्र
सिद्धकास प्राप्त होता है तो बार हजार आरसी उन्मीसमात्र आठ समय अधिक ऊँच
महीनोंके वित्तने सिद्धकास प्राप्त होंगे, इसप्रकार वैरासिक करने पर सैतीस हजार आरसी
वर्त्तमानसिद्ध समय प्राप्त होते हैं । अब इस कासमें संक्षिप्त हुए सयोगी जीवोंका प्रमाण
आते हैं । वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें बीसह बीसह सयोगी जिन
होते हैं ऐसा समग्रकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो
सैतीस हजार आरसी वर्त्तमान सिद्ध समयोंके वित्तन सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार
वैरासिक करने पर पाँच लाख उन्मीस हजार अष्टसी अङ्गुतामीस सयोगी जीव प्राप्त होते
हैं । अहा मी है—

सयोगी जिन जीवोन्मी संख्या पाँच लाख उन्मीस हजार अष्टसी अङ्गुतामीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	अध्य
१ माह ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३९ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३९ समय	५३०१४८ केवलि

५९९६४८ । एदेष अत्थपदेष अजेगहि पयारेहि सओगिरासी थानेयओ ।
उवसामग-खवगपमाणपरुषणगाहा—

पथेष सयसहस्सा होति सहस्सा तहेव तेछोसा ।

अइसया चोछोसा उवसम-उवगण केवळियो ॥ ५९ ॥

एदे सम्बसज्जे एपहे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगइसम्बरिसओ मवति । तेहिं
पमाण छकोबीओ जवणउल्लख्खा जवणउदिसहस्सा जवसय छण्णउदिमेष हवदि ।
एदस्स बेविमाणा पमत्तसज्जा हवति । विमाओ अप्पमचाविसेसज्जा हवति । पुत्त थ—

छल्लदी छल्लणा छण्णवमन्ना य सज्जा सुम्मे ।

तिगमज्जिदा विगगुणिदापमत्तसी पमत्ता हु ॥ ५९ ॥

६९९९९९९९९९ । दम्बपमाणेण अवगदओइसगुणद्वानाण अप्पणो इच्छिद-इच्छिद
रासिस्स एत्थियो एत्थियो माओ होदि चि रासि मागभागप्रकरण कीरेदे । त ज्जा— भागाओ
माओ भागमाओ । त भागभाग नत्तइस्सामो । सम्बखीवरासि सिद्धतेरसगुणद्वानमज्जिदसम्ब

इस पद्धतिके अनुसार वृत्तरे प्रकारसे भी सयोगी जीबोंकी राशि के भाग बाँटिये ।
अब उपग्रामक और क्षपक जीबोंके ममानकी प्रकृपा करनेवाली पाया करते हैं—

चारों उपग्रामक, पाँचों क्षपक और केवळी ये तीनों राशिवाँ मिकरर कुछ पाँच छाक
तेलीस हजार आठसौ बीसस हैं ॥ ५९ ॥

विष्टेपार्थ—ऊपर सयोगिकेवर्षियोंकी संख्या १२९६४८ बतसा माये हैं । उसमें चारों
उपग्रामकोंकी संख्या ११९९ और पाँचों क्षपकोंकी संख्या २९९० और मिका देने पर तीनोंकी
संख्या ५१३८३४ हो जाती है ।

इस सब सप्तकोंके एकजित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण ऋषि होते हैं ।
जब सबका प्रमाण छह करोड़ निम्नानये छाक निम्नानये हजार नीसी कमानये है । इसका दो
बेट तीन भाग अर्थात् ४६९९९९९९ जीब प्रमत्तसंपत्त हैं और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३२
जीब म्पमत्तसत्त अर्थात् शेष संपत्त हैं । कहा मी है—

जिस संख्याके आदिमें छह अन्तमें छह और मध्यमें छहबार मी हैं उतने अर्थात्
छह करोड़ निम्नानये छाक निम्नानये हजार नीसी कमानये ३९९९९९९९ जीब संपूर्ण
संपत्त हैं । इसमें तीनका भाग देने पर ऊष्म माये उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीब म्पमत्त
अर्थात् संपूर्ण संपत्त हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात्
४६९९९९९९ जीब प्रमत्तसंपत्त हैं ॥ ६० ॥

प्रथमप्रमाणकी अपेक्षा आगे हुए जीबों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी दृष्टिगत राशिके
प्रमाणका इतनावाँ इतनावाँ भाग होता है इसका ज्ञान करानेके किये इनकी मागामाग
प्रकृपा करते हैं । वह इसप्रकार है— भागसे होनेवाला भाग मागामाग है । आगे उसी
मागामागको बतलाते हैं—

जीवरासिमते मागे कडे तत्प बहुभागो मिष्टाद्वितिरासिपमाण होदि । सेस तसगुण
 द्वाणोबद्विसिद्धरासिणा रुवाहिण्य खंडिदे बहुगुण सिद्धा इवति । सेसाय मागमाप-
 परूवणई सेसरासीओ गगभागहारेणाभिर्भवति । त जहा- सज्जदासंजदद्वय तप्यमाणेव
 कीरमाणे एव भवति । सासणसम्माद्विद्वय पि संजदासजदद्वयपमाणेव कीरमाणे
 सासणसम्माद्वि अवहारकासेणोवद्विसज्जदासंजद अवहारकासमर्थ इति । सम्मामिच्छा
 इद्विद्वय संजदासजदद्वयपमाणेव कीरमाणे सम्मामिच्छाद्वि अवहारकासेणोवद्विसज्जदा-
 संजद अवहारकासमर्थ भवति । असंजदसम्माद्विद्वय पि संजदासजदद्वयपमाणेव
 कीरमाणे असंजदसम्माद्वि अवहारकासेणोवद्विसज्जदासंजद अवहारकासमर्थ भवति ।

सिद्धराशि जीव सासादनसम्पादति यदि तेरह गुणस्यानवर्ती जीवराशिके प्रमाणका
 संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर ओ प्रमाण भावे उतने संपूर्ण जीवराशिके माग करने पर उतनेसे
 बहुभाग मिष्टाद्वि जीवराशिका प्रमाण है । ओ एक भाग होय रहता है उसे सासादन
 भादि तेरह गुणस्यानवर्ती जीवराशिके प्रमाणसे यावित सिद्धराशिमें कपाधिक करके आ
 ओह ॥ उससे गणित करने पर ओ बहुभाग भावे उतने सिद्ध होते हैं ।

उदाहरण—सर्व जीवराशि १५ सिद्ध २ सासादन भादि १

$$\begin{array}{cccccccc}
 १५ - १ = १४ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \\
 १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १
 \end{array}$$

बहुभाग १ मिष्टाद्वि
 और १ सिद्धतेरह

$$२ + १ = ३ + १ = ४, ३ + ३ = ६, ३ - १ = २ \text{ सिद्ध } १ \text{ सासादन भादि}$$

अब दोष राशिपौके मागमागके प्रकरण करनेके लिये दोष राशिपौ एक भागद्वारे
 धारि जानी है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपत्तासयत जीवराशिके द्रव्यको उर्सी प्रमाणसे (सासादनप) करने पर एक होता है
 (११२ = १ पिडकप) । सासादनसम्पादति द्रव्य भी संपत्तासयतके द्रव्यप्रमाणसे करने
 पर सासादनसम्पादति अवहारकासका संपत्तासयत अवहारकासमें भाग देने पर ओ संप
 भावे ताप्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ११८ \div ११ = ४ \times ११२ = २०४८ \text{ सासादन}$$

सम्पादति द्रव्य संपत्तासयतके द्रव्यप्रमाणकरने करने पर सम्पादति द्रव्य
 अवहारकासका संपत्तासयत अवहारकासमें भाग देने पर ओ संप भावे ताप्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ११८ \div ११ = ८ \times ११२ = ४ \quad १ \text{ सम्पादति द्रव्य}$$

असंपत्तासयतके द्रव्य भी संपत्तासयतके द्रव्यके प्रमाणकरने करने पर असंपत्ता
 सम्पादति अवहारकासका संपत्तासयत अवहारकासमें भाग देने पर ओ संप भावे ताप्रमाण

अवसंजदद्व्य संजदासंजदद्व्यपमाणेण कीरमाणे एगरूपस्य असंखेज्जदिभाग मवदि ।
 एगसुप्पाइयसस्यसलागाओ एयङ्क काऊण संजदासंजद-अवहारकासमोवदिय लहेण
 पलिदोषमे मागे द्विदे तेरसगुणहणद्व्यमागच्छदि । एवं जेसि जेसि गुणहणार्ण दव्वाण
 मेगमागहारेणामममिच्छदि तेसि तेसि सलागाहि संजदासंजद अवहारकासमोवदिय
 पलिदोषमे मागे द्विदे ते ते रासीओ आगच्छंति ।

अथवा सासप्तसम्पाद्वि अवहारकालेण संजदासंजद अवहारकालमोवदिय लहेण
 सासप्तसम्पाद्वि अवहारकालं गुणेऊण पुणां संयेव गुणगारेण रुवाहिण्ण तं वेवोवद्विदे

होता है ।

उदाहरण— $१२८ - ४ = १२४ \times १२ = १४८८$ असप्तसम्पाद्वि द्व्य

उससे लेकर बीसहत्तै गुणस्थानतक भी संघर्षका द्व्य सप्ततासंघतके द्व्यके प्रमाण
 रूपसे करने पर एकद्व्य जो सप्ततासंघतका द्व्य कह भाये है उसका असंख्यातका भाग
 होता है ।

उदाहरण— $२ + १२ = १४ \times १२ = १६८$ नवसप्त द्व्य

इसप्रकार पहले उत्पन्न की हुई सप्त शताकाओंको एकत्रित करके और उनसे
 सप्ततासंघतसम्पाद्वि अवहारकाओंको अपवर्तित करके जो द्व्य भाये उससे पस्योपमके मात्रित
 करने पर सासप्तसम्पाद्वि भावि तेरह गुणस्थानतकी जीवरक्षिका प्रमाण भ्य जाता है ।

उदाहरण— $१ + ४ + ८ + १२ + १६ = ४५$

$$१२८ + ४५ \frac{१}{२} = \frac{३५४८}{२} = १७७४ - \frac{३५४८}{२} = १७७४$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्व्यका प्रमाण एक भागहारसे जानेकी इच्छा हो
 उन उन गुणस्थानोंकी शताकाओंसे सप्ततासंघतसंघतकी अवहारकाओंको अपवर्तित करके जो
 द्व्य भाये उसका पस्योपमके भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी रक्षिका भ्य जाती है ।

उदाहरण—असप्तसम्पाद्वि शताकापक्षि १२:

$$१२८ - १२ = ४; ४५१३१ + ४ = ४५१३५ असप्तसम्पाद्वि द्व्य$$

अथवा सासप्तसम्पाद्विके अवहारकासे सप्ततासंघतके अवहारकाओंको अपवर्तित
 करके जो द्व्य भाये उससे सासप्तसम्पाद्विके अवहारकाओंको गुणित करके जो द्व्य भाये
 उसे एक अधिक उसी गुणकारसे अपवर्तित करने पर सासप्तसम्पाद्वि और सप्ततासंघत
 इन दोनोंके अवहारकास भ्य जाता है ।

उदाहरण— $१२८ + १२ = ४; १२ \times ४ = १२८; ४ + १ = ५; १२८ + ५ = १३३$ सासा
 द्द और सप्ततासंघतका अवहारकास । इसका भाग पस्योपम १५१३३ में देने पर सासाद्द
 और सप्ततासंघत इन दोनों गुणस्थानोंका द्व्य $२०४८ + ५१२ = २५६०$ भ्य जाता है । इसी
 प्रकार भागे भी जानना चाहिये ।

साधन संज्ञासंज्ञायां अवहारकास्तो ह्यदि । पुनो स दो-गुणद्वयान अवहारकात् सम्म-
मिच्छाद्वि अवहारकातेनावृत्तिरुच्छेग सम्मामिच्छाद्वि अवहारकात् गुणेऽयं पुनो
तेनैव गुणगारेण रूपादिगुण पुनं गुणिद अवहारकात्तमोवृत्तिरुच्छेग गुणद्वयानावहार-
कात्ता ह्यदि । पुनो समवहारकात् असंज्ञदसम्माद्वि अवहारकातेनावृत्तिरुच्छेग
असंज्ञदसम्माद्वि अवहारकात् गुणेऽयं पुनो तेनैव गुणगारासिणा रूपादिगुण पुनित-
गुणिद अवहारकात्तमोवृत्तिरुच्छेग गुणद्वयानावहारकात्ता ह्यदि । पुनो अत्र-संज्ञ-
दस्यैव चउत्त गुणद्वयानां वृत्तिमोवृत्तिरुच्छेग चउत्त गुणद्वयानावहारकात्तं गुणद्वय
पुनो तेनैव गुणगारेण रूपादिगुण स येन गुणिद अवहारकात्तमोवृत्तिरुच्छेग गुणद्वयाना
वहारकात्ता ह्यदि ।

अनन्तर इन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकात्तको सम्मामिच्छाद्वि जीवोंके अवहार-
कात्तसे भाजित करके जो द्वय भावे वसे सम्मामिच्छाद्विके अवहारकात्तसे गुणित करके
अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकात्तके अपवर्तित
करने पर साक्षाद्गुणद्वय, सम्मामिच्छाद्वि और संवत्तासंवत्ता इन तीनों गुणस्थानोंका
अवहारकात्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२८}{५} - १२ = \frac{१२८}{८०}, \quad \frac{१२८}{८०} \times १२ = \frac{१२८}{५}, \quad \frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०}$$

$$\frac{१२८}{८०} + \frac{२०८}{८०} = \frac{३३६}{८०} \text{ सा सम्मामि और संवत्तासंवत्ता अवहारकात्त ।}$$

अनन्तर इन तीनों गुणस्थानोंसंवत्ता अवहारकात्तको संवत्तासंवत्ताद्विके अवहार-
कात्तसे भाजित करके जो द्वय भावे वसे संवत्तासंवत्ताद्विके अवहारकात्तसे गुणित करके
पुनः एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकात्तके अपवर्तित करने
पर कितीनादि बार गुणस्थानोंका मागहार व्य जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२}{१३} - ४ = \frac{१२८}{५२}, \quad \frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}, \quad \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२}$$

$$\frac{१२८}{५२} - \frac{१८०}{५२} = \frac{३८}{५२} \text{ साक्षाद्गुणद्वय ४ गुणस्थानोंका अवहारकात्त ।}$$

अनन्तर मागहारसंवत्ता यदि भी संवत्ताके द्वयसे साक्षाद्गुणद्वय बार गुणस्थानोंके
द्वयका भाजित करके जो द्वय भावे वसे उक्त बार गुणस्थानोंके अवहारकात्तसे गुणित
करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकात्तको अपवर्तित
करने पर साक्षाद्गुणद्वय तेरह गुणस्थानोंका अवहारकात्त होता है ।

उदाहरण—मागहारसंवत्ता ५ साक्षाद्गुणद्वय बार गुणस्थानोंका २३=४०, साक्षाद्गुणद्वय

$$\text{बार गुणस्थानोंका अवहारकात्त } \frac{१२८}{४१}, \quad \frac{२३}{२} = \frac{११५२}{१}$$

$$\frac{१२८}{४१} \times \frac{११५२}{१} = \frac{२९४५१२}{१}, \quad \frac{११५२}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२३}{१}$$

अथवा संवदासजद्व अनहारकाल विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंड करिय दिण्णे
रूव पडि संवदासजद्वदम्पपमाण पावेदि । तमेगरूपस्सुवरि द्विद-संवदासजद्वदम्प
णवसंजदरासिणोवद्विय लद्ध विरलेऊण उपरिमविरलणाए पढमरूपधरिदसजदासजद्वदम्प
समखंड करिय दिण्णे रूव पडि णवसंजदरासिपमाण पावेदि । पुणो त पेष्ण उपरिम
विरलणाए विदियादि-रूवाणधुवरि द्विदसजदासजद्वदम्पाणधुवरि पक्खिविद्वम्भं चाप
हेट्ठिम विरलणोवरि द्विद णवसंजदरासी सरिसन्हेद क्काऊण पविट्ठो चि । जदि हेट्ठिम
विरलणाओ उपरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूपपरिहाणी हवदि । अथ
वेरूवाहियं दुगुणमेवा हवदि तो दोण्ह रूवाणं परिहाणी हवदि । अथ विरूवाहियतिठणमेवा
हवदि तो तिण्ह रूवाणं परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उपरिमविरलणाओ हेट्ठिमविरलणा
वसंखन्त्रगुणा चि एगरूप असंखेजदिमागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेट्ठिमविरलण
रूवाहियमेवद्वाप गत्तम जदि एगरूपपरिहाणी लक्खमदि तो उपरिमविरलणमि केवद्विय

$$\frac{२९४९१२}{९} - \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३६८८} = \frac{२७१७८}{१४६६६} \text{ सासादन भावि १३ शुण}$$

स्थान राशिका अथहारकाल.

अथवा संयतासंयतके अथहारकालके विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके
प्रत्येक एकके ऊपर पञ्चोपमको समान खण्ड करके देयकपते दे देने पर विरलित राशिके
प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके
एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संपत्तराशिके अपवर्तित करके
जो अन्य भागे उक्त विरलित करके नीचे उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले
एकके ऊपर रखने हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयकपते दे देने पर प्रत्येक
एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके
प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नौ संयत द्रव्यको प्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि
रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तबतक मिलात जाना चाहिये जबतक अपस्तन
विरलनके ऊपर स्थित नौ संयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो सके । यदि अपस्तन
विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होये तो एकही हानि होती है । यदि अपस्तन
विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुणे होयें तो दोही हानि होती है । यदि अपस्तन
विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होये तो तीनही हानि होती है । यहां प्रकृतमें
तो उपरिम विरलनसे अपस्तन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकत्र असंख्यानमें
मागकी हानि होती है । उक्तका स्पर्शकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अपस्तन विरलनमात्र स्थान आकर यदि एकही हानि प्राप्त होनी है तो

रूपपरिहार्णि समामो वि तेरासिप कदे एगरूपस्य अमरुतजदिमागो आगच्छदि ।
तसुवरिमविरलणाए अवधिजे अवसजदसहिबसंजसजदगमवहारकाळो हादि ।

पुणो सासणसम्माइडि अवहारकाळे विरलेऊण पलिशेवर्म समउठं करिय दिण्ण
रूपं पडि सासणसम्माइडिद्वयपमार्थ पावदि । पुणो उवरिमविरलणपडमरूपपरिद
सासणसम्माइडिद्वयं अवसजदसहिबसंजसजदद्वयमेवोद्विप तत्त लद्धमावत्तियाए
असंखेजदिमाग विरलेऊण उवरिमविरलणाए पडमरूपस्सुवरि द्विदसासणसम्माइडिद्वयं
समउठं करिय दिण्णे रूपं पडि दमगुणद्वानरासीओ पावेंति । एत्थ एगरूपपरिददव
गुणद्वानरासिपमाणं वत्त उवरिमविरलणमिदं सुण मोत्तण उदगंतरूपस्सुवरि द्विद
सासणद्वयमिदं पक्खिणे एकरसगुणद्वानरासीओ सम्ये मिलिदा इवति । एवं इड्ढिम

उपरिम विरलणमें कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैरागिक करने पर एक
असंख्यातका भाग बचता है । उसे उपरिम विरलणमेंसे घटा देने पर नौ संयतसहित
संयतासंयत राशिका अवहारकाळ होता है ।

उदाहरण—नौ संयतराशि ९, संयतासंयत अवहारकाळ १२८ संयतासंयत द्रव्य ५१५

५१२ ११२ ५१२ ५१२ १२८ बार, अवस्थान विरलण २५९ में १
१ १ १ १ १ अधिक जघात् २५७ स्थान जाकर

५१२ + २ = २५९, यदि १ की हानि प्राप्त होती है

५ २ २ २ २ २ २ २५९ बार, तो उपरिम विरलण मात्र १२८
१ १ १ १ १ १ स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

इसप्रकार वैरागिकसे १२३ की हानि प्राप्त हो जाती है । उसे उपरिम विरलण राशि १२८
मेंसे घटा देने पर १२७३३३ बचते हैं । यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका अवहारकाळ है ।

अन्तर साक्षात्तसम्पत्ति के अवहारकाळको विरलित करने और इस विरलित
राशि के प्रत्येक एक पर एकवचनको समान बण करके देखने पर प्रत्येक एक के प्रति
साक्षात्तसम्पत्ति द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अन्तर उपरिम विरलणके पहले
एकपर एकसे हुए साक्षात्तसम्पत्ति के द्रव्यको प्रमाणादि की संयतों के द्रव्यसहित संयत-
संयतके द्रव्यसे मापित करने वहाँ जो आवश्यक असंख्यातका भाग बच्य था उसे विरलित
करके और इस विरलित राशि के प्रत्येक एक के ऊपर उपरिम विरलणके पहले एकपर स्थित
साक्षात्तसम्पत्ति के द्रव्यको समान बण करके देखने पर प्रत्येक एक के प्रति
संयतासंयत आदि दस गुणवचनवर्ती बीबीबी संख्या प्राप्त होती है । यहाँ अवस्थान विरलणके
एक एकपर एकसे हुए दस गुणवचनवर्ती राशि के प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलणमें द्रव्य
स्थानको (जिस पहले एक के ऊपर एककी हुई संख्यामें दस गुणवचनवर्ती द्रव्यका भाग दिया
है उसे) छोड़कर उसके अन्तर एकपर स्थित साक्षात्तसम्पत्ति के द्रव्यमें मिटा देने पर
सब मिल कर साक्षात्त और संयतासंयत आदि अयोगिकवर्गीपर्यंत ब्याख्या गुणवचनवर्ती

विरलणमचदसगुणद्वान्द्वय उपरिमविरलणाए द्विदसासणद्वयमिदं विरतरं दिण्णे हेट्ठिम
विरलणमेवदसगुणद्वान्द्वयसमी समप्पदि । एतस एगम्भस्स परिहाणी लम्भदि । पुणो
उपरिमविरलणाए सदर्णतरम्भोवरि द्विदसासणद्वय हेट्ठिमविरलणाए समसुद्धं करिय दिण्णे
अथ पट्ठि इसगुणद्वान्द्वयसमिपमाण पावेदि । एदं पि पेत्तुण पुम्भ व समकरणे वदे पुणो वि
उवरि एगम्भपरिहाणी लम्भदि । एव पुणो पुणो कादन्व आ उपरिमविरलणा सम्भा
एकारसगुणद्वान्द्वयअवहारकालमेव पत्ता वि । एवं समकरण करिय परिहीनरूपाण पमाण
माप्पिअदे । ॥ अहा, हेट्ठिमविरलणरूपादियमेवद्वान्द्वयमुपरिमविरलणाए गत्तुण अदि
एगम्भपरिहाणी लम्भति ता उपरिमविरलणमचसम्भस्सकेसु केवदियम्भपरिहाणि समामो
वि तरासिय करिय न्नादियहेट्ठिमविरलणाए उपरिमविरलणमोवद्विदे आवलिपाए
अमंयेलादिमागमेवामि अवणिज्जमाणरूपाणि लम्भति । ताणि उपरिमविरलणाए सरिस
एदं काऊम अभवि एकारसगुणद्वान्द्वयमवहारकालो हादि । तेण अवहारकालेण
पलिदोवमे भाग द्विदे एकारसगुणद्वान्द्वयमागच्छदि ।

जीवरशि हाता है । इसप्रकार अधरतन विरलनमात्र द्वारा गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम
विरलनमें स्थित साक्षात्तसम्प्राप्तिके द्रव्यमें मिला देने पर अवलम्ब विरलनमात्र द्वारा
गुणस्थानोंकी जीवराशि समाप्त हो जाती है और यहाँ एकछी हाति प्राप्त होती है । अनन्तर
उपरिम विरलनमें अहाँ तक द्वा गुणस्थानराशि मिश्रित हो उसके अनन्तरके विरलित
भेदपर स्थित साक्षात्तसम्प्राप्तिके द्रव्यको अवलम्ब विरलनके ऊपर समान जण्ड करके
द्वेयद्रव्यमें दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सत्यतासत्य आदि द्वारा गुणस्थानोंकी राशिवा प्रमाण
प्राप्त होता है । इस राशिवा भी लेकर पहलके समान समीकरण करन पर अर्थात् उपरिम
विरलनके गुणस्थानकी छोड़कर आगेके स्थानोंमें अवलम्ब विरलनमात्र द्वारा गुणस्थानराशिके
मिला देने पर फिर भी ऊपर एकछी हाति प्राप्त होती है । इसप्रकार अबतक संपूर्ण उपरिम
विरलन साक्षात्त और संप्रत्यक्षसत्यतादि द्वारा इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिके
अवहारकालके प्रमाणवा प्राप्त होये तबतक पट्टी विधि पुनः पुनः करत जाना चाहिये ।
इसप्रकार समाकरण करके हातिकी प्राप्त हुए अर्कोंका प्रमाण साते है । यह इसप्रकार है—

एक अधिक अवलम्ब विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें आकर यदि एक अर्कछी
हाति प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र संपूर्ण स्थानोंमें किनने अर्कोंकी हाति प्राप्त होती
इसप्रकार वैज्ञानिक करके एक अधिक अवलम्ब विरलनसे उपरिम विरलनके मात्रित करने
पर आधर्मीके असंप्रमाणमें मागमात्र अपनयमाण भेद प्राप्त होते हैं । उनकी उपरिम
विरलनमेंमे समष्टि विधान करके पट्टा देने पर गाम्भाईन और सत्यतासत्य आदि द्वारा
इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिवा अवहारकाल प्राप्त होता है । इस अवहारकालसे
परिचयमक मात्रित करने पर उपरिम ग्यारह गुणस्थानवर्ती आपगति आती है ।

उदाहरण—सामान्य अथ ३२, द्रव्य २०४८, सत्यतासत्यतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४,

पुनो सम्मामिच्छाद्वि अवहारकालं विरलेऊय पलिदोषम समल्लह करिय दिण्णे
 रूपं पडि सम्मामिच्छाद्विरासिपमाण पावेदि । पुनो एकारसगुणद्वाजरासिवा सम्मा
 मिच्छाद्विरासिदम्भमोषद्विय तत्त्व लद्धसंखेच्चरूपाणि विरलेऊय उवरिमविरलमपदम
 रूपवरिदसम्मामिच्छाद्विदम्भं समल्लहं करिय दिण्णे रूपं पडि एकारसगुणद्वाजरासिवा
 पावेदि । तं पेत्तुण उवरिमविरलमाए उवरि दिदमम्मामिच्छाद्विदम्भस्सुपरि परिवाडीए
 दिण्णे रूपादिपहेट्टिमविरलममत्तदाण गत्तुं हेट्टिमविरलममेत्तरासी समप्पदि, उवरिम
 विरलमाए एगरूपपरिहायी च हवदि । तत्त्वेमरूपं पडि वारसगुणद्वाजमेत्तरासी
 च हवदि । पुनो उवरिमत्तद्वत्तरएगरूपवरिदसम्मामिच्छाद्विदम्भं हेट्टिमविरलमाए

$$\begin{array}{cccc} २४८ & २४८ & २४८ & \\ १ & १ & १ & ३२ बार, \end{array}$$

$$२४८ \times ११४ = \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{cccc} ५१४ & ५१४ & ५१४ & ५१ \\ १ & १ & १ & २५३ \\ & & & २५७ \end{array}$$

$$२५१११ - २५ \frac{७५३}{१२८१} = २५१२$$

२५१११ रहते हैं । यही अंक ११ गुणस्थानवर्ती राशिके सांकेतिक रूप में अवहारकाल है ।

अमृत सम्मामिच्छाद्विके अवहारकालको विरचित करके और उस विरचित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पसोपमको समान अण्ड करके देवकपसे दे देने पर विरचित
 राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्मामिच्छाद्वि राशिके प्रमाण प्राप्त होता है । अमृत पूर्वोक्त
 म्बार (साक्षात् और संपत्तासंपत्तादि १) गुणस्थानवर्ती राशिके सम्मामिच्छाद्वि ग्रन्थको
 भाजित करके वहाँ जो संख्यात अंक दृश्य पड़ें उन्हें विरचित करके और उस विरचित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलमके पाँचके अंकके ऊपर रखके हुए सम्मामिच्छाद्विके
 ग्रन्थको समान अण्ड करके देवकपसे दे देने पर विरचित राशिके प्रत्येक एकके प्रति म्बार
 (साक्षात् और संपत्तासंपत्तादि २) गुणस्थानवर्ती ग्रन्थका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको
 लेकर उपरिम विरलमके ऊपर स्थित सम्मामिच्छाद्वि ग्रन्थके ऊपर परिपत्तीसे देने पर
 उपरिम विरलमके एक अधिक अथवा विरलममात्र स्थान आकर अथवा विरलममात्र
 राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलममें एक अंककी हानि होती है । तथा उपरिम
 विरलममें जहाँ तक अथवा विरलमके प्रति प्राप्त राशि दी गई है वहाँ तक प्रत्येक एकके
 प्रति म्बार (साक्षात् सम्मामिच्छाद्वि और संपत्तासंपत्तादि ३) गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि होती है । अमृत उपरिम विरलममें जिस स्थान तक म्बार गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि निर्धार हो उसके अमृतरके विरचित एक अंकपर स्थित सम्मामिच्छाद्विके

समस्तं करिय दिण्णे स्व पडि एकारसगुणद्वानमेत्तरासी पावदि । तमेकार सगुणद्वानरासि सुण्णद्वानं मात्तुण उवरि णिरतर दिण्णे स्व पडि धारसगुण द्वानरासी इवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहिय गत्तुण एगस्वस्स परिहाणी च इवदि । एवं पुणो पुणो साम कायस्स जाव खयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा धारसगुणद्वानदम्बस्स अवहारकाल पचा ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाभिज्जदे । त जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्वान गत्तुम अदि एगस्वपरिहाणी लभमदि तो सम्बिस्स उवरिमविरलणाए केवडियस्वपरिहाणि लमामो चि तेरासिय काऊम रूवाहियहेट्ठिम विरलणाए सम्मामिच्छाहिट्ठि अवहारकालमोवाहिय लद्ध तग्गि पेव अवणिदे धारसगुण द्वानाण दम्बस्स अवहारकालो इवदि । पुणो तेष अवहारकालथ पलिदोषमे भाग हिदे धारसगुणद्वानदम्बमागच्छदि ।

द्रव्यको अघस्तन विरलनमें समान लण्ड करके द्वेयकपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति म्याह (सासाम्न और संयतासपतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । उस म्याह गुणस्थानसंबन्धी राशिसे द्रव्यस्थानको (जिस अंकके ऊपरकी राशिसे अघस्तन विरलनमें समान लण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर निरन्तर द्वेयकपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति म्याह (सासाम्न मिश्र और संयतासपतादि द्वा) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें एक अधिक अघस्तन विरलनमान स्थान आकर एकत्री होति होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण हानिकर स्थानोंसे रहित होकर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यके अवहारकासको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । जब यहाँ पर हानिके म्यत्त हुए स्थानोंका प्रमाण छाते हैं । यह इसप्रकार है—

एक अधिक अघस्तन विरलनमान स्थान आकर यदि उपरिम विरलनमें एकत्री हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी इसप्रकार भैराशिक करके एक अधिक अघस्तन विरलनसे सम्प्रतिम्याहणिके अवहारकासको प्राप्त करके जो छाप जावे उसे उसी सम्प्रतिम्याहणिके अवहारकासमेंसे घटा देने पर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका अवहारकास होता है । पुनः इस अवहारकाससे पञ्चोपमके मासित करने पर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्प्रतिम्याहणिके अवहारकास १९, द्रव्य ४००९,

$$\begin{array}{r} ४०९ \quad ४०९ \quad ४०९ \quad १९ \text{ बार।} \\ १ \quad १ \quad १ \end{array}$$

$$४०९ + २९९९ = \frac{३०३४}{२९९९}$$

$$\begin{array}{r} २०३४ \\ १ \quad १ \\ \hline २९९९ \end{array}$$

$$१९९३९ + \frac{३८७}{११३०} = १९९८$$

अघस्तन विरलन १९३११ में एक और मिलाकर जो हो उतने स्थान आकर यदि उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो उपरिम विरलनमान १९ स्थान आकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार भैराशिक करने पर ३११ छाप जाते

पुणो सम्मामिच्छाद्वि ब्रह्महारफाल विरलेक्षण पलिशोधनं समस्तं करिष्ये
 रूवं पठि सम्मामिच्छाद्विरासिपमाण पावेदि । पुणो एकारसगुणद्वान्परासिषा सम्मा
 मिच्छाद्विरासिद्व्यमोषद्विष्य तस्य लक्ष्यसंयोजनरूपाणि विरलेक्षण उभरिमविरलपदम
 रूवपरिदसम्मामिच्छाद्विद्व्य समस्तं करिष्ये रूवं पठि एकारसगुणद्वान्परासिपमाणं
 पावेदि । स पेट्टण उभरिमविरलनाए उभरि द्विदसम्मामिच्छाद्विद्व्यस्तुनरि परिबाडीए
 दिव्ये रूवाहियहेद्विमविरलपमवद्वार्णं गद्वन हेद्विमविरलपमेचरासी समप्पदि, उभरिम
 विरलनाए एगरूवपरिहाणी च हवदि । सत्येगुरूवं पठि चारसगुणद्वान्पमेचरासी
 च हवदि । पुणो उभरिमसत्यतरएगरूवपरिदसम्मामिच्छाद्विद्व्य हेद्विमविरलनाए

$$\begin{array}{r} \times ४८ \quad २४८ \quad २४८ \\ १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad \begin{array}{l} ३२ \text{ बार,} \end{array}$$

$$२०४८ - ५१४ = १५३४$$

$$\begin{array}{r} ११४ \quad ५१४ \quad ०१४ \quad ५१ \\ १ \quad १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad \begin{array}{l} २१३ \\ २५७ \end{array}$$

$$१०१३३ + २१ \frac{७४३}{१२८} = १०१३२$$

२५११ १/२ रहत ई । यही तब ११ गुणस्थानवर्ती राशिसे जानेके क्रिये अनन्तरागमे है ।

अनन्तर सम्मामिच्छाद्विसे अनन्तरागमेके विरलित करके और उस विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर पञ्चोपमको समान जग- करके देखरूपसे दे देने पर विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सम्मामिच्छाद्वि राशिसे प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त
 ग्याह (सासाधन और संपत्तासंपत्तादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे सम्मामिच्छाद्वि द्व्यको
 माहित करके वहाँ जो संख्यात अंक जग्य भावें उन्हें विरलित करके और उस विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रखने हुए सम्मामिच्छाद्विसे
 द्व्यको समान लक्ष्य करके देखरूपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति ग्याह
 (सासाधन और संपत्तासंपत्तादि ११) गुणस्थानवर्ती द्व्यको प्रमाण प्राप्त होता है । उसको
 लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्मामिच्छाद्वि द्व्यके ऊपर परिपारीसे देने पर
 उपरिम विरलनके एक अधिक अनन्तर विरलनमात्र स्थान जाकर अनन्तर विरलनमात्र
 राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है । तथा उपरिम
 विरलनमें जहाँ तक अनन्तर विरलनके प्रति प्राप्त राशि हो गई है वहाँ तक प्रत्येक एकके
 प्रति ग्याह (सासाधन सम्मामिच्छाद्वि और संपत्तासंपत्तादि १२) गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि होती है । अनन्तर उपरिम विरलनमें जिस स्थान तक ग्याह गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि मिलार हो उससे, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्मामिच्छाद्विसे

अनन्तर विरलन ३२ ३/४ म १ और
 मिला देने पर जो जोड़ हो उसने
 स्थान जाकर पठि उपरिम विरलनमें
 १ अंककी हानि होती है तो उपरिम
 विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर कितनी
 हानि होगी इसमकार कैराशिक करने
 पर १२ १/४ लक्ष्य आते हैं । इसे उप-
 रिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर

एगम्बपरिहाणी च लम्बदि । एव पुणो पुणो कायम्ब सा उभरिमविरलणा सयपरिसुदा
 वरसगुणदान अवहारकालमेव पत्ता चि । पुणो एत्थ अवणयणम्बपमाणमाणिअदे । त
 अहा, स्वादियहेडिमविरलणमेसद्धान गत्तु अदि एगम्बपरिहाणी लम्बदि तो सम्बिस्से
 उभरिमविरलणाए केवदियाणि परिहाभिरुवाणि लमामो चि तेरासिय करिय स्वादिय
 इडिमविरलणाए असंबदसम्माइडि अवहारकाले ओषड्ठिदे आवलियाण असंसेअदिमाग
 मेवाणि परिहाणिरुवाणि लम्बंति । कुदो नव्वदे ? सम्बगुणदानेसु पमिदसम्बगुणगार
 सवग्गादो असंबदसम्माइडि अवहारकालो असखन्त्रगुणो चि एदम्मादो परमगुम्बदेसादो ।

मसपतसम्बगुणो जीवराशिमें मिळा देने पर उपरिम बिरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपयुक्त
 तरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एकही हानि होती है ।
 इसप्रकार जबतक उपरिम बिरलनका प्रमाण शपको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर
 उपयुक्त तरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही
 बिधि करते जाना चाहिये । अब यहाँ हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण समते हैं । यह
 इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन बिरलनमात्र स्थान आकर यदि उपरिम बिरलनमें एक स्थानकी
 हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम बिरलनमें कितने हानिरूप भंग प्राप्त होंगे, इसप्रकार
 त्रैषादिक करके एक अधिक अधस्तन बिरलनके प्रमाणसे मसपतसम्बगुणोके अवहारकालको
 मापित करने पर व्यपत्तीके असम्बन्धितमें मागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

उदाहरण—मसपतसम्बगुणो अवहारकाल ४, द्रव्य १९३८४।

१९३८४	१९३८४	१९३८४	१९३८४	अधस्तन बिरलन २३३३३ में
१	१	१	१	१ और मिलाकर जो हो उतने
१९३८४ - ३३ ८ = १९३५०				स्थान आकर यदि उपरिम
३३ ८	३३५८	३ ३८	१९३५	बिरलनमें १ स्थानकी हानि
	१			होती है तो उपरिम बिरलन
			१९३५	मात्र ४ स्थान आकर कितनी

हानि होगी इसप्रकार त्रैषादिक करने पर १९३५० हानिरूप स्थानोंका आते हैं । इसे उपरिम
 बिरलन ४ मेंसे घटा देने पर २३३३३ आते हैं । यही उक्त तरह गुणस्थानोंका अवहारकाल
 है । इस अवहारकालका भाग पस्योपम ३५३३३ में देने पर सामान्यतः ३३ गुणस्थानराशिपर
 प्रमाण ३३ ४२ होता है ।

प्रका—आधुनिक असम्बन्धितमें माग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं यह देने जाना
 जाता है ।

समाधान—संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणधारकोंके नैपार्थने अमसपत
 सम्बगुणोका अवहारकाल अन्वयानुगुणा है इस परम गुणके उपरिसे जाना जाता है कि

पुणो असञ्जदसम्माइदि अणहारकाठ विरलेऊण पसिदोबम समण्ड करिय दिण्ण रुबं पठि असञ्जदसम्माइदिरासिपमाण पावेदि । पुणो पारसगुण्णहाणरासिमा असञ्जद सम्माइदिदण्णमोवहिय उट्ठमावलिपाण असंराज्जदिमाण हेडा विरलेऊण असञ्जदसम्मा इदिदण्ण समसंज करिय दिण्ण रुब पठि पारसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि । पुणो उवरिमसुण्णहाण माण्ण ससुगरिमरूपपरिद अनञ्जदसम्माइदिदण्णस्सुवरि हेडिमविरलण्ण रुब पठि त्रिदवारसगुण्णहाणरासि पक्खिउच रुब पठि तेरसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि हेडिमविरलण्णरासिपमेघट्ठाण गंतुअ एगम्बपरिहाणा च उरुमदि । पुणो वि उदबंजर एगम्बपरिद असञ्जदसम्माइदिदण्ण इडिमविरलण्ण समण्ड करिय दिण्णो वारभगुण्णहाण रासिपमाण पावेदि । पुणो उं पचूण उवरिमविरलण्ण उररि त्रिद असञ्जदसम्माइदि दण्णस्सुवरि सुण्णहाण वाकिय पक्खिउचे रुब पठि तेरसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि

॥ । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर ९११६ आते हैं । यही उक्त १२ गुणस्थानोंका अवहारकाठ है । इस अवहारकाठका माग पस्वोपम ३५५३६ में देने पर उक्त बाण गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ३६५८ जाता है ।

अनन्तर असंयतसम्पन्नाधिके अवहारकाठके विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पस्वोपमको समान जण्ड करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्पन्नादि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त बाण (सासाहज मिश्र और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंख्या राशिसे असंयतसम्पन्नादि जीवराशिके प्रमाणको माजित करके जो आवसीरा असंख्यातवां माग द्रव्य माने उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्पन्नादि जीवराशिकी समान जण्ड करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बाण गुणस्थानसंख्या जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनके मध्य दण्णस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्पन्नादि द्रव्यप्रमाणमें अवस्थान विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बाण गुणस्थानसंख्या द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरा गुणस्थानसंख्या (सासाहजादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । और एक अधिक अवस्थान विरलनमात्र स्थान जाकर एकही हानि प्राप्त होती है । पुनः जिस स्थानतक अवस्थान विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिछाई हो उसके बराबरे एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्पन्नादि जीवराशिके प्रमाणको अवस्थान विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान जण्ड करके देयकपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बाण गुणस्थानसंख्या जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अवस्थान विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बाण गुणस्थानसंख्या राशिसे ग्रहण करके उपरिम विरलनमें दण्णस्थानको अर्थात् जिस स्थानकी असंयतसम्पन्नादि जीवराशि अवस्थान विरलनमें ही है उसे छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

दम्बमोबहिय रुबाहिय करिय विरलेऊण एकारसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे रुब पडि दसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुमागा सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा सब्बदासब्बदरासिमोवहिय रुबाहिय करिय विरलेऊण दसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोषमस्स असखेज्जमिमागमेचविरलणरूप पडि णवगुणद्वानरासिपमाण पावेदि । तत्थ बहुमागा संब्बदासब्बदरासिपमाण होदि । सेस सखेज्जमागे कदे तस्य बहुमागा पमत्तसब्बदरासिपमाण होदि । सेस संखेज्जमागे कदे तत्थ बहुमागा अप्पमत्तसब्बदरासिपमाण होदि । सेस संखेज्जमागे कदे तत्थ बहुमागा सन्नोरिरासिपमाण होदि । सेस संखेज्जमागे कदे तस्य बहुमागा पच-खवग पमाण होमि । सेसगमागो चठण्हसुवसामगाण होदि । एव भागमागो समत्तो ।

करके भीर इस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ध्यारह (सासाधन भीर संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान लब्ध करके देवरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग सासाधनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} 2048 \div 418 = \frac{213}{243} + 1 = 1\frac{213}{243}$$

$$\begin{array}{cccccc} 418 & 418 & 18 & 418 & 405 & \\ 9 & 9 & 1 & 1 & 45 & \\ & & & & 243 & \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{यहाँ पर बहुभाग 2048 प्रमाण} \\ \text{सासाधनसम्यग्दष्टि राशि है ।} \end{array}$$

अनन्तर भी (प्रमत्तमेयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको मज्जित करके जो मत्त भाषे उक्त कृपाधिक करके भीर इसका विरलण करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान लब्ध करके देवरूपसे देने पर पत्थोपमके असद्व्यक्त्ये मागमात्र विरलणक प्रति भी (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} 418 \div 2 = 209 + 1 = 210$$

$$\begin{array}{cccccc} 2 & 2 & 2 & 2 & 2 & \\ 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 210 \text{ बार} \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{यहाँ पर बहुभाग 418 संयता} \\ \text{संयत राशि है ।} \end{array}$$

शेष राशिके संख्याय भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके संख्याय वर्ण करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषक संख्याय भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिनेयली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्याय भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पाँचों शतकैय प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशतकोंका प्रमाण है । इन्त्येकार भागमाग समान हुआ ।

पुणो सम्मामिच्छाद्विपद्युदरासिणा असंबदसम्माद्विरासिमोवाहिय रूपाहियकर
रासिस्त असंबदसम्माद्विपद्युदरासि समस्तं करिय दिण्णे क्वं पडि बारसगुण
द्वानरासिपमाणे पावदि । तस्य बहुमागा असंबदसम्माद्विरासिपमाणं होदि । पुणो एकारस
गुणद्वानरासिणा सम्मामिच्छाद्विरासिमोवाहिय सद्ध रूपाहियं विरेत्थेण बारसगुणद्वान-
रासि समस्तं करिय दिण्णे क्वं पडि एकारसगुणद्वानरासिपमाणं पावदि । तस्य
बहुमागा सम्मामिच्छाद्विरासिपमाणं होदि । पुणो दसगुणद्वानरासिणा सासणसम्माद्वि

यहां व्यवहारीके असंख्यातये माग द्वानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

पुनः सम्मामिच्छाद्वि गामि बारह (सम्मामिच्छाद्वि सासाह्न और संवत्तासंवत्तादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्माद्वि जीवराशिके भववर्तित करके जो कण्य जाये उसमें एक मिता देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंबदसम्माद्वि व्यवहारेण गुणस्थानवर्ती राशिसे समान जोड़ करके देवकपसे देने पर विरहणके प्रत्येक एकके प्रति सम्मामिच्छाद्वि गामि बारह (सम्मामिच्छाद्वि, सासाह्न और संवत्तासंवत्तादि १) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें बहुमाग असंयतसम्माद्वि जीवराशिके प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} १११८४ - १११८ = \frac{१५३४}{१११२९} + १ = \frac{११३४}{१११२९}$$

$$\begin{array}{ccccccc} १११८ & १११८ & १११८ & ११८ & & & \\ १ & १ & १ & १ & & & \end{array}$$

इसमें बहुमाग १११८४ प्रमाण असंयतसम्माद्वि राशि है ।

अनन्तर ग्याह (सासाह्न और संवत्तासंवत्तादि १) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्मामिच्छाद्वि राशिसे जोड़ करके जो कण्य जाये उसमें एक और मिताकर उसका विरहण करके विरहित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्मामिच्छाद्वि, सासाह्न और संवत्तासंवत्तादि १) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे समान जोड़ करके देवकपसे देने पर विरहित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति ग्याह (सासाह्न और संवत्तासंवत्तादि १) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ बहुमाग सम्मामिच्छाद्वि जीवराशिके प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ४०९९ - ४०९९ = \frac{१५३४}{२५३९२} + १ = \frac{११३४}{२५३९२}$$

$$\begin{array}{ccccccc} २५३९२ & २५३९२ & २५३९२ & २५३९२ & & & \\ १ & १ & १ & १ & & & \end{array}$$

इसमें बहुमाग ४०९९ प्रमाण सम्मामिच्छाद्वि राशि है ।

अनन्तर दश (संवत्तासंवत्तादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासाह्नसम्माद्वि प्रमाणसे भववर्तित करके जो कण्य जाये उसमें एक और मिताकर कुछ राशिसे विरहण

दम्भमोषद्विय स्वाद्विय करिय बिरलेऊण पण्डारसगुणद्वानरासि समखठ करिय दिण्णे रुव पढि दसगुणद्वानरासिपमाण पावेदि । तत्थ बहुमागा सासणसम्माद्विरासिपमाण होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा सब्बदासंज्वरासिमोवद्विय रूपाद्विय करिय बिरलेऊण दसगुणद्वानरासि समखठ करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेचविरलणरूप पढि णवगुणद्वानरासिपमाण पावेदि । तत्थ बहुमागा समदासंज्वरासिपमाण होदि । सेम सखेज्जमाणे कदे तत्थ बहुमागा पमचसमदासिपमाण हादि । सेसं सखेज्जखण्डे कए तत्थ बहुमागा अप्पमचसंज्वरासिपमाण होदि । सेस सखेज्जमाणे कदे तत्थ बहु मागा सन्नोगिरासिपमाण होदि । सेस सखेज्जमाणे कदे तत्थ बहुमागा पच-खवण पमाण होदि । सेसगमाणो चउण्हमुवसाममाण होदि । एव भागमाणो समघो ।

करके मीर उस विपठित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति म्यारह (सासादन मीर संपतासपठादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे समान नण्ड करके द्वेयूपसे दे देने पर विपठित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति दश (संपतासपठादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिचा प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिचा प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ + ५१४ = ३ \frac{५१३}{२१७} + १ = ४ \frac{२१३}{२१७}$$

५१४	५१४	१४	१४	५०६	यहाँ पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है ।
१	१	१	१	५१३	
				२१७	

अनन्तर नी (प्रमत्तमेयठादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संपतासपठ राशिसे भाजित करके जो मध्य भागे उम कपाधिक करके और उसका बिरलन करके विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति दश (संपतासपठादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे समान नण्ड करके द्वेयूपसे इन पर पस्योपमके असख्यातके भागमाग बिरलनक प्रति नी (संपठादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिचा प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग संपतासपठ जीवराशिचा प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ११२ + २ = २१६ + १ = २१७$$

२	२	२	२	२	यहाँ पर बहुभाग ५१३ संपता-सपठ राशि है ।
१	१	१	१	१	

दोष राशिसे संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तमेय जीवराशिचा प्रमाण है । दोष राशिसे संख्यात नण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तमेय जीवराशिचा प्रमाण है । दोषक संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिदेयनी जीवराशिचा प्रमाण है । दोषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पाथी क्षयकोष प्रमाण है । दोष एक भाग पाथी उपपन्नकोष प्रमाण है । इनप्रकार भागमाग समान हुआ ।

संपदि अवगदसम्बन्धमानसस सिस्सस्त एत्येव रासीणमप्यबहुच भविस्तानो—

अङ्गमे अपियोगहारे एवं सुचगारो भविस्सदि सि पुष्परुचदोसा भविदि सि
पासंक्रमिन्, तस्स पडिपुद्दसिस्सविसयचादा । अप्पडिपुद्दसिस्से आस्सिअण सद्वार
परुवर्णं पि य दोसकारण भवदि । तस्य अप्पाबहुग दुविई, सत्याणप्पाबहुग सम्भपर
स्थाणप्पाबहुगे चेदि । एत्य मिअडाइस्सि सत्याणप्पाबहुगे वारिय । किं कारणं ? जण
मिअडाइद्विरासीदो पुनरासी अम्महियो जादो । तस्य ताव सासणसम्माइस्सि सत्याण
प्पाबहुगं वचस्सामो । त अहा, सम्भरपोदो अवहारकाओ तस्सव इम्ममसंखेअगुणं ।
का गुणगारो ? सगइम्मस अंसंखेअदिमागो । को पडिमागो ? सग अवहारकाओ ।
अववा गुणगारो पत्तिदोवमस अंसंखेअदिमागो अंसंखजाणि पत्तिदोवमपडमवग
भूसामि । को पडिमागो ? सगअवहारकालवगो । एत्य पडिमागविमिचं दुगुणाधिकरपे

अब लिखने संस्कृत जीवशास्त्रिके प्रमाणको ज्ञान किया है देखे शिष्यके लिये यहाँ पर
जीवशास्त्रिका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

छंका—सूचकार अर्थात् अनुयोगहार्ये इसका कथन करेंगे ही, इसलिये यहाँ पर
इसका कथन करतेसे पुनरुक्त होप होता है ?

समाधान—देखी आशंक नहीं करनी चाहिये क्योंकि, वह पुनर्वक्तृव्योपविचार
प्रतिपुद्ग शिष्यका ही विषय है । किन्तु जो शिष्य अस्तिपुद्ग है उसकी अपेक्षा सूचकार अल्प
करना भी दोषका कारण नहीं है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है अस्थान अल्पबहुत्व और अवपरस्थान अल्पबहुत्व ।

अल्पमरूपव्यर्थे मिथ्याशक्ति जीवशास्त्रिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

छंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि, मिथ्याशक्ति जीवशास्त्रिके पुनराशक्ति नहीं है । अब पहले साक्षात्
सम्पन्नादि वाचिका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—साक्षात्पुनसम्पन्नादि
अवहारका सबसे श्लोक है । उसीका द्रव्य अवहारकाछसे अस्तंभवातगुणा है । गुणकार
क्या है ? अपने (साक्षात्पुनसम्पन्ना) द्रव्यका अस्तंभवातवा भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या
है ? अपना (साक्षात्पुनसम्पन्ना) अवहारका प्रतिमाग है । अर्थात् अवहारकाछका साक्षात्पुन
सम्पन्नादिसम्पन्ना द्रव्यमे भाग देने पर जो छन्द आये उसकी अवहारकाछसे गुणित करने
पर साक्षात्पुनसम्पन्नादि जीवशास्त्रिके होती है । अथवा, गुणकार पस्यापमका अस्तंभवातवा भाग है
जो पस्यापमके अस्तंभवात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अपने अवहारकाछका
वर्ग प्रतिमाग है ।

उदाहरण—साक्षात्पुन द्रव्य २ ४८, अवहारकाछ ३२, २०४८ ÷ ३२ = ६४ गुणकार
प्रतिमाग ३२, पस्यापम ३५५३६, अवहारकाछका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४
प्रतिमाग, ३५५३६ ÷ १ २४ = ६४ गुणकार

कादम्भ । व वहा, वचइस्सामो— सगभवहारकालेण पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्मा इड्डिरासी आगच्छदि । विगुणिवदभवहारकालेण पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासिस्स दुमागो आगच्छदि । तिगुणिवदभवहारकालेण पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्मा इड्डिरासिस्स तिमागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरण कादम्भ जाव सासणसम्माइड्डि अवहारकालस्स अद्वन्द्वेवणयमेववारा गदा सि । तस्य अंतिमवियप्प वचइस्सामो । सासणसम्माइड्डि अवहारकालस्स अद्वन्द्वेवण विरलेऊण विग करिय अम्भोज्जम्मासे फदे सासणसम्माइड्डिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइड्डिरासिस्स अवहारकाल गुणिदे गुणगारपडिमागो होदि । सासणसम्माइड्डिदम्भादो पलि दोवममसखेज्जगुण । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एव सम्माभिच्छाड्डि-असंअद्व सम्माइड्डि-सज्जदासंअद्वण च अप्पावहुग वचच्च । एमचसज्जदादीय सत्थावप्पावहुग वरिय, तेसिमवहारकालामावादो ।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये डिगुणादिकरण विधि करना चाहिये । यह जिसप्रकार है मागे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकाळसे पस्वोपमको माजित करने पर सासादनसम्मगदधि जीवराशिका प्रमाण जाता है (१५ ३१ + ३२ = २०४८ सा) डिगुणित अवहारकाळसे पस्वोपमको माजित करने पर सासादनसम्मगदधि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (१५ ३१ - १४ = १ २४) । विगुणित अवहारकाळसे पस्वोपमके माजित करने पर सासादनसम्मगदधि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (१५ ३१ + ११ = ६८२३) । इसप्रकार जबतक सासादनसम्मगदधिसंबन्धी अवहारकाळके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेपर डिगुणादिकरण विधि हो जाये जबतक यह विधि करते जाना चाहिये । यहां जब अन्तिम निकल्यकी बतलाते हैं— सासादनसम्मगदधि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाळके अर्धच्छेदोंको विरहित करके और उसको दो रूप करने परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्मगदधि जीवराशिके अवहारकाळका प्रमाण होता है । इस अवहारकाळसे सासादनसम्मगदधि जीवराशिके अवहारकाळको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्मगदधि अवहारकाळ ३२, अर्धच्छेद ५।

$$\begin{array}{r} २ \quad २ \quad ७ \quad २ \quad २ = ३५ \quad ३२ \times ३२ = १०२४ \text{ गुणकार प्रतिभाग} \\ १ \quad १ \quad १ \quad १ \quad १ \end{array}$$

सासादनसम्मगदधिक द्रष्टव्य पस्वापम असंखयासगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना मयान् सासादनसम्मगदधिक अवहारकाळ गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पस्वोपम) ।

इसीप्रकार सम्मगिमिध्यादधि, असंपतसम्मगदधि और संयतासंयतोने अप्यबहुतपत्तय कायन करना चाहिये । प्रमत्तसत्त आदिका व्यवधान अप्यबहुत नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाळ नहीं है ।

संपदि अवगदसम्पपमानस्त सिस्सस्त एत्येव रासीणमप्यबहुत मभिसामो—

अहुमे अभियाभहारे एर्ह सुचगारा मभिससदि सि पुनरुत्तदोसो भवदि पि पार्सकपिन्ध, तस्त पदिबुद्धसिस्सभिसयचादा । अप्यदिबुद्धसिस्से अस्तिउच्च सदवात्-
परूपर्ष पि न दोसकारण भवदि । तत्त्व अप्याप्यहुग दुभिर्ह, सत्पानप्याबहुग सग्वर
त्पानप्याबहुम वेदि । एत्य मिच्छाद्दिस्स सत्पानप्याबहुग पत्ति । किं क्खवें ? वेव
मिच्छाद्दिस्सरासीदो धुवरासी अभ्यदिओ भावो । सत्य ताव सातपसम्माद्दिस्स सत्पान-
प्याबहुम वचस्सामो । तं जहा, सग्वरयोवो अवहारकासो तस्सेव दम्ममर्सेज्जगुण ।
को गुणमारो ? सगद्व्यस्त असंखेज्जदिमागो । को पदिमागो ? सग अवहारकासो ।
भववा गुणमारो पत्तिदोवमस्त मर्सेज्जदिमागो असंखेजाणि पत्तिदोवमपढमवय-
भूत्तन्नि । को पदिमागो ? सगववहारकासवग्गो । एत्य पदिमागविमिव दुगुमादिकर्त्त

अब सिधने संपूर्ण जीवराशिसे ममानको ज्ञान किया है ऐसे शिष्यके लिये वहीं पर
जीवराशिसे अव्यवहृत्य बतलाते हैं—

संज्ञा—स्वकार भावने अनुयोगजात्यै इसका कथन करेंगे ही इसलिये यहाँ पर
स्वका कथन करनेसे पुनरुक्त होय होता है ?

समाधान—वेही आशंका नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह पुनरुक्तिव्योपनिवार
प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है । किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सीकार प्रकटन
करना ही दोषका कारण नहीं है ।

अस्पनहृत्य हो अवहारका है स्वस्याव अव्यवहृत्य और सर्वपरत्पान अव्यवहृत्य ।

जोषमकपज्जमे मिष्साद्यदि जीवराशिसे स्वस्याव अव्यवहृत्य नहीं पाया जाता है ।

संज्ञा—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि मिष्साद्यदि जीवराशिसे सुचराशि बड़ी है । अब पहले स्वस्याव-
सम्पन्नादि राशिसे स्वस्याव अव्यवहृत्य बतलाते हैं । वह स्वस्याव है—सासत्त्वसम्पन्नादि
अवहारकाक सबसे कोक है । इसीका प्रथम अवहारकाकसे असंख्यातगुण है । गुणकार
क्या है ? अपने (सासत्त्वसंज्ञा) प्रत्यक्ष असंख्यातता माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या
है ? अपना (सासत्त्वसंज्ञा) अवहारकाक प्रतिमाग है । अर्थात् अवहारकाकका सासत्त्व
सम्पन्नादिसंज्ञा प्रत्यक्ष माग देने पर जो कल्प भावे इसको अवहारकाकसे गुणित करने
पर सासत्त्वसम्पन्नादि जीवराशि होती है । अतः, गुणकार पदोपपत्तिका असंख्यातता माग है
जो पदोपपत्तिका असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अपने अवहारकाकका
वर्ग प्रतिमाग है ।

संज्ञाहरण—सासत्त्व प्रथम २ ४८ अवहारकाक ३२, २०४८ + ३२ = ३४ गुणकार
प्रतिमाग ३२, पदोपपत्त ३५५३६, अवहारकाकका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४
प्रतिमाग, ३५५३६ + १०२४ = ३४ गुणकार

गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पठिमागो ? सम्मामिच्छादि अवहार कालो । सज्जदासज्जद अवहारकालो असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? सग अवहारस्स असंखज्जदिमागो । को पठिमागो ? सासणसम्मादि अवहारकालो । तदो सज्जदासज्जद दम्ब असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगवत्थस्स असंखेज्जदिमागो । को पठिमागो ? सग-अवहारकालो । अहमा पलिदोवमस्स असंखज्जदिमागो असंखज्जाणि पलिदोवमपद मवग्गमूलाणि । को पठिमागो ? सग अवहारकालवग्गो । सज्जदासंज्जददम्बस्सुपरि सासण सम्मादिदम्ब असंखेज्जगुण । का गुणगारो ? सगदम्बस्स असंखज्जदिमागो । को पठिमागो ? सज्जदासंज्जददम्बमवहारकालो । अहवा सासणसम्मादि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्पमिच्छादि अवहारकाल १६, १६-४ = ४ गुणकार; $४ \times ४ = १६$
सम्पमिच्छादि अवहारकाल ।

सम्पमिच्छादिक अवहारकालसे सासावूनसम्पमिच्छा अवहारकाल संत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? संत्पात समय । प्रतिभाग क्या है ? सम्पमिच्छादिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासावूनसम्पमिच्छा अवहारकाल ३२, ३२-१६ = २ गुणकार; $१६ \times २ = ३२$
सासावूनसम्पमिच्छा अवहारकाल ।

सासावूनसम्पमिच्छाके अवहारकालसे संपतासयतका अवहारकाल असत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालको असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सासावूनसम्पमिच्छा अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संपतासयत अवहारकाल १२८, $१२८ \div ३२ = ४$ गुणकार; $३२ \times ४ = १२८$
संपतासयत अवहारकाल ।

संपतासयतके अवहारकालसे संपतासयत द्रव्यप्रमाण असत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असत्पातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (संपतासयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा पयोपमका असंखबानर्था भाग गुणकार है जो पयोपमके असत्पात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने (संपतासयतके) अवहारकालका वग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संपतासयत द्रव्य ५१२, $५१२ \div १२८ = ४$ गुणकार; $१२८ \times ४ = ५१२$
संपतासयत द्रव्य । अथवा $१२८ \times १२८ = १६३८४$; $६५५३६ \div १६३८४ = ४$ गुणकार ।

संपतासयतके प्रमाणके ऊपर सासावूनसम्पमिच्छा द्रव्यप्रमाण संपतासयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासावूनके) द्रव्यका असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? संपतासयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा सासावूनसम्पमिच्छाके अवहारकालसे संपतासयतके अवहारकालको माजित करन पर

सम्पत्परत्वापत्त्याद्गुण वत्तस्सामो । तं अहा—सम्पत्त्वोवा चचारि उपसाममा ।
 पप स्वमा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अन्तुपञ्चरूपाणि । सद्योगिकेवसिद्ध
 संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । अप्पमत्तसमया संखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पमत्तसमया संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज
 समया वा । सम्पत्त्व हेट्ठिमरासिष्वावरिमरासिम्हि भागे हिद ओ मागसद्धो सो गुणगारो ।
 पमत्तसमयाद्वादा असत्त्वसम्माहिं अवहारकाळो असत्त्वज्जगुणा । को गुणगारो ?
 सम्पत्त्ववहारकाळस्स संखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पमत्तसमयाद्वादा । सम्पत्त्वमिच्छादि
 अवहारकाळो असत्त्वज्जगुणो । को गुणगारो ? सम्पत्त्ववहारकाळस्स असत्त्वज्जदिमागो ।
 को पडिमागो ? असत्त्वसम्माहिं अवहारकाळो । सासज्जसम्माहिं-अवहारकाळो संखेज्ज

अब सर्वपरत्वापत्त्याद्गुण वत्तस्सामो । वहा इत्यर्थः है—चारों उपसामक
 (उपसाम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव) सबसे स्तोत्र है । पाँचों रूपक (रूपक श्रेणीके
 चारों गुणस्थानवर्ती और ज्योतिषकेवली जीव) उपसामकोसे संख्यातगुणे है । वहाँ गुणकार
 क्या है ? वहाँ अंक गुणकार है ।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपसामक १२१६, १२१६ × २ = ३०४ पाँचों रूपक ।

सद्योगिकेवसिद्धोंका द्रव्यममाण पाँचों रूपकोंसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 संख्यात समय गुणकार है । अममत्तसमय सद्योगिकेवसिद्धोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे है । गुण
 कार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । प्रमत्तसमय अममत्तसमयोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे
 है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वहाँ सर्वत्र जीवोंके राशिसे उपरिम राशिसे
 मन्त्रित करने पर ओ भाग सम्म अंगे वह वहाँ गुणकार होता है ।

उदाहरण—सद्योगिकेवसी ८९८५ २, अममत्त २९९९९१ ३, प्रमत्त ५९९९९२ ६;

२९९९९१०३ + ८९८५ २ = ३३ ८९८५ २ इससे सद्योगी राशिसे गुणित
 ५९९९९८९ ६ + २९९९९१ ३ = ९ इस गुणकारसे अममत्त राशिसे गुणित
 करने पर प्रमत्तसमय राशि जाती है ।

प्रमत्तसमयके द्रव्यसे अर्धपतसम्पत्तिवर्ति अमहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुण
 कार क्या है ? अपने अवहारकाळका सप्यातर्वा माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? प्रमत्त
 सवतका द्रव्यममाण प्रतिमाग है ।

उदाहरण—प्रमत्तसमय ५९९९९८९०६ = २, अर्धपतसम्पत्ति अवहारकाळ ४

४ × २ = ८ गुणकार; २ × ९ = ४ अवहारकाळ ।

अर्धपतसम्पत्तिके अवहारकाळसे सम्पत्तिमध्यादिक्रिया अवहारकाळ असंख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकाळका असंख्यातर्वा माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ?
 अर्धपतसम्पत्तिके अवहारकाळ प्रतिमाग है ।

मन्त्रालादौ संजदासंबद-उपक्रमणकालो संखेज्जगुणो इवदि तो वि सजदासंबद
 दम्वादो सासनसम्माइद्विदम्बमसखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्माच-चारिचिरोहिसासन
 गुणपरिणामेहिं तो समयं पढि असंखेज्जगुणाए सेढीए कम्मभिज्जरणहेतुभूतसंजमासंबम
 परिणामो अइदुल्लहो चि काऊण समयं पढि सजमासंबम पढिज्जमाणरासीदो समयं पढि
 सासनगुणं पढिज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो इवदि चि । सासनसम्माइद्विरासीदो सम्मा
 मिच्छाइद्विदम्बं संखेज्जगुणं, सासनसम्मादिद्वि-छ आवलि अम्मतर-उपक्रमणकालादो
 अंतोमुत्तमेच-सम्माभिच्छाइद्वि-उपक्रमणकालात्स संखेज्जगुणचादो । को गुणगारो ?
 संखेज्जसमया वा । एत्थं वि रासिणा रासिं मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । अब
 हारकालेन अवहारकाले मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासि अवहारकालेन
 हेडिमरासिं गुणेउत्तमं पढिदेवमे मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्मामिच्छाइद्वि
 दम्बस्तुपरि असंबदसम्माइद्विदम्बमसंखेज्जगुण । कुदो ? सम्मामिच्छाइद्वि-उपक्रमण

समाधान—यह कोई शोध नहीं है क्योंकि यद्यपि सासादनसम्पत्ति के उपक्रमण
 कालसे संघासंघातका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है तो भी संघासंघात दम्पप्रमाणसे
 सासादनसम्पत्ति दम्पप्रमाण असंख्यातगुणा ही है क्योंकि, सम्पत्ति और चारिके
 विशेषी सासादनगुणस्यानसंबन्धी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी भेदीरूपसे
 कर्मनिर्वाहके कारणभूत संघासंघातकूप परिणाम अस्तित्व में हैं इसलिये प्रत्येक समयमें
 संघासंघातके प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्पत्ति
 गुणस्यानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

सासादनसम्पत्ति जीवराशिसे सम्पत्तिप्रमाण दम्पका प्रमाण संख्यातगुणा है
 क्योंकि सासादनसम्पत्ति के छह भाषाईके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्पत्तिप्रमाण
 दधि गुणस्यानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समय गुणकार है । यहाँ भी एक राशिका वृत्ती राशिमें माग देने पर गुणकार राशि आ
 जाती है । अथवा अवहारकालसे अवहारकालके माहित करने पर गुणकार राशि आ जाती है ।
 अथवा उपरिम राशिके अवहारकालसे अवस्तन राशिको गुणित करके जो सम्पत्ति मागे उसका
 पस्योपममें माग देने पर गुणकार राशि आ जाती है ।

उदाहरण—सम्पत्तिप्रमाण दम्प ४०९३, ४०९३-३२=३८ गुणकार, ३ × ३८
 = ४ ९६ सम्पत्तिप्रमाण दम्प । अथवा ४ ९३ ÷ २ ४८ = २ गुणकार ।
 २०४८ × २ = ४०९६ सम्पत्ति प्रमाण । अथवा ३२ ÷ १६ = २ गुणकार ।
 २०४८ × २ = ४०९६ । अथवा २०४८ × १६ = ३२७३८ ९११३९ ÷
 ३२७३८ = २ गुणकार २०४८ × २ = ४ ९६ ।

सम्पत्तिप्रमाण दम्पके ऊपर अनंततत्त्वसम्पत्ति दम्प उससे असंख्यातगुणा है,
 क्योंकि, सम्पत्तिप्रमाण दम्पके उपक्रमण कालसे असंख्यात भाषासिद्धोंके भीतर होनेवाला असंघात

संज्ञासंज्ञद-अवहारकाले भाग हिद गुणगारो रासी आगच्छति । अह्ना उपरिमरासि-
अवहारकालेण हेदिमरासि गुणऊण पतिदोवमे भागे हिद गुणगाररासी आगच्छति । एत्थ
त्रिगुणाधिकरणं कावम् । स अह्ना-संज्ञासंज्ञदरासिपमाणेण पतिदावमे भाग हिदे
संज्ञासंज्ञद अवहारकालो आगच्छति । विठमिदसंज्ञासंज्ञदद्वयपमाणेण पतिदोवमे भाग
हिद संज्ञासंज्ञद अवहारकालस्स दुभागो आगच्छति । त्रिगुमिदसंज्ञासंज्ञदरासिणा
पतिदोवमे भागे हिदे तस्सेव अवहारकालस्स विभागा आगच्छति । एदेम कमण वेदम्
जाव संज्ञासंज्ञदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माद्वि अवहारकालमेव पचो वि । तदा
सासणसम्माद्वि-अवहारकाला' संज्ञासंज्ञद अवहारकालस्स असंखज्जदिभागो आगच्छति ।
एदेण पुम्भुत्तगुणमारो साहेय्या । संज्ञासंज्ञदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जमि
वत्तावि । सासणसम्माद्विगुणस्स उक्कस्सकालो छ आवलिपामो । एदेसिमुत्तकमव
काठादी अप्पण्या गुणकालपरिक्रमा इति वि सासणसम्माद्विद्वारादी संज्ञासंज्ञद
दम्मेम संखेज्जगुणेण होद्वमिति । ण एम दोसा, जदि वि सासणसम्माद्वि-उक्क

गुणकार रासिञ्च प्रमाण जाता है । अथवा उपरिम रासिके अवहारकालसे अपस्तव रासीको
गुणित करने को द्वय भावे उससे पन्वोपमके माश्रित करने पर गुणकार रासि जाती है ।

उदाहरण—सासादन द्वय २४८, २ ४८ - १२८ = १६ गुणकार, १२८ × १६ = २४८

सासादन द्वयप्रमाण । अथवा १२८ - ३२ = ४ गुणकार, १२ × ४ = २४८

सा । अथवा १२२ × ३२ = १६३८४ ६५ ३६ - १६३८४ = ४ गुणकार

५१२ × ४ = २ ४८ सा ।

यहां पर त्रिगुणाधिकरण विधि करना चाहिये । वह इसप्रकार है—संवतासंवत
रासिके प्रमाणसे पन्वोपमके माश्रित करने पर संवतासंवतका अवहारकाल जाता है
(६५ ३६ - १२ = १२८) । त्रिगुणित संवतासंवत द्वयके प्रमाणसे पन्वोपमके माश्रित करने
पर संवतासंवतके अवहारकालका पृथरा भाग जाता है (६५ ३६ - १ २४ = ३४) । त्रिगुणित
संवतासंवत रासिके पन्वोपमके माश्रित करने पर संवतासंवतके अवहारकालका तीसरा भाग
जाता है (६५ ३६ - १५ ३६ = ४२३३) । इसी क्रमसे तबतक ले जाना चाहिये जबतक
संवतासंवत रासिञ्च गुणकार सासादनसम्माद्विके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे ।
उस समय सासादनसम्माद्विका अवहारकाल संवतासंवतके अवहारकालका असंख्यतावा
भाग जाता है । इससे पूर्वोक्त गुणकार साथ लेना चाहिये (१२८ - ३२ = ४ गुणकार) ।

मुद्रा—संवतासंवत गुणस्यावकाशकप्रकार संख्यात कार्य है और सासादनसम्माद्वि
गुणस्यावकाशकप्रकार छव आवकाश है । अतः इसके उपक्रमणका अधिक अपने अपने
गुणस्थानके काछके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्माद्विके द्वयप्रमाणसे संवता
संवत द्वयप्रमाण संख्यतागुणा होना चाहिये ।

आत्मन् अर्धलेख्यमिति अर्धमस्यमाह—उपक्रमणकालस्त अर्धलेख्यगुणत्वात् ।
अहो रात्रिं वि गुण्यन्नाणमुपक्रमणकालमभिविष्य अर्धलेख्यगुणत्वात् कारणमन्वा
बुद्धे । त अहो, समय परि सम्मामिच्छत पश्चिन्नजमापरासीदो वेदगसम्मत परि
वज्रप्रमाणसी अर्धसंज्ञगुणा । केन वेदगसम्माहृषीपमर्धलेख्यजदिमागो मिच्छत गच्छदि ।
तस्स वि असंखेज्जदिमागो सम्मामिच्छत गच्छदि । 'सम्प्रकालमवदिरासीत् यथापु-
सतिना त्राप्य होदन्' इति जायानो असंखसम्माहृषीरासीदो गिष्पिद्विमेका वेप-
अङ्गीसप्ततकम्मिया मिच्छाहृषीणो वेदगसम्मतं पश्चिन्नजंति । तन्हा सम्मामिच्छा-
हृषिन्वादा अर्धमस्यमाहृषिद्वयमर्धलेख्यगुणमिदि सिद्धं । एवं वक्ष्याम्येत्य पवात्-
मिदि रेन्दिद्वय । को गुण्यगारो ? आचलियाए असंखेज्जदिमागो । पत्य वि तीदि
पयारेहि गुण्यगारो साहेयजो । पश्चिन्नजममसलेख्यगुणं । को गुण्यगारो ? सग-अवहार

सम्प्रगृह्यता उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है । अथवा, पूर्वोक्त दोनों ही गुणस्थानोंके
उपक्रमण कालकी अपेक्षा न करके सम्प्रगृह्यताद्विषयोंसे असंखसंख्याद्वि अर्धपातगुणे है
इसका कारण वृत्ते प्रकारसे कहते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्प्रगृह्यताको
प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्प्रगृह्यताको प्राप्त होनेवाली राशि असंख्यातगुणी है । तथा जिस
कारणसे वेदकसम्प्रगृह्यताको असंख्यातता भाग मिष्यात्वको प्राप्त होता है और उसका भी
असंख्यातता भाग सम्प्रगृह्यताको प्राप्त होता है । तथा सर्वदा अवस्थित राशिपूर्विके प्रत्येक
अनुसार ही भाग होना चाहिये इस व्यापके अनुसार मोहनीयके अनुवीत कर्मोंकी सत्य
रत्नवेष्टाके जितने जीव असंखसंख्याद्वि जीवराशिमेंसे निष्कृष्टकर मिष्यात्वको प्राप्त होते हैं
उतने ही मिष्याद्वि वेदकसंख्यात्वको प्राप्त होते हैं इसलिये सम्प्रगृह्यताद्विके प्रत्येक
असंखसंख्याद्विका प्रत्येक असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हो जाता है । यह व्याख्यान यहाँ पर
प्रधान है ऐसा समझना चाहिये । गुण्यकार क्या है ? व्यवहारीक असंख्यातता भाग गुण्यकार
है । यहाँ पर भी पूर्वोक्त तीनों प्रकारोंसे गुण्यकार साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—असंखसंख्याद्वि प्रत्येक १९३८४, १९३८४ + १९ = १०२४ गुण्यकार
१९ × १०२४ = १९३८४ असंखसंख्याद्वि प्रत्येक । अथवा १९३८४ + ४०९६
= ४ गुण्यकार, ४०९६ × ४ = १९३८४ असंखसंख्याद्वि प्रत्येक । अथवा
१९ - ४ = ४ गुण्यकार, ४०९६ × ४ = १९३८४ असंखसंख्याद्वि प्रत्येक ।
अथवा ४०९६ × ४ = १९३८४, १९३८४ - १९३८४ = ४ गुण्यकार
४०९६ × ४ = १९३८४ असंखसंख्याद्वि प्रत्येक ।

असंखसंख्याद्विके प्रत्येक पक्षोपम असंख्यातगुणा है । गुण्यकार क्या है ? अथवा
(असंखसंख्याद्विका) अवधारक गुण्यकार है ।

उदाहरण—१९३८४ × ४ = १ १९६ पक्षोपम ।

करो । वस्तुवरि मिद्वान्तगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि अर्णतगुणो सिद्धान्तम
सरेज्जदिमागो । मिच्छाद्वि अर्णतगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि वि अर्णतगुणो
सिद्धेहि वि अर्णतगुणो मवसिद्धिगणमणतामागस्स अणविममागो ।

एवमेवे चोदसगुणगणपकरण समवा ।

द्वयद्वियमपसेमिष द्विदसिस्सानमपुग्गहणह सामन्नेण चोदसगुणगणपमाण
परूषणं करिय पञ्चद्वियमपसवत्तिय द्वियसिस्सानमपुग्गहणहमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरइएसु मिच्छाद्वि
द्वयपमाणेण केवद्विया, असस्सेज्जा ॥ १५ ॥

आदेसेण पञ्चद्वियपावत्तणेण गुणगणार्ण पमाणपरूषणं करिरे । एत्थ इत्थमाव
छफणो वदियाविदेसो चि वद्विओ । गदियाणुवादेण । सा च मेइपरूषणा चोदसमगाय
हावाणि अस्सिऊण द्विदा । तेहि अकमेण परूषणा य संमवदीदि अपगदमग्गणहवाणि
अवणिय पयदमग्गणहवाणावणइ गदिगहणं । आदेसमस्सिऊण वा गुणगणार्ण पमाण

पयोपमके ऊपर सिद्ध वत्तसे अनन्तगुणे हैं । गुणकर क्या है ? अमवसिद्धिसे
अनन्तगुणा या सिद्धिसे अर्सकथातर्वा भाग गुणकर है । सिद्धिसे मिच्छाद्वि जीव अनन्तगुणे
हैं । गुणकर क्या है ? अमवसिद्धिसे भी अनन्तगुणा सिद्धिसे भी अनन्तगुणा और अमवसिद्धिसे
अनन्त बहुभागोंका अनन्तवा भाग गुणकर है ।

इसप्रकार अर्थमें बीबूह गुणस्थान प्ररूपया समस्त हुई ।

ब्रह्मार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये
सामान्यसे बीबूहों गुणस्थानोंके ब्रह्मप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यापार्थिक नयका
अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदयकी अपेक्षा गतिमार्गाणके अनुवासे नरकगतिगत नारकियोंमें मिच्छाद्वि
जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अर्सकथात हैं ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यापार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।
पहल आदेशसे इस पदमें तृतीया विमर्शिका मिच्छा इत्यमरवत्तस्य है ऐसा समझना
चाहिये । अब गदियाणुवादेण इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो मेइपरूषणाकी
मतेका की है वह मेइपरूषणा जीवों मार्गाणोंका आग्रय केकर स्थित है । परंतु इनके प्राप
अकमेसे अर्थात् पुणपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है इसलिये अविवक्षित मार्गाणास्थानोंको
छंदकर प्रकृत मार्गाणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका प्रहय किया है । आदेशका
आग्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपरके द्वारा



परूषणा सा आहिरियपरंपराय अणाइणिहणचणेण आगदा चि ज्ञाणावणइ अपुरादग्गह्वं ।
 सेसगदिणिवारणइ गिरयगदिग्गह्व कद । ससगदीओ भाचून पुण्ण भिरयगदी चव
 किमइ बुद्धे ? न, जेरह्वदंसणेण समुप्पण्णसत्तमस्स भवियस्स दसलक्खमे धम्मो विवस
 सरूणेण बुद्धी चिद्धदि चि काऊण पुण्णं तत्परवणादो । जेरह्वसु चि किमइ ? न, तत्त
 तमत्तेचकात्तपडिसेहफलत्तादो । मिच्छाव्रुड्ढिग्गह्व किमइ ? सेसगुणह्माभियचज्जं ।
 दम्भपमाणेणेचि किमइ ? खेचकालविवारणइ । केवडिया इदि पुब्बा किंफला ? त्रियाण
 मत्तकत्तारचपदुप्पायणमुह्व अप्पणा कत्तारचपडिमेहफला । एवं गोदमत्तामिया पुच्छिदे
 महावीरमपत्तिव केवलणाण्णयावगदविस्सल्लगोपरासेसपपरत्तेण असंउत्ता इदि तेहि पमाव
 परूविदं । एवमुत्ते संखेज्जाणत्तामं पडिभियसी । तं पुण्ण अमंखेज्जमणेपवियप्प । त सहा-

ज्जादिनिघननप्से ज्यई हूर है, इसका ज्ञान करनेके लिये स्वर्गमें अनुवाद पक्षका ग्रहण किया है ।
 होय गतिवर्गका निराकरण करनेके लिये स्वर्गमें नरकगति पक्षका ग्रहण किया है ।

शंका— होय गतिवर्गके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वकथना ज्ञान हा जानेसे जिते मय बलव हो गया है देखे मध्य जीवकी वृत्तान्तका धर्ममें निश्चलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया ।

शंका— स्वर्गमें जेरह्वसु यह पक्ष किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं क्योंकि नरकगतिशब्दकी श्रेय और कायका प्रतिपेक्ष करना उक्त पक्षका फल है ।

शंका— स्वर्गमें मिच्छाव्रुद्धि इस पक्षका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान— होय गुणरूपानोंके निवारणके लिये मिच्छाव्रुद्धि पक्षका ग्रहण किया है ।

शंका— स्वर्गमें दम्भप्रमाणसे वेत्ता पक्ष क्यों दिया है ?

समाधान— श्रेय और कायका प्रतिपेक्ष करनेके लिये दम्भप्रमाणसे पक्षका ग्रहण किया है ।

शंका— कितने हैं इस पृच्छाका क्या फल है ?

समाधान— जितेन्द्रिय हो सर्वकर्ता है इस वाक्यके प्रतिपाद्य द्वारा अपने (मृतकिके) कर्त्तृपणका निवेदन करना उक्त पृच्छाका फल है । नरकगतिमें मिच्छाव्रुद्धि नारकी किये हैं इसप्रकार भीतमस्वाभीके द्वारा पृच्छने पर जित्नोंके केवलज्ञानके द्वारा निष्ठाके विषयमृत समस्त पक्षोंको ज्ञान किया है, देखे मयजान् महावीरने जलंरत्तात हैं इसप्रकार नारकियोंके प्रमाणका प्रकण किया ।

नरकमें मिच्छाव्रुद्धि नारकी जलंरत्तात हैं इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और जव स्थिती निवृत्ति हो जाती है । यह जलंरत्तात जलंरत्तात प्रकण है । भाये कसीका स्वीकरण करते हैं-

नाम ठवणा दखिय सुस्सद गणणापदेसियमसुत्त ।

एय उमणादेसो भित्ताये सुत्त माणा य ॥ ५७ ॥

तस्य यामासंखेज्जय नाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण द्विद्वज्जममासंखेज्जाणं कारण-
गिर्येवत्ता सज्जा । अ त दुव्वमासंखेज्जय त कट्ठकम्मावेसु सग्गमावासग्गमावट्ठवणाए ठविदं
असंखेज्जमिदि । अ तं दम्मासंखेज्जयं तं दुविह आगमदो णोआगमदो य । आगमो गयो
सिद्धतो सुदणायं पवयणमिदि एयहो ।

पूर्वापरविरुद्धादेव्यपेतो दोषसहतः ।

बोतक सर्वभाषानामाप्तव्यवृत्तिरगम ॥ ५८ ॥

आगमाद्व्यो णोआगमो । तस्य असंखेज्जपाहुव्वभाषाओ अपुव्वजुषो आगमदो
दम्मासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिद्धजीवद्वग्गस्स कथमि खवोवसमादो अव्व
दिरितस्स आगमववदेसाविरोहादो । अ त णोआगमदो दम्मासंखेज्जयं तं विभिहं, आणु
गसरीरदम्मासंखेज्जयं मवियद्वम्मासंखेज्जयं आणुगसरीरमवियवदिरितदम्मासंखेज्जयं चेदि ।
तस्य अ त आणुगसरीरदम्मासंखेज्जयं त असंखेज्जपाहुव्वआणुगस्स सरीर मवियवद्वम्मा
समुज्जवत्तणेण तिमेदमावणं । कथमआगमस्स सरीरस्स असंखेज्जववपेतो ? ण एस दोसो,

नाम स्थापना प्रथ्य शास्त्रत गणना व्यवेष्टिक, एक, वस्य विस्तार, सर्व
और भाष इत्यप्रकार असंख्यात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव मजीव और मिश्ररूपसे स्थित असंख्यात पदार्थोंके मेहोंकी कारणके
बिना असंख्यात पेशी संज्ञा रक्ता नाम असंख्यात है । काष्ठकर्माधिक्ये साकार और निराकार-
रूपसे यह असंख्यात है इत्यप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असंख्यात है । प्रथ्य असंख्यात
आगम और नोआगमके मेहसे दो प्रकारका है । आगम प्रथ्य सिद्धांत सुतबान और प्रवचन,
य प्रकारवाणी नाम है ।

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके घोटक व्याप्तजनको
आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । जो असंख्यातविषयक प्राप्तका जाता है परंतु
वर्तमानमें इसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमप्रख्याप्तक्यात कहते हैं क्योंकि समयोपश्रय
युक्त जीवप्रथ्य शरीरप्राप्तके कर्णवित् नमिद्य है इसलिये उसे आगम यह संज्ञा देनेमें कोर
विरोध नहीं जाता है ।

नोआगमप्रख्याप्तक्यात तीन प्रकारका है शायकशरीरप्रख्याप्तक्यात मध्यप्रथ्या
संख्यात और शायकशरीर तथा मध्य इन दोनोंसे मिश्र तत्रपतिरिक्तप्रख्याप्तक्यात । असंख्यात
विषयक शास्त्रको ज्ञाननेपाछेके भावी वर्तमान और भवीतकपसे तीन मेहको प्राप्त हुए शरीरको
शायकशरीरप्रख्याप्तक्यात कहते हैं ।

प्रश्न—आगमसे मिश्र शरीरको असंख्यात, यह संज्ञा कैसे दी जा सकती है ?



आपारे आपेयोवपारदसणादो । सहा असिमद भावदि इदि । एतय ण पदकुमदिदंता
सुन्वदे, कुमस्त पदवपएसादसणादो । पदमिर्द सिद्धिदि सि बहुमाणकालं पदवपएसो
कुमस्त उवसुम्भदे ? ये ण, भदीराणागदकालेसु कुमस्त पदवपएसदसणादो ।
अं तं भवियासुयेन्वय तं भविस्तकालं असंखन्वपाहुडभापुगशीवा । ण ष
एस आगमदो दव्यासुयेन्वयमिह भिउइदि, सपदि एतय सुबोवसमसउणइमो
ओगामावादो । अं तं सव्यदिरिचदव्यासंयेन्वय स दुविह, कम्मासंखन्वय जोरुम्मा
संयेन्वयं वेदि । एतय अह कम्माणि द्विदि पदुष कम्मासउअय । दीउससुरादि
योकम्मासंखजय । धम्मरिषयं अथम्मत्थिय दव्यवदसगणय पदुष एगसरुत्वेन अबद्धिमिदि
कहु ससुदासखजय । अं तं गणयासंयेन्वयं त परियम्म सुच । अ त अपदेमासंउअय
तं ओगाविभागे पत्तिच्छदे पदुष गगो जीवपदेसा । अपथा सुण्योय भगा, जमंउअ

समाधान—यह कोई शेष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधारका उपचार देखा जाता
है। जैसे ही तरवारें (सी तरवारबाजे) बौकरी हैं। तात्पर्य यह है कि सी तरवारोंके आधारमूल
पुरुषमें आधेयमूल तरवारोंका उपचार करके जैसे ही तरवारें बौकरी हैं यह कहा गया है
पक्षीप्रकार मनुष्यमें भी समझ देना चाहिये।

प्रकृतमें मूलकुम्भका द्रव्यत कागू नहीं होता है क्योंकि कुम्भकी घृत संज्ञा
व्यवहारमें नहीं देखी जाती है।

ईक्ष—यह घृत रत्नका है इसप्रकार वर्तमानकाळमें कुम्भकी घृत संज्ञा पायी
जाती है।

समाधान—नहीं क्योंकि, अतीत और अनागत काळमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा
देखी जाती है।

ओ जीव भविष्यकाळमें अमरप्राप्तविषयक प्राकृतका आचनेकाळ होमा उसे माषि
द्रव्यासक्यात कहते हैं। इसका अथमद्रव्यासक्यातमें अमरभाव नहीं हो सकता है क्योंकि
वर्तमानमें इसमें (माषिद्रव्यासक्यातमें) क्षयोपशमकक्षय द्रव्य वपयोगका नमान है।

तद्वपतिरिक्त द्रव्यासक्यात वो प्रकारका है कर्मतद्वपतिरिक्तद्रव्यासक्यात और
नोकर्मतद्वपतिरिक्तद्रव्यासक्यात। वनमें व्यती कर्म स्थितिकी अपेक्षा कर्मतद्वपतिरिक्तद्रव्या
सक्यात हैं। अर्थात् आठों कर्मोंकी अपेक्षा और उरुहृष्ट स्थिति असेरक्यात समय पकती है
इसकिये वे स्थितिकी अपेक्षा असक्यातकय हैं। ग्रीप और समुद्रानि नोकर्मतद्वपतिरिक्त
द्रव्यासक्यात हैं।

अमासिकाय और अथर्मासिकाय द्रव्यकय प्रेक्षोंकी गणनाके प्रति सदैव एककपसे
अवस्थित हैं इसकिये वे दोनों द्रव्य आश्चर्यासक्यात हैं। अजनासक्यातका स्वकय
परिकर्ममें कहा गया है। योगविधायमें ओ अविभागाप्रतिच्छेद वतकाने हैं, उनही अपेक्षा
जीवका एक प्रेक्ष व्यपदेशक्यात है। अथवा अर्थक्यातमें उक्तका यह मेघ दृश्यकय है, क्योंकि
जलेक्यात पर्यायीके आधारमूल अर्थेक्षी एक द्रव्यकय नमान है। कुछ आरमाका एक प्रेक्ष

पञ्चायाणमाहारभूद अण्यस्य एगद्व्यामात्रादो । न च णो जीवपदेसो दम्भ, तस्स जीवद्व्यावयवचादो । पञ्चवणए पुण अवलंबित्तमाण जीवस्स एगपदेसो वि दम्भं तत्तो वदिरिचसमुत्तायाभावादो । जं त एयासखेअय त लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेहि आगारेण लोयस्स एगदिस पक्खमाण पदेसगणण पडुव सत्तायीदादो । अ त उमया-संखेजय त लोयायासस्स उमयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणण पडुव सत्ता मावादो । अं त सत्तासखेजय त घणलोगो । कुदो ? पमागारेण लोग पेक्खमाणे पदेसगणण पडुव सत्तामावादो । अ त वित्थारासम्भेजय त लोगागासपदर, लोग पदरागारपदेसगणण पडुव संत्तामावादो । अ त भावासंखेजय तं दुबिह आगमदो नोआगमदो य । आगमदो भावासंखजय असंखेजपादुइआवणो उवसुचो । नोआगमदो भावासंखजय ओहिणाणपरिणदो जीवो । एवेसु अंत्तेजेसु गणयासखेजये पयद । अदि गणयासंखेजये पयद ता सेसदसविह असंखजपरुषण किमहू कीरद ? अपगदमवणिय पयदपरुषणहं । बुत्त च—

द्रव्य तो हो नहीं सकता है क्योंकि, एक प्रवेश जीवद्रव्यका अवयव है । पर्याप्तार्थिक वयका अवयवस्वरूप करने पर जीवका एक प्रवेश भी द्रव्य है क्योंकि अवयवसे मिश्र समुदाय नहीं पाया जाता है ।

लोकाकाशकी एक विद्या अर्थात् एक विशदस्थित प्रवेशपनि एकात्मकता है, क्योंकि, आकाश प्रवेशोंकी प्रेष्ठीरूपसे लोकाकाशकी एक विद्या होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है । लोकाकाशकी उभय विचार्य अणान दो विद्याओंमें स्थित प्रवेशपनि उभयार्थकता है क्योंकि लोकाकाशके दो ओर होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघर्षातीत हैं । घनलोक सर्वात्मकता है क्योंकि, घनरूपसे लोकके होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघर्षातीत हैं । अंतररूप लोकाकाश विद्यापरसंख्यात है क्योंकि अंतररूप लोकाकाशके प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघर्षातीत हैं ।

माहात्म्यका आगम और नोभागमके मेहसे दो प्रकारका है । असंख्यातविषयक प्राप्तको ज्ञाननेपाके और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगममाहात्म्यका कहते हैं । अवधिज्ञानसे परिणत जीवको नोभागमाहात्म्यका कहते हैं । इन व्याह प्रकारके असंख्यातमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है ।

शुद्धा - यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो होय क्या प्रकारके असंख्यातोंका धर्मेन क्यों किया गया ?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्रकटन करनेके लिये, यहां सभी असंख्यातोंका धर्मेन किया है । कहा भी है—



परिचासखेज्यं न भवति, शुचासखेज्यं पि न भवति, असंखेज्यासखेज्यस्तेव महण, असंखेज्या इति बहुवचनविदेशादो । पाइए दोसु वि बहुवचनोपलमादो वचिसुहेय सखेसु असंखेज्यबहुवचनविरोहामावादो वा अपेयतिओ हेवुरिदि चेचारेहि 'असंखेज्यासंखेज्याहि ओसपिपि-उस्तपिपीहि अवहिंरंति कालेण' इति पुरवो मण्णमाणसुचादो असंखेज्या संखेज्यस्त उवलदी इपदि । तं पि तिविह अहण्णमुअस्सं अजहण्णमुअस्सासंखेज्या सखेज्य पेदि । तस्य वि अहण्णमसंखेज्यासंखेज्यय न भवति उअस्समसंखेज्या संखेज्यय पि न भवति अजहण्णमपुअस्सासंखेज्यासंखेज्यस्तेव गहण । कुरो ? 'अम्हि अम्हि असंखेज्यासखेज्यं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमपुअस्स असंखेज्या-संखेज्यस्तेव गहणं भवदि' इति परियम्मवयवादो ।

तं पि अजहण्णमपुअस्सासंखेज्यासखेज्यमसंखेज्यविषयपमिदि इम होदि ति प आनिज्जोह ? अहण्ण असंखेज्यासंखेज्यादो पलिदोवमस्स असंखेज्यदिमागमेचावि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और पुकासंख्यात भी नहीं किया गया है अतः यहाँ असंख्यातासंख्यातक ही ग्रहण करना चाहिये क्योंकि सूत्रमें असंखेज्या इस प्रकार बहुवचनरूप में ही किया है ।

शुद्धा—प्रकृतमें द्विकचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है; अथवा वृत्तिसुखसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुवचनके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं जाता है, इस स्थिति में प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो असंखेज्या यह बहुवचनरूप हेतु दिया है वह अनैकान्तिक है ।

समाधान—यदि ऐसा है तो असंखेज्यासंखेज्याहि ओसपिपिउस्तपिपीहि अज हिंरंति कालेण इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रके असंख्यातासंख्यातक ग्रहण हो जाता है ।

यह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, अथम्, उल्लूह और अजथम्प्योउल्लूह असंख्यातासंख्यात । इन तीनोंमें भी प्रकृतमें अथम् असंख्यातासंख्यात नहीं है और उल्लूह असंख्यातासंख्यात भी नहीं है किंतु प्रकृतमें अजथम्प्याउल्लूह असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि, अहाँ अहाँ असंख्यातासंख्यात देता जाता है वहाँ वहाँ अजथम्प्याउल्लूह अर्थात् प्रथम असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण होता है, ऐसा परिचर्याक वचन है ।

शुद्धा—यह अथम् असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विवरणरूप है इसलिये यहाँ यह मेव किया है, यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—अथम् असंख्यातासंख्यातके पक्षोपपत्तिके असंख्यातमें मागमात्र वर्गस्मान ऊपर जाकर और अथम् परीतान्तसे असंख्यात कोकमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर दोनोंके

वगमहापाणि उररि अश्विम्परिदुष्य अह्व्यपरितापतादा अमंयेज्जलागमत्तरग्गहापाणि
 इहा आमरिऊन दाग्दमत्तर अग्निदिष्टमारामी पत्तया । अपवा निष्पिमारग्निदम
 गिदग्दामीदा अमंय-अगुमा छद्व्यपकिमत्तरामीदा अमंयज्जगुमहीणा । का निष्पिमार
 वग्निदमग्निदामी का वा छद्व्यपकिमत्तरामि चि पुत्त पुत्तदे-अह्व्यममंयत्रा
 मंयत्रा रिक्तऊन एत्तस्म्य रुत्तस्म्य अह्व्यममंयत्रागमत्तरा दाऊन वग्निदमग्निद
 करिय पुत्ता उरग्मत्तरामि दुग्धदिरामि करिय पग्मत्तरामि रिक्तेऊन एत्तस्म्य रुत्तस्म्य
 उरग्मत्तरामि दाऊन अग्निमत्तरा करिय पुग्गो उरग्मत्तरामि दुग्धदिरामि करिय
 पग्मत्तरामि रिक्तऊन एत्तस्म्य रुत्तस्म्य उरग्मत्तरामि दाऊन अग्निमत्तरा
 कद् निष्पिमारग्निदमग्निदामी इवदि । एमा निष्पिमारवग्निदमग्निदामी पनि
 दाग्मत्तरा अमंयज्जदिमाणा । बुद्ध । जणदस्म्य वगमत्तराणा वगमत्तराणा अह्व्य
 परितामंयत्रा उररिमाग्मत्तरावेज्जगुमत्तरा पनिदाग्मत्तराणा पुप्प वग

माग्मे अमंयज्जदिमाणा ओ राग्नि इमी ई उरवा यहा अह्व्य करमा आदिपे । अपवा तीवरा
 माग्मत्तराणि राग्निम अमंयज्जगुमत्तरा भीर एह अह्व्यमत्तरा राग्निमे अमंयज्जगुमत्तरा हीम
 राग्नि मग्मत्तरा मत्ता आदिपे ।

प्रश्न—आमत्तरा कार्गमत्तराणि राग्नि वामनी ई भीर एह अह्व्यमत्तरा मत्ता
 वामनी ई । इमत्तरा पुत्त वर भावार्थ उरर देन ई—

ममापाण अह्व्य अमंयज्जगुमत्तरा विरत्तन करक भीर उर विरत्तन राग्नि
 अह्व्य एत्त ऊर अह्व्य अमंयज्जगुमत्तरा अह्व्यमत्तरा दे वर उरवा वरत्तर गुत्ता वरत्तर
 आ राग्नि दाग्द हा इग्दो रिक्ता दो वामनी वामनी आदिपे । उममेत एह राग्नि विरत्तन करके
 आर उर विरत्तन राग्नि अह्व्य एत्त ऊर वामनी वामनी रिक्ता मग्मत्तरा देवमत्तरा
 देव वरत्तर गुत्ता वामनी ओ मग्मत्तरा उरत्त हा उरत्तो रिक्ता दो वामनी वरामी आदिपे ।
 उममे । एहका विरत्तन करक आर उर विरत्तन राग्नि ऊर वामनी वामनी रिक्ता उरत्त
 हा मग्मत्तरा देवमत्तरा देव वरत्तर गुत्ता वरत्तर वर तीवरा कार्गमत्तराणि राग्नि
 वामनी हीम ई । (बुद्ध १३ पर तीवरा कार्गमत्तराणि वामनी वामनी । उरत्तन रिक्ता
 ई उरत्तन वामनी मग्मत्तरा आदिपे ।)

एह तीवरा कार्गमत्तराणि राग्नि वामनी अ । मग्मत्तरा वामनी वामनी इमती
 मग्मत्तरा वामनी मग्मत्तरा अह्व्य वामनी मग्मत्तरा उरत्तन वामनी मग्मत्तरा वामनी

सलागामो पदरावलिपादो उभरि गंतुपुष्पणाओ, तम्हा तिणिवारभरिगदसभग्गिदरासीदो
गेरइयमिच्छाइहिरासी असंखेज्जगुणो । को छदम्बपक्खिचरासी ?

धम्माधम्मा खोयायासा पणयसरी एगजीवपदसा ।

बादरपदिहिं वि म छण्णेऽसकपक्खेवा^१ ॥ १२ ॥

यदाणि छ दम्बाणि पुष्पुचरासिहि पक्खिचरे छदम्बपक्खिचरासी होदि । एष
विहाणेन भग्गिदरावलिपदो उभरि गंतुपुष्पणाओ, तम्हा तिणिवारभरिगदसभग्गिदरासीदो
गेरइयमिच्छाइहिरासी होदि । एष दम्बपमाण समर्थ ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उरसपिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ १६ ॥

किमह मिच्छाइहिरासी कालेण परुविज्जे ? न, असंखेज्जरासी सच्चा गिहदि

अर्थात् अस्म्य परीतासंख्यातक ऊपर और उसके उपरिम धनके नीचे उत्पन्न हुई है और
परिपोष्यकी धनशलाकाओंकी बर्गशलाकाए प्रत्यक्षकी ऊपर जाकर उत्पन्न हुई है । इससे
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्गितसंवर्गित असंख्यातासंख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि
जीवरशि असंख्यातगुणी है ।

प्रश्न—छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कीनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य, क्षेत्राकाश अतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति, एक
औरके प्रवेश और बाहर अतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति ये छह असंख्यात राशिवा तीनवार
वर्गितसंवर्गित राशिमें मिठा देना चाहिये ॥ १२ ॥

एन छह राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है ।

इस विधिसे कहे गये अथवा असंख्यातासंख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक
मिथ्यादृष्टि जीवरशि है ।

इस प्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कासकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिभियों
आर उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो आवे ई ॥ १६ ॥

प्रश्न—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कासकी अपेक्षा किसप्रिये प्रकल्प किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, संपूर्ण असंख्यात जीवरशि समाप्त हो जाती है इस

१ धम्माधम्मा खोयायासा पणयसरी एगजीवपदसा । यद्यपि हिं बीज्यमानवेण पणववरीवारत्तरिदिहिं पदे । वि न

१२ धम्माधग्गिदमिच्छाइहिरासी पणयसरी एगजीवपदसा । उठो वनवहिरा पणयसरी एगजीवपदसा । वि. ता. ४२

२ वनवहिराहि उत्सर्पणीजीवविनीहिं वनवहिरासी पणयसरी । वज्र ५, १४४ वृ १४४

सि पण्यवण्यवृत्तादो । किमहं ज्येष्ठपमाणमदकृम्य कालपमाणं बुधदे ? न एतं दोषो,
'अदप्यवण्यणीयं च पुनरमनं माणियम' इति वचनादो । कथं कालादो रोचं बहुवण्य-
णिन्द ? न, तस्मिन् सति अगपदर-विक्रममभूतिपरुषणागमात्यतादो । के वि आग्निमा
यं बहुव तं सुहृममिति मर्णति—

सुहृमा य हनदि कायं ततो सुहृमं सु जायते सत् ।

अंगुल-वसकमामा हवति कप्या असंशेया ॥ ६१ ॥

एदं य पददे । बुद्धा ? बुद्धादा पृष्ठं सुचं छादयेत् बुद्धस्तु पदवण्यवृत्तादो
वृत्तीदो । कथं दम्बादो रोचं पृष्ठं ? बुधदे—

सुहृमं ॥ हवति रोचं तच्च सुहृमं सु जायते दम्ब ।

अंगुल-वसकमामा हवति खेत्तुगुणता ॥ ६२ ॥

दम्ब-ज्येष्ठगुले परमाणुपदमा आगासपदेसा च सरिमा सि मेदं पददे ? च य,

वातका ज्ञान कदापि कदापि अपेक्षा प्रकल्प करनेका प्रयोजन है ।

प्रश्ना—क्षेत्रप्रमाणका अनुमान करके पहले काकप्रमाणका प्रकल्प किसप्रकारे किया
जा रहा है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, जो अवलक्षणनीय होता है उसका पहले
पर्यन्त करना चाहिये इस लक्षणके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्रकल्प किया है ।

प्रश्ना—काकसे क्षेत्र अनुमाननीय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जेबमें अपेक्षणी आगस्त और विग्रहमसूचीकी
प्रकल्पा पारि जायी हैं, इसप्रकारे काकसे क्षेत्र अनुमाननीय है ।

चित्रने ही व्याख्यान ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित
होता है यह सूक्ष्म होता है । क्या—

काक सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है क्योंकि, एक अंगुलके
असक्यताके मागमें असक्यता कदापि न्या जाते हैं । अर्थात् एक अंगुलके अस्तित्वताके मागमें
चित्रने प्रदेश होने हैं अस्तित्वता कदापि न्या जाते हैं । ६३ ॥

परंतु उन व्याख्याओंका यह व्याख्यान अति नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्यक्ष क्षेत्र स्पष्ट
है इस बातको छोड़कर ही पहले उक्तप्रमाणकी प्रकल्पा नम सक्ती है अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके
प्रकल्पके पहले उक्तप्रमाणकी प्रकल्पा नहीं नम सक्ती है ।

प्रश्ना—प्रत्यक्ष क्षेत्र स्पष्ट कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म प्रत्यक्ष होता है क्योंकि एक
प्रध्यागुममें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त अर्थागुम पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

प्रश्ना—एक प्रध्यागुम और एक क्षेत्रागुममें परमाणुपदेसा और व्याख्या प्रदेश समान
होते हैं इसप्रकारे पूर्वोक्त व्याख्यान अति नहीं होता है ?

सि पञ्चवप्पवृत्तादो । किमहं ज्ञेयपमानमद्रुक्म कालपमानं युचये ? न एव दोसा,
'अद्वयवप्पवृत्तादो तं पुच्छमम माभियच्च' इति वयणादो । कथं कालादो एव बहुवप्प-
विन्म ? न, समिहं सेदि जगपदर-विन्मममृषिपरुषणाजमास्यतादो । के वि जाप्रिया
अ बहुवं तं सुदुममिदि मणति—

सुदुमा य इवदि काला ततो सुदुमं तु जाये ऐत ।

अगुह-अससमागं हवति कप्पा असमेग्गा ॥ ११ ॥

एव न पडवे । कुदा ? इच्छादा पूलं ऐत छंडिय दणसस परवजाप्पहासुत्त-
वसीदो । कथं दग्गादो ऐत पूलं ? युचये—

सुदुमं तु इवदि ऐत ततो सुदुमं तु जाये न्म ।

दग्गुल्लि एजे हवति खेज्जुल्लगता ॥ १२ ॥

दग्ग-ज्ञेयगुले परमाणुपदसा आगासपदेसा च सरिमा सि अर्धं पडवे ? च न,

वातक्यं ज्ञानं कथना काळची अपेक्षा प्रकपण करनेका प्रयोजन है ।

संक्षेप—क्षेत्रप्रमाणका वर्तमान करने पहले काक्षप्रमाणका प्रकपण किसविधिये किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई श्रेय नहीं है क्योंकि जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले वर्णन करना चाहिये इस वर्णनके अनुसार पहले काक्षप्रमाणका प्रकपण किया है ।

संक्षेप—काळसे क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि क्षेत्रमें जगज्जेवी अप्पत्तर और विच्छिन्नसूचीकी प्रकपण्य पारि जाती है इसविधिये काळसे क्षेत्र बहुवर्णनीय है ।

कितने ही व्याचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । यथा—

वास सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है क्योंकि, एक अंगुलके अंतर्ध्यातव्ये मापमें अंतर्ध्यात कथकाक का जाते हैं । अर्थात् एक अंगुलके अंतर्ध्यातव्ये मापके अंतर्ध्यात प्रदेश होते हैं अंतर्ध्यात कथकाकके अंतर्ध्यात समय होते हैं ॥ १३ ॥

परंतु इन व्याचार्योंका यह व्याख्यायन उचित नहीं होता है क्योंकि द्रव्यसे क्षेत्र स्पष्ट है, इस बातको छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्रकपणा बन सकती है अथवा क्षेत्रप्रमाणके प्रकपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्रकपणा नहीं बन सकती है ।

संक्षेप—द्रव्यसे क्षेत्र स्पष्ट कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि एक द्रव्यांगुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त क्षत्रांगुल पाये जाते हैं ॥ १४ ॥

संक्षेप—एक द्रव्यांगुल और एक क्षेत्रांगुलमें परमाणुप्रदेश और व्यकृष्ट-प्रदेश समान होते हैं, इसविधिये पूर्णतः व्याख्यायन उचित नहीं होता है ?

पठिसेहफलत्तादो । किमहुं विस्वमध्वर्हं परुविन्धे ? न, पदरस्स असखेजदिमागो इदि सामण्येण बुधे तस्स पमाण किं संयेन्ना सेदीओ भवदि, किमसंखमा सेदीओ भवदि इदि जदसदेहस्स सिस्सस्म गिच्छयअणणहु सदीण विस्वमध्वर्हं पमाण बुध ।

दक्ष-खेत्त-कालपमाणान सच्चसिं विस्वमध्वर्हदो भेष पिच्छओ होदि चि काऊण ताव विस्वमध्वर्हपमाणपरूपण कस्सामो । अंगुलवगमूठ विस्वमध्वर्ह इवदि । त किं भूदमिदि बुध विदियवगमूलगुणपण उवलक्खिय । त कच ज्ञाणिध्वे ? इत्थमाव लक्खणत्तयाभिरेसादो । जहा जो जडाहि सो भुवदि चि । अंगुलवगमूठमिदि बुधे

संपूज संप्रदाका प्रतिपेध करमा सुधर्म दिवे गये उक्त वचनका फल है।

शंका — यहाँ पर विष्कमसूचीका प्रकरण किसछिये किया गया है ?

समाधान — नहीं क्योंकि प्रत्येक असंख्यातवां भाग देना सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात जगभेलिया है अथवा असंख्यात जगभेलिया है इनप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निराकरण करानेके लिये जगभेलियोंकी विष्कमसूचीका प्रमाण कहा है ।

विष्कमसूचीक कथनसे ही प्रथमप्रमाण क्षेत्रप्रमाण और काष्ठप्रमाण इन सबका निराकरण हो जाता है देना समझकर पहले विष्कमसूचीके प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलमें अर्थात् सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका भाग्य छेकर विष्कमसूची होती है । यह सूर्यगुणका प्रथम वर्गमूल किसरूप है देखा पृष्ठमे पर भाषार्थ कहते हैं कि सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलभित है । अर्थात् सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य मारक निष्पादद्विचौकी विष्कमसूची होती है ।

उदाहरण—सूर्यगुण $\overset{1}{\times} \overset{2}{2}$ विष्कमसूची $\overset{2}{2}$ सूर्यगुणका प्रथम वर्गमूल $\overset{2}{2}$ सूर्य

गुणका द्वितीय वर्गमूल $\overset{1}{2} \times \overset{1}{2} = \overset{2}{2}$ विष्कमसूची ।

प्रश्ना—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — विदियवगमूलगुणियेण सूत्रके इस पदमें जाये हुए शर्येमायलसभ मृगीया पिमफिके निर्देशमे यह जाना जाता है कि यहाँ पर सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे

१ मुनिदेवेति वेदं तदेवाए पुणवपन किं तु तत्तमीए पुणवपनेन वरवाए ववनेन वा होदववपना एणहुनववमावतो । वरवा (पुराण) पन ५१८ अ

२ इत्यपुनकथने । २ । २ । २२ पाणिनि । संविजकारं भावरप कङ्कने मृगीया इवा । जगमित्तावता । जगतावदपन वसिष्ठ १ चर्च । इति ।

संख्येन्द्रार्पणं निवारणमुपसंख्यप्रवयण । असंख्येन्द्राग्रो सेटीओ इति सामान्य-
वपनेन सम्प्रामाससेटीए गृहणं किष्ण पाषदे । य, तस्स-

पङ्को स्यात्-सूह पदो य भर्गुको य जगसेटी ।

योगपदो य योगो अह दु माणां मुनेयर्वा ॥ ६५ ॥

इति पमाप्यङ्गुगमत्तरे अपिदत्तादो । य च पमाणे परुविन्त्रमाणे अप्पमाप्यस
पवेसो अरिप, अह्यसंगादो । अपवा 'मिच्छाहृष्टी इव्यपमाणेन असंसंज्ञा' इति
पुम्बिह्वयपादो जापिन्त्रदे बहा अणताय सम्प्रामाससेटीए गृहणपरिप चि । जगपदरस्स
असंख्येन्द्रदिमागो इति किमह ? य, जगपदरस्स संख्यजदिमागप्यहुति उबरिमसम्पसता

प्रमाप्य पूर्वोक्त ही वतस्त्रया है । अब यदि सामान्य नारकियोंकी और मिथ्यावादि नारकियोंकी
विष्वक्मसूची एक मान ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंका समाप प्राप्त
हो जाता है जो सप्त नहीं है । अतएव यहाँ पर मिथ्यावादि नारकियोंकी जो विष्वक्मसूची
वतसाई है । यह सामान्य कथन है । विद्यापदपसे विचार करने पर सृष्ट्यगुहके प्रथम
वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे शुद्ध कर देने पर जो नारक सामान्य विष्वक्मसूची अपने उसे
किंचित् मूल कर देने पर मिथ्यावादि नारकियोंकी विष्वक्मसूची होती है ।

संख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें असेवपात यह बचन दिया है ।

श्रुक्—सूत्रमें अतस्त्रयात जगधेयिषां येसा सामान्य बचन दिया है इसलिये
उससे संपूर्ण व्यक्ताय भेजियेका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता जाता है ?

समाधान—वहाँ क्योंकि वह भेजीप्रमाण—

पस्य सगार, सूर्यगुह प्रतरांगुह जगधेयी कोकप्रतर और कोक
इसप्रकार ये अह उपमाप्रमाण जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

इसप्रकार इन अह प्रमाणोंके अतिरिक्त भी जाता है । और जिसका प्रमाणके अतिरिक्त
प्रत्यक्ष किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है वास्तव्य अतिप्रत्यक्ष
बोध का अनुपपत्ति ।

अपवा नारक मिथ्यावादि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अस्वैकपात हैं । इस पूर्वोक्त
बचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें संपूर्ण व्यापकताकी अनन्त जगधेयिषियोंका ग्रहण नहीं है ।

श्रुक्—सूत्रमें जगप्रतरका अतस्त्रयातमें प्रमाणप्रमाण यह बचन किसलिये दिया ?

समाधान—नहीं क्योंकि जगप्रतरके संख्यातमें आगको धामि केकर उपरिम

येर नारकमिथ्यावादी जीवोंने पदविषय, एवं हेतुके व विद्वद्भेद ? जाननयेरप्रमाणों । अन्तरो पुन नेरो
अधि येर वास्तव्यविद्वत्विषयवर्णीय प्रमाणमितिहो । ×× तथा कृतकमितिहोमनूषो पुन विद्वत्पद
मितिहोमनूषोपि विवेच्य । वचना (ब्रह्मवच) वच ५१८, अ.

१ अतिहृ इत्या १ अति गतः ।

१ पदो अन्तर् पूर्व पदो व वचनको व अनन्तरी । कोनपदो व कोपी उक्तवचनाप्रमाणविषय ॥ वि ४८-१९.

पक्षिसेहफलचादो । किमह विस्मयमर्ह्य परुषविजये ? अ, पवरस्स असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण धुचे तस्स पमाण किं संखेज्जा सेट्ठीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेट्ठीओ भवदि इदि आदसदहस्स सिस्सस्स भिच्छयज्जणह्ण सत्तीण विस्मयमर्ह्य पमाण धुच ।

द्वय-खेच-कालपमाणान सन्धेसिं विस्मयमर्ह्यदो येव भिच्छओ होदि चि फाऊन ताव विस्मयमर्ह्यपमाणपरुषण कस्सामो । अंगुलवग्गमूल विस्मयमर्ह्य इहदि । त किं भूदमिदि धुच विदियवग्गमूलगुणयेण उवसन्निख । त कथ खाणिअदे ? इत्थंभाव लक्खणतइयाणिरेसादो । जहा सो जहाहि सो भूअदि चि । अंगुलवग्गमूलमिदि धुचे

संपूर्ण संख्याका प्रत्येय करमा सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

प्रश्ना — यहाँ पर विष्कम्भसूचीका प्रकरण किसलिये दिया गया है ?

समाधान — नहीं क्योंकि 'प्रतरका भस्तरपातवां भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात अगभेधिया है अथवा असंख्यात अगभेधिया है, इसप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये अगभेधियोंकी विष्कम्भसूचीका प्रमाण कहा है।

विष्कम्भसूचीके कथनसे ही प्रथमप्रमाण द्वयप्रमाण और कालप्रमाण इन सबका निश्चय हो जाता है ऐसा समझकर पहले विष्कम्भसूचीके प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

सूत्रगुणके प्रथम वर्गमूलमें अर्थात् सूत्रगुणके प्रथम वर्गमूलका भाग्य छेकर, विष्कम्भसूची होती है। यह सूत्रगुणका प्रथम वर्गमूल किसरूप है ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रगुणके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपपन्नित है। अर्थात् सूत्रगुणके प्रथम वर्गमूलके उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक भिष्याहृष्टियोंकी विष्कम्भसूची होती है।

उदाहरण—सूत्रगुण २×१५ विष्कम्भसूची १५ सूत्रगुणका प्रथम वर्गमूल २५ सूत्रगुणका द्वितीय वर्गमूल २५ $२ \times २ = ४$ विष्कम्भसूची।

प्रश्ना—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— विदियवग्गमूलगुणित्व सूत्रके इस पक्षमें आये हुए इत्थंभावलक्षण मतीय विमक्षिके भिन्नेसासे यह जाना जाता है कि यहाँ पर सूत्रगुणके द्वितीय वर्गमूलसे

१ अनेनेनेति वेदं तदेवाए एवमवर्ष किं तु अतमीए एवमवर्षेण वरमाए ववर्षेण वा इदमवर्षमाह सपुट्टमवर्षमाह । वरमा (वृत्तवर्ष) पत्र ५१८ अ

२ वचनद्वयके १। १। २१ वाणिमि । वनि वकार मातरव कछने वृत्तिवा रवात् । जगद्विस्तारव । अयमवर्षासतवमिदिह वचनैः । इतिः ।

पदंगुलस्त घनगुलस्त वा पद्मगुलस्त गह्वरं कर्षं वा पावदे ? न, 'अहूरुव बगि-प्र
माने बगिगन्धमाने अर्धसंखे-माणि वग्गह्वाभाणि गत्तुम सोहम्मीसानविकरंमसई उप्पज्जदि।
सा सई बगिगदा पेइयविकरंमसई इति। सा सई बगिगदा भवणमासिपविकरंमसई
इति। सा सई बगिगदा घनगुलो इति' चि परियम्मवयणादो णवदे घम-पदंगुलाव
वग्गमूलस्त गह्वरं न इति किंतु सूचिअगुलउग्गमूलस्वेव गह्वरं इति चि, अन्वहा
घनगुलविदियवग्गमूलस्त अणुप्पचीदो। सपहि सुचिअगुलविदियवग्गमूल मापहार

गुणित प्रथम वर्गमूल किया है। जैसे जो अटाओंसे युक्त है वह तगर्सी गोचन करता है। वहाँ
पर इर्यंमावससण मृतीया निर्देश होनेसे अटाओंपाका यह कार्य निश्चय होता है उसीप्रकार
महत्तमं मी समस्त लेना चाहिये।

सूत्र— अंगुलका वर्गमूल ऐसा सामान्य बचन करने पर उससे प्रतरंगुलके
वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आठका उत्तरोत्तर वर्ध करते हुए अर्धकाल
वर्धमान आकर सौधर्म और वेदान्तसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मिक
संबन्धी विष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ध करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त
होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ध करने पर भवनवासी
वेदसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ध
करने पर घनांगुल प्राप्त होता है। इस परिकर्मके बचनसे जाना जाता है कि प्रथम घनांगुल
और प्रतरंगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किंतु सूर्यगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया
है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कंमसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय
वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ— ऊपर जो परिकर्मका उद्धारण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है
कि सामान्य नारकविष्कंमसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें
अंगुल सामान्यका कहे-क होनेसे उससे हम सूर्यगुलका ग्रहण न करके प्रतरंगुल या
घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अग्निप्रयत्ना परिकर्मके बचनके साथ विरोध लग
जाता है, क्योंकि उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं
तो परिकर्मके उक्त बचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरंगुल करने पर भी यही
आपत्ति जाती है। हाँ अंगुलका अर्थ सूर्यगुल के किया जाता है तो कोई विरोध नहीं
जाता है क्योंकि सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण
जाता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि
सूत्रमें अंगुलसे सूर्यगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको मापहार करके और सूर्यगुलको मात्रक करते

फाल्गुन अक्षिप्रगुल विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खमअक्षिपरूण वग्गहाणे खडिद भाजिद विरलिद अरुदिद पमाण-कारण निरुचि वियपेहि वचइस्सामा । तस्स खंडिदादिपठक्क सुगम । तस्स पमाण केचिय ? अक्षिप्रगुलस्स असंसेज्जदिभागो असंसेज्जमाणि अक्षिप्रगुल पढमवग्गमूलाणि । क्वय कारणेण ? अक्षिप्रगुलपढमवग्गमूलेण अक्षिप्रगुले भागे हिदे सुचि अंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । अक्षिप्रगुलपढमवग्गमूलस्स पुमागेण अक्षिप्रगुले भागे हिदे दोण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । पुनो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण अक्षिप्रगुले भागे हिदे तिण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एव पढमवग्गमूलस्स असंसेज्जदिभाग भूदअक्षिप्रगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण अक्षिप्रगुले भागे हिदे

वगस्थानमें अंशित, भाजित विरलित अपहृत प्रमाण कारण निरुक्ति और विक्खपके द्वारा विर्कमसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके अविदित भादि कारणका कथन सुगम है । (इन बातोंका सामान्य सिध्दांति यशिके सम्बन्धमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है उसीप्रकार यहाँ भी समझना चाहिये ।)

छात्र — विर्कमसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूर्यगुलके असंख्यातका भाग विर्कमसूचीका प्रमाण है जो सूर्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

छात्र — किस कारणसे सूर्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विर्कमसूची होती है ?

समाधान — सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{2}{2}} = 2^{\frac{2}{2}} \right)$ । सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका

सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके दो प्रथम वर्गमूल सम्बन्ध आते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{2}{2}} = 2 \times 2^{\frac{2}{2}} \right)$ । पुनः

सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके तीन प्रथम वर्गमूल सम्बन्ध आते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{2}{2}} = 2 \times 2^{\frac{2}{2}} \right)$ । इसीप्रकार सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके असं

ख्यातके भागका सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो सम्बन्ध

पदरंगुलस्स पदरंगुलस्स वा पद्मामूलस्स गहर्णं कर्षं जो पावदे ? ज, 'अङ्गुलं वगिम-
माये वगिमन्त्रमाये अर्धंवेज्जाणि वग्गह्मापाणि गत्थं सोहम्मीसाणमिक्खंमच्छं उप्पन्नमिदि ।
सा सह वगिमदा वेरह्यविकखंमच्छं हवदि । सा सह वगिमदा मज्जनवासिपमिक्खमच्छं
हवदि । सा सह वगिमदा पणगुलो हवदि ' चि परियम्मवयणादो गम्भदं पण पदरंगुलं
वग्गामूलस्स गहणं य हवदि किं तु सूचिअंगुलवग्गामूलस्सेन गहर्णं होदि चि, अम्भहा
पणगुलविदियवग्गमसूस्स अणुप्पचीदो । सपदि सूचिअंगुलविदियवग्गममूलं मागहार

गुणित प्रथम वर्गमूल दिया है। जैसे जो अराभोंसे युक्त है वह तपस्वी गोजन करता है। वहाँ
पर इत्यम्भाबलक्षण मृतीया निर्देश होनेसे अराभोंवाला वह वर्ग निकल आता है उसीप्रकार
प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

टिप्पणी— अंगुलका वर्गमूल ऐसा सामान्य बचन करने पर उससे प्रतरांगुलके
वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आठका वृत्तरोत्तर वर्ग करते हुए अष्टवत्स
वर्गकृत आकर सौघर्म और वेशानसंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (सौघर्मविक-
संबन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त
होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर मज्जनवासी
वेरहसंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (मज्जनवासिविष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग
करने पर घनांगुल प्राप्त होता है। इस परिकर्मके बचनसे ज्ञाता जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल
और प्रतरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किंतु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया
है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कम्भसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय
वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ— ऊपर जो परिकर्मका उद्धारन दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है
कि सामान्य नारकविष्कम्भसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूच्यमें
अंगुल सामान्यका वृत्तल होनेसे उससे इस सूच्यंगुलका ग्रहण न करके प्रतरांगुल वा
घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायका परिकर्मके बचनके साथ विरोध व्य-
जाता है क्योंकि उक्त सूचना अर्थ करते हुए यदि इस घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कम्भसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं
तो परिकर्मके उक्त बचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरांगुल करने पर भी यही
भाषति प्यती है। हाँ अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल के दिया जाता है तो कोई विरोध नहीं
आता है क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण
आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि
सूत्रमें अंगुलसे सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको मागहार करके और सूच्यंगुलको मात्रक करके

कारण स्रुचिभ्रंशुल विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खमसूचिपरुत्तण वग्गानुणे खंदिद भाजिद
 पिरलिद अवहिद पमाण-कारण गिरुत्ति वियप्पहि वचइस्सामो । तत्थ खंदिदादिषत्तक
 सुगम । तस्स पमाण फथियं ? स्रुचिभ्रंशुलस्स असखेज्जदिभागा असखेज्जभाणि स्रुचिभ्रंशुल
 पट्टमवग्गमूलाणि । एण कारणेण ? स्रुचिभ्रंशुलपट्टमवग्गमूलेण स्रुचिभ्रंशुले भागे हिदे सूचि
 अगुलपट्टमवग्गमूलमागच्छदि । स्रुचिभ्रंशुलपट्टमवग्गमूलस्स दुभागेण स्रुचिभ्रंशुले भागे
 हिदे दाणि पट्टमवग्गमूलाणि आगच्छति । पुणे पट्टमवग्गमूलस्स त्रिभागेण स्रुचिभ्रंशुले
 भागे हिदे तिप्पि पट्टमवग्गमूलाणि आगच्छति । एष पट्टमवग्गमूलस्स अत्तसेज्जदिभाग
 भूदस्रुचिभ्रंशुलविदियवग्गमूलण पट्टमवग्गमूल भागे हिदे लदेण स्रुचिभ्रंशुले भागे हिदे

वगस्यानमें स्थित भाजित विरलिन, अपहन प्रमाण कारण मिलति और विक्खमके
 द्वाप विक्खमसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें धारमके ललित भादि कारण कथन सुगम
 है । (इन बातोंका सामान्य सिध्दाद्वि रानिके सन्धधर्म उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और
 ४२ में किया है वहीप्रकार यहां भी समझना चाहिये ।)

श्रृंका — विक्खमसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूर्यगुलके अक्षरघातर्धा भाग विक्खमसूचीका प्रमाण है जो सूर्यगुलके
 अक्षरघात प्रथम वगमूल प्रमाण है ।

श्रृंका — किस कारणसे सूर्यगुलके अक्षरघात प्रथम वगमूलप्रमाण विक्खमसूची
 होती है ?

समाधान — सूर्यगुलके प्रथम वगमूलका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलका
 प्रथम वगमूल आता है $\left(\frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2} = 2^{\frac{1}{2}} \right)$ । सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके द्वितीय भागका

सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके दो प्रथम वगमूल सम्पन्न होते हैं $\left(\frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}} \right)$ । पुनः

सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके तीसरे भागका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके तीन प्रथम
 वगमूल सम्पन्न होते हैं $\left(\frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}} \right)$ । इसीप्रकार सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके चले

व्याप्तर्धे भागरूप सूर्यगुलके द्वितीय वगमूलसे प्रथम वगमूलके भाजित करने पर जो सम्प

असंख्येयानि सूत्रिभ्यस्तुल्यपदमन्त्रगमूलाणि आगच्छन्ति च न संदेहा । कारणं यदं ।
 निरूप्यं वचनस्तथा । अगुलविदियवग्गमूलेण पदमन्त्रगमूलं भागं द्विदं भागस्तुल्यं
 अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमन्त्रगमूलाणि तेषून् विकृतममूर्हं हवदि । अथवा
 विदियवग्गमूलस्तु अचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमन्त्रगमूलेहि विकृतममूर्ही होदि चि
 वचनं । गिरुपी गदा ।

वियप्यो दुविहो हङ्गिमवियप्यो उवरिमवियप्यो चेदि । तस्य वेरुवे हङ्गिमवियप्यं
 वचनस्तथा । सूत्रिमगुलविदियवग्गमूलेण सूत्रिभ्यस्तुल्यपदमन्त्रगमूलमोवङ्गिय स्तुल्येण पदम
 न्त्रगमूले गुणिदे विकृतममूर्हं हवदि । अथवा विदियवग्गमूलेण पदमन्त्रगमूले गुणिदे

भागे असंख्येयं सूत्र्यगुलके भाजित करने पर सूत्र्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल छन्द्य गते हैं
 इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{2}{3}}{\frac{1}{3}} = 2, \quad \frac{2 \times 2}{\frac{1}{3}} = 2 \text{ सूत्र्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण
 विष्कम्भसूची ।}$$

अब निरूपितका बयान करते हैं— सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 भाजित करने पर भागमें जितनी संख्या छन्द्य गये उतने प्रथम वर्गमूल प्रमाण करने विष्कम्भ
 सूची उत्पन्न होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलके
 (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देने पर) विष्कम्भसूची होती है । इसप्रकार
 निरूपितका बयान समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2}{3} \times \frac{2}{3} = 2 \text{ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़, द्वितीय
 वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता
 है उतना ही जाता है ।}$$

विष्कम्भ दो प्रकारका है अथस्तथ विष्कम्भ और उपरिम विष्कम्भ । उनमें पहले
 विष्कम्भकारात्में अथस्तथ विष्कम्भ बतलाते हैं— सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूत्र्यगुलके
 प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो छन्द्य भागे असंख्येयं सूत्र्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण होता है । अथवा, सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 गुणित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2}{3} = \frac{2}{3}, \quad 2 \times 2 = 2 \text{ चि अथवा } 2 \times 2 = 2 \text{ चि}$$

विक्षममूर्ध्नि इति । अङ्कुरे वत्तइस्सामो । अङ्गुलविदिपवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण
 षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे विक्षममूर्ध्नी आगच्छदि । केण कारणेण ? अङ्गुलपढम
 वग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रविअङ्गुलो आगच्छदि । पुणो समङ्गुलविदिप
 वग्गमूलेण मागे हिदे विक्षममूर्ध्नी आगच्छदि । एत्थ विठणादिकरणं वत्तइस्सामो ।
 अङ्गुलपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रविमङ्गुलो आगच्छदि । विगु
 षिदपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रविअङ्गुलस्स दुमागो आगच्छदि ।
 त्रिगुणिदपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रविअङ्गुलस्स त्रिमागो आगच्छदि ।

अब अष्टरूपमें अष्टस्तन विक्षम वत्तइते हैं— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम
 वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य आवे उससे घनाङ्गुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर
 विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है क्योंकि सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम
 वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका प्रमाण आता है । पुनः इसे सूर्यगुणके द्वितीय
 वर्गमूलसे माजित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूर्यगुणका घन $\left(\frac{2}{3}\right)^3 = 2\frac{2}{27}$ घनाङ्गुलका प्रथम वर्गमूल $2\frac{1}{3}$ ।

$$\frac{2\frac{2}{27}}{2\frac{1}{3}} = 2 \text{ विष्कम्भसूची}$$

अब यहाँ त्रिगुणाधिकरण विधिको बतइते हैं— सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घना-
 ंगुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुण आता है $\left(\frac{2}{3} = 2 \times \frac{2}{3}\right)$ । त्रिगुणित

सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका सूत्र
 भाग आता है $\left(\frac{2}{3} = \frac{2 \times 2}{3}\right)$ । त्रिगुणित सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम

वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका तीसरा भाग आता है । $\left(\frac{2}{3} = \frac{2 \times 2}{3}\right)$ ।

असुरेज्याणि सृषिर्जगुलपदमवगम्यलाणि आगच्छन्ति चि न संदहा । कारये मरं ।
विरुचिं वचइस्सामा । अगुलविदियवगम्यलेण पदमवगम्यस् भाग हिद मागत्तइमि
अचियाणि रुवाणि तचियाणि पदमवगम्यलाणि येत्तुण विक्खंममूर्ई इवदि । अवा
विदियवगम्यस्सम अचियाणि रुवाणि तचिएहि पदमवगम्यलेहि विक्खममूर्पी हादि पि
वचप्पं । शिरुसी गवा ।

वियप्पा दुविहो हट्टिमवियप्पा उवरिमवियप्पो वेदि । तत्थ वेरूव हट्टिमवियप्पं
वचइस्सामो । मृषिअगुलविदियवगम्यलेण मृषिअगुलपदमवगम्यमूर्मोवट्टिय उद्वेस पदम
वगम्यले गुप्पिदे विक्खंममूर्ई इवदि । अवा विदियवगम्यलेण पदमवगम्यले गुप्पिदे

भावे उससे सूर्यगुल्फे माजित करने पर सूर्यगुल्फे अर्धरूप्यात् प्रथम वर्गमूल छप्प जाने है
इसमें संदिह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{3}{2}}{\frac{1}{2}} = 3, \quad \frac{2 \times 2}{2} = 2 \quad \text{सूर्यगुल्फे अर्धरूप्यात् प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंससूची ।}$$

अब निकटिका कथन करते हैं— सूर्यगुल्फे द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
माजित करने पर मागमें जितनी संख्या छप्प भये वतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंस
सूची उत्पन्न होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है वतने प्रथम वर्गमूलसे
(द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देने पर) विष्कंससूची होती है । इसप्रकार
निकटिका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{3}{2} \times \frac{3}{2} = 2 \quad \text{द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है वतथा ही भया है ।}$$

विष्कंस दो प्रकारका है अद्यस्तन विष्कंस और अपरिम विष्कंस । इनमें पहले
द्विरूपभाषाओं अद्यस्तन विष्कंस बतलाते हैं— सूर्यगुल्फे द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुल्फे
प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो छप्प जाने उससे सूर्यगुल्फे प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर विष्कंससूचीका प्रमाण होता है । अथवा सूर्यगुल्फे द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
गुणित करने पर विष्कंससूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{3}{2}}{\frac{1}{2}} = 3, \quad \frac{3}{2} \times \frac{3}{2} = 2 \text{ बि अथवा } \frac{3}{2} \times \frac{3}{2} = 2 \text{ बि}$$

अमृतं उज्ज्वलं सृष्टिर्गुणपद्मवर्गमूलानि आगच्छति चि न संज्ञा । कारणं यत् ।
विरुद्धं वचस्त्वामा । अगुणविदियवर्गमूलैः पद्मवर्गमूल भाग द्वि मागच्छति
वचिष्याणि रूपाणि तचिष्याणि पद्मवर्गमूलानि पेशून् विवर्धमसूरी हवति । अथवा
विदियवर्गमूलस्तु वचिष्याणि रूपाणि तचिष्याणि पद्मवर्गमूलानि विवर्धमसूरी हवति चि
वचम् । गिरुषी गदा ।

वियप्नो वृद्धिर्हो वृद्धिमवियप्नो उवरीमवियप्नो चेदि । तस्य वेत्ते वेत्तिमवियप्नं
वचस्त्वामो । मृषिअगुणविदियवर्गमूलैः मृषिअगुणपद्मवर्गमूलमोवृद्धिप लक्ष्य पद्म
वर्गमूलैः गुणिते विवर्धमसूरी हवति । अथवा विदियवर्गमूलैः पद्मवर्गमूलैः गुणिते

आगे उससे सूर्यगुणके भाजित करने पर सूर्यगुणके अक्षप्तात् प्रथम वर्गमूल लब्ध होते हैं
इसमें संज्ञा नहीं है । इसप्रकार कारणका वचन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{3}{2}}{\frac{1}{2}} = 3, \quad \frac{\frac{3}{2} \times \frac{3}{2}}{\frac{1}{2}} = 9 \quad \text{सूर्यगुणके अक्षप्तात् प्रथम वर्गमूल प्रमाण विवर्धमसूरी ।}$$

अब निरुक्तिका वचन करते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
भाजित करने पर मात्रामें द्वितनी अक्षप्ता लब्ध आये उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विवर्धम-
सूरी उत्पन्न होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका द्वितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलसे
(द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको ओढ़ देने पर) विवर्धमसूरी होती है । इसप्रकार
निरुक्तिका वचन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{3}{2}}{2} \times \frac{3}{2} = 9 \quad \text{द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको ओढ़ द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर द्वितना होता है, वतना ही आता है ।}$$

विवर्धन दो प्रकारका है अथस्तन विवर्धन और उपरिम विवर्धन । उनमें पहले
विषयधारामें अथस्तन विवर्धन बतलाते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके
प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके ओ लब्ध आये उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर विवर्धमसूरीका प्रमाण होता है । अथवा सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
गुणित करने पर विवर्धमसूरीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{3}{2}}{\frac{1}{2}} = 3, \quad \frac{3}{2} \times \frac{3}{2} = 9 \quad \text{चि अथवा,} \quad \frac{3}{2} \times \frac{3}{2} = 9 \quad \text{चि}$$

एवम् कमेव येदम् जाय छविर्अंगुलपदमवगममूलस्त गुणगारो विदियवगममूलमेतं पचा सि । पुनो तेव छविमगुलविदियवगममूलेष गुणिवपदमवगममूलेष पर्वगुलपदमवगममूले मामे हिदे विदियवगममूलोवद्वियवविर्अंगुलो आगच्छदि । तो चेव विक्खमसूची । घणापये वच-
इत्तामो । अंगुलविदियवगममूलेण पदमवगममूल गुणैऊय तेव पर्वगुलविदियवगममूलं गुणैऊय तेव घणापयविदियवगममूले मागे हिदे विक्खमसूची आगच्छदि । केव करजेण ? पर्वगुल-
विदियवगममूलेण घणापयगुलविदियवगममूले मागे हिदे वयगुलपदमवगममूलमागच्छदि । पुनो वि छविर्अंगुलपदमवगममूलेष पर्वगुलपदमवगममूल मागे हिदे छविर्अंगुला वाम-
च्छदि । पुनो वि विदियवगममूलेष छविर्अंगुले मामे हिदे विक्खमसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि सि क्खु गुणैऊय मागमाह्वं कर् । एवं हेत्तिमवियप्पो समचो ।

उपरिमवियप्पो विविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिवगुणगारो चेदि । तव

इत्तमकार अवतक सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमापको प्राप्त होये अवतक इसी क्रमसे के जाया जाहिये । पुनः उस सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके माजित सूर्यगुल व्यता है और बही विष्कम्भसूची है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\frac{2}{\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ विष्कम्भसूची}$$

जब घनात्मके अवतक विक्षय कतकत है— सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे घनागुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उसका घणापयगुलके द्वितीय वर्गमूलमें माप देने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण जाता है क्योंकि, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलका घनापयगुलके द्वितीय वर्गमूलमें माप देने पर घनागुलका प्रथम वर्गमूल व्यता है । पुनः सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका घनागुलके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर सूर्यगुल व्यता है । पुनः सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूर्यगुलमें माग देने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण व्यता है । इत्तमकार विष्कम्भसूची जाता है येसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका प्रमाण किया । इत्तमकार अवतक विक्षय समाप्त हुआ ।

उदाहरण—सूर्यगुलका प्रमापक $(2)^{\frac{1}{2}} = 2^{\frac{1}{2}}$ सूर्यगुलके प्रमापकका द्वितीय

$$\text{वर्गमूल } 2 = 2^{\frac{1}{2}} \times \frac{2^{\frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ विष्कम्भसूची}$$

अपरिम विक्षय तीन प्रकारका है, पृथीत पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकार । उनमें

कारणेन ! घन-उत्तरिमवगमे घणाघने मागे हिंदे घनगुले आगच्छति । पुनो वि पदगुलेन घनगुले मागे हिंदे सूचित्रगुला आगच्छति । पुनो वि त्रिविधवगमगुलेन सूचित्रगुले मागे हिंदे विष्वक्मसूची आगच्छति । एवमागच्छति च कङ्कु गुजेऽप्य मागगाहण कथं । तस्मात् मागहारस्तु अद्वन्द्वद्वयमेवे रासिस्तु अद्वन्द्वद्वय कदे वि विष्वक्मसूची आगच्छति । गहिदो गहो । सूचित्रगुलस्तु असंख्यत्रयिमागेन घनगुल पदमवगमगुलस्तु असंख्यत्रयिमागेन 'घणाघणविद्विधवगमगुलस्तु असंख्यत्रयिमागेन च विष्वक्मसूचिप्रमाणेन गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुन्यं च वयस्यो ।

संपदि भेरयमिच्छाद्विरासिस्तु मागहारप्रापणविधिं वचस्तुमागे । तुत्ते अवृत्तो मागहारो कथं प्राप्यते ? ण, सुचित्रविष्वक्मसूचीदो तदुत्पत्तिदिदीदो । तच्चा-
प्रमाण आता है क्योंकि घनांशुके उपरिम वर्गसे घनाघनांशुके माजित करने पर घनांशुल आता है । पुनः प्रत्येकशुके घनांशुके माजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुनः सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके माजित करने पर विष्वक्मसूची आती है । इसप्रकार विष्वक्मसूची आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2^3)^1}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2^3}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2^3}{2^3} = 1 \text{ विष्वक्मसूची}$$

उक्त मागहारके जितने अघच्छेद हों उतनीबार उक्त मध्यमान रासिके अघच्छेद करने पर भी विष्वक्मसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विष्वक्मका वर्गन समाप्त हुष्य ।

उदाहरण—२^१ के अघच्छेद ११ होते हैं। अतः इतनीबार २^१ के अघच्छेद करने पर १२-११ = १ = १ प्रमाण विष्वक्मसूची या जाती है ।

सूच्यगुलके असंख्यातमे मागप्रमाण विष्वक्मसूचीसे घनांशुके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातमे मागप्रमाण विष्वक्मसूचीसे और घनाघनांशुके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातमे मागप्रमाण विष्वक्मसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेक समान करना चाहिये ।

अथ नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके मागह रके उत्पन्न करनेकी विधिसे बतलाते हैं—

प्रश्न—मागहारका कथन सूत्रमें नहीं किया है, फिर यही कह कैसे उत्पन्न किया आ रहा है ?

समाधान—नहीं क्योंकि सूत्रके विष्वक्मसूचीसे उक्त मागहारकी उत्पत्ति बन जाती है । वह इसप्रकार है—

१ गहिद पुनो च १ दि पाता ।

अङ्गुष्ठेदणयमेचेतापविहाय आणित्तुण वत्तव्व । अङ्गुल्ले वत्तइस्सामो । विदियवग्ग-
मूत्तेण पदरुत्तं गुणेत्तण तेण वणगुले मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । केव
फारवेण ? पदरुत्तेण वणगुले मागे हिदे सूचिभंगुलमागच्छदि । पुष्पा वि विदियवग्ग-
मूत्तेण सूचिभंगुले मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि चि ककु
गुणेत्तय मायग्गहणं कइ । तस्स मागहारस्स अङ्गुष्ठेदणयमेचे रासिस्स अङ्गुष्ठेदणय
कदे वि विक्खंमसूची आगच्छदि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयम्भं । पणापणे
वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूत्तेण पदरुत्तं गुणेत्तय तेण गुणिरासिणा पदरुत्तं
उपरिमवग्ग गुणेत्तय तेण पणापणे मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । केव

जाना चाहिये। यहां पर समस्त अर्घ्यच्छेदोंके मिलानेकी विधियों जानकर कथन करना चाहिये।

उदाहरण— $\frac{2}{3}$ के अर्घ्यच्छेद ३ होते हैं, अतः इतनीबार $\frac{1}{3}$ के अर्घ्यच्छेद करने पर

$\frac{2}{3} \times \frac{1}{3} = \frac{2}{9} = 2$ प्रमाण विक्खंमसूची भव जाती है।

अब अष्टरूपमें सुहीत उपरिम विक्खंमको बतलाते हैं— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके
प्रतरांगुलको गुणित करके जो क्षम्य भागे उससे घनगुलके माजित करने पर विक्खंमसूचीका
प्रमाण जाता है क्योंकि प्रतरांगुलके घनगुलके माजित करने पर सूच्यगुल जाता है। पुन
सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके सूच्यगुलके माजित करने पर विक्खंमसूचीका प्रमाण जाता है।
इसप्रकार विक्खंमसूची जाती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका
ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\left(\frac{2}{3}\right)^3}{\frac{2}{3} \times \frac{1}{3}} = \frac{2}{9} = 2 \text{ विक्खंमसूची.}$$

उक्त मागहारके जितने अर्घ्यच्छेद हों उतनीबार उक्त ग्रन्थभाज राशिके अर्घ्यच्छेद
करने पर भी विक्खंमसूचीका प्रमाण भव जाता है। इसीप्रकार संख्यात संख्यात श्रीर
अनन्त स्थानोंमें के जाना चाहिये।

उदाहरण— $\frac{2}{3}$ के अर्घ्यच्छेद ३ होते हैं अतः इतनीबार $\frac{1}{3}$ के अर्घ्यच्छेद करने पर
 $\frac{2}{3} \times \frac{1}{3} = \frac{2}{9} = 2$ प्रमाण विक्खंमसूची भव जाती है।

अब घनाधर्मों सुहीत उपरिम विक्खंम बतलाते हैं— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके
प्रतरांगुलको गुणित करके जो गुणित राशि क्षम्य भागे उससे घनगुलके उपरिम वर्गको
गुणित करके जो क्षम्य भागे उससे घनाधर्मगुलके माजित करने पर विक्खंमसूचीका

कारणेन ! घन-उपरिमवर्गेण घणाघणे मागे हिंदे घणगुले आगच्छदि । पुणो वि पदरगुलेण घनगुले मागे हिंदे सूचिअगुले आगच्छदि । पुणो वि विदियवगमूलेण सूचिअगुले मागे हिंदे विषसंमसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु गुमेऊण मागगाहण कद । तस्स मागहारस्स अदुच्छेदणयमेवे रासिस्स अदुच्छेदण कदे वि विषसंमसूची आगच्छदि । गहिदो गदो । सूचिअगुलस्स असंखेज्जदिमागेण घणगुल पदमवगमूलस्स असंखेज्जदिमागेण 'घणाघणविदियवगमूलस्स असंखेज्जदिमागेण च विषसंमसूचापिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुम्भ व कतथो ।

संपदि परइयमिच्छाद्विरासिस्स मागहारुप्यायमिहि वचइस्तमो । सुच अघुचो मागहारो कधमुप्याइउअदे ? ण, सुचधुचविस्समसुईदो तदुप्पचिसिईदो । त जहा-

प्रमाण आता है क्योंकि घनांगुलके उपरिम वगले घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुल आता है । पुनः प्रथमगुलस घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुनः सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके भाजित करने पर विष्कमसूची आती है । इसप्रकार विष्कमसूची आती है, यथा समप्रका पढ़ेके गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(१०)^1}{\frac{१}{२ \times २ \times २}} = \frac{१०^1}{२^1 \times २} = \frac{१०^1}{२^1} = २ \text{ विष्कमसूची}$$

उक्त भागहारके मिलने अर्धच्छेद हों उत्तमीचार उक्त मध्यमान रासिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कमसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार पृथीत उपरिम विष्कस्यका वर्गम समान्य हुआ ।

उदाहरण—२^१ के अर्धच्छेद ११ होते हैं । अत उत्तमीचार २^१ के अर्धच्छेद करने पर १२-११ १
२ = २ = २ प्रमाण विष्कमसूची आ आती है ।

सूच्यगुलके असंख्यातये भागप्रमाण विष्कमसूचीसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातये भागप्रमाण विष्कमसूचीसे और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातये भागप्रमाण विष्कमसूचीसे पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकारका कथन पढ़ेके समान करना चाहिये ।

अब नारक मिथ्यावृत्ति जीवरादिके भागह रक उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—
धंका—भागहारका कथन सूक्तों नहीं किया है, फिर यहाँ यह कैसे उत्पन्न किया आ पता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि सूक्तोंक विष्कमसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पत्ति बन आती है । अब इसप्रकार है—

अगसेदीए अगपदरे भाग हिदे एगसेदी आगच्छति । अगसेदीदुमागेण अगपदर भाग हिदे दोप्पि सेदीओ आगच्छति । अगसेद्वितीमागेण अगपदरे भागे हिदे तिप्पि सेदीओ आगच्छति । एवमगादि-एगुत्तरकमण सेदीए भागहारो बहुवेषण्यो जाव गेरइपविकसं-मसूक्ष्ममेव पचो चि । पुणो ताए विकसंमसूक्ष्मीए सेदिमोवद्विय सत्तेण अगपदरे भागे हिदे विकसमसूक्ष्मीमेवसेदीओ आगच्छति । एवमप्यत्थ वि विकसंमसूक्ष्मो अवहारकाओ सापेयण्यो । एदेण भागहारण सेदीए उचरि खंडिवादिवियप्या वचन्हा । एत्थ ताव वगद्वाणा पमाण-कारण-विकृति-वियप्येहि अवहारकाळ वचइस्सामो । तस्स पमार्थ केवियं ? सेदीए असंसेज्जविमाणा असंसेज्जानि सेदिपढमवगमभूलाणि । पमार्थ मई । केव्य करमेण ? सेदिपढमवगमभूतेण सेदिमि भागे हिदे सेदिपढमवगमभूलो जाय

अगधेणीके अगपदरेके माजित करने पर एक अगधेणीका प्रमाण आता है (४२९४९१७२९१ - १ १११ = १.५१११) । अगधेणीके द्वितीय मापका अगपदरमें माग देने पर वा अगधेणीका छद्म आती है (४२९४९१७२९१ + ३२७१८ = १३१७७२) । अगधेणीके तृतीय मापसे अगपदरके माजित करने पर तीन अगधेणीयां आती हैं (४२९४९१७२९१ - २१८४५१ = २१७६४८) । इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए अचतक बह नारक विष्कंमसूक्ष्मीके प्रमाणको प्राप्त होने तक चले बढ़ाते जाना चाहिये । अन्तर उस विष्कंमसूक्ष्मीसे अगधेणीको अपवर्तित करके जो छद्म आये उससे अगपदरके माजित करने पर अन्तम विष्कंमसूक्ष्मीका प्रमाण है उसनी अगधेणीयां छद्म आती हैं । इसीप्रकार अन्तम ही विष्कंमसूक्ष्मीसे अवहारकाळ साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—अगधेणी १.५१११, अगपदर ४२९४९१७२९१, १.५१११ - २ = ३१७६४८
 ४२९४९१७२९१ + ३२७१८ = १३१७७२, नारक मिष्याद्वि जीवपथि

अब इस भागहारका व्याप्य करके अगधेणीके ऊपर उचित भादि विक्षयका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण कारण विक्षके नीर विक्षयके द्वाय अवहारकाळका प्रमाण बतसाते हैं—

प्रश्ना—सामान्य नारक मिष्याद्वि जीवपथिके जानेके किये जो मापहार कहा है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—उक्त भागहारका प्रमाण अगधेणीके असंख्यातमें माप है जो अगधेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका चयन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकाळ ३२७१८, अगधेणीका प्रथम वर्गमूल ५५१, ३२७१८ + ५५१ = ३३२८ (यहां ३३८ को असंख्यात मान कर उसनेवार प्रथम वर्गमूल ५५१ का जोड़ ३२७१८ होता है)

प्रश्ना—अगधेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाळ किस बारसे है ?

समाधान—क्योंकि, अगधेणीके प्रथम वर्गमूलसे अगधेणीके माजित करने पर

च्छदि । सेद्विविदियवग्गमूलेण सेद्विमिह मागे हिदे विदियवग्गमूलस्स अत्थियाणि
रूपाणि अत्थियाणि सेद्विपढमवग्गमूलानि आगच्छति । सट्ठिविदियवग्गमूलेण सेद्विमिह
मागे हिदे सेद्विविदिय-विदियवग्गमूलाण अण्णोण्णमाग कदे तस्य अत्थियाणि रूपाणि
अत्थियाणि सेद्विपढमवग्गमूलानि आगच्छति । अपेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं
असंसेअदिमागमेववग्गहाणाणि हेह्हा ओसरिअम धणगुलविदियवग्गमूलण सेद्विमिह
मागे हिदे असंसेअदिमि सेद्विपढमवग्गमूलाणि आगच्छति पि न सदेह कायम्व ।
काम्भं गर्द । गिरुत्तिं चत्तइस्सामो । धणगुलविदियवग्गमूलण सेद्विपढमवग्गमूल मागे
हिदे तस्य अत्थियाणि रूपाणि अत्थियाणि पढमवग्गमूलाणि । अथवा तेयेव मागहारेण
सेद्विविदियवग्गमूले भाग हिदे उत्तरागदेण तमिह चेव गुणिदे तस्य अत्थियाणि रूपाणि
अत्थियाणि सेद्विपढमवग्गमूलानि । अथवा तेयेव मागहारेण सेद्विविदियवग्गमूल मागे
हिदे उत्तरागदेण तं चेव गुणअम तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तस्य अत्थियाणि

अगभेणीका प्रथम वर्गमूल अथा है (३५५३३ + २५३ = २५३) । अगभेणीके द्वितीय वर्गमूलसे
अगभेणीके माजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने अगभेणीके
प्रथम वर्गमूल अथ अथे है (३५५३३ + २३ = ४०९३ = २३ × २५३) । अगभेणीके तृतीय
वर्गमूलसे अगभेणीके माजित करने पर भेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर
गुणा करने पर वहां जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल अथ अथे है (३५५३३
+ ४ = ३६३८४ = २३ × ४ × २५३) । इसी विधिसे पक्षोपपत्ती धर्मशस्त्रकारोंके अंत
क्यातर्बे मागमात्र वर्गस्थान नीचे आकर वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलसे अगभेणीके माजित
करने पर अगभेणीके असक्यात प्रथम वर्गमूल अथ अथे है, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ।
इसप्रकार अरजका वर्गन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूल २, ३५५३३ + २ = ३५७३८ अथ

अथ निश्चितका कथन करते हैं— वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलसे अगभेणीके प्रथम
वर्गमूलके माजित करने पर वहां जितना प्रमाण अथ अथे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य
वारक सिध्दाष्टि अथारकाक्रममें होते हैं ।

उदाहरण—२५३ + २ = २५८ (उतने प्रथम वर्गमूल अथारकाक्रममें होते हैं) ।

अथवा उसी वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलका मागहारसे अगभेणीके द्वितीय वर्गमूलके
माजित करने पर वहां जो प्रमाण अथ अथे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने
पर वहां जो प्रमाण अथ अथे उतने अगभेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अथारकाक्रममें
अथ अथे है ।

उदाहरण—२३ + २ = ८, २३ × ८ = १८८

अथवा उसी वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलका मागहारसे अगभेणीके तृतीय वर्गमूलके
माजित करने पर वहां जितना प्रमाण अथ अथे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

अगसेदीए जगपदरे मागे हिंदे एगसेदी आगच्छति । अगसेदीहुमागेण अमपदरे मागे हिंदे दोम्पि सेदीओ आगच्छति । जगसेदितिमागेण जगपदरे मागे हिंदे तिम्पि सेदीओ आगच्छति । एबमेगादि-एगुचरकमेण सेदीए भागहारो बहुलयेयव्वो जाव वेरइयमिस्सं मसूचिमेच पत्तो चि । पुणो ताए विस्संमसूचीए सेदिमोवइयि स्सेव जगपदरे मागे हिंदे विस्संमसूचीमेचसेदीओ आगच्छति । एवमण्णरय वि विस्संमसूरुइो अवहारकसो साधेयव्वो । एदेण मागहारेण सेदीए उपरि खंडिदादिवियप्पा वचव्वा । तत्थ ताव वग्गहाव पमाण-कारण-विस्सि विवप्पेहि अवहारकाल वचइस्सामो । तत्थ पमाण केचिय ? सेदीए अत्तसेव्वदिमागो अत्तसेव्वजाणि सेदिपटमवग्गमूलानि । पमाण गर्ह । केव कारमेण ? सेदिपटमवग्गमूलेण सेदिमिह मागे हिंदे सेदिपटमवग्गमूलो आम

अमभेजीले जगप्पटरके भाजित करने पर एक अमभेजीका प्रमाण जाता है (४२९४९७३२९ - १ १३९ = ११५३९) । अमभेजीके द्वितीय मागका जगप्पटरमें माग देने पर हा अमभेजियां छम्प जाती हैं (४२९४९७३२९ - ३२७९८ = १३१०७२) । अमभेजीके तृतीय मागसे जगप्पटरके भाजित करने पर तीन अमभेजियां जाती हैं (४२९४९७३२९ - २१८४१ = १९९९८) । इसप्रकार मागहार बढ़ते हुए अन्ततः वह नारक विस्संमसूचीके प्रमाणसे प्राप्त होते तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये । अन्ततः उस विस्संमसूचीसे अमभेजीको अपपत्तित करके जो छम्प व्यये उससे जगप्पटरके भाजित करने पर त्रितना विस्संमसूचीका प्रमाण है उतनी अमभेजियां छम्प जाती हैं । इसीप्रकार अन्त्य भी विस्संमसूचीसे अपहारकका साप लेना चाहिये ।

उदाहरण—जगभेजी ११५३९, जगप्पटर ४२९४९७३२९, १५३९ - २ = ३१७९८
 $४२९४९७३२९ + ३१७९८ = १३१०७२$, नारक मिप्पाएदि जीवराशि

अब इस मागहारका व्यवय करके जगभेजीके ऊपर कल्पित यदि विस्संमसूची कल्प करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण वारव, निरुत्ति और विस्संमके हाव अपहारकका प्रमाण बतकाते हैं—

धृष्ट—सामान्य नारक मिप्पाएदि जीवराशिके छानेके छिये जो मागहार क्या है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—एक मागहारका प्रमाण जगभेजीके अत्तकपालमें माग है जो जगभेजीके अत्तकपाल प्रथम वर्गस्थानमें है । इसप्रकार प्रमाणवा पर्यन्त समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अपहारक ३२७९८, जगभेजीका प्रथम वर्गमूल २५९, ३२७९८ + २५९ = ३३८ (यहां ३३८ को अत्तकपाल मान कर बतनेवार प्रथम वर्गमूल २५९ का जोड़ ३२७९८ होता है)

धृष्ट—जगभेजीके अत्तकपाल प्रथम वर्गमूलप्रमाण अपहारकका किस प्रकारसे है ?

समाधान—क्योंकि, जगभेजीके प्रथम वर्गमूलसे जगभेजीके भाजित करने पर

पद्मपुष्पमादा । अहवा अवहारकालागमणाभिमिषभागहारेण गिरुद्रामीदो हेहा न वा तं
 वा वगमूलमोवद्विष गिरुद्रामिस्स हेह्विमवगमूलाणि एकवारं गुणिदे जत्य इच्छिरासी
 उपज्जदि तत्य वि हेह्विमवियण्णो अत्यि चि मणैताणमभिप्पाण अट्टुत्वे हेह्विमविपण
 वचइस्सामो । पर्णगुलविदियवगमूलेण सट्टिपडमवगमूले माग हिदे तत्प्यागइलदेण
 सट्टिपडमवगमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणैव भागहारेण सेट्टिपिदियवग
 मूलमवहारिय तत्प्यागदेण उदेण तं चैव विदियवगमूल गुणेऊण सण पडमवगमूल
 गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा पर्णगुलविदियवगमूलेण सेट्टिपिदियवगमूलमवहारिय
 तत्प सट्टम तं चैव तदियवगमूल गुणेऊण तेण विदियवगमूल गुणिय तेण सेट्टिपडम
 वगमूलं गुणिदे अवहारकालो हादि । अणेण विहाणेण पलिदावमवगमसठागाणमसरेज्जदि
 भागमववगमहाणाण पुच गिरुमण करिय अवहारगुणणकिरियं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विम-यमाण राशि जगभेरीके प्रथम वगमूलस अघहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया
 जाता है । अथवा अवहारकालके सानेके छिपे निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगभेरीसे
 नीचे किसी भी वगमूलको अपवर्जित करके जो सध्य आये उसमे निरुद्धराशिसे अघलन
 वगमूलोंके एकवार गुणित करने पर वहां पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहां पर भी
 अघलन विकस्य पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके धर्मिमायसे
 अद्वयमे अघलन विकस्यको बतहाते हैं—

घर्तागुमके द्वितीय वगमूलसे जगभेरीके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर वहां
 जो प्रमाण सध्य आये उसमे जगभेरीके प्रथम वगमूलके गुणित कर देने पर अवहारकालका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१ - २ = १२८, २१९ × १०८ = ३२३९८ अथ

अथवा उर्मी भागहारमे अथवा घर्तागुमके द्वितीय वगमूलमे जगभेरीके द्वितीय
 वगमूलको भाजित करके वहां जो सध्य आये उसमे उर्मी जगभेरीके द्वितीय वगमूलको गुणित
 करके पुनः उस गुणित राशिमे जगभेरीके प्रथम वगमूलके गुणित करने पर अवहारकालका
 प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—१९ - २ = ८, १९ × ८ = १०८, ८ × १०८ = ३ ३९८ अथ

अथवा घर्तागुमके द्वितीय वगमूलमे जगभेरीके तृतीय वगमूलको भाजित करके वहां
 जो सध्य आये उसमे उर्मी तृतीय वगमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे
 जगभेरीके द्वितीय वगमूलको गुणित करके जो सध्य आये उसमे जगभेरीके प्रथम वगमूलके
 गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—४ - २ = २, ४ × २ = ८, १९ × ८ = १०८, ८ × १०८ = ३२३९८ अथ

इसी विधिमे पञ्चापसक्य घर्तागुमकाभीक अगत्यागसे भागमात्र वगमूलोंको गुणक
 करने वाचकर भी घर्तागुमके द्वितीय वगमूलप्रमाण भागहारमे अन्तिम आदि ज्ञानोंको

रूपाणि तत्पियाणि सेटिपदमवगममूलाणि । अपेक्ष विहायेष्व असंख्येज्जाणि वगगद्गानाणि
हेहा ओसरिउय्य पञ्चगुलविदियवगममूलेण तस्सुपरिमवगममवहारिय सुदूषण पञ्चगुलपदम
वगममूलं गुणिय तेण च गुणिपराशिणा घञगुला गुणयेय्यो । एवेण कमय उवरि उवरि
अवट्टिदवगगद्गानाणि सदिभिदियवगममूलानि सञ्जाणि गुणयेय्यानि । तस्य वचित्याणि
रूपाणि तत्पियाणि पदमवगममूलाणि हवन्ति । एव विरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो, इट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्टिमवियप्पो
पत्ति, जगसेदिसमाणवेरूववगमसस पदमवगममूल केव वि मागहारेण अवहारिअवि
अवहारकाळस्स अपुप्पचीहो । य च जगसेदिसमाणवेरूववगम अस्सिउय्य अवहार
कात्तुप्पची बोप्पु सक्किअदे, हेट्टिम-उवरिमवियप्पेसु विरुहेसु मज्झिमवियप्पसस अत्तं
वाहो । अट्टुवे हेट्टिमवियप्पो वत्ति, विहज्जमाणसेटिपदमवगममूलादो अवहारकाळस्स

उदाहरणम्—उत्तमस्य द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर वहाँ जितना प्रमाण आये वतने
जगमेजीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकाळमें लब्ध होते हैं ।

उदाहरण— $४ \times २ = ८$, $४ \times २ = ८$, $१६ \times ८ = १२८$

इसी विधिसे अष्टमपाठ वचस्यान नीचे आकर अर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे उत्तमे
उपरिम वर्गको माजित करके जो लब्ध आये वससे अर्णागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने
जो गुणित पाधि लब्ध आये वससे अर्णागुलको गुणित करना चाहिये । इसी क्रमसे अष्टमपाठके
द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये ।
इसप्रकार गुणा करनेसे वहाँ जितना प्रमाण लब्ध आये वतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्या
वदि नारक अवहारकाळमें होते हैं । इसप्रकार निरक्षिप्य वर्गस्य समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४ \times २ = ८$, $४ \times २ = ८$, $१६ \times ८ = १२८$

विशेषार्थ—यहाँ इष्टतके स्पष्ट करनेके लिये जो अक्षरसंरूपि की है वसमें जगमेजीका
द्वितीय वर्गमूल और अर्णागुलका प्रमाण एक पङ्क जाता है जो १६ है । अतः निरक्षिप्य कथन
करते हुए जगमेजीके द्वितीय वर्गमूलका ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते
जाना चाहिये । इस कथनके अनुसार अक्षरसंरूपिमें वहाँ तक (१६ तक) गुणा बढ़ानेसे वह
संख्या लब्ध आ जाती है जितने जगमेजीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यावदि नारक अवहार
काळमें पाये जाते हैं ।

विशेष्य दो प्रकारका है, अवस्तन विश्वस्य और उपरिम विश्वस्य । उनमेंसे वहाँ
प्रकृतमें द्विरूपधारामें अवस्तन विश्वस्य संभव नहीं है क्योंकि, जगमेजीके समान द्विरूप वरुके
प्रथम वर्गमूलको किसी भी मागहारसे अपहृत करने पर अवहारकाळ नहीं उत्पन्न हो सकता
है । यदि जगमेजीके समान द्विरूपवर्गका आशय करके अवहारकाळमें उत्पत्ति कही जावे तो भी
बढ़ना सीक वहाँ है क्योंकि विश्वस्यके अवस्तन और उपरिम विश्वस्यसे विश्व्य हो जाने पर
मध्यम विश्वस्य नहीं बन सकता है । वहाँ अवस्थाओं में भी अवस्तन विश्वस्य नहीं पाया जाता है ।

बहुशुचलमादा । अहवा अवहारकालागमणमिचभागहारेण गिरुदरासीदो हेहा न मा त
 वा वगमूलमोषद्विप गिरुदरासिस्त हेह्मिवगममूलानि एकवारं गुणिदे अथ इच्छिदरासी
 उत्पज्जद्वि सरथ वि हेह्मिवियप्यो अतिय पि भर्णतापमभिप्पाएण अदुरूवे हेह्मिवियप्य
 वत्तइस्सामो । घर्णगुलविदियवगममूलेण सत्तिपडमवगममूले मागे हिदे तत्त्यागदलद्वेण
 सत्तिपडमवगममूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सेद्विपिदियवग
 मूलमवहारिय तत्त्यागदेष सत्वेण स चेव विदियवगममूल गुणेऊण तेण पडमवगममूलं
 गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घर्णगुलविदियवगममूलेण सेद्वितदियवगममूलमवहारिय
 तत्त सत्वेण त चेव विदियवगममूल गुणेऊण तेण विदियवगममूलं गुणिय तेण सेद्विपडम
 वगममूल गुणिदे अवहारकालो होदि । अणण विहाणेण पत्तिदोवमवगमसत्तागाममसत्तेजदि
 मागमववगमहाणाण पुष गिरुमण करिय अवहारगुणणकिरिय काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विमज्जमान राशि जगधेणीके प्रथम वगमूलसे अवहारकाष्ठका प्रमाण बहुत अधिक पाया
 जाता है । अथवा अवहारकालके आनेके लिये निमित्तभूत भागहारसे गिरुदराशि जगधेणीसे
 नीचे किसी भी वगमूलको अपवर्जित करके जो सध्य भाग्य उससे गिरुदराशिके अधस्तन
 वगमूलोंको एकवार गुणित करने पर जहाँ पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहाँ पर भी
 अधस्तन विकल्प पाया जाता है इसप्रकार मतेपार्जन करनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे
 अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाने हैं—

घर्णागुलके द्वितीय वगमूलसे जगधेणीके प्रथम वगमूलके माजित करने पर वहाँ
 जो प्रमाण सध्य भाग्य उससे जगधेणीके प्रथम वगमूलके गुणित कर देने पर अवहारकाष्ठका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण—६ ३ - २ = १२८। २ ६ × १२८ = ३२७९८ अथ

अथवा उसी भागहारसे अथवा घर्णागुलके द्वितीय वगमूलसे जगधेणीके द्वितीय
 वगमूलको माजित करके वहाँ जो सध्य भाग्य उससे उसी जगधेणीके द्वितीय वगमूलको गुणित
 करके पुनः उस गुणित राशिसे जगधेणीके प्रथम वगमूलके गुणित करने पर अवहारकाष्ठका
 प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१६ + २ = ८। १६ × ८ = १२८ २ ६ × १२८ = ३२७९८ अथ

अथवा, घर्णागुलके द्वितीय वगमूलसे जगधेणीके तृतीय वगमूलसे माजित करके वहाँ
 जो सध्य भाग्य उससे उसी तृतीय वगमूलको गुणित करके पुनः उक्त गुणित राशिसे
 जगधेणीके द्वितीय वगमूलको गुणित करके जो सध्य भाग्य उससे जगधेणीके प्रथम वगमूलके
 गुणित करने पर अवहारकाष्ठका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४ + २ = २। ४ × २ = ८। १६ × ८ = १२८ २ ६ × १२८ = ३२७९८ अथ

इसी विधिसे यस्यापमर्षी यगन्तवासीके जगन्त्यागसे भागमात्र वगमूलोंको गुणित
 करके और घर्णागुलके द्वितीय वगमूलसे भागहारसे अंतिम भाग्य व्याप्तोंको

साधेयम् । तस्य अन्तिमवियर्णं वचइस्सामा । धर्मगुलविदियवग्गमूलं धर्मगुल-
पदमवग्गमूले मागे हिदे सत्थागदेण त चेव धर्मगुलपदमवग्गमूलं गुणेऊय तेष
गुमिदरासिणा धर्मगुलं गुणेऊय एवमुपरि उवरि अबहिदाणि वग्गइवाप्ति
सेट्ठिपदमवग्गमूलपच्छिमाणि भिरंतंरं गुणेयव्याप्ति । एवं गुमिदे वेरयपमिच्छादि
अवहारकामो होदि । एय अन्थो जदि वि पुम्भं पक्खिदो सा वि हेट्ठिमविमप्पतंरंवेव
मदभुद्धिसिस्सापुग्गयइहं पुप्परवि पक्खिदो ।

पञ्चापगे वचइस्सामो । धर्मगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपदमवग्गमूलं गुणेऊय
वचत्तोपदमवग्गमूले मागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कच ? सेट्ठिपदमवग्ग-
मूलेण वचत्तोपदमवग्गमूलं मागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुनो धर्मगुलविदियवग्गमूलं
सेट्ठि मागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि चि क्खु गुणेऊय मागग्गमहं कदं ।
अइवा एरव इगुणादिकमेण अवहारकालो साधेयम् । अइवा धर्मगुलविदियवग्गमूलेव
सेट्ठिपदमवग्गमूलं गुणेऊय तेष पणत्तोपविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुमिदे अवहार

भाजित करके जो छम्भ आये उससे अग्रेभीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करते
अवहारकाय छाप बना चाहिये । जन्मसे अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं—

धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलके धर्मागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर बां-
किये हुए छम्भसे वही धर्मागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आये उससे
धर्मागुलको गुणित करके पुनः अग्रेभीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर उपर स्थित वर्गस्थानोंको
विरुद्ध गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे वृत्तरोद्धर वर्गस्थानके गुणित
करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसंशङ्गी अवहारकायका प्रमाण जाता है । इस वर्गका
प्रकरण यद्यपि पहले कर आये हैं तो भी मन्त्रबुद्धि शिष्योंके अनुमहोदये लिये अवस्तम विकल्पके
संशङ्कसे इसका विरोध प्रकटय किया है ।

जब जन्मजन्मसे अवस्तम विकल्प बतलाते हैं— धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग-
रेभीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्भ आये उससे धनकोके प्रथम वर्गमूलके
भाजित करने पर अवहारकायका प्रमाण जाता है, क्योंकि, अग्रेभीके प्रथम वर्गमूलसे धन-
कोके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर अग्रेभीका प्रमाण आता है पुनः धर्मागुलके द्वितीय
वर्गमूलसे अग्रेभीके भाजित करने पर अवहारकायका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार
कायका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके जन्मतर मागत्र ब्रह्म किया ।

उदाहरण—धनकोके प्रथम वर्गमूल ५५६ । $२ \ ६ \times २ = ५१२$ $\frac{५५६}{५१२} = १२७१८$ अब

अथवा, यहाँ पर द्विगुणादि छम्भसे अवहारकाय छाप बना चाहिये । अथवा
धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रेभीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्भ आये उससे
धनकोके द्वितीय वर्गमूलसे अवहार करके जो छम्भ आये उससे उसी धनकोके द्वितीय

काळा होदि । एव हेद्दा वि आणिल्लण पचच्यं । इद्धिमवियप्पा गदा ।

उपरिमवियप्पो विमिहे, गहिदो गहिग्गहिदो गहिदुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं पचइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूल्लेण सेत्थिमाणवेरुवग्गं गुणेत्थेण तेण तम्बग्गवग्गो माग हिदे अवहारकाळा आगच्छदि । स कच ? सेत्थिमाणवेरुवग्गं तम्बग्गवग्गो मागे हिदे सती आगच्छदि । पुणो वि पणंगुलविदियवग्गमूल्लेण सेत्थिदि मागे हिदे अवहारकाळो होदि । एवमागच्छदि चि फट्ठु गुणेत्थेण मागग्गहण कद । महत्ता अवहार काळा विगुणादिक्कमण चणुवेय्यो । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छदमप कदे अवहारकाळा आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केचिया ? पण गुणविदियवग्गमूल्लस्स अद्वच्छेदणयसदियमेत्थिमाणवेरुवग्गस्स अद्वच्छदमयमेचा ।

पगमूल्लो गुणित करेने पर अवहारकाळका प्रमाण जाता है । इतीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अचत्तन विहर समान्त दृश्य ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय पगमूल १९, २१ × २ = १२, १९ + ५१२ = ८।
१९ × ८ = ३२७६८ अथ

उपरिम विहर तीन प्रकारका है पुरीन, पुरीनपरीत और पुरीतगुणकार । उनमेंसे पहले पुरीत उपरिम विहरका बतसते है—घनांगुलके द्वितीय पगमूलसे अगधेर्वाके समान छिकपवगके गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी अगधेर्वाके समान छिकपवगके घमें माग देने पर अवहारकाळका प्रमाण जाता है क्योंकि अगधेर्वाके समान छिकपवगका उसीके उपरिम घमें माग देने पर अगधेर्वाका प्रमाण आता है पुनः घनांगुलके द्वितीय पगमूलका अगधेर्वामें माग देने पर अवहारकाळका प्रमाण जाता है । अवहारकाळका प्रमाण इसप्रकार आता है एसा समप्रकार पहले गुणा करके अगगत मागका ग्रहण किया । अथवा विगुणादि करण विधिसे अवहारकाळ का लेना चाहिये ।

उदाहरण—१ ३९ × २ = १३१०३२, १९ ३९ - १३१०३२ = ३२३६८ अथ

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद् हों उसीप्रकार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद् करने पर भी अवहारकाळका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारकी १९ + १ = १७ अर्धच्छेद् होने है कदा इतीप्रकार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद् करने पर भी अवहारकाळका प्रमाण जाता है ।

मुक्ता—उक्त मागहारकी अर्धच्छेद् शालाकार्य जितनी होनी है ?

समाधान—अगधेर्वाके समान छिकपवगकी अर्धच्छेद् शालाकार्यमें घनांगुलके द्वितीय पगमूलकी अर्धच्छेद् शालाकार्य मिला देने पर उक्त मागहारकी अर्धच्छेद् शालाकार्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—अगधेर्वा समान छिकपवग १९ ३९ के अर्धच्छेद् १९, घनांगुलके द्वितीय पगमूल २ के अर्धच्छेद् १, १९ + १ = १७ अ ।

साधेयम्भो । तस्य अंतिमविषयं वचनस्मात् । यद्यगुलविदियवगामूलेम पयगुन-
पदमवगमले भागे हिदे तत्सागदेण त वेम वगगुलपदमवगमूल गुणेऊण तेव
गुणिदरासिप्या पणगुले गुणेऊण एवमुपरि उपरि अवदिदामि पणगुलवदि
सेत्तिपदमवगमूलपच्छिमाणि थिरत्तर गुणेयम्भाणि । एवं गुणिदे जेत्तयमिच्छपुटि
अवहारकासो होदि । एस अत्थो अदि वि पुम्बं परुविदो ता वि हेत्तिमविषयसंवेपेव
मंदबुद्धिसिस्सापुग्गहं पुगारवि परुविदो ।

पणावये वचनस्मात् । पणगुलविदियवगामूलेण सेत्तिपदमवगमूल गुणेऊण
वचनोपपदमवगमूले भागे हिदे अवहारकासां भाग्यच्छदि । तं क्व ? सेत्तिपदमवग-
मूलेण पणगुलपदमवगमूले भागे हिदे सेत्ती भाग्यच्छदि । पुणो पणगुलविदियवगमूलम
सेत्ति भागे हिदे अवहारकासो होदि । एवमागच्छदि चि क्कु गुणेऊण मागगाहयं कर ।
अहवा एव इगुलादिकमेव अवहारकासो साहेयम्भो । अहवा पणगुलविदियवगमूलमेव
सेत्तिपदमवगमूल गुणेऊण तेम पणगुलविदियवगमूलमवहारिय सं वेम गुणिदे अवहार

मात्रित करके जो लघ्व भागे उल्लेख अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके
अवहारकास प्राप्त किया जाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

पणगुलके द्वितीय वर्गमूलसे पणगुलके प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर वहां
आये हुए लघ्वसे उल्लेख पणगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे
पणगुलके गुणित करके पुनः अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर वपर स्थित वर्गमूलोंको
विशेषर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उल्लेखोपर वर्गमूलके गुणित
करके जाने पर आकर मिथ्यापक्षितवन्धी अवहारकासका प्रमाण आता है । इस अर्थका
प्रकल्प पद्य पद्य कहते हैं तो श्री मन्त्रमुनि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अथस्तन विकल्पके
संबन्धसे इसका किरसे प्रकल्प किया है ।

अब वनामनमें अथस्तन विकल्प बतलाते हैं— पणगुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग-
्रेषीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करके जो लघ्व भागे उल्लेख वनकोके प्रथम वर्गमूलके
मात्रित करने पर अवहारकासका प्रमाण आता है, क्योंकि, अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलसे वन-
कोके प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर अग्रेषीका प्रमाण आता है पुनः पणगुलके द्वितीय
वर्गमूलसे अग्रेषीके मात्रित करने पर अवहारकासका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार-
कासका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुना करके अनन्तर मागका प्रकल्प किया ।

उदाहरण—वनकोका प्रथम वर्गमूल २५१ । $२५१ \times १ = २५१$ $\frac{२५१}{२२} = ११३९८$ अथ

अथवा, वहां पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकास प्राप्त होता जाहिये । अथवा
पणगुलके द्वितीय वर्गमूल अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लघ्व भागे उल्लेख
वनकोके द्वितीय वर्गमूलको अपहरण करके जो लघ्व भाग उल्लेख उल्लेख वनकोके द्वितीय

अदृच्छेदणं फदे वि अवहारकालो आगच्छति । एतच्च विद्वद्भाषणसलागामो विरलिय
 विग करिय अण्णाण्णमत्तरासिना रूग्णेण अगसेदिअदृच्छेदणं गुणिय धर्मगुल
 विदियवगगमूलस्स अदृच्छेदणं पक्खिस्स मागहारस्स अदृच्छेदणया हवति । एवं
 संसेचनसंसेचनार्णत्तेसु वगगमूलेषु भेषध्व । अहुरूपपरुषणा गदा । धमाधने वत्तस्सामो ।
 पणगुलविदियवगगमूलेण अगपदरं गुणेऊण वणलोगे मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति ।
 केय कारणेण ? अगपदरेण वणलोग मागे हिदे सेढी आगच्छति । पुनो धर्मगुलविदिय
 वगगमूलेण सेदिमि मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति । एवमागच्छति ति कहु
 गुणेऊण मागगगहण कट । अहवा धर्मगुलविदियवगगमूलेण अगपदरं गुणऊण वेण
 पणलोग गुणेऊण वणलोगउपरिवगगे मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति । केय
 कारणेण ? वणलोगेण तस्सुवरिवगगे मागे हिदे वणलोगो आगच्छति । पुनो वि
 वगपदरेण वणलोग मागे हिदे सेढी आगच्छति । पुनो वणगुलविदियवगगमूलेण सेदिमि

उदाहरण—उक्त मागहारके $१६ + १ = १७$ अर्थच्छेद होते हैं अतः इतनीबार उक्त
 मन्त्रमात्र राशिसे अर्थच्छेद करने पर ३२७३८ प्रमाण अवहारकाष्ठराशि आती है ।

यहाँ पर जितने स्थान ऊपर गये हैं उतनी श्रद्धापूर्वक विरलन करके नीर उध
 राशिसे प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक
 कम करके शेष राशिसे अगमोणीके अर्थच्छेदोंको गुणित करके जो छद्म भावे उसमें धर्मागुलके
 द्वितीय धर्मगुलके अर्थच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित मागहारके अर्थच्छेदोंका प्रमाण होता
 है । इसप्रकार संरपात असंख्यात भीर अनन्त धर्मस्थानोंमें से जाना चाहिये । इसप्रकार
 मद्रूप प्ररूपका समाप्त हुई ।

अब धमाधनमें पृथीत उपरिम विवक्ष्यको बतलाते हैं—धर्मागुलके द्वितीय धर्मगुलसे
 अगमोणीको गुणित करके जो छद्म भावे उससे धनकोकके माजित करने पर अवहारकाष्ठका
 प्रमाण आता है क्योंकि, अगमोणीसे धनकोकके माजित करने पर अगमोणीका प्रमाण आता
 है पुनः धर्मागुलके द्वितीय धर्मगुलसे अगमोणीके माजित करने पर अवहारकाष्ठका प्रमाण
 आता है । इसप्रकार अवहारकाष्ठ आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागच्छ
 मद्रूप किया ।

उदाहरण— $१ \times १३९ \times २ = ८ \times १९३४१९२$ $६१५३९ \div ८१८९९३४१९२ =$
 ३२७३८ अर्थ

अथवा धर्मागुलके द्वितीय धर्मगुलसे अगमोणीको गुणित करके जो छद्म भावे उससे
 धनकोकको गुणित करके जो छद्म भावे उसका धनकोकके उपरिम धर्ममें भाग देने पर अव
 हारकाष्ठका प्रमाण आता है क्योंकि, धनकोकका उसके उपरिम धर्ममें भाग देने पर धनकोक
 आता है पुनः अगमोणीका धनकोकमें भाग देने पर अगमोणी आती है पुनः धर्मागुलके
 द्वितीय धर्मगुलका अगमोणीमें भाग देने पर अवहारकाष्ठका प्रमाण आता है । इसप्रकार

उपरि सम्प्रत्य ऋद्धिद्वयाणवगगसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्पररासिवा
तिरुवूगेम सन्निममाणवेरुववगगसस अद्वन्द्वेदण्ण गुणिय घर्णगुलविदियवगममूलस
अद्वन्द्वेदणयपक्किउचमत्ता मवति । एव संखेन्मासखेन्माणतेसु वगगद्वायेसु मेयम् ।
वेरुमपरुवणा गदा । अद्वन्द्वे वचइस्सामा । घर्णगुलविदियवगममूलेण सेडिम्हि मागे
हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेवे रासिस्स अद्वन्द्वे
दणय क्खे वि अवहारकालो आगच्छदि । अहवा घर्णगुलविदियवगममूलेण सेडि गुणेऊव
जगपदे मागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेडीए जगपदे
मागे हिदे सेडी आगच्छदि । पुनो वि घर्णगुलविदियवगममूलेण सेडिम्हि मागे हिदे
अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि चि क्कु गुणेऊव मागगहर्ण क्क । अहवा
अवहारकाला विठ्ठादिकरणेण वहुवेयन्तो । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेवे रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जायें उनकी घर्णगुलविदियवगममूलस विरलिय करके और
वस विरलिय रासिसे मलेक एकको बोकप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उसमेंसे तीन कम करके दोप रही हुई राशिसे जगसेडीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद
घाताकार्योंके गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें घर्णगुलके द्वितीय घगमूलके अर्धच्छेद मिला
देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित मागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार सम्प्रत्य । अस्त-
व्याप्त और अन्तर्गत वर्गस्थानोंमें से जाया चाहिये । इसप्रकार द्विरूप प्रकृपया समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं—घर्णगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगसेडीके माजित करने
पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१ १३१ - २ = ३२७३८ अथ

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त मन्वमान राशिसे अर्धच्छेद
करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारका १ अर्धच्छेद है अतः उतनीवार उक्त मन्वमान राशिसे
अर्धच्छेद करने पर भी ३२७३८ प्रमाण अवहारकाल आता है ।

अथवा, घर्णगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगसेडीके गुणित करके जो लब्ध भावे उत्पन्न
जगपतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है क्योंकि जगसेडीसे जगपतरके
माजित करन पर जगसेडीका प्रमाण आता है पुनः घर्णगुलके द्वितीय घगमूलसे जगसेडीके
माजित करन पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है,
देखा समझकर पढ़ने गुणा करके अन्तर्गत भागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे
अवहारकाल बड़ा लगा चाहिये ।

उदाहरण—१५३१ × २ = ३३१०७२, ४२९४ × २ = ८५८८, १३१०७२ = ३२७३८ अथ

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त मन्वमान राशिसे अर्धच्छेद
करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अदृच्छेदमए कदे वि अवहारफालो आगच्छदि । एत्थ चडिद्वाणसलामाप्रो विरलिय
 विग करिय अण्णोणम्मत्तरासिणा रूपेण जगसेदिअदृच्छेदमए गुणिय घर्णगुल
 विदियवग्गमूलस्स अदृच्छेदमए पक्खित्ते मागहारस्स अदृच्छेदमया इवन्ति । एवं
 संखेच्चसंखेच्चान्तेसु वग्गहाभेसु ज्ञेयम् । अहुरूपरूपणा गहा । धमाघणे वचस्सामो ।
 धमगुलविदियवग्गमूलेष जगपदरं गुणेऊण घणलोगे मागे हिंदे अवहारफालो आगच्छदि ।
 कंण कारणे ? जगपदरेण घणलोगे मागे हिंदे सेढी आगच्छदि । पुणो घर्णगुलविदिय
 वग्गमूलेष सेढिम्हि मागे हिंदे अवहारफालो आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु
 गुणेऊण मागग्गह्व कं । अहवा घर्णगुलविदियवग्गमूलेष जगपदरं गुणेऊण तेष
 घणलोग गुणेऊण घणलोगउपरिमवग्गे मागे हिंदे अवहारफालो आगच्छदि । कंण
 कारणे ? घणलोगेण तत्सुवरिमवग्गे मागे हिंदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि
 जगपदरेण घणलोगे मागे हिंदे सेढी आगच्छदि । पुणो घमगुलविदियवग्गमूलेष सेढिम्हि

उदाहरण—उक्त मागहारके $१६ + १ = १७$ अर्थच्छब्द होते हैं अतः इतनीवार उक्त
 मध्यमाय राशिसे अर्धच्छेद करने पर ३९७६८ प्रमाण अवहारफालराशि आती है ।

यहाँ पर जितने स्थान ऊपर गये हैं उतनी छछाच्छब्दोंका विच्छेद करके और उक्त
 राशिसे प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक
 कम करके शेष राशिसे अग्रश्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो सध्य भाव उसमें घनांशुलके
 द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित मागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता
 है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें से जाना चाहिये । इसप्रकार
 अरूप प्रकृति समान्य हुई ।

अब प्रमाणमें सूचित उपरि विवक्ष्यको बतलाते हैं— घनांशुलके द्वितीय वर्गमूलसे
 अग्रतरको गुणित करके जो सध्य भाव उससे घनछोकेका भाजित करने पर अवहारफालका
 प्रमाण आता है क्योंकि अग्रतरसे घनछोकेका भाजित करने पर अग्रश्रेणीका प्रमाण आता
 है पुनः घनांशुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रश्रेणीके भाजित करने पर अवहारफालका प्रमाण
 आता है । इसप्रकार अवहारफाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका
 प्रहण किया ।

उदाहरण— $३११३ \times २ = ८१८९३४१२$ $३११३ \div ८१८९३४१२ =$
 $३२७३/$ अब

अथवा घनांशुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रतरको गुणित करके जो सध्य भाव उससे
 घनछोकेको गुणित करके जो सध्य भाव उसका घनछोकेके उपरि वर्गमें भाग देने पर अथ
 दागबसका प्रमाण आता है, क्योंकि घनछोकेका उसके उपरि वर्गमें भाग देने पर घनछोके
 आता है, पुनः अग्रतरका घनछोकेमें भाग देने पर अग्रश्रेणी आती है पुनः घनांशुलके
 द्वितीय वर्गमूलका अग्रश्रेणीमें भाग देने पर अवहारफालका प्रमाण आता है । इसप्रकार

उपरि सम्बन्धय चिह्नितान्तरागसलागागो विरलिय विग करिय अण्जोन्मन्त्ररासिवा
 तिरुवृणेष सेदिसमापनेरुवन्मन्त्रस्त अद्वन्द्वेदणय गुणिय पन्नगुलविदियवगमूळस
 अद्वन्द्वेदणयपकिट्टमेचा भवति । एव संखेन्नासखेन्मागतसु वगगुणेषु जेयम् ।
 पेन्मपकृष्णा गदा । अद्वन्द्वे वन्मन्त्रागो । पन्नगुलविदियवगमूलेण सेदिमि मागे
 हिदे अबहारकालो आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेते रासिस्स अद्वन्द्वे
 दणय करे वि अबहारकालो आगच्छदि । अहना पन्नगुलविदियवगमूलेण सेदि गुणेन्म
 जगप्परे मागे हिदे अबहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेदीय जमपरे
 मागे हिदे सेदी आगच्छदि । पुणो वि पन्नगुलविदियवगमूलेण सेदिमि मागे हिदे
 अबहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कुरु गुणेन्म मागगहयं कर्द । अहना
 अबहारकाला विटमादिकरणेण वहुवेयणो । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वगस्यव ऊपर आये अबधी वर्गहारकरभोंका विरलन करके और
 इस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके शेष करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगमेणीके समाप्त हिरण्य वर्गकी अर्धच्छेद
 शक्यतामेंसे गुणित करके जो शेष भाग उत्तम धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद
 देने पर जो शेष हो वतने विवक्षित मागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात अन्त
 रगत और अनन्त वर्गस्यार्थोंमें से जाना चाहिये । इसप्रकार हिरण्य प्रकृषणा समाप्त हुई ।

अब अष्टकमें बतलाते हैं—धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगमेणीके माजित करने
 पर अबहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३५३९ - २ = ३२७९८ अब

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त मन्त्रमान राशिसे अर्धच्छेद
 करने पर भी अबहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारका १ अर्धच्छेद है अर्थात् उतनीवार उक्त मन्त्रमान राशिसे
 अर्धच्छेद करने पर भी ३२७९८ प्रमाण अबहारकाल आता है ।

अथवा, धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगमेणीको गुणित करके जो शेष भाग उत्तम
 जगप्परेमाग देने पर अबहारकालका प्रमाण आता है क्योंकि जगमेणीसे जगप्परेके
 माजित करने पर जगमेणीका प्रमाण आता है, पुनः धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगमेणीके
 माजित करने पर अबहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अबहारकालका प्रमाण आता है,
 देखा समझकर पहले गुणन करके अनन्तर मागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरन विधिते
 अबहारकाल बड़ा बना चाहिये ।

उदाहरण—१ ५३९ × २ = १३१ ७२, ४५९७९७७७७७७ + १३१ ७२ = ३२७९८ अब

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त मन्त्रमान राशिसे अर्धच्छेद
 करने पर भी अबहारकालका प्रमाण आता है ।

एतय खेडिद माजिद-विरातिद अजिदपरूपणाओ पुण्य व पम्बेहम्बाओ । तस्य पमाणं वचइस्सामो । तं जघा- अगपदरस्म असंखेज्जदिमागो असंखेज्जआओ सेदीआ । पमाण गद । केण कारणेण ? सेदीए अगपदरे माग हिदे सेदी भागच्छदि । सेदिदुमागण जगपदर मागे हिदे होण्णि सेदीओ आगच्छति । सेदित्तिमागण जगपदरे मागे हिदे तिण्णि सेदीओ आगच्छति । ण्य गत्तुण विपस्समसूचीमजिदसेदीए जगपदरे माग हिदे अस खेज्जआओ सेदीओ आगच्छति चि बुध । करण गद । निरुसि वचइस्सामो । सेदीए असंखेज्जदिमागेण सेदिमिह मागे हिदे तत्पागदाणि जघियाणि रूपानि तघियाओ सेदीआ । अहवा विपस्समसूचीरूपमेवाओ । निरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेडिमवियप्पो उवरिमवियप्पो अदि । तस्य इडिमवियप्प वच इस्सामो । बेरूव हेडिमवियप्पो प्रत्यि । कारण पुण्य व वचम्भ । अहुरूपे हेडिमवियप्प

वित्तित और अयहृतकी प्रकृपणा पहलेके समान करना चाहिये (देखो पृष्ठ ४१, ४२) । अब नारक सिध्दादृष्टि जीवराशिक प्रमाण बतछाते हैं । वह इसप्रकार है—

नारक सिध्दादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातयें भाग हैं जो असंख्यात जगभेणीप्रमाण हैं । इसप्रकार प्रमाणका वर्जन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४२९४९७२९३ + ३२७९८ = १३१०७२ =$ असंख्यातक २ जगभेणियोंके ।

दृष्टा—नारक सिध्दादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असंख्यातयें भाग बहा हैं वह असंख्यात जगभेणीप्रमाण किस कारणसे हैं ।

समाधान—जगभेणीसे जगप्रतरके माजित करने पर जगभेणी जाती है ($४२९४९७२९३ + ३५१३९ = ३५१३९$) जगभेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके माजित करने पर दो जगभेनियां जाती हैं ($४२९४९७२९३ - ३२७९८ = १३१०७२$) । जगभेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके माजित करने पर तीन जगभेनियां जाती हैं ($४२९४९७२९३ - ३ - २१८४५१ = १९६९०८$) । इसप्रकार उत्तरोत्तर आकर विष्कंमसूचीसे माजित जगभेणीका जगप्रतरमें भाग होने पर असंख्यात जगभेनियां बच जाती हैं ऐसा कहा है । इसप्रकार कारणका वर्जन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $३५१३९ - २ = ३२७९८$, $४२९४९७३५१३९ - ३७९८ = १३१०७२$ बचकर असंख्यात जगभेणियोंके ।

अब निदक्षिक कथन करते हैं—जगभेणीके असंख्यातयें भागसे जगभेणीके माजित करने पर वहां जो प्रमाण छन्द जाये उतनी जगभेनियां जगप्रतरके असंख्यातयें भागमें ही हैं । अथवा, विष्कंमसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगभेनियां जगप्रतरके असंख्यातयें भागमें ही हैं । इसप्रकार निदक्षिक कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—जगभेणीका असंख्यातयें भाग ३२७९८ , $३५१३९ - ३२७९८ = २$ जगभेनियां । अथवा विष्कंमसूची २, अथवा विष्कंमसूची २ प्रमाण जगभेणियां ।

विकल्प दो प्रकारका है, अथवा निदक्षिक और उपरिम विदक्षक । उनमेंसे पहल

मागे हिंदे अबहारकासो आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कष्टु शुभेत्थम भागगहणं कदे ।
 तस्स मागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्थे रामिस्स अट्ठच्छेदणए कदे चि अबहारकानो आग-
 च्छदि । एत्थ मागहारस्स अट्ठच्छेदणयसत्तागाणमाणयणविही शुचदे- चडिद्वयवग्ग-
 सत्तागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्तराणिणा सिगुणरूप्णेण सेट्ठिमद्वच्छेदणए
 गुणिय धम्मगुलविदियवग्गमूलस्स अट्ठच्छेदणए पक्खिस्से भागहारस्स अट्ठच्छेदणया
 ह्वंति । एवं संखेज्जासंखेजाणतेण पक्ख । गहिदपरूवणा गदा । सट्ठिसमाजवेत्तवग्गमग्गमस्स
 असंखेज्जदिमागेण सेट्ठीए असंखेज्जदिमागेण पणलोमपद्धमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागेण
 अबहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तवो । एवमनहारकालपरूवणा समत्ता ।

एदेव अबहारकालेण जगपहर माग हिंदे गेरहयमिच्छाप्रद्विरासी आगच्छदि ।

अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मापका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१०५३१}{१५३१ \times १५३१ \times २} = ३२७६८ \text{ अक्ष}$$

इस मापकारके जितने अर्धच्छेद हों वतनीवार इतक मध्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर भी अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ।

उदाहरण—इस मापकारके ८ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त मध्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ।

अब यहाँ मापकारकी अर्धच्छेद राशिकाओंके धारणी विधि कहते हैं— जितने स्तब्ध ऊपर गये हों वतनी वर्गशालाकाओंका विरक्षण करके और इस विरक्षित राशि के प्रत्येक एकछे होकर करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके छम्प राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगमेणीके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो छम्प ज्ञाने उसमें धर्मांशुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विरक्षित अबहारकालके अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार संख्यात अक्षवपात और अनन्त स्थानोंमें जगा देना चाहिये । इसप्रकार पृथीतप्रकरण समाप्त हुई ।

$$\text{उदाहरण—एक क्षान ऊपर गये इसकिये } २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + १$$

$$= ८१ \text{ अर्ध ।}$$

जगमेणीके समान दिक्पर्वका जो वपरिम वर्ग हो उसके अक्षवपातमें मापक पद्धतिमेंसे असंख्यातमें मापक और धर्मलोकके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातमें मापक अबहारकालके द्वारा पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार अबहारकाल प्रकरण समाप्त हुई ।

इस अबहारकालसे जगप्रतरके मापित करने पर बारक मिध्यादि जीवराशि का मापन जाता है (४९९५९६७२९६ + ३२७६८ = १३१०७२) । यहाँ पर विरक्षित मापित,

सङ्गि असंख्येयमागेण अवहारकालेण सेरिं गुणेऊम तेण घणलोगे मागे हिदे मिच्छा
इष्टिरासी आगच्छदि । त क्व ? सेरिणा घणलोगे मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो
वि मागहारण जगपदरे मागे हिदे मिच्छाइष्टिरासी आगच्छदि । अह्ना अवहारकालेण
सङ्गि गुणेऊम घणलोगपदमवगमूलमवहरिय तेण तं खेव गुमिदे मिच्छाइष्टिरासी होदि ।
एवं हेहा आभिसण वचन । हेहिमवियणो गदो ।

उपरिमवियणो विविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो खेदि । तत्थ गहिद
वचइसामो । खेरयमिच्छाइष्टिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरुवगम गुणेऊम तेण
तवगवगगे मागे हिदे मिच्छाइष्टिरासी आगच्छदि । त क्व ? जगपदरसमाणवरु
वगगेण तवगवगगे मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदर

$$२५३ \times \frac{१}{१२८} = २ \quad ३५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अव घनाघनमे अवस्तन विकल्प बतछाते हैं— जगमेणीके अवस्थातमें भागक
अवहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो छप्प भावे उससे घनछोकके माजित करने पर
नारक मिष्पाइष्टि जीबराशि आती है क्योंकि जगमेणीसे घनछोकके माजित करने पर
जगप्रतर आता है । पुनः भागहारसे जगप्रतरके माजित करने पर नारक मिष्पाइष्टि जीब
राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३६}{३५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अथवा अवहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो छप्प भावे उससे घनछोकके
प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो प्रमाण भाव उससे उसी घनछोकके प्रथम वर्गमूलको
गुणित करने पर नारक मिष्पाइष्टि जीबराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानमें जानकर
रूपन करना चाहिये । इसप्रकार अवस्तन विकल्प समाप्त हुय्य ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५३}{३५ \ ३६ \times ३२७६८} = १२८, २५३ \times १२८ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है सूहीत सूहीतसूहीत और सूहीतगुणकार । उनमेंसे
पहले सूहीत उपरिम विकल्पको बतछाते हैं— नारक मिष्पाइष्टि जीबराशिसम्बन्धी अवहार
कालसे जगप्रतरके समान त्रिकूपवर्गको गुणित करके जो छप्प भावे उससे उस त्रिकूपवर्ग
वर्गमें भाव देने पर मिष्पाइष्टि जीबराशि आती है क्योंकि जगप्रतरके समान त्रिकूपवर्ग
उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें
भाग देने पर नारक मिष्पाइष्टि जीबराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९३७२९३}{४२९४९३७२९३ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

वचस्सामो । सेदीय असंखजदिमागमूदभवहारकालेण सेदिमिह मागे हिदे तत्पागेद्व
सेदिमिह गुणिदे मिच्छादिदिरासी होदि । अपवा निवसुवमूषीरूपेहि सेदिमिह गुणिदे
मिच्छादिदिरासी होदि । अहवा अवहारकालेण सेदिविदियवग्गमूठमवहरिय ल्हेण तं
चेव गुणिदे तेण सेदिवदमवग्गमूठं गुणेत्तल्ल तेण सेदिमिह गुणिदे वि मिच्छादिदिरासी
आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण सेदिविदियवग्गमूठमवहरिय ल्हेण तं चेव गुणिदे
तेण सेदिविदियवग्गमूठं गुणिय तेण पदमवग्गमूठं गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेदिमिह
गुणिदे मिच्छादिदिरासी होदि । एवं हेहा वि जावित्तल्ल वचस्सं । घणापणे वचस्सामो ।

अथस्तन विकस्यको वतुकाते हैं— प्रकृतमें शिकपवापमें अथस्तन विकस्य संभव नहीं है ।
यहां अथस्तन कथन पढ़नेके समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ—यदि अथमेजीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका माग दिया जाता है
तो नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं हो सकती है इसलिये यहां शिकपवापमें
अथस्तन विकस्य संभव नहीं है यह कहा ।

अथ अथकूपमें अथस्तन विकस्य वतुकाते हैं— अथमेजीके अथकवातमें मापमूल
अवहारकालसे अथमेजीके माजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे वससे अथमेजीके
गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण— $१५३९ - ३२७६८ = २$, $१५५३९ \times २ = ३१०७८$ ।

अथवा विकर्ममूलकीके प्रमाणसे अथमेजीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशि जाती है ।

उदाहरण— $१५५३९ \times २ = ३१०७८$ ।

अथवा अवहारकालके प्रमाणसे अथमेजीके द्वितीय वर्गमूलको माजित करके जो अर्थ
आवे वससे वही द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो अर्थ आवे वससे अथमेजीके प्रथम
वर्गमूलको गुणित करके जो अर्थ आवे वससे अथमेजीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्या
दृष्टि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण— $१९ - ३२७६८ = \frac{१}{२७८}$, $१९ \times \frac{१}{२७८} = \frac{१}{१२८}$, $३५३ \times \frac{१}{१२८} = २$

$१५५३९ \times २ = ३१०७८$ ।

अथवा अवहारकालके प्रमाणसे अथमेजीके तीसरे वर्गमूलको माजित करके जो अर्थ
आवे वससे वही तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो अर्थ आवे वससे अथमेजीके द्वितीय
वर्गमूलको गुणित करके जो अर्थ आवे वससे अथमेजीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
अर्थ आवे वससे अथमेजीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि जाती है । इसप्रकार
भी आनकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $४ - ३२७६८ = \frac{१}{८१२९}$, $४ \times \frac{१}{८१२९} = \frac{१}{२०३८}$, $१९ \times \frac{१}{२०३८} = \frac{१}{१२८}$ ।

सेद्वीण अर्धसेखदिमागेण अबहारकालेण सेद्वि गुणेऊण सेण षण्णमागे मागे हिदे मिच्छा इडिरासी आगच्छदि । त कष ? सेद्विणा षण्णमागे मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि मागहारेण जगपदरे मागे हिदे मिच्छाइडिरासी आगच्छदि । अइया अबहारकालेण सेद्वि गुणेऊण षण्णमागपदमवगमूलमवहरिय सेण त चेव गुणिदे मिच्छाइडिरासी होदि । एवं हेहा जाभिऊण वचम्ब । हेडिमवियप्पो गरो ।

उपरिमवियप्पो विविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वचइस्सामो । मेरइयमिच्छाइडिरासिअबहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण सेण तम्बगवग्गो मागे हिदे मिच्छाइडिरासी आगच्छदि । त कर्ष ? जगपदरसमाणवेरूव वग्गेण तम्बगवग्गो मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अबहारकालेण जगपदर

$$२५६ \times \frac{१}{१९८} = २, ६५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

अब घनाघनमें अघस्तन विकस्य बतछाते हैं— जगमेणीके बसंत्पातमें मागकप अबहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो कष्य भावे उससे घनछोकके भाजित करने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है क्योंकि, जगमेणीसे घनछोकके भाजित करने पर जगमतर आता है । पुनः मागहारसे जगमतरके भाजित करने पर नारक मिष्यादधि जीव राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३६}{२५५३६ \times ३२७३८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

अथवा अबहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो कष्य भावे उससे घनछोकके प्रथम वगमूलको अपहत करके जो प्रमाण भावे उससे उसी घनछोकके प्रथम वगमूलको गुणित करने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अघस्तन विकस्य समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५६}{३५३६ \times ३२७३८} = १९८, २५६ \times १९८ = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

उपरिम विकस्य तीन प्रकारका है सूहीत सूहीतसूहीत बीर सूहीतगुणकार । उनमेंसे पहले सूहीत उपरिम विकस्यको बतछाते हैं— नारक मिष्यादधि जीवराशिसबन्धी अबहार कालसे जगमतरके समान द्विकपवगको गुणित करके जो कष्य भावे उससे उस द्विकपवगके वर्गमें माग देने पर मिष्यादधि जीवराशि आती है क्योंकि जगमतरके समान द्विकपवगका उसके वर्गमें माग देने पर जगमतरका प्रमाण आता है पुनः अबहारकालका जगमतरमें माग देने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{७२९४७३२९३}{४२०४९३२९३ \times ३२७३८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

भाग हिंदे मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । तस्म मागहारस्म अद्वच्छेदणममेत्ते राप्तिस्म अद्वच्छेदणं कद वि मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । एदस्म अद्वच्छेदणया केत्तिपा ? अवहारद्वच्छेदणमहिंदजगपदरसमाणवेत्तवग्माच्छेदणमंत्ता । उव्वरि अद्वच्छेदणमंता-
वपविहायं आपिळ्ळ वचम्व । वरुवपरुवणा गदा । अद्वच्छेद वचरस्सामो । अवहारकासव
जगपदरे माग हिंदे मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । पणगुल्लिदिपवग्माच्छेदणमहि
उगासेद्दिमद्वच्छेदणममेत्त जगपदरस्स अद्वच्छेदणं कदे वि मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि ।
अहवा अवहारकालेज जगपदर गुणऊग तेण तस्सुवरिमवग्गे माग हिंद मिच्छाद्दिरामी
आगच्छदि । त उवा- जगपदरेण तस्सुवरिमवग्गे माग हिंद जगपदरमागच्छदि । पुवा
वि अवहारकालेज जगपदरे मागे हिंद मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । एदस्स मागहारस्स

उक्त मागहारके कितने न्यर्घच्छेद हैं इतनीबार उक्त मन्वमाण पक्षिके न्यर्घच्छेद करने पर भी नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ४७ न्यर्घच्छेद हैं मत्त । इतनीबार उक्त मन्वमाण पक्षिके न्यर्घच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है ।

प्रश्न—उक्त मागहारके न्यर्घच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके कितने न्यर्घच्छेद हैं उनमें अवहारकासव न्यर्घच्छेद मिठा देने पर उक्त मागहारके न्यर्घच्छेदोंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९१७२९९ के न्यर्घच्छेद ३५ ३२७३८ के १५, मत्तएव $३२ + १५ = ४७$ अ. ।

ऊपरके स्थानोंमें भी न्यर्घच्छेदोंके मिठानेकी विधि जानकर बहना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपरूपका समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें सूचित उपरिम निरूपणके बतलाते हैं—अवहारकासवसे जगप्रतरके मावित करने पर नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है ।

उदाहरण—४२९४९१७२९९ - ३२७३८ = १३१ ७२ सप्त वा मि

अथवा जगगुल्लके द्वितीय वर्गमूलके न्यर्घच्छेदोंका जगघोषीके न्यर्घच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण शेष रहे इतनीबार जगप्रतरके न्यर्घच्छेद करने पर भी नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है ।

उदाहरण—१५५३३ प्रमाण जगघोषीके न्यर्घच्छेद १३ मत्त जगगुल्लके द्वितीय वर्गमूल के न्यर्घच्छेद १ कम करने पर १५ शेष रहते हैं, अतः १५ बार ४२९४९१७२९९ प्रमाण जगप्रतरके न्यर्घच्छेद करने पर १३१ ७२ प्रमाण नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है ।

अथवा अवहारकासवसे जगप्रतरको गुणित करके जो कल्प आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें माप देने पर नारक सिध्दादि जीवपक्षि जाती है । उक्तका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें माप देने पर जगप्रतर आता है । पुन

मद्वच्छेदणयमेवं रासिस्त अद्वच्छेदणय कदे वि मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । एरप मद्वच्छेदणयमेलावणविहाण पुच्च व वचच्च । एवं संलेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयच्च । मद्वच्छेदणयमेलावणविहाण पुच्च व वचच्च । एवं संलेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयच्च । गहिदपरूषणा गदा ।

मबहारकासका जगप्रतरमें माग देने पर नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७८९६}{४२९४९६७८९६ \times २२७७६८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

इस मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ३९ + १ = ४० अर्थच्छेद हैं अतः इतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

यहां पर अर्थच्छेदोंके मिछानेकी विधिका पहचाने समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संपात, असंपात और अनन्त स्थानोंमें से जाना चाहिये । इसप्रकार मरूपका समाप्त हुए ।

अब धनायनमें गृहीत उपरिम विरूप्य वतछाते हैं—जगप्रतरके उपरिम वर्गको मबहारकाससे गुणित करके जो छप्प भागे उसका धनछोकेके उपरिम वर्गमें माग देने पर नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है क्योंकि जगप्रतरके उपरिम वर्गका धनछोकेके उपरिम वर्गमें माग देने पर जगप्रतरका प्रमाण जाता है । पुनः मबहारकासका जगप्रतरमें माग देने पर नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{९५३६१}{४२९४९६७८९६ \times ३२७७६८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ७९ अर्थच्छेद होते हैं अतः इतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर १३१ ७९ प्रमाण नारक मिष्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

यहां पर अर्थच्छेदोंके मिछानेकी विधिका पहचाने समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संपात, असंपात और अनन्तस्थानोंमें भी से जाना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिम विरूप्य मरूपका समाप्त हुई ।

अगपदरसमापनेस्त्ववगावगास्त अर्धखेजदिमागेण अगपदरस्त असर्खेजदिमागेण
 वणसोगस्त असर्खेजदिमागेण च अरहपमिच्छाश्रितिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुमगारो
 च वचम्वो । मिच्छाश्रितिरासिपुरुषा समथा ।

सासणसम्माद्विष्णुवि जाव असजदसम्माद्वि ति दब्बपमाणेण
 केवडिया, ओघ' ॥ १८ ॥

ओषमि वृत्तसिन्धुगुणद्वारासी सम्भा वि गच्छयाणि सिन्धुगुणद्वारासि-
 मेचा केव होदि चि वृत्त मसगदीसु तिन्हा गुणद्वारापममावा पसग्गदे ? य एत दामो,
 वेरहपाण तिन्हे गुणद्वाराण पमाणस्त ओपसिगुणद्वारापमाणेण पल्लिदोवमस्म असख्खदि
 भागसं पडि चित्तेसामावाधो एयचाविरोहा । पग्गजगुणपण पुण अवर्धधित्तमाये भदो
 दोम्हमरिय चेव, सेसतिगदिदिन्हे गुणद्वाराण पमाणपुरुषागह्वरि उवमाणमुपाण

अगपदरके समान द्विकपवर्गका जितना उपरिम वर्ग हो उसके असम्पातमें मामक
 अगपदरके असम्पातमें भागरूप और अन्धकारके असम्पातमें भागरूप नारक मिष्ठाद्वि
 जीवराशिके प्राप गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिष्ठाद्विप्राशिकी प्रकृपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्पग्गदि गुणस्थानसे ठेकर असयतसम्पग्गदि गुणस्थान तक प्रत्यक्ष
 गुणस्थानमें नारकी जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपवाके
 समान हैं ॥ १८ ॥

शंका— गुणस्थानोंमें कहीं गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि संपूर्ण नारकीयोंके
 तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके बराबर ही होती है ऐसा कहने पर दोष तीन पदियोंमें
 तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्य होता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, नारकीयोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी
 जीवराशिके प्रमाणकी समान्यसे कहीं गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके प्रमाणके साथ
 पम्पोपमके असम्पातमें भागवत्के प्रति कोई विरोधता नहीं है । इच्छित्ये इन दोनोंको समान
 मान लेनेमें कोई विरोध नहीं जाता है । परन्तु पर्यापार्थिक नयका अवलंबन करने पर दोनोंमें
 भेद है ही। यदि ऐसा न माना जाय तो दोषकी तीन पदिसंबन्धी सासम्पग्गदि तीन गुणस्थानोंकी
 जीवराशिके प्रमाणके प्रकृपण करनेके क्षिणे कहे गये सुबोधकी सफरता नहीं बन सकती है । मय

सकृत्तत्त्वज्ञानप्राप्तौ । तस्मै मेदस्त परवृणोत सासणसम्माइडिआदिगुणपडिबण्णाण
अवहारकाळे वचइस्सामो । त अहा—

ओपमसंजदसम्माइडिअवहारकाले विरलेऊम पलिदोषमं समञ्ज करिय दिण्णे
एकइस्स रुवस्स असज्जदसम्माइडिअवपमाण पावेदि । देवगइ मोचूण सेसविगदि
असज्जदसम्माइडिरासी सामण्णअसज्जदसम्माइडिरासिस्स असखेअदिभागो । तस्स को
पडिभागो ? आबलियाए असखज्जदिभागो । ओपअसंजदसम्माइडिरासिस्स असखेअ
मागा देवाणमसंजदसम्माइडिरासी होदि । कुदो ? देवेसु बहण सम्मसुप्पाधिकारणाण
सुवर्तमादो । देवाण सम्मसुप्पाधिकारणाणि काणि थे ? जिणविबिद्धिमहिमादसज्ज जाइ
स्सरण-महिद्धिदादिदसण जिणपायमूलसम्मसवणादीणि । तिरिक्खणेइया पुण गरुवपाव

वत्त मेवके प्रकृपय करनेके लिये सासाधनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंका प्रमाण
छानेके लिये अवहारकाळोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाळको विरहित करके भीर
उन विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पस्योपमको समान बंध करके रूपरूपसे हे देने पर
प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— ११३८७ ११३८७ ११३८७ ११३८७ एक विरज्जनके प्रति प्राप्त अस
१ १ १ १ यतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ।

इसमें देवगणितसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गणितसंबन्धी
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातवें भाग
प्रमाण है ।

श्रुका— शेष तीन गणितसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पस्योपमके
असंख्यातवें भागरूप छानेके लिये प्रतिमागका प्रमाण क्या है ?

समाधान—आवसीका असंख्यातवें भाग प्रतिमागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण
इतोंसंबंधी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है क्योंकि देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे
कारण पाये जाते हैं ।

श्रुका— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान—जिनविश्वसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका वर्णन आतिस्मरणका होना
महर्षिक इत्यादिकका वर्णन भीर जिनदेवके पादमूर्छमें धर्मका अवलम्ब आदि देवोंमें सम्यक्त्वोत्पत्तिके
कारण हैं । परंतु तिर्यक भीर मारकी श्रुतपर पापोंके मारसे गये भीर बचे होनेसे अतिशय

मोग्यं गत्वणद्वयादौ सकिंलिङ्गपरत्वाद्वा' मदमुद्दिष्टादौ बह्व्यसम्पत्पुष्पचिह्नरत्नागमभावाद्
 च सम्माद्दिष्टो बोधा इवति । तदो तिगदिअसब्बदसम्माद्दिष्टातिष्ठा उवरिमैगरूपपरि
 ओपासब्बदसम्माद्दिष्टद्वयमवहरिय तत्त्वागदमावलिखाए असंखेअदिमार्गं विरल्लभ्य ओपा
 संब्बदसम्माद्दिष्टद्वय समल्लङ्घ करिय दिग्घे हेत्तुमविरल्लग्नरूप पडि सेसतिगदिअसंब्बद
 सम्माद्दिष्टातिष्ठापमाण पावदि । तत्पमाण उवरिमविरल्लग्नए उवरिमरूपं पडि हिद्विओपा
 मब्बदसम्माद्दिष्टद्वयमिह अवणेयम् । एवमपिदे उवरिमविरल्लग्नमवा चेव देवप्रसंब्बद
 सम्माद्दिष्टासीओ तिगदिअसब्बदसम्माद्दिष्टासीओ च भवति । पुणो उवरिमविरल्लग्नमेव
 तिगदिअसब्बदसम्माद्दिष्टासीव देवप्रसंब्बदसम्माद्दिष्टातिष्ठापमाणे कस्सामो । त अहा —

रूढगह्विमविरल्लग्नमेवसु तिगदिअसब्बदसम्माद्दिष्टद्वयेसु उवरिमविरल्लग्नमि
 द्विद्वसु समुदिदेसु एगं देवप्रसंब्बदसम्माद्दिष्टातिष्ठापमाणं लभमि, अवहारकालमि एणा
 संनिष्प परिणामी होनेसे मन्वसुदि होबेने भीर उन्मं सम्यक्त्वही उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका
 भभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि योग्य होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरल्लग्नके एकके प्रति रत्नही हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव
 राशिमें तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके वहाँ जो व्यावर्तीका
 असंयतातर्का भाग लब्ध जावे उसका विरल्लग्न करके भीर उस विरल्लग्न राशिमें प्रत्येक
 एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान लब्ध करके देवकूपसे दे देने पर
 अपस्तन विरल्लग्नके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण
 प्राप्त होता है । इस प्रमाणको उपरिम विरल्लग्नके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत
 सम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे बिकाळ देना चाहिये । इसप्रकार बिकाळ देने पर उपरिम विरल्लग्नमात्र
 देवप्रसिद्धसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिवाँ भीर तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि
 जीवराशिवाँ होता है ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९९;

	४०९	४०९९	४०९९	४०९९
१९३८४ - ४०९९ = ४;	१	१	१	१

इस ४ ९९ को उपरिम विरल्लग्नके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १९३८४ में
 बटा देने पर १९२८८ ग्यते हैं । वहाँ देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि
 जीवराशि है भीर ४ ९९ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है ।

अब आये उपरिम विरल्लग्नमात्र अघात् उपरिम विरल्लग्नगुणित तीन गतिसंबन्धी
 असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिवाँ देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमें प्रमाणसे करके बतवाते हैं ।
 उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक वम अपस्तन विरल्लग्नमात्र अर्थात् एक वम अपस्तन विरल्लग्नगुणित उपरिम
 विरल्लग्नमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुचित कर देने पर एक देव

यव पक्खवसलागा । पुणो वि एसियमत्तसु चेउ उवरिमविरलणम्मि तिगदिअसज्ज
सम्माइद्विदम्भेसु ममुदिदेसु देवअसज्जदसम्माइद्विदम्भेसु लम्भदि, अवहारकालम्मि विविपा
च पक्खं सलागा । एउ पुणो पुणो कीरमाण आवलियाए असंखेजदिमागमेवाभा
अवहारकालपक्खवसलागाओ लम्भंति, हेत्तिमविरलणाया उवरिमविरलणाए असंखज
गुणघा । पदासिमवहारकालपक्खवसलागापमेगवारेण आगमणविहिं वचइस्सामो ।
इदिमविरलणरूपुणमेवतिगदिअसज्जदसम्माइद्विदम्भेसु अदि ग्गा अवहारकालपक्खेव
सलागा लम्भदि ता उवरिमविरलणमेवेसु तिगदिअसंखजदसम्माइद्विदम्भेसु केचिपाओ
पक्खेवसलागाओ तमामो चि म्बुणहेत्तिमविरलणाए उवरि विरलियजोघमसज्जदमम्मा
इद्विस्स अवहारकाल मागे हिद आपसियाण असंखजदिमागमेवाभा अवहारकालपक्खेव
सलागाओ लम्भंति । ताओ ओघजसज्जदसम्माइद्विअवहारकालम्मि पक्खिचे देवअसंखज
सम्माइद्विअवहारकालो हादि । तमावलियाए अमखजदिमागग गुणिदे देवसम्मामिच्छा
इद्विअवहारकालो हादि, असज्जदसम्माइद्विउवकमणफाळाया मम्मामिच्छाइद्विउवकमण
फालस्स असंखेज्जगुणदीनघा । उ संखेज्जरूपेहिं गुणिदे देवसावणसम्माइद्विअवहारकालो

असंयतसम्यग्गदि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशालाका
प्राप्त होती है । फिर भी एक कम अघस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन
गतिबंधधर्मी असंयतसम्यग्गदि द्रव्यके समुचित रूप देने पर रूप असंयतसम्यग्गदि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः
पुनः करने पर आबकीके असंयतातमें मागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है
पणोंकि अघस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंयतातगुणा है । अब इन अवहारकाल
प्रक्षेपशालाओंके एकवारमें मानेकी विधिको बतलाने हैं— एक कम अघस्तन विरलनमात्र
तीन गतिसंधर्मी असंयतसम्यग्गदि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है
तो उपरिम विरलनमात्र अघात उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसंधर्मी असंयतसम्यग्गदि
द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशालाका प्राप्त होगी इसप्रकार (विराशिक करके) एक कम अघस्तन
विरलनका ऊपर विरलित रूप असंयतसम्यग्गदिक अवहारकालमें प्राप्त होने पर आबकीके
असंयतातमें मागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है । इन प्रक्षेपशालाओंके
भाग असंयतसम्यग्गदिके अवहारकालमें मिला देने पर रूप असंयतसम्यग्गदि अवहारकालका
प्रमाण आता है ।

उदाहरण—एक कम अघस्तन विरलन ३; उपरिम विरलन ४; $४ - ३ = १$ ।

$४ + १ = ५$ $३ \times ३ = ९$ $९ - ५ = ४$ देव असंयतसम्यग्गदि द्रव्य ।

$१३३८४ - १३३८८ = ४०$ १ तीन गतिबंधधर्मी असंयतसम्यग्गदि द्रव्य ।

रूप असंयतसम्यग्गदिसंधर्मी अवहारकालकी आबकीके असंयतातमें मागते गुणिन
काल पर रूप सम्यग्गिध्यादिके जीवराशिसंधर्मी अवहारकाल होना है पणोंकि असंयत
सम्यग्गदिके उपरमय कालसे सम्यग्गिध्यादिका उपक्रमकाल असंयतगुणा दीन है । देव

मारण पत्राणद्वयादा' सकलित्वपरत्वादा' मद्रुद्रिचादो बहण सम्मत्तुप्पत्तिस्सरणापमभावादा च सम्माद्विणो बोवा इवन्ति । तदो तिगादिअसज्जदसम्माद्विरामिणा उवरिमगरूवपरिदो मोपासज्जदसम्माद्विदम्भमवहरिण सत्त्वागदमावलिपाए असंवेज्जदिमार्ग विरलज्जण मोपा मज्जदसम्माद्विदम्भ समएव करिय दिण्ण इह्मिविरलज्जरूवे पडि सेसतिगादिअसज्जद सम्माद्विरामिपमाण पावदि । तप्पमाण उवरिमविरलगाए उवरिमरूव पडि विदओपा मज्जदसम्माद्विदम्भमिह अवणेयए । एवमवणिदे उवरिमविरम्भमता चेव देवअसज्जद सम्माद्विरासीओ तिगादिअसज्जदसम्माद्विरामीआ च भवति । पुओ उवरिमविरलज्जमेस तिगादिअसज्जदसम्माद्विरामि देवअसज्जदसम्माद्विरातिपमाण कस्सामो । सं अहा—

एवमिह्मिविरलज्जमेवसु तिगादिअसज्जदसम्माद्विदम्भेसु उवरिमविरलज्जमिह दिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसज्जदसम्माद्विरामिपमाण लज्जमदि, अवहारकाठमि एमा मविच्छप परिजामी शेमेसे मव्वुवि होमसे और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका समाप होमसे सम्यग्दृष्टि चोत्रे होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरलज्जके एकके प्रति एककी हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमें तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भागित करके वहाँ जो भावकीका अर्थक्यातकी भाग छन्द आये उसका विरलज्ज करके और उस विरलज्ज राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान कंड करके देवकपसे दे देने पर अथस्तन विरलज्जके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रमाणमें उपरिम विरलज्जके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत सम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे निकटवत्तना चाहिये । इसप्रकार निकटवत्तने पर उपरिम विरलज्जमात्र देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियाँ और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियाँ होती हैं ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४ ९५

	४ ९५	४०९५	४ ९५	४०९५
१९३८४-४ ९५ = ४।	१	१	१	१।

इस ४ ९ को उपरिम विरलज्जके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १९३८४ में घटा देने पर १९२८८ ब्यते हैं । यही देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है और ४ ९५ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है ।

अब आगे उपरिम विरलज्जमात्र अर्थात् उपरिम विरलज्जगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिओ देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतकते हैं । उसका स्पीकरण इसप्रकार है—

एक कम अथस्तन विरलज्जमात्र अर्थात् एक कम अथस्तन विरलज्जगुणित उपरिम विरलज्जमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुचित कर देने पर एक देव

१ प्रश्न नावद्वयी लपिहिद्वारकयो इति वाट ।

एव पढमाए पुढवीए नेरइया' ॥ १९ ॥

न पुनं मामण्यनेरइयमिच्छाइडिआदिरासिस्स पमाणपरूपणा परूविवा, पढम विदियपुढविमाविविसेमामावावो । पुणा अदि पुण्यपरूविदसम्भरासी पढमाए पुढवीए मवदि तो विदियादिपुढरीसु जीवामावो पसज्जदे । न च एव, 'विदियादि आब सचमाए पुढरीए नेरइयसु मिच्छाइडी दम्भपमाणेण केवडिया' इत्यादिसुचेहि सह विरोहादो, तम्हा सामण्यनेरइयमिच्छाइडिबिक्खमभूरे पढमपुढविमिच्छाइडीण विस्संमसुर्ह न हनदि । तदो सामण्यपरूविदअमहारकाला वि पढमपुढविनेरइयाव न मवदि । एव सेमगुनपडिबन्धमार्म पि अवहारकालवधूी वचम्वा । तम्हा एवं पढमाए पुढरीए येयम्भमिदि नेदं पढदे ? न एस दोसो, असंखजसेविचयेण पदरस्स असंखेज्जदिमागचणेण विदियवग्गमूलगुणिद अंगुलवग्गमूलमेचबिक्खंमसुचित्तयेण पल्लिदोवमस्स असंखज्जदिमागचणेण च पढमपुढवि

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव राखि है ॥ १९ ॥

श्रुक्ता—पहले सामान्य नारक मिथ्याएहि आवि अवरासिके प्रमाणका प्ररूपण किया, क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी दूसरी पृथिवी आविके विशेषप्ररूपणका अभाव है । फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा मान लेने पर दूसरी पृथिवीसे निकल सालकी पृथिवीतक मिथ्याएहि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है इत्यादि श्रुतोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक मिथ्याएहियोंकी विष्कंभधूकी प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्याएहियोंकी विष्कंभधूकी नहीं हो सकती है । और इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका अवहारकाल नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके दोष गुणस्यानप्रतिपद जीवोंके भी अवहारकालकी दृष्टिका कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें से जाना चाहिये यह श्रुत्यर्थ मंडित नहीं होता है ।

समाधान—यह कोय दोष नहीं है क्योंकि असंख्यात जगधेयियोंकी अपेक्षा जगप्रसरके असंख्यातमें भागकी अपेक्षा सूर्यगुणके द्वितीय धर्ममूलसे गुणित प्रथम धर्ममूल प्रमाण विष्कंभधूकी अपेक्षा और परस्परप्रमेके असंख्यातमें भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमधन्वी

१ नारककी प्रमाणकी पृथिवी अथवा मिथ्याएहियोंके अथवा प्रमाणके प्रमाणविशेष । ४ वि. १ ८ हेतुमत्तपुढवीए तमिहिवावो इ तज्जाली इ । पढमाएहि ३ सली नेरइयाव तु विहिं । सो जी १५४ वेदिपुदेस्सवपुनइवपुदममुकयविह । वग्गमाए १०५ । पढमे २ १० अद्विगुणपुन अमुपुविवा व नेरव पुई । पढ २ १९ मवववकीन्धीओ वेदीओ तवेज्जगुणाओ । इदिने एवममए पुढरीए नेरइया अववेमवदना । पढ २ १९ तो ही । (अवहारक) ।

हादि, तयो संखेन्द्रगुणहीण-उपक्रमणकालचावो । सम्मामिच्छत् पडिवन्त्रमापरासिस्म
 संखेन्द्रदिमागमत्ता उपसमसम्माद्दिगो सासणगुणं पडिवन्त्रेति सि ना । तमावसिपाए
 असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे तिरिक्खअसंखदसम्माद्दिग्वहारकासो होदि । तमावसिपाए
 असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छद्दिग्वहारकासो होदि । त संखेन्द्ररूपेहि
 गुणिद तिरिक्खसासणसम्माद्दिग्वहारकासो होदि । तमावसिपाए असंखेन्द्रदिमागेण
 गुणिद तिरिक्खअसंखदासंखदसम्माद्दिग्वहारकासो होदि, अपवक्खणाणवरणागुदयामावस्स अरुह
 हत्तादो । तमावसिपाए असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे वेरूप्यअसंखदसम्माद्दिग्वहारकासो
 होदि । तमावसिपाए असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे वेरूप्यसम्मामिच्छद्दिग्वहारकासो होदि ।
 तं संखेन्द्ररूपेहि गुणिद वेरूप्यसासणसम्माद्दिग्वहारकासो होदि । एवेहि अवहारकासेहि
 पसिदोवमे भागे हिदे अप्पपयो वम्भमाणच्छदि ।

सम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर वेव सासाद्वसम्पत्ति
 जीवपादिसंखणी अवहारकास प्राप्त होता है क्योंकि, सम्पत्तिम्यादादिके उपक्रमणकालसे
 सासाद्वसम्पत्तिगुण उपक्रमणकाल संख्यातगुणा हीन है । अपना सम्पत्तिम्याद्व
 गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवपादिके संख्यातसे मागमात्र उपक्रमसम्पत्ति जीव
 सासाद्वसम्पत्तिगुणस्थानको प्राप्त होते हैं इसलिये भी वेव सम्पत्तिम्यादादिके
 अवहारकाससे वेव सासाद्वसम्पत्तिगुणा अवहारकास संख्यातगुणा है । वेव सासाद्वसम्पत्ति
 हिंसंखणी अवहारकासको आबसीके असंख्यातसे मागसे गुणित करने पर तिर्यक् असंयत
 सम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकास होता है । तिर्यक् असंयतसम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकासको
 आबसीके असंख्यातसे मागसे गुणित करने पर तिर्यक् सम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकास
 होता है । तिर्यक् सम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यक्
 सासाद्वसम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकास होता है । तिर्यक् सासाद्वसम्पत्तिम्यादादिसंखणी
 अवहारकासको आबसीके असंख्यातसे मागसे गुणित करने पर तिर्यक् संयतासंयतसंखणी
 अवहारकास होता है क्योंकि अगत्याप्यामावरण कयापका कयामात्र असंयत दुर्लभ है ।
 तिर्यक् संयतासंयतसंखणी अवहारकासको आबसीके असंख्यातसे मागसे गुणित करने पर
 नारक असंयतसम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकास होता है । नारक असंयतसम्पत्तिम्यादादिसंखणी
 अवहारकासको आबसीके असंख्यातसे मागसे गुणित करने पर नारक सम्पत्तिम्यादादिसंखणी
 अवहारकास होता है । नारक सम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने
 पर नारक सासाद्वसम्पत्तिम्यादादिसंखणी अवहारकास होता है । इन उपर्युक्त अवहारकासोंसे
 पम्पोपमके भाजित करने पर अपना अपना मुख्य प्रमाण जाता है ।

एव पढमाए पुढवीए नेरइया' ॥ १९ ॥

णं पुब्बं सामण्यभेदमिच्छाद्विआदिरासिस्स पमाणपरूपणा परूविदा, पढम विदियपुढविआदिविसमाधानाद्यो । पुणा जवि पुब्बपरूपविषयसम्बरासी पढमाए पुढवीए मवदि सो विदियादिपुढवीसु मीवामाद्यो पसज्जदे । ण न एव, 'विदियादि जाव सचमाए पुढवीए नेरइएसु मिच्छाद्वी दम्भपमाणेण केवडिया' इत्यादिसुसेहि सह विरोहाद्यो, तम्हा सामण्यभेदमिच्छाद्विविषयसम्बद्धं पढमपुढविमिच्छाद्वीण विस्समस्यं न इवदि । तदेा सामण्यपरूपविदम्बहारकालो वि पढमपुढविनेरइयाण न मवदि । एव सेसगुणपठिबण्णार्ण पि अबहारकालवृत्ति वचम्मा । तम्हा एव पढमाए पुढवीए नेयम्भमिदि वेदं वडदे ? न एस दोसो, असंखेज्जसेद्विचणेण पदरस्स असंखेज्जदिमागचणेण विदियवग्गमूलगुणिव अंगुलवग्गमूलमेवविषयसम्बद्धविचणेण पठिदोवमस्स असंखज्जदिमागचणेण न पढमपुढवि

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव राखि है ॥ १९ ॥

शंका—पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि अविद्यादिके प्रमाणका प्ररूपण किया क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है । फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई रूपण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयदृष्टि पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा मान लेने पर दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं इत्यादि स्र्कोंके साथ पूर्वांक कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी चिर्कमसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी चिर्कमसूची नहीं हो सकती है । भीर इसीलिये सामान्यसे कहा गया अबहारकाळ भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका अबहारकाळ नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके दोष गुणस्यानप्रतिपक्ष जीवोंके भी अबहारकाळका वृत्तिक कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें छे जाना चाहिये वह स्वार्थ घटित नहीं होता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि असंख्यात अगमेलियोंकी अपेक्षा अगम्यतके असंख्यातके भागकी अपेक्षा सूर्यगुलके द्वितीय बर्गमूलसे गुणित प्रथम बर्गमूल प्रमाण चिर्कमसूचीकी अपेक्षा भीर पर्योपमके असंख्यातके भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसंख्या

१ बरहमती प्रवचनार्ण पृथिव्यां वतका मिथ्याद्वयोपमत्वेण नैव प्रतरणपर्यवसायप्रतिता । व वि

१ द्वैतवत्पुढवीण रात्रिहायो इ सचरात्री इ । पढमाविहि रात्री नेरइयाण तु विहिउ । यो जी १५४ वेदोपकथनपद्म । इवद्वैतवत्पुढवी । वच्चाए १०८ । पवर्ण १ १० अहर्निशकथनका संप्रत्ययिदा व नेरइयाण । पवर्ण १ १९ मयवर्णनीयो देवीयो नमेवप्रवृत्तायो । इवीण एवपद्माए पुढवीए नेरइया वनवेरइया । पवर्ण २ १९ स्तो ३ (वृहत्संहिता)

हादि, तयो संखेज्जगुणहीन-उबकमणकासचादो । सम्मामिच्छत् पडिबज्जमागरासिस्स
 संखेज्जदिमागेचा उबसमसम्माइडिओ सासणगुण पडिबज्जइति सि वा । तमावसियाए
 असंखेज्जदिमागेच गुणिवे तिरिक्खअसंखदसम्माइडिअवहारकासो होदि । तमावसियाए
 असंखेज्जदिमागेण गुणिवे तिरिक्खसम्मामिच्छइडिअवहारकासो होदि । तं संखेज्जरूपेहि
 गुणिव तिरिक्खसासणसम्माइडिअवहारकासो होदि । तमावसियाए असंखेज्जदिमागेण
 गुणिवे तिरिक्खअसंखदासंखदअवहारकासो होदि, अपक्खसायावरणाणमुदयामावस्स अइसु
 इचादो । तमावसियाए असंखेज्जदिमागेण गुणिवे वेरइयअसंखदसम्माइडिअवहारकासो
 होदि । तमावसियाए असंखेज्जदिमागेण गुणिवे वेरइयसम्मामिच्छइडिअवहारकासो होदि ।
 तं संखेज्जरूपेहि गुणिवे वेरइयसासणसम्माइडिअवहारकासो होदि । एवेहि अवहारकासोहि
 पत्तिदोबमे भागे द्विदे अप्पपणो वम्भमाणण्डवि ।

सम्बन्धिमिच्छादिसंखन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर वेच सासणसम्मान्दधि
 जीवराशिसंखन्धी अवहारकास प्राप्त होता है क्योंकि, सम्बन्धिमिच्छादिके उपक्रमकाससे
 सासणसम्मान्दधिका उपक्रमकास संख्यातमुजा हीन है । अथवा सम्बन्धिमिच्छात
 गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशिके संख्यातसे मातमात्र उपक्रमसम्मान्दधि जीव
 सासणसम्मान्दधि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं इसलिये श्री वेच सम्बन्धिमिच्छादिके
 अवहारकाससे वेच सासणसम्मान्दधिका अवहारकास संख्यातमुजा है । वेच सासणसम्मान्द
 धिसंखन्धी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यक् असंयत
 सम्बन्धिसंखन्धी अवहारकास होता है । तिर्यक् असंयतसम्बन्धिसंखन्धी अवहारकासको
 आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यक् सम्बन्धिमिच्छादिसंखन्धी अवहारकास
 होता है । तिर्यक् सम्बन्धिमिच्छादिसंखन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यक्
 सासणसम्मान्दधिसंखन्धी अवहारकास होता है । तिर्यक् सासणसम्मान्दधिसंखन्धी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यक् संयतासंयतसंखन्धी
 अवहारकास होता है क्योंकि व्याख्याणावरण कपायका कथामात्र अत्यंत दुर्लभ है ।
 तिर्यक् संयतासंयतसंखन्धी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर
 नारक असंयतसम्बन्धिसंखन्धी अवहारकास होता है । नारक असंयतसम्बन्धिसंखन्धी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर नारक सम्बन्धिमिच्छादिसंखन्धी
 अवहारकास होता है । नारक सम्बन्धिमिच्छादिसंखन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने
 पर नारक सासणसम्मान्दधिसंखन्धी अवहारकास होता है । इन चर्युक्त अवहारकासोंसे
 पञ्चोपमके मज्जित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

सामाण्यगिरयमिच्छाद्विचिक्खंमध्विम्हि अबणिदे पढमपुढविनेरयमिच्छाद्विरासिस्स विक्खंमध्वं होदि । एदीए विक्खंमध्वंए जगसेदिम्हि माग दिदे पढमपुढविनेरयमिच्छाद्विमवहारकालो होदि ।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४। किंचित् ऊन बारहवां वर्गमूल $\frac{72}{63}$

$$४ \times १६ + \frac{१२}{६३} = ६४ + \frac{१२}{६३} = ६४ \frac{१२}{६३} = ६४ \frac{४}{२१} = ६४ \frac{१}{५} = ६४.२$$

$$६४.२ \times १ + ६.१६६ = \frac{६६}{१२} = ५.५ = \frac{११}{२}$$

इस किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलमात्रित एककपक्षी सामान्य नारक मिष्याद्विचिक्खंमध्वी विक्खंमध्वीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिष्याद्वि राशिची विक्खंमध्वी होती है। इस विक्खंमध्वीसे जगमेणीक मात्रित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिष्याद्विचिक्खंमध्वीका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—२ - $\frac{११}{१०८} = \frac{१९३}{१०८}$, $\frac{६५}{१०८} + \frac{१९३}{१०८} = \frac{८१८८६०८}{१०८}$ प्र. पु. मि. अव ।

विशेषार्थ—जगमेणीके बारहवें वरायें आठवें छठे तीसरे और दसरे वर्गमूलका जगमेणीमें माग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवीचिक्खंमध्वीके मिष्याद्वि नारकियोंका द्रव्य आता है। और इन छहों नारकोंके मिष्याद्वि जीषोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिष्याद्वि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिष्याद्वि जीषोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य मिष्याद्वि नारकियोंका प्रमाण बनसते समय उनकी विक्खंमध्वी वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलमात्रित बतछाई है अर्थात् वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगमेणीचिक्खंमध्वीके एकत्रित करने पर उनके प्रवेष्टप्रमाण सामान्य मिष्याद्वि जीषराशि होती है। अब यदि प्रथम नारकके नारकियोंके प्रमाण छानेके छिमे विक्खंमध्वी कना हो तो द्वितीयादि नारकके मिष्याद्वि नारकियोंके प्रमाणमें जगमेणीका माग देने पर जो द्रव्य भाग उसे सामान्य विक्खंमध्वीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारककी विक्खंमध्वी आ जाती है। उदाहरणार्थ—दसरे नारकका १६३८४ तीसरेका ८१९२, चौथेका ४ ९६ पाँचवेंका २ ४८ छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य माग देने पर इनमें जगमेणी ६५ ३६ का माग देने पर क्रमसे १, १, १, १, १, १ और १, १ आता है जिनका जोड़ १, १, १, १, १, १, १, १ होगा है। इसे सामान्य विक्खंमध्वी २ मेंसे घटा देने पर १, १ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विक्खंमध्वी होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूल मात्रित एककपक्षी सामान्य नारक मिष्याद्वि विक्खंमध्वीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारकके मिष्याद्वि नारकियोंका प्रमाण

१ तथा पुत्रिमिक्खंमध्वी (काठगमेरवविक्खंमध्वी) पृथक्पृथक् अतरेयरेमामेव्वा परम शुद्धिभरनाप निष्कर्मध्वी होवे। ब्रह्मा. १३. ५१८ अ

परुषणाए सामन्नेरक्ष्यपरुषणादो विमेषामावाधो । पुना पञ्चबद्धिपणए भवत्सर्विज्जमापे
विसेसो अत्ति वेव, अण्णाहा विदिपादिपुडवीसु जीवावायप्पमंगादो । तं विसेस वच
इत्तामो । तं अहा—पढमपुडविनेरक्ष्यार्णं दम्भ-कालपमाणेसु मण्णमाणेसु ओपइय-कल
पमाणानि वेव असंखेअदिमामहीणाणि हवंसि । तहा खेत्तपमाणं पि ओपखेत्तपमावादा
असंखेअदिमार्णं भवदि । तं कर्णं ज्ञानिज्जदे ? 'विदिपादि आष सत्तमाए पुडवीए
वेरक्ष्या खेत्तेण सेदीए असंखेअदिमागो' इदि पुरदो बुच्चमायमुत्तादा वप्पदे अहा
ओपवेरक्ष्यमिच्छाइदिदम्भादो पढमपुडविनेरक्ष्यमिच्छाइदिदं सेदीए असंखेअदिमागेण
हीणमिदि । एवं सुत्तमवत्तविय पढमपुडविनेरक्ष्यमिच्छाइदीए विक्खमच्च ई उप्पाइत्तामो ।
तं अहा—ओपवेरक्ष्यमिच्छाइदिदसीदो एमसेदिअवणयणं पडि अदि विक्खमच्चविदि
एगसत्तागाए अवणयणं सम्मदि तो किंण्वारसवग्गमूलमज्जिदसेदिहि किं तमामा पि
सेदीए फलमुपिदिज्जामोवहिदे किंण्वारसवग्गमूलमज्जिदेगकूपमागच्छदि । एवं

प्रकृपजमें सामान्य नारकियोंकी प्रकृपणासे कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यायार्थिक नरका
अवस्थामें करने पर सामान्य प्रकृपणासे प्रथम पृथिवीसकण्ठी प्रकृपजमें विशेषता है ही । वनि
देसा व माना जाय तो द्वितीयान्ति पृथिवियोंमें जीवोंके प्रमाणका अंतर्गत्त जा जायगा । अन्ते
उसी विशेषताको बन्धने हैं । यह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर
सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको असंख्यातमें भाग न्यून कर देने पर
पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली
पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे असंख्यातमें
भाग न्यून है ।

दुसरा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? अग्रेजीके असंख्यातमें भाग हैं । इसप्रकार भागे कहे जानेवाले सूत्रसे
जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक
मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण अग्रेजीका असंख्यातमें भाग हीन है ।

जब हमें इस द्वितीयान्ति पृथिवियोंके प्रमाणके प्रकृपण करनेवाले सूत्रका जटिल
लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची उत्पन्न करते हैं । यह इसप्रकार
है—जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियोंसे एक अग्रेजी कम करने पर विष्कम्भ-
सूचीमें एक शब्दाका कम होती है तो कुछ कम अपने बारहमें वर्गमूलसे मापित अग्रेजीमें
कितना प्रमाण प्राप्त होगा इसप्रकार विराटिक करके एकदशति अपने कुछ कम बारहमें वर्ग
मूलसे मापित अग्रेजीको एकदशति एकसे गुणित करके अग्रेजीसे अपवर्तित करने पर एकमें
अपवर्तीके कुछ कम बारहमें वर्गमूलका भाग देनेसे जो द्रव्य भागे कितना प्यता है ।

महना अनरेण पयारण अनहारकालो उत्पद्यन्वे । त अहा- सामप्यग्रहारकाल
विरलङ्गा रुच पडि अगपदर समरुड करिय दिग्ने एकेकरूप रुचस्त सामप्यगोरप
मिच्छाद्विरामिममाण पावेदि । पुगा तस्य एगरूपपरिदनामप्यगोरपमिच्छाद्विरामिमि
छपुडविमिच्छाद्विरामिणा माग हिदे किंषूणगरसगरगमूलगुणिशसामप्यगोरपमिच्छा-
द्विरामिमममयी माग ठदि । एद पुप्यविरलणाए इहा विरलिय उररि एगरूपपरिद
सामप्यगोरपमिच्छाद्विरामिम समरुड करिय दिग्ने रुच पडि छपुडविमिच्छाद्विरामि
पमाण पावदि । तं उररिमविरलणाए द्विरामप्यगोरपमिच्छाद्विरामिमि पुष पुष
अवमिदि उररिमविरलणमेना पडमपुडविमिच्छाद्विरामिमा भवति । छपुडविमिच्छाद्वि
रासीमा वि तावदिया येव ।

आनेके द्विप विष्कमरुची हाती है । यहाँ किंचिन् ऊन बारहवें वगमूमसे द्वितीयादि तरफोंके
मिथ्यादृष्टि राशिवा सम्मिलित भयहारकाय भविष्यत है ।

अथवा दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके बारक मिथ्यादृष्टियोंका भयहारकाय उत्पन्न करने
है । यह इसप्रकार है— सामान्य भयहारकायका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति अगमनरको समान लब्ध करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य
बारक मिथ्यादृष्टि औषराशिवा प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस विरलनक प्रत्येक एकक प्रति
प्रत्यक्ष सामान्य बारक मिथ्यादृष्टि औषराशिमैं द्वितीयादि छह पृथिवीयोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
भाग देने पर कुछ कम बारहवें वगमूमस गुणिन सामान्य बारक मिथ्यादृष्टि औषराशिवा
विष्कमरुची भाती है । इसे पूर विरलनके भीके विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति उपरिम विरलनक एकके प्रति प्राप्त सामान्य बारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान
लब्ध करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीयोंके भी बारक
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण जा जाता है । उने उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
सामान्य बारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमसे पूरक पूर मिश्रण देन पर उपरिम विरलनका अंतना
प्रमाण है उन्हीं प्रथम पृथिवीयन बारक मिथ्यादृष्टि औषराशियां होती हैं । द्वितीयादि छह
पृथिवीयन बारक मिथ्यादृष्टि औषराशियां भी अंतर्गो ही होती हैं ।

उदाहरण—छह पृथिवीयन मिथ्यादृष्टि राशि ३२५५५।

१११ ३

१११ ३३

१

१

३०३६८ बार,

$$१११०३३ + ३०३६८ = \frac{२५५}{२३} = ५ \times \frac{१०८}{२३}$$

३३५५५

३३३ १

३२३५१

३०३६८

इस ३२३५१ को द्रव-

१

३

१

१

४ रिम विरलनके प्रत्येक

१३ एकके प्रति प्राप्त

१११ ३३ में पाया देन पर ८१९ बराबर प्रथम पृथिवीयन मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं और इन ३२३ १ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवीयोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं ।

पुणो उवरिमविरलणमेचछप्पुडविमिच्छाइड्डिइत्थं पढमपुडविमिच्छाइड्डिइत्थपमाणेण
 कस्सामा । तं अहा—रूक्खहेट्ठिमविरलणमेचछप्पुडविदम्बेसु उवरिमविरलणमिह सप्पुदिदेसु
 पढमपुडविमिच्छाइड्डिपमाण होदि । तत्थ एगा अवहारकालसलागा लम्भइ । पुणो वि
 उवरिमविरलणमिह तथिएसु चच छप्पुडविदम्बेसु सप्पुदिदेसु अवरेण पढमपुडविमिच्छा
 इड्डिपमाण होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लम्भइ । एवं पुणो पुणो
 कीरमाणे रूक्खहेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा जमत्तेन्मगुणा सि कहु सेडीण
 अत्तेल्लेअदिमाणेचाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लम्भति । तासिमेगवारेणाप्यपम
 विही बुब्बदे । त अहा—रूक्खहेट्ठिमविरलणमेचछप्पुडविदम्बेसु अदि एगा अवहारकाल
 पक्खेवसलागा लम्भदि, तो सामण्येणरूपमिच्छाइड्डिअवहारकालमेचछप्पुडविमिच्छा
 इड्डिइत्थस्स केचियाओ लमामो सि सरिसमवधिय रूक्खहेट्ठिमविरलणाण सामण्य
 अवहारकालमिह भागे डिटे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छति । ताओ सरिसच्छेदं
 कालस्य सामण्येणरूपमिच्छाइड्डिअवहारकालमिह 'पक्खित्त पढमपुडविमिच्छाइड्डिअवहार

अथ उपरिम विरलणमाण छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्या
 दृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं । उसका स्फुरीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलणमें एक कम
 अथस्तम विरलणमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुचित करने पर प्रथम पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहाँ एक अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ प्राप्त
 होती है । पुनः उपरिम विरलणमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तम विरलणमात्र छह
 पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुचित करने पर दूसरीबार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ प्राप्त होती है । इसीप्रकार
 पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तम विरलणसे उपरिम विरलण अलक्ष्मातगुणा है इसलिये
 जगभेदीके मसक्यातमें मागमाण अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ प्राप्त होती हैं । भागे उन
 अवहारकाळ प्रसेपशाकाळमेंकी एकवार सानेकी विधियों बतकाते हैं । यह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तम विरलणमात्र अर्थात् एक कम अधस्तम विरलणगुणित छह पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ प्राप्त होती है तो सामान्य नारक
 मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाळमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकाळगुणित छह पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितानी अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिकमें
 सदृशका अपनयन करके एक कम अधस्तम विरलणसे सामान्य अवहारकाळको भाजित
 करने पर अवहारकाळ प्रसेपशाकाळ भा जाती हैं । इनको समान छेड़ करके सामान्य नारक
 मिथ्यादृष्टि अवहारकाळमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ

अथवा अवशेष पर्यायेन अवधारकात्तो उपाह्वये । तं अथा- सामान्यमवधारकात्तो
विरलेत्यत्र रूपं पठि अगपदं समस्तं करिष्ये दिव्ये एकैकस्मिन् रूपेण सामान्यपरि
मिच्छाद्विरासिपमानं पावेदि । पुनो तत्र एगरूपपरिदत्तामग्न्येपरिदत्तामिच्छाद्विरासि
मिच्छाद्विरासिपमानं पावेदि । मागे हिरे किञ्चनवारसंगममूत्रगुणिदत्तामग्न्येपरिदत्तामिच्छा-
द्विरासिपमानं पावेदि । एव पुन्याविरासिपमानं हेतु विरलेय उचरि एगरूपपरिद
सामान्येपरिदत्तामिच्छाद्विरासिपमानं समस्तं करिष्ये दिव्ये रूपं पठि छप्पुद्विरासि
पमानं पावेदि । तं उचरिमविरासिपमानं द्विरासिपमानं मिच्छाद्विरासिपमानं पुन पुन
अवशिष्टे उचरिमविरासिपमानं पदमपुनविमिच्छाद्विरासीजो मर्षति । छप्पुद्विरासिपमानं
रासीजो वि तावदिता चेव ।

कालेके दिने विष्णुमस्तुषी होती है । यहाँ किञ्चित् अत्र बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयपरि वरकोंके
मिच्छाद्विरासिपमानं समस्तं अवधारकात्तो नमिष्यते है ।

अथवा दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिच्छाद्विरासिपमानं अवधारकात्तो उत्पन्न करते
हैं । वह इसप्रकार है— सामान्य अवधारकात्तो विरलेय करते और विरलेय राशि के प्रत्येक
एकके प्रति अवधारकात्तो सामान्य लक्षण करते देखकरसे हे हेने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य
नारक मिच्छाद्विरासिपमानं प्राप्त होता है । पुनः इस विरलेय के प्रत्येक एकके प्रति
प्राप्त सामान्य नारक मिच्छाद्विरासिपमानं द्वितीयपरि छह पृथिवीके मिच्छाद्विरासिपमानं
माग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिच्छाद्विरासिपमानं
विष्णुमस्तुषी जाती है । इसे पूर्व विरलेय के नीचे विरलेय करते और विरलेय राशि के प्रत्येक
एकके प्रति उपरिम विरलेय के एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिच्छाद्विरासिपमानं सामान्य
लक्षण करते देखकरसे हे हेने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयपरि छह पृथिवीके नारक
मिच्छाद्विरासिपमानं प्राप्त भा जाता है । उसे उपरिम विरलेय के प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
सामान्य नारक मिच्छाद्विरासिपमानंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलेय का जितना
प्राप्त है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिच्छाद्विरासिपमानं होती है । द्वितीयपरि छह
पृथिवीगत नारक मिच्छाद्विरासिपमानं भी उतनी ही होती है ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिच्छाद्विरासिपमानं ३२२ १

१३१०७२

१३१०७२

३२७३८ बार,

$$१३१०७२ \div ३२२१९ = \frac{२५६}{३२} = २ \times \frac{१२८}{३२}$$

३२२१९

३२२१९

३२२१९

३२२१९

२ ४८

३२२१९ को उप-

रिम विरलेय के प्रत्येक

१

१

१

१

४

४८

४८

४८

४८

४८

४८

४८

४८

१३१०७२ से घटा देने पर २८८१९ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिच्छाद्विरासिपमानं राशि होती है
और दोष ३२२१९ प्रमाण द्वितीयपरि छह पृथिवीके मिच्छाद्विरासिपमानं राशि होती है ।

पमाण मेदिदसम अह-छट्ट-तदिय विदियवगमूलेहि पुष पुष एगकर्म मडिदे तन्म
एगमाग होदि । विदियादिपदबीन एवे अवधारकाला होति सि कष णकदे !

वत्स दत्त बहुष य मूषा छत्तिय तुग न' गिरएषु ।

एकस्मिन् णव सुत य एण य अउक्क म न्नेसु ॥ ६६ ॥

गङ्गादो आरिसादो ण्यदे । सेसिमङ्गलवणा गसा ११ १२ १३ १४ । मङ्गिषारम

प्रमाण क्रमसे अगभेजीके बहाये आठवें छठवें, तीसरे और दसरे बगमूमिमे धूपक धूपक एक संस्थाको कबित करने पर बाहों को एक भाग सम्पन्न भाषे उत्तमा होता है।

उदाहरण—इहायां घर्गमुळ ८, आठयां घर्गमुळ ११, छठ घर्गमुळ ३, तिसरा घर्ग

मूळ ३४) दुसरा वर्गामुळे १२८, १-८ = १ तीसरी पुढिचीच। अथवा।

$7 + 16 = \frac{9}{36}$ बायीं पृथिवीर्षाक्ष अवेष्टा । $7 - 16 = \frac{9}{36}$ दायिणी पृथिवीर्षाक्षी

अपेक्षा । $1 - 24 = \frac{?}{24}$ छद्म पृथिवीकी अपेक्षा । $? + 228 = \frac{?}{228}$

સાઠર્થી પુણિર્જાતી અપેક્ષા અવગનીયમાન સંસ્વાસ્ય પ્રમાણ્ય ।

उत्तर—अगले पीढ़ी के बच्चों को बचपन से ही यह सिखाया जाय कि वे अपने पिता-माता के व्यवहार से सीखें। यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नक्षत्रों में द्वितीयादि पृथिवीसंबन्धी द्रव्य खानेके नियम अग्रेजीका बारहवां, दशवां आठवां छद्म तीसरा और दसवां बगमूक क्रमसे अवधारकात् होता है। तथा दोषोंमें (सामान्यतः आदि पाँच कल्पयुगलार्थ प्रमाण खानेके नियम) अग्रेजीका बारहवां, तीसरा सातवां, पाँचवां और बीया वर्गमूक क्रमसे अवधारकात् होता है ॥ ३३ ॥

इस मार्ग पर चलने से जाना जाता है कि अणुयुक्त वाममूल छिटीपादि पृथिवीयोंक द्रव्य मानेके छिमे भयदाहकाल होते हैं।

उन अपनीप्रमाण अंशोंकी स्थापना क्रमसे १½, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० इत्यप्रकार है।

विद्येपार्थ—यहां पर जगधेजीके बारहवें यममूल आदिवा श्राव कगलेके सिधे हाथे

१ शक्तिरूप इत्येव इति वदतः ।

[illegible]

कातो हादि । एदाओ अवहारकालपक्षेवससागाओ सामण्यवेरूपमिच्छाद्विअवहार
कालमेवउत्पुदविमिच्छाद्विअवहारमस्तिउत्थ उप्पणाओ ।

पुणो एदाओ वेव अवहारकालपक्षेवससागाओ विक्खंमस्यमिहि अवयववरु
पमाणं च पुदविं पुदविं पडि एत्थि एत्थिं होदि चि परुविज्जवे । तस्य ताव विक्खंम-
स्यमिहि अवगिअमाणरूपाण पमाणं बुद्धे । तं जहा- एगसेदिअवयवम पडि मदि
सामण्यवेरूपविक्खंमस्यमिहि एगरूक्खस अवयवणं लम्भदि तो विदियपुदविद्वस
अवयवणं पडि किं लमाणो चि सरिसमवयव सेदिवारसवगाभूलेण एगरूक्खं सेदि
विदियपुदविमस्तिउत्थ विक्खंमस्यमिहि अवयवपमाणमामच्छदि । तं च एद ११ । एवं
सेसपुदवीण वि हेरामियकमेव विक्खंमस्यमिहि अवगिअमाणरूपमाममाणयणं । तेमि

दोता है । ये अवहारकाल प्रसेपराशाकाय सामान्य बारक सिध्दाद्वि अवहारकालमात्र लम्बित
सामान्य बारक सिध्दाद्वि अवहारकालगुणित कइ पृथिवीगत सिध्दाद्वि प्रथका अथवा
सेका उत्पन्न हुई हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरमण ३२७३८ अवस्तन विरमण $\frac{२५६}{१३}$

$$\frac{२५६}{१३} - १ = \frac{२४३}{१३}, ३२७३८ - \frac{२४३}{१३} = १९४३८ \text{ अब प्रसेपराशाकायं ।}$$

$$३२७३ + \frac{२०३४३८८}{१९३} = \frac{८३८८९०८}{१९३} \text{ पू पू मव ।}$$

अब प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रसेपराशाकायकेय प्रमाण नीर विक्खंमसूचीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण इतना इतना होता है इसका प्रनयन करते हैं । उसमें श्री पहले
विक्खंमसूचीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—एक जगत्सेवीके
अपनयनके प्रति यदि सामान्य बारक विक्खंमसूचीमें एक संख्या कम होती है तो द्वितीय
पृथिवीके प्रथके प्रक्रमके प्रति किंतनी संख्या प्राप्त होगी इसप्रकार सहाय्य अपनयन करके
(अथवा दूसरी पृथिवीके प्रथको अपसेवीके अपनयन करके अथवा मात्रित करके) अ-
पसेवीके बारहवें वर्गमूलसे एकको जोडित करने पर दूसरी पृथिवीका आशय करके विक्खंमसूचीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण आ जाता है । यह यह ११ है ।

उदाहरण— $१ \times १९३८८ = १९३८८$ $१९३८८ - १ - १९३ = \frac{१}{४}$ अपनयनरूप ।

$$\text{अथवा } १ + ४ = \frac{१}{४}, \left(१ - \frac{१}{४} = \frac{३}{४} \right)$$

इसीप्रकार वेव पृथिवीकींय भी तैराशिक क्रमसे विक्खंमसूचीमें अपनीयमान
संख्याका प्रमाण दे आता आदिये । प्रत्येक पृथिवीके प्रति उन अपनीयमान संख्याओंका

स्थानमें अंकद्वयसे १२, १ आदि संख्याओंका ग्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक ग्रहण करके वह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका माग देनेसे सामान्य बिन्दुमें मूल्यमें अपर्याप्तमान संख्या आ जाती है। पर इससे वहाँ बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १९ और वहाँ वर्गमूलका प्रमाण १० आदि वहाँ देना चाहिये। ये १९ १० आदि एक तो केवल अनुसंधानार्थके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करनेके लिये संकेतमात्र हैं। इसीप्रकार हमी प्रकरण में प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अंकसंरक्षित अपेक्षा जगमोचीका प्रमाण १५ १९ दिया है उससे भी ये १२, १ आदि अंक बारहवें और द्वावें आदि वर्गमूल वहाँ हैं जो द्वितीयादि पृथिवीयोंके अंकसंरक्षित अपेक्षा लिये गये अन्वयार्थकोंसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। यद्यपि १५१९ के पहले, दूसरे तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करबीमत होते हैं फिर भी वीरचनस्वामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको ग्रहण न करके द्वितीयादि वर्गों में गारक अंशोंकी उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ४ द्वावेंके स्थानमें ८, ग्राहवेंके स्थानमें १९ छहवेंके स्थानमें ३२ तीसरेके स्थानमें १४ और दूसरेके स्थानमें १५८ दिया है। इस प्रकारमें ब्याहारा केर अन्वयार्थ आदि की जो संख्या निम्नकी है वह पूर्णतः व्यापार पर ही निर्याती गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर कितना तारतम्य है वह उक्त संकेतक संख्याओंमें नहीं रहता है और इसलिये वहाँ कभी दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें जलर प्रतीत होता है। जैसे भागे बहकर छठी और सातवीं पृथिवीका मध्य हुआ जो भागहार निर्याता है उस प्रकारमें उपरि विरहण भी जगमोचीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अचस्तन विरहण भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्याओंके अनुसार वहाँ उपरि विरहण १४ प्रमाण और अचस्तन विरहण २ संख्याप्रमाण ही आता है क्योंकि अंशोंके द्वारा मापी हुई सातवीं पृथिवीकी जीवराशि ५१२ नव प्रमाणका छठी पृथिवीके मध्य १ २४ में माग देने पर २ ही मध्य आते हैं। वर्गमूलमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही वहाँ दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका वैयर्थ्य निर्यात होता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको केर अंकसंरक्षित अंशोंमें तो सुव्याप्यसे दृष्टान्तमें कोई अन्तर वहाँ पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त पक्षेष्ट होता है इसी व्याप्यके अनुसार ही वहाँ अंकसंरक्षितसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इससे वहाँ कभी दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहाँ दृष्टान्तमें ग्रहण किये गये अंशोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नोद्घृत अतिरिक्त नमामें आ जायगी—

१५१९ के वर्गमूल	बारहवाँ	द्वावाँ	आठवाँ	छठा	तीसरा	दूसरा	विश्वमूल
पञ्चमाक्षर द्वारा मागे गये संकेतांक	१५	१४	३२	१९	८	४	२
१५१९ = १ ^१ के विरहित वर्गमूल	१५	१४	३२	१९	८	४	बारहवें वर्गमूलसे नीचे आकर

याममूलमज्झिद्वयम्बुं विक्कउमम्बुधिम्हि अत्ताणीय मन्दिं गुणिद विदियपुडविद्वयण विणा समछपुणविद्वयमाण-छदि । पुणा ताए चउ ऊणविक्कमम्बुचीए जगमेदिम्हि भागे हिद विदियपुणविक्कउरिचछपुणविमिन्ठाइद्विद्वयम्बु अउहारकालो हादि । पुणो तम्हि चेव छपुणविक्कउमम्बुधिम्हि एगम्बु मन्दिममग्गमूलग मन्थिय उत्थ एगम्बुमम्बणीए विदिय तदियपुणविक्कउरिचछपुणविमिन्ठाइद्विद्वयम्बु विक्कमम्बुची हादि । पुणो ताए चउ विक्कमम्बुचीए जगमेदिम्हि भागे हिदे पचपुणविमिन्ठाइद्विद्वयम्बु अउहारकालो हादि । पुणा तम्हि चउ पचपुणविक्कमम्बुधिम्हि एगम्बु सेत्तिममग्गमूलेण मन्थिय एगम्बुमयणिद विदिय-तदिय चउ पचपुणविक्कउरिचछपुणविमिन्ठाइद्विद्वयम्बु विक्कउ मम्बु हादि । पुणो ताए विक्कमम्बुज जगमेदिम्हि भागे हिद चउण्ह पुणवीण मिन्ठा

जगमेदीके पाछे ये बगमूलस एक संख्याको भाजित करने को लक्ष्य भावे उस विष्कम्भमूर्धामें घटाकर दोष प्रमाणसे जगमेदीके गुणित करने पर त्रितीय पृथिवीगत द्रव्यक विना शेष छह पृथिवीसंख्या मिथ्यारदि द्रव्यका प्रमाण होता है । तथा उनी ऊन विष्कम्भमूर्धामें जगमेदीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीक अयहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका अयहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 - 8 = \frac{1}{8}, \quad - \frac{1}{8} = \frac{3}{8} \quad 136 \times \frac{3}{8} = 51 \text{ दूसरी पृथिवीके द्रव्यक}$$

$$\text{विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यारदि द्रव्य । } 136 - \frac{3}{8} = \frac{1089}{8}$$

$$\text{दूसरी पृथिवीके अयहारकालक विना शेष छह पृथिवियोंका अयहारकाल ।}$$

अनन्तर जगमेदीके पाँच बगमूलस एक रूपका लब्धिन करने को एक लक्ष्य लक्ष्य भावे उस पूर्वात्त उनी छह पृथिवीसंख्या विष्कम्भमूर्धामें घटा देने पर दूसरी तीसरी पृथिवीके विना शेष पाँच पृथिवीसंख्या मिथ्यारदि द्रव्यका विष्कम्भमूर्धामें हाती है । पुनः उनी विष्कम्भमूर्धामें जगमेदीका भाजित करने पर (दूसरी और तीसरीक विना) पाँच पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका अयहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 - 6 = \frac{1}{6}, \quad \frac{1}{6} - \frac{1}{6} = \frac{1}{6} \text{ दूसरी और तीसरीक विना शेष पाँच}$$

$$\text{पृथिवियोंका विष्कम्भमूर्धामें } 136 - \frac{1}{6} = \frac{815}{6} \text{ दूसरी और तीसरीक}$$

$$\text{विना शेष पाँच पृथिवियोंका अयहारकाल ।}$$

अनन्तर जगमेदीके आठवें बगमूलस एक रूपका लब्धिन करने को एक लक्ष्य लक्ष्य भावे उस पूर्वात्त उनी पाँच पृथिवीसंख्या विष्कम्भमूर्धामें घटा देने पर दूसरी तीसरी और चारवी पृथिवीका छहवें दोष आठ पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका विष्कम्भमूर्धामें हाती

स्थानमें अंकवृत्तसे १२, १ अङ्गि संख्याओंका प्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक प्रहण करके यह बतलाया है कि १ में बारहवें अङ्गि वर्गमूखोंका माग देनेसे सामान्य विधिमें सूचीमें अपनीयमान संख्या आ जाती है। पर इससे यहाँ बारहवें वर्गमूखका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूखका प्रमाण १ अङ्गि नहीं लेना चाहिये। ये १२, १० अङ्गि अंक तो वे बह अनुसंध संख्याओंके द्वारा उक्त वर्गमूखोंका ज्ञान करानेके लिये संकेतमान हैं। इसीप्रकार हमी प्रकरणमें प्रहृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अक्षरसंक्षिप्त अथवा अक्षरश्रेणीका प्रमाण १५५३६ दिया है उसके भी ये १२, १० अङ्गि अंक बारहवें और दशवें अङ्गि वर्गमूख नहीं हैं जो द्वितीयादि पृथिवीको अक्षरसंक्षिप्त अथवा अक्षरश्रेणीके स्पष्ट समझमें आ जाता है। यपनि १५५३६ के पहले, दूसरे तीसरे और चौथे वर्गमूखको छोड़कर दोष सभी वर्गमूख करनीयत होते हैं फिर भी बीरसमस्वामीने वर्गमूखोंके परस्पर के तारतम्यको प्रहण न करके द्वितीयादि अक्षरों में बारह अक्षरों की उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूख स्थानमें ४ दशवेंके स्थानमें ८, आठवेंके स्थानमें १६ छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १२८ दिया है। इस प्रकरणमें दशहरण देकर अक्षराणि अङ्गि की संख्या निम्नकी है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इससे बारहवें वर्गमूख अङ्गिमें परस्पर अतिना तारतम्य है वह उक्त संकेतवृत्त संख्याओंमें नहीं रहता है और इसलिये कहीं कहीं दशम्वत और द्वाप्यन्तमें अन्तर प्रतीत होता है। जैसे अतो बहकर छठी और सातवीं पृथिवीका भिन्न रूप जो मायहार निश्चय है उस प्रकरणमें उपरिम विरहण भी अक्षरश्रेणीका तृतीय वर्गमूखप्रमाण है और अक्षरसम विरहण भी उतना ही है। पर वर्गमूखोंके उक्त संख्याओंके अनुसार यहाँ अपरिम विरहण १४ प्रमाण और अक्षरसम विरहण २ संख्याप्रमाण ही आता है क्योंकि, अक्षरोंके द्वारा मानी हुई सप्तवीं पृथिवीकी जीवराशि ११२ नव प्रमाणका छठी पृथिवीके रूप १ २४ में माग देने पर १ ही रूप आते हैं। वर्गमूखोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही यहाँ दशम्वत और द्वाप्यन्तमें इसप्रकारका वैषम्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूखोंके तारतम्यको केवल अक्षरसंक्षिप्त अथवा तो अक्षरश्रेणीके द्वाप्यन्तमें कोई अन्तर नहीं पड़ सकता है। फिर भी द्वाप्यन्त परदेष्ट होता है इसी व्यापके अनुसार ही यहाँ अक्षरसंक्षिप्तसे द्वाप्यन्तको समझना चाहिये। इससे जहाँ कहीं द्वाप्यन्तसे द्वाप्यन्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहाँ द्वाप्यन्तमें प्रहण देने गये अक्षरोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है द्वाप्यन्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नोक्तप्रमाणसे अतिशीघ्र समझमें आ जायगी—

११ ११ के वर्गमूख	बारहवाँ	दशवीं	आठवाँ	छठा	तीसरा	दूसरा	विधिमेंसूची
पचम्वतार द्वारा माने गये संकेतोंके	१२८	६४	३२	१६	८	४	२
११ ११ = ११ के निरिक्त वर्गमूख	१११	११	११	११	११	११	बारहवें वर्गमूखसे नीचे जाकर
	२	२	२	२	२	२	

बारहवें वर्गमूखसे नीचे आकर

पुणो दोपुदविमिच्छमसुविमिह सेत्रिनिदियवगगपूलेण एगरूव खंडिय तत्थ एगखंड मवपिदे पडमपुनविमिच्छाइद्विदम्बस्स विमसुमग्रणी होदि । पुणो ताए विमसुमग्रणीए अगसेदिमिह भागे हिदे वि पडमपुदविमिच्छाइद्विदम्बस्स अवहारकालो भागच्छदि ।

पुणो सपहि सामण्यअवहारकालमेचछपुदविदम्बमस्सिउण पुदवि पठि अवहार कालपक्षवसलागाओ आणिज्जवि । तत्थ ताव विदियपुदविमिच्छिउण उप्पण्यअवहार कालपक्षवसलागाओ अणिस्सामो । तं अहा— विदियपुदविमिच्छाइद्विदम्बेण पडमपुदवि मिच्छाइद्विदम्बमवहारिय लब्धमेचेसु विदियपुदविमिच्छाइद्विदम्बेसु सामण्यअवहारकालमेच विदियपुदविदम्बमि मवपिदेसु एगं पडमपुदविमिच्छाइद्विदम्बपमाणं लब्धमह, एगा अवहारकालपक्षवसलागा । पुणो वि एचियमेचेसु विदियपुदविमिच्छाइद्विदम्बेसु समु दिरेसु पडमपुनविमिच्छाइद्विदम्बपमाणं लब्धमह, विदिया अवहारकालपक्षवसलागा च । एव पुणो पुमो कीरमाणे सदीए अयंखेज्जमागमेचाओ अवहारकालपक्षवसलागाओ

पृथिवीका अवहारकाल ।

अनन्तर अग्रेजीके द्वितीय बर्गमूलसे एकरूपको सन्धि करके जहां ओ एक संज्ञा लब्ध भावे उसे पूर्णक से पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि विष्कमसूचीमेंसे घटा देने पर पक्षी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यकी विष्कमसूची होती है । अनन्तर उस विष्कमसूचीका अग्रेजीमें माग देने पर पक्षी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका अवहारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1 + 120 = \frac{1}{120} \times \frac{10}{18} - \frac{1}{120} = \frac{199}{120}$ पक्षी पृथिवीकी मिथ्याएदि

विष्कमसूची । $9 \times 199 = \frac{199}{120} = \frac{199 \times 100}{120} = \frac{19900}{120}$ पक्षी पृथिवीका मिथ्याएदि

अवहारकाल ।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीबार यह पृथिवीको द्रव्यका भाग्य लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रत्येक अवहारकाल शब्दाकार होते हैं । उनमें पहले दूसरी पृथिवीका भाग्य लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रत्येकशब्दाकारका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है—दूसरा पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यसे पक्षी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यको व्यक्त करके आ लब्ध भावे तन्मात्र स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र (सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनी बार स्थापित) दूसरी पृथिवीसंख्या द्रव्यमेंसे समुचित करने पर पक्षीबार प्रथम पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण जाता है और अवहारकालमें एक प्रत्येकशब्दाकार उत्पन्न होती है । फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यके समुचित कर देने पर दूसरीबार प्रथम पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहारकालमें दूसरी प्रत्येकशब्दाकार प्राप्त होती है । इतनेप्रकार पुनः पुनः करने पर अग्रेजीके

इद्विद्वत्स अवहारकालो होदि । पुनो तन्दि च चउपुडविमिच्छाइद्विद्वत्समश्रुमिदि
एगरुच सेदिछइवगमूलेण रंदिछग तत्थ एगउंइमवमिदे विदिय-तदिय-चउरथ-यचम
पुडविमिदिरिषसेसविपुडविमिच्छाइद्विद्वत्सम विकर्तममर्इ हादि । पुनो ताए विकर्तममर्इए
अगसेदिमिदि मागे दिइ विपुडविमिच्छाइद्विद्वत्सम अवहारकालो हादि । पुनो सेदि
तदियवगमूलेण एगरुच रादिय तत्थ एग रंदि तिइ पुडवीण विकर्तममश्रुमिदि अश्रुमिदे
पडम-सचमपुडवीण मिच्छाइद्विद्वत्सम विकर्तममर्इ आगच्छदि । पुनो ताए विकर्तममर्इए
अगसेदिमिदि मागे दिइ पडम-सचमपुडवीण मिच्छाइद्विद्वत्सम अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अन्तर उस विष्कम्भस्त्रीका अग्रमेढीमें माग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिथ्याद्यपि
द्रव्यका व्यवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ दूसरी तीसरी और चौथी पृथिवीके}$$

$$\text{बिना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कम्भस्त्री । } 1 + 12 + \frac{11}{12} = \frac{1}{12} \frac{12 + 11}{12} = \frac{1}{12} \frac{23}{12}$$

पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका व्यवहारकाल ।

अन्तर अग्रमेढीके छठे वर्गमूलसे एक कणको नष्टित करके वहाँ जो एक लंब छद्म
भावे उसे वहाँ पूर्वोक्त चार पृथिवीसबन्धी मिथ्याद्यपि विष्कम्भस्त्रीमेंसे घटा देने पर
दूसरी तीसरी चौथी और पाँचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यपि
द्रव्यकी विष्कम्भस्त्री होती है । अन्तर उस विष्कम्भस्त्रीका अग्रमेढीमें माग देने पर पूर्वोक्त
तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यपि द्रव्यका व्यवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ पहली छठी और सातवीं पृथिवी}$$

$$\text{सबन्धी मिथ्याद्यपि विष्कम्भस्त्री । } 1 + 12 + \frac{11}{12} = \frac{1}{12} \frac{12 + 11}{12} = \frac{1}{12} \frac{23}{12} \text{ पूर्वोक्त}$$

तीन पृथिवियोंका व्यवहारकाल ।

अन्तर अग्रमेढीके तृतीय वर्गमूलसे एक कणको नष्टित करके वहाँ जो एक लंब छद्म
भावे उसे वहाँ पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्याद्यपि विष्कम्भस्त्रीमेंसे घटा देने पर पहली
और सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपि द्रव्यकी विष्कम्भस्त्री आती है । अन्तर उस विष्कम्भस्त्रीका
अग्रमेढीमें माग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपि द्रव्यका व्यवहारकाल
म्यता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्या-}$$

$$\text{द्यपि विष्कम्भस्त्री । } 1 + 12 + \frac{11}{12} = \frac{1}{12} \frac{12 + 11}{12} = \frac{1}{12} \frac{23}{12} \text{ पहली और सातवीं}$$

- पक्षमेव अवहारकालमलागात्रो आणेष्यन्वात्रा । गवरी विसेमा सेन्द्रमवगममूलगुणिद
 - पत्रमपुत्रिविक्त्रममूर्ध्व सामण्यअवहारकालमिद् भाग हिद् तदियपुत्रविअवहारकाल
 - पक्षमवगमलागात्रो आगच्छति । एदात्रो पुत्रिच्छदोण्ड विरलपाण पस्से विरलिय सामण्य
 - अवहारकालमस्तदियपुत्रविद्व्य समस्त कुरिय दिण्णे ऋव पठि पद्धमपुत्रविद्व्यपमाग
 पावदि । पत्रमपुत्रिविक्त्रममूर्ध्वगुणिदमन्त्रिअनुमवगममूलण सामण्यअवहारकालमिद् भागे
 हिद् चउत्थपुत्रविअवहारकालपक्षमेवमलागात्रो आगच्छति । तात्रो वि पुत्रिच्छदोण्ड
 विरलपाण पस्म विरलिय सामण्यअवहारकालमेवचउत्थपुत्रविमिच्छाद्विद्व्य समस्त

पृथिवीकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ से आना चाहिये । केवल इनकी विशेषता है कि
 जगत्प्रतीक रूप से समस्त से प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कर्मस्वीको गुणित करके जो
 सत्य भावे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके
 अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \times \frac{293}{120} = \frac{293}{120}, 32340 - \frac{293}{120} = \frac{6442}{120} \text{ तीसरी पृथिवीके } \\ \text{आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. म. श. ।}$$

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थोंसे पूर्वोक्त दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके
 और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अव
 हारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका समान अण्ड करके वेचरूपसे दे देने पर
 विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीकेवर्गीय मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण
 प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 32340 \times \frac{1}{120} = 269.5 \text{ प्र. म. श.}$$

$$269.5 \times 120 = \frac{28340}{120} = 236.16 \text{ प्र. म. श.}$$

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कर्मस्वीसे जगत्प्रतीक के प्रथम वर्गीयमूलके गुणित करके
 जो सत्य भावे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न
 हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} 120 \times \frac{120}{120} = \frac{120}{120}, 32340 - \frac{120}{120} = \frac{28340}{120} \text{ चौथी पृथिवीके } \\ \text{आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल सामकार्थ ।}$$

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थोंकी पूर्वोक्त
 तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
 अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
 समान अण्ड करके वेचरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

सम्पत्ति । तं चहा—सुदिवारस्यग्गमूलगुणितपदमपुदनिस्सिलंमसुचिमेवद्वारेण गत्तुं न्नि
एगा अवहारकालपञ्चमेयमलागा लम्भदि तो सामण्यअवहारकालम्हि केचियाआ लमामा
त्ति पदमपुनविस्सिन्तुंमसुचिगुणितदसद्विचारस्यग्गमूलण सामण्यअवहारकालम्हि भाग हिदु
विदिपपुदनिद्वारमस्मिळुण्णपस्सुवमलागाओ मग्गाओ जागन्ति । एदाआ पुप
सामण्यअवहारकालस्म पस्सु विरालिय सामण्यअवहारकालमचिदिपपुनिरिद्वार समसुई
करिय दिण्ण रूप एहि पन्मपुनविमिन्ताद्विद्वारपमाण हाऊण पावदि । एव च
सामण्यअवहारकालमेवतादिपादिपंषुपुनिरिद्वाराणि अस्मिळ्ण तांति तामि पुदवीम

असंख्यतर्के मापमान अवहारकाल प्रसेपशब्दाकार्य प्राप्त होती है । जैसे— जगन्मोक्षीके बारहव
वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यदि विच्छेदमूर्च्छीका गुणित करके जो छत्र व्यये
तन्मात्र स्थान आकर यदि एक अवहारकाल प्रसेपशब्दागा प्राप्त होगी तो सामान्य
अवहारकालमें कितनी प्रसेपशब्दाकार्य प्राप्त होगी इसप्रकार रैराशिक करके प्रथम पृथिवी
संबन्धी मिथ्याद्यदि विच्छेदमूर्च्छीसे गुणित जगन्मोक्षीके बारहवें वर्गमूलका सामान्य अवहार
कालमें भाग देने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई संपूर्ण प्रसेप शब्दाकार्य
आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}, \frac{३२७३८}{१} - \frac{१९३}{३२} = \frac{१}{१२३} \frac{४८७३}{१२३} \quad \text{दूसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकाल शब्दाकार्य ।}$$

इन अवहारकाल प्रसेपशब्दाकार्योंको पुनश्चरूपसे सामान्य अवहारकालके पाठमें
विरचित करके और उस विरचित राशिके प्रत्येक पङ्क्त ऊपर सामान्य अवहारकालका
अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उसीवार स्थापित दूसरी पृथिवीके
मिथ्याद्यदि द्रव्यको समान कण्ट करके देपरूपसे दे देने पर विरचित राशिके प्रत्येक पङ्क्त
प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—ऊपर जो १४३३१११ प्रसेप अवहारकाल आया है उसका विरचन करके
विरचित राशिके प्रत्येक पङ्क्तके प्रति सामान्य अवहारकालका अर्थात्
सामान्य अवहारकालगुणित तिसीय पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यदि द्रव्यको
देपरूपसे दे देने पर प्रत्येक पङ्क्तके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यदि
द्रव्य प्राप्त होता है जो सामान्य अवहारकालगुणित तिसीय पृथिवीके
द्रव्यमें उक्त प्रसेप अवहारकालका भाग देने पर भी आ जाता है । यथा—
 $३२७३८ \times १३३८४ = ५३३८७०९१२, ७३३८७०९१२ - \frac{१}{१२३} \frac{४८७३}{१२३}$

$$= ५८८१३ प्र पु मि द्रव्य$$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालका अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण
हो उसीवार तीसरी भादि पाँच पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका आश्रय लेकर उन सब

पञ्चमप्रहरकालमन्तागात्रा आपयन्वात्रा । जशरि विसमा मन्दिदमवगमूलगुणिद
 पञ्चमपुत्रिविक्कममगुर्द्वे मापण्यप्रहारकालमिह भाग द्विद तदियपुत्रिविप्रहारकाल
 पञ्चममन्तागात्रा प्रागञ्जति । उदात्रा पुम्बिह्वण्ड विरन्नाण पस्म विरलिय सामण्य
 अरहारकालममदिपपुत्रिविद्व्य ममगड करिय दिण्य २३ पडि पञ्चमपुत्रिविद्व्यपमाग
 पारि । पञ्चमपुत्रिविक्कमममिगुणिमन्दिदमवगमूलगुण सामण्यप्रहारकालमिह भाग
 द्विद मउम्यपुत्रिविप्रहारकालपञ्चममन्तागात्रा प्रागञ्जति । तात्रा वि पुम्बिह्वतिण्ड
 विरन्नाण पस्म विरलिय सामण्यप्रहारकालमममउपपुत्रिविद्व्यमिद्विद्व्य ममगड

पुत्रिविर्षीका मयहारकाल प्रत्यक्षकालार्थे वा जानी ग्राह्ये । केवल इतनी विरोधता है कि
 जगधेष्ठीक इत्ये पणमूलम प्रथम पणिविर्षीका मिष्यादृष्टि विरन्मन्धीको गुणित करके ओ
 सस्य भापे उतका सामान्य अरहारकालमें भाग २३ पर नीचरी पुत्रिविर्षीका आश्रय करके
 अरहारकाल प्रत्यक्षकालार्थे वा जानी है ।

$$\text{उदाहरण—} \times \frac{103}{100} = \frac{103}{100}, 3209 - \frac{103}{100} = \frac{14}{100} \text{ नीचरी पुत्रिविर्षीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. अ. १ ।

इन प्रत्येक अरहारकाल शालाकाभोंको पूर्वोक्त दोनों विरसनोंके पासमें विरक्षित करके
 मीर विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अरहारकालमात्र अथवा सामान्य अर
 हारकाल गुणित मन्दी पदिविर्षीका मिष्यादृष्टि द्रव्यका समान मन्दी करके देवद्वयसे दे देने पर
 विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पणिविर्षीकामन्दी मिष्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण
 प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 3 \times 103 = 309, 3209 - 309 = 2899$$

$$2899 \times \frac{103}{100} = \frac{298597}{100} = 2985.97 \text{ प्र. वि. द्रव्य}$$

प्रथम पुत्रिविर्षीका मिष्यादृष्टि विरन्मन्धीके जगधेष्ठीके प्रथम पणमूलक गुणित करके
 ओ सस्य भाप उतका सामान्य अरहारकालमें भाग २३ पर नीचरी पुत्रिविर्षीके आश्रयसे उत्पन्न
 हुई अरहारकाल प्रत्यक्षकालार्थे वा जानी है ।

$$\text{उदाहरण—} 103 \times \frac{103}{100} = \frac{10609}{100}, 3209 - \frac{10609}{100} = \frac{21481}{100} \text{ नीचरी पुत्रिविर्षीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रत्येक अरहारकाल शालाकाभे ।

नीचरी पुत्रिविर्षीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रत्येक अरहारकाल शालाकाभोंको पूर्वोक्त
 मीर विरक्षित राशिके पासमें विरक्षित करके मीर विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
 अरहारकालमात्र अथवा सामान्य अरहारकालगुणित नीचरी पुत्रिविर्षीके मिष्यादृष्टि द्रव्यको
 प्रमाण मन्दी करके देवद्वयसे दे देने पर विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पुत्रिविर्षीके

करिय दिण्णे रुक्कं पट्टि एह पडमपुडविद्वन्पमान हादि । पुणो पडमपुडविद्विक्कमस्यपि गुणिदसेदिहउमवग्गमूलेण सामण्यअवहारकासम्हि भागे हिदे पंचमपुडविपक्खेवअवहार कासो आगच्छदि । उ पुण्णिहउपचण्हं विरलपाण पम्मे विरलिय सामण्यअवहारकासमेत्तपंचम पुडविद्वन् समल्लं करिय दिण्णे रुक्कं पट्टि पडमपुडविमिज्जाइदिद्वन् पावदि । पुणो पडमपुडविद्विक्कमस्यपिगुणिदसेदिउदियवग्गमूलेण सामण्यअवहारकासम्हि भाग हिद उहउपुरतिपक्खेवअवहारकासो आगच्छदि । एद पि पुण्णिहउपचण्हं विरलपाण पामे विरलिय सामण्यअ

मिध्वाद्यदि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२.७३ / \times ४ ०९ = १३४२.७७२८$$

$$१३४२.७७२ / - \frac{२३२१४४}{१९३} = ०.८१९ \text{ म पु मि द्रव्य}$$

अन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंमसूचीसे अग्रेजीके छठे वयमूलको गुणित करके जो लब्ध अथवा उम्का सामान्य अवहारकासमें माग देने पर पांचवी पृथिवीके आध्रयसे उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकास शक्त्याप्य जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२ \times \frac{१९३}{१८} = \frac{१९३}{४}, ३२.७३८ + \frac{१९३}{४} = \frac{१३१.०७२}{१९३} \text{ पांचवी पृथिवीका}$$

आध्रय करके उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकासकाप्य ।

पांचवी पृथिवीके आध्रयसे उत्पन्न हुई उक्त प्रसेप अवहारकास शक्त्याप्यको पूर्वोक्त चारों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके अत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकासमात्र जर्पात् सामान्य अवहारकासगुणित पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान जड करके देखरूपसे वे देखे पर विरलित राशिके अत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिध्वाद्यदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२.७३८ \times २.०४८ = ६७१.८८९४$$

$$६७१.८८९४ + \frac{१३१.०७२}{१} = ८०२.९६१ \text{ म पु मि द्रव्य}$$

अन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंमसूचीसे अग्रेजीके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध अथवा उम्का सामान्य अवहारकासमें माग देने पर छठी पृथिवीके आध्रयसे उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकास शक्त्याप्य जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ६४ \times \frac{१९३}{१८} = \frac{१९३}{२}, ३२.७३८ + \frac{१९३}{२} = \frac{३५५.३३}{१९३} \text{ छठी पृथिवीके}$$

आध्रयसे उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकास शक्त्याप्य ।

छठी पृथिवीके आध्रयसे उत्पन्न हुई उक्त प्रसेप अवहारकास शक्त्याप्यको पूर्वोक्त पांच विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके अत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकासमात्र जर्पात् सामान्य अवहारकास गुणित छठी पृथिवीके मिध्वाद्यदि द्रव्यको

हारकालमेचछट्टपुवविदम्बं समखंडं करिय दिण्णे रूपं पठि एदं पि पढमपुवविमिच्छाइडि
दम्पपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुवविमिच्छाइडिविक्खंसंमसुपिगुमिदसेडिविदियनग्गमूलेण
सामण्यभवहारकालमिह भागे हिइ सचमपुवविपक्खेवभवहारकालो आगच्छदि। तं
पुविल्लल्लं विरलणाण पासे विरलिय सामण्यभवहारकालमेचसचमपुवविमिच्छाइडिदम्बं
समखंडं करिय दिण्णे रूपं पठि पढमपुवविमिच्छाइडिदम्पपमाणेण पावदि। एदाओ सच
वि विरलणाओ वेत्तण पढमपुवविमिच्छाइडिभवहारकालो होदि।

तेसिं सचन्ह पि अवहारकालाणं मेलावणविहाणं युचदे। त जहा— सचमपुववि
पक्खेवभवहारकालो सगपमाणेण एको हवदि। सचमपुवविपक्खेवभवहारकालपमाणेण
छट्टपुवविपक्खेवभवहारकालो सेडितवियवग्गमूलमेवो हवदि। पंचमपुवविपक्खेवभवहार

समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके
मिध्याहृदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times १०२४ = ३३५५४४३२,$$

$$३३५५४४३२ \div \frac{३५५३३}{१९३} = ९८१३ \text{ प्र पृ मि प्र}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी मिध्याहृदि विष्कम्भरेखीसे जगभेरीके वृत्ते बगमूलको
गुणित करके जो ऊपर दिये गये सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर सातवीं पृथिवीके
आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल दाखलाव आती है।

$$\text{उदाहरण—} १२८ \times \frac{१९३}{१२८} = १९३, ३२७६८ - १९३ = \frac{३२७६८}{१९३} \text{ सातवीं पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल दाखलाव।

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल दाखलावोंको पूर्वाप
छों विरलनोंके पासमें विरलित करके भीर विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित सातवीं पृथिवीके मिध्याहृदि द्रव्यको
समान लच्छ करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके
मिध्याहृदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times ५१२ = १६७७७२१६,$$

$$१६७७७२१६ - \frac{३२७६८}{१९३} = ९८८१३ \text{ प्र पृ मि प्र}$$

इन सातों विरलनोंको ग्रहण करके भी प्रथम पृथिवीके मिध्याहृदि द्रव्यका अवहार
काल होता है। भागे उन्हीं सातों अवहारकालोंके मिश्रणकी विधिक कथन करते हैं। वह
इतमकार है—

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल अपने प्रमाणसे एक है
(११११ = १ विरलक) सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपक अवहारकालकी अपेक्षा छठी पृथिवीका



कालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालवभाणेण सदितदियवग्गमूलमार्दि काळण जाव
छट्ठमवग्गमूलो पि चउण्ह वग्गार्ण अण्णोण्णकामासेजुप्पण्णरासिमेचो हवदि । चउत्त
पुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारवभाणेण सेदितदियवग्गमूलमार्दि
काळण जाव अट्ठमवग्गमूलो पि ताव छण्ण वग्गाण अण्णोण्णकामासेजुप्पण्णरासिमेचो
हवदि । सदियपुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारवभाणेण सदितदिय
वग्गमूलमार्दि काळण जाव दसमवग्गमूला पि ताव अट्ठण्ह वग्गार्ण अण्णोण्णकामासेजु-
प्पण्णरासिमेचो हवदि । विदियपुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहार
वभाणेण सदितदियवग्गमूलपुटुदि दसण्ह वग्गाणमण्णोण्णकामासेजुप्पण्णरासिमेचो हवदि ।
सामण्णवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालवभाणेण पठमपुटविपक्तेवप्रवहार
गुणिदसेदिविदियवग्गमूलमेचो हवदि । पुणो एदामो सप्परसत्तागाओ एगई करिय
सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालं गुणिदे पठमपुटविमिच्छाइड्डिवप्रवहारकालो होदि ।

अवहारकाल अग्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है ($1^3 2^3 3^3 = 2$) पाँचवीं पृथिवीका प्रक्षेप
अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
छेकर छठे वर्गमूलपर्यन्त जाव वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो सम्भाव है
($1^3 2^3 3^3 = 4$) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार
कालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे छेकर आठवें वर्गमूलपर्यन्त जाव वर्गोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो सम्भाव है ($1^3 2^3 3^3 = 6$) तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप
अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
छेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त जाव वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो सम्भाव है
($1^3 2^3 3^3 = 8$) । दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप
अवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे छेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे
जो राशि उत्पन्न हो सम्भाव है ($1^3 2^3 3^3 = 12$) । सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके
प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्याद्यदि विन्कमसूचीसे
अग्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो व्युत्पन्न होते वतना है ($12 \times 12 = 144$) ।

अतएव इन सर्व शब्दकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार
कालके गुणित करने पर पक्षी पृथिवीका मिथ्याद्यदि अवहारकाल जाता है :

$$\text{उदाहरण—} 1 + 2 + 4 + 6 + 8 + 12 + 144 = 177$$

$$\frac{177}{12} \times 12 = \frac{2124}{12} \text{ म पु मि मव}$$

अहवा ताहि चेष सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढविषामण्णविक्खंसमसूचीहि
अण्णोण्णमत्थाहि गुमिद्वेत्तिविदियवग्गमूलमोवहिय सेडिम्हि मागे हिदे पढमपुढवि-
मिच्छाडिअवहारकालो आगच्छदि । अहवा छण् पुन्वीण सचमपुढविपक्खवअवहार-
कालपमाणेय कयसप्पसलागाहि सडिभिदियवग्गमूलमोवहिय अण्णाण्णमत्थपढमपुढवि-
सामण्णनेरइयविक्खंसमसूचीहि गुणिय अगमेदिम्हि मागे हिदे सम्भत्थुप्पण्णपक्खेवअवहार-
कालो आगच्छदि । तेण सम्भत्थुप्पण्णअवहारकालेण सामण्णनेरइयअवहारकालम्हि मागे
हिदे अ मागसदं तेण सामण्णनेरइयविक्खंसमसूची गुमिवे पुणो त रासि तेमेव गुमगारेण,
रवाहिएणोवहिय जगसेदिम्हि मागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि ।

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंससूची नीर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विष्कंससूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो सध्य भावे उससे अगभेणीके द्वितीय वर्ग,
मूलकी गुणित करके जो सध्य भावे उससे एकत्रित की हुई पूर्वोक्त शलाकाओंसे अपघटित
करके जो सध्य भावे उसका अगभेणीमें भाग देने पर पड़ती पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीव-
राशिसंवन्धी अवधारकाळ आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{193}{12} \times 2 = \frac{193}{6}, \quad 120 \times \frac{193}{6} = 386, 386 + 244 = \frac{193}{12}$$

$$31134 + \frac{193}{12} = \frac{3736900}{193} \text{ म. पु. मि. अ.}$$

अथवा सातवीं पृथिवीके प्रमेय अवधारकाळके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके
आम्रसे उत्पन्न हुए प्रमेय अवधारकाळकी जो सर्व शलाकाएं की गई उनसे अगभेणीके
द्वितीय वर्गमूलको अपघटित करके जो सध्य भावे उससे प्रथम पृथिवी नीर सामान्य
नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंससूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिसे गुणित
करके जो सध्य भावे उसका अगभेणीमें भाग देने पर सचच उत्पन्न हुए प्रमेय अवधारकाळका
प्रमाण आता है । सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रमेय अवधारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके
अवधारकाळके भाजित करने पर जो भाग सध्य भावे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी
विष्कंससूचीके गुणित करने पर अनन्तर इस गुणित राशिसे एक अधिक उली पूर्वोक्त गुण
करने अपघटित करके जो सध्य भावे उसका अगभेणीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका
मिथ्यादृष्टिसंवन्धी अवधारकाळ आता है ।

$$\text{उदाहरण—} 120 - 33 = \frac{120}{33}, \quad 2 \times \frac{193}{33} = \frac{386}{33}, \quad \frac{120}{33} \times \frac{386}{33} = \frac{386}{33}$$

$$\frac{31134 - 386}{33} = \frac{30748}{33} \text{ प्रथम अवधारकाळ ।}$$

$$30748 + \frac{30748}{33} = \frac{103}{33}, \quad 2 \times \frac{103}{33} = \frac{386}{33}, \quad 2 + \frac{193}{33} = \frac{244}{33}$$

अथ पदमपुडविमिच्छाहृदि सामान्यवेरूपविकृतमसूत्रमावृद्धिदे एगरूपमेग-
रूपस्त अर्सेजेदिमागो आगच्छदि । तस्त एगरूपार्सेजेदिमागस्त को पडिमागो ?
किंनृपसेदिवारसवगमसूत्रगुणितपदमपुडविमिच्छाहृदि पडिमागो । पुनो एदाओ दो
रासीओ पुष मन्त्र इविम तेरासिय कायम् । त अहा—सामान्यवेरूपरासिमिह अदि
एगरूप एगरूपस्त अर्सेजेदिमागा च पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यवेरूपमवहारकासमेवसामान्यवेरूपमिच्छाहृदिरामिमिह किं लमामो चि सरि
मवविम सामान्यवेरूपमिच्छाहृदिमवहारकासेग एगरूपमेगरूपस्त अर्सेजेदिमागं गुप्तिदे
पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो आगच्छदि ।

$$\frac{३८९}{१३} - \frac{२५३}{१३} = \frac{१३६}{१३} \quad ३५३११ - \frac{३८९}{२५३} = \frac{८८८९८}{१९३} \text{ अ प मि. अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विष्कम्भसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यातर्वा भाग छप्प आता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{२-१९३}{१२८} = \frac{१-१३}{१२८}$$

शुंका—उस एकके असंख्यातर्वा भागके छानेके किये प्रतिमाप क्या है ?

समाधान—अग्रेकीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसं गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या-
दृष्टि विष्कम्भसूची एकके असंख्यातर्वा भागके छानेके प्रतिमाप है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{१३} = \frac{१९३}{१३} \text{ प्रतिमाप ।}$$

अन्तर इन दो राशिओंकी घुसककपसे मध्यमें स्थापित करके त्रिपक्षिक करना
चाहिये । वह इसप्रकार है—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंख्या मिथ्या-
दृष्टि जीवोका अवहारकास यदि एक और एकका असंख्यातर्वा भाग प्राप्त होता है तो सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकासमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकासगुणित
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सहस्र राशि पंध और
हरकप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि का अपवर्तन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अवहारकाससे एक और एकके असंख्यातर्वा भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीकी
मिथ्यादृष्टि जीवराशि का अवहारकास आता है ।

उदाहरण—यहाँ १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है १२१
पञ्चराशि है और सामान्य अवहारकास ३२७९८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२
इच्छादृष्टि है । इसलिये इच्छादृष्टि और पञ्चराशि का गुण करके ओ छप्प ब्यसे इसमें प्रमाण
राशि का भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकास आ जाता है । यथा—

$$\frac{३२७९८ \times १३१०७२ \times २५३}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८८८९८०८}{१९३} \text{ अ प मि. अ}$$

अहमा पदमपुदविमिच्छाद्विअवहारकालो अण्णेण पयारेण आभिअदे । त अहा-
 छट्टमपुदविअवहारकाल विरलेऊण एकेऊस रुवस्स अगसेडिं समखंड करिय दिण्णे रूव
 पडि छट्टमपुदविमिच्छाद्विदण पावदि । पुणा तस्य एगरूपपरिदछट्टपुदविदण सत्तम
 पुदविदण्णेण भागे द्विदे सेडितदियवग्गमूलमागच्छदि । त विरलेऊण छट्टपुदविदण
 समखंड करिय दिण्णे रूव पडि सत्तमपुदविदण पावदि । त कमेण उवरिमविरलण
 छट्टमपुदविदणस्सुवरि सुण्णट्ठाण मोत्तण दिण्णे रूव पडि छट्ट सत्तमपुदविदणपमाण
 पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेचट्ठाण गत्तुण एगरूपस्म परिहाणी च लभदि । पुणे
 उवरिमअवतरछट्टपुदविदण हेट्ठिमविरलणाए समखंड करिय दिण्णे रूव पडि सत्तम
 पुदविदणपमाण पावदि । त येत्तण उवरि सुण्णट्ठाण मोत्तण छट्टमपुदविदणस्सुवरि दिण्णे
 हेट्ठिमविरलणमेचट्ठा पडि छट्ट सत्तमपुदविदणपमाण होदि हेट्ठिमविरलणरूवाहिय

हर भीर अशक्य सहाय्य अपनयन करने पर उक्त उद्धारणच निम्नरूप होता है—

$$\frac{2}{192} \times 3125 = \frac{6250}{192} \text{ म प म अ}$$

अथवा प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अथहागकाल दुसरे प्रकारसे साते है । यह
 इसप्रकार है— छठवीं पृथिवीके अथहागकालका विरलित करके भीर उस विरलित राशिसे प्रत्येक
 एकके प्रति अगमेणीको समान लंब करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक
 एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अतस्तत् पक्षां एक
 विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर
 अगमेणीका तीसरा पगमून मध्य जाता है । भागे उस लघ्व राशिसे विरलन करके भीर
 विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान लंब करके देयरूपसे दे देने
 पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है । उस अथस्तन विरलनके प्रति
 प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर द्रव्य स्थानको
 (उपरिम विरलनमें जिस स्थानका द्रव्य अथस्तन विरलनमें दिया है उसे) छठवर क्रमसे
 दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं भीर सातवीं पृथिवीका द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है
 भीर एक अधिक अथस्तन विरलनमात्र स्थान आकर एककी द्वावि प्राप्त होती है । पुनः उपरिम
 विरलनके अन्त्यार स्थान (अर्थात् सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके भागेके स्थान)
 के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यका अथस्तन विरलनमें समान लंब करके देयरूपसे दे देने
 पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसे सत्त उपरिम
 विरलनमें द्रव्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अथस्तन विरलनमें दिया है उसे) छठवर
 छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनका अथस्तन विरलनमें न स्थानोंके प्रति
 छठवीं भीर सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है भीर उपरिम विरलनमें एक अधिक

अथवा पदमपुढविमिक्षितमसर्गए सामान्यनेरइयविक्षितमसर्गमोवद्विदे एगरूबमेग-
रूबस्स असंखेजदिमागो भागज्जदि । तस्स एगरूवासंखेजदिभागस्म को पडिमागो ?
किंअसंखेजहारसवग्गमूसगुणिइपदमपुढविमिक्षितमसर्गो पडिमागो । पुणो एदामो दो
रासीआ पुण मस्से इयिय तेरासिय कयअ । त अहा— सामान्यनेरइयरासिम्हि अदि
एगरूब एगरूबस्स असंखेजदिमागो अ पदमपुढविमिक्षितमसर्गमोवद्विदेमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यनेरइयअवहारकासमेवसामान्यनेरइयमिच्छाइहिरामिम्हि किं छामामो सि सरित्त
मवयिय सामान्यनेरइयमिच्छाइहिववहारकासेव एगरूबमेगरूबस्स असंखेजदिमागो गुणिदे
पदमपुढविमिक्षितमसर्गमोवद्विदेमवहारकासो आयज्जदि ।

$$\frac{३८९}{११} = \frac{२५१}{११} - \frac{३८९}{२५१}, \quad २५१३९ = \frac{३८९}{२५१} = \frac{८१८९०८}{१९३} \text{ प्र पू दि अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विष्कम्भसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यासर्ग भाग ज्ञप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} = \frac{२५१}{१९३} = \frac{१९३}{१९३}$$

वृत्का—उस एकके असंख्यासर्ग भागके जानेके द्विये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—जगमेजीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या
दृष्टि विष्कम्भसूची एकके असंख्यासर्ग भागके जानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{११} = \frac{१९३}{११} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अन्तर इत हो राशिपोंको धृक्करपते मध्यमें स्थापित करके त्रैपक्षिक करना
चाहिये । वह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंख्याकी मिथ्या-
दृष्टि जीर्णोन्मूलन अवधारकाक यदि एक और एकका असंख्यासर्ग भाग प्राप्त होता है तो सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवधारकाकमात्र सर्वात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवधारकाकगुणित
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा इसप्रकार सरल राशि अर्थात् और
इतक सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अपवर्तन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अवधारकासते एक और एकके असंख्यासर्ग भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवधारकाक ज्ञप्त है ।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमावराशि है १२१
फलराशि है और सामान्य अवधारकाक ३२७१ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२
इच्छराशि है । इसद्विये इच्छराशि और फलराशिका गुण्य करके जो ज्ञप्त जाने वसमें प्रमाण
राशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवधारकाक ज्ञप्त होता है । यथा—

$$\frac{३२७१ \times १३१०७२}{१३१०७२ \times १२१} = \frac{८१८९०८}{१२१} \text{ प्र पू मि अ}$$

पचमपुदविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि । पुनो छट्ठ-सचमपुदविमिच्छाद्विदम्भदि पचम
पुदविमिच्छाद्विदम्भदि माग दिदे सेदितदियवग्गमूलादीण हेट्ठा चउण्हं मग्गान
अप्पोप्पन्नासेशुप्पणरासिं स्त्वाहियसेदितदियवग्गमूलण खंदिदेयखड्ढमागच्छदि । पुनो
चिं तं विरल्लम तवरिमविरल्लमेगस्सवपरिदपचमपुदविदम्भ समखंढ करिय दिण्णे रूप
पदि छट्ठ-सचमपुदविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि । पुणा तम्ववरिमविरल्लमदि सुप्पण्णान
मात्तण पचमपुदविमिच्छाद्विदम्भस्सुवरि परिवाडीण पक्खिसे हेट्ठिमविरल्लमेचउवरिम
विरल्लमरूवेसु पचम छट्ठ-सचमपुदविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि एगस्सपरिहाणी च
उत्तमदि । पुनो तदणत्तरउवरिमरूवोवरिद्विदपचमपुदविमिच्छाद्विदम्भ हेट्ठिमविरल्लमाए
समखंढ करिय दिण्णे रूप पदि छट्ठ सचमपुदविमिच्छाद्विदम्भ पावेदि । पुनो तम्व
वरिमविरल्लमाए सुप्पण्णान मोत्तण हेट्ठिमविरल्लमेचपचमपुदविमिच्छाद्विदम्भ पक्खिसे
रूप पदि पचम छट्ठ सचमपुदविमिच्छाद्विदम्भ पावेदि विदियरूपपरिहाणी च उत्तमदि ।
एवं पुनो पुनो कायस्स जाव उवरिमविरल्लमा परिसमचोत्ति । एत्थ परिहीनरूपपमाण

एक ऊपर जगमेणीको समान भन् करके देयकपस वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाँचवीं
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें माग देने पर जगमेणीके तीसरे
वगमूलसे लेकर नौवेंके चार वगोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगमेणीके
एक अधिक नुर्ताय वगमूलसे लक्षित करने पर एक लक्ष प्राप्त होता है । पुनः उसे विरचित करके भी
उस विरचित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरल्लनके एकके प्रति प्राप्त पाँचवीं पृथिवीके
द्रव्यका समान भन् करके देयकपस वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरल्लनमें उस द्रव्यस्थानको (जिसके द्रव्यको
अपस्तन विरल्लनमें बाँटा है उसे) छोड़कर पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर द्रव्यसे
लक्षित करने पर अपस्तन विरल्लनप्रमाण उपरिम विरल्लनके अर्धों पर पाँचवीं छठी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एकवीं हानि प्राप्त होती है ।
पुनः तदनन्तर उपरिम विरल्लनके एक अर्ध पर स्थित पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
अपस्तन विरल्लनके प्रत्येक एकके ऊपर समान भन् करके देयकपसे वे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम
विरल्लनमें उस द्रव्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अपस्तन विरल्लनमें बाँटा है उसे)
छोड़कर अपस्तन विरल्लनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पाँचवीं पृथिवीके द्रव्यमें
मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अर्धकी हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार अचतक
उपरिम विरल्लन सम्पाप्त होये तबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब यहाँ पर हानिकय
विच्छेदोंका प्रमाण मिले है । यह इसप्रकार है—उपरिम विरल्लनमें एक अधिक अपस्तन

मेचद्वायं गंतुं एगरूवस्त परिहाणी लम्भदि । एयं पुणो पुणो कयञ्च आब उवरिम
 बिरल्लणा परिसमचेत्ति । एत्थ पुण हेट्ठिम-उवरिमविरल्लणाओ सरिसाओ चि एममवि रूव
 च परिहायदि । पुणो एत्थ एचिय परिहायदि चि बुद्धदे । त अहा- हेट्ठिमविरल्ल
 रूवाहियमेचद्वाय गंतुं अदि एमरूवपरिहाणी लम्भदि तो उवरिमविरल्लजम्हि किं
 परिहाणि उभावो चि रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलज सेट्ठितदियवग्गमूले भाग हिद एग
 क्कस्त अत्तयेज्जमागा आगच्छति चि किंभूगेगरूव सरिसच्छद्दं काळस तदियवग्ग
 मूलम्हि अबन्दि सेट्ठिविदियवग्गमूल रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलज भन्दि एगमागो
 छद्द-सचमपुडवीमिच्छाद्विद्वयाय मागहारो हादि । तेण अगसेट्ठिम्हि भाग हिदे छद्द
 सचमपुडविमिच्छाद्विद्वयं होदि ।

पुणो सेट्ठिज्जमवग्गमूल बिरल्लिय अगसेट्ठि समत्तं करिय दिज्जे रूव पडि

अवस्तन बिरल्लनमात्र स्थान जाकर एकधी हानि होती है । इसप्रकार अब तक उपरिम
 बिरल्लन समाप्त होवे तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । परंतु यहाँ अवस्तन
 और उपरिम बिरल्लन समान हैं इसलिये एक ही बिरल्लनकी हानि नहीं होती है । फिर भी
 यहाँ इतनी हानि होती है जागे वहीको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—उपरिम बिरल्लनमें एक
 अधिक अवस्तन बिरल्लनमात्र स्थान जाकर यदि एकधी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम
 बिरल्लनमें कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार गैराशिक करके अग्रमेचीके एक अधिक तृतीय
 वर्गमूलसे अग्रमेचीके तृतीय वर्गमूलके माजित करने पर एकके व्यस्तत्वात् बहुतभाग प्राप्त
 होते हैं इसलिये कुछ कम एकको समाप्त छेड़ करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर
 अग्रमेचीके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रमेचीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे माजित करके जो एक
 भाग छप्प व्यक्ते वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृत्ति द्रव्यका मागहार होता है । उस
 मागहारसे अग्रमेचीके माजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृत्ति द्रव्यका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१ २४ १ २४

१ १ २४ बार ।

१ २४ - १९ = ५

५१२ ११२

१ १

१ ११२ - ११२ = १५३६

प्राप्त होती है । इसे उपरिम बिरल्लन २४ मेंसे घटा देने पर ४२३ व्यक्ते हैं । इसका अग्र
 मेचीमें भाग देने पर १ २४- १९=१५३६ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य व्यक्त है ।

अनन्तर अग्रमेचीके छठे वर्गमूलसे विभजित करके और विरल्लित राशिके प्रत्येक

१ गति, ४५ गति पाठ ।

१ गति, अबनानी इति पाठ ।

पचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भपमाण पावेदि । पुणो छद्द सचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भेदि पचम
पुडविमिच्छाशङ्खिदम्भमिह माग दिदे सेद्धितदियवग्गमूलादीण हेट्ठा चठण्हं वग्गान
अण्णाण्णमासेणुप्पण्णरासिं रूपादियसेद्धितदियवग्गमूलण खंडियेयसंडमागच्छदि । पुणो
वि व विरलेट्ठम उवरिमविरलमेगुरूवधरिदपचमपुडविदम्भ समखंड करिय दिप्पे रूव
पडि छद्द-सचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भपमाण पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणमिह सुण्णहाण
मोचूण पचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भस्सुवारे परिवाडीण पक्खिच च हेट्ठिमविरलणमेचठधरिम
विरलमरूपेसु पचम छद्द-सचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भपमाण पावेदि एगरूपपरिहाणी च
सम्भदि । पुणो तदणंतरतवरिमरूपोवरिदपचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भ हेट्ठिमविरलणाए
समखंड करिय दिप्पे रूव पडि छद्द-सचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भ पावेदि । पुणो तमु
वरिमविरलणाए सुण्णहाण मोचूण हेट्ठिमविरलणमेचपचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भमिह पक्खिच
रूव पडि पचम-छद्द सचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्भ पावेदि विदियरूपपरिहाणी च सम्भदि ।
एवं पुणो पुणो कायम्भ जाव उवरिमविरलणा परिसमचेचि । एतच्च परिहीणरूपपमाण

एक ऊपर अगमेणीको समान रूप करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाँचवीं
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणमे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमे माग देने पर अगमेणीके तीसरे
वगमूलसे छेहर नीचेके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे आ राशि उत्पन्न हो उसे अगमेणीके
एक अधिक तृतीय वगमूलसे श्रद्धित करने पर एक बंड माता है । पुनः उसे विरक्षित करके और
उस विरक्षित राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पाँचवीं पृथिवीके
द्रव्यको समान बंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको
अपस्तन विरलनमें बाँटा है उसे) छेड़कर पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर अन्तसे
प्रक्षिप्त करने पर अपस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अर्द्ध पर पाँचवीं छठी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एकही दानि प्राप्त होती है ।
पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक बंड पर स्थित पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
अपस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान बंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम
विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अपस्तन विरलनमें बाँटा है उसे)
छेड़कर अपस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पाँचवीं पृथिवीके द्रव्यमे
मिसा देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और हमारे अर्द्धी दानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार अवतक
उपरिम विरलन समाप्त होये तबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब वहाँ पर दानिरूप
विरलनोंका प्रमाण माने हैं । अब इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अपस्तन

मापिच्छेद । त अथा—इष्टिमविरलपञ्चमरूपादियमचद्वाण गतुञ्ज अदि एगरूपपरिहाणी तन्मरि
तो उठरिमविरलपञ्चमि केवदियरूपपरिहाणि लभामो चि रूपादियदेष्टिमविरलपञ्चम
सेष्टिल्लङ्घनगमसमोऽष्टिय लङ्घ तमिह चेष अनभिदे सेष्टिमिदियवङ्गमूलं तदिपारिपञ्च
वङ्गायमञ्जोप्यञ्जमसेजुप्यञ्जरासिमिह रूपादियमेष्टितदियवङ्गमूल पञ्चिस्त्रिय अवरि
एगमागो तिह पुढवीच अवहारकासो होदि । तेण जगसेष्टिमिह भाग हिदे पञ्चमदि
तिह देष्टिमपुढवीच मिच्छाष्टिद्वन्द्वमागच्छदि ।

पुणो जगमेष्टिमिह अष्टमवङ्गमूल विरलपञ्चम जगसर्द्धि समसर्द्ध करिय दिण्णे ह ।
पडि अठरपपुढविमिच्छाष्टिद्वन्द्व पावेदि । पुणो अठरपपुढविमिच्छाष्टिद्वन्द्व पञ्चमदि
देष्टिमतिपुढविमिच्छाष्टिद्वन्द्वेहि ओवद्विप लङ्घ देहा विरलिय अठरपपुढविद्वन्द्व उठरिम
विरलपञ्चम पढमरूपोवति हिद समसर्द्ध करिय दिण्णे पञ्चमादिइष्टिमतिपुढविमिच्छाष्टि

विरलपञ्चम स्थान जाकर यदि एकही हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलपञ्चम
कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैरथिष्ठ करके एक अधिक अधस्तम विरलपञ्चमे जग-
श्रेणीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो द्रव्य भावे उसे उली जगश्रेणीके छठे वर्गमूलमेंसे
घटा देने पर जो बाठा है वह जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूल आदि बार वर्षोंके परस्पर गुणा
करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिटाकर जो जोड़ भावे
उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक मात्र द्रव्य भावे उतना होता
है और यही पूर्वोक्त तीस पृथिवियोंका महाहारकाष्ठ है । उक्त महाहारकाष्ठसे जगश्रेणीके भाजित
करने पर पांचवीं भादि तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—२ ४८ २ ४

१ १ ३२ बार ;

$$२ ४८ - १५३९ = \frac{४}{१}$$

$$\frac{१५३९}{१} = \frac{५१२}{१}$$

$$१५३९ - \frac{१५८}{७} = १५८४$$

अधस्तम विरलपञ्चम ११ में १ जोड़कर २१ होते
हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विर-
लपञ्चम १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम
विरलपञ्चम कितनी हानि होगी इसप्रकार
वैरथिष्ठ करने पर ११ हानिकर अंक होते
हैं । इसे उपरिम विरलपञ्चम ३२ मेंसे घटा देने
पर १३ आते हैं । इसका जगश्रेणीमें प्राप-
्य ३५८४ प्रमाण पांचवीं भादि तीन पृथि-
वियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अन्तर्गत जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके
प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान लङ्घन करके दोषरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
बीसवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः बीसवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यको पांचवीं भादि नौके तीस पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो द्रव्य
भावे उसे बीसवें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
विरलपञ्चमके प्रथम एक पर स्थित बीसवीं पृथिवीके द्रव्यको समान लङ्घन करके दोषरूपसे दे देने पर

दस्य पावेदि । एतस्य पुंस्त्व न समकर्ण काश्च । एतस्य परिहीणरूपाण पमाणमाभिन्नेदे ।
 तं सहा- हेङ्किमविरलणरूपाहियमचमूण गतूण अदि उपरिमविरलणमहि एगरूपपरिहाणी
 सम्मदि ता उपरिमविरलणमहि केवडियरूपपरिहाणि लभामां चि रुपाहियहेङ्किमविरलणाए
 जगसदिमङ्कमवगमूलमोवाहिय लईं समहि चेष अवाणिदे चउतय पचम-सङ्क-सचमपुडनीय
 सचमपुडविमिच्छाहिसलामाहि जगमेविविदियवगमूलमोवाहिय चउतयपुडविआदिहेङ्किम
 मिच्छाहिसङ्कमस्स अवहारकासो होदि । तेण जगसदिमहि मागे हिदे चउण्हं पुडनीय
 मिच्छाहिसङ्कमागच्छदि ।

पुणो जगसेविदसमवगमूल विरललम जगसदिं समखंड करिय दिण्णे रूपं पडि

प्रत्येक एक पर पांचवीं आदि नीचेकी तीन पंचिषियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर समीकरण पहलेके समान कर केना चाहिये । अब यहाँ पर हानिरूप भंकोंका प्रमाण छाते हैं । यह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अघस्तन विरलनमान स्थान आकर यदि उपरिम विरलनमें एकही हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार त्रैपक्षिक करके एक अधिक अघस्तन विरलनसे जग भेणीक आठवें बर्गमूलको अपवर्तित करके जो सध्य आये उसे उसी जगभेणीके आठवें बर्गमूल मेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि द्रव्यकाओंसे जगभेणीके द्वितीय बर्गमूलको अपवर्तित करके जो सध्य आता है कतना होता है । यदि यही चौथी आदि नीचेकी बार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकास है । उक्त अवहारकाससे जगभेणीके मज्जित करने पर बार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४०९९

४०९९

१ १ १९ बार

$$४०९९ + १ \text{ ल } = \frac{८}{७}$$

१८४ ५१२

१ १

७

$$१८४ - \frac{१८}{१५} = ७६८$$

अघस्तन विरलन १९ में १ जोड़ने पर २० होते हैं । यदि इतने स्थान आकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलन १९ में कितनी हानि होगी इसप्रकार त्रैपक्षिक करने पर १९ हानिरूप भंक आते हैं । इसे उपरिम विरलन १९ मेंसे घटा देने पर १६ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी आदि बार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकाओं १ + २ + ४ + ८ = १५ से जगभेणीके द्वितीय बर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर कितना आता है उसनेके बराबर होता है । हमसे १८४ - १८ = ७६८ प्रमाण चौथी आदि बार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगभेणीक आठवें बर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगभेणीको समान जोड़ करके इयकपसे दे देने पर प्रत्येक एकके स्थिति

मागिज्जद । तं अहा— इड्ढिमविरल्लणरूपादियमत्तद्वार्णे गत्तुण यदि एगारूपपरिहाणी सम्भवि
 ता उत्तरिमविरल्लणग्धि केवदियरूपपरिहाणि सनामो पि रूपादियइड्ढिमविरल्लणए अग-
 सेदिल्लद्वग्गममूलमोवड्ढिय लद्ध तग्धि चेव अणग्धिसे सेद्विदियियवग्गमूलं तदियपिद्विउत्तं
 वग्गापमग्गोप्पग्गमासेणुप्पप्परासिग्धि रूपादियसद्वित्तदियवग्गमूल पक्खिउदिय अणहि
 एगमागो तिण्हं पुट्ठणीण अणहारकालो होदि । तेण अगमेद्विग्धि माग हिदे पञ्चमादि
 तिण्हं हेड्ढिमपुट्ठणीण मिप्प्याद्विद्वग्गमागच्छदि ।

पुणो अगमेद्विग्धि अड्ढमवग्गमूल विरल्लण अगसग्धि समल्लंठ करिय दिग्गे २।
 पदि अठ्ठमपुट्ठविमिप्प्याद्विद्वग्ग पावेदि । पुणो अठ्ठमपुट्ठविमिप्प्याद्विद्वग्ग पञ्चमादि
 हेड्ढिमतिपुट्ठविमिप्प्याद्विद्वग्गेहि ओवड्ढिय लद्धं देहा विरल्लिय अठ्ठमपुट्ठविद्वग्ग उत्तरिम
 विरल्लणए पट्ठमरूपोवदि द्विदं समल्लंठ करिय दिग्गे पञ्चमादिइड्ढिमतिपुट्ठविमिप्प्याद्वि

विरल्लणमात्र स्थान आकर पदि पक्षध्वि हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरल्लणमें
 कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिक करके एक अधिक अघस्तन विरल्लणसे अघ-
 शेणीके छठे वर्गमूलको अणवर्तित करके जो मध्य आवे उसे उसी अगशेणीके छठे वर्गमूलमेंसे
 घटा देने पर जो आता है वह अगशेणीके नृतीय वर्गमूल आने के कारण वर्गोंके परस्पर गुण्य
 करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक नृतीय वर्गमूलको मिट्टाकर जो जोड़ आवे
 उससे अगशेणीके द्वितीय वर्गमूलको मात्रित करने पर जो एक मध्य कक्ष आवे उत्पन्न होता
 है और यही पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाळ है। उक्त अवहारकाळसे अघशेणीके मात्रित
 करने पर पांचवीं आदि तीन पृथिवियोंके मिप्प्याद्वि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—२०४८ २ ४८

१ १ ३२ बार।

$$२ ४८ - १ १ ३२ = \frac{४}{३}$$

$$\frac{१ ५ ३२}{१} \quad \frac{५ १२}{१}$$

$$\frac{१ ५ ३२}{१} \quad \frac{१}{३}$$

$$\frac{१ ५ ३२}{३} = ५ १०४$$

अघस्तन विरल्लण ११ में १ जोड़कर १२ होते
 हैं। पदि इतने स्थान आकर उपरिम विर-
 ल्लणमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम
 विरल्लणमें कितनी हानि होगी इसप्रकार
 वैराशिक करने पर ११ हानिरूप अंक आते
 हैं। इसे उपरिम विरल्लण ३२ मेंसे घटा देने
 पर १३ आते हैं। इसका अगशेणीमें मध्य
 पर १८४ प्रमाण पांचवीं आदि तीन पृथि-
 वियोंका मिप्प्याद्वि द्रव्य आता है।

अन्तर अघशेणीके आठवें वर्गमूलको विरल्लित करके और बस विरल्लित राशिके
 प्रत्येक एकके प्रति अघशेणीको समान लब्ध करके देवकपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
 बीवी पृथिवीके मिप्प्याद्वि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः बीवी पृथिवीके मिप्प्याद्वि
 द्रव्यको पांचवीं आदि तीनोंके तीन पृथिवियोंके मिप्प्याद्वि द्रव्यसे अणवर्तित करके जो कक्ष
 आवे उसे बीके विरल्लित करके और बस विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
 विरल्लणके प्रथम एक पर स्थित बीवी पृथिवीके द्रव्यको समान लब्ध करके देवकपसे दे देने पर

तत्पियमेव । तेण अगसेट्टिमिद्द भागे हिंदे पच्चपुदपिमिच्छाइट्ठिदब्बमागच्छदि । पुणो सेट्ठिबारसवग्गमूल विरलेऊण अगसेट्ठि समखंड करिय दिण्णे रूव पट्ठि विविदियपुदपि मिच्छाइट्ठिदब्ब पावेदि । हेट्ठिमपच्चपुदविदब्बेण तमोवहिय उद्ध विरलिय उवरिमविरलण पदमरूवोवरि द्विविदियपुदपिमिच्छाइट्ठिदब्ब समखंड करिय दिण्णे रूव पट्ठि तदिपादि पच्चपुदपिमिच्छाइट्ठिदब्ब पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि द्विविदियपुदपिमिच्छाइट्ठिदब्ब सुवरि पक्खिविय समकरण करिय परिहाणिरूवाणि आणेरम्माणि । तेसि पमाणमेग बारेषाणित्ठे । ॥ अथा—रूवाहिपदेट्ठिमविरलणमेवद्वण गंतून अदि एगरूवपरिहाणी उम्भदि तो उवरिमविरलणमिद्द केवहियरूवपरिहाणि पेच्छामो पि रूवाहिपदेट्ठिम विरलभाए सेट्ठिबारसवग्गमूलमोवहिय उद्ध तमिद्द चेव सरिसच्छेदं कळण अवाणिदे

उन्मात्र उक्त भागहारका प्रमाण है । उक्त भागहारसे अगमेजीके भाजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्यावृत्ति द्रव्यका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १३ + ८ + ४ + २ + १ = २८, \quad १२८ + २८ = \frac{१२८}{२८}$$

$$१५३३ + \frac{१२८}{२८} = १५८७२ \text{ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यावृत्ति द्रव्य ।}$$

अनन्तर अगमेजीके बारहवें वर्गमूलको विरलित करके और इस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति अगमेजीको समान लण्ड करके देवदण्डे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति वृत्तरी पृथिवीके मिथ्यावृत्ति द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर इस वृत्तरी पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यावृत्ति द्रव्यसे अपवर्तित करके जो सम्प भावे इसका विरलन करके और इस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति अपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित वृत्तरी पृथिवीके मिथ्यावृत्ति द्रव्यको समान लण्ड करके दे देने पर अच्युतन विरलनराशिसे प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यावृत्ति द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अच्युतन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको अपरिम विरलनके प्रति प्राप्त वृत्तरी पृथिवीके मिथ्यावृत्ति द्रव्यके ऊपर आक्षिप्त करके पहलेके समान समीकरण करके द्वानिकय अंक छे आना चाहिये । आगे उन्ही द्वानिकय अंकोंका एकबारमें प्रमाण साते हैं । जैसे—

अपरिम विरलनमें एक अधिक अच्युतन विरलनमात्र स्थान आकर यदि एककी द्वानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण अपरिम विरलनमें कितनी द्वानि प्राप्त होगी, इसप्रकार वैपश्चिक करके एक अधिक अच्युतन विरलनके प्रमाणसे अगमेजीके बारहवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो सम्प भावे उसे समान लण्ड करके उसी अगमेजीके बारहवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवधारकास प्राप्त होता है ।

तदियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयपमात्र पावति । पुनः त तदियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयं द्विद्वयमप्यत्र
पुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयेण भोज्यस्य सखं विरलेऽप्य तदियपुत्रविद्वयमुपरिमिरलस्यद्वय
स्वावरि द्विद्वयं समस्तं करिय दिग्गे चउत्सपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयं स्व पति पावति ।
पुनः एद उपरिमिरलस्यद्विद्वयपुत्रविद्वयमिद्वि दाऊन पुत्र व समकरण करिय परि
हाप्तिरूपायि आनेयस्वायि । त जहा— हेद्विमिरलस्यरूपायिमेतद्वाय गेवूग जदि एग-
रूवपरिहाप्ती लक्ष्मदि सो उपरिमिरलस्यमिद्वि कवद्वियस्वपरिहाप्तिं पेन्नामो चि रूपायि
हेद्विमिरलस्यए सद्विमममममूलमोवद्विय लख तमिद्वि केव सरिमज्जई फाऊन अबिने
तदियादियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयमहारकातो होदि । तस्स पमात्र कथियं ? तदियादि
पुत्रपुत्रवीज सचमपुत्रविद्वयस्स सलानादि सेविदिदियवगममूलमिद्वि ओवद्विदे तं लख

तस्यरी पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस तीसरी पृथिवीके
मिथ्याद्विद्वयको भीचेकी बार पृथिवियोंके मिथ्याद्विद्वयके प्रमाणसे अपवर्तित करने
को लक्ष्य भावे इसका विरलन करके इस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
विरलनके प्रथम चक्रके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयको प्रहण करके और
समान लण्ड करके वेचकपसे वे होने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी भादि बार पृथिवियोंके
मिथ्याद्विद्वयका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अष्टस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्वयको
उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्वयके ऊपर लेकर पहलेके समान समीकरण करके
हाप्तिरूप विरलन एक ठे भावा बाहिये । जैसे—उपरिम विरलनमें एक अधिक अष्टस्तन विरलन
मात्र स्थान जाकर यदि एककी हाप्ति प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हाप्ति
प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिक करके एक अधिक अष्टस्तन विरलनसे अपभेगीके दशैं
वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लक्ष्य भावे इसे समान छेद करके अपभेगीके उसी दशैं
वर्गमूलमेंसे अपवर्तन करने पर तीसरी भादि पाँच पृथिवियोंके मिथ्याद्विद्वयका अष्टस्तन
काक होता है ।

उदाहरण—८१९२ ८१९२

१ १ ८ बार।

८१९२ - ७२८० = $\frac{१९}{१५}$

७२८ ५२९
१ १
१५

अष्टस्तन विरलन १५ में १ मिथ्या होने पर
२१५ होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उप-
रिम विरलनमें १ की हाप्ति प्राप्त होती है तो
उपरिम विरलनमात्र ८ स्थान जाने पर
कितनी हाप्ति होगी, इसप्रकार वैराशिक
करने पर १५ की हाप्ति या जाती है । इसे

उपरिम विरलन ८ मेंसे घटा देने पर १५ होप रहते हैं ।

श्रृंखला—तृतीयादि पाँच पृथिवियोंके लक्ष्य मापहारका प्रमाण कितना है ।

समाधान—तृतीयादि पाँच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयको अपभेसा
की गई शकाशायोंसे अपभेगीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करने पर कितना लक्ष्य भावे

विदियादिछप्पुदविमवहारकालो होदि । तस्स पमाण केचिय ? विदियादिछप्पुदवीय सचम पुदविमिच्छाद्द्विसलागादि अगसेद्विविदियवगममूलमवद्दिदपगमागो इवदि । तेण अगसेद्विमि मागे हिदे छप्पुदविमिच्छाद्द्विदम्बमागच्छदि । त अगसेद्विषा खंडेऊमगखंड सामण्येवरूप विस्संमस्यविमि अवचिय सेसेण अगसेद्विमि भागे हिदे पदमपुदविमवहारकालो आय च्छदि । अहवा पुग्गमाविदछप्पुदविदम्बेण सामण्येवरूपमवहारकालं गुणेऊय समि

उदाहरण—११३८४ ११३८४

१ १ ४ पार

११३८४ - १५८७२ = ३७

१५८७२ ५१२

१ १

अधस्तम विरलम १२१ में १ मित्रा देवे

पर २२१ देता है । यदि इतने स्थान

आकर उपरिम विरलममें १ की हाथि होती

है तो उपरिम विरलममात्र ४ स्थान आकर

कितनी हाथि प्राप्त होगी ? इसप्रकार वैयक्तिक

करने पर १११ हाथिरूप अंक व्यक्त होते हैं ।

इसे उपरिम विरलम ४ में से घटा देने पर १११ प्रमाण द्वितीयादि छह पुण्यवियोंका अवहार कथ्य होता है ।

प्रश्न—द्वितीयादि छह पुण्यवियोंका कथ्य मातृहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवीं पुण्यवीके मिथ्यावृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह पुण्यवियोंकी मिथ्यावृष्टि द्वाकाव्योंसे अगमेजीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर जो एक भाग उच्य जाता है वतना द्वितीयादि छह पुण्यवियोंका अवहारकथ्य है । कथ्य भागद्वारे अगमेजीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पुण्यवियोंके मिथ्यावृष्टि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ + ११ + ८ + ४ + २ + १ = ५८, ५८ - ११ = ४७, द्वितीयादि छह

पुण्यवियोंका अवहारकथ्य ।

$४५५३३ \div \frac{४७}{११} = ३२५५१$ द्वितीयादि छह पुण्यवियोंका मिथ्यावृष्टि द्रव्य ।

कथ्य छह पुण्यवियोंके मिथ्यावृष्टि द्रव्यको अगमेजीसे भाजित करने जो एक भाग उच्य आये वसे समस्त भागक मिथ्यावृष्टि विष्कमसूचीमें से घटा कर जो शेष रहे उससे अगमेजीको भाजित करने पर पहाड़ी पुण्यवीके मिथ्यावृष्टि द्रव्यका अवहारकथ्य जाता है ।

उदाहरण—३२५५१ + ४५५३३ = ७८०८४, ७८०८४ - ४७ = ७८०३७, ७८०३७

$७८०३७ \div \frac{७८}{११} = \frac{७८०३७ \times ११}{७८} = १०८०८०८$ प्र. पु. मि. अ. व.

अथवा पहाड़ी भागों हुए छह पुण्यवियोंके मिथ्यावृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे समस्त मिथ्यावृष्टि भागवियोंके अवहारकथ्यको गुणित करने जो उच्य आये वसमें पहाड़ी पुण्यवीके

पदमपुत्रविदम्बेण भागे हिदे सम्बत्पुष्पणपरोषअवहारकालो आगच्छदि । सं तरिसच्छेद
कालेण सामपुष्पअवहारकालमिह पविस्सणे पदमपुत्रविमिच्छाद्विअवहारकालो होदि ।

एतत् परिहाणिपक्खवाणं सुहावगमणं सदिहं वचइस्सामो । स जहा- सोलस
रूपाणि विरलिय वेसदछप्पणं रूव पडि समखं करिय दिण्णे एक्केस्स रूवस्स सोलस
सोलस रूपाणि पावेंति । एतत् सिंह रूवाणं वड्डिमिच्छामो चि वड्डिरूवेहि एगम्बघरिद
मावड्डिदे पंचरूपाणि सत्तिमागाणि आगच्छति । ताणि हेत्वा विरलिय एगरूवघरिद
सोलसरूपाणि समखं करिय दिण्णे रूव पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । एग
रूवतिमागस्स एगरूव पावेदि । स क्व ? सकलेगरूवस्स जदि तिण्णि रूपाणि लभमति
तो एगरूवतिमागस्स किं लभामो ? चि कलेण इच्छ गुणीय वमाणेण भागे हिदे एगमेव

मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रम जका भाग देने पर सब जगह उत्पन्न हुआ प्रसेव अपहारकास जाता है। उस प्रसेव अपहारकासको समान छद् करके सामान्य अपहारकासमें मिला देने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अपहारकास होता है।

उदाहरण— $\frac{3456 \times 789}{9876} = 278$ प्र. अथ

$$12040 + \frac{2084300}{100} = \frac{6364900}{100} \text{ म प मि क्षय}$$

अब यहाँ पर हानिकारक आर प्रक्षेपक बलोंके सरसत्तास ध्यान करानके लिये संरक्षित
बतलाते हैं। यह इसप्रकार है—

सोमद्वयं चोक्तं विग्रहणं करके धीर उक्त विरहित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दोसो
उपनयनं चोक्तं समान तद्वत् करके द्वे द्वे पर विरहित राशिके प्रत्येक एकके प्रति
सोमद्वयं सोमद्वयं सत्या प्राप्त होती है। यहाँ पर हम तीन संख्याएँ गृहीत करमा चाहते हैं इस
विषये गृहीत सत्या तीनमे एक विरहितक प्रति प्राप्त सोमद्वयके व्यपन्नित करने पर एक नृतीय
भाग सहित पाँच पूर्णक मध्य आये हैं। इन्ने पूरा विग्रहणके नीचे विरहित करके धीर उक्त
विग्रहण राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक विरहितक प्रति प्राप्त सोमद्वयको समान तद्वत् करके
द्वे द्वे पर विरहितराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीन सत्या प्राप्त होती है। सत्या
एक नृतीयराशिके प्रति एक संख्या प्राप्त होती है क्योंकि पूर्णकद्वय एक विरहितक प्रति यदि
तीन संख्या प्राप्त होती है तो एक नृतीयराशिके प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार विरहित करके
पल राशि तीनसे द्वापरराशि एक नृतीयराशिके गुणित करके जो मध्य आये उसमें प्रमापराशि
एकका भाग इन्ने पर एक संख्या ही प्राप्त होगी है।

उदाहरण—विरमज ११: देव ५५१: गृध्रिपुत्र भंज ३।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

रूपं लम्बदि ति । पुनो ताणि तिष्णि रूपाणि येषां उचरिमविरलणपचरूपोचरि द्विद
 पंचसु सोलसेसु परिबाहीए पक्खिचे रूप पडि एककुणवीसरूपाणि हवति । पुना सप्तम
 रूपं तिष्णि मागे करिय तेसिं विभागान् सोलसरूपाणि समरुंढं करिय दिप्पे एकेकस्स
 विभागस्स सविभागपचरूपाणि पावेंति । पुनो एगस्सविभागपरिदसतिभाग पचरूपं
 सत्येव वुचिय तेस-ये विभागे अप्पणो परिदरासिसिद्धिद पुच द्वाविय पुनो सट्ठान्हिद
 एगरूपविभागेण परिदसविभागपचरूपेसु हेड्डिमविरलणाए विभागरूपोचरि द्विद एगरूपं
 पक्खिचे सत्य सविभागछ-रूपाणि हवति, एत्थ एगरूपपरिहायी उद्धा । पुना
 सदर्शवरूपपरिद-सोलसरूपाणि हेड्डिमविरलणाए समरुंढं करिय दिप्पे पुच्च व रूप
 पडि तिष्णि तिष्णि रूपाणि पावेंति । पुनो सत्य सकलपचरूपाविरि द्विद-तिष्णि रूपाणि
 येषां सुप्पट्ठान् वचिय उचरिमविरलण पंचरूपोचरि द्विद पचसु सोलसेसु परिबाहीए
 पक्खिचेसु रूप पडि एगुणवीसरूपाणि हवति । पुनो पुच्चमानेत्थ पुच इतिद-ने

$$19 + 2 = 21; \quad \frac{2}{1} \quad \frac{2}{1} \quad \frac{2}{1} \quad \frac{2}{1} \quad \frac{2}{1} \quad \frac{2}{1}$$

पुनः नीचेके विरलणके प्रति प्राप्त नन तीव तीन अंकोंको छेकर उपरिम विरलणके
 (मितीवादि) पांच विरलण अंकों पर स्थित पांच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
 दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणकए एक
 अंकके तीन भाग करके नन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान बाँट करके देयकपसे दे देने
 पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पांच अंक प्राप्त होते हैं । अगस्त एक
 विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच अंकोंको वहाँ पर रखकर और दोब
 दो विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिके साथ अलग स्थापित करके अगस्त नवने
 स्थान पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच अंकोंमें अगस्तन विरलणके
 एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह अंक भ
 जाते हैं । इसप्रकार वहाँ एक विरलण अंककी हानि प्राप्त हुई । पुन उल्लेखयोग्य सप्तम
 विरलणके अगस्त एक विरलण अंक पर स्थित सोलहको अगस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 समान बाँट करके देयकपसे दे देने पर पहलेके समान अगस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अगस्त वहाँ पूर्णक पांच विरलणकए अंकोंके ऊपर स्थित
 तीव सत्त्वाको ग्रहण करके शास्त्रशास्त्रको (विस्तृतार्थमें स्थानके १९ को अगस्तन विरलणमें
 बाँध है उसे) छोड़कर उपरिम विरलणके पांच विरलण अंकोंके ऊपर स्थित पांच सोलह
 अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त
 होते हैं । अगस्त पहले के छेकर अलग स्थापित दो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखके हुए

रूपं सम्मदि वि । पुणो ताणि तिग्गि रूपाणि पेसूण उवरिमविरलणपचरूपोवरि द्विद
पंचसु सोलसेसु परिवाडीय पक्खिचे रूपं पढि एक्कमवीसरूपाणि हवन्ति । पुणो सत्तम
रूपं तिग्गि मागे करिय तेसिं तिमागाणं सोलसरूपाणि समसुंढं करिय दिग्गे एवेकस्स
तिमागास्स सतिमागपंचरूपाणि पावन्ति । पुणो एगरूपतिमागपरिदसतिमाग पचरूपं
उरवेव हविय सेस-वे तिमागे अप्पणो परिदरासिद्विद पुच हविय पुणो सट्ठाणद्विद
एगरूपतिमागेण परिदसतिमागपंचरूपेसु हेत्थिमविरलणाए तिमागरूपोवरि द्विद-एगरूपं
पक्खिचे एत्थ सतिमाग-रूपाणि हवन्ति, एत्थ एगरूपपरिहाणी उट्ठा । पुणो
उदयवररूपपरिद-सोलसरूपाणि हेत्थिमविरलणाए समसुंढं करिय दिग्गे पुम्भ व रूपं
पढि तिग्गि तिग्गि रूपाणि पावन्ति । पुणो एत्थ सकलपचरूपोवरि द्विद तिग्गि रूपाणि
पेसूण सुम्भट्ठाणं वंघिय उवरिमविरलण-पंचरूपोवरि द्विद-पचसु सोलसेसु परिवाडीय
पक्खिचेसु रूपं पढि एगूणवीसरूपाणि हवन्ति । पुणो पुण्यमावेक्य पुच हविद व

$$19 - 9 = 10 \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2}$$

पुनः बीजके विरलणके प्रति प्राप्त इन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलणके
(प्रिलीपानि) पांच विरलण अंकों पर स्थित पांच सोलस अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणक एक
अंकके तीन भाग करके इन तीन भागोंके ऊपर सोलसको समान बाँट करके देवकपसे दे देने
पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पांच अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक
विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच अंकोंको वहाँ पर रखकर बीर सेप
हो विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई पक्षिके साथ मध्य स्थापित करके अनन्तर अपने
स्वाय पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच अंकोंमें अघस्तम विरलणके
एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह अंक भव
जाते हैं । इसप्रकार वहाँ एक विरलण अंककी छानि प्राप्त हुई । पुनः इससे अर्थात् सातवें
विरलणके अनन्तर एक विरलण अंक पर स्थित सोलसको अघस्तम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
समान बाँट करके देवकपसे दे देने पर पहलेके समान अघस्तम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्वोक्त पांच विरलणक अंकोंके ऊपर स्थित
तीन संख्याको प्रहज करके द्वाप्यस्थानको (जिस आठवें स्थानके १९ को अघस्तम विरलणमें
बाँटा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलणके पांच विरलण अंकोंके ऊपर स्थित पांच सोलस
अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रस्थित कर देने पर उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त
होते हैं । अनन्तर पहले बाँटकर मध्य स्थापित हो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखके हुए

रूपं सम्मदि पि । पुनो वाणि तिष्णि रूपाणि धेनुष उषरिमविरलणपचरूबोवरि द्विद
पंचसु सोलसेसु परिबाडीए पक्खिचे रूपं पडि एगगुणवीसरूपाणि हवति । पुनो सत्तम
रूपं तिष्णि माये करिय वेसि विमागाणं सोलसरूपाणि समसंखं करिय दिप्पे एकेकस्स
विमागस्स सविमागपंचरूपाणि पावेंति । पुनो एगरूपविमागधरिदसतिमाग पंचरूप
वत्तेष इविय सेस-वे-विमागे अप्पणो धरिदरासिसिद्ध पुण इविय पुनो सङ्काण्डिद
एगरूपविमागेण धरिदसतिमागपचरूवेसु हेडिमविरलणाए विमागरूपोवरि द्विद-एगरूप
पक्खिचे सत्त सविमाग-रूपाणि' इवति, एत्थ एगरूपधरिदानी लद्धा । पुनो
तद्वर्णवररूपधरिद-सोलसरूपाणि हेडिमविरलणाए समसंखं करिय दिप्पे पुन्य व रूपं
पडि तिष्णि तिष्णि रूपाणि पावेंति । पुनो तत्थ सङ्कलपंचरूपोवरि द्विद तिष्णि रूपाणि
धेनुष सुप्पङ्कलं वंशिय उषरिमविरलण पचरूबोवरि द्विद-पचसु सोलसेसु परिबाडीए
पक्खिचेसु रूपं पडि एगगुणवीसरूपाणि हवति । पुनो पुन्यमावेज्जा पुच इरिद-वे

$$24 - 2 = 22, \quad \begin{matrix} 1 & 2 & 3 & 4 & 5 & 6 \\ 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 \end{matrix}$$

पुनः नीचेके विरलणके प्रति प्राप्त उन तीन तीन बंकोंको लेकर उपरिम विरलणके
(द्वितीयादि) पाँच विरलण बंकों पर स्थित पाँच सोलह बंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस बंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणरूप एक
बंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान बंड करके देयरूपमे दे देने
पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पाँच बंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक
विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच बंकोंको वहाँ पर रखकर और दोप
हो विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिसे साथ मलग स्थापित करके अनन्तर अपने
स्थान पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच बंकोंमें अघस्तन विरलणके
एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह बंक म्य
जाते हैं । इसप्रकार वहाँ एक विरलण बंककी इति प्राप्त हुई । पुनः उसके अर्थात् सातवें
विरलणके अनन्तर एक विरलण बंक पर स्थित सोलहको अघस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
सम्यक् बंड करके देयरूपसे दे देने पर पड़नेके समान अघस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन बंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्णतः पाँच विरलणरूप बंकोंके ऊपर स्थित
तीन संख्याको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस स्थानमें स्थानके १६ को अघस्तन विरलणमें
पाँदा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलणके पाँच विरलण बंकोंके ऊपर स्थित पाँच सोलह
बंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस बंक प्राप्त
होते हैं । अनन्तर पड़ने जाकर मलग स्थापित हो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखने हुए

इन्द्रदे । त अहा—एगूणवीसरूपाण यदि एग विरलभरूपं लम्भदे तो वषभ् रूपं किं समामो वि एगूणवीसिदि फलगुणिदिच्छाए माग हिद एगरूपं' एगूणवीस खंडाणि काश्य तरप नर खंडाणि आगच्छति । अवभिदसेसाणि रूपाणि एगडे कदे सेरइस्नाणि एगरूपं एगूणवीसखंडाणि कदे नर खंडाणि च हवति । सपहि परिहाविरूपाणि आविज्जेते । त अहा—हेडिमविरलभरूपाहियमेचद्वाण गत्तुण यदि एगरूपपरिहावी लम्भदि तो सविमागतिण् रूपं किं समामो वि फलगुणिदिच्छाए पमावण मागे हिदे एगरूप एगूणवीसखंडाणि कदे तरप दस खंडाणि लम्भति । पुणसइ-दा-रूपाणि तत्त पक्खिचे परिहाविरूपाणि हवति । अहवा सव्वहीवरूपाणि एमवारेवाणि ज्जेते । त अहा—हेडिमविरलभरूपाहियमेचद्वाण गत्तुण यदि एगरूपपरिहावी लम्भदि तो उवरिम-

अब इन अवधिए नी भँकोंका विरलभ नितना होगा यह उत्पन्न करके बलव्यते हैं । यह इसप्रकार है—उन्नीस भँकोंके प्रति यदि एक विरलभ प्राप्त होता है तो नी भँकोंके प्रति कितना प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाप्रति नीका गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें प्रमाणराशि उन्नीसका मान देने पर एकके उन्नीस बँड करके उनमेंसे ९ बँड लब्ध भाते हैं । इसप्रकार उपरिम विरलभमेंसे कितनी सख्या पर उन्नीस है उससे दोप रडे हुए सभी भँकोंको एकत्रित करने पर पूर्णिक लेख और एक बँडके उन्नीस बँड करके उनमेंसे नी बँड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९, फलराशि १, इच्छाप्रति ९,

$$९ \times १ = ९, ९ - १० = ११ \text{ ताके प्रति विरलभरूपका प्रमाण ।}$$

$$११ - २१ = ११११ \text{ कुछ विरलभरूप भँकोंका प्रमाण ।}$$

अब हानिकर अंक छाते हैं । जैसे एक अधिक अघस्तन विरलभमान स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो एक निभागसहित तीन विरलभस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाप्रति एक निभागसहित तीन विरलभकी गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अघस्तन विरलभका मान देने पर एकके उन्नीस बँड करने पर उनमें दस बँड लब्ध भाते हैं । पुनः पहले लब्ध भावे हुए दोनो उसमें मिटा देने पर सपूर्ण हानिकर अंक हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ११, फलराशि १, इच्छाप्रति १,

$$\frac{१०}{१} \times १ = १, \frac{१}{१} + \frac{१९}{१} = \frac{१}{१९}, \frac{१०}{१९} + २ = २\frac{१}{१९} \text{ हानि अंक ।}$$

अथवा सपूर्ण हानिकर विरलभस्थान एकवारमें छाते हैं । जैसे—एक अधिक अघस्तन विरलभमान स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलभमें

विरलणम्हि किं समामो सि रुवाहियहेट्ठिमविरलणाण फलगुणिदिञ्चाण भागे हिंदाए सप्पपरिहीणरूपाणि आगच्छति । ताणि उपरिमविरलणस्त्वेसु अबणिदे अबहारकाओ होदि । एवं सप्पस्य समकरणविहाण आणित्तण वत्तम् ।

संपहि रासिपरिहाणिविहाण वत्तइस्सामो । स जहा-तय ताव तिण्ह रूवाण परिहाणि वत्तदे-उपरिमविरलणरूपधग्गिदसोलसरूवेसु हेट्ठिमविरलणाण सगलेगरूवपरिद तिण्णि रूवाणि रूव पडि अबणिय पुच्च इवंपम्माणि । संपहि उपरिमविरलणमेवतिण्णि रूवाणि अवणिदसेसपमाणेण वस्सामो । त जहा-उपरिमविरलणचउत्तरवपरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगह करिय पुणो पचमरूवपरिदतिण्ह रूवाण तिमागं पसूण तय पक्खिसे अबणिदसेसपमाण होदि । हेट्ठिमविरलणाए अते एगरूव विरलिय अणतरूप्यम्

कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार सैराधिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक अधिक अधस्तन विरलणमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलणस्थान आ जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलणकी संख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकाष्ठक प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ३१; फलराशि १; इच्छाराशि १६,

$$३१ \times १ = ३१ \quad ३१ - \frac{१६}{२} = २ \frac{१०}{२} \text{ हानिरूप अंक ।}$$

$$३१ - २ \frac{१०}{२} = २९ \frac{१०}{२} \text{ अवहारकाष्ठ ।}$$

अब राशिके हानिरूप विधानको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—उस विषयमें तीन अंकोंकी हानिक कथन किया जाता है—उपरिम विरलणके प्रत्येक विरलणके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अधस्तन विरलणके सफल एक विरलणक प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पुनः स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलणमात्र अथवा सोलहवार स्थापित तीन तीन अंकोंको, उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है उसका प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलणके बार विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन अंकोंको एकत्रित करते पुनः पाँचवें विरलणके ऊपर रने हुए तीनके विभागको ग्रहण करके मिस्र देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होना है । इस मरी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अधस्तन विरलणके अन्तर्गत् एकका विरलण करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलणके बार विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

इज्जदे । तं महा-एगूणशीलरूपाणं यदि एग विरलणरूपं सम्मदे तो जयण्ड रूपं किं समामो सि पगूणशीलसिद्धि फलगुणिदिष्ट्याए माग हिंद एगरूपं एगूणशील रूपाणि फलरूप तत्त्व जय रूपाणि आगच्छेति । अजनिदमेसाणि रूपाणि एगदे कद तेरहरूपणि एगरूपं पगूणशीलरूपाणि कदे जय रूपाणि च इति । सपदि परिहाणिरूपाणि प्राणिज्जये । तं महा-हेतुमविरलणरूपाणियमचद्वानं गतूणं यदि एगरूपपरिहाणं सम्मदि तो सविमागतिणं रूपाणं किं समामो सि फलगुणिदिष्ट्याए पमाणेय माग हिंदे एगरूप एगूणशीलरूपाणि कदे तत्त्व दस रूपाणि सम्मति । पुणत्तद्व-दो-रूपाणि तत्त्व पविण्णे परिहाणिरूपाणि इति । अहवा सम्बहीणरूपाणि पगवारेणामि जये । तं महा-इदमविरलणरूपाणियमचद्वानं गतूणं यदि एगरूपपरिहाणी सम्मदि तो उवरिम

अथ उभयवर्गिणो भेदोंका विरलण कितना होगा यह उत्पन्न करके बतलाने हैं । यह इसप्रकार है—उर्ध्वोत्तर भेदोंके प्रति यदि एक विरलण प्राप्त होता है तो नी भेदोंके प्रति कितना प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके पञ्चपक्षि एकसे इच्छापक्षि बीस गुणित करके जो अर्थ आये उसमें प्रमाणपक्षि उर्ध्वोत्तर भाग देने पर एकके उर्ध्वोत्तर करके उनमेंसे ९ लंब अर्थ आते हैं । इसप्रकार उपरिम विरलणमेंसे जितनी संख्या बट जाती है उससे दोप रहे हुए सभी भेदोंको एकत्रित करने पर पूर्णक तेरह और एक भेदके उर्ध्वोत्तर लंब करके उनमेंसे भी लंब होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणपक्षि १९, पञ्चपक्षि १, इच्छापक्षि ९,

$$१ \times १ = १, ९ - १९ = १० \text{ नाके प्रति विरलणरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - २१ = १२ \text{ उपरिम विरलणरूप भेदोंका प्रमाण ।}$$

अथ हाविकप अर्थ आते हैं । जैसे एक अधिक अथस्तन विरलणमात्र स्थान जाकर यदि एकही हाविक प्राप्त होती है तो एक विभागसहित तीन विरलणस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके पञ्चपक्षि एकसे इच्छापक्षि एक विभागसहित तीन विरलणको गुणित करके जो अर्थ आये उसमें प्रमाणपक्षि एक अधिक अथस्तन विरलणका भाग देने पर एकके उर्ध्वोत्तर लंब करने पर उनमें दस लंब अर्थ आते हैं । पुनः पहले अर्थ आये हुए दोको उसमें मिला देने पर संपूर्ण हाविकप अर्थ हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणपक्षि १९, पञ्चपक्षि १, इच्छापक्षि १,

$$\frac{१०}{१} \times १ = \frac{१०}{१}, \frac{१}{१} - \frac{१९}{१} = \frac{१}{१९}, \frac{१०}{१९} + १ = २ \frac{१०}{१९} \text{ हाविक अर्थ ।}$$

अथवा संपूर्ण हाविकप विरलणस्थान एकवारमें आते हैं । जैसे—एक अधिक अथस्तन विरलणमात्र स्थान जाकर यदि एकही हाविक प्राप्त होती है तो उपरिम विरलणमें

विरलनम्हि किं लमामा पि स्वादियहेट्टिमविरलणाए फलमुनिदिग्गाए भागे दिदाए सम्भपरिहीनरूपाणि आगच्छति । ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अन्नहारकाळो होदि । एयं सम्भरय समकरणविहाण आभिरूण वत्तम् ।

सपहि रासिपरिहाणिविहाण वत्तइस्सामो । ए अहा— तस्य ताव तिण्हं रूपाण परिहाणि उच्चदे— उवरिमविरलणरूपधरिदसोलसरूवेसु हेट्टिमविरलणा सगलेगरूपधरिद विणिग्गि रूपाणि रूवं पदि अवणिय पुण द्वेयम्भावानि । संपहि उवरिमविरलणमेवतिणिग्गि रूपाणि अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो । तं अहा— उवरिमविरलणवत्तवधरिदविणिग्गि विणिग्गि रूपाणि एगइ करिय पुनो पचमरूपधरिदविणिग्गि रूपाणि तिमाग वेत्तुण तत्त पक्खिसे अवणिदसेसपमाणं होदि । हेट्टिमविरलणाए असे एगारूव विरलिय अणत्तकम्पण

कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार कैराधिक करके फलप्राप्ति एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो दम्ब भागे उसमें एक अधिक अघस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिक भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान आ जाते हैं । इसे उपरिम विरलनकी संप्र्यामसे घटा देने पर अन्नहारकाळका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ३१ फलराशि १, इच्छाराशि १६,

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ - \frac{१९}{२} = २ \frac{१०}{२९} \text{ हानिरूप नक ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{२९} = १३ \frac{१९}{२९} \text{ अन्नहारकाळ ।}$$

अब राशिसे हानिरूप विधानका बतलाते हैं । अब इसप्रकार है—उस विषयमें तीन अर्थोंकी हानिका कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अघस्तन विरलनके सकल एक विरलनक प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पूर्यक् स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलनमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन अर्थोंको उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है उसके प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके बार विरलनोंक प्रति प्राप्त तीन तीन अर्थोंको एकत्रित करके पुनः पाँचवें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनोंके विभागको ग्रहण करके मिखा देने पर सोलहमेंसे तीनोंको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होगा है । इस अभी उत्पन्न हुए तीनोंको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अघस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करते उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलनके बार विरलनोंक प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

अवशिष्टसप्तपदमात्रं दाद्वय । पुनोऽवशिष्टविरलणम्बि चतुर्वधरिद्विभिः तिभिः
 रूपाणि पदाः करिय पुम्बद्विद्वेतिमागम्बि' एगं तिमागं येनूष पक्षित्वे एदमवि
 अवशिष्टसप्तपदमात्रं होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वयगम्बस्स पासे अवशमेम्ब
 विरलिय तस्सुवरि सो संपदि कुप्पण्यवविद्वेसरासी दाद्वयो । पुना वि अवशिष्ट
 विरलणचतुर्वधरिद्विभिः तिभिः रूपाणि येताविय पुष कुविय तिमागं तस्य पक्षित्वे
 एदमवि अवशिष्टसप्तपदमात्रं होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वयोर्द्वे रूपाण पास अन्त्ये
 रूष विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयम्बो । पुना अवससाभि तिरूवधरिद्विभिः तिभिः
 रूपाणि वध मवति । एदाण विरलणरूपाण पमाणमुप्पाद्वद्वे । रूवधेद्विमविरलवमेत
 द्वातं गंतुं यदि एगवधहारपक्षित्वेयस्स सगम्बि तो विष्टं रूपाणि किं समामो चि रूव-

एकत्रित करके पहले मङ्गल स्थापित हुए तीनके दो विभागोंमेंसे एक विभागको ग्रहण करके
 मिस्र देने पर वह भी तीनको घटाकर जो दोष रहे उसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
 विरलण किये हुए एक विरलणके पासमें दूसरे एकको विरलित करके उसके ऊपर वह अभी
 उत्पन्न हुए तीनको घटाकर दोष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी उपरिम विरलणके बाद
 विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन सख्याको मिला कर मङ्गल स्थापित करने तीनका विभाग
 वधमें मिस्र देने पर वह भी तीन घटा कर दोष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
 विरलण किये हुए दो विरलणोंके पासमें और एकका विरलण करके उसके ऊपर वह राशि
 स्थापित कर देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलणको अवशिष्ट तीन विरलणोंके प्रति प्राप्त
 अवशेष तीन तीन मङ्क मिला कर भी होते हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलणके प्रत्येक १५ मेंसे ३ निरलण देने पर १३ रहते हैं । यथा—

१५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५ १५
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

अब १५ जगह जो ३ हैं उनको १५ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

$३+३+३+३+३=१५$ $३+३+३+३+३=१५$ $३+३+३+३+३=१५$
 $३+३+३=९$

इसप्रकार उपरिम विरलणके १५ स्थानोंमें से ३ और मिस्र देने पर कुल १९ स्थान
 होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त हैं । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये ११ विरलण प्राप्त
 होगा । इसप्रकार १९-११ कुल विरलण मङ्क होते हैं । २५५ में भाग देकर १३ लब्ध होनेके
 लिये बाकी १९-१३ भागदात है ।

अब इन तीन विरलणको प्रति प्राप्त भी मङ्कोंका विरलण प्रमाण उत्पन्न करते हैं— एक
 कम व्यपस्तन विरलणप्रमाण स्थान आकर यदि एक अवधारणप्रक्षेपशब्दाका उत्पन्न होती है तो तीनके

हेटिमविरलणाए विष्णि रूपाणि ओवडिदे एगरूय तेरहसंङ्गाणि बदे तस्य भव संङ्गाणि हवति । एद पुम्बिह्वदिण्ह रूपाणि पासे विरलिय एदस्सुवरि भव रूपाणि बादम्भाणि । अहया सम्भपक्खेरूपाणि एगवारेण आणिज्जंते । रं अहा— रूयण्हेटिमविरलणमेचद्दार्ण गत्थं जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा सम्भदि तो उवरिमविरलणमिह केचियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लमामो चि पमाणेण इन्हाए ओवडिदाए सग्गाओ पक्खेव सलागाओ सम्भति । एदाओ उवरिमविरलणमिह पक्खिउधे इन्डिअवहारकाओ होदि । एव सम्भरय रासिपरिहाणिमिह जाभिऊण समकरमं कायम्भ ।

अहया सामान्यअवहारकाळं विरलेऊण एकेकस्स रूपस्स अगपद्धं समसंङ्क करिय दिण्णे रूप पडि सामान्यणेरयमिच्छाइडिदम्भ पावेदि । तस्य एगम्भपरिदसामान्यणेरय

प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार वैरागिक करके एक कम अघस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित करने पर एकके तेरह र्गङ्क करने पर उनमेंसे भी र्गङ्क सम्भ जाते हैं । इसे पूर्णोक्त तीन विरलन बंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ र्गङ्क दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $1\frac{1}{3} - 1 = \frac{2}{3}$ प्रमाणराशि, १ फलराशि, ३ इच्छराशि ।

$$1 \times 1 = 1 + \frac{1}{3} = \frac{4}{3} \quad \text{तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन कपसे दिये हुए} \\ 1 \times 1 = 1 + \frac{1}{3} = \frac{4}{3} \quad \text{० बंकोंका अवहारकाळ ।}$$

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकाळको एकवारमें छाते हैं । जैसे— एक कम अघस्तन विरलनमान द्यान जाकर यदि एक अवहारकाळ प्रक्षेपरूपका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी प्रक्षेपशक्ताकार्य प्राप्त होंगी इसप्रकार वैरागिक करके फलराशि एकसे इच्छराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो सम्भ जाये उसमें एक कम अघस्तन विरलन मात्र प्रमाणराशि का भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाळ प्रक्षेपशक्ताकार्य व्य जाती है । इनको उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छिण अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार समस्त राशिकी हानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{4}{3}$, फलराशि १, इच्छराशि १९।

$$19 \times 1 = 19, \quad 19 + \frac{1}{3} = \frac{58}{3} \quad \text{प्रक्षेप अवहारकाळ ।}$$

$$19 + \frac{58}{3} = 19\frac{2}{3} \quad \text{इच्छिण अवहारकाळ ।}$$

अथवा सामान्य अवहारकाळका विरलन करके भीर उस विरलित राशिक प्रत्येक एकके प्रति अगमतरको समान नष्ट करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नष्ट मिथ्यादि औचराशि प्राप्त होती है ।

अवधिद्वयसंयुक्तपमान दाद्वय । पुनो उवरिमविरलणाम्नि अउरुवपरिदतिणि तिणि
 रूपाणि एगः करिय पुम्बद्विद्वेतिमागाम्नि' एगं तिमागं चेत्तुन पक्खित्त एदमवि
 अवधिद्वयसंयुक्तपमान दादि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वयगत्तस्स पात्ते अवधमेगत्त
 विरलिय तस्सुवरि सो सपहि बुप्पण्णअवधिद्वयसंयुक्तासी दाद्वयो । पुना वि उवरिम
 विरलणवठस्वपरिदतिणि तिणि अवाणि मेलाविय पुमं कुविय तिमागं तत्त पक्खित्त
 एदमवि अवधिद्वयसंयुक्तपमानं होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वयो रूपाणि पात्ते अवधमे
 रूपां विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयव्वो । पुनो अवधेसाणि तिरुवपरिदतिणि तिणि
 रूपाणि गव भवंति । एदाम विरलणरूपाण पमाणव्वुप्पाइव्वदे । रूव्वदेत्तुमविरलणमेव
 दाण गंतुय अदि एगअवधारपक्खित्तव्वं लम्मदि तो तिणं रूपाणि किं लमामो चि रूव्व-

एकत्रिंशत् करके पहले कम्पन स्थापित हुए तीनके दो विभागोंमेंसे एक विभागको ग्रहण करके
 मिठा देने पर यह भी तीनके बराबर जो शेष रहे वसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
 विच्छन्न किये हुए एक विच्छन्नके पासमें दूसरे एकको विच्छिन्न करके वसके ऊपर यह भी
 वसका हुए तीनको बराबर शेष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी उपरिम विच्छन्नके बार
 विच्छन्नमें प्रति प्राप्त तीन तीन सक्काको मिठा कर मज्जा स्थापित करके तीनका विभाग
 वसमें मिठा देने पर यह भी तीन बड़ा कर शेष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
 विच्छन्न किये हुए दो विच्छन्नोंके पासमें तीर एकका विच्छन्न करके वसके ऊपर यह राशि
 स्थापित कर देना चाहिये । पुनः उपरिम विच्छन्नके अवशिष्ट तीन विच्छन्नोंके प्रति प्राप्त
 अवशेष तीन तीन एक मिठा कर भी होते हैं ।

उदाहरण—उपरिम विच्छन्नके प्रत्येक १३ मेंसे ३ विच्छन्न देने पर १३ रहते हैं । यथा

१३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३
 ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

जब १३ अगह जो ३ हैं उनको १३ रूप करकेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

३+३+३+३+३=१३ ३+३+३+३+३=१३ ३+३+३+३+३=१३;
 ३+३+३=९

इसप्रकार उपरिम विच्छन्नके १३ स्थानोंमें से ३ और मिठा देने पर कुछ १९ स्थान
 होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त है । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये १३ विच्छन्न प्राप्त
 होगा । इसप्रकार १९- $\frac{1}{3}$ कुछ विच्छन्न भेक जाते हैं । २५३ में माग लेकर १३ छान्य जानेके
 लिये यही १९- $\frac{1}{3}$ मागहार है ।

जब हम तीन विच्छन्नके प्रति प्राप्त भी अर्धेका विच्छन्न प्रमाण वसका करते हैं—एक
 कम अवधरतन विच्छन्नप्रमाण स्थान आकर यदि एक अवधारणकोपशकाका वसका होती है तो तीनके

हेट्टिमविरलणाए तिप्पि रूपाणि ओवड्डिदे एगरूव तेरहलंठाणि कदे तत्थ भव खंडामि
 हवति । एद पुब्बिच्छदिप्पि रूपाणि पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूपाणि दादव्वाणि ।
 अहवा सम्भपक्खेवरूपाणि एगपारेण आभिन्मते । स महा—रूयूनहेट्टिमविरलणमेचद्वार्ण
 गत्थ अदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लम्भदि वो उवरिमविरलमम्हि केसियाओ
 अवहारपक्खेवसलागामो लमामो चि पमाणेण इच्छाए ओवड्डिवाए सम्भाओ पक्खेव
 सलागाओ लम्भति । एवाओ उवरिमविरलणम्हि पक्खिचे इच्छिदअवहारकाओ होदि ।
 एव सम्भस्य रासियरिहाणिम्हि आभिऊण समकर्थं कायम्भ ।

अहवा सामान्यअवहारकार्लं विरलेऊण एकेकस्स रूपस्स अगपदरं समलंडं करिय
 दिप्पे लूवं पडि सामान्यणेइयमिच्छाइडिदम्भ पावेदि । तत्थ एगरूववरिदिसामान्यमेइय

प्रति क्या मान्य होगा इसप्रकार वैयक्तिक करके एक कम मध्यस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित
 करने पर एकके तेरह खंड करने पर उसमेंसे भी अण्ड छम्भ भाते हैं । इसे पूर्वोक्त तीन
 विरलन अंकोंके पाछमें विरलित करके इसके ऊपर भी अंक दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $4\frac{1}{2} - 1 = 3\frac{1}{2}$ प्रमाणराशि: १ फलराशि: ३ इच्छराशि ।

$3 \times 1 = 3$ $3 + \frac{13}{2} = \frac{29}{2}$ तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए
 २ अंकोंवा अवहारकाळ ।

अथवा, संपूर्ण प्रसेपकाय अवहारकाळको एकवारमें छाते हैं । जिसे—एक कम मय
 स्तन विरलनमात्र स्थान आकर यदि एक अवहारकाळ प्रसेपशाकाय प्राप्त होती है तो उपरिम
 विरलनमें कितनी प्रसेपशाकाय प्राप्त होंगी इसप्रकार वैयक्तिक करके फलराशि एकसे
 इच्छराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो छम्भ भावे वसमें एक कम मध्यस्तन विरलन
 मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाळ प्रसेपशाकाय व्य जाती हैं । इनको
 उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार सभ्य राशिही
 हाथमें आनकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $4\frac{1}{2}$; फलराशि १; इच्छराशि १५;

$13 \times 1 = 13$; $13 + \frac{13}{2} = \frac{29}{2}$ प्रसेप अवहारकाळ ।

$13 + \frac{29}{2} = 27\frac{1}{2}$ इच्छित अवहारकाळ ।

अथवा, सामान्य अवहारकाळका विरलन करके और उस विरलित राशिक प्रत्येक
 एकके प्रति अगप्रतको समान खंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारण
 भिष्पाराशि बीपराशि प्राप्त होती है ।

मिच्छाद्द्विदम्ब सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विदम्बपमाणेन कस्सामो । स खहा सेडिदिदियवग्ग
मूत्तमभिदवगसेदीए जदि एक्कं सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विदम्बपमाणं सत्तमदि तो सामण-
णेरूपमिच्छाद्द्विदम्बमिह केचिय ससामो चि फलेग इच्छ गुणिय पमाणेन भागे हिदे
विच्छंममपिगुभिदसेडिदिदियवग्गमूत्तमेचाणि सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विदम्बखंडाणि आग
च्छंति । एवं सामण्णेरूपमवहारकालरूपाणमुपरि द्विदसामण्णेरूपरासी पचेय पचेयं
सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विदम्बपमाणेन कायब्बो । पुणो तत्थ एगरूपपरिदण्डेसु सत्तम
पुढविमिच्छाद्द्विदम्बपमाणं एगलंडपमाणं होदि । छद्दपुढविमिच्छाद्द्विदम्ब सेडितदिय
वग्गमूत्तमेचलंडाणि पेत्तूणं भवदि । पुणो पंचमपुढविमिच्छाद्द्विदम्ब सेडितदियवग्ग
मूत्तादिचठवग्गमूत्ताणि गुणिदे तत्थ जचियाणि रूपाणि तचियमेचलंडाणि पेत्तूणं हवदि ।

उदाहरण— $\frac{१३१}{१} \times \frac{१३१०७२}{१} = १३१०७२$ या ना सि या
 $\frac{१३१}{१} \times \frac{१३१०७२}{१} = १३१०७२$ वाट.

अब एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगज्जेवीके द्वितीय बर्गमूलका अथ
जेवीमें माग देने पर यदि एकबार सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा इसप्रकार विचारित करके फलप्राप्तिसे
इच्छाप्रतिष्ठाके गुणित करके जो लब्ध भावे वसमें प्रमाणप्राप्तिक्रम माग देने पर जगज्जेवीके
द्वितीय बर्गमूलको विच्छंमसूचीसे गुणित करके जो लब्ध भावे बताने सातवीं पृथिवीके मिथ्या
दृष्टि द्रव्यके अंश होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणप्राप्ति $\frac{१५५३३}{१२८}$, फलप्राप्ति १, इच्छाप्रतिष्ठा १३१ ७२;

$$\frac{१३१०७२}{१} \times १ = १३१ ७२, \quad \frac{१३१०७२}{१} \times \frac{१५५३३}{१२८} = १५५३३ = १२८ \times २ लंड$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवधारकाक्षकी संख्याके ऊपर स्थित प्रत्येक
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवप्राप्तिसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे
कर केया चाहिये । परंतु वहां पर एक विरलनके प्रति प्राप्त अंशोंमें सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण एक अंश प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य
जगज्जेवीके तृतीय बर्गमूलमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-अंशोंको डेकर होता है । पुनः पांचवीं
पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगज्जेवीके तीसरे बर्गमूलसे डेकर बार बर्गमूलोंके परस्पर गुण्य
करने पर वहां कितना प्रमाण भावे लब्धमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-अंशोंको डेकर होता है ।

पञ्चपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं सेदितदियवग्गमूलादिछब्बग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ नचि
याणि रूपाणि तचियमेचसुखाणि पेत्तूण इवदि । तदियपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं सेदितदिय
वग्गमूलादिछब्बग्गमूलाणि अण्णाण्य गुणिदे तत्थ अचियाणि क्कमाणि तचियमेचसुखाणि
पेत्तूण पावदि । विदियपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अण्णोण्य
म्मस्याणि क्कदे तत्थ अचियाणि रूपाणि तचियमेचसुखाणि पेत्तूण इवदि । पुणो एदाओ
छपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं ससलागाओ विवग्गमूलाणि गुणिदसेदिविदियवग्गमूलाओ सोधिदे
पढमपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं ससलागा इवति । एष सामान्यअवहारकालमेचसामान्य-
णेरइयमिच्छाश्चिद्व्यं ससलागाओ पुच पुच करिय दरिसेदम्माओ । पुणो एव
ठविय पढमपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं ससलागा उप्पाइज्जे । त जहा— पढमपुटविमिच्छाश्चिद्व्यं ससलागा

चापी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण उत्पन्न होये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंके लेकर
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण आये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य
लक्षकोंके लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे
लेकर दहा वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण आये तन्मात्र सातवीं
पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंके लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक विच्छन्नके प्रति प्राप्त सामान्य दृष्टि १३१०७२
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा लई करने पर २५९ लई हुए । उनमेंसे एक लई प्रमाण
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो लण्ड प्रमाण छठीका चार लण्ड प्रमाण पाँचवीका ब्याड
लण्ड प्रमाण बीधीका १६ लण्ड प्रमाण तीसरीका बीर बसोत्त लण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य
है । इसप्रकार ये लण्डशालाकार्य ९३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित वारतन्वसे
लण्डशालाकार्य की जाय तो जो मूलमें कहा है तदनुसार लण्डशालाकार्य आवेंगी ।

पुनः हम छह पृथिवीलक्षन्धी मिथ्यादृष्टि लण्डशालाकार्यका विष्कम्भसूची शुभित
अगभेजीके जितना वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीलक्षन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके
लक्षकोंका जितना प्रमाण हो उतनी लण्ड शालाकार्य छप्प जाती हैं ।

उदाहरण— $120 \times 2 = 240$; $240 - 93 = 147$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अथवा सामान्य अवहारकालगुमित सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें लण्डशालाकार्य पृथक् पृथक् निहाल करके दिखाना चाहिये । पुनः
इसप्रकार लण्डशालाकार्य स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । यह
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीलक्षन्धी मिथ्यादृष्टि लण्डशालाकार्योंसे यदि एक अवहारकालशालाका

मिच्छाद्द्विद्वय सचमपुदविमिच्छाद्द्विद्वयपमाण कस्मामो । त ब्रह्म सेडिविदियवग-
मूत्रमभिद्वयगसेडीए अदि एर्क सचमपुदविमिच्छाद्द्विद्वयपमाण सचमदि तो सामान्य-
गेरुयमिच्छाद्द्विद्वयमिह केचिय लमामां चि फलेन इच्छ गुबिय पमाणेण मागे हिरे
विस्तेमद्यपिगुभिद्वेहिबिदियवगमूत्रमेचाणि सचमपुदविमिच्छाद्द्विद्वयचंटाणि आग
च्छति । एव सामान्यगेरुयमिच्छाद्द्विद्वयपमाण कस्मामो । पुनो तत्य एगमपुदविद्वयपमाण
सचमपुदविमिच्छाद्द्विद्वयपमाणेण कायमो । पुनो तत्य एगमपुदविद्वयपमाणेण कायमो । पुनो
पुदविमिच्छाद्द्विद्वयपमाणेण एगलद्वयपमाण होदि । छद्दपुदविमिच्छाद्द्विद्वय सेडिविदिय
वगमूत्रमेचचंटाणि भेच्य मचदि । पुनो पचमपुदविमिच्छाद्द्विद्वय सेडिविदियवगम
मूत्रमिच्छाद्द्वयपमाणेण गुभिदे तत्य अचियाणि रुवाणि तचियमचचंटाणि भेच्य इति ।

उदाहरण—१३१ ७२ १३१०७२ स्यात् ना मि च
१ १ १९७९८ बार.

अब एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिच्छाद्वि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके
मिच्छाद्वि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगज्जेवीके द्वितीय बर्गमूत्रका जग
जेवीमें भाग देने पर यदि एकबार सातवीं पृथिवीके मिच्छाद्वि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो
सामान्य नारक मिच्छाद्वि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा इसप्रकार वैपश्चिक करके फलप्राप्तिसे
इच्छाद्विद्वय गुणित करके जो लब्ध भव्ये वसमे प्रमाणप्राप्ति का भाग देने पर जगज्जेवीके
द्वितीय बर्गमूत्रको विषमसूत्रोंसे गुणित करके जो लब्ध भव्ये वसमे सातवीं पृथिवीके मिच्छा
द्वि द्रव्यके बंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणप्राप्ति $\frac{१९७९९}{१२८}$; फलप्राप्ति १ ; इच्छाद्वि १३१ ७२ ;

$$१३१०७२ \times १ = १३१०७२ ; १३१ ७२ \div \frac{१९७९९}{१२८} = २५९ = १२८ \times २ लब्ध.$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिच्छाद्वि अक्षरारूपका लब्धको ऊपर स्थित प्रत्येक
सामान्य नारक मिच्छाद्वि जीवप्राप्ति को सातवीं पृथिवीके मिच्छाद्वि द्रव्यके प्रमाणरूपसे
कर लेना चाहिये । परंतु यहां पर एक विरलनके प्रति प्राप्त लब्धों में सातवीं पृथिवीके
मिच्छाद्वि द्रव्यका प्रमाण एक लब्ध प्रमाण होता है । कहीं पृथिवीका मिच्छाद्वि द्रव्य
जगज्जेवीके तृतीय बर्गमूत्रमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लब्धोंको लेकर होता है । पुनः पांचवीं
पृथिवीका मिच्छाद्वि द्रव्य जगज्जेवीके तीसरे बर्गमूत्रसे लेकर बार बर्गमूत्रोंके परस्पर गुण्य
करने पर यहां कितना प्रमाण भव्ये लब्ध सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लब्धोंको लेकर होता है ।

चउत्त्यपुढविमिच्छाद्द्विदन्व सेदितदियवग्गमूलादिछम्बग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ अचि
याणि रूवाणि तत्थियमेचसुद्धाणि भेत्तूण इवदि । तदियपुढविमिच्छाद्द्विदन्व सेदितदिय
वग्गमूलादिअद्वग्गमूलाणि अप्पोष्ण गुणिदे तत्थ अचियाणि रूवाणि तत्थियमेचसुद्धाणि
भेत्तूण पावदि । तदियपुढविमिच्छाद्द्विदन्व तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अप्पोष्ण
म्भत्याणि क्खे तत्थ अचियाणि रूवाणि तत्थियमेचसुद्धाणि भेत्तूण इवदि । पुणो एवाओ
छपुढविमिच्छाद्द्विदन्वसलगाओ विवर्त्तमसूणीगुणिदसेदितदियवग्गमूलाओ सोभिदे'
पढमपुढविमिच्छाद्द्विदन्वपमाणसलगा इवति । एव सामम्भअवहारकालमेचसामम्भ-
णेरइयमिच्छाद्द्विदन्वमिह सुंढसलगाओ पुच पुच करिय दरिसेदन्वाओ । पुणो एव
तत्थिय पढमपुढविमिच्छाद्द्विदन्वसलगाओ उप्पाइज्जेदे । त जहा— पढमपुढविमिच्छाद्द्विदन्वसलगा

बीची पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगद्येजीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वगमूलोंके परस्पर
गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण उत्पन्न होये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंके लेकर
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगद्येजीके तीसरे वगमूलसे लेकर आठ वर्ग
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य
लक्षकोंके लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगद्येजीके तीसरे वगमूलसे
लेकर दस वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं
पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंके लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवधारकाके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य यदि १३१०७२
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा ढीठ करने पर २ १ कंड इय । उसमेंसे एक कंड प्रमाण
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो कण्ड प्रमाण छठीका बार कण्ड प्रमाण पांचवीका, अठ
कण्ड प्रमाण बीचीका १६ कण्ड प्रमाण तीसरीका और बीस कण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य
है । इसप्रकार ये कण्डशाखाकार्य १३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे
कण्डशाखाकार्य की जाय तो ओ मूलमें कहा है तबनुसार कण्डशाखाकार्य आवेगी ।

पुनः इन छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि कण्डशाखाकार्योंका विष्कम्भसूची शुनित
जगद्येजीके कृताय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके
लक्षकों जितना प्रमाण हो उसकी लक्ष शाखाकार्य उत्पन्न जाती है ।

उदाहरण— $12 \times 2 = 4$ । $2 \times 3 = 6$ ।

इसीप्रकार सामान्य अवधारकाप्रमाण अथवा सामान्य अवधारकाजगुणित सामान्य
कारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कण्डशाखाकार्य पृथक् पृथक् निवात करके विस्ताराना आदिय । पुनः
इसप्रकार कण्डशाखाकार्य स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवधारकास उत्पन्न करते हैं । यह
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि कण्डशाखाकार्योंसे यदि एक अवधारकासकलाका

हिंसे यदि एका अवहारकाससलागा सम्मदि तो सामान्यअवहारकासमेतसामान्यवेद्य
संसलागार्थ किं समामो धि पमायेण इच्छाप ओषद्धिदाप पडमपुडविमिच्छादि
अवहारकासो होदि । अहवा पडमपुडविमिच्छादिउडसलागाहि सामान्यअवहारकास-
मोषद्धिप उद्देण उडुडविलंसलागा गुणिदे पडमेवअवहारकासो होदि । अहवा उड
उप्यदिरासि काउय उड पुडवीन सग-सगसंसलागाहि गुणिदे सग-सगपडवेअव

मात होती है तो सामान्य अवहारकासमात्र नारक मिथ्यादि अज्ञानाकाश्योंकी कितनी
अज्ञानाकाश्योंसे प्राप्त होती इसप्रकार वैराग्यिक करके प्रमाणप्राप्ति प्रथम पृथिवीसंख्या का
अज्ञानाकाश्योंसे इसप्रकार सामान्य मिथ्यादि अवहारकासगुणित सामान्य नारक मिथ्यादि
अज्ञानाकाश्योंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादि प्रत्यक्ष अवहारकास
होता है ।

उदाहरण—प्रमाणप्राप्ति १९३, पञ्चराशि १, इच्छप्राप्ति ३२७९८ × १९३

$$\frac{३२७९८ \times १९३}{१९३} = \frac{८३८९०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ.}$$

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादि अज्ञानाकाश्योंसे सामान्य नारक मिथ्यादि
अवहारकासको अपवर्तित करके जो अल्प मात्रे उसके उड पृथिवियोंकी मिथ्यादि अज्ञाना-
काश्योंके गुणित करने पर प्रत्यक्ष अवहारकास होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२७९८ + १९३ = \frac{३२७९८}{१९३}, \frac{३२७९८}{१९३} \times १९३ = \frac{२३४९८४}{१९३} \text{ प्र. अ. वा}$$

अथवा प्रथम पृथिवी मिथ्यादि अज्ञानाकाश्योंसे सामान्य नारक मिथ्यादि
अवहारकासको अपवर्तित करके जो अल्प मात्राके उड पृथिवीप्राप्ति करके उड पृथिवियोंकी
अपनी अपनी अज्ञानाकाश्योंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रत्यक्ष अवहारकास होता है ।

$$\begin{array}{ll} \text{उदाहरण—} \frac{३२७९८}{१९३} \times १ = \frac{३२७९८}{१९३} & \text{प्राथम्य पृथिवीकी अपेक्षा} \\ \frac{३२७९८}{१९३} \times २ = \frac{६५५९६}{१९३} & \text{द्वितीय पृथिवीकी अपेक्षा} \\ \frac{३२७९८}{१९३} \times ३ = \frac{९८३९४}{१९३} & \text{तृतीय पृथिवीकी अपेक्षा} \\ \frac{३२७९८}{१९३} \times ४ = \frac{१३११८४}{१९३} & \text{चौथी पृथिवीकी अपेक्षा} \\ \frac{३२७९८}{१९३} \times ५ = \frac{१६४४२४}{१९३} & \text{पंचम पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७९८}{१९३} \times ६ = \frac{१९७६६४}{१९३} & \text{छह पृथिवीकी अपेक्षा प्र अवहारकास} \end{array}$$

हारकालो होदि । एवं विहणोणुप्यण्णपक्षेव अवहारकालं सामण्यवहारकालमिह पक्खिणे
 पढमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो होदि । एदमत्थपढमवहारिय अण्णत्थ वि बहररासिपमा
 पेण महत्तरासीओ क्कण्ण पक्खेव अवहारकालो साधेयम्भो । एय भिरयगदि सदिही-
 ६५५१६ एदं जगसेदिपमाणं । एद पि जगपदरपमाण ४२९४९६७२९६ । सामण्यमेर
 इपमिच्छाशुद्धिविक्खंमसुद्धं 'एसा २ । सामण्यवहारकालो ३२७६८ । दम्ब १३१०७२ ।
 पक्खेव अवहारकालो ' ११११ ' । पढमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ' ११११ ' ।
 छद्मपमाण ९८८१६ । विविपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ४, दम्ब १६३८४ । तदिय
 पुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो (८, दम्ब ८१९२ । चउत्थपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो)
 १६, दम्ब ४०९६ । पचमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ३२, दम्ब २०४८ । छद्म
 पुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ६४, दम्ब १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो

इस विधिसे जो प्रसेप अवहारकाळ उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकाळमें मिला देने
 पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यावृत्तियोंका अवहारकाळ होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३२७६८}{१९३} + \frac{१५३३}{१९३} + \frac{१३१०७२}{१९३} + \frac{२९९१७४}{१९३} + \frac{५५४२८८}{१९३} + \frac{१०४८५७२}{१९३}$$

$$= \frac{२०३४३८४}{१९३} \text{ म अ का}$$

$$३२७६८ + \frac{२३४३८४}{१९३} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ म पु का अव}$$

इसप्रकार इस अर्थपरका अवधारण करके अण्णत्थ की बड़ी राशिके छोटी राशिके प्रमा
 नसे करके प्रसेप अवहारकाळ साध लेना चाहिये । अब यहाँ नरकगतिकी संवत्ति दी जाती है—

६५५१६ जगमेणीका प्रमाण है । ४२९४९६७२९६ यह जगप्तरका प्रमाण है । सामान्य
 नारक मिथ्यावृत्ति पिक्खंमसुद्धीका प्रमाण २ है । सामान्य नारक मिथ्यावृत्ति अवहारकाळका
 प्रमाण ३२७६८ है । सामान्य नारक मिथ्यावृत्ति दम्ब १३१०७२ है । प्रसेप अवहारकाळ
 ' ११११ ' है । प्रथम पृथिवीका मिथ्यावृत्ति वृत्तसंयन्धी अवहारकाळ ' ११११ ' है । प्रथम
 पृथिवीमें छप्परासि मिथ्यावृत्ति राशिका प्रमाण ९८८१६ है । वृत्तरी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति
 अवहारकाळ ४ और दम्ब १६३८४ है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ ८ और
 दम्ब ८१९२ है । चौथी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ १६ और दम्ब ४०९६ है । पाँचवी
 पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ ३२ और दम्ब २०४८ है । छठी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति
 अवहारकाळ ६४ और दम्ब १०२४ है । सातवीं पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ १२८ और

है तो यदि एका अवहारकालसलागा छ मदि तो सामान्यअवहारकालमेससामान्यपेरएय खंडसलागा किं समामो पि पमाणेय इच्छाप ओषष्टिदाए पदमपुडविमिच्छाष्टि अवहारकालो होदि । अहवा पदमपुडविमिच्छाष्टिखंडसलागाहि सामान्यअवहारकाल-मोषष्टिय स्वेण छपुडविखंडसलागा गुणिदे पक्षेयअवहारकालो होदि । अहवा खंड छप्पडिरासि काल्य छन् पुडवीयं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्षेयअव

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिष्यादधि खंडशास्त्राध्यक्षोंकी कितनी दंडशास्त्राध्यक्ष प्राप्त होती इसप्रकार वैराशिक करके प्रमाणप्राप्ति प्रथम पृथिवीखंडकी अष्ट शब्दाध्यक्षोंसे इच्छाप्राप्ति सामान्य मिष्यादधि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिष्यादधि खंडशास्त्राध्यक्षोंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिष्यादधि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—प्रमाणप्राप्ति १९३; फलप्राप्ति १; इच्छाप्राप्ति ३२७९८ × २५३

$$\frac{३२७९८ \times २५३}{१९३} = \frac{८३८८०८}{१९३} \text{ म पृ मि अ}$$

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिष्यादधि खंडशास्त्राध्यक्षोंसे सामान्य नारक मिष्यादधि अवहारकालको अपवर्तित करके जो द्रव्य माने उससे छह पृथिवियोंकी मिष्यादधि खंड शास्त्राध्यक्षोंके गुणित करने पर प्रत्येक अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—३२७९८ ÷ १०३ = ३२७९८; $\frac{३२७९८}{१९३} \times ३३ = \frac{२०३४३८४}{१९३}$ म. अ. का.

अथवा प्रथम पृथिवी मिष्यादधि खंडशास्त्राध्यक्षोंसे सामान्य नारक मिष्यादधि अवहारकालको अपवर्तित करके जो द्रव्य व्यापारककी छह प्रतिप्राप्ति करके छह पृथिवियोंकी अपनी अपनी शब्दाध्यक्षोंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रत्येक अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $\frac{३२७९८}{१९३} \times १ = \frac{३२७९८}{१९३}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times २ = \frac{६५५९६}{१९३}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ३ = \frac{९८३९४}{१९३}$ पाँचवीं पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१२७२}{१९३}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ५ = \frac{१६४६०८}{१९३}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ६ = \frac{१९७९४४}{१९३}$ दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा म अवहारकाल

‘स्तेतेण सेढीए असखेज्जदिमागो । तिस्से सेढीए आयामो
असखेज्जाओ जायणकोढीओ पढमादियाण सेढिवग्गमूलाण
सखेज्जाणं अण्णोण्णव्मासेण’ ॥ २२ ॥

एदस्स सुचस्स अरथां वुचद । उ अहा—उच्चकालपमाणमुचोहि विदियादि
छप्पुडविमिच्छाद्विजीवाण पमाण परुविदमसंखेज्जमिदि । उ च असंखेज्जं पछ-सापरगुल
जगसेदि पदर-जोगादिभेदेण अणयवियप्पमिदि इम होदि चि ष आगिअदे, तदो मेदि
जगपदरादितवरिमसत्ताणियचावणहुमिदमाह ‘सेढीए असंखेज्जदिमागो’ चि । सेढीए
असंखेज्जदिमागो चि पस्स सायर-कप्पंगुलादिभेएण अणयवियप्पो चि वृक्षगुलादि
हेट्टिमवियप्पपडिसेइहुं ‘तिस्से सेढीए आयामो असखेज्जाओ जोयणकोढीओ’ चि वुच ।
सेढीए असंखेज्जदिमागो चि पुरिसिगिभेइसो तिस्से चि त्थीसिगिभेइसो, तदा दोण्हं

जेअकी अयेआ द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव अणभेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उस जगभेणीके असंख्यातवें भागकी जो
भेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका
प्रमाण, जगभेणीके संख्यात ग्रथमादि वर्तमानके परस्पर गुणा करनेसे बितना प्रमाण
उत्पन्न हो, वतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—ब्रह्मप्रमाण और कालप्रमाणके
प्रकरण करनेवाले सुत्तेश्वरा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अर्थात्
ख्यात है ऐसा कह पाये हैं । परंतु यह असंख्यात पक्ष सागर अंगुल, जगभेणी जगप्रतर
और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये हममेंसे यहाँ यह असंख्यात लिया गया
है यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगभेणी और जगप्रतर आदि अपारिम संख्याक
निर्गमन अर्थात् निवारण करनेके लिये द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
जगभेणीके असंख्यातवें भाग हैं यह कहा । जगभेणीका असंख्यातवर्षा भाग भी पक्ष, सागर,
कूप और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये सुच्यंगुल आदि अयस्तन
विकस्योंका निषेध करनेके लिये ‘उस भेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है यह कहा ।

सूत्र— सेढीए असखेज्जदिमागो इममें पुरिसिगि भिदंदाई और तिस्से पद

१ द्वितीयादिवा सत्तया मिथ्यादृष्टय जेवतकवेवमाणप्रमिता । उ चालन्देवमाण अर्थात् देवा राजन
भोज्य । उ चि १ विदिवादिवात्तमववतिहुमिअपदिहा सेढी । यो जी १५३ तदिअहंवेअन ।
सैसाद जरीएर उह व । पचम २ १३

२ प्रसिद्ध अण्णोण्ण इति वात । किं पुनः र्थानां अण्णोण्णोपि उच्यते ।

१२८, दम् ५१२' । विविधाविष्णुविमि छाद्विष्णुममूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए गेरहएसु मिच्छाइट्टी दव्व
पमाणेण केवढिया, असंखेजा ॥ २० ॥

अदस्स सुचस्स आदेसोपदब्बपरूवयसुचस्सव वक्खामं कायम्भं ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २१ ॥

पदस्स वि सुचस्स आदेसोपकाठवमाणपरूवयसुचस्सेव वक्खामं कायम्भं ।
पदाओ दव्वकाठपरूवणाओ पूलाओ । कुदो ? सोदाराण विष्णापाणुप्पायणाइ । दव्व
परूवणाओ काठपरूवणा सुहुमा, असंखजासखेजसखाविससिद्धदव्वगिरूवणाओ । इदावि
दव्वकाठपरूवणाहिंओ सुहुमत्तेचपरूवणाहु सुचमाइ—

द्रव्य ५१२ है । दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवीयोके मिथ्याएहि द्रव्यका
समूह ३२२ ५ है ।

दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्याएहि
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? असंख्यात है ॥ २ ॥

आवेष्टासे सामान्य नारक मिथ्याएहि द्रव्यका प्रकल्प करनेवाले सूत्रके व्याप्यात्रके
समान इस सूत्रका व्याप्यात्र करना चाहिये ।

काठप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके
नारक मिथ्याएहि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्गविधियों और उत्सर्गविधियोंके द्वारा
अपहृत होते हैं ॥ २१ ॥

आवेष्टासे सामान्य नारक मिथ्याएहि द्रव्यका प्रकल्प करनेवाले सूत्रके व्याप्यात्रके
समान इस सूत्रका भी व्याप्यात्र करना चाहिये । यहाँ यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और
काठप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवीयोकी मिथ्याएहि जीवराशिकी प्रकल्पा की है
यह स्पष्ट है क्योंकि ओठार्थको इस प्रकल्पासे निर्णय नहीं हो सकता है । फिर भी द्रव्य
प्रकल्पासे काठप्रकल्पा सूत्रम है क्योंकि काठप्रकल्पाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या
विशिष्ट द्रव्यका प्रकल्प किया गया है । जब द्रव्य और काठ इन दोनों ही प्रकल्पनोंसे सूत्रम
शेषप्रमाणके प्रकल्प करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

‘खेतेण सेढीए असखेज्जदिमागो । तिस्से सेढीए आयामो
असखेज्जाओ जोयणकोढीओ पढमादियाण सेढिवग्गमूलाण
सखेज्जाणं अण्णोण्णन्भासेण ॥ २२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो बुधदे । त जहा—दशमपञ्चाशत्तमो विविदिपदि
छप्पुढविमिच्छाद्दिजीवाण पमाण परुविदमसंखज्जमिदि । त च असखेज्जं पछ-सायंगुल
अगपेदि-पहर-सोगादिमेदेण अणयविपप्पमिदि इमं होदि चि ण जाभिअदे, तदो सेढि
अगपदरादिउदरिमसत्तामियचावणहुमिदमाह ‘सेढीए असखेज्जदिमागो’ चि । सद्दीण
असखेज्जदिमागो चि पत्त सायर रुप्पगुलादिमेएण अणेपविमत्थो चि बुद्धगुलादि
हेट्ठिमविपप्पपडिसेहं ‘तिस्से सेढीए आयामो असखेज्जाओ जोयणकोढीओ’ चि बुत्तं ।
सेढीए असखेज्जदिमागो चि पुरिसत्थिगणिहेसो तिस्से चि त्थीत्थिगणिहेसो, तदो दोण्हं

छेवकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्यक्ष पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव अगभेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उस अगभेणीके असंख्यातवें भागकी जो
भेणी है उसका आयाम असंख्यात कानि योजन है, जिस असंख्यात कोनि योजनका
प्रमाण, अगभेणीके संख्यात प्रथमादि वर्गमलों परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण
उत्पन्न हो, उतना है ॥ १९ ॥

अथ इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—प्रथमप्रमाण और अष्टमप्रमाणके
प्रकरण करनेवाले सूत्रोद्धार द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अर्ध
प्यात है ऐसा कह आये हैं । परंतु यह असंख्यात पक्ष सागर भंगुल, अगभेणी अगप्रतर
और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये हममेंसे यहाँ यह असंख्यात किया गया
है यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः अगभेणी और अगप्रतर आदि उपरिम सूत्रका
नियमन अर्थात् विचारण करनेके लिये द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
अगभेणीके असंख्यातवें भाग हैं यह कहा । अगभेणीका असंख्यातवें भाग भी पक्ष सागर
कक्ष और भंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये सूर्यगुल आदि अपस्तन
निकल्योक्त नियम करनेके लिये ‘उस भेणीका आयाम असंख्यात होदि योजन है यह कहा ।

शुद्ध— सेढीए असखेज्जदिमागो इयमें पुरिसं गिर्वेसा है और तिस्ये यह

१ द्वितीयादि सायंगुला विचारण अगभेणी-अगप्रतरमिदि । त चान्दमवभागाः अर्धं देवा यात्रय
कोम । त मि १ ८ विविदिपदिउदरिमसत्तामियचावणहुमिदमाह हेट्ठ । को जी १५१ सेढिवग्गमूलाण
वैरागु जीउत्तं छह व । पञ्च २ ११

२ अतिउ अन्माओ इति पाठ । किनु पुत्तः उद्दिवाणं अन्मातं पाठ कथ्यते ।

संबर्गं कदे विदियादिपुढविमिच्छाद्विद्वं दम्बपमाण होदि त्ति कथं जानिअदे ? आइ रियपरंपरागय अबिरुद्धोपदेसादो जानिअदि ।

बारस दस जठेन य मूला छलिय दुग च^१ गिरएसु ।

एकरस जव सच य पण य चठर्क य देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासि अवहारकालपरुषयगाहासुपादो वा परिमम्मपमाणादो वा जानिअदे ।

एदासि पुढवीन दम्बमाइप्यसापावणुं किंथि अरथपरुषणं कस्सामो । त बहा- विदियपुढविमिच्छाद्विद्वं तदियपुढविमिच्छाद्विद्वमादो ताव उप्पाइअदे । बारस

राशि द्रव्यका प्रमाण होता है वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्य परंपरासे ब्यावे हुए अभिरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे ५८ द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्याराशि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा—

नाटकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य कालके छिये जगज्जेणीका बारहवां बरावां, अठ्ठवां छठा तीसरा और नूतरा बर्गमूल अवहारकाळ है और दोनों सावत्तुमार नाबि पांच कल्लयुपमोंका द्रव्य कालके छिये जगज्जेणीका व्याहवां बीबां, सातवां पांचवां और बीया बर्गमूल अवहारकाळ है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकाळोंके प्ररूपन करनेवाले इस गाथा सुनछे जाना जाता है । अथवा परिकर्मके बचनसे जाना जाता है कि जगज्जेणीके प्रथमादि इतने इतने बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य अता है ।

विश्लेषार्थ—एक बर्गात्मक राशिके प्रथम ब्यादि जितने बर्गमूल होंगे उन्मेंसे जिस बर्गमूलका उक्त बर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे ओ सध्य व्यसगा वह जिस बर्गमूलका भाग दिया उस बर्गमूलका प्रथमादि बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे ओ राशि उत्पन्न होती बतना ही होगी । बहाहरणार्थ १५१६ में उसके बीये बर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ उच्य अते हैं । अब यदि प्रथमादि बार बर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होती । १५५३६ का पहला बर्गमूल १५६ दूसरा १६ तीसरा ४ और बीया २ है । अब इनके परस्पर गुणा करनेसे २५६ × १६ × ४ × २ = ३२७६८ ही अते हैं । ५८ नरकोंमें ओ अंकुसद्विष्ठी अपेसा राशिवां बरावार् हैं उनके निष्कालमें कविराव बर्गमूल छिये गये हैं, इसछिये ही बहा पह नियम नहीं पटाया का सक्ता है ।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके ग्रहणका ज्ञान करानेके छिये किंचित् अर्थमरूपण करते हैं । वह इसप्रकार है—उसमें भी पहले नूतरी पृथिवीके मिथ्याराशि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ अट्टि ह यच इति पाठः । एवं यावा र्थवसि २१ कदाचित्कथा ।

२ ठपो (देवेसु) पणत नव-नव-नव-नवनिबभूमाविदा ठो । पी. जी १११

समाप्तमहियरम् परितः पि सुचमिदमसंबद्धमिदि ! न एस दोसो, तिस्से सेडीए असरे
 च्छदिमागस्स सेडीए वा आयामो पि जेवं बचच्च, मिण्णाहियरण्णा बिसेसबस्स फ़ल
 मावादो च । किंतु सेडीए असंखन्नादिमागस्स आ सेडी पती तिस्से सेडीए आयामो पि
 बचच्चमिदि । असंखन्नाद्यो ज्ञोयनकोडीओ वि पदरगुल धमगुलादिभेदेष असंखन्ना-
 दियप्पाओ पि सेद्धिपदमवगममूलादिहेट्ठिमसखापाडिसेहं 'पदमादियाम् सेद्धिवग्गमूलम्
 संखेज्जाण अण्णोण्णम्मासेण' चि बुधं । तस्य सेद्धिपदमवगममूलमार्दि कात्तल्ल हेट्ठा वारसं
 वग्गमूलम् अण्णोण्णम्मासो विदियपुढविणेरइयमिच्छाद्दिद्वयपमानं होदि । तं के
 आदि करिय हेट्ठा दसण्ह वग्गमूलम् अण्णोण्णम्मासे कदे उदियपुढविमिच्छाद्दिद्वय
 पमानं हवदि । तं चेष आदि करिय अट्ठण्ह वग्गमूलम् संबग्गो जठरवपुढविमिच्छाद्दि
 द्वयपमानं हवदि । छण्ह सेद्धिवग्गमूलम् संबग्गो पंचमपुढविद्वयं होदि । तिण्ह संबग्गो
 छट्ठमपुढविद्वयं होदि । दोण्ह संबग्गो सप्तमपुढविद्वयं होदि । एवियाम् वग्गमूलम्

लक्षित्य निर्देश है । अतः इन दोनों पंक्तियों समान अधिकरण नहीं है इसलिये वह पूर्वोक्त
 सूत्र असंबद्ध है ।

समाधान—मह कोरि बोध नहीं है क्योंकि, यहाँ पर तिस्से सेडीए इस पक्ष
 मेवीके असंख्यातर्षे मागका आपाम अथवा जगमेवीके आपाम देखा अर्थ नहीं करता आहिये
 क्योंकि, इससे मित्राधिकरणत्वं प्राप्त हो जाता है और विशेषतः कोई सार्थकता नहीं रहती
 है । किंतु प्रकृतमें जगमेवीके असंख्यातर्षे मागकी ओ मेवी अर्थात् पंक्ति है उस मेवीके
 आपाम देखा अर्थ करना चाहिये । असंख्यात कोहि योजन भी प्रत्यंगुल और अर्धगुल
 आदिके भेदसे असंख्यात प्रकृतका है, इसलिये जगमेवीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल
 आदि बीजेकी संख्याका प्रतिपेक्ष करनेके लिये धर्म जगमेवीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके
 परस्पर गुणा करनेसे इतना फल कहा है । उनमेंसे यहाँ जगमेवीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर
 बीजेके बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितनी संख्या उत्पन्न हो उतना दूसरी पृथिवीके
 बारह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है । तथा जगमेवीके वही पहले वर्गमूलसे लेकर दश
 वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके बारह मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।
 तथा जगमेवीके वही प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर जो
 राशि आये उतना चौथी पृथिवीके बारह मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगमेवीके
 प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना पाँचवी पृथिवीके
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगमेवीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे
 जो राशि उत्पन्न हो उतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा पहले और
 दूसरे वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यका प्रमाण है ।

सूत्र—इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्या-

संपदि पदमपुढनिमिच्छाशङ्किदम्भादो विदियपुढविमिच्छाशङ्किदम्भस्स उत्पादम्भ
विहाय पुषदे—पदमपुढविमिच्छामस्यचिगुणिदसेत्तिवारसवग्गमूलेष पदमपुढविमिच्छाशङ्कि
दम्भम्हि मागे हिदे विदियपुढविमिच्छाशङ्किदम्भमागच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्व्येदण
यमेषे पदमपुढविदम्भस्स अद्व्येदण कदे नि विदियपुढविमिच्छाशङ्किदम्भमागच्छदि ।
सेदिवारसवग्गमूलस्स अद्व्येदणायो पदमपुढविमिच्छामस्यचिअद्व्येदणपसहिदाओ
विरालिय विग करिय अण्णोण्णमत्तरासिणा पदमपुढविमिच्छाशङ्किदम्भम्हि मागे हिदे
विदियपुढविमिच्छाशङ्किदम्भमागच्छदि । एदे तिणि मंगा पुण्ड्रिछपण्णारसमंगेसु पक्खिसे
विदियपुढविमिच्छा अहारस मंगा हवति । एव सम्भासि पुढवीण पचेग पचेग अहारस मंगा
उत्पादम्भा । सध्वमगसमासो सद छम्भीसुधर' ।

मी जहां जितने बर्गमूलको परस्पर गुणा करके जो राशि छार्ई गई हो उसी राशिसे
अर्धच्छेदोंका विरचन करके और उस विरचित राशिसे बोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे
जो छम्भ भाये उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको शुभित करना चाहिये । अथवा, इसी क्रमसे
अर्धच्छेद छाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको शिगुणित करना चाहिये । इसप्रकार
करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके उत्पन्न
करनेकी विधि पतलाते हैं—पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि पिच्छमस्यकीसे जगमेयीके बारहवें
बर्गमूलको शुभित करके जो छम्भ भाये उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके माजित
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२} = \frac{१९३}{३}, ९ \sqrt{१९} = \frac{१९३}{३} = ६४.८४ \text{ हि पु मि द्र}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उतनीवार अग्रमान राशि प्रथम पृथिवीके
द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अथवा जगमेयीके बारहवें बर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि
विजक्रमकी अर्धच्छेद मित्रा देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरचन करके और
उसे बोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि
द्रव्यके माजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण आता है । इन तीन
मार्गोंको पूर्वाच पन्त्रह मार्गोंमें मित्रा देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं । इसीप्रकार
सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब
भंगोंका जोड़ एकसा छम्भीस होता है ।

विशेषार्थ—अथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अवेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

वगमूलेष्य परस्परवगममूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बमिह गुभिदे विदियपुढवि
मिच्छाद्द्विदम्बं होदि । तस्म गुणगारस्त अद्वयेद्वयमेवचनारं तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं
दुगुभिदे' तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं होदि । अहवा गुणगारद्वयेद्वयसत्तागात्रो
विरलिय विग करिय अण्णोण्णमत्तरासिणा तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बमिह गुभिदे
विदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं हादि । अहवा तीहि पयारेहि तदियपुढविदम्बादो विदिय
पुढविदम्बमुप्याद्दं तहा सेसपठपुढविदम्बेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदम्ब
मुप्याद्दम्बं । एवमुप्यादिदे पण्णारस भगा सहा मर्षति ।

मिथ्याद्यदि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं—अगधेजीके बाहरहें वर्गमूलसे अगधेजीके व्याख्ये
वर्गमूलको गुणित करके जो द्रव्य भागे उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा उक्त गुणकारके
(बाहरहें वर्गमूलसे व्याख्ये वर्गमूलको गुणा करनेसे जो द्रव्य भागा उसके) कितने
अर्धच्छेद हो उतनीबार तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी
पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शब्दका
शेष पिरखन करके बीर उनरो हो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि
द्रव्यका प्रमाण होता है । यहाँ तिस्रप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी
पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार बीवी भावि होप बार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त
तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार उत्पन्न करने
पर पंद्रह भंग प्राप्त होते हैं ।

विशेषार्थ—बीवी पृथिवीकी अथवा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय
अगधेजीके नीचे वर्गमूलसे बाहरहें वगमूलतक बार वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उससे बीवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता
है । पाँचवी पृथिवीकी अथवा अगधेजीके सातवें वर्गमूलसे छह बार बाहरहें वगमूलतक छह
वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पाँचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । छठी पृथिवीकी अथवा अगधेजीके धीरे वर्गमूलसे
सेकर बाहरहें वर्गमूलतक भी वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी
पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । सातवी पृथिवीकी
अथवा अगधेजीके तीसरे वर्गमूलसे छह बार बाहरहें वर्गमूलतक बार वगमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर
दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । गुणकार राशिसे अर्धच्छेदोंका पिरखनादि करते समय

सपहि पढमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भादो विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भस्स उप्पादण
विहारणं पुब्बदे—पढमपुढविमिच्छामध्विगुणिदसेट्ठिवारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाशङ्खि
दम्भमिह माग हिदे विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भमागच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदण
यमत्ते पढमपुढविदम्भस्स अद्दच्छेदणए फदे वि विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भमागच्छदि ।
सेट्ठिवारसवग्गमूलस्स अद्दच्छेदणाआ पढमपुढविमिच्छामसूचीअद्दच्छेदणयसहिदाओ
विहासिय विग करिय अण्णोण्णम्मत्तरासिणा पढमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भमिह मागे हिदे
विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्भमागच्छदि । एदे तिष्ठिण मगा पुम्भिल्लवम्भारसभेगेसु पविस्सुत्ते
विदियपुढविण अट्टारस मगा हवन्ति । एव सम्भासिं पुढवीण पत्तेग पत्तेग अट्टारस मगा
उप्पाणद्वया । सव्वमगसमासो सद्दं छन्वीसुत्तरं ।

भी अहां जितने बगमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि छार्ह गह हो उही राशिसे
अर्धच्छेदोंका विरचन करके बीर उस विरचित राशिसे शोकप करके परस्पर गुणा करनेसे
जो जग्य भावे उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये । अथवा इसी क्रमसे
अर्धच्छेद छाकर उतनीबार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये । इसप्रकार
करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अब पाहसी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न
करनेकी विधि बतलाते हैं—पाहसी पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि पिच्छमसूचीसे जगधेजीके बारहवें
बगमूलको गुणित करके जो जग्य भावे उससे पाहसी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके माजित
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}, ९८८१९ - \frac{१९३}{३२} = १९३८४ \text{ हिं वृ मि द्र}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उतनीबार अम्बमान राशि प्रथम पृथिवीके
द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अथवा जगधेजीके बारहवें बगमूलके अर्धच्छेदोंमें पाहसी पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि
पिच्छमसूचीके अर्धच्छेद मिछा देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरचन करके बीर
उसे शोकप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पाहसी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यके माजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । इन तीन
मार्गोंको पूर्णतः पन्त्रह मंगोंमें मिछा देने पर दूसरी पृथिवीके अट्टारह मंग होते हैं । इसीप्रकार
सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अट्टारह अट्टारह मंग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब
मंगोंका जोड़ एकही छन्वीस होता है ।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किमप्रकार

व्यता है। इसका योहासा विवेचन मूत्रमें ही किया है। और वहां यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयानि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुछ १२९ भग्न होते हैं। उनमेंसे त्रिंश १८ भग्नसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भगनोंमें १२९ भग्नसे कम कर देने पर शेष १०८ भग्न रहते हैं। इसप्रकार आये उन्हीं १८ भगनोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयानि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूत्रसे तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा द्वावें वर्गमूत्रसे चौथी पृथिवीकी अपेक्षा व्यक्तमें वर्गमूत्रसे पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूत्रसे छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूत्रसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूत्रसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि बिम्बमन्त्रकीसे शुचित करने पर जो छप्प आठे उससे द्वितीयानि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पुनः पुनः शुचित करने पर कमहा द्वितीयानि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य व्यता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी चौथी पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि बिम्बमन्त्रकीसे पुनः पुनः द्वावें व्यक्तमें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूत्रको शुचित करके जो जो छप्प आठे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके माजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा कमहा तीसरी चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आते समय बारहवें और बारहवें वर्गमूत्रका चौथी पृथिवीका द्रव्य आते समय नौवें से लेकर बारहवें तक बार वर्गमूत्रोंका पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवें से लेकर बारहवें तक छह वर्गमूत्रोंका छठी पृथिवीका द्रव्य आते समय बीसवें से लेकर बारहवें तक बी वर्गमूत्रोंका सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरे से लेकर बारहवें तक द्वा वर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आठे उस उसका नाम दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर कमहा दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य व्यता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य आते समय नौवें और द्वावें वर्गमूत्रका पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवें से लेकर द्वावें तक बार वर्गमूत्रोंका छठीका द्रव्य आते समय बीसवें से लेकर द्वावें तक सात वर्गमूत्रोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरे से लेकर द्वावें तक व्यक्त वर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके माजित करने पर कमहा चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवें और आठवें वर्गमूत्रका छठी पृथिवीका द्रव्य आते समय बीसवें से लेकर आठवें तक पांच वर्गमूत्रोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरे से लेकर आठवें तक छह वर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके माजित करने पर कमहा पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आते समय बीसवें पांचवें और छठे वर्गमूत्रका तथा सातवीं

पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरेसे लेकर छठ तक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यावृद्धि द्रव्य जाता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरे बर्गमूर्खसे छठी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य जाता है। चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य साते समय चौथीकी अपेक्षा नीचे और दशवें बर्गमूर्खका पांचवीकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक बार वर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पांचवी छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है। पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय पांचवीकी अपेक्षा सातवें और आठवें बर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पांच बर्गमूर्खोंका सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि ब्यबे उस उससे पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृद्धि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यावृद्धि द्रव्य जाता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठतक तीन बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठतक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि ब्यबे उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृद्धि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका मिथ्यावृद्धि द्रव्य जाता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यके तीसरे बर्गमूर्खसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृद्धि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यावृद्धि द्रव्य जाता है। पहले जहां ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो मागद्वार कह आये हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण मात्र राशिके आये आये करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य जाता है। अथवा अर्धच्छेदप्रमाण हो रक्कड़ उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आये उसप्रमाण मात्र राशिमें माग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य जाता है। वहीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य साते समय जहां जो गुणद्वार हो उसके अर्धच्छेदोंका प्रितभा प्रमाण हो वतनीबार गुण्य राशिके बूने बूने करन पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य न्यता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण हो रक्कड़ उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य जाता है। इसप्रकार ये कुछ मग १०८ हुए हममें दूसरी पृथिवीके १८ मग मिया देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निश्चयनेके १२५ मग होते हैं।

व्यता है, इसका थोटासा विवेचन मूलमें ही किया है। और वहाँ यह भी कहा है कि इसीमध्यार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुल १२६ भग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर तोय १८ भग रहते हैं। इसलिये आगे उन्हीं १०८ भगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें बर्गमूलसे तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा द्वावें बर्गमूलसे चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें बर्गमूलसे पाँचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे बर्गमूलसे छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे बर्गमूलसे और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे बर्गमूलसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि विच्छेदसूचीके गुणित करने पर जो छप्प आठे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पुनः पुनः गुणित करने पर कमशा द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विच्छेदसूचीसे पुनः पुनः द्वावें आठवें छठे, तीसरे और दूसरे बर्गमूलको गुणित करके जो जो छप्प आठे उस उससे पहले पृथिवीके द्रव्यके माणित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा कमशा तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य साते समय म्पारहवें और बारहवें बर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय नौवें से छेकर बारहवें तक बार बर्गमूलोंका पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवें से छेकर बारहवें तक छह बर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य साते समय बीसवें से छेकर बारहवें तक नौ बर्गमूलोंका सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरे से छेकर बारहवें तक द्वा बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आठे उस उसका माय दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर कमशा दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय नौवें और द्वावें बर्गमूलका पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवें से छेकर द्वावें तक बार बर्गमूलोंका छठीका द्रव्य साते समय बीसवें से छेकर द्वावें तक सात बर्गमूलोंका और सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरे से छेकर द्वावें तक आठ बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके माणित करने पर कमशा चौथी पाँचवी, छठी और सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवें और आठवें बर्गमूलका छठी पृथिवीका द्रव्य साते समय बीसवें से छेकर आठवें तक पाँच बर्गमूलोंका सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरे से छेकर आठवें तक छह बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके माणित करने पर कमशा पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पाँचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य साते समय बीसवें, पाँचवें और छठे बर्गमूलका तथा सातवी

पृथिवीका द्रव्य छाते समय तीसरेसे छेकर छेड़ तक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो पश्चि उत्पन्न हो उस उससे पाँचवीं पृथिवीके द्रव्यके माशित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य छाते समय तीसरे बर्गमूर्खसे छठी पृथिवीके द्रव्यके माशित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य करने समय चौथीकी अपेक्षा नौवें और दशवें बर्गमूर्खका पाँचवींकी अपेक्षा सातवेंसे छेकर दशवें तक बार बर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर दशवेंतक सात बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर दशवेंतक आठ बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो पश्चि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पाँचवीं छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य छाते समय पाँचवींकी अपेक्षा सातवें और आठवें बर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर आठवें तक पाँच बर्गमूर्खोंका सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर आठवेंतक छह बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो पश्चि आये उस उससे पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका द्रव्य छाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर छेड़तक तीन बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर छेड़तक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो पश्चि आये उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यकी तीसरे बर्गमूर्खसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहाँ ऊपरकी पृथिवियोंमें नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागद्वार कह जाये हैं उस उसके अपच्छेद करके तत्प्रमाण मात्र पश्चिके आये जाये करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य आ जाता है। अथवा अपच्छेदप्रमाण से रक्तहर बनके परस्पर गुणा करनेसे जो पश्चि आये उसका मात्र पश्चिके भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य आ जाता है। उल्लेखद्वार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य छाते समय जहाँ जो गुणकार हो उनके अपच्छेदोंका चित्ता प्रमाण हो उत्तरीयार गुण्य पश्चिके वृत्त वृत्ते करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अपच्छेदप्रमाण से रक्तहर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो पश्चि हो उससे गुण्य पश्चिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य न्य आता है। इसप्रकार ये वृत्त संग १०८ हुए इनमें वृत्तकी पृथिवीके १८ संग मित्रा देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निराकनेके १२५ संग होते हैं।

सासणसम्माइठिण्हुडि जाव असजदसम्माइठि ति ओष ॥२३॥

पलिद्रोवमस्स असंखेज्जदिमागच पडि विसेसामावादा विदियादिपुढविगुणपडि
पण्णाय पक्खणा ओपमिदि बुत्ता इत्थङ्खियसिस्सापुग्गहह । पन्धवङ्खियणए पुव म
संविन्जमाये विससो अरिय चेव, अण्णहा एगपुढविगुणपडिविण्णण सचपमामायनरा
च दुप्पदिसेज्जा पसन्जदे । त गुणपडिविण्णवीवविसेस पुम्माइरियावमविक्खोवमेव
अपरियपरंपरागदेग वचइस्सामो । त अहा— पुम्माइरियावसामण्णनरियअसजदसम्माइठि
अवहारकसमावलिपाण असंखेज्जदिमागच मागे दिदे छंदं तमि चेव पक्खित्ते पदम

सासादनसम्पन्नादि गुणस्थानमं छेकर असयतसम्पन्नादि गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य
प्ररूपवाके समान पक्षोपमके असंख्यातवें माग हैं ॥ २१ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें इन्द्रपमावेव केवडिया अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा
पृच्छमान्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसंख्या ५ की सीधमें जो उक्त पृच्छमान्यका एक
स्वकर्तृत्वनिष्कर्षपूर्वक आप्तार्थत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी वहाँ व्यर्थता यह जाती
है। तथापि सूत्र सदैव संक्षेपाद्य हुआ करते हैं और उनमें यह सावधानिक नियम है कि 'सुतेप्पदसं
पदं सूत्रात्तराज्जुवर्तनीयं सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी
स्थान सूत्रोंसे अनुवृत्ति सदैव कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छ-
पदकी अनुवृत्ति हो जाती है। मागे भी अहाँ वहाँ उक्त पद न पाया जाय वहाँ वही नियमका
अधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान
प्रतिपक्ष जीवोंकी संख्या ये शक्तिर्वा पक्षोपमके असंख्यातवें मागतत्वेक प्रति समान हैं, इसलिये
द्रव्यार्थिक ब्रह्मकी अपेक्षा दृग्मेवके शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपक्ष जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपवाके समान है ऐसा कहा। पर्यायार्थिक ब्रह्मका
अवर्तन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि
पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी संख्या इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना
जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपक्ष जीवोंकी संख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपक्ष जीवोंकी संख्या एकही हो जायगी जिसके लियेयके बुझकर दोनोका प्रसंग आ जाता है।
जब गुणस्थान प्रतिपक्ष जीवोंके इस विशेषको आचार्य-वरंपदसे मागे हुए पूर्वोक्तार्थके अवि-
पक्ष उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असेवतसम्पन्नादियोंका अवहारकाज जो पहले उत्पन्न करके बतला
भ्याये है, उसे आबर्तकीके असंख्यातवें मागसे याजित करने पर जो अण्य भ्याये उसे वही नारक
सामान्य असंयतसम्पन्नादियोंके अवहारकाजमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंयत

पुदविअसज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलिपाए अंसखेजदिमागेण गुणिदे पढमपुदविसम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूरेहि गुणिदे सासम्य सम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलिपाए अंसखेजदिमागेण गुणिदे विदियाए अंसज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलिपाए अंसखेजदिमागेण गुणिदे सम्मामिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूरेहि गुणिदे सासम्यसम्माइडिअवहारकालो होदि । एव तदियादि जाव सचमपुदवि त्रिअवहारकाला परिभाडीए उप्पाएदग्ग । एदेहि अवहारकालहि पलिदोमस्सुपरि खंडिदादीण ओपमंगा ।

मागामागे दम्बपमाणविसयपिण्णयन्नमण्डं वचइस्सामो । सम्बन्धीवरासिस्स अण्णत्तेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा विरिक्खा होंति । सेसस्स अण्णत्तेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा सिद्धा होंति । सेसस्स अंसखेज्जेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा देवा होंति । सेसस्स अंसखेज्जेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा भेरइया होंति । सेसगमागो मज्झसा इवति । पुगो भेरइपरसिस्स अंसखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुमागा पढमपुदवि

सम्पगइदि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकालको आबलीके असंयतातर्बे मागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्पगिम्य्या इदि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकालको संयतातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासाव्नसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पहले नरकके सासाव्नसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकालको आबलीके असंयतातर्बे मागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकाल होता है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकालको आबलीके असंयतातर्बे मागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकाल होता है । उस दूसरी पृथिवीके सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकालको संयतातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासा व्नसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकाल होता है । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटीअन्तसे उत्पन्न कर डेना चाहिये । इन अवहारकालोंके छाय पस्योपमके ऊपर लंकित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है ।

अब मध्यप्रमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करनेके लिय मागामागको बतलाने हैं—
संपूर्ण जीवराशिसे अनन्त माग करने पर उनमेंसे बहुमाग तिर्यक् होते हैं । शेष एक भागके अनन्त माग करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण सिद्ध होते हैं । शेष एक भागके असंयतात माग करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण देव होते हैं । शेष एक भागके असंयतात माग करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण नारदी होते हैं । शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं । पुनः नारक जीवराशिसे असंयतात लंक करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्याइदि जीव

मिच्छाद्दी ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो खंडेभ्यु कदेसु तस्य बहुमाणा विविधपुटवि-
मिच्छाद्दी ह्येति । एव तदिय-अउरय-यचम-छट्ट-सप्तमपुटवीण अग्रामोदेष माममापो
कायच्यो । पुनो सेसस्त असंख्येभ्यो भागसु कदेसु तस्य बहुमाणा पदमाए पुटवीए
असंख्यदसम्माइद्विजो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा पदम-
पुटविसम्माइद्विजो ह्येति । सेसस्त संख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
पदमपुटविसासयसम्माइद्विजो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
विदियपुटविजसंख्यदसम्माइद्विजो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
तत्त्वतजसम्माइद्विजो ह्येति । सेसस्त संख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
तत्त्वतजसासयसम्माइद्विजो ह्येति । एवं तदियादि आब सप्तमपुटवि चि गुणपडिबन्ना
मागामागो कयच्यो । एव मागामागो समचो ।

अप्याबहुग विविहं, सरपार्ण परपार्ण सचपरपार्ण चदि । तस्य सत्थाबन्ना
बहुग बुचदे । सम्बरयोवा सामन्थेरेइपमिच्छाइद्विजिक्खमसूची । अबहारकालो असंख्ये-
गुणो । को गुणगारो ? अबहारकालस्त असंख्येभ्योभागे । को पडिभागो ? सगविक्खंम

होते हैं । रोप एक भागके अक्षेपात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके
मिथ्याद्यदि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी
जीवप्राधिक्य सावधानीसे मागामाग कर केना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्यिक्खोके
मनन्तर जो एक भाग रोप रहे उसके अक्षेपात माप करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली
पृथिवीके अक्षेपातसम्प्रादयि जीव होते हैं । रोप एक भागके अक्षेपात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्प्रापिथ्याद्यदि जीव होते हैं । रोप एक भागके अक्षेपात माप
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सासावसम्प्रादयि जीव होते हैं । रोप एक
भागके अक्षेपात माग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके अक्षेपातसम्प्रादयि
जीव होते हैं । रोप एक भागके अक्षेपात माप करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी
पृथिवीके सम्प्रापिथ्याद्यदि जीव होते हैं । रोप एक भागके अक्षेपात माप करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासावसम्प्रादयि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीके
केकर सातवीं पृथिवीतक शुचकयमप्रतिपल्ल जीवोंका मागामाग करना चाहिये ।

इसप्रकार मागामाग समाप्त हुआ ।

अप्यबहुत्वं तीन प्रकारका है, स्वस्याय अप्यबहुत्वं परस्याय अप्यबहुत्वं और सर्व-
परस्याय अप्यबहुत्वं । उनमेंसे पहले स्वस्याय अप्यबहुत्वंका कथन करते हैं— सामान्य
नारक मिथ्याद्यिक्खोकी विक्खेमसूची सप्तसे स्तोका है । सामान्य नारक मिथ्या-
द्यिक्खोका अबहारकाल सामान्य नारक मिथ्याद्यि विक्खेमसूचीसे अक्षेपातगुणा है । शुचकर

पक्षी । अहवा सेदीए असंखेज्जविभागो, असंखेज्जवाणि सेडिपडमवगमूलाणि । को पडिभागो ? सगविकसंमसूचीवग्गो पमगुलपडमवगमूल वा । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकसंमसूची । दण्डमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? विकसंमसूची । पदरमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोपो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । सासपसंमसाइडि-संमामिच्छाइडि-असंखेज्जसंमसाइडिगमोपसरवापमगो । पंथं पेव पडमाए पुडवीए । विदियाए पुडवीए सम्पत्थोभो मिच्छाइडिअवहारकालो । तस्सेव दण्डम संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदण्डस्स असंखेज्जविभागो । को पडिभागो ? सग अवहारकालो । अहवा सेदीए असंखेज्जविभागो असंखेज्जवाणि सेडिपडमवगमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो सेडिपकारसवगमूल वा । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेडिवारसवगमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । लोपो

क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंमसूची प्रतिभाग है । अथवा जगभेदीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंमसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा भर्गुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिष्याद्यदि अवहारकालसे जगभेदी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । जगभेदीसे सामान्य नारक मिष्याद्यदि द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । सामान्य नारक मिष्याद्यदि द्रव्यसे जगप्रसर असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? सामान्य नारक मिष्याद्यदि अवहारकाल गुणकार है । जगप्रसरसे जनकोक असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगभेदी गुणकार है । सामान्य नारक सात्तावनसम्पद्यदि, सम्प मिष्याद्यदि और असंपतसम्पद्यदि जीवोंका स्वस्वातन्त्र्य स्वस्वातन्त्र्य सामान्य स्वस्वातन्त्र्यके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पक्षी पृथिवीमें स्वस्वातन्त्र्य स्वस्वातन्त्र्य है । नृसरी पृथिवीमें मिष्याद्यदि अवहारकाल सबसे लोको है । नृसरी पृथिवीके मिष्याद्यदि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा जगभेदीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकाल (नारक के वर्गमूलका) वर्ग जयवा जगभेदीका म्याएवां वर्गमूल प्रतिभाग है । नृसरी पृथिवीके मिष्याद्यदि द्रव्यसे जगभेदी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगभेदीका नारकवां वर्गमूल गुणकार है । जगभेदीसे जगप्रसर असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगभेदी गुणकार है । जगप्रसरसे जनकोक असंख्यातगुण है । गुणकार

मिथ्याद्विती इति । सेसस्त असंख्येभ्यो लब्धेभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा विविधपुत्रवि
मिथ्याद्विती इति । एवं तदिय-वत्तत्त्व-यत्नम-छद्म-सत्तमपुत्रवीथ्य अम्बामोहेष भागभागो
कायभ्यो । पुत्रो सेसस्त असंख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा पञ्चमाप पुत्रवीथ्य
असंख्यदसम्माद्विती इति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा पञ्चम
पुत्रविसम्माद्विती इति । सेसस्त संख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा
पञ्चमपुत्रविसत्तमपुत्रविसम्माद्विती इति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा
विविधपुत्रविसत्तमपुत्रविसम्माद्विती इति । सेसस्त असंख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा
तत्त्वतः सत्तमपुत्रविसम्माद्विती इति । सेसस्त संख्येभ्यो भागभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा
तत्त्वतः सत्तमपुत्रविसम्माद्विती इति । एवं तदियादि काय सत्तमपुत्रवि सि गुणपञ्चिभ्यो
भागभागो कायभ्यो । एवं भागभागो समधो ।

अप्यावहुर्म विविहं, सरचायं परत्वायं सम्पपरत्वायं चेति । तस्य सत्त्वावभा-
वहुर्म बुद्धे । सम्पत्तयोवा सामान्येभ्यमिष्टाद्विषयैर्बहुभि । अवहारकास्ते असंख्य-
गुणो । को गुणगारो ? अवहारकास्तस्य असंख्येभ्यो भागो । को पञ्चिभागो ? सगविकर्तम

होते हैं । होय एक भागके असंख्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके
मिथ्याद्विती जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी चौथी पांचवी छठी सैत छतवी पृथिवीके
जीवराशिक साधधानीसे मायामात्र कर लेना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्वितीके
मन्तर जो एक भाग होय रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ती
पृथिवीके असंख्यसम्पद्विती जीव होते हैं । होय एक भागके असंख्यात बंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण पड़ती पृथिवीके सम्पमिथ्याद्विती जीव होते हैं । होय एक भागके संख्यात भाग
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ती पृथिवीके सात्त्विकसम्पद्विती जीव होते हैं । होय एक
भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंख्यसम्पद्विती
जीव होते हैं । होय एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी
पृथिवीके सम्पमिथ्याद्विती जीव होते हैं । होय एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सात्त्विकसम्पद्विती जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीके
केकर छतवी पृथिवीके गुणज्ञानप्रतिपत्त्य जीवोंका मायामात्र करना चाहिये ।

इसप्रकार भागभाग समाप्त हुय ।

अप्यवहुत्व तीन प्रकारका है स्वस्थान अप्यवहुत्व परस्थान अप्यवहुत्व और तर्क
परस्थान अप्यवहुत्व । उनमेंसे पहले स्वस्थान अप्यवहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य
नारक मिथ्याद्वितीकी विभक्तिसूची सबसे श्लोक है । सामान्य नारक मिथ्या-
द्वितीका अवहारकका सामान्य नारक मिथ्याद्विती विभक्तिसूचीसे असंख्यातगुण है । गुणकार

एणी । अहया सेदीण असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जगणि सेदिपढमवग्गमूलानि । को पढिभागो ? सगविक्कसंमएणीवग्गो घणगुलपढमवग्गमूल वा । सेदी अरंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्कमएणी । दम्भमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्कसंमएणी । पदरंमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकाला । छागो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । सासलसम्मइद्धि-सम्मभिच्छाइद्धि असज्जदसम्मइद्धीणमोघसत्ताणमग्गो । गय पेव पढमाण पुदयीण । निदियाण पुदयीण सम्भरथोवा मिच्छाइद्धिअवहारकालो । तस्मिं व दम्भम संखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगदम्भम असंखेज्जदिभागो । को पढिभागो ? सग अवहारकाला । अहया सेदीण असग्गज्जदिभागो असंखेज्जगणि सेदिपढमवग्गमूलानि । को पढिभागो ? सगअवहारकालवग्गो सेदिण्णारसवग्गमूल वा । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेदियारसवग्गमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । छागो

कया हे ? अपने अवहारकालक असंख्यातवां भाग हे । प्रतिभाग कया हे ? अपनी विष्केमएणी प्रतिभाग हे । अथवा जगधेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार हे जो जगधेणीके असंख्यात प्रथम वगमूलप्रमाण हे । प्रतिभाग कया हे ? अपनी विष्केमएणीका चरं प्रतिभाग हे । अथवा, पमांगुलवा प्रथम वगमूल प्रतिभाग हे । सामान्य नारक मिध्यादृष्टि अवहारकालसे जगधेणी असंख्यातगुणी हे । गुणकार कया हे ? अपनी विष्केमएणी गुणकार हे । जगधेणीसे सामान्य नारक मिध्यादृष्टि द्रव्य अतीकयातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अपनी विष्केमएणी गुणकार हे । सामान्य नारक मिध्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? सामान्य नारक मिध्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार हे । जगप्रतरसे धनसोक अतीकयातगुणा हे । गुणकार कया हे ? जगधेणी गुणकार हे । सामान्य नारक सामान्यतत्त्वगदृष्टि, साम्य मिध्यादृष्टि और अरंयतरावगदृष्टि जीवोंका स्वस्थान अव्यक्तवृत्तय सामान्य स्वस्थान अव्यक्तवृत्तयके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पदमी पृथिवीमें स्वस्थान अव्यक्तवृत्तय हे । नृगरी पृथिवीमें मिध्यादृष्टि अवहारकाल रावरो गताक हे । नृगरी पृथिवीके मिध्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे अतीकयातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अपने द्रव्यका अतीकयातवां भाग गुणकार हे । प्रतिभाग कया हे ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग हे । अथवा जगधेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार हे जो जगधेणीका अतीकयात प्रथम चरंमूलप्रमाण हे । प्रतिभाग कया हे ? अपने अवहारकालका (बारहसे वगमूलका) चरं अथवा जगधेणीका व्यावहारी चरंमूल प्रतिभाग हे । नृगरी पृथिवीके मिध्यादृष्टि द्रव्यसे जगधेणी अतीकयातगुणी हे । गुणकार कया हे ? जगधेणीका बारहवां वगमूल गुणकार हे । जगधेणीसे जगप्रतर अतीकयातगुणा हे । गुणकार कया हे ? जगधेणी गुणकार हे । जगप्रतरसे धनसोक अतीकयातगुणा हे । गुणकार

असंख्येन्द्रगुणो । को गुणगारो ? सेही । सासणसम्माइद्धि-सम्मामिच्छाइद्धि-असंबदसम्मा
इद्धिजमोपसत्तावमगो । तदियादि आब सचमपुढवि चि एवं वेव सत्थाणप्पाबहुव
वत्तम् । जवरि अप्पप्पो अबहारकाले आनिउम्भ माणिदम्भ ।

परत्याणप्पाबहुव वत्तइस्सामो । सम्पत्थोवो असंबदसम्माइद्धिअवहारकालो । एवं
आब पत्तिदोवमो चि जेदम्भ । पत्तिदोवमावो उवरि सामण्णजेरइयमिच्छाइद्धिबिक्खमए
असंखेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? विक्खंसमएअसंखेन्द्रदिमागो । को पट्ठिमागो ?
पत्तिदोवम । अइवा अविअंगुलस्स असंखेन्द्रदिमागो असंखेन्द्राणि अविअंगुलपदमवगम
मूलाणि । को पट्ठिमागो ? पत्तिदोवमगुणिदधअंगुलविदियवमामूळ । उवरि सत्तावममो ।
एवं वेव पदमाए पुढवीए । विदिपाए पुढवीए सम्पत्थोवो असंबदसम्माइद्धिअवहार
कालो । एवं आब पत्तिदोवमो चि जेदम्भो । तदो मिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेन्द्रगुणो ।
को गुणगारो ? वारसवमामूलस्स असंखेन्द्रदिमागो । को पट्ठिमागो ? पत्तिदोवम । उवरि
सत्तावममो । एवं तदियादि आब सचमपुढवि चि परत्याणप्पाबहुव वत्तम् । जवरि

क्या है ? जगमेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासणसम्पत्ति, सम्पत्तिप्राप्ति और
असंख्येन्द्रगुणोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
तीसरी पृथिवीके छेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना
चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने
ज्वहारकालके जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्पर अल्पबहुत्वके बतलाते हैं— अल्पतत्सम्पत्ति ज्वहारकाल सबसे
सटीक है । इससे सम्पत्तिप्राप्ति, इससे सासणसम्पत्ति का ज्वहारकाल इसप्रकार
अल्पबहुत्व कहते हुए पर्योपम तक के जाना चाहिये । पर्योपमके ऊपर सामान्य वारक
मिथ्यादि विषमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विषमसूचीका असंख्यातवां
भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पर्योपम प्रतिभाग है । अथवा स्वर्णगुणका असंख्यातवां
भाग गुणकार है जो स्वर्णगुणके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ?
पर्योपमसे स्वर्णगुणके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो अल्प आवे बतना प्रतिभाग
है । इस विषमसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना
चाहिये । इसीप्रकार पड़वी पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें अल्पतत्सम्पत्ति का ज्वहारकाल सबसे सटीक है । इसीप्रकार
बततेपर अल्पबहुत्व कहते हुए पर्योपमतक के जाना चाहिये । पर्योपमसे दूसरी पृथिवीके
मिथ्यादियोंका ज्वहारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ? जगमेणीके वारक
वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पर्योपम प्रतिभाग है । इसके
ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी
पृथिवीके छेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । एतना

अप्यप्यथो अग्रहारकाले जायितुं यत्तम् ।

सम्भरतवागप्यावगुणं पक्षइत्तामो । सम्भरतयोरो पक्षमपुढविअसंज्ञदम्भमादि
अग्रहारकालो । सम्भामिच्छादिअग्रहारकालो अग्रगुणगुणो । को गुणगारो ? आबलि
याए असंज्ञदिमागो । सासणसम्भामिच्छादिअग्रहारकालो संज्ञगुणगुणो । को गुणगारो ?
संज्ञेज्जा समया । उदो विदियपुढविअसंज्ञदम्भमादिअग्रहारकालो असंज्ञेज्जगुणो । को
गुणगारो ? आबलिपाए असंज्ञेज्जदिमागो । सम्भामिच्छादिअग्रहारकालो असंज्ञेज्जगुणो ।
सासणसम्भामिच्छादिअग्रहारकालो संज्ञेज्जगुणो । एव आब सचपाए पुढरीए सासणसम्भामिच्छादि
अग्रहारकालो चि जेयम्भो । तस्सेव दम्भमसंज्ञेज्जगुण । सम्भामिच्छादिदम्भं संज्ञेज्ज
गुण । असंज्ञदम्भमादिदम्भमसंज्ञेज्जगुण । को गुणगारो ? आबलिपाए असंज्ञदिमागो ।
एव पडिलोमेण णेदम्भ जाव पक्षमपुढविअसंज्ञदम्भमादिदम्भं पक्षमिदि । उदो पलि
दोवममसंज्ञेज्जगुण । उदो पक्षमपुढविअसंज्ञदम्भमादिदम्भं असंज्ञेज्जगुणा ।
सामण्णयरइयमिच्छादिदम्भमसंज्ञेज्जगुणा । उदो विदियपुढविअसंज्ञदिमागो ।

पिठेय ई कि अपना अपना अग्रहारकाळ जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्परान् अग्रहगुणको बतलाते हैं—पहली पृथिवीके असंयतसम्भारद्विषोंका
अग्रहारकाळ सबसे स्तोत्र है । उनसे पहली पृथिवीके सम्भारिगुणद्विषोंका अग्रहारकाळ
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? भावलीका असंख्यातका भाग गुणकार है । सम्भारिगुणा
द्विषोंके अग्रहारकाळसे पहली पृथिवीके सासाधनसम्भारद्विषोंका अग्रहारकाळ संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात ममय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासाधनसम्भारद्विषोंके
अग्रहारकाळसे दूसरी पृथिवीके असंयतसम्भारद्विषोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? भावलीका असंख्यातका भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्भारद्विषोंके
अग्रहारकाळसे तृतीये सम्भारिगुणाद्विषोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा है । सम्भारिगुणा
द्विषोंके अग्रहारकाळसे तृतीये सासाधनसम्भारद्विषोंका अग्रहारकाळ संख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार सप्तमी पृथिवीतक सासाधनसम्भारद्विषोंके अग्रहारकाळतक ले जाना चाहिये ।
सप्तमी पृथिवीके सासाधनसम्भारद्विषोंका अग्रहारकाळसे अष्टमीका द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
सासाधनसम्भारद्विषोंके द्रव्यसे अष्टमी सम्भारिगुणाद्विषोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्भारिगुणा
द्विषोंके द्रव्यसे अष्टमीके असंयतसम्भारद्विषोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? भावलीका असंख्यातका भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर प्रतिष्ठोम पक्षमिसे
अब पहली पृथिवीके असंयतसम्भारद्विषोंका द्रव्य प्राप्त होय तब तक ले जाना चाहिये ।
पहली पृथिवीके असंयतसम्भारद्विषोंके द्रव्यमे पक्षोपम असंख्यातगुणा है । पक्षोपमसे
पहली पृथिवीके मिथ्याद्विष नारकियोंकी विष्णुमन्त्री असंख्यातगुणी है । उक्त विष्णुमन्त्रीके
सामान्य मिथ्याद्विष नारकियोंकी विष्णुमन्त्री विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्याद्विष
नारकियोंकी विष्णुमन्त्रीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्याद्विषोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा

असंख्येन्द्रगुणो । को गुणगारो ? सेही । सासणमम्माइहि-सम्मानिम्माइहि असमइसम्मा
इहीणमोपसत्ताणमगो । तदियादि जाव सत्तमपुदवि सि एवं वेव सत्ताणप्पावहुप
वत्तम् । गवरि अप्पप्यथो अवहारकाळे आपिऊण माणिदम्भ ।

परत्त्याणप्पावहुर्ग वत्तम् । सम्भत्तावो असज्जसम्माइहि-अवहारकाळा । एवं
जाव पत्तिदोवमा सि जेदम्भ । पत्तिदावमादो उवरि सामण्णमेरइयमिच्छाइहि-विक्रमसं
असंख्येन्द्रगुणा । को गुणगारो ? विक्रमसंघर्ष अंतोअदिमागो । को पटिमागो ?
पत्तिदोवम । अइवा संधिअंगुलस्स अंतोअदिमागा अंतोअंगुलि संधिअंगुलपदमग्ग
मूलाणि । को पटिमागो ? पत्तिदोवमगुणिद्वयअंगुलनिदिपवग्गमूळ । उवरि सत्ताणमगो ।
एवं वेव पदमाए पुदवीए । विदियाए पुदवीए सम्भत्तावो असज्जसम्माइहि-अवहार
काळे । एवं जाव पत्तिदोवमो सि जेदम्भो । उदो मिच्छाइहि-अवहारकाळो असंख्येन्द्रगुणो ।
को गुणगारो ? वारसवग्गमूळस्स अंतोअदिमागो । को पटिमागो ? पत्तिदावम । उवरि
सत्ताणमगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुदवि सि परत्त्याणप्पावहुर्ग वत्तम् । गवरि

क्या है ? अण्णोपी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके साक्षात्तसम्पत्ति, सम्पत्तिव्यापि और
अंतःपतसम्पत्तिर्गोत्रा स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना
चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व करते समय अपने अपने
अवहारकाळके जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परत्त्याण अल्पबहुत्वको बतकाते हैं— अंतःपतसम्पत्ति अवहारकाळ सबसे
छोटा है । उससे सम्पत्तिव्यापि, उससे साक्षात्तसम्पत्ति अवहारकाळ इसप्रकार
अल्पबहुत्व करते हुए पसोपम तक ले जाना चाहिये । पसोपमके ऊपर सामान्य वारक
मिथ्यावृत्ति विषमसूची अंतःक्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विषमसूचीका अंतःक्यातर्ग
भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? पसोपम प्रतिमाग है । अथवा सूर्यगुलका अंतःक्यातर्ग
भाग गुणकार है जो सूर्यगुलके अंतःक्यात प्रथम वर्गमूळप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ?
पसोपमसे सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूळके गुणित करने पर जो लब्ध जाने बतना प्रतिमाग
है । इस विषमसूचीके ऊपर परत्त्याण अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना
चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परत्त्याण अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें अंतःपतसम्पत्ति अवहारकाळ सबसे स्तोका है । इसीप्रकार
उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व करते हुए पसोपमतक ले जाना चाहिये । पसोपमसे दूसरी पृथिवीके
मिथ्यावृत्तिव्यापि अवहारकाळ अंतःक्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अण्णोपीके वारक
वर्गमूळका अंतःक्यातर्ग भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? पसोपम प्रतिमाग है । इसके
ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी
पृथिवीके लेकर सातवीं पृथिवीतक परत्त्याण अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पचमपुढविमिच्छाइद्विद्वं असंखेज्जगुण ।
 को गुणगारो ? चट्ठप-पचम छट्ठवग्गाभि अण्णोण्णगुणिदाणि । अहवा सेदित्तदियवग्गमूलस्स
 असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सेत्तिचठ्ठवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठमवग्गमूलं ।
 चठ्ठपुढविमिच्छाइद्विद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णगुमिदसेदिसचम अट्ठमं
 वग्गमूलाणि । अहवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सचमवग्गमूलाणि ।
 को पडिमागो ? अट्ठमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वमसंखेज्जगुण । को गुण
 गारो ? अण्णोण्णगुमिदसेत्तिपचम-दसमवग्गमूलाणि । अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि पचमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूलं । विदियपुढवि
 मिच्छाइद्विद्वमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोण्णमस्येकारस-वारसवग्गमूलाणि ।
 अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को
 पडिमागो ? वारसवग्गमूलं । सामण्येयरइयमिच्छाइद्विद्वमवहारकातो असंखेज्जगुणो । को

मिथ्यादि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीका तीसरी वगमूल गुणकार
 है । क्योंकि मिथ्यादि द्रव्यसे पाँचवीं पृथिवीका मिथ्यादि द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? जगधेवीके चौथे पाँचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
 राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगधेवीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातयां भाग
 गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेवीका
 छठम वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवींके मिथ्यादि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादि द्रव्य
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर
 गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगधेवीके छठवें वर्गमूलका
 असंख्यातयां भाग गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग
 क्या है ? जगधेवीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादि द्रव्यसे
 तीसरी पृथिवीका मिथ्यादि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके नौवें
 और दहावें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा
 जगधेवीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातयां भाग गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात नौवें
 वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेवीका दहावां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके
 मिथ्यादि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगधेवीके ग्याहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उतमान गुणकार है । अथवा जगधेवीके दहावें वर्गमूलका असंख्यातयां भाग गुणकार है जो
 जगधेवीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेवीका बारहवां
 वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादि द्रव्यसे सामान्य नागिकियोंका मिथ्यादि

काळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि
 तेरसवग्गामूलाणि । तस्स को पट्ठिमागो ? पथंणुत्तपिदियवग्गमूलं । तदियपुट्ठिमिच्छा
 इड्ढिवहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमामो
 असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पट्ठिमागो ? सेट्ठिवारसवग्गमूलं । चट्ठत्थपुट्ठि
 मिच्छाइड्ढिवहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि पथमवग्गमूलाणि । को पट्ठिमागो ? दसमवग्गमूलं । पथमपुट्ठि
 मिच्छाइड्ढिवहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि सप्तमवग्गमूलाणि । तस्स को पट्ठिमागो ? अट्ठमवग्गमूलं । छट्ठ
 पुट्ठिमिच्छाइड्ढिवहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्स असं
 खेज्जदिमामो असंखेज्जाणि चट्ठवग्गमूलाणि । को पट्ठिमागो ? छट्ठवग्गमूलं ।
 सप्तमपुट्ठिमिच्छाइड्ढिवहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं ।
 तस्सेव दप्पमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेट्ठिपदमवग्गमूलं । छट्ठपुट्ठिमिच्छाइड्ढिव

है । गुणकार क्या है ? जगमेधीके बाह्यमें वर्गमूलका असंख्याततां माग गुणकार है जो
 जगमेधीके असंख्यात तेहमें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? चत्तामुत्तका द्वितीय
 वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्याद्यपि अवहारकाळसे तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यपि-
 योंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेधीके दशमें वर्गमूलका
 असंख्याततां माग गुणकार है जो जगमेधीके असंख्यात बाह्यमें वर्गमूलप्रमाण है । प्रति
 भाग क्या है ? जगमेधीका बाह्यतां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यपि अव
 हारकाळसे चौथी पृथिवीके मिथ्याद्यपियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? बाह्यमें वर्गमूलका असंख्याततां माग गुणकार है जो जगमेधीके असंख्यात तीमें वर्गमूल
 प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? दशतां वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्याद्यपि
 अवहारकाळसे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? जगमेधीके छठमें वर्गमूलका असंख्याततां माग है जो असंख्यात सातमें वर्गमूल-
 प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जगमेधीका आठवा वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवीं
 पृथिवीके मिथ्याद्यपि अवहारकाळसे छठी पृथिवीके मिथ्याद्यपियोंका अवहारकाळ असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेधीके तीसरे वर्गमूलका असंख्याततां माग गुणकार है ।
 जो जगमेधीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगमेधीका छठ वर्गमूल
 प्रतिभाग है । छठवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपि अवहारकाळसे सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपियोंका
 अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेधीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है ।
 सातवीं पृथिवीके अवहारकाळसे असीका मिथ्याद्यपि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगमेधीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्यपि द्रव्यसे छठवीं पृथिवीका

असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवगगमूल । पंचमपुदविमिच्छाद्विदम्भं असंखेज्जगुण ।
को गुणगारो ? चतस्य-पंचम छद्मवगगानि अण्णोष्मगुणिदाणि । अहवा सेवितदियवगगमूलस्त
असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेवितचतस्यवगगमूलाणि । को पडिभागो ? छद्मवगगमूल ।
चतस्यपुदविमिच्छाद्विदम्भमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोष्मगुनिदसेदिसचम अद्भुतं
वगगमूलाणि । अहवा छद्मवगगमूलस्त असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सचमवगगमूलाणि ।
को पडिभागो ? अद्भुतवगगमूल । तदियपुदविमिच्छाद्विदम्भमसंखेज्जगुणं । को गुण-
गारो ? अण्णोष्मगुनिदसेदियपम-दसमवगगमूलाणि । अहवा अद्भुतवगगमूलस्त असंखेज्जदि-
भागो असंखेज्जदाणि धवमवगगमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवगगमूल । विदियपुदवि-
मिच्छाद्विदम्भमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्ममरयेकारस-वारसवगगमूलाणि ।
अहवा दसमवगगमूलस्त असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एकारसवगगमूलाणि । को
पडिभागो ? वारसवगगमूल । सामण्येयरइयमिच्छाद्विदम्भहारकालो असंखेज्जगुणो । को

मिथ्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेदीका तीसरा वर्गमूल गुणकार
है । छठवींके मिथ्यादधि द्रव्यसे पांचवीं पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
गुणकार क्या है ? जगभेदीके बीसवें पांचवें और छठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेदीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग
गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात बीसवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेदीका
छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पांचवींके मिथ्यादधि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेदीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेदीके छठवें वर्गमूलका
असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग
क्या है ? जगभेदीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यसे
तीसरी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेदीके नीचें
और दहावें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा
जगभेदीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात नीचें
वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेदीका दहावां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके
मिथ्यादधि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगभेदीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उतना गुणकार है । अथवा जगभेदीके दहावें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो
जगभेदीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेदीका बारहवां
वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यसे सामान्य नारिकेलीका मिथ्यादधि

काष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? मारसवग्गमूलस्त अर्सेयन्त्रदिमागो अर्सेयन्त्राणि
 वेरसवग्गमूलाणि । तस्म को पडिमागो ? पणगुलविदियवग्गमूत् । तदिमपुडविमिच्छा
 इडिअरहारकाष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूत्स्त अर्सेयन्त्रदिमागो
 अर्सेयन्त्राणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? सेडिवारसवग्गमूत् । चठरमपुडवि
 मिच्छाइडिअरहारकाष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? अष्टमवग्गमूत्स्त अर्सेयन्त्रदि
 मागो अर्सेयन्त्राणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूत् । पचमपुडवि
 मिच्छाइडिअरहारकाष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूत्स्त अर्सेयन्त्रदि
 मागो अर्सेयन्त्राणि सप्तमवग्गमूलाणि । तस्म को पडिमागो ? अष्टमवग्गमूत् । छट्ठ
 पुडविमिच्छाइडिअरहारकाष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? तदिपचममूत्स्त अर्से-
 यन्त्रदिमागो अर्सेयन्त्राणि चठरमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठममूत् ।
 सवमपुडविमिच्छाइडिअरहारकाष्ठो अर्सेयन्त्रगुणो । को गुणगारो ? तदिपचममूत् ।
 तस्मेर दम्भमसयेन्त्रगुण । को गुणगारो ? सेडिपठमवग्गमूत् । छट्ठपुडविमिच्छाइडिअर-

हे । गुणकार क्या है ? अगधेवीके बारहवें वर्गमूलका अर्सेयन्त्राणां भाग गुणकार है जो
 अगधेवीके अर्सेयन्त्राणां लेखके वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? पणगुलका द्वितीय
 वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अपहारकाष्ठसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 चौथा अपहारकाष्ठ अर्सेयन्त्रगुण है । गुणकार क्या है ? अगधेवीके दशवें वर्गमूलका
 अर्सेयन्त्राणां भाग गुणकार है जो अगधेवीके अर्सेयन्त्राणां बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रति
 भाग क्या है ? अगधेवीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अप
 हारकाष्ठसे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अपहारकाष्ठ अर्सेयन्त्रगुण है । गुणकार क्या
 है ? बारहवें वर्गमूलका अर्सेयन्त्राणां भाग गुणकार है जो अगधेवीके अर्सेयन्त्राणां तीसरे वर्गमूल
 प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 अपहारकाष्ठसे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अपहारकाष्ठ अर्सेयन्त्रगुण है । गुणकार
 क्या है ? अगधेवीके छठवें वर्गमूलका अर्सेयन्त्राणां भाग है जो अर्सेयन्त्राणां सप्तवें वर्गमूल-
 प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? अगधेवीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवीं
 पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अपहारकाष्ठसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अपहारकाष्ठ अर्सेयन्त्राणां
 गुण है । गुणकार क्या है ? अगधेवीका तीसरे वर्गमूलका अर्सेयन्त्राणां भाग गुणकार है ।
 जो अगधेवीके अर्सेयन्त्राणां चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगधेवीका छठा वर्गमूल
 प्रतिभाग है । छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अपहारकाष्ठसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा
 अपहारकाष्ठ अर्सेयन्त्रगुण है । गुणकार क्या है ? अगधेवीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है ।
 सातवीं पृथिवीके अपहारकाष्ठसे आठवां मिथ्यादृष्टि द्विज अर्सेयन्त्रगुण है । गुणकार क्या है ?
 अगधेवीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्विजके छठी पृथिवीका

असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पचमपुढविमिच्छाद्विद्वन् असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? चउत्थ-पचम छट्ठवग्गानि अण्णोष्मगुणिदाणि । अहवा सेडितदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सेडितचउत्थवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठमवग्गमूल । चउत्थपुढविमिच्छाद्विद्वन्मसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्मगुणिदसेडितसचम अट्ठमवग्गमूलाणि । अहवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सचमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? अट्ठमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाद्विद्वन्मसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्मगुणिदसेडितपचम-दसमवग्गमूलाणि । अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि पचमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाद्विद्वन्मसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्ममसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्ममसंखेज्जगुण । अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? बारसवग्गमूल । सामन्नेरइपमिच्छाद्विद्वन्मसंखेज्जगुणो । को

मिप्पाददि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयीका तीसरी वर्गमूल गुणकार है । छठवींके मिप्पाददि द्रव्यसे पाँचवीं पुचिबीका मिप्पाददि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयीके बीये पाँचवे बीर छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा अगमेयीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है जो अगमेयीके असंख्यात बीये वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगमेयीका छठवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवींके मिप्पाददि द्रव्यसे बीयी पुचिबीका मिप्पाददि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयीके सातवें बीर आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, अगमेयीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है जो अगमेयीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगमेयीका आठवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पुचिबीके मिप्पाददि द्रव्यसे तीसरी पुचिबीका मिप्पाददि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयीके नीवें बीर द्वादशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा अगमेयीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है जो अगमेयीके असंख्यात नीवें वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगमेयीका द्वादशवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके मिप्पाददि द्रव्यसे दूसरी पुचिबीका मिप्पाददि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयीके ग्यारहवें बीर बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा अगमेयीके द्वादशवें वर्गमूलका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है जो अगमेयीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगमेयीका बारहवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पुचिबीके मिप्पाददि द्रव्यसे सामान्य नारिकेलीका मिप्पाददि

गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेत्तादिभागो असंखेज्जापि तेरसवग्गमूलस्सि । मे
पडिभागो ? पणगुत्तविदियवग्गमूलं । पडमपुटविमिच्छाइड्डिववहारकत्तो विनेच्छेत्ते ।
केत्थियमेत्थेण ? सामण्यववहारकत्तस्स असंखत्तादिभागमूदपस्सववहारकत्तेरे ।
सेढी असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पडमपुटविमिच्छाइड्डिविक्खंमर्ह । वदमुत्ते
मिच्छाइड्डिदम्भमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? पडमपुटविमिच्छाइड्डिविक्खंमर्ह । गुण
पेय्यमिमिच्छाइड्डिदं पित्तसाहिय । केत्थियमेत्थेण ? सामण्यववहारमिच्छाद्विरम
संखेज्जमागमूदविदियाविछपुटविमिच्छाइड्डिदम्भमेत्थेण । वदमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ?
ववहारकत्तो । ओगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? मेढी । एव विरमर्ह तत्तत्त ।

अवधारणक अस्तव्यासगुण है। गुणकार क्या है? अग्रेषणीके धारहमें वर्गमूलका अस्तव्यास
भाग गुणकार है जो अग्रेषणीके अस्तव्यास सेरहमें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिमात्र एक है।
घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिमात्र है। सामान्य नारकियोंके मिथ्याहृदि अवधारणके
पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्याहृदि अवधारणक विशेष अधिक है। जितनेमात्र विशेष
अधिक है? सामान्य अवधारणकके अस्तव्यासमें मागकय प्रक्षेप अवधारणककय विशेष
अधिक है। पहली पृथिवीके मिथ्याहृदि अवधारणकसे अग्रेषणी अस्तव्यासगुणी है। गुणकार
क्या है? पहली पृथिवीकी मिथ्याहृदि विच्छेदमसूची गुणकार है। अग्रेषणीसे पहली पृथिवीके
मिथ्याहृदियोंका द्रव्य अस्तव्यासगुण है। गुणकार क्या है? पहली पृथिवीकी मिथ्याहृदि
विच्छेदमसूची गुणकार है। पहली पृथिवीके मिथ्याहृदि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्याहृदि
द्रव्य विशेष अधिक है। जितनेमात्र विशेषसे अधिक है? सामान्य नारक मिथ्याहृदि द्रव्य
अस्तव्यासमें मागकय दूसरी पृथिवीसे लेकर अस्तव्यास पृथिवी तक कई पृथिवीके विच्छेद
हृदियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है। सामान्य नारक मिथ्याहृदि द्रव्यसे
अग्रेषण अस्तव्यासगुण है। गुणकार क्या है? अग्रेषणी अवधारणक गुणकार है। अस्तव्यास
कोक अस्तव्यास गुण है। गुणकार क्या है? अग्रेषणी गुणकार है।

विशेषार्थ—सर्व परस्परान् अस्वग्रहणका कथन करते समय ऊपर गुप्तरथावस्थित
अस्वग्रहणकादि जाति सामान्य नारकियोंका अस्वग्रहण नहीं कहा गया है। यदि (जब)

१ प्रविष्टि केटी कलकत्ता-दुर्गाबादी इति पाठ ।

[illegible]

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिन्हाइट्टिप्पट्टि जाव सजदा-

सजदा ति ओघ' ॥ २४ ॥

एदस्म सुत्तस्स अत्थो उच्यते । तं अहा-अणत्तत्थेण तिरिक्खगदिमिन्हाइट्टीण
आपमिन्हाइट्टीणैरिहो विसेमामावाधो तिरिक्खगदिमिन्हाइट्टीण दब्ब-त्तेच-काले अस्सि
ऊण जा ओघमिन्हाइट्टिपरुवणा सा सण्णा समवदि । गुणपट्टिवण्णाण पि असत्तेज्जत्थेण
ओपपट्टिवण्णेहि समाणाण जा ओपपट्टिवण्णपरुवणा सा मण्णा समवदि । तम्हा दब्ब
ट्टियणए अवलंबिच्चमाणे तिरिक्खोपस्स परुवणा ओपववदेस्स लम्भदे । पज्जवट्टियणए
अवलंबिच्चमाणे पुण ओपपरुवणा ण मवदि, तिरिक्खगइवदिरित्तिगदीणमत्तिचस्स

सम्यक्त्वको मिच्छाकर कथन किया जाता तो प्रथम नरकके असंपतसम्पद्गृहि
पौत्र मन्हाइट्टि सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें नारक सामान्य असंपतसम्प
गृहियोंका मन्हाइट्टि सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पुण्यियोंके असंपत
सम्पद्गृहियोंका मन्हाइट्टि कहा जाता । पर यहां पर इस सब कथनको टीका
कारने क्यों छोड़ दिया है यह बतलाना कठिन है ।

इसप्रकार नरकगतिको धर्मन समान्य हुआ ।

तिर्यच गतिका आश्रय करके तिर्यचोंमें मिथ्याचरित्ते लेकर सयतासंयत तक
प्रत्येक गुणस्यानवर्ती तिर्यच सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है—तिर्यचगतिके मिथ्याचरित्तेमें ओघ
मिथ्याचरित्ते जीवोंसे जनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये ब्रह्म क्षेत्र और
असम्प्रमाण्य आश्रय करके जो ओघ मिथ्याचरित्तेकी प्ररूपणा हैं वह संपूर्ण तिर्यच मिथ्या
चरित्ते जीवोंके समान हैं । इसीप्रकार गुणस्यानवर्तिपत्र तिर्यच भी असम्प्रमाण्यकी अपेक्षा
सामान्य गुणस्यानवर्तिपत्र जीवोंके समान हैं इसलिये गुणस्यानवर्तिपत्र सामान्य जीवोंकी
जो प्ररूपणा है वह संपूर्ण गुणस्यानवर्तिपत्र तिर्यचोंके समान है । अतएव प्रख्याधिक नयक
मन्हाइट्टि करने पर सामान्य तिर्यचोंकी प्ररूपणा ओघ अपदेशको प्राप्त होती है । परंतु
पर्यायार्थिक नयक मन्हाइट्टि करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यचोंके नहीं पारि जाती है क्योंकि
यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यच गतिके अतिरिक्त दोष तीन गतिपौत्र अस्तित्व ही नहीं

गुणस्यानवर्तिपत्रोंकी दोषाएँ तन्मयमात्र पुरुषों के द्वारा पुरस्कारपत्रविषयगतरेण मन्हाइट्टिना दानिर्ब
मन्हाइट्टिना । दानिर्बिहेरिहो दान्यमयपुत्रोपेक्षितो इमीहे रत्नपमाम् पुरुषों के द्वारा पुरस्कारपत्रविषयगतरेण
मन्हाइट्टिना दानिर्बिहे मन्हाइट्टिना । प्र १ २ पु २४८-२५

१ तिर्यचतां दिग्मां दिग्माद्वयोक्तव्यताम् । तन्मात्रमन्हाइट्टि संवत्सवत्ता दान्यमयपुत्रोपेक्ष
मन्हाइट्टिना । उ सि १ ८ कलाटी XX तिर्यचिहीना XX दान्यमाम् XX तिर्यचतां । यो, जी १५५.

मपहि अणतरामीसु दम्पपरवणादा कालपञ्चणा मुहुमा मबहु णाम, तस्य अणताणत्तस्स पुप्फमणुबलद्धस्य उवल्लदीदा अदीदकालादो अणतगुणसुबलमादो च । न कालपञ्चणादा गत्तपञ्चणा मुहुमा, अधिगावत्तदीण अणिमित्तत्तादो । तदो परवण परिवाही ण घट्ठे इदि ! ण, अणतलोगमेवाण एगलामम्मि अवगासो अरिप त्ति विसमुबलमादा कालादो गत्तस्म मुहुमत्त पडि निराहामावादो ।

पचिदियतिरिक्खामिच्छाद्वी दम्पपमाणेण केवडिया, अस-
स्वेज्जा ॥ २५ ॥

एदस्म सुत्तस्म निरआपदम्पपरवणामुत्तरमव वक्कणाण कय्यन् । एवं कए दम्पपरवणा गदा मयदि ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २६ ॥

शुद्ध—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्रमाणसे कासप्रमाण सूक्ष्म रही व्यभो कर्षोक्ति, कासप्रमाणमें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पारि जाती है और अन्तकालसे अनन्तगुणाय पाया जाता है । परंतु कासप्रमाणसे क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म नहीं हो सकती है क्योंकि क्षेत्रप्रमाणमें अधिक उपलब्धिरा कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्रमाणक अनन्तर कासप्रमाण और कासप्रमाणके अनन्तर क्षेत्रप्रमाण, हमप्रकार प्रमाणकी पगि पाटी नहीं बन सकती है ।

समाधान—नहीं अनन्त क्षेत्रमात्र द्रव्योंका एक क्षेत्रमें अवकाश पाया जाता है इसप्रकारकी विद्ययताकी उपलब्धि होनेसे कासकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पचन्त्रिय तियच मिप्पाट्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंग्रह्यात् है ॥ २५ ॥

सामान्य गारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्रकरण करनेवाले सूक्ष्मके व्याख्यानके समान ही इस सूक्ष्म व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र २५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्रकरण समाप्त होती है ।

कासकी अपेक्षा पचन्त्रिय तियच मिप्पाट्टि जीव असंग्रह्यात्संग्रह्यात् अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

प्राहाशुबचसीदो । तदो पञ्चवह्निपण्य अवसन्निभमाय ओषपरुवणात् तिरिक्त्वगदिपरु
वणात् नावर्ष वचइस्सामो । सम्बजीवरासिस्सुवरि सगुणपडिबण्यसिद्धतिगदिरासिं पक्खि
विय पुणो वेसिं चेव वग तिरिक्त्वमिच्छाइडिरासिमिद्ध च पक्खिसे तिरिक्त्वमिच्छा
इदीमं धुवरासी होदि । एसो मिच्छाइडिपरुवणमिह विसेसो ? गुणपडिबण्यपरुवणाए विसेस
वचइस्सामो । तं जहा— देवसासनसम्माइडिअवहारकासे आबलियाए असंखेअदिभागण
गुमिदे तिरिक्त्वमसबदसम्माइडिअवहारकातो होदि । सो आबलियाए असंखेअदिभागण
गुमिदे तिरिक्त्वसम्माभिच्छाइडिअवहारकातो होदि । सो संखेज्वरुपेहि गुमिदे सासनसम्मा-
इडिअवहारकातो होदि । सो आबलियाए असंखेअदिभागण गुमिदे तिरिक्त्वसंभदासंभद
अवहारकातो होदि । एदेहि अवहारकासेहि पसिदोवमे भागे हिदे तिरिक्त्वगदिगुणपडिबण्य
रासीओ इवन्ति । एसो गुणपडिबण्यपरुवणाए विसेसा, जरिव अण्णमिह कम्मि वि ।

बन सकटा है । अतः पर्यावर्यिक वयस्य अवसम्भन करने पर ओष प्ररूपणासे तिर्यक् पक्षिणी
प्ररूपणमें मेव है । अथे इसी बातको बतझाते हैं—

संपूर्ण जीवपक्षिमें गुणस्थानप्रतिपक्ष तीन पक्षिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धपक्षिमें
मिच्छाकर पुनः गुणस्थानप्रतिपक्ष तीन पक्षिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धपक्षिमें बर्णको तिर्यक्
मिष्याहृदि जीवपक्षिसे मूलित करके ओ कथ्य अथे उसे भी पूर्वोक्त पक्षिमें मिश्र देवे
पर तिर्यक् मिष्याहृदियोंकी सुवपक्षि होती है । तिर्यक् मिष्याहृदियोंकी प्ररूपणमें इतना
विरोध है ।

विशेषार्थ—यहां पर सुवपक्षिरूपसे ओ तिर्यक् मिष्याहृदि जीवराशिमें बल्य
करनेके लिये भ्रामहार कथ्य करने बतझाया है । इसका भाग संपूर्ण जीवपक्षिमें उपरिम
बर्णमें देनेसे तिर्यक् मिष्याहृदि जीवपक्षिका प्रमाण ज्ञाता है ।

अब अथे गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी प्ररूपणमें विरोधताको बतझाते हैं । वह
इसप्रकार है— देव सासनसम्पन्नपक्षियोंके अवहारकाकको आबलिके अंतर्क्यातमें भ्रामसे
मुलित करने पर तिर्यक् असंखतसम्पन्नपक्षि जीवोंका अवहारकाक होता है । तिर्यक् असंखत
सम्पन्नपक्षियोंके अवहारकाकको आबलिके अंतर्क्यातमें मायसे मुलित करने पर तिर्यक्
सम्बन्धिमिष्याहृदियोंका अवहारकाक होता है । तिर्यक् सम्बन्धिमिष्याहृदियोंके अवहारकाकको
संख्यातसे मुलित करने पर तिर्यक् सासनसम्पन्नपक्षियोंका अवहारकाक होता है । तिर्यक्
सासनसम्पन्नपक्षियोंके अवहारकाकको आबलिके अंतर्क्यातमें मायसे मुलित करने पर तिर्यक्
संपत्तासंपत्तियोंका अवहारकाक होता है । इन अवहारकाकोंसे पक्षोपमके भाजित करने पर
गुणस्थानप्रतिपक्ष तिर्यक्की पक्षिया होती हैं । यही गुणस्थानप्रतिपक्ष प्ररूपणाकी विरोधता
है । अन्य कथनमें कहीं भी कोई विरोधता नहीं है ।

मपदि अणेतामीसु द्वायपन्वणादा कालपन्वणा सुहुमा भवदु नाम, तस्य अणेतानतस्स पुन्वमणुवलद्वस्म उवलदीदा अदीदकालादो अणेतगुणसुवलमादो च । ण कालपन्वणादा सुचपन्वणा सुहुमा, अधिगावलदीए अणिमिचचादो । तदो परूवण परिवादी ण पड्दे इदि ? ण, अणतलाममेसाण एमलागम्मि अवगासो अतिय सि विसमुवलमादा कालादा सुचस्स सुहुमप पडि विराहाभावादो ।

पचिदियतिरिक्खामिच्छाइटी दवपमाणेण केवडिया, अस-
स्वेज्जा ॥ २५ ॥

पदस्म सुचस्स निरआपद्वायपन्वणासुचस्मय वस्तुआण कायम्भ । एवं कए द्वायपन्वणा गदा भवदि ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २६ ॥

सुका—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्रमाणाले अक्षप्रमाणाले सूक्ष्म रही आये क्याकि, कालप्रमाणमें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परन्तु कालप्रमाणाले क्षेत्रप्रमाणाले सूक्ष्म नहीं हो सकती है क्योंकि क्षेत्रप्रमाणमें अधिक उपलब्धि को ही निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्रमाणक अनन्तर कालप्रमाण और कालप्रमाणके अनन्तर क्षेत्रप्रमाण, इसप्रकार प्रमाणानी परिपटी नहीं बन सकती है ?

समाधान—नहीं अनन्त होकामात्र द्रव्योंका एक होकमें अवकाश पाया जाता है इसप्रकारकी पिशापटाकी उपलब्धि होनेसे अक्षकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है इसमें कोई बिरोध नहीं आता है ।

पचन्त्रिय तियच मिप्पाएटि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असम्पात हैं ॥ २५ ॥

सामान्य मारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्रमाण करनेवाले सूक्ष्मके व्याख्यानके समान ही इस सूक्ष्म व्याख्यान करना चाहिये (वेम्नो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्रमाणता समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पचन्त्रिय तियच मिप्पाएटि जीव असंख्यातासंख्यात अवमर्षिणियों और उरसर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

एदस्स सुचस्स वि दोहि पयसेहि अबहार' परूयिय विरजोपकासपरूयणा-
सुचस्सेव वक्तारं कायणं । एत्थ मिच्छाद्विनिदेसो किमाहुं न कदो ? न, अबररादीद
सुचादो मिच्छाद्वि पिय अनुबहुमायत्तादो ।

अथ सिया अतंसेज्जासेलेज्जासु ओत्तप्पिणि-उत्तप्पिणीसु अदिक्कतासु तिरिक्ख
गर्हणं पमिदियतिरिक्खाने बोच्चेदो इवदि, पमिदियतिरिक्खद्विदीए उवरि उत्थ
अबहुत्तामाभादो पि ? न एस दोसा, एदंदि-विगळिदिएहिंठो देव मेत्थ-अनुस्सेहिंठो न
पमिदियतिरिक्खेसुप्पज्जमायजीवसंमभादो । आयविरहिय-सज्जयरासीए बोच्चेदो इवदि ।
एसा पुम सम्मया आयसहिया वेदि न बोच्छिन्नदो । सम्मामिच्छाद्विरासीए किं न
भवदीदि वेत्थ, उत्थ गुणद्विदिक्कादो अंतरकासस्स बहुपुवर्त्तमादो । न न एत्थ
पमिदियतिरिक्खेसु भवद्विदिक्कादो विरहकासस्स बहुपुवमरिय, अंतरकासस्स मंठो

इस सूत्रमें दोनों प्रकारसे अवधारणा प्रकटन करने सम्मान्य नाटकीयोंके कस
प्रमाणही लपेसा प्रकटन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये
(देखो सूत्र १५) ।

शंका—इस सूत्रमें मिष्पाद्यदि पक्ष निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—वहीं क्योंकि, अनन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे मिष्पाद्यदि इस पक्षही अनुवृत्ति
कसी भी रही है ।

शंका—कदाचित् अवस्थागतत्वका अवसरविशेषों और वस्तुविशेषोंके निष्कट
आने पर तिर्यक्यतिके एवेन्द्रिय तिर्यक्योक्त विच्छेद हो जायगा क्योंकि एवेन्द्रिय तिर्यक्यो
स्थितिके ऊपर तिर्यक्यतिर्ये कसका अवस्थान नहीं रह सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि एवेन्द्रियों और विच्छेन्द्रियोंमेंसे तथा
देव नारकी और मनुष्योंमेंसे एवेन्द्रिय तिर्यक्योक्त वत्पण होनेवाले जीव संभव हैं । जो राशि
व्यपसहित और व्यापकहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है । परंतु वह एवेन्द्रिय
तिर्यक्य मिष्पाद्यदि राशि तो व्यय और व्याप इन दोनों सहित है इसलिये इसका विच्छेद नहीं
होता है

शंका—विसमकार सम्पमिष्पाद्यदि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार
यह राशि भी क्यों नहीं होती है ?

समाधान—वहीं क्योंकि वहाँ पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकास बड़ा है, इसलिये
सम्पमिष्पाद्यदि राशिअ कदाचित् विच्छेद हो जाता है । परंतु वहाँ एवेन्द्रिय तिर्यक्योमें
प्रवर्तितिके कालसे विरहकास बड़ा नहीं है क्योंकि, आगममें एवेन्द्रिय तिर्यक्योके अन्तर

सुदुर्गुणसादो । मन्त्रिदिकालस्त सादिरेयतिष्ठिपसिदोवमोवदेसादो । 'आमान्नीर्ष पञ्च सम्बद्धा' चि सुचादो वा विरहामावो जन्मदे । एवं कालपरम्परा गदा ।

खेत्तेण पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्विहीदि पदरमवहिरदि देव अवहारकालादो असखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धण देवअवहारकालेण कच पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्विहीणमवहारकालो सादि न्जदे ? य एस दोसो, अणाहिणस्त आगमस्त असिद्धासुवचपीदो । अणमगमो असिद्धचनमिदि खे ण, वक्खानादो तदमगमसिद्धीदो । सपहि वेसय-छप्पण्णगुलवमा मावळियाए असंखेज्जदिमागेण भागे हिदे पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्विअवहारकालो द्वीदि । अहवा आवळियाए असंखेज्जदिमागेण वेसय-छप्पण्णमेचअचिअगुलेसु मागे हिदेसु तरय च छद् त वतिगदे पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्विअवहारकालो द्वीदि । अहवा पुम्मिअ मावळियाए असंखेज्जदिमागे वगेऊअ पण्णदिसहस्स-पचसय छपीसमेचपदरगुलेसु भागे

कालका अन्तमुद्धर्तमान उपवेश पाया जाता है । और अवस्थिति कालका कुछ अधिक तीन पञ्चोपमका उपवेश लिया है । इसलिये पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि पक्षिका विषये नहीं होता है । अथवा 'आमा जीर्णोन्मी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि जीव सर्व कल रहते हैं' इस सूत्रसे भी पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका विरहामात्र जाना जाता है । इसप्रकार काल प्रकल्पना समाप्त हुई ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे अग्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

सूक्ष्म—देवोंका प्रमाण जाननेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह अमिद्ध है, इसलिये अमिद्ध देव अवहारकालसे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे साधा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि अणाहिणधन आगम अमिद्ध नहीं हो सकता है ।

सूक्ष्म—आगमका ज्ञान नहीं होना ही आगमका अमिद्धत्व है ?

समाधान—नहीं क्योंकि व्याप्यामसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है ।

अब बतलाते हैं कि दोसी छप्पन सूर्यगुणोंके बर्गको व्याप्यकी अपेक्षातर्ष भागसे भाजित करने पर पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा व्याप्यकी अपेक्षातर्ष भागसे दोसी छप्पन सूर्यगुणोंके भाजित करने पर वही जो छप्प आने उसका अग कर देने पर पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टितर्षवन्नी अवहारकाल होता है । अथवा पहले स्थापित व्याप्यकी अपेक्षातर्ष भागको वर्गित करके जो प्रमाण पावे उससे पंचद्विंशत हजार पाँचवी

मिच्छाशुद्धिअवहारकालो हादि । अमहिद गद । तस्स पमाणं पदरगुलस्स असंखेज्जदिमाणो असंखेजाणि सुचिअगुलाणि । पमाण गद । केण कारणेण ? सुचिअगुलेण पदरगुले मागे हिदे सुचिअगुलमापन्ठदि । सुचिअगुलपढमवगमूलेण पदरगुले मागे हिदे सुचिअगुल पढमवगमूलमिह अत्थियाणि रूवाणि वत्थियाणि सुचिअगुलाणि लभमति । एवमसंखेज्जजाणि वगगहाणाणि हेइहा ओसरित्थण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण^१ पदरगुले मागे हिदे असंखेज्जजाणि सुचिअगुलाणि आगच्छति । कारण गद । आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण सुचिअगुल मागे हिदे छद्ममि अत्थियाणि रूवाणि वत्थियाणि सुचिअगुलाणि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण सुचिअगुलपढमवगमूलमवहरिय लद्धेण सुचिअगुल-पढमवगमूल चव गुमिदे तत्थ अत्थियाणि रूवाणि वत्थियाणि सुचिअगुलाणि पत्तिदिय तिरिक्खमिच्छाशुद्धिअवहारकालो हादि । एव गत्थण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण आवलियाए मागे हिदाए छद्मेण आवलिय गुमिय तद्दी पदरावलिय गुमिय एव जाव सुचिअगुलपढमवगमूल ति निगतरं सयलवगगार्ण अण्णोण्णमत्तवे कदे तत्थ अत्थियाणि

अपहृतक कथन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यक् विद्यावदि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके असंख्यातवर्गे भाग है जो असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शुद्धा — पंचेन्द्रिय तिर्यक् विद्यावदि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूर्यगुल किस भागसे है ?

समाधान — सूर्यगुलसे प्रतरांगुलके माजित करने पर एक सूर्यगुलका प्रमाण आता है । सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरांगुलके माजित करने पर सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूर्यगुल छम्प आते हैं । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे आकर व्यापसीके असंख्यातवर्गे भागसे प्रतरांगुलके माजित करने पर असंख्यात सूर्यगुल छम्प आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवसीके असंख्यातवर्गे भागसे सूर्यगुलके माजित करने पर वहाँ जितना प्रमाण छम्प आये उतने सूर्यगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् विद्यावदि अवहारकाल है । अथवा आवसीके असंख्यातवर्गे भागसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो छम्प आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण छम्प आवे उतने सूर्यगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् विद्यावदि अवहारकाल है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे आकर व्यापसीके असंख्यातवर्गे भागसे आवसीके माजित करने पर जो छम्प आवे उससे आवसीको गुणित करके वहाँ वस गुणित राशिसे प्रतरांगुलीको गुणित करके इसीप्रकार सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत सर्वपूर्व वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर वहाँ जितना प्रमाण छम्प आवे उतने सूर्यगुल आते हैं और वही पंचेन्द्रिय तिर्यक् विद्यावदि अवहारकाल

हिंदेसु पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्बहारकालो आगच्छदि^१ । अहवा पन्पट्टिमहस्म-पच
सय-छत्तीसरूपोवद्विद्भावतियाए अंसखेज्जदिमामस्स वग्गेण पदरंगुले माग हिंदे पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्बहारकालो आगच्छदि ।

एतत्प खदिददिविदिं वचइस्सामो । तं अहा— पदरंगुले असखे-
खंहे कए एयं खंड पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्बहारकालो होदि ।
खदिइं गइ । आबलिपाए अंसखेज्जदिमागेण पदरंगुले मागे हिंद पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्बहारकालो होदि । माविइं गइ । आवलियाए अंसखेज्जदिमागे
विरहेज्ज एकेहस्स रूपस्स पदरंगुलं समखइ करिय दिन्हे उत्तेगखइ पंचिदियतिरिक्ख
मिच्छाद्दिग्बहारकालो होदि । विरसिइं गइ । तमवहारकाल मत्तागभूइं ठवेज्ज
पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्बहारकालपमापेण पदरंगुलादो अचहिरिज्जदि सत्तागाहिंठो
एमरूबमवविज्जदि । एष पुणो पुणा अवणिज्जमानो सत्तागाओ पदरंगुलं च कुतं
विहिइ । तत्त्वं आदीए वा जंते वा मन्ते वा एगवारमवहिदपमाण पंचिदियतिरिक्ख

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टिबन्धी अवहारकाळ
होता है । अथवा पैसठ हजार पाँचसी छत्तीससे भावकीके असंख्यातमें मागके बाँकी
अपवर्तित करके जो छन्द माने उससे प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्
मिथ्यादृष्टिबन्धी अवहारकाळ जाता है । अब वहाँ पण्डित पण्डितकी विधिसे बतलाते
हैं । यह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उत्तममें एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक्
मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ होता है । इसप्रकार विरहितका वर्णन समाप्त हुआ । भावकीके
असंख्यातमें मागसे प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ
होता है । इसप्रकार माजितका वर्णन समाप्त हुआ । भावकीके असंख्यातमें मागके विरहित
करके और उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समान खंड करके बेषरूपसे
दे देने पर उत्तममें एक विरहितके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि
अवहारकाळ होता है । इसप्रकार विरहितका वर्णन समाप्त हुआ । उस भावकीके असंख्यातमें
मागका अवहारकाळसे शास्त्राकारपसे स्थापित करके अन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि
अवहारकाळके प्रमाणको प्रतरांगुलमें से घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिये दामाका
राशिमैंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमें से भावकीके असंख्यातमें
मागको और दामाका राशिमैंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जातेपर दामाकारादि और
प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं । यहाँ पर भाविमें अथवा मरपमें अथवा अरुतम एकवार
जितना प्रमाण घटाया जितना पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ जाता है । इसप्रकार

१ अर्थात् होदि आ-गता इति आगच्छदि इति पठ ।

२ अतिइ मिहिइ इति पाठ ।

असंखेज्जदिमागेण गुणिद्वयचित्रगुलेण षण्णगुलपदमवगममूलं गुणेत्तल्ल तेष षणाधमगुल पदमवगममूले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । तं चहा-
 षण्णगुलपदमवगममूलेण षणाधमगुलपदमवगममूले मागे हिदे षण्णगुलमागच्छदि । पुनो
 द्वयचित्रगुलेय षण्णगुले मागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुनो आबलियाए असंखेज्जदि
 माएय पदरगुले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । एव
 हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उत्तरिमवियप्पो तिमिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वेदि । तत्थ वेरूपे
 गहिद वत्तइत्तामो । आबलियाए असंखेज्जदिमागेण पदरगुलं मागे हिदे पंषिदिय
 तिरिक्खमिच्छाद्द्विजवहारकाळो आयच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्दच्छेदण्यमेवे
 राधिस्स छेदणए क्खे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । एसो मन्तिम
 वियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्टिम-उत्तरिमववपससमवाहो । एसो उवपारेय उत्तरिमवियप्पो

अब घनाधनमें अधस्तन विकस्य बतलाते हैं— आबलीके असंख्यातवें मागसे छप्प
 गुलको गुणित करके जो छप्प भागे उससे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करके जो छप्प
 भागे उससे घनाधनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचोन्म्रिय तिर्यक् मिथ्यादधि
 अवहारकाळ होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनागुलके प्रथम वर्गमूलसे
 घनाधनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर घनागुलका प्रमाण आता है । पुनः छप्पगुलसे
 घनागुलके भाजित करने पर घनागुलका प्रमाण आता है । पुनः आबलीके असंख्यातवें भागसे
 घनागुलके भाजित करने पर पंचोन्म्रिय तिर्यक् मिथ्यादधि अवहारकाळ होता है । इसप्रकार
 अधस्तन विकस्य समाप्त हुआ ।

उपरिम विकस्य तल्ल प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत वीर गृहीतगुणकर । उनमेंस
 द्विक्रममें गृहीत उपरिम विकस्यको बतलाते हैं— आबलीके असंख्यातवें मागस घनागुलके
 भाजित करने पर पंचोन्म्रिय तिर्यक् मिथ्यादधि अवहारकाळ आता है । उक्त मागहारके जितन
 अर्थछेद हो उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी पंचोन्म्रिय तिर्यक्
 मिथ्यादधि अवहारकाळ होता है । वास्तवमें यह मध्यम विकस्य है वीर इसीकी अपेक्षा करके
 ही अधस्तन वीर उपरिम संज्ञा समझ है इसलिय उपचारसे यह उपरिम विकस्य कहा
 जाता है ।

विशेषार्थ— विवक्षित मात्रकका किसी विवक्षित माध्यमें माग देनेसे जो छप्प आता है
 वही छप्प अब उस विवक्षित माध्य वीर मात्रकसे नीचेकी संख्याओंका आधय लेकर निकाला
 जाता है तब वह अधस्तन विकस्य कहलाता है वीर अब वही छप्प उस विवक्षित माध्य वीर
 मात्रकसे उपरकी संख्याओंका आधय लेकर निकाला जाता है तब उसे उपरिम विकस्य कहते
 हैं । इस नियमके अनुसार प्रकृतमें मात्रक आबलीका असंख्यातवें भाग वीर माध्य घनागुल,
 हम दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आधय लेकर अब पंचोन्म्रिय तिर्यक् मिथ्यादधि अवहारकाळ

रूपाणि तृतिपाणि सृषिभ्रंशुताणि हर्षति । गिरुची गदा ।

वियप्यो दुविहो, इष्टिमवियप्यो त्वरिमवियप्यो चेदि । तत्त्व हेष्टिमवियप्यं
वचइस्सामो । आवलिपाए अंसंखेज्जदिमामेण सृषिभ्रंशुते मागे हिदे सत्तेष तं चेव
गुणिदे पंषिदियतिरिक्खमिष्ठाइष्टिमवहारकातो होदि । अहवा तेमेव मागहारोव सृषि
अगुत्तमइमवमापूठ मागे हिदे सत्तेष त चेव गुणेठण तेण सृषिभ्रंशुत गुणिदे पंषिदिव
तिरिक्खमिष्ठाइष्टिमवहारकातो होदि । एवमसंसज्जमिष्ठा इग्गहाणामि हेष्टा ओसरिऊव
आवलिपाए अंसंखेज्जदिमामेण आवलिपाए मागे हिदाए ज्ज उद्ध तेण तं चेव गुणिव
तस्सुवरिमवग गुणिय एव जाव सृषिभ्रंशुतेपि गिरंतर सत्त्ववग्गार्ण वग्गोप्पज्जमासे कए
पंषिदियतिरिक्खमिष्ठाइष्टिमवहारकातो होदि । वग्गे हेष्टिमवियप्यो गदो । अट्टके
वचइस्सामो । आवलिपाए अंसंखेज्जदिमामेण गुणिदसृषिभ्रंशुतेण पवगुत्ते मागे हिदे
पंषिदियतिरिक्खमिष्ठाइष्टिमवहारकातो होदि । ॥ अह-सृषिभ्रंशुतेण' पवगुत्ते मागे हिदे
पदरंगुत्तमान्छदि । पुणो आवलिपाए अंसंखेज्जदिमामेण पदरंगुत्ते मागे हिदे पंषिदिय
तिरिक्खमिष्ठाइष्टिमवहारकातो होदि । पणापणे इष्टिमवियप्य वचइस्सामो । आवलिपाए

है । इसप्रकार विवक्षित कर्मेन समाप्त हुया ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अथस्तन
विकल्पको बतलाते हैं— व्यावलीके अंतस्थातर्षे मापसे सूर्यगुच्छके मात्रित करने पर ओ छम्भ
आये उससे उसी सूर्यगुच्छके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिथ्याद्यदि अवहारकायक
प्रमाण होता है । अथवा, उसी व्यावलीके अंतस्थातर्षे मापक मागहारसे सूर्यगुच्छके प्रथम
वर्गमूत्रके मात्रित करने पर ओ छम्भ आये उससे सूर्यगुच्छके प्रथम वर्गमूत्रको गुणित करके
ओ छम्भ आये उससे सूर्यगुच्छके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिथ्याद्यदि अवहारकायक
होता है । इसीप्रकार अंतस्थात वर्गस्थान नीचे आकर व्यावलीके अंतस्थातर्षे मापसे व्यावलीके
मात्रित करने पर ओ छम्भ आये उससे उसी व्यावलीको गुणित करके पुनः उस गुणित पक्षिसे
उस व्यावलीके उपरिम कर्षको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूर्यगुच्छपर्यंत सर्व
वर्गोंके विप्लार परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिथ्याद्यदि अवहारकायक होता है ।
इसप्रकार विकल्पमें अथस्तन विकल्प समाप्त हुया ।

अथ अष्टकपरमें अथस्तन विकल्प बतलाते हैं— व्यावलीके अंतस्थातर्षे मापसे
सूर्यगुच्छको गुणित करके ओ छम्भ आये उससे वर्गगुच्छके मात्रित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं
मिथ्याद्यदि अवहारकायक होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूर्यगुच्छका वर्गगुच्छमें
माग देने पर प्रतरंगुच्छ आता है । पुनः व्यावलीके अंतस्थातर्षे मापसे प्रतरंगुच्छके मात्रित करने
पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिथ्याद्यदि अवहारकायक होता है ।

असंखेज्जदिमाणेण गुप्पिदस्यपिअंगुलेण षणंगुलपढमवग्गामूले गुणेऊम तेन षणापणंगुल पढमवग्गामूले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । त अहा-
 षणंगुलपढमवग्गामूलेण षणापणंगुलपढमवग्गामूले मागे हिदे षणंगुलमागच्छदि । पुमो
 स्यपिअंगुलेण षणंगुले मागे हिदे पदंगुलमागच्छदि । पुमो आबलियाए असंखेज्जदि
 माएण पदंगुले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । एवं
 हेडिमवियप्पो गदे ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगाहिदो गहिदगुणगारो च्चदि । तस्म वेरूने
 गहिद वचइस्सामो । आबलियाए अमखेज्जदिमाणेण पदंगुल मागे हिदे पंषिदिय
 तिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो आगच्छदि । तस्स मागहारस्म अट्ठच्छेदपयमेवे
 रासिस्स छेदणए कदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । एसो मज्झिम
 वियप्पो, एदमवेक्खिय हेडिम-उवरिमवग्गसमंभवादो । एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो

अथ घनाघनमे अघस्तम विक्खय वतछाते ई— आबलीके असंख्यातवें मागसे छप्प
 गुलको गुप्पित करके जो छप्प आने उससे घनांगुलके प्रथम वगमूलको गुप्पित करके जो छप्प
 आने उससे घनाघनांगुलके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय निर्दिष्ट मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाय होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वगमूलसे
 घनाघनांगुलके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है । पुनः छप्पगुलसे
 घनांगुलके भाजित करने पर प्रतंगुलका प्रमाण आता है । पुनः आबलीके असंख्यातवें मागसे
 प्रतंगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय निर्दिष्ट मिथ्यादृष्टि अवहारकाय होता है । इसप्रकार
 अघस्तम विक्खय समाप्त हुआ ।

उपरिम विक्खय तीन प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
 द्विरूपमें गृहीत उपरिम विक्खयको वतछाते ई— आबलीके असंख्यातवें मागसे घनांगुलके
 भाजित करने पर पंचेन्द्रिय निर्दिष्ट मिथ्यादृष्टि अवहारकाय आता है । उक्त मागहारके जितने
 अर्धच्छेद हैं उतनीवार उक्त अन्त्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय निर्दिष्ट
 मिथ्यादृष्टि अवहारकाय होता है । वास्तवमें यह मध्यम विक्खय है और हर्षकी भवेत्ता करक
 ही अघस्तम और उपरिम सेवा समर्थ है । इसलिये उपकारसे यह उपरिम विक्खय कहा
 जाता है ।

विश्लेषार्थ— विवक्षित मात्रकका किसी विवक्षित मात्रकमें माग वेनस जो छप्प आता है
 पही छप्प अब उस विवक्षित मात्रक और मात्रकसे मीचकी संख्याओंका आशय लेकर निवाडा
 जाता है । तब यह अघस्तम विक्खय कहलाता है । और अब पही छप्प उस विवक्षित मात्रक और
 मात्रकसे ऊपरकी संख्याओंका आशय लेकर निवाडा जाता है तब इसे उपरिम विक्खय कहत
 हैं । इस नियमक अनुसार बहुतमें मात्रक आबलीका असंख्यातवें माग और मात्रक प्रतंगुल,
 इन दोनोंस मीचकी संख्याओंका आशय लेकर अब पंचेन्द्रिय निर्दिष्ट मिथ्यादृष्टि अवहारकाय

रूपाणि तपिपाणि छविअंगुलाणि इवन्ति । गिरुची गदा ।

विषयो दुषिहो, हेङ्गिमविषयो उचरिमविषयो चेदि । तस्य हेङ्गिमविषयं वचस्सामो । आबलिपाए असंखेन्नादिमाणेण छविअंगुले मागे हिदे लहेण तं चेव गुण्णिदे पण्णिदियतिरिक्खमिच्छाङ्गिअवहारकासो होदि । अहमा तेजेव मागहारेव छवि अंगुलमहमवमामूले मागे हिदे लहेण तं चेव गुणेत्तम तेण छविअंगुले गुण्णिदे पण्णिदियतिरिक्खमिच्छाङ्गिअवहारकासो होदि । एवमसंखेन्नाणि वग्गह्माणाणि हेङ्गा खोत्तरित्तव आबलिपाए असंखेन्नादिमाणेण आबलिपाए मागे हिदाए ज छई तेण तं चेव गुणिव तस्सुचरिमवगं गुणिय एवं आव छविअंगुलेणि गिरंतं सुचरवग्गाणं अण्णोअण्णमासे कए पण्णिदियतिरिक्खमिच्छाङ्गिअवहारकासो होदि । वग्गे हेङ्गिमविषयो गदो । अङ्गुले वचस्सामो । आबलिपाए असंखेन्नादिमाणेण गुणिवछविअंगुलेण वचगुले मागे हिदे पण्णिदियतिरिक्खमिच्छाङ्गिअवहारकासो होदि । तं जहा—छविअंगुलेण' वचगुले मागे हिदे पण्णिदियतिरिक्खमिच्छाङ्गिअवहारकासो होदि । वणापणे हेङ्गिमविषयं वचस्सामो । आबलिपाए

है । इसप्रकार विचरिअ वचन समाप्त हुआ ।

विचर्य दो प्रकारका है अथस्तव विचर्य और उपरिम विचर्य । इनमेंसे अथस्तव विचर्यको वतकाते हैं— आबलीके अंतर्वातनें मागसे सूर्यगुणके भाजित करने पर जो छग्न भागे उससे उसी सूर्यगुणके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकास्य होता है । अथवा उसी आबलीके अंतर्वातनें मागद्वय मागहारसे सूर्यगुणके प्रथम वर्गगुणके भाजित करने पर जो छग्न भागे उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गगुणके गुणित करने जो छग्न भागे उससे सूर्यगुणके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकास्य होता है । इसीप्रकार अंतर्वात वर्गस्थान नीचे आकर आबलीके अंतर्वातनें मागसे आबलीके भाजित करने पर जो सग्न भागे उससे उसी आबलीको गुणित करने पुनः उस गुणित पणिते उस आबलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूर्यगुणपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकास्य होता है । इसप्रकार विचर्यमें अथस्तव विचर्य समाप्त हुआ ।

अथ अरुपरमें अथस्तव विचर्य वतकाते हैं— आबलीके अंतर्वातनें मागसे सूर्यगुणको गुणित करके जो छग्न भागे उससे वर्गगुणके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकास्य होता है । उक्तका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूर्यगुणका वर्गगुणमें भाग देने पर प्रथमगुण जाता है । पुनः आबलीके अंतर्वातनें मागसे प्रथमगुणके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकास्य होता है ।

अवहारकालो आगच्छदि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु भेयव्वं । पयापणे वचइस्सामो ।
 भावत्तियाए अंतखेज्जादिमाएण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊण तण घणगुलउपरिम
 वग्गस्सुवरिमवग्ग गुणेऊण घणाघणेगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पंषिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । त अहा— घणगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो
 पयापण्यगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुल
 उपरिमवग्गेव घणगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो भावत्तियाए
 अंतखेज्जादिमाएण पदरगुल माग हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अइच्छेदणपमेव रासिस्स अइच्छेदणए कदे वि पंषिदिय
 तिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । पदरगुलस्स घणगुलस्स घणापण्यगुलपदमवग्ग
 तस्स चांतखेज्जादिमागेव पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिद
 जगारो वचव्वो । एदेव अवहारकालेव जगसेदिमिह मागे हिदे पंषिदियतिरिक्ख
 भेच्छाइड्डिविक्खममूर्ध आगच्छदि । अहा नेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालस्स खंडिदादि
 रूपमा कदा तहा एदिस्से विक्खममूर्धए खंडिदादिपरुवणा कयव्वना । एदेव अवहार
 प्रतेम जगपदेर माग हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिववमागच्छदि । एत्थ खंडिद

गता है । इसीप्रकार संख्यात अंतख्यात नीर अतन्तस्थानोंमें से जाना चाहिये ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विक्षेप बतलाते हैं— भावत्तियोंके अंतख्यातमें मागसे
 प्रतरगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनागुलके उपरिम वर्गके
 उपरिम वर्गको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनाघनागुलके उपरिम वर्गके भाजित
 करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएहि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्वरूपकरन
 इसप्रकार है— घनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनागुलके उपरिम वर्गके भाजित
 करने पर घनागुलका उपरिम वर्ग जाना है । पुनः प्रतरगुलके उपरिम वर्गसे घनागुलके
 उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरगुल आता है । पुनः भावत्तियोंके अंतख्यातमें मागसे
 प्रतरगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएहि अवहारकालका प्रमाण आता
 है । तब मागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीवार उक्त सध्यमान राशिके अर्थछेद करने
 पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएहि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतरगुलका अंतख्यातमें
 समरूप घनागुलके अंतख्यातमें मागरूप नीर घनाघनागुलके प्रथम परामूलक अंतख्यातमें
 साधारण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएहि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत भार गृहीतगुलप्रकारका
 रूप (पक्षके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालके जगधनीके भाजित करने पर
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएहि विरहममूर्धका प्रमाण आता है । पहले जितप्रकार नारक
 मिथ्याएहि विरहममूर्धके रूढ़ित जादिकही प्रकणना का गाते हैं, जमीनकार इस
 विरहममूर्धके रूढ़ित जादिकका प्रकणन करना चाहिये ।

पि बुध्दे । सपदि अजुबयारण उबरिमवियप्प वचइस्सामो । त जहा—आवलिपाए असंखेअदिमाण गुणिदपवरगुलेण तस्सुबरिमवग्ग भाग हिदे पंविदियतिरिक्खमिच्छा इड्डिअवहारकाओ होदि । तस्म भागहारस्स अइच्छेदणपमेच रासिस्स अइच्छेदणप वि पंविदियतिरिक्खमिच्छा इड्डिअवहारकाओ हादि । एरव अइच्छेदणपमेचवविहारं भित्तिप वचप्प । एव संउज्जासंखेअवार्थतमु येयव्वं । अइरूपे वचइस्सामो । आवलिपाए असंखेअदिमाण पदरंगुलउबरिमवग्ग गुणेऊग तेण घनंगुलउबरिमवग्गे मागे विर पंविदियतिरिक्खमिच्छा इड्डिअवहारकाओ होदि । त जहा—पदरंगुलउबरिमवग्ग पद-
गुलउबरिमवग्गे मागे हिदे पदरंगुलभागच्छदि । पुणा आवलिपाए असंखेअदिमाण-
पदरंगुले मागे हिदे पंविदियतिरिक्खमिच्छा इड्डिअवहारकाओ आगच्छदि । तस्स वय-
हारस्स अइच्छेदणपमेचे रासिस्स अइच्छेदणप क्खे वि पंविदियतिरिक्खमिच्छा इ-

आवा मापणा तव इस प्रक्रियाको अवस्तन विचार्य कहेंगे, और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्यामेंका मापण लेकर उक्त अजहारकाऊ का मापणा तब इसे उपरिम विचार करेंगे । मापणके अवस्थानमें भागसे प्रतरंगुलको मापित करने पंचेन्द्रिय तियव अवहार काऊक छानेकी जा प्रक्रिया है वही वास्तवमें अवस्तन या उपरिम विचार नहीं नहीं अ-
सकती है क्योंकि अवस्तन और उपरिम विचारके निश्चित करनेके लिये वहां वही भाव-
है । अतः वास्तवमें वह मध्यम विचार ही है, उपरिम नहीं ।

अब अनुपकारसे उपरिम विचारको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—आवलीक अवस्थातमें मगसे प्रतरंगुलको गुणित करने जो छव्य आये उसका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग दन पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण होता है । उक्त भागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनेवार उक्त मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर ही पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण होता है । वहां पर अर्थच्छेदोंके मिथ्यात्व ही विविध विचार कर कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्य त असंख्यात और अन्त-
स्थानोंमें भी के आवा कहिये ।

अब अग्ररूपमें उपरिम विचार बतलाते हैं—आवलीके असंख्यातमें मापने प्रतरंगुलके उपरिम वर्गको गुणित करने जो छव्य आये उससे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गसे मापित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण जाता है । वह इसप्रकार है—प्रतरंगुलके उपरिम वर्गसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके मापित करने पर प्रतरंगुल आता है । पुनः आवलीके अवस्थातमें मागसे प्रतरंगुलके मापित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनेवार उक्त मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊ-

अवहारकालो आगच्छति । एव सखेज्जामसुआणोसेसु णेयकं । घणापणे वचइस्तामो ।
 आबलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊण तेण घर्णगुलउपरिम-
 वग्गसुपरिमवग्ग गुणेऊण घणाघर्णगुलउपरिमवग्गो मागे हिदे पंधिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छति । त अथा— घणगुलउपरिमवग्गसुपरिमवग्गो
 घणाघर्णगुलउपरिमवग्गो मागे हिदे घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छति । पुनो पदरगुल
 उपरिमवग्गो घर्णगुलउपरिमवग्गो मागे हिदे पदरगुलमागच्छति । पुनो आबलियाए
 असंखेज्जदिभाएण पदरगुल माग हिदे पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 आगच्छति । तस्स मागहारस्स अदच्छेदणपमेचे राखिस्स अदच्छेदणए कदे वि पंधिदिय-
 तिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छति । पदरगुलस्स घर्णगुलस्स घणाघर्णगुलपदमवग्ग
 मूलस्स चासंखेज्जदिभागेण पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिद
 गुणगारो वत्थो । एदेण अवहारकालेण अगघेदिमिद मागे हिदे पंधिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिक्खमसुआणो आगच्छति । अथा पेइयमिच्छाइड्डिअवहारकालस्स खंडिदादि
 परुषणा कदा तथा यदिस्से विक्खमसुआण खंडिदादिपरुषणा कायणा । एदेण अवहार
 कालेण जगपदरे मागे हिदे पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिदम्बमागच्छति । एत्थ खंडिद

भाठा है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्वयस्थानोंमें से जाना चाहिये ।

अब घनापणमें पृथीत उपरिम विचार बतलाते हैं— आपसीके असंख्यातमें मागसे
 अनर्तगुलके उपरिम घगको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घर्णगुलके उपरिम घर्णके
 उपरिम घर्णको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघर्णगुलके उपरिम घर्णके माजित
 करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि अवहारकालका प्रमाण जाता है । वस्तुतः स्पष्टीकरण
 इसप्रकार है— घर्णगुलके उपरिम घर्णके उपरिम घर्णने घनाघर्णगुलके उपरिम घर्णके माजित
 करने पर घर्णगुलका उपरिम घग जाता है । पुनः अनर्तगुलके उपरिम घर्णसे घर्णगुलके
 उपरिम घर्णके माजित करने पर अनर्तगुल जाता है । पुनः आपसीके असंख्यातमें मागसे
 अनर्तगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि अवहारकालका प्रमाण जाता
 है । उक्त मागद्वारेके जितने अघच्छेद हैं उतनीबार उक्त मन्वमान पक्षिके अघच्छेद करने
 पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि अवहारकालका प्रमाण जाता है । अनर्तगुलपद असंख्यातमें
 मागकय घर्णगुलके असंख्यातमें मागकय और घनाघर्णगुलके मध्य घगमूलके असंख्यातमें
 मागकय पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि अवहारकालके द्वारा पृथीतपृथीत और पृथीतगुलप्रकार
 कयन (पड़तेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे अगमणीके माजित करने पर
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि विन्दुमसूत्रीका प्रमाण जाता है । पहले विसप्रकार मात्रक
 मिष्याइड्डि बिन्दुमसूत्रीके संज्ञित आदिक्की प्रकथना कर मागे हैं, इसीप्रकार इस
 बिन्दुमसूत्रीके संज्ञित आदिक्का प्रकथन करना चाहिये ।

पुनः अवहारकालसे अगमतरक माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याइड्डि

मात्रिद-विरासिद अत्रिद-पमात्र-कारण-गिरासि-वियप्या अहा येरइयमिच्छाद्विदम्परु
पमात्र परुविदा तथा परुत्रेयप्या ।

सासणसम्माद्विद्विद्विद्विद्वि जाव सजदासजदा ति तिरि
पस्वोर्ध ॥ २८ ॥

एदस्त सुचस्त अहा तिरिक्खोपगुणपडिवण्यपमाणपरुवममुचस्त वस्तानं कर
तहा अयम्भं । तिरिक्खेसु पंषिदिए ओशूण अण्णरव गुणपडिवण्यमीरानं समवामावाहो ।
एवं पंषिदियतिरिक्खपरुवणा समवा ।

संपदि पन्धचचामकम्मोदयपंषिदियतिरिक्खपमाणपरुवणं इवदि—

पंषिदियतिरिक्खपञ्चमिच्छाद्विद्वि दन्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ २९ ॥

एतव पंषिदियगहण एरंदिय-विगाळिदियबुदासहं । तिरिक्खमिदसो देव-नेरइय
मणुसबुदासहो । पन्धचमिदसो अपन्धचबुदासहो । मिच्छाद्विद्विद्विसेण सेसगुणहण

ब्रह्मका प्रमाण आता है । अंकित मात्रित विपक्षित अपहृत प्रमाण कारण विरक्ति
भीर विकल्पका प्रकरण विसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि ब्रह्मकी प्रकरणके समय कर
व्यये हैं वसीप्रकार यहां पर अब सबका प्रकरण करना चाहिये ।

सासादनसम्पगृहि गुणस्थानसे लेकर संयतासुपत गुणस्थानतक पंचेन्द्रिय
तिर्यक् प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यकोंके समान पदोपयके असंख्यातवें माग हैं ॥२८॥

विसप्रकार सामान्य तिर्यकोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणके प्रकरण करनेवाले
सूत्रका व्याख्यान कर भाये हैं वसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि
तिर्यकोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर बृहारे तिर्यकोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव संभव नहीं हैं ।
इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् प्रकरण समाप्त हुई ।

अब जिसके पर्याप्त नामकर्मका उक्त पाया जाता है देखे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यकोंके
प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय भीर विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके किये पंचेन्द्रिय पक्ष प्रहण
किया है । देव नारकी भीर मनुष्योंके निराकरण करनेके किये तिर्यक् पक्ष निर्णय किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके किये पर्याप्त पक्ष निर्णय किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

बुदासो कदो हषदि । द्व्यपमाणेणेचि निहेसेण खेच-कालबुदासो कदो हषदि । केवडिया इदि पुन्नामुचणिहेसेण छदुमरथाण कचारचमवणिद हषदि । असंखेन्जा इदि निहेसेण संखेन्जाणंण बुदासो कदो । किमह द्व्यपमाणमेव पढम परुविज्जदि ? ण एस बोसो, अदीबंणूलघादो दव्वपरुवणा पढम परुविज्जदे । कधमेदिस्से षूलचण ! असंखेजमेच विसेसिदवीवोवसमणिमिषादो । खेच-कालेहिंत्तो दव्वं बोवेसि वा पुन्व परुविज्जदे । द्व्ययोवत्तय कवं आयिज्जदे ? 'वणीदु जीव-योग्गल-कासागासा अणत्तगुणा' एदम्मादो गाहामुचादो णव्वदे । सेसपरुवणा जहा णेरइयमिच्छाहदिद्व्यपमाणपरुवणमुचस्स उचा तहा वत्तम्मा ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ॥ ३० ॥

पहले निर्देशसे क्षेत्र मुखस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कामप्रमाणका निराकरण हो जाता है । कितने हैं 'इसप्रकार पृष्ठाकूप सूत्रके निर्देशसे छद्मरूपकृत्यका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात है इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

श्रुका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्रकरण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह जोर दोष नहीं है क्योंकि, द्रव्यप्रकरणका अतीव स्थूल है इसलिये उसका पहले प्रकरण किया जाता है ।

श्रुका—यह द्रव्यप्रकरणका स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि यह द्रव्यप्रकरणका केवल असंख्यात विशेषणका सुख जीवोंके प्रहण करनेमें निमित्त है इसलिये स्थूल है ।

अथवा क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्लोक है इसलिये उक्त दोनों प्रकरणानोंके पहले द्रव्यप्रकरणका कथन किया जाता है ।

श्रुका—क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्लोक है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—श्रुति । अपेक्षा जीव पुत्रस काम और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुण है इन गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काम और क्षेत्रसे द्रव्य स्लोक है ।

क्षेत्र प्रकरणका त्रिमप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्रकरण करनेवाले सूत्री कह जावे है उसप्रकार कहना चाहिये ।

कासकी अपेक्षा पथेन्द्रिय त्रिषथ पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव अमग्न्यावासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा प्रपहृत हात है ॥ ३० ॥

१ श्रुति अर्थ इति वाग ।

मात्रिद-विरस्तिद-अवहिद-पमाण-कारण-निरुधि-नियप्या अहा येरूपमिच्छाद्विदम्बर
वयाय परुविदा तदा परुवेयव्या ।

सासपसम्माद्विष्टिपट्टि जाव सजदासजदा सि तिरि
फलोर्ध ॥ २८ ॥

एवस्तु सुचस्त अहा तिरिकुपोषगुणपडिबन्धपमाणपरुवगसुचस्त बन्तराम फर
तदा क्ययर्ध । तिरिकुस्तेसु पंचिदिए मोचूय अन्तरव गुणपडिबन्धप्रीदाने समवाभावादो ।
एवं पंचिदियतिरिक्तपरुवजा समवा ।

संपदि पञ्चचक्षामकम्बोदयपंचिदियतिरिक्तपमाणपरुवर्ध इवदि—

पंचिदियतिरिक्तपञ्चतमिच्छाद्विष्टि दन्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ २९ ॥

एव पंचिदियगह्वं एवदिय-विगडिदियबुदासह । तिरिक्तविदेसो देव-भेरय
मस्तुसबुदासहो । पञ्चचक्षिदेसो अणञ्चचबुदासहो । मिच्छाद्विष्टिदेसेण सेसगुणद्वय

द्रव्यका प्रमाण जाता है । अंकित मात्रित विरहित जगहस प्रमाण कारण विरक्ति
और विकल्पका प्ररूपक त्रिसप्तक्षर नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर
जाये हैं वसीप्रक्षर यहां पर अब सबका प्ररूपक करना चाहिये ।

साक्षादनसम्यग्दृष्टि गुणस्वानसे केकर संयतासपत गुणस्वानतक पंचेन्द्रिय
तिर्यक् प्रत्येक गुणस्वानमें सामान्य तिर्यक्को समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २८ ॥

त्रिसप्तक्षर सामान्य तिर्यक्को गुणस्वानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणके प्ररूपक करनेवाले
सबका व्याख्यान कर जाये हैं वसीप्रक्षर इस सबका व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि
तिर्यक्को पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर बृहते तिर्यक्को गुणस्वानप्रतिपक्ष जीव समव नहीं हैं ।
इसप्रक्षर पंचेन्द्रिय तिर्यक् प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका बखब पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यक्को
प्रमाणका प्ररूपक करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पक्ष महज
किया है । देव नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यक् पक्ष निर्देश किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पक्ष निर्देश किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

पच्चिदियतिरिक्खउपज्जत्तमिच्छाद्दुद्दीणमवहारकालो होदि । अहसा तप्पाभोग्गसंखेज्जकूवे
वगिगळ्ळ पडरगुल मागे हिं पच्चिदियतिरिक्खउपज्जत्तमिच्छाद्दुद्दीणमवहारकालो होदि ।
एस्स संद्धिदत्तओ आणिय माणियम्मा । एस्स अवहारकालेण जगप्परे मागे हिदे
पच्चिदियतिरिक्खउपज्जत्तमिच्छाद्दुद्दीण होदि । एव पच्चिदियतिरिक्खउपज्जत्तमिच्छाद्दु
दम्बपक्खणा गदा ।

सासणसम्माद्दुद्दीणहृदि जाव सजदासजदा ति ओध ॥ ३२ ॥

एस्स सुत्तम् अहा तिरिक्खउगुणपट्टिक्खण सुत्तस्स वक्खमाण कं तहा कायम्,
विसेमामावाणे । एव पच्चिदियतिरिक्खउपक्खणा समत्ता ।

पच्चिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाद्दुद्दी दम्बपमाणेण केव
डिया, असत्तेज्जा ॥ ३३ ॥

एस्स पच्चिदियणिदमो समिन्धियुत्तासद्धा । तिरिक्खणिदमो ससगदिबुदासद्धा ।
जोणिणीणिदसो पुरिम-अपुमयन्निगुत्तासद्धो । मिच्छाद्दुद्दीणिदमो मसगुणपट्टिक्खणबुदासद्धो ।

६ । मयथा तद्योग्य संवशातका धग करके और उस वर्णित राशिका प्रतरांगुलमें भाग देन
पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके
गन्धित आदिककी समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालस जगप्रत्यये भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका
द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्रकृति समान है ।

सामादनसम्पगददि गुणस्वानमे लेकर मयत्तासपत्त गुणस्वान तक प्रत्येक
गुणस्वानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त की ओपप्रकृतिगणके समान पन्योपमके अनंस्यातये
माग ह ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार निर्यक्तोंमें गुणस्वानप्रतिपक्ष आँवोंके प्रतिपादन करनेवाले मूलका व्याख्यान
कर भाये है इसप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि, उस मूलके
व्याख्यानमे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई बिरोधना नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक्
प्रकृति समान है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमयियोंमें मिथ्यादृष्टि की ओपप्रमाणकी अपेक्षा किन्ते
है ? अनन्यात् ह ॥ ३३ ॥

मूलमें पंचेन्द्रिय पक्षा निर्यात होय दृष्टियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यक्
पक्षा निर्देश होय गतिधोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमयी पक्षा निर्देश
बुद्धरसिग और नर्पुमकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पक्षा निर्देश

पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठीममवहारकासो होदि । अइवा तप्पाओगासंखेज्जरूने वगिस्सण पदरंगुठे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठीममवहारकासो होदि । एदस्स खंडिदादथो आणिय माणियम्मा । एदेन अवहारकालेण अगपदरे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठिदम्ब होदि । एव पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठि दम्बपरूयणा गहा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासंजदा त्ति ओष ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्य अहा तिरिक्खगुणपडिक्खणाण सुत्तस्स बडम्माण कद तहा कायम्ब, विसेसामावाडो । एव पंचिदियतिरिक्खपरूयणा समचा ।

पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव डिया, असस्सेज्जा ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिदिमण्डेसो सेसिणियुदासट्ठो । तिरिक्खण्डेसा सेसगदियुदासट्ठो । आमिणीण्डेसो पुरिस-णवुसपण्डिगवुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिण्डेसो सेसगुणपडिक्खण्डुदासट्ठो ।

ई । मयवा लघोम्य संबधातका बर्ग करके धीर वस बर्गित राक्षिक प्रत्यंगुलमें माग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिष्यादृष्टियोंका अवहारकास होता है । इस अवहारकासके लक्षित व्याधिकषे समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकाससे अगप्रकारके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् पयास मिष्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिष्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्रकृष्या समाप्त हुई ।

मामाइनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर मयवासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त जीव ओषप्रकृषणाके समान पत्थोपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३१ ॥

बिसप्रकार तिर्यकोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रतिपात्न करनेपाछे सूत्रका व्याख्यान कर भाये हैं वसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, इस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् प्रकृषणा समाप्त हुई ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिर्योमें मिष्यादृष्टि जीवें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय पक्षका निर्वैरा रोप दृष्टियोंके निवारण करनेके छिये किया है । तिर्यक् पक्षका निर्वैरा रोप गतियोंके निवारण करनेके छिये किया है । योनिमती पक्षका निर्वैरा पुरुषकिरा धीर नपुंसककिराके निवारण करनेके छिये किया है । मिष्यादृष्टि पक्षका निर्वैरा

कोटिसद-तेषीसकोडाकोटि-छत्तीसकोटिलक्ष चउमट्टिकोडिसहस्ररूपेहि पदगुलमोहै
 ल्म तस्मुरिभग्नो माय हिंद पंचिदियतिरिक्ताजोणिगीमिच्छाद्विभवहारकातो होदि ।
 एउ केसिंभि आइरियक्ताण पंचिदियतिरिक्तामिच्छाद्विजोणिगीत्रभहारकालपडिपइ ग
 पइते । कुतो ? पुरदो पाणवैतरतेभाण विष्णिजोयणसुदभगुलभगमेचमवहारकातो होदि
 यि वदन्माणमयादा । इद वक्ताय असक् पाणवैतरमवहारकालपमाणवक्ताय सखमिति
 कष जाणिजेदे ? गरिष एरय अम्हाणमेयतो, किंतु दोणइ वक्तागार्ग मउत्ते एकेव
 वक्तायेण असक्का हादक्क । अइवा दोणिं यि वक्तायाणि असक्काणि, एसा अम्हार्ग
 पइता । कषमेत्ता जाणिजे ? पंचिदियतिरिक्ताजोणिगीहिता पाणवैतरदेवा संखज्जुणा,

ई । मयया इक्ष्वाक्यसौ कोडाकोटी तेषीस कोडाकोटी छत्तीस कोटी लक्ष और बीसउ
 कोटी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको अपवर्णित करके जो छप्पर भावे उसका प्रतरांगुलके
 उपरिम वर्गमें माग देने पर पंचेन्द्रिय निर्वच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ होता है ।

विश्लेषार्थ—एक योजनके चार कोस एक कोसक हो हजार धनुष एक धनुषके
 चार हाथ और एक हाथके बीबीस अंगुल होते हैं, इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर
 $4 \times 4 \times 2000 \times 4 \times 24 = 384000$ प्रमाण अंगुल आते हैं । 384000 को 100 से गुणा
 कर देने पर 38400000 योजनके 38400000000 प्रमाण अंगुल हो जाते हैं । 38400000000 संख्यातक
 बग कर देने पर 272311248000000 प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं । इनका भाग
 अष्टप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय निर्वच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

पंचेन्द्रिय निर्वच योनिमतिषोंके अवहारकाळसे संवत्स एतनेबासा यह किन्ने ही
 व्याचार्थोंका व्याख्यान घण्टित नहीं होता है क्योंकि, तीनही योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यंत्तर
 हेतोंका अवहारकाळ होता है ऐसा भागे व्याख्यान देखा जाता है ।

श्रृंखला—यह पूर्वांक पंचेन्द्रिय निर्वच योनिमतिषोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य
 है और व्याख्यंतर देयाके अवहारकाळके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है यह कैसे जाना जाना है ?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय निर्वच योनिमतीसंबन्धी अवहारकाळका व्याख्यान
 असत्य ही है और व्यंत्तर वर्गोंके अवहारकाळका व्याख्यान सत्य ही है देखा कुछ हमारा
 प्रकृत मत नहीं है किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोमेंसे कोई एक
 व्याख्यान असत्य होना चाहिये । अथवा उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं यह हमारी
 प्रतिज्ञा है ।

प्रश्न—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं अथवा उक्त दोनों व्याख्यानोमेंसे एक

अति अदोहि वातो वेचतेहि विद्विषाया य । दोणिं मिदधी इवी वेदतेहि एव रिक्त ॥ वेदिकुर्हि
 दोने वदतया इववदति एतक वा । एरय एसा वादी दोरवदतय फेज ॥ वदकमेहि ओपन $\times \times$ ।
 जि. य. य. य. ।

तस्यैव देवीमो संलज्जमुणाया' एवमादौ सुहार्णसुचादौ आभिजते । य च सुचम
प्यमार्थं काल्प्य बह्वर्णं पमाणमिदि बोरुं सक्रिजते, अह्यसगादौ । य च एवमस्त
देवस्त एका येव देवी हादि चि शुची अरिष, भवनादियाण' भूजोद्वीनमागमेवो-
वर्लमादौ देवेहिंतो देवीमो मचीसगुणाओ चि बह्वर्णसुचादा य । तम्हा अदि
बाणवैतरदेवभवहारकाओ तिणिजोयणसद्वर्गगुलवग्गमेचो चि चिन्जओ अरिष तो
जोषिणीमवहारकासगुपायणहु तिणिजोयणसद्वर्गगुलवग्गमिह बचीसोचरमदपहुदि वि-
दिहमावो गुणगारो पवेसेयम्भो । अथ जोषिणीमवहारकाओ छज्जोयणमद्वर्गगुलवग्गमचा
चि विष्ण्वओ अरिष तो बाणवैतरवहारकासगुपायणहु छज्जोयणसद्वर्गगुलवग्गा वेचीम
पहुदि विदिहमावसेलेववकूपेहि ओवहेयम्भ । अहवा उमपरस वि पदरगुलस्त तप-
ओमो गुणगारो दाम्भो ।

एस्य संविदादिभिहि बचस्सामो । त अहा- पदरगुलउवरिमवग्गे पदरगुलस्त

व्याख्यान तो असम्भ है ही यह कैसे जाना जाता है ?

ममाधान — पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योके बाणव्यन्तर देव संवदातगुणे है और
उनकी देवियां बाणव्यन्तर देवोंसे संपातगुणी हैं' इस सुहार्णके सूत्रसे उक्त बनिमात्र ज्ञाना
जाता है । सूत्रको अग्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,
अन्वया अतिप्रसंग होय या आपणा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है यह सुक्ति
ही आप से भी ठीक नहीं है, क्योंकि मन्त्रवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आचमन उप
देश पाया जाता है । और 'देवोंसे देवियां बचीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देला जाता
है । इसलिये बाणव्यन्तरदेवोंका अवहारकाक तीवरी योजनोंके अंगुष्ठोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा
निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योके अवहारकाकके उत्पन्न करनेके लिये तीवरी
योजनके अंगुष्ठोंके वर्गमें जो राशि मिलेवैतने देली हो तदनुसार बचीस अधिक सौ व्यधि
रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योका अवहारकाक
छद्दी योजनोंके अंगुष्ठोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा निश्चय है तो बाणव्यन्तर देवोंका अवहार
काक उत्पन्न करनेके लिये तेसीस व्यधि जो संख्या मिलेवैतने देली हो उससे छद्दी योजनोंके
अंगुष्ठोंके वर्गको अपवर्तित करना चाहिये । अथवा बाणव्यन्तर और पंचेन्द्रिय तिर्यक् बनिमती,
उन दोनोंके अवहारकाकोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रत्यंगुलके उसके योग्य गुणकार के
देवा चाहिये ।

अब यहां लंडित व्याधिकारी विधियों बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्यंगुलके
अपरिम वर्गके प्रत्यंगुलके संख्यातमें प्राणमात्र जोड़ करने पर इनमेंसे एक लंड प्रमाण

१ यजुः कर्माविपन्नीय इति पाठः ।

२ रन्ध्रमिह वरिष देवी । यी जी. २७

३ यजुः तिणिजोयण इति पाठः ।

संख्खज्झादिभागमवत्तुं कए तत्थेयएण्ड पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । खंडिदं गद । पदरंगुलस्स संखेज्झादिमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । माजिदं गद । पदरंगुलस्स संख्खज्झादिभाग विरलऊण एकेअस्स रूपस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्ग समख्ख करिय दिण्णे तत्थ एगएण्ड पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । विरलिदं गद । पदरंगुलस्स संख्खज्झादिभाग सलागएदं उवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिदियतिरिक्ख ज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालपमाणमवणिय मलागादो एगएवमवणियएव । एव पुणो पुणो अबहिरिज्झमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च शुगबं णिट्ठिदाओ । तत्थ आदीए अते मज्जे वा एयवारमवहिदपमाण पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । अवहिदं गद । तस्स पमाण पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्झादिभागो संख्खज्झाणि पदरंगुलाणि । त अहा— पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्ग मागे हिदे पदरंगुल मागच्छदि । पदरंगुलस्स दुमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे दाण्णि पदरंगुलाणि आगच्छंति । पदरंगुलस्स विमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे तिण्णि पदरंगुलाणि

पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार चंडितरा वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार माजितका वजन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संख्यातर्षे भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरंगुलके उपरिम वर्गको समान लंब करके वृत्तरूपसे वे क्षेत्र पर पड़ा एक लंबमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितरा वजन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संख्यातर्षे भागको शलाकरूप स्थापित करके प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिय शलाकाराशिमैंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल और शलाकाराशिमैंसे एक पुनः पुनः घटाते जाने पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग और शलाकार एकसाथ समाप्त हो जाती है । यहाँ धारिमें अन्तमें अथवा मध्यमें एकवार कितना प्रमाण घटाया जाए उतना पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार अवहतका पणम समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरंगुलके उपरिम वर्गका अंतर्ग्यायनवां भाग है जो संख्यात प्रतरंगुलप्रमाण है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरंगुल आता है । प्रतरंगुलके दूसरे भागका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरंगुल मध्य आते हैं । प्रतरंगुलके तीसरे भागका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरंगुल मध्य आते हैं । इसीप्रकार क्रमसे आगे

तत्वेन देवीशो संलेखगुणाशो' एवमादौ सुहार्त्तसुखादौ आभिजते । न च सुषम
 प्यमात्र काष्ठग वक्षस्तर्ज पमाणमिदि शोषु सक्तिजदे, अह्मसमादा । न च ब्रह्मेस्म
 देवस्स एक चेव देवी होदि चि शुची अरिय, मन्वादिप्रायार्थ' भूमादेवीभगमपेवो-
 वसंमादो देवेहिंतो देवीशो वचीसगुणाशो चि वक्षस्तर्जदसवादो च । तम्हा यदि
 वामवैतरदेवअवहारकाशो तिप्पिओयणसद्वर्गगुलवगमेचो चि पिच्छओ अरिच तो
 ओपिणीअवहारकासमुप्यायणहु तिप्पिओयणसद्वर्गगुलवगमिदि वचीसोत्तरमइपहुदि वि-
 दिहुमाचो गुणगारो पदेसेयम्भो । अथ ओपिणीअवहारकाशो छन्दोयममर्गगुलवगमयो
 चि विष्णुओ अरिच तो वामवैतरअवहारकासमुप्यायणहु छन्दोयममर्गगुलवगमा ठेचीम
 पहुदि विदिहुमावसंलेखवस्तुहेहि ओवहयम्भ । अहवा उभयत्वे वि पदंगुलस्स त्पा-
 ओनो गुणगारो दावम्भो ।

एव संदिवादिभिहि वचइस्सामो । त जहा- पदंगुलउवरिमवगो पदंगुलस्स

व्याख्यान ठो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है ?

ममाधान — पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योस्ति वाचस्पत्यर देव संघपातगुणे है और
 उनकी देवियां वाचस्पत्यर देवोंसे संघपातगुणी हैं' इस सुहार्त्तपद्ये स्वसे उक्त अभिप्राय जाना
 जाता है । स्वको अग्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,
 कल्पया अतिप्रसंग शेष आ जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है यह पुनः
 ही आप सो मी ठीक नहीं है, क्योंकि मन्वावाची व्याधि देवोंके बहुतसी देवियोंका व्यागममें अब
 देहा पावा जाता है । और 'देवोंसे देवियां वचीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान मी देखा जाता
 है । इसलिये वाचस्पत्यरदेवोंका अवहारकास तीसरी योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा
 निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योके अवहारकासके उत्पन्न करनेके लिये तीसरी
 योजनके अंगुलोंके वर्गमें जो पक्षि जिनदेवने देवी हो तदनुसार वचीस अधिक सौ अरि
 रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिर्योका अवहारकास
 छहवीं योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा निश्चय है तो वाचस्पत्यर देवोंका अवहार
 कास उत्पन्न करनेके लिये तेसीस व्याधि जो संघया जिनैन्द्रदेवने देवी हो वस्तुसे छहवीं योजनके
 अंगुलोंके वर्गसे अपवर्तित करना चाहिये । अथवा वाचस्पत्यर और पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती
 इन दोनोंके अवहारकासोंके लिये दोनों क्षान्तोंमें मी प्रत्यंगुलके उसके दोन गुणकार है
 देना चाहिये ।

अब यहां लंडित आदिकथी विधिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है — प्रत्यंगुलके
 उपरिम वर्गके प्रत्यंगुलके संघपातवर्ग भागमात्र जोड़ करने पर इनमेंसे एक जोड़ प्रमाण

१ महीनु वचविवादीन इति पाठः ।

२ इतिपुलि वरीत देवी । यो जी. २७८

३ महीनु तिप्पिओयण इति पाठः ।

अवहारकालो आगच्छति । अष्टवर्षाणां गदा । घणाघणे वचस्मामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुल गुणेऊण तेण पदरगुलघणस्स पद्धमवग्गमूल गुणिय घणाघणगुले मागे हिंद पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छति । त अहा-
घणगुलेण घणाघणगुल भाग हिंदे घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छति । पुणो पदरगुलेण घणगुलउपरिमवग्गे भाग हिंदे पदरगुलउपरिमवग्गो आगच्छति । पुणो पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाद्द्विअव-
हारकालो आगच्छति । हेड्ढिमवियप्पो गदो ।

गहिदादिमेएण उपरिमवियप्पो तिचिहो । तत्थ वेरुवे गहिंद वचस्मामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खजोगिणी मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छति । तत्थ भागहारस्स अदच्छेदपयमेस रासिस्स अदच्छेदपय कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो होदि । एसो मन्तिमवियप्पो उपरिमवियप्पणिणपज्जणज्ज समाविदो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलउपरिमवग्गो गुणेऊण तत्थउपरिमवग्गे मागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खजोगिणी

योगिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टवर्ष प्रत्यया समाप्त हुई ।

अब घणाघनमें अष्टवर्षन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरांगुलके गुणित करके जो छप्प आये उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छप्प आये उसका घणाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । उसका दृष्टीकरण इसप्रकार है—घनांगुलसे घना घनांगुलके माहित करने पर घनांगुलका उपरिम वग आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वगके माहित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वगके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टवर्षन विकल्प समाप्त हुआ ।

पृथीक आदिक भेषमे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें पृथीक उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके मितने अष्टवर्ष हो उतमीपार उक्त प्रत्यया दृष्टिक अष्टवर्ष करन पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निगण करानेके लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वगको गुणित करके जो छप्प आये उसका प्रतरांगुलके उपरिम वगके उपरिम वगमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसप्रकार

आगच्छति । एवं क्रमेण गतुं पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलवरिमवगमे मागे हिदे संखेज्जभाणि पदरंगुलाणि आगच्छन्ति । पमाण-कारणानि गवाणि । तस्म का भिरुची ? पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुल भागे हिद लङ्गमिह ज्ञप्तिपाणि रुवाणि तप्तिपाणि पदरंगुलाणि हवन्ति । भिरुची गदा ।

वियप्पो हुविहो, हेङ्गिमवियप्पो उवरिमवियप्पो यदि । सत्त्व हेङ्गिमवियप्पं वचस्सामो । पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लङ्गेण त चेव गुविदे पंचिदियतिरिक्खधोणिणीमिष्ठाप्रङ्गिअवहारकाळां होदि । अइवा वेरुवे हेङ्गिमवियप्पो गत्थि, विहङ्गमाप्परासीदो हेङ्गिमपदरंगुल पेक्खिय पंचिदियतिरिक्खधोणिणीमिष्ठाप्रङ्गि अवहारकालस्म बहुपुवळमात्तो । न च योवरायिमवहरिय सत्तो धहुवरासी उप्पादेदु सत्थि-ज्जदे, विरोहा । अङ्गुवे वचस्सामो । पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुभेज्ज पदरंगुलधने भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खधोणिणीमिष्ठाप्रङ्गिअवहारकाळां होदि । त अहा-पदरंगुलेण पदरंगुलमणं भागे हिद पदरंगुलवरिमवगमो आगच्छदि । पुया पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलवरिमवगमे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खधोणिणीमिष्ठाप्रङ्गि

प्रतरंगुलके संप्रयातव्यं मागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें माग देने पर संप्रयात प्रतरंगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार प्रमाण और उपरिम वर्गन समाप्त हुआ ।

शंका— इसठी क्या बिबक्ति है ?

समाधान— प्रतरंगुलके संप्रयातव्यं मागसे प्रतरंगुलके माजित करने पर लब्धमें जो प्रमाण आये उसने प्रतरंगुल को निमती मिष्ठाप्रङ्गि अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार बिबक्ति का कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । इनमेंसे अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरंगुलके संप्रयातव्यं मागसे प्रतरंगुलके माजित करने पर जो लब्ध आये उससे उसीके अर्थात् प्रतरंगुलके गुणित कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्ठाप्रङ्गियों का अवहारकाळ होता है । मथवा यहाँ विकल्पचारमें अथस्तन विकल्प नहीं बतता है क्योंकि, मध्यमान राशिभी अपेक्षा अथस्तन प्रतरंगुलको देकरे हुए पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्ठाप्रङ्गियों का अवहारकाळ बहुत बड़ा है । कुछ स्तेय राशिओ अपहृत करके उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध व्यता है ।

जब अथस्तन विकल्प बतलाते हैं— प्रतरंगुलके संप्रयातव्यं मागसे प्रतरंगुलके गुणित करके जो लब्ध आये उससे प्रतरंगुलके वर्गके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्ठाप्रङ्गियों का अवहारकाळ होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलसे प्रतरंगुलके वर्गके माजित करने पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरंगुलके संप्रयातव्यं मागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्

अवहारकालो आगच्छदि । अट्ठवरूयणा गदा । घणावणे वत्तइस्सामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाणेण पदरगुल गुणेऊण तेण पदरगुलघणस्स पडमवग्गमूल गुणिय पणापणगुले मागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । त वहा-
घणगुलण पणापणगुले मागे हिदे घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलेण घणगुलउपरिमवग्गे माग हिदे पदरगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलस्स संखेज्जदिमाणेण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअव-
हारकालो आगच्छदि । हेडिमवियप्पो गदो ।

गादिदादिमेएण उपरिमवियप्पो तिप्पिहो । तत्थ वेरूव गहिदं वत्तइस्सामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाणेण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खजोणिणी मिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अट्ठचेदणयमेणे रासिस्स अट्ठचेदमए कदे वि पच्चिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो उपरिमवियप्पणिणयज्जणइ समाविदो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाणेण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊण वत्तउपरिमवग्गे मागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खजोणिणी

योनिमती मिष्साइडिपोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टक सम्पन्ना समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें अष्टस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संप्रयातवर्गे भागसे प्रतरांगुलके गुणित करके जो सप्त भागसे उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो सप्त भागसे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्साइडिपोंका अवहारकाल आता है । उसका स्वीकरण इसप्रकार है—घनांगुलसे घना घनांगुलके माहित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम घनके माहित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संप्रयातवर्गे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्साइडिपोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

पूरीन आवधिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे प्रथमम् गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संप्रयातवर्गे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्साइडिपोंका अवहारकाल आता है । उक्त मागहारके कितने अर्थच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिक अष्टच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्साइडि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका मिश्रण करानेके लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संप्रयातवर्गे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो सप्त भागसे उसका घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्साइडि अवहारकाल आता है । इसप्रकार

मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । एवमुपरि आपिठ्ठय वचस्य ।

अद्वये वचस्सामो । पदरगुलस्स संयेज्जदिमाणे पदरगुलउपरिमवग्गस्सु
वरिमवग्गं गुणेठ्ठय पणगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पण्दिपतिरिक्ख
ओणिपीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा— पदरगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं
वर्णगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पदरगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुन
पदरगुलस्स संयेज्जदिमाणे पदरगुलउपरिमवग्गं मागे हिदे पण्दिपतिरिक्खओणिपी-
मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वयेद्वयमेवे रामिस्स
अद्वयेद्वयं करे वि पण्दिपतिरिक्खओणिपीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि ।
पणापमे वचस्सामो । पदरगुलस्स संयेज्जदिमाणे पदरगुलउपरिमवग्गस्सु
वरिमवग्गं गुणेठ्ठय तेन वर्णगुलउपरिमवग्गस्स तन्वग्गग्गं गुणेठ्ठय पणावर्णगुलउ-
परिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पण्दिपतिरिक्खओणिपीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आग-
च्छदि । तं जहा— वर्णगुलउपरिमवग्गस्स तन्वग्गग्गं पणावर्णगुलउपरिमवग्गस्सु
वरिमवग्गे मागे हिदे वर्णगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुन पदरगुलउपरिम

अपर ज्ञानकर मी कथन करना चाहिये ।

अथ अष्टदशमं गृहीत उपरिम विक्षयको वतसाते इ— प्रतरंगुलके सख्यातवें
भागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो छन्द मागे उसका वर्ग
गुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर एवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्यादधि
अवहारकालो भवता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गका वर्णगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग आता
है । पुनः प्रतरंगुलके सख्यातवें भागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके गुणित करने पर एवेन्द्रिय
तिर्यक् योनिमती मिष्यादधि अवहारकालो भवता है । उक्त मागहारके तितने अर्धच्छेद हो
वतनीकार उक्त मध्यमाव पाशिके अर्धच्छेद करने पर मी एवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती
मिष्यादधि अवहारकालो भवता है ।

अथ ज्ञानाप्तमं गृहीत उपरिम विक्षयको वतसाते इ— प्रतरंगुलके सख्यातवें भागसे
प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो छन्द मागे उससे वर्णगुलके उपरिम
वर्गके वर्गके वर्गको गुणित करके जो छन्द मागे उसका वर्णगुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गमें माग देने पर एवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्यादधि अवहारकालो भवता है । उसका
स्पष्टीकरण इसप्रकार है— वर्णगुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गका वर्णगुलके उपरिम
वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर वर्णगुलके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । पुनः

वगस्सुवरिमवग्गेण घणगुलठवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पदगुलठवरिमवग्गे
आगच्छदि । पुनो पदगुलठस्स संखज्जदिमाण पदगुलठवरिमवग्गे मागे हिदे पधि
दिपतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अदन्धेदणय
मेत्ते रामिस्स अदन्धेदणय कदे वि पधियतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालो
आगच्छदि । एवमुवरि आभिठण पेयम्भ । पदगुलठवरिमवग्गस्स घणगुलठवरिमवग्गस्स
घणाघणगुलठस्स च असंखज्जदिमाण पधियतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालेन
गदिदगहिदो गदिदगुणगारा च साहेयम्भो । एहेण अवहारकालेण अगमेत्तिदि मागे
हिद पधियतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तेनेव अगपत्ते माग
हि पधियतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि ।

सासणसुम्माहट्ठिणहुडि जाव संजदासजदा ति ओघ ॥ ३६ ॥

दम्भट्टियणयमस्मिन्नग आपपरुवणा इवदि । पञ्चवट्टियणय पुन अवलपिजमाणे
तिरिक्खोपपरुवणा पधियतिरिक्खज्जेणोपपरुवणा वा पधियतिरिक्खज्जेणिमीमिच्छाद्द्विअवहारकालो
गुणपडिबण्णपरुवणा समाणा य इवदि, विषेदरानीदो इरिषवेदेगरासिस्स समाणाश्रुव
प्रतंगुलके उपरिम वगके उपरिम वगका घनागुलके उपरिम वगके उपरिम वगमें भाग देने
पर प्रतंगुलके उपरिम वग भाता है । पुनः प्रतंगुलके संख्यातवें भागमे प्रतंगुलके
उपरिम वगके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल भाता
है । उक्त भागहारके जितने अवच्छेद हो उतनीवार उक्त मध्यमान दृष्टिके अवच्छेद करने पर
भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल भाता है । इसीप्रकार ऊपर जानकर
के जाना चाहिये । प्रतंगुलके उपरिम वगके अवस्थातवें भागकय घनागुलके उपरिम वगके
अवस्थातवें भागकय और घनाघनागुलके अवस्थातवें भागकय पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती
मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा शुद्धीतशुद्धीत और शुद्धीतशुद्धीतके साथ देखा चाहिये । इन
अवहारकालसे अगमेत्तिके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि विभक्त
मूर्त्ति भाती है । और इसी अवहारकालसे अगमेत्तिके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य भाता है ।

मासादनसम्पग्गहि गुणस्थानम लेकर सयसामंपथ गुणस्थान तक प्रत्येक गुण
स्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती और तिर्यक्-सामान्य प्ररूपणाक समान पन्थोपमक
अवस्थातवें भाग है ॥ ३६ ॥

प्रथमार्थक नवका आधय लेकर मासादनसम्पग्गहि भादि गुणस्थानकी पंचेन्द्रिय
तिर्यक् योनिमती जीर्णोर्द्धा प्ररूपणा तिर्यक् सामान्य प्ररूपणाके समान है । पञ्च
पथापार्थक नवका अवलम्ब करने पर तिर्यक् सामान्य प्ररूपणा अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यक् पथा
सामान्य प्ररूपणाक समान पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती गुणस्थानप्रतिपक्ष जीर्णोर्द्धा प्ररूपणा
नहीं हाना है पथोर्द्धा तीन वेदवासी राशिमे एक कर्मावसी आपगातिवासी सामान्य नहीं वन

वर्त्तमान, तन्मा विवेचन होद्वयं । ते विमत पुन्याहरियाधिरुद्रोषणस्य वचस्सामो । तं
जहा- पश्चिदियतिरिक्त्वापञ्चमसंभ्रदसम्माइष्टिअवहारकाले आपत्तिमाय अस्ते-अदि
माण गुणिदे पश्चिदियतिरिक्त्वाजोनिनीअसंभ्रदसम्माइष्टिअवहारकालो इति । तमावलि-
याय अस्तेअदिमाण गुणिदे पश्चिदियतिरिक्त्वाजोनिनीसम्माभिन्नाइष्टिअवहारकालो
होदि । तं सखन्वकुरेहि गुणिदे तत्त्वेव साधनसम्माइष्टिअवहारकालो इति । तमावलि-
याय अस्तेअदिमाण गुणिदे सभ्रदासंभ्रदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकाले
खदिदादो ओषमगा । पश्चिदियतिरिक्त्वापञ्चमसंभ्रदसम्माइष्टिरासीदा
तत्त्वेव इतिवेदासंभ्रदसम्माइष्टिरासी किमिहसंभ्रदसंभ्रदगुणीया ? पुरिसवेदादा सुहु अ-
सत्तिरिक्त्वेदोदण पत्तर दसणमोहणीयगुणसमाभादो । जदि एवं तो तत्त्वतवति-
वेदसंभ्रदसम्माइष्टिरासीदा ततो अप्सत्त्वतवणमुसगेदअसंभ्रदसम्माइष्टिरासिस्स अ-
स्तेअगुणीयस पसम्भदे ? मबहु णाम अबिदुत्तादा । पश्चिदियतिरिक्त्वापञ्चमसंभ्रद-
सम्माभिन्नाइष्टिरासीदो पश्चिदियतिरिक्त्वाजोनिनीअसंभ्रदसम्माइष्टिरासी किं समो किं

सकती है । इसलिये सामान्य प्रकृपासे यह प्रकृपा विरोध होना चाहिये । बाये उस
विरोधके पूर्व आचार्योंके अविकृत उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—
पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त असंयतसम्बन्धविरहित अवहारकालको आबलीके असंयतसे
मतसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती असंयतसम्बन्धविरहित अवहारकाल होता है ।
उसे आबलीके असंयतसे मापसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती सम्बन्धविर-
हित अवहारकाल होता है । इसे संयतसे गुणित करने पर वहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योगिमतिर्चाँमें असंयतसम्बन्धविरहित अवहारकाल होता है । उसे आबलीके असंयतसे मापसे
गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती संयतसंयत अवहारकाल होता है । इन अवहार
कालोंके द्वारा अहित आधिक्य अथवा सामान्य तिर्यक्के अहित आधिक्यके कल्पके समान है ।

छंदा— पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंमें प्रकृपवेदी असंयतसम्बन्धविरहित जीवराशि
वही पर कीवेदी असंयतसम्बन्धविरहित जीवराशि अवधारणागुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— प्रकृपवेदी अपेक्षा व्यवहारकालीकेके उदयके साथ प्रकृपसे वहीन
मोहनीयके उपयोगका अभाव है ।

छंदा— यदि ऐसा है तो वहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यक्में कीवेदी असंयतसम्बन्धविरहित जीव
राशि कीवेदिर्चाँसे भी व्यवहारकाल प्रकृपवेदी असंयतसम्बन्धविरहित जीवराशि असंयतगुणी
हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— कीवेदिर्चाँसे प्रकृपवेदीके असंयतगुणी हीनता प्राप्त होती है
तो हो जाये क्योंकि ऐसा हीनकार कर देनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त हीनों वेदवादी सम्बन्धविरहित जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योगिमती असंयतसम्बन्धविरहित जीवराशि क्या समान है, या संयतगुणी है, या असंयतगुणी

संखेज्जगुणा किमसंखज्जगुणा किं सखज्जगुणाहीणो किमसंखज्जगुणाहीणा किं विसेसा
हिओ विसंखहीणो वा वि णत्थि सपहियफासं उवएसो ।

पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दब्बपमाणेण कवडिया, असं-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एवामि बोध्मि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि घुत्ते
अपज्जत्तयामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्खा येत्तम्भा । पज्जत्तयामकम्मस्स उण्ण अपज्जत्तो
वि पज्जत्तो चेव, योक्कम्मणिन्वत्तिप्रवेक्खामावणा ।

स्वेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहार
कालादो असखेज्जगुणाहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पप्पट्टिसहस्स पचसप-छत्तीसपदर्गुलमेत्तदेवअवहारकालमावलिपाए असंखेज्जदि
माएण भामे हिदे पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होति । अवसेसा खंदिदिदि
वियप्पा पंचिदियतिरिक्खभिच्छादणीय व भावेदम्भा ।

हे, या संख्यातगुणी हीन हे या असेक्कातगुणी हीन हे या विलोपाधिक हे या विशेष हीन
हे, इत्यादिकपसे इस काखमें कोई उपदेष्ट नहीं पाया जाता है ।

पंचेत्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अरुंस्यात
हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेत्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव अरुंस्यातासम्मात अवसरिणियों
और उत्सरिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी पूरा सुगम हैं । किंतु यहाँ पर अपर्याप्त वेला कथन करने पर अपर्याप्त
मात्रकर्मके उद्घासे युक्त पंचेत्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा त्रिस्तक पर्याप्त
मात्रकर्मका उद्घा है वह (घटीर पयातिके पूरा होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही
है क्योंकि यहाँ पर मोक्षमयी निवृत्तिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेत्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा द्रव्योंके अवहारकालसे अरुं
स्यातगुणे हीन कालसे अग्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

वेसट हजार पाँचवीं छत्तीस यतरांगुलमात्र द्रव्योंके अवहारकालमें आपसीके अरुंस्या
तसे मापका माग इन पर पंचेत्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अपरिष्ट नैदित
भावि विकल्पोंका कथन पंचेत्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके नैदित भाविके कथनके समान
करना चाहिये ।

पक्षीय, तम्हा बिसेसेण होद्व्य । त बिसेसं पुम्माइरियाविरुद्धोपपन्न वचस्सामो । तं जहा- पक्षिदियतिरिक्खपञ्चत्तमसज्जदसम्माइड्डिमवहारकाळे आनत्तियाए असंखेन्नादि माएण गुणिदे पंषिदियतिरिक्खजोषिणीअसंज्जदसम्माइड्डिमवहारकाळा होदि । तमावत्ति- याए असंखेन्नादिमाएण गुणिदे पंषिदियतिरिक्खजोषिणीसम्मामिच्छाइड्डिमवहारकाळ होदि । तं सत्तज्जदसंवेहि गुणिदे तत्थेन सात्तणसम्माइड्डिमवहारकाळो होदि । तमावत्तिमाए असंखेन्नादिमाएण गुणिदे सज्जदासज्जदमवहारकाळो होदि । एदेहि अवहारकाळेति खंदिदादमो ओघमणा । पंषिदियतिरिक्खपञ्चत्तमेसु पुनिसंवेदासंज्जदसम्माइड्डिरासीदो तत्थेन इतिववेदासज्जदसम्माइड्डिरासी किमिड्डमसत्तेज्जगुणहीणा ? पुनिसंवेदादो सुद्धु जप्प- सत्तिवत्तिवेदोदयए पठरं ईसणमाइणीयत्ताओषसमामावादो । जदि एव तो तत्थतवत्तिव- पदअसज्जदसम्माइड्डिरासीदो तपो जप्पसरत्तवत्तवत्तुसगरेदअसंज्जदसम्माइड्डिरासिस्स अस- खेन्नाजगुणहीणत्तं पसज्जवे ? मयदु णाम अविक्कहादो । पंषिदियतिरिक्खपञ्चत्तविदे- सम्मामिच्छाइड्डिरासीदो पंषिदियतिरिक्खजोषिणीअसंज्जदसम्माइड्डिरासी किं समो किं

सकत्ती है । इसविधे सामान्य प्रकृपासे यह प्रकृपा विशेष होता चाहिये । अतो इस विरोधको पूर्व ज्ञापकोंके अधिकार उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त अक्षयतसम्यग्दृष्टिसम्पत्ती अवधारकासको आकाशके अक्षयतासे प्राप्त होने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती अक्षयतसम्यग्दृष्टि अवधारकास होता है । उसे आकाशके अक्षयतासे प्राप्त होने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती सम्यग्दृष्टि अवधारकास होता है । उसे सकृदात्तसं गुणित करने पर वही पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिपूर्व साक्षात्तसम्यग्दृष्टिपूर्व अवधारकास होता है । उसे आकाशके अक्षयतासे प्राप्त होने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती संयतासंयत अवधारकास होता है । इन अवधार- काओंके द्वारा खंडित व्याक्तिकाकषण सामान्य नियमोंके खंडित व्याक्तिके कषणके समान है ।

प्रश्न—पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंमें पुनरपेक्षी अक्षयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिते क्या पर लीखेनी अक्षयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि अक्षयतागुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान—पुनरपेक्षी अतोता अग्रप्राप्त लीखेनेके उद्देशके साथ पुनरुपपत्ते पूर्वमे- भेदनीयके सपोपपत्तय अभाव है ।

प्रश्न—यदि ऐसा है तो जहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यकोंमें लीखेनी अक्षयतसम्यग्दृष्टि जीव- राशिते लीखेनेकोसे ही अग्रप्राप्त अपुनरपेक्षी अक्षयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अक्षयतागुणी हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान—लीखेनेकोसे अपुनरपेक्षीको अक्षयतागुणी हीनता प्राप्त होती है तो हो जामो क्योंकि ऐसा लीखार कर केनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त तीनों वेदवासी सम्यग्दृष्टि जीवराशिते पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती अक्षयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है या अक्षयतागुणी है, या अक्षयतागुणी

संखेज्जगुणो किमसखेज्जगुणो किं सखेज्जगुणहीणो किमसखेज्जगुणहीणा किं विसेसा
हिओ विसेसहीणो वा वि णत्थि सपहियकालं उवएसो ।

पंचिदियतिरिक्खअपञ्जत्ता दव्वपमाणेण कवडिया, अस-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एवामि वाप्पि वि सुत्ताभि सुगमाणि । किंतु एतत् अपञ्जत्ता इति वृत्ते
अपञ्जत्तामकम्मोदपंचिदियतिरिक्खा येत्तत्ता । पञ्जत्तामकम्मस्य उप्प अपत्ता
वि पञ्जत्तो खं, गोक्कम्मणिन्नसिध्दयेक्खामावादा ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपञ्जत्तोहि पदरमवहिरदि देवअवहार
कालादो असखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पप्पट्टिसहस्स पञ्चसय-छत्तीसपदरंगुलमेवदेवअवहारकालमावलिपाए असखेज्जदि
माण भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खअपञ्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंदिदादि
वियप्पा पंचिदियतिरिक्खमिच्छाप्रवृत्तिण व भागेदम्मा ।

है वा संख्यातगुणी हीन है वा असंख्यातगुणी हीन है वा विशेषाधिक है वा विशेष हीन
है इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बीज उक्त्यप्रमाणकी अपेक्षा करने हैं ? असंख्यात
है ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बीज असंख्यातसंख्यात अक्षरपिणियों
और वस्तुपिणियों द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सूत्र सुगम हैं । किंतु यहाँ पर अपर्याप्त देखा कथन करने पर अपर्याप्त
सामग्र्यमें के बहसे पुनः पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पचाप्त
सामग्र्यमें के बह है वह (वाहीर पचाप्तिके पूर्य होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पचाप्त ही
है क्योंकि यहाँ पर लोभमें की निर्बुद्धिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवधारकालसे अतः
ख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

संज्ञा द्वार पांचवी छत्तीस प्रतरंगुलमाण देवोंके अवधारकालमें आपसीके अस्तव्या
तर्क भागका माप देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवधारकाय होता है । अक्षरिए भक्ति
वादि विद्वत्सोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यावृत्तियों के अन्ति आदि के कथनके समान
करना चाहिये ।

अहवा सेदीण असंखेज्जाणि असंखेज्जाणि सेदिपदमवगमूठाणि । को पडि-
मागो ? सगअवहारकालमगो । अहवा असंखेज्जाणि घणगुलाणि । केसियमेचामि ?
अधिअगुलस्स असंखेज्जाणिमागमेचामि । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सग
अवहारकालो । दम्भमसंखेज्जगुण । को गुणमारो ? सगविक्खंसमूर्ह । पदरमसंखेज्जगुण ।
को गुणमारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणमारो ? सेदी । एवं
वेव पडिदियतिरिक्त्तपञ्चअमिच्छाइट्ठीणं पि । णवरि अमिह्मि अविअगुलस्स असंखेज्जदि
मागमेचामि घणगुलाणि चि बुच तमिह्मि अधिअगुलस्स संखेज्जदिमागमेचामि चि
वत्तम्ह । एवं वेव पडिदियतिरिक्त्तजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं हि । णवरि अमिह्मि अधि
अगुलस्स सगमेज्जदिमागमेचामि चि बुच तमिह्मि संखेज्जअधिअगुलमेचामि चि वत्तम्ह ।
पडिदियतिरिक्त्तापञ्चअसत्तमाअप्पावहुग पडिदियतिरिक्त्तमिच्छाइट्ठिसत्तमाअमगो ।
पडिदियतिरिक्त्तपञ्चअ-पडिदियतिरिक्त्तजोणिणीगुणपडिवण्णाण सत्तयाणं तिरिक्त्तगुण
पडिवण्णसत्तमाअमगो ।

पररामे पर्यद । असज्जदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पडिदोवमेति

अगमेणीका असत्त्यातवा माग गुणकार है जो अगमेणीके असत्त्यात प्रथम धर्मागुलप्रमाण
है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका यह प्रतिभाग है । अथवा असत्त्यात घर्मागुल
गुणकार है । ये कितने हैं ? सूर्यगुलके असत्त्यातयें भागमात्र हैं । चिक्कमसूचीसे अगमेणी
असत्त्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । अगमेणीसे ऐवेन्द्रिय
तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका प्रथम असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी चिक्कमसूची गुणकार
है । ऐवेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके प्रथमसे अगमतर असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपना अवहारकाल गुणकार है । अगमतरसे मोक्ष असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अगमेणी गुणकार है । इसीप्रकार ऐवेन्द्रिय तिर्यक् ऐवेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अव्यवहुत्य कहना चाहिये । पर इतना बिशेष है कि जहाँ पर सूर्यगुलके असत्त्यातयें भागमात्र
घर्मागुल होते हैं वेसा कहा है यहाँ पर सूर्यगुलके असत्त्यातयें भागमात्र घर्मागुल होते हैं वेसा
कहना चाहिये । इसीप्रकार ऐवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अव्यवहुत्य होता है । इतना बिशेष है कि जहाँ पर सूर्यगुलके असत्त्यातयें भागमात्र घर्मागुल होते
हैं वेसा कहा है यहाँ पर संवयान सूर्यगुलमात्र घर्मागुल होते हैं वेसा कहना चाहिये । ऐवेन्द्रिय
तिर्यक् अपर्याप्तोंका स्वरयान अव्यवहुत्य ऐवेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अव्यवहुत्यके समान है । ऐवेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त और ऐवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती गुणस्थान
प्रतिपक्ष जीवोंका स्वस्थान अव्यवहुत्य तिर्यक् गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके स्वस्थान अव्यवहुत्यके
समान है ।

अब परस्थानमें अव्यवहुत्यका कथन प्रारंभ है— अर्धयानमध्यगदि अवहारकालसे

मागामाग वचइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतस्संठे कदे तत्थ बहुसंठा पंरिय-
 भियल्लिंशिया होति । सस संखज्जउंठे कदे तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खउत्तद्वियपत्तया
 होति । सेस संगुन्धउंठे कए तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खपन्नअपमिच्छादिही होति ।
 सेसमसंखेन्धसंठ कए तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खजोभिणीमिच्छादिही होति ।
 सेसमसंखेन्धसंठ कए तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खउत्तिवेदमसअदसम्मअट्ठिदम्भं हादि ।
 मस संगुन्धसंठ कए तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खउत्तिवेदसम्मामिच्छादिदम्भं हादि ।
 मेसमसंखेन्धसंठ कए तत्थ बहुसंठा पंरियितिरिक्खउत्तिवेदसामुणसम्मअट्ठिदम्भं हादि ।
 सपेगउंठा सज्जसंठदा होति ।

अप्पावहुत्वं तिथिहं सत्थाय परत्थायं सव्यपरत्थायं चेदि । उत्थ सत्थाने मज्झ-
 माणे तिरिक्खमिच्छादिहीण सत्थाय णरिष, रासीदो धुररासिस्स बहुमुबसंभादा ।
 सासनादीण सत्थायणमोष । पंरियितिरिक्खमिच्छादिहीण सत्थायणावहुत्वं पुबदे ।
 सन्नरबोवो पंरियितिरिक्खमिच्छादिअवहारकाळो । तस्सव विक्खंतमूर्खं अंतंउन्धगुणा ।
 को गुणगारा ! सगविक्खंतमूर्खं अंतंउन्धदिमागो । को पडिमागा ! सगअवहारकाळा ।

अब मागामागका वचछात हैं— तिरिक्ख राशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे
 बहुलप्रमाण पंचेन्द्रिय जीव विचलन्त्रिय जीव है । दोपके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय निर्बंध सम्मपराप्तक जीव हैं । दोपके संख्यात खंड करने
 पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख पराप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोपके अंतंख्यात
 नष्ट करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोपके
 असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय निर्बंध तीन वेदवाले असंख्यसंख्यादृष्टि-
 योंका द्रव्य है । दोपके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन
 वेदवाले सम्मगिमिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है । दोपके अंतंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग
 पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन वेदवाले सासाधनसंख्यादृष्टियोंका द्रव्य है । दोप एक खंडप्रमाण
 पंचेन्द्रिय निर्बंध तीन वेदवाले संख्यातसंख्यत हैं ।

अस्यबहुत्वं तीन प्रकारका है स्वस्थान अस्यबहुत्वं परस्थान अस्यबहुत्वं जीव
 राक्षपरस्थान अस्यबहुत्वं । उनमेंसे स्वस्थान अस्यबहुत्वंका कथन करने पर तिरिक्ख मिथ्या-
 दृष्टियोंका स्वस्थान अस्यबहुत्वं नहीं पाया जाता है क्योंकि, तिरिक्ख मिथ्यादृष्टि जीवराशिके
 सुबलाशिका प्रमाण बड़ा है । सामाज्यसंख्यादृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अस्यबहुत्वं सामान्य
 प्रमाणका समान है । अब पंचेन्द्रिय निर्बंध मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अस्यबहुत्वं बतलाने
 हैं— पंचेन्द्रिय तिरिक्ख मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ सबसे छोटा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिरिक्ख
 मिथ्यादृष्टियोंकी विच्छेदमूर्खी अंतंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना विच्छेदमूर्खीका
 अंतंख्यातका माय गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? अपना अवहारकाळ प्रतिमाग है । अपना

अहं सती अस्मिन्प्रदिमागो अस्मिन्प्रजाणि सतिपदमवगमूलाणि । को पडि-
मागो ? सगप्रवहारकालजगो । अहं अस्मिन्प्रजाणि घणगुलाणि । केचिपमेचाणि ?
सुचिअगुलम्म अस्मिन्प्रजाणिमागमेचाणि । सेवी अस्मिन्प्रजागुणा । को गुणगारो ? सग
अवहारकाला । द्वयमसगुज्जगुण । को गुणगारो ? सगविक्खममूर्त्ति । पदरमसंसेजगुण ।
को गुणगारो ? सगप्रवहारकालो । लोगो अस्मिन्प्रजागुणो । को गुणगारो ? सेवी । एव
एव पचिअगुलम्म अस्मिन्प्रजाणिमागमेचाणि । नवरि अस्मिन्प्रजागुलम्म अस्मिन्प्रजादि
मागमेचाणि घणागुलाणि चि युच सग्धि सुचिअगुलम्म संसेजगुणमागमेचाणि चि
वत्तम् । एव एव पचिअगुलम्म अस्मिन्प्रजाणिमागमेचाणि चि युच सग्धि संसेजगुणमागमेचाणि चि वत्तम् ।
पचिअगुलम्म संसेजगुणमागमेचाणि चि युच सग्धि संसेजगुणमागमेचाणि चि वत्तम् ।
पचिअगुलम्म संसेजगुणमागमेचाणि चि युच सग्धि संसेजगुणमागमेचाणि चि वत्तम् ।
पचिअगुलम्म संसेजगुणमागमेचाणि चि युच सग्धि संसेजगुणमागमेचाणि चि वत्तम् ।
पचिअगुलम्म संसेजगुणमागमेचाणि चि युच सग्धि संसेजगुणमागमेचाणि चि वत्तम् ।

परत्यामे पयद । अमज्जमम्याद्विअवहारकालादो आव पनिसोवमसि

जगभेणीका अमप्यातकां माग गुणवार ह ओ जगभेणीके अस्मिन्प्रजागुण प्रथम वगमूलप्रमाण
ह । प्रतिमाग क्या है ? अपने अवहारकालका वग प्रतिमाग है । अथवा, अमप्यात कालागुल
गुणवार है । ये कितने हैं ? मूल्यागुलके अस्मिन्प्रजागुण मागमात्र हैं । पिच्छमसुचीसे जगभेणी
अमप्यातगुणी है । गुणवार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणवार है । जगभेणीसे पंचेन्द्रिय
निर्वच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य अमप्यातगुणा है । गुणवार क्या है ? अपनी पिच्छमसुची गुणवार
ह । पंचेन्द्रिय निर्वच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगभेणी अमप्यातगुणा है । गुणवार क्या है ?
अपना अवहारकाल गुणवार है । जगभेणीसे ओक अमप्यातगुणा है । गुणवार क्या है ?
जगभेणी गुणवार है । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय निर्वच पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अमप्यातगुण कहना चाहिये । पर इतना विद्योत है कि जहाँ पर मूल्यागुलके अस्मिन्प्रजागुण मागमात्र
घनागुल होने हैं वगमात्र है वहाँ पर मूल्यागुलके अमप्यातगुण मागमात्र घनागुल होने हैं ऐसा
कहना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय निर्वच पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अमप्यातगुण होता है । इतना विद्योत है कि जहाँ पर मूल्यागुलके अमप्यातगुण मागमात्र घनागुल होने
हैं वगमात्र है वहाँ पर मूल्यागुलके अमप्यातगुण मागमात्र घनागुल होने हैं ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय
निर्वच अमप्यातगुण मागमात्र अमप्यातगुण पंचेन्द्रिय निर्वच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अमप्यातगुण समान है । पंचेन्द्रिय निर्वच पचाप्य और पंचेन्द्रिय निर्वच पंचेन्द्रिय निर्वच पंचेन्द्रिय
प्रतिपक्ष जीवोंका स्वस्थान अमप्यातगुण निर्वच गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके स्वस्थान अमप्यातगुणके
समान है ।

अब परत्यागमे अमप्यातगुणका वचन प्रदत्त है— अमप्यातगुणमाद्वि अवहारकालमे

ओषपरत्प्राणमगो । तदा मिष्याद्दृष्टि अर्णतगुणा । को गुणगारो ? तिरिस्त
मिष्याद्दृष्टिगुणसंगसंखेज्जदिमागो । पंषिदियतिरिक्तसेसु असंखदस्स अबहारकातो जा
पत्तिदोवमेति ओषपरत्प्राणमगो । तदो मिष्याद्दृष्टिअबहारकातो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? पदरंगुत्तस्स अर्णतज्जदिमागो असंखे जापि स्रविअगुलाणि स्रविअंगुत्तस्स
असंखेज्जदिमागमेचाणि । को पत्तिमागो ? असंखेज्जगुणाणि पत्तिदोवमाणि । उवरि सत्पाय
मगो । एवं पंषिदियतिरिक्तपन्जराण पि वत्तम् । पवरि अम्हि असंखे जापि
पत्तिदोवमाणि पि बुत्तं तम्हि संखेज्जगुणाणि पत्तिदोवमाणि पि वत्तम् । एव ओपिणीय
पि । पवरि अम्हि संखेज्जगुणाणि पत्तिदोवमाणि पि बुत्तं तम्हि पत्तिदोवमस्स संखज्जि
मागो । पंषिदियतिरिक्तपन्जराणपरत्प्राण संगसत्प्राणतुल्लं ।

सम्बपरत्प्राणो पयदं । सम्बत्तोवो असंखदस्समाद्दृष्टिअबहारकातो । एव जा
पत्तिदोवमेति जेयम् । तदो पंषिदियतिरिक्तमिष्याद्दृष्टिअबहारकातो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो । पुब्बमपिदो । पंषिदियतिरिक्तपन्जराणअबहारकातो विसैसपिआ
केसिपमेचेप ? आबत्तिपाय असंखेज्जदिमाएय खिदिदएयसंखमेचेप । पंषिदियतिरिक्त-

छेकर पस्योपमतक ओष परत्प्राण अस्यबहुत्वके कथनके समान कथन जानना चाहिये ।
पस्योपमतके मिष्याद्दृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तिर्यक् मिष्याद्दृष्टि बहुसङ्क
वैविध्योंका संख्यातवां भाग गुणकार है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यक्में अस्यपतोके अबहारकात्तसे छेकर
पस्योपमतक ओष परत्प्राणके कथनके समान कथन जानना चाहिये । पस्योपमतके मिष्याद्दृष्टि
अबहारकात्त असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पदरंगुत्तका असंख्यातवां भाग गुणकार
है जो सूर्यगुणके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात सूर्यगुणप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
है ? असंख्यात पस्योपमतका प्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर स्वस्थान अस्यबहुत्वके समान
कथन जानना चाहिये । इसीप्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंके अस्यबहुत्वका भी कथन करना
चाहिये । इतना विशेष है कि जहाँ पर असंख्यात पस्योपमत है वहाँ पर संख्यात
पस्योपमत है वहाँ कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पञ्चमिष्योके अस्यबहुत्वका भी कथन
करना चाहिये । इतना विशेष है कि जहाँ पर संख्यात पस्योपमत है वहाँ पर
पस्योपमतका संख्यातवां भाग है वहाँ कथन करना चाहिये । पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोंका
परत्प्राण अस्यबहुत्व अपने स्वस्थान अस्यबहुत्वके समान है ।

यह सब परत्प्राणमें अस्यबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंखतसम्बद्धतिर्यक्
अबहारकात्त सबसे स्वीकृत है । इसीप्रकार पस्योपमतक के जाना चाहिये । पस्योपमतके
पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याद्दृष्टियोंका अबहारकात्त असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पूर्व कथित
पदरंगुत्तका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याद्दृष्टियोंके अबहारकात्तसे
पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोंका अबहारकात्त विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे अधिक है ?
पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिष्याद्दृष्टियोंके अबहारकात्तके आबत्तीके असंख्यातवें भागसे अधिक करने

पञ्चपञ्चवारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंख्यजगुणो ।
 संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिक्खुजोणिणीमिच्छाद्विअपहारकालो संख्यजगुणो । को
 गुणगारो ? संख्यजगुणो । तस्सेव विक्खमसुअं असंख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 पुण्यमणिगो । पंचिदियतिरिक्खुपञ्चचमिच्छाद्विअपहारकालो संख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिक्खुपञ्चचमिच्छाद्विअपहारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 आवलियाए असंख्यजगुणो । पंचिदियतिरिक्खुमिच्छाद्विअपहारकालो विसेसाहिया ।
 केचियमेचेण विसेसो ? आवलियाए अमरुअदिमाणं गंदिदमेचो । सेठी असंख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? अरहारकालो । पंचिदियतिरिक्खुमोचिणीमिच्छाद्विअपहारकालो संख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? सगविक्खमसुअं । पंचिदियतिरिक्खुमिच्छाद्विअपहारकालो संख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिक्खुपञ्चचमिच्छाद्विअपहारकालो संख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? आवलियाए असंख्यजगुणो । पंचिदियतिरिक्खुमिच्छाद्विअपहारकालो

ओ एक लंठ सध्द भाये तग्मात्र पिडापसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंके अवहार
 कालसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? अवयवोंके असंख्यातये मातृका संख्यातया मातृका गुणकार है । पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल संख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? सवयव समय गुणकार है । जहाँ पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भमुखी जगृहमे अवहारकालसे असंख्यातगुणी है ।
 गुणकार क्या है ? पहले वह भाये है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी
 विष्कम्भमुखीमे पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भमुखी संख्यातगुणी है । गुण
 कार क्या है ? सवयव समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भ-
 मुखीमे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कम्भमुखी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ?
 अवयवोंका असंख्यातया मातृका गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कम्भमुखीमे
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका विष्कम्भमुखी पिडाप अधिक है । किन्तुमात्रमे अधिक
 है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कम्भमुखीमे अवयवोंके असंख्यातये मातृका लंठित करने
 पर जितना सध्द भावे तग्मात्र अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भ
 मुखीमे जगृहकी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है ।
 जगृहकीमे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या
 है ? अवयवोंकी विष्कम्भमुखी गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि वयवोंका द्रव्य संख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? सवयव
 समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि वयवोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंका
 द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अवयवोंके असंख्यातये मातृका संख्यातया मातृका
 गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति-
कालेण ॥ ४१ ॥

दम्बपमागमनमिच्छा कालपमाणस्य महत्तावत्तमादो असस्वेज्जासस्वेज्जादित्रास
प्पिणिउस्सप्पिणिबिसेसमपापम्बगानो वा कालपमाणस्य सुदुमत्तण मत्तम् । असपम्बणा
पुञ्ज व पम्बेयम्मा ।

स्वेत्तेण सेढीए अमस्वेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो
असस्वेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाद्विह्वि रूवा पक्खित्तएहि
सेढी अवहिरदि अगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सुतीए असस्वेज्जदिभागो इति मामप्यवयवण सुस्वेज्जजोयणप्पट्टि इहममंत्ता
दियप्पाण मन्वेसि गहणे मपत्त तप्पडिसेह्वि अमंत्ताजोयणकोडीओ ति पुत्त । तिस्स
सुतीए अमंत्ताज्जदिभागस्य सुतीए पतीए आयामो गीहत्तणमिदि मंवेयम्ब । अमंत्तेज्जदि

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्याद्यष्टि जीव अमन्त्यानामन्त्यान् अवसर्पिणियों
जाग उत्सर्पिणियोंक द्वारा अपहृत हात है ॥ ४१ ॥

दम्बप्रमाणकी अक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाद अनेके कारण अपेक्षा कालप्रमाण
असंख्यानामन्त्यान् अवसर्पिणी आर उत्सर्पिणीस्य विरोध संख्याका प्रत्यक्ष करनेवाला होनेसे
इसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये । शेष प्रत्यक्षका कथन पहलेके
समान करना चाहिये ।

क्षेत्रकी अपेक्षा खगभणीक अमन्त्यान्तर्गे मानप्रमाण मनुष्य मिथ्याद्यष्टि जीव
राशि है । उस भणीका आयाम (अर्थात् खगभणीके अंतर्स्थितार्थे मागरूप भेषिका
आयाम) अमन्त्यान् कगंड पात्रन है । सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको सूर्यगुलके
तृतीय वर्गमूलतम गुणित करके आठव्व आठे उसे प्रताकास्यसे स्थापित करके व्याधिक
(अर्थात् पञ्चाधिक तरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्याद्यष्टि राशिके द्वारा
खगभणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूर्यमे अगभणीके अमन्त्यान्तर्गे मागप्रमाण इसप्रकार सामान्य बंधन देनेसे संख्यान्
पोत्रन भावि अक्षरान् सगुण संख्याका महत्त प्राप्ति होता है अतः इसका प्रतिषेध-करणक
सिधे अमन्त्यान् करीव येअन पक्ष प्रहण किया । सूर्यमे भावे हुए उस भणीका आयाम
इस पक्षमे उस भेषिके अन्वेष्यान्तर्गे मागकी पेशिका आयाम अर्थात् हरिणा येमा संख्या

(मनुष्यानी अन्त्या लिखाइव संप्रत्यक्षमागप्रमाण । इ च लिख्येयमागः अन्त्यानी संख्या
सिद्धा । इ ति १८ सटी पुरा-उत्तरादिपदमात्रितेरा । अमन्त्यान्-उत्तरा । वा ३६ १००
इतिपदमात्रा सटी इतिहास अपरति । अन्त्यान्-उत्तरादि अन्त्यान्-उत्तरादि । पक्ष २, २३

दम्ब विसेसादियं । केचियमेतेषां ? आबसियाए असंखेज्जदिमायेउंदिदमेसेण । पदरम सखेज्जगुण । को गुणगारो ? अबहारकासो । सोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेही । तिरिस्तमिच्छाद्विद्वम्बमणसगुण । को गुणगारो ? अमवसिद्धिदिह अर्णतगुणा सिद्धेदि वि अर्णतगुणो मवसिद्धियमीवाणमनसामागस्त असंखेज्जदिमागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाद्विद्वि दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ ४० ॥

एतस्य मणुससङ्ग्रहणेन सेसगइपडितेहो कदो । मणुस्सेसु चि वयणेन तस्य द्विद सेसवीवादिदव्वपाडितेहो कदो । मिच्छाद्वि चि वयणेन ससगुणद्वामपडितेहो कदो । छेच-कसपमानुदासहु इअगइयं । सुचस्त पमाणपरुवणहुं केवडियगइय । संखेजापेताण बुदासहुं असंखेज्जगइय । अइपसपरुवण परुविय सुहुमहुपरुवणहु उचरसुचं मयदि—

विशेष व्यक्तिक है । कितनेमात्रसे व्यक्तिक है ? ऐवेन्द्रिय तिर्यक् अपर्यान्तोके द्रव्यको व्यापकीके असंख्यातमें भागसे कण्ठित करके ओ एक जीव इत्यत्र आगे तन्मात्रसे व्यक्तिक है । ऐवेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगत्तरस असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? ऐवेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका व्यवहारकाय गुणकार है । जगत्तरस ओर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्प्रेमी गुणकार है । ओरसे तिर्यक् मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अनन्तस्मिन्ने अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या अप्रसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुमात्रोंका असंख्यातका भाग गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपक्ष मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ?
असंख्यात हैं ॥ ४ ॥

इस सूत्रमें मनुष्यगति इस पक्षके ग्रहण करनेसे दोष गतिपूर्वक प्रतिपक्ष कर दिया गया है । मनुष्योंमें इसप्रकारके वचनसे वहाँ पर स्थित दोष जीवानि द्रव्योंका प्रतिपक्ष कर दिया है । मिथ्यादृष्टि इस वचनसे दोष गुणस्थानोंका प्रतिपक्ष कर दिया है । शेषप्रमाण और कसप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पक्षका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका प्रकपण करनेके लिये कितने हैं इस पक्षका ग्रहण किया है । संख्यात धीर अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पक्षका ग्रहण किया है । जब अतिस्वल्प प्रकपणका प्रकपण करके सूत्रम प्रकपणका प्रकपण करनेके लिये आवेक्ष सूत्र कहते हैं—

विदियवर्गगमूले भागे हिंदे छद्मस्त चचियाणि रूपाणि तचियाणि पदमवर्गगमूलानि ।

वियप्पो दुबिहो, हट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमवियप्पं वचइस्सामो । विदिय तदियवर्गगमूले अप्पोष्णगुणे करिय पदमवर्गगमूले भागे हिंदे छद्मेण तं चवं गुण्णिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरुण हट्टिमवियप्पो णत्थि, चचिअगुल-पदमवर्गगमूलादो अवहारकालस्स वहुचावो । अकुरुवे वचइस्सामो । चचिअगुलविदिय वर्गगमूलगुण्णिदतदियवर्गगमूलेण पदमवर्गगमूलं गुणेत्थं चणगुलपदमवर्गगमूले भागे हिंदे अवहारकालो हादि । त जहा- चचिअगुलपदमवर्गगमूलेण चयंगुलपदमवर्गगमूले भागे हिंदे चचिअगुलमागच्छदि । विदियवर्गगमूलगुण्णिदतदियवर्गगमूलेण चचिअगुले भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छति । घणापणे वचइस्सामो । विदियवर्गगमूलगुण्णिदतदियवर्गगमूलेण अगुलवर्गगमूलं गुणेत्थं तेण चयंमुलविदियवर्गगमूलं गुणिय घणापणं गुरुविदियवर्गगमूले भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छति । तं जहा- चयंगुलविदियवर्गगमूलेण घणापणं गुरु

अवहारकालं निश्चित इत्यन्वयः—सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके मांजित करने पर छम्प राशिका त्रितया प्रमाण हो इतने सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है—अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अथस्तन विकल्पको बतकाते हैं—सूर्यगुलके नृचरे और तीचरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो छम्प आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर जो छम्प आया उससे उसी सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा, यहां द्विकपधारेमें अथस्तन विकल्प नहीं बनता है क्योंकि सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अथ उपरिममें अथस्तन विकल्प बतकाते हैं—सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके छम्प राशिका घनागुलके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके मांजित करने पर सूर्यगुल आया है । पुनः सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करने जो छम्प आवे उससे सूर्यगुलके मांजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अथ घनापणमें अथस्तन विकल्प बतकाते हैं—सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आवे उससे घनागुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई छम्प राशिस घनापणागुलके द्वितीय वर्गमूलके मांजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनापणागुलके द्वितीय वर्गमूलके मांजित करने पर

द्योयगकोटीमो सि वयमे पर्वगुल पर्वगुलादीर्ण ग्रहणे पते तप्यविसेहर्तुं अंगुलबन्धमूर्तं
 तदियवगगमूसगुणिरेणेति वयण । अंगुलवगगमूसमिदि बुधे अथिअंगुलपदमवगगमूर्तं
 गहेयम् । तदियवगगमूसमिदि बुधे अथिअंगुलतदियवगगमूसस गहर्ण । कुदो ? अथि
 अंगुलसहपारादो अणुबह्मवो वा । अथिअंगुलतदियवगगमूसेन तस्सेव पदमवगगमूर्तं
 गुणिदे मनुसमिष्ठाइहीण अवहारकालो हावि । अवहा अथिअंगुलविदियवगगमूसेन तदिय
 वगगमूर्तं गुणिय अथिअंगुले मागे हिदे मनुसमिष्ठाइहीणवहारकालो आगच्छति । तस्स
 अंदिद-माजिद-विरसिद-अवहिदाणि आभिरुण वसन्थाणि । तस्स पमाय अथिअंगुलसस्स
 अंससेअदिमागो अंससेज्जाणि अथिअंगुलपदमवगगमूलाणि । स जहा- अथिअंगुलपदम
 वगगमूर्तेण अथिअंगुले मागे हिदे पदमवगगमूसमेव लमामहे । विदियवगगमूसेन अथि-
 अंगुल माग हिदे विदियवगगमूसगिह अथियाणि रुमाणि तसियाणि पदमवगगमूलाणि
 सम्मति । विदिय-तदियवगगमूसयद्योअम्मरत्वं करिय अथिअंगुले मागे हिदे अंसदेज्जाणि
 अथिअंगुलपदमवगगमूलाणि सम्मति सि ण सवेदो । तस्स भिरुची तदियवगगमूसेन

करना चाहिये । अंसक्यात करोतु योजन इसप्रकारका बचन रहने पर प्रत्यंगुल और
 धनगुल व्यवस्था प्रहण प्राप्त होता है अतः इसका प्रतिषेध करनेके लिये सूर्यगुलका प्रथम
 वर्गमूळ तृतीय वर्गमूळसे शुभित इसप्रकारका बचन दिया है । यहाँ पर अंगुलका वर्गमूळ
 ऐसा कथन करने पर उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूळका प्रहण करना चाहिये । तृतीय
 वर्गमूळ ऐसा कथन करने पर उससे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूळका प्रहण करना
 चाहिये । क्योंकि, यहाँ पर सूर्यगुलका साहचर्य संबन्ध है । अथवा ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति
 है । इसका वास्तव यह हुआ कि सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूळसे उसी सूर्यगुलके प्रथम
 वर्गमूळके शुभित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टिकोण अवहारकाल होता है । अथवा सूर्यगुलके
 द्वितीय वर्गमूळसे तृतीय वर्गमूळको शुभित करके जो लब्ध भावे उसका सूर्यगुलमें मान
 देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टिकोण अवहारकाल आता है । इस अवहारकालके ज्ञात माशित
 विरहित और अवहतको जानकर बचका कथन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि
 अवहारकालका प्रमाण सूर्यगुलके अंसक्यातमें प्राप्तप्रमाण है जो सूर्यगुलके अंसक्यात प्रथम
 वर्गमूळप्रमाण है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूळसे सूर्यगुलके
 माशित करने पर सूर्यगुलका प्रथम वर्गमूळ ही प्राप्त होता है । सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूळसे
 सूर्यगुलके माशित करने पर सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूळमें जितनी संख्या हो उतने सूर्य-
 गुलके प्रथम वर्गमूळ लब्ध होते हैं । इसीप्रकार सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूळोंका
 परस्पर गुना करके जो लब्ध भावे उससे सूर्यगुलके माशित करने पर सूर्यगुलके
 अंसक्यात प्रथम वर्गमूळ लब्ध होते हैं इसमें संशय नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स नचियाणि रुवाभि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि ।

वियप्पो दुविहो, इट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तस्य हेट्ठिमवियप्प वचइस्सामो । विदिय तदियवग्गमूले अप्पोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेयं तं चेव गुभिं अवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो वरिष, अचिअंगुल पढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुचादो । अट्ठरूमे वचइस्सामो । अचिअंगुलविदिय वग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊम घणगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । त अहा- अचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणगुलपढमवग्गमूले भागं हिदे अचिअंगुलमागच्छति । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अचिअंगुलं भागं हिदे अवहारकालो आगच्छति । घणाघणे वचइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊम तेण घणगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणापर्णगुलविदियवग्गमूले भागं हिदे अवहारकालो आगच्छति । त अहा- घर्णगुलविदियवग्गमूलेण घणापर्णगुल

अवहारकालको निरुक्ति इत्यन्वयः—सूर्यगुणके तृतीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिक जितना प्रमाण हो उतने सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है—अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—सूर्यगुणके तृतीये और नीचेये वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध भावे उसका सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध भावा उससे उत्ती सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा यहां विकल्पधारेमें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है क्योंकि सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब उपरिममें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घणागुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे, सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घणागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुल जाता है । पुनः सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे सूर्यगुणके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल भागता है ।

अब घणाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे घणागुलके द्वितीय वर्गमूलका गुणित करके भाग हुई लब्ध राशिक घणाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल जाता है । जैसे घणागुलके द्वितीय वर्गमूलसे घणाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

त्रिदिव्यवर्गामूले मागे हिंदे चर्चगुलपद्मवर्गामूलमागच्छति । पुनो स्रष्टिर्गुलपद्म
वर्गामूलेष (चर्चगुलपद्मवर्गामूल) माग हिंदे स्रष्टिर्गुलमागच्छति । पुनो ज्ञानान्न
गुण्डीत्रिदिव्य-त्रिदिव्यवर्गामूलेष (स्रष्टिर्गुल) माग हिंदे अवहारकान्ता जागच्छति ।

गहिदादिमेण्य उवरिमवियप्यो तिबिहा । तथ्य गहिदं वचइस्सामा । तेज
मागहारय अचिअंगुलं गुणिय पदरगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइअवहार
कालो आगच्छदि । तं जहा- अचिअंगुलेण पदरगुले भाग हिदे अचिअंगुल-
भागच्छदि । पुषा पुषमागहारेण अचिअंगुल भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि ।
अहुरुदे वचइस्सामा । अचिअंगुलविदिय-तदियवग्गमूळं अण्णोण्य गुणिय तथ्य पदरगुल
गुणिय अण्यगुल भागे हिदे मणुससवहारकाला आगच्छदि । एसा मत्तिमवियप्ये किण्य
पददि-चि कुपे न, अचिअंगुलादो अहियरासिमवलविय उप्पाइन्धमाज उवरिमवियप्यच
पडि विरोहाभावाणे । अण्णोण्ये वचइस्सामा । विदिय-तदियवग्गमूळेहि पदरगुलं गुणिय
तेण्य पणगुलउवरिमविय गुणिय तेण्य पणोपणगुले भागे हिदं मणुसमिच्छाइअवहारकाला

पनांगुलक प्रथम वर्गमूलक आता है। पुनः स्वर्णगुलक प्रथम वर्गमूलकसे पनांगुलके प्रथम वर्गमूलके माधित करने पर स्वर्णगुलक आता है। पुनः स्वर्णगुलके द्विचरे नीचे तीसरे वर्ग मूलक-परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे स्वर्णगुलके माधित करने पर मनुष्य निर्यपार्थक्य महाहरणक आता है।

गृहीत भाषिते मेवम उपरिम विहस्य तीव प्रहारका है। उद्यमसे गृहीत उपरिम विहस्यमे वतकाते है— उनी भागधारसे गर्वाय नृप्यगुणके द्वितीय वर्गमूळ गुणित तृतीय वर्गमूळसे सूर्यगुणके गुणित करने को उद्यम भाषे उद्यसे प्रतरंगुणके भाषित करने पर मनुष्य मिष्यादि जवहारकायक आता है। तैसे सूर्यगुणसे प्रतरंगुणके भाषित करने पर सूर्यगुणक आता है। पुनः पूर्वोक्त भागधारसे जयात् नृप्यगुणके द्वितीय वर्गमूळ गुणित तृतीय वर्गमूळसे सूर्यगुणके भाषित करने पर मनुष्य मिष्यादि जवहारकायक आता है।

अब अष्टादशमें सुहीन अपरिमि विक्षेपको बतलाते हैं— कर्णगुणको दूसरे और तीसरे कर्मगुणों परस्पर गुणित करने जो हज्ज आये उससे प्रतरांगुणको गुणित करने आठ हई हज्ज राशिसे प्रतरांगुणको भाजित करने पर मनुष्य मिथ्याचरि मन्वहारकाळ जाता है ।

संका—अस्तुत विद्यमान मर्यादा विषयमें समाधिष कर्षो नही होता है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि जून्सगुडसे बड़ी राशि का व्यवहसन करने मनुष्य सिध्दा यदि व्यवहारकाकसे उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विकस्यके होनेमें कोई बिरोध नहीं म्यता है ।

अथ धर्माधर्मेण शुद्धीत उपरिम विद्वत्पक्षे वतस्यै ई— परस्पर गुणित सूच्यगुणके
 वृत्ते और तीसरे वर्गमूलसे अन्तरगुणके गुणित करके जो द्वन्द्व पावे उससे धर्मागुणके
 उपरिम वर्गके गुणित करके द्वन्द्व राशिवा घनाधर्मागुणके भाग देने पर मनुष्यमिध्यादि-अथ-

आगच्छति । तस्मात् भागहारस्त अङ्गच्छेदणयमेवे घणाघणैर्गुलस्म अङ्गच्छेदण कदे नि मनुसमिच्छाद्विषयहारकालो आगच्छति । अविमृष्टगुल-घणगुलपद्मवग्गमूल-घणाघणगुल विदियवग्गमूलाय अस्सत्तु ज्जदिमाएण भागहारेण गहिदग्गहिदो गहिदग्गुमगारो च साहेय्यो । एदेण भागहारेण जगसेहिमिह माग हिदे रूपाहिमो मनुसरसी आगच्छति । तं कर्षं जायिज्जदि चि पुत्ते 'मनुमग्गं मनुमेदि रूय पक्खिचण्णहि सेढी अवहिरिदि अंगुलपग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि सुहायवसुचादो । एत्थ रासी दुबिहा मवदि, मोजं सुम्मं वेदि । ओय दुबिह, तेजोमं कस्सिमोम वेदि । तं जहा-जमिह रासिमिह चदुहि अब हिरिज्जमाणे सिणि क्काति सो तेजोम । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जमिह एगं गदि त कस्सिमोमं । सुम्मं दुबिह, कदलुम्म बादरुम्म वेदि । तं जहा-चदुहि अवहिरिज्जमाणे जमिह रासिमिह चचारि क्काति तं कदलुम्म । जमिह रासिमिह दोणि क्काति तं बादरुम्म । जमहा मनुसरसी तेजोमं जहा जमिह कदलुम्ममिह एगरूवमववेय्यं । अवसेसिद

हारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त मनुष्यमात्र राशि बना घनागुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्याद्विषयहारकाल आता है । सूर्यगुलके मसद्व्यातर्धे भागरूप घनागुलके प्रथम वर्गमूलके अन्तर्घातार्धे मापकूप भीर घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके अन्तर्घातार्धे भागरूप भागहारसे पृथीतपृथीत भीर पृथीतगुणकारके साथ केना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगमेयीके माजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है । यह कैसे जाना जाता है इसका पृष्ठमे पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतित्मे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करने जो लब्ध आते उसे द्वाकाधराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगमेयी भगवत होती है । अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिसे जगमेयीमेंसे प्रकृते जाना चाहिये और द्वाकाधराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार करनेसे द्वाकाधराशिसे साथ जगमेयी समाप्त हो जाती है' । इस सुहायके मूलसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगमेयीके भगवत करने पर एक अधिक मनुष्य राशि लब्ध आती है ।

राशि दो प्रकारकी है ज्योत्तराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ज्योत्तराशि दो प्रकारकी है तेजोम और कस्सिमोम । आगे शर्माका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिसे बारसे माजित करने पर तीन दोष रहते हैं वह तेजोज्योत्तराशि है । जिस राशिसे बारसे माजित करने पर एक दोष रहता है वह कस्सिमोज्योत्तराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है हनयुग्म और बादरुग्म । आगे उसी युग्मराशिसे भेदोंका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिसे बारसे माजित करने पर बार दोष रहते हैं अर्थात् जिसमें बारका पूरा भाग जाता है वह हनयुग्म राशि है । तथा बारसे माजित करने पर जिस राशिमें दो दोष रहते हैं वह बादरुग्मराशि है । प्रकृतमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजोमकण है इसलिये जगमेयीमें सूर्यगुलके प्रथम



मनुसरातिपरुवमादो शुचं सुदावधमि मागलद्वादो परुवस्स अणययं, परु पुण जीवहान्मि मिच्छचविससिद्वीवपमाणपरुवण कीरमाणे रुवाहियेतरसमुगह्वाणमेस्य अणययपरासिवा होदग्गमेदि । त कर्षं आभिजेदे ? 'मनुसमिच्छाद्दीहि रुवा पक्खि चएहि सेही अबहिरिस्सदि' चि सुचमि रुवा इदि बहुवयणपिदसादो । अहमा रुवपक्खि चएहि चि बहुवीहिसमासेण लक्खणविससेण कपपुग्गणिवाएण अबपिद्वहुवयमादो बहुचोवत्तही होज्ज । कर्षं पक्खिचएहि चि एगवयवमपि कहिं दिस्सदे वो मि थ दोसो, बहुवं जीवाण आदिदुवारेण एयचदसणादो । का एत्थ आई वाम ? वेदमादिसमास-परिणामो । तदो मागलद्वादो रुवाहियेतरसमुगह्वाणपमाणे अबपिदे मनुसमिच्छाद्दि

और तृतीय वर्गमूलके गुणफलरूप भागहारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध जायगी वह कुतुरमरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये ।

सुदावधमें मिच्छादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिप्रत्यक्ष प्रकट होनेसे वहां पर सूच्यगुणके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागहारका जगमेजीमें भाग देनेसे जो लब्ध जाये उसमेंसे एक अथवा कम करना सुक्त है । परंतु वहां जीवस्याधमें वो मिच्छात्वा विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्रकट किया गया है, अतएव मिच्छादृष्टि मनुष्यराशि जानेके किये उक्त भागहारसे जगमेजीके माजित करने पर जो लब्ध जाये उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपवयनराशि होना चाहिये ।

संक्षेप—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्याधिक मनुष्य मिच्छादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगमेजी अपवृत होती है इस ध्वनमें क्या यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है जिससे जाना जाता है कि वहां पर उक्त भागहारसे जगमेजीके माजित करने पर जो लब्ध जाये उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपवयनराशि है । अतएव, उक्तपक्खिचएहि इस पदमें नियम विशेषणसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुवीहि समास होनेके कारण कप पदके बहुवचनसे रहित होनेके कारण भी वयसे बहुवचनी उपलब्धि हो जाती है । कहीं पर कर्षं पक्खिचएहि इसप्रकार एकवचन भी कहीं देखा जाता है ठीकी कोरि होय वही ग्यठा है क्योंकि बहुत जीवोंका आतिहास एकत्र देनेमें आता है ।

संक्षेप—वहां पर आतिसे क्या कार्य अभिप्रेत है ?

समाधान—यहां पर केतना जाति समास परिणाम आतिसे अभिप्रेत है ।

इसलिये उक्त भागहारका जगमेजीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध जाये उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके समाजके कम कर देने पर मनुष्य मिच्छादृष्टि

रासी होदि चि सिद्ध । एवस्स खंडिदादओ विदियपुद्धविमिच्छाद्विणी अहा पुचा तहा वचम्या । पवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूल गुणिदे अवहारफालो होदि । सम्भत्य रूत्राहियत्तेरमगुणद्वानपमाणमवणेयम्भ ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति दम्बपमाणेण केवडिया, सत्तेज्जा' ॥ ४३ ॥

एत्थ पडुडिसरो आदिसइत्थे बद्धे । तेण सासणसम्माइट्टिमादि करिय जाव संवदासजदा एदेसु गुणद्वानेसु मनुमरामी मंसज्जा चेव होदि चि अ पुर्च होदि । संत्तेज्जा इदि सामम्भेण पुचे वावण्णकोडिमेचा सासणसम्माइट्टिणो इवति । तपो इगुणा सम्मामिच्छाइट्टिणो इवति । मत्तसयकाटिमेचा असंजदसम्माइट्टिणो इवति । संवदा

जीवराशिका प्रमाण होता है यह निश्च हो गया ।

विश्रुतार्थ—सूर्यगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूल परस्पर गुणा करके जो छम्ब आये उसका अग्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है । अतएव छम्बमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण जाना है । परंतु प्रकृतमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि जाना है अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिके सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये तब मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशिका प्रमाण होगा ।

त्रिसप्तकार इमरी दृष्टिके मिथ्यादृष्टिके रंजित आशिका कथन कर आये है उक्त प्रकार इम मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके रंजित आशिका कथन करना चाहिये । इतना विशेष है कि यहां पर सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारफालका प्रमाण होता है । तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण मानेके लिये सयत्र एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये ।

सासादनमभ्यगृहि गुणस्थानम सकर सयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सम्पात ६ ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रयुक्तिशून्य आदि वाक्यके अर्थमें आया है इसलिये सासादनमभ्यगृहिसे प्रारंभ करके सयतासंयत गुणस्थानतक इन आरगुणम्भ नोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात ही होती है यह इम सूत्रका अभिप्राय है । सासादनमभ्यगृहि आदि आर गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात है ऐसा सामान्यकरणसे कथन करने पर सासादनमभ्यगृहि मनुष्य वाचन करोड़ है । सभ्यमिथ्यादृष्टि मनुष्य सामान्यसभ्यगृहि मनुष्योंके प्रमाणसे घूने है । असयतमभ्यगृहि मनुष्य खानसी करोड़ प्रमाण है । सयतासंयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनमभ्यगृहि संवदासजदा वचम्या । त मि १ ८
२ त्रिगु अत्र वं तपो इगुणा सम्माइट्टिणा इवति इतिविका वाहः ।

संज्ञार्थं पमानं तेरहकोटीशो । केचि आश्रिया सामान्यमाशङ्कन्ति पमार्णं पम्मारस
कोटीशो हवति सम्मामिच्छद्भिर्पमार्णं तथो दुर्गुणमिदं भणति । पुम्बिस्तपमानमेव
वेत्तव्यं । किं कारणं ? आश्रितपरंपरागदादो । पुत्रं च—

तेरह कोटीं दसं पाण्यास सासने ऽनु गेयम्वा ।

मिस्ते वि ष तद्दुर्गुणा असन्ते सत्तकोटिसवा ॥ १८ ॥

अथवा—

तेरह कोटीं दसं पाण्यास सासने मुनेयम्वा ।

मिस्ते वि ष तद्दुर्गुणा असन् सत्तकोटिसवा ॥ १९ ॥

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओध' ॥ ४४ ॥

एदसस सुचसस अत्था पुम्बं परुचिदो चि इह न सुचद । इहा ? मणुसगदि
वदिरिचसेसगर्मसु पमत्तादिगुणज्ञानमसमवादा । मणुयसु पमत्तादीन ओधवरूचना चेव ।

करोड है । किस्ते ही आचार्य साक्षात्कृतसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाण पचास करोड कहते हैं ।
साम्यादिप्राप्ति मनुष्योंका प्रमाण साक्षात्कृतसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाणसे दूना कहते हैं । परंतु
यहां पर पूर्वोक्त प्रमाणका ही महान् करना चाहिये क्योंकि, पूर्वाह्न प्रमाण आचार्य परंपरासे
आया हुआ है । क्या सी है—

संपत्तासंबधमें तेरह करोड, साक्षात्कृतमें बावन करोड मिश्रमें साक्षात्कृतके प्रमाणसे
दूने और असंपत्तसम्पत्ति गुणस्थानमें सातसी करोड मनुष्य जानना चाहिये ॥ १८ ॥

अथवा—

संपत्तासंबधमें तेरह करोड साक्षात्कृतमें पचास करोड मिश्रमें साक्षात्कृतके प्रमाणसे
दूने और असंपत्तसम्पत्ति गुणस्थानमें सातसी करोड मनुष्य जानना चाहिये ॥ १९ ॥

प्रमत्तसंपत्त शुचस्थानसे लेकर अजोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें
मनुष्य सामान्य प्ररूपकाके समान संख्यात ह ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं । इसलिये यहाँ नहीं कहा जाता है क्योंकि, मनुष्य
पतिके छोड़कर शेष तीन पतिकोंमें प्रमत्तसंपत्त आदि गुणस्थानोंका होना असंभव है । अतः
मनुष्योंमें प्रमत्तसंपत्त आदि प्रमाणप्रकरण साक्षात्कृत प्रमाणोंके समान ही है ।

मेवा सि अं वक्तव्ये मभिद् शुचीय ओइन्प्रमाणे त ण पडदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेइदो' यि सुषेण सह विरोधपादो । तं कथं जाभिज्जदे ? एगुणतीसङ्कापेसु द्विदवायाउवगपणस्स एगुणतीसङ्कापेहिं तो उणवविरोहादो । किं च यदि दवायाउवगपणमेवो मनुसपञ्चरासी होऊ तौ माणुससेधे ६१९७०८४६६८१६-४१६९००००००००० ।

गणनङ्गणय-कसप्पा चउठटि-मिर्पक-वमु-अरा-दम्मा ।

छायाक-वसु-णमाचक-यकप-चरो रिदू कमसा ॥ ७१ ॥

मनुष्य पपात जीवपाति बादाखके धनमात्र है यह ओ ऊपर व्याख्यान करते समय कह भाये हैं मुक्तिसे विचार करते पर यह कथन पठित नहीं होता है क्योंकि, 'कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे मनुष्य पर्याप्त पाति है' इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध जाता है ।

शुद्ध—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि इनतीस स्थानोंमें स्थित बादाखकय बगैके धनको इनतीस स्थानोंसे कम संकल्प माननेमें विरोध जाता है ।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य पातिका प्रमाण कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे बीचकी कोइ संख्या बतलाई जा चुकी है । अब कि एक अङ्के ऊपर २१ शून्य रखनेसे पातस संकल्पमात्र कोडाकोडाकोडी होती है और एक अङ्के ऊपर २८ शून्य रखनेसे इनतीस संकल्पमात्र कोडाकोडाकोडाकोडी होती है तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य पातिका प्रमाण इनतीस अङ्के नीचे और बाबीस अङ्के ऊपर बीचकी कोइ संख्या होना चाहिये । अब यदि द्विरूपके पांचवें वर्गके धनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य पाति मानी जाय तो पूर्वोक्त सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध जा जाता है । क्योंकि द्विरूपके पांचवें वर्गके धनका प्रमाण इनतीस संकल्पमात्र होते हुए भी कोडाकोडाकोडाकोडीके प्रमाणके ऊपर है इसलिये द्विरूपके पांचवें वर्गके धनका प्रमाण इनतीस अङ्कसे नीचेकी संख्या नहीं हो सकती है । पर सूत्रानुसार पपात मनुष्यपातिका प्रमाण इनतीस अङ्कस नीचेकी संख्या निश्चित है इसलिये पञ्चमकविपणसमा पुण्णा इत्यादि रूपसे ओ पपात मनुष्यपातिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है ऐसा प्रतीत होता है ।

दूसरे यदि बादाखकय बगैके धनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त पाति होये तो वह पाति मनुष्यकोशमें ६१९७०८४६६८१६४१६९ ०००० ०० अर्थात्—

कमसा भाड द्वाय नय अर्थात् हो, कपाय अर्थात् सोखह बीसठ शृगांक अर्थात् एक

एतियमेचपदरसुलेम सम्माणञ्च । मनुसलेचपदरगुले आभिन्जमाये—

सत गव हुण्ण पच छट्ठ णव चट्ठ पक्क च पच सुण्ण च ।

अमूदीवस्सद गणितफळ हादि जादम्मा ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० एवमिह तेरसगुलं च किंचूणअट्ठगुलं च पक्खिविय आभे-
यम्भ । किंचूणपमाय—

सप्तसहस्रवर्षदेहि कश्चिदे पक्खण्णल्लहाणि ।

अवगुहस्स ईणे करोह अवगुलं गिय ॥ ७३ ॥

१ ७३२२ एदमिह संवृदीवपदरसोयणाभि माणुसलेचसंवृदीवसलागाहि दो-समुह
सत्तगूणाहि गुणिय पदरगुलाणि कयम्भानि ।

जात बार अर्थात् छह प्रथम अर्थात् छह उपासीस जात शुभ्य अथवा अर्थात् सात पदार्थ
अर्थात् बी, अष्ट अर्थात् एक और अष्ट अर्थात् छह — ॥ ७१ ॥

इतरे प्रतरांगुलोंके द्वारा समा जाता चाहिये । मनुष्यक्षेत्रमें प्रतरांगुलोंके जाने पर—

सात बी शुभ्य पांच छह नौ बार एक पांच शुभ्य अर्थात् सात भरव लम्बे
कटोड़ छप्पन छात्र चौरानवे हजार एक सौ पचास योजन यह अमूदीपका गणितफळ अर्थात्
क्षेत्रफळ है ऐसा जानना चाहिये ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५ इस संख्यामें तेरह अंगुल और कुछ कम आया मनुष्य मिखाकर
मनुष्य क्षेत्रके प्रतरांगुल के आया चाहिये । आये अंगुलमें कुछ कमका प्रमाण—

अर्थांगुलके पक्कन कड़ोंको अर्थात् ५१ को सात हजार अठ्ठासीसे कश्चित अर्थात्
आश्रित करने पर जो छम्भ व्यये उतना हीन अथांगुल विहित करवा चाहिये ॥ ७३ ॥

$$\text{यथा } \frac{1}{2} \times \frac{49}{3000}$$

$$\text{उदाहरण— } \frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} \text{ का } \frac{49}{3000} \right) = \frac{1}{2} - \frac{49}{12000} = \frac{6}{12000} \text{ हीन अर्थांगुल}$$

अमूदीपसंख्या हीन प्रतर योजनोंके अथवा और वास्तविक समुद्रदी उद्यमकार्योंसे
न्यून मनुष्यक्षेत्रकी अमूदीप प्रमाणसे की गई शास्त्रकार्योंके द्वारा गुणित करने पुना प्रतरांगुल
कर देया चाहिये ।

१ अमूदीपल गणितपर वक्ष्यम्भ इत्यतः ॥ १५ ॥ अत्रानि कथनार्थमां वदति कोटय सा ।

अत्रानि कथनार्थम्भ वदति कोटय सा ॥ १६ ॥ अत्र अत्र वीर्यानां पानीयलोचनम्भ । अत्रि वदति च
वाट वदति तथा ॥ १ ॥ अत्रोत्तमि को १ ५६९४१५ को १ महा १५१५ कर १ च १२ को. न अत्र
१५, ५५ ११५.

विशेषार्थ—यद्यपि विषयमध्यग्नहगुणकरणी मट्टम्स परिरब्धो होदि' अथात् किसी वृत्त क्षेत्रकी परिधि खानेके छिये पहले उस क्षेत्रका जितना विस्तार हो उसका वर्ग कर ले। अन्तर उस वर्गित राशिको वृत्तसे गुणित करके उसका वर्गमूल निष्कृष्ट है। इसप्रकार जो वर्गमूलका प्रमाण होगा वही उस गोल क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण होगा। इस नियमके अनुसार एक साध विस्तारवाले अम्बुद्वीपकी परिधिका प्रमाण तीन लाख सोसह हजार होसी सत्ताईस योजन तीन कोस पचसी मूर्धस धनुष और साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिक आता है। परंतु यथार्थरूपसे साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिकके स्थानमें साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ कम ग्रहण किया है। उन्होंने कुछ कमरा प्रमाण $\frac{1}{2}$ मेंसे $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ कम बतलाया प्रतीत होता है। यद्यपि इसका निश्चित कारण प्रतीत नहीं होता है फिर भी इसे ग्रहण करके उक्त परिधिके प्रमाणके ऊपरसे अम्बुद्वीपका क्षेत्रफल खानेके छिये 'वासवउत्पाहवो यु क्षेत्रफल' अर्थात् परिधिके प्रमाणको व्यासकी बीजार्थरूप प्रमाणसे गुणित कर देने पर क्षेत्रफलका प्रमाण होता है, इस नियमके अनुसार पचीस हजारसे गुणित कर देने पर अम्बुद्वीपका क्षेत्रफल आ जाता है। यहां सब क्षेत्रफल योजनोंमें खानेके छिये यथायोग्य प्रक्रिया कर देना चाहिये। अब यहां पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलको छोड़कर अम्बुद्वीप, पातलीलक्षद्वीप और पुष्करार्थद्वीपका सम्मिश्र क्षेत्रफल खाना है अतएव बाहिरचूर्णगा इत्यादि कारणछत्रसे दार्द्र्यद्वीपके अम्बुद्वीपप्रमाण लंब खाने पर वे १३२९ होने हैं। इनसे उपर्युक्त क्षेत्रफलके गुणित करने पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना दार्द्र्यद्वीपका क्षेत्रफल योजनोंमें खाना है। इसके प्रत्यंगुल बनानेके छिये एक योजनके बार कोस एक कोसके दो हजार धनुष एक धनुषके बार हाथ और एक हाथके बीबीस अंगुलोंके बर्गसे गुणा कर देना चाहिये क्योंकि, पूर्वात्क राशि वर्गात्मक है अतएव वर्गात्मक राशिके गुणकर और मागहार भी वर्गात्मक ही होना चाहिये। इस प्रक्रियासे दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना दार्द्र्यद्वीपका क्षेत्रफल प्रमाणप्रत्यंगुलोंमें आ जाता है। आगे गणितद्वारा ठसीका स्पष्टीकरण किया गया है। यथायथकाके उपसम्प पाठमें जो संशोधनकी करना पाठिप्यनमें व्यक्त की गए हैं ठसीके अनुसार भव किया गया है क्योंकि मूलकी संकसंछदि की सार्यकता समी निख होती है जो कि निम्न उदाहरणसे स्पष्ट है—

उदाहरण—३१६२३० यो., ३ को., १ ८ ध और कुछ कम $1\frac{1}{2}$ अंगुल जो भी अब

छके अनुसार $\frac{23}{2} - \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{22}{2} = 11$ अंगुल होते हैं। यह अम्बुद्वीपकी परिधि है।

अम्बुद्वीपका क्षेत्रफल खानेके छिये उपर्युक्त प्रमाणमें अम्बुद्वीपके व्यासके अनुपात मपान् पचसी हजारसे गुणा करना चाहिये जिससे अम्बुद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{८१३०६२०३७२४ \times ०२२५}{१०८८३१९८} = \text{प्रमाण प्राप्त}$$

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति दम्बपमाणेण
केवडिया, सस्सेज्जा ॥ ४६ ॥

शेखरस्य घटा देने पर शेष शेखरस्य ६१९७०८४२६९८१६४१६०००० ०००० प्रतरांगुलप्रमाण
रहता है, क्योंकि दोनों समुद्रोंमें अन्तर्द्विपन्न मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे
उनके शेखरस्यका यहाँ विषया नहीं की गई है। एक मनुष्यका निपात शेष सत्त्वात् प्रतरांगुल
प्रमाण है इसलिये ऊपर जो प्रतरांगुलोंकी संख्या बतलाई है मनुष्यरानि उससे कम ही
होता चाहिये। पर मनुष्यराशिसे ९ अंशप्रमाण मान लेने पर २५ अंशप्रमाण शेखरस्यवाले
मनुष्यमें उनका रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। कारण कि द्वार द्वीपका शेखरस्य
२५ अंशप्रमाण ही है। कदाचित् यह कहा जाय कि ऊपर जो २५ अंश प्रतरांगुल
प्रमाण शेखरस्य कहा है यह प्रमाणांगुलका अर्थसा कहा गया है। यदि इसके उत्सेर्षा-
गुल कर दिये जाय तो हममें २५ अंशप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी जो
भी बात नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट मयगाहनकी अपेक्षा २५ अंशप्रमाण मनुष्यराशिसे उस
शेखरमें समा जाना अशक्य है। भावाद्यक्षी मयगाहनकी विचित्रतासे यह कोर शेष नहीं
रहता है ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि, मयगाहमान पर चोकर संयोगरूप मन्मोष्य
प्रवेशरूप संशय ही अरु श्रेष्ठमें पहुँच पक्षोंके अधिष्ठानके लिये कारण है। परन्तु मनुष्योंमें
परस्पर इत्यप्रकारका संशय गमादि मयगाहके छोड़कर माय नहीं पाया जाना है, इसलिये सूत्रमें
जो कोड़ाकोड़ाकोड़ीकोड़ीने नीचेकी ओर कोड़ाकोड़ाकोड़ीस ऊपरकी संख्या मनुष्योंका
प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उनकीम अंशप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय
तो मनुष्यनिर्वासि तिगुने मयगाहानगुने जो सपायसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह
नहीं बन सकता है क्योंकि एक स्थान शेषप्रमाण सपायसिद्धिके विमानमें इनके देवोंका
रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक स्थान शेषप्रमाण के अन्तर्गत एक
प्रतरांगुल करने पर भी उनका प्रमाण अद्भुत अंशप्रमाण जाता है और सपायसिद्धिके देवोंका
प्रमाण मनुष्यराशिका २५ अंशप्रमाण मान लेने पर ३ अंशप्रमाण जाता है। यह तो विद्विषत
है कि एक शेष संशयान प्रतरांगुलमें रहता है परन्तु यहाँ शेखरस्यके प्रतरांगुल देवोंके प्रमाणसे
कम है इसलिये ३० अंशप्रमाण देवोंका १ अंशप्रमाण अन्तर्गतवाले शेषमें रहना किसी
प्रकार भी संभव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें सपाय मनुष्यराशिका
प्रमाण जो कोड़ाकोड़ाकोड़ीकोड़ीने नीचे की ओर कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनमम्पगट्टि गुणस्थानम सकर सपतामयन गुणस्थानतरु ग्रपेक गुण
स्थानमें पर्याप्त मनुष्य दम्बप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सम्पात है ॥ ४६ ॥

मनुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति
दव्वपमाणेण केवडिया ? सखेज्जा ॥ ४९ ॥

मनुस्सोपे बुचमासणादीण संखेज्जिमागा सामणादीण गुणपट्टिबण्णाण पमाण
मनुसिणीसु इहमि । इदं ? अप्ससत्थवेदोदण सह पठर सम्मइसणलमामावादो । तं
कष जाणिल्ले ? 'सम्भत्थोवा णमुसपवेदअमज्जदमम्माइट्ठिणो । इत्थिपेदअसंजदसम्मा
इट्ठिणो असखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसमइसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पावहुअ
सुवादो कारणस्स घोवत्तण जाणिज्जे । सदां सामणसम्माइट्ठिमावीय पि घोवत्तण सिद्ध

विशेषार्थ — किसी भी विषयिन् बर्गमें इसाके विभाग को जोड़कर उसका उसके
उपरिष्ठ वर्गके उपरिष्ठ बर्गमें भाग देने पर उस विषयिन् बर्गके बनका तीन अनुपात छम्प
आता है । तदनुसार पाँचवें बर्गमें उसीका विभाग जोड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पाँचवें
बर्गके पनरूप मनुष्य राशिका तीन अनुपात छम्प आता है । यही मनुष्य योनिमत्तियोंका प्रमाण
है । इसमेंसे साक्षात्त भादि तेरह गुणस्थानबर्गों राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यावृत्ति
मत्तियोंका प्रमाण होता है यह जो मूलमें कहा है इसमें प्रतीत होता है कि उपयुक्त प्रमाण मत्तियोंका
मात्रवेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यमत्तियोंका होना तो मूलमें 'इसमेंसे
साक्षात्त भादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यावृत्ति मनुष्य योनिमत्तियोंका
प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इनका ही कहा जाता कि इन प्रमाणमेंसे
साक्षात्त भादि बार गुणस्थानबर्गों राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यावृत्ति योनिमत्तियोंका प्रमाण
होता है । परंतु गोमूढसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपर्याप्त बनसाया है ।

मनुष्यनिर्णयं मासाग्गमस्यगृहि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? सस्यत्त ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्यमें सामान्यमनुष्यगृहि भादि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी जो संख्या
कही गई है उसके संख्यात्मक भाग मनुष्यनिर्णयं सासाग्गमस्यगृहि भादि गुणस्थानप्रतिपक्ष
जीवोंका प्रमाण है क्योंकि, अग्रहाण्य वेदके उदयक माघ मचुर जीवोंको अग्र्यन्दशानका साम
नहीं होता है ।

संज्ञा — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'मनुष्यवेदी असंयतस्यगृहि जीव सख्य इत्थं । त्वीवेदी असा
यनस्यगृहि जीव उमस असंयतगुणे । आरपुकरवेदी असंयतस्यगृहि इनसे असंयत
गुणे है । इस अग्र्यवृत्तके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे त्वीवेदियोंके अन्त होनेके कारणका
स्फोटनमा आता जाता है । और इसीसे सामान्यमनुष्यगृहि भादिके भी स्फोटनमा सिद्ध हो

इवदि । नवरि एतिय तेसिं पमाणमिदि न नञ्चदे, सपदि उवएसामावाओ ।

मणुसअपज्जता दव्वपमाणेण केवडिया ? असखेज्जा ॥ ५० ॥

एव विम्वचि अपज्जते मोहण सद्धि अपज्जत्ताणं गहण कयम्म । कुदो ? एव गुणपडिबन्धपमाणपरुवणाभाज्जहाणुववत्तीदो । सामन्नेण अवगद् असखेज्जसवितेसपरु वगहमुपरसुचमाइ—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥

एवस्स सुचस्स अरथो पुम्भ बहुसो परुविदा सि पुणा न बुद्धे पुणरुचमएव ।

स्वैत्तेण सेढीए असखेज्जदिमागो । तिस्से सेढीए आयामो असखेज्जामो जोयणकोडीओ । मणुस अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तोहि सेढिमवहिरदि अंगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि एदं वयण न पडवे, फलामावा । संते संमोवे विपहिचारे न वितेसमवमत्यवैतं

जाता है । परंतु इतनी बिशेषता है कि इन साक्षात्तसम्पत्तयों आदि योगिमितियों का प्रमाण इतना है यह नहीं जाना जाता है क्योंकि इस काजमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

सम्पत्तयर्पाप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५० ॥

यहां पर निवृत्त्यर्पाप्तकोंको ग्रहण न करके सम्पत्तयर्पाप्तकोंका ग्रहण करना चाहिये क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणके ग्रहणका अभाव व्यवस्था बन नहीं सकता है ।

अपत्तयर्पाप्त मनुष्य यदि असंख्यातसंख्या है यह बात सामान्यरूपसे तो जाह की पर बिशेषरूपसे इसका ज्ञान नहीं हुआ अतः इस असंख्यातके बिशेषरूपसे ग्रहण करनेके बिना मागेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा सम्पत्तयर्पाप्त मनुष्य असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उस्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५१ ॥

इस सूत्रका जय पढ़ते अनेकवार कह गये हैं, अतः पुनरुक्त बोधके मयसे पुनः नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगभेजीके असंख्यातमें मागप्रमाण सम्पत्तयर्पाप्त मनुष्य हैं । उस जगभेजीके असंख्यातमें मागरूप भेजीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है । सूर्यमुखके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको घसाकाररूपसे स्थापित करके रूपाधिक सम्पत्तयर्पाप्तक मनुष्योंके द्वारा जगभेजी अपहृत होती है ॥ ५२ ॥

संक्षेप—यह सूत्र बचन धरित नहीं होना है क्योंकि, इस बचनका कोई फल नहीं

मवदि । एतस्य पुनः समनो णव इति । परिहारो बुध्दे । सुत्तण विणा सेती असंखज जोयणकान्तिप्रमाणो होदि त्ति ण आणिक्खे, ततो असंखज्जाओ जोयणकोडीओ सेत्तिप्रमाण मिदि आणिक्खेइमिदं वयस्य । परियम्माओ असंखज्जाओ जोयणकोडीओ सेत्ती ण पमाण मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स चलेण परियम्पपवुत्तीओ । अइवा सेतीए अमंखज्जि भागो वि सेती बुध्दे, अवययिणामस्स अवयवे पवुत्तिदमणाओ । जहा गामगेदसे ददे गामो दद इति । अइवा एवे संवेषा कायव्वो । तस्स सत्तीए अमंखज्जिभागस्स आयामो दीहत्तण असंखज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति । अपन्नत्तएहि रुक्कपक्खित्तएहि रुक्का पक्खित्तएहि रुक्क पक्खित्तएहि त्ति तिसु वि पात्तसु रुक्कादियपन्नत्तरासी पक्खिरिद्धिवा । पुनो लद्धमिदं रुक्कादिपमणुमपन्नत्तराणिमवणिदं मणुस्मापन्नत्ता होति । अंगुलवग्गमल च त तदियवग्गमल्लगुणिदं च अंगुलवग्गमल्लगुणियवग्गमल्लगुणिदं तेण सत्तागमूदण सेती अरिहिरिज्जदि त्ति अ बुध्द होदि ।

ई । स्पष्टिचारकी समाधना होने पर ही विशयण फलवाला होता है । परन्तु यहां पर तो उत्तरी समाधना ही नहीं है ?

समाधान—आगे सूक्त हाकावा परिहार करते हैं । सूक्तके विना अगभर्षीके असंख्यानमें मागरूप भेदी असंख्यान करोड़ योजनप्रमाण है यह नहीं जाना जाता है अतः अगभर्षीके असंख्यानमें मागरूप भेदीका प्रमाण समख्यान करोड़ याजन है इसका ज्ञान करानके लिये उक्त पद्यन दिया है ।

प्रश्न—अगभर्षीक असंख्यानमें मागरूप भेदीका आयाम समख्यान करोड़ याजन है यह परिक्रमसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, इस सूक्तके रूपमें परिक्रमभी प्रवृत्ति हुए है ।

अथवा अगभर्षीके असंख्यानमें मागको भी भेदी कहन है क्योंकि अत्रयपादे नामकी अवयवमें प्रवृत्ति होती जाती है । जैसे आसक्त एक मागके रूप होने पर प्राप्त उक्त गया ऐसा कहा जाता है । अथवा इसप्रकारका संक्षेप कर सेना आदिये कि उस भेदीके असंख्यानमें मागका आयाम अथवा सत्ता समख्यान करोड़ योजन है । अपन्नत्तरादि रूपपक्खित्तएहि रुक्का पक्खित्तएहि रुक्का पक्खित्तएहि इन तीनों भी रूपानेमें किसी भी पक्षमेंते रूपाधिक पयात्त मनुष्य राशिवा प्रक्षेप करना आदिये । पुनः सध्यमेने रूपाधिक पयात्त मनुष्य राशिके घटा देने पर सध्यपयात्त मनुष्योंका प्रमाण होता है । मूर्धगुणके प्रथम पगमूला मूर्तीय पगमूलम गुणित करके जो सध्य भाग सध्यकाकय उक्त गतिमें अगभर्षीके अपहन होगी है यह इस सूक्तका अभिप्राय है ।

विश्रयाय—आयाम्य मनुष्यराशि प्रमाणमें पयात्त मनुष्यराशि प्रमाण घटा देने पर सध्यपयात्त मनुष्यराशि प्रमाण प्राप्त रहता है । मूर्धगुणके प्रथम भाग मूर्तीय पगमूल पगमूल गुणा करनेमें जो राशि आगे उरने अगभर्षीके याजिन करके सध्य

कालवगा । अहवा पदगुलस्त असंखेजदिमागो असंखेज्जाणि स्रुचिअगुलाणि । केचिय-
मेत्ताणि ? विदियवग्गमूलमेत्ताणि । सेद्वी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो ।
एव मनुसअपञ्चघाण पि सत्थाणप्पावद्वग वचन् । सासणादीण सत्थानं परिय ।
मनुसपञ्चअ-मनुसिणीय पि णारिय सत्थाणप्पावद्वग ।

परत्थाणे पयइ-सम्बरयोवा अत्तारि उवसामगा । पच खवगा संखेज्जगुणा ।
सम्भोगिकेवठी संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसम्भदा संखेज्जगुणा । पमत्तसम्भदा संखेज्जगुणा ।
संभदासम्भदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइही संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइही संखेज्जगुणा ।
असंभदसम्माइही संखेज्जगुणा । सदे मिच्छाइहिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? सगअवहारकालस्त संखेज्जदिमागो । को पदिमागो ? असंभदसम्माइहिणो ।
सदेव द्वन्द्वमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? पुणमणिदो । सेद्वी असंखेज्जगुणा । को
गुणगारो ? पुणं मणिदो । मनुसपञ्चअपेसु सम्बरयोवा अत्तारि उवसामगा । पच खवगा
संखेज्जगुणा । एवं जाव असंभदसम्माइहि पि । सदे मिच्छाइहिद्वन्द्व संखेज्जगुणं । को

गुणधार है जो प्रतीतिगुलका असंख्यातर्था भाग असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण है । असंख्यात
सूर्यगुलर्था प्रमाण कितना है ? सूर्यगुलके द्वितीय वगमूलप्रमाण है । मनुष्यमिच्छादि द्रव्यसे
जगत्पत्नी असंख्यातगुणी है । गुणधार क्या है ? अपने अवहारकाल गुणधार है । इत्थीप्रकार
मनुष्य छप्पपयात्तोंके स्वस्थान अवलंबुत्थका भी कथन करना चाहिये । सासादनसम्पत्ति
आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अवलंबुत्थ नहीं है । इत्थीप्रकार पर्याप्त मनुष्य
और मनुष्यनिर्वाहका भी स्वस्थान अवलंबुत्थ नहीं है ।

अब परस्थान अवलंबुत्थका आश्रय लेकर प्रवृत्त विषयका कथन करते हैं— चारों
गुणस्थानवर्ती उपशामक भयम स्तोत्र हैं । पाँचों गुणस्थानवर्ती सप्त संख्यातगुणे हैं । सयों
गिकेपत्ती सप्तकोसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमत्तमपत्त जीव सप्तगिकेपत्तियौम संख्यातगुण है ।
प्रमत्तसपत्त जीव अग्रमत्तमपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सयतासंपत्त मनुष्य प्रमत्तसंपत्तोंसे
संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्पत्ति मनुष्य सयतासंपत्त मनुष्योंसे संख्यातगुण है । सय
मिच्छादि मनुष्य सासादनसम्पत्ति मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंपन्नसम्पत्ति मनुष्य
सम्पत्तिमिच्छादि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । अमयनसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य
मिच्छादि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? अपने अवहारकाल
संख्यातर्था भाग गुणधार है । प्रतिमाग क्या है ? असंयतसम्पत्ति मनुष्योंका प्रमाण प्रतिमाग
है । उद्दी मिच्छादि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या
है ? पदेत कद भावे है । मनुष्य मिच्छादि द्रव्यप्रमाणसे जगत्पत्नी असंख्यातगुणी है । गुणधार
क्या है ? पदेत कद भाव है । मनुष्य पयात्तर्था चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सप्तसे पादे
हैं । पाँचों गुणस्थानवर्ती सप्त उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । इत्थीप्रकार उचितत
असंयतसम्पत्ति तक अवलंबुत्थ समझना चाहिये । असंयतसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ! संखेन्द्रा समया । एव चेव मनुसिषीषु वि परत्थानं वत्तर्ध ।

सम्प्रपत्तये पयः- सम्प्रपत्तये अथर्ववेदसिषो । चत्वारि उक्तानामग संखेन्द्र
गुणा । चत्वारि खग संखेन्द्रगुणा । संयोगिकेवली संखेन्द्रगुणा । अथर्वमन्त्रमन्त्र
संखेन्द्रगुणा । पञ्चमन्त्रमन्त्र संखेन्द्रगुणा । संखेन्द्रमन्त्र संखेन्द्रगुणा । सातणसम्मा
इष्टियो संखेन्द्रगुणा । सम्मामिन्द्राष्टियो संखेन्द्रगुणा । असंखेन्द्रसम्माष्टियो संखेन्द्रगुणा ।
मनुसपञ्चमन्त्रमिन्द्राष्टियो संखेन्द्रगुणा । मनुसिषीमिन्द्राष्टियो संखेन्द्रगुणा । मनुस-
अथर्वमन्त्रमन्त्रमन्त्र संखेन्द्रगुणो । मनुसअथर्वमन्त्रमन्त्रमन्त्र संखेन्द्रगुणं । उवति वा
सोगो वि वाव वासिन्द्रा वत्तर्ध । मनुसिषीगुणपञ्चमन्त्रमन्त्र पमावमेतिपमिदि वावहारिदे
तन्हा सम्प्रपत्तयेपमावदुप तेति परत्थानं व कदा ।

एव मनुसर्ग समया ।

देवगर्हण देवेसु मिच्छादृष्टी दन्वपमाणेण केवदिया, असं
खेन्द्रा ॥ ५३ ॥

मिथ्याहृदि पर्याप्त मनुष्योक्त दन्वपमाणे संख्यातगुणा है । गुणधर क्या है ? संख्यात समय
गुणधर है । इसीप्रकार मनुष्यनिर्गमे मी परत्थान अथर्वमन्त्रमन्त्र कथन करना चाहिये ।

अथ सर्व परत्थानमें अथर्वमन्त्रमन्त्र कथन प्रारंभ है- अथर्वमन्त्रमन्त्र मनुष्य सर्वसे स्लोक
है । चारों गुणस्थानवर्ती उपपन्नमन्त्र अथर्वमन्त्रसे संख्यातगुणे है । चारों गुणस्थानवर्ती अथर्व
उपपन्नमन्त्रसे संख्यातगुणे है । अथर्वमन्त्रमन्त्र अथर्वमन्त्रसे संख्यातगुण है । अथर्वमन्त्रमन्त्र मनुष्य
सर्वमन्त्रसे संख्यातगुणे है । अथर्वमन्त्रमन्त्र मनुष्य अथर्वमन्त्रमन्त्रसे संख्यातगुणे है । संख्यातगुणे
मनुष्य अथर्वमन्त्रमन्त्रसे संख्यातगुणे है । सातमन्त्रमन्त्रमन्त्र मनुष्य उपपन्नमन्त्रसे संख्यातगुणे
है । सम्प्रमिथ्याहृदि मनुष्य सातमन्त्रमन्त्रमन्त्रसे संख्यातगुणे है । असंखेन्द्रमन्त्रमन्त्र मनुष्य
सम्प्रमिथ्याहृदिसे संख्यातगुणे है । मनुष्य पर्याप्त मिथ्याहृदि जीव असंखेन्द्रमन्त्रमन्त्रसे
संख्यातगुणे है । मनुष्यमी मिथ्याहृदि जीव पर्याप्त मनुष्यसे संख्यातगुणे है । मनुष्य अपर्याप्त
अथर्वमन्त्रमन्त्र मनुष्यमी मिथ्याहृदिसे असंख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तोक्त दन्व उन्हाकि
मन्त्रमन्त्रमन्त्रसे असंख्यात गुणा है । इससे ऊपर जोह तक जानकर अथर्वमन्त्र-मन्त्र कथन करना
चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनिर्गमे प्रमाण इतना है यह निश्चित नहीं है इससिप सर्व
परत्थान अथर्वमन्त्रमन्त्र कथन करने समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्रकृति नहीं थी ।

इसप्रकार मनुष्यगति का कथन समाप्त हुआ ।

देवमतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्याहृदि तीन दन्वप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ?
असंख्यात है ॥ ५३ ॥

एस्य देवगद्गहमेण सेसगद्गहमेणो कदो हवदि । देवेसु ति वयणेण तस्य
 द्विदम्बपडिसेहो कदो हवदि । मिच्छाह्मि ति वयणेण सेमगुणद्वापडिसेहो कदो हवदि ।
 दम्बपमाणेभेति वयणेण सेचादिपडिसेहो कदो हवदि । केवडिया इदि वयणेण सुचस्स
 पमाणच छपिद हवदि । असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणताण पडिपियसी कदो हवदि ।

किमसंखेज्ज नाम ? ओ रासी एगेगरूवे अनणिज्जमाणे पिट्ठुदि सो असंखेज्जो ।
 ओ पुण न समप्पइ सो रासी अणतो । जदि एव तो वयसहिदसकल्यध्वपोग्गलपरियद
 कालो वि असंखेज्जो आयदे ? होइ नाम । कथं पुणो तस्स अद्वपोग्गलपरियदस्स
 अणतववएसो ? इदि चेण, तस्स उवयारणिबबयत्तादो । त अहा—अणतस्स केवलपापस्स
 विसयत्तादो अद्वपोग्गलपरियदकालो वि अणतो होदि । केवलपापविसयत्त पडि
 विसेसामावा सम्बसत्तापापमणतत्तण आयदे ? चे न, ओहिपापविसयवदिरिचसत्तामे
 अणणविसयत्तमेण तदुवयारपपुत्तीदो । अहा ज सत्ताण पडिदियविसओ त सत्तज्जं

सुद्धमे देवगति पक्के प्रहण करनेसे योग गतिपौका प्रतिपेय हो जाता है । देवीमें '
 ऐसा बचन देनेसे देवलोकांमें स्थित भव्य ब्रह्मोंका प्रतिपेय हो जाता है ।
 मिथ्यादि इस बचनसे भव्य गुणस्वामीका प्रतिपेय हो जाता है । ब्रह्मप्रमाणकी
 भवेत्ता ' इस बचनसे केवल प्रमाणोंका प्रतिपेय हो जाता है । किन्तु ई ' इस बचनसे
 सुद्धकी प्रमाणाता सुचित हो जाती है । असत्पात है ' इस बचनसे संख्यात और अनन्त
 सत्ताकी सिद्धि हो जाती है ।

प्रश्ना—असत्त्वान किले कहते हैं अर्थात् अनन्तसे असत्पातमें क्या भेद है ?

समाधान—एक एक सत्ताके घटते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह
 असत्त्वान है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है ।

प्रश्ना—यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशको प्राप्त होनेवाला अर्धपुत्रल
 परिवर्तन काल भी असत्त्वानरूप हो जाएगा ?

समाधान—हो जाये ।

प्रश्ना—तो फिर इस अर्धपुत्रल परिवर्तनरूप कालको अनन्त कहा कैसे ही गई है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, अर्धपुत्रल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त कहा ही गई
 है वह अपकारनिमित्तक है । आगे उसीका स्पर्शकरण करते हैं—अनन्तरूप केवलज्ञानका
 विषय होनेसे अर्धपुत्रल परिवर्तनकाल भी अनन्त है ऐसा कहा जाता है ।

प्रश्ना—केवलज्ञानके विषयत्वके प्राप्ति कोई विशयता न होनेसे सभी संख्याओंको
 अनन्तत्व प्राप्त हो जायेगा ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो संख्याएँ अविज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे
 भित्तिरिक्त ऊपरकी संख्याएँ केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे और किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो
 सकती हैं अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तरूपके अपकारकी प्रवृत्ति हो जाती है । अथवा जो
 संख्या पाँचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है । उसके ऊपर जो संख्या अविज्ञानका विषय

नाम । तदो उवरि अमोहिणाणविसजो समसंखेज्ज नाम । तदो उवरि वं केवसनापस्तेज
विसजो समर्जत नाम । सपहि सुहुमदरपरुवणहुसुचरसुपमाह—

असखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ५४ ॥

पादस्थमिदं सुचं ।

स्वेत्तेण पदरस्स वेळप्पण्णगुलसयवग्गपडिभागेण' ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाद्वि सि अणुवह्वे । अंगुलमिदि सुचं एत्थं सप्पिमगुलं पचन्म । सद्

है वह असक्यात है । इसके ऊपर जो केवलज्ञानके विषयभावको ही प्राप्त होती है वह जनस है ।
जब अतिसूक्ष्म प्रकृषणके प्रकृषण करनेके किये भागेका सूत्र कहते हैं—

कामक्षी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असक्यातासम्प्राप्त अवसर्पिभिर्यो और उत्त
पिपिपाके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ यहछे बतकाया जा चुका है ।

क्षेत्रक्षी अपेक्षा जगत्प्रतरके दोसौ छप्पन अंगुलोंके बर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्या
दृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन सूर्यगुलके बर्गरूप मागहारका जगत्प्रतरमें
माग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवरशि आती है ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—यद्यपि दोसौ छप्पन सूर्यगुलोंके बर्गरूप माग जगत्प्रतरमें देवसे ज्योतिषी
देवोंकी संख्या समती है फिर भी व्यस्तर आदि शेष देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके संख्यातमें
प्रामाण्य है इसलिये यहाँ पर प्रामाणिक नयकी अपेक्षा संपूर्ण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त
कहा है । विशेषरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन सूर्यगुलोंके बर्गरूप जगत्प्रतरमें माग
 देने पर जो कल्प व्यपे उससे कुछ अधिक संपूर्ण देवोंका प्रमाण है ऐसा समझना चाहिये ।
साय ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यहाँ जीवद्वारायें भीह मार्गणामें मिथ्यादृष्टि
आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् संख्या बतलाई है । इसलिये उन उस मार्गणामें
सामान्य संख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिके प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये था । परंतु बिना
न कह कर सामान्य संख्याका प्रमाण ही यहाँ माग कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है
तो यह कल्पन भी प्रामाणिक नयकी अपेक्षासे ही सर्वथा समझना चाहिये । विशेषरूपसे
विचार करने पर तो सामान्य संख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणको घटा
 देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा ।

यहाँ पर देव मिथ्यादृष्टि पक्षी अणुवृत्ति हुई है । शून्यमें अंगुल ऐसा सामान्य पर

सदो वेष्ट विसेसण इमदि, ण छप्पण्णस्स। वेदि विसेसिदछप्पण्णसदस्स गहणं पसज्जदि ति
 ण च एव, अपिद्विचादो । पदिमागो भागहारा । सदो वेसपछप्पण्णगुलवग्गेय अगपदरे
 खदिदे तस्य पगसंवेण तुल्ला देवमिच्छाद्वि होति ति अ बुच होदि । पण्णडिसहस्स
 पचसय-छत्तीसपदरगुलाणि भागहार कहु अगपदरस्सुवरि खदिदादो पदिदियतिरिक्ख-
 ओपिनीमिच्छाद्वि प चचरा ।

सासणसम्माद्वि-सम्माभिच्छाद्वि-असंजदसम्माद्विणीं ओधं

॥ ५६ ॥

पदेसि देवगुणपडिवण्णाण पदवणा सामण्येण ओषगुणपडिवण्णद्वन्द्वपदान
 पदवणमणुहरदि ति ओषेणेति मणिव । पज्जवडियण अलविज्जमाणे अरिष विसेसो,
 अण्णहा सेमगद्विगुणपडिवण्णाणमभावपसंगा । त विसेस पचइत्थामो । त बहा—
 आवलियाए असंछज्जदिमाण ओषअसज्जदसम्माद्विअवहारकाल खडेज्ज छद्
 तमि चेव पक्खित्ते देवमसज्जदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तमावलियाए अंत

कहने पर वहां उससे सूर्यगुणका ग्रहण करना चाहिये । बात शब्द दोष्य विशेषण है
 छप्पण्णका नहीं । यदि कोई कहे कि वो विधि छप्पण्णसौका ग्रहण हो जाना चाहिये सो बात
 नहीं है क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है । प्रतिपाद्य अर्थ भागहार है अतः यह अमिष्य
 हुआ कि सौरी छप्पण्ण सूर्यगुणोंके वर्गसे अग्रतरके अंकित करने पर उनमेंसे एक अंकके
 पदपर देव मिष्याद्वि जीव होते हैं । पैंसठ हजार पाँचसौ छत्तीस अग्रतर्गुणोंको भागहार
 करके अग्रतरके पदपर अंकित जायिके पंचेन्द्रिय विषय योनिमयी मिष्याद्वियोंके अंकित
 अद्विके समान कहना चाहिये ।

सासादनसम्यग्द्वि, सम्यमिष्याद्वि और असपयसम्यग्द्वि सामान्य देवोंका
 द्रव्यप्रमाण ओष प्ररूपणाक समान पस्योपमके असरूपातर्वे भाग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपक्ष देवोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपक्ष
 सामान्य जीवोंकी संख्या प्ररूपणाका अनुकरण करती है अतएव ओषसे 'देवा कहा ॥' पर्या
 याधिक नयका अलक्ष्यजन करने पर ता विशेषता है ही अन्यथा शेष गतिसंबन्धी गुणस्थान
 प्रतिपक्ष जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है । आगे तही विशेषताको बतलाते हैं । यह
 इसप्रकार है—

आधारीके असंख्यातके भागसे सामान्य असंयतसम्यग्द्वि अवहारकाकके अंकित
 करके जो छप्प आने उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्द्वि अवहारकाकमें मिला देने पर देव
 असंयतसम्यग्द्वियोंका अवहारकाक होता है । उस देव असंयतसम्यग्द्विसंबन्धी अवहारकाकको

स्वेज्जदिमाएण गुणिते देवसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो होदि । त सस्वेज्जरूपेहि गुणिते देवसासणसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो होदि । एवेहि अवहारकालेहि पत्तिशोवमस्सुवरि खडि दादजो पुब्ब व वत्तम्भा ।

भवणवासियदेवेसु मिच्छाद्वी दब्बपमाणेण केवडिया, अस स्वेज्जा ॥ ५७ ॥

एदस्स सुवस्स अत्थो सुगमो ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसत्थिणि उस्सप्पिणीहि अवहरति कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अरथा सुगमो चेव ।

स्वेत्तेण असस्वेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असस्वेज्जदिभागो । तेसिं सेठीणं विक्खंमसूह अगुल अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५९ ॥

एदस्स अरुहुमहुत्तस्स विवरण बुचदे । असस्वेज्जासस्वेज्जमयेपवियप्प । तरव

आवडीके मसंत्तातवें मागसे गुणित करने पर देव सम्पत्तिष्पादविधियोंका अवहारकाल होता है । उस देव सम्पत्तिष्पादविधि अवहारकालको संवत्सरासे गुणित करने पर देव सात-दशत्यम्बद्विधियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालोंके द्वारा पञ्चोपमेके ऊपर कठित आविष्कृत कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

भवनवासी देवोंमें मिष्पाद्वि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अत-
स्यात् हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा मिष्पाद्वि भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिष्पाद्वि देव असंख्यात अवशेषीप्रमाण हैं जो असंख्यात अवशेषियों अवप्रसरके अर्थसंख्यातवें मापप्रमाण हैं । उन अर्थसंख्यात अवशेषियोंकी विष्क्रमसूची, धर्म्यगुलको सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलमें गुणित करके जो उत्तर आये, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण सिद्ध आता है—

१ सर्वत्रयाः सर्वत्रयता येन सर्वत्रयाः पवित्रतायाः । यत् त्रि १ २ ३

२ त्रिंशु सर्वत्रयतायाः । त्रिंशु ताव ।

३ यत्रयत्रयतायाः ४४ त्रिंशुता ४४ । यत्र ४४ देवान् होति पवित्रता । यो अत्र १५१

असंख्येन्द्राग्रो सेद्रीओ इदि कुर्त्त अगपदरमाइ फाळण उबारिम अमंखेउग्रामंखेन्द्रविपप्य पडिमइहं । पदरस्म अमंखेअदिभागो वि अनेयविपप्या इदि फहुं तं गिण्यपद मदीण विस्वमसूर्य उचा । तिस्ये पमाण पुचदे । अंगुल अंगुलवगमूलगुमिदि मवणवासिय मिच्छाइइविस्वमसूर्य इवदि सि सवचयर्थ । धणगुलपदमवगमूलमिदि अं पुच होदि । अंगुलवगमूलगुमिदिनेषेण तस्याणिदमो कच घट्ठे ? पदमाविहर्षाए अहु एसो तस्या गिदेमो ददुवो । अण्यस्य ण एव दिस्मदीदि ने ण, 'बेछप्पणंगुलसदवगपडिमाणेय' इच्छात्ति सुचेमुबलेमा । अइवा विमिये एसा तस्याविहरी इहम्मा । अंगुलवगमूल गुमयकारणेय जम्पणगुलं सा विस्वमसूर्य होदि सि अ पुच होदि । एदाए विस्वम सूर्ये जगमदि गुमिदे मवणवासियमिच्छाइइपमाण होदि ।

सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि -असंजदसम्माइट्टिपरुवणा ओधं ॥ ६० ॥

मसक्यातासप्मात अनेक प्रकारका है इसलिये अगपदरको भावि करके उपरिम असंख्याता संख्यातके विस्वसोका प्रतिपेय करनेके लिये मवनवासी मिच्छाइट्टि देवोंका प्रमाण मसक्यात जपमेणियमाय कहा है । यह जपमपदरका मसक्यातवा भाग मी अनेक प्रकारका है ऐसा समझकर उसका निर्यय करनेके लिये इन मसक्यात जगमेजियोकी विष्कमसूची कही । भाये उस विष्कमसूचीका प्रमाण कहते हैं—सूर्यगुलको सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो छम्प भाये हवनी मवनवासी मिच्छाइट्टियोंकी विस्वमसूची है, ऐसा इस कथनका संवन्ध करना चाहिये । जो विस्वमसूची जगंगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यन्त है यह इस कथनका मभिप्राय है ।

प्रश्न— अंगुलवगमूलगुमिदेय इसप्रकार यहां तृतीया विमलिक निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान— प्रथमा विमलिक अर्थमें यह तृतीया विमलिक निर्देश जानना चाहिये ।

प्रश्न— दूसरी जगइ ऐसा नहीं बना जाना है ?

समाधान— नहीं क्योंकि बेछप्पणंगुलसदवगपडिमाणेय इत्यारिक सूत्रोंमें प्रथमा विमलिके अर्थमें तृतीया विमलिक देवी आती है । मयवा विमित्तव्य अर्थमें यह तृतीया विमलिक जानना चाहिये । जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण मवनवासी मिच्छाइट्टियोंकी विष्कमसूची है । इस विष्कमसूचीसे जगमेणिके गुणित करने पर मवनवासी मिच्छाइट्टियोंका प्रमाण होता है ।

मासादनमम्पगइट्टि, मम्पग्मिच्छाइट्टि और अमंयतमम्पगइट्टि मवनवासी जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणके समान है ॥ ६० ॥

दम्बद्विपय एव ब्रह्मविज्ञानमात्रे ओषेय सह एगचर्दसजादौ । पञ्चद्विपय एव
संविज्ञानमात्रे अस्मि विसेसा तं पुरतो भविस्मामो ।

वाणर्वेतरदेवेसु मिच्छाद्दृष्टी दब्धपमाणेण केवहिया, असखेज्जा'
॥ ६१ ॥

एदस्स वृत्तस्य सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंसृज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अवहिरिति
कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स मि सुद्धमत्थसुत्तस्स अत्थो अण्वदे ।

खेत्तेण पदरस्स सखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ६३ ॥

एदस्स अदसुद्धमद्विपयसुत्तस्स अत्थो सुगदे । पदरस्सेदि विद्वज्जमान-
रासिभिरेमो । संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेहि सुद्धभिरेमो । पदरस्स संखेज्जजोयण

द्रव्याधिक नयका अन्वयम्ब करने पर ओष प्रकृषाके साथ गुणस्थानप्रतिपक्ष अथवा
बाह्य प्रकृषाकी एकता अर्थात् समावृत्ता देखी जाती है । परंतु पदार्थाधिक नयका अन्वयम्ब
करने पर तो उक्त दोनों प्रकृषाओंमें विशेषता है ही । इस विशेषताको हमें बतलावेंगे ।

बानध्यन्तर देखीमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अमंस्मात्
इ ॥ ६१ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा बानध्यन्तर देव अमंस्मात्तामस्योऽवसर्पिभिर्पो और
उत्सर्पिभिर्पोके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ साफ है ।

क्षत्रकी अपेक्षा अगप्रतरके सम्प्राप्तमौ योजनोंके बर्गरूप प्रतिमागसे बानध्यन्तर
मिथ्यादृष्टि राशि जाती है, अर्थात् सम्प्राप्तमौ योजनोंके बर्गरूप मागहारका अगप्रतरमें
माग देने पर जो लब्ध आये उतन बानध्यन्तर मिथ्यादृष्टि सब है ॥ ६३ ॥

अति सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये जाये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—
श्रुत्यै परस्पर इस पक्षसे अपरिहार्यमाण राक्षिक निर्णय किया है । संक्षेत्रज्ञापन्नसद्वय-
पडिभाएण इस पक्षसे मागहार राक्षिक प्रतिपादनपूर्वक द्रव्य राक्षिक निर्णय किया है ।

मयवग्गपडिमाणो वाणवैतरमिच्छाइहिदम्बपमार्ण होदि । पडिमाणो इदि किं वुच
इवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेचमगपदरस्स मागेमु एगमागो पडिमाणो णाम ।
पडिमाणसदो भागहारम्मि वड्डमाणो कज्जे फारणोवपारेण लद्धम्मि वड्डदि सि पेचप्प्व ।
एत्थ पडमाण विहत्तीए अट्ठे तदिया दड्डया । अहवा एस भिरेसो पडमाविहत्ती चेव
ज्झा इवदि तहा साहेयप्पो । संखेज्जजोयणेपि वुचे तिप्पिजोयणसयमंगुल काऊम्म बग्गिदे
ओ लप्पज्जदि रासी सो पेचप्पो । तस्स पमाण पंच कोडाकोडिसयामि तीसकोडा
कोडीओ चदरासीदिपोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च मवदि । खदि
ओणिपीणमवहारकालो तप्पाओग्गसखेज्जज्जगुणिदल्लज्जोयणसयमंगुलवग्गमेचो इवदि
तो वाणवैतरमिच्छाइहीण पि अवहारकालो एचियपदर्गुलमेचो इवदि । अथ खदि
पचिदियतिरिक्खओणिपीमिच्छाइहीणमवहारकालो छज्जोयणसयमंगुलवग्गमेचो चेव तो
वाणवैतरमिच्छाइहिअवहारकालेण' तिप्पिजोयणमयगुलवग्गस्स संखेज्जदिमाएम् होदम्ब,
अप्पहा अप्पावहुगसुचेण सह विरोहादो । एदेम् अवहारकालेण जगपदरे मागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरमे संख्यातसी योजनोंके बर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग
आये वतना वाजपयस्तर मिथ्यादष्टि सेबोका प्रमाण है ।

धृंका — प्रतिभाग इस पक्षे यहाँ क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसी योजनोंके बर्गका जितना प्रमाण हो वतने जगप्रतरके भाग
करने पर वनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहाँ सध्यरूप अर्थ दिया
गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे
यहाँ सध्यमें उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहाँ प्रथमा विमलिके अर्थमें तृतीया विमलिके जानना चाहिये । अथवा, -पडिमाणम्'
यह निर्दिष्ट प्रथमा विमलिकरूप जिसप्रकार होवे उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । धृन्में
सख्यात योजन' देखा कहने पर तीनसी योजनोंके अंगुल करके वर्णित करने पर जो राशि
उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अंगुलोंका प्रमाण पाँचसी कोडाकोड़ी तीस
कोडाकोड़ी बीरासी लाख कोड़ी बीर सोलह हजार कोड़ी ५३०८४१९००००००००००
है । यदि तिर्यक् योनिप्रतियोका अवहारकाल तथोप्य संख्यात गुणित एहसी योजनोंके
अंगुलोंका पर्यमाण हो तो वाजपयस्तर मिथ्यादष्टियोका भी अवहारकाल इतने अथात् तीनसी
योजनोंके अंगुलोंके बर्गरूप प्रतरंगुलप्रमाण हो सकता है । और यदि ऐच्छेन्द्रिय तिर्यक्
योनिप्रती मिथ्यादष्टियोका अवहारकाल एहसी योजनोंके अंगुलोंके पर्यमाण हो है तो
वाजपयस्तर मिथ्यादष्टियोका अवहारकाल तीनसी योजनोंके किये गये अंगुलोंके बर्गके
संख्यातपंच भाग होना चाहिये अथवा अव्यवहुत्वके सूत्रके साथ इस कथनका विरोध व्यता है ।

माणवैतरमिच्छादृष्टिपमाणमाणच्छदि ।

सासणसम्मादृष्टि-सम्माभिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादृष्टि ओष

॥ ६४ ॥

दम्पट्टियण्ण अण्ठेविज्जमाणे केण वि अंमण विसेसामावादो ओषणमिदि
बुद्धे । पण्डवट्टियण्ण अण्ठेविज्जमाणे अतिव विसेसो । त विसेस पुरदो मणिस्सामो ।

उक्त अण्ठारकाखसे अण्ठप्रत्ययके माहित करने पर बाण्यन्तर मिथ्यादृष्टिबोका प्रमाण जाता है ।

विशेषार्थ—बाण्यन्तर दोषोंका अण्ठारकाख तीनही योजनोंके अंगुल्लोका वर्ग है और
एकेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिषोंका अण्ठारकाख छहसी योजनोंके अंगुल्लोका वर्ग है । तीनही
योजनोंके प्रतरांगुल्ल ५३ ८४१९००००००००० होते हैं और छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्ल
२१२३११६४०००००००० होते हैं । किसी विशालिन राशिके वर्गसे इस राशिसे दूनी राशिका
वर्ग बीगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से ४के दूने ८ का वर्ग ६४ बीगुना है । तथा किसी एक
मूल्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो छप्प आया, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त
छप्पसे बीगुना ही लब्ध आया । इसीप्रकार यहाँ तीनही योजनोंके प्रतरांगुल्लोसे छहसी
योजनोंके प्रतरांगुल्ल बीगुने होते हैं अतएव छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्लोका अण्ठप्रत्ययमें भाग
देनेसे तिर्यक् योनिमतिषोंका जितना प्रमाण छप्प आया, उससे तीनही योजनोंके प्रतरां
गुल्लोका वही अण्ठप्रत्ययमें भाग देने पर बाण्यन्तर दोषोंका प्रमाण बीगुना ही छप्प जाता है ।
पर अक्षरगुण अनुबोधद्वारमें तिर्यक् योनिमतिषोंसे बाण्यन्तर दोष संख्यातगुने कहे हैं और
उन्हींकी दोषियां दोषोंसे संख्यातगुणी कही हैं । दृष्टान्तमें निम्न दोषके भी वसीत
दोषियां होती हैं । इसप्रकार आगमानुसार तिर्यक् योनिमतिषोंके प्रमाणसे बाण्यन्तर
दोषोंका प्रमाण १ + १२ = १३ गुनेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार
बीगुना ही जाता है । इससे यतीन होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार
असत्य है । यदि बाण्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतिषोंका
भागहार छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्लोसे संख्यातगुण्य होना चाहिये और यदि तिर्यक्
योनिमतिषोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो बाण्यन्तरोंका भागहार तीनही योजनोंके
प्रतरांगुल्लोका संख्यातका भाग होना चाहिये ।

सासाइमनम्पगट्टि, सम्पग्मिप्पादृष्टि और अमंयतवम्पगट्टि बाण्यन्तर दोष
सामान्य प्ररूपणाक समान एव्योपमके असत्यतामें आता है ॥ ६४ ॥

प्रम्यार्थिक अथवा अक्षरगणन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणव्ययाननिपय सामान्य
प्ररूपणा और गुणव्ययय बाण्यन्तरोंकी प्ररूपणामें बिरोधता न होनेन गुणव्ययव्यतिपय
बाण्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणव्ययाननिपय सामान्य प्ररूपणाके समान कही । पयार्थिक
अथवा अक्षरगणन करने पर तो बिरोधता है ही । उस बिरोधताका कथन मागे करते ।

किमिदं सम्भय दम्बद्विय पञ्चवद्वियणयहयममलंविम परुषणा कीरदे ! न एम दोसो,
सगह बित्थरुविम साणुगहवाषदसादो । अप्पहा अस्रमाणपसगादो ।

जोहसियदेवा देवगर्हण भगो ॥ ६५ ॥

द्वयगर्हणमिदि बहुवयणविरेसो न घट्ट, एक्काए देवगर्हण बहुसामागो इदि ?
ण एम दासो, सगहिदाणेयचे ण्यचे बहुसाविरोहादो । जोहसियदेवा इदि गुणा
विमिहद्वयगहणादो आहसियदेवेसु बहुण्ड गुणहाणाण पमाणपरुषणा ओपपेक्खणाए
तुहा । एमा दम्बद्वियणयममलंविम निहमा कम्मो । पञ्चवद्वियणय अवलंविज्जमाणे
अरिय विसेसा । तं जहा—तस्य साय मिच्छाहट्ठीसु विसेसा वुचदे । सामवेतरादिसमसम्भे
दवा आहसियदेवाण मग्गेअदिमाममसा इवति । तहि सामप्पदेवराविमोवद्विदे सस्सेज्ज

शुद्ध—संयम द्रव्याधिक्य भार पयापाधिक्य इन दो तथोक्ता अवलम्बन करने प्रमाण-
प्रकृपणा कथों की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, समग्रदक्षि और विनरदक्षि शिष्योंक
अनुग्रहक निये इन दोनों तथोक्ता व्यापार हुआ है। यदि ऐसा नहीं माना जाय तो अममानताका
प्रसंग क्या जाता है।

देवगतिप्रतिपक्ष सामान्य दोषोंकी मन्वा त्रितनी कही है ज्यातिपी देव
उत्तम है ॥ ६५ ॥

प्रश्न—मूर्खमें आये हुए देवगर्हण यह उद्घुषयन निर्देश प्रदिन नहीं होता है,
क्योंकि देवगति एक ही भगः उभे बहुय प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, जिसमें बहुव्य संसृहीन है वेसे एकत्वमें
बहुव्यके रदनमें विरोध कहा आता है।

आहसियदेवा इसप्रकार मिथ्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य
ज्यातिपी तथोक्ता प्रत्यक्ष करनेमें ज्योतिषी तथोक्ता आरों गुणव्यापोंकी संख्या प्रकृपणा सामान्य
द्वयगर्हणमवस्था संयम-अनुकूलताके समान है एमा मित्र होता है। यह कथन द्रव्याधिक्य तथोक्ता
आश्रय लेकर किया है। परंतु पयापाधिक्य तथोक्ता अवलम्बन करने पर विशेषता है ही। यह
इसप्रकार है। उनमें भी यहल मिथ्यादृष्टियोंमें विशेषताका बतलाने है—पाण्यप्या आदि दोष
समूह देव ज्यातिपी तथोक्ता संख्यामयें प्राग है। उनमें सामान्य देवगतिसे अवधारित करने पर

१ अमनिजा अनुजग। अनु हा. १४१ पृ १० पृ ४४ XX देवद्वयपण्य हा। ४१ कर्त्तित
४१ XX जीतिवर्ग ४ वीया हा. ५८ अ. ११ अगर्हणय मरुद्वय अद्वय पदवी। जीतिवी (ग
हम २५ वयणा। पदवी १ १

प्रति निर्देशी देव इति वः।

१ इति वयनविर्ग इति वः।

बाधपेतरमिच्छाद्विपमात्रमागच्छति ।

सासणसम्माहट्टि-सम्मामिच्छाद्वि-असंजदसम्माहट्टी ओघ

॥ ६४ ॥

इन्द्रियपण अवलंबित्वमात्रे केव वि अंसेव विसेत्तामावादो ओघमिति बुद्धे । पञ्चवह्नियपण अवलंबित्वमात्रे अति विसेत्तो । तं विसेत्तं पुरदो मविस्सामो ।

उक्त अवधारक्यसे जगत्तरके भावित करने पर बाधव्यन्तर मिथ्यावृत्तियोंका प्रमाण जाता है ।

विशेषार्थ—बाधव्यन्तर दोनोंका अवधारक्यक तीनही योजनोंके अंगुलियोंका वग है और पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमयियोंका अवधारक्यक छहसी योजनोंके अंगुलियोंका वग है । तीसरी योजनोंके प्रतरांगुल ५३ ८४१९ ००००० होते हैं और छहसी योजनोंके प्रतरांगुल २१२३३३३३००००००० ०० होते हैं । किसी निश्चित पश्चिमे वर्गसे उस पश्चिमे तृती पश्चिक् वर्ग बीगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का वर्ग १६ बीगुना है । तथा किसी एक म्पुत्रमें ८ के वर्ग १६ का भाग देनेसे जो छम्प आयगा, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त छम्पसे बीगुना ही छम्प आयगा । इसीप्रकार यहां तीसरी योजनोंके प्रतरांगुलसे छहसी योजनोंके प्रतरांगुल बीगुने होते हैं अतएव छहसी योजनोंके प्रतरांगुलोंका जगत्तरमें भाग देनेसे तिर्यक् योनिमयियोंका जितना प्रमाण छम्प आयगा वससे, तीसरी योजनोंके प्रतरांगुलोंका उही जगत्तरमें भाग देने पर बाधव्यन्तर दोनोंका प्रमाण बीगुना ही छम्प जाता है । पर अन्ववह्नय अनुयोगद्वारमें तिर्यक् योनिमयियोंसे बाधव्यन्तर केव संख्यातगुने कहे हैं और उन्हींकी बेबीयां दोनोंसे संख्यातगुनी कही हैं । बेवगतिमें निष्ठव देवके भी वहीच देवियां होती हैं । इसप्रकार व्यगमानुसार तिर्यक् योनिमयियोंके प्रमाणसे बाधव्यन्तर दोनोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुनेसे अधिक ही होगा चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार बीगुना ही जाता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है । यदि बाधव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमयियोंका भागहार छहसी योजनोंके प्रतरांगुलोंसे संख्यातगुना होना चाहिये और यदि तिर्यक् योनिमयियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो बाधव्यन्तरोंका भागहार तीसरी योजनोंके प्रतरांगुलोंका संख्यातगुना भाग होना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दट्टि, सम्यग्मिध्यावट्टि और असंयतसम्यग्दट्टि बाधव्यन्तर इव सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातमें भाग हैं ॥ ६४ ॥

प्रत्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य प्ररूपणा और गुणप्रतिपक्ष बाधव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपक्ष बाधव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य प्ररूपणाके समान बड़ी । पर्यावार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही । उस विशेषताका कथन भागे करेंगे ।

किमदं सम्प्रत्य दम्भद्विप पञ्चबहिष्यणयदयमवलम्बिय परूपणा क्षीरेदे । न एम दोसो,
सगह बित्तररुचिषचाणुगहवाधदादो । अप्पाहा असुमाणदापसगादो ।

जोहसियदेवा देवगईण भगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि बहुवचणणिहमा न घटदे, एकाए देवगईण बहुत्तामावादो इदि ।
न एम दासो, सगहिदाणपचे एयचे बहुत्ताविरोहादो । जोहसियदेवा इदि गुणा
विमिद्वदमगहणादो जोहसियद्वेषेसु चदुण्ड गुणद्व्याणाण पमाणपरूपणा ओपपेरूपणाए
तुहा । एमो दम्भद्विपणयमवलम्बिय निहमा कप्पो । पञ्चबहिष्यणए अवलम्बि-
ज्जमाणे जत्थि विसेसो । तं अहा—तस्य ताव मिच्छाद्दुस्सु विसेसो बुद्धे । वाणवेतरादिसेससम्भे
देवा जाहियपेवाण सुयेज्जादिमाणमत्ता हवति । तेहि सामण्यदेवरातिमोवहिदे ससेज्ज-

प्रका—सबस दम्भाधिक आर पचायाधिक इन दो नपोंका अवलम्बन करके प्रमाण
परूपणा क्यों की जा रही है ?

समाधान—यह कोर होय नहीं है क्योंकि, सघहरुचि क्षीर बित्तररुचि द्विप्योंक
अनुग्रहक किये इन दोनों नपोंका व्यापार हुआ है । यदि ऐसा नहीं माना जाय तो अनमानताका
प्रसंग आ जाता है ।

देवगतिप्रतिपक्ष सामान्य दुबोंकी संख्या मिलनी कही है ज्योतिषी देव
उत्तन है ॥ ६५ ॥

प्रका—सबमें भाये हुए देवगहने यह बहुवचन निर्देश घटित नहीं होता है,
क्योंकि दम्भानि एक है अनः उसे बहुवच प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोर बात नहीं है क्योंकि, जिसमें बहुवच संप्रहीन है ऐसे पक्षबलमें
बहुवचके रहनेमें विरोध नहीं आता है ।

जाहियपेवा इमप्रकार मिच्छाद्विप आदि गुणोंकी विरोधतासे रहित सामान्य
ज्योतिषी देवोंका ग्रहण करनेमें ज्योतिषी देवोंमें चारों गुणस्वाभावोंकी संख्या-प्रकृति सामान्य
दम्भानिमगर्भा संख्या-प्रकृतिप्रमाणके समान है एसा मित्र होता है । यह कथन दम्भाधिक नयका
आश्रय लेकर किया है । परंतु पचायाधिक नयका अवलम्बन करने पर विरोधता है ही । यह
इमप्रकार है । उनमें भी पहले मिच्छाद्विपोंमें विरोधताको बनाने है— पापप्यप्पर आदि होय
समूह देव ज्योतिषी दुबोंके संख्यागत भाग है । उनसे सामान्य देवराशिके अपपरिग्रह करने पर

१ अनायास जेपुअस । अनु इह १४१ व १ ५ वच ४४ देवररूपप्रकाशनी व । कथित
४१ ४४ जेजिपनी व कीटनी ॥ दो. अ १६ अनायास जेपुअस नहय पनी । जेजिपनी ईव
हम नहय नहय । वचने १ १

इति श्रीशिवजी महाराज उक्तिः ।

१ ४३३ पञ्चमदिवस १३ वचः ।

रूपाणि आमच्छन्ति । ताणि विरलिय द्वाभिमिच्छाद्भिरासिं समपुष्ट करिय दिग्ने रुं
 पडि बाणवैतरणमुहमिच्छाद्भिरासी पवेदि । समुत्तरिरूपपरिदसामण्णदेवमिच्छाद्भि
 रासिम्हि भवणिदे बोधसियदेवमिच्छाद्भिरासी होदि । एव समकरण करिय रूग्गद्भिम
 विरलणाए देवअवहारकाल माणे हिदे पदरगुलसस सयेन्मदिमाणां आगच्छदि । त देव
 अपहारकालम्हि पक्खिउचे बोधसियदेवमिच्छाद्भिअवहारकालो होदि । सेस द्वाभिमिच्छा
 द्भिमगो । सामणादिगुणप्राणगविसेम पुरदा वचस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाद्द्वी दवपमाणेण केव
 ङिया, असम्बेजा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अया अवगहो ति पुणो व पुब्बदे ।

असंखेज्जासंखेज्जादि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति
 कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्मत्ता सुगमो चेप । सत्तरण सुहुम-सुहुमदर सुम्मतममेवण तिबिहा
 परूवणा किमहु परूविज्जवे ? य एम दोतो, तिक्ख मंद मी समसत्तापुग्गद्दुत्तादे । अज्जहा

संख्यात छन्द आते हैं । इनका (उत्पातका) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिसे
 समान बन्ध करके दे देने पर विरलिन राशिसे प्रत्येक पङ्क्ति प्रति बाणध्वन्तर आदि मिथ्यादृष्टि
 देवराशि प्राप्त होती है । उसे उपरिम पङ्क्ति प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे
 अथ देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम
 अथकाल विरलनसे देव अवहारकालके माश्रित करने पर प्रत्यंगुलका उत्पातका माप लब्ध
 आता है । उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता
 है । शेष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्रकृषणाके समान है । सासाधन आदि शुचस्पानगत विद्योपवाचो
 आने वतकर्मणे ।

सौधम और ऐशान कल्पनामी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
 कितने ह ? असम्प्राप्त ह ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अलगत है इसलिये फिरसे गहरा कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पनासी मिथ्यादृष्टि देव असम्प्राप्त-
 संस्मात् अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते ह ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

संज्ञा—सब जगह सूक्ष्म सूक्ष्मतर नीर सूक्ष्मतरके भेदसे तीन प्रकारकी प्रकृषणा
 किञ्चिन्ने कही जा रही है ?

समाधान—यह जोर शोर नहीं है क्योंकि तीन बुद्धिवाले, संघ बुद्धिवाले और मायम
 बुद्धिवाले जीवोंके अनुमदके लिये तीन प्रकारकी प्रकृषणा कही है । यदि ऐसा न माना जाय तो

त्रिमाण सम्बसचयमाणचविरोहो । ण पुणरुचशोसो वि जिणवयणे समवह, मदबुद्धि
सथापुग्गाहइदा एदस्स साफहादो ।

स्वेत्तेण असस्वेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असस्वेज्जदिमागो ।
तासिं सेढाण विक्खमसूई अगुलविदियवग्गमूल तदियवग्गमूल
गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असस्वेज्जदिमागो इति निदिमो जगपदरादिठवरिमवियप्पमिपचावणहो ।
असस्वेज्जाओ सेढीओ इदि भिदेमो जगसेढीदो हेट्ठिमअसस्वेज्जासंयोजवियप्पमिपचा
वणहो । तासिं सेढाण पमाणपरिच्छेद काठ अंगुलविदियवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण
इदि विक्खमसूई बुद्धा । गुणिदेणेति पदमाभिदेमो दह्व्या । अविअगुलविदियवग्गमूल
तदियवग्गमूलेण गुणिद सोहम्मीमाणमिच्छाइडिबिक्खमसूई होइ । अइवा अविअगुल
तदियवग्गमूलेण पदमवग्गमूले भागे दिदे सोहम्मीमाणदेवमिच्छाइडिबिक्खमसूई होदि ।
एदिस्से विक्खमसूईए एदिदादआ जहा णेरइयविक्खमसूईए तहा वचन्ता ।

जिनवच सय जीबोंम समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विशेष आ जायगा । जिनवचनमें
पुनरुच शेष भी समझ नहीं दे क्योंकि, जिनवचन में बुद्धि शिष्योंका भी अनुमति करनेवाला
होनेसे पुनः पुनः कथन करनेकी सफरना है ।

अत्रकी अपक्षा सौधर्म और यद्धान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि इव असम्प्रात
जगभेषीप्रमाण है जो असम्प्रात जगभेषियोंका प्रमाण जगप्रतरके असम्प्रातके माग
है । उन असम्प्रात जगभेषियोंकी विष्कमसूची, सूर्यगुरुके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर बितना सत्य आवे, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूर्यमें जगप्रतरका अर्धक्यागवा माय यह निर्देश जगप्रतर आवि उपरिम विद्वानोंके
निराकरण करनेके लिये दिया है । अर्धक्याग जगभेषियों इत्यप्रतरका निर्देश जगभेषीसे
भीषिके अर्धक्यागासम्प्रात विद्वानोंकी निरुक्तिके लिये दिया है । उन भेषियोंके प्रमाणका
ज्ञान करनेके लिये सूर्यगुरुके द्वितीय वर्गमूलको उर्ध्वके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो
सत्य आवे उतनी उन भेषियोंकी विष्कमसूची सही । गुणितेय यह वह प्रथमा विमलिकय
आनना चाहिये जिससे यह तात्पर्य हुआ कि सूर्यगुरुके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे
गुणित करने पर जो सत्य आवे उतनी सौधर्म और यद्धान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि हेत्योंकी
विष्कमसूची होती है । अथवा सूर्यगुरुके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने
पर सौधर्म और यद्धान कल्पवासी हेत्योंकी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूची होती है । ऊपर जिसप्रकार
मात्र मिथ्यादृष्टि विष्कमसूचीके लक्षित आविइका कथन कर आवे हैं उर्ध्वमकर इस विष्कम
सूचीके लक्षित आविइका कथन करना चाहिये ।

रूपाणि ज्ञायन्ति । ताणि विरलित्य दक्षमिच्छाश्चिरासि समग्रं करिय दिव्ये रूप
पदि बागवैतरण्यमुहमिच्छाश्चिरासी पावेदि । तमुपरिमरुमधिरदसामभ्यदेवमिच्छाश्चि
रासिन्दि अबणिद ओहसियदेवमिच्छाश्चिरासी होदि । एव समकरण करिय रूपवहेदिम
विरलगाए देवअवहारकाले मागे हिदे पदरंगुलस्स सणेनप्रदिमागो आगच्छदि । व देव
अवहारकाले पकिउत्ते ओहसियदेवमिच्छाश्चिरासी अवहारकालो होदि । तेस देवमिच्छा
श्चिमंगो । सासपादिगुणद्वारागविसेसं पुरवो वचस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेषु मिच्छाहट्ठी दव्वपमाणेण केव
दिया, असंवेच्चा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो अवमहो सि पुणो न पुचदे ।

असत्वेज्जासत्वेज्जाहि ओसप्पिणिउत्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुचस्समहो सुगमो वेय । सत्तरथ सुदुम-सुदुमदर सुममममेयम विविहा
पक्कवा किमई पक्कविज्जदे ? न एस दोसा, तिअ मंद मज्झिमसत्तापुग्गाहट्ठादे । अप्पहा

सत्तापठ छप्प माते हैं । इनका (संख्यातय) विरलान करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिसे
समान बंध करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बाणध्वजतर भावि मिथ्यादृष्टि
देवराशि प्राप्त होती है । उसे अवरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे
ध्या देवे पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि जाती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम
अवस्तन विरलानसे देव अवहारकालमें माजित करने पर प्रतरंगुलस्य सत्तापठका माग छप्प
माता है । उसे देव अवहारकालमें मिठा देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता
है । ओप कथन देव मिथ्यादृष्टि प्रत्येकानके समान है । सासादन भावि गुणस्थानगत विशेषताके
भागे बसवावेगे ।

सौधम और ऐशान कल्पवामी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? असत्तापठ हैं ॥ ६९ ॥

इस सूत्रका अर्थ अथगत है इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं ।

कासकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असत्तापठ
संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

धृंका—अथ अग्रे सूत्रम् सूत्रमतर और सूत्रममके मेरुसे तीन प्रकारकी प्रकल्पना
विषयिके गयी जा रही है ।

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि तीन बुद्धिवाले, मंद बुद्धिवाले और मध्यम
बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्रकल्पना गयी है । यदि ऐसा न माना जाय तो

साधियाओ । त कर्षं जाणिओदे ? अण्णहा वग्गहाणं इट्ठिम-ठवरिमवियप्पापुववपीदो । सुहावधमि वुचमिक्खंमसूरुओ संपुण्णाओ किण्ण होंति चि चे ण, सहाविषगुरुवदेसा मावा । अहवा एत्थ वुचमिक्खंमसूरुओ देखणाओ सुहावधमि वुचमिक्खंमसूरुओ संपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूवे वग्गिज्जमाने सोहम्मीसाणमिक्खंमसूरुवि पावदि, सा सूरु वग्गिदा येरइपमिक्खंमसूरु पावदि, सा सूरु वग्गिदा मवणवासियमिक्खंमसूरुवि पावदि चि परियम्मे वग्गसमुट्ठिवसामण्णमिक्खंमसूरुविपादादो सुहावधे वि धनघाठप्पण्ण विक्खंमसूरुए पादोवळमादो वा । जीवहाणमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूरुविपादो वि सुहावध सामण्णमिक्खंमसूरुविपादेण समाओ उवळमदे चे ण, इम्भट्टियणपदो समाणउवळमा । पज्जवट्टियणप पुण अजलविज्जमाने विपमेण तत्थ अरिच विसेसो । सुहावधुवसंहार जीवहाणस्त मिच्छाइट्ठिविक्खंमसूरुए सामण्णमिक्खंमसूरुविसमाणचविरोहा । एवं सुहा वधमि वुचसम्भअवहारकाळा जीवहाणे सादिरेया वचन्वा । एद वक्खाणमेत्थ पचायमिदि रोहिद्वर्ज न पुम्विह्ल ।

श्रुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि ऐसा न जाना जाय तो बर्गस्थानमें भयस्तरन और उपरिम विह्वल नहीं बन सकता है ।

श्रुका— सुहावधमें कही गई विष्कमसूत्रियां संपूर्ण क्यों नहीं होती हैं ?

समाधान— नहीं क्योंकि इसप्रकारका गुहका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा यहां जीवहाणमें कही गई विष्कमसूत्रियां कुछ कम हैं और सुहावधमें कही गई विष्कमसूत्रियां संपूर्ण हैं क्योंकि भएकपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधमें और देशान्ने बेशीकी विष्कमसूत्रियां प्रमाण प्राप्त होता है । उसका (सौधमेंद्विकसंबन्धी विष्कम सूत्रीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक विष्कमसूत्री प्राप्त होती है । उसका (नारक विष्कमसूत्रीका) उसीसे वर्ग करने पर मयनवासी बेशीकी विष्कमसूत्री प्राप्त होती है, इसप्रकार परिकर्ममें बर्गस्थान प्रकरणमें कही गई सामान्य विष्कमसूत्रियोंके अतिप्रपक्षे अथवा सुहावधमें भी धनघाटमें अत्यध हुई विष्कमसूत्रियोंके अतिप्रपक्षे पाये जानेसे यह जाना जाता है कि सुहावधमें कही गई विष्कमसूत्रियां संपूर्ण हैं ।

श्रुका— जीवहाणमें कहे गये मिथ्याचरियोंकी विष्कमसूत्रियोंके अतिप्रपक्षे सुहावधमें कहा गया सामान्य विष्कमसूत्रियोंका अतिप्रपक्षे समान पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि इन दोनों कथनोंमें प्रव्यार्थिक नयकी अयेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यापार्थिक नयका अन्वयस्थान करने पर तो नियमसे इन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही क्योंकि, सुहावधमें उपसंहारकपक्षे जीवहाणमें कही गई मिथ्याचरि विष्कमसूत्रियोंसे सामान्य विष्कमसूत्रियोंके समान माननेमें विरोध जाता है । इसीप्रकार सुहावधमें कहे गये संपूर्ण अवहारकाळ जीवहाणमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये एतत्के व्याख्यानका नहीं ।

सपरि सुहार्थेण सामप्येण जीवपमागपरूपेण आभो विष्कम्भमूर्ध्वो
 नेरुय-सोहम्मीसाण-मवणवासियदेवान पुचाओ ताओ धव विष्कम्भमूर्ध्वो एरु
 वि जीवद्वये मिच्छद्द्विपरूपेण अप्पुणाहियामो पुचाओ । त अहा-
 अगुलस्स वग्गमूळ विदियवग्गमूळगुणिदेव इदि एसा सुहार्थे नेरुयविष्कम्भ
 मूर्ध्व उता । तासिं सेढीण विष्कम्भमूर्ध्व अगुल अगुलवग्गमूळगुणिदेव इदि एसा
 मवणवासियविष्कम्भमूर्ध्व सुहार्थे उता । तासिं सेढीण विष्कम्भमूर्ध्व अगुलविदियवग्गमूळ
 तदियवग्गमूळगुणिदेव इदि एसा सोहम्मीसाणदेवविष्कम्भमूर्ध्व सुहार्थे पुचा । एरु वि
 नेरुय मवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छद्द्विपरूपेण विष्कम्भमूर्ध्वो एदाओ धव पुचाओ ।
 एवं च न मज्जे, सामप्यविसेसपरूपेणानेयचविरोहादो । तम्हा एरु पुचविष्कम्भमूर्ध्वदि
 उवियाहि सुहार्थपुचविष्कम्भमूर्ध्वदि वा अवियाहि हावप्पमिदि चोदगो मपदि । एरु
 परिहारो पुचदे । जीवद्वयपुचविष्कम्भमूर्ध्वो संपुष्पाओ सुहार्थमिदि पुचविष्कम्भमूर्ध्वो

श्रुति—सामान्यसे जीवराशिके प्रमाणका प्रकरण करनेवाले सुहार्थके द्वारा
 मारकी सौधर्म-देशान और मवणवासी देवोंकी जो विष्कम्भमूर्ध्वो कही हैं स्पृता और
 अधिष्ठासे रहित वे ही विष्कम्भमूर्ध्वो यहाँ जीवद्वयमें भी मारकी सौधर्म-देशान और
 मवणवासी देवोंसंख्या मिथ्याएहि जीवराशिकी प्रकरणमें कही हैं । अग्रे इसी विषय
 स्पष्टीकरण करते हैं—सूर्यगुहके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करके पर
 जितना सध्य आवे उतनी सुहार्थमें सामान्य मारकीयोकी विष्कम्भमूर्ध्वो कही है । मवण
 वासियोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगमेवियां बतलाई हैं उन जगमेवियोंकी विष्कम्भमूर्ध्वो
 सूर्यगुहके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करके पर जितना सध्य आवे उतनी है,
 यह मवणवासियोंकी विष्कम्भमूर्ध्वो सुहार्थमें कही है । सौधर्म और देशान कस्यवासी
 देवोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगमेवियां बतलाई हैं उन जगमेवियोंकी विष्कम्भमूर्ध्वो
 सूर्यगुहके द्वितीय वर्गमूलके तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो सध्य आवे उतनी हैं,
 वह सौधर्म और देशान कस्यवासी देवोंकी विष्कम्भमूर्ध्वो सुहार्थमें कही है । यहाँ जीवद्वयमें
 भी मारकी, मवणवासी और सौधर्म-देशान मिथ्याएहि जीवोंकी विष्कम्भमूर्ध्वो ये ही
 (सुहार्थमें कही हुई) कही हैं । परन्तु यह कथन धरित नहीं होता है क्योंकि सामान्य
 प्रकरण और विशेष प्रकरण इन दोनोंके एक माननेमें विरोध व्यता है । अतएव जीवद्वयमें
 जो विष्कम्भमूर्ध्वो कही गई हैं वे सुहार्थमें कही गई विष्कम्भमूर्ध्वोसे स्पृता होनी चाहिये
 वा सुहार्थमें कही गई विष्कम्भमूर्ध्वो यहाँ जीवद्वयमें कही गई विष्कम्भमूर्ध्वोसे अधिक
 होनी चाहिये ऐसा हीचकारका कहना है ।

समाधान—अग्रे इस हीचकार परितार करते हैं—जीवद्वयमें जो विष्कम्भमूर्ध्वो
 कही गई हैं वे संपूर्ण हैं और सुहार्थमें कही गई विष्कम्भमूर्ध्वो जीवद्वयमें कही गई
 विष्कम्भमूर्ध्वोसे साक्षि हैं ।

मूर्छ । सदार-सहस्तरकण्ये चतुष्टयमममूर्छ भागहारो इवदि । सासमदीर्घं पमाणपुरुषया वि सचमपुद्गविपुरुषणाप समाना । विसेसपुरुषं पुरदो वचइस्तामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेषाविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइद्वि-
प्यहुदि जाव असंजदसम्माइद्वि ति दम्बपमाणेण केवडिया, पलिदो-
वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसरो काखवाची श्वे, तेण पुच कलुग्गाहण ण कर्द । दम्बपमाणपुरुषणाप
श्वे अत्वविच्छयो जादो चि एरव खेच-कालेहि परुवणा न कदा । 'पलिदोवमस्स असं
खेज्जदिभागो' इदि सामण्येण पुचे दम्बपमाणेण मुहु पिच्छयो न जादो चि एरव
विच्छयवत्प्रापणं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' चि मामहारपुरुषणा विहज-
माणपुरुषणा न कदा । एरव आहिरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खायं पुरदो मविस्तामो ।

अणुहिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माइद्वि
दम्बपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि
पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगन्मोक्षीका आणहार जगन्मोक्षीका पांशुकां वर्गमूक है । शतार और सहस्रार करणमें जगन्मोक्षीका
मात्रहार जगन्मोक्षीका बीया वर्गमूक है । सातकुमारसे लेकर सहस्रारतक सासद्वयसम्पन्नादि
आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टता भी सातवीं पृथिवीके सासद्वयसम्पन्नादि आदि
जीवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टताके समान है । विशेष प्रकृष्टताको आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्रापतसे लेकर नौ त्रैलोक्य तक विमानवासी देवोंमें मिथ्याइदि
गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पन्नइदि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पन्थोपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव
राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पन्थोपम अपहत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त राज्य काखवाची ही है इसलिये स्वर्गमें पुण्यरूपसे काक पक्षी ग्रहण नहीं
किया । प्रकृतमें द्रव्यप्रमाणके प्रकृष्टण करनेसे ही कार्यका निश्चय हो जाता है इसलिये पार्श्व
पर क्षेत्रप्रमाण और काकप्रमाणके द्वारा प्रकृष्टता नहीं थी । पन्थोपमके असंख्यातवें भाग हैं
इसप्रकार नामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है
इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करनेके लिये इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे
पन्थोपम अपहत होता है इसप्रकार आणहारप्रकृष्टता और विमम्पमाणपराधिकी प्रकृष्टता थी ।
इस विषयमें व्याख्यायोंके उपदेशका आशय करके विशेष व्याख्याय आगे करेंगे ।

अमुदिश विमानसे लेकर अपराधित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्प

सासणसम्माइट्टि-सम्माभिच्छाइट्टि-असजदसम्माइट्टी ओर्थ

॥ ६९ ॥

सोहम्मीसायकप्यवासियदेवेसु देवर्गाए इदि च दुवयममशुबइरे । एसा दम्भ
द्वियणमस्सिऊण परूवणा उवा । पच्चवद्वियणममस्सिऊण एदेसि परूवण
पुरवो मविस्सामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार सहस्सारकप्यवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुढवीए गेरइयाण मंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि पुणे स जहा इदि एदस्स जल्पो न वत्तम्भो किं तु उवमत्थे जहा
सहो वेत्तम्भो । जहा सत्तमाए पुढवीए गेरइयाण पमाण परूविदं तथा सणक्कुमारादि
देवाण पमार्यं परूवेदम्भं । जवदि आइरियपरपरागदोषदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो ।
तं जहा—

सणक्कुमार माहिदे अमसेहीए भागहागे सेहीए हेहा एकारसवग्गमूल । बम्भ-बम्भो
तरकप्पे जवमवग्गमूल । छांठव काविहुकप्पे सत्तमवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्कप्पे पंचमवग्ग

सासादनसम्यग्घटि, सम्यग्मिध्याघटि और असंयत्तसम्यग्घटि सौचर्म देसान
कल्पवासी देव सामान्य प्रकृपवाके समान पत्थोपमके असम्यावर्णे भाग हैं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसायकप्यवासियदेवेसु देवर्गाए इन दो शब्दोंकी पदां अनुवृत्ति होती है ।
पदां द्रव्याधिक नपका आश्रय करके यह प्रकृपणा कही है । पर्व्याधिक नपका आश्रय करके
इन्की प्रकृपणा भी कहेते ।

त्रिसप्तकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोकी प्रकृपणा कही गई है उसीप्रकार
सनत्कुमारसे लेकर छतार और सहस्सार तक कल्पवासी देवोंमें मिध्याघटि देवोंकी
प्रकृपणा है ॥ ७० ॥

सूचमें जहा इसप्रकार कहने पर स जहा इसप्रकार बर्ण नहीं कहना चाहिये, किंतु
यहां उपमाकय बर्णमें जहा शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्रेत हुआ कि
त्रिसप्तकार छातवीं पृथिवीमें नारकियोका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार प्यदि
देवाके प्रमाणका बयन करना चाहिये । अब आगे आचार्य परंपरासे जाये हुए उपदेशके
अनुसार विशेष प्रकृपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सावात्कुमार और माहेन्नु स्वर्गमें जगमेजीवा भागहार जगमेजीके नीचे ग्यारहवां वर्ग-
मूल है । इस नीर ब्रह्मोत्तर कल्पमें जगमेजीका भागहार जगमेजीका नीचां वर्गमूल है । छांठव नीर
कपिष्ठ कल्पमें जगमेजीका भागहार जगमेजीका सातवां वर्गमूल है । शुक्क नीर महाशुक्क कल्पमें

मूल । सदार-सहस्तरकप्पे षट्तरयवग्गमूलं मागहारो इवदि । सासणदीर्घं पमाणपरुषणा
पि सत्तमपुट्ठविपरुवणाय समाना । विसेसपरुषणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेणविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-
प्पट्ठि जाव असजदसम्माइट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-
वमस्स असखेज्जदिमागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसरो काष्ठवाची चेव, तेय पुव काठग्गइण य कर्द । दम्बपमाणपरुषणाए
चेव अत्थणिच्चओ जादो पि एत्थ खेत्त-काठेहि परुषणा ण कइ । 'पलिदोवमस्स अस्स
खेज्जदिमागो' इदि सामप्पेय पुत्ते दम्बपमाणेण मुहु निच्चओ य जादो पि तरय
निष्पयटप्पायणं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेय' पि मागहारपरुषणा विहल
मानपरुषणा य कइ । एत्थ आहरिओवसमस्सिस्सण विसेसवक्खणं पुरदो मप्पिस्सामो ।

अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माइट्ठि
दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो । एदेहि
पलिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

अपमेणीका मागहार अगमेणीका पाँचवाँ वर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें अपमेणीका
मागहार अगमेणीका बीया वर्गमूल है । सात्तकुमारसे लेकर सहस्रारतक सात्तानसम्पगद्वि
आदि गुणस्थानवर्ती बीबोंके प्रमाणकी प्रणयना भी सातवीं पृथिवीके सात्ताइनसम्पगद्वि आदि
बीबोंके प्रमाणकी प्रणयनाके समान है । विशेष प्रकल्पनाको आगे बतलावेंगे ।

मानव और प्राणतसे लेकर नौ प्रलयक तक विमानवासी दूर्वा में मिथ्याद्वि
गुणस्थानसं लेकर असंयतसम्पगद्वि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें बीब प्रत्य
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पस्यापमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त बीब
राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पस्यापम अपहत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त दम्ब काष्ठवाची ही है, इसलिये स्वर्गमें पुराणकल्पसे जाल पदक प्रहण नहीं
किया । प्रकृतमें द्रव्यप्रमाणके प्रकल्प करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है इसलिये यहाँ
पर क्षेत्रप्रमाण और काष्ठप्रमाणके द्वारा प्रकल्पना नहीं की । पस्यापमके असंख्यातवें भाग हैं
इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अर्धही तरह निश्चय नहीं हो पाया है
इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानके लिये इन बीबराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे
पस्यापम अपहत होता है इसप्रकार मागहारप्रकल्पना और विमन्यमाणपद्वि प्रकल्पना की ।
इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्या आगे करेंगे ।

अनुदिष्ठ विमानसे लेकर अपरात्रिष्ठ निम्नतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्प

सासणसम्माइट्टि-सम्माभिच्छाइट्टि-असंजदसम्माइट्टी ओष

॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगइए इदि य दुमयजमणुबड्डे । एसा इम्व
द्वियणयमस्सिठ्ठण परूवणा उचा । पच्चमपट्टियणयमास्सिठ्ठण पदेसि परूवणं
पुरदो मज्झिमाओ ।

सणक्कुमारप्पट्टि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुढवीए जेरइयाणं मंगो ॥ ७० ॥

एएअ जहा इदि पुणे सं जहा इदि एइस्स अएओ ण वचन्वो किं तु उवमए जहा
सरो वचन्वा । जहा सत्तमाए पुढवीए जेरइयाण वमार्जं परूवइ तहा सणक्कुमारादि
देवाण वमार्जं परूवेइए । जवरि आहरियपरंपरागदोरदेवेण विसेमपरूवणं कस्सामो ।
तं जहा—

सणक्कुमार माहिदे अगसेवीए मागहारो सेवीए हेइ। एकारसवगमूल । बम्ह-बम्हो
सरकप्पे ववमवगमूल । सांवर काविट्टकप्पे सत्तमवगमूल । सुक्क-महासुक्ककप्पे ववमवग-

सासादनसम्पगइट्टि, सम्पगिमप्याइट्टि आर असंयतमप्याइट्टि सौचर्म पेसान
कप्पवासी दव सामाम्य प्ररूपणाक समान परूपोपमके असम्पावर्गे माग हैं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगइए इम वा सग्वोकी यहाँ अनुगृति होती है ।
यहाँ द्रव्याधिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्वोधिक नयका आश्रय करके
इमकी प्ररूपणा भागे कहेंगे ।

त्रिसप्रकार सातवीं वृषिबीमे नारकियोकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार
सनरुमारमे सत्तर अक्षर और सहस्सार तक कल्पवामी देवोंमें विप्याइट्टि देवोंकी
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

ग्रन्थमें जहा इसप्रकार कहने पर 'त जहा' इसका जय नहीं कहना चाहिये किंतु
यहाँ उपमाकर मर्त्यमें जहा साक्षात् महण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि
त्रिसप्रकार सातवीं वृषिबीमे नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानरुमार अर्थात्
देवोंके प्रमाणका बयान करना चाहिये । जब भागे म जाय परंपरासे जाय हुए उपदेशसे
अनुसार बिरोध प्रकटपना करना है । यह इसप्रकार है—

सानरुमार और महाइन्द्र वर्णमें अगधेवीका मागहार अगधेवीके सौव ग्यारहवां वम
मूल है । अम धार प्रयोसर वर्णमें अगधेवीका मागहार अगधेवीका नववां वममूल है । सानय और
वाविठ वर्णमें अगधेवीका मागहार अगधेवीका सानवी वममूल है । शुक्क और महाशुक्क वर्णमें

मूलं । सहा-सहस्रारकल्पे चतस्रश्चामूल मागहारो ह्यदि । सासगदीर्घं पमाणपरूषणा वि सप्तमपुडविपरूषणा समाणा । विसेसपरूषण पुरदो वचस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाहट्ठि-
प्यहुहि जाव असजदसम्माहट्ठि ति द्व्यपमाणेण केवडिया, पल्लिदो-
वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसदो कासवासी चैव, तेण पुत्र कासगाहण ण कर्त्तुं । द्व्यपमाणपरूषणाए
चैव अत्थमिच्छो जादो चि एरय खेच-कालेहि परूषणा ण कदा । 'पल्लिदोवमस्स अर्त्त
खेज्जदिभागो' इदि सामग्गेण पुत्ते द्व्यपमाणेण सुहु विच्छओ ण जादो चि एरय
मिच्छयठप्पायणं 'एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण' चि मागहारपरूषणा विहज
माणपरूषणा च कदा । एत्थ आहिरओवपसमस्सिऊम विसेसवक्खायं पुरदो मयिस्सामो ।

अणुदिस जाव अचराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माहट्ठि
द्व्यपमाणेण केवडिया, पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि
पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

अपमेयीक मागहार अगमेयीका पाँचवाँ वगमूल है । सहार और सहस्रार कल्पमें अगमेयीका
मागहार अगमेयीका बीया वर्गमूल है । सासगहारसे लेकर सहस्रारतक सासगहनसम्पत्ति
आदि गुणस्थानमर्थों देवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टता भी सातवीं पृथिवीके सासगहनसम्पत्ति आदि
जीवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टताके समान है । विशेष प्रकृष्टताको आगे बतलावेंगे ।

मानस और प्राणतसे लेकर नौ ग्रहणक तक विमानवासी देवोंमें मिथ्याघटि
गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्पत्ति गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव इन्द्र
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पर्यापमके अर्थसंख्यातमें माग हैं । इन उपर्युक्त जीव
राशियोंके द्वारा अन्तर्हर्तसे पर्यापम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहुत्त शब्द कासवासी ही है । इसलिये स्वर्गमें पृथक्कृतसे बास पदका ग्रहण नहीं
किया । ग्रहणमें प्रत्यपमाणके प्रकृष्टता करनेसे ही पर्यवस मिद्वय हो जाता है । इसलिये यहाँ
पर क्षेत्रमात्र और कासप्रमाणके द्वारा प्रकृष्टता नहीं की । पर्यापमके मतक्यातमें माग हैं ।
इसप्रकार सामान्यसे कहने पर प्रत्यपमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह मिद्वय नहीं हो पाता है
इसलिये इस विषयमें मिद्वयके उत्पन्न करानके लिये इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्हर्तसे
पर्यापम अपहृत होता है । इसप्रकार मागहारप्रकृष्टता और विमज्जमायराशि की प्रकृष्टता की ।
इस विषयमें आवातोंके उपदेशका आशय करके विशेष व्याख्यात आगे करेंगे ।

अनुदिस विमानसे लेकर अपरात्रित विमानतक उनमें रहनेवाले अर्धपतसम्प

एतय असद्वदसम्माइद्विद्वयपरूषणं समगुणद्वानाण तत्तथाभाष स्येदि । न च
 सतं न परूषेति सिधा, तमिमप्रिणत्तप्यमगादो । एतय आइरिभोवपसेण समदेवगुण
 पद्विबन्धाणं त्रिसेसपरूषण मणिस्मामा । स अहा- देवअसद्वदसम्माइद्विअवहारकात्त-
 मावसियाण अंसंखेज्जदिमाण्ण खंडिय तत्थेगयउठ तमिह पेव पक्खिउत्ते सोहम्मीसत्त-
 असद्वदसम्माइद्विअवहारकात्तो हादि । तमिह भावसियाण अमंखज्जदिमाण्ण गुणिदे
 सम्मामिन्हाइद्विअवहारकात्तो हादि । कुदो ? उवक्कमणकात्तमदादो । तमिह संखेज्जस्तेहि
 गुणिदे सासणसम्माइद्विअवहारकात्तो होदि । कुदो ? उवक्कमणकात्तमदादा तमयगुणं
 पद्विबन्धमाजराविंससश वा । तमिह भावसियाण अंसंखज्जदिमाण्ण गुणिद सव
 क्कमार माईद्वअसद्वदसम्माइद्विअवहारकात्तो होदि । कुदा ? सुहक्कम्माइयिजीववहुत्ता
 मावादो । एव पेयव्व जाव सदा-सहस्सतो सि । तस्म सासणसम्माइद्विअवहारकात्त
 मावसियाण अमंखेज्जदिमाण्ण गुणिदे आइसियदेवअमंजदसम्माइद्विअवहारकात्तो हादि ।

गच्छि देव ब्रह्मप्रमामकी अपेक्षा कितन हैं ? पत्सोपमके असस्यातवें माग हैं । इन
 उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्गृहीतं पत्सोपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदिश भाषि विमार्भोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिजी प्रकृपवा नहीं पर होय
 गुणस्यानोंके अभावक। सूचित करती है। यदि कोई कहे कि यहाँ पर होय गुणस्यानोंके प्रमावकी
 प्रकृपवा नहीं की होगी सो बात नहीं है क्योंकि जिनद्वय विद्यमाव मर्यादा प्रकृपव
 नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो। सत्यता क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अज्ञितपनेका प्रसंग
 न्य जाता है । मर यहाँ भाषावोंके उपदेशालुसार रूप्य गुणस्यानमतिपन्न देवोंकी
 विशेष प्रकृपवाको कहते हैं । यह इनप्रकार है— देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकात्तको
 भावकीके असंख्यातयें मागसे लटित करके उनमेंसे एक लीङ्गके वसी देव असंयतसम्यग्दृष्टि
 अवहारकात्तमें मिला देने पर सौधर्म और येशानसम्बन्धी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकात्त
 होता है । इसे भावकीके असंख्यातयें मागसे गुणित करने पर सौधर्म और येशानसम्बन्धी
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकात्त होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंके उपक्रम्य कात्तसे सम्य
 ग्मिध्यादृष्टियोंके उपक्रम्य कात्तमें मर है । सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके अवहारकात्तको संख्यातसे गुणित
 करने पर सौधर्म और येशानसम्बन्धी सासाधनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकात्त होता है, क्योंकि
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके उपक्रम्य कात्तसे सासाधनसम्यग्दृष्टियोंके उपक्रम्य कात्तमें मर है । अथवा
 वक्त होनी गुणस्यानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें निरोपता है । सौधर्म और येशान सासा
 धनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकात्तको भावकीके असंख्यातयें मागसे गुणित करने पर सावत्तुमार
 और माईद्व असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकात्त होता है क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता
 होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं । इसीप्रकार शतार सहस्रार कस्यतत्त के जाना जाहिने ।
 इन शतार-सहस्रार कस्यके सासाधनसम्यग्दृष्टिसम्बन्धी अवहारकात्तको भावकीके असंख्यातयें
 मागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकात्त होता है क्योंकि

पाण्डमिच्छाद्विभ्रमहारकालो होदि । कुदा ? त्रिगतिर्गं धनज दम्भसंज्ञमेज द्विदसद्वारा
 बह्वर्गं मनुष्येसु मनुष्यलभावे । तस्मि संखेज्जस्वेदि गुणिदे आरण्यपुद्गमिच्छाद्विभ्रमहार
 कालो होदि । एत्थं करण पुष्प व वत्तत्त । एवं पयध्वा जाव उवरिमउवरिमगेवज्ज
 मिच्छाद्विभ्रमहारकालो सि । तस्मि संखेज्जस्वेदि गुणिदे गवाणुदिमससद्वारमम्माद्वि
 भ्रमहारकालो होदि । तस्मि संखेज्जस्वेदि गुणिदे अणुत्तरमित्रय बह्वयत संयत-अवराइ
 विमाणवासिपयससद्वारमम्माद्विभ्रमहारकालो होदि । समावलि राए असंखेज्जदिमाण गुणिदे
 आणद-पाणदसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो होदि । कुदा ? उव्वमगशीनाप पोषादा ।
 तस्मि संखेज्जस्वेदि गुणिदे आरण्यपुद्गसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो होदि । एव पयध्वा
 जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो सि । तस्मि संखेज्जस्वेदि गुणिदे
 आयद-पाणदसासपसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो होदि । कुदा ? पोयुरद्वरगकालादा । तस्मि
 संखेज्जस्वेदि गुणिदे आरण्यपुद्गसासपसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो होदि । एव पयध्वा जाव
 उवरिमउवरिमगेवज्जसासपसम्मामिच्छाद्विभ्रमहारकालो सि । एददि अवहारकालो सि

अवहारकाळ होता है क्योंकि त्रिगतिपक्षों स्वीकार करके द्रव्यसंपदमें साध स्थित द्रव्य
 बहुतसे संपत्तिका मनुष्योंमें सञ्ज्ञा नहीं पाया जाता है । आणत और प्राणतसंबन्धी मिष्याद्वि
 भ्रमहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अणुतके मिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ
 होता है । यहाँ कारण पहिलेके समान कहना चाहिये अर्थात् त्रिगतिपक्षों स्वीकार करके
 द्रव्यसंपदमें साध बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं इसलिये आरण और अणुतमें कम मिष्याद्वि
 पाये जाते हैं । इसीप्रकार उपरिम अपरिम त्रिवेपकके मिष्याद्वि भ्रमहारकाळ तक के ज्ञाना
 चाहिये । अपरिम उपरिम त्रिवेपकके मिष्याद्वि भ्रमहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर
 नौ अनुदिशोंके अर्धपतसम्पन्नधियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने
 पर विजय वैजयन्त जयन्त और अपयन्त इन चार अनुत्तर विमानवासी अर्ध
 पतसम्पन्नधियोंका अवहारकाळ होता है । इसे भावकोंके अर्धपतसे माणसे
 गुणित करने पर आणत और प्राणतके सम्भगिमिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ होता है
 क्योंकि, यहाँ पर सम्भगिमिष्यात्वके साथ उन्मत्त होनेवाला जीव पाव है । आणत और प्राणतके
 सम्भगिमिष्याद्विषयोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अणुतके
 सम्भगिमिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार अपरिम अपरिम त्रिवेपकके
 सम्भगिमिष्याद्विसंबन्धी अवहारकाळतक के ज्ञाना चाहिये । अपरिम अपरिम त्रिवेपकके
 सम्भगिमिष्याद्वि भ्रमहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर आणत और प्राणतके सासाधन
 सम्पन्नधियोंका अवहारकाळ होता है क्योंकि, सासाधनसम्पन्नधियोंका उपक्रमकाळ स्तोत्र
 है । आणत और प्राणतके सासाधनसम्पन्नधिवि भ्रमहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर आरण
 और अणुतके सासाधनसम्पन्नधियोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार अपरिम अपरिम

१ देवता अवस्था होती अर्धवेप हानि अवहरित । तत्रैव न पश्चिमे लोहवीहान्य अवहता न होमव

दादमो ज्ञानिय पचम्मा । सम्मद्वयगुणपडिन्नय्यात्थ ओममंगो इदि भेषिय आणदादि उदरिमगुणपडिन्नय्याण पडिमेन्नमस्स अमखेज्जदिमागो ' एदेहि पडिदोवममन्नहिरदि अंतोमुद्दुपेण ' इति विरोधिय किमिद्दु बुधदे ? एव भणत्तस्स अहिप्पाओ परुविज्जदे । त अहा — ओघमंगो इच्छेदेण आणदुत्तादो सुत्तमिदमणत्थर्य । अणरमय च आणावय हेदि । किमदेण ज्ञाप्यावित्ति ? सोहम्मअसमदसम्माइडिअवहारकातो आणलियाए असंखेज्जदिमागो । तत्थतणसइयसम्माइड्डीणमवहारकातो संखेज्जावलिपमेत्तो । एदे दो वि अवहारकाते मोत्तण अवसेसगुणपडिन्नय्यात्थ सम्मे अवहारकाला असंखज्जावलिमेत्ता विठल्लत्ताइणो अंतोमुद्दुत्तसइण बुधत्ति चि आणाविद, ततो ज्ञायरथयमिद्दु सुत्तं ।

प्रत्येकके सासाइनमध्यव्यादि अवहारकामतक छे ज्ञाना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा कठिन सादिकका कथन जान कर करना चाहिये ।

सब गुणस्थानप्रतिपक्ष दोनोंका प्रमाण सामान्य प्रकरणके समान है एसा कथन करके गुणस्थानप्रतिपक्ष इन ज्ञानन भावि दोनोंके द्वारा अन्तमुद्गत कालसे पक्षोपम अपहृत होता है इतनेसे विरोधित करने गुणस्थानप्रतिपक्ष ज्ञानतावि दोनोंका प्रमाण पक्षोपमके असंख्यातयें मागप्रमाण किसलिये कहा । आगे देना कथन करनेवालेके जमियापका प्रकरण करने है । यह इसप्रकार है—

सब गुणस्थानप्रतिपक्ष दोनोंका प्रमाण सामान्य प्रकरणके समान है ' इतनेमात्रसे संबन्धित होमेक कारण यह सूत्र अनर्थक है किम भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी स्वयम्भ नियमका कापक होता है ।

श्लोक—इससे क्या कापन होता है ।

समाधान—सीधर्म असंखतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल आवडीके असंख्यातयें माग है । एहोंके क्षायिक सम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल संप्र्यात आवडीमात्र है । इन दो अवहारकालोंको छोड़कर दोष गुणस्थानप्रतिपक्षोंके संपूर्ण अवहारकाल धर्मकयात अपवडीमात्र है, अवहारकालकी विपुलताको जाननेवाले काकार्य अन्तमुद्गर्त शास्त्रमे देना कहते हैं यह इस सूत्रसे क्षापित होता है इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है ।

तत्परावतज्जोय व तत्तम्वनंइतिरे । उपरि अर्तवद विरुद्ध-संशयवत्त्वान् अवहाए ॥ सीरवतज्जताः ज्ञानि-वप मरय-तिमिष पुत्ताय । अतिर विस्ते तत्तं नंवावतज्ज तत्तये ॥ परवतामानवत्त ज्ञानवत्त्वान् आरयवदुहि । अतिप्रमेयवत्तं वत्तावतनंवावतज्जवत्ता ॥ तत्ती तत्तवत्ता वातावतज्जिज्ञान विरवति । वत्ताव तत्तवत्ता ज्ञानविरते वत्तवत्ता ॥ इत्थं तत्तवत्ता तत्तवत्ताव हीमि नंवावत्ता । तत्तवत्ता वत्ता वत्तवत्तावत्ता वत्ता ॥ नो जी ११५-१७

पाण्डमिच्छाद्विभवहारकालो होदि । कुत्रो ? जिणतिर्गं चत्तु इव्वसंजमेण विदसददाण
 वइमं मणुसेसु अणुचरलमावो । तस्मि संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरगण्णुदमिच्छाद्विभवहार
 कालो होदि । एरव कारणं पुण्ण व वचण्ण । एव पेयवण्ण आण उवरिमउवरिमगेवज्ज
 मिच्छाद्विभवहारकालो ति । तस्मि संखेज्जरूहेहि गुणिदे णवाणुदिसअसंजमसम्मिच्छादि
 ववहारकालो होदि । तस्मि संखेज्जरूहेहि गुणिदे अणुचरविषय वइअयस-अयत भवराइद
 विमानवासियअसंजदसम्मिच्छाद्विभवहारकालो होदि । तमावलि राए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे
 जाणद-पाणदसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । कुत्रो ? उवक्कमज्जीवाणं पोवचादो ।
 तस्मि संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरगण्णुदसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । एवं पेयवण्णं
 आण उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो ति । तस्मि संखेज्जरूहेहि गुणिदे
 आणद-पाणदसासणसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । कुत्रो ? वोपुवक्कमज्जीवाणं पोवचादो । तस्मि
 संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरगण्णुदसासणसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । एव पेयवण्णं नाव
 उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो ति । एवेहि अवहारकासेहि तंदि

अवहारकाळ होता है क्योंकि जिनकिंमको स्वीकार करके द्रव्यसंपदके साथ स्थित हुए
 बहुतसे संघट्टोंका मनुष्यमें सञ्ज्ञान नहीं पाया जाता है । आगत और प्राणतत्त्वका स्वीकार
 अवहारकाळको संघट्टातसे गुणित करने पर आरग और अणुतत्त्वके सिध्दाद्विषयोंका अवहारकाळ
 होता है । यहाँ कारण यहके समान कहना चाहिये अर्थात् जिनकिंमको स्वीकार करके
 द्रव्यसंपदके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं इसलिये आगत और अणुतत्त्वमें कम सिध्दाद्वि
 षये होते हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम विषेयको सिध्दाद्वि अवहारकाळ तक ले जाना
 चाहिये । उपरिम उपरिम विषेयको सिध्दाद्वि अवहारकाळको संघट्टातसे गुणित करने पर
 नौ अनुदिशोंके अर्धपतसम्पदविषयोंका अवहारकाळ होता है । इसे संघट्टातसे गुणित करने
 पर विज्जय वैज्जयन्त जयन्त और अपराजित इन चार अनुचर विमानवासी अर्ध
 पतसम्पदविषयोंका अवहारकाळ होता है । इसे जावळीके अर्धपतसे भागसे
 गुणित करने पर आगत और प्राणतत्त्वके सम्पग्मिध्दाद्विषयोंका अवहारकाळ होता है
 क्योंकि, यहाँ पर सम्पग्मिध्दाद्वि के साथ अणुध होनेवाले जीव पाए हैं । आगत और प्राणतत्त्वके
 सम्पग्मिध्दाद्विषयोंके अवहारकाळको संघट्टातसे गुणित करने पर आरग और अणुतत्त्वके
 सम्पग्मिध्दाद्विषयोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम विषेयको
 सम्पग्मिध्दाद्विसंज्ञा अवहारकाळतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम विषेयको
 सम्पग्मिध्दाद्वि अवहारकाळको संघट्टातसे गुणित करने पर आगत और प्राणतत्त्वके सासाधन
 सम्पदविषयोंका अवहारकाळ होता है क्योंकि, सासाधनसम्पदविषयोंका उपरिमपदका स्वीक
 र्ण । आगत और प्राणतत्त्वके सासाधनसम्पदविषयोंका अवहारकाळको संघट्टातसे गुणित करने पर आरग
 और अणुतत्त्वके सासाधनसम्पदविषयोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१. देवान अवहता होति अर्धैव तानि अवहति । तेष व वसिष्ठे होहन्तीत्यन अवहता ॥ शंभर

आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो पि । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा आयद-पाणदमिच्छा-
इड्डिणो होति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुदमिच्छाइड्डिणो होति । एव
जेयम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो पि । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा अणुरिस
मधसदसम्माइड्डिणो होति । सेससंखेज्जखंडे कए बहुमागा अणुवरविप्रप-वद्वपत मयंत
मपरइद्वसदसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आयद-पाणदसम्मा
मिच्छाइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुदसम्माइड्डिणो
होति । एव जेयम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो पि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा
आयद पाणदसासुमसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुद
सासणसम्माइड्डिणो होति । एवं जेयम्ब आधुवरिममज्झिमगेवन्त्रसासणसम्माइड्डि पि ।
सेससंखेज्जखंडे कए बहुमागा ठवरिमठवरिमगेवन्त्रसासणसम्माइड्डिणो होति । एव
खंडं सम्मइमिद्विसदसम्माइड्डि होति । एवं मागामाग समस ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रिवेपक तक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रिवेपकके अक्ष
पतसम्पगद्विषोंके प्रमाण बानेके अनन्तर जो एक माग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर
बहुमागप्रमाण आगत और प्राणतके मिथ्याएहि देख है । शेष एक मागके संख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुमाग आरण और अणुतके मिथ्याएहि देख है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम
त्रिवेपकतक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रिवेपकके मिथ्याएहिप्रमाणके अनन्तर
जो एक माग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुमाग अनुदियके
अक्षपतसम्पगद्वि होत है । शेषके अक्षपत खंड करने पर बहुमाग विप्रप-वैजयन्त,
जयन्त और अपराधित इन बार अनुत्तर विमानोंके अक्षपतसम्पगद्वि देख है । शेषके
संख्यात खंड करने पर बहुमागप्रमाण आगत और प्राणतक सम्पगमिथ्याएहि देख है । शेष एक
मागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण आरण और अणुतके सम्पगिथ्या
एहि देख है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रिवेपक तक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम
त्रिवेपकके सम्पगमिथ्याएहिषोंके प्रमाणके अनन्तर जो एकमाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण आगत और प्राणतके सासाहनसम्पगद्वि देख है । शेष एक मागके
संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण आरण और अणुतक सासाहनसम्पगद्वि देख
है । इसीप्रकार उपरिम मध्यम त्रिवेपकके सासाहनसम्पगद्विषोंके प्रमाण बाने तक छे जाना
चाहिये । उपरिम मध्यम त्रिवेपकके सासाहनसम्पगद्विषोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक माग
शेष रहे उसके अक्षपत खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण उपरिम उपरिम त्रिवेपकके
सासाहनसम्पगद्वि देख है । शेष एक मध्यमाय सचापसिद्धिके अक्षपतसम्पगद्वि देख है । इस-
प्रकार आगामाग समान हुआ ।

सर्वसिद्धिविमानवासियदेवा दन्वपमाणेण केवढिया,
संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मनुसिमीरासीदो तिठणमेचा हवति ।

मायामागे वचस्सामो । सम्भवेवरासिमसंखेज्जलंखे कए तत्थ बहुलंखा जोए
सियदेवमिच्छाइही होति । सेसमसंखेज्जलंखे कए तत्थ बहुलंखा बाणवैतरमिच्छाइही
होति । सेसमसंखेज्जलंखे कए बहुमागा सोहम्मीसाणमिच्छाइही होति । एवं बाए
सदार-सहससारमिच्छाइहि ति । सेसमसंखेज्जलंखे कए बहुमागा सोहम्मीसाणमसंखे
सम्माइही होति । सेस संखे-ज्जलंखे कए बहुमागा सम्मामिच्छाइहिणो होति । सेसम
संखेज्जलंखे कए बहुमागा सासणसम्माइहिणो होति । एवं सणककुमार-माहिंदप्पहुदि
बाए सहससारो ति जेयम्भ । तदो जोइसिय-बाणवैतर मणवासियएणि जेयम्भ । पुनो
सेसस संखेज्जलंखे कए बहुलंखा आणद-पाणद-संखेज्जलंखेसम्माइहिणो होति । सेसस
संखेज्जलंखे कए बहुलंखा आरण-पुद-जम्भद-सम्माइहिणो होति । एवं जेयम्भ

सर्वासिद्धि विमानवासी देव प्रभ्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सम्पात हैं ॥७३॥

सर्वासिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनिर्योके प्रमाणके तिगुने हैं ।

आगे प्रामाण्यको बतलाते हैं— सर्व देवराशिसे असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहु प्रामाण्यमान ज्योतिषी मिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुमाग प्रमाण मिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुमागप्रमाण सीधर्म और देशान्तर कल्पके मिथ्यावृत्ति देव हैं । इसीप्रकार शतार और
सहस्रार कल्पके मिथ्यावृत्ति देवों तक के जाना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यावृत्ति
प्रमाणके अनन्तर जो एक माग होय रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण
सीधर्म और देशान्तर कल्पके असंखतसंख्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड
करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण नहींके सम्ममिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण नहींके साक्षात्प्रमाणसंख्यावृत्ति देव हैं । इसीप्रकार
कालकुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतक के जाना चाहिये । सहस्रार कल्पसे
अग्रे ज्योतिषी बाणवैतर और मणवासी देवों तक यही काम के जाना चाहिये । पुनः
मणवासी साक्षात्प्रमाणनिर्योके प्रमाणके अनन्तर जो एक माग होय रहे उसके खंड
करने पर बहुमागप्रमाण आगत और प्रणतके असंखतसंख्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण प्रारण और अच्युतके असंखतसंख्यावृत्ति देव हैं ।

अप्यबहुत्र विविध, सत्त्वाण परत्वाण सञ्चपरत्वाण चेदि । सत्त्वाणे पयर्द । सम्बन्धो देवमिच्छाद्विभवहारकालो । विच्छेदमूर्ध्व अस्तेन्यगुणा । को गुणगारो ? विच्छेदमूर्ध्व अस्तेन्यदिमागो । को पदिमागो ? सगन्धहारकालो । अहवा सेदीय अस्तेन्यदिमागो अस्तेन्यदिमागि सेदिपदमवगममूलाणि । को पदिमागो ? अवहारकाळ नमो । अहवा अस्तेन्यदिमागि मगगुलाणि । केतिपमेचाणि ? पण्डितसहस्रपंचसय छत्तिस्ववगममूर्ध्वगुलमेचाणि । सेदी अस्तेन्यगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दृष्टमस्तेन्यगुण । को गुणगारो ? सगन्धमूर्ध्व । पदमस्तेन्यगुण । को गुणगारो ? सगन्धहारकालो । सोगो अस्तेन्यगुणो । को गुणगारो ? सेदी । सासनादीर्घ मूतोपमयो । एवं जोइसिय-वाचवैतरण पि जेयम् । मवगवासियार्ण सत्त्वाणे सम्बन्धोवा मिच्छाद्वि विच्छेदमूर्ध्व । अवहारकालो अस्तेन्यगुणो । को गुणगारो ? सगन्धहारकाळस्स अस्तेन्यदिमागो । को पदिमागो ? विच्छेदमूर्ध्व । अहवा सेदीय अस्तेन्यदिमागो अस्तेन्यदिमागि सेदिपदमवगममूलाणि । को पदिमागो । विच्छेदमूर्ध्वविभगो । अहवा वनेगुठ । सेदी

अप्यबहुत्र तीन प्रकारका है स्वस्थान अप्यबहुत्र परत्वाण अप्यबहुत्र और सर्वपरत्वाण अप्यबहुत्र । इनमेंसे स्वस्थान अप्यबहुत्रमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं देव मिच्छाद्वि अवहारकाळ सबसे स्तोत्र है । वनीची विच्छेदमूर्ध्वी अवहारकाळसे अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छेदमूर्ध्वीका अस्तेन्यगुणों भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? अपना अवहारकाळ प्रतिमाग है । मयवा जगमेचीका अस्तेन्यगुणों भाग गुणकार है जो जगमेचीके अस्तेन्यगुण प्रथम वर्गमूमप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अवहारकाळका वर्ग प्रतिमाग है । मयवा अस्तेन्यगुण वनीगुल गुणकार है । वे कितने हैं ? वंसह हजार पांचसौ छत्तीसके बराबर सूर्यगुलप्रमाण हैं । देव विच्छेदमूर्ध्वीसे जगमेची अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाळ गुणकार है । जगमेचीसे मिच्छाद्वि देवोंका प्रमाण अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छेदमूर्ध्वी गुणकार है । देव मिच्छाद्वि मयसे जगमेचर अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाळ गुणकार है । जगमेचरसे वनकोक अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? जगमेची गुणकार है । देव सासनासम्बन्धविच्छेद स्वस्थान अप्यबहुत्र सामान्य प्रकृपणके समान है । इसीप्रकार ग्योतिषी और वायव्यन्तर्यका भी स्वस्थान अप्यबहुत्र से जाना जायिये । मवगवासियोंके स्वस्थान अप्यबहुत्रमें सबसे स्तोत्र मिच्छाद्वि विच्छेदमूर्ध्वी है । सबसे अवहारकाळ अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकाळका अस्तेन्यगुणों भाग गुणकार है प्रतिमाग क्या है ? विच्छेदमूर्ध्वी प्रतिमाग है । मयवा, जगमेचीका अस्तेन्यगुणों भाग गुणकार है जो जगमेचीके अस्तेन्यगुण प्रथम वर्गमूमप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अपनी विच्छेदमूर्ध्वीका वर्ग प्रतिमाग है । मयवा वनीगुल गुणकार है । जगमेची अवहारकाळसे अस्तेन्यगुणी है । गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकल्हमर्द्ध । दम्भमसंखेज्जगुण । को गुणमारो ?
विकल्हमर्द्ध । पदरमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? भवहारकाला । लोगो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? सेदी । सासणादीर्घं मूलेपमगो । सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो पि
सत्थानप्यावहुम चाणिय भेयर्थ्य ।

परत्थाणे पयर्द्ध । सम्भत्थोवो असंखदसम्माद्विद्विभवहारकालो । एवं भेयर्थ्य जाव
पडिदोवमो पि । तदो उवरि मिच्छाद्विद्विभवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सगभवहारकालस्स असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पडिदोवमो । अहवा पदरगुलस्स
असंखेज्जदिमागो असंखेज्जानि छविमंगुलाणि । केचियमेचाणि ? सृषिमंगुलस्स
असंखेज्जदिमागमेचाणि । को पडिमागो ? पडिदोवमस्स सखेउददिमागो । उवरि
सत्थावमगो । भवववासियमाणं सम्भत्थोवो असंखदसम्माद्विद्विभवहारकालो । एवं भेयर्थ्य
जाव पडिदोवमो पि । तदो उवरि भवववासियमिच्छाद्विद्विभवहारकालो असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? सगविकल्हमर्द्ध ए असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पडिदोवमो । अहवा
पदरगुलस्स असंखेज्जदिमागो । असंखेज्जानि छविमंगुलाणि । केचियमेचाणि ? छवि-
मंगुलपडमवनामूलस्स असंखेज्जदिमागमेचाणि । को पडिमागो ? पडिदोवमो । उवरि

है ! अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । उन्हींका द्वय्य जगमेजीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? विष्कंमसूची गुणकार है । प्रथमे जगप्रतक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
भवहारकाल गुणकार है । जगप्रतकसे कोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेजी
गुणकार है । सासत्तलसम्पत्ति आदिका मूलेपके समान स्वस्थान मत्पेवहुत है । सौधर्मसे
लेकर उपरिम प्रियेयकतक स्वस्थान मत्पेवहुत ज्ञान कर ले जाना चाहिये ।

अब परत्थानमे मत्पेवहुत प्रकृत है— असंभवतसम्पत्तिषोका भवहारकाल
सबसे श्लोक है । इसीप्रकार पस्वोपमत्तक ले जाना चाहिये । पस्वोपमके
ऊपर मिच्छाद्विषोका भवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपने भवहारकालका असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्वोपम प्रतिभाग
है । अथवा प्रतर्तगुलका असंख्यातका भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण है ।
असंख्यात सूर्यगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूर्यगुलका असंख्यातका भाग उन्का प्रमाण है ।
प्रतिभाग क्या है ? पस्वोपमका असंख्यातका भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान
मत्पेवहुतके समान है । भवववासियोंके परत्थानका कथन करने पर असंभव
सम्पत्तिषोका भवहारकाल सबसे श्लोक है । इसीप्रकार पस्वोपमत्तक ले जाना चाहिये ।
पस्वोपमके ऊपर भवववासी मिच्छाद्वि विष्कंमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? अपनी विष्कंमसूचीका असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्वोपम
प्रतिभाग है । अथवा प्रतर्तगुलका असंख्यातका भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुल
प्रमाण है । ये कितने हैं ? सूर्यगुलके प्रथम वर्गसूत्रके असंख्यातका भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
है ? पस्वोपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर चाण्यमतपौसे लेकर उपरिम उपरिम प्रियेयकतक अपने

अन्नादिकर्म विधि, सत्यानं परत्यान सम्बन्धपरत्यान चेदि । सत्याने पद । सम्बन्धो दो देवमिच्छाद्विषयहारकालो । विष्णुमूर्त्ति अस्तित्वप्रगुणा । को गुणगारो ? विष्णुमूर्त्ति अस्तित्वदिमागो । को पद्विभागो ? सगन्धहारकालो । महा सेदी अस्तित्वदिमागो अस्तित्वमात्र सेदिपदमन्त्रमूर्त्ति । को पद्विभागो ? अन्नाहारकालो । महा अस्तित्वमात्र पद्विगुण । केतियमेचावि ? पञ्चद्विषयस्त्वर्थस्य छत्तीसवर्गविधिगुणमेचावि । सेदी अस्तित्वप्रगुणा । को गुणगारो ? अन्नाहारकालो । द्वायमस्तित्वप्रगुण । को गुणगारो ? सगन्धहारकालो । पद्विमस्तित्वप्रगुण । को गुणगारो ? सगन्धहारकालो । को गुणगारो ? सेदी । सासनादीर्घ मूलोपमगो । पद्वि कोटिय-वाचवैतराण वि वेयम् । भवन्वासियाणं सत्याने सम्बन्धो दो मिच्छाद्वि विष्णुमूर्त्ति । अन्नाहारकालो अस्तित्वप्रगुणा । को गुणगारो ? सगन्धहारकालो अस्तित्वदिमागो । को पद्विभागो ? विष्णुमूर्त्ति । महा सेदी अस्तित्वदिमागो अस्तित्वमात्र सेदिपदमन्त्रमूर्त्ति । को पद्विभागो । विष्णुमूर्त्ति विष्णुगो । महा पद्विगुण । सेदी

अमलदासजी तीन प्रकारका है स्वस्थान अमलदास परत्यान अमलदास और सर्वपरत्यान अमलदास । इनमेंसे स्वस्थान अमलदासमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं देव मिच्छाद्वि अन्नाहारकालो सबसे स्तोत्र है । उन्नीची विष्णुमूर्त्ति अन्नाहारकालो अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्णुमूर्त्ति अस्तित्वप्रगुणा भाग गुणकार है । प्रतिमाय क्या है ? अपना अन्नाहारकालो प्रतिमाय है । अपना अग्रेणीका अस्तित्वप्रगुणा गुणकार है जो अमलेणीके अस्तित्वप्रगुणा प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अन्नाहारकालो वर्ग प्रतिमाय है । अन्ना, अस्तित्वप्रगुणा वर्गगुण गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पंचसौ छत्तीसके वर्गगुण वर्गगुणप्रमाण हैं । देव विष्णुमूर्त्तिसे अमलेणी अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अन्नाहारकालो गुणकार है । अमलेणीसे मिच्छाद्वि देवोंका प्रमाण अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्णुमूर्त्ति गुणकार है । देव मिच्छाद्वि प्रथमसे अमलतर अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अन्नाहारकालो गुणकार है । अमलतरसे अन्नालो अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रेणी गुणकार है । देव साक्षात् अमलदासद्विषयका स्वस्थान अमलदास सामान्य प्रकृत्यके समान है । इसीप्रकार उन्नीची और बावन्तरोंका भी स्वस्थान अमलदास ले जाना चाहिये । भवन्वासियोंके स्वस्थान अमलदासमें सबसे स्तोत्र मिच्छाद्वि विष्णुमूर्त्ति है । सबसे अन्नाहारकालो अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अन्नाहारकालो अस्तित्वप्रगुणा भाग गुणकार है प्रतिमाय क्या है ? विष्णुमूर्त्ति प्रतिमाय है । अपना अग्रेणीका अस्तित्वप्रगुणा प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अपनी विष्णुमूर्त्ति वर्ग प्रतिमाय है । अपना वर्गगुण गुणकार है । अमलेणी अन्नाहारकालो अस्तित्वप्रगुणा है । गुणकार क्या

सासणाम् अबहारफालो आणद-पाणदमसबदसम्माइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदअसअदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्मा जाव उवरिम उवरिमगेमन्धअसबदसम्माइडिअवहारफालो चि । तदो आणद-पाणदमिन्हाइडिअवहार फालो संखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदमिन्हाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं गेयम्मा जाव उवरिमउवरिमगंजो चि । तदो अणुदिसअसबदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज- गुणो । तदो अणुसरविअय-वइजयंत-जयत अबराइदअसबदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज- ज्जगुणो । तदो आणद पाणदमम्माभिन्हाइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदसम्माभिन्हाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्मा जाव उवरिमउवरिम गेवज्जो चि । तदो आणद पाणत्तासणसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदो आरण्णुद सासणसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्मा जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो उवरि तसंख दग्गमसंखेज्जगुण । उवरिममन्निमसासणसम्माइडिअव- संखेज्जगुणं । तदो उवरिमइडिमसासणसम्माइडिअव संखेज्जगुणं । एवं येयम्मा

[illegible]

सगत्सत्त्वात्मनो (माणवैश्वरादि आत्मा चरितमत्तचरितमणवको चि ।) तत्ररि परत्वात्
नत्वि, तस्य सेसगुणद्वान्मात्रमभावादो । सम्बन्धे सत्त्वात्तु पि पत्ति एगपदत्पादो ।

सम्बन्धपरत्वात्तु पयर्त्तु । सम्बन्धोवा सम्बन्धसिद्धिविमात्रवासिपदेवा । सोहम्मीसात्
असंबद्धसम्माद्विभवाहारकात्तो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवाधियाए असंखेज्जदि
मागस्त संखेज्जदिमागो । को पविमागो ? सम्बन्धसिद्धिवेवसम्माद्विद्धि चि । तत्त्वेव सम्मा
मिच्छाद्विभवाहारकात्तो असंखेज्जगुणो । सासन्नसम्माद्विभवाहारकात्तो संखेज्जगुणो । एवो
सज्जन्तुमार-माहिद्विभवाहारकात्तो असंखेज्जगुणो । एव जेयम्भं आत्मा सत्तर
सहससारेपि । एवो जोइसिय-वाणवैतस्-अवशावासिपार्थ पि कमेय जेयम्भं । मवशावासिप

स्वस्थानके समान है । उपरिम उपरिम प्रियेयकके ऊपर परस्थान अस्यबहुत्व नहीं पाया जाता
है, क्योंकि वहाँ पर दोष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । सर्वाधीनसिद्धिमें एक पक्षाय होनेसे
स्वस्थान अस्यबहुत्व भी नहीं है ।

विशेषार्थ—प्रतिपक्षोंमें दोनोंके स्वस्थान और परस्थान अस्यबहुत्वके पाठ गुरुबद्ध
और कुछ छूटे हुए प्रतीत होते हैं । बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अस्यबहुत्वके
विमालासुसार वहाँ भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतिपक्षोंमें पहले सामान्य
दोषोंका स्वस्थान और परस्थान अस्यबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार बाध्यमान्तर और
अधोतिथिपक्षोंका ही ऐसा कहा है । तत्कन्तर अवनवाशिर्वाका स्वस्थान और परस्थान अस्यबहुत्व
कह कर लौक्यार्थोंमें उपरिम उपरिम प्रियेयकतक स्वस्थान अस्यबहुत्वको समझकर छाया देनेकी
सूचना की है । अनन्तर अनुविद्याविमें परस्थानके नमावका कारण और सर्वाधीनसिद्धिमें
दोनोंके नमावका कारण बतलाया है ।

इस अस्यबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी लौक्यार्थोंमें उपरिम उपरिम प्रियेयकतक
परकप्रत्यक्ष कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुविद्याविमें परस्थानके नमावका कारण
बतलाया है पर स्वस्थान अस्यबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है
कि वहाँ कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अब सर्व परस्थान अस्यबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— सर्वाधीन विमात्र
वासी देव सबसे स्तोत्र हैं । उनसे लौक्य और येशान कस्यके असंयतसम्बन्धविषयोंका
अवधारकात्त असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? आवधीके असंख्यातवै मायका संख्यातवै
माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? सर्वाधीनसिद्धिके सम्पन्नादि दोषोंका प्रमाण प्रतिमाग
है । वहाँ पर सम्पन्निष्ठाद्विषयोंका अवधारकात्त असंयतसम्बन्धविषयोंके अवधारकात्तसे
असंख्यातगुण है । सम्पन्निष्ठाद्विषयोंके अवधारकात्तसे सासात्तसम्बन्धविषयोंका अवधारकात्त
संख्यातगुण है । लौक्य और येशान कस्यके सासात्तसम्बन्धविषयोंके अवधारकात्तसे
लान्तुमार और माहिन्द कस्यके असंयतसम्बन्धविषयोंका अवधारकात्त असंख्यातगुण
है । इसीप्रकार दातार और सहकार कस्यतक छे जाना चाहिये । दातार और सहकार
कस्यके जाये प्रोतिषी नावधन्तर और मवनवाशिर्वाका भी क्रमसे छे जाना चाहिये ।

सासपान अवहारफालो आणद-पाणदससदसम्माइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्बं चाव उवरिम उवरिमगेवज्जअसंसदसम्माइडिअवहारफालो चि । तदो आणद-पाणदसिच्छाइडिअवहार फालो संखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदसिच्छाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्बं चाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो अणुविसअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज गुणो । तदा अणुत्तरविषय-अज्जयत-ज्जयत अवराइअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज ज्जगुणो । तदो आणद पाणदसम्मासिच्छाइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदसम्मासिच्छाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्बं चाव उवरिमउवरिम गेवज्जो चि । तदो आणद पाणदसासपसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदा आरण्णुद सासपसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं येयम्बं चाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो उवरि तस्सेव दम्बमसंखेज्जगुण । उवरिममज्झिमसासपसम्माइडिअवहार संखेज्जगुण । तदो उवरिमइडिअससासपसम्माइडिअवहार संखेज्जगुण । एवं येयम्बं

अवहारफाली सासापसम्मासिच्छादियोंके अवहारफालसे आनत और प्रापतके असंयतसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल असंयतगुण है । उससे आरण और अणुत्तरके असंयतसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके असंयतसम्मासिच्छाद अवहारफालतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके असंयतसम्मासिच्छाद अवहार फालसे आनत और प्रापतके सिध्दादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इससे आरण और अणुत्तरके सिध्दादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके असंयतसम्मासिच्छाद अवहारफालसे बहुत दिनोंके असंयतसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इससे विषय वैज्जयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर बिमानवासी असंयतसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल संख्यात- गुण है । इससे आनत और प्रापतके सम्मग्निसिध्दादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इससे आरण और अणुत्तरके सम्मग्निसिध्दादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सम्मग्निसिध्दादि अवहारफालसे आनत और प्रापतके सासापसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इससे आरण और अणुत्तरके सासापसम्मासिच्छादियोंका अवहारफाल संख्यातगुण है । इसी- प्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यतक के जाना चाहिये । तदनन्तर उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सासापसम्मासिच्छाद अवहारफालके ऊपर उठी उपरिम उपरिम त्रैलोक्यका सासापसम्मासिच्छादि द्रव्य संख्यातगुण है । इससे उपरिम मध्यम त्रैलोक्यके सासापसम्मासिच्छादियोंका द्रव्य संख्यातगुण है । इससे उपरिम अधस्तात त्रैलोक्यके सासापसम्मासिच्छादियोंका द्रव्य संख्यातगुण है । इसीप्रकार अवहारफालके प्रतिष्ठेयमरूपसे अवतक लोभर्त और वेदाल रूपके असंयत-

अवहारकालपरिचोमेण चाप सोहम्मीसाणअसअदसम्माइडिदर्थं पच सि । तवो पछि
 होबममसंखेज्जगुण । तवो उवरि सोहम्मीसाणविक्खमध्वनी असंखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? सगविक्खमध्वर्य असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पडिशोबमपडिमायो ।
 अहवा अचिमंगुलपडमवग्गमूत्तस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जगुणि भिदिपवग्गमूत्ताणि ।
 केचियमेचाणि ? तदियवग्गमूत्तस्स असंखेज्जदिमागमेचाणि । को पडिमागो ? पछि
 होबमपडिमागो । मवमवासियमिच्छाइडिविक्खमध्वर्य असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 पदंगुलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जगुणि अचिमंगुलाणि । केचियमेचाणि ?
 तदियवग्गमूत्तमेचाणि । को पडिमागो ? सोहम्मीसाणमिच्छाइडिविक्खमध्वर्य व ।
 मिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अचिमंगुलस्स असंखेज्जदिमागो
 संखेज्जगुणि अचिमंगुलपडमवग्गमूत्ताणि । को पडिमागो ? मवमवासियमिच्छाइडि
 विक्खमध्वर्य पडिमागो । ओइसियदेवमिच्छाइडिअवहारकालो विसेसाहिओ । केवडिओ
 विसेसो ? पदंगुलस्स संखेज्जदिमागो । बाणभैतरमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? संखेज्जगुण समया । सवककुमार माहिंमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणा ।

सम्यग्दर्शियोंका द्रव्य प्राप्त होने तक के ज्ञान चाहिये । सौधर्म और देशान्तरके
 असंख्यसम्यग्दर्शियोंके द्रव्यसे पर्योपम असंख्यातगुण है । पर्योपमके रूपर सौधर्म और
 देशान्तर केस्यकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी
 विष्कंभसूचीअसंख्यातकी भाषा गुणकार है । प्रतिभाषा क्या है ? पर्योपम प्रतिभाषा है ।
 अथवा सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूखअसंख्यातकी भाषा गुणकार है जो सूर्यगुणके असंख्यात
 द्वितीय वर्गमूखप्रमाण है । सूर्यगुणके इन असंख्यात द्वितीय वर्गमूखोंका प्रमाण कितना
 है ? तीसरे वर्गमूखके असंख्यातके भाग है । प्रतिभाषा क्या है ? पर्योपम प्रतिभाषा है । सौधर्म
 और देशान्तर केस्यके मिथ्यादर्शियोंकी विष्कंभसूचीसे प्रजनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची
 असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रत्यंगुणअसंख्यातकी भाषा गुणकार है जो असंख्यात
 सूर्यगुणप्रमाण है । इन असंख्यात सूर्यगुणोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूखप्रमाण
 है । प्रतिभाषा क्या है ? सौधर्म और देशान्तर केस्यकी मिथ्यादर्शियोंके
 प्रतिभाषाके समान प्रतिभाषा है । सामान्य देव मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? सूर्यगुणके असंख्यातके भाग गुणकार है जो सूर्यगुणके सख्यात प्रथम
 वर्गमूखप्रमाण है । प्रतिभाषा क्या है ? प्रजनवाधियोंकी मिथ्यादर्शियोंकी विष्कंभसूची प्रतिभाषा
 है । इस देव मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातके ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअ
 विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रत्यंगुणअसंख्यातकी भाषा विशेष है । ज्योतिषियोंके
 मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातके सामान्य देवोंके मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सामान्यतर मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातके
 समस्तुमार और मादेन्द्र केस्यके मिथ्यादर्शियोंका अवधारकाअसंख्यातगुण है । गुणकार

को गुणगारो ? सेट्टिएकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जमाणि चारसवग्गमूलाणि ।
 को पडिमागो ? वाण्वेतरमिच्छाहृदिभवहारकालो पडिमागो । तस्सुवरी मन्द-बम्भोचर
 मिच्छाहृदिभवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेट्टिवमवग्गमूलस्स असंखे
 ज्जदिमागो असंखेज्जमाणि दसमवग्गमूलाणि । लांतव काविट्ठमिच्छाहृदिभवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जमाणि अट्ठम
 वग्गमूलाणि । सुक्क-महासुक्कमिच्छाहृदिभवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 पचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जमाणि छट्ठमवग्गमूलाणि । सदार सहस्सार
 मिच्छाहृदिभवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पचमवग्गमूल । तदो सदार
 सहस्सारदण्डमसंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगदण्डस्स अमसंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ?
 सगदण्डहारकालपडिमागो । एव येयच्च पडिलोमेण जाव सणक्कुमार माहिंदमिच्छा
 हृदिदण्डमिदि । तस्सुवरी वाण्वेतरमिच्छाहृदिविक्खमसंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 तस्सेव विक्खमसंखेज्जदिमागो एकतरसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जमाणि

क्या है ? जगभेदीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके
 असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पाण्यन्तर मिष्यादरिपोंका
 अवहारकाल प्रतिभाग है । सानत्कुमार और माहेन्द्र के मिष्यादरि अणहारकालके ऊपर दण्ड
 और दण्डोत्तर मिष्यादरिपोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगभेदीके
 गौंठे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण
 है । प्रमदिकके मिष्यादरि अवहारकालसे क्षान्तव और कापित्ठके मिष्यादरिपोंका अवहारकाल
 असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगभेदीके सातवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार
 है जो जगभेदीके असंख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है । क्षान्तवदिकके मिष्यादरि अवहारकालसे
 शुक्क और महाशुक्कके मिष्यादरिपोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ?
 जगभेदीके पाँचवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके असंख्यात
 छठवें वर्गमूलप्रमाण है । शुक्कदिकके मिष्यादरि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके
 मिष्यादरिपोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगभेदीका पाँचवां वर्गमूल
 गुणकार है । शतादिकके मिष्यादरि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिष्यादरि
 दण्ड असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? मण्डे दण्डका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।
 प्रतिभाग क्या है ? मण्डा अवहारकाल प्रतिभाग है । इसीप्रकार प्रतिसोमक्रमसे सानत्कुमार
 और माहेन्द्र कक्षके मिष्यादरिपोंके प्रमाण आये तक ले जाना चाहिये । सानत्कुमारदिकके
 मिष्यादरि दण्डके ऊपर पाण्यन्तर मिष्यादरि विष्कमसंखेज्ज असंख्यातगुणो है । गुणकार
 क्या है ? उन्हीं पाण्यन्तर मिष्यादरिपोंकी विष्कमसंखेज्ज असंख्यातवां भाग गुणकार
 है । मण्डा जगभेदीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेदीके

भारसवर्गमूलाणि वा । को पङ्क्तिमागो ? सप्तककुमार-मार्हिदमिच्छाद्द्विदम्भपङ्क्तिमागो ।
 जोहसिपमिच्छाद्द्विदम्भसमर्द्धं ससंज्ञगुणा । को गुणगारो ? ससंज्ञसमया । देव
 मिच्छाद्द्विदम्भसमर्द्धं विसेसाहिया । कोचियमेचेन ? ससंज्ञरूपसुखिदयसहमेचेन ।
 भवणवासिमिच्छाद्द्विदम्भहारकालो असंज्ञेज्वगुणो । को गुणगारो ? पुण्य भविदो ।
 सोहस्मीसाणमिच्छाद्द्विदम्भहारकालो असंज्ञेज्वगुणो । को गुणगारो ? पुण्य मणिदो ।
 सेही असंज्ञेज्वगुणा । को गुणगारो ? विस्वसमर्द्धं । सस्तेव दम्भमसंज्ञेज्वगुण । को
 गुणगारो ? सगदिकसंमर्द्धं । भवणवासिपमिच्छाद्द्विदम्भमसंज्ञेज्वगुण । को गुणगारो ?
 पुण्य भविदो । बाणवैतरमिच्छाद्द्विदम्भमसंज्ञेज्वगुण । को गुणगारो ? सेहीए
 असंज्ञेज्वदिभागो असंज्ञे-बाणि सेहियदम्भवर्गमूलाणि । को पङ्क्तिमागो ? भवण
 वासिपमिच्छाद्द्विदम्भसमर्द्धं । जोहसिपमिच्छाद्द्विदम्भ ससंज्ञ-
 गुणं । को गुणगारो ? ससंज्ञसमया । देवमिच्छाद्द्विदम्भ विसेसाहिय । कचियमेचेन ?
 ससंज्ञरूपसुखिदयसहमेचेन । पदरमसंज्ञे-ज्वगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोमो

असंख्यात बाणवै बर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? सावत्तुमार और मार्हिद्व कल्पके
 मिथ्यादृष्टिर्बोका प्रमाण प्रतिमाग है । बाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूचीसे ज्योतिषिर्बोकी
 मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।
 ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे
 अधिक है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूचीसे सत्यातसे अधिक करके जो एक कंड छप्य
 आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूचीसे भवणवासी मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवणवासी मिथ्यादृष्टि
 अवहारकालसे सौधर्म और देशान कल्पके मिथ्यादृष्टिर्बोका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । सौधर्म और देशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
 जगद्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंमसूची गुणकार है । जगद्रेणीसे जमी
 सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टिर्बोका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची
 गुणकार है । सौधर्म और देशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवणवासिर्बोका मिथ्यादृष्टि द्रव्य
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवणवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
 बाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं जो
 जगद्रेणीके असंख्यातर्षे माप है । जिस जगद्रेणीके असंख्यातर्षे मापका प्रमाण जगद्रेणीके
 असंख्यात प्रथम बर्गमूल है । प्रतिमाग क्या है ? भवणवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंमसूचीसे अपने
 अवहारकालको गुणित करके जो छप्य आवे तन्मात्र प्रतिमाग है । बाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
 ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिर्बोका प्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय
 गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे
 अधिक है । संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिर्बोके प्रमाणके अधिक करके पर कर्मसे एक कंड-

असंखेज्जगुणो ? कां गुणमारो ? सदी ।

अठगाहमागामाग बचइस्सामो । रं जहा- सम्मजीवरसिमणंसखं कए तस्य बहुखडा परदिप विगलिविया होति । सेसमसखखे कए बहुखडा सिद्धा होति । सेसम सखेज्जखे कए बहुखडा पण्डियतिरिक्खअपत्तया होति । सेस सखेज्जखे कए बहुखडा पण्डियतिरिक्खअपत्तयमिच्छाइहिणो होति । सेस सखेज्जखे कए बहुखडा सोइसियमिच्छाइहिणो होति । सेसमसखज्जखे कए बहुखडा मणवासियमिच्छाइहिणो होति । सेसमसखेज्जखे कए बहुखडा पढमपुढविमिच्छाइही होति । सेसमसखेज्जखे कए बहुखडा सोइम्मीसाअमिच्छाइही होति । सेसमसखेज्जखे कए बहुखडा मज्झस अपज्जत्ता होति । सेसमसखज्जखे कए बहुखडा विदिमपुढविमिच्छाइही होति । सेसम सखेज्जखे कए बहुखडा सअकम्मार-मारिदमिच्छाइही होति । एवं तदियपुढवि-अम्ह अम्होत्तर अतरपुढवि-आंतवकाविहु पचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-अहुपुढवि-सचमपुढविमिच्छाइहि वि अेयर्ण । सेसमसखेज्जखे कए बहुखडा सोइम्मीसाअजसअद

मात्र विशेषसे अधिक है । जेव मिथ्याहृदि प्रत्यक्षे जगत्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवधारकाय गुणकार है । जगत्तरसे जोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जग अेयी गुणकार है ।

अब अतुर्गतिबंधी भागागामागे बतलाते हैं । यह इत्यप्रकार है— सर्व जीवपक्षिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय और विष्वक्सेन्द्रिय जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक अप्रप्राप्त हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक पर्याप्त मिथ्या हृदि हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्याहृदि जेव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मज्जन्पासी मिथ्याहृदि जेव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पाहरी पृथिवीके मिथ्याहृदि नारक्षी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौचर्म और देशान्तर कल्पके मिथ्याहृदि जेव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अप्रप्राप्त हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्याहृदि नारक्षी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण धानरकुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्याहृदि जेव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी अद्भ्य और प्रसोत्तर, बीची पृथिवी, आंतव और अपिष्ठ, पांचवी पृथिवी शुक्र और महाशुक्र शतार और स्रहकार छठवी पृथिवी और आतवी पृथिवीके मिथ्याहृदियोंका प्रमाण ज्ञानैतक के जाना चाहिये । सप्तवी पृथिवीके मिथ्याहृदियोंका प्रमाण ज्येनेके अनन्तर शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण सौचर्म और देशान्तर कल्पके असंखतछन्द्यहृदियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसुखा तस्सेव सम्मामिच्छाइडिणो होति । सेसं असंखेज्जखंडे कए बहुसुखा सासणसम्माइडिणो होति । एवं वेयम्भं जाव सदार सहस्सरो पि । तवो जोइसिय-भाणपेतर भवणवासिय तिरिक्ख-पढमादि जाव सचमपुइनि पि वेयम्भं । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसुखा आनन्द-पाणवजसंअदसम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसुखा आरगण्णुदमसम्वसम्माइडिणो होति । एवं वेयम्भं जाव उवरिमठवरिमगेवज्जअसंअदसम्माइडि पि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसुखा आनन्द-पाणव मिच्छाइडि होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसुखा आरगण्णुदमिच्छाइडि होति । एवं वेयम्भं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइडि पि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसुखा जप्पु दिसवज्जदसम्माइडिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसुखा अणुत्तरविजय-अज्जयंत-ज्जयंत जवरदअसंअदसम्माइडि होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसुखा जाणद पाणदसम्माइडि होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसुखा आरगण्णुदसम्मामिच्छाइडि होति । एवं वेयम्भं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइडि पि । सेसं संखेज्जखंडे कए

संख्यात बंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण इन्हीं सौधर्म और देशान्तर कल्पके सम्मिश्रित्वा इष्टि जीवोंका प्रमाण है । शेष एक भागके असंख्यात बंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण सौधर्म और देशान्तर कल्पके साक्षात्तसम्बन्धवि जीव है । इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक के जाना चाहिये । इसके भागे ज्योतिषी बाणध्यन्तर, भवनवासी तिरिक्ख और प्रथमप्रति सातों पृथिवीपौतक के जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सात्त्विकसम्बन्धियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात बंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आनन्द और प्राणतके असंयतसम्बन्धवि जीव है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुमात्र प्रमाण आरग और अणुतके असंयतसम्बन्धवि जीव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्विवेपकके असंयतसम्बन्धियोंके प्रमाण आनेतक के जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आनन्द और प्राणतके मिथ्याद्यवि देव है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आरग और अणुत कल्पके मिथ्याद्यवि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्विवेपकके मिथ्याद्यवि देवोंके प्रमाण आनेतक के जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुमात्रप्रमाण अनुविशके असंयतसम्बन्धवि देव है । शेष एक भागके असंख्यात बंड करने पर बहुमात्रप्रमाण विजय वैजयंत जयन्त और अपर्युजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्बन्धवि देव है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण आनन्द और प्राणतके सम्मिश्रित्वाद्यवि देव है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण आरग और अणुतके सम्मिश्रित्वाद्यवि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्विवेपकके सम्मिश्रित्वाद्यवि देवोंके प्रमाण आनेतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम द्विवेपकके सम्मिश्रित्वाद्यवि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात बंड करने पर इनमेंसे

बहुसंख्य आण्ड-पाण्डसासणसम्पन्नहोति । सेस संखञ्जखंड कए बहुसंख्य आण्ड-
 च्छुदसासणसम्पन्नहोति । एवं णेयस्व जाव उवरिममन्त्रिमसासणेचि । ससमसंखेखंड
 कए बहुसंख्य उवरिमउवरिमसासणसम्पन्नहोति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य
 सखडुमिदिविमाणयामिपदेश होति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य मणुसिणीमिच्छाहोति
 होति । सम संखेखंड कए बहुसंख्य मणुसपञ्जचमिच्छाहोति, होति । सम संखेखंड
 कए बहुसंख्य मणुमखसंजदममहोति होति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य सम्मा
 मिच्छाहोति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य सासणसम्पन्नहोति । सेस संखेखंड
 खंड कए बहुसंख्य संजदासंजदा होति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य पमचसंजदा
 होति । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य अपमचसंजदा होति । सस संखेखंड कए
 बहुसंख्य सजोगिचि । सेस संखेखंड कए बहुसंख्य चठण्ड खडगा । सेस
 संखेखंड कए बहुसंख्य चठण्डवमामगा । ससखंड अजोगिकेवली होति । एवं
 चउमप्रमाणामागं समर्थ ।

एचो चउमप्रमाणामागं बचइस्सामो । सं अहा । सम्बत्थोवो अजोगिकेवल्लिासी ।

बहुभागप्रमाण आगत और प्राणतके साक्षात्सम्पन्नहोति देख है । दोष एक भागके संप्रदात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आगत और मनुष्यके साक्षात्सम्पन्नहोति देख है । इसीप्रकार
 उपरिम मध्यम निवेद्यके साक्षात्सम्पन्नहोति देखोवा प्रमाण अनेक छे जाना चाहिये । दोष
 एक भागके संप्रदात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम निवेद्यके साक्षा-
 त्सम्पन्नहोति देख है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थ
 सिद्धि विमानवासी देख है । दोष एक भागके संप्रदात रंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्यगी मिथ्याहोति जीव है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्य पर्याप्त मिथ्याहोति जीव है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण मनुष्य असंप्रदातसम्पन्नहोति जीव है । दोष एक भागके संप्रदात रंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्याहोति मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रदात रंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण साक्षात्सम्पन्नहोति मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सपथासंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवसी जिन है । दोष एक भागके संप्रदात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके रूपक है । दोष एक भागके संप्रदात रंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक है । दोष एक खंडप्रमाण अयोगि
 केवसी जिन है ।

इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी भागाभाग समाप्त हुआ ।

अब इसके भागे चारों गतिसंबन्धी अक्षरवङ्गको बतलाते हैं । अब इसप्रकार है—

चउच्छ्वससाधना संखेज्जगुणा । कठण्डं खवगा संखेज्जगुणा । सद्योगिकेनली संखेज्जगुणा ।
 जप्पमचसंजदा संखेज्जगुणा । पमचसजदा संखेज्जगुणा । मज्जुससजदासजदा संखेज्जगुणा ।
 मज्जुससाधना संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाद्वि संखेज्जगुणा । असंसदसम्मद्वि संखेज्जगुणा ।
 मज्जुसपञ्चमिच्छाद्वि संखेज्जगुणा । मज्जुसिषीमिच्छाद्वि संखेज्जगुणा । सद्योसिद्धि
 विमानवासिपदेवा तिठणा सचगुणा वा । सोहम्मीसाणअसंसदसम्मद्विअवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अत्तलियाए असंखेज्जदिमागस्त संखेज्जदिमागो । को
 पडिमागो ? सम्मद्विसिद्धिदेवपडिमागो । सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? अत्तलियाए असंखेज्जदिमागो । सासजसम्मद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं पेयवर्गं जाव सदार-सहस्मारो सि । तयो अत्रेसिय नावरेत्त
 मवगवामिपदेवि सि गेयवर्गं । तयो तिरिक्खअसंसदसम्मद्वि अवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
 सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासजसम्मद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अद्योगिकेनली जीववदि सबसे स्तोत्र है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे
 हैं । चारों गुणस्थानोंके एक एक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अद्योगिकेनली उपशमसे संख्यात-
 गुणे हैं । अग्रमचसंघत जीव अद्योगिकेनलीसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमचसंघत जीव
 अग्रमचसंघतसे संख्यातगुणे हैं । मज्जुप्य संघतासंघत अग्रमचसंघतसे संख्यातगुणे हैं ।
 सासजसम्मद्वि मज्जुप्य संघतासंघत मज्जुप्यसे संख्यातगुणे हैं । सम्मामिच्छाद्वि मज्जुप्य
 सासजसम्मद्वि मज्जुप्यसे संख्यातगुणे हैं । असंसदसम्मद्वि मज्जुप्य सम्मामि-
 च्छाद्वि मज्जुप्यसे संख्यातगुणे हैं । पयात्त मिच्छाद्वि मज्जुप्य असंसदसम्मद्वि मज्जुप्यसे
 संख्यातगुणे हैं । मिच्छाद्वि मज्जुप्यपी पयात्त मिच्छाद्वि मज्जुप्यसे संख्यातगुणे हैं । सर्वायं
 सिद्धि विमानवासी देव मिच्छाद्वि मज्जुप्यमिषीसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सीधर्म भीर
 देशाव कल्पके असंसदसम्मद्विसेवा अवहारकाल सर्वायंसिद्धिके देवोंसे असंख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? आपसीके असंख्यातर्षे मायका संख्यातर्षा माय गुणकार है । प्रतिमय क्या
 है ? सर्वायंसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिमाण है । सीधर्म भीर देशाव कल्पके देवोंका सम्मामिच्छा-
 द्वि अवहारकाल उन्हींके असंसदसम्मद्वि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आपसीका असंख्यातर्षा माय गुणकार है । उन्हींके सासाधनसम्मद्विसेवा अवहारकाल
 उन्हींके सम्मामिच्छाद्विसेवा अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समग्र गुणकार है । इसीगुणकार शानार भीर सहकार कल्पक के जाना चाहिये । शानार भीर
 सहकार कल्पके सासाधनसम्मद्वि अवहारकालसे ज्योतिषी बाजव्यन्तर भीर भयनवासी
 देवियों तक के जाना चाहिये । भयनवासी देवियोंके सासाधनसम्मद्वि अवहारकालसे त्रिषोक्त
 असंसदसम्मद्वि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्मामिच्छाद्वि
 अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासाधनसम्मद्वि अवहारकाल संख्यातगुणा

सज्जसंज्ञदभवहारकालो असंखेज्जगुणो । ततो पठमपुण्विअसंज्ञदसम्माइद्विअवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासन्नसम्माइद्विअवहारकालो
 संखेज्जगुणो । एव पेयस्व विदियादि आव सचमपुण्वि ति । तदो आणद-पाणदअसंज्ञद-
 सम्माइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आसलियाण असंखेज्जदिमागो ।
 आरणञ्चुदअमअदमम्मइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।
 एव पेयस्व ज्ञा उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाद्विअवहारकालो
 संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणञ्चुदमिच्छाद्विअवहारकालो संखेज्ज
 गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं पेयस्व आव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति ।
 ततो अपुदिमअमअदसम्माइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।
 अनुत्तरविजय उज्जयत-जयत-अपराजित अमज्जसम्माइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? आसलियाण अमंस्वज्जदिमागो । आरणञ्चुदसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो

हे । इससे उर्दीका संपत्तासंपत्त अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । तिर्यक् संपत्तासंघर्षोंके
 अवहारकाळसे प्रथम पृथिवीके असंघतसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है ।
 इससे उर्दीका सम्पत्तिमिथ्याद्वि अवहारकाळ संख्यातगुणा है । इससे उर्दीका सासावन
 सम्पत्तद्वि अवहारकाळ संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे छेकर सातवीं
 पृथिवीतक छे जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासावनसम्पत्तद्वि अवहारकाळसे आमत
 और प्राणतके असंघतसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 आसलीका असंख्यातया माग गुणकार है । इससे आरण और अप्युतके असंघतसम्पत्तद्विषयोंका
 अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार
 उपरिम उपरिम त्रियेयकतक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रियेयकके असंघतसम्पत्तद्वि
 अवहारकाळसे आमत और प्राणतके मिथ्याद्विषयोंका अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अप्युतके मिथ्याद्विषयोंका अवहार
 काळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम
 उपरिम त्रियेयकतक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रियेयकके मिथ्याद्वि अवहारकाळसे
 अनुदिशके असंघतसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समय गुणकार है । अनुदिशोंके असंघतसम्पत्तद्वि अवहारकाळसे विजय, अजयन्त अयन्त
 और अपराजित इन अनुत्तरवासी द्वेषोंका असंघतसम्पत्तद्वि अवहारकाळ संख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आमत और प्राणतके
 सम्पत्तिमिथ्याद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आसलीका
 असंख्यातया माग गुणकार है । इससे आरण और अप्युतके सम्पत्तिमिथ्याद्विषयोंका
 अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार

तिरिक्त्वा मिच्छाद्विअवहारकालो असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? सच्चिअंगुलपटमवग
मूलम् असंखज्जदिमागो । पंचिदियतिरिक्त्वा अपज्जत्त अवहारकालो विसादिआ । कसिय
मेत्तेण ? आवलियाए अमंखज्जदिमागं खंदिमत्तण । पंचिदियतिरिक्त्वा पज्जत्त मिच्छा
द्विअवहारकालो अमंखज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखज्जदिमागस्स संखज्जदि
मागो । देवमिच्छाद्विअवहारकालो संखज्जगुणो । को गुणगारो ? संखज्जसमया । जेइ
सियमिच्छाद्विअवहारकालो विमसादिओ । कसियमेत्तेण ? संखज्जरेवेहिं खंदिदमखट
मत्तेण । पाणरेत्तमिच्छाद्विअवहारकालो संखज्जगुणो । को गुणगारो ? संखज्जसमया ।
पंचिदियतिरिक्त्वा जोगिणीमिच्छाद्विअवहारकालो संखज्जगुणो । को गुणगारो ? संखज्ज
समया । विनियपुढविमिच्छाद्विअवहारकालो अमंखज्जगुणो । को गुणगारो ? धारवगग-
मूलस्स असंखज्जदिमागो असंखेज्जाणि तेरमवगगमूलानि । को पट्टिमागो ? जोगिणीअव

मिष्याददि विष्कमसूची गुणकार है । मधनवासी मिष्याददि विष्कमसूचीसे पंचमिश्रय
तिर्यंख मिष्याददि अगद्वारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ? स्वयंगुणके प्रथम
पर्ममूलका असंख्यातर्था माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंख मिष्याददि अगद्वारकालसे
पंचमिश्रय तिर्यंख अपर्याप्तोंका अगद्वारकाल विशेष अधिक है । किन्तुमेमात्र विशेषसे अधिक है ?
आवलीके असंख्यातर्थे मागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंख मिष्याददियोंके अगद्वारकालसे ज्ञात करते
ओ एक माग स्वयं आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंख अपर्याप्त अगद्वारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यंख पर्याप्त मिष्याददियोंका अगद्वारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ?
आवलीके असंख्यातर्थे मागका संख्यातर्था माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंख पर्याप्त
अगद्वारकालसे देव मिष्याददियोंका अगद्वारकाल संख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ?
संख्यात समय गुणकार है । देव मिष्याददि अगद्वारकालसे ज्योतिरी मिष्याददियोंका
अगद्वारकाल विशेष अधिक है । किन्तुमेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिष्याददियोंके
अगद्वारकालको संख्यातसे ज्ञात करते ओ एक ज्ञात स्वयं आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक
है । ज्योतिरी मिष्याददियोंके अगद्वारकालसे पाणस्पन्तर मिष्याददियोंका अगद्वारकाल
संख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पाणस्पन्तर मिष्याददियोंके
अगद्वारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंख योनिमनी मिष्याददियोंका अगद्वारकाल संख्यातगुणो
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंख योनिमनी मिष्याददियोंके अग
द्वारकालसे मूलगी पृथिवीके मिष्याददियोंका अगद्वारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार
क्या है ? जगधेवीके वारदर्थे पर्ममूलका असंख्यातर्था माग गुणकार है ओ जगधेवीके
असंख्यात तेरदर्थे पर्ममूलकमाग है । प्रतिमाग क्या है ? यानिमनियोंका अगद्वारकाल प्रतिमाग

संस्त्रजगुणा । को गुणगारा ? मंगलममया । एवं गण्य ज्ञान उपरिमउपरिमगज्जा वि । तदो भाषद-पाणदमामणमम्मद्विअवहारकात्ता मंगलगुणा । का गुणगारा ? संस्त्रजममया । आरपञ्चुदसामपमम्मद्विअवहारकात्ता मंगलगुणा । का गुणगारा ? संस्त्रजममया । एवं जेयर्ग ज्ञान उपरिमउपरिमगज्जा वि । तस्मज्ज द्वायममंगलज्जगुण । उपरिममम्मिममाम्प-सम्मद्विद्वय मस्त्रजगुण । एवमवहारकात्तापटितामण गण्य आन माहम्मिमाप्यप्रमंवर सम्मद्विद्वय वि । त्वा पत्तिदायमममंगलज्जगुण । का गुणगारा ? अवहारकात्ता । साहम्मि-सत्ताविकरमममं अमस्त्रजगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलपट्टममगमूलम्प अमस्त्रज्जि मागा अमंगलज्जाणि विदियवग्गामूलणि । कसियमत्ताणि ? तदियवग्गामूलम्प असंख ज्जि मागमत्ताणि । का पटिमागा ? पत्तिदोयमपटिमागा । मणुमप्रपज्जत्तप्रपद्दागुत्ता अमं येज्जगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलविदियवग्गामूल । गण्यमिच्छाद्विद्विक्कमंवर असंखज्जगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलविदियवग्गामूल । मययनामियमिच्छाद्विद्विक्कमंवर अमंगलज्जगुणा । का गुणगारा ? गण्यमिच्छाद्विद्विक्कमंवर । पचिदिय

उपरिम उपरिम त्रैलोक्यक के ज्ञाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सम्ममिच्छा दियोंके अवहारकात्तासे अन्त भीर प्राप्यके सासाहससम्पदियोंका अवहारकात्ता सत्तायगुणा है । गुणकार क्या है ? सत्ताय समय गुणकार है । इससे आरज और अच्युतके सासाहससम्पदियोंका अवहारकात्ता सत्तायगुणा है । गुणकार क्या है ? सत्ताय समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यक के ज्ञाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सासाहससम्पदियोंका अवहारकात्तासे अन्तीका द्रव्यप्रमाण असत्तायगुणा है । इससे उपरिम मध्यम त्रैलोक्यके सासाहससम्पदियोंका द्रव्य सत्तायगुणा है । इसप्रकार अवहार कात्ताके प्रतिलोम कमसे कम सीधर्म और देशान्तरके असत्तायसम्पदियोंका द्रव्य अन्त उक्तक के ज्ञाना चाहिये । सीधर्मद्रव्यके असत्तायसम्पदियोंके द्रव्यसे पक्षोपम असत्तायगुणा है । गुणकार क्या है ? मयना अवहारकात्ता गुणकार है । पक्षोपमसे सीधर्म और देशान्तर के मिच्छादियोंकी विच्छेदसूची असत्तायगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका असत्तायगुणी भाग गुणकार है जो सूर्यगुणके असत्ताय द्वितीय वर्गप्रमाण है । ये असत्ताय द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूर्यगुणके तृतीय वर्गमूलके असत्तायतयें प्रागमात्र हैं । प्रतिमाग क्या है ? पक्षोपम प्रतिमाग है । सीधर्मद्रव्यकी मिच्छादियोंके विच्छेदसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकात्ता असत्तायगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकात्तासे नारक मिच्छादियोंके विच्छेदसूची असत्तायगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिच्छादियोंके विच्छेदसूचीसे मयनादियोंकी मिच्छादियोंके विच्छेदसूची असत्तायगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

उडिदएयउंडमचण । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमिच्छद्विद्विक्खंमग्गइ सरउज्जगुणा । को
 गुणगारा ? सम्भेज्जपमया । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमिच्छद्विद्विक्खंमग्गइ असंखज्जगुणा । को
 गुणगारा ? आपलियाए असंखज्जदिमागम्म सरउज्जदिमागा । पंचिदियतिरिक्खमिच्छा-
 इद्विद्विक्खमग्गइ विसेसाहिया । कचियमचण ? आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण उंडिद
 एयउंडमेत्तेण । मचणवासियमिच्छद्विद्विअवहारकाला असउज्जगुणा । का गुणगारा ?
 सुचिअंगुलपट्टमपग्गामूलम्म असंखज्जदिमागो । पट्टमपुट्टमिच्छद्विद्विअवहारकालो असंखेज्ज
 गुणो । का गुणगारा ? णइपविक्खंमग्गइ । मणुसअपञ्चद्वयमसंखज्जगुण । का गुणगारा ?
 सुचिअंगुलपट्टमपग्गामूलं । साहम्मिमाणमिच्छद्विद्विअवहारकाला असंखज्जगुणा । को
 गुणगारा ? सुचिअंगुलपट्टमपग्गामूलं । सदी असंखज्जगुणा । को गुणगारा ? विक्खंमग्गइ ।
 साहम्मिमाणमिच्छद्विद्विदम्भममउज्जगुणं । का गुणगारा ? विक्खमग्गइ । पट्टमपुट्टमिच्छा-
 इद्विद्विदम्भमसंखज्जगुण । को गुणगारा ? सोहम्मिमाणविक्खमग्गइ । मचणवासियमिच्छद्विद्वि
 द्वयमसंखज्जगुणं । का गुणगारा ? णइपमिच्छद्विद्विद्विक्खंमग्गइ । पंचिदियतिरिक्ख
 आभिणीमिच्छद्विद्विदम्भमसउज्जगुण । को गुणगारा ? सदीए असंखज्जदिमागा असंख

तिर्वैद्य पर्याप्त मिष्यादृष्टिर्गोत्रं विष्णुमसूची सख्यातगुणी है । गुणधार क्या है ? सख्यात
 समय गुणधार है । इससे पञ्चेन्द्रिय तिर्वैद्य अपर्याप्तोक्त विष्णुमसूची असख्यातगुणी है ।
 गुणधार क्या है ? आपत्तीक असंख्यातसे भागका संख्यातया भाग गुणधार है । इससे पञ्चेन्द्रिय
 तिर्वैद्य मिष्यादृष्टिर्गोत्रं विष्णुमसूची विशेष अधिक है । किन्तुनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
 आवश्यकसे असंख्यातसे भागसे पञ्चेन्द्रिय तिर्वैद्य अपर्याप्तोक्त विष्णुमसूचीको संज्ञित करके जो
 एक वह सध्य भावे सम्मात्र पितापसे अधिक है । इससे मचणवासियोंका मिष्यादृष्टि अवहार
 काल असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? सूर्यगुणके प्रथम वगमूलका असंख्यातया भाग
 गुणधार है । इससे पहली पृथिवीके मिष्यादृष्टिर्गोत्रं अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणधार
 क्या है ? नारदियोंकी मिष्यादृष्टि विष्णुमसूची गुणधार है । पहली पृथिवीके मिष्यादृष्टि
 अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोक्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? सूर्यगुणका
 मृतीय वगमूल गुणधार है । मनुष्य अपर्याप्तोक्त द्रव्यसे सौषम्य और देशानक मिष्यादृष्टिर्गोत्रं
 अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? सूर्यगुणका द्वितीय वगमूल गुणधार है ।
 सौषम्यद्रव्यके मिष्यादृष्टि अवहारकालसे जगज्जोती असख्यातगुणी है । गुणधार क्या है ?
 विष्णुमसूची गुणधार है । जगज्जोतीसे सौषम्य और देशानके मिष्यादृष्टिर्गोत्रं प्रमाण असंख्यात
 गुणा है । गुणधार क्या है ? अपर्याप्त विष्णुमसूची गुणधार है । सौषम्यद्रव्यके मिष्यादृष्टि द्रव्यसे
 पहली पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? सौषम्य और देशानकी
 मिष्यादृष्टि विष्णुमसूची गुणधार है । पहली पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यसे मचणवासी मिष्या
 दृष्टिर्गोत्रं द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? नारदियोंकी मिष्यादृष्टि विष्णुमसूची
 गुणधार है । मचणवासी मिष्यादृष्टि द्रव्यसे पञ्चेन्द्रिय तिर्वैद्य योनिमती मिष्यादृष्टि द्रव्य

ज्वालि सन्निपदमन्त्रमूलानि । का पट्टिमाणा ? असंख्यज्वालि धर्मागुणानि पट्टिमाणा ।
 कश्चियमेवाणि ? सत्संख्यज्वालिपदमन्त्रमूलमेवाणि । बाणवैतरमिच्छाद्विद्वत् संसृज्जगुष ।
 का गुणगता ? संसृज्जसमया । ज्ञेयसिधिमिच्छाद्विद्वत् संसृज्जगुष । को गुणगता ?
 सत्संख्यज्जसमया । दनमिच्छाद्विद्वत् विमेषादिय । केचियमेवेण ? संसृज्जगुषाद्विद्वदेवेण ।
 पश्चिदियतिरिक्तपञ्चदश संसृज्जगुष । का गुणगता ? संसृज्जसमया । पश्चिदिय
 निरिक्तपञ्चदशमन्त्रमूलमेवाणि । को गुणगता ? आनसियाए असंख्यज्जदिमाणा । पश्चि-
 दियतिरिक्तमिच्छाद्विद्वत् विमेषादिय । केचियमेवेण ? आनसियाए असंख्यज्जदिमाणा-
 र्द्विद्वदेवेण । पदमन्त्रज्जगुष । को गुणगता ? सगज्जगुषाद्विद्वदेवेण । उ गमसंख्यज्जगुष
 को गुणगता ? सत् । सिद्धा अर्णतगुणा । को गुणगता ? अमवसिद्धिपदि अर्णतगुणो
 सिद्धात्मसंख्यज्जदिमाणा । को पट्टिमाणा ? उ गपट्टिमाणा । पश्चिदिय विगतिदिया अर्णत-
 गुणा । का गुणगता ? अमवसिद्धिपदि अर्णतगुणो सिद्धि वि अर्णतगुणो जीवज्जगुषमूलसं

असंख्यज्जगुषा है । गुणकार क्या है ? जगत्प्रेमीका असंख्यातार्थ भाग गुणकार है जो जगत्प्रेमीके
 असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात जगत्गुण प्रतिभाग है । इन
 असंख्यात धर्मागुणोंका प्रमाण किना है ? सत्संख्यज्जगुषके सख्यात प्रथम वर्गमूलोंका जितना
 प्रमाण हो उतना है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे बाणवैतर
 मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । बाण-
 वैतर मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे
 देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
 संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको न्हित करके जो एक भाग
 द्रव्य भावे लग्नाय विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक्
 वर्णात् मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार
 है । तिर्यक् वर्णात् मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? अपर्याप्त असंख्यातार्थ भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक्
 अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र
 विशेषसे अधिक है ? अपर्याप्त असंख्यातार्थ भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यको न्हित करके जो एक र्णह द्रव्य भावे लग्नाय विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगत्प्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपर्याप्त अकारण
 गुणकार है । जगत्प्रतरसे जोह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्प्रेमी गुणकार है ।
 जोहसे सिद्ध अमन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अमन्तगुणोंसे अमन्तगुणा और सिद्धोंका
 असंख्यातार्थ भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जोह प्रतिभाग है । सिद्धोंसे पंचेन्द्रिय और
 पंचेन्द्रिय जीव अमन्तगुण हैं । गुणकार क्या है ? अमन्तगुणोंसे अमन्तगुणा सिद्धोंसे
 जीव अमन्तगुणा जीवदृष्टिके प्रथम वर्गमूलसे जीव अमन्तगुणा और द्रव्यादि जीवोंके अमन्त

नि अर्णतगुणा भवसिद्धिर्वावाणमणतामागस्त अर्णतिममाणो । को पठिमागो ? सिद्धपठि मागो । एवं चदुगदिअप्याचदुग समर्थ ।

एव गृह्यमाणा समता ।

अदियाणुवादेण एइदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व पमाणेण वेवड्डिया ? अणत्ता ॥ ७४ ॥

एत्थ एन्द्रियग्राहेण ससिद्धियाण पडिसहो कदा भवदि । सुहुमपडिसेइह वादरा ग्राहणं । वादरपडिसइफला सुहुमणिसेसा । अपज्जत्तपडिसइफलो पज्जत्तणिसेसा । पज्जत्त पडिसइफला अपज्जत्तणिसेसा । एन्द्रिया वादरदिया सुहुमईदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च एद गव वि रासीओ दव्वपमाणण कवड्डिया इदि पुच्छिई होदि । किमइं सज्जत्त पणपुण्ण परिमाण बुबुद्ध ? ण एस दोसा, भद्वुदिसिस्साणुग्राहणइवादे । अर्णता इदि परिमाणणिसेसा संसेज्ज अंसंखत्तपरिमाणपडिसइफलो । संस जहा मूलोपमुचे बुच तहा वचत्तम् ।

बहुमार्गोऽयं मनस्तथा माग शुभधार है । प्रतिमाण क्या है ? सिद्धपाणि प्रतिमाण है । इसप्रकार चारों पनिसंख्या अक्षरबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार गतिमार्गवा समाप्त हुए ।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवाकसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय, वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? अनन्त है ॥ ७४ ॥

इस स्वयं एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे दोषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है । सूक्ष्म जीवोंका निषेध करनेके लिये वादर पदका ग्रहण किया है । वादर जीवोंका निषेध करनेके लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है । अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका ग्रहण किया है । और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया है । एकेन्द्रिय जीव वादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन पक्षियां तथा ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त इसप्रकार कुछ नौ जीवपक्षियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं यहां ऐसा पूछनेका अविशेष है ।

संज्ञा—सबका प्रत्यक्षपरिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि मनुष्यदि शिष्योंके अनुग्रहके लिये ऐसा कहा गया है ।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूत्रमें अमन्तरूप परिमाणका निर्देश

१ एकेन्द्रिया विषयवतीत्यस्यमात्रा । इ ति १ < तदानीं तदानीं पदका ताव ब्रह्मता कथा । पुष्पा परिमाणं तद्व्यतिरेकं अनुष्मा ॥ गो. जी. १०६

अणताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ ७५ ॥

अदीद्वक्का ओसपिणि-उस्सपिणिपमाणेय करिमाणो अणतोसपिणि-उस्सपिणि पमाणं होदि । तेय तारिसेण वि अदीद्वक्काळेण एवे णव वि राक्षीओ ण अबहिरिन्ति । एत्थिण्हितो एगजीवमद्द काऊण जा उक्कस्सेय पदरस्स अण्ठेअदिमागमत्ता बीया तत्तक्कएसुप्पज्जति । तत्तक्कया वि एगजीवमद्द काऊण जा उक्कस्सेय पदरस्स अण्ठे अज्जदिमागमेत्ता एदिपसुप्पज्जति । बादेरुदिया विसय पडि अणता सुहुमदिपसुप्पज्जति । सुहुमदिपया वि तपिया चेव बादेरुदिएसुप्पज्जति । एवं चेव सुग्गेसि पञ्चत्तायमपज्जत्तायं च वत्तव्वं । तदो सरिसाय-अयत्तादो एवेसि णवण्ह गस्सिं बोण्हदो तिसु वि कस्सु मरिबि वि अणुत्तविदीदो एदं सुचं भादेरद्वमिदि । एत्थ परिहरो बुबदे । तं अहा-एदसि वत्तव्वं गस्सिं अदि आय-अयत्ता सरिसा हवति तो एदं सुचं भादेरद्वं मवदि । किं तु आयादा वओ अम्महिमा । कुदो ? ततो विप्पदित्तय तसेसुप्पज्जिप सम्मचं वेह्व किया है । होय कयन जिसप्रकार मूखोय सूत्रमें कहा गये हैं उसप्रकार जानना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय जीव आदि नौ राशियों अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है । इसप्रकारके नौ उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राशियां अपहृत नहीं होती हैं ।

धृक्क — एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको ध्वनि करके उत्कृष्टरूपसे जगत्तरके असंख्यातवें प्रागप्रमाय जीव वसन्नापिण्यमें उत्पन्न होते हैं और वसन्नापिण्य मी एक जीवको ध्वनि करके उत्कृष्टरूपसे जगत्तरके असंख्यातवें प्रागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । विषयकी अपेक्षा अन्त बाहर एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव मी वतने ही बाहर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका मी कथन करना चाहिये । इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राशियोंका विच्छेद तीनों मी काकोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुत्पत्ति होनेसे यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं है ।

समाधान — आगे पूर्वोक्त कथनका परिहार किया जाता है । यह इसप्रकार है— इन पूर्वोक्त नौ राशियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं होने किन्तु इन राशियोंका व्ययसे व्यय अधिक है, क्योंकि, पूर्वोक्त नौ राशियोंमेंसे विच्छेद कर और वसोंमें उत्पन्न होकर तथा सम्यक्बद्धे ग्रहण करके त्रिं संसारी जीवोंने एकेन्द्रिय

विनासिदयप्रदिय-वीरदिय-तीरदिय-चउरिदिय असंनिपचिदिय-वेरदिय-तिरिक्ख मवणवासिय
 वाणवेर-जोप्रसिय-इत्थि-अणुसय-हय गय गघण्व नागादि-संसारिजीवाण पुणो तेसु पवेस-
 मामादो । उदो एद गय वि रासीओ वयसहिया णिच्छएण हवति । एव हि वद संते
 वि एदे पव वि रासीओ ण वोच्छेज्जति सरागसरुवेण छिदजदीदकालचादो । सम्भ
 जीवरासीदो अदीदकाल अणतगुणे सस अदीदकालेण सम्भजीवा अवहिरिजति । प व पूर्व,
 तथा अणुवर्तमादा । न वेण कलण सम्भजीवाण वाच्छदो किण्ण हादि चि मणिद प,
 अमम्भपरिदक्खवोच्छेदे अमम्भत्तस्स विधिमासप्पसगादो । सेस वक्खाम्मं जहा आपकाल-
 सुत्तम्हि मणिद तथा वत्तम्मं ।

स्वेतेण अणंताणता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाम्मं यण्णमाणे जहा मूर्तोपपत्तसुत्तस्स मणिद तथा मणिदम्भ ।
 गवरि एत्थं पुणसी एवमुप्पाएदग्गे । तं जहा— वरदिय-वेरदिय-चउरिदिय-यंचिदिय

शीमिन्द्रिय शीमिन्द्रिय क्षतुरिन्द्रिय असंजीपचमिन्द्रिय मारकी तिर्पच, मवणवासी, वाणध्यन्तर,
 ज्योतिषी कर्त्तवेद मनुसकवेद थोदा हापी गघर्ब वीर नाय व्यादि पर्यायोंका नाश
 कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं इसलिये वे नौ राशियां नियमसे
 व्यवसहित हैं । इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्यवसहित होने पर भी वे नौ राशियां कभी भी
 मिश्रित नहीं होती हैं, क्योंकि अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं । यदि
 संपूर्ण जीवराशिके अतीतकाल अणतगुणा होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत
 होती; परन्तु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उत्पत्ति नहीं होती है ।

झंका—उस अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अमम्यराशिकी प्रतिपक्षभूत मम्यराशिका विच्छेद मान
 लेने पर अमम्यराशिकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याप्याज व्योमप्रकृपाके काळखण्डमें जिसप्रकार कर भाये हैं उसप्रकार उसका
 कपन करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियां अनन्तानन्त लोकप्रमाण
 हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याप्याज करने पर जिसप्रकार मुख्य प्रकृपाके समय क्षेत्रसूत्रका
 अर्थ कह भाये हैं उसप्रकार कपन करना चाहिये । परन्तु यहाँ पर क्षुरराशि इसप्रकार उत्पन्न
 करना चाहिये । यह इसप्रकार है—

शीमिन्द्रिय शीमिन्द्रिय क्षतुरिन्द्रिय, पवेमिन्द्रिय मीरमिन्द्रिय जीवोंकी राशिके संपूर्ण जीव

अर्बिदियात् रासिं सञ्जवीवरासिस्सुवति पक्खिपिय तस्स चेव वग्गं एइदियमाज्झि तत्त्वेव पक्खिपे एइदियधुवरासी होदि । ॥ संसेञ्जस्सेहि मागे हिदे छद्दं तम्हि चेव पक्खिपे एइदियपन्नचधुवरासी होदि । एइदियधुवरासिं संसेञ्जस्सेहि गुमिदे एइदियअपन्नचधुवरासी होदि । पुणो एइदियधुवरासिमसंसेञ्जलोपणं गुमिदे बादरेइदियधुवरासी होमि । तमसंसेञ्जलोपणं गुमिदे बादरेइदियपन्नचधुवरासी होमि । तमसंसेञ्जलोपणं मागे हिदे छद्दं तम्हि चेव पक्खिपे बादरेइदियअपन्नचधुवरासी होमि । सामण्णेइदियधुवरासिमसंसेञ्जलोपणं मागे हिदे छद्दं तम्हि चेव पक्खिपे सुहुमेइदियधुवरासी होमि । तम्हि संसेञ्जस्सेहि मागे हिदे छद्दं तम्हि चेव पक्खिपे सुहुमेइदियपन्नचधुवरासी होमि । सामण्यसुहुमेइदियधुवरासिं संसेञ्जस्सेहि गुमिदे सुहुमेइदियअपन्नचधुवरासी होमि । सग-समधुवरासीहि सञ्जवीवरासिठवतिमवगो खंदिदस्सओ ओवमिच्छाद्वीर्यं न वचन्ता । ववति पमाणं मण्यमाणे एइदियायं ओवमगो । एइदियपन्नचधुवरासिस्स संसेञ्जमाणा । तेहिं चेव अपन्नचधुवरासिं पमाणं सञ्जवीवरासिस्स संसेञ्जदिमागो । बादरेइदियात्

राशिमें ऊपर प्रसिद्ध करने की वही छिद्रियादि जीवोंके प्रमाणके वर्गको एकेन्द्रिय जीवराशिसे मानित करने को छद्म व्यये इसे वही पूर्वांश राशिमें प्रसिद्ध करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसंबन्धी सुवराशि होती है । इसे संख्यातसे मानित करने पर जो छद्म व्यये इसे वही पूर्वांश सुवराशिमें मिखा देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी सुवराशिसे संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी सुवराशिसे नसंख्यात कोऊसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी सुवराशि होती है । इसे नसंख्यात कोऊसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । इसमें नसंख्यात कोऊका भाग देने पर जो छद्म व्यये इसे वहीमें मिखा देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसंबन्धी सुवराशिमें नसंख्यात कोऊका भाग देने पर जो छद्म व्यये इसको वहीमें मिखा देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी सुवराशि होती है । इसे संख्यातसे मानित करने पर जो छद्म व्यये इसे वही सूक्ष्म एकेन्द्रिय सुवराशिमें मिखा देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसंबन्धी सुवराशिसे संख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी सुवराशि होती है । इन अपनी अपनी सुवराशिपरोंके प्राप संपूर्ण जीवराशिसे अपरिम बर्णके ऊपर चंडित आदिकका कथन ओष मिप्यारिषोंके चंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इसकी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्रकरणको समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिसे संख्यात बहुमात्रप्रमाण है । वही एकेन्द्रिय अपराशिका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिसे संख्यातसे प्राप्त है । बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसि पञ्चचापपञ्चचाप पमाणं सम्बन्धीवरासिस्त असंखेज्जदिमागो । सुहुमेइदिया सञ्च-
 बीवरासिस्त असंखेज्जा मागा । सुहुमेइदियपञ्चचा सञ्चबीवरासिस्त संखेज्जा मागा ।
 सुहुमादियापञ्चचा सम्बन्धीवरासिस्त संखेज्जदिमागो । कारणमहादियान ताव बुधदे ।
 सेसिदियानिदिहि सम्बन्धीवरासिभिह मागे हिदे लद्ध विरठ्ठण एवमस्स रूपस्स
 सम्बन्धीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थेयखंड सेसिदियानिदिया च होति । सेसबहुखंडा
 एइदिया इवन्ति । सेसिदियानिदिय एइदियापञ्चचेहि य सम्बन्धीवरासिभिह मागे हिदे लद्ध
 सुखन्धरुणानि विरत्तिय सम्बन्धीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा एइदियपञ्चचा
 होति । एइदियपञ्चचेहि चव सञ्चबीवरासिभिह मागे हिदे संखेज्जकवामि लम्भति ।
 तापि विरत्तिय सम्बन्धीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थ एवखंड एइदियपञ्चचा
 होति । सेसिदिय अनिदिय धादेइदिहि य सञ्चबीवरासिभिह मागे हिदे तत्थ लद्धअस
 खेज्जलोगरासिं विरत्तिय सम्बन्धीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइदिया
 होति । वि ति चहु पंचानिदिह गादेइदियसहिहसुहुमेइदियपञ्चचेहि सञ्चबीवरासिभिह

और अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातके भाग है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण
 जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके
 संख्यात बहुभागप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातके भाग है ।
 जब एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं- शेषेन्द्रिय अर्थात् शीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय
 जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो छप्प भाग उरक्ये विरत्तित
 करके और उस विरत्तित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिके समान खंड करके दे देने
 पर इनमेंसे एक खंडप्रमाण शीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाला और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण
 होता है । शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव है । शीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले अनिन्द्रिय
 और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो संख्यात
 छप्प भाग उरक्य विरत्तित करके और विरत्तित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिके
 समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते
 हैं । एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात छप्प
 भाग होते हैं । उसे विरत्तित करके और उस विरत्तित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिके
 समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं ।
 शीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले अनिन्द्रिय और बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव
 राशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात छोटप्रमाण राशि छप्प भाग उसे विरत्तित
 करके और उस विरत्तित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिके समान खंड करके
 देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं । शीन्द्रिय शीन्द्रिय,
 चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बाहर एकेन्द्रिय जीवोंसे पुन सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात छप्प भाग होते हैं । इसका

भागो हिद संश्लेषरूपाणि भागच्छति । ताभि विरलिय सम्प्रजीवरासि समसंभं करिय दिग्गे तत्त्व बहुलं सुदुमेइदियपञ्जरा होंति । सुदुमेइदियपञ्जराहि सम्प्रजीवरासिभि भागो हिदे तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवरासि समसंभं करिय दिग्गे तत्त्व गलं सुदुमेइदियपञ्जरा होंति । बाह्येइदियहि सम्प्रजीवरासिभि भागो हिद तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवरासि समसंभं करिय दिग्गे तत्त्वगम्भरिद बाह्येइदिया होंति । बाह्येइदियपञ्जराहि सम्प्रजीवरासिभि भागो हिदे तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवरासि समसंभं करिय दिग्गे तत्त्वगम्भरिद बाह्येइदियपञ्जरा होंति । एव बाह्येइदियपञ्जराणि पि वचनं । एसा चेव निरुची इवदि । कुरो ? एत कस्यतो निरुची मेदापुवत्तमादा ।

वेडादिय-तीइदिय-वर्जिदिद्या तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दब्ब पमाणेण केवडिया, असस्सेज्जा ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सब जीवरशिसे समान संभं करके रूपरूपसे दे देने पर वहां बहुतभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवरशिसे भाजित करने पर वहां जो संख्यात संभं छद्म भागें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सब जीवरशिसे समान संभं करके रूपरूपसे दे देने पर वहां एक संभं प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । बाह्य एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवरशिसे भाजित करने पर वहां जो असंख्यात जोक छद्म भागें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवरशिसे समान संभं करके रूपरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उसने बाह्य एकेन्द्रिय जीव होते हैं । बाह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवरशिसे भाजित करने पर वहां जो असंख्यात जोकप्रमाण राशि छद्म भागें उसे विरलित करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवरशिसे समान संभं करके रूपरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उसने बाह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । इसीप्रकार बाह्य एकेन्द्रिय पर्याप्त भी कथन करना चाहिये । और यही निरुक्ति है क्योंकि, यहां पर कारणसे निरुक्ति में भेद नहीं पाया जाता है ।

हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उर्ध्वके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा किन्तु ई ? असंख्यात ॥ ७७ ॥

जहा— पंचिविया सासवसम्माद्विप्युहि जत अजोभिकेवलि चि द्वापमाणेय केवडिया, मोषमिदि ।

सुहुमठपस्ववह सुचमाह—

असंखेजाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिरति कालेण ॥७८॥

एहस सुचस्त अयो सुगमो चि ण बुद्धे । एदाओ रासीओ सव्वकस्समायायु
कववसहिदाओ चि ण बोधेद्वयवदुक्कंते तदो असंखेज्जाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि
अवहिरति चि कवमेदं वददे ? सज्जं, ण बोधिज्जति चेव किं तु एदासिमाएय विजा वदि
वमो चेव भवदि तो भिच्छएय बोधिज्जति । अण्णहा असंखेज्जायाववचादो । एदस्स-
त्पस्स अवबोहणं अवहिरति चि बुद्धं ।

संका— यह सच कहा पर है ?

समाधान—यहाँ व्यर्थ है । यथा— पंचेन्द्रिय जीव सासवसम्माद्विप्युहि गुणस्यावसे
केकर व्योगिकेवली गुणस्यावतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्रकरणके
समान पाँचवें गुणस्यावतक परबोधमके असंख्यातवें मात्रा और छठवेंसे संख्यात हैं ।

भव एहम अर्थक्य प्रकरण करनेके लिये सच कहते हैं—

काठकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उनकी पर्याप्त
और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवस्थावियों और उत्सर्पिवियोंके द्वारा अपहृत
होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सचका अर्थ सुगम है इसलिये यहाँ कहते हैं ।

संका—ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशिवां सर्व काल आपके अनुकूल व्ययसे पुत्र
हैं इसलिये यदि विच्छेदके प्राप्त नहीं होती हैं तो असंख्यात अवस्थावियों और
वत्सर्पिवियोंके द्वारा अपहृत होती हैं यह कथन कैसे धरित हो सकता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उपर्युक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशिवां विच्छिन्न नहीं
होती हैं, किन्तु इन राशिवांका आपके बिना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो
जातीं । यदि ऐसा न माना जाय तो द्वीन्द्रियादि राशिवां असंख्यात हैं यह कथन नहीं बन
सकता है । इसी अर्थक्य काल करनेके लिये अवहिरति ऐसा कहा ।

विशेषार्थ—यहाँ सज्जमें असंखेज्जादि पाठ है किन्तु अर्थसंदर्भकी दृष्टिसे
यहाँ असंखेज्जासंखेज्जादि ऐसा पाठ प्रतीय होता है । पुरारंघ कहके इसी प्रकारमें यहाँ
जीवोंकी सामान्य संख्या बतहाते हुए यह सच पाया जाता है— असंखेज्जासंखेज्जादि
ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिरति काणेण । किन्तु यहाँ टीकमें ही असंखेज्जादि पर
होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

स्वेतेण वेदित्वा-तीव्रदिय-चतुरिन्दिय तस्मेव पञ्जत्त-अपञ्जत्तेहि पदर-
मवहिरदि अगुलस्म असस्वेज्जदि भागवग्गपडिभाएण अगुलस्स सस्वेज्जदि
भागवग्गपडिभाएण अगुलस्म असस्वेज्जदि भागवग्गपडिभाएण ॥७९॥

एदस्म सुचस्स अधो भुज्ज । त जहा- 'जहा उदमा तहा णित्तो' चि पायादो
पुच्छुरिद्वि-ति-चतुरिन्दियाणं पमाणं पुच्छुरिद्वमेव मवदि । मज्झिम्ह मज्झमिं ससुरिद्वपञ्चचार्यं
मवदि । अतिष्ठं पि अंतुरिद्व तमिमपञ्चचार्यं इवदि । एदेहि सामण्यविगलित्तिपिहि तेसि
चेव पञ्जत्तहि विगलित्तिअपञ्जत्तणहि जगपठरमवहिरदि । अगुलस्म अचिअगुलस्स
अमंखत्तदिभागा अचिअगुलमात्रित्तिपाए अमंखत्तदिभाएण उंठिदपभागो । तस्स वग्गो
तारिमेण अवरण गुम्भिरासी पडिभागा अवहागफलो । एवं चव अपञ्जत्तमुच पि
विचयेयम् । एवं चेव पञ्जत्तमुच पि वक्तव्येयम् । एवहि अचिअगुलस्स संयज्जदिमाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्विन्त्रिय, त्रीन्त्रिय और चतुरिन्त्रिय जीवोंके द्वारा ध्वन्यगुलके
असंख्यातवें भागके बर्गरूप प्रतिभागसे अगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः ध्वन्यगुलके संख्यातवें भागके बर्गरूप प्रतिभागसे
और ध्वन्यगुलके असंख्यातवें भागके बर्गरूप प्रतिभागसे अगप्रतर अपहृत होता
है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है— उद्देशके अनुसार निर्देश किया
जाता है इस व्यापके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्विन्त्रिय त्रीन्त्रिय और चतुरिन्त्रिय
जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया है । प्रथम कहे गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमे कहा
गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है । इनके
द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्वोंके द्वारा उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके द्वारा अगप्रतर अपहृत होता है । यहां पर अगुलसे तात्पर्य ध्वन्यगुलका और
उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य ध्वन्यगुलको व्यापकीके असंख्यातवें भागसे लक्षित करके
जो एक भाग लब्ध पाये उससे है । उस ध्वन्यगुलके असंख्यातवें भागका वग इसका यह
तात्पर्य हुआ कि उस ध्वन्यगुलके असंख्यातवें भागको तन्त्रमात्र दूसरी राशिसे गुणित कर
दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह वहां पर प्रतिभाग पर्याप्त अवधारकाक है ।
इसीप्रकार मयपाप्त-सूत्रका भी वरीकृत्य करना चाहिये और इसप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी
व्याख्यान करना चाहिये । इनका विशेष है कि ध्वन्यगुलके संख्यातवें भागके वर्णित करने पर

वमिद पञ्चाणमवहारकालो हृदि । तण पडिमाएण । पदरगुलस्स असंखेज्जदिमार्गं
ससगभूदं ठविय विगळिदियपञ्जचेहि जगपदर अवहिरिज्जमाणा ससगगहि सह जग-
पदरं समप्पदि । पदरगुलस्स संखेज्जदिमार्गं मत्तागभूदं ठविय विगळिदियपञ्जचेहि जग-
पदरे अवहिरिज्जमाणा ससगगहि सह जगपदरं समप्पदि पि अं पुणं हदि ।

पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तएसु मिच्छाद्विटी दब्बपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ ८० ॥

पदस्स सुचस्स अत्था सुगमो पि न पुच्छे ।

असंखेज्जामंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण

॥ ८१ ॥

पदस्स पि सुचस्स अत्थो सुगमो पि न पुच्छे ।

स्वेत्तेण पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तएसु मिच्छाद्विटीहि पदरमवहिरदि

अंगुलस्स अमस्सेज्जदिभागवग्गापडिमाणेण अंगुलस्स सस्सेज्जदिभाग
वग्गापडिमाणे ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोक्त अवहारकाल होता है । इस प्रतिभागसे । प्रतरांगुलके असंख्यातवर्ग मापको उक्तका
कपसे स्थापित करके विच्छेदित्व अपर्याप्तोक्त द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर
अर्थात् प्रतरने पर उक्तकापके साथ जगप्रतर समाप्त होता है । तथा प्रतरांगुलके संख्यातवर्ग
भागसे उक्तकाकपसे स्थापित करके विच्छेदित्व पर्याप्तोक्त द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अप-
हृत करने पर उक्तकापके साथ जगप्रतर समाप्त होता है यह कथ कथनका तात्पर्य है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीजोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है इसलिये नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीज असंख्यातासंख्यात

अवसरविधियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है इसलिये नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीजोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा
अर्थांगुलके असंख्यातवर्ग भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और अर्थांगुलके संख्यातवर्ग भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ × × ब्रह्मसूत्रिका उक्तेरा ३ । उक्तकावच्छेदना ॥ गो. जी. १ ५.

२ पंचेन्द्रिये मिथ्यादृष्टयोऽस्तेषां क्षेत्राणां उत्सर्पणप्रमाणविता । च वि १ मतिगु दत्ते.

अतिवास्तविकता १ ति वत्त ।

‘जहा जरेमा तहा गिदेसो’ ति व्यायादा अगुलस्स असंखेज्जदिमागस्स वग्गो पंचिदियानं अगपदरस्स पडिमाणो होदि । सुचिजंगुलस्स सखुज्जदिमागस्स वग्गो अग पदरस्स पडिमाणो होदि पंचिदियपज्जसाण । पडिमाणो मागहारं पि एयहो । विगल्लि-
दियसुत्तेण सह पंचिदियसुत्तं किमिदि ण वुत्त ? अ एस दोसो, उवरिमगुणपडिपणसुत्तस्स पंचिदियसाणुवहुत्तपहुत्तादो पुंथ पंचिदियसुत्तं वुत्तदे । तत्थ द्वियपंचिदियमिदसो किमिदि
साणुवहुत्तविज्जदे ? ण, एगजोगणिदिह्माणमेगदेसस्स अनुवहुत्तामाभादो ।

संपदि उवरि वुत्तमाणजपावहुगजभियोगहारसुत्तचलेण पुंथादरिओएसचलेण अ
एदेण सुत्तण सुचिद्विगल्ल-मयल्लिदियानमवहारकत्तविस्समे मयिस्सामो । सं जहा—आवलिपाए
असंखेज्जदिमाएण सुचिजंगुले मागे हिदे तत्थ अ लट्ठं त वगिगदे वेदित्याणमवहारकत्तो
हादि । तमिह आवलिपाए असंखज्जदिमाएण मागं हिदे उह तमिह चेव पत्तिस्सत्ते वेदित्य
अपत्तजजवहारकत्तो होदि । सं आवलिपाए असंखज्जदिमाएण मागे हिदे लट्ठं तमिह चेव

उद्देशके अनुसार निर्देश होता है । इस व्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें
मागका धर्म पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण मानेके लिये अगप्रतरक प्रतिमाण है और सूच्यगुलके
संख्यातवें मागका अग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण मानेके लिये अगप्रतरक प्रतिमाण
है । प्रतिमाण और मागहार ये दोनों एकवर्धवाची शब्द हैं ।

सूत्रक—विकल्पोक्तिवर्गोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रति
पादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि मागे कहे जानेवाले गुणप्रतिपक्ष जीवोंके सूत्रमें
पंचेन्द्रियत्वका अनुवृत्ति करनेके लिये वृत्त्यरूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा ।

सूत्रक—विकल्पोक्तिवर्गोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके
प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर कहा किपक्ष पंचेन्द्रिय पक्षके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों
नहीं होती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पक्षोंमेंसे एक देशकी
अनुवृत्ति नहीं होती है ।

अब आगे कहे जानेवाले अवयवद्वय अनुयोगकारके सूत्रके वक्षसे और पूर्वोक्तार्थके
उपदेशके वक्षसे इस सूत्रके द्वारा सुचित विकल्पोक्तिवर्ग और सख्येन्द्रिय जीवोंके अवहारका
विशेषोंको कहते हैं । ये इसप्रकार हैं—आवलीके असंख्यातवें मागसे सूच्यगुलके माजित
करने पर जो अर्थ आये उसको वर्णित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारका होता है ।
द्वीन्द्रियोंके अवहारकत्वको आवलीके असंख्यातवें मागसे माजित करने पर जो अर्थ आये
वसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकत्वमें मिश्रा देने पर त्रिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारका
होता है । इस त्रिन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकात्वको आवलीके असंख्यातवें मागसे माजित

पक्वित्त तद्दियअवहारकाला हादि । पुण्ण सन्धि चर आसत्तियाए असंखजदिमाण माग हिद वं छद्दं तं तन्दि चर पक्वित्तचे तद्दियअपञ्जचाणमवहारकाला होदि । एवं चउत्तिदिय चउत्तिदियअपञ्जच-पंचिदिय-पंचिदियअपञ्जचाण जहाकमग आवत्तियाए अमंखजदि माएण छेहिदपरुदिय अवहारकाला अम्महिया कापम्मा । तदा पंचिदियअपञ्जच अवहारकाल आवत्तियाए असंखजदिमाण गुणिद पद्दगुलस्म संखजदिमागा तद्दिय-पञ्जचाण अवहारकाला हादि । तन्दि आवत्तियाए अमंखजदिमाण माग हिदे स्ख तन्दि चर पक्वित्त तद्दियपञ्जचाणमवहारकाला हादि । तन्दि आवत्तियाए असंखजदि माएण माग हिद छद्दं तन्दि चर पक्वित्त पंचिदियपञ्जचाणमवहारकाला होदि । तन्दि आस त्तियाए असंखजदिमाण माग हिद छद्दं तन्दि चर पक्वित्त चउत्तिदियपञ्जचअवहार काला हादि । एत्थ सम्भत्थ रासिबिससण राधिमावडुविय छद्दं वृत्त करिय ममभार भूदआसत्तियाए असंखजदिमागा उप्पाएदम्मा । एदहि अवहारकालहि पुच पुच जयपदे माग हिद अप्पम्मा दम्भयमण्याणि मपेति । एत्थ संटिदत्ता जाविज्जम वत्तम्मा ।

—

करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्र्य अपर्णात् अवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्र्य जीवोंका व्यवहारकाळ होता है । पुनः इस जीमित्र्य जीवोंके व्यवहारकाळको आबसीके असंख्यातवें मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्र्य-जीवोंके व्यवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्र्य अपर्णात् जीवोंका व्यवहारकाळ होता है । इसीप्रकार चतुर्गित्रीय चतुर्गि त्रिय अपर्णात् पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्णात् जीवोंके व्यवहारकाळको क्रमसे आबसीके असंख्यातवें मागसे संज्ञित करके उत्तरोत्तर एक एक मागसे अधिक करना चाहिये । अन्तर्गत पंचेन्द्रिय अपर्णात् जीवोंके व्यवहारकाळको आबसीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर प्रतर्णागुहके संख्यातवें मागप्रमाण जीमित्र्य पर्याप्त जीवोंका व्यवहारकाळ होता है । इसे आबसीके असंख्यातवें मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्र्य पर्याप्तजीवोंके व्यवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्र्य पर्याप्त जीवोंका व्यवहारकाळ होता है । इस जीमित्र्य पर्याप्तजीवोंके व्यवहारकाळको आबसीके असंख्यातवें मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्र्य पर्याप्त व्यवहारकाळमें मिछा देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका व्यवहार काळ होता है । इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके व्यवहारकाळको आबसीके असंख्यातवें मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व्यवहारकाळमें मिछा देने पर चतुर्गित्रीय पर्याप्त जीवोंका व्यवहारकाळ होता है । यहाँ सर्वत्र राशि विशेषसे रक्षकों अपनर्तित करके जो छम्भ भावे उत्तमसे एक क्रम करके मागहारकप आबसीका असंख्यातवें माग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन व्यवहारकाळोंसे धृष्टक धृष्टक जगमतरके माझित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण व्यक्त है । यहाँ पर संज्ञित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणमम्माडिण्डुण्डुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघ ॥८३॥

पडुडिसदो किरियावेत्तसण । सासणसम्माडिण्डुण्डुडि जाव करिएत्ति । एत्थ पुत्र सुत्तादो पंचिदिय इदि अणुवण्डेद । तेण सच्च गुणपटिवण्णा पंचिदिमा चेव । सज्जालो अजोगिकेवलीण पण्डासेसिंदियाण पंचिदियववण्णो कर्म चठेव ? न, पंचिदियजादिणाम्-कम्म इयमवस्थिय तस्सि पंचिदियववण्णसादा । एत्थि पमाणपरूपमा मूलापपरूपणाए तुल्ला । इदो ? पंचिदियवदिरेत्तजादीसु गुणपटिवण्णामत्तादो ।

पंचिदियअपज्जत्ता दच्चपमाणेण केवडिया, असस्वेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओमपिणि उस्मपिणीहि अवहिराति काटेण

॥ ८५ ॥

एदस्स पि अथा सुगमो ।

सासादनसम्पण्डि गुणस्यानम लकर अयोगिकेवली गुमस्यानतक प्रत्येक गुणस्यानमें पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणके समान पश्योपमके असंख्यतवे माग हैं ॥ ८३ ॥

यहां पर प्रष्टि शब्द किर्याविरोपम है । जिससे सासादनसम्पण्डि प्रवृत्तिपर अर्थ सासादनसम्पण्डिके आदि लेकर होता है । यहाँ पर पूर्व सूत्रसे पचेन्द्रिय परकी अनुवृत्ति होती है इसलिये संपूर्ण गुणस्यानप्रतिपक्ष जीव पचेन्द्रिय ही होते हैं, यह व्यभिचार निश्चय व्यता है ।

संज्ञा—अयोगिकेवली बार अयोगिकेवलीयोंके संपूण इन्द्रिया नष्ट हो गई हैं मत्तपम जनके पचेन्द्रिय यह सजा कैसे कहित होती है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, पचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा अयोगिकेवली और अयोगिकेवलीयोंके पचेन्द्रिय सजा बन जाती है ।

इस गुणस्यानप्रतिपक्ष पचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूख्य प्ररूपणके समान है क्योंकि, पचेन्द्रियजातियोंके छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्यानप्रतिपक्ष जीव नहीं पाये जाते हैं ।

पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव प्रथमप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है ॥ ८४ ॥

इस सूत्रपर अर्थ सुगम है ।

कासकी अपेक्षा पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उस्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है ।

स्वेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्स असंसे
उज्जदिभागवम्मापडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुचं सुगमं भव । एदाणि विष्णु वि सुचाणि पंचिंदियअपज्जत्तएहि
पदाणि विगल्लिंदियापज्जत्तसुचं म पंचिंदियमिच्छद्दुत्तिसुचमिह भव किण्वं सुचाणि पि
बुधे म, पंचिंदियअपज्जत्तसु गुणपडिबण्णामावपज्जत्तसुचादो पुच सुचारंमस्स । अपअच-
कस्से नि पंचिंदियसु गुणपडिबण्णाम् अरिय वेत्तविय जोरास्सियमिस्स-कम्मइयकमज्जोगेसु
सम्माच-वाच-इसओवलंमादो । इदि भे, होदु जाम निम्बपि पडि अपज्जत्तएहि गुणपडि
बण्णाममन्विच, अपज्जत्तजामकम्मवएण सह गुणाण अवहुत्तजिरोहा ।

म गामाग बहइस्सामो । सम्यग्जीवराशिं सखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइय
पज्जत्ता होति । मेसमसंखज्जलेतामचखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइयअपज्जत्ता होति ।
सममसखेज्जखंडे कए बहुखंडा बाद्रेइयियअपज्जत्ता होति । सममसखेज्जखंडे कए बहुखंडा

खेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सृष्ट्यंगुलके असंख्यात
भागके बर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रसर अपहत होता है ॥ ८६ ॥

बह स्रष्टा भी सुगम ही है । ये पूर्वोक्त जीवों की स्रष्टा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
प्रमाणसे प्रतिबद्ध है ।

श्रृंखला—जिसप्रकार विकसेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणका प्रतिपादक स्रष्टा इतना ब
होकर विकसेन्द्रिय और उनके पर्याप्तजीवोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रष्टाके साथ ही निबद्ध है
वहीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यावृत्तियोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रष्टाओंमें ही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंके
प्रमाणके प्रतिपादक स्रष्टा निबद्ध करके न्यों नहीं कहे ?

समाधान—येसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं क्योंकि, पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रष्टाका पृथक्स्वरूपसे अंतरम पंचेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंमें
गुणस्यावप्रतिपन्न जीवोंके जमावके प्रकल्प करनेके लिये किया है ।

श्रृंखला—अपर्याप्त ब्रह्ममें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्यावप्रतिपन्न जीव होते हैं क्योंकि,
वैद्विबिकमिध और वारिकमिध और बर्त्मवक्रययोगमें सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान तथा इष्टानकी
वपकम्पि पारं जाती है ?

समाधान—यदि ऐसा है तो निर्बुद्धिही जनेसा अपर्याप्तजीवोंमें गुणस्यावप्रतिपन्न
जीवोंका सङ्गाव रहा भावे परंतु अपर्याप्त ब्रह्मकर्मके लक्ष्यके साथ सम्यग्दर्शन जर्मि
गुणोंका सङ्गाव माननेमें विरोध जाता है ।

अब भागाभागाकी बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके स्रष्टावत बंध करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण स्रष्टा पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अस्रष्टावत शेषप्रमाण बंध
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण स्रष्टा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अस्रष्टावत
बंध करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अस्रष्टा

वाग्द्वयपञ्चचा ह्येति । सममर्णतस्तु कए बहुखंडा अणिदिया ह्येति । ससरामीदो पलिश्वमअसंखज्जदिमाममवयज्ज ससरामिमावलिषाण असंखज्जदिमाए ऊणगखंड पि पुणो पुष हविय सेमबहुभाग घत्थण पचति मग्गिपुंज कात्थम टयेयव्या । पुणो आब लियाए असंखज्जदिमागं विरत्तऊण अवधिदएगखंडं समखंड करिप दिण्णे तत्थ बहुखंड पढमपुंज पक्खिचे वेददिया ह्येति । पुणो आबलियाए अमंखज्जदिमागं विरत्तेऊम दिण्ण-सेवेगखंडं समखंड करिप दिण्ण तत्थ बहुभाग विदियपुंजे पक्खिचे वेददिया ह्येति । पुण्व विरत्तणादो संपदि विरत्तणा किं सतिमा, किमविया, किमूणा ति पुच्छिद एतिय एत्थ उक्कएसा । पुण्ण नि सप्राज्जाम्मावलिषाए अमंखज्जदिमागं विरत्तऊण ससरगखंड समखंडं करिप दिण्ण तत्थ बहुखंड उदियपुंजे पक्खिचे चउरदिदिया ह्येति । ममगखंड चउरपुंजे पक्खिचे पंचिदियमिच्छद्वी ह्येति । वेददियगमिममखज्जखंडे कए बहुखंडा वेददिय अपञ्चचा ह्येति । ससेगखंडं धेमि पञ्चचा ह्येति । त्वदिय-चउरदिदिय-पंचिदियाणं पि एव चव वत्तम । पुण्वमवणिदपलिश्वमस्य असंखज्जदिमागसिमसंखज्जखंड कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव है । दोष राशिमेंसे पक्षोपमके असंख्यातमें भागको घटा कर को राशि अवाशिष्ठ रहे उसके आबलीके असंख्यातमें भागप्रमाण खंड करके बहु भागमेंसे एक भागको भी पुनः पूरक स्थापित करके दोष बहुभागको लेकर बार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः आबलीके असंख्यातमें अगको विरहित करके उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निष्काट कर पूरक रहे हुए एक काइको समान खंड करके दोषरूपसे दो दोनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः आबलीके असंख्यातमें भागको विरहित करके उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पुंजमें दोनेसे दोष रहे हुए एक भागको समान खंड करके दोषरूपसे दोनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिखा देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है ।

पूर्व विरत्तनसे यह दूसरा विरत्तन क्या समान है क्या अधिक है या क्या कम है । ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है । फिर भी तद्योग्य भाष्यकीके असंख्यातमें भागको विरहित करके भीर उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दोष एक काइको समान खंड करके दोषरूपसे दो दोनेके अनन्तर उनमेंसे बहुभाग तीसरे पुंजमें मिखा देने पर चतुर्दिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । दोष एक पक्षको भीये पुंजमें मिखा देने पर पंचेन्द्रिय मिष्यावधि जीवोंका प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय जीवरशिसे असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव है । त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय भीर पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये । पहले घटा कर पूरक रखनी

२४० । बादेरैदियरासी सोससमेचो १६ । सुहुयेरैदियपञ्जचरासी असीदिसयमेचो १८० ।
 सधिमपञ्जचा सङ्की ६० हवीते । बादेरैदियअपञ्जचा बारस १२ हवीति । तेसि पञ्जचा
 चचारि ४ ।

सपहि बेईदियपञ्जचरासीदो बेईदिय-तेईदियरासीण विसेसो किं सरिसो किमहिओ
 हीणो वा इदि शुषे अतंसेअगुणो हवदि । तं अहा । शुषदे-तेईदिय-चउरिदियरासीण
 विसेमादो बेईदिय-तेईदियरासिविसेसो अतंसेज्जगुणो । तं कध जाणिअदे ? आइरिओव
 हेसदो मागामागहि परुविदवक्खाणादो य जाणिअदे । तेईदिय-चउरिदियरासिविसेसो
 पुण तेईदियपञ्जचरासीदो बहुगो । त कध जण्वदे ? तेईदियअपञ्जचरासीदा चउरिदियरासी
 विसेसहीणो ति शुचअप्पावहुगसुचादो । तेईदियपञ्जचरासीदो पुण बेईदियपञ्जचरासी
 विसेसहीणो । तं कधं जण्वदे ? एवं पि अप्पावहुगसुचादो चव जण्वदे । उदो जाणिअदे
 अहा त्रैदियपञ्जचरासीदो विसेसहिपतीरैदियपञ्जचरासीदो बहुदरतीरैदिय-चउरिदिय

है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बाह्य १२ है
 भीर बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि बाह्य ४ है ।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय भीर द्वीन्द्रिय राशियोंका विशेष
 अथवा अन्तर क्या समझ है क्या अधिक है या हीन है ? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त
 राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये । यह इसप्रकार है । आगे उसीको
 कहते हैं—द्वीन्द्रिय भीर चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय भीर द्वीन्द्रिय जीवराशिक
 विशेष असंख्यातगुणा है ।

शुद्ध—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्योंके उपदेशसे भीर मागामागमें प्ररूपण किये गये व्याप्याप्तसे
 जाना जाता है ।

द्वीन्द्रिय भीर चतुरिन्द्रिय राशिके विशेष द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे
 अधिक है ।

शुद्ध—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—द्वीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है
 ऐसा अस्पष्टवृत्त्यके सूत्रमें कहा है अतएव इससे जाना जाता है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाण विशेष हीन है ।

शुद्ध—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह भी अस्पष्टवृत्त्यके सूत्रसे ही जाना जाता है ।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तराशि
 विशेष अधिक है भीर इससे द्वीन्द्रिय भीर चतुरिन्द्रिय राशिके विशेष बड़ा है । द्वीन्द्रिय

रासिभिसेसादे। असंखजगुणा भेदिय-संखदियगतिभिसेसा भेदियपञ्चतर्हिता अमलेत्र गुणा पि ।

अप्यापहुमं तिविह सत्याप परत्याग-सम्पपरत्यागमेष्य । एत्थ तत्र मत्वाप प्यापहुमं शुद्धे । सम्पत्थोना बादरदियपञ्चत्ता । तसिमपञ्चत्ता असंखेजगुणा । को गुणगरो ? असंखत्ता सागा । बादरदिया विसेसाहिया । कथियमपेष ? संगपञ्चत्तपक्खित्तमेतेण । सम्पत्थावा सुहुमेदियप्रपञ्चत्ता । सति पञ्चत्ता संख-गुणा । को गुणगरो ? संखेत्ता समया । सुहुमेदिया विसेसाहिया । कथियमपेष ? संगप्रपञ्चत्तमपेष । सम्पत्थायो भेदियप्रपञ्चत्ता । रिक्खुमसई अमंखत्तगुणा । को गुणगरो ? संगविक्खुमसई असंखज्जविमागो । को पडिमागो ? संगप्रपञ्चत्ता । अहत्ता सेदीए असंखज्जविमागा असंखज्जवि सेदिपडमवग्गमूलानि । का पडिमागा ? संगप्रपञ्चत्तवग्गो । सा वि असंखज्जानि पर्वगुणानि सुविग्गुलस्स असंखज्जि-मागमेत्तापि । सेदी असंखज्जगुणा । को गुणगरो ? अवहत्ता । इवमसंखज्जगुणं । को गुणगरो ? विक्खुमसई । पदमसंखेत्तगुण । का गुणगरो ? अवहत्ता । लेगा असंख

और बहुरिन्ध्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुण है बहुरिन्ध्रिय पर्याप्त राशिके द्वीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुण है ।

कल्याण, परत्याग और सर्व परत्यागके दोहसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे यहां पर पढ़के स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र हैं । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हमसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात को गुणकार है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बाहर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? अपनी पर्याप्त राशिको अधिक करने रूप विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका कितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । द्वीन्द्रियोंका व्यवहारका सबसे स्तोत्र है । अवहारकासे विक्खमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खमसूचीका असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिमाय क्या है ? अपना अवहारका प्रतिमाय है । अपना, जगमेवीका असंख्यातका भाग गुणकार है जो जगमेवीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अपने अवहारकाका भाग प्रतिमाय है । वह प्रतिमाय भी सूक्ष्मगुणके असंख्यातार्थे भागमात्र असंख्यात कागुणप्रमाण है । विक्खमसूचीके जगमेवी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारका गुणकार है । जगमेवीके द्वीन्द्रियोंका प्रपञ्चमात्र असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खमसूची गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके प्रपञ्चसे जगमत्तर असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारका गुणकार है । जगमत्तरसे को असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगमेवी

गुणो । को गुणगारो ? सखी । एवं वेददियअपन्जचाण पि वचम्भ । एव पन्जचाण पि ।
पन्वरि जम्हि सचिअगुलस्स असंखज्जदिमागमचाणि घणंगुलाणि चि बुद्धं तम्हि सचि
अगुलस्स संखज्जदिमागमचाणि चि वचम्भ । तिन्नु-पेदिदियाण तेसि पन्जचापन्जचाण
पि जहाकमम वेददिय रंदिपपन्जचापन्जचाण मंगो । सासणादीण मूलापसत्थात्ममंगो ।

परत्थाणे पपदं । तत्थ ताव परंदिपपरत्थाण बुद्धे- सम्भत्थेवा वादेरंदिप्या ।
सुद्धमंदिप्या असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अमंखज्जा लोगा । तेसि छेय्या वि असं
खेज्जा लोगा । एव चेव विदियविपप्यो । पन्वरि एरदिया विसंसाहिया । अहवा
सम्भत्थेवा वादेरंदिपपज्जचा । तस्मिपपन्जचा असंखज्जगुणा । को गुणगारो ? अमंखज्जा
लोगा । सुद्धमंदिपअपन्जचा अमंखज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसि
छेय्या वि असंखेज्जा लोगा । सुद्धमंदिपपज्जचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-
समया । चउत्था विपप्यो एव च । पन्वरि एरदिया विसंसाहिया । कचियमेवमं ? वादेर
इदिपसाहिसुद्धमंदिपअपन्जचमवेण । सम्भत्थेवा वादेरंदिपपज्जचा । तस्मिपपन्जचा

गुणकार है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अवयवद्वय कहना चाहिये । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय पर्याप्तजीवोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहाँ पर स्वप्नगुणके
असंख्यातजै मागमात्र घनांगुल कहें हैं वहाँ पर स्वप्नगुणके संख्यातजै मागमात्र घनांगुल
कहना चाहिये । द्वीन्द्रिय कतुन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्द्रि के पर्याप्त और अपर्याप्त
जीवोंके स्वस्थान अवयवद्वयका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय
अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अवयवद्वयके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमर्मणामें साक्षात्
स्वप्नरूपि आदिना स्वस्थान अवयवद्वय मूखीय स्वस्थान अवयवद्वयके समान है ।

अब परत्थाणमें अवयवद्वय प्रकट है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परत्थान अवयव
द्वयका कथन करते हैं— बाहर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
इनसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अपर्याप्त जीवों
संख्यात लोक है । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक है । अथवा बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक है । बाहर एके-
न्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? असंख्यात
लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुण है ।
गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अपर्याप्त जीवों असंख्यात लोकप्रमाण है । सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंसे संख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । औषा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके
प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणमें बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र
विशेषसे अधिक है । बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । बादरद्विद्या निससाहिया । का विसेसो ?
 पुष्पं मयिदो । सुदुर्भेदियअपन्जचा असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा ।
 सुदुर्भेदियअपन्जचा असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । सुदुर्भेदिया विसेसाहिया ।
 को विसेसो ? पुष्पं मयिदो । छद्म विपप्या णं च । नवरि एद्विद्या निससाहिया ।
 कसियमचेण ? बादरद्विद्यामचण । अहवा सम्पत्त्योदा बादरद्विद्यापञ्चचा । तसिमपञ्चचा
 असंख्यगुणा । का गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । बादरद्विद्या विसेसाहिया । सुदुर्भेदिय
 अपन्जचा असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । एद्विद्यापञ्चचा
 निससाहिया । कसियमचेण ? बादरद्विद्याअपन्जचमचण । सुदुर्भेदियअपन्जचा असंख्य-
 गुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । एद्विद्यापञ्चचा विसेसाहिया । कसियमचण ?
 बादरद्विद्याअपन्जचमचण । सुदुर्भेदिया विसेसाहिया । कसियमचेण ? बादरद्विद्या-

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुण
 कार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । बिरो-
 धका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना
 प्रमाण है बिरोधका प्रमाण उतना है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके
 प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोके प्रमाणसे बिरोध
 अधिक है । बिरोध क्या है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोका
 जितना प्रमाण है उतना बिरोध है । छद्म बिचकार इसीप्रकार है । इसका बिरोध है कि एकेन्द्रिय
 जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बादर
 एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है । अथवा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोत्र है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या
 है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
 प्रमाणसे बिरोध अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे
 अधिक है ? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है ।
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोके
 प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोका
 जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रिय पर्याप्तको
 जीवोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बादर एकेन्द्रिय

पञ्चचमिरिदिसुदुमेरिदियापञ्चचमेतेषां । एष च न अङ्गमो धियप्पो । मधुरि एरिदिया
 विसाहिआ । सञ्चर्येतो वेरिदियअवहारकालो । तस्सेव अपञ्चचमवहारकालो
 विसाहिओ । केचियमेतेषां ? आबलियाए असखेज्जदिमाण खडिदमेतेषां । पञ्चच
 अवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आबलियाए असखेज्जदिमाणो । तस्सेव
 विक्खमसूरि असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खमसूरिए असखेज्जदिमाणो । को
 पडिमाणो ? सगअवहारकालो । अइवा सेदीए असखेज्जदिमाणो असखेज्जाणि सेडिपदम
 बग्गमूलाणि । को पडिमाणो ? सगअवहारकालवग्गो असखेज्जाणि वग्गगुलाणि । केचिय
 मेतेषां ? सञ्चरिगुलस्स सखेज्जदिमाणमेतेषां । वेरिदियअपञ्चचविक्खमसूरि असखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? आबलियाए असखेज्जदिमाणो । वेरिदियाविक्खमसूरि विसाहिआ । केचिय
 मेतेषां ? आबलियाए असखेज्जदिमाण खडिदमेतेषां । सेदी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 वेरिदियअवहारकालो । वेरिदियपञ्चचमसखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खमसूरि ।

पर्याप्तार्थोंके प्रमाणसे यहित सूत्र पक्षेन्द्रिय अपर्याप्तार्थोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे
 अधिक है । इसीप्रकार आठवां विक्षय है । इसना विशेष है कि पक्षेन्द्रिय जीव सूक्ष्म
 पक्षेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । इन्द्रिय जीवोंका अवधारकाय सबसे श्लोक है ।
 उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवधारकाय पूर्वोक्त अवधारकायसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र
 विशेषसे अधिक है ? आबलीके असंख्यातार्थ भागसे इन्द्रिय जीवोंके अवधारकायको वर्णित
 करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवधारकाय
 इन्द्रिय अपर्याप्तार्थोंके अवधारकायसे असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? आबलीका
 असंख्यातार्थ भाग गुणकार है । उन्हीं इन्द्रिय पर्याप्तार्थोंकी विष्कम्बसूची उन्हींके
 अवधारकायसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कम्बसूचीका असंख्यातार्थ भाग
 गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवधारकाय प्रतिभाग है । अपना अयशेषीका
 असंख्यातार्थ भाग गुणकार है जो जगशेषीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग
 क्या है ? अपने अवधारकायका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात धर्माशुभप्रमाण है । असंख्यात
 धर्माशुभ कितने हैं ? सूक्ष्मगुणके असंख्यातार्थ भागमात्र हैं । इन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी
 विष्कम्बसूची इन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कम्बसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ?
 आबलीका असंख्यातार्थ भाग गुणकार है । इन्द्रिय जीवोंकी विष्कम्बसूची इन्द्रिय अपर्याप्त
 जीवोंकी विष्कम्बसूचीसे विशेष अधिक है । इस विशेषका कितना प्रमाण है ? आबलीके
 असंख्यातार्थ भागसे इन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कम्बसूचीको वर्णित करके जो एक भाग
 आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये । इन्द्रिय जीवोंकी विष्कम्बसूचीसे जगशेषी असंख्यातगुणी
 है । गुणकार क्या है ? इन्द्रिय जीवोंका अवधारकाय गुणकार है । इन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका
 मध्य अयशेषीसे असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? अपनी (इन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)

केसियमत्ते ? आतलियाए अमंखेज्जदिमाएण खंडिदमेत्ते । एवं सेइंणिय-सेइंणियअपञ्चस
 चउरिंदिय-चउरिंदियअपञ्चस-पंथिदिय-पंथिदियअपञ्चसोण अबहमकाला कमेण विससा
 हिया । ततो तीइदियपञ्चअवहमकाला अमंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आतलियाए
 असंखेज्जदिमागम् मंखेज्जदिमागो । वेइदियपञ्चअवहमकाला विससाहिओ । कसिय
 मेत्ते ? आतलियाए अमंखेज्जदिमाएण खटिदवीइदियपञ्चअवहमकाला विससे ।
 पंथिदियपञ्चअवहमकालो विमसो । चउरिंदियपञ्चअवहमकाला विससाहिआ । तस्सेव
 विक्खमसूई अमंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुग्ग मणिआ । पंथिदियपञ्चविक्खमसूई
 विससाहिआ । वेइदियपञ्चविक्खमसूई विससाहिआ । सेइंणियपञ्चविक्खमसूई विसे
 माहिआ । पंथिदियअपञ्चविक्खमसूई अमंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आतलियाए
 अमंखेज्जदिमागस्स संखेज्जदिमागो । पंथिदियविक्खमसूई विससाहिआ । कसियमत्तेण ?
 आतलियाए असंखेज्जदिमाएण खंडिदपंथिदियअपञ्चविक्खमसूचिमत्तेण । एवं णयव्वं

अवहारकाळसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? व्यापकीके असंख्यातवें
 भागसे हीमिद्योंके अवहारकाळको संज्ञित करके जो एक भाग उभय भावे तन्मात्र विशेष
 अधिक है । इसीप्रकार हीमिद्वय हीमिद्वय अपर्याप्त अतुरिमिद्वय अतुरिमिद्वय अपर्याप्त
 पंचेमिद्वय और पंचेमिद्वय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ की क्रमसे विशेष अधिक है । पंचेमिद्वय
 अपर्याप्तकोंके अवहारकाळसे हीमिद्वय पर्याप्तकोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? व्यापकीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । हीमिद्वय पर्याप्तकोंके
 अवहारकाळसे हीमिद्वय पर्याप्तकोंका अवहारकाळ विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष
 अधिक है ? व्यापकीके असंख्यातवें भागसे हीमिद्वय पर्याप्तकोंके अवहारकाळको संज्ञित करके
 जो भाग उभय भावे तन्मात्र विशेष अधिक है । हीमिद्वय पर्याप्तकोंके अवहारकाळसे पंचेमिद्वय
 पर्याप्तकोंका अवहारकाळ विशेष अधिक है । पंचेमिद्वय पर्याप्तकोंके अवहारकाळसे अतुरिमिद्वय
 पर्याप्तकोंका अवहारकाळ विशेष अधिक है । अतुरिमिद्वय पर्याप्तकोंके अवहारकाळसे तर्हीकी
 बिम्बमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । अतुरिमिद्वय
 पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूचीसे पंचेमिद्वय पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूची विशेष अधिक है । पंचेमिद्वय
 पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूचीसे हीमिद्वय पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूची विशेष अधिक है । हीमिद्वय
 पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूचीसे पंचेमिद्वय पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूची विशेष अधिक है । हीमिद्वय
 पर्याप्तकोंकी बिम्बमसूचीसे पंचेमिद्वय अपर्याप्तकोंकी बिम्बमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
 क्या है ? व्यापकीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेमिद्वय अपर्याप्तकोंकी
 बिम्बमसूचीसे पंचेमिद्वयोंकी बिम्बमसूची विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेषसे
 अधिक है ? व्यापकीके असंख्यातवें भागसे पंचेमिद्वय अपर्याप्तकोंकी बिम्बम

तस्मैव अपञ्चतद्व्यमसंखेज्जगुण । का गुणगारा ? आत्मिमाए असंखज्जदिमागस
संखेज्जदिमागो । वरदियद्वय विसेसद्विय । केसियमेचा ? अत्तत्तिमाए अमंखे ज्जदिमाए
खेदिसगगपञ्चमया । पदरमसंखज्जगुणी । का गुणगारा ? वरदियववहारकात्त । सोपो
असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? सेही । एव सीदिय-वउत्तिदियाण । एवं पविदियानं
पि । पवति अजोगिमगनवमाई काठम वचनं ।

सम्पत्तयाम्मे पयद । सम्पत्तयाममजागिकवत्तिद्वयं । वचरि उवसामगा संखेज्जगुणा ।
वचरि सुवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकवत्तिद्वयं संखेज्जगुण । अप्पमत्तसंखदद्वयं
संखेज्जगुण । पमत्तसंखदद्वयं संखेज्जगुण । असंखदववहारकात्तो असंखेज्जगुणा ।
उवरे पत्तिदोवम वि आभं । उदा वरदियववहारकात्ता असंखज्जगुणो । को गुणगारा ?
सगजवहारकात्तस्य संखज्जदिमागो । को पत्तिमागो ? पत्तिदोवमं । अहवा पदा
गुत्तस्य असंखज्जदिमागो अमंखज्जापि सुविअंगुलापि । का पत्तिमागा ? आत्मिमाए
असंखज्जदिमाएव गुणिदपत्तिदोवम । तस्मैव अपञ्चतद्वयवहारकात्तो विसेमाद्विभो ।

विष्कममूखा गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पयात्त जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीके असंख्यातसे मागका संख्यातका माय
गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक
है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आबलीके असंख्यातसे
मायसे जड़ित करके जो द्रव्य माये तन्मात्र विशेष अधिक है । अयमन्तर द्वीन्द्रिय जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकात्त गुणकार है ।
अयमन्तरसे जोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अयमेवी गुणकार है । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय और अतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्परान अस्पष्टहूत है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय
जीवोंका भी परस्परान अस्पष्टहूत है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्परान
अस्पष्टहूत कहते समय अयोगी मगबावको जादि करके उत्तरा कथन करना चाहिये ।

अब सर्वपरस्परान अस्पष्टहूतसे प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोपिनेबद्धिबोका
द्रव्यप्रमाण सबसे रहोक है । चारों गुणरथानोंके उपशामक अयोपिनेबद्धियोंसे संख्यातगुणे
हैं । चारों गुणरथानोंके उपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोपिनेबद्धियोंका द्रव्यप्रमाण
शुणकोसे संख्यातगुणा है । अयमत्तसंखतोंका प्रमाण सयोपिनोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा
है । अयमत्तसंखतोंका प्रमाण अयमत्तसंखतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंखतोंका
अवहारकात्त अयमत्तसंखतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर पक्षोपम तक जोबके
समान है । पक्षोपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकात्त असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने
अवहारकात्तका असंख्यातका माय गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? पक्षोपम प्रतिमाग
है । अथवा प्रतरागुत्तस्य संख्यातका माय गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुत्तप्रमाण है ।
प्रतिमाग क्या है ? आबलीके असंख्यातसे मागसे पक्षोपमको गुणित करके जो द्रव्य माये
उतना प्रतिमाग है । उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अवहारकात्त द्वीन्द्रियोंके

केसियमेवो ? अत्रलियाए असंखेज्जदिमाएण खंदिदमेवो । एवं स्रग्दिय-स्रग्दियअपज्जच
चठरिंदिय चठरिंदियअपज्जच पंचिंदिय पंचिंदियअपज्जचाण अवहारफालो कमेण विसेसा
हिया । तदो स्रग्दियपज्जचअवहारफालो असंखेज्जगुणो । को गुणगतो ? आबलियाए
असंखेज्जदिमागस्स संखेज्जदिमागो । वेग्दियपज्जचअवहारफालो विसेसाहिओ । केसिय
मेवो ? अत्रलियाए अमखेज्जदिमाएण खंदिदवीग्दियपज्जचअवहारफालमेवो विसेसो ।
पंचिंदियपज्जचअवहारफालो विमसो । चठरिंदियपज्जचअवहारफालो विसेसाहिओ । तस्सेव
विकलमस्र्हे असंखेज्जगुणा । को गुणगतो ? पुब्ब मज्झिदो । पंचिंदियपज्जचविकलमस्र्हे
विसेसाहिआ । वेग्दियपज्जचविकलमस्र्हे विसेसाहिआ । स्रग्दियपज्जचविकलमस्र्हे विसे
साहिआ । पंचिंदियअपज्जचविकलमस्र्हे असंखेज्जगुणा । को गुणगतो ? अत्रलियाए
असंखेज्जदिमागस्स संखेज्जदिमागो । पंचिंदियविकलमस्र्हे विसेसाहिआ । केसियमेवो ?
अत्रलियाए असंखेज्जदिमाएण खंदिदपंचिंदियअपज्जचविकलमस्र्हेविमेषण । एवं वेयवजं

अवहारफालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें
भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारफालको छंटित करके जो एक भाग छप्प मात्रे तन्मात्र विशेष
अधिक है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय द्वीन्द्रिय अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारफाल भी कमसे विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके अवहारफालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारफाल असंख्यातगुण्य है । गुणकार
क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके
अवहारफालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष
अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालको छंटित करके
जो भाग छप्प मात्रे तन्मात्र विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे चतुरिन्द्रिय
पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे तन्हींकी
विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी
विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भ-

तस्सेव अपञ्चदशमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? आवलियाए असंखज्जदिमाएस
संखेज्जदिमागो । वइदियदम्भं विसेसाहिय । केसियमेचो ? आवलियाए असंखज्जदिमाएस
खेदिसगजपञ्चमेचो । पवरमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? वेइदियमवहारकालो । समो
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । एवं सीइदिय-वटर्दिदियाण । एवं पंचिदियानं
पि । ववरी अबोगिमगवतमाए काऊण वचनं ।

सुखपरत्वात्ते पयदं । सखत्वावमजोगिकेज्जिदम्भं । वचारी उवसामगा संखेज्जगुणा ।
वचारी खवगा संखेज्जगुणा । समोगिकेज्जिदम्भं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंखदम्भं
संखेज्जगुण । पमत्तसंखदम्भं संखेज्जगुण । असंखदम्भवहारकालो असंखेज्जगुणा ।
उवरी पत्तिरोवम पि ओपं । तदो वीइदियववहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सगमवहारकालस्स संखज्जदिमागो । को पट्ठिमागा ? पत्तिरोवमं । अहवा पदं
गुहस्स असंखेज्जदिमागो अमंख-आणि सुचिअगुलाणि । को पट्ठिमागा ? आत्थिमाए
असंखेज्जदिमाएस गुणिदपत्तिरोवम । तस्सेव अपञ्चदशवहारकालो विसमाहिबो ।

विषममूर्त्तौ गुणकार है । जहाँ द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? व्यवस्थीके असंख्यातमें भागका संख्यातर्था माप
गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक
है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको व्यवस्थीके असंख्यातमें
भागसे व्यंजित करके जो द्रव्य भावे तन्मात्र विशेष अधिक है । अपप्रतर द्वीन्द्रिय जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका व्यवहारकाल गुणकार है ।
अप्रप्रतरसे जोके असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रसेपी गुणकार है । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय और बहुचिन्द्रिय जीवोंका परस्परान व्यसबहुत्व है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय
जीवोंका भी परस्परान व्यसबहुत्व है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्परान
व्यसबहुत्व कहते समय अयोपी मयबहुत्वों भावि करके वसुधा कथन करना चाहिये ।

अब सर्वपरस्परान व्यसबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिवेबद्धिबोध
द्रव्यप्रमाण सबसे श्लोक है । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिवेबद्धियोंसे संख्यातगुणे
हैं । चारों गुणस्थानोंके सपक्ष उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिवेबद्धियोंका द्रव्यप्रमाण
सपक्षोंसे संख्यातगुणा है । अग्रमत्तसपक्षोंका प्रमाण सयोगिवेबद्धियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा
है । प्रमत्तसपक्षोंका प्रमाण अग्रमत्तसपक्षोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंघर्षोंका
व्यवहारकाल प्रमत्तसपक्षोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर परस्पोपम तक बोधके
समाप्त है । परस्पोपमसे द्वीन्द्रियोंका व्यवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जन्मे
व्यवहारकालका असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिमाप क्या है ? परस्पोपम प्रतिमाप
है । अथवा प्रतरागुणका संख्यातर्था भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुणप्रमाण है ।
प्रतिमाप क्या है ? व्यवस्थीके असंख्यातमें भागसे परस्पोपमको सूचित करके जो द्रव्य भावे
इतना प्रतिमाप है । जहाँ द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका व्यवहारकाल द्वीन्द्रियोंके

वि अणतगुणो जीवन्मामूलस्त वि अर्णतगुणो सम्भजीवरासिस्त अर्णसेज्जदिमागस्त अर्ण-
तिममागो । को पठिमागो ? अर्णिदिया । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरेइदिया
विसेसाहिया । सुहुमेइदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एइदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।
सुहुमेइदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एइदियपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमेइदिया विसे
साहिया । एइदिया विसेसाहिया ।

एवं इदियमग्गा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुठविकाइया आउकाइया तेइउकाया वाउकाइया
वादरपुठविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइया वादरवाउकाइया
वादरवणफइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुठविकाइया
सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता
पज्जत्ता द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा लेगा ॥ ८७ ॥

अणतगुणा और सर्व जीवतगुणोंके असंख्यातवें मागका अणतर्वा माग गुणकार है ।
प्रतिमाग क्या है ? एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिमाग है । बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके
प्रमाणसे इन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे बाहर एकेन्द्रिय जीव विशेष
अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीव विहाय अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गका समाप्त हुई ।

कायालुवाइसे पृथिवीकायिक, अष्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव
तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अष्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक,
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकद्वितीय जीव तथा इन्हीं पाँच बादरसंबन्धी अपर्याप्त जीव,
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अष्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा
इन्हीं चार सूक्ष्मसंबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥ ८७ ॥

१ अणतगुणो जीवन्मामूलस्त वि अर्णतगुणो सम्भजीवरासिस्त अर्णसेज्जदिमागस्त अर्ण-
तिममागो कोने अण्णेज्जत्तये तेज । सू-ज-का-क काहिया पठिमागो अणतगुणे ॥ १ ॥ २ ॥ ४
अपठिदिपत्तेवा अर्णतगुणपठिमागो ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अर्णतगुण
तेज । पठिमाग १, १ पठिमागपठिमागपठिमाग पठिमाग ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अर्णतगुण
अणतगुणो व इति ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अणतगुणो व इति ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अणतगुणो
अणतगुणो व इति ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अणतगुणो व इति ॥ १ ॥ २ ॥ ५ अणतगुणो

आत चतुर्दिशअपञ्जच-चतुर्दिश-सहदिशअपञ्जच-सहदिश-वेहदिशअपञ्जच-वेहदिशानं नि
 कर्तमधुर्या पि । सेही असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? धीदिशअवहारकलो । चतुर्
 दिशपञ्जचदब्बं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंमधुर्या । पंधिदिशपञ्जचदब्बं विसे
 साहियं । वेहदिशपञ्जचदब्बं विसेसाहियं । सहदिशपञ्जचदब्बं विसेसाहियं । पंधिदिश
 अपञ्जचदब्बं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाण् असंखेज्जदिमाणो । पंधिदिश
 दब्बं विसेसाहियं । केयियमेत्थेण ? आवलियाण् असंखेज्जदिमाण्यं खंडिदपंधिदिशअपञ्जच
 दब्बमेत्थेण । एवं चतुर्दिशअपञ्जच-चतुर्दिश-सहदिशअपञ्जच-सहदिश-वेहदिशअपञ्जच-
 वेहदिशानं दब्बानि जहाकमेण विसेसाहियानि । उदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?
 वेहदिशअवहारकलो । सोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेही । अंधिदिश अर्णत्तगुणा ।
 को गुणगारो ? अमवसिद्धिपहि अर्णत्तगुणो सिद्धायमसंखेज्जदिमाणो । को पद्धिमाणो ?
 सोमो । बाहोवेहदिशपञ्चचा अर्णत्तगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिपहि अर्णत्तगुणो, सिद्धेहि

पूचीये बंझित करके जो माय छव्य भाये तम्मात्र विरोधसे अधिक है । इसी
 प्रकार चतुर्दिशिय अपर्णात्त, चतुर्दिशिय, धीशिय अपर्णात्त धीशिय, धीशिय
 अपर्णात्त धीर धीशिय जीवोंकी विष्कमसूची भावेतक से जाना चाहिये । धीशिय जीवोंकी
 विष्कमसूचीसे जगमेकी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? धीशिय जीवोंका अवहारकल
 गुणकार है । अपर्णात्तसे चतुर्दिशिय पर्णात्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? अपनी विष्कमसूची गुणकार है । चतुर्दिशिय पर्णात्तकीके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्णात्त
 जीवोंका द्रव्य विरोध अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्णात्त द्रव्यसे धीशिय पर्णात्त द्रव्य विरोध
 अधिक है । धीशिय पर्णात्त द्रव्यसे धीशिय पर्णात्त द्रव्य विरोध अधिक है । धीशिय पर्णात्त
 द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्णात्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगदीका जल-
 क्पातवा माय गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्णात्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विरोध अधिक
 है । कितनेमात्र विरोधसे अधिक है ? अपर्णात्तके असंख्यातसे मागसे पंचेन्द्रिय अपर्णात्त
 द्रव्यको बंझित करके जो छव्य भाये तम्मात्र विरोधसे अधिक है । इसीप्रकार चतुर्दिशिय
 अपर्णात्त चतुर्दिशिय धीशिय अपर्णात्त धीशिय धीशिय अपर्णात्त धीर धीशिय
 जीवोंका द्रव्यप्रमाण पचाकमसे विरोध अधिक है । धीशिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यात-
 गुणा है । गुणकार क्या है ? धीशिय जीवोंका अवहारकल गुणकार है । जगप्रतरसे छेक
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेकी गुणकार है । छेकसे अंधिदिश जीवोंका
 प्रमाण जगप्रतगुणा है । गुणकार क्या है ? जगप्रसिद्ध जीवोंसे जगप्रतगुणा धीर सिद्धोका
 असंख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? छेकका प्रमाण प्रतिभाग है । बातर
 पंचेन्द्रिय पर्णात्तकीका प्रमाण अंधिदिश जीवोंके प्रमाणसे जगप्रतगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगप्रसिद्धोंसे भी जगप्रतगुणा सिद्धोंसे भी जगप्रतगुणा जीवप्रसिद्धे प्रथम वर्गमूलसे भी

वि अर्धतगुणा जीववगामृतम् वि अपन्नगुणो सखजीवरुसिस्त अर्धसखदिमामस्त अर्ध-
तिममाणा । को पट्टिमाणा ? अर्णिण्या । सेसिमपञ्जत्ता अर्धसखेज्जगुणा । वादेरुदिया
विसेसाहिया । सुहुमरुदियअपञ्जत्ता अर्धसखेज्जगुणा । एरुदियअपञ्जत्ता विसेसाहिया ।
सुहुमरुदियपञ्जत्ता संखत्तगुणा । एरुदियपञ्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमरुदिया विसे-
साहिया । एरुदिया विसेसाहिया ।

एव इदियमाणणा समत्ता ।

कायाणुवाणेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाया वाउकाइया
वादरपुढविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइया वादरवाउकाइया
वादरवणफडकाइया पत्तेयसरीरा तम्मेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया
सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता
पज्जत्ता दम्बपमाणेण कवीडिया, अर्धसखेज्जा लेगा ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा जीर सब जीवरुसिक्के असक्कातथे मागका अबन्तया माग गुणच्छर है ।
प्रतिमाग क्या है ? अर्णित्रिय जीर्वाका प्रमाण प्रतिमाग है । वादर एकेन्द्रिय पपात्तकोके
प्रमाणसे उर्ध्वीक अपपात्तक जीव असक्कातगुणे है । इनसे वादर एकेन्द्रिय जीव विशेष
अधिक है । इनमे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपपात्त जीव असक्कातगुणे है । इनसे एकेन्द्रिय
अपपात्त जीव विशेष अधिक है । इनमे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पपात्त जीव संक्कातगुणे है । इनसे
एकेन्द्रिय पपात्त जीव विशेष अधिक है । इनमे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक है । इनसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक है ।

इसप्रकार इन्द्रियमाणणा समाप्त हुए ।

कायाणुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव
तथा वादर पृथिवीकायिक, वादर अप्कायिक, वादर तेजस्कायिक, वादर वायुकायिक,
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पाँच वादरसंघ भी अपर्पात्त जीव,
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा
इन्हीं चार सूक्ष्मसंघ भी पपात्त जीव और अपपात्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने है ? अर्धम्यात्त लोकप्रमाण है ॥ ८७ ॥

१ कवचपुराण पृथिवीकायिक वनस्पतिकायिक वायुकायिक अर्धसखेज्जगुणाः । इ ति. १ ८.
काठपुराणके अर्थे वादरपञ्जत्तये तेउ । सूखत्तवाउ जीवा प्रतिमाटी अर्धसखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥ १ ४
वादरुदियपञ्जत्ता अर्धसखेज्जगुणा होति । एतौ वसिष्ठेरा पुत्र अर्धसखेज्जगुणा वसिष्ठेरा ॥ ८७ ॥ १ ५. अर्धसखे
जेता । पञ्चम १, १ पञ्चमसखेज्जगुणा पञ्च इति लोकाः । अर्धसखेज्जगुणा वदर पञ्चमसखे
वदरपञ्चम १ पञ्चम १ १ पञ्चमसखेज्जगुणा पञ्च इति लोकाः । वादर वदरपञ्चमसखेज्जगुणा ॥ पञ्चम १ १०-११. अर्धसखे

एतत् पुढरी काजो सरिं जेसि ते पुढबीकाया सि ज बचन्, बिगहगर्भए बहु-
माम्मार्ज जीवापमकवृत्तपसंगादो । पुणो कर्षे बुचदे ? पुढबिकाइयणामकम्मोदयवत्ते
जीना पुढबिकाइया सि बुचति । पुढबिकाइयणामकम्मं ज कहिं वि बुचमिदि ये ज, तस
एइदियजदियणामकम्मतम्बूवचादो । एवं सदि कम्मार्ण संसाधियमो सुचसिदो ज पढदि
वि बुचे बुचदे । ज सुचे कम्माणि अहेव अहेवसुसयमेवेदि, संसतरपडिसेहविषायय
एवकारामावादो । पुणो केवियाणि कम्माणि होति ? इय-गय-विय-फुल्लबुध-सलह-मसु-
गुरेहि-गोमिइदीवि जेवियाणि कम्मफलानि लोने उवसम्मते कम्माणि वि तवियाणि
वेव । एवं सेसकवृत्तार्ण सि बचन् । बाहरवामकम्मोदयसहिदपुढबिकाइयावजो
बादर । धूलसरिणम् जीवार्ण बाहरर्ष किन्ना बुचदे ? ज, बाहरेइदियमोनाइवादो

यहां पर पृथिवी है बाय अर्थात् शरीर जिनके ऊर्ध्वे पृथिवीकाय जीव कहते हैं
देखा नहीं कहा चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका देखा कर्ष करने पर बिगहगतिमें विद्यमान
जीवोंके अन्तर्गतकय अर्थात् पृथिवीकायित्वके समानकय प्रकाश या जाता है ।

छंका—तो फिर पृथिवीकायिकका कर्ष कैसा कहा चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके रूपसे पुन जीवोंको पृथिवीकायिक कहते
हैं इत्यन्तर पृथिवीकायिक शब्दका कर्ष करना चाहिये ।

छंका—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके क्षेत्रोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके
भातिर अन्तर्भूत है ।

छंका—यदि देखा है तो सूक्ष्म कर्मोंकी संख्याका निश्चय नहीं रह सकता है ?

समाधान—देखा प्रत्य करके पर व्याचार्य कहते हैं कि सूक्ष्म कर्म अदृश ही अथवा
एकही अदृशहीन ही नहीं कहे हैं क्योंकि, अदृश वा एकही अदृशहीन संख्याको छोड़कर
वृक्षी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'यत् देखा पद सूक्ष्म नहीं पाया जाता है ।

छंका—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—छोकमें जोड़ा हाथी वृक्ष (वेविया) अमर शक्य मत्तुय बरेदिध
(दीमक) गोमी वीर इन्द्र नादि रूपसे जितने कर्मोंके पक्ष पाये जाते हैं कर्म भी वतने
ही होते हैं ।

इसीप्रकार दोष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । इनमें बाहर
नामकर्मके रूपसे पुन पृथिवीकायिक भादि जीव बाहर कहलाते हैं ।

छंका—एतत् शरीरकाहि जीवोंको बाहर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदवसेवियाणको बाहर एकेन्द्रियोंकी अन्तर्गतवासे

सुहृमेर्द्विपञ्चमो ग्राहणात् वेदणस्येव विज्ञातव्यं बहुषोऽवर्तमा । तदो पश्चिद्दम्भमाजसरीरो
 पादरो । अर्धमिदं पेश्मालेहि अपश्चिद्दम्भमाजसरीरो जीवो सुहृमो चि पेश्मन् । एकमेकं
 प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं क्षरीरं येषां ते प्रत्येकक्षरीराः । एतत् पश्चयसरीरमिदो
 साहस्रसरीरवपञ्चकस्य पश्चिद्विज्ञातव्यं । पुनश्चिक्रमादजो जीवा पश्चयसरीरा चैव । तस्मिन्
 पश्चयवपञ्चका सुचे क्रियन् कथो ? तत्तत् पश्चयसरीरस्य संभवो चैव अस्तंभवो गतिश्च चि य
 तेन ते वितेसिञ्जते 'सति संभवे व्यभिचारे च विज्ञेयमवपञ्चकमस्ति' इति न्यायान् । सुहृम
 पापकर्मोत्पत्त्यसहितपुनश्चिक्रमादजो जीवा सुहृमा इवेति । श्वेतसरीरो ग्राहणात् वज्रमात्रा
 जीवा सुहृमा चि न चेष्यन्ति, सुहृमेर्द्विपञ्चमो ग्राहणात् बादरोर्द्विपञ्चमो ग्राहणात् वेदनासेव
 विज्ञेयसुचादो श्वेतसरीरवर्तमा । अपञ्चकपापकर्मोत्पत्त्यसहितपुनश्चिक्रमादजो अपञ्चका चि
 पेश्मन् । पाणिप्यञ्चसरीरा, पञ्चचणामकर्मोत्पत्त्यसहितप्यञ्चसरीराश्च चि ग्राहण्यसंग्राहो ।
 तद्वा पञ्चचणामकर्मोत्पत्त्यवर्तमा जीवा पञ्चका । अण्णाहा गिप्यञ्चसरीरजीवाणमेव ग्राहण्य

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोऽपि भवगाहना बड़ी पार्स जाती है, इसलिये स्थूल शरीरवाले जीवोंको
 बाहर नहीं कर सकते हैं । अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे बाहर हैं और अन्य
 पुनश्चिक्रमे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहाँ पर बाहर और
 सूक्ष्म शब्दसे केना चाहिये ।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं । जिन जीवोंका
 प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । यहाँ सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पश्चात्
 निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिआदिकके प्रतिषेधके लिये किया है । पृथिवीकायिक आदि
 जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं ।

श्रुत्या—सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है ?

समाधान—उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संभव ही है अर्धमत्र
 नहीं है, इसलिये प्रत्येक पक्षसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है क्योंकि व्यभिचारके होने
 पर, भयका डसकी संभावना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा व्याप है ।

सूक्ष्म नामकर्मके उद्भवसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं । यहाँ शरीरकी
 स्तोत्र भवगाहनामें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं ऐसा अर्थ नहीं किया गया है क्योंकि
 वेदनासेवविद्यमानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी भवगाहनाकी अपेक्षा बाहर एकेन्द्रियोंकी
 भवगाहना ही स्तोत्र पार्स जाती है । अपर्याप्त नामकर्मके उद्भवसे युक्त बाहर पृथिवीकायिक
 आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहाँ पर केना चाहिये । किंतु जिनका शरीर अग्नी विप्लव
 नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं ऐसा अर्थ यहाँ नहीं
 केना चाहिये, क्योंकि, ऐसा अर्थ केने पर पर्याप्त नामकर्मका उद्भव रहते हुए ही जिनका
 शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पक्षसे उनके ही ग्रहणका प्रसंग आ जाता है । उदीयकार
 पर्याप्त नामकर्मके उद्भवसे युक्त जीव पर्याप्त हैं प्रकृतमें पर्याप्त पक्षसे ऐसा अर्थ केना चाहिये,
 अन्यथा जिन जीवोंका शरीर विप्लव हो चुका है पर्याप्त पक्षसे उनका ही ग्रहण होगा ।

एव पुनरीकृत्यो सतीरं वेति ते पुनरीकृत्या चि व वचस्व, विगाहर्गए नह
मत्प्राणं जीवाणमकृत्तत्पसंगादो । पुनो कर्षं बुधदे ? पुनर्विकार्यनामकर्मोदयवतो
जीवा पुनरिक्कया चि बुधंति । पुनर्विकार्यनामकर्म न कर्हि वि बुधमिदि ने न, तस्म
एरदियनप्रिवात्रकम्मत्तम्पूदत्तादो । एवं सदि कम्मार्णं संसाणियमो सुचसिदो व पद्वि
चि बुधे बुधदे । न सुणे कम्मणि अहेव अहेदासुयमेवेचि, संसातरपडिसेहविधाय
यदकारमात्तादो । पुनो केचियाणि कम्मणि हंति ? इय-गय-विय-कुत्तुव-सत्त-मक्क-
पुदेहि-नोमिदादीप्ति ओचियाणि कम्मफलाणि लोने उवत्तम्भंते कम्मणि वि तचियाणि
केव । एवं सेसकृत्तयाणं चि वचस्व । बाहरनामकर्मोदयसहिपुनर्विकार्यनाम
बादरा । पूससरीरार्णं जीवाणं बादरं किन्व बुधद ? न, बादरेरदियजोनाहनादो

यहां पर पृथिवी है कथन अर्थात् हाथीर जिनके ऊर्ध्वे पृथिवीकर्म जीव करते हैं
देसा नहीं करना चाहिये क्योंकि, पृथिवीकर्मक देसा कर्म करने पर विग्रहपतिमें विघ्नमान
जीवोंके अक्षयित्वका अर्थात् पृथिवीकर्मिकके अभावका प्रमाण था जाता है ।

प्रश्न—तो फिर पृथिवीकर्मिक कर्म देसा करना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकर्म नामकर्मके रूपसे कुछ जीवोंको पृथिवीकर्मिक करते
हैं इसकारण पृथिवीकर्मिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

प्रश्न—पृथिवीकर्मिक नामकर्म कहां भी अर्थात् कर्मके क्षेत्रमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं क्योंकि पृथिवीकर्म नामका कर्म एकेन्द्रिक नामक कर्मकर्मके
बादर अन्तर्भूत है ।

प्रश्न—यदि देसा है तो सूक्ष्मिज कर्मोंकी संख्याका विषय नहीं रह सकता है ?

समाधान—देसा प्रमाण करने पर व्याख्य करते हैं कि सूक्ष्म कर्म अ. ३ ही अथवा
एकही अक्षराक्षर ही नहीं होते हैं, क्योंकि, अक्षर वा एकही अक्षराक्षर संख्याको धेनुकर
बृहदी संख्यार्थक प्रतिषेध करनेवाला 'एव देसा एव सूक्ष्म नहीं थावा जाता है ।

प्रश्न—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—धेनुमें जोड़ा हाथी वृक्ष (वेविका) अथवा शकम मनुज बरेहिक
(दीमक) गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके कर्म पाये जाते हैं, कर्म भी इतने
ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कर्मिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । इनमें बाहर
नामकर्मके रूपसे कुछ पृथिवीकर्मिक आदि जीव बाहर कहाते हैं ।

प्रश्न—एक ही हाथीरपाक जीवोंको बाहर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदसंज्ञाविधानसे बाहर एरेन्द्रियोंकी अवगाहयसे
इन्द्रियाक वच अर्थात् बाहरका । अ. ६, १४१, १३ १७१

एतत् परिहारा युक्ते । जप जीवण एवेव च एतत्सर्गिणीण सुहृद्-समश्रुम-
वेदम्भमिदि कम्ममुत्तरे सो जीवा पचेयसर्गिरा । जप जीवण एतत्सर्गिणीयबह्वि जीवहि
सह कम्मफलमश्रुमवयम्भमिदि कम्ममुत्तरे सो साहारणसर्गिरा । न च अ-
च्छिन्नाउत्तरे
तत्त्ववत्सा, तत्र प्रत्यक्षतरमावात् । विमगाहगए पुण पच्चासुत्ती अन्धि चि हवदि एसा
बवण्णो तम्हा य पुप्फुत्तदासस्स समवा । अहवा पचेयसर्गिणीकम्मत्तयवतो बवण्ण
कम्हा पचेयसर्गिरा । साहारणणामकम्मत्तयवतो साहारणसर्गिरा चि वचन् । सर्गिणीदि
पद्मसमए दोह्म सर्गिणीमगदस्म उद्भो हवदीदि विमगाहगए बहुमाणत्तीमाय पचेय
साहारणसर्गिणीवत्सा य पाप्मि चि पुत्त, न एम दत्ता, तत्त वि पच्चासुत्ती अन्धि चि
उत्तपणेण तमि पचेय-साहारणसर्गिणीवत्सासमवात्ता । विमगाहगए बहुमाणत्तत्तीमाय
साहारणकम्मत्तयवत्साणमप्पोप्पाणुगयचणण एतत्तत्त्ववत्सायपयसर्गिरास्मि बहुमाणत्तादा वा

समाधान - वहाँ पर उपयुक्त संकाशा परिहार करते हैं । जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर भवेत्ते ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव प्रत्येकशरीर है । तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख दुःखरूप कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव साधारणशरीर है । परन्तु जिसमें भाव स्थिर नहीं हुए है अर्थात् जो जीव अपनी पचासको छोड़कर प्रत्येक य साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यवदेश नहीं हो सकता है क्योंकि वहाँ पर प्रत्यावृत्ति नहीं पाई जाती है । विमहागनिमें तो प्रत्यावृत्ति पाई जाती है इसलिये वहाँ पर यह व्यवदेश होता है अतएव वहाँ पूर्वोक्त रूप सम्य नहीं है । अथवा प्रत्येकशरीर नाम कर्मके रूपमें युक्त धनसंविदायिक भाव प्रत्येकशरीर है और साधारण नामकर्मके रूपमें युक्त धनसंविदायिक और साधारणशरीर हैं ऐसा कथन करना चाहिये ।

सुद्ध - शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उद्भव होता है इसलिये विमहागनिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोई भी संका नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान - यह बोर दोष नहीं है क्योंकि विमहागनिमें भी प्रायसत्ति पाई जाती है इसलिये उपकारने उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा साधारणशरीर संका संभव है । अथवा साधारण नामकर्मके उद्भवे आधीन हुए और विमहागनिमें विद्यमान हुए धनस्त जीव परस्पर अनुगत होनेसे एकत्रको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहने हैं इसलिये वे प्रत्येकशरीर नहीं हैं ।

विशेषार्थ - वनमान ध्युक्ते समाप्त होने पर वनमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके ग्रहण करनेके स्थिति आ गति होती है उसे विमहागनि कहते हैं । वहाँ विमहागन भवे शरीर है इसलिये विमहा अर्थात् शरीरके स्थिति आ गति होती है उस विमहागति कहते हैं । इसके श्रुति पाणिमुक्तागति आगतिवगाति और श्रुतिवगाति समप्रकार धारण हैं ।

संगा । मत्त-सुद्धमन्त्रिणसु पंच-चतुष्मणसु तस्सेवचि एगवयणनिदेशो कथं घट्टे ? अ, तेषिं सादीए एगचर्तमवादो ।

एतय चेतुगो मणदि । विम्माहगर्हए बहुमाणवणप्फइकइया किं पचेयसरिा आतो साहारवसरिा इदि ? किं चात्ता ? अ पचेयसरिा, कम्मइयफायजेगे बहुमाणवणप्फइ कम्पा अर्पता पि कहु वणप्फइकइयपचेयसरिाराणमणतचप्पसगा । अ अ एवं सुचे, तेषिं अस्सेज्जंछेगेमेवपमाणपदुप्पाययात् । अ ते साहारवसरिा वि, तत्त्व—

साहारणमाहारो साहारणमाणयणगणं च ।

साहारणजीवाण साहारणकम्मज्जण मणिंद ॥ ७७ ॥

इवादिगाइदि धुत्तसाहारवणकवसाजुवर्त्तमत्तो । अ अ पचेय-साहारवसरिावविदिचा वणप्फइकइया अत्थि, उहाविहोवपसामावादो । तस्मात्प्रत्येकं छरीं देहो येषां ते प्रत्येकं छरीता इत्येतन्न घटत इति ?

श्रीका — बाहर जीव पांच प्रकारके और सूक्ष्म जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूक्ष्म तस्सेव 'इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे वचन सज्जा है ?

समाधान—नहीं क्योंकि इन पांच प्रकारके बाहर और चार प्रकारके सूक्ष्म जीवोंके व्यक्तिकी अपेक्षा एकत्र संभव है इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

श्रीका — वहाँ पर टीकाकार कहता है कि विमलवृत्तिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं ? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते क्योंकि कर्मवकाययोगमें रहने वाले वनस्पतिकायिक जीव जनन्त होनेसे पत्रस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके जनन्तत्वका प्रसंग न्य आता है । परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं क्योंकि सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका अन्तर्यामि लोकमान्य प्रमाण कहा है । वहीप्रकार वे जीव साधारणशरीर की नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, वहाँ पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण आसोच्छुद्धका ग्रहण होता है । इसप्रकार आध्यात्ममें साधारण जीवोंका साधारण कर्तव्य कहा है ॥ ७४ ॥

इत्थादि ग्रन्थान्तोके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका कर्तव्य नहीं पाया जाता है । और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यक्तिगत वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं क्योंकि, इसप्रकारका अपेक्षा वहाँ पाया जाता है । इसलिये जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं ' यह कथन बलित नहीं होता है ?

एष्य परिहारो युषदे । तेन जीवेण एष्येण चेव एकसरीरद्विष्येण सुह-भु-समयुग्म-
वेदममिदि कम्मसुवजिदं सो जीवो पचेयसरीरो । तेन जीवेण एगसरीरद्विष्येणहि जीवेहि
सह कम्मफलमयुग्मवेयममिदि कम्मसुवजिदं सो साहारणसरीरो । न च अलिप्पाउअस्स
सम्भवएसो, सत्त प्रत्यत्तपरमात्मात् । विग्गहगइए पुण पच्चासची अत्थि चि इवदि एसो
ववएसो सम्हा ण पुण्युत्तदोसस्स समवो । अइवा पत्तयसरीरपामकम्मोदयवतो वणप्फइ
कम्मया पत्तयसरीरा । साहारणपामकम्मोदयवतो साहारणसरीरा चि वचम्व । सरीगगहिद
पढमसमए दोणं सरीराणमगवरस्स उव्वो इवदीदि विग्गहगइए बहुमाणप्रीषायं पचेय
सहाण्यसरीरववएसो ण पावदि चि युचे, ण एअ देसो, तय वि पच्चासची अत्थि चि
उवयतेण तसि पचेय-साहारणसरीरववएससमववो । विग्गहगइए बहुमाणमत्तजीवानं
साहारणकम्मपयपरवसाणमप्पोप्पाणुगयत्तणेण एवत्तमुवगयपयसरीरत्तिम बहुमाणत्तादो वा

समाधान - यहाँ पर उपर्युक्त टीकाका परिहार करते हैं । जिस जीवने एक शरीरमें
स्थित होकर मरेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव
प्रत्येकशरीर है । तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख दुःखकर्म
कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव साधारणशरीर है । परंतु
जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है अर्थात् जो जीव अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक प साधारण
पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यवदेश नहीं हो सकता है क्योंकि, यहाँ
पर प्रत्यासत्ति नहीं पारि जाती है । विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पारि जाती है इसलिये यहाँ पर
यह व्यवदेश होता है अतएव यहाँ पूर्वोक्त दोष समझ नहीं है । अथवा प्रत्येकशरीर नाम
कर्मके उत्पत्ति युक्त धनस्वतिकायिक जीव प्रत्येकशरीर हैं और साधारण नामकर्मके व्यवसे ।
युक्त धनस्वतिकायिक जीव साधारणशरीर हैं ऐसा कथन करना चाहिये ।

टीका - शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका व्यव होता
है इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे
कोई भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है ?

समाधान - यह बौर दोष नहीं है क्योंकि विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पारि जाती
है इसलिये उपकारने उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा साधारणशरीर संज्ञा संभव है ।
अथवा साधारण नामकर्मके उत्पत्ति आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अनन्त जीव
परस्पर अनुगत होनेसे एकत्रकी प्राप्त हुए एक शरीरमें रहने हैं, इसलिये ये प्रत्येकशरीर
नहीं हैं ।

विश्लेषार्थ - धनमान आयुके समाप्त होने पर धनमान शरीरको छोड़कर उत्तर
शरीरके ग्रहण करनेके लिये जा गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं । यहाँ विग्रहकर्म अर्थात्
शरीर है इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जो गति होती है उस विग्रहगति कहते हैं ।
इसके उपरान्त पाणिपुत्रगति, सर्गल्लिख्यगति और गोमूत्रिच्छगति इसप्रकार बार मर हैं ।

न ते पचेयसरीरा । एवे छम्भीसरासीभो दृक्प्रपमाप्य अर्सेल्लेजलेगमेचा हवति । एत्थ विउत्त पदुप्पापपोत्ताप्यामावत्तो काल-संचेहि परुज्जणा न कदा ।

संपदि सुचानिरुद्धेष्वनियपरंपरागदावप्येव तेउक्ताद्वयरासिउत्पायमविहार्यं वच इस्सामो । तं ब्रह्म— एगं भणल्लेगं सत्तामभूदं ठविय अवरेणं भणल्लग विरुत्थिय एक्कस्स रुवस्स एक्कं पणल्लग दाठ्ठम वगिगदसंभग्गिदं करिय सत्तागगसीदा एगस्सववणेयम् । तावे एक्कं जण्योप्पगुणगारसत्तागा^१ सद्धा हवदि । तस्सुप्पणारासिस्स पसिद्धमस्स

इतमेंसे प्रथम पटिच्छे छोड़कर शेष तीन पटियां विग्रह कर्णात् मोक्षरूप हैं । अब जनस्यति कत्रियेक जीव देवी मोक्षेवाही पटिच्छे मृत्युव शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है क्योंकि, प्रत्येक वा साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे सम्पन्न होता है । इसी अविनाशको अज्ञानमें रक्तकर हाँकधारने यह हाँक भी है कि जबतक जनस्य तिस्ययिक जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके कल्ल होनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी देवमें गमना नहीं हो सकती है । इस हाँकना समाधान दो प्रश्नारसे किया गया है । एक तो यह कि यद्यपि विग्रह कर्णात् मोक्षेवाही पटिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, यह ठीक है, फिर भी प्रत्याक्षितसे देवे जीवको भी प्रत्येक वा साधारण कल्ल सकते हैं । कर्णात् देवा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक वा साधारण नामकर्मके उदयसे पुनः होनेवाला है अतएव उपकारसे उसे प्रत्येक वा साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है । दूसरे विग्रहक्य अर्थ मोक्ष न लेकर शरीर के देने पर एतुपतिच्छी अपेक्षा विग्रहगतिमें कर्णात् मृत्युव शरीरके ग्रहण करनेके क्षिप्प होनेवाही पटिमें साधारण वा प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही जाता है क्योंकि, एतुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव बाह्यरूप ही होता है ।

ये पूर्वोक्त छम्भीस जीवपटियां द्वयप्रमाणकी अपेक्षा अलंक्ष्यात् लोकप्रमाण हैं । यहाँ पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है इसलिये काळ और क्षेत्रप्रमायकी अपेक्षा इन छम्भीस जीवपटियोंकी प्रकल्पना नहीं की ।

अब सूत्रविक्रम आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कत्रियेक जीव पटिके प्रमाणके वत्पन्न करनेकी विधिसे बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— एक जनलोकेको हाथ्याकरूपसे स्थापित करके और दूसरे जनलोकेको विरहित करके बस विरहित पटिके प्रत्येक एकके प्रति जनलोकेको शेषरूपसे लेकर और परस्पर वर्गितसंबर्गित करके हाथ्याकराशिमसे एक कम कर देना चाहिये । तब एक जण्योप्प गुणगार हाथ्याका माप्य होती है । परस्पर

१ वा इयमल्लकका । विग्रहपटिवातल्लवरेणवर्गिता । उचितवातल्लका श्री. जी. पु. १८८. (पर्वणि अविमल)

असंखेजदिमागमेववग्गसलागा इवसि । वस्सद्वच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी
 वि असंखेज्जलोगमेवो जादे । पुणो उट्ठिदमहारासि विरलेज्ज तत्थ एकेवस्स रुजस्स
 उट्ठिदमहारासिपमाण दात्तम् वग्गिदसवग्गिर्द करिय सल्लगारासीदो अबेरं रुजमवणेयवर्ध ।
 तावे अप्पोण्णगुणगारसलागा बोण्णि । वग्गसलागा अद्वच्छेदणयसलागा रासी च असंखेजा
 लोगा । एवमेदेम कमेव नेदवर्ध आत्थ लोगमेवसल्लगारासी समचो वि । तावे अप्पोण्ण-
 गुणगारसलागपमाण लोगो । सेसत्तिगमसंखेजा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासि विरलेज्ज तं
 चेव सल्लगामूद उच्चिय विरलिय-एक्केवकस्स रुजस्स उप्पण्णमहारासिपमाण दात्तम् वग्गिद
 संवग्गिर्द करिय सल्लगारासीदो एगरुजमवणेयवर्ध । तावे अप्पोण्णगुणगारसलागा लोगो
 रुजविओ । सेसत्तिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पण्णरासि विरलिय रुजं पडि उप्पण्ण
 रासिमेव दात्तम् वग्गिदसंवग्गिर्द करिय सल्लगारासीदो अप्पणेरुजमवणेयवर्ध । तदो अप्पोण्ण
 गुणगारसलागाओ लोगो वुरुवादिओ । सेसत्तिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेम कमेव

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई इस पश्चिमी वर्गशब्दाक्षरं वस्तुपुनःके असंख्यातयं मागमात्र
 होती है, इस उत्पन्न पश्चिमी वर्गशब्देवशब्दाक्षरं असंख्यातलोकप्रमाण होती है और वह
 उत्पन्न पश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण होती है । पुनः इस उत्पन्न हुई महापश्चिमी विरचित
 करके और इस विरचित पश्चिमी प्रत्येक एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महापश्चिमी के
 कपसे लेकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शब्दाक्षराक्षरमेंसे वृत्तरीचर एक कम करना
 चाहिये । तब अप्पोण्ण गुणकार शब्दाक्षरं दो होती है और वर्गशब्दाक्षरं वर्गशब्देवशब्दाक्षरं,
 तथा उत्पन्नपश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण होती है । इसीप्रकार लोकप्रमाण शब्दाक्षरपश्चिमी समाप्त
 होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब अप्पोण्ण गुणकार शब्दाक्षरमेंका प्रमाण लोक होगा
 और दोष तीन पश्चिमी अर्थात् इस समय उत्पन्न हुई महापश्चिमी और इसकी वर्गशब्दाक्षरं
 तथा वर्गशब्देवशब्दाक्षरं असंख्यात लोकप्रमाण होगी । पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महापश्चिमी
 विरचित करके और इसी पश्चिमी शब्दाक्षराक्षरसे स्थापित करके विरचित पश्चिमी प्रत्येक
 एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महापश्चिमी प्रमाणको दोषकपसे लेकर वर्गितसंवर्गित करके
 शब्दाक्षराक्षरमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब अप्पोण्ण गुणकार शब्दाक्षरं एक अधिक
 लोकप्रमाण होती है । दोष तीनों पश्चिमी अर्थात् उत्पन्न हुई महापश्चिमी, वर्गशब्दाक्षरं और
 वर्गशब्देवशब्दाक्षरं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । पुनः उत्पन्न हुई महापश्चिमी विरचित
 करके और इस विरचित पश्चिमी प्रत्येक एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महापश्चिमी के
 वर्गितसंवर्गित करके शब्दाक्षराक्षरमेंसे वृत्तरीचर एक घटा देना चाहिये । इस समय अप्पोण्ण
 गुणकार शब्दाक्षरं दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं । दोष तीनों पश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण

य ते पचेयसरिता । एदे छम्भीसरासीजो दृष्टपमायेण भसंखेज्जलोभेत्ता हवन्ति । एत्थ निसेस-
पदुप्पायसोत्तायामत्तादो काल-खेचेहि पत्तज्जा न कदा ।

सपदि मुचाविरुणेणवरियपरंपरागदोवएसेज तेउकद्वयरासितप्पायजविहारं वच
इस्सामो । तं अहा- एगं पणत्तेगं सत्तामाभूदं ठमिय अवरेगं पणत्तेग विरत्तिय एकेइस्स
रूअस्स एकेइं पणत्तेगं दत्तया वग्गिदसवग्गिद करिय सत्तागरासीदो एगरूअमवणेयम् ।
वावे एका अण्णोण्यगुणगरसत्तामा' लहा हवदि । तस्सुप्पण्यरासिस्स पत्तिदावमस्य

इसमेंसे प्रथम गतिच्छेद छोड़कर शेष तीव्र गतियाँ विग्रह अर्थात् मोक्षरूप हैं। जब वनस्पति कृत्रिम जीव देसी मोक्षेवासी गतिसे मृत्युत शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण वा प्रत्येक नामकर्मका कल्प नहीं होता है क्योंकि, प्रत्येक वा साधारण नामकर्मका कल्प शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे सम्पन्न होता है। इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शंकाकारके यह शंका भी है कि जबतक वनस्पतिकृत्रिम जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके एक दोतीनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका कल्प नहीं पाया जाता है इसलिये इसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर एक दोनोंमें किसी भी जन्ममें जनम नहीं हो सकती है। इस शंकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है। एक तो यह कि वद्यपि विग्रह अर्थात् मोक्षेवासी गतिमें एक दोतीनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका कल्प नहीं पाया जाता है, यह ठीक है। फिर भी प्रत्येकगतिसे देसे जीवको भी प्रत्येक वा साधारण कल्प सकते हैं। अर्थात् देसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक वा साधारण नामकर्मके कल्पसे मुक्त होनेवाला है अतएव कल्पकारके इसे प्रत्येक वा साधारण कल्पमें कोई आपत्ति नहीं है। दूसरे विग्रहका अर्थ मोक्ष वा छेदक शरीर के छेदे पर शुक्लगिरी अपेक्ष्य विग्रहगतिमें अर्थात् मृत्यु शरीरके ग्रहण करनेके क्षिप्य होनेवासी गतिमें साधारण वा प्रत्येक नामकर्मका कल्प पाया ही जाता है क्योंकि, शुक्लगिरीसे उत्पन्न होनेवाला जीव व्यापारक ही होता है।

ये पूर्णोक्त छम्बीस जीवराशिधियों ब्रह्ममयानकी अपेक्षा बलवन्तात लोकप्रमाण हैं। यहाँ पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई कथान नहीं पाया जाता है। इसलिये काल और क्षेत्रमयानकी अपेक्षा इन छम्बीस जीवराशिधियोंकी प्रकृष्टता नहीं थी।

यह सूत्राधिकार आचार्य परंपराओं में हुए उपदेशों के अनुसार वैज्ञानिक और राशिके प्रमाणों के बतला करके भी सिद्ध हो जाता है। यह इस प्रकार है— एक घनकोष्ठ को बाह्य रूप से स्थापित करके भीरू वृत्तों को चिह्नित करके इस चिह्नित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनकोष्ठ को दोषरूप से देकर भीरू परस्पर वर्णितसंवर्णित करके बाह्यराशिके में एक कम कर देना चाहिये। तब एक अन्त्योन्मत्त गुणधर बाह्य रूप प्राप्त होती है। परस्पर

गुणगारसलागा चउत्तरारं द्विविदसलागरासिपमाण होदि ।

के वि अद्रिया सलागरासिस्म अद् गदे तेउक्कद्रयरासी उप्पज्जदि चि मभवति ।
 के वि स गेच्छेति । कुदो ? अद्गुहारासिसमुदयस्स वग्गसमुद्धिदामावादो । तेउक्कद्रय
 अण्णोप्पगुणगारसलागा वग्गसमुद्धिदा चि कच्च जाणिल्ले ? परियम्मवयपादो । के वि
 अद्रिया एव मवति । अहा— एसो रासी तेउक्कद्रयरासिस्स गुणगारसलागपमार्ग ण मवदि ।
 पुणो को होदि चि पुचे वुचद— गुणेजमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूपेण पवेसमाणलोगार्ण
 जाओ सलागाओ ताओ तेउक्कद्रयअण्णोप्पगुणगारसलागा वुचंति । एदाओ वग्गसमुद्धि
 दाओ ण पुत्तिस्सओ चि । तम्हा अद्गुहगुणगारसलागोत्तराओ विरुज्जेदे, एसो ण विरुज्जेदे
 इदि । एव पि ण चहदे । कुदो ? लोगदळेप्पणएहिं तेउक्कद्रयरासिस्स अद्गुहदम्प मागे
 हिदे अ लद्धं व विरल्लिप्प एक्केक्कस्स रूपस्स पणलोग दात्तण्णोप्पगुणमत्थे कदे तेउक्कद्रय
 रासी उप्पज्जदि । हेत्तिस्सविरल्लिदरासी वि तेउक्कद्रयअण्णोप्पगुणगारसलागपमार्ग मवदि ।

राशि उत्पन्न होती है । उस तेजस्वयिक राशिकी अण्णोप्प गुणकार शास्त्रकार जीपीवार
 स्थापित अण्णोप्प गुणकार शास्त्रकारराशिके आये प्रमाणके व्यतीत होने

पर तेजस्वयिक जीपीराशि उत्पन्न होती है ऐसा कहते हैं । परंतु कितने ही आचार्य इस
 कथनको नहीं मानते हैं क्योंकि छोटे तीनवार राशिकी समुदाय वर्गघातमें उत्पन्न नहीं है ।

श्रुक्का—यह ठीक है कि हुठवार (छोटे तीनवार) राशिकी समुदाय वर्गघातमें नहीं है
 पर तेजस्वयिक राशिकी अण्णोप्प गुणकार शास्त्रकार वर्गघातमें उत्पन्न है यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान—कह आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वाह्न राशि (हुठवार राशि) तेजस्वयिक
 राशिकी गुणकार शास्त्रकारराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर मौनसी राशि तेजस्वयिक राशिकी
 गुणकार शास्त्रकारराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुणमान छोटेके
 गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले छोटीकी जितनी शास्त्रकारों की बतानी तेजस्वयिक
 राशिकी अण्णोप्प गुणकार शास्त्रकार नहीं जानी हैं । ये अण्णोप्प गुणकार शास्त्रकार वर्गमें उत्पन्न
 हुई हैं पहलेकी सर्वात् छोटे तीनवार राशिकरूप नहीं, इसलिये हुठवार राशिप्रमाण गुणकार
 शास्त्रकारोंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है यह उपदेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी चरित नहीं होता है, क्योंकि, छोटेके वर्गघातमें
 तेजस्वयिक राशिके वर्गघातमें भी भागित करने पर जो छम्प आये वैसे विरल्लिप्प करने और
 उस विरल्लिप्प राशिके प्रत्येक एकके प्रति वनछोक्तो देयकपसे लेकर परस्पर गुण्य करते पर
 तेजस्वयिक राशि उत्पन्न होती है और अथस्तन विरल्लिप्प राशि भी तेजस्वयिक राशिकी

दुस्सुगुणरूपसंख्येजमेचलेगससगसु दुग्गादियलागभिह पविहुसु चचारि वि अमंतजा
 छाया हवति । एवं जेयकं जाव विदियचारुविहमलागरासी समचो वि । तापे वि चचारि
 वि असंखेजा लोगा । पुनो उद्धिदगसि मलागभूद ठविय अबरेगमुद्धिदमहारासिपमत्वं विर
 सेऊव उद्धिदमहारासिपमायमव रूपं पठि दाऊव बगिदमंभगिदं करिय सलागरासीदो एग
 रूपमवयेयकं । तापे चचारि वि असंखेजा लोगा । एवमयेय कमेग वेदकं जाव तदियचारं
 ठवियसलागरासी समचो वि । तापे चचारि वि असंखेजा लोगा । पुनो उद्धिदमहारासि
 तिप्यडिरासि काऊव तयेगो सलागभूदं हविय अब्येगरासि विरलेऊव तत्त्व एक्केमकम्म
 रूपस्म एगरासिपमाय दाऊव बगिदसंबगिदं करिय सलागरासीदो एगरूपमवयेयकं ।
 एवं पुनो पुनो करिय जयकं जाव अदिक्कंतप्रणोणगुणगारसलागाहि ऊवचउम्भवापिद्ध
 अब्योण्यगुणगारमलयगरासी समचो वि । तापे तेउऊदपगसी उद्धिदो हवति । तस्स

होती है । इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम शास्त्र संख्यातमात्र कोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शब्दा
 कार्योंके दो भविक कोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शब्दाकार्योंमें प्रविष्ट होने पर चारों राशिओं
 भी संसंख्यात कोकप्रमाण होती है । इसीप्रकार वृक्षरीवार स्थापित शब्दाकारादि समाप्त
 होनेतक इसी क्रमसे के जाना चाहिये ।—तब भी चारों भी राशिओं—असंख्यात कोकप्रमाण
 होती है । पुनः अन्तमें उत्तर हूर—महापादिको शब्दाकारपसे स्थापित करके और वृक्षरी
 वृक्षी-उत्पन्न हूर महापादिके प्रमाणको विरचित करके और उत्तर हूर उरु महापादिके
 प्रमाणको विरचित राधिके प्रत्येक एकके प्रति द्वैतरूपसे द्वैतर परस्पर वर्णितसंवर्णित करके
 शब्दाकारादिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब भी चारों राशिओं संसंख्यात कोकप्रमाण
 होती है । इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शब्दाकारादि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे के
 जाना चाहिये । तब भी चारों राशिओं संसंख्यात कोकप्रमाण है । पुनः अन्तमें उत्तर
 हूर—महापादिको तीन स्थितिरादिकरूप करके अन्तमेंसे एक राशिओ शब्दाकारपसे स्थापित
 करके, वृक्षरी एक राधिके विरचित करके और वृक्ष विरचित राधिके प्रत्येक एकके प्रति एक
 राधिके प्रमाणको द्वैतरूपसे द्वैतर परस्पर वर्णितसंवर्णित करके शब्दाकारादिमेंसे एक कम
 कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करके तब तक के जाना चाहिये जब तक कि स्थितिकर
 शब्दाकारोंसे अर्थात् पक्षी वृक्षरी और तीसरीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शब्दाकारोंसे
 न्यून चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शब्दाकारादि समाप्त होती है । तब तेजस्वयधिक

१ एव वचन द्वितीय-वृक्षीवचनस्वाधितकालताकिमूवचनूर्ध्ववचनस्वाधितकालताकिमूवचनस्वाधितकालता
 सप्रत्यक्षः । तैत्तिरीयसंहिता । अर्थात् अति ।—बो. श्री. जी. १. टी. १. ४ पुनः-उत्पत्त्यागमे-उत्पत्ति
 निम्नलिखित कथा अर्थात् उत्पत्त्यागमे-उत्पत्तिनिम्नलिखित कथा अर्थात् उत्पत्त्यागमे-उत्पत्तिनिम्नलिखित कथा
 टी. १. ४ (अर्थात् अति)

गुणगारसलागा चउत्पत्तयं दृष्टिदसलागारासिपमार्गं होदि ।

के वि अद्रिया सलागारासिस्स अद्र गदे तेउक्कइयरासी उप्पज्जदि पि भणंति ।
 के वि सं येच्छेत्ति । कुदा ? अद्रुक्कारासिसमुदयस्स वग्गममुद्धिदचामाभादो । तेउक्कइय
 अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुद्धिदा पि कप जाणिज्जे ? परियम्मवयणादो । के वि
 अद्रिया एव भणंति । जहा— एस। रासी तेउक्कइयरासिस्स गुणगारसलागपमाभ म भवदि ।
 पुणो को होदि पि बुधे बुधद— गुणअमाणस्स लोमस्स गुणगारसरूपेण पवेसमाणलोमाण्ण
 आओ सलागाआ ताओ तेउक्कइयअण्णोण्णगुणगारसलागा बुधंति । एदाओ वग्गसमुद्धि
 दाओ म पुठिराहाआ पि । तम्हा अद्रुक्कगुणगारसलागाएवसा विरुज्जहे, एसो म विरुज्जहे
 इदि । एव पि ण भवदे । पुदो ! लोमद्वेलेयणएहि तेउक्कइयरासिस्स अद्रच्छेदणए भागे
 हिदे म रुद्ध वं विरलिय एककेक्कस्स रुवस्स वषलोम दाउण्णोण्णमत्थे कद् तेउक्कइय
 रासी उप्पज्जदि । होद्धिउविरसिदराणी वि तेउक्कइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाभ म भवदि ।

राशि उत्पन्न होती है । इस तेजस्त्राधिक राशिही अण्योन्य गुणकार शब्दाकारं बीबीभार
 स्थापित अण्योन्य गुणकार शब्दाकाराशिक्षप्रमाण है ।

कितने ही आचार्य बीबीभार स्थापित शब्दाकाराशिक्षे भाषे प्रमाणके व्यतीत होने
 पर तेजस्त्राधिक बीबीभार उत्पन्न होती है ऐसा कहते हैं । परंतु कितने ही आचार्य इस
 कथनको नहीं मानते हैं क्योंकि शब्दे तीनवार राशिआ समुदाय वर्णोत्पत्ति उत्पन्न नहीं है ।

संका— यह ठीक है कि दूठवार (साडे तीनवार) राशिआ समुदाय वर्णोत्पत्ति नहीं है,
 पर तेजस्त्राधिक राशिही अण्योन्य गुणकार शब्दाकारं वर्णोत्पत्ति उत्पन्न है यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान— इस आचार्यके मतमें यह बात परिकल्पित वचनसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (दूठवार राशि) तेजस्त्राधिक
 राशिही गुणकार शब्दाकाराशिक्षे प्रमाणरूप नहीं है । फिर बीनसी राशि तेजस्त्राधिक राशिही
 गुणकार शब्दाकाराशिक्षे प्रमाणरूप है ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुणमान कोकके
 गुणकाररूपमें प्रवेशकी प्राप्ति होनेवाला कोककोही कितनी शब्दाकारं ही उत्पत्ति तेजस्त्राधिक
 राशिही अण्योन्य गुणकार शब्दाकारं नहीं जानी है । व अण्योन्य गुणकार शब्दाकारं वर्णोत्पत्ति उत्पन्न
 हुई है यहछेपी वर्णोत्पत्ति साडे तीनवार राशिउप नहीं, इसलिये दूठवार राशिप्रमाण गुणकार-
 शब्दाकारकोका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है यह उपदेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी श्रुति नहीं होता है, क्योंकि, कोकके अद्रच्छेदोत्पत्ति
 तेजस्त्राधिक राशिसे अर्धच्छेदोत्पत्ति प्राप्त करने पर जो छप्प भावे वसे विरलित करके बीर
 वस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति धनकोकको दोयकपसे लेकर परस्पर गुणा करने पर
 तेजस्त्राधिक राशि उत्पन्न होती है बीर अथवा वस विरलित राशि भी तेजस्त्राधिक राशिही

पुनरि अज्योत्पद्युजगारसत्तागा तेउकद्रपरासिबगसत्तागाहिता असंखेज्जगुनचं पचाओ ।
 इदो ! तेउकद्रपरासिस्स अद्रच्छेदणयसत्तागापद्मवग्गमूलादा असंखेज्जगुनचत्तो । न च
 एदमिच्छिज्जदे । इदो ! तेउकद्रपरासिबगसत्तागादो तस्स असंखेज्जगुनहीमचत्ता । तं कर्णं
 गम्भे । परियम्मदयणादो । तं अहं—तेउकद्रपरासिस्स अज्योत्पद्युजगारसत्तागा बग्गिज्ज
 मागा बग्गिज्जमाग्गा असंखज्जं सोमं बग्गं हेइदो सवरिमसखन्जगुणं गत्तुं तेउकद्रप-
 रासिस्स बग्गसत्तागं पावदि पि । एस विरल्लिदरासी न बग्गसमुद्दिदो वि । इदो ! सोम-
 द्दच्छेदणयच्छिन्नातेउकद्रपरासिस्स अद्रच्छेदणयमेवत्तादो । विरल्लिद—दिग्गमागरासीनं
 समावचणेन तेउकद्रपरासिस्स बग्गावणभारासमुप्यवचणेन च तेउकद्रपरासिस्स अद्र-
 च्छेदणयसत्तागाओ न बग्गसमुद्दिदाओ पि । न एद, इहुत्तादो । न च परियम्मेन सह
 विरोदो, तस्स तदुदेसपहुप्पायणे वावत्तादो । एत्थ पुन अद्रमुद्दिद्वारमेत्ताओ भेव तेउका-

अज्योत्पद्युजगार सत्तागाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विशेष है कि अज्योत्पद्युजगार सत्तागाएं तेजस्वयिकराशिची वर्गसम्पत्तियोंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अज्योत्पद्युजगार सत्तागाएं उत्पन्न होती हैं वे तेजस्वयिकराशिची वर्गसम्पत्तियोंके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातगुणी हो जाती हैं। लेकिन यह एक गलती है क्योंकि तेजस्वयिकराशिची वर्गसम्पत्तियोंसे अज्योत्पद्युजगार सत्तागाएं असंख्यातगुणी हीन हैं।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकल्पित वस्तुसे जाना जाता है। उसका स्वरूपपर इसप्रकार है—
 तेजस्वयिकराशिची अज्योत्पद्युजगार सत्तागाओंको वस्तुसेतर वर्गित करते हुए वर्ग-
 सत्तागें जोकप्रमाण अर्थात् वस्तुसेतल वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्वयिकराशिची
 वर्गसम्पत्तियां प्राप्त होती हैं।

इससे यह निश्चित राशि अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेष्टाओं प्राप्त होनेवाले जोकोंकी
 श्रितकी सत्तागाएं हो वह राशि वर्गसमुत्पन्न ही नहीं है क्योंकि, यह जोकके वर्गसम्पत्तियोंसे
 छिन्न तेजस्वयिकराशिके वर्गसम्पत्तिप्रमाण है।

प्रश्न—निश्चितराशि और वैयराशि समान होनेसे और तेजस्वयिकराशि प्रमाण
 प्राप्तमें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्वयिकराशिची वर्गसम्पत्तियां वर्गसमुत्पन्न ही नहीं हैं।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें एक है। और इसतरफ
 परिकल्पित स्वरूप की विशेष नहीं व्याप्त है, क्योंकि, परिकल्पित वस्तुके वर्गसम्पत्तियोंके प्रतिपादन कर
 में व्यापार होता है। यहां पर तो केवल तेजस्वयिकराशिची साके तीन राशिवाक अज्योत्प-

इयरासिअण्णोण्णगुणगारसलागाओ चि वेचण्ण, आइरियपरंपरागाओवपससादे। म च वग्गससुद्धिदत्त गुणगारसलागाणं गत्थि चि अद्दुक्खपसो म मइओ, अद्दुक्खपसण्णहाण्ण वत्तिदा चेव तद्वग्गससुद्धिदत्तस्म अवगमणो। म परियम्मदा वग्गससिद्धी, तस्स तेउक्का इयअद्दुच्छेदणएदि अनेपत्तियसादे।

अइसा तेउक्काइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ सलागमूदाओ व्विज्जम

गुणकार शलाकार्य होती है ऐसा प्रमाण करना चाहिये। क्योंकि आचार्य परंपरासे इसी प्रकारका उपदेश आ रहा है। गुणकार शलाकार्य वर्गसमुत्पन्न नहीं है, इसलिये साढ़े तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, जो बात भी नहीं है, क्योंकि, साढ़े तीनवारका उपदेश सम्मया बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शलाकार्य वर्गसमुत्पन्न नहीं है, यह बात जानी जाती है। परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है क्योंकि, इसका तेजस्वयिक राशिके वर्गच्छेदोंके साथ अनैकान्त है।

विशेषार्थ—यहां पर तेजस्वयिकराशिकी अण्णोण्ण गुणकारशलाकार्य कितनी है इस विषयमें आचार्य परंपरासे आये हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया है। घनसोफको लेकर विरक्तन रूप और शलाकार्यक्रमसे तीसरीवार शलाकार्यराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसमेंसे पहली वृत्तरी और तीसरी शलाकार्यराशिके घटा देने पर दोप राशिबो शलाकार्य मान कर साढ़े तीन राशिपार अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यको प्रमाण आ जाता है। यह मत आचार्य-परंपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है। वृत्तरा मत यह है कि तीसरीवार शलाकार्यराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसके आये प्रमाणको शलाकार्यरूपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढ़े तीन राशिपार अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यको प्रमाण होता है। पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं। इनके मतसे यह साढ़े तीन राशिपार अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यराशिके उपदेश वर्गसमुत्पन्न नहीं है इसलिये प्रमाणभूत नहीं है। तेजस्वयिक राशिकी अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्य वर्गसमुत्पन्न है इस मतकी पुष्टि य आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं। कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि कितने लोकप्रमाणराशिके प्रत्येक एक पर सोफकी स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्वयिकराशि उत्पन्न होती है उतने लोकप्रमाणराशि तेजस्वयिकराशिकी अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्य होती है। इन्हें ये वर्गसमुत्पन्न भी मानते हैं। पर वीरसेमण्णमंज वृत्तरे मतके समान इस मतको भी प्रमाणभूत नहीं माना है क्योंकि, इसप्रकार अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यको जो प्रमाण प्राप्त होता है यह तेजस्वयिकराशिकी वर्गशलाकार्यराशिके असंख्यानगुणा हो जाता है। पर ब्रह्मात्रसार अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यराशिके वर्गशलाकार्यराशि असंख्यानगुणी होनी चाहिये।

अथवा, तेजस्वयिकराशिकी अण्णोण्ण गुणकार शलाकार्यको शलाकार्यरूपसे स्थापित

तदुपपत्तिमित्ररासीय षमिदसबमिदे काठम तउकाइयरासी उप्पाएव्वा । तेउहा इयरासि मागहार काठम तसुवरिमवग्ग विहज्जमाणरासि करिय खंदि मन्दि-मिन्दि भवहिदाणि आविस्स वचच्चाणि । तस्म पमाणसुवरिमवग्गस्स अंतहेज्जमिमागे । कसब, तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे मागे हिदे तेउकाइयरासी चव आगच्छदि सि । एत्थ संदेहा-
माणा निठरी य वचच्चा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो भदि । एत्थ हेट्ठिमवियप्पो वरिब, तेउकाइयरासिस्म विहज्जमाणरासिपढमवग्गमूलमेवचादो । उवरिमवियप्पो तिबिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वेदि । तत्थ गहिद वचइस्सामो । तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे मागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अट्ठेद्वयमये रासिस्स अट्ठेद्वयमे कदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । अहवा तेउकाइयरासिणा तसु वरिमवग्ग गुणेज्ज तदुवरिमवग्गे मागे हिद तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्स अट्ठेद्वयमये रासिस्म अट्ठेद्वयमे कदे वि तउकाइयरासी आगच्छदि । अट्ठुचे वचइस्साम । तउकाइयरासिणा तेउकाइयउवरिमवग्गसमाणअट्ठुववग्ग गुणेज्ज तसुवरिमवग्ग मोक्ष

करके और उलका उत्पत्तिकी निमित्तमूल राशिर्षोको वर्णितसंबर्धित करके तेजस्वाधिकराशि वत्तव कर केना चाहिये । तेजस्वाधिकराशिओ मागहार करके और उसके उपरिम वर्गओ मन्वमानराशि करके स्थित माजित विरहित और अपहतका जानकर वचन करना चाहिये । इसका प्रमाण तेजस्वाधिक राशिओ उपरिम वर्गका असववातर्ग प्राम है । इसका कारण यह है कि तेजस्वाधिकराशिओ उसके उपरिम वर्गके माजित करने पर तेजस्विक जीवज्जि ही आती है । यहां पर संदेह नहीं होनेसे निश्चिन्त कथनकी आवश्यकता नहीं है ।

बिम्ब्य दो प्रकारका है, अथलन बिम्ब्य और उपरिम बिम्ब्य । परंतु यहां पर अथलन बिम्ब्य नहीं पाया जाता है क्योंकि तेजस्वाधिकराशि मन्वमान राशिओ प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उपरिम बिम्ब्य तीन प्रकारका है, शहीत शहीतशहीत और शहीतगुणकार । इनमेंसे शहीत उपरिम बिम्ब्यको बतछाते हैं—तेजस्वाधिक राशिओ उसके उपरिम वर्गके मजित करने पर तेजस्वाधिक राशिओ प्रमाण आता है । उक्त मागहारके अथलनेप्रमाण उक्त मन्वमान राशिओ अर्थलने करने पर भी तेजस्वाधिक राशि आती है । अथवा तेजस्वाधिक राशिओ प्रमाणसे उसके उपरिम वर्गको गुणित करके अन्य राशिओ उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें प्राप्त होने पर तेजस्वाधिक राशिओ प्रमाण आता है । उक्त मागहारके अथलनेप्रमाण उक्त मन्वमान राशिओ अर्थलने करने पर भी तेजस्वाधिक राशिओ प्रमाण आता है ।

अब अथलनेमें उपरिम बिम्ब्यको बतछाते हैं—तेजस्वाधिक राशिओ तेजस्वाधिक राशिओ उपरिम वर्गके समान धक्के उपरिम वर्गको गुणित करके जो छद्म आये इसका तेजस्वाधिक राशिओ उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें प्राप्त होने

तदुपरिमवर्गो मागे हिंदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्दच्छेदणय कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणाघने वचइस्सामे । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासित्वमिमवर्गसममाणअद्दच्छेदणय गुणेऊण तस्सुपरिमवर्गो मागे तदुपरिमवर्गसममाणवेक्कवर्मा गुणेऊण तस्सुपरिमवर्गो मागे तदुपरिमवर्गो मागे हिंदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्दच्छेदणय कदे वि तेउक्काइयरासी अवत्तिद्वे । विहज्जमाणवग्गाण असंखेज्जदिमाण गहिद गहिदो गहिदगुणगरो च वचम्भो । एव तेउक्काइयपरवग्गा समवा ।

तेउक्काइयगामिमसखेज्जलगण भागे हिंद लद्ध तम्हि चैव पक्खिचे पुद्वि काइयरासी हादि । तम्हि असंखजलगण भगे हिंदे लद्ध तम्हि चैव पक्खिचे वाउक्काइयरासी हादि । तम्हि असंखजलगण भगे हिंदे लद्ध तम्हि चैव पक्खिचे वाउक्काइयरासी हादि । एदेवि तिण रासिण अगहारकाळस्सुणायण

पर तेजस्त्राधिक राशिका प्रमाण जाता है । उक्त भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी तेजस्त्राधिक राशिका प्रमाण जाता है ।

अब घनाघनमें उपरिम विचारको बनाने हैं— तेजस्त्राधिक राशिके तेजस्त्राधिक राशिके उपरिम वर्गके समान अनेके उपरिम वर्गोंके गुणित करने पुन तेजस्त्राधिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर इसके उपरिम वर्गके समान बिकल्पके भागोंके गुणित करने के तेजस्त्राधिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम भागों छोड़कर इसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्त्राधिक राशिका प्रमाण जाता है । उक्त भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी तेजस्त्राधिक राशिका प्रमाण जाता है । विमध्यमान भागोंके अक्षरपाठमें प्रत्येक तेजस्त्राधिक राशिके द्वारा पृथीतपृथीत धीर पृथीतगुणकारका कथन करता चाहिये । इनप्रकार तेजस्त्राधिक शीघ्रराशिकी प्रकरण समाप्त हुए ।

तेजस्त्राधिक राशिको अक्षरपाठ कोशोंके प्रमाणसे माहित करने पर जो अन्य भावे उसे उक्त तेजस्त्राधिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकाधिक राशिका प्रमाण होता है । इस पृथिवीकाधिक राशिको अक्षरपाठ कोशोंके प्रमाणसे माहित करने पर जो अन्य भावे उसे उक्त पृथिवीकाधिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर अन्तराधिक राशिका प्रमाण होता है । इस अन्तराधिक राशिको अक्षरपाठ कोशोंके प्रमाणसे माहित करने पर जो अन्य भावे उसे उक्त अन्तराधिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर पायुकाधिक राशिका प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशियोंके अक्षरपाठके उत्पद्य करनेकी विधियों बनख से

तदुपपत्तिमिधरासीष वमिदसवगिदे काऊण तेउकाइयरासी उप्पाएव्या । तउका इयरासि मागहार काऊण तस्सुवरिमवग्ग विहज्जमाणरासि करिय रुद्धिद-माज्जिद-विरुद्धिद अरुद्धिदणि आधिऊण वचव्याणि । तस्म पमाणमुवरिमवग्गसम असंखज्जदिमागे । कारण, तेउकाइयरासिणा उपरिमवग्ग माग हिदे तेउकाइयरासी चैव आगच्छदि ति । एत्थ संबेदा-माया विरुधी य वचव्या ।

वियप्पो दुनिहो, इत्थिमवियप्पा उवरिमवियप्पा चेदि । एत्थ इत्थिमवियप्पा वरिष, तेउकाइयरासिस्म विहज्जमाणरासिपडमवग्गमूलमचचादो । उवरिमवियप्पो तिविहा, गद्धिदा गद्धिदगहिदो गद्धिदगुणगतो चेदि । तत्थ गहिद वचइस्समो । तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्ग माग हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अट्ठच्छेदमयमचे राक्षिस्स अट्ठच्छेदमये कद तेउकाइयरासी आगच्छदि । अइवा तेउकाइयरासिणा तस्स वरिमवग्ग गुणेऊण तदुवरिमवग्गो माग हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्स अट्ठच्छेदमयमच रासिस्म अट्ठच्छेदमय कद नि तेउकाइयरासी आगच्छदि । अट्ठच्छे वचइस्समा । तेउकाइयरासिणा तउकाइयउवरिमवग्गसमाणअट्ठच्छेदवग्ग गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गो मौल्य

करके और उसकी उत्पत्ति की निमित्तमूल राशियोंको वर्णितसर्वगिन करके तेजस्वाधिकराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । तेजस्वाधिकराशि को मागहार करके और उसके उपरिम वर्गों भग्नमावराशि करके संश्लिष्ट भाजित विरहित और अपहृतका जानकर कथन करना चाहिये । उसका प्रमाण तेजस्वाधिक राशि के उपरिम वर्ग का भग्नमावराशि माग है । इसका कारण यह है कि तेजस्वाधिकराशि ने उसके उपरिम वर्ग के भाजित करने पर तेजस्व विक आवराशि ही प्राप्ति है । यहां पर संदेह नहीं होनेसे निश्चितके कथन की व्यवस्था नहीं है ।

विषय दो प्रकारका है, अपघातक विषय और उपरिम विषय । परंतु यहां पर अपघातक विषय नहीं पाया जाता है क्योंकि तेजस्वाधिकराशि भग्नमाव राशि के प्रथम भग्नमूलप्रमाण है ।

उपरिम विषय तीन प्रकारका है पृथीत पृथीतपृथीत वार पृथीतगुणकार । उनमें से पृथीत उपरिम विषयको बतसाना है—तेजस्वाधिक राशि से उसके उपरिम वर्ग के भाजित करने पर तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण प्राप्ति है । उक्त मागहार के अपघातप्रमाण उक्त भग्नमाव राशि के भर्षच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशि प्राप्ति है । जबका तेजस्वाधिक राशि के प्रमाण से उसके उपरिम वर्ग को गुणित करके सध्य राशि का उपरिम वर्ग के उपरिम वर्ग में प्राप्ति देने पर तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण प्राप्ति है । उक्त मागहार के अपघातप्रमाण उक्त भग्नमाव राशि के भर्षच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण प्राप्ति है ।

जब महाकर्म उपरिम विषयको बतसाना है—तेजस्वाधिक राशि से तेजस्वाधिक राशि के उपरिम वर्ग के समान घन के उपरिम वर्ग को गुणित करके जो सध्य ज ये उसका तेजस्वाधिक राशि के उपरिम वर्ग को छोड़कर उसके उपरिम वर्ग में प्राप्ति देने

एसा किरिया इन्द्रिय-कसाय वोगमगणासु विसेसाहियरासीण विसेसहीणरासीण च
 गिरबयवा कायव्वा । एदे पुब्बुत्त चचारि अवहारकाल विरलिय तेठकप्परासिस्सुवरिम
 वर्ग चठण्ह विरलमाण पुष पुष समखंड करिय दिण्णे अप्पण्णो रासिपमाण पावदि ।
 पुणो सगसगवत्तज्जविहि सगसगविरलमाण एगरुवोवति द्विदमसगरामिहि मागे हिदे
 असंखेज्जलोगमेवरासी आगच्छदि । तेण रूपूणेण मगसगवत्तज्जकालसु ओवट्टिदेसु लद्ध
 तम्हि चेव पक्खिचे सगसगसुद्धमार्थ अवहारकाला भवति । पुणो एदे चचारि वि सुद्धम-
 र्जवत्तज्जकाले पुष पुष विरलिय तेठकप्परासिस्सुवरिमवर्ग समखंड करिय दिण्णे
 रूपं पडि सगसगसुद्धमपमाणं पावदि । पुणो सगसगविरलमाण एगरुवोवति द्विदसुद्धमरासि
 सगसगसुद्धमअपवत्तज्जविहि माग हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जलूवि रूपूमेहि सगसगसुद्धम
 अवहारकाल ओवट्टिय लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे सगसगसुद्धमवत्तज्जपणमवहारकाला
 भवति । पुणं मागलद्धसंखेज्जस्थेहि सगसगसुद्धमवत्तज्जवत्तज्जकालेसु गुमिदेसु सगसग
 सुद्धमअपवत्तज्जवत्तज्जकाला भवति । चठण्ह बादराण पुब्बुप्पादिदिहि असंखेज्जलोगमच

इन्द्रिय कसाय और योग इन तीन मार्गोंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष
 हीन राशियोंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह किया करना चाहिये । पूर्वोक्त इन चारों अवहारकाओंको
 विरचित करके और तेजस्वराधिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरचनोंके ऊपर पृथक् पृथक्
 समान खंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिश्च प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अपनी
 अपनी बादरकाधिक जीवराशिक प्रमाणका अपने अपने विरचनके एक एकके ऊपर स्थित
 अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें माग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है ।
 एक कम उक्त असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकाओंके माजित करने पर
 जो जो छम्प भावे उसे उन्हीं अपने अपने अवहारकाओंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म
 जीवोंके प्रमाण छानेके लिये अवहारकाळ होते हैं । पुनः सूक्ष्म जीवसंबन्धी इन चारों भी
 अवहारकाओंको पृथक् पृथक् विरचित करके और उन विरचनोंके प्रत्येक एकके ऊपर
 तेजस्वराधिक राशिके उपरिम वर्गको समान खंड करके दे देने पर विरचनोंके प्रत्येक एकके
 प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अपने अपने विरचनके एक
 विरचन-श्रेणिके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपवात्त
 जीवराशिके प्रमाणसे माजित करने पर वहाँ जो संप्रयात छम्प भावे उनमेंसे एक कम करके
 दोष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाओंको माजित करके जो छम्प भावे उसे
 उन्हीं अवहारकाओंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं ।
 पहले माग देने पर जो संप्रयात छम्प भावे ये उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाओंके
 गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपवात्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं । चारों बादरोंके

विहानं उच्यते । त महा— सेतुककप्रयरासिं पुढविकप्रयरासिं सोद्विय सेसेन सेतुकप्रयरासिं मागे हिदे अंसखेज्जलोगरासी आगच्छदि । तेन रुवादिणं सेतुकप्रयरासिमावहिय सइ तमिं नेव अवधिदे पुढविकप्रयरासिमावहारकालो होदि । पुणो पुढविकप्रयरासिं आतकप्रयरासिं सोद्विय सेसेन पुढविकप्रयरासिं मागे हिदे अंसखेज्जलोगमेवरासी आगच्छदि । तेन रुवादिणं पुढविकप्रयरासिमावहारकालोवहिय सइ तमिं नेव अवधिदे आतकप्रयरासिमावहारकालो होदि । पुणो आतकप्रयरासिं आतकप्रयरासिं सोद्विय तत्पावसिद्धरासिणा आतकप्रयरासिं मागे हिदे अंसखेज्जलोगमेवरासी उम्मदि । तेन रुवादिणं आतकप्रयरासिमावहारकालो मागे हिदे सइ तमिं नेव अवधिदे आतकप्रयरासिमावहारकालो होदि । एतत्पुढविकरासी गाहा—

रासिसेसेनरासिदरासिं य वं विधे^१ समुत्तम ।

कण्ठदिणं विद्वारो उणादिवो तेन ॥ ७५ ॥

हैं । यह इत्यन्तर है— सेतुककप्रयरासिं पुढविकप्रयरासिं रासिमेंसे घटा कर जो दोष रहे उससे सेतुककप्रयरासिं माजित करने पर अंसखपात होकरमात्र राशि जाती है । एक अधिक उस अंसखपात होकरमात्रराशिसे सेतुककप्रयरासिं माजित करके जो छप्प भागे उसे उसी सेतुककप्रयरासिंमेंसे घटा देने पर पुढविकप्रयरासिं रासिसेवरासी अवहारकाल होता है । पुनः पुढविकप्रयरासिं अतकप्रयरासिं रासिमेंसे घटा कर जो दोष रहे उससे पुढविकप्रयरासिं माजित करने पर अंसखपात होकरमात्रराशि जाती है । एक अधिक उस अंसखपात होकरमात्र राशिसे पुढविकप्रयरासिं रासिसे अवहारकालमेंसे माजित करके जो छप्प भागे उसे उसी पुढविकप्रयरासिं रासिसे अवहारकालमेंसे घटा देने पर अतकप्रयरासिं रासिसेवरासी अवहारकाल होता है । पुनः अतकप्रयरासिं वायुकायिक राशि मेंसे घटा कर वहाँ जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अतकप्रयरासिं माजित करने पर अंसखपात होकरमात्र राशि छप्प जाती है । एक अधिक उस अंसखपात होकरमात्र राशिसे अतकप्रयरासिं रासिसे अवहारकालमेंसे माजित करने पर जो छप्प भागे उसे उसी अतकप्रयरासिं रासिसे अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसेवरासी अवहारकाल होता है । वहाँ पर उपसुक्त गाना ही जाती है—

राशिबिरोधने राशिसे माजित करने पर जो भाग छप्प भागे उसमेंसे यदि एक कम करके दोष राशिसे भागहार माजित किया जाय तो वह छप्पवरा वही भागहारमें भिन्ना देने और यदि छप्प राशिमें एक अधिक करके उससे भागहार माजित किया जाय तो भागहारके माजित करने पर जो छप्प राशि भागे उसे भागहारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

एसा किरिया इंदिय-कसाय खोगमग्गणासु विसेसाहिरासीणं विसेसहीनरासीणं च
 निरवयवा फायग्ग। एदे पुन्नुचे चचारि अवहरकाले विरलिय तेउकअयरासिस्सुवरिम
 वग्ग चउण्हं विरलमाण पुन पुन समखंड करिय दिण्णे अप्पण्णयो रासिपमाण पावेदि ।
 पुणो सगसगभादरजीवाहिं सगसगविरलमाण एगखूअरि त्तिदसगसगरासिम्हि मागे हिदे
 असंखेज्जलेग्गमेचारासी आगच्छदि । तेण रूपूणण सगसगभवहारकालेसु ओवडिदेसु लद्ध
 तम्हि चेव पक्खिसे सगसगसुहुमाण अवहरकाला मवति । पुणो एदे चचारि वि सुहुम
 जीवभवहारकाले' पुन पुन विरलिय तेउकअयरासिस्सुवरिमवग्ग समखंड करिय दिण्णे
 रूप पठि सगसगसुहुमपमाण पावेदि । पुणो सगसगविरलमाण एगखूअरि त्तिदसगसगरासि
 सगसगसुहुमअपन्नचएहिं मागे हिदे सत्य लद्धसंखेज्जलरूपेहिं रूपयेहिं सगसगसुहुम
 अवहारकाल ओवडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खिसे सगसगसुहुमअपन्नचपणमवहारकाला
 मवति । पुण्वं मागलद्धसंखेज्जलरूपेहिं सगसगसुहुमजीवभवहारकालेसु गुणिदेसु सगसग
 सुहुमअपन्नचभवहारकाला मवति । चउण्हं वादराय पुष्पुप्पादिदेहिं असंखेज्जलेग्गमेच-

इन्द्रिय, क्साय और योग इन तीन मार्गवाच्योंमें विशेष अधिक राशिओंके और विशेष
 हीन राशिओंके संख्यामें संपूर्ण रूपसे यह किया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको
 विरलित करने और तेजस्वाधिक राशिोंके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पूषण् पूषण्
 समान लौह करके दे देने पर अपनी अपनी राशि का प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी
 अपनी वादरायिक जीवराशिोंके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक मंडके ऊपर स्थित
 अपनी अपनी राशिोंके प्रमाणमें माग देने पर असंख्यता छोड़प्रमाण राशि प्राप्त होती है।
 एक कम बस अर्धरात्रात छोड़प्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके मात्रित करने पर
 जो ओ छप्प भावे उठे उन्हीं अपने अपने अवहारकालोंमें मिठा देने पर अपने अपने सूक्ष्म
 जीवोंके प्रमाण जानेके किये अवहारकाळ होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंख्या इन चारों ही
 अवहारकालोंको पूषण् पूषण् विरलित करने और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर
 तेजस्वाधिक राशिोंके उपरिम वर्गको समान लौह करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके
 प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक
 विरलन मंडके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिोंके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त
 जीवराशिोंके प्रमाणसे मात्रित करने पर वहां जो संख्यात छप्प भावे उनमेंसे एक कम करके
 दोष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाळको मात्रित करने जो छप्प भावे उठे
 उन्हीं अवहारकालोंमें मिठा देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं।
 पहले माग देने पर जो संख्यात छप्प भावे ये उठते अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके
 गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं। चारों वादरोंके

गुणगार्हि सगमगमाम्नाअरहारकालसु गुणिदेसु सगसगभारणमबहारकाळा मर्नति ।

पुनो सुचाविरुद्ध आइरिअवयसण सुर्ष व पमावभूदेण बादगामदृष्टेदमप वचस्मात्मा । त अह— एगमागेत्तमादो पगं पलिदोवर्म वेणूण समावत्तियाए असंखजदि मागज खटिय तयगसुर्ष पुष इविय ससगपुमागे तम्हि चेव पक्खिते बादगउत्तकम्प अदृष्टदणयमलागा इवति । अ पुष द्विदेयसुत्त त पुणो वि आगलियाए असंखजदिमाएण टीढय तयेगसंढमनिय बहुसंख पुणरासि दुप्पडिरासि काळण पक्खित बादगवमप्प पचयमरीमाण अदृष्टदणयमलागा इवति । एवं बादगभिगेत्तपदिद्विद-बादरपुत्ति-बादर आऊण च वचयं । अते अवप्पिदगसुर्ष बादरआउत्तकम्पअदृष्टदणयमलागासु पक्खिते बादरबाउत्तकम्पअदृष्टदणयमलागा सामरोवममेवा आदा । बादरतेउत्तकम्पअदृष्टेदमप विरलिय विग करिय अप्पेअण्णमत्ते कदे बादरतेउत्तकम्पपरासी उप्पज्जदि । अहवा यमलोपट्टयगपहि बादरतेउत्तकम्पअदृष्टदणयसु ओवहिदेसु लद्ध विरलेऊण रुवं पदि

जो पइके असंख्यात लोकाप्रमाण गुणकार उत्तरच क्रिये ये उनसे अपने अपने सामान्य व्यवहार कर्मोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके व्यवहारकाण्ड होते हैं ।

अब मागे सूत्रके सामान्य प्रमाणमूल सुत्राधिकृत आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्थच्छेद बतहाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पत्तोपमको ग्रहण करके अगर उसे अक्षरोंके असंख्यातवै भागसे खण्डित करके वहाँ जो एक भाग छप्प म्ये उसे पुनः स्थापित करके दोष बहुभागछे उसी राशिमें अर्थच्छेद पत्तकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्वाधिक राशिची अर्थच्छेद शब्दाकार्य होती है । जो एक भाग पुनः स्थापित किया या उसे फिर भी अक्षरोंके असंख्यातवै भागसे खण्डित करके वहाँ जो एक भाग छ.अ आया उसे घटा कर अवशेष पट्टमापको पूर्णराशि अर्थच्छेद बादर तेजस्वाधिक राशिसे अर्थच्छेदोंकी दो प्रतिराशिवां करके भीर उनमेंसे पक्षमें मिला देने पर बादर वनस्वति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्थच्छेदशब्दाकार्य होती हैं । इसीप्रकार बादर भिगेदप्रतिष्ठित बादर पृथिवीकायिक भीर बादर अण्वायिक भीरराशिसे अर्थच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अन्तम जलनीत एक लहरको बादर जलायिक जीवोंकी अर्थच्छेद शब्दाकार्यमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकायिक जीवोंकी अर्थच्छेदशब्दाकार्य हो जाती है ।

बादर तेजस्वायिक राशिही अर्थच्छेदशब्दाकार्यका निरक्षण करने भीर उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकछ बोनप करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्वायिक भीरराशि उत्पन्न होती है । अथवा घनलोकाके अर्थच्छेदोंमें बादर तेजस्वायिक राशिसे अर्थच्छेदोंके

१ अर्थच्छेदप्रमाणवैरविराजन्तप्रकारादिव । बादरतेरविद्वन्द्वशास्त्र परिग्रहाने पुन ४ यो

धनलोग दत्तुण्य अप्पण्णम्मत्थे कए वादरतेउकअयरासी उप्पन्नदि । अइवा वादर
तेउअइच्छेदणए वादरवणप्फअपेयसरीरइच्छेदणएहिता साहिय अवसेसरसिं विरत्तिय विगं
करिय अप्पण्णम्मत्थरासिणा वादरवणप्फअपेयसरीरसिंहि मागे हिंदे वादरतेउकअय
रासी उप्पन्नदि । अइवा वादरवणप्फअपेयसरीरसिंम्भ अहियइच्छेमवयमेवे' अइच्छे-
यणए कए वादरतेउकअयरासी उप्पन्नदि । अइवा वणसेगछेदणएहि अहियइच्छेदणएसु
अवहियंसु तत्त उइ विरत्तेऊय एक्केक्कस्स रूपस्स वणलोण दत्तुण्य अप्पण्णम्मत्थे कए
जो रासी तेम वादरवणप्फअपेयसरीरसिंहि मागे हिंदे वादरतेउकअयरासी इदि ।
एव वादरविगोदपरिहिंद-वादरपुत्रविक्रय-वादरआउकअय-वादरवाउकअयार्थ अप्पण्णो
अइच्छेदणएहिता वादरतेउकअयरासी उप्पादेदुम्मा । एवं वादरतेउकअयरासिस्स
सचारसविहा पक्कवा कइ ।

मात्रित करने पर जो छप्प आये उसे विरचित करके और उस विरचित राशि के प्रत्येक
एकके प्रति धनबोक्को लेकर पान्थर गुणित करने पर बाहर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा, बाहर तेजस्कायिक राशि के अर्धच्छेदोंको बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर
जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे मक्कर जो राशि होय उसे विरचित करके और उस विरचित
राशि के प्रत्येक एकको दोकप करने परपन्थर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बाहर
वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशि के मात्रित करने पर बाहर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा बाहर वनस्पति प्रत्येकराशि के जिसने अधिक अर्धच्छेद हैं उतनीबार बाहर
वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि के अर्धच्छेद करने पर भी बाहर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती
है । अथवा धनबोक्के अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके मात्रित करने पर वहां जो छप्प
आये उसे विरचित करके और उस विरचित राशि के प्रत्येक एकके प्रति धनबोक्को लेकरपसे
लेकर परपन्थर गुणित करने पर जो राशि आये उससे बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशि के
मात्रित करने पर बाहर तेजस्कायिक राशि आती है । इसीप्रकार बाहर नियोज्यप्रतिष्ठित, बाहर
पुष्टिबीजायिक बाहर अन्धायिक और बाहर वायुअयिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे
बाहर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार बाहर तेजस्कायिक राशि की
समस्त प्रकारकी प्रकल्पना की ।

विशेषार्थ—ऊपर पाँच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न करके बतला दिये
हैं । प्रथमबार तेजस्कायिक जीवराशि के अर्धच्छेदोंका और दूसरीबार धनबोक्के अर्धच्छेदोंका
मात्रय लेकर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई है । अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक
जीवराशि के उत्पन्न करनेमें बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशि के अर्धच्छेदोंकी मुख्यता

गुणगान्धि सगमगसायण्यप्रवहारकालेसु गुणितसु सगसगबादराण्यमनहारकाला मर्षति ।

पुणो सुधाविरुद्धेण आदिरिजावर्षेण सुर्षं च पमाणमूदेण वादराण्यमदृच्छद्वय वचद्वयमाणा । त अहो— एगसागोवमादो एगं पल्लिवोर्षं धरूण तमावर्षियाए अर्षसेज्जदि मायन उटिय तन्पगुर्षं पुष ह्विय संसवहुमत्तं तम्हि येव पक्खित्तं वादरतेउक्कप्पय अदृच्छेद्वयमलागा हर्षति । तं पुष द्विवेदयत्तं च पुणो वि आगलियाए अर्षउज्जिमाएव एट्टिय तत्पेगुर्षं तमनिय बहुउर्षे पुणरासिं हुप्पडिरासिं फट्ठण पक्खित्तं वादरवणप्पद पत्तयमर्णिय अदृच्छेद्वयमलागा ह्वति । एवं वादरणिगदपदिट्ठिद-वादरपुट्ठि-वादर आळण च वत्तय । अते अपविदएगउठ वादराउक्कप्पयअदृच्छेद्वयमससागान्नु पक्खित्तं वादराउक्कप्पयअदृच्छेद्वयमलागा सायरोपममेचा आदा । वादरतेउक्कप्पयअदृच्छेद्वय विगलिय विग करिय अण्णोण्णमत्तये क्खे वादरतेउक्कप्पयरासी उपगज्जदि । अहो घणसेत्तयपएहि वादरतेउक्कप्पयअदृच्छेद्वयसु ओवट्ठियेसु सद्धं विरलेळण रुवं पति

जो पढे मर्षक्यात लोकप्रमाण गुणरूप उतरव किये थे उनसे अपने अपने सामान्य व्यवहार कामोंके गुणित करने पर अपने अपने वादर जीनोंके व्यवहारकाक होते हैं ।

जब व्योम मूषके समान प्रमाणमूल सुखाविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार वादर जीनोंके मर्षकेन्द्र बनलाते हैं । उसका स्वीकारण इत्यन्तर है— एक सागरोपममेंसे एक पत्थोपमरो महुन करके बार उसे आबनीके अर्धस्यातर्षे भागसे लङ्घित करके बड़ा जो एक भाग छम्प आये उसे पृथक् स्थापित करके दोष बहुभागको उसी राशिमें मर्षान् पत्थकम सागरमें मिला देने पर वादर तेजस्वाधिक राशिभी अथच्छेत्त शब्दाकार्य होती है । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी व्यवहारीके अर्धस्यातर्षे भागसे लङ्घित करके बड़ा जो एक भाग छम्प आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि अथवा वादर तेजस्वाधिक राशिमें अथच्छेत्तोंकी दो प्रतिराशिवां करके भीर उनमेंसे एकमें मिला देने पर वादर पनहरति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेत्तशब्दाकार्य होती है । इसीप्रकार वादर निगोत्रप्रतिष्ठित वादर पृथिवीवायिक भीर वादर अन्ध्यायिक जीवराशिके अथच्छेत्तोंका कथन करना चाहिये । अन्तमें अपनीत एक लङ्घको वादर अन्ध्यायिक जीवोंकी अर्धच्छेत्त शब्दाकार्यमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण वादर वायुवायिक जीवोंकी अर्धच्छेत्तशब्दाकार्य हो जाती है ।

वादर तेजस्वाधिक राशिभी अथच्छेत्तशब्दाकार्यको विरलन करते भीर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोषप करके परस्पर गुणित करने पर वादर तेजस्वायिक जीवराशि उतरप जाती है । अथवा घनछोकके अथच्छेत्तोंमें वादर तेजस्वायिक राशिके अर्धच्छेत्तोंके

छेयणए विरलिय विग करिय अण्णोणम्मत्थकदरासिणा बादरतेउकअयरासि गुणिदे
 बादरयणप्फदिपचेयसरीररासी होइ । अइया अदियण्ठेयणए षणलोगछेयणएहि ओवहिय
 रुवं विरलेत्थम रुवं पडि षणलोग इत्थम अण्णोणम्मत्थकदरासिणा बादरतेउकअयरासि
 गुणिदे बादरवणप्फअपचेयसरीररासी होइ । बादरभिगोदपदिद्विद-बादरपुठभिकअय बादर
 आउकअय-बादरपाउकअयएहि तो बादरवणप्फअपचेयसरीररासिमुण्णान्नवमाणे जहा तेउका
 अयरासी उप्पाइदा तहा उप्पादेदइया । बादरणिगोदपदिद्विद-बादरपुठभिकअय-बादरमाउ
 कअय-बादरपाउकअयाण च एवं चैन सचारसविहा परयणा परूवेइया । पचेग
 साभाणगसरीरविदिचो बादरणिगोदपदिद्विदरासी च जाणिअदि चि मुचे सच, तेहिं वदिदिचो
 वणप्फअयएसु बीवरासी जणिय चैन, किं तु पचेयसरीर दुविहा मर्षति बादरणिगोदजीवाणं

इस विरचित राशिके प्रत्येक एकको लोचन करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उससे बाहर तेजस्कान्तिक राशिके गुणित करने पर बाहर वनस्पतिकान्तिक प्रत्येकशरीर
 जीवराशि होती है । अथवा अधिक अर्धच्छेदोंको वनछोके अर्धच्छेदोंसे भाजित करके
 जो अक्ष भावे इसे विरचित करके और इस विरचित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वनछोकेको
 द्वैवरूपसे वेकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बाहर तेजस्कान्तिक जीव
 राशिके गुणित करने पर बाहर वनस्पतिकान्तिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । बादर
 निगोदप्रतिष्ठित बाहर ध्रुवबीज्यायिक बादर मण्डलायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिके
 प्रमाणसे बाहर वनस्पतिकान्तिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन
 राशिमेंसे तेजस्कान्तिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । बादर
 निगोदप्रतिष्ठित बाहर ध्रुवबीज्यायिक, बादर मण्डलायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिका
 इसीप्रकार सबह सबह प्रकारकी प्रकल्पनासे प्रकल्प करना चाहिये ।

विशेषार्थ—जहाँ बड़ी राशिका आशय लेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ पर
 छोटी राशिके अर्धच्छेदोंसे बड़ी राशिके अर्धच्छेद जितने अधिक हों उतनीबार बड़ी राशिके
 भावे भावे करने पर, अथवा उतने अर्धच्छेदप्रमाण होके परस्पर गुणित करनेसे जो अक्ष
 भावे उसका बड़ी राशिमें माप देने पर छोटी राशि आती है । तथा जहाँ छोटी राशिका
 आशय लेकर बड़ी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी राशिके विगुणित
 करने पर अथवा उतने अर्धच्छेदप्रमाण होके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बड़ी राशि आ जाती है । दोष कथन स्पष्ट ही है ।
 इसप्रकार तेजस्कान्तिक राशिकी सबह प्रकारकी प्रकल्पनाके समान प्रकल्पना करनेसे उपर्युक्त
 प्रत्येक राशिकी प्रकल्पना सबह सबह प्रकारकी हो जाती है ।

श्रृंखला—प्रत्येकशरीर और सामान्यशरीर इन दोनों जीवराशिओंको छोड़कर बादर-
 निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है यह नहीं मालूम पड़ता है ।

समाधान—यह खल है कि वक्त दोनों राशिओंके अतिरिक्त वनस्पतिकान्तिकोंमें
 और कोई जीवराशि नहीं है किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकान्तिक जीव हो मकरके हैं, एक

पदस्य मसंख्यज्जाण गहण पथे अण्णिच्छिदासंख्यज्जपडिसेइहुमुत्तरसुच भणदि—

असखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणिउत्सपिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विससेण
तस्सदिणिमिचमुत्तरसुचमाह—

स्वेत्तेण चादरपुढविकाइय-चादरआत्तकाइय-चादरवणफइकाइय
पत्तेयसरीरपज्जतएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असखेज्जदिभागवग्ग
पडिभागेण' ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उच्च पमाणांगुलं धेत्तव्वं । तस्म असंखज्जदिभागस्स ओ वमो
तेण पडिभागेण मागहरेण । एत्थ निमिचं त्वया इहुवा । एदंण अवहारकालेण चादर
पुढविपज्जचाइहि अगपदरमवहिरदि ति न पुत्तं होदि ।

सामान्य बचन देनेसे भी प्रकारके अलक्ष्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित अलक्ष्यातोंके
प्रतिषेध करनेके लिये भागेका खूब कहते हैं—

काठकी अपेक्षा चादर पृथिवीकायिक पर्याप्त चादर अष्कायिक पर्याप्त और
चादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकक्षरीर पर्याप्त जीव असम्पातासक्यात अवसर्विणियों और
उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस खूबका भी मर्य सुगम ही है । यद्यपि इस खूबसे अलक्ष्यातासंख्यात अलगत हो
गया फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करनेके लिये भागेका खूब कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा चादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, चादर अष्कायिक पर्याप्त और
चादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकक्षरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूर्यगुलके अलक्ष्यातवें भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रवर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां खूबमें अंगुल देखा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । इस
प्रमाणांगुलके अलक्ष्यातवें भागका जो बर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् मागहारसे । यहां निमित्तमें
गृहीता विमर्षि आगता चाहिये । इस अवहारकाइसे चादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि
जीवोंके द्वारा जगप्रवर अपहृत होता है, वह इस खूबका अमिमाय है ।

विशेषार्थ—उत्सेपांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके मेलसे अंगुल तीन प्रकारका
है । पाठ पक्षका एक उत्सेपांगुल होता है । पांचवी उत्सेपांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पडाइविज्जपडिपदरपुढविकाइये अवपवरे । जहमपिपवावरवा पुग्गा जलकिमववज्जिरवा ॥
पो जी. १९

जोमीमूदसरीरा तन्निवरीदसरीरा चेदि । सत्य जे बादरनिगोदार्ण जोमीमूदसरीरपत्तेय-
सरीरजीवा ते बादरनिगोदपदिष्ठिहा मर्गति । क ते ? मूठयदु मल्लय-धरण-गठेदे-लोमेसरप-
मादभो । उचं य—

बीजे जोमीमूदे जीवो बन्धु सो व जणो वा ।

जे बि व मूठादीमा ते पत्तेया फडमदण ॥ ७६ ॥

सुच बादरवणपुद्विपत्तेयसरीराणमेव गहन कर्द, (ज तम्मेदार्ण) ! जे,
बादरवणपुद्विपत्तेयसरीरजीवेसु जेव तेसिमंतम्मावाहो । एदसि बादरवणज्जण पर
बमत्ताय परुवगाहुमुचसुचमाह—

बादरपुठविकाइय-बादरआत्तकाइय-बादरवणपुद्विकाइयपत्तेयसरीर
पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो पि ण बुद्धे । असंखत्ता इदि सम्मप्यवयणं

तो बादरनिगोद जीवोंके योमिमूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उमसे विपरित शरीरबाहे जयांत
बादरनिगोद जीवोंके योमिमूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके
योमिमूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

प्रश्न—जे बादरनिगोद जीवोंके योमिमूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूछी बन्धक (१) मल्लक (मल्लक) सूत्र गच्छे (गुह्यी या गुरवेठ)
छेकेम्भत्तमा ! यदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कहा भी है—

योमिमूत बीजमें बही जीव उत्पन्न होता है जयरा वृक्षरा कई जीव उत्पन्न होता है ।
यह और जितने भी मूछी व्याधिक समप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं जे प्रथम बन्धकमें प्रत्येक ही हैं ॥ ७५ ॥

प्रश्न—सूत्रमें बादर बन्धकप्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है उनमें
केतोंका क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, बादर बन्धकप्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका
अन्तर्भाव हो जाता है ।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्रकृत्याके ग्रहण करनेके लिये व्यापक सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अकायिक आर बादर बन्धकप्रत्येकशरीर
पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणही अपेक्षा कितन हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इतकिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें बसेक्यात है देसा

१ वा. बर्दा कठोरे इति पाठः ।

२ टी. जी १ = बीज योमिमूद जीवी वण्डमा हो व कवी वा । योमि व दूहे जीवी वंमि व वं
वारवत्त ॥ प्रकृत्या १ ४५ पा. ५२ वृ ११९

३ इति बार्ण कर्ष व इति पाठः । ४ इति बादरवणज्जण ? इति पाठः मरित ।

गवश्मसंखज्जायं गहण पचे अपिच्छिदासंखज्जपडिसेइहमुत्तरसुच भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ८९ ॥

एहस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विससेण
तल्लदिणिमिचमुत्तरसुचमाह—

स्वेतेण वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणफइकाइय
पत्तेयसरीरपज्जत्तणहि पदरमवहिरदि अगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग
पडिमाणेण ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उचे पमत्तांगुलं धेचच्च । तस्स असंखज्जदिभागस्स ओ वग्गे
तेण पडिमाणेण भागहारेण । एत्थ विमिसे तइया दइवा । एदेण अवहारकालेण वादर
पुढविपज्जसादीहि जगपदरमवहिरदि ति जं पुच होदि ।

सामान्य पञ्चन हेनेसे भी प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंके
प्रतिषेध करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादर अण्कायिक पर्याप्त और
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त भीम असंख्यातासंख्यात अवसर्विणियों और
उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात व्यवगत हो
गया फिर भी इसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अण्कायिक पर्याप्त और
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त भीमोंके द्वारा सूत्र्यंगुलके असंख्यातोंके भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहाँ सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । उस
प्रमाणांगुलके असंख्यातोंके भागका जो बर्ग तत्सूत्र प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे । यहाँ निमित्तमें
मृत्तीका विभक्ति जानना चाहिये । इस अवधारकासे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त माहि
भीमोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अर्थिमाय है ।

विशेषार्थ — उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके मेषसे अंगुल तीन प्रकारका
है । माह पक्षका एक उत्सेधांगुल होता है । पाँचवीं उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पञ्चविंशतिपरिपक्ववृद्धमयिने अवपदरे । जकमूनिपरातरा पुत्ता जलविमलवमविदफमा ॥
पो जी. १ ९

एतत् सुचक्षुषिदमप्रिओषणमेव मागहारण विमसं मयिस्तामो । तं अह-
पलिदोवमस्त असंखेज्जदिमाणं चक्षिर्जगुत्तमवहगिय सई बग्गिदे बादरआउकपपञ्च-
मवहारकस्तो हादि । तस्मि आबलियाए असंखेज्जदिमाणं गुण्णिदे बादरपुदविकप्रप
पञ्चचअवहारकस्तो हेदि । तस्मि आबलियाए असंखेज्जदिमाणं गुण्णिदे बादरभिगोद-
पदिहिइपञ्चचअवहारकस्तो हेदि । तस्मि आबलियाए असंखेज्जदिमाणं गुण्णिदे बादर-
बण्णदिपथेयसरिरपञ्चचअवहारकस्तो हादि । कारण, सगरासिबहुचविपंभगवा । एदमि
मवहारकस्तो रूदिदत्तिय पेविदियतिरिक्कभंगो । एवहि पदरगुसमागहारो एतत् पत्ति-
दोवमस्त असंखेज्जदिमाणो । एवेहि अवहारकस्तेहि जगपदे माग हिदे सगमागद्वयमाव-
मागच्छदि ।

बादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा । असंखेज्जा
वलियवमो आवलियघणस्स अतो ॥ ९१ ॥

अपने अपने अंगुलको आत्मंगुल कहते हैं । हमसेते यहां प्रमाणंगुलरूप सूक्ष्मंगुलका ही ग्रहण
किया गया है, क्योंकि, जीव आदिही जन्मानमें यही अंगुल लिया गया है । इसीप्रकार ब्रह्म
प्रमाणानुसारेण यहां अंगुलका संख्य आया है यहां इसी अंगुलका अन्विष्ट आत्मना चाहिये ।

अब यहां पर आचार्योंके उपदेशानुसार सूक्ष्म सूचित मागहारोंके विशेषको कहते हैं ।
यह इसप्रकार है— पक्षोपमके अर्थस्मात्तर्षे मागसे सूक्ष्मंगुलको मात्रित करने जो छत्र आने
हउके वर्णित करने पर बादर अन्वयिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाय होता है । इस
बादर अन्वयिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकायको व्यवसीके अर्थस्मात्तर्षे मागसे गुणित
करने पर बादर पृथिवीअन्वयिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाय होता है । इस बादर पृथिवी
अन्वयिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकायको व्यवसीके अर्थस्मात्तर्षे मागसे गुणित करने पर
बादर विद्योदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाय होता है । इस बादर नियोदप्रतिष्ठित
पर्याप्त जीवोंके अवहारकायको व्यवसीके अर्थस्मात्तर्षे मागसे गुणित करने पर बादर
वगत्याति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाय होता है । यहां अवहारकायको वसतोत्तर
अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्वज्ज्ञां अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पार्य जाती
है । इन अवहारकायोंके अहित न सिद्धका कारण एवेन्निद्र तिर्थयके अहित व्यवस्थिके सत्यके
समाप्त करना चाहिये । इसका विशेष है कि यहां पर प्रत्यंगुल मागहार है और यहां पर
पक्षोपमका अर्थस्मात्तर्षा माग प्रकाश है । इन अवहारकायोंसे जगत्तरके मात्रित करने पर
अपने अपने ब्रह्मका प्रमाण आता है ।

बादर तेजसअन्वयिक पर्याप्त जीव ब्रह्मप्रमाणकी उपेक्षा कितने हैं ? अर्थस्मात्
है । यह अर्थस्मात्तर्षा प्रमाण अर्थस्मात्तर्षा आचार्योंके वर्णरूप है जो आचर्यके मनके
भीतर आता है ॥ ९१ ॥

असंख्यज्ञा इति सामान्येण उच्ये अवविहस्त असंख्यज्ञस्त गह्वरं पश्य तत्पक्षिते
 इदं असंख्यज्ञावलिपवग्गो वि निहसो कदो । असंख्यज्ञावलिपवग्गो वि वयमेण
 घणावलिपार्थम्यवलिपवग्गो गह्वरे पश्ये तत्पक्षितेहृन्मावलिपवग्गस्य अतो इति निहसो कदो ।
 घणावलिपाए अन्तरे चेव बद्धरेउपज्जचरासी होदि वि उचं भवदि । अद्ध्यपर
 परामत्रोपपत्तेय बद्धरेउपज्जचरासिस्स अद्ध्यकार्त्तं मणिस्सामो । स जहा—आवलिपाए
 असंख्यज्ञदिमात्तं पद्दरावलिपवग्गहारिय उद्देण पद्दरावलिपवग्गिमवग्गे मागे हिदे बद्ध
 तेउक्काइयपज्जचरासी होदि । एत्थ रेउठि माजि विरत्ति अवहिदाणि नाणिऊण मणिऊण
 माणिद्वयाणि । तस्स पमानं उचद् । पद्दरावलिपवग्गिमवग्गास्स असंख्यज्ञदिमागो असंख्य
 ज्ञाभो पद्दरावलिपाओ । स जहा—पद्दरावलिपाए तुदुवरिमवग्गे मागे हिदे पद्दरावलिपं
 आगच्छदि । तिस्से दुमागेण मागे हिदे दोणि, तिप्पिमागेण मागे हिदे तिप्पि, एवं

सूत्रमें असंख्यात है इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर भी प्रत्येकके असं
 ख्यार्थका प्रत्यक्ष प्राप्त होता है अतः उनके प्रतिषेध करनेके लिये वह असंख्यातरूप प्रमाण
 असंख्यात व्यवस्थितोंके वर्णरूप है वेसा निर्दिष्ट किया है । 'असंख्यात व्यवस्थितोंके वर्णरूप है
 इस कथनसे प्रत्यक्ष ही स्पष्टि उपरिम असंख्यातोंके प्रमाणके प्राप्त होने पर इससे प्रतिषेध करनेके
 लिये व्यवस्थितोंके घनके भीतर है इसप्रकारका निर्दिष्ट किया । इसका समीपय वह हुआ कि
 बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशि प्रत्यक्ष ही है । अब व्यवस्था परंपरासे भावे हुए
 उपदेशके अनुसार बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका व्यवहारका कहते हैं । वह इसप्रकार
 है—व्यवस्थाके असंख्यातोंके भागसे प्रत्यक्ष ही स्पष्टि करके जो लक्ष्य भावे उससे प्रत्यक्ष
 प्रतीति उपरिम वर्णके माजित करने पर बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशि होती है । यहां पर
 उचित माजित विरक्ति और व्यवस्थाओंको जानकर कहकर कहलाना चाहिये ।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिके व्यवहारका कहनेकी
 प्रतिज्ञा की गई है और अन्तर्मे बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण चितना है वह
 वतसाध है । फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिज्ञामें कोई धिसंगति नहीं आती है क्योंकि,
 व्यवस्थाके असंख्यातोंके भागसे प्रत्यक्ष ही स्पष्टि करके जो लक्ष्य भावे इस कथनके
 द्वारा बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिके व्यवहारका कथन दो जाता है ।

भागे बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं । प्रत्यक्ष ही उपरिम
 पक्षका असंख्यातोंके भाग बाह्य तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है जो प्रत्यक्ष ही
 उपरिम पक्षका असंख्यातोंके भाग असंख्यात प्रत्यक्ष ही प्रमाण है । भावे इसी प्रकार
 करते हैं—प्रत्यक्ष ही उपरिम वर्णोंके भाग होने पर प्रत्यक्ष ही प्रमाण जाता है ।
 प्रत्यक्ष ही द्वितीय भागका प्रत्यक्ष ही उपरिम वर्णोंके भाग होने पर दो प्रत्यक्ष ही लक्ष्य

गन्तव्य आबलियाए अमरुन्जदिमाएण संदिदपदराबलियाए तदुवरिमवग्ग माग हिद
असंखेउज्जाआ पदराबलियाओ लम्भति । कारणं गद् । पदराबलियाए अमरुन्जदिमाएण
पदराबलियाए आरुद्धिण तथ वलियाणि रुवाणि सलियाआ पदराबलियाआ इपंति ।
मिरुणी गद् ।

वियप्पा दुविहा, इट्ठिमवियप्पा उवरिमवियप्पा वेदि । नथ इट्ठिमवियप्पा वरुने
वचइस्सामा । पदराबलियाए असंखेउज्जादिमाएण पदराबलियमावन्तिय लब्धेण तं पर
पदराबलियं गुणिदे बादरतेउपज्जचरामी हादि । अट्ठरुव वचइस्सामा । पदराबलियाए
अमरुन्जदिमाएण पदराबलिय गुणिय पदराबलियपणे माग हिदे बादरतेउपज्जचरामी
होदि । तं जहा—पदराबलियाए पदराबलियपण माग हिदे पदराबलियउवरिमवग्ग
आगच्छदि । पुणो पदराबलियाए असंखेउज्जादिमाएण तम्हि माग हिदे बादरतेउपज्जचरामी
हादि । पणापणे वचइस्सामो । पदराबलियाए असंखेउज्जादिमाएण पदराबलियं गुणिय तेव
पदराबलियपणपटमवग्गामूले गुणिय पदराबलियपणापणपटमवग्गामूले माग हिदे बादर-

भाती है । प्रतराबलीके तृतीय मागस्य प्रतराबलीके उपरिम वर्गमें माग देने पर तीन प्रतरा
बलियां लब्ध भाती है । इसीप्रकार नीचे जाकर आबलीके असंख्यातवें मागसे प्रतराबलीको
गुणित करके जो लब्ध भावे उससे प्रतराबलीके उपरिम वर्गमें माग देने पर असंख्यात
प्रतराबलियां लब्ध भाती है । इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ । प्रतराबलीके असंख्या
तवें मागसे प्रतराबलीके भागित करने पर बड़ा जितना प्रमाण लब्ध भावे तत्प्रमाण प्रतरा
बलियां बाहर तेजस्वयिक पर्याप्त जीवोक्त प्रमाण होता है । इसप्रकार निरुक्ति का कथन
समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे विकल्पमें
अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतराबलीके असंख्यातवें मागसे प्रतराबलीको भागित
करके जो लब्ध भावे उससे उसी प्रतराबलीको गुणित करने पर बाहर तेजस्वयिक पर्याप्त
जीवोक्ति होती है ।

अथ उपरिममें अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रतराबलीके असंख्यातवें मागसे
प्रतराबलीको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे प्रतराबलीके बनके भागित करने पर
बाहर तेजस्वयिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—प्रतराबलीके
प्रतराबलीके बनके भागित करने पर प्रतराबलीका उपरिम वर्ग भाता है । पुनः प्रतराबलीके
असंख्यातवें मागसे उसी प्रतराबलीके उपरिम वर्गके भागित करने पर बाहर तेजस्वयिक
पर्याप्त राशि होती है ।

अथ वषाधनमें अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतराबलीके असंख्यातवें मागसे
प्रतराबलीको गुणित करके जो लब्ध भावे उससे प्रतराबलीके बनके प्रथम वर्गमूलको गुणित
करके जो लब्ध भावे उसका प्रतराबलीके वषाधनके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर बाहर

ततपञ्चचरासी होदि । तं जहा—पदरावलिपयणपदमवगममूल्य घणाचणपदमवगममूले
मागे हिदे पदरावलिपयणो आगच्छदि । पुणो पदरावलिपयण पदरावलिपयणे मागे हिदे
पदरावलिपयणपरिमवगो आगच्छदि । पुणो पदरावलिपयण असंखेज्जदिमागेण तम्हि मागे
हिदे बादरततपञ्चचरासी आगच्छदि ।

उपरिमवियणो तिविहो गहिवादिमेण । वरुमे गहिद वचइस्सामो । पदरावलिपयण
असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो मागे हिदे बादरततपञ्चचरासी होदि । अहवा
पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो गुणेज्ज सवुवरिमवगो मागे हिदे
बादरततपञ्चचरासी होदि । (एवमागच्छदि पिय कइ गुणेज्ज मागगाहम कइ । तस्स
मागाहारस्स अइच्छेदवयमेव राविस्स अइच्छेदणए कइ वि बादरततपञ्चचरासी आग
च्छदि ।) अइस्स वचइस्सामो । पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो
स्सुवरिमवगो गुणेज्ज घणावलिपयणपरिमवगोस्सुवरिमवगो मागे हिदे बादरततपञ्चचरासी
होदि । तं जहा—पदरावलिपयणपरिमवगोस्सुवरिमवगो घणावलिपयणपरिमवगोस्सुवरिमवगो
मागे हिदे पदरावलिपयणपरिमवगो आगच्छदि । पुणो पिय पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण

तेजस्साधिक पर्याप्त राशि होती है । उसका कपीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीके घनके
प्रथम वर्गमूलके प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर प्रतरावलीका घन
भ्रता है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके माजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग
भ्रता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवै मागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके माजित
करने पर बादर तेजस्साधिक पर्याप्त राशि भ्रती है ।

गृहीत आविके मेवसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे त्रिकपमें गृहीत
उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवै मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके
माजित करने पर बादर तेजस्साधिक पर्याप्त राशि होती है । अथवा प्रतरावलीके असंख्यातवै
मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके जो छप्प आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम
वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर बादर तेजस्साधिक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर
तेजस्साधिक पर्याप्त राशि भ्रती है ऐसा समझकर पहले गुण्य करके अनन्तर मागका ग्रहण
किया । उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार उक्त मध्यममाग राशिके अर्थच्छेद करने
पर भी बादर तेजस्साधिक पर्याप्त राशि भ्रती है ।

अथ भद्रकपमें गृहीत उपरिम विकल्पकी बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवै
मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो छप्प आवे उसका
प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर बादर तेजस्साधिक पर्याप्त राशि
होती है । उसका कपीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे
प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके माजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग भ्रता

पदगवस्त्रियउवरिमवग्ग मागे हिंदे बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि पि
 क्कु गुणेऊग मागग्गहणं कर्दं । तस्स मागाहारस्स अदुच्छेदपमेष रासिस्स अदुच्छेदपम
 क्क बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । घणापणे पचइस्सामो । पदरावलिपाए असंखेअदि
 मागण पदरावस्त्रियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गं गुणेऊग तण पदगवस्त्रियपणउवरिमवग्गस्सु
 वरिमवग्ग गुणेऊग तेण युजिदगमिणा घणापणारस्त्रियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गो मागे हिंदे
 बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । तं अहा— पदगवस्त्रियपणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गव
 घणापणारस्त्रियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गं मागे हिंदे घणावस्त्रियउरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो
 आगच्छदि । पुणा वि पदरावस्त्रियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गेण समिह मागे हिंदे पदरावस्त्रि
 उवरिमवग्गा आगच्छदि । पुणा वि पदरावस्त्रियाए अर्धपञ्जअदिभाएण पदरावस्त्रियउवरिम
 वग्गे मागं हिंदे बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि पि क्कु गुणेऊग
 मागग्गहणं कर्दं । तस्स मागाहारस्स अदुच्छेदपमेष रासिस्स अदुच्छेदपम क्कं पि
 बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जावत्तेसु नेयग्गं । पदरावस्त्रि
 उरिमवग्गस्स घणावस्त्रियउवरिमवग्गस्स घणापणा (वस्त्रियउरिमवग्गस्स) च असंखेअदि
 है । पुनः प्रतरापसीके असंख्यातये मागसे प्रतरावसीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर
 तेज्जरावधिक पपात्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेज्जरावधिक पपात्त राशि आती है
 ऐसा समझकर पहले गुणा करके अगस्त्य मागका ग्रहण किया । उक्त मागहारके जितने
 अर्धपञ्चेद् हैं उतनीवार उक्त मध्यमान राशि के अर्धपञ्चेद् करने पर बादर तेज्जरावधिक
 पपात्त राशि आती है ।

अब घनापणमे गृहीत उपरिम विवरणको बतलाते हैं— प्रतरावसीके असंख्यातये
 मागसे प्रतरावसीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो सध्य आवे उससे
 प्रतरावसीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि सध्य आवे
 उससे घनापणावधिक उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेज्जरावधिक
 पपात्त राशि आती है । असध्य स्पर्शीकरण इसप्रकार है— प्रतरावसीके घनके उपरिम वर्गके
 उपरिम वर्गमे घनापणावसीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावसीके
 उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरापसीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे
 घनापसीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरापसीका उपरिम वर्ग आता
 है । फिर भी प्रतरापसीके असंख्यातये मागसे प्रतरापसीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर
 बादर तेज्जरावधिक पपात्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेज्जरावधिक पपात्त राशि
 आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अगस्त्य मागका ग्रहण किया । उक्त मागहारके
 जितने अर्धपञ्चेद् हैं उतनीवार उक्त मध्यमान राशि के अर्धपञ्चेद् करने पर भी बादर
 तेज्जरावधिक पपात्त राशि आती है । इसीप्रकार संख्यात अक्षयान कीर अगस्त्य पपात्तमे
 से आता प्राद्विहै । प्रतरावसीके उपरिम वर्गके अर्धपणायतये मागकण घनावसीके उपरिम वर्गके

भाष्ये चान्तरिते उपपन्नतरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगतो च वृत्तव्यो । एतच्च सुचगाहा—
 भाषयित्वा ए वगा भाषयित्वा सप्तभागगुणिशे ॥
 तस्या घणस्त अतो बादरपञ्चतेत्तण ॥ ७७ ॥

नादरवाचकादयपज्जता द्वन्द्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ॥ ९२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो । असखेज्जा इदि सामण्यवयणेण गवविहासखेज्जस्स गहमे पच अणिच्छिदासस्स न्नपदिमेह्हुमुत्तरसुत्तमाह—

असखेज्जामखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति

कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्था निक्खवागीहि पुत्तं च पन्नवद्वयो । एदम्हादो सुचादो सेमअद्वविहअसपुज्जस्स पविसह जाते वि अजहप्पायुक्कस्स अमेखेज्जसंखेज्जआसप्पिणि उस्सप्पिणीओ पयस्सगादिमेएण अणययिपप्पाओ तदो तप्पविसेह्हुमुत्तरसुत्त मणदि—

खेत्तेण असखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स सखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

असंख्यातवै भागरूप और घनाघनापलीने उपरिम वगने असंख्यातवै भागएव बादर तेज
 वृत्तायुक्त पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।
 यह सूत्रगाथा ही जाती है—

कृत्ति व्याख्या के असंख्यातवै भागसे व्याख्या के वर्गको गुणित कर देने पर बादर
 तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है इसलिये यह प्रमाण घनापलीके
 भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर पायुकायिक पर्याप्त बीध द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? असंख्यात
 है ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें असंख्यात है 'येसा सामान्य वचन देनेसे नौ
 प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये
 भागेष्ट सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पायुकायिक पर्याप्त बीध असंख्यातासंख्यात अवसं
 सर्पिणिपों और उत्सर्पिणिपोंके द्वारा अग्रह्य होते हैं ॥ ९३ ॥

नित्येव आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अधिका पहलके समान प्रकटन करना चाहिये । इस
 सूत्रसे दोष व्यक्त प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध का जाने पर भी अज्ञानानुसार असंख्याता
 संख्यात अवसर्पिणिपों और उत्सर्पिणिपों पल्लोक आदिके प्रेक्षसे अनन्त प्रकारकी है इसलिये
 उनका प्रतिषेध करनेके लिये भागेष्ट सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पायुकायिक पर्याप्त बीध असंख्यात जगप्रतरप्रमाण है,

माएण बादरवेउपज्जसरासिणा गहिउगहिदो गहिदुण्यगारो च वचथो । एतय सुचगाहा-
 आबधियाए बग्गो आबधियासंखमाणमुग्गिदो दु ।
 तप्पा धणरस अतो वात्तरपज्जत्तेउण ॥ ७७ ॥

बादरवाउकाइयपज्जत्ता द्वयपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ९२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो । असंखेज्जा इदि सामण्यवयणण णवविहासंखेज्जस्स
 गहणे पत्त अणिच्छिदासयज्जपट्टिसेइइसुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जामखेज्जाहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि अवहिरति
 कालेण ॥ ९३ ॥

एतस्म वि सुचस्म अत्था णिक्खुवाणीहि पुण्य व पच्चेदथो । एदम्हानो सुचान्दो
 समग्रविहअसंखज्जस्स पट्टिसहे जा वि अज्जहण्णाणुक्कस्मअर्मरुज्जासखेज्जमसपिणि
 उस्सपिणीआ षणलगादिभएण अणयवियप्पाआ तदा तप्पाट्टिसेइइसुत्तरसुत्त ममदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स मखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

असंख्यातवै भागरूप और घनाघनाबलीके उपरिस एगके असंख्यातवै भागरूप बादर तेज
 स्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारण कथन करना चाहिये ।
 यह सूत्रगाथा वी जाती है—

शुद्धि आबसीके असंख्यातवै भागसे आबसीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर
 तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है इसलिये यह प्रमाण घनाघनाकी
 भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त बीज द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? असंख्यात
 है ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें असंख्यात है 'देवा सामान्य वचन देनेसे नौ
 प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये
 व्योक्त सूत्र करते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त बीज असंख्यातासरूपात अवस
 र्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अवहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

भिन्नेष आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलके समान प्रकरण करना चाहिये । इस
 सूत्रसे होय आठ प्रकारके असंख्यातोंका प्रतिषेध हो जाने पर भी अज्जमय्यानुदए असंख्याता
 संख्यात अपसर्पिणियाँ और उत्सर्पिणियाँ घनलोक आदिके मेरेसे धनक प्रकारकी हैं इसलिये
 उक्त प्रतिषेध करनेके लिये आगम सूत्र कहने हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त बीज असंख्यात जगप्रतरप्रमाण है,

१ x बीघा x दशै x x बाउर्ण । वज्जराज पयाय । दा जी ९१ पञ्च व लै गर्तं । पयत १ ११

असंख्येजानि पि विदेसा अगपदरादिहृदिमअसंख्येजसंख्येजपडिसेहफला । पन-
सेनादिउपरिमसंख्येजसंख्येजपडिसेहृदि लेगस्स संख्येजदिमागवययं । रुचण इति
वयये त्थया दहम्मा । सेसं सुगमं । संख्येजम्बहि पणलाग माग हिद वादग्वाउपउज्जप
दम्बमागच्छदि पि बुधं हदि । एत्थ गाहा—

अगसेयीए वग्गे अगसेयीसंख्यमागमुनिजे ह ।

उम्हा पणजेगत्तो बान्प'उत्तमाउण ॥ ७८ ॥

वणप्फकाइया णिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता
दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पति' कय' अरि' येषां त वनस्पतिक्रिया', वनस्पतिक्रिया एव वनस्पति-

जो असंख्यात अगप्रतरप्रमाण खोकके संख्यातवें भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें असंख्यात यह वचन अगप्रतर आदि अद्यस्तन असंख्यातासंख्यातके
प्रतिषेधके क्रिये दिया है । वनलोक आदि उपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके क्रिये
खोकके संख्यातवें भागप्रमाण यह वचन दिया है । केलेज इस पदमें तृतीया विभक्ति
आवना चाहिये । रोप कथन सुगम है । संख्यातसे वनखोकके सम्मिलित करने पर बादर वायु
वायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य व्यता है यह इस कथनका तात्पर्य है । यहाँ गाया ही जाती है—

क्योंकि अगमेजीके वर्गको अगमेजीके संख्यातवें भागसे शुभित करने पर बादर वायु
वायिक पर्याप्त पाति जाती है । इसक्रिये एक प्रमाण वनखोकके सीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पतिक्रियायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिक्रियायिक बादर जीव, वनस्पति-
क्रियायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिक्रियायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिक्रियायिक बादर अपर्याप्त
जीव, वनस्पतिक्रियायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिक्रियायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद
बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त
जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमायकी
अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही वायु पर्याप्त हाटीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकार्य कहलाते हैं ।

१ उल्लिखितपुष्पिमादिपत्रकपत्तैवहीनसंज्ञा । तादात्म्यजीवात् परिवाप होति विनष्टिः ॥ उपरिम-
वर्णकवाग्ने वादरप्रमाण होति परिवाप । केवा एतद्वचनान् पथिमापी पुष्पविडि ॥ उल्लिखित पत्रकवाग्ने उल्लिखिता
अनुष्णया इत्यतः । वनित कपुष्पकवाग्ने पुष्पका उल्लिखितकथ्य ॥ बी जी. २ १-२ ८ वादरप्रमाणोद वनित
यान् वनितवा वाग्ने । पुष्पजनकपुष्पात् परिवाप होति वनितकवाग्ने ॥ गी. जी. २ ११ तादात्म्यता देवा वग्ने
वर्णता । वनित २, १

कायिका' । एव सदि विग्गहर्गणं नहुमाणां नणप्फइयत्त ण पावेदि ? वे, न एस दोसो, वणप्फइयत्तसंघेण सुह-दुक्खाणुहणमिचित्कम्मेषेयत्तमुवगयजीवाणमुवमारोच वणप्फइयत्ताविरोहा । वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्गहर्गणं नहुमाणा वि वणप्फइयत्ता मवन्ति । अमिमर्णसाणत्तजीवाणमकक्क नेष सरीरं मवदि साधारणरूपेण से पियोदजीवा मणत्ति । संखज्जासंखज्जपडिसइफले अणत्तणिएसो । सत्तं सुगम । अर्पता इदि सामण्यवयनेष मवविहस्स अणत्तस्स गहणे पत्ते अविवक्खिदस्स अहुविहाणत्तस्स पडिसेइहुमुत्तरसुत्त मवदि—

तथा जनस्पतिकाय ही जनस्पतिकविक कहसत है ।

शंका—यदि ऐसा है तो विप्रहरणमें विद्यमान जीवोंका जनस्पतिकविकपना नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, जनस्पतिकायके संघट्टसे कुछ और कुछके अनुभव करनेमें निमित्तमूल कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपकारसे विप्रहरणमें जनस्पतिकविक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है । जिन जीवोंके जनस्पति नामकर्मका उद्भव पाया जाता है वे विप्रहरणमें रहते हुए भी जनस्पतिकविक कह जाते हैं ।

विशेषार्थ—यहाँ पर शंकाकारका यह समझाय है कि जो जीव विप्रहरणमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक जोकर्म वर्गणार्थका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय जनस्पतिकविक भावि नहीं कह सकते हैं । इस शंकाका समाधान यह है कि विप्रहरणके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्वाधरकाय या असकाय नामकर्मका उद्भव हो जाता है । स्वाधरकायके पुण्यपीडयिक भावि पाँच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंके छेड़कर स्वतंत्र नहीं पाया जाता है इसलिये पुण्यपी जीवके पुण्यपीकाय जनस्पति जीवके जनस्पतिकविक नामकर्मका उद्भव विप्रहरणके प्रथम समयसे ही हो जाता है यह सिद्ध हुआ । जब यदि एक दो या तीन समयतक उसके जोकर्म वर्गणार्थका ग्रहण नहीं भी होता है तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें कुछ और कुछके अनुभव करनेमें निमित्तमूल कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है इसलिये उसे उपकारसे जनस्पतिकविक व्यापि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

जिन अवान्तरान्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें त्रियोद् जीव कहते हैं । सूक्ष्म संख्यात और असंख्यातक प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्वेद्य किया है । शेष कथन सुगम है । सूक्ष्म अनन्त हैं ऐसा सामान्य बचन देनेसे भी प्रश्नकारके प्रश्नोंके प्रत्यक्ष प्राप्त होने पर अधिवक्षित आठ प्रश्नकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये भागका सूत्र कहते हैं—

अणताणंताहि ओसापिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिराति कालेण
॥ ९६ ॥

अदि पुम्भरासीणमणताणतथाववाहणह्मतावमिह सुच, ता न अवहिरंति कस्मपि
वयम गिरत्तयमिदि च, न एस दोमा, उमयकन्त्रमाहणह्मतादो । पुम्भरासीणमणता-
णतर्च च संते वि वण अणतेण वि अदीदकस्सेण असमंति च पदुप्पादिदि चि । अवमम सुमं ।

स्वेत्तेण अणताणंता लोमा ॥ ९७ ॥

अदीदकस्स ओसापिणि उस्सपिणीयमाणेण कस्मिमावे न अवताणंताओ ओसापिणि-
उस्सपिणीआ मंति । एदाहि अणताणंताहि ओसापिणि-उस्सपिणीहि पुम्भुचओरम
जीवरासीओ न अवहिरंति चि मणतेण पुम्भिरुसुचण एदाण रासीणमणताणतचमदीद
कस्सदो बहुच च आणादिद । सपहि इमण सुत्तेण को अपुम्भो अत्थो आणानिदो वणदस्स
सुत्तस्स परंमो सत्ता हान् ? सुत्ते- एदाण रासीणमदीदकस्सदो बहुचमेच पुम्भिरु
सुत्तण आणादिद, न तस्म विसेसो । एदण पुन सुत्तण तेसि रासीणमदीदकस्सदो अवत-

कालाभी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशिषां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अवहृत नहीं होती हैं ॥ ९६ ॥

धृक्का—यदि पूर्वोक्त जीवराशिषोंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र
ध्याया है तो न अवहिरंति काहेण यह वचन निरर्थक है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि वचन वाचोंके साधन करनेके लिये
इस वचन दिया है । इस पद एक तो पूर्वोक्त राशिषोंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे
प्रत्येक राशिसे व्यव होने पर भी अनन्त अतीत काकसे ज्ञापन भी वे समाप्त नहीं होती हैं
इसका प्रतिपादन करता है । शेष कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशिषां क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त साक्रमण हैं ॥ ९७ ॥

धृक्का—अतीत काकको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करते पर वे अवस-
र्पिणियां और उत्सर्पिणियां अनन्तानन्त नहीं होती हैं, वेसी अनन्तावन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके ज्ञाप पूर्वोक्त चौदह जीवराशिषां अवहृत नहीं होती हैं इसप्रकार प्रतिपादन
करनेवाले इसके पहले सूत्रसे हम चौदह राशिषोंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकाकसे
बहुवचन ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समर्थ कहे गये इस सूत्रसे कीमता अनर्घ मर्य जाता
जाता है जिससे इस सूत्रका मर्म स्पष्ट होवे ।

समाधान—पूर्व अतीत सूत्रसे हम चौदह राशिषोंका अतीत काकसे बहुवचन ज्ञान
करा दिया किन्तु इसकी विशेषणका ज्ञान नहीं करपा । परंतु यह सूत्र इन राशिषोंका अतीत
काकसे अनन्तगुणावकाश : १ । आ-... स्वरीकरण करते हैं—पूर्व सूत्रमें

गुणच जाणाविज्जे । तं अहा—पुत्रविकारमुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पा, एत्थ पुण तद्दे
असंखेज्जगुणो ओगो चि बुत्तो । कप्पस्स गुणगाररासीदो षण्णलोगगुणगारो अर्भवतगुणा ।
इदो ! एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसेलसुवदियअप्पावहुगवयणादो जाभिज्जे । तम्हा
सफलो एस सुत्तारमो चि भेत्तव्यं ।

सपीहि एत्थ पुत्ररासी उप्पाज्ज्जे । तं जहा—पुत्रविकार्य-आउकार्य-तेउकप्पयवत्त
कार्य-तसकप्प अकार्य च, एदेसिं चेव पमान वग्ग वणप्फकार्यमाजिदं च सम्बजीव
रासिम्हि पक्खिचे वणप्फकार्यपुत्ररासी होदि । वणप्फकार्यवदिरिचससरासिमां सम्बजीव
रासिमोवदिय लद्धरूपेण मज्झिमसम्बजीवरासिं तम्हि चेव पक्खिच वणप्फकार्यपुत्ररासी
होदि चि बुत्त भवदि । एदेण पुत्ररासिणा सम्बजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फ
कार्यरासी आगच्छदि । वणप्फकार्यपुत्ररासिमसंखेज्जलोगेण सुद्धिदेयखट्ठं तम्हि च
पक्खिचे सुद्धमवणप्फकार्यपुत्ररासी होदि । एदेण पुत्रचअसंखलोगवणप्फकार्य
पुत्ररासिमाहातेण रूपाहिण वणप्फकार्यपुत्ररासिं गुणिदे भाववणप्फकार्यपुत्ररासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा लोक गुण्यमान
राशि कहा गया है । तथा कल्पकी गुणकार राशिसे अनलोकका गुणकार अनसंख्या है ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इस सूत्रके भवयवभूत सोडहप्रतिक अल्पवहुत्वके ध्वननसे यह जाना
जाता है ।

इच्छिये इस सूत्रका मारम सफळ है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

अब यहां भुवराशि उत्पन्न की जाती है । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है—पृथिवी
आयिक अन्नायिक वैजस्वायिक वायुआयिक जलआयिक और अकायिक इन जीवराशिओंके
प्रमाणको तथा वनस्पतिकायिक जीवराशिसे प्रमाणसे मात्रित उक्त राशिओंके प्रमाणके बर्गको
सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक भुवराशि होती है । वनस्पतिकायिक
जीवराशिसे छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिसे मात्रित करके जो उक्त भावे
उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिसे मात्रित करके जो उक्त भावे
उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक जीवराशि ही भुवराशि होती है
यह उक्त कल्पका तात्पर्य है । इस भुवराशिसे सर्व जीवराशिसे उपरिम बर्गके मात्रित करने
पर वनस्पतिकायिक जीवराशि आती है । वनस्पतिकायिक भुवराशिसे असंख्यात लोकप्रमाणसे
अहित करके जो एक खंड उद्भूत भावे उसे उसी वनस्पतिकायिक भुवराशिमें मिला देने
पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशि ही भुवराशि होती है । ऊपर जो असंख्यात लोकप्रमाण
वनस्पतिकायिक भुवराशिका भागद्वार कह भाये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे
वनस्पतिकायिक भुवराशिके गुणित करने पर बाह्य वनस्पतिकायिक भुवराशि होती है । पुनः

अणंताणताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि ण अवहिरति कालेण

॥ ९६ ॥

अदि पुष्परसीपमगतार्णतत्तावबोहणम गमिद सुत्त, तो ण अवहिरति कालेणपि वयस विरम्यपमिदि च, ण एम दोमा, उमयकज्जमाएणहृत्तादो । पुष्पगमीपमवर्ण-
गतार्ण च सेते वि वण अणतेण वि अदीदकालेण असमत्ति च पवुप्पादिदि ति । अवसर्म्म सुगर्म्म ।

स्वेत्तेण अणंताणंता ल्रेगा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसपिणि उरसपिणीपमाणेण करिमाणे ण अणताणंताअ आमपिणि उरसपिणीओ मवत्ति । एदाहि अणताणंताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि पुष्पुत्तचोदस-
अविरामीओ ण अवहिरति ति मवत्तेण पुष्पिउत्तसुत्तच एदाणं रासीपमगतार्णतत्तमदीद कालेण बहुत्त च जप्पाविदि । सपदि इमेण सुत्तच को अपुष्पो अरयो आणाविदा अगेवम्म सुत्तस्म पारेमो मफला हान्ज ? बुत्तदे- एदाण रासीपमदीदकालेण बहुत्तमत्त पुष्पिउत्त सुत्तच आणाविद, ण उस्म विमसा । एदण पुण सुत्तच तस्मिं रासीपमदीदकालेण अणत-

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके द्वारा अवहृत नहीं होती है ॥ ९६ ॥

श्रुंका—यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अवन्तावन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र व्यया है तो ण अवहिरति कालेण यह वचन निरर्थक है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि वयस कालोंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है । वक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अवन्तावन्तत्वका और दूसरे उक्तमेंसे प्रत्येक राशिके व्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है । होय कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशियां क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ ९७ ॥

श्रुंका—अतीत कालको अवसर्पिणी और उरसर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियों अनन्तावन्त नहीं होती हैं ऐसी अवन्तावन्त अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अवहृत नहीं होती हैं इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे हम चौदह राशियोंके अवन्तावन्तरका और अतीतकालसे बहुत्वका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कीलसा नपूर्व व्यय ज्ञाना जाता है, जिससे हम सूत्रका मर्म समझ लेते ?

समाधान—पूर्व अतीत सूत्रने हम चौदह राशियोंका अतीत कालसे बहुत्वका ज्ञान करा दिया किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र हम राशियोंका अतीत कालसे अनन्तगुणत्वका ज्ञान कराता है । अग्रे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— पूर्व सूत्रमें

एदस्स सुवस्स अरथा असई पम्बिदो चि ण वुबदे । असंयत्ता इदि सामण्य-
वपणण णवण्हमसउत्तार्ण गहणे मपथे अविवस्सिउदे अवणिय विवस्सियपरुवण्हमहृत्तर
सुत्त मणदि ।

असस्वेज्जासंस्वेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहूसो उत्ता चि ण उबदे । त च असंयत्तासंस्वेज्जयमणेय
वियप्पमिदि तस्स विममपरुवण्हमहृत्तरसुत्त मणदि—

स्वेत्तेण तमकाइय-तमकाइयपज्जत्तएस्स मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
अगुलस्स असस्वेज्जदिभागवग्गपडिभागेण अगुलस्स संस्वेज्जदिभाग-
वग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदण सुत्तेम जगपदराण जगमदीदा च उव्वरिम-इट्ठिमसंयत्तजवियप्पा अवणिदा
मवन्ति । 'अंगुलस्स असस्वज्जदिभागवग्गपडिभागण' इमण वपणेण जगपदरस्स अंतर्भूद

इस सूत्रका अथ प्रकार कह चुके हैं, इसलिये यहाँ नहीं कहते हैं । 'एवमे अंत
व्याप्त है इस सामान्य वचनके समेते भी हैं । प्रकारके असम्बन्धोंके प्रवचनके प्राप्त होने पर
अविश्रुत असम्बन्धोंका अपनयन करके विप्रक्षित असम्बन्धोंके प्रवचन करनेके छिये
भागका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा श्रमकायिक और श्रमकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासम्बन्ध
असंविनिर्णयों और उत्पत्तिविनिर्णयोंके द्वारा अपहृत होत है ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी अथ अनकार कहा जा चुका है इसलिये नहीं कहते हैं । यह
असम्बन्धतासम्बन्ध अनेक प्रकारका है इसलिये उसके विद्योक्तके प्रवचन करनेके छिये भागका
सूत्र कहते हैं—

ध्वजकी अपेक्षा श्रमकायिकोंमें मिथ्यादि जीवोंके द्वारा सूर्यगुलक असम्बन्धोंके
भागक वर्गरूप प्रतिभागस और श्रमकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादि जीवोंके द्वारा
सूर्यगुलक सम्बन्धोंके भागक वर्गरूप प्रतिभागमे जगपतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रमे जगपतर और जगभर्तामे ऊपर और नीचे असम्बन्धोंके विवरण अस्वीत
होते हैं । अंगुलक असम्बन्धोंके भागके वर्गरूप प्रतिभागस' इम वचनस जगपतरके अंतर्भूत

वेदिदिय-वेदिदिय चतुर्विदिय-मन्त्रिदियअपञ्चचरीर्षि एगद्धे कदे सप्तकयअपञ्चचा
हवन्ति । कचं तेसि पुरुषणा पचिदियअपञ्चचरुवणाए समाणा मषदि ? ण एस दोसो,
उमयत्थ पदरुत्तस्स असंखेज्जदिमाग मागहार पेक्खिऊण तहोवएसो । अत्यदो पुणो
तेसि विसेसो गमहरेहि वि ण वारिकदे ।

मागमाग वचइस्तामो । सम्बजीपरसि संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुम
मिगोदजीवपञ्चचा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुममिगोदअपञ्चचा
होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बाहरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस
अर्णत्तखंडे कए बहुखंडा बाहरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस अर्णत्तखंडे कए
बहुखंडा अकइया होति । सेसरासीदा असंखज्जसागपमाणमवषेऊण पुच ठविय पुणो
सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय पयखंडमवषेऊण त पि पुच ठविय पुणो सेसरासि
चचारि समपुंवे कल्लम अबभिएपखंड असंखेज्जलोगेण खंडिय तय बहुखंडे पदमपुमि
पक्खिये सुहुमबाउकइया होति । सेसगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तय बहुखंडा

संका—अब कि शीमित्र्य शीमित्र्य वातुमित्र्य और पंचेन्द्रिय अष्टधर्मात्तकीको
एक करने पर असंख्यिक अष्टधर्मात्त जीव होते हैं, तब फिर असंख्यिक अष्टधर्मात्त-
कीकी प्रकृति पंचेन्द्रिय अष्टधर्मात्तकी प्रकृतिसे समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, हमएक अर्थात् पंचेन्द्रिय अष्टधर्मात्तक
और असंख्यिक अष्टधर्मात्तक, इन दोनोंका प्रमाण देनेके लिये प्रतरंगुलके असंख्यातमें
भागकर भागहारको देकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थात् अपेक्षा जो उन दोनोंकी
प्रकृतिमें बिछोए है उसका गणन भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब भागमापको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अष्टधातु र्णव करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण सूक्ष्म मिगोद पर्याप्त जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात कई करने पर
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म मिगोद अष्टधर्मात्त जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात कई
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर विद्योत्त अष्टधर्मात्त जीव हैं । दोष एक भागके अनन्त
कई करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर मिगोद पर्याप्त जीव हैं । दोष एक भागके अनन्त
कई करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अक्षयिक जीव हैं । दोष एक भागप्रमाण राशिमेंसे
असंख्यात कोकप्रमाण राशिको निकालकर पूषण स्थापित करके पुनः दोष राशिको असंख्यात
कोकप्रमाणसे अक्षिप्त करके जो एक कई भागसे उसे निकालकर और उसे भी पूषण स्थापित करके
पुनः जो दोष बहुभाग राशि है उसके बार समान पूषण करके निकाले हुए पूषण स्थापित एक
कईको असंख्यात कोकप्रमाणसे अक्षिप्त करके उनमेंसे बहुभागको प्रथम पूषणमें मिला देने पर
सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । दोष एक कईको असंख्यात कोकप्रमाणसे अक्षिप्त

वेर्दिय-सेर्दिय-वर्दरिय-परिदिय-अपज्जचजीवे' एगड़े कदे तत्रकद्रपधपज्जचा इवन्ति । कवे तेसि परुवणा परिदियअपज्जचपरुवणा समाना भवदि ? न एस दोसो, उमयत्थ पदरगुलसस अर्सेखेअदिभाग भागहार पेक्खिऊण सहोपसादो । अत्यदो पुणो तेसि विसेसो गगहरदि पि ण वारिअदे ।

भागामाग वचइस्सामो । सम्मवीवरासि सखेअखेअ कए वहुखंडा सुहुम भिगोदवीवपज्जचा होति । सेसमसंखेअखेअ कए वहुखंडा सुहुमभिगोदअपज्जचा होति । सेसमसंखेअखेअ कए वहुखंडा वादरभिगोदअपज्जचा होति । सेस अजंतखेअ कए वहुखंडा वादरभिगोदअपज्जचा होति । सेस अजंतखेअ कए वहुखंडा अकट्या होति । सेसरासीदो अर्सेखेअलोपमाणमवनेऊण पुन ठविय पुणो सेसरासिमसंखेअलोपण खंडिय एयखंडमवनेऊण त पि पुन ठविय पुणो सेसरासि वचारि समुपे कळण अवभिइएयखंड अर्सेखेअलोपण खंडिय तस्य वहुखंडे पढमपुमि पक्खिणे सुहुमवाठकप्पया होति । सेसगखंडमसंखेअलोपण खंडिय तस्य वहुखंडा

— — —
 टीका—अब कि प्रीन्द्रिय जीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और एकेन्द्रिय इक्ष्म्यपर्याप्तको एकत्र करने पर इक्ष्म्यप्रमाण का व्यवस्था जीव होते हैं, तब फिर इक्ष्म्यप्रमाण इक्ष्म्यपर्याप्त को प्रकृष्टा एकेन्द्रिय इक्ष्म्यपर्याप्तोंकी प्रकृष्टाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि इक्ष्म्यप्रमाण एकेन्द्रिय इक्ष्म्यपर्याप्त और इक्ष्म्यप्रमाण इक्ष्म्यपर्याप्त, इन दोनोंका प्रम व छानेके लिये प्रत्यंगुलके अक्षेप्यातसे मागक मागहारके बेलकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थात् अपेक्षा जो इन दोनोंकी प्रकृष्टामें विशेष है उसका गणन भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब मागामागके बतलाते हैं—सर्व जीवप्राणिके अक्षेप्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण सूक्ष्म भिगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके अक्षेप्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण सूक्ष्म भिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके अक्षेप्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण वादर भिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके अक्षेप्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण वादर भिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके अक्षेप्यात बंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण अकट्या जीव हैं । शेष एक मागप्रमाण राशिमेंसे अक्षेप्यात इक्ष्म्यप्रमाण राशि को निकालकर पूयक स्थापित करके पुनः शेष राशिमेंसे अक्षेप्यात इक्ष्म्यप्रमाणसे बंडित करके जो एक बंड बाधे उसे निकालकर और उसे भी पूयक स्थापित करके पुनः जो शेष बहुमाग राशि है उसके चार समान पुंज करके निकाले हुए पूयक स्थापित एक बंडको अक्षेप्यात इक्ष्म्यप्रमाणसे बंडित करके उनमेंसे बहुमागोंको प्रथम पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म प्रायुष्प्राणिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक बंडको अक्षेप्यात इक्ष्म्यप्रमाणसे बंडित

विदियपुत्रे पक्खिचे सुद्धमआतकअया होति । सेसेयसंखमसंखेज्जलोएय खेडिय बहुसंडा तदियपुत्रे पक्खिचे सुद्धमपुडविकाअया होति । सेसेयसंखं पठत्थपुत्रे पक्खिचे सुद्धम-
तेउकअया होति । सग-सगगसिं संखेज्जपुंढे कये तत्थ बहुसंडा अप्पप्पया पन्त्रचा
होति । एयसंडं तेसिमपन्त्रचा' । पुण्णमवगिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जसंडे कय बहुसंडा
बादरवातअपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जसंडे कय बहुसंडा बादरआतकअयअपन्त्रचा
होति । सेसमसंखेज्जसंडे कय बहुसंडा बादरपुडविकाअपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जसंडे
कय बहुसंडा बादरभिगोदपदिहिद्धा अपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जसंडे कय बहुसंडा बादर-
वज्जफदिअयअपन्त्रचा होति । ससमसंखेज्जसंडे कय बहुसंडा बादरतेउकअयअपन्त्रचा
होति । सेसमसंखेज्जपुंढे कय बहुसंडा बादरवातकअयअपन्त्रचा होति । बादरआतकअय-
बादरपुडविकाअय-बादरभिगावपदिहिद्ध-बादरवज्जफदिअयवेगसरतिपन्त्रचाअमेवं वेव जेपन्नं ।
तदो सेसे असंखेज्जसंडे कय बहुसंडा तसकअयअपन्त्रचा' होति । सममसंखेज्जसंडं

करके इनमेंसे बहुमात्राको दूसरे पुंजमें मिश्र देने पर सूक्ष्म अण्वधिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः दोष एक मात्राको असंख्यात कोकप्रमाणसे चिह्नित करके इनमेंसे बहुमात्राको तीसरे पुंजमें मिश्र देने पर सूक्ष्म दृष्टिबीज्याधिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः दोष एक कोंडको चौथे पुंजमें मिश्र देने पर सूक्ष्म तेजस्कण्वधिक जीवोंका प्रमाण होता है । इन चारों पक्षियोंमेंसे अपनी अपनी पक्षिके संख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण अथवा अपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक मात्राप्रमाण उन उनके अपर्याप्त जीव होते हैं । पुनः पहले विच्छेद कर पुनश्च स्थापित की हुई असंख्यात कोकप्रमाण पक्षिके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर बायुकाधिक अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक मात्राके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर दृष्टिबीज्याधिक अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक मात्राके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर विद्योत्पत्तिष्ठित वनस्पति अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक मात्राके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर वनस्पतिकान्विक अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक मात्राके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर तेजस्कण्विक अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक मात्राके असंख्यात कोंड करने पर इनमेंसे बहुमात्राप्रमाण बाहर वायुकाधिक पर्याप्त जीव होते हैं । व्यगे बाहर अप्पानिब' बाहर दृष्टिबीज्याधिक बाहर विद्योत्पत्तिष्ठित और बाहर वनस्पति अत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका मात्राप्रमाण इसीप्रकार के जाना चाहिये । बाहर अत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक मात्रा दोष रहे उसके

कम् बहुसंज्ञा तस्यैव पञ्चमिच्छाद्वयी होति । सेते असंख्येज्जखंटे कम् बहुसंज्ञा असंख्यसम्माद्विणो होति । एवं ज्ञेयम् जाव सज्जासज्जा पि । सेत असंख्येज्ज खंटे कम् बहुसंज्ञा बादरेतेकप्यपञ्चचा होति । सेते संख्येज्जखंटे कम् बहुसंज्ञा पमचसंज्ञा होति । एवं ज्ञेयम् जाव अजागिकवलि पि ।

अप्याह गुणं विविहं, सत्थाय परत्थानं मव्वपरत्थानं चदि । सत्थाये पयद । सम्भत्येत्ता बादरपुडविकाप्यपञ्चचा । तेसिमपञ्चचा असंख्येज्जगुणा । को गुणगारो ? असंख्येजा ओगा । बादरपुडविकाप्या विसेसाहिया । सम्भत्येत्ता सुद्धमपुडविकाप्यपञ्चचा । तेसि पञ्चचा संख्येज्जगुणा । को गुणगारो ? संख्येज्जसमया । सुद्धमपुडविकाप्या विसेसाहिया । एव अत्तप्यपञ्चचा-बाठकप्याण च सरवाण वचम् । सम्भत्येत्ता बादरवणप्यपञ्चचा । तसिमपञ्चचा असंख्येज्जगुणा । को गुणगारो ? असंख्येजा ओगा । बादरवणप्यपञ्चचा विसेसाहिया । सम्भत्येत्ता सुद्धमवणप्यपञ्चचा । तेसि

असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वस्तुत्विक अपर्याप्त जीव होते हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वस्तुत्विक पर्याप्त मिथ्याद्वि जीव होते हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असत्यसम्यग्द्वि जीव होते हैं । इसीप्रकार संख्यासंख्याय प्रमाण माने तक भागाभागा कथन से जाना चाहिये । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाह्य तेजस्त्विक पर्याप्त जीव हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तचरित जीव हैं । इसीप्रकार अवोगिकेवर्धियोंके प्रमाण माने तक भागाभागा कथन करना चाहिये ।

अत्यवहुत्वं तीन प्रकारका है स्वस्थान अव्यवहुत्वं परस्थान अव्यवहुत्वं और सर्व परस्थान अव्यवहुत्वं । उनमेंसे स्वस्थान अव्यवहुत्वंमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— बाह्य पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बाह्य पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे अत्यवहुतागुण्ये हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । बाह्य पृथिवीकायिक जीव बाह्य पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुण्ये हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समग्र गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अत्यवहुत्वं तेजस्त्विक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अव्यवहुत्वं कहना चाहिये । बाह्य वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बाह्य वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बाह्य वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुण्ये हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । बाह्य वनस्पतिकायिक जीव बाह्य वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

पञ्चचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुद्रुमवक्त्रपञ्चकद्रया विसेसाहिया । मन्वत्पोषो तस्रकाह्यजवहासकालो । विक्खंमस्रं असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । द्धममसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्खंमस्रं । पठरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । सोगा अमस्रं जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं बादरवक्त्रपञ्चच-पथेयसरीरपञ्चच बादरपिगोदपदिद्विदपञ्चच-बादरपुदवि पञ्चच बादरआउपञ्चच-समकद्रयपञ्चचमिच्छद्रि-समकद्रयअपञ्चचत्ता च वत्तच । सत्त यादीन्ममोचसत्ताममंगो । एवं सत्ताम्प्यावहुग समच ।

परत्तामे पयइ । सन्वत्पोषा बादरपुदविकाद्रया । सुद्रुमपुदविकाद्रया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लता । सन्वत्पोषा बादरपुदविकाद्रया । सुद्रुमपुदविकाद्रया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लता । पुदविकाद्रया विसेसाहिया । सन्वत्पोषा बादरपुदविपञ्चचा । सत्सेव अपञ्चचा अमसंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लता । सुद्रुमपुदविकाद्रयअपञ्चचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लता ।

अपर्याप्तोत्ते संख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पति व्यापिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोत्ते विशेष अधिक है । वनस्पतिक जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोके है । जमीनी विष्वक्मस्रणी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जग ज्येष्ठी विष्वक्मस्रणीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । वनस्पतिक जीवोंका द्रव्य जगज्येष्ठीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्वक्मस्रणी गुणकार है । जगमठर वनस्पतिक जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । लोक जगमठरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगज्येष्ठी गुणकार है । इसीप्रकार बाहर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त प्रदेशेच्छारीर पर्याप्त बाहर नियोज्यतिष्ठित पर्याप्त, बाहर पृथिवीव्यापिक पर्याप्त बाहर अन्तर्गत पर्याप्त वनस्पतिक पर्याप्त मिथ्यावृद्धि भीर वनस्पतिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अपरवृत्त कहना चाहिये । कावमपर्याप्तोत्ते सासाधनप्रम्वन्नादि व्यापिका स्वस्थान अपरवृत्त सामान्य कस्थान अदरवृत्तके समान है । इसप्रकार कस्थान अदरवृत्त समाप्त वृत्त ।

अब परस्थानमें अपरवृत्त प्रकृत है— बाहर पृथिवीव्यापिक जीव सबसे स्तोके है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक जीव बाहर पृथिवीव्यापिकोत्ते असंख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । अपना बाहर पृथिवीव्यापिक जीव सबसे स्तोके है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक जीव इनसे असंख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीव्यापिक जीव सूक्ष्म पृथिवीव्यापिकोत्ते विशेष अधिक है । अपना बाहर पृथिवीव्यापिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोके है । बाहर पृथिवीव्यापिक अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक अपर्याप्त जीव बाहर पृथिवीव्यापिक अवस्थातोत्ते असंख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म

सुद्धमपुढविकाइयपञ्चचा संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो विपप्यो । जवरि पुढविकाइया
 विसेसाहिया । सम्भत्थोवा बादरपुढविकाइयपञ्चचा । तेसिमपञ्चचा । असंखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयपञ्चचा
 असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुद्धमपुढविकाइयपञ्चचा संखेज्ज
 गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुद्धमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेष छट्ठो
 विपप्यो । जवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सम्भत्थोवा बादरपुढविकाइयपञ्चचा ।
 तेसिमपञ्चचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढवि
 काइया विसेसाहिया । केपियमत्तेण ? बादरपुढविकाइयपञ्चचत्तेण । सुद्धमपुढवि
 काइयपञ्चचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयपञ्चचा
 विसेसाहिया । केपियमत्तेण ? बादरपुढविकाइयपञ्चचत्तेण । सुद्धमपुढविकाइयपञ्चचा
 संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपञ्चचा विसेसाहिया ।
 केपियमत्तेण ? बादरपुढविकाइयपञ्चचत्तेण । सुद्धमपुढविकाइया विसेसाहिया । केपिय

पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । इलीमशार
 बीया विकर है । इतनी विशेषता है कि पुष्पिणीकायिक जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक पर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक है । बादर पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पुष्पिणीकायिक
 अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर
 पुष्पिणीकायिक जीव बादर पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक
 अपर्याप्त जीव बादर पुष्पिणीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक
 गुणकार है । सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक
 पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां बिन्दु है । इतनी विशेषता है कि पुष्पिणी
 कायिक जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिकोंसे विशेष अधिक है । बादर पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव सबसे
 स्तोक हैं । बादर पुष्पिणीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
 असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पुष्पिणीकायिक जीव बादर पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । कितनेमात्रसे विशेष अधिक है ? बादर पुष्पिणीकायिक पर्याप्तोंका जितना
 प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पुष्पिणी
 कायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पुष्पिणीकायिक
 अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक
 है ? बादर पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है उतने प्रमाणसे अधिक है । सूक्ष्म
 पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव पुष्पिणीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
 संख्यात समय गुणकार है । पुष्पिणीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुष्पिणीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक है ? बादर पुष्पिणीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है

पञ्चचा संखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? संखेन्द्रा समया । सुकुमवर्णपञ्चकप्रया विसेसहिष्या ।
सम्बरयोरो तमकाप्रयप्रवहारकाला । विस्वमर्द्ध अर्सेखेन्द्रगुणा । सेटी अर्मखेन्द्रगुणा ।
को गुणगारो ? सगप्रवहारकालो । दग्गमर्मखेन्द्रगुण । को गुणगारो ? विस्वमर्द्ध ।
पदरमर्मखेन्द्रगुण । को गुणगारो ? सगप्रवहारकालो । सेणा अर्मखेन्द्रगुणो । को गुणगारो ?
सेटी । एवं बादरनपञ्चपञ्च-यथेयसरीरपञ्चच बादरपिगोत्पदिष्टिदपञ्चच-बादरपुदवि
पञ्चच-बादरआउपञ्चच-तमकाप्रयपञ्चचमिच्छाप्रि-तमकाप्रयप्रपञ्चचात्थ च वत्तम् । सप्त
वादीत्यमोपमत्यामर्गो । एव सत्याम्प्यात्तदुग समच ।

परत्वात्त पय । सम्बरयोला बादरपुदविकाप्रया । सुकुमपुदविकाप्रया अर्सेखेन्द्रगुणा ।
को गुणगारो ? अर्मखेन्द्रा सेणा । सम्बरयोला बादरपुदविकाप्रया । सुकुमपुदविकाप्रया
अर्सेखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अर्सेखेन्द्रा सेणा । पुदविकाप्रया विसेसहिष्या । सम्बरयोला
बादरपुदविपञ्चचा । तम्सेन अपञ्चचा अर्मखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अर्मखेन्द्रा
सेणा । सुकुमपुदविकाप्रयप्रपञ्चचा अर्सेखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अर्सेखेन्द्रा सेणा ।

अपर्याप्तोसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूत्रम वनस्पति
कायिक जीव सूत्रम वनस्पतिकायिक पर्याप्तोसे विरोध नायिक हैं । असंख्यात जीवोंका
अवधारकाक सत्रसे स्तोक है । वनस्पति विष्णुमसूची अवधारकाकससे असंख्यातगुणी है । अय
धेनी विष्णुमसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवधारकाक गुणकार है ।
असंख्यात जीवोंका प्रत्य अगमेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्णुम
सूची गुणकार है । अगमतर असंख्यात जीवोंके प्रत्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? अपना अवधारकाक गुणकार है । लोक अगमतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अगमेनी गुणकार है । इसीप्रकार बाहर वनस्पतिकायिक पर्याप्त अन्तरेकापर पर्याप्त बाहर
विरोधमतिष्ठित पर्याप्त बाहर पृथिवीकायिक पर्याप्त बाहर अन्तरेकापर पर्याप्त असंख्यात
पर्याप्त मिथ्याप्रति नीर असंख्यात अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अन्तरेकापर पर्याप्त बाह्ये ।
वायुमार्गमार्गे सासादनप्रम्याप्रति व्यापिका स्वस्थान अन्तरेकापर सामान्य अन्तरेकापर
समान है । इसप्रकार अन्तरेकापर अन्तरेकापर सामान्य गुणा ।

अथ परस्थानमे अन्तरेकापर प्रकृत है— बाहर पृथिवीकायिक जीव सत्रसे स्तोक हैं ।
सूत्रम पृथिवीकायिक जीव बाहर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
असंख्यात लोक गुणकार है । अथवा बाहर पृथिवीकायिक जीव सत्रसे स्तोक हैं । सूत्रम पृथिवी-
कायिक जीव वनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ।
पृथिवीकायिक जीव सूत्रम पृथिवीकायिकोंसे विरोध नायिक हैं । अथवा बाहर पृथिवीकायिक
पर्याप्त जीव सत्रसे स्तोक हैं । बाहर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव वनसे असंख्यातगुणे हैं । गुण-
कार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूत्रम पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बाहर पृथिवी
कायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूत्रम

पदमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । बादरपुढविकाइयअपज्जचाइयरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जचा विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयअपज्जचा विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाठ-तेठ वाउण परत्वारणं आभि-उत्तम वत्तवर्णं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहार काय गुणकार है । लोक जगत्तरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्सेवी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक है । इसीप्रकार अन्तर्यामिक तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अन्तरबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके पञ्चोत्तर कृत्रिमसे जेहोंके अन्तरबहुत्वके कमका वतमानेवाका कोष्ठक.

बा पु	बा पु	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प.
सू पु	सू पु	बा पु अप	बा पु अप	बा पु अप	बा पु अप.	बा पु अ.	बा पु अ.
	पु छा	सू पु अप	सू पु अप	बा पु	बा पु	बा पु	बा पु
		सू पु प	सू पु प	सू पु अप.	सू पु अप.	सू पु अ	सू पु अ
			पु सा	सू पु प	सू पु प	पु अ	पु अ
				सू पु	सू पु	सू पु प	सू पु प.
					पु सा.	पु प.	पु प
						सू पु	सू पु सा.

मेघेषु ? बादरपुटनिकाद्वयपञ्चसपरिहीणमुद्रुमपुटनिकाद्वयअपञ्चसमक्षय । एवं चेत् अद्रुमा नियप्पो । नवति पुटनिकाद्वया त्रिसेमाद्विया । एगुत्तरवट्टिकमण्य एविया चेत् अप्पात्तदुम- नियप्पा । अवहारकात्त-विकलमक्षर-मद्वि-पत्र-लोम कमन परप्रिय अप्पात्तदुग कीरमाण नि नियप्पा सम्मति चि ? न, ताण कमप्पसस्म काण्णामाना । पुटनिकाद्वयरातिस्म सगाहमेयपदुप्पायणह पुटनिकाद्वयरातिस्म कमण भदो कीरत्त । न च अवहारकात्तसि सु कमेय परमिन्भमायेसु पुटनिकाद्वयराती मिज्जे । सद्दो एविया चत्त एगुत्तरवट्टिनियप्पा होति चि हिद्द । अन्तिमनियप्प बच्चस्सामा । सम्परयोना बादरपुटनिकाद्वयपञ्चसअ- हारकात्ते । तस्सेव विकलमक्षर अर्सेजेज्जगुणा । का गुणगतो ? सगविकलमक्षर अर्सेजेज्जदिमागो । को पठिमागो ? मगअवहारकात्ता । अहवा सद्दीए अर्सेजेज्जदिमागो अर्सेजेज्जबाणि सदिपहमरगमुत्ताणि । को पठिमागो । अवहारकात्तगगो । सद्दी अर्सेजेज्ज गुणा । का गुणगतो ? अवहारकात्तो । दम्पमर्सेजेज्जगुण । का गुणगतो ? विकलमक्षर ।

उत्तरे प्रमाणसे अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । किन्तु प्रमाणसे अधिक है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उत्तरेसे अधिक है । इसप्रकार आठवाँ विकल्प है । इसकी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक है । एकोत्तर बुद्धिके कमसे अवागुण्यके उत्तरे ही विकल्प होने हैं ।

शुद्ध — अवहारकात्त विषमसूची जगमेणी जगप्रतर और लोक इत्यत्र कमसे अधिक करने अत्यवहुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं क्योंकि इन अवहारकात्त अधिकक कमप्रवेशका कोई कारण नहीं है । संप्रहृत्त पृथिवीकायिक पृथिके मेरोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक पृथिक कमसे भेद किया है । परंतु अवहारकात्ताविकके कमसे प्रविश्यमान होने पर पृथिवीकायिक पृथिके मेरोंके प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर बुद्धिके कमसे विकल्प उत्तरे ही होते हैं यह बात निश्चित हो जाती है ।

अथ अन्तिम विषयको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका अवहारकात्त सबसे उत्तम है । उन्हींकी विषमसूची अवहारकात्तसे अर्सेक्यात्त- गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विषमसूचीका अर्सेक्यात्तर्था माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? अपना अवहारकात्त प्रतिमाग है । अथवा जगमेणीका अर्सेक्यात्तर्था माग गुणकार है जो जगमेणीके अर्सेक्यात्त प्रथम वर्गमूकप्रमाण प्रतिमाग क्या है ? अपने अवहारकात्तका वर्ग प्रतिमाग है । जगमेणी विषमसूचीसे अर्सेक्यात्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकात्त गुणकार है । उन्हींका (बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) प्रथम जगमेणीसे अर्सेक्यात्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विषमसूची गुणकार है । जगप्रतर

पदमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 सेढी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तद्व्यमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? असंखेज्जालो ।
 बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 असंखेज्जालो । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जत्ता संखेज्ज
 गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुद्धमपुढवि
 काइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाउ-सेउ-वाउण परत्थाण भाषि-
 उच्च वत्तम् ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपत्ता मघहार
 काळ गुणकार है । झोक अगमत्तरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेयी गुणकार
 है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य झोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 असंख्यात झोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात झोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवी
 कायिक अपर्याप्तोंसे संप्र्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संप्र्यात समय गुणकार है । पृथिवी
 कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक
 जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवी-
 कायिकोंसे विशेष अधिक है । इसीप्रकार अण्कायिक तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके
 परत्थाण असंख्यातकाल समयकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृत्तिक्रमसे मेघोंके असंख्यातकालके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा पृ	बा पृ	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा. पृ प
सू पृ	सू पृ	बा पृ अप.	बा पृ अप.	बा पृ अप.	बा पृ अप.	बा पृ अ.	बा पृ अ.
	पृ सा	सू पृ अप	सू पृ अप.	बा पृ	बा. पृ	बा पृ	बा पृ
		सू पृ प	सू पृ प	सू पृ अप	सू पृ अप	सू. पृ अ	सू पृ अ
			पृ सा	सू पृ प	सू पृ प	पृ अ.	पृ अ.
				सू पृ	सू पृ	सू पृ प	सू पृ प
					पृ सा.	पृ प	पृ प
						सू पृ	सू पृ
							सू पृ सा.

सपदि वणपञ्चपरत्यागप्यप्यदुर्गं यच्चइत्तामा । सग्नयोना बादरवणपञ्चकदा ।
 सुदुमवणपञ्चकदा असंख्यजगुणा । एवं विदियं पि । नगरि वणपञ्चकदा विनेसाहिया ।
 अहवा सग्नयोना बादरवणपञ्चकदायपञ्चता । बादरवणपञ्चकदायपञ्चता असंख्यजगुणा ।
 को गुणगारो ? असंख्यजगुणा । सुदुमवणपञ्चकदायपञ्चता असंख्यजगुणा । का गुण-
 गारो ? असंख्यजगुणा । सुदुमवणपञ्चकदायपञ्चता संख्यजगुणा । को गुणगारो ? संख्य-
 समया । एवं अउत्यं पि । नगरि वणपञ्चकदा विनेसाहिया । अहवा सग्नयोना बादर-
 वणपञ्चपञ्चता । बादरवणपञ्चकदायपञ्चता असंख्यजगुणा । बादरवणपञ्चकदा विने-
 साहिया । केचियमेवेण ? बादरवणपञ्चकदायपञ्चतामेषण । सुदुमवणपञ्चकदायपञ्चता
 असंख्यजगुणा । को गुणगारो ? असंख्यजगुणा । सुदुमवणपञ्चकदायपञ्चता संख्यजगुणा ।
 सुदुमवणपञ्चकदा विनेसाहिया । केचियमेवेण ? सुदुमवणपञ्चकदायपञ्चतामेषण ।
 एवं छई पि । नगरि वणपञ्चकदा विनेसाहिया । अहवा सग्नयोना बादरवणपञ्च

अब वनस्पतिव्यधिक जीवोंके परत्याग अन्वयवृत्तको बतलाते हैं— बादर वनस्पति-
 नायिक जीव सबसे स्तोत्र है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।
 इसीप्रकार दूसरा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा बादर वनस्पतिनायिक पर्याप्त जीव
 सबसे स्तोत्र हैं । बादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव बादर
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार
 है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समान गुणकार है । इसीप्रकार जीवा विकल्प भी है । इतनी वि-
 शेष्टता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा
 बादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र हैं । बादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव
 सबसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिव्यधिक जीव बादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । किन्तुमेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंका अितना प्रमाण है
 तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिव्यधिकोंसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । किन्तुमेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंका अितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार
 छठवां विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिकोंसे
 विशेष अधिक हैं । अथवा बादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बादर

संपदि वणप्पपरत्तामप्पात्तुर्गं वत्तस्सामा । सम्भरत्तोवा वादरवणप्पक्कप्पा ।
 सुद्धमवणप्पक्कप्पा असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । नररि वणप्पक्कप्पा विसेसाहिया ।
 अहवा सम्भरत्तोवा वादरवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता । वादरवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुण-
 गारो ? असंखेज्जलोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखे-
 ज्जगुणा । एवं चट्ठं पि । नररि वणप्पक्कप्पा विसेसाहिया । अहवा सम्भरत्तोवा वादर-
 वणप्पक्कप्पायपज्जत्ता । वादरवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । वादरवणप्पक्कप्पा विसे-
 साहिया । केचियमेत्थेण ? वादरवणप्पक्कप्पायपज्जत्तमेत्थेण । सुद्धमवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता
 असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखज्जा लोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पायपज्जत्ता संखेज्जगुणा ।
 सुद्धमवणप्पक्कप्पा विसेसाहिया । केचियमेत्थेण ? सुद्धमवणप्पक्कप्पायपज्जत्तमेत्थेण ।
 एवं छट्ठं पि । नररि वणप्पक्कप्पा विसेसाहिया । अहवा सम्भरत्तोवा वादरवणप्पक्क-

अथ वनस्पतिव्यधिक जीवोंके परस्परान् अल्पवहुत्वको बतलाते हैं— वादर वनस्पति-
 व्यधिक जीव सबसे स्वीकृत है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।
 इसीप्रकार वृक्षों का विकल्प भी है । इसकी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक जीवोंसे विशेष व्यधिक हैं । अथवा, वादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव
 सबसे स्वीकृत है । वादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? असंख्यात जोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वादर
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात जोक गुणकार
 है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समग्र गुणकार है । इसीप्रकार बीया विकल्प भी है । इसकी विशेष-
 ता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष व्यधिक हैं । अथवा
 वादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्वीकृत हैं । वादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव
 उनसे असंख्यातगुणे हैं । वादर वनस्पतिव्यधिक जीव वादर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे विशेष
 व्यधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे व्यधिक हैं ? वादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है
 तन्मात्र विशेषसे व्यधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिव्यधिकोंसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात जोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष व्यधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे व्यधिक हैं ? सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे व्यधिक हैं । इसीप्रकार
 छट्ठवां विकल्प भी है । इसकी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिकोंसे
 विशेष व्यधिक हैं । अथवा वादर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्वीकृत हैं । वादर

छप्पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सप्पत्थोवा मादरणिगोदपज्जत्ता । मादरवणप्फ़्फ़काइयपज्जत्ता
 विसेसाहिया । मादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । मादरवणप्फ़्फ़काइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । मादरप्पिगोदा विसेसाहिया । मादरवणप्फ़्फ़काइया विसेसाहिया । सुद्धमवण
 प्फ़्फ़काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । निगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फ़्फ़काइय
 अपज्जत्ता विसेसाहिया । केचियमंसेण ? असंखेज्जसेगमेत्तपचेयसरीरमेत्तेम । उवरि
 चचारि पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सप्पत्थोवा मादरणिगोदपज्जत्ता । मादरवणप्फ़्फ़काइय
 पज्जत्ता विसेसाहिया । मादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । मादरवणप्फ़्फ़काइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । मादरणिगोदा विसेसाहिया । मादरवणप्फ़्फ़काइया विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़्फ़
 काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । निगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फ़्फ़काइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़्फ़काइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । निगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा बाह्यनिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बाह्य वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं । बाह्य
 निगोद अपर्याप्त जीव बाह्य वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बाह्य
 वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव बाह्यनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बाह्यनिगोद
 जीव बाह्य वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बाह्य वनस्पतिक्रायिक जीव
 बाह्यनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव
 बाह्य वनस्पतिक्रायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर बार स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बाह्यनिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बाह्य वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीव बाह्यनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । बाह्यनिगोद अपर्याप्त जीव बाह्य वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
 बाह्य वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव बाह्यनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बाह्यनिगोद
 जीव बाह्य वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बाह्य वनस्पतिक्रायिक जीव
 बाह्य निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव बाह्य वनस्पति
 क्रायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

संपदि एवेसु बभपदेसु निगोदपदाणि पविसिय पण्यारसपदअण्णत्तुर्गं वच
इस्सामो । सम्भत्तोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवण्णफ़्फ़काइयपञ्जत्ता विसंसाहिया ।
केचियमचेण ? बादरवण्णफ़्फ़काइयपचपसरिरपज्जत्तव पदरम्म असंखत्तदिमागमचण ।
उवरि अट्टपदाणि पुब्बं व । अइवा सम्भत्तोवा बादरणिगादपज्जत्ता । बादरवण्णफ़्फ़काइय
पज्जत्ता विसंसाहिया । बादरणिगादपज्जत्ता अमंखत्तगुणा । को गुणगारा ? असंखत्ता
सेणा । बादरवण्णफ़्फ़काइयपज्जत्ता विसंसाहिया । केचियमचण ? बादरवण्णफ़्फ़काइय-
पचपसरिरपज्जत्तवमसंखत्तज्जसेणामेचेण । उवरि सचपदाणि पुब्बं व । अइवा सम्भत्तोवा
बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवण्णफ़्फ़काइयपज्जत्ता विसंसाहिया । बादरणिगादपज्जत्ता ।
असंखत्तगुणा । बादरवण्णफ़्फ़काइयपज्जत्ता विमसाहिया । बादरणिगोद्दा विसंसाहिया ।
केचियमेचेण ? बादरवण्णफ़्फ़काइयपचपसरिरपज्जत्तवमसंखत्तज्जसेणामेचेण । बादर
वण्णफ़्फ़काइय विसंसाहिया । केचियमचण ? बादरवण्णफ़्फ़काइयपचपसरिरमेचेण । उवरि

अथ इम पूर्वोक्तौ स्थानौमि नियोज्यबन्धी छद्म स्थानौका प्रवेश कराने पन्त्र
स्थानौमि अस्वबहुवचनो वतस्यते है— बाह्वरिगोद् पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बाह्व
वचस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव बाह्वरिगोद् पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितने अधिक है ?
बाह्व वचस्पतिक्रयिक पर्याप्त जो कि जगत्प्रत्येक वसन्त्यातर्गं माय है, तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । इसके ऊपर मात्र स्थान पहलेके समान है । अथवा बाह्वरिगोद् पर्याप्त जीव
सबसे स्तोत्र है । बाह्व वचस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक है । बाह्वरिगोद्
अपर्याप्त जीव बाह्व वचस्पतिक्रयिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? उसे
क्यात जोक गुणकार है । बाह्व वचस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव बाह्वरिगोद् अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बाह्व वचस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त जो कि असंख्यात जोकप्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर सत्त
स्थान पहलेके समान है । अथवा बाह्वरिगोद् पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बाह्व वच
स्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक है । बाह्वरिगोद् अपर्याप्त जीव बाह्व वच
स्पतिक्रयिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे है । बाह्व वचस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव बाह्वरिगोद्
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । बाह्वरिगोद् जीव बाह्व वचस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बाह्व वचस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बाह्वरिगोद् पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । बाह्व वचस्पतिक्रयिक जीव बाह्वरिगोद् जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र
विशेषसे अधिक है ? बाह्व वचस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

छप्पदाणि पुञ्च व । अहवा सम्भयोवा बादरणिगोदपञ्जचा । बादरवणप्फक्काइयपञ्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदअपञ्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फक्काइयअपञ्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फक्काइया विसेसाहिया । सुहुमवण
 प्फक्काइयअपञ्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपञ्जचा विसेसाहिया । वणप्फक्काइय
 अपञ्जचा विसेसाहिया । केचियमेत्थेण ? असंखेज्जलेगमेत्थपत्थेयसरीरमेत्थेण । उवरि
 चत्तारि पदाणि पुञ्च व । अहवा सम्भयोवा बादरणिगोदपञ्जचा । बादरवणप्फक्काइय
 पञ्जचा विसेसाहिया । बादरणिगोदअपञ्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फक्काइयअपञ्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फक्काइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फक्का
 इयअपञ्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपञ्जचा विसेसाहिया । वणप्फक्काइयअपञ्जचा
 विसेसाहिया । सुहुमवणप्फक्काइयअपञ्जचा संखेज्जगुणा । णिगोदपञ्जचा विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेसे समान हैं । अथवा बादरणिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं । बादर
 निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर
 वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद
 जीव बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक जीव
 बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव
 बादर वनस्पतिकार्यिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेसे समान हैं । अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
 बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद
 जीव बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक जीव
 बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति
 कार्यिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

कसियममेण ? बादरणिगोदपञ्चमेण । वणप्फइकाइयपञ्चचा विसेसाहिया । केसिय
मधण ? पत्तयसरीरपञ्चमेण । सुद्धमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया
विसेसाहिया । अइथा सप्पधाथा बादरणिगोदपञ्चचा । बादरवणप्फइकाइयपञ्चचा विसे
साहिया । बादरणिगादअपञ्चचा अमउज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयपञ्चचा विसेसाहिया ।
बादरणिगादा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फइकाइय
पञ्चचा अमउज्जगुणा । विगादअपञ्चचा विसेसाहिया । वणप्फइकाइयपञ्चचा विसे
साहिया । सुद्धमवणप्फइकाइयपञ्चचा संखेज्जगुणा । विगादपञ्चचा विसेसाहिया ।
वणप्फइकाइयपञ्चचा विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । निगोदा विसे
साहिया । कसियमधण ? बादरणिगोदमेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केसियममेण ?
पत्तयसरीरवणप्फइकाइयमेण ।

[illegible]

संपदि बादरवमण्णकाइयपत्तेयसरीरपञ्चत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपञ्चत्त-बादरवण-
ण्णकाइयपत्तेयसरीरमपञ्चत्त-बादरवणण्णकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदमपञ्चत्त-
बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुब्बिछप्पण्णारसपदेसु पक्खेभिय एक्कासीसपद
अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सप्पत्थोर्बं बादरवमण्णकाइयपत्तेयसरीर-
पञ्चत्तदब्बं । बादरणिगोदपञ्चत्तदब्बमर्णत्तगुर्बं । को गुणमारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदि

पूर्वोक्त बी राशिओंमें निगोदकी छह राशिओं मेंका देने पर अल्पबहुत्वके

क्रमको बतलावेवाका कोष्ठक

बा नि प.	बा. नि. प	बा नि प	बा नि प	बा नि प	बा. नि प
बा व प	बा. व प	बा व प	बा व प	बा व प	बा व प
बा व. झ.	बा. नि म	बा नि म	बा नि म	बा नि म.	बा. नि म.
बा व	बा व झ.	बा व झ	बा व झ	बा व झ	बा व झ
सू व झ.	बा. व	बा नि	बा नि	बा नि	बा नि
व झ.	सू व झ.	झ झ.	झ झ.	बा व	बा व
सू व. प	व झ.	सू व झ.	सू व झ	सू व झ	सू व झ
व प	सू व. प	व झ.	नि म	नि म.	नि म.
सू व	व प	सू व प	व झ.	व झ	व झ
व	सू. व	व प	सू व. प	सू व प	सू व प
	व.	सू व	व. प	नि प	नि. प
		व	सू व	व प	व प
			व.	सू. व	सू. व.
				व	नि
					व

अथ बादर वमण्णस्यतिक्कायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त
बादर वमण्णस्यतिक्कायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त बादर वमण्णस्यतिक्कायिक प्रत्येकशरीर, बादर
निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोदप्रतिष्ठित इस छह स्थानोंको पूर्वोक्त पञ्चद्व स्थानोंमें
मिखाकर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— बादर वमण्णस्य-
तिक्कायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका ग्रन्थ सबसे स्तोत्र है । बादर निगोद पर्याप्तोंका ग्रन्थ उससे
अनन्तगुण्य है । पुण्यकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातकी मग्न शुभ्यकार है । प्रतिमाग

कचित्पमचय ? बादरणिगोदपञ्चमचय । वयण्फरुकाद्यपञ्चचा विमसाहिया । केचित्पमचय ? पचपमरतिपञ्चमचय । सुहुमवण्फरुकाद्या विसेसाहिया । वयण्फरुकाद्या विमसाहिया । अहवा सम्बधावा बादरणिगोदपञ्चचा । बादरवण्फरुकाद्यपञ्चचा विसेसाहिया । बादरणिगोदपञ्चचा अर्मखञ्जगुणा । बादरवण्फरुकाद्यपञ्चचा विसेसाहिया । बादरणिगोद विमसाहिया । बादरवण्फरुकाद्या विसेसाहिया । सुहुमवण्फरुकाद्यपञ्चचा अर्मखञ्जगुणा । विगोदपञ्चचा विसेसाहिया । वयण्फरुकाद्यपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवण्फरुकाद्यपञ्चचा संखेञ्जगुणा । विगोदपञ्चचा विसेसाहिया । वयण्फरुकाद्यपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवण्फरुकाद्या विसेसाहिया । विगोदा विसेसाहिया । कचित्पमचय ? बादरणिगोदमचय । वयण्फरुकाद्या विसेसाहिया । कचित्पमचय ? पचपमरतिपञ्चमचय ।

अधिक है ? बादर निगोद पद्यालोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वनस्पतिव्यापिक पर्वाण जीव निगोद पद्यालोके विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रायेच्छरीर पद्यालोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक जीव वनस्पतिव्यापिक पद्यालोके विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिकोसे विशेष अधिक है । अवयव, बादर निगोद पर्वाण जीव लक्ष्मणे लोको है । बादर वनस्पतिव्यापिक पर्वाण जीव लक्ष्मणे विशेष अधिक है । बादर निगोद अवयव जीव बादर वनस्पतिव्यापिक पर्वाणोने अक्षयवानगुण है । बादर वनस्पतिव्यापिक अवयव जीव बादर विशेष अवयवोने विशेष अधिक है । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिव्यापिक अवयवोने विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिव्यापिक जीव बादर निगोदोसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक अवयव जीव बादर वनस्पतिव्यापिकोसे अक्षयवानगुण है । निगोद अवयव जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक अवयवोसे विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक अवयव जीव निगोद अवयवोसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पद्याण जीव वनस्पतिव्यापिक अवयवोसे अक्षयवानगुण है । निगोद पर्वाण जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पद्यालोके विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक पर्वाण जीव निगोद पर्वाणोने विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक जीव वनस्पतिव्यापिक पद्यालोने विशेष अधिक है । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिकोसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोदोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वनस्पतिव्यापिक जीव निगोद जीवोने विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रायेच्छरीर वनस्पतिव्यापिकोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।

काइयपचेपसरीरअपज्जचदम्भमसंखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरा विसेसाहिया ।
 बादरभिगोदपदिट्ठिदअपज्जचदम्भमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? असंखज्जा लोगा । उवरि
 पण्णारम पदाणि पुब्ब व । अइवा सम्भत्योर्ष बादरनणप्फइकाइयपचेपसरीरपज्जचदम्भ ।
 बादरभिगोदपदिट्ठिदअपज्जचदम्भमसंखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरअपज्जचदम्भ
 मसंखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरा विसेसाहिया । बादरभिगोदपदिट्ठिदअपज्जचदम्भ
 असंखेज्जगुण । बादरभिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । कप्पियमेत्तेण ? बादरभिगोदपदिट्ठिद
 पज्जचमत्तेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुब्ब व ।

अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रमिक
 प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
 बाहर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात कोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
 समान हैं । अथवा, बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बाहर
 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य सबसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर
 अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पति
 क्रमिक प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर जीवसे
 असंख्यातगुणा है । बाहर निगोदप्रतिष्ठित जीव बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोक्त जितना प्रमाण
 है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक नीर आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
 ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें नीर तीसरे आदिसे नीचे आदिमें
 क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अस्पष्टत्वकी विशेषता नहीं बतझरती है तो भी
 इनसे अस्पष्टत्वका कम अन्तर ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा
 सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नी मेर्चोकी मुख्यतासे दूसरेमें उन नी मेर्चोंमें ३ और
 मिठाकर पन्द्रह मेर्चोकी मुख्यतासे नीर निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपयुक्त पन्द्रह मेर्चोंमें छह मेर
 चों और मिठाकर इकौस मेर्चोकी मुख्यतासे अस्पष्टत्व बतझाया है । जहां 'ऊपर छत स्थान पह
 लेके समान है पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि
 प्रारम्भके जितने स्थानोंमें विशेषता कहनी थी वह कह बी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि
 स्थान पहलेके कोई हुए जोड़ लेना चाहिये ।

मागो । क्व पडिमागो ? पदरस्म असंखेअदिमागमेत्तपत्तयसरीरपञ्चचद्वयं पडिमागो ।
 उवरि चोदसपदाणि पुञ्च व । अहवा मच्च चार्थं वादरवणप्फइकइयपत्तेयसरीरपञ्चचद्वये ।
 वादरणिगोदपदिट्ठिपञ्चचद्वयमसंखेअजगुणं । को गुणगारो ? आपत्तिमाए असंखअदि
 मागो । उवरि पण्णास पदाणि पुञ्च व । अहवा सम्यत्थाव वादरवणप्फइकइयपत्तय-
 सरिपञ्चचद्वयं । वादरणिगोदपदिट्ठिपञ्चचद्वयमसंखेअजगुणं । वादरवणप्फइकइयपत्तय-
 सरिअपञ्चचद्वयमसंखेअजगुणं । को गुणगारो ? असंखज्जा लोमा । क्व पडिमागो ? पदरस्म
 असंखअदिमागमेत्तवादरणिगोदपदिट्ठिपञ्चचद्वयपडिमागो । वादरवणप्फइकइयपत्तेयसरीरा
 विसादिया । कत्तिपमेत्तेण । पत्तेयसरीरपञ्चचमत्तेण । वादरणिगोदपञ्चचा अर्हतगुणा ।
 को गुणगारो ? सगरासिस्म असंखेअदिमागो । को पडिमागो । असंख ज्ञानगमेत्तपत्तेय-
 सरीरपञ्चचद्वयपडिमागो । उवरि चोदस पदाणि पुञ्च व । अहवा सम्यत्थाव वादरवणप्फइ-
 कइयपत्तेयसरीरपञ्चचद्वयं । वादरणिगोदपदिट्ठिपञ्चचद्वयमसंखेअजगुणं । वादरवणप्फइ-

क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौरह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अत्यन्तिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसके ऊपर फरह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात स्तोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है । वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर जीव वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर निगोद पर्याप्त जीव वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात स्तोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौरह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिआधिक प्रत्येकशरीर

१ क-अम्लोः अहवेत्ता अण्ड । को पडिमागो ? पदरस्म असंखेअदिमागमेत्तपत्तयसरीरपञ्चचद्वयं पडिमागो ।
 उवरि चोदसपदाणि पुञ्च व । अहवा मच्च चार्थं वादरवणप्फइकइयपत्तेयसरीरपञ्चचद्वये ।

२ क-अम्लोः को गुणगारो ... द्रव्यपडिमागो इति वाद वदित ।

काश्यपचेयसरीरअपञ्चचदम्बमसंखेजगुण । बादरवणफडकाश्यपचेयसरीरा विसेसाहिया ।
बादरणिगादपदिष्टिदअपञ्चचदम्बमसंखेजगुण । को गुणगारो ? असंखेजा ठेगा । उवरि
पण्णारस पदाणि पुष्पं व । अहवा सञ्चत्थोर्न बादरवणफडकाश्यपचेयसरीरअपञ्चचदम्ब ।
बादरणिगोदपदिष्टिदअपञ्चचदम्बमसंखेजगुण । बादरवणफडकाश्यपचेयसरीरअपञ्चचदम्बम
संखेजगुण । बादरवणफडकाश्यपचेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिष्टिदअपञ्चचदम्ब
असंखेजगुण । बादरणिगोदपदिष्टिदा विसेसाहिया । केचियमेत्थेण ? बादरणिगादपदिष्टिद
अपञ्चचमेत्थेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुष्पं व ।

अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रयिक
प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
बाहर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
समान हैं । अथवा बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बाहर
निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य सबसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पति
क्रयिक प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
अधिक हैं । बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे
असंख्यातगुणा है । बाहर निगोदप्रतिष्ठित जीव बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका कितना प्रमाण
है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे बीये आदिमें
क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है तो भी
इनसे अल्पबहुत्वका कम अन्तर ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूखसे किया जा
सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें भी मेरोंकी मुख्यतासे दूसरेमें उन नौ मेरोंमें ९ और
मिष्टाकर पन्द्रह मेरोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें वपर्युक्त पन्द्रह मेरोंमें छह मेर
और मिष्टाकर इतीस मेरोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहाँ 'ऊपर सात स्थान पह
लेके समान हैं' पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि
प्रारंभके कितने स्थानोंमें विशेषता कहीं भी यह कह दी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि
स्थान पहलेके छेडे हुए जोड़ देना चाहिये ।

संपत्ति बाहर निगोदपदिष्टिदप अथ अनहारकालो यादरबणप्लङ्गद्वयपत्तेयसरीरपञ्च-
अवहारकालो सस्तेव विस्तरमर्द्ध बादरविगोदपदिष्टिदपञ्चविस्तरमर्द्ध सेही अगपद्वत्तमप
इदि सच पदाणि पद्मावीसपदेसु पक्षित्विय अङ्गनीसपदप्याबहुग वचइत्तमा ।

पूर्वोक्त पञ्चह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इस्कीस स्थानोंमें अक्षरबहुत्वके
कमका काम करनेवाला काष्ठक-

वा. व. म. प.	वा. व. म. प.	वा. व. म. प.	वा. व. म. प.	वा. व. म. प.
वा. नि. प.	वा. नि. म्पति. प.	वा. नि. म्पति. प.	वा. नि. म्पति. प.	वा. नि. म्पति. प.
वा. व. प.	वा. नि. प.	वा. व. म. व.	वा. व. म. व.	वा. व. म. व.
वा. नि. म्.	वा. व. प.	वा. व. म.	वा. व. म.	वा. व. म.
वा. व. म्.	वा. नि. म्.	वा. नि. प.	वा. नि. म्पति. म्.	वा. नि. म्पति. म्.
वा. नि.	वा. व. म्.	वा. व. प.	वा. नि. प.	वा. नि. म्पति.
वा. प.	वा. नि.	वा. नि. म्.	वा. व. प.	वा. नि. प.
सु. व. म्.	वा. व.	वा. व. म्.	वा. नि. म्.	वा. व. प.
नि. म्.	सु. व. म्.	वा. नि.	वा. व. म्.	वा. नि. म्.
म. म्.	नि. म्.	वा. व.	वा. नि.	वा. व. म्.
सु. व. प.	व. म्.	सु. व. म्.	वा. व.	वा. नि.
नि. प.	सु. म्. प.	नि. म्.	सु. व. म्.	वा. व.
व. प.	नि. प.	व. म्.	नि. म्.	सु. व. म्.
सु. व. नि.	व. प.	सु. व. प.	व. म्.	नि. म्.
व.	सु. व. नि.	नि. प.	सु. व. प.	म. म्.
	व.	व. प.	नि. प.	सु. म्. प.
		सु. व.	व. प.	नि. प.
		नि. व.	नि. व.	म. प.
		व.	नि. व.	सु. व.
			नि. व.	नि. व.

जब बाहर निगोदपदिष्टित पर्याप्त जीवोंका व्यवहारकाक बाहर बनस्यतिव्यापिक
प्रत्येकछापीर पर्याप्तोका अवहारकाक इस्कीची विस्तरमर्द्धी बाहर निगोदपदिष्टित पर्याप्तोकी
विस्तरमर्द्धी, अवधारणी अगपतर भीर जोक इन सात स्थानोंको पूर्वोक्त इस्कीस स्थानोंमें
मिठाकर मर्द्धास स्थानोंमें अक्षरबहुत्वको बतकाते हैं— यहाँ ये सातों स्थान एकसाथ मिठा

पटाणि सच वि पटाणि एकवारण पविसिद्धाणि । कुट्टो ? कमप्येवकारणा-
मात्रा । रासिसंग्रहमेदपदुप्यायणं कमेण पवेसो कीरेद । ण च एत्थ रासिमेदो
अत्थि, पचमिन्द्रमात्रमेदपज्जत्तत्तो । सम्बरत्थेवो बादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तअवहार
फालो । बादरवणप्फक्कइयपचेयसरीरपज्जत्तअवहारफालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
आवलिपाए असंखेज्जदिमागो । तस्सेव विच्छेदमार्गं असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदि
द्विदपज्जत्तविकसममार्गं असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलिपाए असंखेज्जदिमागो ।
सेडी असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फक्कइयपचेयसरीरपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुण । बादरणिगोद
पदिद्विदपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? आवलिपाए असंखेज्जदिमागो । पदरम
संखेज्जगुण । को गुणगारो ? बादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तअवहारफालो । ओगो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? सेडी । बादरवणप्फक्कइयपचेयसरीरपज्जत्तद्वम असंखेज्जगुण । को
गुणगारो ? असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फक्कइयपचेयसरीरपज्जत्तमेव । बादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्त
असं
खेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तमेव ।

देना चाहिये । क्योंकि, उनके कमसे मिथानेका कोई कारण नहीं है । संप्रत्यक्ष पश्चिमीके मेरुके
प्रतिपादन करनेके लिये कयसे राशि मिथार् जाती है । परंतु यहां पर तो पश्चिमें कोई मेरु
पाया नहीं जाता है क्योंकि मिथमान पश्चिमीमें मिलने मेरु प्राप्त थे कतने मेरु किये जा चुके
हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाळ सबसे स्तोक है । बादर वनस्पतिक्रायिक
प्रत्येककारीर पर्याप्तोंका अवहारकाळ पूर्वोक्त अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? मावलीका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है । उन्हीं बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर
पर्याप्तोंकी विच्छेदमार्गी अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी
विच्छेदमार्गी पूर्वोक्त विच्छेदमार्गीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? मावलीका
असंख्यातर्वा भाग गुणकार है । जगमेणी कथ विच्छेदमार्गीसे असंख्यातगुणी है । बादर
वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगमेणीसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोद
प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । गुणकार क्या है ? मावलीका असंख्यातर्वा भाग गुणकार है । अगप्रतर बादर निगोद
प्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्तोंका अवहारकाळ गुणकार है । कोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगमेणी गुणकार है । बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर अपर्याप्तोंका द्रव्य कोकसे असंख्यात
गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येक
कारीर जीव बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । मिलनेमात्र
विशेषसे अधिक है । उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर पर्याप्तोंका
मिलना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त जीव बादर
वनस्पतिक्रायिक प्रत्येककारीर जीवोंसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? असंख्यात कोक

सरीरअपञ्चममत्तम । सुह्रमवण्फदिक्काइयपञ्चचा संखेज्जगुणा । को गुभगारो ! संखेज्जा
समपा । भिगोदपञ्चचा विससाहिपा । कचियमत्तेण ? बादरभिगोदपञ्चमत्तेण । वणप्फइ
काइयपञ्चचा विससाहिपा । कचियमत्तेण ? बादरवणप्फइयपचैयसरीरपञ्चमत्तेण ।
सुह्रमवण्फदिक्काइया विसेसाहिपा । केवियमत्तेण ? बादरवणप्फदिपञ्चैणसुह्रमवण
प्फदिअपञ्चमत्तेण । भिगोद विसेसाहिपा । कचियमत्तेण ? बादरभिगादमेत्तेण ।
वणप्फइकाइया विसेसाहिपा । कचियमत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपचैयसरीरमत्तम । एव
वणप्फइकाइयपरत्याणप्पावहुग समत्त । तसकाइयपरत्याणस्स पध्दिदियपरत्ताजर्मगो ।
एव परत्याणप्पावहुग समत्त ।

सुव्वपरत्याणप्पावहुग वच्चइस्सामो । सुव्वत्थोवा अज्जागिकवली । चत्तारि उव्व
सामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि सुव्वगा मंखेज्जगुणा । सज्जागिकवली मंखेज्जगुणा ।
अपमत्तसंज्जा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जा संखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तारसीहिंते बादरवाउ
पञ्चचअवहारकात्ते किमहिओ उम्मा चि ण अविज्जदे । कुदो ? सपहि उव्वएसामावदो ।

वन्नस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव वन्नस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोत्ते संख्यातगुणे हैं । गुणकार
पया है ? सख्यात समय गुणकार है । निगोइ पर्याप्त जीव सूक्ष्म वन्नस्पतिक्रयिक पर्याप्तोत्ते
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर निगोइ पर्याप्तोत्त जितना प्रमाण
है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वन्नस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव निगोइ पर्याप्तोत्ते विशेष
अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर वन्नस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोत्त
जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वन्नस्पतिक्रयिक जीव वन्नस्पतिक्रयिक
पर्याप्तोत्ते विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर वन्नस्पति पर्याप्तोत्ते
प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म वन्नस्पति अपर्याप्तोत्त जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।
निगोइ जीव सूक्ष्म वन्नस्पतिक्रयिक जीवोत्ते विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ?
बाहर निगोइ जीवोत्त जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वन्नस्पतिक्रयिक जीव
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर वन्नस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
जीवोत्त जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसप्रकार वन्नस्पतिक्रयिक जीवोत्त
पररधान अस्यवहुव समाप्त हुआ । प्रसक्तयिक जीवोत्त पररधान अस्यवहुव वैवेगिन्त्रय
जीवोत्ते पररधान अस्यवहुवसे समाप्त है । इसप्रकार पररधान अस्यवहुव समाप्त हुआ ।

अव सर्वपरस्यान अस्यवहुवको बतसात हैं—अयोगिकैवली जीव सबसे योग हैं । बाह्य
गुणस्वान्तोके उपशामक अयोगिकैवलीसे सख्यातगुण हैं । बाह्य गुणस्वान्तोके सबक
उपशामकोसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकैवली जीव सबकोसे संख्यातगुणे हैं । अममत्तसपत्त
जीव सयोगिकैवलीसे संख्यातगुणे हैं । ममत्तसपत्त जीव अममत्तसपत्तोसे संख्यातगुणे हैं ।
ममत्तसपत्त और अममत्तसपत्त जीवराशिसे बाहर वायुकायिक पर्याप्त जीवोत्त अवहारकाउ
क्या अधिक है या कम यह नहीं जाना जाता है क्योंकि, इस समय हम प्रत्यक्ष

कचित्पयमत्तेषु ? वादरणिगादपदिष्टिदपञ्चमत्तेषु । वादरणिगादपञ्चचा अर्गत्तुगा । का
 गुणगारा ? सगराविस्त अर्गत्तेजदिमागा । तस्म का पदिमागा ? वादरणिगादपदिष्टि
 पदिमागा । वादरवणपञ्चकादपञ्चचा विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ? वादरवणपञ्चकादप
 पत्तेयसरीरपञ्चमत्तेषु । वादरणिगादपञ्चचा अर्गत्तेजगुणा । का गुणगारा ? अर्गत्तुगा
 सगा । वादरवणपञ्चकादपञ्चचा विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ? वादरवणपञ्चकादप
 पत्तेयसरीरपञ्चमत्तेषु । वादरणिगाद विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ? पत्तेयसरी
 रपञ्चमत्तेषु वादरणिगादपञ्चमत्तेषु । वादरवणपञ्चकाद विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ?
 वादरवणपञ्चकादपत्तेयसरीरपञ्चमत्तेषु । सुदुमवणपञ्चकादपञ्चचा अर्गत्तेजगुणा । को गुणगारा ?
 अर्गत्तेज सगा । विगादपञ्चचा विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ? वादरणिगादपञ्चम
 त्तेषु । वणपञ्चकादपञ्चचा विमसाहिया । कचित्पयमत्तेषु ? वादरवणपञ्चकादपञ्चम

गुणकार है । वादर निगोदप्रतिष्ठित जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है ।
 कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र
 विशेषसे अधिक है । वादर निगोद पर्याप्त जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अन्तर्गतगुणे है ।
 गुणकार क्या है ? अपनी राशिका अन्तर्गतात्ता माग गुणकार है । वस्तु प्रमाण क्या है ?
 वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिमाण है । वादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव
 वादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर
 वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।
 वादर निगोद अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे अन्तर्गतगुणे है ।
 गुणकार क्या है ? अन्तर्गतात्ता लोक गुणकार है । वादर वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीव
 वादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है ? वादर वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र
 विशेषसे अधिक है । वादर निगोद जीव वादर वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष
 अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून वादर
 निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर वनस्पतिव्यापिक
 जीव वादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर
 वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । तस्म
 वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिव्यापिक जीवोंसे अन्तर्गतगुणे है । गुणकार
 क्या है ? अन्तर्गतात्ता लोक गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सुदुम वनस्पतिव्यापिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोद अपर्याप्त
 जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर निगोद अपर्याप्त
 निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर वनस्पति
 व्यापिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । तस्म

विक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा । तसकाद्यप्रपञ्चचविक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा । तमकाद्यप्र
विक्रममर्द्ध विसाहिया । बादरनण्णककाद्यप्रपञ्चसरीरपञ्चचविक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा ।
बादरभिगोदपदिद्विदपञ्चचविक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा । बादरपुन्रविकाद्यप्रपञ्चचविक्रमम
र्द्ध अर्धसंख्यगुणा । बादरआउककाद्यप्रपञ्चचविक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा । बादर
आउककाद्यप्रपञ्चचविक्रममर्द्ध अर्धसंख्यगुणा । सेठी संख्यगुणा । तसकाद्यप्र
पञ्चचद्वयमसंख्यगुणं । तसकाद्यप्रपञ्चचद्वयमसंख्यगुणं । तसकाद्यप्रद्वय विसे
साहिय । बादरवण्णककाद्यप्रपञ्चसरीरपञ्चचद्वयमसंख्यगुण । बादरभिगोदपदि
द्विदपञ्चचद्वयमसंख्यगुणं । (बादरपुन्रविकाद्यप्रपञ्चचद्वयमसंख्यगुण ।) बादरआउ
पञ्चचद्वयमसंख्यगुणं । पदरमसंख्यगुणं । बाणवाउपञ्चचद्वयमसंख्यगुणं । सेगो
संख्यगुणो । तदो बादरतेउप्रपञ्चचद्वयमसंख्यगुण । बादरतेउद्वय विसेसाहियं ।

असंख्यातगुणी है । असंख्यात असंख्यात जीवोंकी विक्रमसूची असंख्यात पयाप्तोंकी
विक्रमसूची असंख्यातगुणी है । असंख्यात जीवोंकी विक्रमसूची असंख्यात असंख्यातोंकी
विक्रमसूचीसे विशेष अधिक है । बादर अनस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी
विक्रमसूची असंख्यातोंकी विक्रमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त
जीवोंकी विक्रमसूची बादर अनस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विक्रमसूचीसे
असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीव्यधिक पर्याप्त जीवोंकी विक्रमसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्तोंकी विक्रमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अन्धव्यधिक पर्याप्त जीवोंकी विक्रमसूची
बादर पृथिवीव्यधिक पर्याप्तोंकी विक्रमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर वायुव्यधिक पर्याप्तोंकी
विक्रमसूची बादर अन्धव्यधिक पर्याप्तोंकी विक्रमसूचीसे असंख्यातगुणी है । अगम्येकी बादर
वायुव्यधिक पर्याप्तोंकी विक्रमसूचीसे संख्यातगुणी है । असंख्यात पर्याप्तोंका द्रव्य अग्रभेदोंसे
असंख्यातगुणा है । असंख्यात अग्रपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यात पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा
है । असंख्यातोंका द्रव्य असंख्यात असंख्यातोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर
अनस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर अनस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीव्यधिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे अंश-
क्यातगुणा है । बादर अन्धव्यधिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीव्यधिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । अग्रप्रतर बादर अन्धव्यधिक पर्याप्तोंका द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
वायुव्यधिक पर्याप्तोंका द्रव्य अग्रप्रतरसे असंख्यातगुणा है । सोक बादर वायुव्यधिक
पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । सोकसे बादर तेजस्व्यधिक असंख्यातोंका द्रव्य
असंख्यातगुणा है । बादर तेजस्व्यधिकोंका द्रव्य बादर तेजस्व्यधिक असंख्यात द्रव्यसे विशेष

तदो असंज्ञदसम्प्रतिभनहारकालो असंज्ञेन्द्रगुणः । एवं ज्ञापित्य वेद्यम् ज्ञान संबन्ध-
संबन्धनहारकालो हि । तदो बादरेतेउपन्ञचा असंज्ञगुणः । तदो संज्ञासंबन्धदम्भ-
संज्ञेन्द्रगुणः । एवं ज्ञापित्य जेद्वन ज्ञान पक्षिदाभयो हि । तदो बादरेभाउपन्ञच
अवहारकालो असंज्ञगुणः । बादरेपुडविपन्ञचअवहारकालो असंज्ञेन्द्रगुणः । क्व
गुणगतो ? आवलियाए अमंज्ञेन्द्रदिमागः । बादरेपिगोदपदिद्विपन्ञचअवहारकालो
अमंज्ञेन्द्रगुणो । क्व गुणगतो ? आवलियाए असंज्ञेन्द्रदिमागः । बादरेगणपदकल्प
पक्षेपपन्ञचअवहारकालो असंज्ञेन्द्रगुणो । क्व गुणगतो ? आवलियाए अमंज्ञेन्द्रदिमागो ।
तसकल्पमिच्छद्विअवहारकालो असंज्ञगुणः । क्व गुणगतो ? पक्षिदोवमस्य असंज्ञ-
ेन्द्रदिमागो । तसकल्पअपन्ञचअवहारकालो विसमाहिषो । केचित्तमेषे ? आवलियाए
असंज्ञेन्द्रदिमागः खंडिदेगखंडेण । तसकल्पअपन्ञचअवहारकालो असंज्ञेन्द्रगुणो । क्व
गुणगतो ? आवलियाए असंज्ञेन्द्रदिमागस्य संज्ञेन्द्रदिमागो । तदा तसकल्पअपन्ञच

इच्छेता नहीं पाया जाता है । बादर वायुवायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंज्ञतसम्प्रति-
भोका अवहारकाल असंज्ञातगुणः है । इसीप्रकार समझकर संज्ञासंबन्धोंके अवहारकालसे
के ज्ञान चाहिये । संज्ञासंबन्धोंके अवहारकालसे बादर तेजस्वायिक पर्याप्त असंज्ञातगुणे
है । इससे संज्ञासंबन्धोंका द्रव्य असंज्ञातगुणः है । इसीप्रकार ज्ञानकर पक्षोपमसक के
ज्ञान चाहिये । पक्षोपमसे बादर अन्वायिक जीवोंका अवहारकाल असंज्ञातगुणः है । बादर
पृथिवीवायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर अन्वायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे
असंज्ञातगुणः है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंज्ञातर्था माग गुणकार है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल बादर पृथिवीवायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे
असंज्ञातगुणः है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंज्ञातर्था माग गुणकार है । बादर
वमस्यतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके
अवहारकालसे असंज्ञातगुणः है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंज्ञातर्था माग गुणकार है ।
असंज्ञाविक मिच्छाद्विषयोंका अवहारकाल बादर वमस्यतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके
अवहारकालसे असंज्ञातगुणः है । गुणकार क्या है ? पक्षोपमका असंज्ञातर्था माग गुणकार
है । असंज्ञाविक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल असंज्ञाविक मिच्छाद्विषयोंके अवहारकालसे
विरोध अधिक है । विलम्बमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंज्ञातर्था मागसे असंज्ञाविक
मिच्छाद्विषयोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक माग छव्य आवे तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । असंज्ञाविक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल असंज्ञाविक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे
असंज्ञातगुणः है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंज्ञातर्था मागका असंज्ञातर्था माग
गुणकार है । असंज्ञाविक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंज्ञाविक पर्याप्तोंकी विष्णुमस्य

विकसंमसूई अमंखेज्जगुणा । तसकाइयअपञ्जचविकसंमसूई अमंखेज्जगुणा । तमकाइय
विकसंमसूई विसमाहिया । बादरवणपञ्जकाइयपचयसरीरपञ्जचविकसंमसूई अमंखेज्जगुणा ।
बादरणिगोदपदिद्विदपञ्जचविकसंमसूई अमंखेज्जगुणा । बादरपुत्रविकाइयपञ्जचविकसंम-
सूई अमंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयपञ्जचविकसंमसूई अमंखेज्जगुणा । बादर
वाउकाइयपञ्जचविकसंमसूई अमंखेज्जगुणा । सदी संखेज्जगुणा । तसकाइय
पञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । तमकाइयअपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । तसकाइयदध्वं विसे
माहिय । बादरवणपञ्जकाइयपचयसरीरपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । बादरणिगोदपदि
द्विदपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । (बादरपुत्रविकाइयपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण ।) बादरआउ
पञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । पदरमसंखेज्जगुण । बादरवाउपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । लोगा
संखेज्जगुणो । तडा बादरनेउअपञ्जचदध्वमसंखेज्जगुण । बादरनेउदध्वं विसेसाहियं ।

असंख्यातगुणी है । असंख्यातिक अवयवोंकी जीर्णोद्दी विष्कमसूची असंख्यातिक पर्याप्तोंकी
विष्कमसूची असंख्यातगुणी है । असंख्यातिक जीर्णोद्दी विष्कमसूची असंख्यातिक अवयवोंकी
विष्कमसूचीसे विशेष अधिक है । बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीर्णोद्दी
विष्कमसूची असंख्यातिकोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त
जीर्णोद्दी विष्कमसूची बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे
असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीर्णोद्दी विष्कमसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अन्धायिक पर्याप्त जीर्णोद्दी विष्कमसूची
बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी
विष्कमसूची बादर अन्धायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगमेकी बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे संख्यातगुणी है । असंख्यातिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगमेकीसे
असंख्यातगुणा है । असंख्यातिक अवयवोंका द्रव्य असंख्यातिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा
है । असंख्यातिकोंका द्रव्य असंख्यातिक अवयवोंके द्रव्यसे विहाय अधिक है । बादर
जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातिकोंके द्रव्यमे असंख्यातगुणा है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यमे
असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे असं-
ख्यातगुणा है । बादर अन्धायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यमे
असंख्यातगुणा है । जगप्रतर बादर अन्धायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगप्रतरमे असंख्यातगुणा है । काक बादर वायुकायिक
पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । काकसे बादर तज्जकायिक अवयवोंका द्रव्य
असंख्यातगुणा है । बादर तज्जकायिकोंका द्रव्य बादर मेज्जकायिक अवयवोंके द्रव्यमे विशेष

बादरवण्णपुद्गलपदेयसरीरव्यञ्जकद्वयमसंसेव्यगुणं । बादरवण्णपुद्गलपदेयसरीरद्वयं विसे-
साहियं । बादरविगोदपदिद्विद्वयपञ्चद्वयमसंसेव्यगुणं । बादरविगोदपदिद्विद्वयद्वयं विसे-
साहियं । (बादरपुटविक्रयपञ्चद्वयमसंसेव्यगुणं । बादरपुटविक्रयद्वयं विसेसाहियं ।)
बादरआठवपञ्चद्वयमसंसेव्यगुणं । बादरआठविक्रयद्वयं विसेसाहियं । बादरआठवप-
ञ्चद्वयमसंसेव्यगुणं । बादरआठविक्रयद्वयं विसेसाहियं । सुद्धमोठवपञ्चद्वयं
असंसेव्यगुणं । ठेठवपञ्चद्वयं विसेसाहियं । सुद्धमपुटविक्रयपञ्चद्वयं विसेसाहियं ।
पुटविक्रयपञ्चद्वयं विसेसाहियं । (सुद्धमआठवपञ्चद्वयं विसेसाहियं ।) आठवपञ्च-
द्वयं विसेसाहियं । सुद्धमवाठवपञ्चद्वयं विसेसाहियं । (वाठवपञ्चद्वयं विसेसाहियं ।)
सुद्धमतेठवपञ्चद्वयं संसेव्यगुणं । तेठवपञ्चद्वयं विसेसाहियं । सुद्धमपुटविक्रयपञ्चद्वयं विसे-
साहिया । पुटविक्रयपञ्चद्वयं विसेसाहिया । सुद्धमआठवपञ्चद्वयं विसेसाहिया । आठवपञ्चद्वयं

[illegible]

विसंसाहिया । सुद्रुमदाठपञ्जचा विसंसाहिया । घाठपञ्जचा विसंसाहिया । सुद्रुमतेउ
 काह्या विसंसाहिया । ठेउकाह्या विसंसाहिया । सुद्रुमपुत्रविकह्या विसंसाहिया । पुद्रवि
 काह्या विसंसाहिया । सुद्रुमआठकाह्या विसंसाहिया । आठकाह्या विसंसाहिया । सुद्रुम
 वाठकाह्या विसंसाहिया । घाठकाह्या विसंसाहिया । अकाह्या अणतगुणा । बादरभिगोद्
 पञ्जचा अणतगुणा । बादरवणपञ्जचा विसंसाहिया । बादरणिगोद्अपञ्जचा असंखेज्ज-
 गुणा । बादरवणपञ्जचा विसंसाहिया । बादरणिगोद् विसंसाहिया । बादरवणपञ्ज
 काह्या विसंसाहिया । सुद्रुमवणपञ्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोद्अपञ्जचा विसं
 साहिया । वणपञ्जचा विसंसाहिया । सुद्रुमवणपञ्जचा संखेज्जगुणा । णिगोद्
 पञ्जचा विसंसाहिया । वणपञ्जचा विसंसाहिया । सुद्रुमवणपञ्जकाह्या विसंसाहिया ।

सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । अण्कायिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त
 जीव अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त
 द्रव्यसे विरोध अधिक है । तजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विरोध अधिक है ।
 सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विरोध अधिक है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म अण्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे
 विरोध अधिक है । अण्कायिक जीव सूक्ष्म अण्कायिक द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव अण्कायिक द्रव्यसे विरोध अधिक है । वायुकायिक जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव द्रव्यसे विरोध अधिक है । अण्कायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे
 है । बाहर निगोद् पर्याप्त जीव अण्कायिक जीवोंसे अनन्तगुणे है । बाहर वनस्पति पर्याप्त
 जीव बाहर निगोद् पर्याप्तोंसे विरोध अधिक है । बाहर निगोद् अपर्याप्त जीव बाहर
 वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणे है । बाहर वनस्पति अपर्याप्त जीव बाहर निगोद्
 अपर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । बाहर निगोद् जीव बाहर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे
 विरोध अधिक है । बाहर वनस्पतिकायिक जीव बाहर निगोद् द्रव्यसे विरोध अधिक है ।
 सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बाहर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे संख्यातगुणे है ।
 निगोद् अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । वनस्पति अपर्याप्त
 जीव निगोद् अपर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त
 द्रव्यसे संख्यातगुणे है । निगोद् पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है ।
 वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद् पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति

निमोदा विसेसादिया । मणपुत्रकृपा विसेसादिया ।

एव कथयन्मग्ना समया ।

जोगाशुवादेण पंचमणजोगि-तिष्णिवचिजोगीसु मिच्छाद्वी दव्व
पमाणेण केवदिया ? देवानं संखेज्जदिमागो ॥ १०३ ॥

एतत् तिष्ठं चेन्न बचिजोगीनां संगहो किमहो कदो ? न एतद् दोषो । इहा !
बचिजोगि-असंख्यमोसबचिजोगि सह एदेसिं तिष्ठं बचिजोगीण दव्वाल्लं पठि समाज्जा-
भावादो । समाज्जात्ताणमेगजोमो भवदि, न मिष्णात्ताणं । देवानं आप्ति दव्व कस-
पमाणेण पुम्भं पक्खिवापि तेसिं संखेज्जदिमागो एदेसिमह्वं रासीणं पमाणं होदि ।
इहो ! अहो एदे अहं वि जोगा सण्ण्णि चेन्न भवति, गो असण्ण्णि, तस्य पठिसिद्धत्तादो ।
सण्ण्णि वि पहाया देवा चेन्न, सेसगदिसण्ण्णि देवानं संखेज्जदिमागत्तादो । तस्य वि
देवेषु पहागो कथयजोगरासी, मण-बचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । त पि कथं आविज्जो ?

जीव जनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । निमोद जीव सूक्ष्मजनस्पतिअधिक द्रव्यसे
विशेष अधिक है । जनस्पतिअधिक जीव निमोद जीवोंसे विशेष अधिक है ।

इसप्रकार कथमार्थका समान्त हुई ।

योगमार्गवाके अनुवादसे पांचों मनायोगियों और तीन बचनयोगियों
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? क्योंकि संख्यातवें भाग
हैं ॥ १०३ ॥

सुत्र — यहाँ तीन ही बचनयोगियोंका संग्रह किसकिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि बचनयोगियों और अनुग्रह बचनयोगि-
योंके साथ इन तीन बचनयोगियोंकी द्रव्याभावेके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाज-
कापीका ही एक योग होता है मित्राकापीका नहीं । दोनोंका द्रव्य, काय और क्षेत्रही अपेक्ष
को प्रमाण पहले तक न्यपे हैं उसके संख्यातवें भाग इन जाद पाशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये व्यर्थों योग संक्षिप्तोंके ही होते हैं अक्षिप्तोंके नहीं क्योंकि, अक्षिप्तोंमें ये व्यर्थों
योग प्रतिनिध है । संक्षिप्तोंमें ही प्रधान रूप ही है क्योंकि, दोष तीन पक्षिके सभी
जीव क्योंकि संख्यातवें भाग ही है । यहाँ दोनोंमें ही प्रधान कथयोगियोंकी राशि है क्योंकि,
कथयोगियोंका प्रमाण सभीयोगियों और बचनयोगियोंसे संख्यातगुण है ।

पंक्त — यह कैसे जाना जाता है ?

जोगद्व्यपमानगुणादो । त जहा— 'सम्बन्धोवा मणजोगद्वा । बन्धिजोगद्वा संखेज्जगुणा । कायजोगद्वा संखेज्जगुणा पि ।' पुणो एदेसिमद्वाण समास क्कळ्म तेण सिद्धं जोगाण सण्णिरासिमोवद्धिय अप्पप्पणो अद्वाहि पुष पुष गुणिदे मण-बन्धि-कायजोगरासीओ हवति । तदो द्विदमेह एदे अह पि मिच्छाद्वाहि रासीओ देषाणं संखेज्जदिमाणो पि ।

सासणसम्मादिट्ठिण्हुडि जाव सजदासजदा त्ति ओघ ॥ १०४ ॥

एत्थिदोषयस्स असंखज्जदिमागत्त पडि ओघधीवेहि सह एदेसिं समाजत्तमसि पि ओघमिदि उच । पन्जवद्धियणए पुण अवलंकिज्जयाने तेहिंओ एदेसिं असि महीतो भेदो । इदो ? एदेसिमोपरासिस्स संखेज्जदिमागत्तादो । तं पि क्वं णप्पदे ? पुम्पुचद्व्यपमानगुणादो । संसं सुगमं ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति द्व्यपमाणेण केव डिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । यह इसप्रकार है— 'मनोजोगका काल सबसे शोक है । बन्धनयोगका काल इससे संख्यातगुणा है । काययोगका काल बन्धनयोगके कालसे संख्यातगुणा है । अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे शान्ति योगोंकी सबी जीवराशिवा अपवर्णित करके जो कर्म भावे उसे अपने अपने कर्मसे दृढ दृढ गुणित करने पर मनोजोगी बन्धनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशियां देशोंके संख्यातवर्ग भाग हैं ।

सासादनसम्पगट्ठि गुणरूपानसे लेकर सयत्तासंयत्त गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वक आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान प्रत्येक पमके असंख्यातवर्ग भाग है ॥ १ ४ ॥

प्रत्येकपमके असंख्यातवर्ग भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीवराशियोंकी समानता है इसलिये प्रथम ओघ देखा गया । परंतु पर्याप्तार्थिक लयका अपवर्णन करने पर ही सासादनदि संयत्तासंयत्तात्त गुणरूपानप्रतिपक्ष ओघप्रकरणसे गुणस्थानप्रतिपक्ष इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशियां ओघराशिके संख्यातवर्ग भाग हैं ।

झका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वक पाठकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । दोष कथन सुगम है ।

प्रमत्तसयत्त गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवर्ती गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

विगोदा वितेसाहिया । वणप्पदकद्वया वितेसाहिया ।

एव कल्पमग्ग्या समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि तिण्णवचिजोगीसु मिच्छाद्वी दव्व-
पमाणेण केवडिया ? देवानं संखेज्जदिमागो ॥ १०३ ॥

एत्थं तिण्णं च वचिजोगार्ण संगहो किमहुो कदो ? अ एस दोसो । हुो ?
वचिजोग-असत्त्वमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्णं वचिजोगार्ण दव्ववात्तं पडि समाव-
सात्तादो । समावसात्तात्त्वमेगशोमो भवदि, अ मिण्णवात्तार्थ । देवानं आत्ति दव्व-काठ-लेव
पमावणि पुब्बं परुविदात्ति तेसिं संखेज्जदिमागो एदेसिमहुं रासीजं पमाणं हदि ।
हुो ? बहो एदे अहु वि खोगा सण्णीजं चेव भवति, जो असण्णीजं, उत्तर पडिदिद्विचो ।
सण्णीसु वि पहात्ता देवा चेव, सेसगदिसण्णीज देवानं संखेज्जदिमागवात्तादो । उत्तर वि
देवेषु पहात्तो कल्पजोगरासी, मज-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणवात्तादो । त वि कथं आधिज्जे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । मियोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिक्रयिक द्रव्यसे
विरोध अधिक है । वनस्पतिक्रयिक जीव विगोद जीवोंसे विरोध अधिक है ।

इसप्रकार कल्पमार्मणा समाप्त हुई ।

योगमार्मणाके अनुवादसे पाँचों मनायोगियों और तीन वचनयोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? देवोंके संख्यात्मकें माप
हैं ॥ १०३ ॥

पुंछा—यहाँ तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसस्थिते किया है ?

समाधान—यह केही दोष नहीं है क्योंकि वचनयोगियों और अनुमय वचनवाचि-
कोंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्याकारणके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समावा-
सायोंका ही एक योग होता है मिथ्याकारणका नहीं । देवोंका द्रव्य काल और क्षेत्रकी अपेक्षा
को प्रमाण पड़ते वह व्यर्थ है उसके संख्यात्मकें माप इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये आठों योग संक्षिप्तोंके ही होते हैं असंक्षिप्तोंके नहीं क्योंकि, असंक्षिप्तोंमें ये व्यर्थ
योग प्रतिष्ठित हैं । संक्षिप्तोंमें भी प्रधान देव ही हैं क्योंकि, देव तीन गतिके संक्षि-
प्ति देवोंके संख्यात्मकें माप ही हैं । वहाँ देवोंमें भी प्रधान कल्पयोगियोंकी राशि है क्योंकि
कल्पयोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यात्मक है ।

पुंछा—यह कैसे जाना जाता है ?

एतथ मिच्छाङ्गी इदि एगवयणणिहो, केवदिया इदि बहुवयणणिहसा; कचेमेदाय
मिप्पाहियगणधमेयद्वपउत्ती ? य, एयाणेयाणमणोणात्रहमुत्तीणमयद्वचापिगाहा । मस
सुगम । असंसुज्जा इदि सामण्णेण णवविहस्सामखन्जस्य गहणे पमचे अणिच्छिन्ना-
संखन्जपडिसेहद्वमुत्तरसुच मणदि—

अमखेज्जासम्बेज्जाहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुचमदसुगम । अणिच्छिदासंखन्जस्यखन्जवियप्पपडिमहनिमित्तमुत्तरसुता-
वदारे मणि—

खेत्तेण वचिचोगिअमन्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाङ्गीहि पदरम
वहिरदि अगुलस्म सम्बेज्जदिभागवगपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगा अमन्चमामवचिजोगा च बीदिदियप्पद्वङ्गीणव्वरिमत्तं वीविसुमासाण
मामापज्जचीए पज्जयाय मवदि, तेण विन्तिअउरिस्सिअसुत्तिमपविदियपज्जचरामीओ

प्रश्न—इस सूत्रमें मिच्छाङ्गी यह एकवचन निर्देश है और 'केवदिया' यह
बहुवचन निर्देश है। अतएव मिथ मिथ अधिकरणपाठे इन दोनोंकी एक्यर्थमें कैसे प्रवृत्ति
हो सकती है ?

समाधान—महाँ, क्योंकि एक और अनेक सम्बन्ध अत्रदृश्यते हैं इसलिये इन
दोनोंकी एक्यर्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोर विरोध नहीं आता है।

शेष कथन सुगम है। असप्यात है इसप्रकार सामान्य वचन सेनस ना प्रकटके
असम्भारोंका प्रहण प्राप्त होता है अतएव अनिच्छित असप्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालङ्गी अपेक्षा वचनयोगी और अनुमय वचनयोगी बीव असप्यातासुंफपात
अवमपिणियो और उस्मपिणियोंके द्वारा अपहृत होता है ॥ १०७ ॥

यह सूत्र नतिसुगम है। अनिच्छित असप्यातासप्यातकय विहस्यके प्रतिषेध
करनेके लिये आगेके सूत्रका ध्यानार हुआ है—

भेत्तकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुमय वचनयोगियोंमें मिप्पाहटि बीवोंके
द्वारा अंगुलके संख्यातवें भागक वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रत्तर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

ठीमिद्रिपोंसे छेकर ऊपरके संपूर्ण जीवसमासोंमें भाषापर्यायसे पयाप्त हुए बीवोंके
वचनयोग और अनुमय वचनयोग पाया जाता है इसलिये ठीमिद्रिय बीमिद्रिय अनुरिद्रिय

१ प्रहेतु मणदि इति पठ्यते ।

२ बोधानुगत २०८ वाक्योपनिषद विचार्यवोत्रम्बेदा भेदव अत्रात्रस्येवमात्रमिशा । व प्रि १८

एतत् ओभरासिणा संखेज्जर्ष पडि एदेसिं रागीर्षं समाणचे संते किमिदुपमिदि
य पत्तिर्दं सुते ? न, एतत् अवर्तविदपञ्चवह्निपणपचादो । सो मि एतत् किमिदु-
वर्तविजदे ? जागह्णप्यावहुगमस्सिउत्तम रासिधिसेसपुप्पायणहं । कथं जोगह्णप्यावहुमिमिदि
पुते पुषदे— 'सञ्चतोषा सञ्चमणजोगह्णा । मासमणजोगह्णा संखेज्जगुणा । सञ्चमोसमण-
जोगह्णा संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगह्णा संखेज्जगुणा । मणमोसह्णा विसेसाहिया ।
सञ्चवह्निजोगह्णा संखेज्जगुणा । मोसवह्निजोगह्णा संखेज्जगुणा । सञ्चमासवह्निजोगह्णा
संखेज्जगुणा । असञ्चमोसवह्निजोगह्णा संखेज्जगुणा । वह्निजोगह्णा विसेसाहिया । कप्प-
जागह्णा संखेज्जगुणा' ति' ।

वचिजोगि-असञ्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाद्विटी दव्वपमाणेण केव
डिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त जाठ बीवरासियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? संख्यात हैं ॥ १ ५॥

यहाँ पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओभरासिणके साथ दत्त राशिपूर्वकी समानता
रहने पर सूत्रमें जोषं ऐसा किसविधे नहीं कहा ?

समाधान—वहाँ क्योंकि यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन किया गया है
अतः सूत्रमें जोषं देखा नहीं कहा ।

श्रुका—कह पर्यायार्थिक नय भी यहाँ पर किसविधे ग्राह्य किया गया है ?

समाधान—योगकाष्ठका आश्रय लेकर राशिबिधोपका प्रतिपादन करनेके क्रिये
यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन किया गया है ।

योगकाष्ठके आश्रयसे व्यपवहृत्थ किस्मकार है ऐसा पूछने पर व्याख्यान कहते हैं—
सत्य मनोयोगका काष्ठ सत्तसे सतीक है । सुयामनोयोगका काष्ठ सत्तसे सत्प्यातगुणा है ।
उमवमनोयोगका काष्ठ सुयामनोयोगके काष्ठसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगका काष्ठ
वमय मनोयोगके काष्ठसे संख्यातगुणा है । इससे मनोयोगका काष्ठ बिधोप अधिक है । सत्य
वचनयोगका काष्ठ मनोयोगके काष्ठसे संख्यातगुणा है । सुया वचनयोगका काष्ठ सत्य वचन
योगके काष्ठसे सत्प्यातगुणा है । वमय वचनयोगका काष्ठ सुया वचनयोगके काष्ठसे संख्यात
गुणा है । अनुमय वचनयोगका काष्ठ वमय वचनयोगके काष्ठसे संख्यातगुणा है । वचनयोगका
काष्ठ अनुमय वचनयोगके काष्ठसे बिधोप अधिक है । काययोगका काष्ठ वचनयोगके काष्ठसे
संख्यातगुणा है ।

वचनयोगियों और असत्यमुया अर्थात् अनुमय वचनयोगियोंमें मिथ्याद्विटी बीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? असंख्यात हैं ॥ १०६ ॥

१ अनेकद्विटीया वचनजीवा वनेष वचनया । त-जीवी तावन्व वचनविजीवा तदी ह वचनम् ।
तथीतो वचनम् वचो वचाएतो विभोगविदं । गो अ. ११२ १६१

एगङ्ग करिय बन्धिमोग-कायमोगहासमासेष खंडिय एगखंड बन्धिमोगहाए गुमिय पंथि
दियअसन्धमोसबन्धिमोगरासि पन्थिसे असन्धमोसबन्धिमोगरासी होदि । एत्थ सबादि
सेसबन्धिमोगरासि पन्थिसे बन्धिमोगरासी होदि । अहासमासस्स आबलियाए गुणमरयेव
हुबिदसंखेन्धस्सेहिंठो पदरंगुलस्स हेइ । मागहारयेव हुबिदसंखेन्धस्सालि जेव संखेज-
गुबानि तेव पदरंगुलस्स संखेजदिमागो मागहारो भवदि ।

सेसाणं मणिजोगिमगो' ॥ १०९ ॥

जथा मज्झिमोगामी ओषसासपादीयं संखेजदिमागो, तथा बन्धिमोयि असन्धमोस
बन्धिमोगीसु सासपादओ ओषसासपादलि संखेजदिमागो । सेसं सुगमं ।

संपीह अप्पाबहुगखेय पुन्निगुल्लेसु बुचरासीममवहारकात्ता परुविन्जति । तं
अहा-संखेन्धस्सेहिं छविअगुले माग हिदे सहे वनिदे बन्धिमोगिमवहारकात्ते होदि ।
तन्नि संखेन्धस्सेहिं खंडिय सई तन्नि येव पन्थिसे असन्धमोसबन्धिमोगिमवहारकात्ते

धीर असेही पबेन्धिय एपांस जीवरगिषो एकजित करके धीर असेबचनमोम और काययोन्के
कात्ते ओइरूप प्रमावसे खंडित करके ओ एक माग खण्ड थावे असे बचनमोमके कात्ते गुणित
करके ओ प्रमाव हो असे पंचमिय अनुमय बचनयोगी रागिसे मिखा हेने पर अनुमय
बचनमोमी जीवरगि होली है । इसमें सत्यबचनयोगी जीवरगि थ्यदि होय बचनमोमी
जीवरगिबोके मिखा हेने पर बचनयोगी जीवरगि होली है । यहाँ पर अहासमासके छिने
आबडीके गुणवाररूपसे ब्यापित संख्याससे प्रतरंगुलके नीचे मागहाररूपसे स्थापित
संख्यात थ्ये संख्यातगुण है इसछिये प्रहृतमें प्रतरंगुलका संख्यातवा माग मागहार है ।

सासादनसम्पगृहि आदि छेप गुणस्थानवर्ती बचनयोगी और अनुमय बचन
योगी जीव सासादनसम्पगृहि आदि मनोयोगिराक्षिक समान हैं ॥ १०९ ॥

त्रिसप्रकार मनोयोगी जीवरगि ओषसासपादसम्पगृहि थ्यदि संख्यातमें माव है
इसीप्रकार बचनयोगियों धीर अनुमय बचनयोगियों सासादनसम्पगृहि आदि जीवरगि
ओष सासादनसम्पगृहि थ्यदि संख्यातमें माग है । होय कथन सुगम है ।

अर अस्पवहुलके वलसे पूर्वोक्त सर्तमें कही गई रागियोंके अवहारकात्त को
जाते हैं । वे इसप्रकार हैं— संख्यातसे सूर्यगुलके आश्रित करने पर ओ खण्ड थावे असे
वर्णित करने पर बचनयोगियोंका अवहारकात्त होता है । इसे संख्यातसे खंडित करके ओ
खण्ड थावे असे इली बचनयोगियोंके अवहारकात्तमें मिखा हेने पर अनुमय बचनयोगियोंका
अवहारकात्त होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर बन्धिमोग काययोगियोंका अवहारकात्त

असञ्जदसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे वेउ
 विवयमिस्सकायजोसिअसञ्जदसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि
 माएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसञ्जदसम्माद्विज्वहारकालो हादि । एवं सम्मामिच्छा-
 इद्विस्स । णवरि वेउविवयमिस्सं कम्मइयं च छोट्टिय वचण्व । आपसासणसम्माद्विज्व
 हारकाल संखेज्जरूवेहि खडिय छद्द तम्हि चेव पक्खिसे कायजोगिसासणसम्माद्वि
 ज्वहारकालो होदि । तं हि आवलियाए असंखेज्जदिमाण खडिय छद्द तम्हि चेव
 पक्खिसे वेउविवयकायजागिमासणसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि
 गुणिदे वचिजगिसासणसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि मागे हिदे
 छद्द तम्हि चेव पक्खिसे असञ्चमोसवचिजोगिसासणसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तम्हि
 संखेज्जरूवेहि गुणिदे सञ्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मासवचिजोगि-सञ्चवचि-
 जोगिअवहारकालानं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे
 मज्जोगिसामणसम्माद्विज्वहारकालो हादि । तं हि संखेज्जरूवेहि खडिय छद्द तम्हि चेव
 पक्खिसे असञ्चमोसमज्जोगिसासणसम्माद्विज्वहारकालो होदि । तदो सञ्चमोसमज्ज-

काययोगी असंयतसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे भाष्यीके असंख्यातर्षे मागसे
 गुणित करने पर वैद्विषिकमिज्जकाययोगी असंयतसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 भाष्यीके असंख्यातर्षे मागसे गुणित करने पर कायमज्जकाययोगी असंयतसम्पन्नद्विषोंका
 अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार सम्पन्निष्ठाद्विषोंका भी अवहारकाळ करना चाहिये । परंतु
 इतनी विरोधता है कि वैद्विषिकमिज्जकाययोग और कायमज्जकाययोगको छोड़कर ही कथन
 करना चाहिये । ओष सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळको संख्यातसे अहित करके
 जो छप्प भावे इसे उसी ओष सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळमें मिला देने पर
 काययोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे भाष्यीके असंख्यातर्षे मागसे
 अहित करके जो छप्प भावे इसे उसी काययोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळमें
 मिला देने पर वैद्विषिककाययोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 संख्यातसे मांमिव करने पर जो छप्प भावे इसे उसी वचनयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके
 अवहारकाळमें मिला देने पर अनुमय वचनयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है ।
 इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता
 है । इसीप्रकार मृगावचनयोगी और सत्यवचनयोगी भीोंका अवहारकाळ जानेके लिये यथाक्रमसे
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळको संख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे
 अहित करके जो छप्प भावे इसे इसी मनोयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळमें
 मिला देने पर अनुमय मनोयोगी सासाद्वनसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसके भागे

पक्षिण्ये कायजगिअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो होदि । तम्हि आवत्तिमाए असंसज्जदि
 माएण मागे दिदे उइं तम्हि थव पक्षिण्ये वेठणियअसंसज्जदसम्मद्विअवहारकाळो होदि ।
 तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वधिजोगिअसंसज्जदसम्मद्विअवहारकाळो होदि । तं हि संखेज्ज-
 रूवेहि संखिय उइं तम्हि थव पक्षिण्ये असंसज्जमोसवधिजोगिअसंसज्जदसम्मद्विअवहार-
 काळो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे ससंसज्जमोसवधिजोगिअसंसज्जदसम्मद्विअवहार-
 काळो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मांसवधिजोगिअसंसज्जदसम्मद्विअवहारकाळो
 होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे ससंसज्जवधिजोगिअसंसज्जदसम्मद्विअवहारकाळो होदि ।
 तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकाळो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि
 संखिय उइं तम्हि थव पक्षिण्ये अमंसज्जमोममणजोगिअवहारकाळो होदि । (तम्हि
 संखेज्जरूवेहि गुणिदे ससंसज्जमोममणजोगिअवहारकाळो होदि ।) तम्हि संखेज्जरूवेहि
 गुणिदे मोसममणजोगिअवहारकाळो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे ससंसज्जमोमोमि
 अवहारकाळो होदि । तम्हि आवत्तिमाए असंसज्जदिमाएण गुणिदे औत्ताठियकायजोगि

छन्द आये उसे उही ओय असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो में मिछा देने पर कायजोगि
 असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो होता है । इस कायजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो
 अवहारकाळो आबसीके असंसज्जपातने आपसे माजित करने पर जो छन्द
 आये उसे उही कायजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो में मिछा देने पर
 औत्ताठियकायजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो होता है । इस औत्ताठियकायजोगि
 असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो ससंसज्जपातसे गुणित करने पर वधजोगि असंसज्जसम्म-
 द्विअवहारकाळो होता है । इस वधजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो अवहारकाळो
 ससंसज्जपातसे माजित करके जो छन्द आये उसे उही वधजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो
 में मिछा देने पर अनुमय वधजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो होता है । इस
 अनुमय वधजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो ससंसज्जपातसे गुणित करने पर उमय
 वधजोगि असंसज्जसम्मद्विअवहारकाळो होता है । इस उमय वधजोगि असंसज्जसम्म-
 द्विअवहारकाळो ससंसज्जपातसे गुणित करने पर सुधावधजोगि असंसज्जसम्म-
 द्विअवहारकाळो होता है । इसे ससंसज्जपातसे गुणित करने पर ससंसज्जवधजोगि असंसज्ज
 द्विअवहारकाळो होता है । इस ससंसज्जवधजोगिअवहारकाळो ससंसज्जपातसे गुणित
 करने पर मनजोगिअवहारकाळो होता है । इस मनजोगिअवहारकाळो ससंसज्जपातसे
 माजित करके जो ससंसज्ज आये उसे उही मनजोगिअवहारकाळो में मिछा देने पर अनुमय मनो-
 जोगिअवहारकाळो होता है । इस अनुमय मनजोगिअवहारकाळो ससंसज्जपातसे गुणित
 करने पर उमयमनजोगिअवहारकाळो होता है । इस उमय मनजोगिअवहारकाळो ससंसज्जपातसे
 गुणित करने पर सुधामनजोगिअवहारकाळो होता है । इस सुधामनजोगिअवहारकाळो
 ससंसज्जपातसे गुणित करने पर ससंसज्जमनजोगिअवहारकाळो होता है । इस
 ससंसज्जमनजोगिअवहारकाळो आबसीके असंसज्जपातने आपसे गुणित करने पर औत्ताठिय

असञ्जदसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । तम्हि आबलिपाए असंखेजदिमाण गुणिदे वेठ
 विवयमिन्सकायजोगिअसञ्जदसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । तम्हि आबलिपाए असंखेजदि
 माण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसञ्जदसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छा-
 इद्विस्स । एवमि वउज्वियमिन्स कम्मइय च छाद्विय नचण । ओपसासणसम्पद्द्विजव
 हारकालं मंएज्जम्भेदि खटिय लद्ध तम्हि च पविस्सुचे कायजोगिसासणसम्पद्द्विज
 वहारकालो हादि । त हि आबलिपाए असंखेज्जदिमाण खटिय लद्ध तम्हि चेष
 पक्खिच वेउज्वियकायजोगिसासणसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेदि
 गुणिदे वविज्जागिसासणसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेदि मागे हिदे
 लद्ध तम्हि च पक्खिच असंखेज्जमोमवविजोगिसासणसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । तम्हि
 संखेज्जरूवेदि गुणिदे सच्चमोसवविजोगिअवहारकालो होदि । एवं मोसवविजोगि-सच्चमो-
 जोगिअवहारकालं ब्रह्मकमेण मंएज्जम्भेदि गुणेयम् । तम्हि संखेज्जरूवेदि गुणिदे
 मणजोगिसासणसम्पद्द्विजवहारकालो हादि । त हि संखेज्जरूवेदि खटिय लद्ध तम्हि चेष
 पविस्सुच असंखेज्जमोममणजोगिसासणसम्पद्द्विजवहारकालो होदि । लद्धो सच्चमासमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आबलीके असंख्यातवें मागसे
 गुणित करने पर वैश्वियिकमित्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 आपकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर कामजकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मित्र्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल करना चाहिये । परंतु
 इतनी विशेषता है कि वैश्वियिकमित्रकाययोग और कामजकाययोगको छोड़कर ही कथन
 करना चाहिये । शेष सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके
 जो छद्म आवे उसे उसी भाग सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर
 काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस आबलीके असंख्यातवें मागसे
 खंडित करके जो छद्म आवे उस उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला इन पर वैश्वियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे मात्रित करने पर जो छद्म आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालमें मिला देने पर अनुमय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
 इस संख्यातसे गुणित कर्म पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता
 है । इसीप्रकार मृदावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल छानेके छिये यथाक्रमसे
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे
 खंडित करके जो छद्म आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला देने पर अनुमय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसके आगे

योगि-मोक्षमणयोगि-सम्बन्धमणार्ण अहाकमण संसेञ्जस्वेहि गुणिज्जदि । तन्दि अतस्मिण्ण
असंसेञ्जदिमाएण गुणिदे ओरात्थियकायजागिमागणसम्मद्विअवहारकालो इदि । तन्दि
आवत्थियाए असंसेञ्जदिमाएण गुणिदे आरात्थियमिम्मसासणमम्मद्विअवहारकालो इदि ।
तन्दि आवत्थियाए असंसेञ्जदिमाएण गुणिदे अउत्थियमिम्मसागिसामणसम्मद्विअवहार-
कालो इदि । तन्दि आवत्थियाए असंसेञ्जदिमाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्मद्वि
अवहारकालो इदि । एवं संसदासंज्जदानं । पररि ओपावहारकाल संसेञ्जस्वेहि रंथिय
छद्दं तन्दि वेव यक्खिउत्थ ओरात्थियकायजागिसंसेञ्जद्विअवहारकालो इदि । तन्दि
संसेञ्जस्वेहि गुणिदे वधिजागिसंसेञ्जद्विअवहारकालो इदि । सव पुणं व वत्थं ।
पमचादीयं वुत्थदे । मणज्जेण-वधिज्जेण-कायज्जेणद्विअ समासेण अप्पप्यणो रासिन्दि मागे
हिदे छद्दं तिप्पविरासि कळ्ळम पुणो अप्पप्यणो अद्दाहि गुणिदे एदेवन्दि गुणद्विअ
मण-वधि-कायज्जेणरासीआ इवेति । पुणो सम्बन्धमोक्ष-असं-बन्धमोक्षमणज्जेणद्विअ समासेण
मणज्जेणरासि रंथिय छद्दं व वुत्थविरासि कळ्ळम अप्पप्यणो अद्दाहि गुणिदे सम्बन्धम-

वृत्तमणयोगी मृगमणयोगी और सत्यमणयोगी जीवोंका अवहारकाल छानेके छिने
पण्यमणसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यमणयोगी साक्षात्सम्बन्धद्विअके
अवहारकालको व्यावर्तिके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर औदारिकमणयोगी साक्षात्स
सम्बन्धद्विअका अवहारकाल होता है । इसे व्यावर्तिके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर
औदारिकमणयोगी साक्षात्सम्बन्धद्विअका अवहारकाल होता है । इसे व्यावर्तिके असं
ख्यातसे भागसे गुणित करने पर ऐक्यिकमणयोगी साक्षात्सम्बन्धद्विअका अवहार
काल होता है । इसे व्यावर्तिके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर कर्ममणयोगी
साक्षात्सम्बन्धद्विअका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार संपत्तासंपत्त वचनयोगी मणयोगी
और काययोगीका अवहारकाल जानना चाहिये । वहां इतनी विशेषता है कि संपत्तासंपत्त ओष
अवहारकालको संख्यातसे व्यक्त करके जो छन्द आये वैसे वही संपत्तासंपत्त ओष अवहार
कालमें लिखा देने पर औदारिकमणयोगी संपत्तासंपत्तका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे
गुणित करने पर वचनयोगी संपत्तासंपत्तका अवहारकाल होता है । ओष कथन पढ़ेके समाप्त
करना चाहिये । अत्र ममत्तसंपत्त व्याख्या मृग्यमण्य कहते हैं—मणयोग वचनयोग और
काययोगके काळके जोड़के अपने अपने गुणस्थानसम्बन्धी पक्षिमें भाग देने पर जो छन्द आये
वसही तीन मतिपक्षिणां करने पुनः वहाँ अपने अपने कालसे गुणित कर देने पर एक एक
गुणस्थानमें मणयोगी वचनयोगी और काययोगीकी पक्षिणां होती हैं । पुनः वमय
मणयोग और अनुमय मणयोगके कालोंके जोड़के मणयोगी जीवपक्षिणों वंशित करके
जो छन्द आये वसही दो मतिपक्षिणां करने अपने अपने कालसे गुणित करने पर वमय

असम्बन्धमोक्षमणजागरासीओ इति । एवं वचिजोगरासिस्म वि वच्यते ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाद्वि मूलोघ' ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अर्णता । अणताणताहि ओसपिणि उस्सपिणीहि न अबहरति
कट्ठेण । सेत्थेण अणताणता लेमा इदि पुण इदि । सत्तं सुगमं ।

सामणसम्माद्विप्पह्मि जाव सजोगिकेचलि ति जहा मणजोगि
मगो ॥ १११ ॥

एदे सुव सुगम । एत्थ पुवराविहाण पुच्छदे । तं बहा—सगुणपडिबण्णमम
जोगि-वचिजोगिगहि सिद्ध अजोगिराणि य कायजोगिमज्झि एदसिं बग्ग च सम्बन्धि
रासिम्हि पक्खिचे कायजोगिपुवरासी होदि । त पडिरासिं कट्ठेण तत्थेकरासिम्हि
संखेजरवेहि मागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे ओरालियकायजोगिपुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुमय मनोयोगी जीवराशिपां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिपा
मी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके
समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों मी राशिपां बनस्त हैं । बसुद्धी अपेक्षा काययोगी और औदारिक
काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव बनस्तानस्त अबसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके द्वारा अपहृत
नहीं होते हैं और क्षेत्रकी अपेक्षा बनस्तानस्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य
है । दोष कथन सुगम है ।

सासादनसम्पगदृष्टि गुणस्थानमे ठेकर सयोगिकेवसी गुणस्थानतक काययोगी
और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब यहाँ पर भुवराशिची विधिका कथन करते हैं । यह
इसप्रकार है—गुणस्थानप्रतिपद्य मनोयोगिराशि वचनयोगिराशि सिद्धराशि और वचोनि
राशिओ तथा इन चारों राशियोंके धर्मों काययोगिराशिचा माग देने पर जो छम्प भावे
उत्ते सर्व औदारिकमें मिद्धा देने पर काययोगियोंकी भुवराशि होती है । अन्यत्वर इसकी
प्रतिपत्ति करके उनमेंसे एक राशिमें सर्वथातका माग देने पर जो छम्प भावे उत्ते उसी
भुवराशिमें मिद्धा देने पर औदारिककाययोगियोंकी भुवराशि होती है । सासादनसम्पगदृष्टि

सासनादीन् सग-सगप्रवहारकालं मण्डजन्वाहिं राशिं लब्धं तस्मिन् चर पक्षिणश्च क्वाप
जोगिसासनादिगुणपट्टिषण्णाण अवहारकाला मर्षति । एद अवहारकाल आरुधियाण
असंखेजदिमाण गुणिद आरालियक्कापजोगिसासनादीणमवहारकाला मर्षति । बुदा !
तिरिस्स-मजुम्भगुणपट्टिषण्णारामीणं दपगुणपट्टिषण्णारसिस्स अमंखेजदिमाणपादो । सवदा-
संजदाम् पुण् क्वापजोगिअवहारकाला चैव ओरालियक्कापजोगिअवहारकाला इति, एव
एवदिरिचक्कापजागामावादा ।

ओरालियमिस्मकायजोगीसु मिच्छाद्वि मूलोघ ॥ ११२ ॥

एदं पि सुच सुगम । एरुध घुरासी उचद । आरालियक्कापजोगिघुरासिं पुणं
परुविद संखेजन्वाहिं गुणिद आरालियमिस्मकापजोगिघुरासिं इति । बुदा ! सुद्धम
ईदियअपन्धचरासीए पन्धचरामिस्स संखेजदिमाणपादा । स अहा— तिरिस्स-मजुम्भ-
अपन्धचदादो पन्धचदा संखेजगुणा । ताणमद्वाय समामण तिरिस्सरासिं संखिय

आदि गुणस्थानोंके अपने अपने अवहारकालको संख्यातसे पण्डित करने का उच्च अर्थ उन्हे
कही सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासाङ्गसम्पन्नादि आदि गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं । इन अवहारकालोंको भावकीने अक्षयातसे मागसे
गुणित करने पर औद्धारिककाययोगी सासाङ्गसम्पन्नादि आदि जीवोंके अवहारकाल होते
हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यच और मनुष्य राशिवां गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशि
अक्षयातसे मागमात्र है । औद्धारिककाययोगी अथवा संघतासंघतोंका अवहारकाल ही
औद्धारिककाययोगियोंका अवहारकाल है क्योंकि संघतासंघत गुणस्थानमें औद्धारिककाय
योगको छोड़कर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औद्धारिकमित्रकाययोगियोंमें मिच्छाद्वि जीव ओषग्रूपजाके समान हैं ॥ ११३ ॥

एह सुच मी सुगम है । अउ यहाँ सुचराशिवा कथन करते हैं— पहले जो औद्धारिक
काययोगियोंकी सुचराशि कह आये है उसे संख्यातसे गुणित करने पर औद्धारिकमित्रकाय
योगियोंकी सुचराशि होती है क्योंकि सुद्धम एनेन्द्रिय अथवा संघत राशि पर्याप्त राशि
अक्षयातसे मागमात्र है । उसका स्पर्शकरण हसमकार है— तिर्यच और मनुष्योंके अथवा संघत
काके पर्याप्त काळ संख्यातगुणा है । पुण उअ काशोंके जो कुछ तिर्यच राशिवां पण्डित करके

१ मज्झिम्मे सङ्खेजन्वाहिं इति पाठ ।

२ कम्मेतस्मिन्निवसतीत्यत्राह कथिदमपरा । पन्धीयस्मिन्निवसतीत्यत्राह निवसतीति बोधा । एवम-
अवहारकालमिच्छाद्विगुणपट्टिषण्णादिवासी । एवमवहारकालो मर्षतीति बोधा ॥ ११४ ॥ ११५

लक्ष्मपञ्चदश गुणिदे ओरालियमिस्तरासी हवदि । समद्वय गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि । तेण ओरालियकायजोगरासीदे ओरालियमिस्तराजोगरामी संखेज्जगुणदीणो ।

सासणसम्माइट्ठी ओध ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्ठिनो देव-भेरया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणा पल्लोवमस्स असखेज्जदिमागमत्ता लभमंति तेण एदेसिं पमाणपरुवणाय ओधमंगो हवदि । एदेसिमवहार कालो पुचद । त अहा- ओरालियकायजोगिसासणमवहारकालमावलिणाय असंखेज्जदिमाण गुणिदे ओरालियमिस्तराजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? देव-भेरएहिंते तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असखेज्जदिमागमत्तो ।

असजदसम्माइट्ठी मजोगिवेली दव्वपमाणेण केवडिया, मंखेज्जा

॥ ११४ ॥

देव भेरयसम्माइट्ठिनो मणुस्सेसु उववज्जमाणा संखेज्जा थेव लभमंति, मणुस पन्वचरासिस्स अप्पहा अमंखेज्जचप्पसगा । ओरालियमिस्तराजोगिहि सुचाविरुद्धेण

ओ सख्य भावे उले अपर्याप्त काखेले गुणित कर देने पर औदारिकमिभकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिभकाययोगी जीवराशिको औदारिककाययोगके काखेले गुणकरसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीव राशिसे औदारिकमिभकाययोगी जीवराशि सत्पातगुणी हीन है यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिभकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्य प्ररूपकाके समान हैं ॥ ११३ ॥

भूति तिर्यक् और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पम्पोपमके असंख्यातमें माग पाये जाते हैं इसलिये औदारिकमिभकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणके समान होती है । जब इनका अवहारकाख कहते हैं । इसका स्वीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकाखको भावसीके असंख्यातमें मागसे गुणित करने पर औदारिकमिभकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाख होता है क्योंकि देव और नारकीयोंमेंसे तिर्यक् और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाली राशियां पहले स्थित राशिके असंख्यातमें मागमात्र होती हैं ।

असयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली औदारिकमिभकाययोगी जीव कितने हैं ? सत्पात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सत्पात ही पाये जाते हैं । यदि ऐसा न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिको असंख्यातपनेका प्रसंग आ जाता है ।

अप्रतिभोपपत्तेषु सञ्जोगिकवर्तिभ्यो पचासीर्न हवन्ति । तं अह— कपाट आच्छेत्ता बीस २०, ओच्छेत्ता बीसेषि २० ।

वेत्तव्यिकायजोगीसु मिच्छाहृद्दी दव्वपमाणेण केवाहिया, देवाण संसेअदिमागूणो ॥ ११५ ॥

एवस्त मृचस्त अत्ता जुद्धे । देवार्णं ओ रासी' अप्पप्पणो संसेअदिमाण पतिहणो वेत्तव्यिकायजोगिमिच्छाहृद्दीर्न पमार्थं होदि । जुद्धो ? देव-वेत्तव्यराशिमेम्वं करिय मग-वत्तव्यिकायजोगाद्वासमासेम खंडिय रुद्धं तिप्पहिरासिं कस्सम अप्पप्पणो अद्वादि गुणिदे सग-सगरासीओ हवन्ति । जेण मण रथिजोगरासीओ देवाण संसेअदिमाणो हवन्ति,

विशेषार्थ— अस्तवत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्रकाययोग तिष्ठत और मनुष्य दोनोंमें पाया जाता है । फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य ही होते हैं, अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वरूप ही रहेगा । तथा मनुष्य पतिते जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वरूप ही रहेगा । मर रह गई मरक और देवगतिजी बात सो हम दोनों पतिपोंसे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं । किन्तु पतिपों मनुष्योंका प्रमाण संक्यात ही है । अतएव मरक और देवगतिसे मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही व पत्र होने अधिक नहीं । इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सम्यग्दृष्टिबोका प्रमाण संक्यात ही होगा अधिक नहीं यह सिद्ध हो जाता है ।

सूत्रके विविक्त आचार्योंके उपदेशानुसार औदारिकमिश्रकाययोगमें लघोमिनेकही जीव बाढीस होते हैं । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— कपाट समुदायमें आरोहण करनेवाले औदारिकमिश्रकाययोगी बीस और उतरते हुए बीस होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यापटि जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातमें मात्र कम ६ ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अपनी अपनी राशिमें संख्यातमें मात्रासे न्यून देवोंकी ओ राशि है उतना वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है क्योंकि देव और नास्तिक दोनों राशिमें एकत्रित करके मनोयोग वचनयोग और काययोगके बाढके जोड़से बहिर्त करके जो सध्य भावे उसकी जीव प्रतिराशिर्वा करके अपने अपने बाढते गुणित करने पर अपनी अपनी राशिर्वाका प्रमाण होता है । कृंकि मनोयोगी जीवरशि और वचनयोगी जीव-

१ प्रतिपु ५-ओपण ६ति पाठः ।

२ दारिद्र्यजननीया वैक्रियिककाययोगी ६ ॥ पं श्री १९९.

३ प्रतिपु १जीयो ६ति पाठः ।

तेन वडम्बियकायजोगिमिच्छाद्विगसिपमाण संखेज्जदिमागपरिहीणदेवरासिणा समान भवति ।

एतत् अवहारफालो उच्यते । दव-गरूपमिच्छाद्विगसिसमासम्मि मण वच्चि-वेउम्बिय मिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिनेव-वेरूपमिच्छाद्विगसिसमासेन माग हिद संखेजरूपाणि लब्धमति । तेहि रूपेहेहि संखेज्जपदरंगुलमेव दव-गरूपसमासअवहारफाल खडिय लद्ध तम्मि चेव पक्खिचे वेउम्बियकायजोगिमिच्छाद्विगसिसमासअवहारफालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाद्विगसि अमजदसम्माइट्ठी द्व्यपमाणेण केवडिया, ओघ ॥ ११६ ॥

देवगुणपडिबण्णाण रासिपमाण अप्पप्पणो संखेज्जदिमाण ऊण वडम्बियकाय जोगिगुणपडिबण्णरासिपमाण होदि । तं जहा— देव-गेरूपगुणपडिबण्णरासिमिद अप्पप्पणो मण-वच्चि-वेउम्बियमिस्स-कम्मइयरासीहि मागे हिदे उण्ण लद्धसंखेज्जरूपाणि रूपेहेहि देव गेरूपसमासअवहारफाल खडिय लद्ध तम्मि चेव पक्खिचे वेउम्बियकायजोगिगुणपडि बण्णाणमवहारफालो भवति ।

राशि देवोंके संख्यातवें माग है इसलिये बैकियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण सत्त्वा तवें माग कम वेवराशिके समान होता है ।

अब यहां पर अवहारफालका कथन करते हैं— देव मिथ्यादृष्टिराशि और नारक मिथ्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी ब्रह्मयोगी बैकियिकमिथ्याकाययोगी और कर्मकाययोगी देव और नारकी मिथ्यादृष्टि राशिके योगसे माहित करने पर संख्यात छम्भ आते हैं । एक कम उस संख्यातसे संख्यात प्रत्यंगुलमात्र देव और नारकियोंके जोड़कर अवहारफालको संहित करके जो छम्भ आये उसे उन्हीं दोनोंके जोड़कर अवहारफालमें मिला देने पर बैकियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल होता है ।

सासादनसम्पगदृष्टि, सम्पग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्पगदृष्टि बैकियिककाय योगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणोंके समान हैं ॥ ११६ ॥

गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी राशिअ जो प्रमाण है अपनी अपनी इस राशिमेंसे सत्त्वात माग न्यून करने पर बैकियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका प्रमाण होता है । यह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी मनोयोगी ब्रह्मयोगी बैकियिकमिथ्याकाययोगी और कर्मकाययोगी जीवोंकी राशियोंका माग देने पर वहां जो सत्त्वात छम्भ आये उसमें एक कम करके छेपसे देव और नारकियोंके योग रूप अवहारफालको संहित करके जो छम्भ आये उसे उन्हीं देव और नारकियोंके मिले हुए सब सत्त्वातमें मिला देने पर बैकियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारफाल होते हैं ।

वेत्तव्यमिस्मकायजोगीसु मिच्छाद्दृष्टी दव्वपमाणेण केवडिया,
देवाण सस्वेज्जदिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्म सुवस्स वक्खत्ता सुव्वदे । मैत्तज्जवम्माउअम्भतरआणसियाण असंसेमदि
मागमवउव्वमणकालम् । वदि' देवराणिमवत्रा लम्भदि, तो एदम्मादा संखज्जगुणहि-
वउव्वियमिस्मउव्वमणकालम् । केयियमेवरासिसंवर्य लमामा सि इच्छारामिणा पमत्त-
रासिम्हि भागे हिदे तत्थ लम्भेखज्जस्वेदि देवरासिम्हि । माग हिदे कव्वेगमणा वउव्विय-
मिस्मकायजागिमिच्छाद्दृष्टिपमाणं । सेस सुगमं ।

वैक्रियिकमिभ्रक्षययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? वेदोंके सख्यातमें माग है ॥ ११७ ॥

अब इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं— सूत्रात् वक्की आयुके भीतर व्यपकीके
असख्यातमें मागमात्र उपक्रमण काखसे यदि देवराशिअ संखय प्राप्त होता है तो इससे
संख्यातगुण हीन वैक्रियिकमिभ्र उपक्रमण काखसे भीतर कितनामात्र राशिअ संखय प्राप्त होय,
इसप्रकार वैराशिअ करने इच्छाराशिसे प्रमाणराशिसे माजित करने पर वहाँ जो संख्यात
अव्य व्यपकी उससे देवराशिसे माजित करने पर वहाँ एक मागप्रमाण वैक्रियिकमिभ्रक्षययोगी
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—व्यपकीको उपक्रमण करते हैं और इस सहित काखको सोपक्रमण
कहते हैं । यह सोपक्रमणका आवश्यकके असंख्यातमें मागमात्र है । अर्थात् वेदोंमें यदि निरन्तर
जीव उत्पन्न हों तो इतने काख तक उत्पन्न होंगे । इसके पश्चात् अन्तर पद आपणा । यह
अन्तरकाख अन्त्य एक समय है और उत्पन्न सोपक्रमणकाखसे संख्यातगुणा है । वेदोंमें संख्यात
पर्यन्त आयु केकर अभिन्न जीव उत्पन्न होते हैं इसलिये वहाँ कहींकी विवक्षा है । इसप्रकार
संख्यात वर्षके भीतर कितने उपक्रमणकाख होने हैं उनमें यदि देवराशिअ संखय प्राप्त होता है
तो इससे संख्यातगुणे हीन मिश्रकाखमें (अपवाप्त अवस्थाके सोपक्रमणसममें) कितने जीव होंगे ।
इसप्रकार वैराशिअ करने पर सर्व देवराशिसे संख्यातमें मागमात्र वैक्रियिकमिभ्रक्षययोगियोंका
प्रमाण होता है । वहाँ असंख्यात वक्की आयुकाखे वेदों और नापिकियोंकी अपेक्षा वैक्रियिकमिभ्र-
काययोगियोंके प्रमाणके नहीं छायेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमणकाख अधिक होनेसे
उनमें वैक्रियिकमिभ्रक्षययोगियोंका प्रमाण भरण होगा इसलिये वक्की वहाँ विवक्षा नहीं की है ।

१ सोपक्रमणपुनरवकाको कहे—अपठितिरिवा । वातकिन्नकामनी पसेवत्तकिरवा पज्जो ॥ तदि
तम्मे इद्वक्का तोमपकवत्तवा इ उक्कत्ता । तस्मी उक्कत्तप्पा वजुत्तपज्जमिदि उक्कत्तवा ॥ उ उक्कत्तवत्तापिरिदि
रठिभजुत्तपज्जमिदि । उक्कत्तवापिहि क्वे वत्तरेत्तवत्तिका ॥ तदि उक्कत्तवत्तावत्तिरवत्तरे तन्मिदल्लेकुत्त ॥
यो जी २११ २१२

२ वक् वक्की उपक्रमण उक्कत्त काख सोपक्रमणका मिश्रतेपठिकका दारव ॥ यो जी २११ टीका
१ व क्वी —कलेन यदिदि वदि इति पाठ

सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया,
ओध ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणा जेण दवेसुप्पन्जमाणा पलिदोबमस्स असंखेज्जदिमागमेचा सम्मंति तेणेदेसि पमाणपरूषणा ओषं, ओषेण समाणा पि धुत्तं होदि । एदेसिमवहरकात्तुप्पी धुत्तं । त सहा— आराखियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहार कात्तमावलिआए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे वेठवियमिस्सकायजोगिसासमसम्माइट्ठि अवहारकात्तो हादि । ओराखियकायजोगिअवहारकात्तमावलिआए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे वेठवियमिस्सकायजोगिमसजदसम्माइट्ठिअवहारकात्तो होदि । किं कारण ? तिरिक्खानमसंखेज्जदिमागसस दवेसुप्पणीदे । केण कात्तेण वेठवियमिस्सकायजोगिसासणे हिंत्तो ओराखियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा ? अ एस दोसो, इदो ? दवेसुप्पन्जमाणतिरिक्खसासणेहिंत्तो तिरिक्खसुप्पज्जमाणदेवसासणायमसंखेज्जगुणपादो ।

आहारकायजोगीसु पमत्तसजदा दब्बपमाणेण केवडिया, चट्ट-
वण्ण' ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्गहि और असंयतसम्यग्गहि बैकियिकमिअकाययोगी जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? ओषप्ररूपण्यके समान है ॥ ११८ ॥

कृत्ति सासादनसम्यग्गहि और असंयतसम्यग्गहि तिर्येच और मज्जुप्प देवोंमें उत्पन्न होते हुए पर्योपमके असंख्यातवर्ग मागप्रमाण पाये जाते हैं इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपण्य ओष मर्णात् ओषमरूपण्यके तुल्य होती है यह इसका अभिप्राय है । अब इनके अवहारकात्तकी उत्पादिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— औदारिकमिअकाययोगी सासादनसम्यग्गहिमेंके अवहारकात्तको भावटीके असंख्यातवर्ग मागसे गुणित करने पर बैकियिकमिअकाययोगी सासादन सम्यग्गहिमेंका अवहारकात्त होता है । असंयतसम्यग्गहि औदारिककाययोगीमेंके अवहारकात्तको भावटीके असंख्यातवर्ग मागसे गुणित करने पर बैकियिकमिअकाययोगी असंयतसम्यग्गहिमेंका अवहारकात्त होता है, क्योंकि, तिर्येचोंके असंख्यातवर्ग मागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है ।

संज्ञा— बैकियिकमिअकाययोगी सासादनसम्यग्गहि जीवोंसे औदारिकमिअकाययोगी सासादनसम्यग्गहि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्येच सासादन-सम्यग्गहि जीवोंसे तिर्येचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्गहि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

आहारकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

आहारसरीरमण्यगुणकृणोमु षरिषि वि जाणान्णं पमत्तगहमं कदं । तसं सुदु
सुगम ।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया,
संसेज्जा' ॥ १२० ॥

एतत् अग्रतियपरंपरासादावपेण आहारमिस्सकायजोग सत्तावीस २७ जीवा इति ।
अहवा आहारमिस्सकायजोग त्रिषदिहमावा संसेज्जज्जा इति, य सत्तावीस, सुपे
संसेज्जगिरस्यहाशुवचदि। मिस्सकायजोगाहितो आहारकायजोगीव संसेज्जगुणसादो व ।
य च दावमेत्य गार्ह्यं, अज्जहण्णमशुदस्ससंसे जस्स सम्भगहणादा, सम्भप्रपञ्चचद्धारिं
पञ्चचद्धारं अहण्णायं पि संसेज्जगुणचदंसुणादो ।

कम्महयकायजोगीसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवडिया, मूल्लेवं
॥ १२१ ॥

बौधन है ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारप्राप्त नही पाया जगता
है, इसका नाम कपानेके खिये प्रमत्तसंयत परका ग्रहण किया । दोष कपण सुगम है ।

आहारमिस्सकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर व्यवहार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिस्सकाययोगमें सत्तावीस
जीव होते हैं । अथवा आहारमिस्सकाययोगमें त्रिषदेकमे त्रितनी संख्या देखी हा उतने
संख्यात जीव होते हैं सत्तावीस नहीं, क्योंकि सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश अन्वया बन
गयी सफता है । तथा मिस्सयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव संख्यातगुणे है इससे भी
प्रतीत होता है कि आहारमिस्सकाययोगी जीव संख्यात हैं सत्तावीस नहीं । कारणविद
कहा आप कि दो भी तो संख्यात हैं । परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी संख्या
यहां पर ग्रहण नहीं किया है क्योंकि उसके ज्ञाप अज्जहण्णानुत्तरकप संख्यातका ही ग्रहण
किया है । अथवा, सर्व अपर्याप्तकाइसे जगत् पर्याप्त काइ मी संख्यातगुणा ॥ इससे
भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिस्सकाययोगी सत्तावीस नहीं केवा बाहिये ।

कार्मकाययोगियोंमें मिच्छाद्वि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
ओषप्रकृपाके समान हैं ॥ १२१ ॥

अदो सम्बजीवरासी गगापवाहो व्य गिरतरं विग्गाहं काऊण्यप्यञ्जदि, तेण कम्मइय रासिस्स मूलोपपरूवणा ण विरुद्धा । एदस्स सुचस्स धुवरासी पुञ्चदे । काययोगिधुव रासिमतोद्धुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । त जइ— संखेज्जाबलिपमेच अतोद्धुत्तफलेण जदि सम्बजीवरासिस्स संचमो होदि, सो सिण्हं समयाणं केचिपं संचयं समामो पि पमाणेण इच्छागुणिदफलमोवहिंय अतोद्धुत्तोवहिंयसम्बजीवरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दम्बपमाणेण केवडिया, ओघ ॥ १२२ ॥

अत्र पल्लिदेवमस्स असंखेज्जदिमामेसा तिरिक्खजसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गाहं काऊण्य देवेसुप्यञ्जमाणा लभमति, देव तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिणो पल्लिदेवमस्स असंखे ज्जदिमामेसा तिरिक्ख-देवेसु विग्गाहं करिय उववन्नमत्ता लभमति, तेण एदेसिं पमाण-परूवणा ओघपरूवणाए तुक्का । एदेसिमवहारकाऊण्यपी पुञ्चदे । असंजदसम्माइट्ठि-सासण-सम्माइट्ठिदेवतीव्वियमिस्समवहारकाळे आबलिपाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे कम्मइयकाय जोगिमसंजदसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिजवहारकाळा भवति । कुदा ? विग्गाहं करिय

क्योंकि सर्व जीवराशि गंगानदीके प्रवाहके समान गिरतर विग्रह करके उत्पन्न होती है इसलिये कर्मवक्ष्य पक्षिणी प्रकृपणा मूलोप प्रकृपणाके समान होती है, चित्त नहीं ।

अब इस सूत्रमें कहे गये कर्मवक्ष्ययोगिणोंके प्रमाणकी धुवराशि कहते हैं— काययोगिणोंकी धुवराशिसे अन्तर्गृह्यते गुणित करने पर कर्मवक्ष्ययोगिणोंकी धुवराशि होती है । उसका स्पर्शकारण इसप्रकार है— सज्जाय आवसीमाय अन्तर्गृह्यकाळके द्वारा यदि सर्व जीवराशिका सज्जाय होता है तो तीन समयमें कितना संचय प्राप्त होया इसप्रकार इच्छापक्षिसे फलपक्षिसे गुणित करके जो लब्ध होते वैसे प्रमाणपक्षिसे माजित करने पर अन्तर्गृह्यकाळके माजित सर्व जीवराशि जाती है ।

सासादनसम्पगदि और असयतसम्पगदि कर्मवक्ष्ययोगी जीव इत्यप्रमात्यकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्रकृपणाके समान पक्ष्योपमके असज्जायवर्गे माग हैं ॥१२३॥

क्योंकि पक्ष्योपमके असेव्यातवर्गे मागप्रमाण तिर्यक् असयतसम्पगदि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं । तथा पक्ष्योपमके असज्जायवर्गे मागप्रमाण देव सासादनसम्पगदि जीव भीर उठने ही तिर्यक् सासादनसम्पगदि जीव क्रमसे तिर्यक् भीर देवोंमें विग्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं इसलिये सासादनसम्पगदि भीर असंयतसम्पगदि कर्मवक्ष्ययोगिणोंकी प्रकृपणा सामान्य प्रकृपणाके तुल्य है । अब इनके अवहारकाळकी उत्पत्तिसे कहते हैं— असयतसम्पगदि भीर सासादनसम्पगदि हैचिपिद मित्र अवहारकाळको आबलीके असेव्यातवर्गे मागसे गुणित करने पर क्रमसे कर्मवक्ष्ययोगी असयतसम्पगदि भीर सासादनसम्पगदि जीवोंके अवहारकाळ होते हैं, क्योंकि, मित्र

मरमाप्तरासीए देवसु उचयन्ममाणरासिस्स असंखेज्जदिमागचावा ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुच्चप्रतिओपपत्तेण सङ्खी जीवा हवति । कुट्थो ? पदेरे बीस, तागपूरमे बीस, पुनरवि ओदरमात्था पदेरे बीस भव मवति सि ।

मागामार्ग वचइस्सामो । सम्मजीवरामि संखन्जखंडे कए ताव बहुखंडा ओरा-
सियकायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरासियमिस्सकायजोगरासी होदि ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छप्रवृत्तिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सिद्धा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोत्सवविजोगिमिच्छ-
इत्थिओ होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वडवियकायमागिमिच्छप्रवृत्तिओ होति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोत्सवविजोगिमिच्छप्रवृत्तिओ होति । सस संखेज्जखंडे
कए बहुखंडा मोत्सवविजोगिमिच्छप्रवृत्तिओ होति । सम संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्च
विजोगिमिच्छप्रवृत्तिओ होति । सस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोत्सवमिमिच्छप्रवृत्ति
होति । सर्व संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोत्सवमिमिच्छप्रवृत्ति होति । सेस संखेज्जखंडे
कए बहुखंडा मोत्सवमिमिच्छप्रवृत्तिओ होति । सस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चममिमिच्छ-

करके मरनेवासी राशि केबोमि उत्पन्न होनेवासी राशिसे अक्षरपातसे मागमात्र पारि जाती है ।

कर्मजकाययोगी सपोगिकेवली जीव कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व भाषावर्गेके उपदेशानुसार सपोगिकेवलीयोमि कर्मजकाययोगी जीव सप्त
होते हैं क्योंकि प्रत्येक समुदायमें बीस लोकपूरा समुदायमें बीस और उतरते हुए प्रत्येक
समुदायमें पुनः बीस जीव होते हैं ।

अब मागामात्रके बतलाते हैं— सर्व जीवराशिसे सख्यात ऋह करने पर इनमेंसे
बहुमात्रप्रमाण धीवरिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर
बहुमात्रप्रमाण धीवरिकमिच्छाकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त ऋह करने पर
बहुमात्रप्रमाण कर्मजकाययोगी मिथ्यावृत्ति राशि है । शेष एक भागके अनन्त ऋह करने पर
बहुमात्रप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र अनुभव
ब्रह्मयोगी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र वैदिक-
काययोगी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर इनमेंसे बहुमात्र
वैदिक ब्रह्मयोगी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र
भूया ब्रह्मयोगी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र सप्त
ब्रह्मयोगी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र अनुभव
मनोबोधी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र इन्द्र
मनोबोधी मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र भूया मनोबोधी
मिथ्यावृत्ति जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात ऋह करने पर बहुमात्र सप्त मनोबोधी

मरमाणरासीय देवसु त्वयन्त्रमाणरासिस्स असंखेज्जदिमागचाधो ।

सजोगिकेवली द वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ १२३ ॥

एतत् पुन्यप्रतिपादयेत् सद्यो जीवा इति । इदो ! पदेरी बीस, संगपुत्र बीस, पुत्ररि ओदरमाया पदर बीस च वरति वि ।

मागामागं वत्तइस्सामो । सख्यजीवरामि सखेज्जखंडे कए सत्थ बहुलुडा ओर-
छियकपजेतारासीआ । सेसमसंख जखंडे कए बहुलुडा ओरासिमिस्सकपयजोगरासी होदि ।
सेसमसंखजखंडे कए बहुलुडा कम्मइयकपयमिच्छाप्रतिपत्ती होदि । सेसमसंखजखंडे कए
बहुलुडा सिद्धा होति । सेसमसंख जखंडे कए बहुलुडा असंख्यमासवविज्जागिमिच्छा-
इड्डिगो होति । सेस संखजखंडे कए बहुलुडा वेतमियकपयजोगिमिच्छाप्रतिपत्ती होति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुलुडा सख्यमासवविज्जागिमिच्छाप्रतिपत्ती होति । ससं संखजखंडे
कए बहुलुडा मासवविज्जागिमिच्छाप्रतिपत्ती होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुलुडा सख्य
वविज्जागिमिच्छाप्रतिपत्ती होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुलुडा असंख्यमोसमममिच्छाप्रति-
पत्ती होति । ससं संखेज्जखंडे कए बहुलुडा सख्यमोसमममिच्छाप्रतिपत्ती होति । ससं संखजखंडे
कए बहुलुडा मोसमममिच्छाप्रतिपत्ती होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुलुडा सख्यमममिच्छा

करके मरनेवाली राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिसे असंख्यातमें मातृमात्र पारि जाती है ।

कर्मफलप्रयोगी सयोगिदेवली जीव कितने हैं ? सस्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व जाकार्योके कपेसाजुसार सयोगिकेवलीमें कर्मफलप्रयोगी जीव सात
होते हैं क्योंकि प्रतर समुदायमें बीस लोकपूज्य समुदायमें बीस और उत्तरते रूप प्रतर
समुदायमें पुनः बीस जीव होते हैं ।

यस्य मागामागको वत्तइस्सामो हैं— सर्व जीवराशिसे संख्यात खंड करने पर इनमेंसे
बहुमागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर
बहुमागप्रमाण औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि है । दोष एक मागके अत्यंत खंड करने पर
बहुमागप्रमाण कर्मफलप्रयोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । दोष एक मागके अत्यंत खंड करने पर
बहुमागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुमाग अनुमय
वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके सख्यात खंड करने पर बहुमाग वैकल्पिक
काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर इनमेंसे बहुमाग
कर्म वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग
मुक्त वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग सख्य
वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके सख्यात खंड करने पर बहुमाग अनुमय
मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग कर्म
मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग मुक्त मनोयोगी
मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग सत्य मनोयोगी

होति । सेसमसखेजखंडे कए बहुखडा बेठबियपमिस्सकायजोगिमिच्छाएहिरासी होति । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा बेठबियकायजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा असच्चमोसवचिजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा सच्चमोसवचिजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा मोसवचिजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा सच्चमोसमणजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा सच्चमोसमणजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा मोसमणजोगिअसजदसम्माएहिरासी होति । सेसमसखेजखंडे कए बहुखडा सच्चमणजोगिअसजदसम्माएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा बेठबियकायजोगिसम्माभिच्छाएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा असच्चमोसवचिजोगिसम्माभिच्छाएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा सच्चमोसवचिजोगिसम्माभिच्छाएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा मोसवचिजोगिसम्माभिच्छाएहिरासी होदि । सेस संखेजखंडे कए बहुखडा सच्चवचि-

[illegible]

मरमाणरासीए देवेसु उबबब्जमाणरासिस्स असत्तेब्जदिमाणचादो ।

सजोगिफेवली दब्बपमाणेण केवळिया, संसेज्जा ॥ १२३ ॥

परस्व पुष्पपरिखापसेण सङ्गी जीना हन्ति । कुदो ! पदरे बीस, सोगपदरे बीस,
पुवरवि ओदरमाणा पदर बीस चैव मर्वन्ति चि ।

मागामार्गं बध्यस्सामा । सप्पजीवरामिं सयेज्जखंडे कए सत्थं बहुसुंढा ओर-
 स्थियकप्यजोगरासीजो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसुंढा ओरस्थियमिस्सकायजोगरासी होदि ।
 सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसुंढा कम्मइयकायमिच्छाप्रवृत्तिरासीं हादि । सेसमसंखेज्जखंडे कए
 बहुसुंढा सिद्धा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसुंढा असप्पमोत्सवविभागिमिच्छा
 इद्विजो होति । सेस सयेज्जखंडे कए बहुसुंढा वउत्थियकायभागिमिच्छाप्रवृत्तिजो होति ।
 सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसुंढा सप्पमोत्सवविजोगिमिच्छाप्रवृत्तिजो होति । ससं संखेज्जखंडे
 कए बहुसुंढा मोत्सवविजोगिमिच्छाप्रवृत्तिजो होति । सेम संखेज्जखंडे कए बहुसुंढा सप्प
 विजोगिमिच्छाप्रवृत्तिजो होति । सेसं सयेज्जखंडे कए बहुसुंढा असप्पमांसमममिच्छाप्रवृत्ति
 होति । ससं संखेज्जखंडे कए बहुसुंढा सप्पमोत्समममिच्छाप्रवृत्ति होति । सेसं सयेज्जखंडे
 कए बहुसुंढा मोत्समममिच्छाप्रवृत्तिजो होति । ससं सयेज्जखंडे कए बहुसुंढा सप्पमममिच्छा

करके मरनेबाद पशि बेबोमें उत्पन्न होनेवाली राक्षिके अक्षरप्यातखें मागामात्र पारं जाती है ।

कार्मवकाययोगी सयोगिनेबली भीष कियने हे ! संख्यात हे ॥ १२३ ॥

पूर्व जागतिके व्यवस्थानुसार सरोपिकेवर्षिर्नामै नार्मैकवापयोषी जीव सार
होते हैं क्योंकि प्रसर समुदायमें जीव कोकपूर्ण समुदायमें जीव बीर उतरते हुए प्रसर
समुदायमें पुनः जीव जीव होते हैं ।

[illegible]

योगिमम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेत संखज्जखंड कए बहुखंडा असबमोसमज्जाणि-
सम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेत संखज्जखंड कए बहुखंडा सवमासमज्जाणिसम्मामिच्छा-
द्द्विरासी इति । सेम संखज्जखंडे कए बहुखंडा मासमज्जाणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेम
संखज्जखंडे कए बहुखंडा सवमज्जाणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । आपसासणरासीरा
आपसम्मामिच्छाद्द्विरासी संखज्जगुणा पि मुचमिद्दा । तपहि आपसम्मामिच्छाद्द्विरासिस्स
मंखज्जदिमाणा सवमज्जाणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी कए आपसासणरासीरा मंखज्जगुणा
इति पि उच बुच्चद- जागद्वागुणगारादीं सम्मामिच्छाद्द्विरासिं पडि सासणमम्मा
द्द्विरासिस्स गुणगारा बहुगा, तव मवमज्जाणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी सेमम्म संखज्ज
माणा । त कए कएद सुत्तण विणा ? पत्ति सुत्तं वक्ताण वा, किंतु अपत्तिपवपवम
केवलमपि । समं मखज्जखंड कए बहुखंडा वडिपकापयोगिमासवसम्मद्द्विरासी
इति । सेम संखज्जखंड कए बहुखंडा जमवमज्जाणिसवविज्जाणिमासवसम्मद्द्विरासी इति ।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने
पर बहुभाग अनुमप मनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति है । शेष एक भागके संख्यात बंड
करने पर बहुभाग उमपमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति है । शेष एक भागके संख्यात
बंड करने पर बहुभाग सुवमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति है । शेष एक भागके
संख्यात बंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति है । शेष
साक्षात्सत्यवचनदि जीवत्यतिसे शेष सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति संख्यातगुणी है यह सूत्र सिद्ध
है । अब शेष सम्मग्निरप्याहति पत्तिके संख्यात में माप्यमाण सत्यमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति
जीवत्यति शेष साक्षात्सत्यवचनदि जीवत्यतिसे संख्यातगुणी कैसे है, ज्येदे इसी विषयके दृष्टि
पर करते हैं— शेषसत्यके गुणकारसे सम्मग्निरप्याहति जीवत्यतिजी शेषसाक्षात्सत्यवचनदि
जीवत्यति गुणकार बहुत है इसलिये सत्यमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यति
मगामागमें सुवमनोयोगी सम्मग्निरप्याहतिप्रत्य प्रमाण धात्रेके जगन्तर जो एक भाग शेष
पहता है उसका संख्यातका भाग है ।

संका—सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है किंतु ध्याना-
योगी वचन ही केवल पाये जाते हैं जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सत्यमनोयोगी सम्मग्निरप्याहति जीवत्यतिके जगन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके
संख्यात बंड करने पर बहुभाग वैकल्पिकवचनयोगी साक्षात्सत्यवचनदि जीवत्यति है । शेष
एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग अनुमपवचनयोगी साक्षात्सत्यवचनदि जीवत्यति

वेदध्वय-वउध्वयमिस्तकायवोगीण सत्त्वाणस्त देवगदमगो । वधिजोगि-असञ्चमोस-
वधिजोगीण सत्त्वाणस्त पंचिन्द्रियतिरिक्खपज्जवमगो । सेसकायवोगीसु मिच्छद्विहीनं
सत्त्वाणं णत्थि । सासनसम्माद्वि-सम्माभिच्छाद्वि-असंभवसम्माद्वि-सज्जदासज्जदार्थं
सत्त्वाणस्त ओधमगो ।

परत्थाणं पर्यदं । सञ्चस्थोवा असञ्चमोसमनजोगिणो वचरि उवसामगा । असञ्च
मोसमनजोगियो वचरि खवगा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिणो सजोगिकेवलीं
सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिणो अप्पमचसंजदा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमन-
जोगियो पमचसंजदा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिसज्जदसम्माद्विजवहारकालो
असत्त्वेज्जगुणो । असञ्चमोसमनजोगिसम्माभिच्छाद्विजवहारकालो असत्त्वेज्जगुणो । असञ्च-
मोसमनजोगिसासनसम्माद्विजवहारकालो सत्त्वेज्जगुणो । असञ्चमोसमनजोगिसंजदा-
संजदवहारकालो असत्त्वेज्जगुणो । तस्सेव द्व्यमसत्त्वेज्जगुणं । असञ्चमोसमनजोगि-
सासनसम्माद्विद्व्यमसत्त्वेज्जगुणं । असञ्चमोसमनजोगिसम्माभिच्छाद्विद्व्यं सत्त्वेज्जगुणं ।

स्वस्थान अस्यबहुत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी और अनुमयमनोयोगीयोंका स्वस्थान
अस्यबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यक् फर्मात्तोंके स्वस्थान अस्यबहुत्वके समान है । वेप कपयदेवियोंमें
मिथ्याद्वि जीवोंके स्वस्थान अस्यबहुत्व नहीं पाया जाता है । क्योंकि सासादनसम्पन्नादि,
सम्पन्निमिथ्याद्वि जसंयतसम्पन्नादि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अस्यबहुत्व और स्वस्थान
अस्यबहुत्वके समान है ।

अथ परत्थानमें अस्यबहुत्व प्रकृत है । अनुमय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती
उपध्यामक सबसे स्तोक है । अनुमय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती सपक उपध्यामकोंसे
सरवातगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमय
मनोयोगी अप्पमचसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी प्रमच
संयत जीव उक्त अप्पमचसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमयमनोयोगी असंयतसम्पन्नादियोंका अव-
हारकाल उक्त प्रमचसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी सम्पन्निमिथ्यादियोंका अवहार
काल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी सासादनसम्पन्नादियोंका
अवहारकाल उक्त सम्पन्निमिथ्याद्वि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी संयता-
सयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्पन्नाद्वि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । क्योंकि अनुमय
मनोयोगी संयतासयतोंका द्व्य उक्त अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी
सासादनसम्पन्नादियोंका द्व्य उक्त संयतासंयतोंके द्व्यसे असंख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी
सम्पन्निमिथ्यादियोंका द्व्य उक्त सासादनसम्पन्नादियोंके द्व्यसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनो

वेदध्विय-वेदध्वियमिस्त्रकाययोगीण सत्याणस्त देवगृहमगो । ष्विजोगि-असञ्चमोस
ष्विजोगीण सत्याणस्त पश्चिद्वियविरिक्खपञ्चमगो । सेसकाययोगीसु मिच्छाद्विणी
सत्याणं णत्थि । सासणसम्माद्वि-सम्माभिच्छाद्वि असवदसम्माद्वि-समदासवदत्थं
सत्याणस्त ओपमगो ।

परस्याणे पयंद । सञ्चरथोवा असञ्चमोसमणजोगिणो चचारि उवसामगा । असञ्च-
मोसमणजोगिणो चचारि खवगा संसेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवली'
संसेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसज्जदा संसेज्जगुणा । असञ्चमोसमण-
जोगिणो पमत्तसज्जदा संसेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिअसवदसम्माद्विअवहारकालो
असंसेज्जगुणो । असञ्चमोसमणजोगिसम्माभिच्छाद्विअवहारकालो असंसेज्जगुणो । असञ्च
मोसमणजोगिसासणसम्माद्विअवहारकालो संसेज्जगुणो । असञ्चमोसमणजोगिसज्जदा-
सज्जदअवहारकालो असंसेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंसेज्जगुणं । असञ्चमोसमणजोगि-
सासणसम्माद्विद्वन्दमसंसेज्जगुणं । असञ्चमोसमणजोगिसम्माभिच्छाद्विद्वन्दं संसेज्जगुणं ।

स्वस्थान अस्पृहत्वं देवगतिके समान है । ब्रह्मयोगी और अनुमयब्रह्मयोगियोंका स्वस्थान
अस्पृहत्वं पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंके स्वस्थान अस्पृहत्वंके समान है । शेष कार्ययोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अस्पृहत्वं नहीं पाया जाता है । क्योंकि साक्षात्तसम्पददृष्टि,
सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि अर्थात्सम्पत्ति और संघातसम्पत्तोंका स्वस्थान अस्पृहत्वं शेष स्वस्थान
अस्पृहत्वंके समान है ।

अथ परस्थानमें अस्पृहत्वं प्रकृत है । अनुमय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती
उपशमक सबसे स्तोत्र है । अनुमय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशमकोंसे
संप्राप्तगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त क्षपकोंसे संघातगुणे हैं । अनुमय
मनोयोगी अप्पमत्तसपत्त जीव उक्त सयोगिकेवलीयोंसे संप्राप्तगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी पमत्त
संपत्त जीव उक्त अप्पमत्तसपत्तोंसे संघातगुणे हैं । अनुमयमनोयोगी अर्थात्सम्पददृष्टियोंका अथ
हारकाल उक्त पमत्तसंपत्तोंसे अर्थात्संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनोयोगी सम्पत्तिमिथ्यादृष्टियोंका अवहार
काल उक्त अर्थात् अवहारकालसे अर्थात्संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनोयोगी साक्षात्तसम्पददृष्टियोंका
अवहारकाल उक्त सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनोयोगी संपत्ता
सपत्तोंका अवहारकाल उक्त साक्षात्तसम्पददृष्टि अवहारकालसे अर्थात्संप्राप्तगुणा है । उन्हीं अनुमय
मनोयोगी संपत्तासपत्तोंका प्रथम उन्हींके अवहारकालसे अर्थात्संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनोयोगी
साक्षात्तसम्पददृष्टियोंका प्रथम उक्त संपत्तासपत्तोंके प्रथमसे अर्थात्संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनोयोगी
सम्पत्तिमिथ्यादृष्टियोंका प्रथम उक्त साक्षात्तसम्पददृष्टियोंके प्रथमसे संप्राप्तगुणा है । अनुमयमनो

१ इति ब्रह्मयोगी इति पाठः ।

२ इति अर्थः एता इति पाठः ।

असंख्यमासमणयोगिप्रसंख्यदसम्माइद्विद्वमसंखेज्जगुणं । पत्तिदोवममसंखेज्जगुणं । असं-
 खोसमणयोगिमिच्छाद्विद्वमहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंमसंखं असंखेज्जगुणा ।
 सेडी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदमसंखेज्जगुण । लोमो असंखेज्जगुणो ।
 एवं पचारिमय-पंचदधिमोगीण परत्थाणप्पावहुगं वत्तय । वेठभियक्कयजोगीसु सम्भत्तेतो
 असंखदसम्माइद्विद्वमहारकालो । उवरि मणनोगपरत्थाणमंगो । वठभियमिस्सक्कयजोगीसु
 सम्भत्तावो असंखदसम्माइद्विद्वमहारकालो । सासणसम्माइद्विद्वमहारकालो असंखेज्जगुणो ।
 तस्मिं दव्वममसंखेज्जगुणं । असंखदसम्माइद्विद्वमसंखेज्जगुण । उवरि मणजागिपरत्थाण-
 मंगो । सम्भत्तेत्ता क्कयजोगीणा उवत्तामगा । रुधगा-संखेज्जगुणा । एवं वेयवर्गं ज्ञाप पत्ति-
 दोवमं ति । पत्तिदोवमादो उवरि मिच्छाद्विद्वमजगुणा । एवं आराळियक्कयजोगीसु ति
 वत्तयं । मेत्ताळियमिस्सक्कयजोगीसु सम्भत्तेत्ता सजोगिकेवडी । असंखदसम्माइद्विद्वमसंखेज्ज-
 गुणा । सासणमम्मत्तद्विद्वमहारकालो असंखेज्जगुणा । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । पत्तिदो-
 वममसंखेज्जगुणं । मिच्छाद्विद्वमजगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु वत्ति सत्थाण परत्थाणं

योगी असंखतसम्पदद्विष्योक्तं द्रव्यं कल सम्पत्तिमिच्छाद्विष्योक्तं द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पत्त्यो-
 पम कल असंखतसम्पदद्विष्योक्तं द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुपपन्नमनोयोगी मिच्छाद्विष्योक्तं
 अन्वहारकाल पत्त्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्नीची विक्कंमसूची अन्वहारकालसे असंख्यातगुणी
 है । जगमेची विक्कंमसूचीसे असंख्यातगुणी है । उन्नी अनुपपन्नमनोयोगी मिच्छाद्विष्योक्तं
 द्रव्य जगमेचीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुण है । कोक
 जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार दोष चार मनोयोगी बीर पांचों कथनयोमिष्योक्तं
 परत्थाण अन्वहारकाल कलना चाहिये । वैद्विषिककाययोगियोंमें असंखतसम्पदद्विष्योक्तं अन्वहार
 काल सबसे स्तोत्र है । इसक ऊपर मनोयोगके परत्थाण अन्वहारकालके समान ज्ञानना
 चाहिये । वैद्विषिकमिध्मकाययोगियोंमें असंखतसम्पदद्विष्योक्तं अन्वहारकाल सबसे स्तोत्र
 है । सासादनसम्पदद्विष्योक्तं अन्वहारकाल असंखतसम्पदद्विष्योक्तं अन्वहारकालसे असंख्यात
 गुणा है । उन्नी सासादनसम्पदद्विष्योक्तं वैद्विषिकमिध्मकाययोगियोंका द्रव्य अपने अन्वहारकालसे
 असंख्यातगुणा है । असंखतसम्पदद्विष्योक्तं वैद्विषिकमिध्मकाययोगियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे
 असंख्यातगुणा है । इसक ऊपर मनोयोगियोंके परत्थाण अन्वहारकालके समान ज्ञानना चाहिये ।
 काययोगी उपशमक सबसे स्तोत्र है । काययोगी सबकाययोगी उपशमकोंसे संख्यातगुण है ।
 इसीप्रकार पदचपमक से ज्ञाना चाहिये । पत्त्योपमक ऊपर काययोगी मिच्छाद्वि जीव अनन्त
 गुण है । इसीप्रकार भौतिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये । भौतिकमिध्मकाय
 योगियोंमें सयोगिकेवमी जीव सबसे स्तोत्र है । असंखतसम्पदद्वि जीव सयोगिकेवमियोंसे
 संख्यातगुण है । सासादनसम्पदद्विष्योक्तं अन्वहारकाल असंखत सम्पदद्विष्योक्तं असंख्यातगुणा
 है । उन्नीका द्रव्य अपने अन्वहारकालसे असंख्यातगुणा है । पत्त्योपम सासादनसम्पदद्वि भीरा
 रिमिध्मकाययोगियोंमें असंख्यातगुणा है । भौतिकमिध्मकाययोगी मिच्छाद्वि जीव पत्त्योपमसे

वा । कम्मइयकायवोगीसु सञ्चरयोवा सजागिणो । असंजदसम्माइद्धिअवहारफालो असं
खेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दण्डमसंखेज्जगुणं ।
असंजदसम्माइद्धिदण्डमसंखेज्जगुणं । पल्लिदोवममसंखेज्जगुण । कम्मइयकायवोगिमिज्ज-
इद्धिगो अणंतगुणा ।

सञ्चपरस्याणं पयद । सञ्चरयोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगि-
जीवा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तमज्जा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जा संखेज्जगुणा । सञ्चसिम्-
सज्जदसम्मादिद्धिण अवहारफालो असंखेज्जगुणो । एव नेयम्भ ज्ञाव पल्लिदोवम पि ।
किमहुमेव जायित्ते ? वडम्बियमिस्स-ओराखियमिस्स-कम्मइयकायवोगीसु सासणसम्मा-
इद्धि असंजदसम्माइद्धिरासीण माहप्प ण जाणित्तिदि पि । पुञ्च किमिदं परव्विदं ? य,
अद्वितियाणं तस्स अभिप्पायसन्दरिसणहुत्तादो । पल्लिदोवमाजो उवरि वन्धियोगिअवहारफालो
असंखेज्जगुणो । असञ्चमासवन्धियोगिअवहारफालो विमसाहिओ । वडम्बियकायजोगि-

अनन्तगुणे है । आहारकाययोग और आहारकमिषकाययोगमें स्वरक्षान अथवा परस्यान
अस्पृहत्त्व नहीं पाया जाता है । कर्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेपक्षी जीव सबसे स्तोक
है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाळ सयोगियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । साक्षात्
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाळ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । कर्मका
द्रव्य अपने अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य साक्षात् द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । पर्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । कर्मणकाय-
योगी मिषादृष्टियोंका द्रव्य पर्योपमसे अनन्तगुणा है ।

अब सब परस्यानमें अस्पृहत्त्व प्रकट है । आहारमिषकाययोगी जीव सबसे स्तोक है ।
आहारकाययोगी जीव आहारमिष जीवोंसे संख्यातगुणे है । अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाय-
योगियोंसे संख्यातगुणे है । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे है । सत्रीका असंयत-
सम्यग्दृष्टि अवहारकाळ प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पर्योपमतक छे
जाना चाहिये ।

सुंफा—येसा किसलिये समझें ?

समाधान—किसियेकमिष और वीहारिकमिष और कर्मणकाययोगियोंमें साक्षात्
सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दृष्टियोंका माहात्म्य अथात् परस्पर अस्पृहत्त्व नहीं जाना
जाता है इसलिये ऐसा समझना चाहिए ।

सुंफा—तो फिर इनके अस्पृहत्त्वका पक्षे प्रकरण किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं क्योंकि वहाँ दूसरे भाषाओंका अभिप्रायान्तर दिखाना उनके
अस्पृहत्त्वके कथनका प्रयोजन था ।

पर्योपमके ऊपर वज्जनयोगियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । अनुपपन्नजनयोगि-
योंका अवहारकाळ वज्जनयोगियोंका अवहारकाळसे विशेष अधिक है । वैमिषिककाययोगियोंका

अवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । एव सञ्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सञ्चवचिजोगि-
मवचोतीर्ण अवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । असञ्चमोसमणजोगीर्ण अवहारकाष्ठो विसेशाहो ।
सञ्चमोसमणजोगिअवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । एवं मोसमणजोगि-सञ्चमणजोगि-वेठविय-
मिस्सकायजोगीर्ण अवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । तस्सेव विक्खंमसूई असंस्तेज्यगुणो ।
सञ्चमणजोगिविक्खंमसूई संस्तेज्यगुणो । एवं मोसमणजोगि-सञ्चमोसमणजोगि-असञ्च-
मोसमणजोगीर्ण । तदो मणजोगिविक्खंमसूई विसेशाहिया । सञ्चवचिजोगिविक्खंमसूई
संस्तेज्यगुणो । एव मोसवचिजोगि- (सञ्चमोसवचिजोगि) -कठवियकायजोगि-असञ्च-
मोसवचिजोगिविक्खंमसूई संस्तेज्यगुणो । वचिजोगिविक्खंमसूई विसेशाहिया ।
सेही असंस्तेज्यगुणो । तदो वेठवियमिस्सकायजोगिमिच्छद्विदम्भमसंस्तेज्यगुणं । सञ्चमण-
जोगिदम्भं संस्तेज्यगुणं । एवं मोसमणजोगि-सञ्चमोसमणजोगि असञ्चमोसमणजोगि-
दम्भानि बहाकमेण संस्तेज्यगुणानि । मणजोगिदम्भं विसेशाहिय । सञ्चवचिजोगिदम्भं

अवहारकाष्ठ अनुमयवचनयोगियोंके अवहारकाष्ठसे संख्यातगुणो है । इसीप्रकार उमय-
वचनयोगी मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाष्ठ उत्तरोत्तर संख्यातगुण
है । अनुमयमनोयोगियोंका अवहारकाष्ठ सत्यवचनयोगियोंके अवहारकाष्ठसे विशेष अधिक
है । उमयमनोयोगियोंका अवहारकाष्ठ अनुमयमनोयोगियोंके अवहारकाष्ठसे संख्यातगुण
है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी सत्यमनोयोगी और वैद्वियिकमिधकाययोगियोंका अवहारकाष्ठ
उत्तरोत्तर संख्यातगुण है । जहाँकी जहाँकी वैद्वियिकमिधकाययोगियोंकी विष्मसूची जहाँके
अवहारकाष्ठसे असंख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्मसूची वैद्वियिकमिधकाययोगि-
योंकी विष्मसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी उमयमनोयोगी और अनुमय-
मनोयोगियोंकी विष्मसूची भी समझना चाहिये । अनुमयमनोयोगियोंकी विष्मसूचीसे मनो-
योगियोंकी विष्मसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्मसूची मनोयोगियोंकी
विष्मसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी उमयवचनयोगी वैद्वियिककाययोगी
और अनुमयवचनयोगियोंकी विष्मसूचीयों की उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगियोंकी
विष्मसूची अनुमयवचनयोगियोंकी विष्मसूचीसे विशेष अधिक है । जगजेणी वचनयोगि-
योंकी विष्मसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगजेणीसे वैद्वियिकमिधकाययोगियोंका द्रव्य
असंख्यातगुणो है । सत्यमनो योगीका द्रव्य वैद्वियिकमिधकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणो है ।
इसीप्रकार मृषामनोयोगी उमयमनोयोगी अनुमयमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणो
है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुमय मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका

संखेज्जगुण । एवं मोसवचिओगि-सन्चमोसवचिओगि-वठम्बियकायओगि-असन्चमोसवचि
ओगिदम्बाणि जहाक्केण संखेज्जगुणाणि । तदो वचिओगिअं विसेसाहिय । पदरमसंखेज्ज
गुण । सोगो असंखेज्जगुणो । तदो अज्जणो अगतगुणा । कम्मइयकायजागिणो अमंत
गुणा । ओरात्थियमिस्सकायजागिणो असंखेज्जगुणा । ओरात्थियकायओगिणो मिच्छाइट्ठी
संखेज्जगुणा ।

एव ओगमगणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी द्वयपमाणेण केवाढिया,
देवीहि सादरेय' ॥ १२४ ॥

देवगह्मगणाए देवीण पमाणमेत्थिय इदि चि सुचम्हि ण बुच, तो कच आणिज्जे
इत्थिवेदरासी देवीहिता सादरेगो इदि ? अदि वि एत्थ ण बुचो तो वि 'ईसाणकप्प
वासियदेवाप्पमुवरि तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा
संखेज्जगुणा । तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । पदमाए पुढचीए नेरया असंखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार भुवायजनयोगी उभययजनयोगी
पैश्विककाययोगी और अनुमम यजनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । अनुमम
यजनयोगियोंके द्रव्यसे यजनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है । अतएव यजनयोगियोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । लोक अतएवसे असंख्यातगुणा है । लोकसे जयोगी जीव जनस्तगुणे है ।
जयोगियोंसे कर्मणकाययोगी जीव जनस्तगुणे है । कर्मणकाययोगियोंसे औदारिकमिन्नकाययोगी
जीव असंख्यातगुणे है । आदारिकमिन्नकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी मिथ्याइदि जीव
संख्यातगुणे है ।

इसप्रकार योगमायणा समान हुई ।

वेदमार्गवाके अनुवादसे स्त्रीविदियोंमें मिथ्याइदि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने है ? देवियोंसे कुछ अधिक है ॥ १२४ ॥

श्लोक—देवगति मागणामे देवियोंका प्रमाण इतना है वह सुखमें नहीं कहा है
अतएव यह कैसे जाना जाता है कि स्त्रीदेवगति देवियोंसे साधिक होती है-।

समाधान—यद्यपि यहाँ जीवद्रव्यमें यह बात नहीं कही है तो भी ऊपर ईशान
कल्पवासी देवोंके यहाँ पर देवियों उनसे संख्यातगुणी हैं । उनसे सीधम कल्पवासी देव
संख्यातगुणे हैं और यहाँ पर देवियों देवोंसे संख्यातगुणी हैं । यहाँ पृथिवीमें
नारदी जीव सीधम कल्पकी देवियोंसे असंख्यातगुणे हैं । मणनवासी देव नारदियोंसे

अवहारकालो संलेख्यगुणो । एवं सृष्ट्यमोसवचिजागि-मोसवचिजोगि-सृष्ट्यनचिजोगि-
मचजोगीत्यं अवहारकालां संलेख्यगुणा । असृष्ट्यमोसमजजोगीर्णं अवहारकालो विसंसाह्यो ।
सृष्ट्यमोसमजजोगियजवहारकालो संलेख्यगुणो । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमजजोगि-वेठमिय
मिस्सक्यजोगीर्णं अवहारकाला संलेख्यगुणा । तस्सेव विवर्तमस्यं असंलेख्यगुणा ।
सृष्ट्यमजजोगिमिविवर्तमस्यं संलेख्यगुणा । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमोसमजजोगि-जसृष्ट्य-
मोसमजजोगीर्णं । तयो मजजोगिविवर्तमस्यं विसंसाह्यो । सृष्ट्यनचिजोगिविवर्तमस्यं
संलेख्यगुणा । एवं मोसवचिजोगि-(सृष्ट्यमोसवचिजागि)-वठम्वियक्यजोगि-जसृष्ट्य-
मोसवचिजोगिविवर्तमस्यं विसंसाह्यो । वचिजागिविवर्तमस्यं विसंसाह्यो ।
सेढी असंलेख्यगुणा । तयो वेठम्वियमिस्सक्यजोगिमिच्छद्विद्वम्भसंलेख्यगुणां । सृष्ट्यमज-
जोगिमिच्छं संलेख्यगुण । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमोसमजजोगि असृष्ट्यमोसमजजोगि-
द्वन्द्वमि जहाकमज संलेख्यगुणापि । मजजोगिमिच्छं विसंसाह्यो । सृष्ट्यवचिजोगिमिच्छं

अवहारकालं अनुमयवचनयोगिपोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार जम-
नचनयोगी भुपावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीर्णो अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुण
है । अनुमयमनोयोगिपोंके अवहारकाल सत्यवचनयोगिपोंके अवहारकालसे विशेष अधिक
है । जमनमनोयोगिपोंके अवहारकाल अनुमयमनोयोगिपोंके अवहारकालसे संख्यातगुण
है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी सत्यमनोयोगी और वैकल्पिकमिच्छावचनयोगिपोंके अवहारकाल
उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । जहाँकी जहाँ वैकल्पिकमिच्छावचनयोगिपोंकी विष्ममसूची उन्हींके
अवहारकालसे संख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगिपोंकी विष्ममसूची वैकल्पिकमिच्छावचनयोगि-
पोंकी विष्ममसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार भुपावचनयोगी, जमनमनोयोगी और अनुमय-
मनोयोगिपोंकी विष्ममसूची भी समाख्या चाहिये । अनुमयमनोयोगिपोंकी विष्ममसूचीसे अने-
कोगिपोंकी विष्ममसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगिपोंकी विष्ममसूची मनोयोगिपोंकी
विष्ममसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार भुपावचनयोगी जमनमनोयोगी वैकल्पिकवचनयोगी
और अनुमयवचनयोगिपोंकी विष्ममसूचीपों भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगिपोंकी
विष्ममसूची अनुमयवचनयोगिपोंकी विष्ममसूचीसे विशेष अधिक है । जगजोगी वचनयोगि-
पोंकी विष्ममसूचीसे संख्यातगुणी है । जगजोगीसे वैकल्पिकमिच्छावचनयोगिपोंके द्रव्य
संख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगिपोंके द्रव्य वैकल्पिकमिच्छावचनयोगिपोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार भुपावचनयोगी, जमनमनोयोगी अनुमयमनोयोगिपोंके द्रव्य यथानुसंगे संख्यातगुणा
है । मनोयोगिपोंके द्रव्य अनुमय मनोयोगिपोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगिपोंके

सप्तदे चद्रुगुणद्व्यपिणो जीवा पलिशोचमस्स असंखेज्जदिमागमेचा वेमेदेसिं परूवणा ओष होदि । ओषपमाणादो ऊणइत्थिवेदगुणपडिबण्णार्ण कपमोघत्तं शुद्धे ? १, ओषमिव ओषमिदि उपयारेण तिससे आपचसिद्धिदो । आपअसज्जदसम्माइडिअवहारकाल-मावल्याए असंखज्जदिमाएण गुणिदे इत्थिवेदअसज्जदसम्माइडिअवहारकाले होदि । कुदो ? फारिमरिगसमाणाइत्थिवेदेण टन्हातइययाणमित्थीण सुणिदाणाण पउर सम्मत्तपरिणामा-ममबादो । तम्हि आवल्याए असंखज्जदिमाएण गुणिदे सम्मामिच्छइडिअवहारकालो होत्ति । तम्हि ससज्जस्वेहि गुणिदे सासणमम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवल्याए असंखज्जदिमाएण गुणि सज्जदसंज्जअवहारकालो होदि । एदहि अवहारकालेहि पलिशोचमे मागे हिद सग-मगगसीओ भवति ।

पमत्तसज्जदण्डुडि जाव अणियट्टिवादरसापराइयपविट्ठ उवसमा ख्वा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ १२६ ॥

स्यानमे स्त्रीवेदी जीव ओषप्ररूपणाक समान पन्थोपमके असंख्यातवें माग ॥ १२५ ॥

क्योंकि ये चार गुणस्थानवाली जीव पन्थोपमके असंख्यातवें मागप्रमाण हैं इसलिये इनकी प्ररूपणा ओषप्ररूपणाके समान होती है ।

श्रुति— गुणस्थानप्रतिपक्ष ओषप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपक्ष स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओषप्रमाण कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि ओषके समानको भी ओष कहा जाता है इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओषत्व सिद्ध हो जाता है ।

ओष असंखसंख्याद्वयोंके अवहारकालको आबलीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असंखसंख्याद्वयोंका अवहारकाल होता है क्योंकि, उपलब्धी अग्निके समान स्त्रीवेदसे जिनका इच्छा जल रहा है और जो कामाभिजाय सहित है, वेही स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्पन्नपरिणाम समर्थ नहीं है । यथात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्पन्नद्विजीव नहीं होते हैं । इस स्त्रीवेदी असंखसंख्याद्वयोंके अवहारकालको आबलीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्पन्नपरिणामद्वयोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सासाधनसम्पन्नद्वयोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सासाधनसम्पन्नद्वयोंके अवहारकालको आबलीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी संख्यासंख्यातवें अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पन्थोपमके माजिन करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण जाता है ।

प्रमत्तसंख्यत गुणस्थानसे ठेकर अनिष्टविचाररसापरायप्रविष्ट उपश्रमक और

गुणा । मयणवासिपदेवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंचिदियतिरिक्ख
 लोणिपीओ संखेज्जगुणाओ । माणवतदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ ।
 ओदसिपदेवा संखेज्जगुणा । दवीओ संखेज्जगुणाओ चि ' एदम्हादो सुत्तामपसुपदा
 कप्पिक्खदे अहा देवानां संखेज्जगुणा मागा दवीओ होति चि । तिरिक्खलोणिपीओ देवीओ
 संखेज्जगुणाओ । तामो देवीसु पक्खिणे इत्थिपेदरासी होदि चि क्खु देवीहि सादरेयमिदि
 तामि पमाण सुपे धुच ।

तासिमवहारकालुप्यपि वचइस्सामा । देवअवहारकालुमिदं वचीसरूपहि मागे हिदे
 रुई तन्हि वेच पक्खिणिय तिरिक्ख-मणुसिरिपेदनामणीमिच तपो एक्खस्स पदंगुलस्स
 संखेज्जगुणाओ अवसिदे इत्थिपेदअवहारकालुस्स मागहारो होदि । वचीसरूपानि देव-
 अवहारकालुस्स मागहारा होति चि क्व वचइ ? तेहिंसा देवीओ वचीसरूपमा इति चि
 अप्रतिपरंपरामयुवदेसादो जम्भदे । पदंग अवहारकालेण अगपदरे मागे हिद इत्थिपेद
 रासी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सज्जदासंज्जदा ति ओघ' ॥ १२५ ॥

संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमर्त्य
 जीव मयणवासी देवोंसे संख्यातगुणे हैं । पाचप्यन्तर देव पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमर्त्योंसे
 संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । ऋषीणां देव वाच्यन्तर
 देविणोंसे संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । इस पुरुषार्थके
 सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके संख्यात बहुमाय देविणां होती हैं । तथा तिर्यक् योगिमर्त्य
 जीव देविणांके संख्यातवे प्राग होते हैं । अतएव इस तिर्यक् योगिमर्त्योंके प्रमाणक देविणोंके
 प्रमाणमें मिश्र देव पर लोकेषु जीवरक्षी होती है वेसा समप्रकार देविणोंस कुछ अधिक इस-
 प्रकार लोकेषु जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अब लोकेषियोंके अवहारकाकाली उत्पत्तिके बतलावे हैं— देवोंके अवहारकाकाली
 वचीससे भाजित करके ओ छम्भ ग्ये असे वची देव अवहारकाकाली मिश्र कर ओ योग हो
 छम्भसे, तिर्यक् जीव मनुष्य लोकेषी जीवोंका प्रमाण सानेक सिधे एक मतगुणके संख्यातवे
 प्रागके निष्पन्न केने पर लोकेषी जीवोंका अवहारकाकाली होता है ।

सूत्र— देव अवहारकाकाली मागहार वचीस होता है यह वैस जाना जाता है ।

समाधान— देवोंसे देविणां वचीसगुणी हैं इसप्रकार आचार्य-परंपरासे ग्ये हुए
 उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योगिमर्त्योंके इस पूर्वोक्त अवहारकाकाली अगप्रकारके भाजित करने पर लोकेषी
 जीवरक्षी होती है ।

सासादनसम्पद्दि गुणस्थानसे छेकर संयतार्थपथ गुणस्थानतक प्रत्येक गुण

अपेने चद्रुगुणद्विगुणो बीजा पलित्वमस्य अर्धसुखदिभागमपचा सज्जेमि पञ्चवणा
 ओष होदि । आपपमाणदा उणइन्धियदगुणपञ्चिवणाण कषमोषच जुज्जे ! ७,
 आपमिव आपमिदि उवपासय निम्म आपचसिद्धिदो । आपअसुखदसुम्माइइअवहारकाळ-
 मापलियाए अर्धसुखदिमाएण गुणिइ इन्धियदअसुखदसुम्माइइअवहारकाळो होदि । कुतो ?
 काग्मिगिगममाणइन्धियदेण इज्जतहिययाणमियीणि सुणिदाणाण पउर सम्मत्तपरिणामा-
 ममत्ता । तम्हि आवलिपाए असुखददिमाएण गुणिं सुम्माभिच्छाइइअवहारकाळो
 हाति । तम्हि मत्तज्जम्हेहि गुणिं सासणमस्माइइअवहारकाळो हाति । तम्हि आवलिपाए
 अर्धसुखदिमाएण गुणिं मत्तज्जसुखदअवहारकाळो हाति । एवेहि अवहारकाळहि पन्निगेवमे
 माग हि सग-मगरामीआ मवति ।

पमत्तमुजत्तप्पहुडि जाव अणियट्ठिनात्तरमापराइयपविट्ठ उवममा
 खवा दव्वपमाणेण केवडिया, मत्तेज्जा ॥ १२६ ॥

स्थानमें खीबनी बीब ओषग्रूपणाक समान पर्योपमके असंख्यातवें माग है ॥ १२५ ॥

कृत्ति ये बार गुणस्थानकीं जीब पञ्चगमके असंख्यातवें मागप्रमाण है इसछिये
 इनकी प्रकृपा ओषग्रूपणाके समान होती है ।

सूत्रक— गुणस्थानप्रतिपक्ष भाषप्रकृपाके न्यून गुणस्थानप्रतिपक्ष श्रीवेदियोंके प्रमा
 लको ओषपना कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि ओषक समानको भी ओष कहा जाता है इसछिये
 उपचारसे श्रीवेदियोंकी संख्याको ओषम्य सिद्ध हो जाता है ।

ओष असंपन्नसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळकी भाषकीके असंख्यातवें मागसे गुणित
 करने पर श्रीबरी असंपन्नसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ होता है क्योंकि, उपसेही श्रीके
 समान श्रीवेदमे त्रिकका इत्य अत्र रदा है बार आ कामामिसाय सहित है देखी क्रियाके
 प्रचुरतामे सम्पन्नसंपत्तिधियाम संभव नहीं है । अथान् श्रीवेदके सत्य प्रचुर सम्पत्तिधिये अति
 नहीं होते हैं । इस श्रीवेदी असंपन्नसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळको भाषकीके असंख्यातवें
 मागमे गुणित करने पर श्रीवेदी सम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ होता है । श्रीवेदी
 सम्पत्तिधियोंके अवहारकाळकी संख्यातसे गुणित करने पर श्रीवेदी सासादनसम्प
 त्तिधियोंका अवहारकाळ होता है । श्रीवेदी सामादनसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळको भाषकीके
 असंख्यातवें मागमे गुणित करने पर श्रीबरी संवत्तासंपत्तिधिये अवहारकाळ होता है । इन
 अवहारकाळोंमे पर्योपमके मात्रित करण पर अरुमी अरुमी वसिधियोंका प्रमाण आता है ।

प्रमत्तसुख गुणस्थानमे सहर अनिष्टविषादरसापरायप्रविष्ट उपग्रमक और

१ इति चद्रुगुणद्विगुणो इति वाक्य ।

२ - ३ इति वाक्यार्थ इति पाठ ।

३ अवहारकाळो भित्तिविरुद्धा संभव - ४ मि १ ८

पमचाक्षिण ओषराणि संखेज्जसंखे कए एयसंखमितिबेदपमचाक्षो भवति ।
इतिबेदतपसामया इस १ , खगगा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाहट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, देवेहि सादि
रेयं ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीन सखेज्जदिमागमेचा देवा भवति । पविदियतिरिक्खमोणिभीनं
सखेज्जदिमागमेचा तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवति । तसु देवेसु पक्खिसेसु देवेहि सादिरं
पुरिसवेदराशिपमान होदि ।

एत्थ अब्बहासकत्तुप्पत्तिं वच्छस्सामो । देवज्जवहारकां तत्तीसरुजेहि गुणिय तपो
एक्कपदरंगुलं वेत्थ संखेज्जसंखं कत्तम तत्थेयसंखमवधिय बहुसंखं तत्थेव पक्खिसे
पुरिसवेदमिच्छाद्विज्जवहारकत्तो होदि । एदेण जगपदरे मागे द्विदे पुरिसवेदमिच्छाद्वि
रसी होदि ।

सासणमम्माइद्विणहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उव
समा स्त्वा दब्बपमाणेण केवडिया, ओष' ॥ १२८ ॥

सपक गुणस्यानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सक्यात हैं ॥ १२९ ॥

प्रमत्तसंपत्त भग्नि गुणस्यानसंबन्धी ओषराशिसे संख्यातसे संबद्ध कत्थे पर एक
संख्यामान कीबेरी प्रमत्तसंपत्त भग्नि गुणस्यानवर्ती जीव होते हैं । कीबेरी तपशामक इय और
सपक वीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ
अधिक हैं ॥ १३० ॥

देवलोकमें देवियोंके संख्यातमें मागमान देव हैं । वेवेमिथिय तिरिंन धोमिमतिकोंके
संख्यातमें मागमान तिरिंनोमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिरिंनोंके प्रमाणको देखमें
प्रसिद्ध कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अब वहाँ उक्त जीवोंके अवधारकाकी उत्पत्तियों बतछाते हैं— देवोंके अवधारकाकी
तेतीससे गुणित करके जो कथ्य भावे उसमेंसे एक प्रत्यक्षगुणः प्रवृत्त करके और उक्तके संख्यात
बद्ध करके उसमेंसे एक संख्यके बराबर बहुभाग वाली पूर्वोक्त राशियें मिला देने पर पुरुषवेदी
मिथ्यादृष्टि अवधारकाक होता है । इस अवधारकाकके जगप्रत्ययके माजित करने पर पुरुषवेदी
मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्पत्तदृष्टि गुणस्यानसे सेक्क अनिबुत्ति वादरसांपरायप्रविट्ठ तपशमक

१. देवपुत्रेण ५५ पुरुषप्रप विष्णुहवींशस्तेना देवना प्रतरात्तदेवमावसिता । ४ शि १८
देवि वासिरेवा पुरिवा । ५५ जी ५५५

इतिवेद-पञ्चसयपणसिपतिहीनो ओषरासी पुरिसवेदस्य भवति । कथं तस्य ओषरं जुञ्चे ? न यस दासो, ओषमिष आपमिदि तस्य ओषपसिद्धिदा ।

एतय अवहारकालो शुभद । आपअसंजदसम्मइट्ठिअवहारकाल आपलियाए असं-
खज्जदिमाणेय मत्तो हिद लब्धं तम्हि चम पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्मइट्ठिअवहारकालो
हेदि । तम्हि आपलियाए असंखज्जदिमाणेय गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकाला
हादि । तम्हि संखज्जदइदि गुणिद सासणसम्मइट्ठिअवहारकाला हेदि । तम्हि आपलियाद
असंखज्जदिमाणेय गुणिद संजदासंजदअवहारकालो हेदि । ओषपमचादिसु अप्पणो संसेज
माणमूइइतिथ-पञ्चसयपणसिपमत्तमवणिद पुरिसवेदपमचादआ भवति ।

णवुसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिणहुडि जाव सजदासजदा ति ओय
॥ १२९ ॥

और धुपक जीव दम्पप्रमाणकी अपक्षा कितन हैं ? ओषप्ररूपणाके समान ह ॥ १२८ ॥
ओषरादिमेंसे लीयेगी और नपुंसकपंथी राशिके कम कर देने पर जो सम्पत्ते
रचना पुदपवेदियोंका प्रमाण है ।

शुक्रा—इस सासाधनसम्पत्ति यदि यदि पुदपवेदीराशिके ओषपना केसे बन
सकता है ?

समाधान—यह और शोच नहीं है क्योंकि आपके समानका भी धाम कहते हैं
इसलिये इस सासाधनसम्पत्ति यदि यदि पुदपवेदीराशिके ओषपना सिद्ध हो जाना है ।

अब पुदपवेदियोंके अषट्कारकासक । कहत है—ओष असंयतसम्पत्तिराशिके अषट्कार
कालको आवलीके असंयतसंयत मागसे आश्रित करने पर जो धर्म आपने इसे उसी ओष
असंयतसम्पत्तिराशिके अषट्कारकालमें मिला देने पर पुदपवेदी असंयतसम्पत्तिराशिके
अषट्कारकास होता है । इसे आपकीके असंयतसंयत मागसे गुणित करने पर पुदपवेदी सम्प-
तिराशिके अषट्कारकास होता है । इसे संयतसंयत गुणित करने पर पुदपवेदी सामाधन-
सम्पत्तिराशिके अषट्कारकास होता है । इसे आपकीके असंयतसंयत मागसे गुणित करने पर
पुदपवेदी सपत्तामपत्तोंका अषट्कारकास होता है । ओष प्रमत्तसंयत यदि राशियोंमेंसे कहींके
संयतसंयत मागमूल लीयेगी और नपुंसकपंथी राशिके प्रमाणका घटा देने पर पुदपवेदी
प्रमत्तसंयत यदि जीव होत है ।

नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यापट्टि गुणस्थानम सकर सपत्तासंयत गुणस्थानतक जीव
आपप्ररूपणाके समान ह ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदी मिथ्यापट्टि गुणस्थानम । २२ नपुंसकवेदीराशिके अषट्कारकास होता है । ३ नपुंसकवेदीराशिके अषट्कारकास होता है । ४ मि १ ८ केदि मिथ्यापट्टि राशिके प्रमाणका घटा देने पर पुदपवेदी
प्रमत्तसंयत यदि जीव होत है ।

पमचादीना ओषरासि संश्लेषसंज्ञे कए एयसंज्ञमित्थिवेदपमचादो मयति ।
इत्थिवेदउपसामगा इस १०, यजगा वीस २० ।

पुरिसवेदपसु मिच्छाद्विती दन्वपमाणेण केवढिया, देवेहि सादि
रेयं ॥ १२७ ॥

देवसोए देवीन सश्लेषदिभागमेवा देवा मयंति । पंथिदिपसिरिक्तजोमिनीन
सश्लेषदिभागमेवा तिरिक्तसु पुरिसवेदा मयंति । तेसु देवेसु पक्खिसेसु देवेहि सादितेयं
पुरिसवदरासिपमार्थं होदि ।

एतव अवहारकस्तुप्यासि वचस्सामो । देवअवहारकसं तेचीसरूपेहि गुमिय तसो
एकपदरंगुलं पेसुण संश्लेषसंज्ञे काउम्य तत्वेमसंज्ञमपमिय बहुसंज्ञे तत्वेन पक्खिसे
पुरिसवेदमिच्छाद्विअवहारकसो होदि । एवेण अगपदरे मागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाद्वि
रासी होदि ।

सासणसम्माद्विप्यहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ठ उव
समा स्ववा दन्वपमाणेण केवढिया, ओषं ॥ १२८ ॥

अपक गुणस्यानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १२९ ॥

प्रमत्तसंघत आदि गुणस्यानतक जीव ओषरासिसे सख्यातसे संज्ञित करने पर एक
अंशप्रमाण स्वीयेही प्रमत्तसंघत आदि गुणस्यानतकी जीव होते हैं । स्वीयेही उपशामक वरा और
क्षपक वीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिच्छाद्विती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ
अधिक हैं ॥ १३० ॥

देवसोअमे देवियाके सख्यातसे मागमास देव हैं । वेवेमिद्वय तिर्यंच भोमितिथोंके
सख्यातसे मागमास तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें
प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंन कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिना प्रमाण होता है ।

अब वहाँ उक्त जीवोंके अवहारकाकार्य वत्पत्तिको बतलाते हैं—देवोंके अवहारकाकार्य
तेतीससे गुमित करके आ अथ आगे उसमेंसे एक प्रतरागुलका ग्रहण करके और उसके सख्यात
नंभ करके उनमेंसे एक नंभको अथाकर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी
मिच्छाद्विती अवहारकास होता है । इस अवहारकाससे अगप्रतरके मात्रित करने पर पुरुषवेदी
मिच्छाद्विती राशि होती है ।

सामाइनसम्यग्द्विती गुणस्यानसे लेकर अनिवृत्ति वादरसांपरायप्रविष्ट उपशामक

१ वेदपुर देव ४४ पुरिदास मि रात्रयीनस्वेना। देवना अथरात्रवेवमागमिदा । ४ मि १ ८
देवा वादिना पुरिता । ५८ जी २५५

इतिवेद-अर्घुसयय-राशिपतिहृणो आपरासी पुरिसवेदस्त मयति । कथं तस्स ओषत्तं शुभदे ? य एस दासो, ओषमिह आपमिदि तस्स ओषत्तसिद्धिदा ।

यस्य अवहारकालो शुभदे । ओषअसंखदसम्माहृदिअवहारकाल आपलियाए असंखदिसारेण मता हिं सद्धं तम्हि भव पक्खित्तं पुरिसवदअसंखदसम्माहृदिअवहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए असंखजदिमाण गुणिदे सम्मामिच्छाहृदिअवहारकालो हेदि । तम्हि संखजदुवदि गुणिदे सासणसम्माहृदिअवहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए असंखजदिमाण गुणिदे संजदसिअदअवहारकालो हेदि । आपपमचादिसु अम्पणा संखेज मागभूदइति-शुभपयवदराशिपमाणमयणिइ पुरिसवदपमचाइआ मयति ।

णवुसयवेदेसु मिच्छाहृदिपुहृदि जाव सजदासजदा ति ओष ॥ १२९ ॥

और धपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? ओषप्ररूपणाके समान है ॥ १२८ ॥

ओषपयिमेंस कीबेरी और मनुषकवेरी राशिके कम कर देने पर जो सम्म रहे उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

सूत्रा—इस साक्षात्तसम्पत्ति भादि पुरुषवेरीराशिके ओषपमा कैसे बन सकता है ?

समाधान—यह कोइ शीघ्र नहीं है क्योंकि ओषके समानकी भी ओष कहते हैं, इसलिये उस साक्षात्तसम्पत्ति भादि पुरुषवेरीराशिके ओषपमा सिद्ध हो जाता है ।

यह पुरुषवेदियोंके अवहारकालके कहते हैं—ओष असंपत्तसम्पत्तिरूपोंके अवहार कालको मावलीक मसंख्यातमें भागसे माजित करने पर जो सम्म आवे उसे वही ओष असंपत्तसम्पत्तिरूपोंके अवहारकालमें लिखा देने पर पुरुषवेरी असंपत्तसम्पत्तिरूपोंका अवहारकाल होता है । इसे आपसीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेरी सम्म मिध्याहृदियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेरी साक्षात्तसम्पत्तिरूपोंका अवहारकाल होता है । इसे आपसीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेरी सपतासंपत्तोंका अवहारकाल होता है । ओष प्रमत्तसंपत्त भादि राशिमेंसे तन्वकि संपत्तातवे मापमूल कीबेरी और मनुषकवेरी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेरी प्रमत्तसंपत्त भादि जीव होने हैं ।

नपुसकवेदियोंमें मिध्याहृदि गुणस्थानग सकर सपतासंपत्त गुणस्थानतक जीव ओषप्ररूपणाके समान है ॥ १२९ ॥

१ मनुषकवेरी मिध्याहृदिगुणस्थानग । ४४ मनुषकवेरीगुणस्थानग ४४ मनुषकवेरीगुणस्थानग ४४ मनुषकवेरीगुणस्थानग । ४४ मि. १८ तदि मिहीन कर्तरी रात्री रंजनी परिकार ॥ सा जी. २७९

अधुनयवेदमिच्छाद्विषयो अणतत्तणं ओषमिच्छाद्विषयि समाया । सासपत्त्रो
पत्तिद्रोवमस्त असंखद्विमागत्तयेण ओषगुणपट्टिवणाहि समाया चि आपसमदमि शुद्ध ।
एवम अवहारकस्तप्यची शुद्धे । तं जह—इति पुनिसवेदसगुणपट्टिवणे अमगदवेदबीने च
अधुनयवेदमिच्छाद्विषयिमिच्छाद्विषयि वग्नं च सम्बजीवरासिस्तुवरि पत्तिष्ठे शुवरासी
होदि । एदण सम्बजीवरासिस्तुवरिमग्नं भागे हिदे अधुनयवेदमिच्छाद्विषयि होदि ।
इतिवेदअसंखद्विमागत्तयेण ओषगुणपट्टिवणाहि समाया चि आपसमदमि शुद्ध ।
असंखद्विमागत्तयेण ओषगुणपट्टिवणाहि समाया चि आपसमदमि शुद्ध ।
सम्बजीवरासिस्तुवरिमग्नं भागे हिदे अधुनयवेदमिच्छाद्विषयि होदि । तन्नि आसपत्त्रो
असंखद्विमागत्तयेण ओषगुणपट्टिवणाहि समाया चि आपसमदमि शुद्ध ।
सम्बजीवरासिस्तुवरिमग्नं भागे हिदे अधुनयवेदमिच्छाद्विषयि होदि । तन्नि आसपत्त्रो
असंखद्विमागत्तयेण ओषगुणपट्टिवणाहि समाया चि आपसमदमि शुद्ध ।

पमत्तसजदप्यहुदि जाव अणियट्टिवादरसापराइयपविट्ट उवसमा
खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १३० ॥

अधुनयवेदी मिच्छाद्विषयि जीव अवस्तव्यकी अपेक्षा ओषमिच्छाद्विषयि समान है और
अधुनयवेदी सासाधनसम्पत्तिद्विषयि जादि जीव पश्योगमके असंख्यातवै मातात्वकी अपेक्षा और
गुणस्याव्यतिषर्गके समान है इसलिये अधुनयवेदी इन दृष्टियोंके ओषपना बन जाता है ।
अब इन अधुनयवेदीयोंके अवहारकत्वकी वस्तुस्थिति कहते हैं । वह इसप्रकार है— गुणसम्पत्ति-
व्यतिषर्ग कीवेदी और अवस्तव्यकी जीव दृष्टिसे तथा अवस्तव्यकी जीवराशिको तथा अधुनयवेदी
मिच्छाद्विषयि दृष्टिसे माजित इन्हीं कीवेदी गुणवेदी और अवस्तव्यकी दृष्टिसे वर्णके सर्व
जीवदृष्टिमें मिखा देने पर अधुनयवेदी मिच्छाद्विषयि सुवराशि होती है । इससे सर्व
जीवदृष्टिसे उपरिम वर्णके माजित करने पर अधुनयवेदी मिच्छाद्विषयि जीवदृष्टि होती है ।
कीवेदी असंखतसम्पत्तिद्विषयि अवहारकत्वकी अवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने
पर अधुनयवेदी असंखतसम्पत्तिद्विषयि अवहारकत्व होता है । इसे अवस्थाके असंख्यातवै
मागसे गुणित करने पर अधुनयवेदी सम्पत्तिमिच्छाद्विषयि अवहारकत्व होता है । इसे
संख्यातसे गुणित करने पर अधुनयवेदी सासाधनसम्पत्तिद्विषयि अवहारकत्व होता है ।
इसे अवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर अधुनयवेदी संपत्तिसंपत्तिवै अवहार-
कत्व होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिवादरसापरायिकप्रविष्ट उपधामक और
धूपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? संख्यात है ॥ ११ ॥

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्त संखेज्जदिभागमेतो णवुसयवेदपमत्तादिरासी होदि ।
 कुदो ? इदुपागमिसमाप्तेण णवुसयवेदोदयेण सणिदाणेण^१ पठरं सम्मत्त-सदमादीणमुवत्तमा-
 भावादो । ओषपयण ण पत्तेति ति आणावण्णु सुचे संखेज्जणिदेसो कसो । णवुसयवेद
 उवत्तमाणा पंच ५, खुवगा इस १० । इत्थिवेद णवुसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्थिया
 चेव होति ति सपहि उषप्सो णत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्ह उवत्तामगा^२ केवडिपा, पवेसेण एको वा
 दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं^३ ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो मण्यमाणअपगदवेदजीवसंखयपनुप्पायणसुत्तेमेव पञ्चत्तं किमणेण
 अवगदवेदपवेसपरुषणसुत्तेमेति ? ण एस दोसो, उवत्तमसेठिपवेसणतुसो अवगयवेदपञ्चाय
 पवेसो ति आप्तावणफलत्तादो । तिण्हमिदि नेद छट्ठीबहुवयणं किंतु पदमावबहुवयणमिदि
 वेत्तणं, छट्ठविहत्तिउप्पत्तिणिमिचामावदो । कपडुवत्तसत्तकसायस्स उवत्तामगवत्तपसा ? वा,

जीवेदी प्रमत्तसंयत आदि राशिके संख्यासर्वे मागमाव णवुसकवेदी प्रमत्तसंयत आदि
 जीवरशि होती है क्योंकि इष्टपाकवी आशिके समान णवुसकवेदे उच्यते अतिक्रमामिच्छावसे
 युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्पत्तक और उपमर्दि परिणामोका उपसंन नहीं पाया जाता
 है । प्रमत्तसंयत आदि णवुसकवेदी जीवरशि ओषधप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है इसका ज्ञान
 करानेके लिये सूत्रमें सख्यात पक्ष निर्देश किया है । णवुसकवेदी उपशामक पांच और सपक
 द्य होते हैं । ऊपेदी और णवुसकवेदी प्रमत्तसंयत और अयमत्तसंयत जीव होने ही होते हैं,
 इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं ? प्रवेशसे एक,
 दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौबन हैं ॥ १३१ ॥

शुद्ध—यहां आगे कहा जानेवाला अगतवेदी जीवोंके सखयका प्ररूपक सूत्र ही
 पर्याप्त है फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्रकरण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, उपशामकेणोंमें प्रवेश करनेके समान
 ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें व्याप्य हुआ ' तिण्हं पव पटी विमत्तिक्क बहुवचन नहीं है किन्तु प्रथमा
 विमत्तिक्क बहुवचन है यहाँ देखा अर्थ लेना चाहिये क्योंकि यहाँ पर पटी विमत्तिक्की
 उत्पत्तिक्क कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रतिशु ' सणिदाणेण ' इति पाठः ।

२ प्रतिशु ' वत्तमादीण ' इति पाठः ।

३ आगतवेदो अमिहत्तिवदउवत्तो-दीनकवत्तपसा आप्तावणोत्पत्ति । इ ति १ ६

दम्नद्वियमयं पशुश्च तवसंतकसायस्स वि तवसामगववर्णं पठि विरोहामावादे । एतय
पवेसविषी तवसमसेद्विपवेसजेण तुह्वा । एदेण खवगजवगदवेदपवेसो वि खपगसेवि
पवेसेव तुह्लो वि जागाविद् । ह्रदो ? खवगजवगदवेदपवेस पठि पुच सुचारमामावादे ।

अद्वं पशुश्च ससेज्जा ॥ १३२ ॥

एतय संसेज्जा वि ष मणिय ओषमिदि वचम् ? व, अवसेमियपन्त्रयवादे ।
सेसं सुगमं ।

तिणि खवा अजोगिकेवली ओष ॥ १३३ ॥

ओषादे एदेसि पमल पठि विसेसामावा ओषर्ष जुमदे ।

श्रुति—उपशान्तकपाय जीवके उपशामक क्या कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रयोगार्थिक नयनी अपेक्षा उपशान्तकपाय जीवके भी
उपशामक इस संज्ञके प्रति कोई विशेष नहीं जाता है ।

यहाँ अपगतवेदस्थानमें प्रवेशविधि उपशामकेजीवबन्धी प्रवेशविधिके समान है । इसी
कारणसे शपक अपगतवेदियोंका प्रवेश भी शपककेजीवबन्धी प्रवेशके समान है इसका ज्ञान
करा दिया क्योंकि शपक अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक्कपसे सूत्रका पारम नहीं
पाया जाता है ।

विशेषार्थ—सिद्धप्रकार उपशामकेजीवके प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्यसे अल्प एक
और उल्टा जीव भी प्रवेश करते हैं और विशेषकपसे पहले यदि समयमें एक जीवसे
छेकर सोलह यदि जीवतक प्रवेश करते हैं । तथा शपककेजीवमें सामान्यसे अल्प एक और
उल्टा एकद्वी यदि जीव प्रवेश करते हैं और विशेषकपसे पहले यदि समयमें एक जीवसे
छेकर बत्तीस यदि जीव प्रवेश करते हैं । यही नियम यहाँ अपगतवेदियोंके विषे भी प्रवृत्त
अपेक्षा समझना चाहिये ।

कासकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक संख्यात ह ॥ १३२ ॥

श्रुति—इस नृणमें संख्यात है इसप्रकार न कहकर ओषमकपकाके समान है
देता करना चाहिये ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहाँ पर्यायार्थिक नयना अपघटन ही है । शेष
कथन सुगम है ।

अपगतविधोमें तीन गुणस्थानवर्ती शपक और अयोगिकेवली जीव ओष
प्रकृपाक समान ह ॥ १३३ ॥

ओषसे इन तीन गुणस्थानवर्ती शपक और अयोगिकेवलीके प्रमायके प्रति कोई
विशेषता नहीं है इसलिये ओषपना बन जाता है ।

मज्झिमनिकाय ओघ ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुचं ।

मात्तामागं वत्तइस्सामा । सण्णजीवरामिमणत्तखंडे कए बहुखंडा णवुसयवेदमिच्छा-
इत्थिणो भवति । सेसमणत्तखंडे कए बहुखंडा अवगदवेदा हवति । सेस सखेज्जखंडे कए
बहुखंडा इत्थियेदमिच्छइत्थिणो होति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छा-
इत्थिणो होति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्भेसिमसंजदसम्मइत्थिणो होति । सेसमोषं ।

अप्पावहुगं सिबिहं सत्थाणादिमेयण । सत्थाणे पयदं । इत्थियेदं-पुरिसवेदाण
सत्थाणं देवमिच्छइत्थिणं संगो । सासणादि जाणं संजदासज्जदार्णं मत्थाणमोषं । नवुसयवेद
मिच्छइत्थिसत्थाणं पत्थि । सासणादीणं सत्थाणमोषं ।

परत्थाणे पयदं । सम्भत्थोवा इत्थियेदंनसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तसवदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्मइत्थिअवहारकालो
वत्तखेज्जगुणा । सम्भामिच्छइत्थिअवहारकालो । असंखेज्जगुणो । सासणसम्मइत्थिअवहारकालो

अपगतवेदिपोंमे सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है वीसा ऊपर कहा आये हैं ।

अब आगामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत कह करने पर बहुभाग
जगुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अन्तर्गत कह करने पर बहुभाग अपगतवेदी
जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात कह करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात कह करने पर बहुभाग पुद्गलपेशी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असंख्यात कह करने पर बहुभाग सर्व असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन
मोक्षप्रकरणके समान है ।

स्वस्थानं आदिके मेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुद्गलपेशी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व वेव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । सासाधनसम्यग्दृष्टि शुण्ढस्थानसे लेकर सधर्मासंयततक स्वस्थान
अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । जगुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है सासाधनसम्यग्दृष्टि आदि जगुसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व
ओघ स्वस्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपधामक सबसे श्लोक हैं । स्त्रीवेदी
संपद जीव स्त्रीवेदी उपधामकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी मध्यमसंयत जीव स्त्रीवेदी
उपधामोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रथमसंयत जीव स्त्रीवेदी प्रथमसंयतोंसे
संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अक्षयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाय स्त्रीवेदी प्रथमसंयतोंसे
संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाय स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवधारकायसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाय स्त्रीवेदी

संखेन्द्रगुणो । सञ्जदासञ्जद्वयवहारकान्ता अर्मसुञ्जगुणा । तस्सेव दम्भमसंखेन्द्रगुणं । एवं
पट्टिसामग्येयवर्ध आब अर्धसञ्जदसम्माद्विद्वर्धं वि । तदो पत्तिदोवममसंखेन्द्रगुणं । तदो
इत्थिवेदमिच्छाद्विद्वयवहारकान्ता अर्मसंखेन्द्रगुणो । विक्खंसंमर्हं अर्मसंखेन्द्रगुणा । सेणी
असंखेन्द्रगुणा । दम्भमसंखेन्द्रगुणं । पदरममसंखेन्द्रगुण । सागा अर्मसंखेन्द्रगुणो । एवं
पुरिसवदस्स वि वत्तवर्धं । एवं च वणुसुयवेदस्स । ववरि पत्तिदोवमादा उवरि मिच्छाद्वि
अणत्तगुणा वि वत्तवर्धं ।

मन्त्रपरत्थाण पयवे । सम्भरयेत्ता णत्तमयवदुधमामगा । सुवगा संखेन्द्रगुणा ।
इत्थिवेदुधमामगा तत्थिया चव । तेसिं सुवगा संखेन्द्रगुणा । पुगिसवदुधसामगा संखेन्द्रगुणा ।
तेसिं सुवगा संखेन्द्रगुणा । वणुसुयवेदे अप्पमचसंजदा संखेन्द्रगुणा । तम्हि चैव पमच
संजदा संखेन्द्रगुणा । इत्थिवेदे अप्पमचसंजदा संखेन्द्रगुणा । तम्हि चैव पमचसंजदा
संखेन्द्रगुणा । सवोकिमेवती संखेन्द्रगुणा । पुरिसवदअप्पमचसंजदा संखेन्द्रगुणा । तम्हि

सम्पत्तिप्याद्यर्थियोंके अवधारकाङ्कसे संख्यातगुण्य है । कबीरों संपत्तासंपत्तोंका अवधारकाङ्क
कबीरों साक्षात्तसम्पत्तिपरि अवधारकाङ्कसे संख्यातगुण्य है । उन्हीं संपत्तासंपत्तोंका द्रव्य
मयसे अवधारकाङ्कसे संख्यातगुण्य है । इसप्रकार प्रतिबोधरूपसे कबीरों असंपत्तिसम्पत्तिपरि
द्रव्य भावेतक से ज्ञान्य चाहिये । कबीरों असंपत्तिसम्पत्तिपरि द्रव्यसे पस्योपम असंख्यातगुण्य
है । पस्योपमसे कबीरों मिथ्याद्यर्थियोंका अवधारकाङ्क असंख्यातगुण्य है । कबीरों मिथ्याद्यर्थि
अवधारकाङ्कसे कबीरोंकी विवेकमूर्खी संख्यातगुणी है । कबीरोंकी विवेकमूर्खीसे
अगम्योपी संख्यातगुणी है । अगम्योपीसे कबीरोंका द्रव्य असंख्यातगुण्य है । द्रव्यसे
अगम्यतर संख्यातगुण्य है । अगम्यतरसे कौक असंख्यातगुण्य है । इसीप्रकार पुरुषवेदका
भी परस्वान अस्वबुद्ध बहना चाहिये । तथा इसीप्रकार नपुंसकवेदका भी । परंतु इतनी
विशेषता है कि नपुंसकवेदियोंका कहने समय पस्योपमके ऊपर मिथ्याद्यर्थि अगम्यगुणे हैं
यह कहना चाहिये ।

अब सर्व परस्वानमें अस्वबुद्ध प्रकृत है—नपुंसकवेरी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र
हैं । नपुंसकवेरी सपक जीव संख्यातगुणे हैं । कबीरों उपशामक जीव नपुंसकवेरी सपकोंका
जितना प्रमाण है उतने ही हैं । कबीरों सपक जीव कबीरों उपशामकसे संख्यातगुणे हैं ।
पुरुषवेरी उपशामक जीव कबीरों सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेरी सपक जीव पुरुषवेरी
उपशामकसे संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेरीमें अगम्यसंपत्त जीव पुरुषवेरी सपकोंसे संख्यात-
गुणे हैं । नपुंसकवेरीमें ही प्रमत्तसंपत्त जीव नपुंसकवेरी अगम्यसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
कबीरों अगम्यसंपत्त जीव नपुंसकवेरी प्रमत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । कबीरों ही
प्रमत्तसंपत्त जीव कबीरों अगम्यसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिदेवकी जीव कबीरों
प्रमत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेरी अगम्यसंपत्त जीव सयोगिदेवकीसे संख्यात

अथ पमपसंजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मिच्छिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
संजदसंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारकालो असंखेज्ज-
गुणो । सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मिच्छिअवहारकालो संखेज्ज-
गुणा । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । नपुंसपमेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मिच्छिअवहारकालो
संखेज्जगुणा । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण । एवं
पविसामेस मद्वर्जं आव पल्लिदोवमं ति । तदो इत्थिवेदमिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्ज-
गुणो । पुरिसवेदमिच्छाद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंसमस्रं असंखेज्जगुणा ।
इत्थिवदमिच्छाद्विविक्खंसमस्रं संखेज्जगुणा । सेही असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाद्वि

गुणे ई । पुरुषवेदे ई प्रमत्तसंघातं जीव पुरुषवेदा प्रमत्तसंघातोऽसंख्ययातगुणे ई । पुरुषवेदी
असंघातसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽप्यपुरुषवेदी प्रमत्तसंघातोऽसंख्ययातगुणा ई । पुरुषवेदी
सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्यपुरुषवेदी असंघातसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽसंघात-
संख्ययातगुणा ई । पुरुषवेदी सासाधनसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽप्यपुरुषवेदी सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहार-
कासंघातसंख्ययातगुणा ई । पुरुषवेदी संघातसंघातोऽयं अवहारकाऽप्यपुरुषवेदी सासाधनसम्यग्दर्शि-
नोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव असंघातसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽप्यपुरुषवेदी
संघातसंघातोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्य-
अथैव असंघातसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव सासाधनसम्यग्दर्शिनोऽयं
अवहारकाऽप्यअथैव सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव संघातसंघा-
तोऽयं अवहारकाऽप्यअथैव सासाधनसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई ।
नपुंसकवेदी असंघातसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽप्यअथैव संघातसंघातोऽयं अवहारकाऽसंघात-
संख्ययातगुणा ई । नपुंसकवेदी सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्यनपुंसकवेदी असंघात-
सम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । नपुंसकवेदी सासाधनसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽप्य-
नपुंसकवेदी सम्यग्निष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । नपुंसकवेदी संघातसंघातोऽयं
अवहारकाऽप्यनपुंसकवेदी सासाधनसम्यग्दर्शिनोऽयं अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव
नपुंसकवेदी संघातसंघातोऽयं प्रमत्तं अपन अवहारकाऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । इतीमकार मति
होममन्त्रसे पश्योपमत्तं से जाना चाहिये । पश्योपमसे स्त्रीवेदी मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्य-
असंख्ययातगुणा ई । पुरुषवेदी मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्यअथैव मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहार-
काऽसंघातसंख्ययातगुणा ई । अथैव पुरुषवेदी मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं विष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं अवहारकाऽप्य-
असंख्ययातगुणा ई । अथैव मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं विष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं पुरुषवेदी मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं विष्पत्त्या-
दृष्टिर्वाच्यं असंख्ययातगुणा ई । अथैव मिष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं विष्पत्त्यादृष्टिर्वाच्यं असंख्ययातगुणा ई ।

भागमेव च मिच्छाद्दृष्टी गुणपटिविषया च ओषमिच्छाद्दृष्टि-गुणपटिविषयेति समाजा चि
 हह सुचे एदेसि परुवणा ओषमिदि बुधा । पञ्चबहुविणए पुण अवलविज्जमाणे अतिप
 निसेसा । सं कथं ? चदुकसायमिच्छाद्दृष्टीसु तिरिक्खरासी पहाओ, सेसगदिरासिस्स
 उदभत्तमागचादो । तत्थ वि चदुकसायमिच्छाद्दृष्टिरासी ण^१ अण्णोण्णेण समानो । कुदो ?
 उददायं सारिच्छामावा । व अहा—

तिरिक्ख मणुसेसु सञ्चत्योवा माणद्वा । कोषद्वा विसेसाहिया । केसियमेसेण ?
 आत्तियाए अत्तसेसदिभागमेसेण । मायद्वा विसेसाहिया । केसियमेसो विसेसो ? पुण्यं
 परुविदो । ओषद्वा विसेसाहिया । केसियमेसो विसेसो ? आबलियाए अत्तसेसदिभागमेसो ।
 न च अद्वासु असतिससु तत्थ द्विरासीण समान्निमम-पवेसाण संतायं पडि गंगाप-
 वाओ ष्व अवट्ठिदाय सतिसत्तं जुज्जे । उदो चउच्छमद्वाण समत्तं कात्थम चदुकसामिच्छा-
 द्दृष्टिरासिदि भागे दिदे उद्द चउप्पदिरासिं करिय मावादीणमद्वाहि पडिवादीए गुणिदे
 सम-सगरासीओ सर्वसि । एदमहुपदं कात्थम चदुकसामिच्छाद्दृष्टिस्स रासिस्स अवाहार

गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके समान हैं वेसा समझकर सूत्रमें कोषादि कषाययुक्त ओष मिष्यादृष्टि
 और ओष गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी प्रकृपण व्योमप्रकृपणोंके समान है यह कहा । परंतु पर्या
 यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही ।

झका—यह विशेषता कैसे है ?

समाधान—चारों कषायबाधके मिष्यादृष्टि जीवोंमें तिर्य्यक्पक्षि प्रधान है क्योंकि
 रोप तीन गतिसंबन्धी जीवपक्षि तिर्य्यक्पक्षिके अन्तर्गत भाग है । इसमें भी चारों
 कषायबाधकी मिष्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है क्योंकि चारों कषायोंका काळ समान
 नहीं है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तिर्य्यक् और मनुष्योंमें मासका काळ सबसे स्तोत्र
 है । ओषका काळ मासकाळसे विशेष अधिक है । कितनेमास विशेषसे अधिक है ? आबलीके
 मसंख्यातबे मासमात्र विशेषसे अधिक है । मायाका काळ ओषके काळसे विशेष अधिक है ।
 कितनामात्र विशेष है ? पहले प्रकृपण कर दिया है अर्थात् आबलीका अक्षय्यातर्वा मास
 विशेष है । ओषका काळ मायाके काळसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? आब
 लीका मसंख्यातर्वा मासप्रमाण विशेष अधिक है । इसप्रकार काळोंके विवरण रहने पर
 शिष्य मिथंम और प्रवेश समाप्त है और सत्तामकी अपेक्षा गंगागदीके महाहके समान जो
 व्यवस्थित हैं वेही वहाँ स्थित इन राशिपक्षी सत्ताता नहीं बन सकती हैं । तदनन्तर
 चारों कषायोंके काळोंका योग करके इसका चारों कषायबाधकी मिष्यादृष्टिराशिमें भाग देने
 पर जो दृष्य जावे उसकी चार प्रतिराशियां करके मानादिकके काळोंसे परिपाटीक्रमसे

१ मण्डि न इति पाठः ।

२ वरतिरिक्खममावासीओ भावो विविधादिप्य । अलक्षितकामया उपकथं व समवेय्य ॥
 पृ. अ. १९८.

माणचन्द्रो । देवेषु चतुःकसायगुणपट्टिचण्णरासी ण समाणो तद्द्व्याणं समाणचामावादे ।
 तं ब्रह्म—देवेषु सम्बरयोषा कोषदा । माणदा संखेज्जगुणा । मायदा संखेज्जगुणा ।
 लोमदा संखेज्जगुणा । गेरप्पसु सम्बरयोषा लोमदा । मायदा संखेज्जगुणा । माणदा
 संखेज्जगुणा । कोषदा संखेज्जगुणा । एय देवगदिअदाणं समासं काठण ओषअसज्ज
 रासिं खंडिय चट्ठप्पिहरासिं काठण परिभाहीए कोषादिअदाहि गुणिदे सग-सगरासीओ
 भवति । एयं सम्मामिच्छद्दि-सासणसम्मादिहीणं पि कायम्भं । संज्जदासज्जदाणं पुण
 तिरिक्खद्दिअदासमासं काठण ओषअसज्जदासंज्जदासिं खंडिय चट्ठप्पिहरासिं करिय
 कमण कोषादिअदाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवति । एदं वीयपदेय एणिसिबहार
 काट्ठप्पसीं पुण्णवे । तं ब्रह्म—ओषअसज्जदसम्माद्दिअवहारकाळं संखेज्जरूपेहि खंडिय
 रूढं तम्हि वेयं पक्खिसे लोमकसज्जदसज्जदसम्माद्दिअवहारकाळां हदि । तम्हि संखेज्ज
 रूपेहि गुणिदे मायकसज्जदसज्जदसम्माद्दिअवहारकाळां हदि । तम्हि संखेज्जरूपेहि

देवोंमें चारों कषायवाली गुणम्यानप्रतिपक्ष जीवरशिधुं समान नहीं हैं क्योंकि, उन चारों
 कषायोंके काळ समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— देवोंमें ओषका काळ
 सबसे स्तोक है । मानका काळ उससे संप्यातगुणा है । मायाका काळ मानके काळसे
 संप्यातगुणा है । लोमका काळ मायाके काळसे संप्यातगुणा है । गारकियोंमें लोमका काळ
 सबसे स्तोक है । मायाका काळ लोमके काळसे संप्यातगुणा है । मानका काळ मायाके काळसे
 संप्यातगुणा है । ओषका काळ मानके काळसे संप्यातगुणा है । यहां देवगतिके कषायसंबन्धी
 काळका योग करके उससे देवोंकी श्रेष्ठ अर्धयतसम्पत्तहाए जीवरशिधुंके जहित करके जो
 सत्य भावे उसकी चार प्रतिपाशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे श्रेष्ठाधिकके
 काळोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इसीप्रकार सम्पत्तिप्यारहि
 और सासादनसम्पत्तहाए जीवरशिधुंको भी करना चाहिये । सपत्तासपत्तोंका प्रमाण छाने
 समय तो त्रिषंभमतिषकासी कषायोंके काळका योग करके और उसमें ओषसपत्तासयत
 राशिसे जहित करके जो सत्य भावे उसकी चार प्रतिपाशियां करके प्रत्येक श्रेष्ठाधिकके
 काळोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बीजपत्रके अनुसार इन पूर्वोक्त
 राशिषोंके अषट्कारकासकी उत्पत्तिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— ओष अक्षयतसम्भ-
 गदियोंके अषट्कारकासको संप्यातसे जहित करके जो सत्य भावे उसे उसी अषट्कारकासमें
 मिला देने पर लोमकषायवाले अक्षयतसम्पत्तदियोंका अषट्कारकास होता है । इस लोम
 अक्षयतसम्पत्तहाए अषट्कारकासको संप्यातसे गुणित करने पर मायाकषायवाले अक्षयत

१ पु ५५ कषायकाको विरहे ओषट्ठपुण्यिका । लोमो संपत्ता देवेषु व अक्षयतद्वीरो ॥ इय
 वरादेवगदिअसज्जगुणो पुणो वि संखिदे । वगज्जम्भपरिहि व वट्ठपरासीनं परिभां ॥ गो. जी. १११ ११७
 २ अतिउ कोषानो इति पाठ ।

काळो पुष्पदे—

चतुःस्रस्रशुक्लपद्मिष्वपमानमकस्रप्रमाण च चतुःस्रस्रमिच्छाद्विरासिमज्जि-
तम्भगां च सम्भजीवरासिस्तुषि पक्वित्थे चतुःस्रस्रप्रवरासी होदि । तं चतुःस्रं गुणिदे कसाय-
रासिचतुःस्रमागस्त मागहारो होदि । पुनः तमिह आनलियाए अस्संखेज्जदिमाणेण मागे हिदे स्रं
तमिह चैव पक्वित्थे मायकस्रप्रवरासी होदि । पुष्पमागहारमम्महियं काठज कसायचतु-
स्रमागमागहारसिमिह मागे हिदे स्रं तमिह चैव पक्वित्थे कोपकस्रप्रवरासी होदि । पुनो
कोपकस्रप्रमागहारमम्महियं काठज पुष्पिष्ठप्रवरासिमिह मागे हिदे तद् तमिह चैव पक्वित्थे
मायकस्रप्रवरासी होदि । कसायचतुःस्रमागप्रवरासिमावलिपाए अस्संखेज्जदिमाणेण स्रं
स्रं तमिह चैव अचदिदे सोमकस्रप्रवरासी होदि । एदेहि अबहारकाठेहि सम्भजीव
रासिस्तुषिपक्वित्थे मागे हिदे सग-सगरासीजो आगच्छति । तिण् कसायमिच्छाद्विरा-
सिमार्त्तं सम्भजीवरासिस्त चतुःस्रमागो देहो । सोमकस्रमिच्छाद्विरासिमार्त्तं चतुःस्रमागो
सादिरेगो । गुणपद्मिष्वपमाने देवरासी पहायो । कुदो ? सेसगदिरासिस्त तस्संखेज्जदि

गुणित करने पर अपनी अपनी राशिवां होती है । इस अर्थपरन्तु समझकर बार कयापकाठी
मिथ्यादृष्टिराशि अबहारकाळ करते हैं—

गुणस्थानप्रतिपक्ष चारों कयापकाळे जीवोंके प्रमाणको और कयाप रहित जीवोंके
प्रमाणको तथा चारों कयापकाळे मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे मूल पूर्वोक्त दोषों राशिओंके
बाँकी सर्व जीवराशिसे ऊपर प्रतिष्ठ करने पर चारों कयापकाळे जीवोंकी शुभराशि होती
है । वैसे बारसे गुणित करने पर कयापराशिसे बीये भागका भागहार होता है । पुनः इसे
अपकीके अंतर्क्यातवे मापसे माजित करने पर जो छप्प भावे वसे वसीमें मिला देने पर
मायकयावकाळे जीवोंकी शुभराशि होती है । पुनः इस भागहारको अन्त्यधिक करके उसका
कयापराशिसे बीये भागकी भागहारराशिमें माप देने पर जो छप्प भावे वसे वसी भागहार
राशिमें मिला देने पर अन्त्यकयावकाळे जीवोंकी शुभराशि होती है । पुनः अन्त्यकयावके
भागहारको अन्त्यधिक करके उसका पूर्वोक्त शुभराशिमें माप देने पर जो छप्प भावे वसे
वसी शुभराशिमें मिला देने पर मायकयावकाळे जीवोंकी शुभराशि होती है । कयापराशिसे
बीये भागकी शुभराशिसे (भागहारको) अपकीके अंतर्क्यातवे भागसे बँधित करके जो छप्प
भावे वसे वसी शुभराशिमेंसे निकल केने पर सोमकयाव जीवोंकी शुभराशि होती है । इन
अवहारकाळोंसे सर्व जीवराशिसे ऊपरि अर्थके माजित करने पर अपनी अपनी राशिवां जाती
है । अन्त्य मान और माया इन तीनों कयापकाळ मिथ्यादृष्टियोंका रूप रूपा प्रमाण सर्व
जीवराशिका हृत्त कम चौपा भाग है । सोमकयावकाळे मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ
अधिक चौपा भाग है । गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंमें देवराशि प्रधान है क्योंकि, दोष तीन
गठियोंकी गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशि गुणस्थानप्रतिपक्ष देवराशिसे अंतर्क्यातवे भाग है ।

पमचादिरासि चदुर्ण कसायाम पठिमागण चउविहा बिहचे सत्य ओपरासिपमाणाणुव
 लमादो । कषमेत्य बिहज्जदे ? बुन्चदे— चउण कसायाममदासमास करिय चदुप्पदिरासि
 अप्पप्पा अदाहि ओषट्ठिय उदसंसेज्जरुवेहि इच्छिदरासिम्हि मागे हिदे सग-सगरासीओ
 मंवेत्ति । एत्थ चेदगो मणदि— पमचादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए
 असंखन्नादिमागमेचदाविसेसाओ चि । आबलिअसंखेज्जदिमागमेचदाविसेसचे वि ण
 रासीण विसेसाहियच विरुज्जदे, पवेसांतराण सखाणियमामासाओ । ठेमेत्थ ठेरासिय म
 कीरे ? ण, पमचादिसु माणकसायरासी चोषो । कोषकसायरासी विसेसाहियो । माय
 कसायरासी विसेसाहियो । ओमकसायरासी विसेसाहियो ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसापराइयसुदिसजदा उवसमा खवा
 मूलोष' ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई शेष नहीं है, क्योंकि जोष प्रमत्तसंघत व्यादि राशिओ बार
 कषयोके मागहारसे माजित करने पर वहाँ ओषराशिओ प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शुका—इन राशिओंका यह विभाग किसप्रकार होता है ?

समाधान—बारों कषायोंके काळोंका योग करके और उसकी बार प्रतिराशिवां
 करके अपने अपने कासके अपवर्तित करके ओ संख्यात छत्र्य भावें उससे उच्छिद्य राशिओ
 माजित करने पर अपनी अपनी राशिवां होती हैं ।

शुका—यहाँ पर दावाकार कहता है एक तो प्रमत्तसंघत व्यादिमें बारों कषायराशिवां
 समान हैं, क्योंकि यहाँ पर आबलीके अलंकारावें मागप्रमाण कासकी बिरोधता नहीं है ?
 इससे, आबलीके अलंकारावें मागप्रमाण कासकी बिरोधता नहीं होने पर भी राशिओंकी बिरोधो
 पिच्छता बिरोधकी प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशात्तर करनेवाके जीवोंके संख्याका कोई
 नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर वैरादिक नहीं करना चाहिये ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमत्तसंघत व्यादि शुक्लस्यानोंमें मानकपाय जीवरशि
 सबसे स्तोक है । कोषकपाय जीवरशि मानकपाय राशिसे बिरोध अधिक है । मायाकपाय
 जीवरशि कोषकपाय राशिसे बिरोध अधिक है । ओमकपाय जीवरशि मायाकपाय जीवरशिसे
 बिरोध अधिक है ।

इतना बिशेष है कि लोभकपायी जीवोंमें दम्पसापराधिक शुद्धिसंघत उपश्रमक
 और धपक जीव मूलोष प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

पमचादिरासि चदुष्ट कसायाण पडिमाणेण चउविहा विहये तत्थ ओपरासिपमाणाणुव
 तंमादो । कधमेत्थ विहज्जेदे ? धुक्खदे— चउष्ट कसायाणमद्वासमास करिय चदुप्पडिरासि
 अप्पणा अद्वाहि ओवट्टिय लुट्ठसेज्जरूपेहि इच्छिदरासिभि मागे हिदे सग-सगरासीओ
 मवति । एत्थ भेदगो मणदि— पमचादीर्थं चदुकसायरासीओ समाया आबलियाए
 असंखज्जादिमाणेघट्टाविसेसाओ पि । आबलिअसंखेज्जदिमाणेघट्टाविसेसये वि प
 रासीण विसेसाहियच विरुज्जेदे, पवेसांतरणं सखाणियमाभावादो । तेभेत्थ तेरासिय प
 कीरेदे ? न, पमचादिमु माणकसायरासी योवो । कोधकसायरासी विसेसाहियो । माय
 कसायरासी विसेसाहियो । लोभकसायरासी विसेसाहियो ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसापराहयसुद्धिसज्जा उवसमा खवा
 मूलोघ' ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, श्रेय प्रमत्तसंयत आदि राशियों के बार
 कपायोंके भागद्वारसे भाजित करने पर वहाँ ओपराशिक प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

धृक्का—इन राशियोंका यह विमाय किस्मकाय होता है ?

समाधान—बारों कपायोंके काखोंका योग करके और उसकी बार प्रतिराशियाँ
 करके अपने अपने काखसे अपकारित करके जो संख्यात छप्प आये उससे इच्छित राशिके
 भाजित करने पर अपनी अपनी राशियाँ होती हैं ।

धृक्का—यहाँ पर धाकाकार कहता है एक तो प्रमत्तसंयत आदिमें बारों कपायराशियाँ
 समान हैं, क्योंकि यहाँ पर आबलीके असंख्यातमें भागप्रमाण काखकी विशेषता नहीं है ।
 इससे, आवलीके असंख्यातमें भागप्रमाण काखकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषता-
 विधत्ता विशेषको प्राप्त नहीं होती है क्योंकि प्रवेशान्तर करनेवाले जीवोंके संख्यात कोई
 नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर वैराशिक नहीं करना चाहिये ।

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमत्तसंयत आदि शुद्धस्थानोंमें मानकपाय जीवराशि
 सबसे स्तोक है । श्रेयकपाय जीवराशि मानकपाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकपाय
 जीवराशि श्रेयकपाय राशिसे बिनेय अधिक है । लोभकपाय जीवराशि मायाकपाय जीवराशिसे
 विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोभकपायी जीवोंमें सस्मसापरायिक छुदिसंयत उपपन्नक
 और छपक जीव मूलोघ प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

खगोत्तसामगसुद्धमसांपराप्रसु सुद्धमलोभकसायवदिरिचसांपरामाभातो ओषर्ष
य विरुज्जवे ।

अकसाईसु उवसतकसायवीदरागछदुमत्या ओषर्ष' ॥ १३८ ॥

एत्थ भावकसायामार्थ पेक्खित्तज्ज उवसंतकसाया अकसाप्रपो ण दम्भकसायामार्थ
पत्ति, उदबोदीतपोकइणुक्कइण-परपयविसंक्रममादिविरिहदम्भकम्मस्स तत्तुपहंभादे । चउ-
म्विहदम्भकम्ममेएय चउम्विहपो सुतो सबसतकसायरासी कर्ष पदेकं मूलेचपमार्थ
पावेदे ! ण एस होसो, कइओ ! इज्जवे- य ताव दम्भकसायविसंतपमेत्थ संभवइ, तेव
अद्वियत्तामत्ता । य भावकसायविसंतपं पि संभवइ, तस्स तरवामत्तादे । तदो उवसंत-
कसायरासी ण चउविहा विहज्जवे सो पेव मूलेचप पि तस्स य विरुज्जदि पि ।

स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या अजोगिकेवली ओषर्ष ॥ १३९ ॥

एतक भीर उपशान्तकपाय सुख सांपरायिक जीवोंमें सुख छोड़ कपायसे प्रयत्नरिक्त
कपाय नहीं पाई जानेके कारण सुख जोमिषोंके प्रमाणको व्येष्टत्वका प्रतिपादन करना
विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कपायराहित जीवोंमें उपशान्तकपाय वीतराग छधस्व जीव ओषप्ररूपणाके
समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कपायका अभाव देखकर उपशान्तकपाय जीवोंको अकपायी कहा है
द्रव्य कपायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय वहीरवा, अपकर्षण इत्यर्थव और
परमकृतिसंक्रमण अवधिसे रहित द्रव्य कर्म नहीं उपशान्तकपाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

सूत्र—द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूख उपशान्तकपायराशि
प्रत्येक मूलोभ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई शोध नहीं है । शोध क्यों नहीं है जागे इसीका कारण कहते हैं—
द्रव्यकपायक विरोधन तो यहां समझ नहीं है क्योंकि, उक्तप्र यहां व्यधिकार नहीं है ।
भावकपाय विरोधन भी संभव नहीं है क्योंकि भावकपाय नहीं पाया नहीं जाता है । अतएव
उपशान्तकपाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोपपत्ति
भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

धीयकपायवीतरागछधस्व जीव और अयोधिकेवली जीव ओषप्ररूपणाके
समान हैं ॥ १३९ ॥

एव ससुचयदुं च-सदोवादाण कायर्त्त ? न, च-सद्वेष विणा वि तद्वद्वेत्तद्विदो ।
एदेसि दोषं गुणद्वानाजमेगभोगकरण किमिदमिदि चे, न एस दोसो, दम्बपमानं पडि
एदेसि गुणद्वानाज पच्चासत्ति पेक्खिय एगचविरोहामावादो । न च ओषसं विरुद्धदे,
विचिसेसज्जादो ।

सजोगिकेवली ओघ ॥ १४० ॥

सजोगि भजोगिकेवलीजमेगमेष सुचं किण्ण कीरदे, केवळिच पडि पच्चासत्ति-
समवादो ! न, दोषं पमाणगदपहानपच्चासत्तीए अमावादो । कर्ष पमाणस्स पचाप्पसं ?
तेमेव बहियत्तदो । सेसं सुगमं ।

मागामाग वचस्सामो । सम्बधीवरसिममत्तुं दे कर तस्य बहुसुंढा चउकसाय
मिच्छद्विद्विदो भवति । एगसुंढमकसत्तणो गुणपडिद्विणा च । पुणो चउकसायमिच्छद्विद्वि
रासिममत्तियिए असंखेत्तदिमाएण सुंढिय तत्वेगसुंढं पुच द्विय सेसमदुसुंढे चचारि

शंका—इस सूत्रमें ससुचयार्थ क्या शब्दों में प्रत्यक्ष करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह शब्दों के बिना भी ससुचयकप अर्थों की उपलब्धि हो जाती है ।

शंका—इन दोनों गुणस्थानों का एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है । क्योंकि, दम्बपमानों के प्रति दोनों गुणस्थानों की प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

ओषत्त भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है । क्योंकि ये दोनों गुणस्थान निर्बिरोधण हैं ।

सजोगिकेवली की व ओषप्रकृपणा के समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सजोगिकेवली और भजोगिकेवली इन दोनों का एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है ?

समाधान—नहीं । क्योंकि, इन दोनों की प्रत्यासत्ति पार्य जाती है ।

शंका—प्रमाणों की प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहाँ उल्लेख अधिकार है । दोष कथन सुगम है ।

अब मागामाग को बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अमल सुख करने पर उनमें से बहुभाग बार कपाय मिच्छादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकपायी और गुणस्थानमतिपन्न जीव हैं । पुनः बार कपाय मिच्छादृष्टि राशिके जीवों के असेकपायसं भागसे चर्चित करते वनमें से एक चंदको वृत्त करने दोष बहुभाग के बार समान पुंज करते स्थापित करना

खवगोरसामगस्तुदुमसांपरायसु सुदुमलोमकसायवदिरित्सांपरायामावत्ता आवर्ष
य विरुद्धे ।

अक्सार्हसु उवर्षंतकसायवीदरागच्छदुमत्या ओर्ष ॥ १३८ ॥

एतत् भावकसायामार्षं पवित्रतया उवर्षंतकसाया अक्सार्षो ण दम्बकसायामार्षं
पदि, उदओदीरयोक्तुपुक्कण-परपयविसकमादिविरिददग्गकम्मस्स तत्पुवर्षमादो । अउ-
न्निहदग्गकम्ममएण अउन्निहपो मूला उवर्षंतकसायरासी कर्षं पादेकं मूलापपमार्षं
पावदे । य एस दोसो, इदो ! पुन्ने- य ताव दम्बकसायविसेसगमेत्य समवह, तेव
अदियसामावा । य मावकसायविसेसर्षं पि संमवह, तस्स क्खामावत्तो । तदो उवर्षंत-
कसायरासी य अदुविहा विहन्ने तो चेव मूलापप पि तस्स य विरुद्धदि पि ।

स्त्रीणकसायवीदरागच्छदुमत्या अजोगिकेवली ओष ॥ १३९ ॥

एतत् और उपशान्तकसाय सांपरायिक जीर्णोत्तर काल कपायसे स्थितिरिक्त
कपाय नहीं पाए जायेके कारण एतत् ओषिणोके प्रमाणको अक्षेपका प्रतिपादन करना
विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कपायरहित जीर्णोत्तर उपशान्तकपाय वीतराग छवस्थ स्त्री ओषप्ररूपकाके
समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां मात्र कपायका अभाव देखकर उपशान्तकपाय जीर्णोत्तर के अक्षेपकी कथा है
ब्रह्म कपायके अभावकी अपेक्षासे नहीं क्योंकि ब्रह्म उदीरका, अपकर्षक, उत्कर्षक और
परमकृतिरूपकमन्य स्थितिसे रहित ब्रह्म कर्म बहां उपशान्तकपाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

संक्षेप—ब्रह्म कर्म चार प्रकारका होनेसे चार ओषोमें विभक्त मूल उपशान्तकपायराशि
प्रत्येक मूलापप प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है । शेष क्यों नहीं है जाते इतीका कारण कहते हैं—
ब्रह्मकपायक विरोधन तो यहां संभव नहीं है क्योंकि ब्रह्मचर यहां अधिकार नहीं है ।
भावकपाय विरोधन भी संभव नहीं है, क्योंकि भावकपाय बहां पाया नहीं जाता है । अतएव
उपशान्तकपाय जीवराशि चार ओषोमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलापपका
भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

स्त्रीणकपायवीतरागछवस्थ स्त्री और अजोगिकेवली स्त्री ओषप्ररूपकाके
समान हैं ॥ १३९ ॥

होदि । सस सखेज्जखंडे कए बहुखडा कोषकसायसम्मामिच्छादिग्रासी होदि । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा सोमकसायसासणसम्मामिच्छासी हानि । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा मायकसायसासणसम्मामिच्छासी हानि । सस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा मम्मकसायसासणसम्मामिच्छासी होदि । सेससखेज्जखंडे कए बहुखडा कोषकसाय सामणसम्मामिच्छासी होदि । सेससखेज्जखंडे कए बहुखडा चउकसायसज्जदासज्जदरासी होदि । उदा सज्जदासज्जदरासिस्स अमखज्जदिमागमवणिय सेस चचारि समपुजे करिय हुवेद्व । पुणो पुण्यमवणियसुखंमसखेज्जखंडे करिय तत्थ बहुखंडे पडमपुजे पक्खिसे सोमकसायसज्जदासज्जदरासी होदि । सेससखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदिपपुजे पक्खिसे मायकसायसज्जदासज्जदरासी होदि । संसमसखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदिपपुजे पक्खिसे कोषकसायसज्जदासज्जदरासी होदि । सेस चउत्थपुजे पक्खिसे माणकसायसज्जदासज्जदरासी होदि । सेस जामिअण णयकई ।

अप्यावहुगं तिबिई सत्थाणादिमण । तत्थ सत्थाण बचइस्सामो । मिच्छावहुगं सत्थाण परिध, रासीदो मिच्छावहुगुवरासिस्स अभिगणादो । असज्जदसम्मामिच्छापिअहि अत्त सज्जदासज्जदा चि सत्थाणस्स मूलोपमगो ।

जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग कोषकपाय सम्ममिच्छादि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सोमकपाय सासादनसम्ममिच्छादि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकपाय सासादनसम्ममिच्छादि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकपाय सासादनसम्ममिच्छादि जीवराशि है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कोषकपाय सासादनसम्ममिच्छादि जीवराशि है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चार क्वाय सयतासंयत जीवराशि है । तदनन्तर सयतासंयत जीवराशिसे असंख्यातसे भागको घटा कर रोपके चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः पहले घटा कर रखे हुए एक खंडके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर कोषकपाय संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुंजमें मिखा देने पर मायकपायी संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिखा देने पर कोषकपायी संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागको चौथे पुंजमें मिखा देने पर मानकपायी सयतासंयत जीवराशि होती है । रोप कयन जानकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान भाविके मेवसे अस्यबहुत्वं तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अस्य बहुत्वंको वतखाने ई— मिच्छादि जीविका स्वस्थान अस्यबहुत्वं नहीं पाया जाता है क्योंकि मिच्छादि जीवराशिमें मिच्छादि भुवराशि अधिक है । असंयतसम्ममिच्छादि शुचस्थानसे लेकर संयतासंयत शुचस्थानतक स्वस्थान अस्यबहुत्वं मुख्य स्वस्थान अस्यबहुत्वंके समान है ।

समर्पणे करिय हवेदण । पुणो अनभिदपयसुंढमावठियाए असंखेज्जदिमाएण खंडेऊय
 तय बहुखंडे पदमपुंजे पक्खिउचे सोमकसायमिच्छाद्विरासी होदि । ससेयसुंढमावठियाए
 असंखज्जदिमाएण खंडेऊय बहुखंड विदियपुंजे पक्खिउचे मायकसायमिच्छाद्विरासी होदि ।
 ससेयसुंढमावठियाए असंखेज्जदिमाएण खंडिय बहुखंडे सदियपुंजे पक्खिउचे कोप
 कसायमिच्छाद्विरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खिउचे मायकसायमिच्छाद्विरासी
 होदि । सेसमपयंतयंडे कय बहुखंडा अकसाया होति । य्थो उवरी कसायगुणभारेहिं
 सम्मामिच्छाद्विरासिं पडि सासणसम्माद्विगुणगतं संखेज्जगुणो चि उवएसमवर्त्तयेय
 मागामागो बुण्णदे । सेसं संखेज्जखंडे कय बहुखंडा सोमकसायअसंखदसम्माद्विरासी
 होदि । सेसं संखेज्जखंडे कय बहुखंडा मायकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेसं
 संखेज्जखंडे कय बहुखंडा मायकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे
 कय बहुखंडा कोपकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेस संखेज्जखंडे कय बहुखंडा
 सोमकसायसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कय बहुखंडा मायकसायसम्मा-
 मिच्छाद्विरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कय बहुखंडा मायकसायसम्मामिच्छाद्विरासी

बाहिणे । पुन विहासकर पुण्ण रक्खे हूय एक भागको आबलीके असंख्यातवें भागसे रचित
 करके उभमेंसे बहुभाग पडके पुंजमें मिळा देने पर सोमकसाय मिध्यादि जीवराशि होती
 है । दोष एक खंडको आबलीके असंख्यातवें भागसे रचित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें
 मिळा देने पर मायकसाय मिध्यादि जीवराशि होती है । दोष एक खंडको
 आबलीके असंख्यातवें भागसे रचित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिळा देने पर कोपकसाय
 मिध्यादि जीवराशि होती है । दोष एक भागको चौर पुंजमें मिळा देने पर मानकसाय
 मिध्यादि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अन्त खंडमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकसाय
 और गुणस्थानप्रतिपक्ष बतलाये वे उस एक खंडके अन्त खंड करने पर बहुभाग अकसाय
 जीव होते हैं । अब भागे वषाणके गुणकारसे सम्मामिध्यादि जीवराशिके प्रति साधारण
 सम्मगद्विधा गुणकार संख्यातगुणा है । इसकारके वषाणका अवलम्बन लेकर मायभागा
 कपन करते हैं । दोषक संख्यात खंड करने पर बहुभाग सोमकसाय असंयतसम्मगद्वि जीव
 राशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग कोपकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सोमकसाय सम्मामिध्यादि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकसाय सम्मामिध्यादि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकसाय सम्मामिध्यादि

परत्याप्य पर्यद् । सम्बन्धात् कोषकसायउत्पत्तिसामगा । रुखगा संखेज्जगुणा । अप्यमत्तसंज्ञदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्ञदा संखेज्जगुणा । अत्तसंज्ञसम्माद्विअवहारकाले अत्तखेज्जगुणा । एवं जेयर्त्त जात्र पत्तिदोषमं ति । कोषकसायमिच्छाद्विरासी अयत्तगुणो । एव माय-माय-लोमाणं पि परत्याप्यं पचन् । अकसर्त्तसु सम्बन्धोना उपसंसकसाया । सत्त्वकमाया संखेज्जगुणा । अजागिकवली सत्तिया चेव । समागिकेवली संखेज्जगुणा । सिद्धा अयत्तगुणा ।

सम्बन्धपरत्याप्ये पर्यद् । सम्बन्धोना मायकसायउत्पत्तिसामगा । कोषकसायउत्पत्तिसामगा विसेसाहिया । मायकसायउत्पत्तिसामगा विसेसाहिया । सामकसायउत्पत्तिसामगा विमसाहिया । मायकसायउत्पत्तिसामगा विमसाहिया । कोषकसायउत्पत्तिसामगा विमसाहिया । मायकसायउत्पत्तिसामगा विमसाहिया । लोमकसायउत्पत्तिसामगा विसेसाहिया । एव जाम्मि गुणद्वयो चेवारी कसाया संमंति समस्सिद्धमं भविद् । अण्णत्तुपत्तिसामपत्तिो रुखगा दुगुणा चव । ससारत्या अकसाया संखेज्जगुणा । मायकसायअपमत्तसंज्ञदा संखेज्जगुणा । कोषकसायअपमत्तसंज्ञदा विसे-

परस्यान्तमे अत्यवहृत्य प्रकृतं है— कोषकपायी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र है । कोषकपायी सपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी अममत्तसंज्ञत जीव सपकोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी प्रमत्तसंज्ञत जीव अममत्तसंज्ञतोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी असत्तसंख्यातद्विषयोंका अवहारकप्रत्यक्ष प्रमत्तसंज्ञतोंसे असेंख्यातगुण्य है । इसीप्रकार पत्त्योपमत्तक के जावा आहिये । पत्त्योपमत्ते कोषकपायी मिथ्याद्विषयोंका प्रमाण अममत्तगुण्य है । इसीप्रकार मान माया आर लोमकपायके परस्यान्त अत्यवहृत्यका भी बचन करना चाहिये । कपायपटित जीवोंमें उपशामकपाय जीव सबसे स्तोत्र है । सत्त्वकपाय जीव उपशामकपाय जीवोंसे संख्यातगुणे है । ज्योतिर्येवजी जीव बतने ही है । सज्योतिर्येवजी जीव ज्योतिर्योसे संख्यातगुणे है । सिद्ध जीव सज्योतिर्योसे अवमत्तगुणे है ।

अब सर्वपरस्यान्तमे अत्यवहृत्य प्रकृतं है— मानकपायी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र है । कोषकपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । माया कपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । कोषकपायी उपशामक जीव मायाकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । मानकपायी सपक जीव लोमकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । कोषकपायी सपक जीव मानकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । मायाकपायी सपक जीव कोषकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । लोमकपायी सपक जीव मायाकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । इसप्रकार जिस गुणस्यान्तमें जायें कपाय समर्थ हैं उसका व्याप्य लेकर बचन किया । ज्योत्त उपशामकोंसे सपक होने ही होते हैं । कपाय रहित ससारी जीव लोमकपायी सपकोंसे संख्यातगुणे है । मानकपाय अममत्तसंज्ञत जीव ससारी कपाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपाय अममत्तसंज्ञत

मायकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो । कोषकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो । मायकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो । तस्मैव दम्बमसंज्ञेऽङ्गुण । एवं अवहारकसपक्षिलोमेण नेयर्णं जाय पक्षिशेवम सि । अकर्मार् अगतगुणा । मायकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो । मायकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो । मायकसायसंज्ञासंज्ञादवहारकालो विसेसादिभ्यो ।

एवं कस्यममग्ना समता ।

पाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाद्वी सासण
सम्माद्वी दव्वपमाणेण केवडिया, ओध ॥ १४१ ॥

एदस्सत्थो बुच्चदे । तं बडा-आपमि-छद्दि-सामगमम्मद्विरागीहिता मदि
सुदअण्णाणिमिच्छद्वि-सासणसम्मद्विरागिणो य एकेण पि जीवेण उग्गा मवति, दुवि
इणाल्लविरहिय मिच्छद्वि-सासणसम्मद्विरागममावत्तो । विमंगलायिणा मिच्छाद्वि-सासण-

गुण्य है । मायाकसाय संयतासंयतोका अवहारकाळ कोमकसाय संयतासंयत अवहारकाळसे
विशेष अधिक है । कोषकसाय संयतासंयतोका अवहारकाळ मायाकसाय संयतासंयत
अवहारकाळसे विशेष अधिक है । मायकसाय संयतासंयत अवहारकाळ अंश
कसाय संयतासंयत अवहारकाळसे विशेष अधिक है । मायकसाय संयतासंयतोका
प्रथ्य वर्द्धिके अवहारकाळसे अवस्थागतगुणा है । इसीप्रकार अवहारकाळके प्रतिबोधक्रमसे
सम्बोधमत्तक से जाना चाहिये । सत्त्वोपमसे कयापरहित जीव अवन्तगुणे है । मायकसायी
मिष्याद्वि जीव कयापरहित जीवोंसे अवन्तगुणे है । कोषकसायी मिष्याद्वि जीव मायकसायी
मिष्याद्विजीवोंसे विशेष अधिक है । मायाकसायी मिष्याद्वि जीव कोषकसायी मिष्याद्विजीवोंसे
विशेष अधिक है । कोमकसायी मिष्याद्वि जीव मायाकसायी मिष्याद्विजीवोंसे विशेष
अधिक है ।

इसप्रकार कयायमार्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्त्वज्ञानी और भुताज्ञानी जीवोंमें मिष्याद्वि और
सासाद्वसम्परादि जीव प्रत्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्रकरणके समान
है ॥ १४१ ॥

इस गुणका अर्थ करते हैं । यह इसप्रकार है— जीव मिष्याद्विपादि और जीव सासा
द्वसम्परादि पादिसे मायकायी और भुताकायी मिष्याद्विपादि और सासाद्वसम्परादि जीव
पादि एक ही जीव प्रमाणसे बन्म नहीं है क्योंकि, एक दोनों प्रकारके जानोंसे रहित मिष्या
द्वि और सासाद्वसम्परादि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ इमं ज्ञानमं बलकसिन् सुताकाविरल मिष्याद्विपादिवसम्परादिव तावा-सीनर्कत्वा । व सि
१, ८ इत्यनितोपपन्नपक्षिलो वन्मजीवताम् । वदिद्विपन्नानीन् वक्ष्य शेषे परिश्रम ॥ पौ. जी. ५१५

मायकमायसञ्जदासंजदअवहारकाला निमसाहिआ । कायकमायसंजदासंजदअवहारकालो
पिसेसाहिओ । मायकमायसंजदासंजदअवहारकाला निमसाहिओ । तस्मैव दम्भमर्मणेअगुण ।
एवं अवहारकालपवित्तमेव वायस्यं जान पसिदायमं ति । अरुमाइ अगतगुणा । मायकमाय
मिच्छादृष्टी अयसगुणा । कायकमायमिच्छादृष्टी निमसाहिआ । मायकमायमिच्छादृष्टी विस
साहिआ । ओमकसप्रमिच्छादृष्टी रिससाहिआ ।

एवं कसायमगणा सबता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादृष्टी सासण
सम्मादृष्टी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघ ॥ १४१ ॥

एहस्सयो बुच्चदे । तं अहं—आयमिच्छादृष्टि-मायससम्मादृष्टिगामीहितो मदि
सुदअण्णाणिमिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टिरामिणा न एक्कण रि जीरण ऊप्पा मरति, दुवि
ह्मायविरुद्धि मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टिपमभारादो । विमंगणणिजा मिच्छादृष्टि-सासण-

गुणा है । मायाकपाय संयतासयतोका अवहारकाल ओमकपाय संयतासंयत अवहारकालसे
बिरोध अधिक है । ओघकपाय संयतासयतोका अवहारकाल मायाकपाय संयतासंयत
अवहारकालसे बिरोध अधिक है । मानकपाय संयतासंयत अवहारकाल अय
कपाय संयतासंयत अवहारकालसे बिरोध अधिक है । मलकपाय संयतासंयतोका
द्रव्य उन्नीके अवहारकालसे अंतर्गतासगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिओमकसे
पस्योपमतक के आत्मा आहिये । पस्योपमतके कपायरहित जीव जनस्तगुणे हैं । मालकपायी
मिष्यादृष्टि जीव कपायरहित जीवोंसे जनस्तगुणे हैं । ओघकपायी मिष्यादृष्टि जीव मानकपायी
मिष्यादृष्टियोंसे बिरोध अधिक है । मायाकपायी मिष्यादृष्टि जीव ओघकपायी मिष्यादृष्टियोंसे
बिरोध अधिक है । ओमकपायी मिष्यादृष्टि जीव मायाकपायी मिष्यादृष्टियोंसे बिरोध
अधिक है ।

इसप्रकार कपायमार्गण्य समान्य हुई ।

ज्ञानमार्गण्यके अनुवादसे मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी जीवोंमें मिष्यादृष्टि और
सासादनसम्पदृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन हैं ? ओघप्ररूपण्यके समान
है ॥ १४१ ॥

इस सूचका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—ओघ मिष्यादृष्टिराशि और ओघ साता
इनसम्बन्धित राशिसे मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी मिष्यादृष्टिराशि और सासादनसम्पदृष्टि जीव
राशि एक ही जीव प्रमाणसे कम नहीं है क्योंकि एक ही प्रकारके कामोंसे रहित मिष्या
दृष्टि और सासादनसम्पदृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ ब्रह्मसूत्रमेव मत्पज्ञानिन सुप्रज्ञानिनश्च मिष्यादृष्टिज्ञानादवदम्भमज्जं ज्ञानात्प्रेतवत्त्वात् । न हि
१, ८ एतन्निपटैर्यवपरीतीनां लब्धव्यतायां तु । न हि एतन्निपटैर्यवपरीतीनां लब्धव्यतायां न ही बी. ४१५

खेददिमाप्य तिरिक्ख मणुमदुणाणिपमाणेण हीणो, सो वि पल्लिदोवमस्स असंखेददि
मागमेवचणेण दोर्ध्वं पि रासीण पच्चासची अत्थि सि ओपमिदि धुन्धदे ।

अमिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असजदसम्माइडि
पहुडि जाव स्वीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघ ॥ १४४ ॥

आमिणिबोहिय-सुदणाणीण पमाणस्स ओपच जुअदे, तेदि विराहिद असजदसम्मा
इडिआदीपमणुवत्तमादो । ण पुण ओहिणाणीण ओपच जुअदे, ओहिणाणविगहिविदितिरिक्ख
मणुस्ससम्माइडिपणुवत्तमा ? ण एस दोमो, पहुसो वसुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्यची धुन्धदे । तं अहं— आमिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअसजद
सम्माइडिअवहारकालो ओघअसजदसम्माइडिअवहारकालो चेव मवदि । तमिह आवलियाए
असंखेददिमागेम मनो हिये छदं तमिह चेव पक्खिचे ओहिणाणिअसजदसम्माइडिअवहार

अपने असंख्यातवें भागरूप अत्यन्त और भुताज्ञानी इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यक और मनुष्योंके
प्रमाणसे हीन है। तो भी पश्योपमके असंख्यातवें भागरूपकी अपेक्षा व्येषसाताइनसम्पत्ति
एतत् और विमगजानी साधनसम्पत्ति एतत् इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है।
एतत्से सूत्रमें ओघ ऐसा कहा है ।

आमिनिबोधिज्ञानी, भुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्पत्ति
गुणस्वानसे छेकर धीयकपाय वीतराग छयस्व गुणस्वानतक प्रत्यक गुणस्वानमें जीव
ओपप्ररूपकाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शुक्रा—आमिनिबोधिज्ञानी और भुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणसे ओपपना बन जाता है
क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्पत्ति आदि गुणस्वान नहीं पाये जाते हैं । परंतु
अवधिज्ञानियोंके प्रमाणसे ओपपना नहीं बन सकता है क्योंकि अवधिज्ञानसे एतत् तिर्यक
और मनुष्य सम्पत्ति पाये जाते हैं ।

समाधान—यह कोई शोष नहीं है क्योंकि इस प्रकारके प्रत्येक अनेकवार उद्धर
के भये हैं ।

अब इनके अवहारकालोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यह इसप्रकार है—ओघ असंयत
सम्पत्ति जीवोंका अवहारकाळ ही आमिनिबोधिज्ञानी और भुतज्ञानी जीवोंका अवहारकाळ
होता है । इसे मावकीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो छप्प भागें उसे वसी
अवहारकाळमें मिला देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्पत्तिधोका अवहारकाळ होता है ।

अतिमुक्तिनिर्णयवृत्तव्यवहारः स्वीकृतावस्थाः सामान्योपमस्याः । अवधिज्ञानिर्णयवृत्तव्यवहारः
वृत्तव्यवहारः सामान्यव्यवस्थाः । अ नि १ ८ चतुर्दशविधमुपपत्तिः पञ्चावस्थाः ॥ श्री जी ४६१
मीमंसीति तिरिक्का अदिनापिअवधनापय वचुपा । तलेग्या ह तदूपा अदिनपी ओदेविरिवाव ॥ श्री जी ४६२

असंख्येयसंदिग्धा भवन्ति । तासि संदीर्घा निर्ययस्यर्द्ध असंख्यजप्रपञ्चगुलमेवा । कथय
मेवाणि पद्मगुलाणि । पल्लिदोषमस्त असंख्यजदिमागमचाणि । ततो देवमिच्छाद्विरासीदो
विहगणापमिच्छाद्विरासीं विसेसाद्विआ भवति । विहगणापमिरिददवापञ्चरासिं भस्-
इय-तिरिक्खविहगणापीहितो अमयेअगुण देवहिता अपमिद देवेहि साद्विग्यच य पडिदि पि
पारसकमिन्ना, रिहगणाणिमस्सानिचिकरण्य विहगणापिदवा गहणात्ता । वेउमिअमिस्स
रासिस्स सांतरचेय, दवपञ्चचाणं सव्वाकलमसंमया य । एदमस् अगहणकत्तो पुषद ।
तं अहा— देवमिच्छाद्विरासीमवहारकलमिह उगपवरगुलं वेचूय असंख्येअगह करिय सन्धेग
संदममविप पडुखडे समि वेव पक्खिते विहगणापमिच्छाद्विरासीमवहारकलता होदि ।
एदेय अगपदरे भागे हिदे विहगणापमिच्छाद्विरासी आगच्छदि ।

सामणसम्माहट्ठी ओष ॥ १४३ ॥

ओषनासपमम्माद्विरासीदो जदि पि एमो सामणसम्माद्विरासी अप्पमो अस-

असंख्यातवै मागप्रमाण होते हुए भी असंख्यात क्षेत्रप्रमाण होते हैं । उन असंख्यात
क्षेत्रविशेषों की निर्ममसूची असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । वे असंख्यात घनांगुल कितने
होते हैं ? पत्थोपमके असंख्यातवै मागप्रमाण होते हैं । अतएव देव मिष्पाद्वि जीवराशिसे
विमगजानी मिष्पाद्वि जीवराशि विशेष अधिक होती है । कारण और तिर्यक् निर्ममज्जाविशेषों
विममज्जासे रहित देव अपर्याप्त राशि असंख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमैले प्रमा
देने पर देवोंसे साधिक निर्ममज्जाविशेषोंका प्रमाण नहीं बन सकता है इसप्रकार भी भारोअ
नहीं करनी चाहिये क्योंकि, प्रहृष्टमें विममज्जानी राश्याप्ये व्यापृति कर लेनेसे निर्ममज्जानी
देवोंका प्रहृष्ट किया है । दूसरे वैद्विषिकमिध राशि सात्तर दीवसे कारण देव अपर्याप्त जीव
सर्वथा पाये भी नहीं आते हैं इसलिये निर्ममज्जाविशेषोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें
भी कोई बाधा नहीं आती है ।

यह निर्ममज्जानी मिष्पाद्वि राशिका अवहारकाय कहते हैं । वह इसप्रकार है— देव
मिष्पाद्वि राशिमैले एक प्रहृष्टगुलको प्रहृष्ट करके और वस्तुके असंख्यात रीह करके उभरमेंसे
एक बांडको निष्कास कर बहुमाग उसी देव मिष्पाद्वि अवहारकायमें मिला देने पर विममज्जानी
मिष्पाद्विविशेष अवहारकाय होता है । इस अवहारकायसे अगपतरके माजित करने पर
निर्ममज्जानी मिष्पाद्वि जीवराशि आती है ।

निर्ममज्जानी सासाहनसम्पगद्वि जीव ओषप्ररूपणाके समान पत्थोपमके अर्ध
क्यातवै मागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओष सासाहनसम्पगद्वि राशिसे पचापि यह निर्ममज्जानी सासाहनसम्पगद्वि राशि

खेजदिमाएण तिरिक्ख मणुसदुआणिपमाणेण हीणो, तो वि पलिशेवमस्स असंसेजदि मागमेवचपेण दोणं पि रासीण पच्चासत्ती अत्थि पि ओषमिदि पुच्छदे ।

अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि ओहिणाणीसु असंजदसम्माइडि पण्हि जाव स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्था ति ओष ॥ १४४ ॥

आभिणिबोहिय-सुदणाणीण पमाणस्स ओषच जुज्जे, तेहि विरहिद असजदसम्मा इडिअर्दणमणुबलमादो । ण पुण ओहिणाणीण ओषच जुज्जे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख मणुस्ससम्माइडिणमुबलमा । ण एस दोसा, बहुमो दलुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकात्तुपची बुच्चे । तं अहा—आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअमज्ज सम्माइडिअवहारकात्तो ओषअसंजदसम्माइडिअवहारकानो चेव भवदि । तमिह आवत्तिपाए असंसेजदिमाणेण मागे हिठ छह तमिह चेव पक्खिचे ओहिणाणिअसजदसम्माइडिअवहार

अपने असक्यातवें मागएण मयज्जान और भुत्ताजान इन दो भक्षकोंसे कुछ तिर्यक् और मनुष्योंके प्रमाणसे हीन है तो भी पक्षोपमके असक्यातवें मागएणकी अपेक्षा ओषसासाइनसम्पगदधि पाछि और विमंगज्जानी सासाइनसम्पगदधि पाछि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पार जाती है । इसलिये सूत्रमें ओष देखा कहा है ।

आभिनिबोधिकज्जानी, भुत्तज्जानी और अवधिज्जानी जीवोंमें असंयतसम्पगदधि गुणस्थानसे लेकर धीणकपाय बीतराग छग्रस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओषग्ररूपपाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शुद्ध — आभिनिबोधिक और भुत्तज्जानी जीवोंके प्रमाणके ओषपना बन जाता है क्योंकि इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्पगदधि आवि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । परंतु अवधिज्जानियोंके प्रमाणके ओषपना नहीं बन सकता है क्योंकि अवधिज्ञानसे रहित तिर्यक् और मनुष्य सम्पगदधि पाये जाते हैं ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि इस प्रकारके प्रत्यक्ष अनेकवार उत्तर दे पाये हैं ।

अब इनके अपहारकाखीकी व्यापत्तिको कहते हैं । यह इसप्रकार है—ओष असंयत सम्पगदधि जीवोंका अपहारकाख ही आभिनिबोधिकज्जानी और भुत्तज्जानी जीवोंका अपहारकाख होता है । इसे आबद्धीके असंक्यातवें भागसे भाजित करने पर जो सम्प अपे उसे दम्भी अपहारकाखमें मिला देने पर अवधिज्जानी असंयतसम्पगदधियोंका अपहारकाख होता है ।

मत्तिमुत्तिहमिभो-उवत्तम्वगदवत्तव जीवकपायपठां कामाप्पणमग्गा अवधिज्जानिभो-उवत्तम्वगदधि ईवज्जानवत्तवत्ता-सम्पगदधिवत्ता । अ न्ति १ ५ वट्ठारिविनिगुरोता वत्तान्वेगग्गा ॥ ती जी ५६१ ओपिउरिह तिरिक्का वदिवापिअवधायवा मग्गा । अवेग्गा ह तग्गा वरिणपी ओपिउरिवत्त ती जी. ५६२

कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे (मिस्समदि-सुदमप्पाणि-) सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे मागे हिदे छद्द पेव पक्खित्ते मिस्सतिपाणिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तम्हि संखेज्जद्विदि गुणिदे मदि-सुदमप्पाणिमासणमम्मद्विअवहारकालो हादि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे मागे हिदे छद्द तम्हि चव पक्खित्ते रिहंगणाणिमासणमम्मद्विअवहारकालो हादि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे आमिषिवाहियणाणि-सुदणापिसंज्जद्विअवहारकालो हादि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे आहिणापिसंज्जद्विअवहारकालो हादि । अहवा ओषअसज्जदमम्मद्विअवहारकालो तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि मायेण मागे हिदे छद्द तम्हि चव पक्खित्ते तिपाणिअसंज्जदसम्मद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे मिस्सतिपाणिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जद्विदि गुणिदे तिपाणिसासणमम्मद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे दुषाणिअसंज्जदसम्मद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे मिस्सदुषाणिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तम्हि संसज्ज-रूपेदि गुणिदे दुषाणिमासणसम्मद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि

इस अवधिवाली असंखतसम्यग्दर्शियोंके अवधारकाद्यर्थे आवलीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर मिश्र दो वानी सम्यग्मिष्यादर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे आवलीके असं-
ख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छब्ब भागे वसे वसी अवधारकाद्यमें मिश्र देने पर
मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिष्यादर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने
पर मत्पवानी और धुत्तवानी सासाद्वसम्यग्दर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे आवलीके
असंख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छब्ब भागे वसे वसी अवधारकाद्यमें मिश्र देने पर
विभ्रनवानी सासाद्वसम्यग्दर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे आवलीके असंख्यातर्षे
भागसे गुणित करने पर आयिनिजोयिचवानी और धुत्तवानी संख्यातसंख्यातका अवधारकाद्य
होता है । इसे आवलीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर अवधिवाली संख्यातसंख्यातका
अवधारकाद्य होता है । अथवा जोध असंखतसम्यग्दर्शियोंके अवधारकाद्यको आवलीके
असंख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छब्ब भागे वसे वसी जोध असंखतसम्यग्दर्शि
अवधारकाद्यमें मिश्र देने पर तीन ज्ञानवाले असंखतसम्यग्दर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे
आवलीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिष्यादर्शियोंका
अवधारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन ज्ञानवाले सासाद्वसम्यग्दर्शि
ओंका अवधारकाद्य होता है । इसे आवलीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर दो ज्ञानवाले
असंखतसम्यग्दर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे आवलीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने
पर मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिष्यादर्शियोंका अवधारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित

मायण गुणिदे दुष्पाणिसंजदासंजदअवहारफालो होदि । तस्मिं आवलियाए असंखेज्जदि
मायण गुणिदे विणाणिसंजदासंजदअवहारफालो होदि । एदेहि अवहारफालेहि पत्तिदोवमे
माणे हिदे सग-सगरासीओ इहंति । पमत्तादीण पमाण ओषमव मवदि, विसेसामापादो ।
आहिणाणिमपमत्तादीण पि ओषच पचे सप्पडिसेहहुयुत्तरसुत्त मणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिस्सु पमत्तसजदण्हुडि जाव खीणकसाय
वीपरायद्धुमत्या त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिमाणमेवा
मवति । किंतु एतिया इदि परिष्कुड ण जण्हेति, सपडियकाले गुरुवपसामापादो । णवरि
ओहिणाणिमो उवसामगा चोदस १४, खबगा अट्ठावीस २८ ।

मणपज्जवणाणीस्सु पमत्तसजदण्हुडि जाव खीणकसायवीदराग
द्धुमत्या त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणह्राणेस्सु मणपज्जवणाणिणो सत्तवडियदुणात्थीर्ण संखेज्जदिमाणमेवा

करने पर हो जानवाले सपत्तासंघर्षोंका अवहारफाल होता है । इसे व्यवहारिक असंख्यातवै
मायसे गुणित करने पर तीन जानवाले संघर्षोंका अवहारफाल होता है । इन अवहार
फालोंसे पूयक् पूयक् पत्तोपमके माजित करने पर अपनी अपनी राधियां जाती हैं । प्रमत्तसंघत
आदिका प्रमाण ओषमव ही होता है क्योंकि वहां विशेष का अभाव है । अवधिज्ञानी प्रमत्तसंघत
आदिके प्रमाणको ओषमत्वकी प्राप्ति होने पर इसका प्रतिषेध करनेकेलिये व्यंग्यका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंघत गुणस्वानसे लेकर क्षीणकपाय
वीतराग छद्मस्य गुणस्वानतक प्रत्येक गुणस्वानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? सख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंघत और अप्रमत्तसंघत जीव अपनी अपनी राधिके संख्यातवै
माणमान होते हैं किंतु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है क्योंकि वर्तमान
कर्ममें इत्तमप्रकारका गुणका अपेक्षा नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि अवधिज्ञानी
अप्रमत्तामक चौदह और सप्तक अङ्गुलिस होते हैं ।

मनःपर्यायज्ञानियोंमें प्रमत्तसंघत गुणस्वानसे लेकर क्षीणकपाय वीतराग छद्मस्य
गुणस्वानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसंघत और अप्रमत्तसंघत गुणस्वानोंमें मनःपर्यायज्ञानी जीव वहां स्थित हो

१ प्रमत्तसंघतया क्षीणकपायताः तत्त्वता । इ ति १ ८

२ मनःपर्यायज्ञानियाः प्रमत्तसंघतया क्षीणकपायताः तत्त्वता । इ ति १, ८ प्रमत्तया
कवेया ॥ गो. जी ४६१

भवति, सृष्टिसंपन्नासीति बहुममसंभवतो । ते च एतिया इति सम्मं च भवति, संप-
दियकाले उपपन्नामावतो । यवति ममपञ्चरगामिणो उपसामगा वस १०, खडगा २० ।

केवलगाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥

सुगममिदं सुच ।

मागामागं वचस्सामा । सञ्जजीवरासिमणसंखे कए बहुखंडा मदि-सुदमणाधि-
मिच्छाद्विगो भवति । ससमसंखजखंड कए बहुखंडा कवसनामिणो भवति । सेसम-
संखेजखंडे कए बहुखंडा विमंगनाधिमिच्छाद्विगो होति । सेसमसंखेजखंडे कए
बहुखंडा आमिनिरोहिय-सुदणाधिसंखदसम्माद्विगो भवति । ते चैव पठिरासि काल्म
आवल्याए असंखेजदिमाएण भागे हिदे लहुं तमिह चैव अविदे आहियामिअसद
सम्माद्विगो होति । सेस संखेखखंडे कए बहुखंडा मिस्सदुणाधिसम्माधिमिच्छाद्विगो
होति । ते चैव पठिरासि काल्म आवल्याए असंखेजदिमाएण भागे हिदे लहुं तमिह

ज्ञानवाले जीवोंके संख्यात्मक भागमात्र होते हैं क्योंकि, कश्चित्संख्य राशियां बहुत नहीं हो
सकती हैं । फिर भी ये इतने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है क्योंकि सर्वमान्यक्रम
इसप्रकारका उपेक्षा नहीं पाया जाता है । इतना विचार है कि महापद्मकाही उपशान्त
वृक्ष और संपन्न वीर होते हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपकाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अत्र मागामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अवन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मत्पञ्चानी और सुतञ्चानी मिथ्याएधि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
विमंगनाधिमिथ्याएधि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
धिमिनिरोधिकावली और सुतञ्चानी असंखतसम्पदधि जीव हैं । इन्हीं धिमिनिरोधिकावली
और सुतञ्चानी असंखतसम्पदधियायी प्रतिराशि करके और वसे वापसीके असंख्यातके
भागसे मात्रित करने पर जो लब्ध वाले उसे उसी प्रतिराशियेसे घटा देने पर अवशिष्टानी
असंखतसम्पदधि जीवराशि होती है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ
या ज्ञानपाक सम्पत्तिमिथ्याएधि जीव होते हैं । इन्हीं मिथ हो ज्ञानपाके जीवोंके प्रमापनी
प्रतिराशि करके और उस वापसीके असंख्यातके भागसे मात्रित करने पर जो संपन्न वाले

१ प्रति, तदि इति यत् ।

२ देवद्विजैव ज्ञानोपा अयोगमय ज्ञानपाकनका । त ॥ १ < केवलिओ निहारी होति
अतिरिक्त ॥ गो अ. ४६१.

मर्षति, तद्विषयपण्यरासीण बहुजमर्ममवादे । स च एषिया इति सम्मं ष गम्भति, सप
हियकात् उपपन्नामावादे । णवति मणपञ्चरागाणिजो उपसामगा दस १०, खवगा २ ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघ ॥ १४७॥

सुगममिदं सुच ।

मातामार्गं वक्षस्वामो । सजोगीवरासिमणत्तरेके कए बहुलका मदि-सुदवणाणि-
मिच्छाद्विणो मर्षति । सेममर्ममन्त्रखंड कए बहुलका केवलणाणिजो मर्षति । सेसम-
संखेन्द्रखंड कए बहुलका विमंगणाभिमिच्छाद्विणो होंति । सेसमसंखेन्द्रखंडे कए
बहुलका आभिमिपोहिय-सुदवाणिजसखदसम्माद्विणो मरति । से चैव पदिरासिं कात्त्रम
जावसियाए असखे-जदिमाएण भागे हिदे छई तम्हि चैव अरविदे ओहिणागिबसजद
सम्माद्विणो होंति । सेसं संखेन्द्रखंडे कए बहुलका मिस्सदुवाणिसम्मा-मिच्छाद्विणो
होंति । से चैव पदिरासिं कात्त्रम जावसियाए असंखेन्द्रदिमाएण भागे हिदे छई तम्हि

जावसिजे जीवोंके संप्रदायों मागमात्र होते हैं क्योंकि, अन्धिसंप्रदाय राशिवां बहुत नहीं हो
सकती हैं । फिर मी वे इतने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है क्योंकि वर्तमानकालमें
इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि मतपर्ययवादी उपशामक
एक और संप्रदाय भी होते हैं ।

केवलमानिर्योमि सजोगिकेवली और अजोगिकेवली जीव ओघप्ररूपवाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अथ अगात्माको मतझाते हैं—सर्व जीवराशिज अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मत्प्राणी और श्रुतावाणी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करके
पर इनमेंसे बहुभाग वेवकावाणी जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
विमंगवाणी मिथ्यादृष्टि जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
आभिमिनोषिकवाणी और श्रुतवाणी असंखतसम्पन्नादृष्टि जीव हैं । उन्हीं आभिमिनोषिकवाणी
और श्रुतवाणी असंखतसम्पन्नादृष्टिवाणी प्रतिपादि करके और उसे आबखीके असंख्यातमें
भागसे मात्रित करने पर जो अन्ध भावे उसे उसी प्रतिपादिमेंसे घटा देने पर अबधिवाणी
असंखतसम्पन्नादृष्टि जीवराशि होती है । दोष एक भागके संप्रदाय रई करके पर बहुभाग मिथ
वा ज्ञानपास सम्पन्निमिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मिथ हो ज्ञानपासे जीवोंके प्रमाणकी
प्रतिपादि करके और उसे आबखीके असंख्यातमें भागसे मात्रित करने पर जो अन्ध भावे

१ प्रतिपु तदि इति पाठः ।

२ केवलका-जीव अर्थात् अक्षय्यत्वं ज्ञानान्नात्मनः । त नि १८ केवलिनो शिखरो इति
अतिरेण ॥ मी. को. ४५१

यव अयणिदे मिस्सतिप्पाणिसम्मामिच्छइत्थी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्मइत्थिणो होंति । ते चेष पडिरासिं काऊण आवलियाए असं सज्जदिमाण भाग हिदे उट्ट तमिह चेष अयणिदे विमगणाणिमासणसम्मइत्थिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदण्णाणिसंज्जदासंज्जदा होंति । सेसम संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंज्जदामंज्जदा होंति । सेस आभिय मचन्व ।

अइवा सच्चजीवरासिमणतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छइत्थिणो होंति । सेसमपत्तखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिभो मवति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगमाभिमिच्छइत्थिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअसज्जदसम्मा इत्थिमा होंति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्मामिच्छइत्थिणा होंति । ससम संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिणाणिसामणसम्मइत्थिणो होंति । मेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअमज्जदसम्मइत्थिणो होंति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणि सम्मामिच्छइत्थिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसामनसम्मइत्थिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसज्जदासंज्जदा होंति । ससमसंखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिपक्षिमेंसे धडा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्पत्तिमिच्छादि जीव होते हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करके पर बहुभाग मर्यादानी और भुतादानी सासादनसम्पत्ति जीव होते हैं । उन्हीं मर्यादानी और भुतादानी सासादनसम्पत्ति जीवराशि की प्रतिपक्षि करके और उसे उसी आधारीके असंख्यातसे भागसे भाजित करने पर जो सम्पत्ति उसे उसी प्रतिपक्षिमेंसे धडा देने पर विभगजानी सासादनसम्पत्ति जीव होते हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करके पर बहुभाग आभिनिबोधिजानी और भुतादानी संयत्तासयत होते हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करके पर बहुभाग अयधियानी संयत्तासयत जीव होते हैं । दोष असंखदुखका ज्ञानकर कथन करना चाहिये । अयथा सय जीवराशि के भग्न खंड करने पर बहुभाग मर्यादानी और भुतादानी मिच्छादि जीव हैं । दोष एक भागके भग्न खंड करने पर बहुभाग केवलजानी जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग विमगजानी मिच्छादि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असंयतसम्पत्ति जीव हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्पत्तिमिच्छादि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्पत्ति जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असंयतसम्पत्ति जीव हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्पत्तिमिच्छादि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्पत्ति जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले संयत्तासयत जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात काट



अथ बहुपुंजा सिष्वाणिसंयदासंयदा होति । सेस आभिय वचनम् ।

अप्यबहुपुंजं त्रिविधं सत्त्वाणदिभेदण । मदि-सुदमप्याणीसु सत्त्वाण मरिच । अरय
पुन्यमभिर्द । सासणसम्माप्रद्विसत्त्वाणप्याबहुगे आपमगो । विमंगणाभिमिच्छाद्विग
सत्त्वावस्त देवमिच्छाद्विग सत्त्वाणमगो । सिगलीसु मदि-सुदणाणीसु च असंयदसम्मा
इति-संयदासंयदेसु सत्त्वाणमोर्ध । सत्त्वाणप्याबहुगं गद ।

परत्वाणे पयदे । सम्बत्योषो मदि-सुदमप्याणिसासणसम्माइतिअवहारकालो ।
दव्यमसयेज्जगुण । पस्तिरोवमसंयज्जगुण । मिच्छाद्विदव्यमसंयज्जगुण । सम्बत्योषो विमग
णाविसासयसम्माप्रद्विअवहारकालो । दव्यमसयेज्जगुण । पस्तिरोवमसंयज्जगुण । विमग
णाभिमिच्छाद्विमवहारकालो असयेज्जगुणो । विरुसंमसंय असयेज्जगुणो । (सेर
असयेज्जगुणो ।) दव्यमसयेज्जगुण । पदरमसयेज्जगुण । लानो असयेज्जगुणो । सम्ब
त्योषो मदि-सुदमप्याणीसु चचारि उपसामगा । एवगा संयज्जगुणो । अप्यमसयसंयदा

करने पर बहुमान तीन ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । शेररा ज्ञानकर कयन करना चाहिये ।
स्वस्यान धारिके भेषस अस्वबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्स्यज्ञानी और भुता-
ज्ञानी जीवोंमें स्वस्यान अस्वबहुत्व नहीं पाया जाता है । अरय पहले कहा जा चुका है ।
मत्स्यज्ञानी और भुताज्ञानी सासादनसम्प्राप्तियोंका स्वस्यान अस्वबहुत्व दोष स्वस्यान
अस्वबहुत्वके समान है । विमंगणाभिमिच्छाद्वियोंका स्वस्यान अस्वबहुत्व देव मिच्छाद्वियोंके
स्वस्यान अस्वबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्प्राप्ति और संयतासंयतोंमें तथा
मदि और सुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्प्राप्ति और संयतासंयतोंमें स्वस्यान अस्वबहुत्व
दोषस्वस्यान अस्वबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्यान अस्वबहुत्व समाप्त हुआ ।

अथ परस्यानमें अस्वबहुत्व प्रकृत है—मत्स्य की और भुताज्ञानी सासादनसम्प्रा-
प्तियोंका अवहारकाळ सबसे स्तोत्र है । उन्हींका प्रथम अवहारकाळसे असंयतासंयत है ।
पस्तिरोपम प्रथमप्रमाणसे असंयतासंयत है । मत्स्यज्ञानी और भुताज्ञानी मिच्छाद्वियोंका प्रथम
पस्तिरोपमसे अनस्तगुण है । विमंगणाभिमिच्छाद्वियोंका अवहारकाळ सबसे स्तोत्र है ।
उन्हींका प्रथम अवहारकाळसे असंयतासंयत है । पस्तिरोपम प्रथमप्रमाणसे असंयतासंयत है ।
विमंगणाभिमिच्छाद्वियोंका अवहारकाळ पस्तिरोपमसे असंयतासंयत है । उन्हींकी विच्छेदमसूत्री
अवहारकाळसे असंयतासंयत है । (अग्रेणी विच्छेदमसूत्रीसे असंयतासंयत है ।) अग्रेणीसे
उन्हींका प्रथम असंयतासंयत है । प्रथमप्रमाणसे अनस्तगुण है । अनस्तगुणसे स्तोत्र
असंयतासंयत है । मतिज्ञानी और भुताज्ञानी बार गुणस्यानोके उपधामक सबसे स्तोत्र है ।
मतिज्ञानी और भुताज्ञानी सायक जीव उपधामकोसे संयतासंयत हैं । मतिज्ञानी और भुताज्ञानी
असंयतसंयत जीव उपकोसे संयतासंयत हैं । मतिज्ञानी और भुताज्ञानी प्रमसंयत जीव

संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । असज्जदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सज्जदासंज्जदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दग्गमसंखेज्जगुण । असंज्जदसम्माइद्धि
दग्गमसंखेज्जगुण । पल्लोवममसंखेज्जगुण । एव चेव ओहिणान्निपरत्थाण पि वत्तमं ।
मणपज्जवणाणिणो सम्भत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जदा
संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । केवलणाणीसु सम्भत्थोवा सज्जोगिकेवली ।
अज्जोगिकेवली अणत्तगुणा । परत्थाण गद ।

सम्भत्थोवा पयद । सम्भत्थोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १० । आहि
वाणिउवसामगा विसेसाहिया १४ । मणपज्जवणाणिखवगा विसेसाहिया २० । आहिणाणि
खवगा विसेसाहिया २८ । मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । तत्थेव
ओहिणान्निपो विसेसाहिया । मणपज्जवणाणिपो पमत्ता विसेसाहिया । तत्थेव ओहिणान्निपो
विसेसाहिया । कुदो एदमवगम्मदे ? उवसम-खवगसेट्ठिम्हि एदेसिं दोण्णं णाणार्ण एदेणेव

अमत्तसंपत्तो संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और भूतज्ञानी असंयतसम्पत्तिद्वियोंका अवहारकाळ
अमत्तसंपत्तोसे असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और भूतज्ञानी संयतासंपत्तोंका अवहारकाळ अमत्त
सम्पत्तिद्वियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाळसे असंख्यातगुणा
है । मतिज्ञानी और भूतज्ञानी असंयतसम्पत्तिद्वियोंका द्रव्य संयतासंपत्तोंके द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । एवोपम असंयतसम्पत्तिद्वियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवधि-
ज्ञानियोंके परत्थाण अव्यवहृत्यका भी कथन करना चाहिये । मनाःपर्ययज्ञानी उपशामक सबसे
स्तोक हैं । मनाःपर्ययज्ञानी सपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनाःपर्ययज्ञानी अमत्त-
संपत्त जीव सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनाःपर्ययज्ञानी अमत्तसंपत्त जीव अमत्तसंपत्तोंसे
संख्यातगुणे हैं । केवलज्ञानियोंमें सज्जोगिकेवली जीव सबसे स्तोक है । सज्जोगिकेवली जीव
सज्जोगिकेवलीसे अवस्थगुणे हैं । इसप्रकार परत्थाण अव्यवहृत्य समाप्त हुआ ।

सर्वपरत्थाणमें अव्यवहृत्य प्रकृत है— मनाःपर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक
होते हुए इस हैं । अवधिज्ञानी उपशामक मनाःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए
भीतर हैं । मनाःपर्ययज्ञानी सपक विशेष अधिक होते हुए भीतर हैं । अवधिज्ञानी सपक
विशेष अधिक होते हुए बाह्यर हैं । मनाःपर्ययज्ञानी अमत्तसंपत्त जीव अवधिज्ञानी सपकोंसे
संख्यातगुणे हैं । बाह्य पर अर्थात् अमत्तसंपत्त गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मनाःपर्ययज्ञानि-
योंसे विशेष अधिक हैं । मनाःपर्ययज्ञानी अमत्तसंपत्त जीव अवधिज्ञानी अमत्तसंपत्तोंसे
विशेष अधिक हैं । बाह्य पर अर्थात् अमत्तसंपत्त गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मनाःपर्यय-
ज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं ।

श्रुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— उपशाम और सपक भेदोंमें इन दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्रकरण इसी

सजमाणुवादेण सजदेसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि
त्ति ओघ ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघदब्बादो ण किंचि उज्जमधिं वा अत्थि, भेदणिमणमिसेसामावादो ।
सदो एत्थ ओघचं शुद्धे ।

सामाहय छेदोवट्ठावणसुद्धिसजदेसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव आणि
यट्ठिवादरसांपराहयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघ ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघचं ण विरुद्धदे । कुदो ? दन्वट्ठियणयावल्लभणेण पडिगहिदेगखमा
सामप्रयसुद्धिसज्जदा शुद्धंति, ते चेय पन्जवट्ठियणयावल्लभणेण ति-षट्ठ-पचादिमेएम
पुत्तिल्लभं फालिय पडिगणा छेदोवट्ठावणसुद्धिसज्जदा णाम । तदो दो वि रासीओ
आचरासिपमाणादो ण मिश्रंति चि ओघचं शुद्धे ।

एत्थ चेत्तगा मज्झि-उमपणयावल्लभं किं कमेण मज्झि, आहो अकमेयेचि ?

सयम मार्गणाके अनुवादसे संयमियोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ १४८ ॥

यहां ओघप्ररूपणमात्रसे कुछ स्थूल या अधिक प्रमाण नहीं होता है क्योंकि सामान्य
प्ररूपणमें मेवका कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है इसलिये यहां संयममार्गणमें
सामान्यसे ओघपमा बन जाता है ।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत जीवोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर
अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपलभक और क्षपक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
जीव ओघप्रमाणके समान संख्यात हैं ॥ १४९ ॥

यहां सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओघतक
विशेषको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि प्रख्याधिक नयक अथवा नयन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने
मैं सर्व साधकसे विरत हूं इसप्रकार एक धर्मको स्वीकार किया है वे सामायिकशुद्धिसंयत
कहे जाते हैं । तथा वे ही जीव पर्यायार्थिक नयके अथवा नयन करनेकी अपेक्षा तीन बार
और पांच भागि मेवरूपसे पहलेके धर्मको मेव करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन
शुद्धिसंयत कहे जाते हैं । इसलिये वे दोनों राक्षिषां ओघराशिके धर्म से मेवको प्राप्त नहीं
होती हैं इसलिये ओघपमा बन जाता है ।

धंका—यहां पर हांताकार कहता है कि दोनों नवोंका अथवा नयन क्या क्रमसे होता

१ तदवाप्तवादेण सावधिउत्थेदोपस्थापनशुद्धितवता प्रयत्तादयोऽभिहितवत्तत्ताः तावत्तत्तावत्तत्ताः

२ त्ति १८ पमत्तसज्जदप्पहुडि तावत्तत्तावत्तत्ताः । नी जी ४६

३ त्ति १८—संयम पाणिनि इति पाठः ।

क्रमेण पमात्रपरूपपादो । कञ्च फारणापुरुषं सम्बद्धा न होदि सि न वचस्व, कञ्च वि
 फारणापुरुषकञ्चदसपादो । न शिर्वतरेण वमिचगो, तस्स पडिभियदतिरपडिपइचादो ।
 दुवागिमसअदसम्मइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिगागिमसअदसम्मइडिअवहार
 कालो विसेमाहिओ । दुवागिसम्मामिच्छाइडिअवहारकाला असंखेज्जगुणो । तिगागिसम्मा
 मिच्छाइडिअवहारकाला विसेमाहिओ । दुवागिसासवसम्मामिच्छाअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
 तियागिसासवसम्मइडिअवहारकालो विसेमाहिओ । दुवागिसंखदासंखदअवहारकालो असं
 खेज्जगुणो । तियागिसंखदासंखदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्ममसंखेज्जगुण ।
 एवमरहारकालपडिओमेण वेदस्व आत्त पडिओवम ति । त्तेदो विहंगमागिमिच्छाइडिअव
 हारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खेमइर असंखेज्जगुणा । सेही असंखेज्जगुणा । दम्मम-
 संखेज्जगुण । पदरमसंखेज्जगुण । सेतो असंखेज्जगुणो । केवलमामिगो अपत्तगुणा ।
 मदि-सुदज्जामिमिच्छाइडिओ अपत्तगुणा ।

एवं ज्ञानमन्त्रा समता ।

क्रमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है यह भी वही कहना चाहिये
 क्योंकि कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं
 भाया है क्योंकि जिनान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिबद्ध होता है ।

अवधिहानी प्रमत्तसंयतोसे दो ज्ञानवाले असंयतसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ असंख्यात
 गुणा है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले असंयतसम्पत्ति-
 धियोंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ
 तीन ज्ञानवाले असंयतसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले
 सम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले सम्पत्तिधियोंके अवहारकाळसे विशेष
 अधिक है । दो ज्ञानवाले सासाधनसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले सम्पत्ति-
 धियोंके अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासाधनसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ
 दो ज्ञानवाले सासाधनसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले
 संयतासंपत्तिका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले सासाधनसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळसे
 असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले संयतासंपत्तिका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले संयतासंपत्तिका
 अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं तीन ज्ञानवाले संयतासंपत्तिका द्रव्य वन्दि
 अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकाळके प्रतिबोधक्रमसे पक्षोपमत्तक से
 जाना चाहिये । पक्षोपमसे विमग्नहानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है ।
 उन्हींकी विमग्नहानी अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । जगधेनी विमग्नहानीसे असंख्यात
 गुणी है । वन्दीका द्रव्य जगधेनीसे असंख्यातगुणा है । जयमत्तर द्रव्यसे अक्षय्यातगुणा है ।
 लोह जयमत्तरसे असंख्यातगुणा है । केवलहानी लोहसे अनन्तगुणे है । मत्पहानी मीर
 सुताहानी मिथ्यादृष्टि जीव केवलहानियोंसे अनन्तगुणे है ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गका समाप्त हुई ।

तेषां दुष्प्रयत्नावच्छिन्नो । तदो जे सामाख्यसुद्धिसज्जदा ते जेय छेदोवद्वाप्यसुद्धिसज्जदा
होति । जे छेदोवद्वाप्यसुद्धिसज्जदा ते जेय सामाख्यसुद्धिसज्जदा होति चि । तदो दोर्ण
रास्यमोषत सुज्जदे ।

परिहारसुद्धिसज्जदेसु पमत्तापमत्तसज्जदा द्वयपमाणेण केवडिया,
संस्तेज्जा ॥ १५० ॥

ओषसंबदपमाणेण पावेति चि मणिदं होदि । तो चि ते केचिया चि मणिदे
उच्छदे, तिरुवृण सचसहस्समेचा इवति ।

सुद्धमसांपराख्यसुद्धिसज्जदेसु सुद्धमसांपराख्यसुद्धिसज्जदा उवसमा
स्वा द्वयपमाणेण केवडिया, ओष ॥ १५१ ॥

एत्थ एग सुद्धमसांपराख्यग्राहण अधियारपदुप्पायकडु, अवरेग गुणद्वानिदेतो ।
तेषां पमाणे तिरुवृण-मवसदमेचं । सुचं च—

देसा नहीं है, क्योंकि देसा मानने पर उनके दुर्लभपनेकी व्यापति आ जाती है । इसलिये
जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । तथा जो
छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं । अतएव एक दोनों
राशिओंके ओषपना बन जाता है ।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्वयप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? संप्रसा ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयतमें शुद्ध प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओषसंयतोंके
प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका
प्रमाण कितना है देसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात
इत्यार होते हैं ।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपलभ्यमान और क्षपक
जीव द्वयप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्रमाणके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पक्षका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके
लिये किया है । और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पक्षका ग्रहण शुभ्यस्यानका निर्देशरूप किया
है । उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम भी सी है । कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसंयतः प्रमत्तसंयतप्रमत्तसंयतसंयतः । त सि १ ८ कथेन केतविव वदन्तस्तदा
परमप परमत्तका तीर्णि परिहाता ॥ मो. जी ५८

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतः सामान्योपलब्धः । त सि १ ८

य ताव अक्षमेण, विरुद्धेहि भेदामेवेहि शुगर्व वयहारानुवचसीदो । अह क्रमेण, न सामा-
 इयसुद्धिसंबदा छेदोवद्वावणसुद्धिसंबदा मवति, एगचन्मवसापाणं मदन्मवसाइचविरोहदो ।
 छेदोवद्वावणसुद्धिसंबदा नि ण सामाइयसुद्धिसंबदा तक्काले मवति, भेदन्मवसायावममेदन्म
 वसावचविरोहदो । तदो अक्षमेण दोहि णएहि पारिदोपसमदरासी तत्तबेगेव मागेण ओप
 पमत्तं न पत्तेदि सि ओपच ष जुअदे । अथ कदए सग्गो समदरासी अक्षमण एहं पिय
 गयमवसेवित्थम अदि विवुद्धि सि इच्छिअदि, तो एदाओ दुविहसमदरासीओ सांतराओ
 हवति । ण च एवं, कालमिआगे एदासिं विरंतरुवसमादो । एत्थ परिहारो दुच्चदे । तं
 बहा- दग्गड्डियणए अवसेविदे सग्गेसिं संबदाणं एकेओ चव समो होदि सि सामाइय
 सुद्धिसंबदाण ओपमंअवपमाण होदि । प-अवड्डियणए अवसेविदे सग्गेसिं संबदाण पत्तकं
 पंच पंच दमा हवति सि छेदोवद्वावणसुद्धिसंबदा नि ओयसंबदरासिपमाणं पत्तेसि तेव-
 दंसिमापचं जुअद । ण च एगं चवन्मवसापा एयत्थेव अप्पएणो पडिबक्खमिरेक्खा,

है वा अक्षममे ? अक्षमसे तो हां नहीं सकता क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भद् और अमेव हबके
 द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है । यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंघत
 जीव छेदोपस्थापनाशुद्धिसंघत नहीं हो सकते हैं क्योंकि एकत्ररूप परिणामोंका भेदरूप
 परिणामाके साथ विरोध है । वसीमकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंघत जीव भी ठही समय
 सामायिकशुद्धिसंघत नहीं हो सकते हैं क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अमेवरूप परिणामोंके
 साथ विरोध है । इसलिये अक्षमसे दोनों नवोंकी अमेवसा व्यवसंघतराशि संयममार्गजामें एक
 भाषके द्वारा ओषप्रमावकी प्राप्ति नहीं हो सकती है इसलिये सामायिकशुद्धिसंघतों और
 छेदोपस्थापनाशुद्धिसंघतोंका प्रमाव ओषप्रमावपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है ? क्याविप
 संघतराशि अक्षमसे एक ही मयव्य अवलम्बन लेकर चलि पाती है ऐसा भाप चाहते हैं तो ये
 दोनों संघतराशिकां साभार हो जाती हैं । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि, कछानुबोगमें ये
 राशिकां विरन्तर हैं ऐसा पाया जाता है ?

समाधान—यहां पूर्वोक्त दोषका परिहार करते हैं । वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक
 मयका अवलम्बन करने पर सर्व संघमियोंके एक एक ही पद होता है इसलिये सामायिक-
 शुद्धिसंघतोंके भाषसंघतोंका प्रमाव बन जाता है । पदार्थिक मयका अवलम्बन करने पर
 तो सर्व संघमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंघत
 भी ओषसंघतराशिके प्रमावकी प्राप्ति हो जाते हैं अतएव इन दोनों संघतोंके ओषपना बन
 जाता है । कुछ एक जातिके परिणाम एकाग्रसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं

तेसिं दृष्णयथावचीदो । तदो जे सामाद्यसुद्विसंजदा ते येय छेदोपस्थापणसुद्विसंजदा होति । जे छेदोपस्थापणसुद्विसंजदा ते येय सामाद्यसुद्विसंजदा होति चि । तदो दोष् रसीत्यमोचत शुब्धे ।

परिहारसुद्विसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा द्रव्यप्रमाणेण केवढिया, संखेज्जा ॥ १५० ॥

ओषसंखद्वयमाणं न पार्थेति चि मणिद होदि । तो वि ते केचिया चि मणिदे उप्पदे, तिरुवृण-सत्तसहस्समेचा हवंति ।

सुहुमसापराह्यसुद्विसंजदेसु सुहुमसांपराह्यसुद्विसंजदा उवसमा सत्ता द्रव्यप्रमाणेण केवढिया, ओषं ॥ १५१ ॥

एतय एगं सुहुमसांपराह्यग्राहणं अहियरपदुप्यायणहु, अवरेण गुणद्व्यापणितो । तेसिं पमानं तिरुवृण-णवसदमेच । वुचं च—

देखा नहीं है क्योंकि, देखा मानने पर इनको दुर्जयपनेकी व्यापति न्या जाती है । इसलिये जो सामायिकसुद्विसंयत जीव हैं वे ही छेदोपस्थापनासुद्विसंयत होते हैं । तथा जो छेदोपस्थापनासुद्विसंयत जीव हैं वे ही सामायिकसुद्विसंयत होते हैं । अतएव उक्त दोनों पक्षोंके मोक्षपना बन जाता है ।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयतसे पुनः प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण मोक्षसंयतोंके प्रमाणसे प्राप्त नहीं होता है यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी इन परिहारविशुद्धिसंयतोंका प्रमाण कितना है देखा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात हजार होते हैं ।

सुहुमसांपरायिकसुद्विसंयतोंमें सुहुमसांपरायिकसुद्विसंयत उपश्रमक और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सुहुमसांपरायिक पक्षका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके लिये किया है । और दूसरीवार सुहुमसांपरायिक पक्षका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया है । इन सुहुमसांपरायिकसुद्विसंयतोंका प्रमाण तीन कम भी सी है । कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिवत्ता प्रवसायनामयत्तसंखेजाः । च ति १ < क्येन तेनतिव तदवस्था

पत्रपत्र नरकनका तीहिं पत्तीना ॥ श्री जी ४८

१ सुहुमसांपरायिकसुद्विसंयतः सामान्यीकृत्यः । च ति २ <

सत्तादी ब्रह्मता शेषममत्ता य इति परिहारा ।

सत्तादी ब्रह्मता शेषममत्ता सुहृमत्ता इ ॥ ७९ ॥

जहावसादविहारसुखिसजदेसु चतुष्टाणं ओषं ॥ १५२ ॥

चतुष्टाणमिति कथमेगवयगभिरेसो ? य, चतुष्ट पि आदीष्ट एगचमवर्तयिष
तथोवदेसस्यो । सेसं सुगमं ।

सजदासजदा दन्वपमाणेण केवडिया, ओष ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुचं ।

असंजदेसु मिच्छाद्विष्टिण्डुडि जाव असजदसम्माद्विष्टि ति दन्व
पमाणेण केवडिया, ओषं ॥ १५४ ॥

चतुष्टमसजदगुणद्वानाव ओषचतुष्टगुणद्वानेहितो अवितिष्ठान्नामवर्तं शुक्ले । एव

जिह्व संख्याके आदिमें सात अन्तमें छह और मध्यमें दोबार भी है इतने नर्णाल छह
हजार मौसी सत्तात्वे परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं । तथा जिह्व संख्याके आदिमें सात
अन्तमें आठ और मध्यमें भी है इतने नर्णाल व्यावर्ती सत्तात्वे सुस्मरणपत्राके जीव हैं ॥ ७९ ॥

यथास्यात् विहारशुद्धिसंयतोमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण-
स्वानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओषप्रकरणाके समान है ॥ १५२ ॥

श्रुका—सुद्धमें चतुष्टाणं इत्यमर एवमवयव निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि आतिथी अपेक्षा एकरवका अवसरव लेकर चारों गुण
स्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है । हेतु कथन सुगम है ।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्रकरणाके समान
पस्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह स्पष्ट सुगम है ।

असंयतोंमें मिथ्याद्विष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्द्विष्टि गुणस्थानतक जीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्रकरणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतवैश्वानरी चारों गुणस्थान ओष चारों गुणस्थानोंके समान है इसलिये असंयत
चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओषपना बन जाता है । अन्य वहाँ पर अवधारकाद्यकी उत्पत्ति

१ यथास्वरूपविज्ञानशुद्धितत्त्वज्ञानावाचोत्पत्त्या । ब ति १ ८

२ संयतवैश्वानरी- आवाचोत्पत्त्या । ब ति १ यथास्वरूपविज्ञानशुद्धितत्त्वज्ञानावाचोत्पत्त्या ।

३ अनेकवैश्वानरी- आवाचोत्पत्त्या । त ति १ ८ इत्युत्पत्तिविहीना उक्तौ अविरूपणं यथा ॥

मवहारकाहुप्यपी पुष्पदे । त अहा—सिद्ध-तेरसपुणपठिवण्णारासिं मिच्छाद्द्विरासिमज्झिद
तन्ममा न सम्मजीवरासिस्सुवरि पक्खिणे मिच्छाद्द्विधुवरासी होदि । सासणादीणमवहार
काहुप्यपी ओषसमाजा । एवं सज्जदासंज्जदाण पि ।

मागामासां वचस्सामो । सम्मजीवरासिमणत्थंखे कए बहुत्थंढा मिच्छाद्द्विणो
होति । सेसमणत्थंखे कए बहुत्थंढा सिद्धा होति । सेसमसंखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा
असंज्जदा होति । सस संखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा सम्मामिच्छाद्द्विणो होति । सेसम-
संखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा सासणसम्माद्द्विणो होति । सेसमसंखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा
संज्जदासंज्जदा होति । सेसं संखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा सामादय-छदोवद्वावसुद्धिसंज्जदा
होति । सेसं संखेज्जत्थंखे कए बहुत्थंढा जहाक्खादसुद्धिसंज्जदा होति । सेम संखेज्जत्थंखे
कए बहुत्थंढा पटिहारया होति । (सेसणत्थंखे सुद्धमसांपरादयसुद्धिसंज्जदा होति ।)

अप्याबहुग तिथिई सत्यानादिभेदय । सत्य सत्याणे पय । सज्जदाण सत्याणं
वरिय, अवहाराभावादो । मिच्छाद्द्विण पि सत्याणं गत्ति, रासीदो मागहारस्स बहुत्थादो ।
सासणसम्माद्द्विमादि करिय जाव सज्जदासंज्जदा ति एदेसिं सत्याणस्स ओषमंगो ।

कहते हैं । वह इत्यन्तर है—सिद्धपति भीर सासादनसम्पगदि भावि तेरह गुणस्थानवर्ती
पठिके तथा मिष्पाद्वि राशिसे भाजित सिद्ध भीर तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे वर्गके सूर्य
जीवपथिमें मिठा देने पर मिष्पाद्विराशिकी ध्रुवपति होती है । सासादनसम्पगदि भाविके
अवहारकाखंडी उत्पत्ति ओष सासादनसम्पगदि भावि अवहारकाखंडी उत्पत्तिके समान है ।
रसीमकार संयतासंपत्तीके अवहारकाखंडी उत्पत्ति भी समाना चाहिये ।

अब मागाभागाको बतलाते हैं—सब जीवपथिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
मिष्पाद्वि जीव होते हैं । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव होते हैं ।
दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्पगदि जीव होते हैं । दोष एक
भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्पमिमिष्पाद्वि जीव होते हैं । दोष एक भागके
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव होते हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड
करने पर बहुभाग सामायिक भीर छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । दोष एक भागके संख्यात
खंड करने पर बहुभाग यथाप्यातशुद्धिसंयत होते हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर
बहुभाग परिहापविशुद्धिसंयत होते हैं । (दोष एक भाग सत्यमसांपरादयसुद्धिसंयत है ।)

स्वस्थान अत्यवदुत्य भाविके मेवसे अदरबदुत्य तीन प्रकारके हैं । उनमेंसे पहली
स्वस्थान अत्यवदुत्य मध्य है—संयत जीवोंके अवहारकाखंड अभाष होनेसे स्वस्थान
अत्यवदुत्य नहीं पाया जाता है । मिष्पाद्विपथिके भी स्वस्थान अदरबदुत्य नहीं है क्योंकि
मिष्पाद्वि राशिसे भागहार बहुत बड़ा है । सासादनसम्पगदि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत
गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अत्यवदुत्यमाभाष स्वस्थान अत्यवदुत्यके समान है ।

परत्वाये पयद । सम्बन्धोना सामाज्य-छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञदत्तवसामगा । तस्मिं
 स्वगा संखेज्जगुणा । अपमचसंज्ञदा संखेज्जगुणा । पमचसंज्ञदा संखेज्जगुणा । परिहार
 मुद्रिसंज्ञेसु सम्बन्धोना अपमचसंज्ञदा । पमचसंज्ञदा संखेज्जगुणा । सुद्धमसांपरायमुद्रि
 संज्ञेसु सम्बन्धोना स्वसामगा । स्वगा संखेज्जगुणा । अहाकसादसंज्ञेसु सम्बन्धोना
 स्वसामगा । स्वगा संखेज्जगुणा । सन्नोमिकेवली संखेज्जगुणा । संज्ञदासंज्ञेसु परत्वाय
 यति । असंज्ञेसु सम्बन्धोना असंज्ञदसम्माद्विअवहारकालो । सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । सासगसम्माद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव इत्थमसंखेज्जगुण्य ।
 एवं वेयम् अत्र पल्लोवमे ति । तदो मिच्छाद्वि अणत्तगुणा ।

सुद्धपरत्वाये पयद । सम्बन्धोना सुद्धमसांपरायमुद्रिसंज्ञदा । परिहारमुद्रिसंज्ञदा
 संखेज्जगुणा । अहाकसादमुद्रिसंज्ञदा संखेज्जगुणा । सामाज्य छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञदा दो
 वि सुद्ध संखेज्जगुणा । असंज्ञदसम्माद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं वेयम् अत्र
 पल्लोवमे ति । तदो उवति मिच्छाद्वि अणत्तगुणा ।

एव संज्ञममनाया गदा ।

अत्र परत्वायमे अणत्तगुण्य मळत्त है— सामाजिक बीर छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञद
 उपशामक बीर सबसे स्तोत्र है । वन्नीके सपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । वे ही
 अमचसंज्ञद बीर सपकोंसे संख्यातगुणे है । वे ही ममचसंज्ञद बीर अमचसंज्ञदोंसे
 संख्यातगुणे है । परिहारविमुद्रिसंज्ञदोंमें अमचसंज्ञद बीर सबसे स्तोत्र है । ममचसंज्ञद बीर
 इनसे संख्यातगुणे है । सुद्धमसांपरायविमुद्रिसंज्ञदोंमें उपशामक बीर सबसे स्तोत्र है । सपक
 बीर इनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यात संज्ञदोंमें उपशामक बीर सबसे स्तोत्र है । सपक बीर
 उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । सन्नोमिकेवली बीर सपकोंसे संख्यातगुण है । संज्ञदासंज्ञदोंमें
 परत्वाय अणत्तगुण्य वही पाया जाता है । असंज्ञदोंमें असंज्ञदसम्माद्विअवहारकाल सबसे
 स्तोत्र है । सम्मामिच्छाद्विअवहारकाल असंज्ञद सम्माद्विअवहारकालसे असंख्यात
 गुणा है । सासगसम्माद्विअवहारकाल सम्मामिच्छाद्विअवहारकालसे संख्यातगुणा
 है । वन्नी सासाद्विअवहारकाल सपकोंसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 पण्योपमत्तक के जाना चाहिये । पण्योपमसे मिच्छाद्वि बीर अणत्तगुण्य है ।

अत्र सर्वपरत्वायमे अणत्तगुण्य मळत्त है— सुद्धमसांपरायविमुद्रिसंज्ञद बीर सबसे
 स्तोत्र है । परिहारविमुद्रिसंज्ञद बीर इनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यातमुद्रिसंज्ञद बीर
 परिहारविमुद्रिसंज्ञदोंसे संख्यातगुणे है । सामाजिक बीर छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञद बीर दोनों
 समान होते हुए यथाक्यातसंज्ञदोंसे संख्यातगुणे है । अमचसंज्ञदविमुद्रिसंज्ञद अणत्तगुण्य
 वन्नी संज्ञदोंमें प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पण्योपमत्तक के जाना चाहिये ।
 पण्योपमसे ऊपर मिच्छाद्वि बीर अणत्तगुणे है ।

इसप्रकार संज्ञममार्गण समाप्त हुई ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणीसु मिच्छाहट्ठी दम्बपमाणेण केवडिया,
असंखेजा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुखं, बहुसो वक्खानिदंवादो ।

असंखेजासंखेजाहि ओसपिणि-उत्तापिणीहि अवहिरति कालेण
॥ १५६ ॥

अहंभूल-धूल-सुद्धमपरुषणाजो तिणि वि परिवारीय किमहुं पुञ्चति, सुद्धमपरुषणमेव
किं पुञ्चदे ? स, महावि-मंदाहमदमेहाविज्जणाणुमाहकारणेण सहेत्थएसा । सस सुगमं ।

स्वेतेण चक्खुदसणीसु मिच्छाहट्ठीहि पदरमवाहिरादि अगुलस्स
संखेज्जदिभागवग्गपाडिमाण ॥ १५७ ॥

संखेज्जस्वेदि सचिअंगुले मागे हिंदे तत्थ अ उद्ध त वग्गिदे चक्खुदसणिमिच्छा
हट्ठीय पडिमाणो होदि । एदेण पडिमाणेण चक्खुदसणिमिच्छाहट्ठीहि जगपदरमवाहिरदि ।
एत्थ किं चक्खुदसणावरणकम्मकस्सओवसमा बीवा चक्खुदसणिणो पुञ्चति, आहो चक्खु

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितन है ? असंख्यात हैं ॥ १५५ ॥

यह स्रज सुगम है क्योंकि अनेकवार व्याख्यात हो गया है ।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात असंखिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

संका—अतिस्पृष्ट स्पृष्ट और सूक्ष्म ये तीनों प्रकृत्यापे परिपाटीक्रमसे किसलिये
करी जाती हैं केवल एक सूक्ष्म प्रकृत्या क्यों नहीं करी जाती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, मेधावी मग्गबुद्धि और अतिमग्गबुद्धि जनोंका अनुग्रह
करके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है । होय कथन सुगम है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनीयोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा स्पर्शगुलके संख्यातके
मागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

स्पर्शगुलमें संख्यातका भाग देने पर वहाँ जो स्पर्श भागसे उभरे धर्मित करने पर
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है । इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है ।

संका—यहाँ पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके सत्योपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी
कहे जाते हैं या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनवादेन चक्षुदर्शनीयों मिथ्यादृष्टीयोंकेवदः अथवा प्रत्यक्षदर्शयमानवदिताः । अ कि १ ८

२ वमे पञ्चान्तान् पञ्चान्तान् च जीवपरिमाणं चक्षुर्ध्वं । यो जी. ४८५

परत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सामाज्य-छेदोवाङ्गवणमुद्विंसदउवसामगा । तसि
 खगगा संखेज्जगुणा । अपमचसज्जदा संखेज्जगुणा । पमचसज्जदा संखेज्जगुणा । परिहस्त-
 मुद्विंसददेसु सम्बन्धोवा उवसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसज्जदेसु सम्बन्धोवा
 उवसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । समोगिकेवती संखेज्जगुणा । संज्जदासज्जदेसु परत्वापि
 पयि । असददेसु सम्बन्धोवा असज्जदसम्माङ्गिअवहारकालो । सम्मामिच्छाङ्गिअवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । सम्मपसम्माङ्गिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दब्बमसंखेज्जगुणं ।
 एवं नेयम्यं जाव पत्तिदेवमं मि । तदो मिच्छाङ्गि अणत्तगुणा ।

सुखपरत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सुखमसांपरायणमुद्विंसददा । परिहारमुद्विंसददा
 संखेज्जगुणा । अहाक्खादमुद्विंसददा संखेज्जगुणा । सामाज्य-छेदोवाङ्गवणमुद्विंसददा दो
 नि तुक्खा संखेज्जगुणा । असज्जदसम्माङ्गिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं नेयम्यं जाव
 पत्तिदेवमं मि । तदो उवति मिच्छाङ्गि अणत्तगुणा ।

एव संज्जमममाणा दा ।

अथ परत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सामाजिक और छेदोपरत्वापनमुद्विंसदयत
 उपग्रामक जीव सबसे स्तोत्र है । अर्थात् अपक उपग्रामकोसे संख्यातगुणे है । वे ही
 अपमचसयत जीव अपकोसे संख्यातगुणे है । वे ही अपमचसयत जीव अपमचसयतकोसे
 संख्यातगुणे है । परिहारविशुद्धिसंयतो अपमचसयत जीव सबसे स्तोत्र है । अपमचसयत जीव
 उनसे संख्यातगुणे है । सुखमसांपरायणमुद्विंसदयतो उपग्रामक जीव सबसे स्तोत्र है । अपक
 जीव उनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यात संयतो उपग्रामक जीव सबसे स्तोत्र है । अपक जीव
 उपग्रामकोसे संख्यातगुणे है । उपोगिकेवती जीव अपकोसे संख्यातगुणे है । संयतासंयतो
 परत्वापि पयदं । असदयतो असंयतसम्पदरिषोका अवहारकाळ सबसे
 स्तोत्र है । सम्मामिच्छाङ्गिअवहारकाळ असंयत सम्पदरिषोके अवहारकाळसे असंख्यात
 गुणा है । सम्मपसम्माङ्गिअवहारकाळ सम्मामिच्छाङ्गिअवहारकाळसे संख्यातगुणा
 है । अर्थात् सामाज्य-छेदोवाङ्गवणमुद्विंसदयतो द्रव्य अर्थात् अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 पश्योपमत्तक के जाना चाहिये । पश्योपमसे मिच्छाङ्गि जीव अणत्तगुणे है ।

अथ सुखपरत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सुखमसांपरायणमुद्विंसदयत जीव सबसे
 स्तोत्र है । परिहारविशुद्धिसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यातमुद्विंसदयत जीव
 परिहारविशुद्धिसंयतोसे संख्यातगुणे है । सामाजिक और छेदोपरत्वापनमुद्विंसदयत जीव दोनों
 समान होते हुए यथाक्यातसंयतोसे संख्यातगुणे है । असंयतसम्पदरिषोका अवहारकाळ
 उक्त दोनों संयतोके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पश्योपमत्तक के जाना चाहिये ।
 पश्योपमसे अपर मिच्छाङ्गि जीव अणत्तगुणे है ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

इंसमोवओगतसिद्धिर्भीषा चि ? पदमपक्वो चकस्तुर्दसमिभिन्नाद्विज्वहारकाष्ठेन पदरगुलस्त
असंखेज्जदिमापण होदम्भं, चदु-पथिदियापज्जचरासीप पाहम्भादो । य विदियपक्वो
वि, चकस्तुर्दसपट्ठिदीए' अतोएवुचप्पसंगादो चि ? एत्थ परिहारो बुच्चदे । असंखेज्जदिमाप
चक्खिदियपरिमाणे चकस्तुर्दसणुबोगपाबोगापकस्तुर्दसपसुओवसमा चकस्तुर्दसमिभो चि
शेण बुच्चति सेव उद्विज्यपज्जचाय गह्वरं य मवदि, सेसु चक्खिदियमिप्पपिनिराहिरेसु
चकस्तुर्दसमोवओगतसिद्धकस्तुओवसमामावदो । संखेज्जसत्तारोवममेत्ता चकस्तुर्दसमिभुदी'
वि ग विरुज्जदे, सओवसमस्त पहाणचम्भुवगमादो । तवो पदरगुलस्त संखेज्जदिमाणमेवो
चकस्तुर्दसमिभिन्नाद्विज्वहारकाष्ठो होदि चि सिद्धं, चदु-पथिदियपज्जचरासीप पहाणच
म्भुवगमादो ।

सासणसम्माद्विण्णुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था चि
ओधं ॥ १५८ ॥

पक्षके प्रहय करने पर चक्षुर्दर्शनी मिष्यादृष्टिर्बोध्य भवहारकाष्ठ प्रतरांगुलके असंख्यातवै
भागमात्र होता चाहिये क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्णात् और पंचेन्द्रिय अपर्णात्
जीवोंकी प्रमाणता है । इसप्रकार प्रहय पक्ष ता ठीक नहीं है । इसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक
नहीं है, क्योंकि इसके मानने पर चक्षुर्दर्शनकी स्थितिमें अत्यन्तुर्दसमात्रका प्रसंग
न्य जाता है ।

समाधान— माने पूर्वोक्त हीकाय परिहार करते हैं— चक्षुर्दर्शनवाले मिष्यादृष्टिर्बोध्य
भवहारकाष्ठ अत्यंगुलके असंख्यातवै भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुर्दर्शनोप-
योगके योग्य चक्षुर्दर्शनानवरजके सप्तोपशमवाले जीव चक्षुर्दर्शनी कहे जाते हैं इसलिये यहाँ पर
अल्पपर्याप्त जीवोंका प्रहय नहीं होता है क्योंकि वे जीव चक्षु इन्द्रियकी मिष्यस्थिते रहित होते
हैं इसलिये उनमें चक्षुर्दर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुर्दर्शनरूप सप्तोपशम नहीं पाया जाता
है । तथा चक्षुर्दर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसाधारणप्रमाण होता है यह कथन भी
विरोधको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि, यहाँ पर सप्तोपशमकी प्रमाणता स्वीकार की है ।
इसलिये चक्षुर्दर्शनी मिष्यादृष्टिर्बोध्य भवहारकाष्ठ प्रतरांगुलके संख्यातवै भागमात्र होता है,
यह कथन सिद्ध होता है क्योंकि यहाँ पर चक्षुर्दर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय
और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रमाणता स्वीकार की है ।

सासादनसम्पग्गहि गुणस्थानसे लेकर खीणकपायवीदरागछदुमत्त्व गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुर्दर्शनी जीव ओषप्रकृपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ अणु दण्डविडुमि इति वाट ।

२ अ-अमजी पठिच्ये' अमजी पठिच्ये इति वाट ।

३ चक्षुर्दर्शनमिष्यादृष्टि उद्विज्येव वेतामतेनतद्विज्ये जी. म. ए. १ - २८१

इदो ! चक्खुदसणक्खओवसमरहिदगुणपरिवण्णामावादो ।

अचक्खुदसणीसु मिच्छाद्विष्टिण्हुट्ठि जाव स्त्रीणक्सायवीदराग
छदुमत्पा त्ति ओध ॥ १५९ ॥

किं कारणं ! अचक्खुदसणक्खओवसमरहिददुमत्तञ्जीवामावादो । सपहि अचक्खु-
दसणीय धुवरासी पुञ्चदे । त अहा— सिद्ध तेरसगुणपरिवण्णरासिमचक्खुदसणमिच्छाद्वि-
रासिमज्झितव्वग्ग च सम्मजीवरासिस्सुवरि पक्खिन्ने अचक्खुदसणिमिच्छाद्विधुवरासी
होदि । एदेण सम्मजीवरासिस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे अचक्खुदसणिमिच्छाद्विदम्भ होदि ।
सामवादिमोचन्दि मणिद्वज्जहारे चेव वचन्तो, निसेसामावादो ।

ओहिदसणी ओहिणाणिमगो ॥ १६० ॥

क्योंकि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव अचक्षुर्दर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं ।
अर्थात् गुणस्थानप्रतिपक्ष प्रत्येक जीवके अक्षुर्दर्शनावरण कमका क्षयोपशम पाया जाता है
अथवा गुणस्थानप्रतिपक्ष अक्षुर्दर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टता ओषप्रकृष्टताके समान है ।

अचक्षुर्दर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर स्त्रीणक्सायवीदरागछद्मस्य
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओषप्रकृष्टताके समान हैं ॥ १५९ ॥

दुंका—अचक्षुर्दर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्रकृष्टताके समान है इसका क्या
कारण है ?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुर्दर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित छद्मस्य जीव नहीं पाये
जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओषप्रमाणके समान कहा है ।

अब अचक्षुर्दर्शनी जीवोंकी भुवराशिष्य कथन करते हैं । यह इसप्रकार है—सिद्ध
पक्षि और सासादनसम्पददृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशिष्ये तथा
मिथ्यादृष्टि पक्षिसे भाजित सिद्धपक्षि और गुणस्थानप्रतिपक्ष पक्षिके बगले सर्व जीवपक्षिमें
मिथा देने पर अचक्षुर्दर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी भुवराशि होती है । इस भुवराशिसे सब
जीवपक्षिके उपरिम बर्गके भाजित करने पर अचक्षुर्दर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता
है । अचक्षुर्दर्शनी सासादनसम्पददृष्टि आदि जीवोंका ओषप्रकृष्टतामें कहा गया अवधारका
ही कहना चाहिये क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष ओष अचक्षुर्दर्शनी अचक्षुर्दर्शनी गुणस्थान-
प्रतिपक्ष जीवोंके अवधारकाक्रममें कोई विशेषता नहीं है ।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुर्दर्शिनो मिथ्यादृष्टिभोग्यमन्ताः । समये च तावद्व्यवस्थायकवत्तत्त्वात् । जीवध्यायान्ताः । ताम्रज्यो-
त्स्नाः । त वि १, ८ पृथिव्यपदुलीनं जीवकदाचित्तत्त्वात् । मोक्षो अचक्षुर्दर्शनप्रमाणं होदि परिमाणं ॥
मो. ओ. ४८८.

२ अवधिदर्शिनोऽपि विज्ञानिवत् । त वि १ ८

ओहिदंसगविरहिदोहिनापीण्यममावाहो । एतन् अवहारकालो शुक्लपदे । ओ ओप-
असंख्यसम्प्राप्तिजनहारकालो सो चैव अचक्षुर्दंसनि-अचक्षुर्दंसनिअसंख्यसम्प्राप्तिजन-
हारकालो होदि । तमिह आवलियाए असंख्यसंदिमाएण मागे हिदे सइ तमिह चैव पत्तिउचे
ओहिदंसनिअसंख्यसम्प्राप्तिजनहारकालो होदि । तमिह आवलियाए असंख्यसंदिमाएण
गुणिदे चक्षुर्दंसनि-अचक्षुर्दंसनिसम्प्राप्तिजनहारकालो होदि । तमिह संख्यसंदिमाएण
गुणिदे चक्षुर्दंसनि-अचक्षुर्दंसनिसासंख्यसम्प्राप्तिजनहारकालो होदि । तमिह आवलियाए
असंख्यसंदिमाएण गुणिदे चक्षुर्दंसनि-अचक्षुर्दंसनिसंख्यसंदिमाएण होदि । तमिह
आवलियाए असंख्यसंदिमाएण गुणिदे ओहिदंसनिसंख्यसंदिमाएण होदि ।

केवलदसणी केवलणाणिमगो ॥ १६१ ॥

कनकदानविरहिदेकेवलदसनामावाहो । सुद-मजपन्धवणाजार्ज किमिदि य दसर्ष ?
शुक्लपदे— य तान सुदगाव्यस इंसजमपि, तस्स मदिचाणपुम्भवाहो । य मजपन्धव-

भूँकि अवधिदर्शनीको ओहकर अवधिदर्शनी कीच नहीं पाये जाते हैं । इसलिये दोनोंका
समान समान है । जब यहां पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— ओ ओप असंख्य
सम्प्राप्तियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुर्दंसनी और अचक्षुर्दंसनी असंख्यसम्प्राप्तियोंका
अवहारकाल है । इसे भावकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर जो लब्ध व्यक्त हो
वही अवहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असंख्यसम्प्राप्तियोंका अवहारकाल होता है ।
इस अवधिदर्शनी असंख्यसम्प्राप्तियोंके अवहारकालको भावकीके असंख्यातवें मागसे गुणित
करने पर अचक्षुर्दंसनी और अवधिदर्शनी सम्पत्तिध्यायियोंका अवहारकाल होता है । इसे
संख्यातसे गुणित करने पर अचक्षुर्दंसनी और अवधिदर्शनी साक्षात्सम्प्राप्तियोंका अवहार-
काल होता है । इसे व्यक्तकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर अचक्षुर्दंसनी और अवधि-
दर्शनी संपत्तासंबंधोंका अवहारकाल होता है । इसे व्यक्तकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने
पर अवधिदर्शनी संपत्तासंबंधोंका अवहारकाल होता है ।

केवलदर्शनी कीच केवलदानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

भूँकि केवलदानसे पहिल केवलदर्शन नहीं पाया जाता है । इसलिये दोनों राशियोंका
समान समान है ।

प्रश्न— सुतज्ञान और मनापर्यवसायका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान— सुतज्ञानका दर्शन ता हो नहीं सकता है क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक
होता है । वही प्रकार मनापर्यवसायका भी दर्शन नहीं है क्योंकि, मनापर्यवसाय भी
वही प्रकारका है अर्थात् मनापर्यवसाय भी मतिज्ञानपूर्वक होता है । इसलिये इसका दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

भाष्यस्य वि दंसणमत्थि, तस्म वि तथाविधत्तादो । अदि सख्खसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थिपं पसज्जदे चेअ, उच्चरमानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात् । न च केवलमिह एसो क्कमो, सत्य अक्कमेण गाण-दंसणपठसीदो । न च छदुमत्थेसु दोण्हमक्कमेण बुची अत्थि, 'इदि दुषे णत्थि उप्पज्जोगा' पि पडिसिद्धत्तादो । न च भाष्यादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुब्बं भाणं, ण गाणपुब्बं तु दंसणमत्थि' इदि वययादो ।

मागामार्गं वचरस्सामो । सख्खजीवरासिमणत्थं कए बहुखंडा अचक्खुदंसण-मिच्छद्वाही होति । सेसमणत्थं कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छद्वाहीणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि अचक्खुदंसणिअसज्जसम्मार्हद्दिग्घं होदि । तस्य सस्सेव असखेज्जदिमागमवधिदे ओहिदंसणि दम्भं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छद्वाहिदम्भं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सामणसम्मार्हद्दिग्घं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंज्जसांसंखदम्भं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए

संज्ञा—यदि दर्शनस्य स्वरूपं स्वल्पसंवेदनं है तो इन दोनों जानों के भी दर्शनके व्यस्तित्वकी ग्यन्ति होती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उत्तरजानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रत्यक्षविशिष्ट स्वसंवेद-नको दर्शन माना है । परंतु केवलमिं यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि यहाँ पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । उदाहर्योमिं दधान और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जावे तो भी ठीक नहीं है क्योंकि, उदाहर्योके दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं इस भागमवचनसे उदाहर्योके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है यदि ऐसा कहा जावे तो भी ठीक नहीं है क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा भागमवचन है ।

अब भागामागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी सिध्दावदि जीव है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी सिध्दावदि जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी और अचक्खुदर्शनी मत्त परसम्यग्दर्शियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असंख्यातवां भाग प्रज्ञा देने पर दोष अविधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी और अचक्खुदर्शनी सम्यग्मिध्दावदियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी और अचक्खुदर्शनी सासाहसम्यग्दर्शियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अचक्खुदर्शनी और अचक्खुदर्शनी संख्यासंपत्तियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

ओहिर्दंसगनिरहिद्विआहिणापीणममावादो । परथ अबहारकासो बुज्जवे । ओ ओप-
असंअदसम्माइहिअवहारकासो सो नेव अचसुदंसपि-अचसुदंसमिअसंअदसम्माइहिअव-
हारकासो होदि । तमिह आवसिमाए असंखेअदिमाएण भागे हिदे उइ तमिह पव पक्खिणे
ओहिर्दंसपिअसंअदसम्माइहिअवहारकासो होदि । तमिह आवसिमाए असंखेअदिमाएण
गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसमिअसंअदसम्माइहिअवहारकासो होदि । तमिह संखेअस्सेहि
गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसमिसासणसम्माइहिअवहारकासो होदि । तमिह आवसिमाए
असंखेअदिमाएण गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसमिसंअदसंअवहारकासो होदि । तमिह
आवसिमाए असंखेअदिमाएण गुणिदे ओहिर्दंसमिसंअदसंअवहारकासो होदि ।

केवलदंसणी केवलणाणिभगो ॥ १६१ ॥

कवलणामविरहिद्वेकसंभामावादो । सुद-मणपञ्चवजाणान् किमिदि न ईसंभ ?
बुज्जवे- य ताव सुदवापत्त संभवमपि, तस्स मदिवावपुण्यवादो । य मणपञ्चव

यूँकि अवधिर्दशनको छोड़कर अवधिशानी जीव नहीं पाये जाते हैं इसलिये दोनोंका
समान्य समान है । अब यहाँ पर इनके अवहारकाळका कथन करते हैं— जो ओप असंख
सम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ है वही अचसुदंशी और अचसुदंशीनी असंखसम्पत्तिधियोंका
अवहारकाळ है । इसे व्यवहारीके संसक्यातवें भागसे मापित करने पर जो छम्ब अथवा ठसे
वसी अवहारकाळमें मिला देगे पर अवधिर्दशीनी असंखसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ होता है ।
इस अवधिर्दशीनी असंखसम्पत्तिधियोंके अवहारकाळको व्यवहारीके संसक्यातवें भागसे मापित
करने पर अचसुदंशी और अचसुदंशीनी सम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ होता है । इसे
संख्यातसे मापित करने पर अचसुदंशी और अचसुदंशीनी साक्षात्सम्पत्तिधियोंका अवहार
काळ होता है । इसे व्यवहारीके संसक्यातवें भागसे मापित करने पर अचसुदंशी और अचसु
दंशीनी संयतासंयतोका अवहारकाळ होता है । इसे व्यवहारीके संसक्यातवें भागसे मापित करने
पर अवधिर्दशीनी संयतासंयतोका अवहारकाळ होता है ।

केवलसंख्यनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

यूँकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है इसलिये दोनों पापियोंका
समान्य समान है ।

श्रुंका— श्रुतज्ञान और मणपर्ववज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान— श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक
होता है । वहीप्रकार मणपर्ववज्ञानका भी दर्शन नहीं है क्योंकि, मणपर्ववज्ञान भी
वहीप्रकारका है क्योंकि मणपर्ववज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है इसलिये वक्ष्य दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

गुणा । पमत्तसञ्ज्ञा संखेज्जगुणा । दुदसणिअसज्जदसम्माइड्ढिअवहारकलो असंखेज्जगुणो ।
 तिदंसणअसज्जदसम्माइड्ढिअवहारकलो विसेसाहिओ । दुदमणसम्माभिच्छाड्ढिअवहारकलो
 असंखेज्जगुणो । दुदमणसामणसम्माइड्ढिअवहारकलो संखेज्जगुणो । दुदसणमज्झासंज्जद
 अवहारकलो असंखेज्जगुणो । तिदमणसज्जदासंज्जदअवहारकलो असंखेज्जगुणा । तस्सं
 दध्वमसंखेज्जगुण । एवमवहारकालपल्लोमण पेदध्व माय पल्लित्वम ति । तदो चक्खु
 दंसणिमिच्छाड्ढिअवहारकलो असंखेज्जगुणो । विक्खंमच्छ असंखेज्जगुणा । सेही असंखेज्ज
 गुणा । इध्वमसंखेज्जगुण । पदरमसंखेज्जगुण । लोको असंखेज्जगुणो । केवलदंसणी
 अर्थगुणा । अचक्खुदंसणी अणतगुणा ।

एव दम्पणसंगण। ४५ ।

लेस्ताणुवादेण किण्वलेस्सिय-णील्लेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिञ्छा
इट्ठिण्हइ जाव असजदमम्माइडि ति ओघ ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रसन्नचित्तोंसे असंख्यातगुणा है। तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंका अवहार काल हो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाल तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। दो दर्शनवाले साक्षादनसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादर्शियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। दो दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले साक्षादनसम्यग्दर्शियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। चर्दी तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका द्रव्य चर्दीके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। रतीयकार अवहारकालक प्रतिबोधमरूपक्रमसे पक्ष्योपमत्तक से जाना चाहिये। पक्ष्योपमसे चर्दी दर्शनी मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। जर्दीका विष्णुमन्त्री अपने अवहार कालसे असंख्यातगुणी है। जगज्जेवी विष्कमन्त्रीसे असंख्यातगुणी है। चर्दीका द्रव्य जगज्जेवीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। कपलदर्शनी जीव लोकासे अनन्तगुण है। अणुदर्शनी जीव कपलदर्शनीयोंके प्रमाणसे अनन्तगुण है।

इत्यत्रकारः कथनमागच्छा समाप्ता इह ।

लेइपामार्गणाके अनुबादन कृष्णलेइयावाले, नीलकम्पावाले और कापोतकइयावाले
 श्रीरामे मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे सखर असपतसम्पददृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
 श्रीरामोपद्रूपपाक समान है ॥ १६० ॥

१ अत्रिदुःखद्वयस्यैव इति वाच्यम् ।

१ के०राजपुरदेव कुमान हजारीदेवरा वि०राजपुरदेव-नवतनपुरहदमा। काव०दे०४५पा। ४

॥ १ ॥ ८ चित्तमिदं विद्यायाः कृतिप्रसङ्गनामनेन यत्प्रियं वदितव्यं । ईश्वरकृपा कदा वा भविष्यत् दद्याद् इति चेदप्युक्तं ॥

तेउलेस्सिएसु मिच्छाद्द्वी दज्जपमाणेण केवडिया, जोइमियदेवेहि सादिरें ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो घुरच्चेदे । आइमियदेवा पन्जचकाले सञ्जे तेउलेस्सिया भवति । मपन्जचकाले पुन ते पेय किण्व-णील-काउलस्सिया होति । त च पञ्चपरामिस्स अर्धस-ज्जदिमागमेवा । पाणवेत्तरदेवा वि पन्जचकाले तेउलेस्सिया चव होति । त च द्वास्सियदेवाण संखेज्जदिमागमेवा होति । एदेमिमपन्जचा किण्व-णील-काउलस्सिया भवति । ते च सगपन्जचाण सरोज्जदिमागमेवा । मणुस तिरिक्खसु वि तेउलस्सिय मिच्छाद्द्वीरासी पदस्स अर्धसंखेज्जदिमागमेवो तिरिक्खपम्मलेस्सियरासीदो सगपन्जगुणो भवति । एदे तिणि वि रासीओ भवणवाधिय-सोइम्मीसणमिच्छाद्द्वीहि सह गशओ वास्सियदेवेहि सादिरेंया इवति । एदेसिमवहारकाला घुच्चेदे । ॥ अहा- आइमियअवहार कालादो पदंगुलस्स संखज्जदिमागे अवणिदे तेउलस्सियअवहारकालो इदि । तदा एक-पदंगुलं वेत्थुण संखेज्जखण्ड करिय एगखठमवणिय बहुखंडे तद्धि चव पमिखसे तउ

तेजोलेस्यासे जीवोंमें मिथ्याराष्ट्र जीव द्वयप्रमाणसी अपक्षा कितन ई ? ज्योतिषी देखेंते कुछ अधिक ई ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेस्यासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण नील और कापातलस्यासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके अन्तर्यातमें भागमात्र होते हैं । बाष्पव्यन्तर द्य भी पर्याप्तकालमें तेजोलेस्यासे युक्त होते हैं और वे बाष्पव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातमें भागमात्र होते हैं । इन्हीं बाष्पव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण नील और कापातलस्यासे युक्त होते हैं और वे अपर्याप्त बाष्पव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके अन्तर्यातमें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और निर्यक्षोंमें भी तेजोलेस्यासे युक्त मिथ्याराष्ट्रियाँ अग्न्यन्तरे अक्षयातमें भागप्रमाण है जो पर्याप्तस्यासे युक्त निर्यक्षराशिके संख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भूभ्रमयासी और सौम्य-वेगान राशिके साथ व्यवहित कर देने पर वह पाँच ज्योतिषी देखेंते कुछ अधिक हो जाती है । अब इस राशिके अवधारकात्तका वयन करत है । वह इसप्रकार है— ज्योतिषी देखोंक अवधारकात्तमेंसे प्रतरागुणके संख्यातमें मायप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेस्यासे युक्त जीवराशिका अवधारकात्त होता है । उक्त तेजोलेस्यासे युक्त जीवराशिके अवधारकात्तमेंसे एक प्रतरागुणको घटा करक और उसके संख्यात रांठ करके एक रांठको घटा कर दोष बहुत गहोको इसी अवधारकात्तमें मिला देने पर

१ तेजोलेस्यासे मिथ्याराष्ट्रके तत्त्वार्थगुणता कीरेपर । व वि १ ८ तद्विवाधयथा
२ वलदेवमदस्या ॥ जोतिषी कीरा त्रील्लवैरन तथयथा ॥ गुराव न यत्त व अर्धमने दु
३ १६३ ॥ १६३ अवधारकात्त । अवधारकात्तदेव तद्विवाधयथा ॥ १६३ ॥ १६३ ॥ १६३

अथतत्पणेन पत्तिश्रोत्रमस्त अर्धश्लेष्मदिमागणेन च आधेय साधम्ममरिय पि ओषमिदि मगिदं । मितेसे अर्धश्लेष्मदिमागे पुन पत्ति समाणर्ध, सेसलेस्तेतत्तस्मिन्प-
जीवाय पयदगुणप्राप्तेसु असमवायो । एतय धुवरासी बुष्पदे । तं जहा- सिद्ध-तेरसगुण-
पट्टिबण्य-तउ-पम्प-सुक्तेस्त्वमिच्छाद्विराति किण्व-णील-काउलेस्त्वमिच्छाद्विरासिमिद
मेदेसि बर्गं च सम्बजीवरासिस्सुपरि पक्विषे दि किण्व-णील-काउलेस्त्वमिच्छाद्विरासिधुवरासी
होदि । तं तीदि रुग्दि गुणेरुण आधलियाए अर्धश्लेष्मदिमागेन मागे हिदे छदं तन्दि
चन पक्विषे काउलेस्त्वमिच्छाद्विरासी होदि । पुष्पमागहारमम्महिय काऊण तिगुणपुष्प-
रासिन्दि मागे हिदे छदं तन्दि चन पक्विषे जीवलेस्त्वमिच्छाद्विरासी होदि । तमानलियाए
अर्धश्लेष्मदिमागेन मागे हिदे छदं तन्दि चन अवगिदे किण्वलेस्त्वमिच्छाद्विरासी होदि ।
काउ-वीस्तन्स्तरासीओ सम्बजीवरासिस्स तिमागे देहणो । किण्वलेस्त्वमिच्छाद्विरासी तिमागे
सादिरेओ । गुणपट्टिबण्यपामवहारकत्तं पुरदा मगिस्सामो ।

उक्त तीन छेद्याबाळे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अवस्थाकी अपेक्षा और साक्षात्तसम्पत्ति
आदि गुणस्वाभावकी जीवोंकी पक्षोपमके असंख्यातवें मागत्वकी अपेक्षा ओषधप्रमाणके साध
समानता पार्ति जाती है इसलिये स्वयं ओषध देखा कहा है । विशेष मर्दान् पर्यापारिक
मयका व्यवहार करने पर तो उक्त तीन छेद्याबाळे जीवोंके प्रमाणकी ओषधप्रमाणरूपबाळे
साध समानता नहीं है क्योंकि, ऐसा मान देने पर होर छेद्याबाँले उपलक्षित जीवोंका प्रकृत
गुणस्वाभावमें रहना असंभव मानना पड़ेगा । अब यहाँ पर शुचराशिका कथन करते हैं । वह
इसप्रकार है— सिद्धराशि साक्षात्तसम्पत्ति आदि छेद्य गुणस्वाभावप्रतिपक्ष राशि और वीत
पक्ष तथा शुद्धछेद्याबाळे मिथ्यादृष्टियोंकी राशियों तथा इन सर्व राशियोंके बर्गमें
हृष्य, नील और वापोतछेद्याबाळे मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो हृष्य भागे उसे सर्व
जीवराशियोंमें मिला देने पर हृष्य नील और वापोतछेद्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी शुचराशि
होती है । इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे भावकीके असंख्यातवें मापसे मापित
करने पर जो हृष्य भागे उसे उसीमें मिला देने पर वापोतछेद्यासे युक्त जीवोंकी शुचराशि
होती है । पूर्वोक्त मापहारको सम्पत्तिक करके और उसका त्रिगुणित शुचराशियोंमें माग देने
पर जो हृष्य भागे उसे उसी त्रिगुणित शुचराशियोंमें मिला देने पर नीलछेद्यासे युक्त जीवोंकी
शुचराशि होती है । इस व्यवहारकी असंख्यातवें मागसे मापित करने पर जो हृष्य भागे उसे
वर्तीमेंसे घटा देने पर हृष्यछेद्यासे युक्त जीवोंकी शुचराशि होती है । वापोतछेद्यासे युक्त
और नीलछेद्यासे युक्त प्रत्येक जीवराशि सर्व जीवराशिका कुछ कम तीसरे मागप्रमाण है ।
तथा हृष्यछेद्यासे युक्त जीवराशि कुछ अधिक तीसरे माग प्रमाण है । उक्त तीन छेद्याबाँले
युक्त गुणस्वाभावप्रतिपक्ष जीवोंके अवहारकाङ्क्षा कथन भागे करेंगे ।

छेद्यो बह्विधा वर्णकान् अथेव परिणीता । कदाचि जीवो वर्णकानि कथं हीना ॥ केवलापारतिवर्णना
वाता विगडिबर्णा ॥ श्री श्री ५३ ५३९

तेउलेस्सिएसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवद्विया, जोइमियदेवेहि सादिरियं ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो घुरुचदे । जोइसियदेवा पञ्जचकालं सन्वे तेउलेस्सिया मवति । अपञ्जचकालं पुण ते चेय किण्हणील्लकालेस्सिया होंति । ते च पञ्चरातिस्सि सखेन्जदिमागमेचा । बाणवेंतरदेवा वि पञ्जचकाले तेउलेस्सिया चेव होंति । ते च जोइसियदेवाणं सखेन्जदिमागमेचा होंति । एदेस्सिमपञ्जचा किण्हणील्लकालेस्सिया मवति । ते च सगपञ्जचाणं सखेन्जदिमागमेचा । मणुस तिरिक्खेसु वि तेउलेस्सिया मिच्छाद्विरासी पदस्स असखेन्जदिमागमेचो तिरिक्खपम्मलेस्सियगवीदो सखेन्जगुणो जत्थि । एदे तिग्गि वि रासीओ मवणवात्थिय सोहम्मिसत्थमिच्छाद्वीहि सह गदाओ जवसियदेवेहि सादिरिया हवति । एदेसिमवहारकाला घुरुचदे । तं जहा— जेइमियअवहार कालादो पदंगुलस्स सखेन्जदिमागे अबणिदे तेउलेस्सियअवहारकालो इदि । तदो एक पदंगुलं चेत्थं सखेन्जत्थं करिय एगसंजमवत्थिय बहुखे तन्हि चव पविस्सुचे तउ

तेउलेस्सियासले जीवोंमें मिथ्याराष्ट्र जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ई ? ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोमेध्यासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृप्य नील और कापोतकेद्वारासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । बाणव्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोमेध्यासे युक्त होते हैं और वे बाणव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । इन्हीं बाणव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृप्य नील और कापोतकेद्वारासे युक्त होते हैं और वे अपर्याप्त बाणव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और तिर्यक्षोंमें भी तेजोमेध्यासे युक्त मिथ्यारक्षिराशि व्यवहारके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो पक्षमेध्यासे युक्त तिर्यक्षराशिके संख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सौधमयेक्षण राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है । अब इस राशिके अवहारकालका वयन करते हैं । यह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अवहारकालमेंसे अतरंगुलके संख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोमेध्यासे युक्त जीवरक्षिक अवहारकाल होता है । उक्त तेजोमेध्यासे युक्त जीवरक्षिके अवहारकालमेंसे एक अतरंगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर दोष बहुत खंडोंको उसी अवहारकालमें मिला देने पर

१ तेजोमेध्या मिथ्यावाच्यो वपुस्तत्तत्तदा बहिरत् । अ ति १ ८ तेजोमेध्या वपुस्तत्तत्तदा ॥ ज्योतिषी देवो डिरेक्कमेवत्त वपुसो इ । एतत्त अणुत्त व अर्धमात्रं तु तेजोमेध्या ॥ तेदु अहत्तत्तत्तत्त । ज्योतिषी देवो डिरेक्कमेवत्त तेजोमेध्या वाच्यो इति ॥ पृ. अ ५१९ ५४ ५४३

सेस्तिपमिच्छाद्विज्वहारकासो होदि । सेसं मोक्षियमंगो ।

सामणसम्माइट्ठिप्पट्ठि जाव सजदासजदा ति ओष ॥ १६४ ॥

छसु रुस्तसु द्विदभोषअसंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाद्वि-सासणसम्मामिद्धिदि
सरितो एकाए सेउत्तेसाए द्विरासी कप होदि ? न, पस्सिदामस्स असंखन्वदिमागपेव
सरिसत्तमवेक्खिय आपोषएसाओ ।

पमत्त-अपमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१६५॥

ओषरासिपमाणं न पुरेदि ति वं पुत्तं होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाद्विट्ठि दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिदिय
तिरिक्खजोणिणीण संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोहेस्यासे युक्त मिथ्याद्वि जीवराशिका अवधारणक होता है । ओष कथन सेस्तिपी देवोंके
कपलके समान है ।

तेजोहेस्यासे युक्त जीव सासादनसम्पत्ति गुणस्वानसे लेकर सयत्तसंयत
गुणस्वानतक प्रत्येक गुणस्वानमें ओषग्रूपकाके समान पत्न्योपमके असम्पातवें भाग
हैं ॥ १६४ ॥

श्रुत्य—ओष असयतसम्पत्ति राशि ओष सम्पत्तिमिथ्याद्विराशि और ओष
सासादनसम्पत्तिराशि त्रयो हेस्याओंमें स्थित है अतएव इसके साथ केवल तेजोहेस्यामें
स्थित असंयतसम्पत्तिराशि सम्पत्तिमिथ्याद्विराशि और सासादनसम्पत्तिराशि समान
कहे हो सकती है ।

समाधान—यहाँ कवीक, पत्न्योपमके असंयतवें भागस्वरूपी अपेक्षा इष्ट दोनों राशि-
योंमें समानता देखकर तेजोहेस्यासे युक्त सासादनसम्पत्ति जाति राशिका ओषग्रूपसे उल्लेख
किया है ।

तेजोहेस्यासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी
ओषा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

इस दो गुणधराओंमें तेजोहेस्यासे युक्त जीवराशि ओषप्रमाणके पूर्व यहाँ करती
है यह इस धर्म सेव्यात पहले देनेका अभिप्राय है ।

पक्षहेस्यावाओंमें मिथ्याद्वि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संखी
पचेंन्द्रिय तिर्यक् यानिमती जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुच । एदस्स अवहारकालो युच्चेदं । पंचिदियतिरिक्खजोभिणीअवहार
कालं संखेज्जकूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोभिणीअवहारकालो होदि । तमिह
संखेज्जकूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खतेउलस्सियमिच्छाद्द्वीणमवहारकालो होदि ।
तमिह संखेज्जकूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाद्द्वीणमवहारकालो होदि ।

सासणसम्माहट्ठिण्हुडि जाव सजदासजदा ति ओष ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अपमत्तसजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६८ ॥

केउलेस्सियान् संखेज्जदिमाणेणा हवति । कुदो ! पम्मलेस्साए^१ सह गदबीवाणं
पउरं संवामावाहो ।

सुक्खलेस्सिएसु मिच्छाहट्ठिण्हुडि जाव संजदासजदा ति द्व्य
पमाणेण केवडिया, पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमाणो । एदेहि पल्लिदो
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

यह स्रष्टा सुगम है । अब पच्छेदयासे युक्त मिथ्यादृष्टि अवधारणाके अन्वयार्काक
कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यक् बोधिमितियोंके अवधारणाके संख्यातसे गुणित करने पर
संबंधी पंचेन्द्रिय तिर्यक् बोधिमितियोंका अवधारणाक होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर
संबंधी पंचेन्द्रिय तिर्यक् बोधेकेदयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवधारणाक होता है । इसे संख्यातसे
गुणित करने पर पच्छेदयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवधारणाक होता है ।

पच्छेदयावाले बीच सासादनसम्पगदृष्टि गुणस्मानसे लेकर संयतासयत
गुणस्मानतक प्रत्येक गुणस्यानमें ओषप्ररूपणाके समान पत्थोपमके असंख्यातमें भाग
प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस स्रष्टा की कार्य करक है ।

पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत बीच और अप्रमत्तसंयत बीच द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितन हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बीच पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत और
अप्रमत्तसंयत बीचके संख्यातमें भागप्रमाण होते हैं क्योंकि पच्छेदयासे युक्त प्रमत्तसंयत
और अप्रमत्तसंयत गुणस्यानको प्राप्त हुए बीच प्रचुर नहीं होते हैं ।

सुक्खलेदयावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्यानसे लेकर संयतासंयत गुणस्यानतक प्रत्येक

१ मणि अस्सा इति पाठः ।

२ सुक्खलेदया विमत्तसंयतस्य संयतासंयतस्य । पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत । स ति १ < पक्क-
मं पच्छेदयावाले पक्कमं ॥ दो. ओ. ५४९

एतत् पस्विदोत्तमस्त अर्चयेज्जदिमागवर्णं सावहारपरूषणं ओषपमाप्यपडिसेहफल ।
 कुदोत्तमस्तदे ? सगहपडिहारेण पञ्चपण्यपत्तवणादौ । एतत् अवहारकालो बुधदे । ओष-
 असजदसम्माइडिअवहारकाले आवलियाए अर्चयेज्जदिमागव मागे हिदे लई तमिह नेव
 पक्खिसे तेउलस्सियअसजदसम्माइडिअवहारकालो इदि । तमिह आवलियाए अर्चयेज्जदि
 माएण गुमिदे पम्मलेस्सियअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह आगस्मिाप
 अर्चयेज्जदिमाएण गुमिदे काउलेस्सियअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह
 आगस्मिाप अर्चयेज्जदिमागेण गुमिदे किम्हलेस्सियअसजदसम्माइडिअवहारकाले होदि ।
 तमिह आवलियाए अर्चयेज्जदिमागव मागे हिद् लई तमिह नेव पक्खिसे पीललेस्सिय
 असजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह आवलियाए अर्चयेज्जदिमाएण गुमिदे सुक्ख
 लेस्सियअसजदसम्माइडिअवहारकालो इदि । सग-सगअसजदसम्माइडिअवहारकाले आव-
 लियाए अर्चयेज्जदिमाएण गुमिदे सग-सगसम्माभिच्छडिअवहारकालो होदि । ते

गुणस्वानमें जीव इव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पत्न्योपमके अर्थक्यातर्षे नामप्रमाण
 है । इस जीवोंके द्वारा अन्तर्ब्रूत कालसे पत्न्योपम अवहृत होता है ॥ १९९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पत्न्योपमके अर्थक्यातर्षे मागप्रमाण इस व्यवस्था
 प्ररूपण ओषम्याजके प्रतिपेक्ष करनेके लिये दिया है ।

प्रंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संमहणयथा परिहार करके पर्यायार्थिक नपक अवकम्भन लेनेसे यह
 जाना जाता है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओष अर्चयतसम्पगद्वि अवहार
 कालको व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे माजित करने पर ओ कल्प भावे बडे बलीमें भिन्न होने
 पर तेज्जकेइयासे युक्त असयतसम्पगद्विर्षोक् अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्या-
 तर्षे मागसे गुणित करने पर पक्षकेइयासे युक्त असयतसम्पगद्विर्षोक् अवहारकाल होता है ।
 इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर बापोतकेइयासे युक्त असयतसम्पगद्वि-
 र्षोक् अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर कुज्जकेइयासे
 युक्त असयतसम्पगद्विर्षोक् अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे माजित
 करने पर ओ कल्प भावे बडे बलीमें भिन्न होने पर भीजकेइयासे युक्त असयतसम्पगद्विर्षोक्
 अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर गुज्जकेइयासे
 युक्त असयतसम्पगद्विर्षोक् अवहारकाल होता है । अब अपने अपने असयतसम्पगद्विर्षोके
 अवहारकालोंको व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्पगिध्या-
 र्थोक् अवहारकाल होता है । अब अपने अपने सम्पगिध्याद्विर्षोके अवहारकालोंको

संखेन्द्ररूपेहि गुणिदे सग-सगसातणसम्माइडिअवहारफालो होदि । तेषु आवलियाए असंखेन्द्रदिमाण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्तिपमज्जदासंखेन्द्रअवहारफालो होदि । यपरि सुकलेस्तिपमज्जदसम्माइडिअवहारफाले संखेन्द्ररूपेहि गुणिदे सुकमिच्छाइडिअवहारफालो होदि । तन्दि आवलियाए असंखेन्द्रदिमाण गुणिदे सम्मामिच्छाइडिअवहारफालो होदि । तन्दि संखेन्द्ररूपेहि गुणिदे सुकलेस्तिपसातणसम्माइडिअवहारफालो होदि । तन्दि आवलियाए असंखेन्द्रदिमाण गुणिदे सुकलेस्तिपमज्जदासंखेन्द्रअवहारफालो होदि । सग-सग अवहारफालेन पलिदोवमे माग दिदे सग-सगसामिणो इवति ।

पमत्त-अपमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥१७०॥

एदे दो वि रासिणो ओषपमाय ण पावति, तेउ-पम्मसुकलेस्सासु अक्केमेन विइत्थिय विइत्तादो । सेस सुगेम्हं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओष' ॥१७१॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्पत्तियोंका अवहारफाल होता है । इनमें कर्णोत्तरेखेद्यावाले और पण्डेद्यावाले सासादनसम्पत्तियोंके अवहारफालोंको आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर तेखेद्यावाले और पण्डेद्यावाले संयतासंयतोंके अवहारफाल होते हैं । इतना विशेष है कि शुद्धखेद्यावाले असंपत्तिसम्पत्तियोंके अवहारफालको संख्यातसे गुणित करने पर शुद्धखेद्यावाले मिथ्यादियोंका अवहारफाल होता है । इसे आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर शुद्धखेद्यावाले सम्पत्तिमिथ्यादियोंका अवहारफाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुद्धखेद्यावाले सासादनसम्पत्तियोंका अवहारफाल होता है । इसे आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर शुद्धखेद्यावाले संयतासंयतोंका अवहारफाल होता है । इस अपने अपने अवहारफालसे पसोपमके माहित करने पर अपनी अपनी राशिअ प्रमाण आता है ।

शुद्धखेद्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कियेने हैं । संख्यात ह ॥ १७० ॥

शुद्धखेद्यावाले शुद्ध प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये दोनों राशिवा ओषप्रमाणको माप नहीं होती हैं क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत शुद्धस्यावमें जीव तेखेद्या पण्डेद्या और शुद्धखेद्यामें शुणपण् विमल होकर स्थित हैं । शेष कथन सुग्राह्य है ।

शुद्धखेद्यावाले जीव अपूर्वकरण गुणस्यानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्यानतक प्रत्येक गुणस्यानमें ओषप्रकरणके समान हैं ॥ १७१ ॥

एतत् पलित्वैवमस्म असंख्येज्जदिमागवयं सावहारपरूषं ओषपमापपठिसेहफलं ।
 इन्द्रावगमदे ! सगहपरिहारेण पञ्चवर्णपावतवजादौ । एतत् अवहारकाष्ठो बुधदे । आप-
 असंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठं जावसियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदे छई तमिह येव
 पक्खिउत्ते वेउलस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि । तमिह आत्तलियाए असंख्येज्जदि
 माएण गुणिदे पम्मसेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि । तमिह जावसियाए
 असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे काउलेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि । तमिह
 आत्तलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे किम्बलेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि ।
 तमिह आत्तलियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदे छई तमिह येव पक्खिउत्ते गीसलेस्सिय-
 असंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि । तमिह आत्तलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे सुक्ख
 लेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठो होदि । सग-सगअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाष्ठे जाव
 लियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे सग-सगसम्माभिच्छाद्विभवहारकाष्ठो होदि । वे

गुणस्थानमे जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा कितने हैं ? पक्षोपमक असंख्यातवै मायप्रमाण
 है । इन बीषोंके द्वारा अन्तर्गृह्यत काष्ठसे पक्षोपम अणुवत् होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें व्यवहारकाष्ठसहित पक्षोपमके असंख्यातवै मायप्रमाण इस व्यवहार
 प्रमाण व्यवस्थानके प्रतिपेक्ष करनेके लिये दिया है ।

शब्द—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संख्येज्जदिमागवकारके पर्यावर्तित व्यवहार व्यवस्थान केनेसे यह
 जाना जाता है ।

अब वहाँ पर व्यवहारकाष्ठका प्रमाण करते हैं— व्यवहार असंख्यातसम्माद्विभवहार
 काष्ठको व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे माजित करने पर जो छन्द्य व्यापे उसे उसीमें भिक्षा देने
 पर तेजस्वेत्यासे युक्त असंख्यातसम्माद्विषयोका अवहारकाष्ठ होता है । इसे व्यवस्थाके असंख्या
 तवै मागसे गुणित करने पर पक्षवेद्यासे युक्त असंख्यातसम्माद्विषयोका अवहारकाष्ठ होता है ।
 इसे व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर कापोतवेद्यासे युक्त असंख्यातसम्माद्वि-
 योका अवहारकाष्ठ होता है । इसे व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर कृष्णवेद्यासे
 युक्त असंख्यातसम्माद्विषयोका अवहारकाष्ठ होता है । इसे व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे माजित
 करने पर जो छन्द्य व्यापे उसे उसीमें भिक्षा देने पर गीसवेद्यासे युक्त असंख्यातसम्माद्विषयोका
 अवहारकाष्ठ होता है । इसे व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर इन्द्रावेद्यासे
 युक्त असंख्यातसम्माद्विषयोका अवहारकाष्ठ होता है । इन अपने अपने असंख्यातसम्माद्विषयोंके
 व्यवहारकाष्ठोंकी व्यवस्थाके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्प्रतिपेक्षा
 द्रविष्योका अवहारकाष्ठ होता है । इन अपने अपने सम्प्रतिपेक्षाद्विषयोंके व्यवहारकाष्ठको

संखेन्जस्त्रेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइडिअवहारकाळो होदि । तेसु अत्तलियाए असंखेन्जदिमाण गुणिदेसु तेउ-यम्मलेस्सियसअदासअदअवहारकाळो होदि । यवरि सुकलेस्सियसअदसम्माइडिअवहारकाळो संखेन्जस्त्रेहि गुणिदे सुकमिच्छइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि आबलियाए असंखेन्जदिमाण गुणिदे सम्मामिच्छइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि संखेन्जस्त्रेहि गुणिदे सुकलेस्सियसासणसम्माइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि अत्त लियाए असंखेन्जदिमाण गुणिदे सुकलेस्सियसअदासअदअवहारकाळो होदि । सग-सग अवहारकाळेण पल्लिदोवमे माग हिदे सग-सगरामिणो इवति ।

पमत्त-अपमत्तसजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१७०॥

पदे दो वि रासिणो ओपपमाण न पावति, तेउ-यम्मसुकलेस्ससु अकमेण विहविय विदपादो । सेस सुगेन्ना ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओर्व' ॥१७१॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने साक्षात्तसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इन्हें अर्थात् तेजोकेस्याबाळे और पद्मकेस्याबाळे साक्षात्तसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळोंके आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तेजोकेस्याबाळे और पद्मकेस्याबाळे संघतासंघतोंके अवहारकाळ होते हैं । इतना विशेष है कि शुक्लकेस्याबाळे असंघतसम्पन्नद्विषोंके अवहारकाळके संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लकेस्याबाळे मिथ्याद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर शुक्लकेस्याबाळे सम्पन्नमिथ्या द्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लकेस्याबाळे साक्षात्तसम्पन्नद्विषोंका अवहारकाळ होता है । इसे आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर शुक्लकेस्याबाळे संघतासंघतोंका अवहारकाळ होता है । इस अपने अपने अवहारकाळसे पर्योपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशिअ प्रमाण आता है ।

शुक्लकेस्याबाळे प्रमत्तसंघत और अप्रमत्तसंघत जीव ब्रह्मप्रमायकी अपेक्षा किंगने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७० ॥

शुक्लकेस्यासे पुनः प्रमत्तसंघत और अप्रमत्तसंघत ये दोनों राशियां नौधप्रमायकी माप नहीं होती हैं क्योंकि, प्रमत्तसंघत और अप्रमत्तसंघत गुणस्थानमें जीव तेजोकेस्या पद्मकेस्या और शुक्लकेस्यामें पुनपुन विभक्त होकर स्थित हैं । येय कथन सुग्राह्य है ।

शुक्लकेस्याबाळे जीव अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

इदो ! अप्यसुस्मात्मादो । अत्रोगिणो असेस्सिया । इदो ! कम्मलेवमिचित्त-
जोग-कमायामादा । ओगस्स कर्षं तस्मात्तवणसा । ण, तिपदि सि जोगस्स वि सेस्सा-
वणससिद्धिदो ।

मातामार्ग पक्षस्स्यामो । सप्यजीवरायिमर्षतर्पडे कप बहुसुंढा तिष्ठेस्सिया होति ।
सेसमपतर्पडे कप बहुसुंढा अलेस्सिया होति । सेस सये-अर्पडे कप बहुसुंढा सेउ
सेस्सिया होति । सममसंपुज्जर्पडे कप बहुसुंढा पम्मत्तस्सिया । ससेगमाणा सुक्क-
त्तस्सिया । तिनेस्सियरायिमावत्तियाए असंयेज्जदिमाएण रंडेज्ज सवगएउ तदो पुच
इरिय सेस बहुमागे पक्ष निप्पि समपुज्ज करिय अण्णिदेगसुंढमावत्तियाए असंयेज्जदि
माएण रुडिय तत्त बहुसुंढे पम्मपुज्ज पक्खित्ते किण्ठेस्सिया । सेसेगसुंढमावत्तियाए
असंयेज्जदिमागेण रुडिय बहुसुंढे त्रिदियपुंज पक्खित्ते प्थिस्तेस्सिया । सेसेगसुंढ
तदियपुंजे पक्खित्ते काउनेस्सिया । तदो काउनेस्सियरायिमर्षतर्पडे कप बहुसुंढा मिच्छा-
इडियो । सेममसंपुज्जर्पडे कप बहुसुंढा असंज्जदसम्मपड्डियो । सेसं सपुज्जर्पडे कप

पूर्वके अपूर्वकरण भावि गुणस्वात्मोंमें शुद्धदेवताको छोड़कर दूसरी देवता नहीं पाई
जाती है इसलिये अपूर्वकरण भावि गुणस्वात्मोंमें ओषधमात्र ही शुद्धदेवतावाच्यक प्रमाण
है। अयोध्या जीव देवताहित है क्योंकि अयोध्या गुणस्वात्ममें कर्मदेवता करणमूल पोष और
कपाय नहीं पाया जाता है।

प्रश्न—वेदम योगको देवता यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जो मिथ्या करती है वह देवता है' इस निश्चितिसे
अनुसार योगके भी देवता संज्ञा सिद्ध हो जाती है।

अब भागामात्रको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिक अनन्त बंध करने पर बहुभाग-
प्रमाण रूप्य, नीच और वायोन इन तीन देवतावाच्ये जीव हैं। दोष एक भागके अनन्त बंध
करने पर बहुभाग अवधारित जीव हैं। दोष एक भागके संकषाण रंड करने पर बहुभाग
सेत्रोदेवतावाच्ये जीव है। दोष एक भागके अर्णवपात नष्ट करने पर बहुभाग पक्षदेवतावाच्ये
जीव है। दोष एक भागप्रमाण शुद्धदेवतावाच्ये जीव है। रूप्य नीच और वायोन इन तीन
देवतासं शुद्ध जीवराशिकों भावर्णके अक्षयपातमें भागसे लंडित करके उनमेंसे एक बंधको
पृथक् रूप्यपि करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके घटाकर पृथक् रूप्ये हुए
एक बंधका भावर्णके अक्षयपातमें भागसे लंडित करके वहां जो बहुभाग जाये उसे प्रथम पुंजमें
मिला देने पर रूप्यदेवतावाच्ये जीवोंका प्रमाण होता है। दोष एक भागको भावर्णके
अक्षयपातमें भागसे लंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीचदेवतावाच्ये
जीवोंका प्रमाण होता है। दोष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर वायोनदेवतावाच्ये
जीवोंका प्रमाण होता है। अनन्तर वायोनदेवतावाची राशिके अनन्त बंध करने पर बहुभाग
विप्यापि जीव है। दोष एक भागके अर्णवपात बंध करने पर बहुभाग पक्षवत्सम्यग्नि

बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधियो । सेसेगसंख्य सासपसम्माद्विधियो । एवं बीज-किञ्चलेस्सात्र पि
 मामामागं कायस्य । तेतलेस्तिपरासिमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधियो । सेसम
 संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधियो । सेस संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य सम्मा
 मिच्छाद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य सासपसम्माद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये
 कए बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचापमचसज्जदा । पम्मलेस्तिपरासिमसंखेज्ज-
 संख्ये कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधियो ।
 सेस संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य
 सासपसम्माद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचा-
 पमचसज्जदा । सुक्कलेस्तिपरासि संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधियो । सेसम-
 संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधियो । सेस संखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य सम्मामिच्छा-
 द्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए बहुसंख्य सासपसम्माद्विधियो । सेसमसंखेज्जसंख्ये कए
 बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचापमचसज्जदा ।

अप्यात्तद्वयं विविधं सत्त्वानादिभेदम् । सत्त्वाने पयसं । किञ्च-बीज-काउलेस्तिप-

बीज है । रोप एक भागके संख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि जीव है ।
 रोप एक भाग प्रमाण सासात्त्वसम्माद्वि जीव है । इसीप्रकार बीज और कापोतकेत्या
 बाज्येका भी मामामाग कर लेना चाहिये । तेतोछेत्तावासी जीवराशिके असंख्यात बौद्ध करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव है । रोप एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग
 असंख्यसंख्याद्वि जीव है । रोप एक भागके संख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सासात्त्वसम्माद्वि जीव है । रोप
 एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव है । रोप एक भागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव है । पञ्चछेत्तावासी जीवराशिके असंख्यात बौद्ध करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव है । रोप एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग
 असंख्यसंख्याद्वि जीव है । रोप एक भागके संख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सासात्त्वसम्माद्वि जीव है । रोप
 एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव है । रोप एक भागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव है । शुद्धछेत्तव्य राशिके संख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग
 असंख्यसंख्याद्वि जीव है । रोप एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग मिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक भागके संख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि जीव है । रोप
 एक भागके असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग सासात्त्वसम्माद्वि जीव है । रोप एक भागके
 असंख्यात बौद्ध करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव है । रोप एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत
 भावि जीव है ।

स्वस्थान आदिके रोपसे अल्पबहुत्वं तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्वं

कुदो ? अप्येतेस्सामावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेवमिमि-
जोग-कयायामावा । जोगस्म कर्म्म लेस्सानवएसो । ज, लिपदि पि जोगस्स नि सेस्सा-
ववएससिद्धिदो ।

भागामार्गं वचस्सामो । सप्पजीवरासिमगतएव कए बहुसंढा तिलेस्सिया होति ।
सेसमर्णत्तएव कए बहुसंढा अलेस्सिया होति । सेस संयेज्जएव कए बहुसंढा ठेठ
लेस्सिया होति । ससमर्णत्तएव कए बहुसंढा पम्मलेस्सिया । सेसेगमागो सुक्क-
लेस्सिया । तिलेस्सियरासिमावलिपाए अंसयेज्जदिमाएण एवेज्ज सत्थेगसुद्ध तदो पुण
इतिप सेसे बहुमागे वेत्थ तिप्पि समपुज करिय अरणिदेगसंढमावलिपाए अंसजेज्जदि
माएण एविय सत्थ बहुसंढे पइयपुज पक्खिउये किण्हलस्सिया । सेसेगसंढमावलिपाए
अंसयेज्जदिमागेण एविय बहुसंढे विविपुजे पक्खिउये गील्लेस्सिया । सेसगसंढ
तदियपुजे पक्खिउये कएठेस्सिया । तदो कएठेस्सियरासिमर्णत्तएव कए बहुसंढा मिच्छा-
इत्थिपो । सेसमर्णत्तएव कए बहुसंढा अंसज्जसम्मपत्तिगो । सेस संयेज्जएव कए

चूंकि अपूर्णकरण आदि गुणस्थानोंमें शुद्धलेस्याको छोड़कर दूसरी देहवा नहीं पाई
जाती है इसलिये अपूर्णकरण आदि गुणस्थानोंमें जोष्यमात्र ही शुद्धलेस्याकोष्य प्रमाण
है । अयोगी जीव लेस्यारहित है क्योंकि अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपक कारणभूत दोष भीर
कराय नहीं पाया जाता है ।

संका—वेबल योगको लेहवा यह संका कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जो लिपन करती है वह लेहवा है । इस निराकिके
अनुसार योगके भी लेहवा संका सिद्ध हो जाती है ।

जब भागामागको वतझाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त जंड करने पर बहुभाग-
प्रमाण हृष्य, भीर भीर बापोत इन तीन लेहवावाले जीव हैं । दोष एक मायक अनन्त जंड
करने पर बहुभाग कइराएहित जीव हैं । दोष एक भागके संख्यात जंड करने पर बहुभाग
लेहोलेहवापामे जीव है । दोष एक भागके असंख्यात जंड करने पर बहुभाग पयलेहवावाले
जीव है । दोष एक मायजमात्र शुद्धलेहवावाले जीव है । हृष्य भीर भीर कापात इन तीन
लेहवात मुक्त जीवराशिको आचरुकि असंख्यातमें भागले जंडित करके उनमेंसे एक जंडको
पृथक् स्थापित करके भीर दोष बहुभागके समान तीन पुज करके घटाकर पृथक् रखने हुए
एक संज्ञको आचरुकि असंख्यातमें भागले रंडित करके वहां जो बहुभाग जये उसे प्रयत्न पुंजमें
मिला देने पर हृष्यमरवापाके जीवोका प्रमाण होता है । दोष एक भागको आचरुकि
असंख्यातमें भागले रंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर भील्लेहवापाके
जीवोका प्रमाण होता है । दोष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर बापोतलेहवावाले
जीवोका प्रमाण होता है । अनन्तर बापोतलेहवावाली राशिके अनन्त जंड करने पर बहुभाग
मिथ्याएहि जीव है । दोष एक भागके असंख्यात जंड करने पर बहुभाग असंख्यतव्यगदि

बहुसंख्यं सम्मामिच्छाद्विणो । सेसेगल्लं सासणसम्माद्विणो । एव नील-किण्डलेस्सारं पि
 मामामां कायस्यं । तेठलेस्सियरासिमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं मिच्छाद्विणो । सेसम
 संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं असमसंख्यं मिच्छाद्विणो । सेस संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं सम्मा-
 मिच्छाद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं सासणसम्माद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे
 कए बहुसंख्यं संजदासंजदा । सेसेगमगो पमचापमचसज्जदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्ज
 खंठे कए बहुसंख्यं मिच्छाद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं असज्जदसम्माद्विणो ।
 सेसं संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं सम्मामिच्छाद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं
 सासणसम्माद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं संजदासंजदा । सेसेगमगो पमचा-
 पमचसज्जदा । सुकलेस्सियरासि संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं असंजदसम्माद्विणो । सेसम-
 संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं मिच्छाद्विणो । सेसं संखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं सम्मामिच्छा-
 द्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए बहुसंख्यं सासणसम्माद्विणो । सेसमसंखेज्जखंठे कए
 बहुसंख्यं संजदासज्जदा । सेसेगमगो पमचापमचादो ।

अप्यावहुग विविहं सत्थानादिमेएण । सत्थापे पयदं । किण्ड-नील-काठलेस्सिय-

जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंढ करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि जीव हैं ।
 रोप एक भाग प्रमाण सासादनसम्माद्वि जीव हैं । इसीप्रकार नील और कापोतकेत्या-
 बासीका भी भागभाग कर लेना चाहिये । तेजोछत्याबासी जीवराशिके असंख्यात बंढ करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग
 असंयतसम्माद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंढ करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि
 जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग सासादनसम्माद्वि जीव हैं । रोप
 एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक भागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । पञ्चलेस्याबासी जीवराशिके असंख्यात बंढ करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग
 असंयतसम्माद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंढ करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि
 जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग सासादनसम्माद्वि जीव हैं । रोप
 एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक भागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शुक्लेस्सक राशिके संख्यात बंढ करने पर बहुभाग
 असंयतसम्माद्वि जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग मिच्छाद्वि
 जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंढ करने पर बहुभाग सम्ममिच्छाद्वि जीव हैं । रोप
 एक भागके असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग सासादनसम्माद्वि जीव हैं । रोप एक भागके
 असंख्यात बंढ करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत
 जीव हैं ।

एवस्थान आदिके भेदके अवयवहृत्य तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अवयवहृत्य

मिच्छद्वाहीनं सत्यानं पत्नि, रासीदो योवदरमागहासामावा । सासमादीयमोषमेगो । सञ्चत्पोषो तेउतस्मिपमिच्छद्वाहिजवहारकालो । निवर्त्तमर्द्ध अर्त्तलेज्जगुणा । सेरी अर्त्तलेज्जगुणा । दम्भमर्त्तलेज्जगुण । पदरमर्त्तलेज्जगुण । उोगो अर्त्तलेज्जगुणो । सास मादीयमोष । एवं येव पम्म-गुहतेस्सायं सत्यानं पत्तर्त्त । सत्यानं गर्द ।

परत्वाये पयर्द । सम्भत्पोषो काउलेस्सियअर्त्तज्जदसम्मद्वाहिजवहारकालो । सम्भामिच्छद्वाहिजवहारकालो अर्त्तलेज्जगुणो । सासवसम्मद्वाहिजवहारकालो सलेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमर्त्तलेज्जगुणं । एवं येयम्भं जाव पत्तिदोवर्म्म सि । तदो काउलेस्सियमिच्छद्वाहिजो अर्त्तगुणा । एवं नील-किण्णं । सञ्चत्पोषा तेउलेस्सियअप्पमचसज्जदा । पमचसज्जदा सलेज्जगुणा । असज्जदसम्मद्वाहिजवहारकालो अर्त्तलेज्जगुणो । सम्भामिच्छद्वाहिजवहारकालो अर्त्तलेज्जगुणो । सासवसम्मद्वाहिजवहारकालो सलेज्जगुणो । संज्जदासज्जदवहारकालो अर्त्तलेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमर्त्तलेज्जगुणं । एवं येयम्भं जाव पत्तिदोवर्म्म सि । तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण नील और कापोतछेद्यावालोंके स्वस्थान अव्यवहृत्य नहीं पाया जाता है क्योंकि कृष्ण नील और कापोतछेद्याक राशियोंसे सबके भागहार स्तोत्र नहीं हैं । सासादनसम्पन्निहियोंके स्वस्थान अव्यवहृत्य और स्वस्थान अव्यवहृत्यके समान हैं । तेओछेद्याक मिष्यादियोंका अवहारकाक सबसे स्तोत्र है । इन्हींकी विषमसत्ता अवहारकाकसे संख्यातगुणी है । अगमेयी विषमसत्तासे संख्यातगुणी है । प्रप्य अपमेयीसे संख्यातगुणा है । अपमतर प्रप्यसे संख्यातगुणा है । ओष अपमतरसे संख्यातगुणा है । सासादनसम्पन्निहियोंके स्वस्थान अव्यवहृत्य और स्वस्थान अव्यवहृत्यके समान हैं । इसीप्रकार पयोपमत्त और गुहतेस्सावालोंके स्वस्थान अव्यवहृत्यका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अव्यवहृत्य समाप्त हुआ ।

अन परस्थानमें अव्यवहृत्य प्रकृत है— कापोतछेद्याक अर्त्तपतसम्पन्निहियोंका अवहारकाक सबसे स्तोत्र है । सम्भामिष्यादियोंका अवहारकाक अर्त्तपतसम्पन्निहियोंके अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । सासादनसम्पन्निहियोंका अवहारकाक सम्भामिष्यादियोंके अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । इन्हींका प्रप्य अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार पयोपमत्त के जाना चाहिये । पयोपमसे कापोतछेद्याक मिष्यादिके नील ममत्तगुणे हैं । इसीप्रकार नील और कृष्णछेद्याक जीवोंके परस्थान अव्यवहृत्यका भी कथन करना चाहिये । तेओछेद्याक अपमचसज्जदा और सबसे स्तोत्र हैं । प्रमचसज्जदा और अपमचसज्जदासे संख्यातगुणे हैं । अर्त्तपतसम्पन्निहियोंका अवहारकाक प्रमचसज्जदासे संख्यातगुणा है । सम्भामिष्यादियोंका अवहारकाक अर्त्तपतसम्पन्निहियोंके अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । सासादनसम्पन्निहियोंका अवहारकाक सम्भामिष्यादियोंके अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । संख्यातगुणोंका अवहारकाक सासादनसम्पन्निहियोंके अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । इन्हींका प्रप्य अवहारकाकसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार पयोपमत्त के जाना चाहिये । पयोपमसे

अस्सियमिच्छद्दिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उभरि सत्थाणमंगो । एवं पम्मलेस्साए ।
 सुकलेस्साए सम्बत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सज्जोगिकेवली
 संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माद्दि
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छद्दिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छद्दि
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासनसम्माद्दिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सज्जदासज्ज
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव ठव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण
 केयर्थं आस पडिदावम ति । परत्थाण गद ।

सम्बत्थोवा पयद । सम्बत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा ।
 सज्जोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा
 संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । तेउ
 सस्सियअप्पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसज्जदसम्मा-
 द्दिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छद्दिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासनसम्मा-

तेज्जोलेस्सय मिप्पादियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्प
 बहुत्वेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पण्णोस्सयाके परस्थान अवयवहुत्वका कथन
 करना चाहिये । शुद्धलेस्सयमें आठों उपशामक सबसे श्लोक हैं । सपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे
 हैं । सयोगिकेवली जीव सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे
 संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अग्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्पगदियोंका
 अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मिप्पादियोंका अवहारकाल असंयतसम्पगदियों
 का अवहारकालसे संख्यातगुणा है । सम्मामिप्पादियोंका अवहारकाल मिप्पादियोंके अवहार-
 कालसे असंख्यातगुणा है । सासाङ्गसम्पगदियोंका अवहारकाल सम्मामिप्पादियोंके
 अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल सासाङ्गसम्पगदियोंका अव-
 हारकालसे असंख्यातगुणा है । उर्ध्वीका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 अवहारकालके प्रतिबोम क्रमसे पक्षोपमत्तक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान
 अवयवहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सब परस्थानमें अवयवहुत्व प्रकृत है- आठों उपशामक सबसे श्लोक हैं । सपक
 उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुद्धलेस्सय अग्रमत्तसंयत जीव
 सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अग्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पण्णोस्सय
 अग्रमत्तसंयत जीव शुद्धलेस्सय प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पण्णोस्सय प्रमत्तसंयत
 जीव पण्णोस्सय अग्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेज्जोलेस्सय अग्रमत्तसंयत
 जीव पण्णोस्सय अग्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेज्जोलेस्सय प्रमत्तसंयत
 जीव तेज्जोलेस्सय अग्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । तेज्जोलेस्सय असंयतसम्पगदियों
 का अवहारकाल तेज्जोलेस्सय प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्मामिप्पादियों

मिच्छाद्विषं सत्यायं राशि, रासीदो योषद्वरमागहारामावा । सत्सम्पादीगमोषमेगो । सप्तत्योषो तेउलस्मियमिच्छाद्विषवहारकाठो । विषसंमर्द्ध अंसखेन्जगुणा । सेही अंसखेन्जगुणा । दध्यमसंखेन्जगुण । पदमसंखेन्जगुण । छेगो अंसखेन्जगुणो । साव गदीत्यमोषं । एषं येव पम्म-सुद्धलेस्सार्ग सत्यायं वचमं । मत्यायं गर्द ।

परत्यामे पयदं । सम्बत्तोषो काठलेस्मियअंसखदसम्मद्विषवहारकाठो । सम्मा-
मिच्छाद्विषवहारकाठे अंसखेन्जगुणो । सासपसम्माद्विषवहारकाठो संखेन्जगुणो । तस्सेव
दध्यमसंखेन्जगुणं । एवं येयमं जाव पस्सिदोवमं वि । तदो काठलेस्मियमिच्छाद्विषो
अंसखगुणा । एवं यत्ति-किन्नायं । सप्तत्योषा तेउलस्मियअप्पमचसमदा । पमचसमदा
संखेन्जगुणा । असखदसम्मद्विषवहारकाठो अंसखेन्जगुणो । सम्मामिच्छाद्विषवहारकाठो
अंसखेन्जगुणो । सासपसम्मद्विषवहारकाठो संखेन्जगुणो । संमदासमदवहारकाठो
अंसखेन्जगुणो । तस्सेव दध्यमसंखेन्जगुण । एवं येयमं जाव पस्सिदोवमं वि । तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण नील और कापोतछेस्वाबाओंके स्वस्थान अक्षयवृत्त्य नहीं पाया जाता है क्योंकि, कृष्ण नील और कापोतछेस्वक राशियोंसे इनके मायहार स्तोक नहीं हैं । सासाद्वय सम्पन्नादि व्याधिके स्वस्थान अक्षयवृत्त्य शेष स्वस्थान अक्षयवृत्त्यके समान हैं । तेजोछेस्वक मिष्याद्विषोंका अवहारकाठ सबसे स्तोक है । वन्हीके विषसंमर्द्धी अवहारकाठसे अंसख्यात-
गुणी है । अयमेणी विषसंमर्द्धीसे अंसख्यातगुणी है । द्रव्य अयमेणीसे अंसख्यातगुणा है । अयमतर द्रव्यसे अंसख्यातगुणा है । छोक अयमतरसे अंसख्यातगुणा है । सासाद्वयसम्पन्नादि व्याधिक स्वस्थान अक्षयवृत्त्य शेष स्वस्थान अक्षयवृत्त्यके समान है । इसीप्रकार पक्षोपम, और सुक्लछेस्वाबाओंके स्वस्थान अक्षयवृत्त्यका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अक्षयवृत्त्य समाप्त हुआ ।

अब परत्यामे अक्षयवृत्त्य प्रकृत है— कापोतछेस्वक असपतसम्पन्नादिविषोंका अव-
हारकाठ सबसे स्तोक है । सम्पन्नादिविषोंका अवहारकाठ असपतसम्पन्नादिविषोंके
अवहारकाठसे अंसख्यातगुणा है । सासाद्वयसम्पन्नादिविषोंका अवहारकाठ सम्पन्नादिविषोंके
अवहारकाठसे संख्यातगुणा है । वन्हीका द्रव्य अवहारकाठसे अंसख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पक्षोपमतक के जाना चाहिये । पक्षोपमतसे कापोतछेस्वक मिष्याद्विष जीव जनस्तोके हैं ।
इसीप्रकार नील और कृष्णछेस्वक जीवोंके परत्यामे अक्षयवृत्त्यका भी कथन करना चाहिये ।
तेजोछेस्वक अयमचसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । अयमचसंयत जीव अयमचसंयतोंसे संख्यात
गुणी हैं । असंयतसम्पन्नादिविषोंका अवहारकाठ अयमचसंयतोंसे अंसख्यातगुणा है । सम्पन्नादिवि-
षोंका अवहारकाठ असंयतसम्पन्नादिविषोंके अवहारकाठसे अंसख्यातगुणा है । सासाद्वय
सम्पन्नादिविषोंका अवहारकाठ सम्पन्नादिविषोंके अवहारकाठसे संख्यातगुणा है । संयत-
संयतोंका अवहारकाठ सासाद्वयसम्पन्नादिविषोंके अवहारकाठसे अंसख्यातगुणा है । वन्हीका
द्रव्य अवहारकाठसे अंसख्यातगुणा है । इसीप्रकार पक्षोपमतक के जाना चाहिये । पक्षोपमतसे

तेस्सियमिच्छाद्दिग्बवहारफालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थाणमगो । एषं पम्मलेस्साए ।
 सुकलेस्साए सम्बत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खनगा संखेज्जगुणा । सज्जोगिकेवली
 संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । असंज्जदसम्मद्दि
 बवहारफालो असंखज्जगुणा । मिच्छाद्दिग्बवहारफालो संखज्जगुणा । सम्मामिच्छाद्दि
 बवहारफालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मद्दिग्बवहारफालो संखेज्जगुणो । सज्जदामंमद्
 बवहारफालो असंखेज्जगुणो । तस्सव दम्भमसंखेज्जगुण । एषमवहारफालपडिलोमेण
 नेपर्थं ज्ञाय पल्लिदोवमं सि । परत्थाण गद् ।

सम्बपरत्थाणे पयद् । सम्बत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खनगा संखेज्जगुणा ।
 सज्जोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलस्सियअप्पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जदा
 संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जदा संखज्जगुणा । तेउ
 ठस्सियअप्पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जदा संखेज्जगुणा । तेउलस्सियअसंज्जदसम्मा-
 द्दिग्बवहारफालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्दिग्बवहारफालो असंखज्जगुणो । सासणसम्मा-

तेजोहेत्येक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अस्य
 बहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पद्मलेस्याके परस्थान मत्पराहुरका कथन
 करना चाहिये । शुक्ललेस्यामें चारों उपशामक सबसे श्लोक हैं । श्वक उपशामकसे संख्यातगुणे
 हैं । सयोगिकेवली जीव श्वकसे संख्यातगुणे हैं । अममत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीसे
 संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अममत्तसंयतोस संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्पदृष्टियोंका
 अवहारफाल प्रमत्तसंयतोसे असंख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल मत्पराहुरका
 अवहारफालसे संख्यातगुणा है । सम्पमिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहार
 फालसे असंख्यातगुणा है । सासाधनसम्पदृष्टियोंका अवहारफाल सम्पमिथ्यादृष्टियोंके
 अवहारफालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारफाल सासाधनसम्पदृष्टियोंका अव
 हारफालसे असंख्यातगुणा है । उर्ध्वीका द्रव्य अवहारफालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 अवहारफालके प्रतिबोधन कमसे पक्षोपमत्तक के ज्ञाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान
 मत्पराहुर समान हुआ ।

अब सर्व परस्थानमें मत्पराहुर प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे श्लोक हैं । श्वक
 उपशामकसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्ललेस्याक अममत्तसंयत जीव
 सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अममत्तसंयतोसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेस्याक
 अममत्तसंयत जीव शुक्ललेस्याक प्रमत्तसंयतोसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेस्याक प्रमत्तसंयत
 जीव पद्मलेस्याक अममत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेत्येक अममत्तसंयत
 जीव पद्मलेस्याक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेत्येक प्रमत्तसंयत
 जीव तेजोहेत्येक अममत्तसंयतोसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेत्येक असंयतसम्पदृष्टि
 का अवहारफाल तेजोहेत्येक प्रमत्तसंयतोसे असंख्यातगुणा है । सम्पमिथ्यादृष्टि

मिच्छाद्विषयं सत्यानं पति, रासीयो धोवदरभागाहाराभावाः । सासपादीनमोपमेगो । सम्प्रत्योयो तेतलस्मियमिच्छाद्विषयवहारकातो । विस्तरमर्द्ध अर्धसेन्यगुणा । सेरी अर्धसेन्यगुणा । दम्भमर्धसेन्यगुण । पदमर्धसेन्यगुण । लोको अर्धसेन्यगुणो । सास पादीनमोप । एवं भव पम्प-मुच्छलेस्सायं सत्यानं वचर्ध । सत्यानं गदं ।

परत्याये पयर्दं । सम्प्रत्योयो काउलेस्सियजर्धअदसम्मिच्छाद्विषयवहारकातो । सम्प्र- मिच्छाद्विषयवहारकातो अर्धसेन्यगुणो । सासपासम्मिच्छाद्विषयवहारकातो संसेन्यगुणो । तसेव दम्भमर्धसेन्यगुणं । एवं येयर्धं आत् पछिदेवर्धं ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाद्विषयो अधतगुणा । एवं नील-किष्कायं । सुगरयोवा तेतलेस्सियअप्यमचसज्ज । पमचर्धज्ज संसेन्यगुणा । असज्जसम्मिच्छाद्विषयवहारकातो अर्धसेन्यगुणो । सम्प्रमिच्छाद्विषयवहारकातो अर्धसेन्यगुणो । सासपासम्मिच्छाद्विषयवहारकातो संसेन्यगुणा । संज्जदासज्जवहारकातो अर्धसेन्यगुणो । तसेव दम्भमर्धसेन्यगुणं । एवं येयर्धं आत् पछिदेवर्धं ति । तदो तेत

प्रकृत है— कृष्ण नील और कापोतलेस्वक जीवोंके स्वस्थान अस्पवहृत्य नहीं पाया जाता है क्योंकि कृष्ण नील और कापोतलेस्वक राशिओंसे उनके मागहार स्तोत्र नहीं है । सासाधन सम्प्रतिष्ठिष्योके स्वस्थान अस्पवहृत्य जोय स्वस्थान अस्पवहृत्यके समान है । तेजोलेस्वक मिच्छाद्विषयोंका अवहारकाक सबसे स्तोत्र है । वन्हीकी विच्छाद्विषयी अवहारकाकसे अर्धक्यात गुणी है । जगमेयी विच्छाद्विषयीसे अर्धक्यातगुणी है । द्रव्य जगमेयीसे अर्धक्यातगुणा है । जगमतर द्रव्यसे अर्धक्यातगुण्य है । कोक जगमतरसे अर्धक्यातगुण्य है । सासाधनसम्प्रतिष्ठिष्योके स्वस्थान अस्पवहृत्य जोय स्वस्थान अस्पवहृत्यके समान है । इसीप्रकार पक्षोपमत्तक और शुक्रलेस्वकाकोके स्वस्थान अस्पवहृत्यका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अस्पवहृत्य समान्य द्रव्य ।

अन्य परस्थानमें अस्पवहृत्य प्रकृत है— कापोतलेस्वक असत्तसम्प्रतिष्ठिष्योका अव- हारकाक सबसे स्तोत्र है । सम्प्रमिच्छाद्विषयोंका अवहारकाक असत्तसम्प्रतिष्ठिष्योके अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । सासाधनसम्प्रतिष्ठिष्योका अवहारकाक सम्प्रतिष्ठिष्योके अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । वन्हीका द्रव्य अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । इसीप्रकार पक्षोपमत्तक के ज्ञाना चाहिये । पक्षोपमसे कापोतलेस्वक मिच्छाद्विषयी जीव अवन्तगुण है । इसीप्रकार नील और कृष्णलेस्वक जीवोंके परस्थान अस्पवहृत्यका भी कथन करना चाहिये । तेजोलेस्वक जगमत्तसत्त जीव सबसे स्तोत्र है । जगमत्तसत्त जीव जगमत्तसत्तसे अर्धक्यात गुणी है । असत्तसम्प्रतिष्ठिष्योका अवहारकाक जगमत्तसत्तसे अर्धक्यातगुण्य है । सम्प्रमिच्छा- द्विषयोंका अवहारकाक असत्तसम्प्रतिष्ठिष्योके अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । सासाधन सम्प्रतिष्ठिष्योका अवहारकाक सम्प्रतिष्ठिष्योके अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । संपत्त- संपत्तोंका अवहारकाक सासाधनसम्प्रतिष्ठिष्योके अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । वन्हीका द्रव्य अवहारकाकसे अर्धक्यातगुणा है । इसीप्रकार पक्षोपमत्तक के ज्ञाना चाहिये । पक्षोपम-

सेतपमात्र पुच्छवे । एसो पुत्र अमवसिद्धिरासिपमाण सुहु परिष्कुदो । कुदो ! अमव-
सिद्धिरासिपमाणं अहण्यज्जुत्तात्तमिदि सयलप्ररियजयप्पसिद्धादो ।

मतामार्गं वचइस्सामो । सव्वजीवरासिमर्जत्तखंडे कए बहुखंडा मवसिद्धियमिच्छा-
इड्डिओ । सेतमणत्तखंडे कए बहुखंडा जेव मवसिद्धिया जेव अमवसिद्धिया । सेतमवत्तखंडे
कए बहुखंडा अमवसिद्धिया । सेतमत्तखंडज्जखंडे कए बहुखंडा अत्तजइस्सम्माप्रतिणो ।
सेत्तमोवमणो ।

अप्यावहुग तिविईं सत्थाणदिमेएण । मवसिद्धियसत्थाण परत्थाणं मिच्छाइड्डि
प्पुडि ज्ञात अबोनिक्खेवत्ति पि ओषं । अमवसिद्धियसत्थाणं परत्ति ।

सव्वपरत्थाणे सव्वत्थोवा अबोणिकेवळी । चत्तारि उवत्तामगा संखेज्जगुणा । एव
ज्ञात पत्तिदेवमं ति जेयव्वं । तदो अमवसिद्धिया अणत्तगुणा । जेव मवसिद्धिया जेव
अमवसिद्धिया अणत्तगुणा । मवसिद्धियमिच्छाइड्डि अणत्तगुणा ।

एव मयियममाणा समत्ता ।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अमध्यसिद्धि राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट
है क्योंकि अमध्यसिद्धि राशिका प्रमाण अक्षय्य युक्तमन्त है, यह सर्व व्यापार्य अपवर्ग
प्रतिष्ठ है ।

अथ माप्यमागको अतकाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्त खंड करने पर बहुमाग
मध्यसिद्धि मिध्याइडि जीव हैं । दोष एक भागके अन्त खंड करने पर बहुमाग मध्यसिद्धि
और अमध्यसिद्धि विकल्पप्रवृत्ति जीव होते हैं । दोष एक भागके अन्त खंड करने पर
बहुमाग अमध्यसिद्धि जीव हैं । दोष एक भागके अत्यवस्थात खंड करने पर बहुमाग अत्यवस्था-
तमवत्ति जीव हैं । दोष माप्यमाग जोष माप्यमागके समान है ।

स्वस्थान अक्षय्यवृत्त आधिके मेवसे अक्षय्यवृत्त तीन प्रकारकर है । इनमेंसे मध्य
सिद्धि जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अक्षय्यवृत्त मिध्याइडि गुणस्थानसे लेकर
अबोणिकेवळी गुणस्थानतक जोष स्वस्थान और परस्थान अक्षय्यवृत्तके समान है ।
अमध्यसिद्धि जीवोंका स्वस्थान अक्षय्यवृत्त नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अक्षय्यवृत्तमें अबोणिकेवळी जीव सबसे स्तोफ हैं । चारों उपशामक
अधोपमोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पर्योपमतक से जाना चाहिये । पर्योपमसे अमध्य
सिद्धि जीव अन्तगुणे हैं । मध्यसिद्धि और अमध्यसिद्धि विकल्पसे रहित जीव
अक्षय्यसिद्धि जीवोंसे अन्तगुणे हैं । मध्यसिद्धि मिध्याइडि जीव अमध्योंसे अन्तगुणे हैं ।

इत्यप्रकार मध्यमार्गणा समाप्त इति ।

मवियाणुवादेण भवसिद्धिपसु मिच्छाद्विट्ठिण्हुडि जाव अजोगि
केवलं ति ओघ ॥ १७२ ॥

एदस्म सुचस्म अत्थो सुगमो । णवरि अमवसिद्धिपसिद्धिसिद्ध-तरसगुणपडिबन्ध-
राधि मवसिद्धिपमिच्छप्रवृत्तिमविद तेसिं वग्गं य सम्भवीवरपिसुवरि पवित्थपे मवसिद्धिप
मिच्छप्रवृत्तिपुवरासी होदि ।

अमवसिद्धिया दब्बपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १७३ ॥

एत्थ अप्पेत्थपणं संयेनवासंसेनपडितेहफलं । एत्थ कालपमाणं सुचे किमिदि य
जुत्तं ? य एस दोसो, अमवसिद्धियार्थं वयामत्ता । वयामावो विं तेसिं मोक्खामत्तादो
मवगम्भे ।

लेखपमार्थं किमिदि य जुत्तं इदि चे य, अपरिष्कुटस्स अत्यस्स कुडीकरमई

मध्यमार्गवाके अनुवादसे मध्यसिद्धिकोंमें मिच्छाद्विट्ठि गुणस्नानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्नानतक प्रत्येक गुणस्नानमें जीव ओघप्ररूपवाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । इतना विरोध है कि अमवसिद्धिक जीवपक्षिसहित
सिद्धराशि और वेदह गुणस्यावप्रतिपक्ष जीवपक्षियों तथा ब्रह्म पक्षियोंके वर्गमें मध्यसिद्धिक
मिच्छाद्विट्ठि राक्षस प्राग केनेसे जो ब्रह्म आवे उसे सर्व जीवपक्षियों में मिश्र देने पर
मध्यसिद्धिक मिच्छाद्विट्ठि सुवराशि होती है ।

अमवसिद्धिक जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अनन्त यह कथन संप्र्यात और असंप्र्यातके प्रतिषेधके किये दिया है ।

शुद्ध — यहां मध्य मार्गवामें अमवसियोंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा
प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि अमवसियोंका व्यप्य नहीं होता । उबका
व्यप्य नहीं होता है वह कथन उबके मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है ।

शुद्धा — अमवसियोंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा ?

समाधान — नहीं क्योंकि जो अर्थ अपरिष्कुट हो उसके स्फुट करनेके क्रिये

१ मध्यमार्गवाके अर्थों मिच्छाद्विट्ठिपसिद्धिसिद्धि-तरसगुणपडिबन्ध-
राधि मवसिद्धिपमिच्छप्रवृत्तिमविद तेसिं वग्गं य सम्भवीवरपिसुवरि पवित्थपे मवसिद्धिप
मिच्छप्रवृत्तिपुवरासी होदि ॥ १७२ ॥

२ अमवसिद्धिया दब्बपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १७३ ॥

३ अर्थः अमवसिद्धिपसिद्धिसिद्धि-तरसगुणपडिबन्ध-
राधि मवसिद्धिपमिच्छप्रवृत्तिमविद तेसिं वग्गं य सम्भवीवरपिसुवरि पवित्थपे मवसिद्धिप
मिच्छप्रवृत्तिपुवरासी होदि ॥ १७२ ॥

सेचपमाय बुद्धि । एसो पुन अमवसिद्धिरासिपमाणं सुहु परिपुद्धो । बुद्धो ? अमव-
सिद्धिरासिपमाणं जहण्णजुत्ताभसमिदि सयलाहरियजयप्पसिद्धादो ।

मगामागं वचइस्सामो । सम्भजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मभसिद्धियमिच्छा-
इहिणो । सेसमणतखंडे कए बहुखंडा णेन मभसिद्धिया णेन अमवसिद्धिया । सेसमणतखंडे
कए बहुखंडा अमवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजइस्समाइहिणो ।
सेसमोषमणो ।

अप्यावहृगं तिविह सत्थाणदिसेएण । मभसिद्धियसत्थाण परत्थार्थ मिच्छइहि
प्पुद्धि साव अजोगिकेवलि चि ओष । अमवसिद्धियसत्थाण गत्थि ।

सम्भपरत्थाने सम्भत्थोवा अजोगिकेवली । चचारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं
अन पस्सिदोषमं ति णेयव्वं । सदो अमवसिद्धिया अणत्तगुणा । येव मभसिद्धिया येव
अमवसिद्धिया अमंतगुणा । मभसिद्धियमिच्छाइही अणत्तगुणा ।

एव भवियमगणा समत्ता ।

सेवकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अमध्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्पष्ट
है क्योंकि अमध्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अग्रम्य युक्तान्त है, यह सर्व भाषाय समान
मंदि है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत ढंड करने पर बहुभाग
मध्यसिद्धिक मिष्यादि जीव हैं । होय एक भागके अन्तर्गत ढंड करने पर बहुभाग मध्यसिद्धिक
और अमध्यसिद्धिक विभक्तपरहित जीव होते हैं । होय एक भागके अन्तर्गत ढंड करने पर
बहुभाग अमध्यसिद्धिक जीव हैं । होय एक भागके असंख्यात ढंड करने पर बहुभाग असंयत-
सम्पत्ति जीव हैं । होय भागाभाग ओष भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अस्पष्टवृत्त्य आधिके मेवसे अस्पष्टवृत्त्य तीन प्रकारका है । उनमेंसे मध्य
सिद्धिक जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अस्पष्टवृत्त्य मिष्यादि गुणस्थानसे छेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओष स्वस्थान और परस्थान अस्पष्टवृत्त्यके समान है ।
अमध्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अस्पष्टवृत्त्य नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अस्पष्टवृत्त्यमें अयोगिकेवली जीव सबसे श्रेष्ठ हैं । बाये उपशामक
अयोगियोंमें संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पश्योपमतक के आना आदिये । पश्योपमसे अग्रम्य
सिद्धिक जीव अन्तर्गतगुणे हैं । मध्यसिद्धिक और अमध्यसिद्धिक विभक्तसे रहित जीव
अमध्यसिद्धिक जीवोंसे अन्तर्गतगुणे हैं । मध्यसिद्धिक मिष्यादि जीव अग्रम्यसे अन्तर्गतगुणे हैं ।

इसप्रकार मध्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवालि त्ति ओघ ॥ १७४ ॥

केव फलमण ? सम्मत्ताणुवादेण अहियारादो । य हि सामप्पबदिरिचो तम्बिसेसो
वरिच । तम्हा ओपपरूवणा नेय गिरमयणा एत्थ मत्तम्हा ।

सह्यसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टी ओघ ॥ १७५ ॥

अदि वि एसो सह्यसम्माइट्टिरासी ओपअसज्जदसम्म इट्टिरासिस्स असंखज्जदि
मागमंचो, तो वि ओपपरूवणं समदे; पस्सिरोबमस्स असंखज्जदिभागमेवच पडि विसेसा-
माणा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसत्तकसायवीदरागच्छदुमत्था दब्ब
पमाणेण केवडिया, संसेव्वा ॥ १७६ ॥

सम्पत्स्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक बीच ओपप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

संज्ञ—सम्यक्स्थी बीच असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुण-
स्थानतक बीचप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि वहाँ पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है । सामान्यको
छेककर वस्तुके विशेष वहाँ पाये जाते हैं । इसलिये आधप्ररूपणा ही विशेषण वहाँ पर कहना
आहिये ।

आधिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि बीच ओपप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥

यद्यपि यह आधिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिसे अस्तं
क्यातमें प्रथमात्र है तो भी यह ओपप्ररूपणाको प्राप्त होती है क्योंकि, पद्मोपमके
अस्तंक्यातमें भागत्वके प्रति अथ दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

संयतासंयत गुणस्थानमे लेकर उपपन्नान्तकषाय बीतराग छद्यस्व गुणस्थानतक
आधिकसम्यग्दृष्टि बीच प्रथ्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ त्रिपु — कैवली ३३ पत्र ।

२ उपनिषद्भाष्ये आधिकसम्यग्दृष्टि अत्यंतसम्यग्दृष्टि पद्मोपमार्थकेवमात्रमिहा । त स्मि १ <
मत्तुपदे वदवा संवेत्ता अ इति टीका । ३ उपनिषद्भाष्ये कैवली ३३ पत्रमप्युपदे ॥ संख्यातद्विरुद्धा
करवा ॥ श्री श्री- १५७-१५८

३ उपनिषद्भाष्ये उपपन्नान्तकषायार्थ संवेत्ता । त स्मि १ <

पुनस्तुचादो खड्गसम्माद्विष्टि चि अणुवद्धे । ओघपमाणं न पूरेदि' चि बाणा-
वण्ड संखेज्जवयण । संजदासज्जदखड्गसम्माद्विष्टिणो कर्षं संखेज्जा ! अ, तेसिं मणुसगा
बदिरिचसेसर्गसु अमावादो । पुर्वं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत वेत्तुन दसणमोहनीय खविय
तिरिक्खेसु तववज्जता लम्मेति तेन सज्जदासज्जदखड्गसम्माद्विष्टिणो असंखेज्जा लम्मेति
चि वे घ, पुर्वं बद्धाउअखड्गसम्माद्विष्टिण तिरिक्खेसुप्यप्पणाण सज्जमासंजमगुणामानादो ।
इदो ! मोगभूमिमतरेण सेसिमुप्यपीए अण्णत्थ संभवामावादो । न च तिरिक्खेसु दंसप-
मोहनीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसर्गाए' इदि वयणादो ।

चउण्ह खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १७७ ॥

एत्थ चउण्ह कम्माण चाइसण्णिदाय स्ववगा इदि मज्झाहतो कायवो । अउसरो-
गुणङ्गाणं विसेसण किप्प होदि चि बुधे न, तत्थ छट्ठीणिरेसाणुववचीदो । सेस मुगम ।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि इस पक्षी अनुवृत्ति होती है । संयतासंयतसे
उपशांतकपाय गुणस्थानक क्षायिकसम्यग्दृष्टिओंका प्रमाण ओघप्रमाणको पूर्व नहीं करता
है, इसका ज्ञान करनेके लिये सूत्रमें संख्यात हैं यह बचन दिया है ।

शंका—संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात कैसे हैं ?

समाधान—नहीं क्योंकि, संयत,संयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य गतिओ
ओड़कर दोष गतियोंमें नहीं पाये जाते हैं और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते हैं इसलिये
संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव भी संख्यात ही होते हैं ऐसा कहा ।

शंका—जिन जीवोंने पहले तिर्यचायुका बंध कर लिया है ऐसे जीव सम्यक्संयत
प्राप्त करके और वर्णमोहनीयका क्षय करके तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं
इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात होना चाहिये ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिन्होंने पहले तिर्यचायुका बंध कर लिया है ऐसे
तिर्यचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टिओंके सज्जमासंजमगुण नहीं पाये जाता है,
क्योंकि मोगभूमिके बिना अल्पज जननी उत्पत्ति संभव नहीं है । तथा तिर्यचोंमें
वर्णमोहनीयकी क्षयणा भी नहीं पाई जाती है क्योंकि वर्णमोहनीयकी क्षयणा नियमसे
मनुष्यगतिमें ही होती है ऐसा व्याख्यान बचन है ।

चारों सपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७७ ॥

यहां पर सपक पक्षसे घातिसकक चारों कमोंके सपक, ऐसा व्याख्यात कर देना चाहिये ।

शंका—सूत्रमें क्या हुआ जब ज्ञान गुणस्थानोंका विशेषण क्यों नहीं होता है ?

समाधान—ऐसा सूत्रने पर व्याख्यार्य कहते हैं कि नहीं क्योंकि 'जब ज्ञानमें पक्षी

सजोगिकेवली ओष ॥ १७८ ॥

हृदो ! त्वय्यसम्पत्तेण विना सजोगिकेवलीषमशुभसमा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असजदसम्माइट्टिण्हुडि जाव अप्पमत्तसंजदा ति ओष ॥ १७९ ॥

एतथ आपरासी येव त्थोवूणो वेदगरासी होदि स्थापय न विरुज्जहे ।

उवसमसम्माइट्टीसु अमजदसम्माइट्टि-सजदासंजदा ओष ॥ १८० ॥

एहे हो वि रासीओ ओषअसजदसम्माइट्टि-संजदासंजदाणमसत्तेअदिभागमया अदि वि होति, सो वि पत्तिदोमसस असंखअदिभागत्तेण समाणचमत्ति ति ओषमिदि मणिई । संसं सुगमं ।

विमत्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सुगमं व्याप्य हृदया अद्वय यह पद प्रथमा विमत्तिकप है पत्ती नहीं इसलिये गुणरथागोष्ठा विरोध नहीं हो सकता है । शेष कथन सुगम है ।

सजोगिकेवली जीव ओषप्ररूपणाके समान ई ॥ १७८ ॥

चूंकि सजोगिकेवली जीव व्यापिकसम्पत्तके विना नहीं पत्ये जाते हैं, इसलिये इनका प्रमाण ओषप्ररूपणाके समान है ।

असंयतसम्पत्तिषोमें असंयतसम्पत्ति गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक जीव ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असंयतसम्पत्ति गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओषराशि की कुछ कम अद्वयसम्पत्ति जीवराशि होती है इसलिये ओषत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

संयतसम्पत्तिषोमें असंयतसम्पत्ति और संयतासंयत जीव आप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशिर्षा ओष असंयतसम्पत्ति और संयतासंयतके असंयतासंयतके प्राग प्रमाण होती हैं तो भी अत्योपमके असंयतासंयत प्रागत्वकी अवेक्षा अष्टमसम्पत्ति असंयत सम्पत्ति और संयतासंयतकी ओष असंयतसम्पत्ति और संयतासंयतके साथ समानता है इसलिये सुगमं ओष वेदा कहा है । शेष कथन सुगम है ।

१ अमोक्षजिरहस्यगतिषु अक्षयनस्यवद्वयवीजवत्ताता तावन्वीजवत्तया । ल. वि १ ८ इती व वेदपुत्रवत्ता । अत्यन्तमनसुगमिवा अक्षयवत्तया वपत्ति । ली जी १

२ अति त्वं गृह्य इति वदत ।

३ अं पक्षमिदमन्वयिषु अर्जवत्तमन्वयिर्जवत्तमन्वयः पक्षोपवत्तमन्वयवत्तमन्वयः । ल. वि १ ८

पमत्तसजदण्डहृदि जाव उवमतकसायवीदरागछदुमत्या त्ति दव्व
पमाणेण केवढिया, सखेज्जा ॥ १८१ ॥

एतत् सखेज्जवयण ओषपमाणवडिसेहफल । ओषइकपमाण ण पावेदि चि क्व
मवगम्मदे ? ओषपमचादिरात्रिस्त सखेज्जदिमागो तम्हि तम्हि उवसमसम्माइडिराती
होदि चि अप्पत्तइगवयणादो ।

सासणसम्माइट्ठी ओघ ॥ १८२ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठी ओघ ॥ १८३ ॥

मिच्छाइट्ठी ओघ ॥ १८४ ॥

पदाणि तिणि वि सुत्ताणि ओषम्मि परुविदानि चि पेइ परुविज्जंति । एतत्
अवहारकालुप्यायणविहिं वचइरसामो । ओषमसखदमम्माइडिअवहारकाले आवडियाप

प्रमत्तसयत्त गुणस्थानमे छेकर उपशान्तकपाय धीतरागछप्रत्य गुणस्थानतक
उपशमसम्यग्दष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहां सूत्रमें लख्यात है यह वचन ओषममाणके प्रतिपेक्षके लिये दिया है ।

श्लोका—प्रमत्ताणि उपशान्तकपाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दष्टि जीव ओष
द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— ओष प्रमत्तसयत्त आदि गुणस्थानवर्ती राशिके लख्यातमें माग उस
वत्त गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दष्टि जीव होते हैं इस मन्त्रबहुर्य अनुसंधानकारके पक्षमें
जाना जाता है कि प्रमत्तसयत्त आदि उपशान्तकपायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दष्टि
जीव ओषप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान पर्यायमके असंख्यातमें माग
हैं ॥ १८२ ॥

सम्पग्निध्यादष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान पर्यायमके असंख्यातमें माग
हैं ॥ १८३ ॥

मिध्यादष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त हैं ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रोंका प्रकरण ओषप्ररूपणाके समर्थ कर आये हैं इसलिये यहां इनका
प्रकरण नहीं करते हैं । अब यहां पर अवधारणाके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

१ प्रमत्तप्रवृत्तता संवेद्या । यत्त जीवविद्याः सावयोनप्रका । त्ति १ ८

२ सासादनसम्यग्दष्टिः सम्पग्निध्यादष्टिः सावयोनप्रका । त्ति १ ८ पक्ष-

इहैम्यदिवा सत्तमिध्या व संवत्तिदा ह । मिखा तेहि मिहीनो संवत्तं यत्तविद्या व यो जी १११

असंख्यजदिभाएण मागे हिंदं तर्हं तम्हि केव पक्खित्ते वेदगजमज्जदसम्माप्रद्विअवहारकात्तो होदि । तम्हि आत्तलियाए असंख्यजदिभाएण गुण्णिदे खय्यअसंजदसम्माप्रद्विअवहारकात्तो होदि । तम्हि आत्तलियाए असंख्यजदिभाएण गुण्णिदे असंख्यजदसमसम्माप्रद्विअवहारकात्तो होदि । तम्हि आत्तलियाए असंख्यजदिभाएण गुण्णिदे सम्मामिच्छप्रद्विअवहारकात्तो होदि । तम्हि संख्यजदरूपेहि गुण्णिदे सासणमम्माप्रद्विअवहारकात्तो होदि । तम्हि आत्तलियाए असंख्यजदिभाएण गुण्णिदे वेदगसम्माप्रद्विसंजदमज्जदवहारकात्तो होदि । तम्हि आत्तलियाए असंख्यजदिभाएण गुण्णिदे उवसमसम्माप्रद्विमज्जदासजदवहारकात्तो होदि । एवहि अवहारकात्तेहि पत्तिवोधमे मागे हिंदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । सिद्ध तेरसगुण्णज्जासिं मिच्छप्रद्विमज्जित्तवग्ग च सग्गजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छप्रद्वि सुवरासी होदि ।

मागामार्गं चत्तस्सामो । सग्गजीवरासिमर्षतर्हं कए बहुलंढा मिच्छप्रद्विओ होति । संसमर्षतर्हं कए बहुलंढा सिद्धा । सेसमर्षेज्जसंढं कए बहुलंढा वेदग-असंजदसम्माप्रद्विओ । सेसमर्षेज्जसंढं कए बहुलंढा खय्यअसंजदसम्माप्रद्विओ । सेसमर्षेज्जसंढं कए बहुलंढा उवसमसंजदसम्माप्रद्विओ । सेसं संख्यजसंढं कए

थोय असंयतसम्माप्रद्विओके अवहारकात्तो आवडीके असंख्यातर्हं भागसे माजित करने पर ओ छप्प थोय वसे उली अवहारकात्तमें मिक्का देने पर वरक असंयतसम्माप्रद्विओका अवहारकात्त होता है । इसे आवडीके असंख्यातर्हं भागसे गुणित करने पर सांयिक असंयत सम्माप्रद्विओका अवहारकात्त होता है । इसे आवडीके असंख्यातर्हं भागसे गुणित करने पर असंयत उपसमसम्माप्रद्विओका अवहारकात्त होता है । इसे आवडीके असंख्यातर्हं भागसे गुणित करने पर सम्मगिमध्याप्रद्विओका अवहारकात्त होता है । इसे संख्यातर्हं गुणित करने पर सासाहमसम्माप्रद्विओका अवहारकात्त होता है । इसे आवडीके असंख्यातर्हं भागसे गुणित करने पर वेदकसम्माप्रद्वि संयतासंयतोंका अवहारकात्त होता है । इसे आवडीके असंख्यातर्हं भागसे गुणित करने पर उपसमसम्माप्रद्वि संयतासंयतोंका अवहारकात्त होता है । इन अवहारकात्तोंसे पणोपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशिर्षा आती है ।

सिद्धराशि थीर तेरह गुणवधानवर्ती राशिर्षा तथा मिध्याप्रद्वि राशिसे मज्जित वन राशिर्षोंके बर्गको सब जीवराशिमें मिक्का देने पर मिध्याप्रद्विओकी अवराशि होती है ।

अब मागप्रमाणको बतलाते हैं— सार्व जीवराशिसे अमल बंध करने पर उनमेंसे बहुभाग मिध्याप्रद्वि जीव होते हैं । शेष एक भागके अमल बंध करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग वेदकसंयतसम्माप्रद्वि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग सांयिक असंयतसम्माप्रद्वि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग उपसम असंयतसम्माप्रद्वि जीव हैं । शेष एक

बहुसंख्य सम्प्रामिच्छद्गुणो । सेसमसंख्येज्जखे कए बहुसंख्य सासमसम्प्रामिच्छो ।
 सेसमसंख्येज्जखे कए बहुसंख्य वेदगमसम्प्रामिच्छसंख्यदासखदा । सेसमसंख्येज्जखे कए
 बहुसंख्य उवसमसम्प्रामिच्छसंख्यदासखदा । सेस संख्येज्जखे कए बहुसंख्य खइयसम्प्रामिच्छ
 संख्यदासखदा । सेस संख्येज्जखे कए बहुसंख्य पमचसंख्यदा । सेस संख्येज्जखे कए
 बहुसंख्य अप्पमचसंख्यदा । सेस आणिय वचसंख्य ।

अप्पमहुगे सिविहं सत्थाप्यादिमेएण । सन्नेसिं सत्थाणमोष । परत्थाणे पयदं ।
 सन्नेयोवा वेदगमसम्प्रामिच्छअप्पमचसंख्यदा । पमचसंख्यदा संख्येज्जगुणा । असंख्यदसम्प्रामिच्छ
 सन्नेहारकालो असंख्येज्जगुणो । संख्यदासंख्यदसन्नेहारकालो असंख्येज्जगुणो । तस्सेव दम्भम
 संख्येज्जगुण । एवं जेयम्भ जाव पल्लिदोषम ति । उवसमसम्प्रामिच्छसु सन्नेयोवा चचारि
 उवसमगा । खइया संख्येज्जगुणा । अप्पमचसंख्यदा संख्येज्जगुणा । पमचसंख्यदा संख्येज्ज
 गुणा । उवति वेदगपरत्थाप्यमगो । खइयसम्प्रामिच्छसु सन्नेयोवा चचारि उवसमगा ।
 खइया संख्येज्जगुणा । अप्पमचसंख्यदा संख्येज्जगुणा । पमचसंख्यदा संख्येज्जगुणा । संख्यदा
 संख्यदा संख्येज्जगुणा । असंख्यदसम्प्रामिच्छसन्नेहारकालो असंख्येज्जगुणो । तस्सेव दम्भम

मागके संप्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिच्छादिति जीव है । शेष एक भागके
 सत्त्वात् खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्प्रगृहि जीव है । शेष एक भागके असत्त्वात्
 खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्प्रगृहि संप्रतासयत जीव है । शेष एक भागके असत्त्वात् खंड
 करने पर बहुभाग उपशमसम्प्रगृहि संप्रतासयत जीव है । शेष एक भागके संप्यात खंड
 करने पर बहुभाग सायिकसम्प्रगृहि संप्रतासयत जीव है । शेष एक भागके सत्त्वात् खंड
 करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव है । शेष एक भागके संप्यात खंड करने पर बहुभाग
 अप्पमचसंयत जीव है । शेष भागाभागाका कथन जानकर करना चाहिये ।

परत्थाणमोषबहुत्व आदिके मेघसे नवपवहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे समीका
 सत्त्वाणमस्यबहुत्व बोधप्रकृपाके समान है । अब परत्थाणमें नवपवहुत्व प्रकृत है— वेदक
 सम्प्रगृहि प्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोका है । इनसे प्रमत्तसंयत जीव संप्यातगुणे है ।
 इनसे सत्त्वात्सम्प्रगृहियोंका नवहारकाख असत्त्वात्गुणा है । इससे संप्रतासयतोंका नवहार
 काख असत्त्वात्गुणा है । बर्हीका द्रव्य नवहारकाखसे असत्त्वात्गुणा है । इसीप्रकार
 सत्त्वोपमतक के जाना चाहिये । उपशमसम्प्रगृहियोंमें चारों उपशमक सबसे योग्य है ।
 एक संप्यातगुणे है । अप्पमचसंयत जीव क्षयकोंसे सत्त्वात्गुणे है । प्रमत्तसंयत जीव
 प्रमत्तसंयतोंसे संप्यातगुणे है । इसके ऊपर वेदकसम्प्रगृहियोंके परत्थाणमस्यबहुत्वके
 ध्यान जानना चाहिये । सायिक सम्प्रगृहियोंमें चारों उपशमक सबसे स्तोका है । एक
 सबसे संप्यातगुणे है । इनसे अप्पमचसंयत सत्त्वात्गुणे है । इनसे प्रमत्तसंयत सत्त्वात्गुणे है ।

असंख्येज्जदिभाएण भागे हिंदे रुद्धं तस्मिं चेष पक्वित्ते वेदगर्भमज्जदसम्माइडिअवहारकालो
हादि । तस्मिं आवलिपाए असंख्येज्जदिभाएण गुणिदे सहायअसंजदसम्माइडिअवहारकालो
होदि । तस्मिं आवलिपाए असंख्येज्जदिभाएण गुणिदे अमज्जदवसमसम्माइडिअवहारकालो
होदि । तस्मिं आवलिपाए असंख्येज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाडिअवहारकालो होदि ।
तस्मिं सत्तेज्जदरूपेदि गुणिदे सासमसम्माइडिअवहारकालो होदि । तस्मिं
आवलिपाए असंख्येज्जदिभाएण गुणिदे वदगसम्माइडिसंभदामअवहारकालो होदि ।
तस्मिं आवलिपाए असंख्येज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइडिसंभदासदअवहारकालो
होदि । एवेदि अवहारकालोहि पक्वित्तेभागे भागं हिंदे सग-सगरासीओ आगच्छति । सिद्ध
वेरसगुणह्मराणि मिच्छाडिअजिदत्तम्भग च सग्वीवरसिस्तुपरि पक्वित्ते मिच्छाडि
पुवरासी होदि ।

भागामागं वचइस्सामो । सग्वीवरसिमपत्तत्वे कए बहुत्वंडा मिच्छाडिओ
होति । ससमपत्तत्वे कए बहुत्वंडा सिद्धा । सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा वेदग-
असज्जदसम्माइडिओ । सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा सहायअसंजदसम्माइडिओ ।
सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा उवसमअसंजदसम्माइडिओ । सेसं संख्येज्जत्वे कए

ओअ असंपत्तसम्माइडिओके अवहारकाओ आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर
ओ छप्प भागे उसे उसी अवहारकाओमें मिखा देने पर वेदक असंपत्तसम्माइडिओका
अवहारकाओ होता है । इसे व्यवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षयिक असंपत्त
सम्माइडिओका अवहारकाओ होता है । इसे व्यवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर
असंपत्त उपशमसम्माइडिओका अवहारकाओ होता है । इसे व्यवलीके असंख्यातवें भागसे
गुणित करने पर सम्मामिच्छाडिओका अवहारकाओ होता है । इसे संख्यातसे गुणित
करने पर सासादलसम्माइडिओका अवहारकाओ होता है । इसे व्यवलीके असंख्यातवें भागसे
गुणित करने पर वेदकसम्माइडि संघतासंपत्तोंका अवहारकाओ होता है । इसे व्यवलीके
असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्माइडि संघतासंपत्तोंका अवहारकाओ होता
है । इन अवहारकाओसे पञ्चोपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिवां भायी है ।

सिद्धराशि और तेरह गुणव्यामर्षां राशिको तथा मिच्छाडि राशिसे भाजित उन
राशिओंके वषको सर्व जीवराशिमें मिखा देने पर मिच्छाडिओंकी भुवराशि होती है ।

अब भागाभागी बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अन्तत खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मिच्छाडि जीव होते हैं । शेष एक भागके अन्तत खंड करने पर बहुभाग सिद्ध
जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंपत्तसम्माइडि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग साहायिक असंपत्तसम्माइडि जीव हैं । शेष
एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंपत्तसम्माइडि जीव हैं । शेष एक

बहुसंज्ञा सम्प्रामिच्छाद्विधौ । सेसमसखेजसंज्ञे कए बहुसंज्ञा सासणसम्प्रामिच्छाद्विधौ ।
 सेसमसखेजसंज्ञे कए बहुसंज्ञा वेदगमसम्प्रामिच्छासंज्ञासंज्ञा । सेसमसखेजसंज्ञे कए
 बहुसंज्ञा उवसमसम्प्रामिच्छासंज्ञासंज्ञा । सेस सखेजसंज्ञे कए बहुसंज्ञा खरूपसम्प्रामिच्छा
 सम्प्रामिच्छा । सेस सखेजसंज्ञे कए बहुसंज्ञा पमचसंज्ञा । सेस सखेजसंज्ञे कए
 बहुसंज्ञा अपमचसंज्ञा । सेस आभिय वचन ।

अप्यबहुग तिथिह सत्याणादिमेण । सखेसि सत्याणमोष । परत्याणे पयद ।
 सम्प्रत्योवा वेदगसम्प्रामिच्छाअपमचसंज्ञा । पमचसंज्ञा संखेजगुणा । असंज्ञसम्प्रामिच्छा
 अवहारकालो असंखेजगुणो । संज्ञासंज्ञाअवहारकालो असंखेजगुणो । तस्सव द्व्यम
 संखेजगुण । एवं नेपथ्य ज्ञा पस्तिदेवम ति । उवसमसम्प्रामिच्छासु सखरूपोवा चचारि
 उवसमगा । खरगा संखेजगुणा । अपमचसंज्ञा संखेजगुणा । पमचसंज्ञा संखेज
 गुणा । उवति वेदगपरत्याणमोषो । खरूपसम्प्रामिच्छासु सखरूपोवा चचारि उवसावगा ।
 खरगा संखेजगुणा । अपमचसंज्ञा संखेजगुणा । पमचसंज्ञा संखेजगुणा । संज्ञा
 संज्ञा संखेजगुणा । असंज्ञसम्प्रामिच्छाअवहारकालो असंखेजगुणो । तस्सेव द्व्यम

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्भाष्यवृत्ति जीव है । होय एक भागके
 असंख्यात खंड करने पर बहुभाग साक्षात्सम्यग्भाष्य जीव है । होय एक भागके असंख्यात
 खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्भाष्य संवत्तासंघत जीव है । होय एक भागके असंख्यात खंड
 करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्भाष्य संवत्तासंघत जीव है । होय एक भागके संख्यात खंड
 करने पर बहुभाग सायिकसम्यग्भाष्य संवत्तासंघत जीव है । होय एक भागके संख्यात खंड
 करने पर बहुभाग प्रमत्तसंघत जीव है । होय एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
 प्रमत्तसंघत जीव है । होय भागाभागा कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अस्यबहुत्व आदिमे भेदे अस्यबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे समीक
 स्वस्थान अस्यबहुत्व ओषधकणके समान है । अब परस्थानमें अस्यबहुत्व प्रकृत है— वेदक
 सम्यग्भाष्य प्रमत्तसंघत जीव सबसे स्तोका है । इनसे प्रमत्तसंघत जीव संख्यातगुणे है ।
 इनसे असंघतसम्यग्भाष्योका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे संघतसंघतोका उपहार
 काल असंख्यातगुणा है । उन्नीका प्रथम अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 परमोपमत्तक के जाना चाहिये । उपशमसम्यग्भाष्योमें चारों उपशमक सबसे योग्य है ।
 सपक संख्यातगुणे है । प्रमत्तसंघत जीव सपकोसे संख्यातगुणे है । प्रमत्तसंघत जीव
 प्रमत्तसंघतोसे संख्यातगुणे है । इसके ऊपर वेदकसम्यग्भाष्योके परस्थान अस्यबहुत्वके
 समान जानना चाहिये । सायिक सम्यग्भाष्योमें चारों उपशमक सबसे स्तोका है । सपक
 इनसे संख्यातगुणे है । इनसे प्रमत्तसंघत संख्यातगुणे है । इनसे प्रमत्तसंघत संख्यातगुणे है ।
 इनसे संघतसंघत संख्यातगुणे है । इनसे असंघतसम्यग्भाष्योका अवहारकाल असंख्यातगुणा

समतामावादे । ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एवस्स बक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होठ माम । कच पुण विरुद्धबक्खाणस्स भइए ? न, लुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागपस्स एदीए गाहाए गामइच्चं काउण्ण सक्किज्जदि, अइप्पसंगादे । बेदगअसंजदसम्मइद्धिअवहार कालो असंखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्मइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उपसमअसंजदसम्मइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सत्तपसम्मइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । बेदगसम्मइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमसम्मइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्पम संखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण जेयस्सं आव पलिदोषमं वि । तदो खइयसम्माइद्धिो केवत्तणाणिणो भवत्तगुणा । मिच्छइद्धिो अर्हत्तगुणा ।

एवं सम्मतमगणा गदा ।

समाधान—क्योंकि चरित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्पत्तियोंमें प्राप्य समच नहीं है इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्पत्तियोंमें संपत्तौसे संपत्तासंपत्त और संपत्तासंपत्तौसे असंपत्त जीव अधिक होते हैं ।

श्रुक्का—यदि ऐसा है तो बेदसंपत्तमें तेरह कपेइ मुख्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं था आपणा ?

समाधान—यदि बल गाथार्यके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होमे ।

श्रुक्का—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो पुच्छित्त है और व्यचार्य परंपरासे आया हुआ है इसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं छिरे जा सकती अन्यथा अतिप्रसंग होए जा आपणा ।

बेदकसम्पत्तदृष्टियोंका अवहारकाळ सायिकसम्पत्तदृष्टि संपत्तासंपत्तौसे असंख्यातगुणा है । सायिकअसंपत्तसम्पत्तदृष्टियोंका अवहारकाळ वेदकअसंपत्तसम्पत्तदृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उपशमअसंपत्तसम्पत्तदृष्टियोंका अवहारकाळ सायिकअसंपत्तसम्पत्तदृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । सम्पत्तिमिच्छादृष्टियोंका अवहारकाळ उपशमअसंपत्तसम्पत्तदृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । सासाधनसम्पत्तदृष्टियोंका अवहारकाळ सम्पत्तिमिच्छादृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । वेदकसम्पत्तदृष्टि संपत्तासंपत्तौका अवहारकाळ सासाधनसम्पत्तदृष्टियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उपशमसम्पत्तदृष्टि संपत्तासंपत्तौका अवहारकाळ वेदकसम्पत्तदृष्टि संपत्तासंपत्तौके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं उपशमसम्पत्तदृष्टि संपत्तासंपत्तौका मुख्य उन्हींके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकाळके प्रतिष्ठोपक्रमसे पर्योपमतक छे जाना चाहिये । पर्योपमसे सायिकसम्पत्तदृष्टि केवलज्ञानी भवत्तगुणे हैं । मिच्छादृष्टि जीव सायिकसम्पत्तदृष्टि केवल ज्ञानियोंसे भवत्तगुणे हैं ।

इसप्रकार सम्पत्तमार्गाणा समाप्त हुई ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाद्विही दब्बपमाणेण केवडिया,
देवेहि सादिरियं ॥ १८५ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुचये । सध्वे देवमिच्छाद्विहीणो सण्णियो वेय । तेहि
संसेज्जदिमागमेवा विगदिसण्णिमिच्छाद्विहीणो होति । तेण सण्णिमिच्छाद्विहीणो देवेहि
सादिरिया । एत्थ अब्बहारकस्सो सुचये । तं जहा— देवअवहारकत्तादो पदरंगुलमेगं वेत्थ
संसेज्जद्विही करिय सत्थेगएदमवभिय सेसवहुत्तं तमिह वेध पक्खिसे सण्णिमिच्छाद्वि
अवहारकालो होदि । एदेष अगपदो भागो हिदे सण्णिमिच्छाद्विद्वं होदि ।

सासणसम्माद्विष्टिणुद्धि जाव स्त्रीणकसायवीदरागच्छुमत्था ति
ओघं ॥ १८६ ॥

सुगममेवं सुखं ।

असण्णी दब्बपमाणेण केवडिया, अणत्ता ॥ १८७ ॥

सम्रीमार्गपाके अनुवादसंक्षिप्येति मिथ्यादृष्टि बीजद्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवोति कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यादृष्टि बीज संज्ञी ही होते हैं । तथा
उनके संख्यातर्क भागप्रमाण तीन पतिसंख्या की संज्ञी मिथ्यादृष्टि बीज होते हैं । इच्छिये
संज्ञी मिथ्यादृष्टि बीज देवोंसे कुछ अधिक हैं ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अब यहाँ पर अवधारकत्वका कथन करते हैं । यह इस प्रकार है— देव अवधारकत्वमें
एक प्रसङ्गिकको ग्रहण करके और उसके संख्यातर्क खंड करके उनमेंसे एक खंडको निष्प्रसङ्ग होकर
बहु खंड संज्ञीमें मिखा देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकत्व होता है । इस अवधारक-
त्वसे जगत्तरके मायित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्भगदृष्टि गुणस्थानसे लेकर बीजकृपाय वितरागच्छकस्य गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी बीज औषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी बीज द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ ईश्वरानामेन वसिष्ठ मिथ्यातत्त्वतया बीजकृपायात्प्राप्तवद्देवसंमिश्र । उ ति १ ८ देवेहि सादिरियो
एतौ सण्णीसु देवेहि पदिरियं ॥ को. जी. १६६

२ अत्र संज्ञी मिथ्यादृष्टीभ्योऽप्यणत्ता । उदयवन्धनसंज्ञितानां सायव्योदयकत्वम् । उ ति १, ८५
उत्पत्ती वदन्ती तन्मैविवदन्तिजीवन्ति ॥ पी. जी. १६१

अणताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरति कालेण
॥ १८८ ॥

स्वेतेण अणंताणता लोका ॥ १८९ ॥

एदमि तिप्पि सुचाभि अवगदत्थानि चि एदेसिं म वक्खवाण पुच्चवे । एत्थ
पुवरासिं वचइस्सामो । सपिणरासिं जेव-सपिण-जेव-असपिणरासिं च असपिणमज्झितस्सवर्मा च
सम्भवीवरासिस्सुवसि पक्खिसे असपिणपुवरासी होदि ।

मागामाग वचइस्सामो । सम्भवीवरासिमणंसखंडे कए बहुखंडा असपिणो होति ।
सेसमणतखंडे कए बहुखंडा जेव सपिणी जेव असपिणी होति । सेसमणसखंडे कए
बहुखंडा सपिणिमिच्छाद्विजो होति । सेसमोचमागामागमगो ।

विनिहमति अप्पावहुग क्खानिक्खण माप्पिद्वर्ष ।

एवं सपिणमग्ना समया ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाद्विप्पहुदि जाव सजोगि
केवलि ति ओघ' ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंखी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अवहृत नहीं होते ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंखी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अवगत है इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है । अब
यहां पर सुवराधिका प्रतिपादन करते हैं— सखीराशि और सखी तथा असंखी इन दोनों
व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असंखी राशिके माहित उक्त राशियोंके बगको सर्व
जीवराशिमें मिखा देने पर असंखी जीवोंके प्रमाण खानेके लिये सुवराशि होती है ।

अब भागामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग असंखी जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग संखी और
असंखी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
बहुभाग सखी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष भागामागका ओघ भागामागके समान कथन करना
चाहिये ।

तीनों प्रकारके अवयवद्वयका भी आनकर कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार संक्षीमार्थका समाप्त हुई ।

आहारमार्गणके अमुवादेसे आहारक्रममें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसंज्ञक सपोगि

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया,
देवेहिं सादरेय ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुच्चये । सत्थे देवमिच्छादट्ठियो सण्णिमो चेय । तेहिं
संखेज्जदिमाणेणा सिगदिसण्णिमिच्छादट्ठियो होति । तेव सण्णिमिच्छादट्ठियो देवेहिं
सादरेया । एत्थ अबहारकस्सो पुच्चये । स अह— देवअवहारकस्सो पदरुत्तमेगं भेट्थ
सोत्तेज्जदि करिय कत्थेगसंखममणिय सेसवहुसंखं समि चेव पक्खित्थे सण्णिमिच्छादट्ठि
अवहारकस्सो होदि । एदेव अगपदेरे मागे दिरे सण्णिमिच्छादट्ठिदणं होदि ।

सासणसम्माहट्ठिण्हुडि जाव खीणकसायवीदरागछुदुमत्था ति
ओष' ॥ १८६ ॥

सुयममदं सुत्त ।

असण्णी दब्बपमाणेण केवडिया, अणता ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गवाके अनुवादसे संक्षिप्तोक्तं मिथ्यावृत्ति जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

यव इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यावृत्ति जीव संज्ञी ही होते हैं । तथा
कमके संख्यातमें मायप्रमाण तीन पतिसंख्या की संज्ञी मिथ्यावृत्ति जीव होते हैं । इसलिये
संज्ञी मिथ्यावृत्ति जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं ऐसा स्वयं कहा है ।

यव वहाँ पर अवहारकस्वभाव कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— देव अवहारकस्वभावमें
एक प्रसङ्गगुणको ग्रहण करके और उसके संख्यात ब्रह्म करके स्वयंसे एक खंडको विचारकर दोष
बहु ब्रह्म उन्नीमें मिथ्या देने पर संज्ञी मिथ्यावृत्तियोंका अवहारकस्वभाव होता है । इस अवहार
कस्वभावसे अगमप्रत्यक्षे मान्य करने पर संज्ञी मिथ्यावृत्ति द्रव्य होता है ।

सासादनसम्यग्गट्ठि गुणस्थानसे लेकर खीणकपाय वीतरागादयस्व गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओषप्रकरणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ संज्ञावृत्तिन कश्चिदु मिथ्यावृत्तयस्वभावः जीवप्रमाणानुसारेण निर्दिष्टमिति । अ. वि. १८ देवेहिं सादरेये
एवो वन्तीति श्रुतिर्नाम ॥ अ. वि. १८६

२ अवस्थितो विचारकस्योऽन्तर्भावः । उदयवन्तपर्यवर्तिताः कालावधौर्भावः । अ. वि. १, ८
देवो संज्ञी कश्चित्पञ्चमितीत्यर्थः ॥ अ. वि. १८६

समि अतलियाए असंखेज्जद्विभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो हादि ।

अजोगिकेवली ओघ ॥ १९२ ॥

सुगममेद ।

मागामार्ग वसइस्सामो । सन्नजीवरासिमसंखेज्जखंड कए बहुखडा आहारि मिच्छाइड्ढिओ होंति । सेसमणतखंड कए बहुखंडा अणाहारिअवगगा होंति । सेसमणतखंड कए बहुखंडा अणाहारिअवगगा होंति । सेसमसखेज्जखंड कए बहुखंडा आहारि अंसज्जदसम्माइड्ढिओ होंति । सेस संखेज्जखंड कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइड्ढिओ होंति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइड्ढिओ होंति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा संवदासंज्जदा होंति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा अणाहारिअंसज्जदसम्माइड्ढिओ होंति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइड्ढिओ होंति । सेस संखेज्जखंड कए बहुखंडा पमचसज्जदा होंति । सेसखंड अप्पमचसज्जदाओ होंति ।

अप्याबहुग तिनिई सत्थाणादिमेएण । तत्थ सत्थार्थ मूलोषमगो । परत्थाण पयद ।

मसंख्यातके भागसे शुद्धि करने पर अनाहारक सासादनसम्पत्तिओंका अवहारकाल होता है ।

अनाहारक अजोगिकेवली ओघ ओघप्ररूपभाके समान है ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब मागामागके वतसाते हैं— सर्व जीवराशिक मसंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिष्याइडि जीव है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अवग्युक्त जीव है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अवग्युक्त जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक मसंघतसम्पत्ति जीव है । दोष एक भागके छणपात खंड करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिष्याइडि जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्पत्ति जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग संघतसंघत जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक मसंघतसम्पत्ति जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्पत्ति जीव है । दोष एक भागके संघपात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंघत जीव है । दोष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तसंघत भादि जीव है ।

स्वरथान अस्पबहुत्थ भादिके मेहसे अस्पबहुत्थ तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वरथान अस्पबहुत्थ मूख ओघ स्वरथान अस्पबहुत्थके समान है ।

तन्नि आवसियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइहिअमहारफालो होदि ।

अजोगिकेवली ओघ ॥ १९२ ॥

सुगममेद ।

मतामामं वचइस्सामो । सम्पजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि मिच्छइहिणो होति । सेसमणतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबगगा होति । सेसमणतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअमचगगा होति । ससमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि असंबदसम्माइहिणो होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छइहिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइहिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संबदार्सबदा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंबदसम्माइहिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइहिणो होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमचसबदा होति । सेसेगखंडं अप्पमचसज्जदत्तओ होति ।

अप्यावहुगं तिनिहं सत्यामादिमेएण । तत्थ सत्यार्थं सुलोचमंगो । परत्थामे पयदं ।

असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्पत्तिपेक्षा अनाहारक्य होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली औष ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब मामामागको बतलाते हैं— सर्व औषधपिण्डे असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिच्छइहि औष है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक वचइस्सामो औष है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अप्पमचक औष है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्पत्ति औष है । दोष एक भागके सत्यामा खंड करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छइहि औष है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्पत्ति औष है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतसंयत औष है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्पत्ति औष है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्पत्ति औष है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत औष है । दोष एकभाग प्रमाण अप्पमचसंयत भवि औष है ।

स्वस्थान अस्पवहुत्वं आधिके मेहसे अस्पवहुत्वं तीव्र प्रकारका है । जन्मसे स्वस्थान अस्पवहुत्वं मूत्र ओघ स्वस्थान अस्पवहुत्वंके समान है ।

सम्बन्धोदा चचारि उवसामगा । सुखगा संखेज्जगुणा । अप्पमचसज्जदा संखेज्जगुणा ।
पमचसज्जदा संखेज्जगुणा । आहारिजसंजदसम्माद्विजवहारकातो असंखेज्जगुणो । सम्मा-
मिच्छाद्विजवहारकातो असंखेज्जगुणो । आहारिसासयसम्माद्विजवहारकातो संखेज्जगुणो ।
सज्जदासज्जदवहारकातो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण । एवं वेयम्भं जाव
पत्तिदोवमं ति । त्वो आहारिमिच्छाद्विजो अगतगुणा । अणाहारएसु सम्बन्धोदा सवोमि-
कवली । असंजदसम्माद्विजवहारकातो असंखेज्जगुणो । सासयसम्माद्विजवहारकातो
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुणं । एवं वेयम्भं जाव पत्तिदोवमं ति । त्वो
अवसगा अवसगुणा । वसगा अगतगुणा ।

सम्बन्धपरिभाषा पथदं । सम्बन्धोदा अणाहारिसवोमिकेवली । (अवोमिकेवली संखेज्ज
गुणा ।) चचारि उवसामगा संखेज्जगुणा । (सुखगा संखेज्जगुणा ।) आहारिसवोमिकेवली संखेज्ज
गुणा । अप्पमचसज्जदा संखेज्जगुणा । पमचसज्जदा संखेज्जगुणा । आहारिजसंजदसम्माद्विजव

अव परस्थानमें अव्यवहृत्य प्रकृत है— चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव सबसे
स्तोक हैं । उपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुण्ये हैं । अग्रमचसंपत जीव उपकोंसे संख्यातगुण्ये
हैं । प्रमचसंपत जीव अग्रमचसंपतोंसे संख्यातगुण्ये हैं । आहारक असंपतसम्बन्धियोंका
अवहारकाळ प्रमचसंपतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्प्रमिध्यादृष्टियोंका अवहारकाळ
आहारक असंपतसम्बन्धियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासाधन-
सम्बन्धियोंका अवहारकाळ आहारक सम्प्रमिध्यादृष्टियोंके अवहारकाळसे संख्यातगुणा
है । संपतसंपतोंका अवहारकाळ आहारक सासाधनसम्बन्धियोंके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य उन्हींके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पस्योपमतक के जाय चाहिये । पस्योपमसे आहारक मिध्यादृष्टि जीव अनस्तगुण्ये हैं । अना-
हारकोंमें सवोमिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अनाहारक असंपतसम्बन्धियोंका अवहारकाळ
अनाहारक सवोमिकेवलीसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासाधनसम्बन्धियोंका
अवहारकाळ अनाहारक असंपतसम्बन्धियोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका
द्रव्य उन्हींके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पस्योपमतक के जाना चाहिये ।
पस्योपमसे अवस्थाक जीव अनस्तगुण्ये हैं । अवस्थाक जीव अवस्थाकोंसे अनस्तगुण्ये हैं ।

अव सर्व परस्थानमें अव्यवहृत्य प्रकृत है— अनाहारक सवोमिकेवली जीव
सबसे स्तोक हैं । अवोमिकेवली जीव उनसे संख्यातगुण्ये हैं । चार गुण-
स्थानवर्ती उपशामक जीव अवोमिकेवलीसे संख्यातगुण्ये हैं । उपक जीव
उपशामकोंसे संख्यातगुण्ये हैं । आहारक सवोमिकेवली जीव उपकोंसे संख्यातगुण्ये हैं ।
अग्रमचसंपत जीव आहारक सवोमिकेवलीसे संख्यातगुण्ये हैं । प्रमचसंपत जीव
अग्रमचसंपतोंसे संख्यातगुण्ये हैं । आहारक असंपतसम्बन्धियोंका अवहारकाळ प्रमचसंपतोंसे

हारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासन-
सम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सवदासवदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारि
असंखदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासनसम्माइड्डिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्बमसंखेज्जगुण । एवं णेयञ्च आष पलिदोषम ति । तदो अवधगा
अप्पतगुणा । अणाहारियो वधगा मिच्छाइड्डिणो अप्पतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छा
इड्डियो असंखेज्जगुणा ।

एवं दम्बाणिबोगहारं समं ।

असंख्यातगुणा है । सम्यग्मित्रादृष्टियोंका अवहारकाळ आहारक असंयतसम्पत्तयदि अवहार
काळसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासाधनसम्पत्तयिोंका अवहारकाळ सम्यग्मित्रादृष्टि
अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । सयतासंबर्तोंका अवहारकाळ आहारक सासाधनसम्पत्तयि
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक असंयतसम्पत्तयिोंका अवहारकाळ सयता
संबर्तोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासाधनसम्पत्तयिोंका अवहारकाळ
सम्पत्तयि असंयतसम्पत्तयि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उर्गीका रूप अपने अवहार
काळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पस्योपमतक के आना चाहिये । पस्योपमसे अवन्धक
और अनन्तगुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि और अवन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं । इनसे
आहारक बन्धक और असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार ब्रह्मानुयोगहार समाप्त हुआ ।

सम्बन्धोवा चत्वारि उच्यमाना । लक्षणा संश्लेषजगुणा । अप्यमचसञ्जदा संश्लेषजगुणा ।
पमचसञ्जदा संश्लेषजगुणा । आहारिजसञ्जदसम्माद्विजवहारफालो असंश्लेषजगुणो । सम्मा-
मिच्छाद्विजवहारफालो असंश्लेषजगुणा । आहारिसासजसम्माद्विजवहारफालो संश्लेषजगुणो ।
सञ्जदासञ्जदअवहारफालो असंश्लेषजगुणो । तस्सव दम्भमसंश्लेषजगुणं । एवं वेयम्भं याव
पत्तिदोषम ति । तदो आहारिमिच्छाद्विज्यां अण्यतगुणा । अणाहारएसु सम्बन्धोवा सज्जो-
क्वली । असंजदसम्माद्विजवहारफाला असंश्लेषजगुणो । सासजसम्माद्विजवहारफालो
असंश्लेषजगुणो । तस्सेव दम्भमसंश्लेषजगुणं । एवं वेयम्भं याव पत्तिदोषम ति । तदो
अवचगुणा अण्यतगुणा । वचगुणा अण्यतगुणा ।

सम्प्रपरात्पापं पर्यदं । सम्प्रत्योवा अथाहारिसंयोगिकेवली । (अजोनिक्केवली संखेज गुणा ।) चत्तारि उवसम्मगा संखेजगुणा । (लवगा संखेजगुणा ।) आहारिसंयोगिकेवली संखेज गुणा । अप्पमचसंबदा संखेजगुणा । पमचसंबदा संखेजगुणा । आहारिसंबसंबदसम्माप्तिम

यह परस्थानमें अव्ययवृत्त प्रकृत है— चारों गुणस्वाभावकी अप्रत्यामक जीव सबसे स्तोत्र है। स्वयं जीव अप्रत्यामकोसे संख्यातगुणे है। अममत्तस्यत जीव स्वयंसे संख्यातगुणे है। प्रमत्तस्यत जीव अममत्तस्यतकोसे संख्यातगुणे है। आहारक असंयतसम्बन्धियोंका जवहारका प्रमत्तस्यतकोसे असंख्यातगुणा है। सम्बन्धित्वादिषियोंका जवहारका आहारक असंयतसम्बन्धियोंके जवहारकासे असंख्यातगुणा है। आहारक सासादन-सम्बन्धियोंका जवहारका आहारक सम्बन्धित्वादिषियोंके जवहारकासे संख्यातगुणा है। संयतसंयतोंका जवहारका आहारक सासादनसम्बन्धियोंके जवहारकासे असंख्यातगुणा है। उन्हींका प्रथम उन्हींके जवहारकासे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पक्षोपमत्त के आद्य चाहिये। पक्षोपमसे आहारक मिथ्यादि जीव अवन्तगुणे हैं। अनाहारकोंमें सयोगिकेवही जीव सबसे स्तोत्र है। अनाहारक असंयतसम्बन्धियोंका जवहारका अनाहारक सयोगिकेवहियोंसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक सासादनसम्बन्धियोंका जवहारका अनाहारक असंयतसम्बन्धियोंके जवहारकासे असंख्यातगुणा है। उन्हींका प्रथम उन्हींके जवहारकासे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार परोपमत्त के आद्या चाहिये। पक्षोपमसे अवन्त जीव अवन्तगुण हैं। वन्त जीव अवन्तकोसे अवन्तगुणे हैं।

अब सर्व परस्थानमें अस्वभाविक प्रकृत है—आहारक सयोगिकेकी जीव सबसे स्तोत्र है । अयोगिकेकी जीव इनसे संख्यातगुणे हैं । बार गुण-स्थानकी कण्ठमक जीव अयोगिकेकीकीसे संख्यातगुणे हैं । सप्त जीव कण्ठमकीसे संख्यातगुणे हैं । आहारक सयोगिकेकी जीव सप्तकीसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमत्तसप्त जीव आहारक सयोगिकेकीकीसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसप्त जीव अग्रमत्तसप्तकीसे संख्यातगुणे हैं । आहारक अस्वभाविकप्रकृतियोग आहारकप्रकृत प्रमत्तसप्तकीसे

परिशिष्ट



परिशिष्ट

१ दन्वपरुवणासुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	दन्वपमाणाणुगमेण दुग्धिहो निदेसो आपेण अदेसेण य ।		१२	अद पदुष संखेज्जा ।	९३
२	ओपेण मिच्छाद्वी दन्वपमाणेण कवडिया, अर्यता ।	१०	१३	सजोगिकेवली दन्वपमाणेण केव डिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणि वा, उक्कस्सण अहुत्तरसय ।	९५
३	अगतत्तताहि ओसप्पिणि उस्मत्पि वीहि ण अवहिरिणि कालेम ।	२७	१४	अद पदुष सदमहस्सपुपसं ।	९५
४	खचप्य अणताणता छागा ।	३२	१५	आदमेण गदिपाणुवादेण निरय गईण पेदइयसु मिच्छाद्वी दन्व पमाणेण केवडिया, अर्यखेज्जा ।	१२१
५	सिण्ह पि अधिगमो भावपमाण ।	३८	१६	असखज्जाअखज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरिणि कालेम ।	१२९
६	साधुपसम्माइदिप्पिद्विजाव भुज दामज्जा सि दन्वपमाणेण केव डिया, पत्तिदोवमस्म असखज्जादि मागा । एदेहि पत्तिदोवममवहिरि ज्जादि अंतामुदुचेण ।	६३	१७	खचेण असंखज्जाओ सेडीआ अग- पदस्स असंखज्जादिमागमेसाआ । तामि सरीण निक्खंमवची अंगुल वगमूत्तं विदिपवगममूलगुणिदण ।	१३१
७	पमसर्वज्जा दन्वपमाणेण कवडिया, कोहिपुपसं ।	८८	१८	मासपमम्माइदिप्पिद्विजाव आर अर्य ज्जदमम्माइदि सि दन्वपमाणेण कवडिया, आपं ।	१५६
८	अप्यमसर्वज्जा दन्वपमाणेण कव डिया, सखज्जा ।	८९	१९	एव पदमार पुन्नीण परइया ।	१६१
९	चदुण्हमुवसामगा दन्वपमाणेण कव डिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणि वा, उक्कस्मण चउवण्णी ।	९०	२०	विदिपादि आर मचमार पुन्नीण परइयसु मिच्छाद्वी दन्वपमाणेण कवडिया, अर्यखेज्जा ।	१७८
१०	अद पदुष मखज्जा ।	९१	२१	असंखज्जाअसंखज्जाहि आयप्पिणि- उम्माप्पिणीहि अवहिरिणि कालेम ।	१८८
११	चउण्ह यथा अजोगिकेवली दन्व पमाणेण केवडिया, पयमण एको वा दो वा तिणि वा, उक्कस्मण अहु त्तरसद ।	९२	२२	गचण मेडीण अर्यखज्जादिमागा । निम्म मरीण आपामा जस	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	संज्ञाभ्यो भोययकोडीना पदमा- दियार्थं सेद्विषयगमूलात् संज्ञेत्कार्यं अभ्योभ्यभ्यासेन ।	१९९	३४	इहो दृश्यपमाणेन केवद्विया, अर्त्तं लेज्जा ।	२२९
२३	सात्तजसम्मवट्ठिप्पडुडि जाव अर्त्तं वदसम्मवट्ठि पि ओर्षं ।	२०६	३५	अर्त्तंलेज्जासंज्ञेत्ताहि ओत्तप्पिणि- उत्तप्पिणीहि अबहिरंति कात्तेय । २३०	
२४	तिरिक्खगार्हए तिरिक्खेसु मिच्छा- इट्ठिप्पडुडि जाव संज्ञासज्जदा पि ओर्षं ।	२१५	३६	लेत्तेय पंथिदियतिरिक्खजोपिणि मिच्छावट्ठिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्तदो सत्तेज्जगुणेन का- त्तेय ।	२३१
२५	पंथिदियतिरिक्खमिच्छावट्ठि दृश्य पमाणेन केवद्विया, संज्ञेत्ता ।	२१७	३७	सात्तजसम्मवट्ठिप्पडुडि जाव संज्ञ- दासंज्ञदा पि ओर्षं ।	२३७
२६	अर्त्तंलेज्जासंज्ञेत्ताहि ओत्तप्पिणि उत्तप्पिणीहि अबहिरंति कात्तेय ।	२१७	३८	पंथिदियतिरिक्खअपन्नया दृश्य- पमाणेन केवद्विया, अर्त्तंलेज्जा ।	२३९
२७	लेत्तेय पंथिदियतिरिक्खमिच्छा- इट्ठिहि पदरमवहिरदि देवअवहार कात्तदो अर्त्तंलेज्जगुणहीणाकात्तय ।	२१९	३९	अर्त्तंलेज्जासंज्ञेत्ताहि ओत्तप्पिणि उत्तप्पिणीहि अबहिरंति कात्तेय ।	२३९
२८	सात्तजसम्मवट्ठिप्पडुडि जाव सज्ज दासंज्ञदा पि तिरिक्खोर्षं ।	२२६	४०	लेत्तेय पंथिदियतिरिक्खअपन्नयेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकात्तदो अर्त्तंलेज्जगुणहीणेन कात्तेय ।	२३९
२९	पंथिदियतिरिक्खअपन्नयमिच्छावट्ठि दृश्यपमाणेन केवद्विया, अर्त्तंलेज्जा ।	२२६	४१	मज्जुसमार्हए मज्जुस्तेसु मिच्छावट्ठि दृश्यपमाणेन केवद्विया, अर्त्तंलेज्जा ।	२४४
३	अर्त्तंलेज्जासंज्ञेत्ताहि ओत्तप्पिणि- उत्तप्पिणीहि अबहिरंति कात्तेय ।	२२७	४२	अर्त्तंलेज्जासंज्ञेत्ताहि ओत्तप्पिणि उत्तप्पिणीहि अबहिरंति कात्तेय ।	२४५
३१	लेत्तेय पंथिदियतिरिक्खअपन्नय मिच्छावट्ठिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्तदो सत्तेज्जगुणहीणेन कात्तेय ।	२२८	४३	लेत्तेय सेदीए अर्त्तंलेज्जादिमायो । तिस्से सेदीए आयामा अर्त्तंलेज्जादि भोययकोडीओ । मज्जुसमिच्छा- इट्ठिहि रुवा पथिउत्तयहि सेदी अवहिरदि अंगुत्तममामूर्त्तं तदिय वगगमूलगुणिदेय ।	२४५
३२	सात्तजसम्मवट्ठिप्पडुडि जाव सज्ज दासंज्ञदा पि ओर्षं ।	२२९	४४	सात्तजसम्मवट्ठिप्पडुडि जाव सज्ज- दासंज्ञदा पि दृश्यपमाणेन केव	
३३	पंथिदियतिरिक्खजोपिणीसु मिच्छा-				

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	द्विया, संसृज्वा ।	२५१		अंगुलवर्गमूल तदियवर्गमूलगुणि देण ।	२६२
४४	पमचसजदप्पहुडि जाव अजोगि- कवलि चि ओपं ।	२५२	५३	देवर्गए दवसु मिच्छइही दव पमाणग केवद्विया, असंज्वा ।	२६६
४५	मणुसपज्जचेसु मिच्छइही दव पमाणेण केवद्विया, कोठाकोठा- कोडीए उवरि कोठाकोठाकाडा- काडीए हेइदो छण् बग्गाणमुवरि सचण् बग्गाण इइदो ।	२५३	५४	अमंखज्जामरुज्जाहि ओमप्पिणि उस्मप्पिणीहि अवहिरंति कालम ।	२६८
४६	सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव सज दासंभदा चि दवपमाणेण केव द्विया, संसृज्वा ।	२५४	५५	रुत्तण पइरस्म वल्लप्पणगुत्तसय वग्गपडिमाण ।	२६८
४७	पमचसजदप्पहुडि जाव अजोगि कवलि चि आय ।	२५५	५६	सासणमम्मइडि सम्मामिच्छइहि अवददमम्माइहीण ओपं ।	२६९
४८	मणुसिणीसु मिच्छइही दवपमा- णेण केवद्विया, कोठाकोठाकाडीए उवरि काठाकोठाकाडाकाडीए इदो छण् बग्गाणमुवरि सचण् बग्गाण हेइदो ।	२५६	५७	मवणवामियदेवसु मिच्छइही दव पमाणेण केवद्विया, असंज्वा ।	२७०
४९	मणुसिणीसु सासणसम्माइडिप्पहु डि जाव अजोगिकेवलि चि दव पमाणेण केवद्विया, संसृज्वा ।	२५७	५८	अमरेज्जामरेज्जाहि ओमप्पिणि उस्मप्पिणीहि अवहिरंति कालम ।	२७०
५०	मणुमअपज्जत्ता दवपमाणेण केव द्विया, असंज्वा ।	२५८	५९	रुत्तण अमरुज्जाआ मडीओ पद स्स अमरेज्जदिमाणो । तासि सदीण विस्संमव्व अंगुल अंगुल- वर्गमूलगुणिदेण ।	२७०
५१	असंज्वाअमरुज्जाहि ओमप्पिणि उस्मप्पिणीहि अवहिरंति कालम ।	२५९	६०	सासणमम्मइडि सम्मामिच्छइहि अवददमम्माइडिक्खणा आय ।	२७१
५२	सुत्तण सेदीण असंज्वादिमाणा । मिस्स सेगीए आयाओ अमरुज्जाआ ओत्तणसादीओ । मणुमअपज्जत्तेहि रुवा पत्तिस्सेहि सप्पिमरिदि	२६०	६१	वाणेरदवसु मिच्छइही दव पमाणेण केवद्विया, असंज्वा ।	२७२
		२६२	६२	अमंखज्जामरुज्जाहि ओमप्पिणि उस्मप्पिणीहि अवहिरंति कालम ।	२७२
		२६३	६३	रुत्तण पइरस्म मग्गज्जोपपमद वग्गपडिमाण ।	२७२
		२६४	६४	सासणमम्मइडि सम्मामिच्छइहि अवददमम्माइही आय ।	२७४
		२६५	६५	ओमियदवा दवणण मंगा ।	२७५

सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत	सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत
	सेज्जाओ ओयणकोडीओ पंडमा- दियानं सेदियगामूठान संसज्जाण अण्योणाम्मासेण ।	१९९	३४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेम ।	२२९
२३	सासणसम्माइडिप्पहुडि आप असं अइसम्माइडि पि ओपं ।	२०६	३५	खेयेण पंथिदियतिरिक्खओणिमि मिच्छइडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्ताओ संखेज्जगुणेण का- सेम ।	२३०
२४	तिरिक्खगार्हण तिरिक्खेसु मिच्छा- इडिप्पहुडि ज्ञान संज्जादसंज्जा पि ओपं ।	२१५	३६	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्जा- दसंज्जा पि ओपं ।	२३७
२५	पंथिदियतिरिक्खमिच्छाइडि इण्य पमायेण केवडिया, संखेज्जा ।	२१७	३७	पंथिदियतिरिक्खअपज्जा इण्य पमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२३९
२६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेम ।	२१७	३८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेम ।	२३९
२७	खेयेण पंथिदियतिरिक्खमिच्छा- इडिहि पदरमवहिरदि देवअवहार कात्ताओ असंखेज्जगुणहीणकात्ताम ।	२१९	३९	खेयेण पंथिदियतिरिक्खअपज्जायेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकात्ताओ असंखेज्जगुणहीणिण कासेम ।	२३९
२८	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्जा दसंज्जा पि तिरिक्खोपं ।	२२६	४०	मज्झसर्गए मज्झस्तेसु मिच्छइडि इण्यपमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२४४
२९	पंथिदियतिरिक्खपग्गचमिच्छइडि इण्यपमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२२६	४१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेम ।	२४५
३०	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेम ।	२२७	४२	खेयेण संहीए असंखेज्जदिमाणो । विस्से सेहीए आपामो अमंखेज्जदि ओयणकोडीओ । मज्झसमिच्छा- इडिहि रुक्खा पक्खिचएहि सेही अवहिरदि अंगुलपगामूठ तदिय वगामूठगुण्णिदेण ।	२४५
३१	खेयेण पंथिदियतिरिक्खपग्गच मिच्छइडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्ताओ संखेज्जगुणहीणेण कासेम ।	२२८	४३	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्जा दसंज्जा पि इण्यपमायेण केव	
३२	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्जा दसंज्जा पि ओपं ।	२२९			
३३	पंथिदियतिरिक्खओणिमीसु मिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दिया, संखेज्जा ।	२५१		अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलमुभि- देण ।	२६२
४४	पमत्तसज्जदप्पहुडि आब अजागि केवल्लि चि ओयं ।	२५२	५३	देवगईए देवेसु मिच्छाद्वी। दम्ब पमाणेण केवडिया, अमत्तेज्जा ।	२६६
४५	मणुसपन्नज्जेसु मिच्छाद्वी दम्ब पमत्तेण केवडिया, कोडाकोडा- कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा- कोडीए हेडुदो छणं वग्गाम्भुवरि सत्तम्ब वग्गाम्भु हेडुदो ।	२५३	५४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरसि कालेम् ।	२६८
४६	सासणसम्मद्विप्पहुडि आब सज्ज दत्तसज्जदप्पहुडि आब अजागि केवल्लि चि ओयं ।	२५४	५५	खत्तेण पदरस्स वेळप्पण्णगुलसय वग्गपडिमाणेण ।	२६८
४७	पमत्तसज्जदप्पहुडि आब अजागि केवल्लि चि ओयं ।	२५५	५६	सासणसम्मद्विप्पहुडि-सम्मामिच्छद्वि अमज्जदसम्मद्विप्पहुडि ओयं ।	२६९
४८	मणुसिर्णसु मिच्छाद्वी दम्बपमा- णेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे डुदो छणं वग्गाम्भुवरि सत्तम्ब वग्गाम्भु हेडुदो ।	२५६	५७	मवन्नवासिपदेवेसु मिच्छाद्वी दम्ब पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७०
४९	मणुसिर्णसु सासणसम्मद्विप्पहु डि आब अजागिकेवल्लि चि दम्ब पमत्तेण केवडिया, संखेज्जा ।	२५७	५८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरसि कालेम् ।	२७०
५०	मणुसअपन्नज्जा दम्बपमाणेण केव डिया, असंखेज्जा ।	२५८	५९	खत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ पद रस्स असंखेज्जदिमाणो । तासिं सेडीण विक्खेममई अंगुल अंगुल- वग्गमूलमुभिदेण ।	२७०
५१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरसि कालेम् ।	२५९	६०	सासणसम्मद्विप्पहुडि-सम्मामिच्छद्वि अमज्जदसम्मद्विप्पहुडि पन्नवणा ओयं ।	२७१
५२	खत्तेण सेडीए असंखेज्जदिमाणो । तासिं सेडीए आपामो असंखेज्जाओ ओयणकोडीओ । मणुसअपन्नज्जेहि रूपा पक्खित्तेहि सेट्ठिमवहिरसि	२६०	६१	वाणवैतरदेवेसु मिच्छाद्वी दम्ब पमाणेण केवडिया, अमत्तेज्जा ।	२७२
			६२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरसि कालेम् ।	२७२
			६३	खत्तेण पदरस्स संखेज्जओयणसद वग्गपडिमाणेण ।	२७२
			६४	सासणसम्मद्विप्पहुडि-सम्मामिच्छद्वि अमज्जदसम्मद्विप्पहुडि ओयं ।	२७४
			६५	ओइसियदेवा देवगईए मंगा ।	२७५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहृन्मीसत्तकप्यवासियदेवेसु मि प्लष्टाद्द्वी दम्बपमाणेन केवडिया, असलेन्ना । २७६	७५	अर्षसावताहि ओसपिभि-उस्त पिणीहि न अवहिरंति कालेन । ३०६		
६७	असलेन्नासलेन्नाहि ओसपिभि- उस्तपिणीहि अवहिरंति कालेन । २७६	७६	खेचेन अर्षसावता लोगा । ३०७		
६८	खेचेन असलेन्नाजो सेदीमो पद रस्त असलेन्नादिमागो । तासि सेदीमं विक्खंमएहं अंगुलदिय- वमामूल तसियवमामूलमुनिदेन । २७७	७७	बेहदिय-सीहदिय चउरिंदिया तस्सेव पञ्चचा अपञ्चचा दम्बपमाणेन केवडिया, असलेन्ना । ३१०		
६९	सासवसम्मद्वि-सम्मामिच्छादि असंजदसम्मद्वी ओषं । २८	७८	असलेन्नाहि ओसपिभि-उस्तपि णीहि अवहिरंति कालेन । ३१२		
७०	सवक्कमारप्पहुति आब सदास सहस्तरकप्यवासियदेवेसु अहा सत्तमाय पुडबीए केवडिया मंगो । २८०	७९	खेचेन बेहदिय-सीहदिय-चउरिंदिय तस्सेव पञ्चच-अपञ्चचेहि पहरम वहिरदि अगुलस्स असलेन्नादि मागवमामपडिमाएव अगुलस्स सलेन्नादिमागवमामपडिमाएव अं गुलस्स असलेन्नादिमागवमामपडि माएव । ३१३		
७१	आपद-पापद आब जवगेरे-ज- विमाणवासियदेवेसु मिच्छादि प्पहुति आब असंजदसम्मद्वि चि दम्बपमाणेन केवडिया, पल्लो- वमस्त असलेन्नादिमागो । एदेहि पल्लोवममवहिरदि अंतोमुपुचेन । २८१	८०	पंथिदिय पंथिदियपञ्चचपसु मि प्लष्टाद्द्वी दम्बपमाणेन केवडिया, असलेन्ना । ३१४		
७२	अणुदिस आब अवराद्धविमाण वासियदेवेसु असंजदसम्मद्वी दम्बपमाणेन केवडिया, पल्लो- वमस्त असलेन्नादिमागो । एदेहि पल्लोवममवहिरदि अंतोमुपुचेन । २८१	८१	असलेन्नासंखजाहि ओसपिभि उस्तपिणीहि अवहिरंति कालेन । ३१४		
७३	सम्भट्टसिद्धिदिमाणवासियदेवा द म्बपमाणेन केवडिया, संखेन्ना । २८६	८२	खेचेन पंथिदिय पंथिदियपञ्च चपसु मिच्छाद्द्वीहि पहरमवहिरदि अगुलस्स असलेन्नादिमागवमा- पडिमाएव अगुलस्स संखेन्नादि मागवगपडिमाएव । ३१४		
७४	ईदियापुवदेन एहदिया वावरा सुमुमा पञ्चचा अपञ्चचा दम्ब पमाणेन केवडिया, अर्णता । ३०५	८३	सासवसम्मद्विप्पहुति आब अयो- गिकेवलि चि ओषं । ३१७		
		८४	पंथिदियपञ्चचचा दम्बपम जल केवडिया, असलेन्ना । ३१७		
		८५	असलेन्नासंखजाहि ओसपिभि		

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

उत्सर्पिणीहि अवहिरिति कालेण । ३१७

८६ खेचेन पश्चिदियअपज्जचेहि पदर
मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि
मातावग्गपडिमाणेण । ३१८

८७ कायाणुवादेण पुढमिकाइया आठ
काइया तेठकाइया बाठकाइया
बादरपुढमिकाइया बादरआठकाइया
बादरतेठकाइया बादरबाठकाइया
बादरवमप्फइकाइया पचेयसरीरा
तस्सेव अपज्जचा सुहुमपुढमि
काइया सुहुममाठकाइया सुहुम-
तेठकाइया सुहुमवाठकाइया तस्सेव
पज्जचापज्जचा दब्बपमाणेण केव
डिया, असंखेजा लोगा ॥ ३२९

८८ बादरपुढमिकाइय-बादरआठकाइय
बादरवमप्फइकाइयपचेयसरीर
पज्जचा दब्बपमाणेण केवडिया,
असंखेजा । ३३८

८९ असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि
उत्सर्पिणीहि अवहिरिति कालेण । ३४९

९० खेचेन बादरपुढमिकाइय-बादर
आठकाइय बादरवमप्फइकाइय
पचेयसरीरपज्जचपहि पदरमवहिरदि
अंगुलस्स अमंखेज्जदिमागवग्ग
पडिमाणेण । ३४९

९१ बादरतेठपज्जचा दब्बपमाणेण केव
डिया, असंखेजा । अमंखेजाव
तिपवग्गा आवलियचमस्स अंठा । ३५०

९२ बादरबाठकाइयपज्जचा दब्बपमाणेण

केवडिया, असंखेजा । ३५५

९३ असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-
उत्सर्पिणीहि अवहिरिति कालेण । ३५५

९४ खेचेन असंखेज्जाणि जग्गपदरामि
लोगस्स संखेज्जदिभागो । ३५५

९५ वमप्फइकाइया गिगोदमीवा बादरा
सुहुमा पज्जचापज्जचा दब्ब
पमाणेण केवडिया, अंगंठा । ३५६

९६ अणतार्णताहि ओसप्पिणि-उत्स
प्पिणीहि न अवहिरिति कालेण । ३५८

९७ खेचेन अणतार्णता लोगा । ३५८

९८ तसकाइय-तसकाइयपज्जचपसु मि
प्फाइहि दब्बपमाणेण केवडिया,
असंखेजा । ३६०

९९ असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि
उत्सर्पिणीहि अवहिरिति कालेण । ३६१

१०० खेचेन तसकाइय-तसकाइयपज्ज
चपसु मिप्फाइहि पदरमवहि
रदि अंगुलस्स असंखेज्जदिमाग
वग्गपडिमाणेण अंगुलस्स सस
ज्जदिमागवग्गपडिमाणेण । ३६१

१०१ सासणसम्माइहिप्पहुदि जाव
अजोगिकेवलि चि आर्य । ३६२

१०२ तमकाइयअपज्जचा पश्चिदियअप
ज्जचाण मंगा । ३६०

१०३ जोगाणुवादेण पप्पमणजाणि-ति
प्पिरप्पिआगीमु मिप्फाइहि दब्ब
पमाणेण केवडिया, देवान सख
जदिभागो । ३८६

सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत	सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत
६६	सोहम्मीसत्यकृष्णवासिषदेवेसु मि च्छाद्रुही दम्बपमाणेन केरडिया, असलेन्जा । २७६		७५	अणतापसाहि ओसपिपि-उस्त पिपीहि न अवहिरंति कालेन । ३०६	
६७	असलेन्जासंसेन्जाहि ओसपिपि उस्तपिपीहि अवहिरंति कालेन । २७६		७६	खेचेण अर्णतापसा लोगा । ३०७	
६८	खेचेण असलेन्जाओ सेईओ पद रस्त असलेन्जादिमागो । सासि सेईत्यं विस्तमसई अंगुलविदिय बमामूळ तदियबमामूळगुप्तिदेण । २७७		७७	बेईदिय-सीईदिय चठरिंदिया तस्सेव परमत्ता अपन्जत्ता दम्बपमाणेन केरडिया, असलेन्जा । ३१०	
६९	सामजसम्माद्रि-सम्मापिच्छाद्रि असंजदसम्माद्रि आर्य । २८०		७८	असलेन्जाहि ओसपिपि-उस्तपि पीहि अवहिरंति कालेन । ३१२	
७०	समन्नुमारण्डुहि जाव सदार सहस्तरकृष्णवासिषदेवेसु अहा सत्तमाए पुडबिदि गेरयात्रं भंगो । २८०		७९	खेचेण बेईदिय-सीईदिय-चठरिंदिय तस्सेव परमत्ता-अपन्जचेहि पदरम बहिरदि अंगुलस्स असलेन्जादि मागरगपडिमाएण अंगुलस्स संसेन्जादिमागरगपडिमाएण अं गुलस्स असलेन्जादिमागरगपडि माएण । ३१३	
७१	आणद रावद जाव पवगरेज्ज- विमापवासिषदेवेसु मिच्छाद्रि पुडुहि जाव असंजदसम्माद्रि ति दम्बपमाणेन केरडिया, पत्तिरो- बमस्स असलेन्जादिमागो । एदेहि पत्तिरोरममबहिरदि अंतोपुडुचेण । २८१		८०	पंथिदिय पंथिदियपन्जत्तपसु मि च्छाद्रुही दम्बपमाणेन केरडिया, असलेन्जा । ३१४	
७२	अणुदिम जाव अरराद्रविमाण वामियदेवेसु असंजदसम्माद्रि दम्बपमाणेन केरडिया, पत्तिरो- बमस्स असलेन्जादिमागो । एदेहि पत्तिरोरममबहिरदि अंतोपुडुचेण । २८१		८१	असलेन्जासंसेन्जाहि ओसपिपि उस्तपिपीहि अवहिरंति कालेन । ३१४	
७३	सम्पडुविदि विमापरागिपदेवा द म्बपमाणेन केरडिया, संसेन्जा । २८६		८२	खेचेण पंथिदिय-पंथिदियपन्ज- त्तपसु मिच्छाद्रिदि पदरमबहिरदि अंगुलस्स असलेन्जादिमागरमा पडिमाएण अंगुलस्स संसेन्जादि मागरगपडिमाएण । ३१४	
७४	ईदियाशुवादण एईदिया बादरा मुहुमा परमत्ता अपन्जत्ता दम्ब पमाणेन केरडिया, अर्णता । ३०५		८३	सामजसम्माद्रिपुडुहि जाव अजो- गिरुवति ति ओर्य । ३१७	
			८४	पंथिदियअपन्जत्ता दम्बपम केरडिया, अर्णता । ३१७	
			८५	अर्णताज्जामसंसेन्जाहि ओसपिपि	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उत्सपिभीहि अवहिरिति कालेन । ३१७			केवढिया, असंखेला । ३५५	
८६	खेचेण पंचिदियअपज्जयेहि पदर मवहिरदि अंगुलस्स असंखेलादि मागवग्गपडिमाणम् । ३१८		९३	असंखज्जासंखेज्जाहि ओसपिभि उत्सपिभीहि अवहिरिति कालेन । ३५५	
८७	कायाशुवादेन पुदविकाइया आठ काइया तेउकाइया बाठकाइया बादरपुदविकाइया बादरआठकाइया बादरतेउकाइया बादरबाठकाइया बादरवणप्फकाइया पचेयसरीग तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुदवि काइया सुहुमआठकाइया सुहुम तेउकाइया सुहुमबाठकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता दम्बपमाणेण केव ढिया, असंखेला लोगा ॥ ३२९		९४	खेचेण असंखेज्जाणि अगपदराणि लोगस्स संखेज्जादिमागो । ३५५	
८८	बादरपुदविकाइय-बादरआठकाइय बादरवणप्फकाइयपचेयसरी पज्जत्ता दम्बपमाणेण केवढिया, असंखेला । ३४८		९५	वणप्फकाइया णिगेदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता दम्ब- पमाणेण केवढिया, अण्ठा । ३५६	
८९	असंखेलासंखेलाहि ओसपिभि उत्सपिभीहि अवहिरिति कालेन । ३४९		९६	अणत्ताणंताहि ओसपिभि-उत्स पिभीहि न अवहिरिति कालेन । ३५८	
९०	खेचेण बादरपुदविकाइय-बादर आठकाइय-बादरवणप्फकाइय पचेयसरीरपज्जत्ताएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेलादिमागवग्ग पडिमाणेण । ३४९		९७	खेचेण अणत्ताणंता लोगा । ३५८	
९१	बादरतेउपज्जत्ता दम्बपमाणेण केव ढिया, असंखेला । अमंखेला लियवग्गा आरलियवग्गस्स अंता । ३५०		९८	तमकाइय-तमकाइयपज्जत्ताएसु मि च्छाद्वी दम्बपमाणेण केवढिया, असंखेला । ३६०	
९२	बादरबाठकाइयपज्जत्ता दम्बपमाणेण		९९	असंखज्जासंखेज्जाहि ओसपिभि उत्सपिभीहि अवहिरिति कालेन । ३६१	
			१००	खेचेण तसकाइय-तसकाइयपज्ज त्ताएसु मिच्छाद्वीहि पदरमवहि रदि अंगुलस्स असंखज्जादिमाग वग्गपडिमाणेण अंगुलस्स सप्त ज्जादिमागवग्गपडिमाणम् । ३६१	
			१०१	सासणसम्मद्विप्पद्वि आर अत्रोणिकेवन्ति चि आय । ३६२	
			१०२	तमकाइयअपज्जत्ता पंचिदियअप ज्जत्ताणं भंगा । ३६२	
			१०३	आगाणुरादम् पयममज्जाणि-मि णिरपिज्जाणीसु मिच्छाद्वी दम्ब पमाणेण केवढिया, दयाण सप्त ज्जादिमागा । ३८६	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीताम्बकप्यवासियदेवेसु मि च्छाद्वाही दम्बपमायेण केवडिया, असंखेज्जा । २७६		७५	अर्थतार्थताहि ओसप्पिभि-उत्स- प्पिणीहि न अवहिरंति कालेण । ३०६	
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिभि- उत्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । २७६		७६	खेत्तेण अणतार्थता छेगा । ३०७	
६८	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेदीओ पद रस्स असंखेज्जदिमागो । तारिं सेदीयं विक्खंमसुई अंगुलविदिय- बन्नामूत्तं तदियबन्नामूत्तगुणिदेण । २७७		७७	वेहदिय-सईदिय चतरिंदिया तस्सेव पञ्चत्ता अपञ्चत्ता दम्बपमायेण केवडिया, असंखेज्जा । ३१०	
६९	सात्तणसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि असंखेज्जसम्माद्वि ओपं । २८०		७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिभि-उत्सप्पि णीहि अवहिरंति कालेण । ३१२	
७०	सबक्कमारप्पहुडि आब सदार सहस्सतरकप्यवासियदेवेसु बहा सत्तमाए पुढविए केवडियं मंगो । २८०		७९	खेत्तेण वेहदिय-सईदिय-चतरिंदिय तस्सेव पञ्चत्त-अपञ्चत्तेहि पदरम वहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि मागवन्नापडिमाण अंगुलस्स संखेज्जदिमागवन्नापडिमाण अं गुलस्स असंखेज्जदिमागवन्नापडि माण । ३१३	
७१	आणद पाणद आब जवोवेज्ज- विमात्तवासियदेवेसु मिच्छाद्वि प्पहुडि आब असंखेज्जसम्माद्वि चि दम्बपमायेण केवडिया, पत्तिदो- बमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पत्तिदोबममवहिरदि अंतोसुहुत्तेण । २८१		८०	पंविदिय पंविदियपञ्चत्तपसु मि च्छाद्वाही दम्बपमायेण केवडिया, असंखेज्जा । ३१४	
७२	अणुदित आब अवराएवणिमाण वासियदेवेसु असंखेज्जसम्माद्वि दम्बपमायेण केवडिया, पत्तिदो- बमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पत्तिदोबममवहिरदि अंतोसुहुत्तेण । २८१		८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिभि उत्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३१४	
७३	सम्बहुसिद्धि विमात्तवासियदेवा द णपमायेण केवडिया, संखेज्जा । २८६		८२	खेत्तेण पंविदिय पंविदियपञ्च त्तपसु मिच्छाद्वाहीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिमागवन्ना- पडिमाण अंगुलस्स संखेज्जदि मागवन्नापडिमाण । ३१४	
७४	इंदियाचुवदेण एद्विया बालरा सुहुमा पञ्चत्ता अपञ्चत्ता दम्ब पमायेण केवडिया, अर्थता । ३५		८३	सात्तणसम्माद्विप्पहुडि आब अओ- गिकेवडि चि ओपं । ३१७	
			८४	पंविदियपञ्चत्तत्ता दम्बपमायेण केवडिया, असंखेज्जा । ३१७	
			८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिभि-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२७	पुरिसवेदेषु मिच्छाद्विद्वि दम्भ पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि रेयं ।	४१६	मूलोप ।		४२९
१२८	सासणसम्माद्विप्पहुडि जाव अणियङ्गिवाटरसांपरायपविहु उ वसमा खवा दम्भपमाणेण केव डिया, ओष ।	४१६	१२८ अकसाइसु उवसंसकसायवीटराग छदुमत्या ओष ।		४३०
१२९	महुसयवेदेषु मिच्छाद्विप्पहुडि जाव सज्जदासज्जदा चि ओष ।	४१७	१२९ स्त्रीणकसायवीटरागछदुमत्या अ- ओमिकेवली ओष ।		४३०
१३०	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अणि यङ्गिवाटरसांपरायपविहु उव समा खवा दम्भपमाणेण केव डिया, सखेज्जा ।	४१८	१३० सज्जागिकेवली ओष ।		४३१
१३१	अपगतवेदेषु तिण्ण उवसामगा दम्भपमाणेण केवडिया, पवेसण एक्को वा दो वा तिणि वा, उक्कस्सण चठवण्ण ।	४१९	१३१ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद अण्णाणीसु मिच्छाद्विद्वि सासण सम्माद्विद्वि दम्भपमाणेण केव- डिया, ओष ।		४३६
१३२	अद्व पडुव सरुज्जा ।	४२०	१३२ विमंगणाणीसु मिच्छाद्विद्वि दम्भ पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि रेयं ।		४३७
१३३	तिणि खवा अजोगिकेवली ओष ।	४२०	१३३ सासणसम्माद्वि ओष ।		४३८
१३४	सज्जागिकेवली ओष ।	४२१	१३४ आमिणिबोहियणाणि-सुदण्णाणि- ओहिणाणीसु असंज्जदसम्माद्वि प्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीद रागछदुमत्या चि ओष ।		४३९
१३५	कसायाणुवादेण कौधकमाद्व माणकमाद्व मायकमाद्व-सोमकमा- इसु मिच्छाद्विप्पहुडि जाव सज्जदासंज्जदा चि ओष ।	४२४	१३५ णवणि विसेसा, ओहिणाणीसु पमचसज्जदप्पहुडि जाव स्त्रीण कसायवीटरागछदुमत्या चि दम्भ पमाणेण केवडिया, सखेज्जा ।		४४१
१३६	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अणि- यङ्गि चि दम्भपमाणेण केव डिया, सखेज्जा ।	४२८	१३६ मणपज्जवणाणीसु पमचसंज्जद प्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीद रागछदुमत्या चि दम्भपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ।		४४१
१३७	णवरि सोमकमाद्वसु सुहुममाप- रायसुदिसज्जदा उवसमा खवा		१३७ केवत्तणाणीसु सज्जागिकेवली अजोगिकेवली ओष ।		४४२
			१३८ संज्जमाणुवादेण सज्जदेसु पमच		

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०४	सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सज्जदसम्मादा पि ओष ।	३८७	११३	असंजदसम्माद्वह्नी दम्भपमा- त्तेण केवडिया, ओष ।	१९९
१०५	पमचसंजदप्पहुडि जाव सज्जोगि केवडि पि दम्भपमात्तेण केव डिया, संखेज्जा ।	३८७	११७	वेठम्भियमिस्सकायजोगीसु मि च्छाद्वह्नी दम्भपमात्तेण केवडिया, देवार्थं संखेज्जदिमागो ।	४००
१०६	वचिजोगि असम्भमोसवचिजोगीसु मिच्छाद्वह्नी दम्भपमात्तेण कव डिया, असंखेज्जा ।	३८८	११८	सासणसम्माद्वह्नी असंजदसम्मा द्वह्नी दम्भपमात्तेण केवडिया, ओष ।	४०१
१०७	असंखेज्जासंखेज्जादि ओषप्पिणि उत्तप्पिणीहि अबहिरंति क्खलेण ।	३८९	११९	आहारकायजोगीसु पमचसंजदा दम्भपमात्तेण कवडिया, चटुवर्म्म ।	४०१
१०८	उत्तेण वचिवाणि असम्भमोस वचिजोगीसु मिच्छाद्वह्नीहि पद रमवहिरदि अगुलस्स संखेज्जदि मागयग्गपडिमाणेण ।	३८९	१२०	आहारमिस्सकायजोगीसु पमच संजदा दम्भपमात्तेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०२
१०९	सेसत्थं मणज्जागिमंगो ।	३९	१२१	कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाद्वह्नी दम्भपमात्तेण केवडिया, मूत्तेप ।	४०२
११०	कायजोगि-ओरात्थियकायजोगीसु मिच्छाद्वह्नी मूत्तेप ।	३९५	१२२	सासणसम्माद्वह्नी असंजदसम्मा द्वह्नी दम्भपमात्तेण केवडिया, ओष ।	४०३
१११	सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सज्जोगिकेवडि पि अहा मण- ज्जोमिमगा ।	३९५	१२३	सज्जोगिकेवसी दम्भपमात्तेण केव डिया, संखेज्जा ।	४०४
११२	ओरात्थियमिस्सकायजोगीसु मि च्छाद्वह्नी मूत्तेप ।	३९६	१२४	वेदाजुवादेण इत्थिवेदपमु मिच्छा द्वह्नी दम्भपमात्तेण केवडिया, देवीहि सादिरेय ।	४१३
११३	सासणसम्माद्वह्नी जाव ।	३९७	१२५	सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव स ज्जदसंजदा पि ओष ।	४१४
११४	अर्भदसम्माद्वह्नी सज्जोगिकेवसी दम्भपमात्तेण कवडिया, संखेज्जा ।	३९७	१२६	पमचसंजदप्पहुडि जाव अभिय क्किवादरसांपरायपनिट्ठ उवसमा खवा दम्भपमात्तेण केवडिया, संखेज्जा ।	४१५
११५	वेठम्भियकायजोगीसु मिच्छाद्वह्नी दम्भपमात्तेण कवडिया, देवार्थं संखेज्जदिमागूणा ।	३९८			
११६	सासणसम्माद्वह्नी सम्मामिच्छा				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दम्बपमाणेण केवडिया, प लिद्रोवमस्स अंसखेज्जदिभागो । एदेहि पलिद्रोवममवहिरिदि अतो सुहुत्थेण ।		१८०	उवसममम्माइह्हीसु अमजदस म्माइह्ही-सज्जदासज्जदा ओष ।	४७६
१७०	पमत्त अप्पमत्तसंज्जदा दम्बपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६३	१८१	पमत्तसंज्जदप्पहुडि बाव उवसत्त- कसायवीदरागल्लदुमत्था चि द दम्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४७७
१७१	अपुण्णकरणप्पहुडि जाव मज्जाणि केवलि चि ओष ।	४६५	१८२	सासणसम्माम्माइह्ही आष ।	४७७
१७२	मवियाणुवादेण मवमिद्विप्पसु मिच्छाद्विप्पहुडि जाव अजो गिकेवलि चि ओष ।	४६२	१८३	सम्मामिच्छाइह्ही ओष ।	४७७
१७३	अमवसिद्विया दम्बपमाणेण क वडिया, अण्णता ।	४७२	१८४	मिच्छाइह्ही ओष ।	४७७
१७४	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइह्हीसु अंसज्जदसम्माम्माइह्हीप्पहुडि जाव अज्जागिकेवलि चि ओष ।	४७२	१८५	सण्णिदाणुवादेण सण्णिसु मिच्छा- इह्ही दम्बपमाणेण केवडिया, देवहिं सादिरेयं ।	४८१
१७५	सुइयमम्माइह्हीसु अमजदमम्मा इह्ही ओष ।	४७४	१८६	सासणमम्माइह्हीप्पहुडि जाव स्त्री णकसायवीदरागल्लदुमत्था चि ओष ।	४८२
१७६	सज्जदासज्जदप्पहुडि जाव उवसत्त कसायवीदरागल्लदुमत्था दम्ब पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४७४	१८७	अमण्णी दम्बपमाणेण केवडिया, अण्णता ।	४८०
१७७	अउण्हं सत्ता अज्जागिकेवली ओष ।	४७५	१८८	अण्णताणताहि ओत्तपिणि उरुस- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालण ।	४८३
१७८	सज्जागिकेवली ओष ।	४७६	१८९	सत्तेण अण्णताणता लण्णा ।	४८३
१७९	वेदगमम्माइह्हीसु अंसज्जदमम्मा- इह्हीप्पहुडि जाव अप्पमत्तसज्जदा चि ओष ।	४७६	१९०	आहारणुवादेण आहारसु मि च्छाद्विप्पहुडि जाव मज्जाणि- केवलि चि आष ।	४८३
			१९१	अणाहारसु कम्मइयकसायजाणि- मंगा ।	४८४
			१९२	अज्जागिकेवली ओष ।	४८५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सम्बद्धप्यद्वि जाव अजोगिकेवति ति ओष ।	४४७	१५८	सासणसम्माप्रद्विप्यद्वि जाव खीणकमापवीदरागछदुमत्था पि ओष ।	४५४
१४९	सामप्रप-छेदेवद्वावणसुदिसब्देसु पमचसब्दप्यद्वि जाव अणि यद्विवादरसांपराप्रयपविद् उव समा यथा पि ओष ।	४४७	१५९	अचकसुदंसणीसु मिच्छाप्रद्वि प्यद्वि जाव खीणकसापवीद रागछदुमत्था पि आप ।	४५५
१५०	परिहारसुदिसब्देसु पमचापमच संज्ञदा दम्बपमाणेण केवडिया, संलेखा ।	४४९	१६०	ओद्विदसणी ओद्विप्यामिमंगा ।	४५५
१५१	सुद्धनसांपराप्रयसुदिसब्देसु सुद्ध मसांपराप्रयसुदिसंज्ञदा उवसमा यथा दम्बपमाणेण केवडिया, ओष ।	४४९	१६१	केवलदंसणी कवलणामिमगो ।	४५६
१५२	अहाकलाद्विहारसुदिसब्देसु च उत्तमं ओष ।	४५०	१६२	सेत्तापुवदेण किञ्चलेस्सिय वील्लत्तस्सिय काउलेस्सिएसु मि च्छाप्रद्विप्यद्वि जाव असंबद सम्माप्रद्वि पि ओष ।	४५९
१५३	संबदासंज्ञदा दम्बपमाणेण कव डिया, ओष ।	४५०	१६३	सेउलस्सिएसु मिच्छाप्रद्वि दम्ब पमाणेण केवडिया, वोद्विप्य देवेदि सादिरयं ।	४६१
१५४	असंबदेसु मिच्छाप्रद्विप्यद्वि जाव असंबदसम्माप्रद्वि पि दम्बपमा- णेण केवडिया, ओष ।	४५१	१६४	सासणसम्माप्रद्विप्यद्वि जाव संबदासंज्ञदा पि ओष ।	४६२
१५५	दसप्पापुवदेण चकसुदंसणीसु मिच्छाप्रद्वि दम्बपमाणेण केव डिया, असंलेखा ।	४५३	१६५	पमच-अप्यमचसंज्ञदा दम्बपमा- णेण केवडिया, संलेखा ।	४६२
१५६	असंलेखाम्मारेण्णहि ओसपि णि-उस्सपिणीहि अचहिरीसि कालम ।	४५३	१६६	पम्मलस्सिएसु मिच्छाप्रद्वि दम्ब- पमाणेण केवडिया, सण्णिपसि दियसिरिक्खजोगिणीज संलेखा दिमगो ।	४६२
१५७	रोचेण चकसुदंसणीसु मिच्छा- प्रद्वि पदरमजरिदि अंगुलस्म संलेखादिमागरग्गपडिमाण ।	४५३	१६७	सासणसम्माप्रद्विप्यद्वि जाव संबदासंज्ञदा पि ओष ।	४६३
			१६८	पमच-अप्यमचसंज्ञदा दम्बपमा- णं केवडिया, संलेखा ।	४६३
			१६९	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाप्रद्विप्य- द्वि जाव संबदासंज्ञदा पि	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दम्पपमाणेण कवडिया, प लिशोवमस्स असंखेज्जदिमागा । एददि पलिशोवममवहिरि अतो सुदुत्तण ।		१८०	उवमममम्माइहीसु अमंजदत्त म्माइहि-संजजमज्जा आप ।	४७६
१७०	पमत्त अप्पमत्तसंनदा दम्पपमा- णेण कवडिया, संखेज्जा ।	४६३	१८१	पमत्तसंजजप्पहुटि जाव उवमत्त- कप्पापवदिरागछदुमत्था चि द दम्पमाणेण कवडिया, संयुजा ।	४७७
१७१	अप्पुक्ककरणप्पहुटि जाव मज्जाणि कवलि चि ओप ।	४६५	१८२	सामणमम्माइही आप ।	४७७
१७२	मवियाणुवादेण मवमिद्विण्णु मिच्छाइहिप्पहुटि जाव अज्जो गिक्कवलि चि आप ।	४६५	१८३	सम्माभिच्छाइही ओप ।	४७७
१७३	अमवमिद्विया दम्पमाणेण क वडिया, अर्पता ।	४७२	१८४	मिच्छाइही आप ।	४७७
१७४	सम्मचाणुवादेण मम्माइहीसु असंज्जसम्माइहिप्पहुटि जाव अज्जागिक्कवलि चि आप ।	४७७	१८५	सण्णिपाणुवादेण मर्म्मसु मिच्छा- इही दम्पमाणेण कवडिया, दवदि माणिर्य ।	४८२
१७५	अदम्पमम्माइहीसु अमज्जमम्मा इही आप ।	४७८	१८६	सामणमम्माइहिप्पहुटि जाव एहि णकप्पापवदिरागछदुमत्था चि ओप ।	४८२
१७६	मज्जासज्जदप्पहुटि जाव उवमत्त कप्पापवदिरागछदुमत्था दम्प माणेण कवडिया, संखेज्जा ।	४७८	१८७	अमर्णा दम्पमाणेण कवडिया, अणता ।	४८२
१७७	चउण्हं मवा अज्जागिक्कवलि आप ।	४७८	१८८	अणताणताहि ओमणि उस्स- प्पिआदि ण अवदिगंति कान्ण ।	४८३
१७८	सुवागिक्कवलि आप ।	४७८	१८९	खवेण अणताणता एगा ।	४८३
१७९	वेत्तमम्माइहीसु अमज्जमम्मा- इहिप्पहुटि जाव अप्पमत्तसंनदा चि आप ।	४७८	१९०	आहाणुवादेण आहारण्णु मि च्छाइहिप्पहुटि जाव मज्जाणि- कवलि चि आप ।	४८३
			१९१	अगाहारण्णु कम्मदयकप्पाज्जाणि मंगा ।	४८४
			१९२	अज्जागिक्कवलि आप ।	४८५

मन्त्र संख्या	मन्त्र	पृष्ठ	मन्त्र संख्या	मन्त्र	पृष्ठ
	मन्त्रद्वयपुष्टि ज्ञान अज्ञानिनेति ति ओष ।	४४७	१५८	सासुणसम्प्राद्विपुष्टि ज्ञान रूपिकमापवीदरागछदुमन्त्रा वि आर्ष ।	४५४
१४९	मामाप्रय छदारद्वयपुष्टिसज्जदमु पमचमज्जद्वयपुष्टि ज्ञान अवि यद्विषद्वयपुष्टिपराद्वयपुष्टि उष ममा गरा वि आप ।	४४७	१५९	अचमज्जद्वयपुष्टिपुष्टि मिष्टाद्वि पुष्टि ज्ञान रूपिकमापवीद रागछदुमन्त्रा वि आर्ष ।	४५५
१५०	परिहासमुष्टिमज्जद्वयपुष्टिपमचपमच मज्जद्वय दम्पपमाणेन करणिया, मज्जद्वय ।	४४९	१६०	आहिदमणी आहिणाविमगा ।	४५५
१५१	सुदुमनापगद्वयपुष्टिमज्जद्वयपुष्टि मज्जद्वयपुष्टिमज्जद्वय उरममा गरा दम्पपमाणेन करणिया, आप ।	४४९	१६१	कवन्दमणी कवलणविमगा ।	४५६
१५२	जहास्माविहासमुष्टिमज्जद्वयपुष्टि उद्वान् आप ।	४४९	१६२	तेस्मानुवादेण विष्टास्मिय नीतस्मिय काउतस्मियसु मि ष्टाद्विपुष्टिपुष्टि ज्ञान अमज्जद्वय सम्प्राद्वि वि ओष ।	४५९
१५३	संज्जद्वयपुष्टि दम्पपमाणेन कर णिया, आर्ष ।	४४९	१६३	तेउत्तस्मियसु मिष्टाद्विपुष्टि दम्प पमाणेन करणिया, ओषमिय द्वय वि साद्विग्य ।	४६१
१५४	अमज्जद्वयपुष्टिमिष्टाद्विपुष्टिपुष्टि ज्ञान अमज्जद्वयपुष्टिमिष्टि वि दम्पपमा णन करणिया आप ।	४५१	१६४	मानपमम्प्राद्विपुष्टिपुष्टि ज्ञान मज्जद्वयपुष्टि वि ओष ।	४६२
१५५	दमज्जद्वयपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टि ज्ञान मिष्टाद्विपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टि वि आप ।	४५१	१६५	पमच पमचपमज्जद्वयपुष्टिपुष्टि णन करणिया, मज्जद्वय ।	४६२
१५६	दमज्जद्वयपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टि मिष्टाद्विपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टि वि आप ।	४५१	१६६	पमचपमचपमज्जद्वयपुष्टिपुष्टि पमाणेन करणिया, सम्प्राद्वि द्वयमिष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टिपुष्टि वि आप ।	४६२
१५७	अमज्जद्वयपुष्टिमिष्टाद्विपुष्टिपुष्टि वि आप ।	४५१	१६७	मानपमम्प्राद्विपुष्टिपुष्टि ज्ञान मज्जद्वयपुष्टि वि आर्ष ।	४६३
१५८	मामाप्रय छदारद्वयपुष्टिसज्जदमु पमचमज्जद्वयपुष्टि ज्ञान अवि यद्विषद्वयपुष्टिपराद्वयपुष्टि उष ममा गरा वि आप ।	४५३	१६८	पमच अणमणमज्जद्वयपुष्टिपुष्टि णन करणिया, मज्जद्वय ।	४६३
१५९	सुदुमनापगद्वयपुष्टिमज्जद्वयपुष्टि मज्जद्वयपुष्टिमज्जद्वय उरममा गरा दम्पपमाणेन करणिया, आप ।	४५३	१६९	सुदुमनापगद्वयपुष्टिमिष्टाद्विपुष्टि पुष्टि ज्ञान मज्जद्वयपुष्टि वि आर्ष ।	४६३

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७५	रसिधिलेखेयवद्विह	३४२		७३	सत्तसहस्रतद्विहोदि	२११	
२१	छन्दसिलेखच्छिष्य	४६		५१	सत्तावी महुता	९८ गो जी ६६३	
२७	छन्दतरसंगुधिवे	४७		७९	सत्तावी छन्दकता	४५०	
२३	आगागासपदेसे	३३		७७	साधारणमाहारी	३३२ गो जी १९२	
४३	वर्षीसमद्विदालं	९३ गो जी ६२४		१६	सिद्धा गिगोद्विवा	२६ ति प भादि	
३७	वर्षीस सोमस वसति	८७		१७	सुद्धमो य हवदि हवदि	२७ वि भा	
६१	वारस हस महुत य	११७		६३	सुद्धमो य हवदि जायदे	१३०	
१७		६०१		१८	सुद्धमं तु हवदि हवदि	२८	
३९	विसहस्रं महुतालं	८८		६४	सुद्धमं तु हवदि जायदे	१३०	
५१	वे कोदि सत्तावीदा	१००		४२	सोमसर्प वद्विहो	९१ गो जी ६२७	
७२	सत्त वद्वि मुण्य रंय	२ ६		२४	हापस्तहनाहात	४७	

३ न्यायोक्तियाँ ।

सूचना—न्यायवाक्यके पश्चात् १, ३ संख्या मागसूचक और शेष संख्याएँ पृष्ठसूचक हैं ।

माग पृष्ठ

माग पृष्ठ

१ भूमिरिव माजयकोऽग्निः ।	१ २८	१३ भूतपूर्वगतिम्यावसमाभयजात् ।	१ २६३
२ कञ्जावसाहो कारयणापत्त		१७ भूतपूर्वगति ।	१ १६६
मधुमाजिजाति ।	१, २१९	१८ भूतपूर्वगति ।	१ १२९
३ कारयकम्माशुसापी कञ्जकम् ।	१ २१८	१९ भूतपूर्वगति ।	१ २५
४ कारयकर्मस्य कार्यानुवृत्तिः ।	१ २३७	२० यथोद्देशस्तथा निर्वेधाः ।	१ १६६
५ कारयानुर्कर्म कार्यम् ।	१ २७०	२१ यथोद्देशान्नेन न जानाति ततोऽ	
६ अहा उहसो तहा निहसो ।	३, १० ३१३ ३१५	व्येनापि दानेन आपयितव्यः ।	१, ३२
७ अ पूठे मण्यवधायीय त पुत्र		२२ कथितमा भ्युत्पत्तिः ।	१ १४०
मेध मायिष्य ।	३ २७-१३०	२३ वस्तुमापयणाश्चनमासा	१ ७२ १९६
८ वर्षीकोतोन्माय ।	१, १८	पयम् ।	३ ११
९ नहि प्रमाणं प्रमाणास्तस्मैकते	१ २०४	२४ व्याचक्षणातो विशेष्यतिपत्तिः ।	३, १८
१० न हि स्वभावाः परपर्यनु		सति समये व्यभिचारे च	
योगाहः ।	१, २९६	विशेषणमपेक्षयति ।	१ १८५
११ नाममस्तर्कगोचराः ।	१, ३०४	२५ सम्बन्धमवधारितपक्षीय वया	
१२ पमायेय पमायाविरोहिणा		पुसारिणा आपण द्वोद्भव ।	३ १२०
द्वोद्भव ।	१, २१७	२६ सामान्यधोद्विवाद्य विशेष्ये	
१३ परिशेषव्याप	१, ४२१ ७	तिष्ठन्ते ।	१, १४०
१४ प्रतिपाद्यस्य भूमिरित्यर्थविषय		२७ सिद्धासिद्धाभ्यादि कथामार्गः ।	१ ३४९
निर्वयोत्पादनं ककुबधसा		२८ सेते संभवे विपदिहारे च विसे-	
कम् ।	१, ६२२	सत्यमर्थमर्थं भवति ।	१, २६२ ३३१
१५ भाविनि भूतवत् (कथारः)	१, १८१	२९ सुपरिष्कृता विषयविभुशकता ।	१, ७०

२ अवतरण गाथा सूची ।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अभ्यन्त कथा	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अभ्यन्त कथा
३४	अदुतीसदृशवा	११	गो जी ५ १	८	जामद्वयवाध्विर्य मय	११	
४८	अदुतसपसदृशवा	११	गो जी ३२२	५७	जामद्वयवाध्विर्य मय	१२३	
४९	अदुतसपसदृशवा	१७		४१	तिगद्विप-सदृश	१०	गो जी ३२५
३९	अदुतसपसदृशवा	११	गो जी ३३५	३६	तिगद्विप-सदृश	११	अनु भादि
			भादि	४५	तिगद्विप-सदृश	१४	गो जी ३२६
१२	अदुतसपसदृशवा	१७		७०	तेरस कोडी देले भाव	२५४	गो जी ३४२
५९	अदुतसपसदृशवा	१२३		३९	तेरस कोडी देले पण्णा	२५२	
१	अदुतसपसदृशवा	२	प्रवच भादि	३८	तेरस कोडी देले पण्णा	२५२	गो जी ३४२
२९	अदुतसपसदृशवा	४८		१९	जामद्वयवाध्विर्य	२९	
२४	अदुतसपसदृशवा	४६		३२	जामद्वयवाध्विर्य	१२९	
२५	अदुतसपसदृशवा	४६		३	नयोपवैध्विर्य	५	मा मी १००
१	अदुतसपसदृशवा	१२	अनु टीका	५	नयोपवैध्विर्य	१	पुन्यनु ५
३३	अदुतसपसदृशवा	३५	गो जी ५७७	३	पण्णोपसिगुमिरी	४९	
७७	अदुतसपसदृशवा	३५५		३८	पण्णोपसिगुमिरी	८८	
४४	अदुतसपसदृशवा	९४		३२	पण्णोपसिगुमिरी	३२	
४७	अदुतसपसदृशवा	९५		२	पण्णोपसिगुमिरी	२९	
४	अदुतसपसदृशवा	१	गो जी भादि	३२	पण्णोपसिगुमिरी	१३२	त्रि सा ९२
२१	अदुतसपसदृशवा	२९		२	पण्णोपसिगुमिरी	१	गो जी भादि
७१	अदुतसपसदृशवा	२५५		९	पण्णोपसिगुमिरी	१२	
४६	अदुतसपसदृशवा	९४		५८	पण्णोपसिगुमिरी	१२३	
५९	अदुतसपसदृशवा	९९		४०	पण्णोपसिगुमिरी	८८	
५९	अदुतसपसदृशवा	११		५४	पण्णोपसिगुमिरी	१००	
७८	अदुतसपसदृशवा	३५६		५५	पण्णोपसिगुमिरी	१०१	
६	अदुतसपसदृशवा	१२३		१४	पण्णोपसिगुमिरी	१७	
१३	अदुतसपसदृशवा	१७		३१	पण्णोपसिगुमिरी	१२३	
३१	अदुतसपसदृशवा	४९		७	पण्णोपसिगुमिरी	७	
३२	अदुतसपसदृशवा	४९		६	पण्णोपसिगुमिरी	३	
१५	अदुतसपसदृशवा	१८	अधीय ६, २.	७५	पण्णोपसिगुमिरी	३४८	
५	अदुतसपसदृशवा	९७		११	पण्णोपसिगुमिरी	१२	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७१	रासिभिसेसेयवद्विह	३४२		७३	सत्तसहस्रसहस्रिदेहि	२६	
२६	सहस्रिसेसच्छिन्न	४६		७४	सत्तासी अदुता	९८	मो जी ६६३
२७	सदतरसगुधिदे	४७		७५	सत्तासी छक्कता	४०	
२८	आपागासपदेसे	३३		७६	साहारणमाहारो	३३२	मो जी १९२
४३	बलीसमद्वारक	९३	मो जी ६२	७७	सिद्धा गिगोद्विषा	२६	ति प म्यादि
१७	बलीस सोलस बलारि	८७		७८	सुद्धमो य इगदि इवदि	९७	वि मा
२९	वारस इत अट्टेय प	१६७		७९	सुद्धमो य इवदि आपदे	१३०	
३७		६०१		८०	सुद्धम तु इवदि इवदि	२८	
१९	सिद्धसह अट्टपाठ	८८		८१	सुद्धम तु इवदि आपदे	१३०	
५३	ब कोहि सत्तबीला	१००		८२	सोलसय बडबील	९१	मो जी ६२७
४२	सत्त यम सुण्ण देव	२६		८३	वारणवत्तवार	४७	

३ न्यायोक्तियां ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पश्चात् १, ३ संख्या मागसूचक और शेष संख्याएं पृष्ठसूचक हैं ।

	माग पृष्ठ		माग पृष्ठ
१ अग्निवि मागबकोऽग्निः ।	१ २८	१६ मृतपूर्वगतिन्यायसमाभयपात् ।	१ २६३
२ कलकालपासी अरण्यपाण्य मनुमाधिजदि ।	१, २१९	१७ मृतपूर्वगति ।	१ १६६
३ अरण्यकमायुसारी कलकमो ।	१, २१८	१८ मृतपूर्वगति ।	१, १२९
४ कलकममस्य कार्यामुद्रुतिः ।	१ २३७	१९ मृतपूर्वगतिपाप ।	१ २१
५ अरण्यकमस्य कार्यामुद्रुतिः ।	१ २७०	२० यथोद्धारवया निर्देशा ।	१, १६१
६ जहा उद्देशो तहा पिरेलो ।	३ १० ३१३ ३११	२१ यथोद्धारवया निर्देशा ।	१ ३२
७ अ वृद्ध अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र		२२ यथोद्धारवया निर्देशा ।	१ ३२
मेय मायियव ।	३ २७ १३०	२३ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
८ अग्निवि मागबकोऽग्निः ।	१, १८०	२४ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
९ अग्निवि मागबकोऽग्निः ।	१ २०४	२५ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१० अ वि स्वमाभाः परपर्यनु	१ २९६	२६ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
योयाहा ।	१, ३०४	२७ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
११ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१, २१७	२८ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१२ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१, ४२ १५७	२९ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१३ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१, २१७	३० अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१४ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१, २१७	३१ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१५ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ २२२	३२ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२
१६ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१, १८१	३३ अण्यव्यवर्णीयं तं पुत्र	१ ३२

२ अवतरण-गाथा सूची ।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
१४	मनुषीसदृशवा	११	गो जी ५ १	८	जाम हुनवा बुधियं	मध	११
४८	मोह्य सपसहस्ता जगु	११	गो जी १२९	५७	जाम हुनवा बुधियं	मध	१२३
४९	मोह्य सपसहस्ता जग	९७		४१	तिगहिय-सब जलवड्डी	९	गो जी १२५
१५	मनुस्त जलससहस य	११	गो जी टीका	११	तिगहिय सहास्ता सत य	११	मनु भादि
			भादि	४५	तिसहिं बरति बेई	९४	गो जी १२६
१२	अवगयधिवारजहु	१७		७०	तेरह कोडी बेले वाव	२५४	गो जी १४२
५९	अवगयधिवारजहु	१२१		१९	तेरह कोडी बेले पन्था	२५२	
१	अरसमरुचमार्ग	२	प्रवच भादि	१८	तेरह कोडी बेले वाव	१५२	गो जी १४२
१९	अवगयधिवारजगुनिरो	४८		१९	धम्माधम्मापासा	२९	
२४	अवहारवट्टिका	४१		१२	धम्माधम्मा छोपा	१२९	
२५	अवहारविसेसेक य	४१		१	नयापववैछान्तार्ग	५	भा मी १ ७
१०	आममो आप्तवचन	१२	मनु टीका	५	आनारमतामप्रजहत्तदेक	१	मुकल्यड्ड ५
११	आवलि असंखसमया	११	गो जी ५७४	१	एककेवपसिगुनिरो	४९	
७७	आवलिमय बागो	१५१		१८	एकही व सहस्ता	८८	
४४	असहस्रवपके	९४		१२	एतेय कोद्वेज व	१२	
४७	एककेकगुणमूजे	९१		२०	एयो तिहा विहसो	२९	
४	एवविमिमे के	१	गो जी भादि	१५	एहो सावर-सुर	११२	त्रि. सा ९२
२१	आलो तिहा विहसो	२९		२	एहरी अल व छापा	१	गो जी भादि
७१	गपजहुनवकसाया	२२५		९	पूर्वापरविहहावे	१२	
४१	असहस्रतिगिसय	९४		१८		१२३	
५२	असहस्र छप्प सया	९९		४०	एकसय बारसुसर	८८	
५१	असहस्र छप्पसा	१ १		५४	एकव सयसहस्ता.. जग	१००	
७८	अमसेहीप बागो	१५१		५५	एकेव सयसहस्ता से	१ १	
१०	अत्य जहा आयेरओ	१२१		१४	प्रमाणनयनिसेरै	१७	
११	अत्य बहू आयेरओ	१७		११		१२१	
११	अे अविपा अयहारे	४९		७	बहिरयो बहुरीहि	७	
११	अे ऊना अयहारे	४९		१	बहुरीहाप्पबीमाणे	१	
१५	आन प्रमाणमित्पहु	१८	छपीय १ २.	७१	बीजे ओपीमूरे	१४८	
५०	अव केव सपसहस्ता	७७		११	पगाना जेपाडा मोहाडा	१२	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७१	राशिबिसेसेषषड्वि	३४२		७३	सप्तसहस्रसहस्रविधि	२१	
२६	अक्षविसेसविंशत्यं	४६		५१	सत्ताशी अमुता	९८	गो जी १६३
२७	अक्षतरसंगुणिके	४७		७९	सत्ताशी छन्दता	४०	
२८	आमामासपरेष	३३		७१	साधारणमाहारो	३३२	गो जी १९२
४३	वर्षासमष्ट्यासं	२३	गो जी ६२	१६	सिखा विगोदश्विवा	२६	ति प भादि
१७	वर्षासं सौख्यस अठारि	८७		१७	सुहृमो य हवति हवति	२७	वि मा
१६	वारस वस अष्टस य	१३७		६३	सुहृमो य हवति आपदे	१३०	
१७		१०१		१८	सुहृमं तु हवति हवति	२८	
११	विषहरस अष्टयासं	८		६४	सुहृमं तु हवति आपदे	१३०	
५३	वे वेष्टि सप्तशीला	१००		४२	साधयय अठशीसं	९१	गो जी १२७
५२	सप्त यय सुगज पंख	२१६		२८	हापस्तहानाहा	४७	

३ न्यायोक्तियाँ ।

सूचना—न्यायवाक्यके पश्चात् १, १ सन्या मागसूचक और शेष सन्याप पृष्ठसूचक हैं ।

माग पृष्ठ	माग पृष्ठ
१ अग्निरेव मायवकोऽग्निः । १ २८	१६ मृतपूर्वगतिभ्यामपसमाश्रयमात् । १ २६३
२ कस्यवापचाक्षो कारमवापच मनुमापिच्छादि । १ २१९	१७ मृतपूर्वगति । १ १६६
३ अरयन्मायुमारी कञ्जकमो । १ २१८	१८ मृतपुण्यगः । १ १२९
४ अरयधर्मस्य कार्यानुवृत्तिः । १ २३७	१९ मृतपुण्यप्राप्य । १ २५
५ अरयानुर्कर्म कार्यम् । १ २७०	२० यथोद्देशादतया निर्देशः । १ १६१
६ अहा अहो तथा निर्देशः । १ १०-३१३ ३१	२१ यथेकहाप्तेन न जानाति ततोऽग्नेनापि शब्देन आपयितव्यः । १ १६२
७ अष्ट धर्मवर्णनीय तं पुनरग्नेव मापियतः । १ २७ १३०	२२ कश्चित्कथा व्युत्पत्तिः । १ १४०
८ अग्नीकोतोत्पत्त्या । १ १८०	२३ अन्तर्मागप्राप्तकालमात्रा पश्य । १ ७२ १९५
९ अग्नि प्रमाण प्रमाणाभ्यन्तरमवेक्षते । १ २०४	२४ व्यावधानतो विशेषप्रतिपत्तिः । १ १८
१० अग्नि स्वभावाः परपर्यन्तं धार्याः । १ २९६	सति स्वयमेव अपिचारो न विशेषप्रमाणव्यवृत्तिः । १ १८१
११ आगस्त्यकृतोत्पत्तिः । १ ३०४	२५ सत्यकामकश्चिद्विषयार्थं यथा पुस्तारिणा आपय्य होतव्यः । १ १२०
१२ पमापेय पमाणाविरोहिणा होतव्यः । १ २१७	२६ सामान्यबोधनाय विशेषेण तिष्ठन्ते । १ १४०
१३ विशेषेणमाय । १ ४२ १५७	२७ सिद्धातिप्रामाण्यवि कथामार्गाः । १ १४२
१४ अनिपाद्यम्य बुभुक्षितसार्थविषय निर्देशाभावेन नक्तृयवसायम् । १ २२२	२८ सतो संगमे विद्यद्विचारो न विदेशमत्यन्तं भवति । १ ०६० ३३१
१५ नाभिनि मृतवत् (अपचारः) । १ १८१	२९ सुपरिपक्वा द्विपयविमुद्रका । १ ७०

२ अवतरण

क्रम संख्या	गद्या	पृष्ठ संख्या
१४	भट्टजीसखसबा	११ गो जी
४८	भट्टज सपसहस्ता भट्ट	११ गो जी
४९	भट्टज सपसहस्ता बब	१७
१५	भट्टस भजसससस य	११ गो जी व्यादि
१२	भजपयविचारभट्ट	१७
५९	भजपयविचारभट्ट	१२१
१	भरसमकबमार्ग	२ प्रथम
२९	भजपयभरसिगुमिश्री	४८
५४	भवहारभट्टिका	४३
२५	भवहारभिसेसेब य	४१
१०	भयमो भ्रातृबचन	१२ अनु
११	भयमो भसकसमया	१५ गो
७७	भयमो भसो	१५१
४४	भसरसहस्रमण्ड	९४
४७	भककेरुगुबभूजे	९१
४	भबभिसिमि से	३ गो जी
२१	भभो विहा विहलो	२९
७१	भयमभयभक्तसया	२५५
४१	भरससपतिमिभ सय	९४
५२	भरसस सय	९९
५१	भरसस सय	११
७८	भगसेहीय भयो	१५१
१	भरस भहा भयोभो	१२१
११	भरस भहा भयोभो	१७
११	भे भविषा भवहारे	४९
१२	भे भहा भवहारे	४९
१५	भाल भयमभिलग	१८ खयी
५०	भय भेब सपसहस्ता	९७

देवीभ्यो संक्षेपगुण्यभ्यो । पश्चिद्विपतिरिन्नाजोपिणीभ्यो संक्षेपगुण्यभ्यो । बाण
बैतवेवा संक्षेपगुण्यभ्यो । देवीभ्यो संक्षेपगुण्यभ्यो । जोरसिपदेवा संक्षेपगुण्यभ्यो ।
देवीभ्यो संक्षेपगुण्यभ्यो* सि एवमहादो गुहावधसुतादो जाणिग्गदे अहा इयाम्
संक्षेपगुण्यभागा देवीभ्यो ह्येति ।

३ ४१५

३ २७९

४ गुहावधे वि मण्यघादण्णयिक्खमसूर्येण पाणोत्तमादो वा ।
१ गुहावधुवसंहारजीवद्वामणस्त मिच्छाहट्ठिचिन्मसूर्येण सामण्यविन्म
सुचिसमायत्तपियेहा । एवं गुहावधमिह बुत्तसम्भमवहारकात्ता जीवद्वामे
साधितेया वत्तम्मा ।

३ २७९

३ अवसेनिदमणुसरासिपकवणादो बुत्तं गुहावधमिह भागछन्नादो एगकपस्त
मवण्ययम् ।

३ २४९

७ सपहि गुहावधेण सामण्येण जीवपमायपकवण्य जाभो विन्मसूर्यो
××× हदि एसा गुहावधे ××× गुहावधे उत्ता ××× गुहावधे बुत्ता ××× ।
उत्ता एय्य बुत्तायिन्मसूर्येहि कविपाहि गुहावधुवत्तविन्मसूर्येहि वा मधि
पाहि जोरम्वमिदि शोदगो मण्यि । एय्य परिहाये बुत्तवद । जीवद्वामणुवत्तविन्म-
सूर्येण संपुण्णामो गुहावधमिह बुत्तविन्मसूर्यो साधियामो ।

३ २७८

८ गुहावधमिह बुत्तविन्मसूर्यो संपुण्णामो किण्य ह्येति ! ××× अहा
एय्य बुत्तविन्मसूर्यो वेत्तम्मा गुहावधमिह बुत्तविन्मसूर्यो संपुण्णामो ।

३ २७

५ जीवद्वाम

१ जीवद्वाममिच्छाहट्ठिचिन्मसूर्येण वि गुहावधसामण्ययिक्खमसूर्ये
पत्तेय समानो ।

३ २७९

२ एय्य पुण्ण जीवद्वाममिह मिच्छत्तवित्तेसिद्वीवपमायपकवणे वीरमाणे
कवाहियतेरसगुणद्वाममेसेण अवण्ययत्तमिणा होवन्ममिदि ।

३ २८०

३ एय्य वि जीवद्वामे ×× बुत्ताभ्यो ।

३ २८८

६ तत्त्वार्थमाय्य

१ उक्तं च तत्त्वार्थमाय्ये—उपपादो अम्म प्रयोजनमेपां त इमे भीषपादिकाः ।

३ १०३

७ तत्त्वार्थम्व

१ वनस्पत्यन्तानामेवम् इति तत्त्वार्थमाय्य ।

३ २३९

२ इमिपिपीलिङ्गाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकपुञ्जामि इति मस्यात्तरार्थमाय्य ।

३ २५८

८ तिलोपपण्याची

१ गुण्य-गुण्यो बुवगो गिरतये तिरियसोमे सि तिलोपपण्यासिसुतादो ।

३ ३३

२ जोरसिपमताहारसुतादो अहावधविपमायपकवण्यपतिसोपपण्यासिसुतादो च ।

३ ३६

४ अन्योल्लेख ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पाबहुग सुच

- १ 'अवसमसम्माहू' योवा । अवसमसम्माहू असंखेगुणा । वेवसमसम्माहू असंखेगुणा सि अप्पाबहुगसुचाहो पम्पह । ३ ३८
- २ तेहियमपगुत्तरासीहो अउरिहियरासी बिसेसहीणा सि बुत्तमप्पाबहुग सुचाहो । ××× एव पि अप्पाबहुगसुचाहो खेव बम्पे । ३ ३२१
- ३ सम्पत्तोवा अबुसयवेहमसंखसम्माहूओ । इतिववहमसंखसम्माहूओ मसखेगुणा । पुरिसवेहमसंखसम्माहूओ असंखेगुणा इहि अप्पाबहुग सुचाहो अवसमस योवत्तय अविज्जे । ३ २३१
- ४ मज्झिमा अप्पाबहुगसुत्तेय सह बिरोदाहो । ३ २७३

२ कमायपाहुड, पाहुडसुच

- १ कसात्तपाहुडवपसो पुव महुवसाएसु जीयेसु पच्छ अत्तोसुत्त रत्तुय खोक्कस कम्मपिनि अविज्जति सि । १ २१७
- २ अवरिपकहियार्व ×× कसायपाहुडार्ण । १ २२१
- ३ मज्झिमा पच्छयो व मिच्छसं इहि जनेय पाहुडसुत्तेय सह बिरोदाहो । २ १९९

३ काळभूत (कालानुयोग)

- १ काळसूत्रेण सह बिरोधा किञ्च मनेवेति अथ तत्र क्षयोपशमस्य प्राधान्यात् । १ १४२
- २ यो पद्मो पुबिहसज्जपसीओ सांत्तपमो इवति । अथ एवं काळापिमोमे पदासि पिट्ठरत्तुवर्कमाहो । ३ ४४८

४ सुवार्थ

- १ पबिहियसिरिक्कओभिणीहिता बाणवत्तएवेवा संखेगुणा तत्तेव देवीओ संखेगुणामो पम्पहाहो सुवार्थमसुचाहो जायिज्जे । ३ २३१
- २ मज्झिमार्ण मज्झिमाहि क्वं पत्तिवत्तयहि सेहो अवहिरवि अंगुळवम्पदूळ तत्तिपवम्पमसुगुबिणेण इहि सुवार्थमसुचाहो । ३ २४९
- ३ ईसायकप्पवाधिपदेवाणमुवति तम्हि खेव देवीओ संखेगुणामो । तहो खेहम्मकप्पवाधिपदेवा संखेगुणा । तम्हि खेव देवीओ संखेगुणामो । पद्दमाय पुव्वीय नेट्ठया अवधिगुणा । मवपवाधिपदेवा असंखेगुणा ।

१२ विवाहपण्यति

१ सोमो यावद्विद्विषो ति विवाहपण्यतीवयणादो ।

१ १५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाश्वेप्रविधान

१ ओ मच्छो ओयणसहसिसो सयभूरमणसमुहस्त बाहिरित्तप तडे वेयण
समुग्गापण समुहदो काठसेहिसपाप छग्गो ति परेण वेयणासुत्तेण सह विटोहो १ १७

२ तत्तुत्तोऽयसीयत्त इति वेदनाश्वेप्रविधानसुत्तात् । तद्यथा । १ २१

३ य, बाहरेहियमोगाहणादो सुहुमेहियमोगाहणाप वेदणत्तेसविहाणादो
बहुत्तोवत्तमा । १ २३०

४ सुहुमेहियमोगाहणादो बाहरेहियमोगाहणाप वेदणत्तेसविहाणादुत्तादो
योपत्तुवत्तमा । १ २३१

१४ सम्मतिस्त्र

१ पामं ठवणा वृषिप ति पस वप्पट्टियस्त पिक्खेयो ।

२ मावो तु पग्गयट्टियपरुयणा पस परमत्तो ।

३ मजेव सम्मत्तुत्तेण सह कपमिद् वक्कामं य विहरहे । १ २१

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काळम् × × × सोळत्त पयशीभो ज्ञेयेहि । तदो भंतोमुहुत्त गतुण पद्य
पक्काणापद्यक्काणावरणकोप-भाण माया-भोमे मक्कमेण ज्ञेयेहि । एसो सत्तकम्म १ २१७

२ पाहुडडयत्तो

३ भारियकट्टियाण संतकम्म-कसावपाहुडायं १ २२१

१६ मंतमुत्त (परुयणा)

१ मपरत्तकाले संक्षिप्तियाणमत्थितपहुत्तापयसत्तुत्तईसणादो १ २८

९ परियम्म

१ अग्निं अग्निं भणतापतयं मग्निगच्छति तन्निह तन्निह अन्नहव्यमणुजस्समन्ता- १ १९
न्तस्तेष्वेव गार्हपत्यं इति परियम्मवचनात् ।

२ अन्नहव्यमणुजान्तं वणिगच्छमात्रे अन्नहव्यमणुजान्तं तस्स हेतुमवममणुजान्तेतो १ २४
इति भवतगुणवमणुजान्ति यंतुण सण्णजीवरसिबमसज्जाया अप्यग्निं' ति
परिबस्मे जुहो ।

३ अ वा तद्विषयारवणिगत्तं वणिगत्तं रासिबमसज्जाया हेतुमवममणुजान्तेतो १ २४
इति परियम्मवतन्तं वण्तगुणवमणुजान्ति यंतुणप्यज्जायो ।

४ अन्तापतयसिषय अन्नहव्यमणुजस्समन्तापतयेव गुणवारेण भ्रमहारेण १ २५
वि होष्यं इति परियम्मवचनात् ।

५ अतिपाणि इति सामरकवाणि अंतुषीपठेयवाणि अ इति पाणि' ति परि १ ३१
यम्मसुत्तय सह विद्वद्वा ।

६ अंतं तं गण्वातं खेगच्छयं त परियमे जुहो । १ २९

७ 'अग्निं अग्निं अंतं खेगच्छयं मग्निगच्छति तन्निह तन्निह अन्नहव्यमणु- १ ३२
जस्समन्तं खेगच्छयं तस्स गार्हपत्यं' इति परियम्मवचनात् ।

८ 'अनुकृतं वणिगच्छमात्रे वणिगच्छमात्रे अंतं खेगच्छति वमणुजान्ति यंतुण सोह १ ३४
म्रीसापतिविक्रमसूर्यं अप्यग्निं । सा सह वणिगा येरपविक्कमसूर्यं इति । सा
सर्ग वणिगा मवयवासिपविक्कमसूर्यं इति । सा सार्ग वणिगा मयंपुजो इति
ति परियम्मवचनात् ।

९ पद्मसं अन्नहारकालपकवपगाहासुत्तयो वा परियम्मवमणुजान्ते वा अग्निज्जे । १ २०

१० परियम्मो अंतं खेगच्छायो अंतं खेगच्छायो खेगच्छायो वमणमवमणुजान्ति १ २१
अ पद्मसुत्तस्स वडेण परियम्मवमणुजान्ते ।

११ परियम्मवमणुजान्ते । १ ३३

१२ परियम्मवमणुजान्ते । १ ३४

१३ अ वा परियम्मो सह विरोहो तस्स तदुद्देशयगुणवारे वाचारात् । १ ३५

१४ अ परियम्मो वणिगच्छति तस्स तदुद्देशयगुणवारे वणिगच्छति अनेति १ ३६
वचनात् ।

१० पिंडिया

उत्त वा पिंडिया—

१ हेस्ता वा वृत्त मार्गं वर्मं ओक्कम्मिस्सयं वर्मं ।

अथरत भावहेस्ता परिणामो वपयो ओ ओ ॥ २ ७८

११ वर्गजासुत्र

१ वयमेतद्वचमप्येते वर्गजासुत्रान् । किं तद्वर्गजासुत्रमिति चेदुच्यते १ २९

१२ वियाहपणति

१ सोगो पादपद्विद्वो ति वियाहपणतीषयणादो ।

३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनासंश्रविधान

१ ओ मच्छो ओयणसहस्सिभो सयमूरयणसमुदस्स बाहिरिस्स सदे वेयण समुग्गापण समुद्वो कउओरिसयाप मग्गो ति पदेय वेयणासुत्तेण सह विरोहो

३ ३७

२ तत्तुतोऽवसीयत्त इति वेद्वेदनासंश्रविधानसूत्रान् । तद्यथा ।

१ २१

३ य बादरेरदियभोगाहणादो सुद्धमेरदियभोगाहणाप वेयणत्तेसपिहाणत्तो बहुतोपलभा ।

३ ३३०

४ सुद्धमेरदियभोगाहणादो बादरेरदियभोगाहणाप वेयणत्तेसपिहाणत्तुत्तादो योयत्तुपलभा ।

३ ३३१

१४ समनिश्रुत

१ याम ठयणा दविय नि एस दध्यद्वियस्स निक्खेयो ।

२ भावो तु पउज्जद्वियपउयणा एस परमत्थो ।

३ भवेण सउमइसुत्तेण सह कथमिद् वपन्नात्तं ण विउउदे ?

१ ११

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काळण × × × साहस पयरीभो नवेदि । तरो भतोसुद्धं वत्तुण पय फलाजापयक्कनाथायरणकोध-भाण माया-नोमे मक्कमण नवेदि । एवो सनकम्म

१ २१७

२ पाहुडउयसो

३ माइरियक्कहियाण सनकम्म-वसायपाहुडाणे

१ २२१

१६ संतमुत्त (पउयणा)

१ मपउज्जत्तकास्ते वीचिदियपाणाणमत्थियत्तपुप्पापणमंगसुत्तईसणादो

२ ६ ८

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द प्रथमे अनेकवार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दो पृष्ठक ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		आग्नेशिक	३
अग्नीवद्भय	२	आग्नेशिकान्त	१२४
अतीतप्रत्य	२९	आग्नेशिकसंस्थात	१५, १६
अधर्मद्वय	३	अरुपी अग्नीवद्भय	२, ३
अपस्तनविकल्प	५२, ७४	अर्थप्रेम्	२१
अभिप्राय	३९	अर्थप्रेम्प्राकाश	३३५
अपस्तनविरक्षण	११५, १७९	अर्थपुत्रकपरिवर्तनकाळ	२६, २९७
अनाप्त	११, १३, १५	अभ्यवहृत्य	११४, २०८
अनाप्तगुण	२१७, २३८	अवसर्पिणी	१८
अनाप्तगुणहीन	२२, २९	अवहार	४६, ४७, ४८
अनाप्तान्त	१८, १९	अवहारकाळ	१६५, १६७
अनाप्तप्रदेशिक	३	अवहारकाळप्रक्षेपशाला	११५, १६६, ७७
असंख्येयप्रदेशिक	२	अवहारकाळशाला	१६५
अनन्तिप्रमाण	११, ३२	अवहारविशेष	४६
अनामत (अन्त)	२९	अवहारार्थ	८७
अनागतप्रत्य	२९	अप्यपीमावसमाप्त	७
अनुगम	८	अप्यकपपारा (अन्धपारा)	५७
अनुमुक्ति	१७, ७०	असंख्यात	१२१
अन्वेष्यगुणकारणाकाश	३३४	असंख्यातासंख्यात	१२७
अन्वेष्यगुणमाप्त	२०, ११५, १९९	असंख्येयगुण	१८, १८
अपवपन (वपि)	४८	असंख्येयगुणहीन	२१
अपवप	४९	असंख्येयप्रदेशिक	३८
अपवर्पन	३३१	असंख्येयमात्र	३३, ३८
अपवाह्यमाप्त	९२	आ	
अपहत	४९	आचारप्रवृत्ति	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	कालद्रव्य	३
आगमद्रव्यान्वय	१२	कालमात्रप्रमाण	३०
आगमद्रव्यासंख्यात	१२३	कृतयुगाराशि	२४९
आगममात्रान्वय	१२३	क्षेत्रमात्रप्रमाण	३९
आगममात्रासंख्यात	१२५	कोटाकोटी	२११
आदि (घन)	०१ ९३ ९४	ख	
आदेश	१, १०	खडित	१९, ४१, ७१
आप्त	१२	ग	
आयाम	१०९, १०, १४५	गणनामन्त्र	१५, १८
आवर्तिका	३ ३७	गणनासरपात	१४४, १२६
		गृहीत	५४ ५७
इच्छा (राशि)	१८७ १९० १९१	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
		गृहीतगृहीत	५४, ५९
उच्छ्रुत	३५, ६३, ६७	घ	
उत्तर (घन)	९१ ०३, ९४	घनपक्ष	८० ८१
उत्तरपट्टिपत्ती	९४ ९९	घर्मागुल	१३२, १३९
उत्सर्पिणी	१८	घनाघनधारा	५३ ५८
उपरिमपग	२१, २२, ५२	घ	
उपरिमधिकार	५४ ७७	चतुष्कोट	७८
उपरिमधिकरण	१६ १७०	छ	
उपपादमन्त्र	१२	छद्मद्रव्यप्रसिद्धराशि	१०, ६६, १२९
उपवासंख्यात	१५	ज	
		जगत्प्रसर	१३२, १४२
एकानमन्त्र	१३	जघन्य अनन्तानन्त्र	२१
एकासंख्यात	१२५	जघन्य परीक्षानन्त्र	२१
		जगत्प्रणी	१३ १४२, १७७
आ		जाति	२५०
ओपनिर्देश	१ ९	जातिस्मरण	११७
ओज (राशि)	२४०	जिघ्रस्य	२
		जघ्नीय	
कमघाटपसमास	७	जायक-गरीयद्रव्यान्वय	१३
कलिओजराशि	२४९	जायक-गरीयद्रव्यासंख्यात	१२३
कल्पकाम	१३१ १५०	न	
कारण	४३ ७२	तपुद्रव्यमाम	७

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

ध्वना— जो शब्द यहाँ अनेकवार आये हैं उनसे प्रायः प्रथम एक दा पृष्ठक ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अप्रदेशिक	३
अजीवद्रव्य	२	अप्रदेशिकान्त	१२४
अतीतप्रत्यय	२९	अप्रदेशिकसंभ्यात	१ १६
अधर्मद्रव्य	३	अकपी अजीवद्रव्य	२, ३
अद्यस्तवधिक्य	५२, ७४	अद्यच्छेद	७१
अधिगम	३९	अर्थच्छेदशब्दाद्य	३३५
अद्यस्तनविरक्षण	१३५, १७९	अर्थपुङ्गवपरिवर्तनशक्त	२६, २६७
अनन्त	११, १२, १५	अन्यवृत्त्य	११४, २०८
अनन्तगुण	२१७, २६८	अवसर्पिणी	१८
अनन्तगुणहीन	२३ २९	अवहार	४३ ४७ ४८
अनन्तावन्त	१८, १९	अवहारकाल	१६४, १६७
अनन्तप्रदेशिक	३	अवहारकालमोपगम्य	१६५, १६६, १७१
असंख्येयप्रदेशिक	२	अवहारकालशब्दाद्य	१६५
अनन्तिप्रत्यय	३१ ३२	अवहारविशेष	४६
अव्यय (शब्द)	२९	अवहारार्थ	८७
अव्ययप्रत्यय	२९	अव्ययीभावसमाप्त	७
अनुगम	८	अष्टरूपवारा (यन्त्रवारा)	५७
अन्तर्गुह्य	३७, ७०	असंख्यात	१२१
अन्योन्यव्यवहारशब्दाद्य	३३४	असंख्यातार्थक्यात	१२७
अन्योन्याभ्यास	२० ११५, १२९	असंख्येयगुण	२१, ३८
अपमन्त्र (रक्षि)	४८	असंख्येयगुणहीन	२३
अपभ्रंश	४९	असंख्येयप्रदेशिक	३८
अपवर्णित	३३१	असंख्येयमात्र	३३ ३८
अपवाह्यमात्र	९२		
अपहत	४९	आ	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	काष्ठद्रव्य	३
आगमद्रव्यात्मन्	१२	काष्ठमात्रप्रमाण	३०
आगमद्रव्यासक्यात्	१२३	कृतयुग्मपाति	२४९
आगममात्रात्मन्	१२३	क्षेत्रमात्रप्रमाण	३९
आगममात्रासक्यात्	१२५	कोटाकोटी	२५५
आदि (घन)	९१ ९३ ९४	ख	
आदेश	१ १०	खडित	३०, ४१, ७१
आप्त	१२	ग	
आपाम	१०९ ८०, २४५	गणनात्मन्	१५, १८
आपत्ति	३, ६७	गणनासक्यात्	१४४ १२३
इ		गृहीत	५४ ५७
इच्छा (राशि)	१८७ १९० १९१	गृहीतशुभाकार	५४, ६१
उ		गृहीतगृहीत	५४ ५९
उच्चमूल	३५ ६३, ९७	घ	
उत्तर (घन)	९१ ९३, ९४	घनपत्र	८० ८१
उत्तरपश्चिमी	९४ ९९	घनांशुल	१३२, १३९
उत्तरपिण्डी	१८	घनाघनपात्र	५३, ५८
उपरिमवर्ग	२१ २२, ५२	घ	
उपरिमविकल्प	५४ ७७	घनपत्रेष्ट	७८
उपरिमविरसन	१३ १७	छ	
उपयानन्त	१६	छद्मद्रव्यप्रसिद्धपाति	१०, ६६, १२९
उपयानसक्यात्	१६	ज	
उ		जगत्प्रसर	१३२, १४२
एकानन्त	१३	जगत्प्रत्यक्षमन्तानन्त	२१
एकसक्यात्	१६	जगत्प्रत्यक्षपरिमाणन्त	२१
ओ		जगत्प्रत्यक्षी	१३ १४२, १७७
ओषधिर्युक्त	१ ९	जाति	२५०
ओष (राशि)	२४०	जातिस्मरण	१५७
क		जीवद्रव्य	२
कम्पारपसमास	७	ज्योतिष	
कस्मिन्नोपराशि	२४०	जायकारिद्रव्यात्मन्	१३
कल्पना	१३१ ३१०	जायकारिद्रव्यात्मक्यात्	१३३
कारण	४३ ७२	न	
		तत्पुष्पमामा	७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
तद्वपतिरिक्तकमान्त	१६	मिगोद्वीव	३५७
तद्वपतिरिक्तकमासंख्यात	१२४	मिक्षेप	१७
तद्वपतिरिक्तद्रव्यानन्त	१५	मिराकि	५१ ७३
तद्वपतिरिक्तद्रव्यासंख्यात	१२४	मिर्वेश	१ ८ ९
तद्वपतिरिक्तनोर्कमान्त	१५	नोभागम	१३ १२३
तद्वपतिरिक्तनोर्कमासंख्यात	१२४	नोभागमद्रव्यानन्त	१३
तेजोञ्जरति	७४९	नोभाषमद्रव्यासंख्यात	१२३
त्रिकण्डेष्ट	७८	नोभागमभाषानन्त	१३
त्रैपायिक	१ ३ १	नोभागमभाषासंख्यात	१२५
		न्यास	१८
ट		प	
दक्षिण्यनिपति	१४ ८	परस्वान (मस्त्वद्भुत्व)	२०८
द्विजस	३७	पर्याप्त	३३१
द्वेय	२	परिह्राणि (कप)	१८७
द्रव्य	२५ ३	परितानन्त	१८
द्रव्यप्रमाण	१	पर्योपम	६३ १३२
द्रव्यप्रमाणानुपम	१ ८	पुङ्गवद्रव्य	३
द्रव्यमात्रप्रमाण	३९	पूर्वफल	४९
द्रव्यानन्त	१२	पृथक्त्व	८९
द्रव्यानुपयोग	१	पृथिवीकायिक	३३०
द्रव्यासंख्यात	१२३	पञ्चण्डेष्ट	७८
द्विगुणाधिकरण	७७ ८१ ११८	प्रक्षेप	४८ ४९ १८७
द्विकपधारा	५२	प्रक्षेपराशि	४९
द्विगुणमात्र	७	प्रक्षेपद्विभाषा	१५९
द्विगुणमात्र	७	प्रक्षेप	९४
ध		प्रक्षेपधर्म	
धर्मद्रव्य	३	प्रक्षेपद्रव्य	७८ ७९ ८०
धुवराशि	४१	प्रक्षेपधर्म	३३१, ३३३
न		प्रमाण	४ १८
नय	१८	प्रमाण (परिमाण)	४ ४२ ७२
नामानन्त	११	प्रमाण (राशि)	१८७ १९४
नामानसंख्यात	१२३	प्रमाणमान (प्रमाणमान)	९९
नामिजा	३२	प्रमाण	६३
नामी	३३	प्रमाण (राशि)	१८७ १९०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब		सम्प्रभयहार	४६
बहुमीहिसमास	७	सम्प्रविशेष	४६
बाहर	३३० ३३१	सम्प्रान्तर	४७
बाह्यनिगोष्ठप्रतिष्ठित	३४८	लोक	३३, ३३२
बाहरपुग्मराशि	२४९	लोकप्रतर	३३३
		लोकप्रदेशपरिमाण	३
म			
भज्यमानराशि	४७	व	
भक्ष्यामस्त	१४	वनस्पतिक्रयिक	३५७
भक्ष्यासक्त्यात	१२४	वर्गमूळ	१३३ १३४
भागलम्भ	३८, ३९	वर्गशाकाका	२१, ३३, ३४
भागहार	३९, ४८	वर्गस्थान	१०
भाषाभाष	१०१ २०७	वर्गितसंवर्गित	३३५
भाषित	३९, ४१	वर्गितसंवर्गितराशि	१९
भाष्यशेष	४७	वर्तमानप्रत्यय	२०
भाष्यमाध	३२, ३९	वस्तु	६
भक्ष्यामस्त	१३	बाह्यल	२५५
भिषगुहृत	३३ ३७	विकल्प	२, ७४
भंग	२०२, २०३	विरक्षण	१९
		विरसित	४० ४२
म		विरक्रमपूर्वा	१३६, १३३ १३८
मानुषक्षेत्र	२५१	विस्तारामस्त	१६
मुक्त	३३	विस्तारासंख्यात	१२५
		वृत्ति (रूप)	४६ १८७
य			
पुष्पामस्त	१८	य	
पुग्म (राशि)	२४०		
र		दाताका	३१
रज्जु	३३	दाताक्षराशि	३३५, ३३६
राशि	२४९	दादयतामस्त	१५
राशिचिह्न	३४२	दादयतासंख्यात	१२४
रूपीमन्त्रीबद्ध	२	धेयी	३३ १४३
ल		य	
लप	३५	सम्यकरथ	१०७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
समास	१	संख्या	७
समास (जोड़)	२ ३	संख्यात	२३७
सर्वपरस्थान	११४ २ ८	संख्यात	५ १
सर्वात्म्य	१६	संघटि	८७ १९७
सर्वासंख्यात	१२५	स्वस्थान व्यस्य हस्त	११४ २ ८
सागर	१३२	स्थापमानम्	११
साधारणशरीर	१३३	स्थापनासंख्यात	१३३
सूत्र	१३१	स्तोक	३१
सूर्यगुण	१३५ १३५	हार	४७
संस्कृतम्	१३, १३	हायम्तर	४७

६ मूढविद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूढविद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठसुद्धि की दृष्टिसे विद्येयता रखते हैं
अतएव प्रायः हैं ।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
१	२	सपञ्चत्यवागुर्ल	सपञ्चत्यवाग्याण
११	१३	अप-वाचन	प्राथोकी अरत्नाके वाचन
१८	४	समवाय-प्रिमित	समवाय-प्रिमित
३४	७	मङ्गलमासि	मङ्गलमासि
३८	९	मगलम् । तद्य	मगलमम् । न
३९	१	देहिता कय	x
४	७	अधोधिप्रति व	अधोधिप्रति (नी)
४१	६	विचरन्वरा	कपोवन्वरा
५	१७	निबद्ध कर दिया	रथ किया

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

	७ कयवेष्टा	गिवरवेष्टा
" १८ १९	देवताको... जाता है,)	अन्यकृत देवतानमस्कार निबद्ध किय जाता है,
४९	७ साङ्गण-	-सोङ्गण
४७	२० साधन अर्थात् कर्त्तव्य रक्षा	शोधन अर्थात् कर्त्तव्य शुद्धि
५२	८ रत्नामोगस्य	रत्नमोगस्य
६३	७ ग्राप्स्यविशय	ग्राप्स्यविशय
६३	१७ निश्चय व्यवहाररूप प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अनिशयरूप
६४	३ कश्चक-चाह-तिथ	तहेच चाहतिथ
" १४	चार शानिया कर्मोंमेंसे	×
६५	६ तेण गोहमेण	तेण वि गोहमेण
" १४	गौतम गणवरने	गौतम गणवरने भी
६७	४ होहिवि सि	होहिवि सि
८०	८ केव	केव होति
८३	११ द्रोप्यस्यदुमुधत्	द्रवति द्रोप्यस्यदुमुधत्
" १७	जो	जो कर्ममानमें पर्याप्तोंको प्राप्त होता है,
८६	सम्भवेते	संभु ते
९७	३ पूमा विहाण	पूमाविधिघाण
" १३	पूमाविधिका	पूमा आदि विधिका
१०१	५ जेयप्पमाण	जेयप्पमाण
" १७	जेयप्रमाण है, क्योंकि ज्ञान	है, क्योंकि जेयप्रमाण ज्ञानमात्र
	प्रमाण ही	
१०२	१ भम्मवेसण	धम्मवेसण
१०६	५ समयस्स	ससमयस्स
११०	४ वेहपाण	वेहपा-वंसा
११९	६ संठाण	संठाण
" १४	माना प्रकारको... गछाता है	इह प्रकारको सरपलोंसे युक्त नाना प्रकारक दारीयोंसे श्रुति होता है और गछाता है
१२३	८ अमुक्कम पणिधिकये	अमुक्कसपणिधिकये
	१० अङ्गण	अङ्गण
१४६	४ विक्कमेजोपसंमाण	उक्कमेजोपसंमाण

ग्रन्थ	पृष्ठ	ग्रन्थ	पृष्ठ
समाप्त	६	संख्या	७
समाप्त (जोड़)	२०३	संख्यात	२१७
सर्वपरस्यान	११४ २०८	संख्यान	५, १
सर्वान्त	११६	संख्या	८७ ११७
सर्वसंख्यात	१२५	संख्यात अथवा संख्या	११४ २ ८
सागर	१३२	स्थापनामस्त	११
साधारणशरीर	१३३	स्थापनासंख्यात	११३
सूक्त	१३३	स्तोत्र	१५
सूक्तगुण	१३२ १३५	हार	४७
संस्कृतमूल	१८, १३	हाराम्बर	४७

६ मूढविद्वित्रीकी तात्पर्यपूर्ण प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूढविद्वित्री प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठसुविद्धि दृष्टिसे विरोधता करते हैं
अतएव प्राप्त हैं ।

भाग १

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

९	२	सयस्यस्यस्यस्य	सयस्यस्यस्यस्य
१०	११	अथ-वाचक	पदाशोनी अथवाके वाचक
१८	४	समस्याप-विमिश्र	समस्याप-विमिश्र
१४	७	मङ्गलप्रतिभा	मङ्गलप्रतिभा
१८	२	मङ्गलम् । तथ	मङ्गलप्रतिभा । न
१९	१	देहिता कथ	५
४	७	अथोपिप्रति व	अथोपिप्रति (ची)
४१	१	निबन्धदेवता	कथदेवता
५	१७	निबन्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३८१	५	आदि	आदि
३४१	११	ननुसकमुमया	ननुमक उमया
३४४	३	अमिछापे	अमिछापे
३४९	८	गर्हा	गुर्या
३४९	३०	गर्हा	गुदि
३६०	१	मेय क	मेयगय
३७३	७	सञ्चित	सञ्चित
३७४	३	न	न
३७७	३	निर्बचनायेवामधिप्यतां	निर्बचनायवामधिप्यतां
३८८	८	पीठ	तेज
३८९	५	अप्यापमिब	अप्यापिब
३९०	४	रायहोसो	रायहोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यविरोधान्	एकदेशात्सत्यविरोधान्
३९८	१७	एकदश गहनेमें	एकदशकी उत्पत्तिमें

भाग २.

४१९	४	मिच्छादुःखि सिद्धा० चेदि	मिच्छादुःखि० सिद्धा चेदि
४१९	४	परदियादी	अरिय परदियादी
४२७	२	अण्यमाणे	ओषे अण्यमाणे
४४४	१	सिद्धमपञ्चत्तं	सिद्धमपञ्चत्तं
४४४	२	सरीर-पट्टवण	सरीरावण (सरीरावण)
४६२	३	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्ताणि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	इप्पिरियवेवा	इप्पिरियवेवा पुन
५३४	७	अमुह-ति-सेस्साण गहरवण्णा मापापत्तीहो ।	अमुह-ति-सेस्साण घटवण्णामापापत्तीहो कम्मभूमिमिच्छादुःखिण पि अपञ्चत्तच्छे अमुह नि-सेस्साण गहरवण्णामापापत्तीहो ।
५३४	२६	मागमूयिणं मनुष्योक्ते गौर वगका	मागमूयिणं मनुष्योक्ते वनवगका अमावका प्रसंग प्राप्त होगा । तथा, अगुन तीनों ल्य- वस्तु वनमूयिणं विप्याद्यदि जीवोंके भी अपर्याप्त कर्ममें गौर वगका

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

१५१	४	अद्यानमनुरक्तता	अद्यानमुत्कृता
१९	१	अवधारणं	अवधारणं
१७१	८	आपदि	आदि
१७१	९	समितिग्रह	समितिग्रह
१७१	२७	केन्द्र सम्पत्तसे वेद कर केता है	वेदक सम्पत्तको प्राप्त होता है
१९४	६	सहायार्पणस्य	सहायार्पणस्य
१९६	३	अपीवयेपस्य	अपीवयेपस्य
१९८	७	पुनर्नोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२१	७	पातपति	पातपति
"	२३	गिपता है	पातना देता है
२०३	८	द्वय	द्विष
२०३	२२	द्रव्य और भावक	द्रव्य स्वभावक
२१९	४	अयेवेव	अयेव
२१७	४	समेगजदि	संश्लिष्टे
२२	६	परिणामसाक्षी	परिणामसाक्षी
२४३	२	अतिरंग	अतिमा (अतिग)
"	४	प्राप्तिमिति	प्राप्तिमिति चेत्
२४८	२	अवेदिति	अवेति
२५९	६	संज्ञिन इति	संज्ञिनः अमानस्वाः असंज्ञिन इति
	१९	कहते हैं	और अमरहित औरोंको असंज्ञी कहते हैं
२६	२	विप्यत्तौ	विप्यत्तेः
२७०	१	कर्मस्वरूपाः	नोऽकर्मस्वरूपाः
"	१४	कर्मस्वरूपोंके	नोऽकर्मस्वरूपोंके
२८१	२	सत्त्वमोक्षं च	सत्त्वमोक्षं च
२८७	९	प्रपन्ना	सत्त्वपन्ना-
"	१०	प्रपन्न और	प्रपन्नसहित
२९३	१	तत्पत्तिपत्ता	परित्यज्या
२९५	६	को ह्रीं	केर्प्वा-
३१८	५	भूतपूर्वगत	भूतपूर्वगति
३२	७	ताम्बा	यत्ताम्बा
३२१	४	आदि	आदि
"	५	आदि	आदि

पृष्ठ पक्ति पाठ है । पाठ चाहिये ।

३२१	५	आदि	आंति
३४१	११	नपुंसकमुमया	नपुंसक उमया
३४४	३	अमिसाये	अमिसापो
३४९	८	गर्हा	पूर्या
३४९	१०	गर्हा	गुहि
३६०	१	मेयं न	मेयगर्ग
३७३	७	सञ्चित	सञ्चित
३७४	३	न	न
३७७	३	निबधनाधेधामविष्यतां	निबधनाधमविष्यतां
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्याणमिब	अप्याण विब
३९०	४	रायहोसो	रायहोसा
३९८	३	एकदेहो सत्यविरोधात्	एकदेहोत्पत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदश छानेमे	एकदशकी उत्पत्तिमे

भाग २

४१५	४	मिच्छादुःखी सिद्धा० बेदि	मिच्छादुःखी० सिद्धा बेदि
४१९	४	परिविषादी	अस्थि परिविषादी
४२७	२	मण्णमाये	ओये मण्णमाये
४४४	१	सिद्धमपञ्चत्तं	सिद्धमपञ्चत्तं
४४४	२	सरीर-पट्टवण	सरीरावण (सरीरावण)
४६२	३	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्तायि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	इत्थिथिबेदा	इत्थिथिबेदा पुण
८३४	७	असुह ति-सेस्साण गडरवण्णा मावापत्तीहो ।	असुह-ति-सेस्साण धवसयण्णाभावापत्तगाहो कम्मभूमिमिच्छादुःखीणि पि अपञ्चत्तकाहे असुह ति-सेस्साण गडरवण्णाभावापत्तीहो ।
५३४	२६	मागभूमियां मनुष्योंके गौर वर्णका	मागभूमियां मनुष्योंके बबकवर्णके बभावका प्रसंग प्राप्त होगे । तथा, अशुभ तीनों कट्या वाले कपभूमियां भिष्याद्वि जावोंके भी अपपीत कर्ममे गौर वर्णका

पृष्ठ पाठि पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

५३५	२	तेज-यम्म सुखकेस्तामो मर्षति । एव-अवज-रस-वागस्त	तेज-यम्म-सुखकेस्तामो मर्षति । जीवसाररस्त कथमेवकेस्ता सुखदे । पापवजपदमासेम्स कस्यो वागो सि पंज वज्यस्त कथस्त
५३५	२५	तेज, पय और द्वाकेस्याए होती हैं । जैसे पाँचों वज और पाँचों रसवाले कानके अवज पाँचों वर्णवाले रसोंसे पुक्त करके वृष्य व्यपदेश	तेज, पय और द्वाकेस्याए हाती हैं । शुक्ल—जमेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक केद्र्य कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' कथक कृष्ण है ' इसप्रकार पाँचों वर्णोंसे पुक्त करके वैसे वृष्य व्यपदेश
५३८	३	एव हेचगरी	एवं हेचगरी समचो (चा)
५८९	३	तिरिक्कगरीमो सि	तिरिक्कगदि सि
५९०	१०	एव विविधममाया	एवमिविधममाया
५९८	४	अपरज्जत्ता बुविहा	अपरज्जत्तमेयेय बुविहा
६०९	१२	व्यपारभावे मट्टिवाए	व्यपारमूमिमट्टिवाए
६१०	१२	आधारके होनेपर महीके	आधारभूत भूमिकी महीके
६११	३	बाहरबाह्यार्ण	बाहरतेज्यह्यार्ण
६४८	८	केवलीयं	सयोगकेवलीय
६४८	२०	केवली भिनके	सयोगिकेवली भिनके
६५३	३	मावमद-पुधमर्द क	मूवपुधमर्द क
६५३	१०	आमनागत पूर्वगति जर्वात् मूलपूर्व व्यापके	मूलपूर्वगति व्यापके
६५७	४	मिच्छादुर्गि	मिच्छादुर्गि क
६५९	२	समजा धवदि	संमचो मवरीदि
६५९	७	प्रणोत्त सञ्ज्ञा हो जाता है,	प्रणोत्त होना संमच है,
६६०	४	करिद् जीव-पदस, वं	वा डिद्जीवपदेष्टाव
६६	१६	व्यपत्त जीवके	वित जीवके

पुत्र पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ६९० ७ एय बधहरस्स पर्य बधरस्स (बधरस्स)
 " १८ विशिष्ट बधक्ते धारण करनेवाले इस छोटे धारीक शरीरके
 ८२३ २ बधमाप्या बधमाप्यार्थ
 ८२३ ३ बधसमसम्मत्तेण उधसमसम्मत्ते
 " ११ केणे चत्तनेके धूमं दो परिहार श्रमेसे उठानेके पश्चात् ॥ उपधमसम्पत्तत्रके शुद्धिसपमके मछ हो जाने पर मछ हा जाने पर परिहारविशुद्धिसपमीकर । उपधमसम्पत्तत्रके साथ परिहार विशुद्धिसपमीकर
 ८४६ २ पग्गत्तापग्गत्ता आकावा पग्गत्तापग्गत्ता के आकावा
 " ११ पर्याप्त और अपर्याप्तकाजसम्बन्धी पयाप्प और अपयाप्तकाजसम्बन्धी दो आकाव आकाव

भाग ३

- १४ ३ अनुभूतावस्थायामेवाय अनुभूतावस्थायामेवाय
 २० ३ पुण्यो पुण्यो वि
 २६ ९ अण्डाणो अण्डाणो दो
 " २५ यह पद्म प्रमाणसे अवस्थित है । प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुन प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है ।
 २८ १० अ अन्तरिउत्तति मा अन्तरिउत्तनु
 ३० ७ कवत्तपुप्पत्त कवत्तपुप्पत्त अण्डसमपुप्पत्त
 " २९ शानप्रत्यक्षरूप दसपुप्पत्तकूप
 ३४ ४ पत्ति राखी
 " १५ यह अगच्छेगीकृत सानर्वा माग यह राशि अगच्छेगीके सातवें मागप्रमाण है ।
 भाग है ।
 ३६ ५ मरुत्त समवह्माणादो । मरुत्त बध्माणस्स समवह्माणादो ।
 ३९ १ पाप्पपमाणमि वे पाप्प पमाणमिदि

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

२०८ २२ असक्यात खंड

सक्यात खंड

२०८ ८ सकेरजेसु

असकेरजेसु

॥ २१ सक्यात खंड

असक्यात खंड

२१५ ६ ओषपडिवण्णेहि

ओषगुणपडिवण्णेहि

२१६ ३ मयवावियाण

मयणावियाणं वेवाण

२७१ २ पडिसेहट्ठं ।

पडिसेहट्ठं । पवरस्स असकेरजदिमाणो ते मि
च्छाहट्ठि होति सि उत्तं ।

॥ १४ कहा है ।

कहा है । मयनवाधा मिथ्यादृष्टि देव जगप्रत्यक्षे
असक्यातर्षे भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका
तात्पर्य है ।

२७५ ६ ओषपडिवण्णाण

वेवओषपडिवण्णाण

२७१ १ वण्णमिच्छाहट्ठिरासि

वेवमिच्छाहट्ठिरासि

२८३ १० असकेरजगुणा

सकेरजगुणा

॥ २७ हुए भी वे असक्यातगुणे

हुए भी वे सक्यातगुणे

२८६ ४ सम्पवेवरासिमसकेरजकंडे

सम्पवेवरासि संकरजकंडे

॥ १५ असक्यात खंड

सक्यात खंड

२९१ ३ सेसमसकेरजकंडे

सेसं सकेरजकंडे

॥ २२ असक्यात खंड

सक्यात खंड

२९८ १० मयणवावियावेवि सि

मयणवावियावेवेवि सि

॥ २९ देवियोंके

देवोंके

३११ ११ उवरिमहेट्ठिमसकेरजविषया

उवरिमहेट्ठिमसम्भे विषया

॥ २१ असक्यात विरज्य

सर्व विरज्य

३८१ १२ सि

वेसि

३९८ ५ रासी

रासी से

४०४ ३ -वायजोगरासीयो

-वायजोगरासी होदि

४१४ ९ इत्थिवेदमवहारकासस्स भागहारो

इत्थिवदमवहारकासो

४१९ ६ उवसामगा केवडिया पवेसेण

उवसामगा इप्पममायेण केवडिया पवसेण

॥ १९ जान कितने हैं !

जान इप्पप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं !

४२३ ३ -म्मायमागहाररासिमि

-म्मायमुवरासिमि

॥ ११ नीचे मागनी मागहार रासिमें

नीचे मागरूप मुखरासिमें

पृष्ठ पङ्क्ति पाठ है।

पाठ चाहिये।

- ४२७ ४ वेपगहिसाहम्याणं
 ४२८ १ मूखो उबसंतकसायरासी
 ४२९ १०-११ बुबिहणाणविरहिय
 ४३० २८ दोनो प्रअरक अहानोसे
 ४३१ १ वेव
 ४३२ १ छत्रिसपण्णरासीण
 , १२ एसिणं बहुत नही हो सकय्य हैं। अरि बहुत नही हो सकने हैं।
 ४३३ १ सेसमसअरअकंठे
 " १ असायली खंड
 ४३४ २ मदि सुवमण्णाणीसु
 " १४ -इली बीरोमं
 ४३५ ९ बित्तेसमहिपा २८।
 " २५ अहमसं हैं। मन-पर्यपइली अप्रम-
 चसयत जीव अवविहानी अपरसे
 ४३६ १ पुणामिमसअव
 " ११ अवविहानी प्रमचसयतोसे
 ४३७ १ अकुरुंसण्णहिरीण
 " १५ अकुरुंसणी
 १ अरसअविमाय अरिअविपादि-
 माणे
- अवगहिसाहम्याणं
 मूखोउबसंतकसायरासी
 बुबिहणाणविरहिय
 दोनो प्रअरक अहानोसे
 तदिह वेव
 छत्रिसपण्णरिसीण
 सेसमसयणं
 अनंत खंड
 मदि-सुवमण्णाणमिअइलीसु
 इली मिण्णदि विरोमं
 बित्तेसाहिपा २८। आमिनि-सुवण्णमिअइलीसु
 सअरअगुणा। अअणा संअरअगुणा।
 अइयसं हैं। आमिनिबोधिक और अइली उप-
 शासक जीव अवविहानी अपरसे सायणगुणे
 हैं। मतिइली और अइली अपर जीव उक्त
 उपशासकोसे सायणगुणे हैं। मन पर्यपइली
 अप्रमचसयत जीव उक्त अपरकोसे
 आमिणिआमि-सुवण्णमिअमचसंअव सवे
 अगुणा। तत्येव पमचसंअव संअरअगुणा।
 पुणामि असअव
 अवविहानी प्रमचसयतोसे आमिनिबोधिक और
 अइली अप्रमचसयत जीव समानगुणे हैं।
 इली दो इलीमें प्रमचसयत जीव उक्त अप्रमच-
 सयतोसे संअरअगुणे हैं। इनसे
 अकुरुंसण्णमिअइलीहिरीण
 अकुरुंसणी मिण्णदिरोमं
 अरस अरिअविपादिमाणे

पृष्ठ पक्षि पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ४५४ १७ चक्रुश्चानवासे मिय्याद्विषयोऽयं अथ चूकि चक्रुश्चानवासे प्रतिपादके नहीं रहने पर
 दारकात् सूच्यगुणक असस्यातवे
 भागरूप आशेषक परितार यह है
 कि चूकि
- ४५१ ११ तेजसेस्त्रियमन्त्रहारकाको देवतेजसेस्त्रियमन्त्रहारकाको
 , २६ तजोखपासे युक्त जीवपाशका तेजोखपासे युक्त देवोंका
 ४७३ २ सयद्वाररियमन्त्रसिद्धात्रो । सयद्वाररियमन्त्रसिद्धात्रो ।
 ,, १४ यह सर्व आचार्य जगतमें प्रसिद्ध है । यह कथन सब आचार्योंके वचनोंसे सिद्ध है ।
 ४७८ ९ मिच्छाद्विषयमन्त्रसिद्धात्रो मिच्छाद्विषयमन्त्रसिद्धात्रो
 ४८६ १ आचारा संज्ञेऽयं गुणः । आचारा संज्ञेऽयं गुणः । सजोगिकेवली आह
 रियो संज्ञेऽयं गुणः ।
 ,, ११ अग्रमन्त्रस्यत जीव क्षपकोसे सयोगिकेवली आहारक जीव क्षपकोसे सम्पात
 गुणे हैं । इनसे अग्रमन्त्रस्यत जीव

४—मूढविद्वांसी प्रतियोंके ऐसे पाठमद जो छन्द और अर्थको दृष्टिसे दोनों छुट हैं, अतएव
 जो समस्त प्राचीन प्रतियोंमें वैकटिकरूपसे निबद्ध पाये जाते हों ।

भाग १

१३	२ साह पसाहा	साङ्गपसाहा
३३	१ किमिति	किमर्थ
७१	३ तरो	पुणो
९४	५ मोटाक्षिय-सरीर-मिच्छा	मोटाक्षिय मिच्छा
१०८	३ स्वेष्टहृदितकापन	स्वेष्टहृदितकापन
१०८	११ स्वेष्टहृत्	स्वेष्टहृत्
११०	४ त्रिपदादीण	त्रिपदादीण
११०	१६ मिनाक्षय अग्नि-का	मिनाक्षय अग्नि-का
११२	१ अङ्गहमद्विषयापनमरिष	अङ्गहमद्विषयापनमरिष
११२	१४ चार अविच्छेदोऽयं नामनिर्देश	चार अविच्छेदोऽयं अर्थनिर्देश
११६	३ छ-अक्षिप	छदि अक्षिप
११	७ वात्संस्कारकारण	संस्कारकारण

पृष्ठ पङ्क्ति मुद्रित पाठ

गृहविहीन पाठ

११८ १ आद्यतन्मीमौषधमिकादीन्

साद्यतन्मीमौषधमिकादीन्

११८ १५ सानि और अनानिरूप औषधमिक
आदिमाशोऽन्ते

सानि और अनानि भाषोक्तौ

१२१ ९ जेयन्ता

जयन्ता

॥ २१ निषेध कर देना

निषेध जानना

१४७ १ अमावास्यायात्

अमावास्ययात्

५ इति चेत्

इति चेत्

२२ ऐसी घटा करना ठीक नहीं है,
क्योंकि,

क्योंकि,

१५१ १ अजन्तौ

अजन्तौ

१८ ५ तेहिंते

तेहिं

१८९ ५ तवेकसोपपत्तेः

तवेकसोपपत्तेः

॥ २० एकता बन जाती है।

एकता कही है।

२०९ १ प्रतिपादकार्पात्

प्रतिपादकार्पात्

२२८ ४ मिश्रणमवगम्यते

मिश्रणमवगम्यते

, ११ जीवोंके साथ मिश्रण

जीवोंके साथ यहाँ मिश्रण

२५४ ९ -वाच्यनिमित्तानामासिः

x

२६ परिणमन करनेरूप शक्तिके बने हुए
बागवत पुद्गलस्कन्धोक्तौ प्राप्तिः

परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको

२५५ २ औदारिकादिशरीरव्यपारिणाम
शक्त्युपेतानां वरुणानामासिः

औदारिकादिपरिणमनशक्त्युपेतिः

॥ ११ परिणमन करनेवाले औदारिक
आदि तीन शरीरोंकी शक्तिके
पुण्य पुद्गलस्कन्धोक्तौ प्राप्तिःऔदारिक आदि स्त्रीरूप परिणमन करनेरूप
शक्तिकी पूर्णताको४ -महजवाच्यमुत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल
प्रत्ययासिः

महजवाच्येर्निमित्तः

॥ १६ महज करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके
निमित्तमूल पुद्गलप्रत्ययकी प्राप्तिः

महज करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको

१ -निमित्तपुद्गलप्रत्ययासिः

x

पृष्ठ पाठि मुद्रित पाठ

मूढविद्वांसी पाठ

२५५	२० शक्तिर्गो पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल- प्रचयस्य प्राप्तिर्यो	शक्तिर्गो पूर्णताको
,	८ निमित्तनोर्ध्वपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×
॥	२१ शक्तिके निमित्तभूत नोर्ध्व पुद्गल- प्रचयस्य प्राप्तिर्यो	शक्तिर्गो पूर्णताको
,	९ मनोवर्गाणास्त्वन्निष्पन्नपुद्गल- प्रचयः अनुभूतार्थस्मरणशक्ति- निमित्तः मनःपर्याप्तिः द्रव्य- मनोवर्गस्त्वन्नुभूतार्थस्मरण- शक्तेरप्यस्मिन्मनःपर्याप्तिश्चा	मनोवर्गाणामिर्निष्पन्नद्रव्यमनोवर्गमेतानुभूत- स्मरणशक्तेरप्यस्तिः मनःपर्याप्तिः
॥	२५ अनुभूत अवयवे स्मरणरूप शक्तिके निमित्तभूत मनोवर्गाणां स्वरूपेति निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मनःपर्याप्ति करोते । अथवा, द्रव्यमनके	मनोवर्गाणांस्ति निष्पन्न द्रव्यमनके
२५६	३ निष्पत्तेः स्मरणं	निष्पत्तिः
॥	१५ पूर्णताके कारणको	पूर्णताको
२५७	४ इति केन पर्याप्ततां	इति केच्छब्दतां
॥	२२ पर्याप्तियोंकी अपूर्णताको	शक्तिपूर्णताको
२८३	३ परित्यक्तद्रवरूप	×
॥	१४ मनक निमित्तसे जो परित्यक्तद्रवरूप प्रयत्ननिष्ठेय	मनके निमित्तसे जो प्रयत्ननिष्ठेय
३८३	७ ज्ञानानुपादेन	ज्ञानानुपादे
३८३	९ आसंजनमात्	आसंजनमात्
४००	२ आसंजनमात्	आसंजनमात्

भाग ३

३	७ योग्यमात्र	योग्यमात्र
१६	७ तं पदपदारेण आगास	तं पदपदारेण
२५	८ सम्बन्धीवरसिद्धगच्छागामो	×
३१	३ तेरसगुणद्वानमतेष	तेरसगुणद्वान
३६	४ अ मर्त्य	अ मर्त्य

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढचित्रीका पाठ
११८	१	साद्यभाषीमौपशमिकादीन्	साद्यभाषीन् भाषान्
११८	१५	सादि धार वनादिरूप औपशमिक आदिमाषोन्दी	साणि और वनाणि भाषोन्दी
१२१	९	येपय्या	प्यापय्या
	२१	निपच कर देना	निपेच जानना
१४३	१	अमावास्यसप्तम्यत्	अमावास्यसप्तम्यत्
	५	इति केन	इति कत्
"	२२	ऐसी हाका करना ठीक नहीं है क्योकि,	क्योकि,
१५६	३	अप्यजो	अप्यजो
१५८	७	तेहिं तो	तेहि
१८६	५	तदेकत्वोपपत्तेः	तदेकत्वोपेः
"	७०	एकता बन जाती है ।	एकता बड़ी है ।
२१९	१	प्रतिपादकापान्	प्रतिपादकमर्पान्
२२८	४	मिश्रजमवगम्यते	मिश्रतेहावगम्यते
	११	जीबोंके साथ मिश्रण	जीबोंके साथ यहां मिश्रण
२५४	९	अत्यन्तमिच्छानामाप्तिः	x
"	२६	परिमन करनेरूप शक्तिम बने हुए आगत पुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः	परिमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको आगत पुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः
२५५	२	औदारिकादिशरीरव्यपारिणाम शक्त्युपेत्यामी रुद्धयानामाप्तिः	औदारिकादिपरिणामव्यपारिणामः
"	११	परिमन करनेवाले औदारिक आणि तीन शरीरोंकी शक्तिस पुत्र पुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः	औदारिक आदि शरीररूप परिमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको पुत्र पुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः
"	४	अव्ययशक्त्युत्पत्तिर्मित्तपुत्रक प्रवयाप्तिः	अव्ययशक्त्युत्पत्तिः
"	११	अव्यय करनेरूप शक्तिनी उत्पत्तिके निमित्तमूल पुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः	अव्यय करनेरूप शक्तिनी पूर्णताको
"	३	निमित्तपुत्रवत्कथोर्ध्व प्राप्तिः	x

पृष्ठ	पंक्ति	सुधित पाठ	सूत्रविहीनी पाठ
७	१	पुण्यवर्त	पुण्यवर्त
	३	भूयवर्ति	भूयवर्ति
११	५	हेत	हेत
११	३	आहरियो	आहरियो
५	२		
९	१	पयस्य	पयस्य
११	२	अभिषो	अभिषो
१२	१	पञ्चय	पञ्चय
१५	२	सुबहुति	सुबहुति (निय)
१६	८	महति	महति
१८	७	अण्य-विमिसतर	अण्य विमिसतर
२५	१	विपद्वि	विपद्वि
२६	२	आयेमियरेण	आयेमियरेण
४०	२	आर्हावसाय	आर्हि मवसाय
५१	३	माद्व	माद्व
६२	७	उवसपिणीये	उवसपिणीये
६४	२	वसण-आय-वरिते	वसण-आय-वरिते (वाण्यवरिते)
६६	१	अवसामी थ	अवसामी थ
७०	३	विप्पुरकरे ति	विप्पुरकरेति
७१	७	विजपाकिद्वस्स	विजपाकिद्वस्स
	१०	पय	पय
७७	२	प्रमिळ	प्रमिळ
८१ ९-१०		आणण	आणण
९९	३	पण्हवायरण	पण्हवाहरण
१०३	३	किर्म्मिळ	किर्म्मिळ
१०८	८	विट्ठिवापावो	विट्ठिवापावो
११९	५	सम्भेहि	सम्भेहि
११	१३	अप्पाय	अप्पाय
११४	१	पगूय	पगूय
१	८	अभिषोग-	अभिषोग
११९	३	सुव	सुव
१२१	८	वि-सव	वि-सव
१२२	३	वि-सव	उ सव

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूबनिर्णीक पाठ
४९	१	अवहारविसेसेन य	अवहारविसेसेन
५१	४	एय कर्तं	एयकर्तं
५५	७	अगच्छसि ति ।	आगच्छसि ।
६०	७	"	"
६८	४	गुम्बि	गुम्बि हि
१०९	३	हेतुमविरक्तवाप	हेतुमविरक्तवार्त्त
११८	१	गुणगारे. पची	गुणगारपची
११९	३	अर्धवेन्नगुणाय सेवीय	अर्धवेन्नगुणसेवीय
१२३	३	अभिज्ञमार्त्त	अभिज्ञमार्त्त
१३०	७	अस्ति	अस्ति
१३२	५	अपिपचायी	अपिपचायी
१४२	१	एयसेवी	एया सेवी
१६२	१	विसेसामावायो	विसेसामावा
१८४	३	एच्छमो	एच्छमो
१८५	८	"	"
१९१	५	अवरिमविरक्तज	अवरिमविरक्तज-
१९२	७	सो	एसो
१९३	५	इच्छय	-मिच्छय
१९८	४	अकजय-	-एकजय
२०१	४	देवेसु ३ १७ ३	देवेसु (१७) इति
२१५	७	हियवय	-हियवय पुन
२१६	१	अवर्धविज्ञमार्त्ते ओयपकजवायो	अवर्धविज्ञोयपकजवायो
२१८	१	सुचस्त हि	सुचस्त
२२४	७	होमि ।	अगच्छसि ।
४२६	२	अनुकस्ता	अनुकस्ता
४४१	४	ओयस	ओयसे
४४७	३	अवा	अवागा
४४८	५	अिय	अेय
४७६	७	एदे बी वि	एदेयावि

सु—मूबनिर्णीय तावपनीय प्रतियोक्ते ये पाठ भेद जो उच्छ्रजल भेदसे सम्भव सकते हैं, अतएव उनमेंसे किसीको भी रखनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

भाग १

- १ ३ विविहसि
" ५ मम्मोह

विविहसि
मम्मोह

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	गूढनिघोषी पाठ
७	१ पुष्करवर्त	पुष्करवर्त	
	३ मूषकवि	मूषकवि	
११	५ होळ	होळ	
११	३ आहरियो	आहरियो	
५	२	"	
९	१ पयस्य	पयस्य	
११	२ मयिष्यो	मयिष्यो	
१२	१ पञ्चय	पञ्चय	
१५	२ सुकुम्भ	सुकुम्भ (-विष्)	
१३	८ मोक्षी	मोक्षी	
१८	७ अण्ड-विमिश्रतर	अण्ड विमिश्रतर	
२५	१ विष्वदि	विष्वदि	
२६	२ आयेयिष्ये	आयेयिष्ये	
३०	२ अर्वाचसाज	आदि मन्त्रसाज	
५१	३ मास्य	मास्य	
६२	७ अस्यिष्ये	अस्यिष्ये	
६४	२ ईस्य-आज-वरिते	ईस्य-आज-वरिते (आज-वरिते)	
६६	१ अर्वाचामी च	अर्वाचामी च	
७०	३ विष्णुरकरोति	विष्णुरकरोति	
७१	७ विष्वदि	विष्वदि	
"	१० पयं	पयं	
७७	२ अमिष	अमिष	
८१ ९-१०	आयुग	आयुग-	
९९	३ पण्डितारज	पण्डितारज	
१०३	३ किष्किविष	किष्किविष	
१०४	८ विट्ठिवापाहो	विट्ठिवापाहो	
११२	५ सन्नेहि	सन्नेहि	
"	१३ अण्ड	अण्ड	
११४	१ पण्ड	पण्ड	
"	८ अयिष्यो-	-अयिष्यो	
११९	३ सुय	सुय	
१२१	८ वि सव	वि-सव	
१२२	३ वि-सव	सु सव	

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविहीन पाठ

"	५ खोख	खोग
१२३	३ मर्याद्विपारो	मर्याद्विपारो
१२४	४ बचन	बचन
१२५	४ पुण्य	पुण्य
१२७	५ मर्षति	हर्षति
१३०	११ संपादि	संपादि
१५७	२ संतमरप-	संतमरप
	७ परिसंसाधो	परिसंसाधो
१५८	५ तेहिंलो	तेहि
१७०	५ पुढ मां	पिढ मां
१८१	९ हुपबह	हुपबह
२०२	७ सुबिपह	सुबिपह
२१७	९ उबपसा	उबपसे
२२२	९ मेसि	मेति (मेप्ती)
२४३	१ पिपीक्षिह	पिपीक्षिय
२५२	१ बचप्यदि	बचप्यर
२६४	६ अदयाना	दयाना
३१३	७ पंचेद्विपा सि	पंचेद्विच सि
३४३	७ जनुसमवेदा	जनुंसमवेदा
३४७	११ सम्मूर्च्छिम	सम्मूर्च्छिम
३५	८ हरिह	हकिह
३५८	८ उबपसा	उबदेना
३६४	१० व्येदिनाय	व्येदिनाय
३७३	१ अग्रिय	अग्रिय
३९४	२ निगोह	नियोह
४०७	४ जनपाकिह	जनपाह

भाग २

४१७	७ बच्यारि (१ बार)	ब्यारि (१ बार)
४१९	९ छ छस्ताये	छस्ताये
४२१	५ वा	व
"	१ संपादि	संपादि
४२४	४ ययो	ययो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिघीकृत पाठ
४४८	२ मूखेपाळाबा समचा	मूखेपाळाबा समचा	
	८ सुकु कण्हेति	सुकु कसणेति	
४५२	५ अर्त्तजम	असजमो	
४५३	३ अर्त्तजम	अर्त्तजमो	
४५३	४ काऊ काऊ काऊ	काऊ काऊ तऊ काओ	
४७१	३ पैबविद्या भवंति	पबविद्या हवति	
४९३	२ अवाहारिणी अवाहारिणी	अवाहारिणीये अवाहारिणीयो	
४९७	७ तासिं केव	तासिं	
५ ३	२ पबिक्कण	पेक्किणपूण	
५२८	७ मणुसिणीमु	मणुसिणी	
५५९	७ परिणामिय	परिणामिय	
५६३	८ कापिट्ट	काबिट्ट	
५६६	७ मणुसाण व	मणुसाण व	
५६९	२ अदीपपञ्जलीओ	अदीपपञ्जलीओ	
५९०	९ अर्णिविपार्ण	अर्णिविपा	
५९१	२ सम्मा	छावर्	
५९३	१ अट्टारत्त	अट्टारट्ट	
५९७	१ मत्तूण	×	
५९८	१० पञ्जावण	पञ्जावण	
६००	१ एवे	एव	
६०४	२ मूखोपम्मोत्त	मूखोपम्मि डत्त	
६२०	१ पेक्किण	पेक्किण	
६८८	१ सामणसम्माहट्ठिप्याहुति	सासणसम्माहट्ठि पट्ठि	
६९९	८ मोघ/ळाबा मूखोपमणो	मोघाळाओ मूखोपमणो	
८२३	२ डवसंडरिद	डवसंडरिद	

भाग ३

१	२ णमिक्कण	णमिक्कण
	हण्णमिओण	हण्णमिओण
१	५ हुविहो	हुविघो
३	१० हेऊ	हेट्ट

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढभिष्टीका पाठ

१	५ ओषक	छोग
१२३	३ भत्यादिपारो	भत्यादिपारो
१२४	४ कयय	कयय
१२५	४ पुच्छा	पच्छा
१२७	५ मर्षति	इर्षति
१३	११ संपदि	संपदि
१५७	२ संतमरष-	संतमरष
	७ परिसेसाहो	परिसेसाहो
१५८	५ सेहिलो	सेहि
१७०	५ पुह मां	पिह मां
१८१	९ हुयबह	हुयबह
२०२	७ सुविपद्	सुविपद्
२१७	९ उबयसा	उयसे
२२२	९ मेसि	मेसि (मेची)
२४३	१ पिपीछिप	पिपीछिप
२५२	१ कण्ठ्यादि	कण्ठ्यादि
२६४	३ व्याध्याना	व्याध्या
३१३	७ पर्वेदिपा ति	पर्वेदिप ति
३४३	७ यमुंनयवेदा	यमुंनयवेदा
३४७	११ सम्मूर्च्छित	सम्मूर्च्छित
३५	८ हरिद	हरिद
३५८	८ उबयसा	उबयेना
३६४	१० ओषिपार्थ	ओषिपार्थ
३७३	३ उरारिप	उरारिप
३९४	१ निगाद्	निगोद्
४०७	४ लवपात्रिद्	लवपात्रिद्

भाग २

४१७	७ क्यारि (३ बार)	क्यारि (३ बार)
४१९	९ उ कस्तानो	उकस्तानो
४२१	५ वा	वा
५	१ संपदि	संगदि
४१४	४ ययो	यगो

पृष्ठ पङ्क्ति मुद्रित पाठ

गूढविद्याका पाठ

१९० २ पशुपतीसेहि
२०१ ३ तुग
२१० १० जेह्यो
२१३ ४ -मङ्गम
२१९ ७ ९ बेसप
२२३ १ -भागेज
= ५ भागे
२२४ १ सपदि
२२८ २ कप्यमाणपकबणा
२३९ १७ मागेदणा
२४४ ७ सेसगाएपहिसेहो
२४६ ५ -मिच्छाएहीज
२४२ १२ बिपहिचारे
२७२ १० पदरसेहि
२७३ ३ विरोहाहो
२७८ ३ मणूपाहिपाओ
२९५ २ बडमाह
३३० २ -मकरस
३३७ ३ गुणैज
३३७ ३ पवेसमाण
३४८ ३ -भाहो
३५० १ पञ्चतरासिपा
३७५ ३ पञ्चोविष
३७९ १ पबिसिद्व्याणि
३९० ३ -जोगरासि
३९७ १ तमखाप गुणगारेण
३९७ १३ -कापजोगमिह
४०८ ५ मजेपतमिदि
४२० ३ पवेसविधी
४२५ ११ पडिवाडीप

पञ्चकुलवीसेहि
सुयं
जेयज्यो
मङ्ग
विद्यप
भापण
भाप
सपदि
कप्यमाणपकबणाहो ।
मागेदणा
सेसगाएपहिसेहो
-मिच्छाएहीज
बमिचारे
पदरसेहि
विरोहा
मणूपाहिपाओ
बडगाह
-मकरस
गुणैज
पबिसमाण
मुह्यो
पञ्चतरासिपदि
पबिसाविय
पवेसिद्व्याणि
जोगरासीओ
तमखागुणगारेण
-कापजोगमिह
-मजेपतियमिदि
पबसणविधी
परिवाडीप

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूढविद्वत् पाठ
५५	१	२, ३, ५, ७, ८ कुं	कुं
१	१२	तद्वत्पामावाधो	तद्वत्पामावाधो
१३	४	व्याप्यत वेदि	व्याप्यतमिदि
"	१	आधुगसरीर	आधुगसस सरीर
१४	२	कुन्नेज्जेति	कुन्नेज्जेति ति
१५	२	गोदपर्व	गोदपर्व
१७	२	तद्वत्पामावाधो	तद्वत्पामावाधो
१९	७	अवधा	अवधा
२९	५	अवधारजोगो	अवधारजोगो
३०	५	अवधारस	अवधारस
३२	७	अवधा	अवधा
३२	७	मिभिज्जहि	मिभिज्जहि
३२	८	ओपण	ओपण
३७	५	वेपथुसुतेष	वेपथुसुतेष वेपथुसुतेष
३८	७	होति	होति मरति
४०	४	पमरुव	पमरुव
४०	९	माग्नि	माग्नि
४३	४	विरुजय	विरुजय
४३	१	अवधारिज्जहि	अवधारिज्जहि
४४	५	अट्ठीस	अट्ठीस
४७	१	सेसुस्मासे वि	सेसुस्मासासो वि
७१	२	वद्विद्वोवमे	वद्विद्वोवमे
९	२	तेजज्जी	तेजज्जी
९८	१०	मावमापण्यं	मावमावण्यं
"	९	अट्ठीस	अट्ठीस
१००	१	वद्विद्वोवमे	वद्विद्वोवमे
१००	२	अट्ठीस	अट्ठीस
१००	१२	अट्ठीस	अट्ठीस
११४	२	मवहि ति	मवहि ति
१२३	३	सव्य-मावा	सव्य-मावा
१४२	९	सर्वो	सर्वो
१५७	९	सर्व	सर्व
१७३	१	आवेपमावाधो	आवेपमावाधो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	गृहविदीका पाठ
९२	३	विद्योगापायस्य	विद्योगापायस्य
९७	१	पुरिष्ठ च	पुरिष्ठ च
१०१	१	कदाचो	×
	२	सुखि करेती	सुखिमकरेती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११३	३	इच्छा	×
१२४	१२	नाम कम्माचो	नाम कम्माण
१५८	४	अमतिपिचं	अमतिपिचं
१८३	८	जेस्ति	जस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अम्महिप	अम्महिप
२२२	४	पिबह्वि	पिब्विचि (f)
२३२	९	असंक्षिप्तसुतया	संक्षिप्तसुतया
२९८	३	नैप	नैप होय
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२३	१०	महम्मदाई	महम्मदेसु य
३२८	८	तत्रैतासां	तत्रैतेपां
३३३	१	अस्मादेवापात्	अस्मानेवापात्
३५९	१	अविपुबसमिप	अविपुबसमिप
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अनेक	इत्यत्र एक
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७६	७	पंचयमः	पंचयमाः
	८	,	
३८०	११	अक्षुपा	अक्षुपो
३९९	८	तत्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसंज्ञायाः	मैथुनसंज्ञायां
"		विरोपक्षक्षय	विरोपक्षक्षय
	५	आखीडवाटार्याः	आखीडवाटार्य
४१४	१०	वेदमार्गपामभेदः	वेदमार्गपामभेदाः
४१७	११	आणप्याजप्याण	आणपामप्याण

ब — मूढचिरीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके वे पाठ जो पाठ या अपनी दृष्टिसे अनुसृत प्रतीत हुए ।

नोट—जिन पाठोंके सचचमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देखिये । जो पत्र पाठ या अपनी दृष्टिसे स्पष्ट अनुसृत प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई ।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढचिरीका पाठ
८	३ अरिहंतार्थ		अरिहंतार्थ
१३	१ उद्धतुह		उद्धतुह
१६	४ विपत्त		विपत्त (?)
	८ तस्यापुच्छ		तस्यापुच्छ
२१	१ अमुकमुक्तो		अमुकमुक्तो
३१	५ विपर्यस्यतोः		विपर्यस्यतोः
४४	४ अरिहंता		अरिहंता
"	५		"
५३	५ तत्कामादप्युप		तत्कामादप्युप
५८	११ अमुकमुक्तो		अमुकमुक्तो
६	३ व्याकुलता		व्याकुलता
३४	३ विषममुक्तो		विषममुक्तो
६८	५ पादमूलमुक्तता		पादमूलमुक्तता
८९	१ जीवमुक्तो		जीवमुक्तो
८९	८ जीवमुक्तो		जीवमुक्तो

१ पृष्ठ ४१ पा. जो मधोकर लुप्तता सर्व शक्ति विना गया है वही अरिहंत पाठ ही मान लिया गया है अ. मूढचिरी दृष्टिको भी वही कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ । उसके सर्व करनेमें भी आवश्यकता नहीं थी । इससे पता चल गया है । इसके अनुसार ही है कि मधोकरके अनुसार अरिहंत पाठ ही रहा है । अरिहंत पाठ मान लीजिए पाठ विषममुक्तता वक्तका अरिहंत ५ मंत्र दोषों सर्व हो सकते हैं (देखो इस पाठ का व्याख्यान ५ १२१) किन्तु अरिहंत से केवल सर्व ही निकल सकता है अरिहंत नहीं ।

११ ५ विपर्यस्यतोः पाठ ही व्याख्यानके उद्धृत है ही नहीं किन्तु यदि उसके लक्षण वा विपर्यस्यतो पाठ ही मूल ही लक्ष्य है वक्तके लक्षण वही सर्व निकल जाता है जो मधोकरकी ही है ।

४४ ४ ५ उक्त विषय इस लक्ष्य ही कर सकते हैं । देखो मधोकर, भाग १ मुद्रिका पृ. १२ व ८७

गृहविद्वितीयं शास्त्रपत्रीय प्रतियोंके मिलाज

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	गृहविद्वितीय पाठ
९२	३	विद्योगापायस्य	विद्योपायस्य
९७	१	पुरिस्त्र च	पुरिस्त्र च
१०५	१	कदाचो	×
"	२	सुखिं करेती	सुखिमकरेती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११२	३	हृष्य	×
११४	१२	जाम कम्माय	जाम कम्माय
१५८	४	जमतिरिपत्त	जमतिरिपत्त
१८३	८	जेस्सि	जैस
२१०	३	तो वि	ते वि
२२०	३	अम्महिप	अम्महिप
२२२	४	पिबह्वस्ति	पिब्विपि (I)
२३२	९	असंक्षिप्तसूतयः	संक्षिप्तसूतयः
२९८	३	मैय	मैय दोपा
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२३	१०	महम्मदार्	महम्मदेलु य
३२८	८	तस्मिंठासां	तस्मिंतेपां
३३३	१	अस्मादेवार्पात्	अस्मादेवार्पात्
३५९	१	आयुवसमिप	आयुवसमिप
३६३	७	इति ॥ ११९ ॥ अत्रैक	इत्यत्र एक-
३६६	५	स्वितम्	स्वितः
३७६	७	पञ्चपमः	पञ्चपमाः
		८	
३८०	११	असुपा	असुपो
३९९	८	तत्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष
४१३	३	मैधुनसंज्ञायाः	मैधुनसंज्ञायां
"	"	विद्योपलक्षण	विद्योपलक्षण
	५	अग्रीहवाद्यायाः	अग्रीहवाद्यायां
४१४	१०	वेदमार्गजाममेवः	वेदमार्गजाममेवाः
४१७	११	आणप्याणप्याणा	आणप्याणप्याण

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढलिप्रीकृत पाठ
४२०	७	सिद्धगरी	सिद्धगरी वि
४३३	३	-सञ्ज्ञा	सञ्ज्ञाभो
४४३	३	-मभिष्यमिषि	मभिष्यमि तेण
४५३	३	तिपिण्य मज्झाण	तिपिण्य पाप्पाणि
४९३	३	पञ्चसत्त्वोपिणी	पञ्चसत्त्वोपिणी
५१३	७	तेपित्थिषेदे वि	तेपित्थिषेदे वि
६०९	११	रत्तार्मव	रत्तार्मव
६५३	५	सत्तम्भुपमाहो वा	सत्तम्भुपमाहो वा
८२३	३	भोदिण्यार्यं	उदिण्यार्यं

भाग ३

२	५	सपरत्प्यमासभो	सपरत्प्यमासदि
५	११	-मनेकवा	-मनेकवा
९	७	द्वयपमाणाव	द्वयपमाणाव पकवणाव
७	२	पूर्वमध्यपीमावस्य	पूर्वमध्यपीमावस्य
१२	१	मेहकम्मोसु	मेहकम्मोसु
१८	८	अण्णमेवस्स	अण्णमेवस्स
२२	१	अण्णतगुण्णाभो	अण्णतगुण्णाहो
२५	१०	जहुंहरस	जिहुंहरस
२६	९	तत्तिपयमेत्तो	तत्तिपायमेत्तो
२७	९	एव महत्ती	एवमहत्ती
२८	२	मोगाहे	मोगाहे
३८	८	अवहिदिग्गमाणे सण्णे	अवहिदिग्गमाणे सण्णे संमिया अवहिदिग्गमाणे सण्णे
३२	३	अर्णता	अर्णता
३८	२	अहिदिपत्थविसणो	अहिदिपत्थविसणो
५२	५	सत्तम्भूवत्तासिणा तस्स यणो	सत्तम्भूवत्तासिणा पुणो
५८	३	अट्टपकवणा	अट्टकवणा

१ उल्लस व्याकरणके निरपत्तुवा अन्वरीमत ही होता है, किन्तु संस्कृत लिखने से वहाँ प्लुत न मिल सका वस्तु है।

२ कन्वे इतिव आदि वर्तमानके विनया प्रधान केवली कोइला अवगणना है वनम प्रधान वर्तमान ही संस्कृत वस्तुवा वस्तु है। देखी तुल ७१ १७ व १८१.

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	गूढविद्याका पाठ
६७	४	मुद्रितम्भुगमाहो ।	मुद्रितम्भुगमाहो
७०	३	संज्ञा	संज्ञा
९९	९	असद्वि	असद्वि
	११	परिमाण	परिमाण
१००	५	अद्वैतमयाहिय	अद्वैतमयाहिय
१०५	७	अथ येनयाहिय	अथया येनयाहिय
१२३	४	अद्वैतमाहिय	अद्वैतमाहिय
१३१	१	योगाह	योगाह
१३३	७	अहो	अहो
१९१	९	अवधिसेसपमान	अवधिसे सेसपमान
२९१	९	हेट्टिमविरुद्धाप	विरुद्धाप
१९९	२	पुष्पद्विषेति	पुष्पद्विषेति
१९५	३	सोधिदे	सोधिदे
१९९	३	अवधोन्मयासेन	अवधोन्मयासेन
२०९	४	पदम	पदम
२२७	४	अधीन	अधीन
२३२	३	अवध्यादिपान	अवध्यादिपान
२३२	८	अवधोपन	अवधोपन
२३३	१०	अवधोपन	अवधोपन
२४३	१	अवधोपन	अवधोपन
२४५	७	अवधोपन	अवधोपन
२६०	३	अवधोपन	अवधोपन
२६२	११	अवधोपन	अवधोपन
२६३	१	अवधोपन	अवधोपन
२६८	३	अवधोपन	अवधोपन
२७५	५	अवधोपन	अवधोपन
२७९	३	अवधोपन	अवधोपन
३०७	२	अवधोपन	अवधोपन
३०७	४	अवधोपन	अवधोपन

१ 'पदम' वर एवमेव अर्थों की रचना पद्यों में ही की गई है।

२ 'अवधोपन' यदि पद्य रूप में पुनरावृत्ति होगी है।

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूढविद्विक्ता पाठ
३४१	२	अथाप्यमे	वेरुवे
३४२	१०	द्विये	हवे
३४३	५	भागच्छदि ।	भागच्छदि सि शुभेक्य भागगहर्ण कर्त्त ।
३४९	७	-सेसरसिणा	-सेसरसि
३५२	३	सरीरपञ्चसेण	सरीरपञ्चस
३६१	१२	किमाहिन्नो ऊयो	किमाहीन्नो ऊया
३८२	३	बाह्वपञ्चस	बाह्वपञ्चस
३८४	१	-दध्यमसंखेयगुण	-दध्यमसंखेयगुणं
३८६	९	ऊयो	ऊयो
४४	४	पुनरपि ओदरमाणा	पुन कुबियोदरमाणा
४१२	१	मोसबबिजोमि-सपबबिजोमि	मोसबबिजोमि संमपदि
४१४	२	संखेयगुणामो	असंखेयगुणामो
४२५	८	-आपमेतो	भागमेते
"	९	अ अ	अअ
"	९	विगम-पवेसार्ण	विगमपवेसर्ण
४३०	४	अकसारजो अ	अकसारजा
४४८	११	वेदग्न्यसत्ताया	वेदग्न्यसत्ताया
४४४	३	अकनुर्लसपद्विरी	अकनुर्लसपद्विरीभो
४७४	३	दसो	दस्ये
४८१	३	जामहत्	अ महत्
४८४	१०	अजाहारिमसञ्ज	आहारिमसंज
४८६	१०	(अथवा संखेयगुणा)	संख्या संखेयगुणा

